राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रंथ सूची

पंचम भाग

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रंथ-सूची

(पंचम भाग)

(राजस्थान के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों के ४५ शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत २० हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण)

आशीर्वाद

मुनि प्रवर १०८ श्री विद्यानन्दजी महाराज

पुरोवाक् :

डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

सम्पादक

डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल
एम. ए., पी-एच. डी., शास्त्री

पं० अनूपचन्द न्यायतीर्थ
साहित्यरत्न

प्रकाशक

सोहनलाल सोगाणी

मन्त्री :

प्रबन्ध कारिणी कमेटी

श्री दि० जैन अ० क्षेत्र श्रीमहावीरजी

प्राप्ति स्थान

१. साहित्य शोध विभाग, दि० जैन अ० क्षेत्र श्रीमहावीरजी
महावीर भवन, सवाई मानसिंह हाईवे, जयपुर-३

२. मैनेजर दि० जैन अ० क्षेत्र श्रीमहावीरजी
श्रीमहावीरजी (राजस्थान)

●

प्रथम संस्करण
५०० प्रति

वी० नि० सं० २४९८
मार्च, ७२

मूल्य
४०)

विषय–सूची

———

शास्त्र भण्डारों की नामावलि

१	शास्त्र भण्डार	भ० दि० जैन मन्दिर, (बड़ा घड़ा) अजमेर
२	,,	दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर, अलवर
३	,,	दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर, अलवर
४	,,	दि० जैन मन्दिर, दूनी
५	,,	दि० जैन बघेरवाल मन्दिर, आवा
६	,,	दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, बूंदी
७	,,	दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूंदी
८	,,	दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी
९	,,	दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, बूंदी
१०	,,	दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ स्वामी, बूंदी
११	,,	दि० जैन मन्दिर बघेरवाल, नैणवा
१२	,,	दि० जैन मन्दिर तेरापथी, नैणवा
१३	,,	दि० जैन मन्दिर अग्रवाल, नैणवा
१४	,,	दि० जैन मन्दिर, दबलाना
१५	,,	दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, इन्दरगढ
१६	,,	दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, फतेहपुर (शेखावाटी)
१७	,,	दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर
१८	,,	दि० जैन मन्दिर फौजूराम, भरतपुर
१९	,,	दि० जैन पंचायती मन्दिर, नयी डीग
२०	,,	दि० जैन बड़ी पचायती मन्दिर, नयी डीग
२१	,,	दि० जैन मन्दिर, पुरानी डीग
२२	,,	दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर, कामा
२३	,,	दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, कामा
२४	,,	दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर, टोडारायसिंह
२५	,,	दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, टोडारायसिंह
२६	,,	दि० जैन मन्दिर, राजमहल
२७	,,	दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा
२८	,,	दि० जैन पचायती मन्दिर, बयाना
२९	,,	दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना
३०	,,	दि० जैन मन्दिर, वैर
३१	,,	दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर

३२	शास्त्र भण्डार	दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर
३३	,,	दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर
३४	,,	दि० जैन तेरहपथी मन्दिर, बसवा
३५	,,	दि० जैन पचायती मन्दिर, बसवा
३६	,,	दि० जैन मन्दिर कोटडियोंका, डूंगरपुर
३७	,,	दि० जैन मन्दिर, भादवा
३८	,,	दि० जैन मन्दिर चोधरियान, मालपुरा
३९	,,	दि० जैन आदिनाथ स्वामी, मालपुरा
४०	,,	दि० जैन मन्दिर तेरहपथी, मालपुरा
४१	,,	दि० जैन पचायती मन्दिर, करोली
४२	,,	दि० जैन मन्दिर सोगाणीयो का, करोली
४३	,,	दि० जैन बीसपथी मन्दिर, दौसा
४४	,,	दि० जैन तेरहपथी मन्दिर, दौसा
४५	,,	दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

प्रकाशकीय

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी की प्रबन्धकारिणी कमेटी की ओर से गत २४ वर्षों से साहित्य अनुसधान का कार्य हो रहा है। सन् १९६१ में राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो की ग्रंथ सूची का चतुर्थ भाग प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात् जिरगदत्त चरित, राजस्थान के जैन सन्त-व्यक्तित्व एव कृतित्व, हिन्दी पद संग्रह, जैन ग्रथ भडार्स इन राजस्थान, जैन शोध और समीक्षा आदि रिसर्च से सम्बन्धित पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। जैन साहित्य के शोधार्थियो के लिये विद्वानों की दृष्टि मे ये सभी पुस्तकें महत्वपूर्ण सिद्ध हुई हैं। शास्त्र भण्डारों की ग्रथ सूची पचम भाग के प्रकाशनार्थ विद्वानों के आग्रह को ध्यान मे रखते हुये और भगवान महावीर की २५०० वी निर्वाण शताब्दि समारोह हेतु गठित अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समिति द्वारा साहू शान्तिप्रसाद जी की अध्यक्षता मे देहली अधिवेशन मे राजस्थान के जैन ग्रन्थागारों की सूचिया प्रकाशन के कार्य को वीर निर्वाण सवत् २५०० तक पूर्ण करने हेतु पारित प्रस्ताव का भी ध्यान रखते हुये क्षेत्र कमेटी ने ग्रथ सूची के पचम भाग के प्रकाशन के कार्य को और गति दी और मुझे यह लिखते हुये प्रसन्नता है कि महावीर क्षेत्र कमेटी ने दिगम्बर जैन समिति के प्रस्ताव को क्रियान्वित करने मे सर्व प्रथम पहल की है।

ग्रथ सूची के इस पचम भाग मे राजस्थान के विभिन्न नगरों व कस्बो मे स्थित ४५ शास्त्र भण्डारो के सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, हिन्दी एव राजस्थानी भाषा के ग्रंथो का विवरण दिया गया है। यदि गुटकों मे संग्रहीत पाण्डुलिपियों की सख्या को जोडा जाय तो इस सूची मे बीस हजार से अधिक ग्रंथों का विवरण प्राप्त होगा। समूचे साहित्यिक जगत् मे ऐसी विशाल ग्रन्थ सूची का प्रकाशन सभवत प्रथम घटना है। ये हस्तलिखित ग्रंथ राजस्थान के प्रमुख नगर जयपुर, अजमेर, उदयपुर, डूगरपुर, कोटा, बूदी, अलवर, भरतपुर, एवं प्रमुख कस्बे टोडारायसिंह, मालपुरा, नैणवा, इन्द्रगढ, बयाना, वैर, दबलाना, फतेहपुर, दूनी राजमहल, बसवा, मादवा, दौसा आदि के दिगम्बर जैन मन्दिरो मे स्थापित शास्त्र भण्डारो मे सग्रहीत हैं। इनकी ग्रथ सूची बनाने का कार्य हमारे साहित्य शोध विभाग के विद्वान् डा० कस्तूरचद जी कासलीवाल एव अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ ने स्वय स्थान स्थान पर जाकर अवलोकन कर पूर्ण किया है। यह उनकी लगन एव साहित्यिक रुचि का सुफल है। यह सूची साहित्यिक, सास्कृतिक एव ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। ग्रथ सूची के अन्त में दी गई अनुक्रमणिकाएं प्राचीन साहित्य पर कार्य करने वाले शोधार्थियों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होंगी। शोधार्थियो एवं विद्वानो को कितनी ही अज्ञात एव अनुपलब्ध ग्रंथो का प्रथम बार परिचय प्राप्त होगा तथा भाषा के इतिहास में कितनी ही लुप्त कडिया और जुड सकेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

भगवान महावीर के जीवन पर निबद्ध नवलराम कवि का "वर्द्धमान पुराण" कामा के शास्त्र भडार में उपलब्ध हुआ है वह १७ वी शताब्दी की कृति है तथा भगवान महावीर के जीवन से सम्बन्धित हिन्दी कृतियो में अत्यधिक प्राचीन है। श्रीमहावीर जी क्षेत्र की ओर से भगवान महावीर के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख हिन्दी काव्यों के शीघ्र प्रकाशन की योजना विचाराधीन है।

अभी राजस्थान मे नागौर कुचामन, प्रतापगढ, सागवाडा, आदि स्थानो के महत्वपूर्ण ग्रंथ भण्डारों की सूची का कार्य अवशिष्ट है। इनकी सूची दो भागो मे समाप्त हो जायगी, ऐसा आशा है। इस प्रकार राजस्थान के शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची के ७ भाग प्रकाशित हो जाने के पश्चात् ग्रंथ सूची प्रकाशन की हमारी योजना भगवान महावीर की २५०० वी निर्वाण शताब्दी तक पूर्ण हो सकेगी।

प्रबन्धकारिणी कमेटी उन विभिन्न नगरो एव कस्बो के शास्त्र भण्डारो के व्यवस्थापको की आभारी है जिन्होने विद्वानों को ग्रंथ सूची बनाने के कार्य मे पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। आशा है भविष्य में भी साहित्य सेवा के पुनीत कार्य मे उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

क्षेत्र कमेटी पूज्य १०८ मुनिवर श्री विद्यानन्दजी महाराज की भी आभारी है जिन्होंने इस सूची मे प्रकाशनार्थ अपना पुनीत आशीर्वाद प्रदान करने की महती कृपा की है। साहित्योद्धार के कार्य मे मुनिश्री द्वारा हमे बराबर प्रेरणा मिलती रहती है। हम साहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान् डा० हजारीप्रसादजी द्विवेदी के भी आभारी हैं जिन्होने इसका पुरोवाक् लिखने की कृपा की है।

महावीर भवन
जयपुर

मोहनलाल सोगाणी
मंत्री

आशीर्वाद

धर्म, जाति और समाज की स्थिति मे जहा सस्कृति मूल कारण है, वहा इनके संवर्धन और सरक्षण मे साहित्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। सस्कृति एव साहित्य दोनो जीवन और प्राणवायु सदृश परस्परापेक्षी हैं। एक के बिना दूसरे की स्थिति सभव नहीं। अतः दोनो का सरक्षण आवश्यक है।

आदि युगपुरुष तीर्थकर वृषभदेव से प्रवर्तित दिव्य देशना ने तीर्थकर वर्द्धमान पर्यन्त और अद्यावधि जो स्थिरता धारण की, वह साहित्य की ही देन है। यदि आज के युग मे प्राचीन साहित्य हमारे बीच न होता तो हमारा अस्तित्व ही समाप्त प्राय था। भारत के प्रभूत शास्त्रागारो मे आज भी विपुल साहित्य सुरक्षित है। न जाने, किन किन महापुरुषों, धर्मप्रेमियो ने इस साहित्य की कैसे कैसे प्रयत्नो से रक्षा की। पिछले समयों मे बडे बडे उतार चढाव आये। मुगल साम्राज्य और विद्वेषियो के कब कब कितने कितने धर्मद्रोही झंझावात चले, इसका तो अतीत इतिहास साक्षी है। पर हा यह अवश्य है कि उस काल मे यदि सस्कृति, साहित्य और धर्म के प्रेमी न होते तो आज के भण्डारो मे विपुल साहित्य सर्वथा दुर्लभ होता। संतोष है कि ऐसे साहित्य पर विद्वानों का ध्यान गया और अब धीरे धीरे तीव्रगति से उसके उद्धार का कार्य जनता के समक्ष आने लगा, यह सुखद प्रसग है।

राजस्थान के शास्त्र भण्डारों की ग्रथ सूची का पचम भाग हमारे समक्ष है। इसके पूर्व चार भागो मे लगभग पच्चीस हजार ग्रथो की सूची प्रकाशित हो चुकी है। इस भाग में भी लगभग बीस हजार ग्रंथों की नामावली है। प्राकृत, अपभ्रंश, सस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी सभी भाषाओ मे लगभग एक हजार लेखकों, आचार्यो, मुनियो और विद्वानो की रचनाये है। इन रचनाओ मे दोहा, चौपई, रास, फागु, बेलि, सतसई, बावनी, शतक आदि के माध्यम से तत्व, आचार विचार एव कथा सबधी विविध ग्रथ है।

श्री डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल समाज के जाने माने शोध विद्वान् हैं। भडारों के शोध कार्य पर इन्हें पी--एच. डी भी प्राप्त है। बृहत्सूची के उक्त सकलन, सपादन में इन्हे लगभग बीस वर्ष लग चुके हैं और अभी कार्य शेष है। इस प्रसग मे डा० साहब एव उनके सहयोगियो को पैदल, ऊट गाडी व ऊंटों पर सैकडो मीलो की यात्रा करनी पडी है, उन्होने अथक परिश्रम किया है। यह ऐसा कार्य है जो परम आवश्यक था और किसी का इस पर कार्य रूप मे ध्यान नहीं गया। डा० साहब के इस कार्य से वर्तमान एव भावी पीढी के शोधार्थियो को पूरा पूरा लाभ मिलेगा ऐसा हमारा विश्वास है। साथ ही तीर्थकर महावीर की २५०० वी निर्वाण शती के प्रसग में इस ग्रथ का उपयोग और भी बढ जाता है। ग्रंथ भण्डारों में उपलब्ध तीर्थंकर महावीर सम्बन्धी अनेक ग्रंथों का उल्लेख भी इस सूची मे है, जिनके आधार पर तीर्थंकर महावीर का प्रामाणिक जीवन प्रकाश मे लाया जा सकता है। और भी अनेक ग्रथ प्रकाशित किये जा सकते हैं। समाज को इधर ध्यान देना उचित है। डा० साहब का प्रयास सर्वथा उपयोगी एव अनुकरणीय है।

प्रस्तुत प्रकाशन के महत्वपूर्ण कार्य से श्रीमहावीरजी अतिशय क्षेत्र कमेटी, उसके तत्तकालीन मंत्रियों श्री ज्ञानचन्द्र खिन्दूका व श्री सोहनलाल सोगाणी के साहित्योद्धार प्रेम की झलक सहज ही मिल जाती है। अन्य तीर्थक्षेत्रों के प्रबन्धको को इनका अनुकरण कर साहित्योद्धार में रुचि लेना सर्वथा उपयोगी है। ग्रंथ संपादन के कार्य में श्री प० अनूपचन्द न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न से डा० साहब को पूरा पूरा सहयोग मिला है। हमारी भावना है कि समाज और देश इस अमूल्य सूची का अधिकाधिक लाभ ले सके।

विद्यानन्द मुनि

उज्जैन

३०-१२-७१

पुरोवाक्

मुझे राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की इस पांचवीं ग्रंथ सूची को देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। डा० कासलीवालजी ने विभिन्न नगरो एव ग्रामों के ४५ शास्त्र भण्डारों का आलोडन करके इस ग्रंथ सूची को तैयार किया है। इसमें लगभग बीस हजार पाण्डुलिपियों का विवरण दिया हुआ है। इस ग्रंथ सूची में कुछ ऐसी महत्वपूर्ण पुस्तकें भी हैं जिनका अभी तक प्रकाशन नहीं हुआ है। मुझे यह कहने में जरा भी सकोच नहीं है कि डा० कस्तूरचन्द जी एवं पं० अनूपचन्द जी ने इस ग्रंथ सूची का प्रकाशन करके भारी शोध कर्त्ताओं और शास्त्र जिज्ञासुओं के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रंथ दिया है। इस प्रकार की ग्रंथ सूचियों मे भिन्न भिन्न स्थानों में सुरक्षित और अज्ञात तथा अल्पज्ञात पुस्तकों का परिचय मिलता है और शोध कर्त्ता को अपने अभीष्ट मार्ग की सूचना में सहायता मिलती है। इसके पूर्व भी डा० कासलीवालजी ने ग्रंथ सूचियों का प्रकाशन किया है। वे इस क्षेत्र में चुपचाप महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। मेरा विश्वास है कि विद्वत् समाज उनके प्रयत्नों का पूरा लाभ उठाएगा।

यद्यपि इन ग्रंथों की सूची जैन भण्डारो से संग्रह की गई तथापि यह नहीं समझना चाहिए कि इसमे केवल जैन धर्म से संबद्ध ग्रंथ ही हैं। ऐसे बहुत से ग्रंथ हैं जो कि जैन धर्म क्षेत्र के बाहर भी पड़ते है और कई ग्रंथ हिन्दी साहित्य के शोध कर्त्ताओं के लिए बहुत उपयोगी जान पड़ते हैं। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ सूची के प्रकाशन के लिए श्री महावीर तीर्थ क्षेत्र कमेटी के मन्त्री श्री सोहनलाल जी सोगाणी तथा डा० कस्तूरचन्द जी और प० अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ साहित्य और विद्या प्रेमियो के हार्दिक धन्यवाद के अधिकारी है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

ग्रंथ सूची-एक झलक

क्रम संख्या	नाम	संख्या
१	ग्रंथ संख्या	५०५०
२	पाण्डुलिपि संख्या	२०,०००
३	ग्रंथकार	१०८०
४	ग्राम एवं नगर	६२०
५	शासकों की संख्या	१३५
६	अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रंथ विवरण	१००
७	ग्रंथ भण्डारों की संख्या	४५

आभार

हम सर्वप्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी के सभी माननीय सदस्यों तथा विशेषतः निवर्तमान मंत्री श्रीज्ञानचन्द्र जी खिन्दूका एवं वर्तमान अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी काला तथा मंत्री श्री सोहनलालजी सोगाणी के आभारी हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची के इस भाग को प्रकाशित करवाकर साहित्य जगत् का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा साहित्य शोध एवं साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण कार्य किया गया है वह अत्यधिक प्रशंसनीय एवं श्लाघनीय है। आशा है भविष्य में साहित्य प्रकाशन के कार्य को और भी प्राथमिकता मिलेगी।

हम राजस्थान के उन सभी दि० जैन मन्दिरों के व्यवस्थापकों के आभारी हैं जिन्होंने अपने यहां स्थित शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची बनाने में हमें पूर्ण सहयोग दिया। वास्तव में यदि उनका सहयोग नहीं मिलता तो हम इस कार्य में प्रगति नहीं कर सकते थे। ऐसे व्यवस्थापक महानुभावों में निम्न लिखित सज्जनों के नाम विशेषतः उल्लेखनीय है —

डूंगरपुर— स्व० श्री मीराचन्द जी गांधी
स्व० श्री रतनलालजी कोटडिया
सूरजमलजी नन्दलालजी ढूंढू सर्राफ

फतेहपुर— श्री बाबू गिन्नीलालजी जैन

अजमेर— समस्त समाज दि० जैन मन्दिर बडाधडा (भट्टारक) अजमेर

कोटा— श्री डा० नेमीचन्द जी
श्री स्व० ज्ञानचन्द जी

नैणवा— श्री बाबू जयकुमार जी वकील

बूंदी— श्री सेठ मदनमोहन जी कासलीवाल
श्री केशरीमल जी गंगवाल

दूनी— श्री मदनलाल जी

मालपुरा— श्री समीरमल जी छाबडा

टोडारायसिंह— श्री मोहनलालजी जैन
श्री रतनलाल जी जैन

भरतपुर— श्री बा० शिखरचन्द जी गोधा

उदयपुर— श्री सेठ पन्नालाल जी जैन
श्री मोतीलाल जी मीढा

बयाना— श्री रोशनलाल जी ठेकेदार

जयपुर— श्री मुंशी गैंदीलाल जी साह

इस अवसर पर स्व० गुरुवर्य्य प० चैनसुखदास जी सा० न्यायतीर्थ के चरणों में सादर श्रद्धाञ्जलि अर्पित है जिनकी सतत प्रेरणा से ही राजस्थान के इन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची का कार्य किया जा सका। हम हमारे सहयोगी स्व० सुगनचन्द जी जैन की सेवाओं को भी नहीं भुला सकते जिन्होने हमारे साथ रह कर शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची बनाने मे हमे पूरा सहयोग दिया था। उनके आकस्मिक स्वर्गवास से साहित्यिक कार्यों में हमे काफी क्षति पहुंची है। हम उदीयमान शोधार्थी श्री प्रेमचन्द रांवका के भी आभारी है जिन्होंने ग्रंथ सूची की अनुक्रमणिकायें तैयार करने मे पूरा सहयोग दिया है।

हिन्दी के मूर्द्धन्य विद्वान् डा० हजारी प्रसाद जी द्विवेदी के हम अत्यधिक आभारी हैं जिन्होने हमारे निवेदन पर ग्रंथ सूची पर पुरोवाक् लिखने की महती कृपा की है। जैन साहित्य की ओर आपकी विशेष रुचि रही है और हमें आशा है कि आपकी प्रेरणा से हिन्दी के इतिहास मे जैन विद्वानो की कृतियों को उचित स्थान प्राप्त होगा।

राष्ट्रसत मुनिप्रवर श्री विद्यानन्दजी महाराज का हम किन शब्दो मे आभार प्रकट करं। मुनि श्री का आशीर्वाद ही हमारी साहित्यिक साधना का सबल है।

१-१-७२

कस्तूरचन्द कासलीवाल
अनूपचन्द न्यायतीर्थ

प्रस्तावना

राजस्थान एक विशाल प्रदेश है। इसकी यह विशालता केवल क्षेत्रफल की दृष्टि से ही नहीं है किन्तु साहित्यिक, सास्कृतिक एव ऐतिहासिक दृष्टि से भी राजस्थान की गणना सर्वोपरि है। जिस प्रकार यहा के वीर शासकों एव योद्धाओ ने अपने बहादुरी के कार्यों से देश के इतिहास को नयी दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण योग दिया है उसी प्रकार यहां के साहित्य सेवी समूचे भारत का गौरवमय वातावरण बनाने मे सक्षम रहे है। यहां की सस्कृति भारत की आत्मा है जो अहिंसा, सहअस्तित्व एव समन्वय की भावना से ओतप्रोत है। यही कारण है कि इस प्रदेश मे युद्ध के समय मे भी शांति रही और सभी वर्ग भारतीय सस्कृति के विकास मे अपना अपना योग देते रहे। भारतीय साहित्य के विकास में, उसकी सुरक्षा एव प्रचार प्रसार में राजस्थानवासियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सस्कृत भाषा के साथ-साथ यहा के निवासियों ने प्राकृत, अपभ्र श, हिन्दी, राजस्थानी एव गुजराती के विकास मे भी सर्वाधिक योग दिया। राजस्थानी यहा की जन भाषा रही और उसके माध्यम से हिन्दी का खूब विकास हुआ। इसीलिये हिन्दी के प्राचीनतम कवियो की कृतियां यहीं के ग्र थागारों में उपलब्ध होती हैं। यही स्थिति अन्य भाषाओं के सम्बन्ध मे भी कही जा सकती है।

राजस्थान के शास्त्र भण्डारो का यदि मूल्याकन किया जावे तो हमारे पूर्वजो की बुद्धिमत्ता एव उनके साहित्यिक प्रेम की जितनी भी प्रशसा की जावे वही कम रहेगी। उन्होने समय की गति को पहिचाना, साहित्य निर्माण के साथ साथ उसकी सुरक्षा की ओर भी ध्यान दिया और धीरे-धीरे लाखों की संख्या में पाण्डुलिपियो का संग्रह कर लिया। मुसलिम शासन काल में जिस प्रकार इन्होने साहित्यिक धरोहर को अपने प्राणो से भी अधिक प्रिय समझ कर सुरक्षित रखा वह आज एक कहानी बन गयी है। यहा के शासक एवं जनता दोनों ने ही मिल कर अथक प्रयासो से साहित्य की अमूल्य निधि को नष्ट होने से बचा लिया। इसलिये यहां के शासकों ने जहा राज्य स्तर पर ग्र थ सग्रहालयो एव पोथीखानों की स्थापना की, वहा यहा की जनता ने अपने-अपने मन्दिरों एव निवास स्थानो पर भी पाण्डुलिपियों का अपूर्व सग्रह किया। बीकानेर की अनूप संस्कृत लायब्रेरी एव जयपुर का पोथीखाना जिस प्रकार प्राचीन पाण्डुलिपियो के सग्रह के लिये विश्वविख्यात है उसी प्रकार नागौर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, बीकानेर एव उदयपुर के जैन ग्र थालय भी इस दृष्टि से सर्वोपरि हैं। यद्यपि अभी तक विद्वानो द्वारा इन शास्त्र भण्डारों का पूर्णत. मूल्यांकन नही हो सका है फिर भी गत २० वर्षों मे इन सग्रहालयो की जो ग्र थ सूचियां सामने आयी हैं उनसे विद्वान गण इस ओर आकृष्ट होने लगे है और अब शनै शनै इनमें सग्रहीत साहित्य का उपयोग होने लगा है।

जनता द्वारा स्थापित राजस्थान के इन शास्त्र भण्डारों में जैन शास्त्र भण्डारो की सबसे बडी संख्या है। ये शास्त्र भण्डार राजस्थान के सभी प्रमुख नगरों एवं कस्बों मे मिलते है। यद्यपि अभी तक इन शास्त्र भण्डारो की पूरी सूची तैयार नहीं हो सकी है। मैंने अपने Jain Granth Bhandars in Rajasthan में ऐसे १०० शास्त्र भण्डारों का परिचय दिया है लेकिन उसके पश्चात् और भी कितने ही ग्र थागारों का

अस्तित्व हमारे सामने आया है, इसलिये राजस्थान में दिगम्बर एवं श्वेताम्बर शास्त्र भण्डारों की संख्या की जावे तो वह २०० से कम नहीं होनी चाहिये। श्वेताम्बर शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूचियां एवं उनका सामान्य परिचय तो बहुत पहिले मुनि पुण्यविजय जी, मुनि जिनविजयजी एवं श्री अगरचन्द जी नाहटा प्रभृति विद्वानों ने साहित्यिक जगत को दे दिया था लेकिन दिगम्बर जैन मन्दिरों में स्थापित शास्त्र भण्डारों का परिचय देने एवं उनकी ग्रंथ सूची बनाने का कार्य अनेक प्रयत्नों के बावजूद सन् १९४७ के पूर्व तक योजना बद्ध तरीके से प्रारम्भ नहीं किया जा सका। यद्यपि पं० परमानन्द जी शास्त्री, स्व० पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार एवं श्रद्धेय स्व० पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ द्वारा इस ओर लोगों को बराबर प्रेरणा दी जाती रही लेकिन फिर भी कोई ठोस कार्य प्रारम्भ नहीं किया जा सका। आखिर पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ की बार बार प्रेरणाओं के फलस्वरूप श्रीमहावीर क्षेत्र के तत्कालीन मंत्री श्री रामचन्द्रजी सा० खिन्दूका ने इस दिशा में पहल की तथा क्षेत्र की ओर से साहित्य शोध विभाग की स्थापना की गयी। इस प्रकार दिगम्बर जैन मन्दिरों में स्थित शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची का कार्य प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात् ग्रंथ सूचियों के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ किया गया और सन् १९४९ में सर्व प्रथम राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची प्रथम भाग (आमेर शास्त्र भण्डार की ग्रंथ सूची) प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् तीन भाग और प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें बीस हजार से भी अधिक ग्रंथों का परिचयात्मक विवरण दिया जा चुका है।

ग्रंथ सूची का पांचवा भाग विद्वानों एवं पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इसमें जयपुर नगर के शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर के अतिरिक्त सभी शास्त्र भण्डार राजस्थान के विभिन्न नगरों एवं कस्बों में स्थित है। प्रस्तुत भाग में ४५ शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत २० हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण दिया गया है। एक ही भाग में इतनी अधिक पाण्डुलिपियों का परिचय देने का हमारा यह प्रथम प्रयास है। इन शास्त्र भण्डारों की सूचीकरण के कार्य में हमें दस वर्ष से भी अधिक समय लगा। एक एक भण्डार को देखना, वहां के ग्रंथों की धूल साफ करना, उन्हें सूची बद्ध करना, अस्तव्यस्त पत्रों को व्यवस्थित करना, पुराने एवं जीर्ण शीर्ण वेष्टनों को नये वेष्टनों में परिवर्तित करना, महत्वपूर्ण पाठों एवं प्रशस्तियों की प्रति लिपि तैयार करना, पूरे ग्रंथ भण्डार को व्यवस्थित करना आदि सभी कार्य हमें करने पड़े और यह कार्य कितना श्रम साध्य है इसे भुक्त भोगी ही जान सकता है। फिर भी, यह कार्य सम्पन्न हो गया हम तो इसे ही पर्याप्त समझते हैं क्योंकि कुछ ऐसे शास्त्र भण्डार भी हैं जिन्हें पचासों वर्षों से नहीं खोला गया और उनमें कितनी २ साहित्यिक निधियां विद्यमान हैं इसे जानने का कभी प्रयास ही नहीं किया।

इस ग्रंथ सूची में बीस हजार पाण्डुलिपियों के परिचय के अतिरिक्त सैकड़ों ग्रंथ प्रशस्तियों, लेखक प्रशस्तियों तथा अलभ्य एवं प्राचीनतम पाण्डुलिपियों का परिचय भी दिया गया है। इस सूची के अवलोकन के पश्चात् विद्वानों को इसका पता लग सकेगा कि सैकड़ों ग्रंथों की कितनी २ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की जानकारी मिली है जिनके बारे में साहित्यिक जगत अभी तक अन्धेरे में था। कुछ ऐसे ग्रंथ है जिनकी पाण्डुलिपियां राजस्थान के प्रायः सभी शास्त्र भण्डारों में उपलब्ध होती है जो उनकी लोकप्रियता की द्योतक है। स्वयं ग्रंथकारों की मूल पाण्डुलिपियों की उपलब्धि भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। इन पाण्डुलिपियों के आधार पर प्रकाशन के समय पाठ भेद जैसा दुरूह कार्य कम हो जावेगा और पाठ की प्रामाणिकता में उहापोह नहीं करना पड़ेगा। महापंडित टोडरमल के आत्मानुशासन भाषा की विभिन्न भण्डारों में ४८ प्रतिलिपियां संग्रहीत हैं इसी प्रकार मनोहरदास सोनी की धर्मपरीक्षा की ४७ पाण्डुलिपियां, किशनसिंह के क्रियाकोश की ८५, द्यानतराय के चर्चाशतक की ३७,

पद्मनन्दि पंचविशति की ३५, ऋषभदास निगोत्या के मूलाचार भाषा की ३३, शुभचन्द्र के ज्ञानार्णव की ३४, भूधरदास के चर्चासमाधान की २६ पाण्डुलिपियां उपलब्ध हुई हैं। सबसे अधिक महाकवि भूधरदास के पार्श्वपुराण की पाण्डुलिपियां हैं जिनकी संख्या ७३ है। पार्श्वपुराण का समाज मे कितना अधिक प्रचार था और स्वाध्याय प्रेमी इसका कितनी उत्सुकता से स्वाध्याय करते होंगे यह इन पाण्डुलिपियों की संख्या से अच्छी तरह जाना जा सकता है। पार्श्वपुराण की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि संवत् १७६४ की है जो रचना काल के पांच वर्ष पश्चात् ही लिखी गयी थी। इसी तरह प्रस्तुत भाग में एक हजार से भी अधिक ग्रंथ प्रशस्तियां एवं लेखक प्रशस्तियां भी दी गयी हैं जिनमें कवि एवं काव्य परिचय के अतिरिक्त कितनी ही ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी मिलती है। इतिहास लेखन में ये प्रशस्तियां अत्यधिक महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध होती है। उनमे जो तिथि, काल, वार नगर एवं शासकों का नामोल्लेख किया गया है वह अत्यधिक प्रामाणिक है और उन पर सहसा अविश्वास नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत ग्रंथ सूची में सैकड़ो शासकों का उल्लेख है जिनमे केन्द्रीय, प्रान्तीय एवं प्रादेशिक शासकों के शासन का वर्णन मिलता है। इसी तरह इन प्रशस्तियों में अनेकों ग्राम एवं नगरों का भी उल्लेख मिलता है जो इतिहास की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

इस भाग मे राजस्थान के विभिन्न नगरों एवं ग्रामो में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरों में संग्रहीत ४५ शास्त्र भण्डारो की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचय दिया गया है। ये शास्त्र भण्डार छोटे बडे सभी स्तर के हैं। कुछ ऐसे ग्रंथ भण्डार हैं जिनमे दो हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियों का संग्रह मिलता है तथा कुछ शास्त्र भण्डारों मे १०० से भी कम हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इन भण्डारो के अवलोकन के पश्चात् इतना कहा जा सकता है कि १५ वीं शताब्दी से लेकर १८ वीं शताब्दी तक ग्रंथों की प्रतिलिपि तथा उनके संग्रह का अत्यधिक जोर रहा। मुसलिम काल मे प्रतिलिपि की गयी पाण्डुलिपियो की सबसे अधिक संख्या है। ग्रंथ भण्डारों के लिये इन शताब्दियो को हम उनका स्वर्णकाल कह सकते है। आमेर, नागौर, अजमेर, सागवाडा, कामा, मोजमाबाद, बूंदी टोडारायसिंह, चम्पावती (चाटसू) आदि स्थानो के शास्त्र भण्डार इन शताब्दियो मे स्थापित किये गये और इन्ही स्थानो पर ग्रंथों की तेजी से प्रतिलिपि की गयी। यह युग भट्टारक संस्था का स्वर्ण युग था। साहित्य लेखन एवं उनकी सुरक्षा एवं प्रचार प्रसार मे जितना इन भट्टारको का योगदान रहा उतना योगदान किसी साधु संस्था एवं समाज का नही रहा। भट्टारक सकलकीर्ति से लेकर १८ वी शताब्दी तक होने वाले भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति तक इन भट्टारकों ने देश मे जबरदस्त साहित्य प्रचार किया और जन जन को इस ओर मोडने का प्रयास किया।

लेकिन राजस्थान मे महापंडित टोडरमल जी के क्रान्तिकारी विचारो के कारण इस संस्था को जबरदस्त आघात पहुंचा और फिर साहित्य लेखन का कार्य अवरुद्ध सा हो गया। जयपुर नगर ने सारे जैन समाज का मार्गदर्शन किया और यहा पर होने वाले पं० दौलतराम कासलीवाल, पं० टोडरमल, भाई रायमल्ल, पं० जयचन्द छाबड़ा, पं० सदासुखदास कासलीवाल जैसे विद्वानो की कृतियो की पाण्डुलिपिया तो होती रही किन्तु प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी राजस्थानी भाषा कृतियों की सर्वथा उपेक्षा कर दी गयी। यही नहीं ग्रंथों की सुरक्षा की ओर भी कोई ध्यान नही दिया गया। और हमारी इसी उपेक्षा वृत्ति से ग्रंथ भण्डारों के ताले लग गये। सैकडों ग्रंथ चूहों और दीमकों के शिकार हो गये और संस्कृत एवं प्राकृत की हजारो पाण्डुलिपियों को नहीं समझ सकने के कारण जल प्रवाहित कर दिया गया।

लेकिन गत २५-३० वर्षों से समाज मे एक पुनः साहित्यिक चेतना जाग्रत हुई और साहित्य सुरक्षा एव उसके प्रकाशन की ओर उसका ध्यान जाने लगा। यही कारण है कि आज सारे देश में पुनः जैन ग्रंथाकारो के ग्रंथ सूचियों की मांग होने लगी है। क्योंकि प्रादेशिक भाषाओं का महत्वपूर्ण सग्रह आज भी इन्ही भण्डारो में सुरक्षित है। विश्वविद्यालयों में जैन आचार्यो एवं उनके साहित्य पर रिसर्च होने लगी है क्योंकि आज के विद्वान् एवं शोधार्थी साम्प्रदायिकता की परिधि से निकल कर कुछ काम करना चाहता है। इसलिये ऐसे समय में ग्रंथ सूचियो का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य है। प्रस्तुत ग्रंथ सूची में राजस्थान के जिन शास्त्र भण्डारों का विवरण दिया गया है उनका परिचय निम्न प्रकार है—

शास्त्र भण्डार भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर

भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर का शास्त्र भण्डार राजस्थान के प्राचीनतम ग्रंथ भण्डारों मे से एक है। इस ग्रंथ भण्डार की स्थापना कब हुई थी इसकी तो अभी तक निश्चित खोज नहीं हो सकी है किन्तु यदि भट्टारको की गादी के साथ शास्त्र भण्डारो की स्थापना का सबध जोडा जावे तो यहां का शास्त्र भण्डार १२ वीं शताब्दी मे ही स्थापित हो जाना चाहिये, ऐसी हमारी मान्यता है। क्योंकि सवत ११६८ मे भट्टारक विशाल कीर्ति प्रथम भट्टारक के रूप मे यहां की गादी पर बैठे थे। इसके पश्चात् १६ वी शताब्दी से तो अजमेर भट्टारको का पूर्णतः केन्द्र बन गया। इन भट्टारकों ने पाण्डुलिपियो के लिखने लिखाने मे अत्यधिक योग दिया और इस भण्डार की अभिवृद्धि की ओर खूब कार्य किया।

इस भण्डार को सर्व प्रथम स्व० श्री जुगलकिशोरजी मुख्तार एव प० परमानन्दजी शास्त्री ने वहा कुछ समय ठहरकर देखा था किन्तु वे इस की ग्रंथ सूची नही बना पाये इसलिए इसके पश्चात् दिसम्बर १६५८ में हम लोग वहां गये और पूरे आठ दिन तक ठहर कर इस भण्डार की ग्रंथ सूची तैयार की।

इस भण्डार मे २०१५ हस्तलिखित ग्रंथ एव गुटके हैं। कुछ ऐसे अपूर्ण एव स्फुट पत्र वाले ग्रंथ भी है जो सन्दूको मे भरे हुए हैं। लेकिन समयाभाव के कारण उन्हे नही देखा जा सका। शास्त्र भण्डार में सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एव हिन्दी इन चारो भाषाओं के ही अच्छे ग्रंथ है। इनमे प्राचीन पांडुलिपि समयसार प्राभृत की है जो सवत् १४६३ की लिखी हुई है। यह प्राकृत भाषा का ग्रंथ है और आचार्य कुन्दकुन्द की मौलिक कृति है। इसके अतिरिक्त आत्मानुशासन टीका (प्रभाचन्द्राचार्य), हरिवंश पुराण (ब्रह्म जिनदास) सागार धर्मामृत (आशाधर), धर्मपरीक्षा (अमितगति), सुकुमाल चरित्र (भ० सकलकीर्ति) की प्राचीन पाण्डुलिपिया है। महा प० आशाधर का 'अध्यात्म रहस्य' एव आतमसार सम्बोध (कृष्णदास), त्रिभुवनस्तोत्र (सधारो) पासचरिउ (तेजपाल) की ऐसी पाण्डुलिपिया है जो प्रथम बार इस भण्डार मे उपलब्ध हुई है। हिन्दी की कितनी ही ऐसी कृतिया उपलब्ध हुई हैं जो साहित्यक की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। भगवतीदास की रचनाए जिनमे 'सीतासतु' 'शील बत्तीसी', राजमती गीत, अर्गलपुर जिन वंदना, राजावली, 'बनजारा गीत 'राजमती नेमीश्वररास' के नाम उल्लेखनीय है, और एक ही गुटके मे उपलब्ध हुई है। ठाकुर कवि का शांति पुराण (सवत् १६५२) हिन्दी का एक अच्छा काव्य है वेल्ह कवि का 'बुद्धि प्रकाश' तथा बूचराज का 'भुवनकीर्ति गीत' एव 'धर्मकीर्ति गीत' इतिहास की दृष्टि से भी अच्छी रचनाए है। इसके अतिरिक्त भण्डार मे 'सामुद्रिक पुरुष लक्षण' की पाण्डुलिपि है, जिसकी लेखक प्रशस्ति सवत् १७९३ भादवा सुदी १४ की है और उसमे यह लिखा हुआ है कि इस प्रति को जोबनेर मे पडित टोडरमल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। इससे महा पं० टोडरमलजी के

जीवन एवं आयु के सम्बन्ध में विशेष प्रकाश पड़ता है। यदि इस प्रशस्ति का सम्बन्ध प० टोडरमलजी से ही है तो फिर टोडरमलजी की आयु के सम्बन्ध में सभी मान्यताए (धारणाएं) गलत सिद्ध हो जाती हैं। यदि सवत् १७९३ में पंडितजी की आयु १५-१६ वर्ष की भी मान लें जावे तो उनके जीवन की नयी कहानी प्रारम्भ हो जाती है, और उनकी आयु २५-२६ वर्ष की न रहकर ५० वर्ष से भी ऊपर पहुंच जाती है लेकिन अभी इस की खोज होना शेष है।

अलवर

अलवर प्रान्त का नाम पहिले मत्स्य प्रदेश था जो महाभारत कालीन राजा विराट का राज्य था। मछेरी के नाम से अब भी यहा एक ग्राम है। जो मत्स्य का ही अपभ्रंश शब्द है। यही कारण है कि राजस्थान निर्माण के पूर्व अलवर, भरतपुर, धोलपुर और करौली राज्यों के एकीकरण के पश्चात् इस प्रदेश का नाम मत्स्य देश रखा गया था। १६ वीं शताब्दी के पूर्व अलवर भी जयपुर के राज्य में सम्मिलित था लेकिन महाराजा प्रतापसिंह ने अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया और उसका अलवर नाम दिया। अलवर नगर और देहली जयपुर के मध्य में बसा हुआ है।

जैन साहित्य और संस्कृति का भी अलवर प्रदेश अच्छा केन्द्र रहा है। इस प्रदेश मे अलवर के अतिरिक्त तिजारा, अजबगढ़, राजगढ़, आदि प्राचीन स्थान हैं और जिनमे शास्त्र भण्डार भी स्थापित हैं। यहां ७ मन्दिर है और सभी में ग्रंथ भण्डार है। सबमे अधिक ग्रंथ खण्डेलवाल पंचायती मंदिर एवं अग्रवाल पचायती मंदिर मे है दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मंदिर मे भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र की स्वर्णाक्षरी प्रतियां है जो कला की दृष्टि से उल्लेखनीय है। जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह द्वारा लिखित आयुर्वेदिक ग्रंथ 'अमृतसागर' की भी एक उत्तम प्रति है इसका लेखन काल स० १७९१ है। खण्डेलवाल पचायती मंदिर के शास्त्र भण्डार मे २११ हस्तलिखित ग्रंथ तथा ४६ गुटके हैं जिनमें अध्यात्म बारहखडी (दौलतराम कासलीवाल), यशोधर चरित (परिहानन्द) राजवार्तिक (भट्टाकलंक) की प्रतियां विशेषत: उल्लेखनीय है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मंदिर दूनी

जयपुर से देवली जाने वाली सड़क पर स्थित दूनी एक प्राचीन कस्बा है। यह टोंक से १२ मील तथ देवली से ६ मील है। जयपुर राज्य का यह जागीरी गाव था जिसके ठाकुर रावराजा कहलाते थे। यहां एक दि० जैन मंदिर है। मंदिर के एक भाग पर एक जो लेख अंकित है उसके अनुसार इस मन्दिर का निर्माण सं० १५८५ मे हुआ था और इसीलिये यहां का ग्रंथ भण्डार भी उसी समय का स्थापित किया हुआ है। यहा के ग्रंथ भण्डार में १४३ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। जिनमे अधिकांश ग्रंथ हिन्दी भाषा के है। ग्रंथ भण्डार में सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि संवत् १५०० मे लिपि की हुई जिनदत्त कथा है। विद्यासागर की हिन्दी रचनाएं भी यहां संग्रहीत हैं जिनमे सोलह स्वप्न, जिनराज महोत्सव, सप्तव्यसन सवैया, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी तरह तानुशाह का झूलना, गग कवि का 'राजुल का बारह मासा' हिन्दी की अज्ञात रचनाएं हैं।

गंग कवि पर्वत धर्मार्थी के पुत्र थे। भट्टारक शुभचन्द्र के जीवधर स्वामी चरित्र की सवत् १६१५ मे लिखी हुई पाण्डुलिपि भी उल्लेखनीय है। बाग कवि कृत कलियुगचरित्र (संवत् १६७४) की हिन्दी की अच्छी कृति है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बघेरवाल मंदिर आवां

टोंक प्रांत का आवां एक प्राचीन नगर है। साहित्य एवं संस्कृति की दृष्टि से १६-१७ वीं शताब्दी मे यह गौरव पूर्ण स्थान रहा। चारो ओर छोटी २ पहाड़ियो के मध्य मे स्थित होने के कारण जैन साधुओं के लिये चिन्तन करने का यह एक अच्छा केन्द्र रहा। संवत् १५६३ में यहा मडलाचार्य धर्मकीर्ति के नेतृत्व मे एक बिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव सपन्न हुआ था जिसका एक विस्तृत लेख मन्दिर मे अंकित है। लेख मे सोलकी वश के महाराजा सूर्यसेन के शासन की प्रशंसा की गयी है इसी लेख मे महाराजा पृथ्वीराज के नाम के का उल्लेख हुआ है। नगर के बाहर समीप ही छोटी सी पहाडी पर भ० प्रभाचन्द्र, म० जिनचन्द्र, एव भ० धर्मचन्द्र की तीन निषेधिकाएं हैं जिनपर लेख भी अंकित है। ऐसी निषेधिकाए इस क्षेत्र मे प्रथम बार उपलब्ध हुई है जो अपने युग में भट्टारको के जबरदस्त प्रभाव की द्योतक है।

यहां दो मदिर हैं एक बघेरवाल दि० जैन मदिर तथा दूसरा खण्डेलवाल दि० जैन मदिर। दोनों ही मदिरों में हस्तलिखित ग्रथों का उल्लेखनीय सग्रह नही है केवल स्वाध्याय मे काम आने वाले ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं।

बूंदी

बूदी राजस्थान का प्राचीन नगर है जो प्राचीन काल के वृन्दावती में नाम से प्रसिद्ध था। कोटा से बीस मील पश्चिम की ओर स्थित बूदी एव झालावाड़ का क्षेत्र हाडोती प्रदेश कहलाता है। मुगलशासन मे बूदी के शासको का देश की राजस्थान की राजनीति मे विशेष स्थान रहा। साहित्यिक एव सांस्कृतिक दृष्टि स भी १७ वी १८ वीं एवं १९ वी शताब्दी मे यहां पर्याप्त गतिविधियां चलती रही। १७ वी शताब्दी में होने वाले जैन कवि पद्मनाभने बूंदी का निम्न शब्दो मे उल्लेख किया है—

> बूदी इन्द्रपुरी जखिपुरी कि कुबेरपुरी
> रिद्धि सिद्धि भरी द्वारिकि कासी घरीधर मे
> धौमहर धाम, घर घर विचित्र वाम
> नर कामदेव जैसे मेवे सुख सर मे
> वापी बाग वारुग बाजार वीथी विद्या वेद
> विबुध विनोद वानी बोलैं मुखि नर मे
> तहा करे राज भावस्यघ महाराज
> हिन्दू धर्मलाज पानसाहि आज कर मे

१८ वीं शताब्दी मे कवि दिलाराम और हीरा के नाम उल्लेखनीय है। बूदी नगर मे ५ ग्रन्थ भण्डार हैं जिनके नाम निम्न प्रकार है—

१ ग्रथ भण्डार दि जैन मदिर पार्श्वनाथ			
२	,,	,,	आदिनाथ
३	,,	,,	अभिनन्दन स्वामी
४	,,	,,	महावीर स्वामी
५	,,	,,	नागदी (नेमिनाथ)

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ

इस भण्डार में ३३४ हस्तलिखित ग्रंथ एव गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ संस्कृत एवं हिन्दी भाषा के हैं तथा पूजा, कथा प्रधान एव स्तोत्र व्याकरण विषयक हैं। इस भण्डार में ब्रह्म जिनदास विरचित' रामचन्द्र रास' की एक सुन्दर पाण्डलिपि है। इसी तरह भक्तामरस्तोत्र हिन्दी गद्य टीका की प्रति भी यहां उपलब्ध हुई है जो हेमराज कृत है।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मंदिर आदिनाथ

इस मन्दिर के ग्रथ भण्डार में १६८ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है इस सग्रह में ज्योतिष रत्नमाला की सबसे प्राचीन प्रतिलिपि है जो सवत् १५१६ में लिपि की गई थी। इसी तरह सागारधर्मामृत, त्रिलोकसार एव उपदेशमाला की भी प्राचीन प्रतियां है।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी

इस ग्रथ भण्डार मे ३६८ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। यह मदिर भट्टारकों का केन्द्र रहा था और यहां भट्टारक गादी भी थी, और सभवतः इसी कारण यहा ग्रथों का अच्छा सग्रह है। भण्डार मे अपभ्रंश भाषा की कृति 'करकण्डु चरिउ की' अपूर्ण प्रति है जो संस्कृत टीका सहित है। सग्रह अच्छा है तथा ग्रथो की प्राचीन प्रतियां भी उल्लेखनीय हैं।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मंदिर महावीर स्वामी

यह मन्दिर विद्वानो का केन्द्र रहा है। यहां के ग्रथो का अधिकाश संग्रह हिन्दी भाषा के ग्रंथों का है। इसमे पुराण, कथा, पूजा एव स्तोत्र साहित्य का बाहुल्य है। ग्रथो की सख्या गुटकों सहित १७२ है। अधिकाश ग्रथ १८-१९ वीं शताब्दी के हैं।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मंदिर नागदी (नेमिनाथ)

नेमिनाथ के मदिर में स्थित यह ग्रंथ भण्डार नगर का महत्वपूर्ण भण्डार है। यहां पूर्ण ग्रथों की सख्या २२२ है जो सभी अच्छी दशा मे है। लेकिन कुछ ग्रथ अपूर्ण अवस्था मे हैं जिनके पत्र इधर उधर हो गये हैं इस सग्रहालय मे 'माधवानल प्रबन्ध' जो गोकुल के सुत नरसी की हिन्दी कृति है, की सवत् १६५५ की अच्छी प्रति है। श्रेणिक चरित्र (र० काल स० १८२४-दौलत आसेरी) चतुर्गतिनाटक (डालूराम), आराधनासार (विमलकीर्ति), भागवत पुराण (श्रीधर) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस संग्रह मे एक गुटके मे बूचराज कवि की हिन्दी रचनाओं का अच्छा संग्रह है।

इस प्रकार बूंदी नगर में हस्तलिखित ग्रंथों का महत्वपूर्ण सग्रह है।

नैणवा

बूंदी प्रांत का नैणवा एक प्राचीन नगर है जो बूंदी से ३२ मील है और रोड से जुडा हुआ है। यह नगर प्रारम्भ से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। उपलब्ध हस्तलिखित ग्रथों में प्रद्युम्नचरित की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि

है जो सन् १४६१ में इसी नगर लिखी गई थी। भट्टारक सकलकीर्ति के गुरु भट्टारक पद्मनन्दि का नैणवा मुख्य स्थान था और सकलकीर्ति ने आठ वर्ष यहीं रह कर उनसे शिक्षा प्राप्त की थी। भट्टारक पद्मनन्दि द्वारा प्रतिष्ठापित संवत् १४७० की जिन प्रतिमायें टोंक के बाहर जैन नशियां में विराजमान हैं। इसी तरह सन् १७१६ में केशवसिंह कवि ने भद्रबाहुचरित की यहीं बैठ कर रचना की थी लेकिन वर्तमान में अतीत के महत्व को देखते हुए यहां कोई अच्छा संग्रह नहीं है। यहां तीन जैन मन्दिर हैं और इन तीनों में करीब २२० हस्तलिखित ग्रंथों का सग्रह है। लेकिन यहां पर प्रतिलिपि किये हुए ग्रंथ आज भी बूंदी, कोटा, दबलाना, इन्दरगढ, आमेर, जयपुर, भरतपुर एवं कामां के भण्डारो में उपलब्ध होते हैं। इससे यहां की साहित्यिक गतिविधियों का सहज ही में पता चल जाता है। पुष्पदन्त कवि का णायकुमारचरिउ एव सिद्धचक्रकथा की प्राचीन पाण्डुलिपियां जयपुर के ग्रंथ भण्डारो में सुरक्षित है। इसी तरह समाधितन्त्र भाषा-पर्वतधर्मार्थी (सन् १७१६), क्रियाकोश भाषा-किशनसिंह (सन् १७५७) पार्श्वपुराण भूधरदास (संवत् १८०६) समयसार नाटक-बनारसीदास (सन् १८४१) आदि कुछ ऐसी पाण्डुलिपियां हे जिनका लेखन इसी नगर मे हुआ था।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बघेरवाल मंदिर

यह यहा का प्राचीन एव प्रसिद्ध मन्दिर है जिसके शास्त्र भण्डार मे १०४ हस्तलिखित ग्रंथों का सग्रह है। सभी ग्रंथ सामान्य विषयो से सम्बन्धित है। इसी मण्डार मे एक गुटका भी है जिसमें हिन्दी की कितनी ही अज्ञात रचनाओं का संग्रह है। कुछ रचनाओं के नाम निम्न प्रकार हैं—

सारसीखामणिरास	भट्टारक सकलकीर्ति	१५ वी शताब्दी
नेमिराजमतिगीत	ब्रह्म यशोधर	१६ वी शताब्दी
पञ्चेन्द्रियगीत	जिनसेन	,,
नेमिराजमति वेलि	सिहदास	,,
वैराग्य गीत	ब्रह्म यशोधर	,,

शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरापंथी मन्दिर

इस शास्त्र भण्डार मे पुराण, पूजा, कथा एव चरित्र सम्बन्धी रचनाओ का सग्रह मिलता है। भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य श्री लालचन्द द्वारा निर्मित सम्मेदशिखर पूजा की एक प्रति है जो सवत् १८४२ मे टोडा नगर मे छन्दोबद्ध की गयी थी। यहा तीन मन्त्र हैं जो कपडे पर लिखे हुए है। ऋषिमडल मत्र सवत् १५८८ का लिखा हुआ है। तथा २२ $\times$ २२ इन्च वाले आकार का है। मत्र पर दी हुई प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री श्री श्री शुभचन्द्रसूरिभ्यो नम। अथ सवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्य गताब्द. सवत् १५८५ वर्षे कार्तिक बदी ३ शुभ दिने श्री रिषीमडल यत्र ब्रह्म अज्जूयोग्य प० अहर्दासेन शिष्य प० गजमल्लेन लिखित ग्रथ भवतु। वृहद् सिद्धचक्र यत्र का लेखन काल सवत् १६१८ है और धर्मचक्र यत्र का लेखन काल सवत् १६७८ है।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन अग्रवाल मन्दिर

इस मन्दिर मे कोई उल्लेखनीय सग्रह नहीं है। केवल ३७ पाण्डुलिपिया हैं जो पुराण एव कथा से सम्बन्धित है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मंदिर दबलाना

बूंदी से १० मील पश्चिम की ओर स्थित दबलाना एक छोटा सा गांव है, लेकिन हस्तलिखित ग्रंथों के सग्रह की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहा के भण्डार में ४२३ हस्तलिखित ग्रथों का सग्रह है। संग्रह से ऐसा पता लगता है कि यह सारा भण्डार किसी भट्टारक अथवा साधु के पास था। जिसने यहा लाकर मदिर में विराजमान कर दिया। भण्डार में काव्य, चरित, कथा, रास, व्याकरण, आयुर्वेद एव ज्योतिष विषयक ग्रथों का अच्छा संग्रह है। बूंदी, नैरावा, गोठड़ा, इन्दरगढ़, जयपुर, जोधपुर मागवाडा एव सीसवाली मे लिखे हुए ग्रंथो की प्रमुखता है। सबसे प्राचीन प्रति 'षडावश्यक बालावबोध' की पाण्डुलिपि है जो सवत् १५२१ में मालवा मडल की राजधानी उज्जैन मे लिखी गयी थी। सवत् १६९९ मे विरचित महेश कवि का आदिनाथ स्तवन, लालदास का इतिहाससार समुच्चय, साधु ज्ञानचन्द द्वारा रचित सिंहासन बत्तीसी, रामयश (केशवदास) रचना काल स० १६८०, आदि ग्रथो के नाम उल्लेखनीय है। भण्डार मे सग्रहीत पाण्डुलिपिया भी प्राचीन एव शुद्ध है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़

इन्दरगढ कोटा राज्य का प्राचीन शहर है। यह पश्चिमी रेलवे की बड़ी लाइन पर सवाईमाधोपुर और कोटा के मध्य में स्थित है। यहा के दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर मे हस्तलिखित ग्रथों का एक सग्रह उपलब्ध है शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित ग्रंथों की सख्या २८६ है। इसमे सिद्धान्त, स्तोत्र, आचार शास्त्र, से सम्बधित पाण्डुलिपियो की सख्या सर्वाधिक हैं कुछ ग्रथ ऐसे भी है। जिनका लेखन इस नगर मे हुआ था।

शास्त्र भण्डार दि० जैन अग्रवाल मन्दिर फतेहपुर (शेखावाटी)

फतेहपुर सीकर जिले का एक सुन्दरतम नगर है। चुरु से सीकर जाने वाली रेलवे लाइन पर यह पश्चिमी रेलवे का स्टेशन है। जैन साहित्य और कला की दृष्टि से फतेहपुर प्रारम्भ से ही केन्द्र रहा। देहली के भट्टारको का इस नगर से सीधा सम्पर्क रहा और वे यहा की व्यवस्था एव साहित्य सग्रह की ओर विशेष ध्यान देते रहे। यहा का शास्त्र भण्डार इन्ही भट्टारको की देन है। शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित ग्रथों एव गुटको की सख्या २७५ है। इनमे गुटको की सख्या ७३ हैं जिनमे कितने ही महत्वपूर्ण कृतिया संग्रहीत है। प०जीवनराम द्वारा लिखा हुआ यहा एक महत्वपूर्ण गुटका है जिसके १२२२ पृष्ठ है अभी तक शास्त्र भण्डारो मे उपलब्ध गुटको मे यह सबसे बड़ा गुटका हैं इसमे ज्योतिष एवं आयुर्वेद के पाठो का सग्रह हैं। जिनकी एक लाख श्लोक प्रमाण सख्या है। इस गुटके को लिखने में जीवनराम को २२ वर्ष (सवत् १८३८ से १८६०) लगे थे। इसका लेखन चुरु मे प्रारम्भ करके फतेहपुर मे समाप्त हुआ था। इसी तरह भण्डार मे एक "णमोकार महात्म्य कथा" की एक पाण्डुलिपि है जिसमे १३"×७½" आकार वाले ७८६ पत्र हैं। यह पाण्डुलिपि सचित्र है जिसमें ७६ चित्र हैं जो जैन पौराणिक पुरुषों के जीवन कथाओ पर तैयार किये गये है। ग्रथ भण्डार मे हस्तलिखित ग्रंथ की अधिक संख्या न होते हुये भी कितने ही हिन्दी के ग्रथ प्रथम बार उपलब्ध हुए जिनका परिचय आगे दिया गया है। यहां ग्रंथो की लिपि का कार्य भी होता था। त्रिलोकसार भाषा (सवत् १८०३), हरिवंश पुराण (संवत् १८२४) महावीर पुराण, समयसार नाटक एवं ज्ञानार्णव आदि की कितनी ही प्रतियों के नाम गिनाये जा सकते हैं। ग्रंथ सूची के कार्य मे नगर के प्रसिद्ध समाज सेवी एवं साहित्य प्रेमी श्री गिन्नीलाल जी जैन का सहयोग मिला उनके हम आभारी है।

भरतपुर

राजस्थान प्रदेश का भरतपुर एक जिला है । जो पर्याप्त समय तक साहित्यिक केन्द्र रहा था । व्रज भूमि भूमि मे होने के कारण यहा की भाषा भी पूर्णतः व्रज प्रभावित है । भरतपुर जिले में भरतपुर, डीग, कामा, बयाना, बैर, कुम्हेर आदि स्थानो मे हस्तलिखित ग्रंथों का अच्छा सग्रह है ।

भरतपुर नगर की स्थापना सूरजमल जाट द्वारा की गयी थी । १८ वी शताब्दी की एक कवि श्रुतसागर ने नगर की स्थापना का निम्न प्रकार वर्णन किया है —

देश काठहड बिरजि मै, वदनस्यघ राजान ।
ताके पुत्र है भलो, सूरिजमल गुणधाम ।
तेज पु ज रवि है मयो लाभ कीर्ति गुणवान ।
ताको सुजस है जगत मैं, तपै दूसरो भान ।
तिनहु नगर जुब माइयो नाम भरतपुर तास ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर

ग्रंथो के सकलन की दृष्टि से इस मन्दिर का शास्त्र भण्डार इस जिले का प्रमुख भण्डार है । सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुए हैं। शास्त्र भण्डार की स्थापना कब हुई थी, इसकी निश्चत तिथि का तो कही उल्लेख नही मिलता लेकिन मन्दिर निर्माण के बाद ही जिले के अन्य स्थानो मे लाकर यहा ग्रंथो का सग्रह किया गया । १६ वी शताब्दी मे ग्रंथो का सबसे अधिक सग्रह हुआ । भण्डार मे हस्तलिखित ग्रंथो की सख्या ८०१ है जिनमे सस्कृत एव हिन्दी भाषा के ही अधिक ग्रंथ है । सबमे प्राचीन पाण्डुलिपि वृहद तपागच्छ गुर्वावली की जो मुनि सुन्दरसूरि द्वारा निर्मित है तथा जिसका लेखन काल सवत् १४६० है । इसी भण्डार मे सवत् १६६२ की दूसरी पाण्डुलिपि है । इसके अतिरिक्त गगाराम कवि का सभाभूषण, हर्षचन्द का पद सग्रह, विश्वभूषण का जिनदत्त भाषा, जोधराज कासलीवाल का सुखविलास की पाण्डुलिपिया उल्लेखनीय है । इसी भण्डार मे भक्तामर स्तोत्र की एक सचित्र पाण्डुलिपि है जिसमे ५१ चित्र है । मध्यकाल की शैली पर चित्रित सभी चित्र कला, शैली एव कलम की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं । इस पाण्डुलिपि का लेखन काल सवत् १८२६ है । जैन कला की दृष्टि से कलाकारो को इस पर विशद प्रकाश डालना चाहिये ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर फौजूराम

भरतपुर नगर का यह दूसरा जैन मन्दिर है जहा हस्तलिखित ग्रंथों का सग्रह है । मन्दिर के निर्माण को अभी अधिक समय नही हुआ इसलिये हस्तलिखित ग्रंथो का सग्रह भी करीब १०० वर्ष पुराना है । इस भण्डार में ६५ हस्तलिखित ग्रंथो का सग्रह है । इसी भण्डार मे कुम्हेर के गिरावर्गसिंह की तत्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य टीका उल्लेखनीय कृति है । इसकी रचना सवत् १६३५ मे की गयी थी ।

शास्त्र भण्डार पंचायती मन्दिर, डीग (नया)

'डीग' पहिले भरतपुर राज्य की राजधानी थी । आज भी फव्वारों की नगरी के नाम से यह नगर प्रसिद्ध है । पचायती मन्दिर मे हस्तलिखित ग्रंथों का छोटा सा सग्रह है जिसमे ८१ पाण्डुलिपिया उपलब्ध होती

हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सेवाराम पाटनी इसी नगर के थे। उनके द्वारा रचित मल्लिनाथचरित की मूल पाण्डुलिपि इसी भण्डार मे सुरक्षित है इस चरित काव्य का रचना काल सवत् १८५० है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग

इस मन्दिर मे पहिले हस्तलिखित ग्र थो का अच्छा सग्रह था। लेकिन मन्दिर के प्रबन्धको की इस ओर उदासीनता के कारण अधिकाश सग्रह सदा के लिये समाप्त हो गया। वर्तमान में यहा ५६ ग्र थ तो पूर्ण एवं अच्छी स्थिति मे है और शेष अपूर्ण एवं त्रुटित दशा मे सग्रहीत है। भण्डार मे भगवती आराधना भी सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है। जिसका लेखन काल सवत् १५११ वैशाख शुक्ला सप्तमी है। इसकी प्रतिलिपि माडलगढ मे महाराणा कु भकर्ण के शासन काल मे हुई थी। इसके अतिरिक्त राजहंस के षट्दर्शन समुच्चय, अपभ्र ंश काव्य भविसयत्त चरित्र (श्रीधर), आत्मानुशासन (गुणभद्र) एव सकलकीर्ति के जम्बुस्वामी चरित की भी अच्छी पाण्डुलिपिया है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पुरानो डीग

पुरानी डीग का दि० जैन मन्दिर अत्यधिक प्राचीन है और ऐसा मालूम देता है कि इसका निर्माण १८ वीं शताब्दी पूर्व ही हो चुका होगा। मन्दिर की प्राचीनता को देखते हुए यहा अच्छा शास्त्र भण्डार होना चाहिए लेकिन नयी डीग एव भरतपुर बनने के पश्चात् यहा से बहुत से ग्र थ इधर उधर चले गये। वर्तमान में यहा के भण्डार मे हस्तलिखित ग्र थो की सख्या १०१ है लेकिन वे भी अच्छी तरह रखे हुए नही है। भण्डार के अधिकाश ग्र थ हिन्दी भाषा के हैं। नथमल कवि ने जिनगुणविलास (रचना काल स० १८६५) की एक पाण्डुलिपि यहा सवत् १८६६ की लिखी हुई है। मुकुन्ददास कवि के भ्रमरगीत की पाण्डुलिपि भी उल्लेखनीय है। कवि चुन्नीलाल की चौबीस तीर्थंकरपूजा की पाण्डुलिपि इस भण्डार मे सर्व प्रथम उपलब्ध हुई है। पूजा का रचना काल सवत् १९१४ है। इसकी रचना करौली मे हुई थी। इसी भण्डार मे खुशालचन्द्र काला की जन्म पत्री की प्रति भी सग्रहीत है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर कामा

राजस्थान के प्राचीन नगरो मे कामा नगर का भी नाम लिया जाता है। पहिले यह भरतपुर राज्य का प्रसिद्ध नगर था लेकिन आजकल तहसील का प्रधान कार्यालय है। उक्त मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत ग्र थो के आधार पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि यह नगर १७-१८ वीं शताब्दी मे साहित्यिक गतिविधियो का प्रमुख केन्द्र रहा। हिन्दी के प्रसिद्ध महाकवि दौलतराम कासलीवाल के सुपुत्र जोधराज कासलीवाल यहा आकर रहने लगे थे जिन्होंने सवत् १८८४ मे सुखविलास की रचना की थी। इसी तरह इनसे भी पूर्व पचास्तिकाय एव प्रवचनसार की हेमराज के हिन्दी टीका की पाण्डुलिपिया भी इसी भण्डार मे उपलब्ध होती है।

भण्डार मे गुटको सहित ५७८ पाण्डुलिपिया उपलब्ध होती है। ये पाण्डुलिपिया सस्कृत, प्राकृत अपभ्र श, हिन्दी, व्रज एव राजस्थानी भाषा मे सम्बधित रचनायें है। यह भण्डार महत्वपूर्ण एव अज्ञात तथा प्राचीन पाण्डुलिपियो की दृष्टि से राजस्थान के प्रमुख भण्डारो म से है। कामा नगर और फिर यह शास्त्र भण्डार साहित्यिक गतिविधियो का बडा भारी केन्द्र रहा। आगरा के पश्चात् और सागानेर एव जयपुर के पूर्व कामा मे ही एक अच्छा सग्रहालय था। जहा विद्वानो का समादर था इसलिए भण्डार मे सवत् १४०५ तक की पाण्डुलिपिया मिलती है। यहा की कुछ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपिया के नाम निम्न प्रकार है—

१. प्रबोध चिंतामणि	राजशेखर सूरि	संस्कृत	लिपि संवत् १४०५,
२. आत्मानुशासन टीक	प्रभाचन्द्र	,,	१४६१
३. आत्मप्रबोध	कुमार कवि	,,	१५४७
४. धर्मपंचविंशति	ब्रह्म जिनदास	अपभ्रंश	—
५. पार्श्व पुराण	पद्मकीर्ति	,,	१५७४
६. यशस्तिलक चम्पू	सोमदेव	सम्कृत	१४६०
७. प्रद्युम्न चरित	सधारू कवि	ब्रज भाषा	१४११ (रचना काल)

उक्त पाण्डुलिपियो के अतिरिक्त भंडार मे और भी अज्ञात, प्राचीन एवं अप्रकाशित रचनाएं हैं।

शास्त्र भण्डार अग्रवाल पंचायती मन्दिर कामां

इस मन्दिर में ग्रंथों की सख्या अधिक नही हैं। पहिले ये सभी ग्रंथ खण्डेलवाल पचायती मन्दिर मे ही थे लेकिन करीब ७० वर्ष पूर्व इस मन्दिर मे से कुछ ग्रंथ अग्रवाल पंचायती मन्दिर में स्थापित कर दिये गये। यहां ११५ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इस भण्डार में सधारू कवि कृत एक प्रद्युम्न चरित की भी पाण्डुलिपि है। जिसमें उसका रचना काल स० १३११ दिया हुआ है। किन्तु यह प्रति अपूर्ण है। इसी भण्डार में नवलराम कृत वर्द्धमान पुराण भाषा की पाण्डुलिपि है जो प्रथम बार उपलब्ध हुई है। इसका रचना काल सं० १६६१ है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह

टोडारायसिंह का प्राचीन नाम तक्षकगढ था। जैन ग्रंथो की प्रशस्तियों, शिलालेखो एवं मूर्ति लेखों में तक्षकगढ का काफी नाम आता है। इसकी स्थापना नागाओ ने की थी तथा १५ वी शताब्दी तक यह प्रदेश उदयपुर के महाराणाओ के अधीन रहा। जैन धर्म एवं साहित्य का तक्षकगढ से काफी सम्बन्ध रहा। बिजोलिया के एक लेख मे वर्णन आता है कि टोडानगर मे राजा तक्षक के पूर्वजो ने एक जैन मन्दिर बनाया था। जब से यह नगर सोलंकी वंशी राजपूतो के अधीन हुआ बस उसी समय से जैन साहित्य के विकास मे इन राजाओं का काफी योगदान रहा। महाराजा रामचन्द्र राव के शासनकाल मे यहा बहुत से ग्रंथों की प्रतिलिपिया सम्पन्न हुई। इनमें उपसकाध्ययन, णायकुमार चरिउ (सं० १६१२), यशोधर चरित्र (सं० १५५५) जम्बूस्वामी चरिउ (सं० १६१०) आदि ग्रंथो के नाम उल्लेखनीय है।

यहा दो मन्दिरो में हस्तलिखित ग्रंथों का सग्रह मिलता है। जिनका परिचय निम्न प्रकार है --

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह

नेमिनाथ स्वामी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे २१६ हस्तलिखित ग्रंथों का सग्रह है। इस भण्डार में सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि त्रिलोकसार टीका माधवचन्द्र त्रैवेद्य की है जो स० १५८८ सावण सुदी १४ की लिखी हुई है एक प्रवचनसार की संस्कृत टीका है जो स० १६०५ की है। इनके अतिरिक्त चौबीस तीर्थंकरपूजा (देवीदास), आस्रवत्रिभंगी टीका (प० सोमदेव), गुणस्थान चौपई (ब्र० जिनदास) रविव्रतकथा (विद्यासागर) आदि ग्रंथों की पाण्डुलिपिया भी उल्लेखनीय हैं। भण्डार में ऐसी कितनी ही रचनायें हैं जिनकी लिपि तक्षकपुर। (टोडारायसिंह) मे हुई थी। इससे इस नगर की सांस्कृतिक महत्ता का स्वतः ही पता चल जाता है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह

इस मन्दिर मे छोटा सा ग्रथ भण्डार है जिसमे केवल ८१ पाडुलिपिया हैं जिनमे गुटके भी सम्मिलित हैं। यहाँ विलास नामक रचनाओं का अच्छा सग्रह है जिनमे धर्म विलास (द्यानतराय) ब्रह्मविलास (भगवतीदास) सभाविलास, बनारसीविलास (बनारसीदास) आदि के नाम उल्लेखनीय है वैसे यहा पर ग्रंथों का सामान्य सग्रह है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर राजमहल

राजमहल बनास नदी के किनारे पर टोक जिले का एक प्राचीन कस्बा है। सवत् १६६१ मे जब महाराजा मानसिंह का आमेर पर शासन था तब राजमहल भी उन्ही के अधीन था। इसी सवत् मे राजमहल मे ब्रह्म जिनदास कृत हरिवशपुराण की प्रति का लेखन हुआ था।

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे २२५ हस्तलिखित पाण्डुलिपियां हैं जिनमे ब्रह्म जिनदास कृत करकण्डुरास, मुनि शुभचन्द्र की होली कथा, त्रिलोक पाटनी का इन्द्रिय नाटक आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। भण्डार मे हिन्दी के अधिक ग्रथ है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा

दि० जैन मन्दिर मे स्थित शास्त्र भण्डार नगर के प्रमुख ग्रथ सग्रहालयों मे से है। इस भण्डार में४०५ हस्तलिखित ग्रथो का अच्छा सग्रह है। वैसे तो यहा प्राकृत, सस्कृत, अपभ्रंश, राजस्थानी एव हिन्दी सभी भाषाओ के ग्रथो का सग्रह है लेकिन हिन्दी के ग्रथों की अधिकता है। १८वी शताब्दी में लिखे गये ग्रथों का यहाँ अधिक सग्रह है इससे यह प्रतीत होता है कि इस शताब्दी मे यहां का साहित्यिक वातावरण अच्छा था। महीपाल चरित्र (सवत् १८९६), पर्वरत्नावली (सवत् १८५१) समाधितन्त्र भाषा (संवत् १८३३) ज्ञानदर्पण-दीपचन्द्र (संवत् १८३५) आदि कितनी ही पाण्डुलिपिया यही लिखी गयी थी। भण्डार मे सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि आचार्य शुभचन्द्र के ज्ञानार्णव की है जिसका लेखन काल सवत् १५४८ है। पल्यविधानरास (भ० शुभचन्द्र) चन्द्रप्रभस्वामी विवाहलो (भ० नरेन्द्रकीर्ति) चेतावणी, रविव्रत कथा (मुनि सकलकीर्ति), परमादगी परशीलरास (कुमुदचन्द्र) नेमिविवाह पच्चीसी (बेगराज) आदि कुछ हिन्दी रचनायें इस शास्त्र भण्डार की महत्वपूर्ण कृतिया है जो भाषा, शैली एव काव्यात्मक दृष्टि से अच्छी रचनायें हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बयाना

राजस्थान प्रदेश का बयाना नगर प्राचीनतम नगरो में से है। यहाँ का किला चतुर्थ शताब्दि से पूर्व ही निर्मित हो चुका था। डा० अल्तेकर को यहा गुप्ता कालीन स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त हुई थी। जैन सस्कृति और साहित्य की दृष्टि से भी यह प्रदेश अत्यधिक समृद्ध रहा था। यहाँ के दि० जैन मन्दिर १० वी शताब्दि के पूर्व के माने जाते हैं इस दृष्टि से यहा के शास्त्र भण्डार भी प्राचीन होने चाहिये थे लेकिन मुसलिम शासको का यह प्रदेश सदैव कोप भाजन रहा इसलिये यहाँ बहुमुल्य ग्रंथ सुरक्षित नही रह सके।

पचायती मन्दिर का शास्त्र भण्डार यद्यपि ग्रन्थ सख्या की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन भण्डार पूर्ण व्यवस्थित है और प्रमुख रूप में हिन्दी पाण्डुलिपियो का अच्छा सग्रह है जिनकी संख्या १५० है।

इनमे व्रत विधान पूजा (हीरालाल लुहाडिया), चन्द्रप्रभपुराण (जिनेद्रभूषण) बाहुबलि छन्द (कुमुदचन्द्र) नेमिनाथ का छन्द (हेमचन्द) नेमिराजुलगीत (गुणचन्द्र) उदरगीत (छीहल) के नाम उल्लेखनीय है ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे १५१ पाण्डुलिपियो का सग्रह है । और जो प्राय. सभी हिन्दी भाषा की है । षोडशकारणाद्यापनपूजा (सुमतिसागर) समोसरन पाठ (लल्लूलाल-रचना स० १८३४) लीलावती भाषा (लालचन्द रचना स० १७३६) अक्षरबावनी (केशव दास रचना सवत् १७३६) हिन्दी पद (खान मुहम्मद) आदि पाण्डुलिपियो के नाम विशेषत. उल्लेखनीय है ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बैर

बयाना से पूर्व की ओर 'बैर' नामक एक प्राचीन कस्बा है, जो आजकल तहसील कार्यालय है । यह स्थान चारो ओर परकोटे से परिवेष्टित है । मुगल एव मरहठा शासन मे यह उल्लेखनीय स्थान माना जाता था । यहा एक दि० जैन मन्दिर है जिसका शास्त्र भण्डार पूर्णत. अव्यवस्थित है । कुछ कृतिया महत्वपूर्ण अवश्य हैं इसमे साधु-वदना (आचार्य कुवर जी रचना काल स० १६२४) अध्यात्मक बारहखडी (दौलतराम कासलीवाल) के अतिरिक्त प० टोडरमल, भगवतीदास, रामचन्द्र, खुशालचन्द्र आदि की कृतियो का अच्छा संग्रह है ।

उदयपुर

उदयपुर अपने निर्माण काल से ही राजस्थान की सम्मानित रियासत रही । महाराणा उदयसिंह ने इस नगर की स्थापना सवत १६२६ मे की थी । भारतीय सस्कृति एव साहित्य को यहा के शासको द्वारा जो विशेष प्रोत्साहन मिला वह विशेषत उल्लेखनीय है । जैन-धर्म और साहित्य के विकास की दृष्टि से भी उदयपुर का विशिष्ट स्थान है । चित्तौड के बाद मे इसे ही सभी दृष्टियो मे प्रमुख स्थान मिला । मेवाड के शासको ने भी जैन-धर्म सस्कृति एव साहित्य के प्रचार एव प्रसार मे अत्यधिक योग दिया और उन्ही के आदेश पर नगर मे मन्दिरो का निर्माण कराया गया । शास्त्र भण्डारो मे हस्तलिखित ग्रन्थों का सग्रह किया गया । इस नगर मे जिन ग्रन्थो की पाण्डुलिपिया की गयी वे आज राजस्थान के कितने ही शास्त्र भण्डारो मे सग्रहीत है । महाकवि दौलतराम कासलीवाल ने अपने जीवन की १५ शरद ऋतुए इसी नगर मे व्यतीत की थी । और जीवधर चरित, क्रियाकोश, श्रीपालचरित जैसी रचनाये इसी नगर मे रची थी । कवि ने वसुनन्दि श्रावकाचार मे, जीवधर चरित मे यहा का अच्छा उल्लेख किया है । यहा तीन मन्दिरो मे शास्त्र भण्डार स्थापित किये हुए मिलते है । जिनका परिचय निम्न प्रकार है ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन अग्रवाल मन्दिर

दि० जैन अग्रवाल मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित पाण्डुलिपियो का अच्छा सग्रह है जिनकी सख्या ३८८ है । इसमे हिन्दी के ग्रन्थो की सख्या सबसे अधिक है । पूज्यपाद की सर्वार्थसिद्धि की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है जो सवत् १३७० की है । इसकी प्रतिलिपि योगिनीपुर में हुई थी । महाकवि दौलतराम कासली-वाल का यह मन्दिर साहित्यिक केन्द्र था । उनके जीवधर चरित की मूल पाण्डुलिपि इसी भण्डार मे सुरक्षित है । इस शास्त्र भण्डार मे वर्धमान कवि के वर्धमानरास की एक महत्वपूर्ण पाण्डुलिपि है । इसके अतिरिक्त

सकलकयतिराम (जयकीर्ति) अजितनाथरास, अ विकारास (ब्र० जिनदास) श्रावकाचार (धर्मविनोद) पचकल्याणक पाठ (ज्ञानभूषण) चेतन-मोहराज सवाद (खेम सागर) आदि इस भण्डार की अलकृत प्रतिया हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर

इस शास्त्र भण्डार में १८५ हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह है जिनमें अधिकाश हिन्दी के ग्रन्थ हैं। इनमे नेमीनाथराम (ब्रह्म जिनदास) परमहस राम (ब्रह्म जिनदास) ब्रह्म विलास (भैया भगवतीदास) बणजारागीत (कुमुदचन्द्र) दानफल रास (ब्र० जिनदास) भविष्यदत्त रास (ब्र० जिनदास) रामरास (माधवदास) आदि के नाम विशेषत. उल्लेखनीय है। भण्डार मे भ० सकलकीर्ति की परम्परा के भट्टारकों एव ब्रह्मचारियो की अधिक कृतिया हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर संभवनाथ, उदयपुर

नगर के तीनों शास्त्रों मे इस मन्दिर का शास्त्र भण्डार सबसे प्राचीन, महत्वपूर्ण एव बडा है। भण्डार मे सग्रहीत सैकडो पाण्डुलिपिया अत्यधिक प्राचीन है एव उनकी प्रशस्तिया नवीन तथ्यों का उद्घाटन करने वाली है। तथा साहित्यिक दृष्टि से इतिहास को नयी दिशा देने वाली है। वैसे यहा के हस्तलिखित ग्रन्थों की सख्या ५२४ है लेकिन अधिकाश पाण्डुलिपिया १५ वी, १६ वीं, १७ वी, एव १८ वी शताब्दि की हैं। भ० ज्ञानभूषण, ब्र० जिनदास के ग्रन्थो की प्रतियो का उत्तम सग्रह है। भट्टारक सकलकीर्ति रास एक ऐतिहासिक कृति है जिसमे भ० सकलकीर्ति एव भुवनकीर्ति का जीवन वृत्त दिया हुआ है। आचार्य जयकीर्ति द्वारा रचित रचना "सीताशीलपताकागुणबेलि" की एक सुन्दर प्रति है जिसका रचना काल स० १६२४ है। इसी तरह ब्र० वस्तुपाल का रोहिणीप्रत (रचना सवत् १६५४) हरिवशपुराण-अपभ्र श (यश.कीर्ति) धर्मशर्माभ्युदय (महाकवि हरिचन्द्र) सवत् १५१४ णमोकाररास (ब्र० जिनदास) जसहरचरिउ टीका प्रभाचन्द्र (स० १५७४) आदि पाण्डुलिपियो के नाम उल्लेखनीय है। इसी शास्त्र भण्डार मे एक ऐसा गुटका भी है जिसमे ब्रह्म जिनदास की रचनाओ का प्रमुख सग्रह मिलता है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा

बसवा जयपुर प्रदेश का एक प्राचीन नगर है। इसमे हिन्दी के कितने ही विद्वानो ने जन्म लिया और अपनी कृतियो से हिन्दी भाषा के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन विद्वानों मे महाकवि प० दौलतराम कासलीवाल का नाम प्रमुख है। पडित जी ने २० से भी अधिक ग्र थो की रचना करके इस क्षेत्र में अपना एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। सेठ अमरचन्द बिलाला भी यही के रहने वाले थे। यहा कितनी ही हस्तलिखित ग्र थो की प्रतिलिपि हुई थी जो राजस्थान के विभिन्न भण्डारो मे एवं विशेषतः जयपुर के भण्डारो मे संग्रहीत हैं।

तेरहपथी मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे यद्यपि ग्र थों का सग्रह १०० से अधिक नही है किन्तु इस लघु संग्रह मे भी कितनी ही पाण्डुलिपियां उल्लेखनीय हैं। इनमें पार्श्वनाथस्तुति (पासकवि) राजनीति सवैय्या (देवीदास) अध्यात्म बारहखडी (दौलतराम) आदि रचनायें उल्लेनीय हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन पंचायती मंदिर बसवा

इसी तरह यहा का पचायती मदिर पुराना मदिर है जिसमें १२ वी शताब्दी की एक विशाल जिन प्रतिमा है। यहा कल्पसूत्र की दो पाण्डुलिपियां है जो स्वर्णाक्षरी हैं तथा सार्थक है। इनमे एक में ३६ चित्र तथा दूसरे में ४२ चित्र हैं। दोनों ही प्रतियां संवत् १५३६ एव १५२८ की लिखी हुई हैं। यहा पद्मनन्दि महाकाव्य की एक सटीक प्रति है जिसके टीकाकार प्रहलाद हैं। इस ग्रथ की प्रतिलिपि सवत् १७६८ में बसवा मे ही हुई थी। महाकवि श्रीधर की अपभ्रंश कृति भविसयत्त चरिउ की सवत् १४६२ की पाण्डुलिपि एव समयसार की तात्पर्यवृत्ति की संवत् १४४० की पाण्डुलिपि उल्लेखनीय है। प्राचीन काल मे यह भण्डार और महत्वपूर्ण रहा होगा ऐसी पूर्ण संभावना है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर भादवा

भादवा फुलेरा तहसील का एक छोटा सा ग्राम है। पश्चिमी रेलवे की रिवाडी फुलेरा ब्राच लाइन पर भैसलाना स्टेशन है। जहा से यह ग्राम तीन मील दूरी पर स्थित है। जैन दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान स्व० पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ का जन्म यही हुआ था। यहा के दि० जैन मन्दिर मे एक शास्त्र है जिसमे १५० से अधिक हस्तलिखित ग्रथो का संग्रह है।

शास्त्र भण्डार मे हिन्दी कृतियो की अच्छी सख्या है। इनमे द्यानतराय का धर्म विलास भैया भगवतीदास का 'ब्रह्म विलास' तथा धर्मदास का 'श्रावकाचार' के नाम विशेषतः उल्लेखनीय है। गुटको मे भी छोटी छोटी हिन्दी कृतियो का अच्छा सग्रह है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर डूंगरपुर

डूगरपुर नगर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एव सस्कृति का केन्द्र रहा। १५ वी शताब्दी मे जब से भट्टारक सकलकीर्ति ने यहा अपनी गादी की स्थापना की, उसी समय से यह नगर २-३ शताब्दियो तक भट्टारको एव समारोहो का केन्द्र रहा। संवत् १४८२ मे यहा एक भव्य समारोह मे सकलकीर्ति को भट्टारक के अत्यन्त सम्माननीय पद की दीक्षा दी गयी।

> चऊदय ब्यासीय स्रवति कुल दीपक नरपाल सघपति।
> डूगरपुर दीक्षा महोछव तीणि कीया ए।
> श्री सकलकीर्ति सह गुरि सुकरि दीधी दीक्षा आणदभरि।
> जय जय कार सयलि सचराचरए गगणार॥

भ० सकलकीर्ति के पश्चात् यहा भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति एव शुभचन्द जैसे महान् व्यक्तित्व के धनी भट्टारकों का यहा सम्मेलन रहा और इस प्रकार २०० वर्षों तक यह नगर जैन समाज की गतिविधियों का केन्द्र रहा। इसलिए नगरके महत्व को देखते हुए वर्तमान में जो यहा शास्त्र भण्डार है वह उतना महत्वपूर्ण नही है। यहा का शास्त्र भण्डार दि० जैन कोटडिया मन्दिर मे स्थापित किया हुआ है जिसमे हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या ५५३ है। जिनमे चन्दनमलयगिरि कथा, आदित्यवार कथा, एव राग रागनियों की सचित्र पाण्डुलिपियों है। इसी भण्डार मे ब्र० जिनदास कृत रामरास की पाण्डुलिपि है जो अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसके

अतिरिक्त ब्र० जिनदास को भी रासक कृतियों का यहां अच्छा संग्रह है। वेणीदास का सुकौशलरास, यशोधर चरित (परिहानन्द) सम्मेदशिखर पूजा (रामपाल) जिनदत्तराम (रत्नभूषणसूरि) रामायण छप्पय (जयसागर) आदि और भी पाण्डुलिपियों के नाम उल्लेखनीय हैं। यहा भट्टारकों द्वारा रचित रचनाओं का अच्छा संग्रह है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर मालपुरा

मालपुरा अपने क्षेत्र का प्राचीन नगर रहा था। तत्कालीन साहित्य एव पुरातत्व को देखने से मालूम होता है कि टोडारायसिंह (तक्षकगढ) एव चाटसू (चम्पावती) के समान ही मालपुरा भी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का अच्छा केन्द्र रहा। जयपुर के पाटोदी के मंदिर के शास्त्र भण्डार में एक गुटका संवत् १६१६ का है जो यही लिखा गया था। मालपुरा का दूसरा नाम द्रव्यपुर भी था। यहां सभी जैन मन्दिर विशाल ही नही किन्तु प्राचीन एव कला पूर्ण भी है तथा दर्शनीय हैं। ये मन्दिर नगर के प्राचीन वैभव की ओर संकेत करते है। यहा की दादाबाडी ओसवाल समाज का तीर्थस्थान के रूप में प्रसिद्ध है।

यहा तीन मन्दिरो में मुख्य रूप से शास्त्र भण्डार है। इनके नाम हैं चौधरियों का मन्दिर, आदिनाथ स्वामी का मन्दिर तथा तेरापथी मन्दिर। यद्यपि इन मन्दिरो मे ग्रंथों की सख्या अधिक नहीं है किन्तु कुछ पाण्डुलिपिया अवश्य उल्लेखनीय हैं। इनमे ब्रह्म कपूरचन्द का पार्श्वनाथरास तथा हर्षकीर्ति के पद है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर करौली

करौली राजस्थान की एक रियासत थी। आजकल यह सवाईमाधोपुर जिले का उपजिला है। १८ वीं १९ वी शताब्दी मे यहा अच्छी साहित्यिक गतिविधिया रहीं। नथमल बिलाला, विनोदीलाल, लालचन्द आदि कवियो का यह नगर केन्द्र रहा था। यहा दो मन्दिर है और दोनो मे ही शास्त्रो का सग्रह है। इन मन्दिरों के नाम हैं दि० जैन पचायती मन्दिर एव दि० जैन सौगाणी मन्दिर। इन दोनों ग्रंथ भण्डारो मे २७५ हस्तलिखित पाण्डुलिपियो का सग्रह है। अधिकाश हिन्दी की पाण्डुलिपिया हैं। अपभ्रंश भाषा की वराग चरित्र की पाण्डुलिपि भी यहा सग्रह है। सवत् १८४८ मे समोसरनमगल चौबीसी पाठ की रचना करौली मे हुई थी। इसकी छन्द सख्या ४०५ है। यह संभवत नथमल बिलाला की कृति है। ग्रथ भण्डार पूर्णत. व्यवस्थित एवं उत्तम स्थिति मे है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बीस पथी मंदिर दौसा

दौसा ढूंढाहड प्रदेश का प्राचीन नगर रहा है। यहा पहिले मीणा जाति का शासन था और उसके पश्चात् यह कछवाहा राजपूतो की राजधानी रहा। इसका प्राचीन नाम देवगिरि था। यहा दो जैन मन्दिर है और दोनों मे ही हस्तलिखित ग्रथो का सकलन है।

इस मन्दिर के प्रमुख वेदी के पिछले भाग मे अंकित लेखानुसार इस मन्दिर का निर्माण सवत् १७०१ मे हुआ था। यहा के शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित ग्रथो की सख्या १७७ है जिनमे गुटके भी सम्मिलित हैं। अधिकांश ग्रंथ हिन्दी भाषा के हैं जिनमे परमहस चोपई (ब्र० रायमल्ल) श्रावकाचार रास (जिणदास) यशोधर चरित्र (संस्कृत–पूर्णदेव) सम्यक्त्वकौमुदी भाषा (मुनि दयानन्द) रामयश रसायन (केशराज) आदि ग्रथों के नाम विशेषत: उल्लेखनीय है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित ग्रन्थो की सख्या १५० है लेकिन सग्रह की दृष्टि से भण्डार की सभी पाण्डुलिपियां महत्वपूर्ण हैं। अधिकाश ग्रन्थ अपभ्रंश एवं हिन्दी के हैं। अपभ्रंश ग्रन्थों में जिणयत्त चरिउ (लाखू) सुकुमाल चरिउ (श्रीधर) वड्ढमाणकहा (जयमित्तहल) भविसयत्तकहा (धनपाल) महापुराण (पुष्पदत) के नाम उल्लेखनीय हैं। हिन्दी भाषा के ग्रन्थो मे चौदहगुणस्थान चर्चा (अखयराज श्रीमाल) बिल्हण चौपई (सारंग) प्रियमेलक चौपई (समयसुन्दर) सिंहासन बत्तीसी (हीर कलश) की महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियां हैं। इसी भण्डार में तत्वार्थसूत्र की एक सस्कृत टीका सवत् १५७७ की पाण्डुलिपि भी उपलब्ध है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

जयपुर के अधिकाश शास्त्र भण्डारो की सूची इससे पूर्व चार भागो मे प्रकाशित हो चुकी है लेकिन अब भी कुछ शास्त्र भण्डार बच गये हैं। दि० जैन मन्दिर लश्कर नगर का प्रसिद्ध एव विशाल मन्दिर है। यहा का शास्त्र भण्डार भी अच्छा है तथा सुव्यवस्थित है। पाण्डुलिपियो की सख्या ८२८ है। सग्रह अत्यधिक महत्व पूर्ण है। यह मन्दिर वर्षो तक साहित्यिक गतिविधियो का केन्द्र रहा है। बख्तराम साह ने अपने बुद्धिविलास एव मिथ्यात्व खडन की रचना इसी मन्दिर मे बैठ कर की थी। केशरीसिंह ने भी वर्द्धमान पुराण (सवत् १८२५) की भाषा टीका इसी मन्दिर में पूर्ण की थी। यह मन्दिर बीसपथ आम्नाय वालो का आश्रय दाता था। यहा सस्कृत ग्रन्थों का भी अच्छा संग्रह उपलब्ध होता है। प्रमाणनयतत्वालोकालकार टीका (रत्नप्रभाचार्य) आत्मप्रबोध (कुमार कवि) आप्तपरीक्षा (विद्यानन्दि) रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका (प्रभाचन्द्र) शान्तिपुराण (प० अशग) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। भट्टारक ज्ञानभूषण के आदीश्वरफाग की सवत् १५८७ की एक सुन्दर प्रति यहा के संग्रह में है।

विषय विभाजन

प्रस्तुत ग्रन्थ सूची मे हस्तलिखित ग्रन्थो का २४ विषयो मे विभाजित किया गया है। धर्म, आचार शास्त्र, सिद्धान्त एव स्तोत्र तथा पूजा विषयो के अतिरिक्त पुराण, काव्य, चरित, कथा, व्याकरण, कोश, ज्योतिष, आयुर्वेद, नीति एव सुभाषित विषयो के आधार पर ग्रन्थो की पाण्डुलिपियो का परिचय दिया गया है। इस बार संगीत रास, फागु, वेलि एव विलास जैसे पूर्णत. साहित्यिक विषयो से सम्बन्धित ग्रन्थो का विशेष विवरण मिलेगा। जैन भण्डारो मे इन विषयो के सार्वजनिक उपयोग के ग्रन्थो की उपलब्धि से इन भण्डारो की सहज उपादेयता सिद्ध होती है। साहित्य की ऐसी एक भी विधा नही है जिस पर इन भण्डारो के ग्रन्थ नही मिलते हो इसलिये शोधार्थियों के लिये तो ये शास्त्र भण्डार साक्षात सरस्वती के वरदान के समान है। चाहे कोई विषय हो अथवा साहित्य की कोई विधा, ग्रन्थ भण्डारो मे उन पर हस्तलिखित ग्रन्थ अवश्य मिलेगे। रास, फागु, वेलि, गीत, विलासात्मक कृतियों के अतिरिक्त चौढालिया, अष्टक, बारहमासा, द्वादशा, पच्चीसी, छत्तीसी, शतक, सतसई, आदि पचासो सख्यावाचक काव्यों का अपरिमित साहित्य इन शास्त्र भण्डारो मे उपलब्ध होते हैं। यही नही कुछ ऐसे काव्यात्मक विषय हैं जिन पर अन्यत्र इतने विशाल रूप मे साहित्य मिलना कठिन है। इनमे धमाल एव सवादात्मक प्रमुख हैं। जैन कवियो ने अपने काव्यो की लोक प्रियता बढाने के लिये उनको नये नये नाम दिये। यह सब उनकी सूझ-बूझ का ही परिणाम है।

सैंकडो ऐसी कृतियां हैं जो अभी तक प्रकाश मे नहीं आ सकी हैं और जो कुछ कृतिया प्रकाश में आयी है उनकी भी प्राचीनतम पाण्डुलिपि का विवरण हमें ग्रन्थ सूची के इस भाग में मिलेगा। किसी भी ग्रन्थ की एक से अधिक पाण्डुलिपि मिलना नि.सन्देह ही उसकी लोकप्रियता का द्योतक है। क्योंकि उस युग में ग्रन्थो का लिखवाना, शास्त्र भण्डारों में विराजमान करना एव उन्हे जन जन को पढने के लिये देना जैनाचार्यों की एक विशेषता रही थी। ये ग्रन्थ भण्डार हमारी सतत साधना के उज्ज्वल पक्ष हैं।

महत्त्वपूर्ण साहित्य की उपलब्धि

प्रस्तुत ग्रन्थ सूची मे सैकडो ऐसी कृतिया आयी है जिनका हमें प्रथम बार परिचय प्राप्त हो रहा है। ये कृतिया मुख्यत सस्कृत, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा की हैं। इनमे भी सबसे अधिक कृतिया हिन्दी की हैं। वास्तव मे जैन कवियो ने हिन्दी के विकास मे जो योगदान दिया उसका अभी कुछ भी मूल्यांकन नही हो सका है। अकेले ब्रह्म जिनदास की ६० से भी अधिक रचनाओ का विवरण इस सूची मे मिलेगा। इसी तरह और भी कितने ही कवि हैं जिनकी बीस से अधिक रचनाएं उपलब्ध होती हैं लेकिन अभी तक उनका विशद परिचय हम नही जान सके। यहा हम उन सभी कृतियों का सक्षिप्त रूप से परिचय उपस्थित कर रहे हैं जो हमारी दृष्टि में मे नयी अथवा अज्ञात रचनाय हैं। हो सकता है उनमे से कुछ कृतियो का परिचय विद्वानो को मालूम हो। यहां इन कृतियों का परिचय मुख्यत विषयानुसार दिया जा रहा है।

१ कर्मविपाक सूत्र चौपई (८१)

प्रस्तुत कृति किस कवि द्वारा लिखी गयी थी इसके बारे मे रचना में कोई उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन कर्म सिद्धान्त पर यह एक अच्छी कृति है जिसमे २४११ पद्यो में विषय का वर्णन किया गया है। चौपई की भाषा हिन्दी है जिस पर गुजराती का प्रभाव है। इसकी एकमात्र पाण्डुलिपि अजमेर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है।

२ कर्मविपाक रास (८२)

कर्म सिद्धान्त पर आधारित रास शैली मे निबद्ध यह दूसरी रचना है जिसकी दो पाण्डुलिपिया राजमहल (टोंक) के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध होती हैं। रचना काफी बडी है तथा इसका रचना काल सवत् १८२४ है।

३ चौदह गुण स्थान वचनिका (३३२)

अखयराज श्रीमाल १८ वीं शताब्दि के प्रमुख हिन्दी गद्य लेखक थे। 'चौदह गुण स्थान वचनिका' की कितनी ही पाण्डुलिपिया मिलती हैं लेकिन उनका आकार अलग अलग है। दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा में इसकी एक पाण्डुलिपि है जिसमे ३६८ पत्र हैं। इसमे गोम्मटसार, त्रिलोकसार एवं लब्धिसार के आधार पर गुणस्थानों सहित अन्य सिद्धान्तो पर चर्चा की गयी है। वचनिका की भाषा राजस्थानी है। अखयराज ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार दोहा लिख कर उसकी समाप्ति की है।

चौदह गुणस्थान कथन, भाषा सुनि सुख होय।
अखयराज श्रीमाल ने, करी जथामति जोय ।।

४ चौबीस गुणस्थान चर्चा (३४१)

दादूपथ के साधु गोविन्द दास को इस कृति की उपलब्धि टोडारायसिंह के दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे हुई है। गोविन्द दास नासरदा मे रहते थे और उसी नगर में सवत १८८१ फागुण सुदी १० के दिन इसे समाप्त की गयी थी। रचना अधिक बडी नही है लेकिन कवि ने लिखा है कि संस्कृत और गाथा (प्राकृत) को समझाना कठिन है इसलिये उसने हिन्दी में रचना की है। प्रारम्भ में उसने पच परमेष्टि को नमस्कार किया है।

५ तत्वार्थ सूत्र भाषा (५३०)

तत्वार्थ सूत्र जैनधर्म का सबसे श्रद्धास्पद ग्रन्थ है। संस्कृत एव हिन्दी भाषा में इस पर पचासो टीकाये उपलब्ध होती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची मे २०० से अधिक पाण्डुलिपिया आयी है जो विभिन्न विद्वानो की टीकाओ के रूप में है।

प्रस्तुत कृति साहिबराम पाटनी की है जो बूंदी के रहने वाले थे तथा जिन्होंने तत्वार्थ सूत्र पर विस्तृत व्याख्या सवत १८१८ मे लिखी थी। बयाना के शास्त्र भाण्डार से जो पाण्डुलिपि उपलब्ध हुई है वह भी उसी समय की है जिस वर्ष पाटनी द्वारा मूल कृति लिखी गयी थी। कवि ने अपने पूर्ववर्ती विद्वानो की टीकाओ का अध्ययन करने के पश्चात् इसे लिखा था।

६ त्रिभंगी सुबोधिनी टीका (६२३)

त्रिभंगीसार पर यह पडित आशाधर की सस्कृत टीका है जिसकी दो प्रतिया जयपुर के दि० जैन मन्दिर, लश्कर के शास्त्र भण्डार में सग्रहीत है। नाथूराम प्रेमी ने आशाधर के जिन १६ ग्रन्थो का उल्लेख किया है उसमे इस रचना का नाम नही है। टीका की जो दो पाण्डुलिपिया मिली है उनमे एक सवत् १५८१ की लिखी हुई है तथा दूसरी प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् जोधराज गोदीका की स्वय की पाण्डुलिपि है जिसे उन्होंने मालपुरा मे स्थित किसी श्वेताम्बर बन्धु से ली थी।

धर्म एवं आचार शास्त्र

७ क्रियाकोश भाषा (६६६)

यह महाकवि दौलतराम कासलीवाल की रचना है जिसे उन्होंने सवत १७९५ मे उदयपुर नगर मे लिखा था। प्रस्तुत पाण्डुलिपि स्वय महाकवि की मूल प्रति है जो इतिहास एव साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उस समय कवि उदयपुर नगर में जयपुर महाराजा की ओर से वकील की पद पर नियुक्त थे।

८ चतुर चितारणी (१०५८)

प्रस्तुत लघु कृति महाकवि दौलतराम की कृति है जिसकी एक मात्र पाण्डुलिपि उदयपुर के दि० जैन अग्रवाल मन्दिर मे उपलब्ध हुई है। महाकवि का यही मन्दिर काव्य साधना का केन्द्र था। रचना का दूसरा नाम भवजलतारिणी भी दिया हुआ है। यह कवि की सबोधनात्मक कृति है।

९ ब्रह्म बावनी (१४५७)

ब्रह्म बावनी एक आध्यात्मिक कृति है। इसके कवि निहालचन्द है जो सम्भवतः बंगाल में किसी कार्यवश गये थे और वहीं मकसूदाबाद में उन्होंने इसकी रचना की थी। वैसे कवि कानपुर के पास की छावनी में रहते थे इनकी एक और कृति नयचक्रभाषा प्रस्तुत सूची के २३३४ संख्या पर आयी है जिसमें कवि ने अपना संक्षिप्त परिचय दिया हैं। नयचक्रभाषा संवत् १८६७ की कृति है इसलिये ब्रह्म बावनी इसके पूर्व की रचना होनी चाहिये क्योंकि उन्होंने उसे धैर्य के साथ बैठ कर लिखने का उल्लेख किया है। बावनी एक लघुकृति है लेकिन आध्यात्मिक रस से ओत प्रोत है।

१० मुक्ति स्वयंबर (१५३६)

मुक्ति स्वयंबर एक रूपक काव्य है जिसमे मोक्ष रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिये स्वयंबर रचे जाने का रूपक बांधा गया है। यह रचना काफी बडी है तथा ३१८ पृष्ठों मे समाप्त होती है। रूपककार वेणीचन्द कवि है जिन्होंने इसे लश्कर मे प्रारम्भ किया था और जिसकी समाप्ति इन्दौर नगर में हुई थी। वैसे कवि ने अपने को फलटन का निवासी लिखा है और मलूकचन्द का पुत्र बतलाया है। रूपक काव्य का रचना काल संवत् १६३४ है। इस प्रकार कवि ने हिन्दी जैन रूपक काव्यों की परम्परा में अपनी एक रचना और जोड़ कर उसके विकास मे योग दिया है।

११ वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा (१६६४)

वसुनन्दि श्रावकाचार पर प्रस्तुत भाषा वचनिका ऋषभदास कृत है जो झालरापाटन (राजस्थान) के निवासी थे। कवि हूमड जाति के श्रावक थे। इनके पिता का नाम नाभिदास था। इस ग्रन्थ की रचना करने में आमेर के भट्टारक देवेन्द्र कीर्त्ति की प्रेरणा का कवि ने उल्लेख किया है। भाषा टीका विस्तृत है जो ३४७ पृष्ठों मे पूर्ण होती है। इसका रचनाकाल संवत १९०७ है जिसका उल्लेख निम्न प्रकार हुआ है—

> ऋषि पूरण नव एक पुनि, माघ पूनि शुभ श्वेत।
> जया प्रथा प्रथम कुजवार, मम मगल होय निकेत॥

कवि ने झालरापाटन स्थित शांतिनाथ स्वामी तथा पार्श्वनाथ एवं ऋषभदेव के मन्दिरका भी उल्लेख किया है।

१२ श्रावकाचार रास (१७०२)

पदमा कवि ने श्रावकाचार रास की रचना कब की थी उसने इसका कोई उल्लेख नही किया है। इसमे पद्यात्मक रूप से श्रावक धर्म का वर्णन किया गया है। रास भाषा, शैली एवं विषय वर्णन की दृष्टि से उत्तम कृति है। इसकी एक अपूर्ण प्रति दि० जैन मन्दिर कोटा के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।

१३ सुख विलास (१७६१)

जोधराज कासलीवाल हिन्दी के प्रसिद्ध महाकवि दौलतराम कासलीवाल के सुपुत्र थे। अपने पिता के सामन ही जोधराज भी हिन्दी के अच्छे कवि थे। सुख विलास में कवि की रचनाओं का संकलन है। उनका यह

काव्य सवत् १८८४ मे समाप्त हुआ था जब कवि की अन्तिम अवस्था थी। दौलतरामजी के मरने के पश्चात् जोधराज किसी समय कामां नगर मे चले गये होगे। कवि ने कामा नगर के वर्णन के साथ ही वहा के जैन मन्दिरो का भी उल्लेख किया है। कामा उस समय राजस्थान का अच्छा व्यापारिक केन्द्र था इसलिए कितने ही विद्वान भी वहा आकर रहने लगे थे। सुख विलास की तीनो ही प्रतिया भरतपुर के पचायती मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत हैं।

सुख विलास गद्य पद्य दोनो मे ही निबद्ध है। कवि ने इसे जीवन को सुखी करने वाले की सज्ञा दी है।

सुख विलास इह नाम है सब जीवन सुखकार।
या प्रसाद हम हू लहै निज आतम सुखकार।।

अध्यात्म चिंतन एवं योग

१४ गुरण विलास (१९८८)

विलास सज्ञक रचनाओ में नथमल विलाला कृत गुरण विलास का नाम उल्लेखनीय है। गुरण विलास के अतिरिक्त इनको 'वीर विलास' सज्ञक एक कृति और है जो एक गुटके मे (पृष्ठ संख्या ९९२) सग्रहीत है। गुरण विलास मे कवि को लघु रचनाओ का सग्रह है। यह सकलन संवत् १८२२ मे समाप्त हुआ था। कवि की कुछ प्रमुख रचनाओ मे जीवन्धर चरित्र, नागकुमार चरित्र, सिद्धान्तसार दीपक आदि के नाम उल्लेखनीय है। वैसे कवि भरतपुर मे अर्थोपार्जन के लिए आकर रहने लगे थे और सघ के साथ श्रीमहावीरजी की यात्रा पर गये थे।

१४ समयसार टीका (२२८७)

भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वीं शताब्दी के महान् विद्वान थे। सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, गुजराती भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था। अब तक शुभचन्द्र की जितनी कृतिया मिली है उनमे समयसार टीका का नाम नहीं लिया जाता था। इसलिए प्रस्तुत टीका की उपलब्धि प्रथम बार हुई है। टीका विस्तृत है और कवि ने इसका नाम अध्यात्मतरगिणी दिया है। कवि ने टीका के अन्त मे विस्तृत प्रशस्ति दी है जिसके अनुसार इसका रचना काल सवत् १५७३ है। इस टीका की एक मात्र प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर कामा मे सग्रहीत है। इसका प्रकाशन होना आवश्यक है।

१५ षटपाहुड भाषा (२२५६)

षट्पाहुड पर प्रस्तुत टीका प० देवीदास छाबडा कृत है। जिसे इन्होंने सवत् १८०१ सावरण सुदी १३ के दिन समाप्त की थी। देवीसिह प्राकृत, सस्कृत एव हिन्दी के अच्छे विद्वान थे तथा भाषा टीकाए लिखने मे उन्हे विशेष रुचि थी। षट्पाहुड पर उनकी यह टीका हिन्दी पद्य मे है। जिसमें कवि ने आचार्य कुन्दकुन्द के भावो को ज्यों का त्यों भरने का प्रयास किया है। भाषा, भावशैली की दृष्टि से यह टीका अत्यधिक महत्व पूर्ण है।

१६ ज्ञानार्णव गद्य टीका

आचार्य शुभचन्द्र के ज्ञानार्णव पर सस्कृत और हिन्दी की कितनी ही टीकाएं उपलब्ध होती हैं। इनमें ज्ञानचन्द द्वारा रचित हिन्दी गद्य टीका उल्लेखनीय है। टीका का रचना काल स० १८६० माघ सुदी २ है। टीका की भाषा पर राजस्थानी का स्पष्ट प्रभाव है। इसकी एक प्रति दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूगरपुर में संग्रहीत है।

१७ चेतावणी ग्रंथ (२००२)

यह कविवर रामचरण की कृति है जो राजस्थानी भाषा मे निबद्ध है। कवि ने इसमें प्रत्येक व्यक्ति को सजग रहने की चेतावनी दी है। कृति का उद्देश्य सोते हुए प्राणियों को जगाने जा रहा है। इसमें २१ पद्य हैं जिसमे कवि ने स्पष्ट शब्दो मे विषय का विवेचन किया है। भाषा भाव एव शैली की दृष्टि से रचना उत्तम है। इसकी एक मात्र प्रति दि० जैन मन्दिर कोटा के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है।

१८ परमार्थशतक (२०६६)

परमार्थ शतक भैय्या भगवतीदास की है जो प्रथम बार उपलब्ध हुई है। रचना पूर्णतः आध्यात्मिक है जिसकी एक मात्र पाण्डुलिपि पचायती मन्दिर भरतपुर में सग्रहीत है।

१९ समयसार वृत्ति (२३०५)

समयसार पर प० प्रभाचन्द्र कृत सस्कृत टीका की एक मात्र पाण्डुलिपि भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध हुई है। प० प्रभाचन्द्र ने कितने ही ग्रथों पर सस्कृत टीकायें लिखकर अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन ही नही किया किन्तु स्वाध्याय प्रेमियों के लिये भी कठिन ग्रंथो के अर्थ को सरल बना दिया। श्री नाथूराम प्रेमी ने समयसार वृत्ति का "जैन साहित्य और इतिहास" मे उल्लेख अवश्य किया है, लेकिन उन्हें भी इसकी पाण्डुलिपि उपलब्ध नही हो सकी थी। प्रस्तुत प्रति संवत् १६०२ मगसिर सुदी ८ की लिपिबद्ध की हुई है। वृत्ति प्रकाशन योग्य है।

२० समयसार टीका (२३०६)

भ० देवेन्द्रकीर्ति आमेर गादी भट्टारक थे। वे भट्टारक के साथ २ साहित्य प्रेमी भी थे। आमेर शास्त्र भण्डार की स्थापना एव उनके विकास मे भ० देवेन्द्रकीर्ति का प्रमुख हाथ रहा था। समयसार पर उनकी यह टीका यद्यपि अधिक बडी नही है। किन्तु मौलिक तथा सार गर्भित है। इस टीका से पता लगता है कि समयसार जैसे आध्यात्मिक ग्रंथ का भी इस युग मे कितना प्रचार था। इसकी एक मात्र पाण्डुलिपि शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी मे सग्रहीत है। इसका टीका काल सवत् १७८८ भादवा सुदी १४ है।

२१ सामायिक पाठ भाषा (२५२१)

श्यामराम कृत सामायिक पाठ भाषा की पाण्डुलिपि प्रथम बार उपलब्ध हुई है। इसका रचनाकाल स० १७४६ है। कृति की पाण्डुलिपि दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर में सग्रहीत है। रचना अच्छी है।

पुराण साहित्य

२२ पद्मचरित टिप्पण (२८७१)

रविषेणाचार्य कृत पद्मचरित पर श्रीचन्द मुनि द्वारा लिखा हुआ यह टिप्पण है। टिप्पण संक्षिप्त है और कुछ प्रमुख एवं कठिन शब्दों लिखा गया है। प्रस्तुत पाण्डुलिपि संवत् १५११ की है जो जयपुर के लश्कर के मन्दिर में संग्रहीत है। श्रीचन्द मुनि अपभ्रंश भाषा की रचना रत्नकरण्ड के कर्त्ता थे जो १२ वी शताब्दी के विद्वान थे।

२३ पार्श्वपुराण (३००६)

अपभ्रंश के प्रसिद्ध कवि रइधू विरचित पार्श्वपुराण की एक प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा मे संग्रहीत है। पार्श्वपुराण अपभ्रंश की सुन्दर कृति है।

२४ पुराणसार (३०१३)

सागर सेन द्वारा रचित पुराणसार को एक मात्र पाण्डुलिपि शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर अजमेर मे संग्रहीत है। कवि ने रचनाकाल का उल्लेख नही किया है लेकिन यह संभवत: १५ वी शताब्दि की रचना मालूम पडती है। कृति अच्छी है। भट्टारक सकलकीर्ति ने जो पुराणसार ग्रंथ लिखा है संभवत: वह इस कृति के आधार पर ही लिखा गया था।

२५ वर्धमानपुराण भाषा (३०८२)

वर्द्धमान स्वामी के जीवन पर हिन्दी में जो काव्य लिखे गये है वे अभी तक प्रकाश मे नहीं आये है। इसी ग्रंथ सूची मे वर्द्धमान पर कुछ काव्य मिले है और उनमे नवलराम विरचित वर्द्धमान पुराण भाषा भी एक काव्य है। यह काव्य संवत् १६६१ का है। महाकवि बनारसीदास जब समयसार नाटक लिख रहे थे तभी भगवान महावीर पर यह काव्य लिखा जा रहा था। नवलराम बुंदेलखंड के निवासी थे और मुनि सकल कीर्ति के उपदेश से नवलराम एवं उनके पुत्र दोनो ने मिल कर इस काव्य की रचना की थी। काव्य विस्तृत है तथा उसकी एक प्रति दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा म उपलब्ध होती है।

२६ वर्धमानपुराण (२०७०)

वर्धमान स्वामी के जीवन पर यह दूसरी कृति है जिसे कविवर नवल शाह ने संवत् १८२५ मे समाप्त की थी। इसमे १६ अधिकार है। पुराण मे भगवान महावीर के जीवन पर अत्यधिक सुन्दर रीति से वर्णन किया गया है। इस पुराण की प्रति बयाना एवं दो प्रतियां फतेहपुर शेखावाटी के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध होती हैं। कवि ने पुराण के अन्त मे रचना काल निम्न प्रकार दिया है—

उज्जयन विक्रम नृपति, संवत्सर गिनि तेह।
सत अठार पच्चीस अधिक, समय विकारी एह ॥

२७ शांतिनाथ पुराण (३०६५)

यह ठाकुर कवि की रचना है जिसकी जानकारी हमे प्रथम बार प्राप्त हुई है। हिन्दी भाषा में शान्तिनाथ पर यह पुराण सर्वाधिक प्राचीन कृति है जिसका रचनाकाल संवत् १६५२ है। इस पुराण की एक मात्र पाण्डुलिपि अजमेर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार में सग्रहीत है।

२८ शान्तिपुराण (३०६४)

महापण्डित आशाधर विरचित शान्तिपुराण सस्कृत का अच्छा काव्य है। कवि ने इसकी प्रशस्ति में अपना विस्तृत परिचय दिया है। श्री नाथूराम प्रेमी ने आशाधर की जिन रचनाओं के नाम गिनाये हैं उसमे इस पुराण का नाम नही लिया गया है। इसकी एक प्रति जयपुर के दि० जैन मन्दिर लश्कर मे सग्रहीत है। पुराण प्रकाशन योग्य है।

काव्य एवं चरित्र

२९ जीवन्धर चरित (३३५९)

महाकवि दौलतराम कासलीवाल की पहिले जिन कृतियो एव काव्योका उल्लेख मिलता था उनमें जीवन्धर चरित का नाम नही था। उदयपुर के अग्रवाल दि० जैन मन्दिर मे जब हम लोग ग्रथों की सूची का कार्य कर रहे थे। तभी इसकी एक अस्त व्यस्त प्रति प० अनूपचद जो न्यायतीर्थ को प्राप्त हुई। कवि का यह एक हिन्दी का अच्छा काव्य है जो पाच अध्यायो मे विभक्त है। कवि ने अपने इस काव्य को नवरस पूर्ण कहा है जिसे कालाडहरा के श्री चतुरभुज अग्रवाल एव पृथ्वीराज तथा सागवाडा के निवासी श्रीवेलजी हूंबड के अनुरोध पर उदयपुर प्रवास मे सवत् १८०५ लिखकर मा भारती को भेट की थी। उदयपुर में अग्रवाल दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे जो प्रति प्राप्त हुई थी, वह कवि की मूल पाडुलिपि है जिससे इसका महत्व और भी बढ गया है। काव्य प्रकाशन होने योग्य है।

३० जीवधर चरित (३३५८)

महाकवि रइधू द्वारा विरचित जीवन्धर चरित अपभ्रंश की विशिष्ट रचना है। इस काव्य की एक प्रति दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है। पाण्डुलिपि प्राचीन है और सवत् १६५८ में लिपि बद्ध की हुई है। यह काव्य प्रकाशन योग्य है।

३१ जीवन्धर चरित्र प्रबन्ध (३३६०)

जीवन्धर चरित्र हिन्दी भाषा का प्रबन्ध काव्य है जिसे भट्टारक यशः कीर्ति ने छन्दोबद्ध किया था यशःकीर्ति भट्टारक चन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एव भट्टारक रामकीर्ति के शिष्य थे। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। प्रस्तुत काव्य हिन्दी को कोई बडा काव्य नही है किन्तु भाषा एव शैली की दृष्टि से काव्य उल्लेखनीय है। इसकी एक पाण्डुलिपि उदयपुर के सभवनाथ मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है। इसकी रचना संवत् १८७१ मे हुई थी। कवि ने गुजरात देश के ईडर दुर्ग के पास भीलोडा ग्राम मे इसे समाप्त किया था। उस ग्राम में चन्द्रप्रभ स्वामी का मन्दिर था और वही इस प्रबन्ध का रचना स्थल था।

संवत ग्रठारामें इकहोत्तरे भादवा सुदी दशमी गुरुवार रे ।
ए प्रबध पूरो करो प्रणमी जिन गुरु पाय रे ।
गुर्जर देश मे सोभतो ईडर गढ ने पास रे ।
मीलोडी सुग्राम है तिहा श्रावक नो सुमवासरे ।
चन्द्रप्रभ जिनधाम है ते भव्य पूजे जिन पाय रे ।
तिहा रहिने रचना करी, यशकीर्ति सुरी राय रे ।

३२ धर्मशर्माभ्युदय टीका (३४६१)

धर्मशर्माभ्युदय सस्कृत भाषा के श्रेष्ठ महाकाव्यो मे से है । यह महाकवि हरिचन्द की रचना है और प्राचीन काल मे इसके पठन पाठन का ग्रच्छा प्रचार था । इसी महाकाव्य पर भट्टारक यशःकीर्ति की एक विस्तृत टीका ग्रजमेर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध हुई है जिसका सदेहध्वान्त दीपिका नाम दिया गया है । टीका विद्वत्तापूर्ण है तथा उसमे काव्य के कठिन शब्दो का ग्रच्छा खुलासा किया गया है ।

३३ नागकुमार चरित (३४८०)

नथमल विलाला कृत नागकुमार चरित हिन्दी की ग्रच्छी कृति है जिसकी पाण्डुलिपिया राजस्थान के विभिन्न शास्त्र भण्डारो मे उपलब्ध होती हैं। प्रस्तुत पाण्डुलिपि स्वय नथमल विलाला द्वारा लिपिबद्ध है । इसका लेखन काल सवत् १८३६ है ।

प्रथम जेठ पूनम सुदी सहस्त्र रात्रा वर वार ।
ग्रथ सुलिख पूरन कियो हीरापुरी मंभार ।
नथमल नै निजकर थकी ग्रंथ लिख्यौ धर प्रीत ।
भूल चूक यामै लखौ तो सुध कीजो मीत ।

३४ वारा ग्रारा महा चौपई बध (३६६०)

भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा मे होने वाले भट्टारक रामकीर्ति के प्रशिष्य एव पद्मनन्दि के शिष्य ब्र० रूपजी की उक्त कृति एक ऐतिहासिक कृति है जिसमे २४ तीर्थकरो का शरीर, ग्रायु वर्ण ग्रादि का वर्णन है । इसमें तीन उल्लास है । यह कवि की मूल पाण्डुलिपि है जिसे उसे महिमाना नगर के ग्रादि जिन चैत्यालय मे छन्दोबद्ध किया था । इस चौपई की एक प्रति उदयपुर के सभवनाथ मन्दिर मे उपलब्ध होती है ।

३५ भोज चरित्र (३७२१)

हिन्दी भाषा मे भोज चरित्र भवानीदास व्यास को रचना है । यह एक ऐतिहासिक कृति है जिसमें राजा भोज का जीवन निबद्ध हैं । कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है —

गढ जोधाण सतोल बाम ग्राई विलाडे ।
पीर पाठ कल्याण सुजस गुण गीत गवाडे ।।

भोज चरित तिन सौ कह्यो कवियण सुख पावै ।।
व्यास भवानीदास कवित कर बात सुणावे ।।
मुणी प्रबध चारण मते भोजराज बीन कह्यो ।
कल्याणदास भूपाल को धर्म ध्वजा धारी कह्यो ।

३६ यशोधर चरित्र (३८२४)

महाराजा यशोधर के जीवन पर सभी भाषाओं में अनेक काव्य लिखे गये हैं। हिन्दी मे भी विभिन्न कवियों ने रचना करके इस कथा के लोकप्रियता में अभिवृद्धि की है। इन्ही काव्यो मे हिन्दी कवि देवेन्द्र कृत यशोधर चरित भी है जिसकी पाण्डुलिपिया डूंगरपुर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई है। काव्य काफी बडा है। इसका रचनाकाल सवत् १६८३ है। देवेन्द्र कवि विक्रम के पुत्र थे जो स्वय भी सस्कृत एव हिन्दी के अच्छे कवि थे। विक्रम एव गंगाधर दो भाई थे जो जैन ब्राह्मण थे। गुजरात के कुतलूखा के दरबार मे जैनधर्म की प्रतिष्ठा बढाने का श्रेय ब्र० शातिदास को था और उसी के प्रभाव के कारण विक्रम के माता पिता ने जैनधर्म स्वीकार किया था। इन्ही के सुत देवेन्द्र ने महुआ नगर मे यशधोर की रचना की थी।

सवत १६ आठ त्रीमि आसो सुदी बीज शुक्रवार तो
रास रच्यो नवरस भर्यो महुआ नगर मभार तो।

कवि ने अपनी कृति को नवरस से परिपूर्ण कहा है।

३७ रत्नपाल प्रबन्ध (३८८८)

रत्नपाल प्रबन्ध हिन्दी की अच्छी कृति है जो ब्र० श्रीपती द्वारा रची गयी थी। इसका रचनाकाल स० १७३२ है। भाषा एव शैली की दृष्टि से रचना उत्तम प्रबन्ध काव्य है तथा प्रकाशन योग्य है।

३८ विक्रम चरित्र चौपई (३६३१)

भाउ कवि हिन्दी के लोकप्रिय कवि थे। उनकी रविव्रतकथा हिन्दी की अत्यधिक लोकप्रिय रचना रही है। विक्रमचरित्र चौपई उनकी नवीन रचना है। जिसकी एक पाण्डुलिपि दबलाना के शास्त्र भण्डार म संग्रहीत है। रचना काल सवत् १५८८ है। इस रचना से भाउ कवि का समय भी निश्चित हो जाता है। कवि ने रचना काल का उल्लेख निम्न प्रकार किया है—

सवत् पनर अठासिइ तिथि बलि तेरह हु ति
मगसिर मास जाण्यो रविवार जते हु नि।
चडी तणइ पसाउ सचढउ प्रबन्ध प्रमाण।
उवझाय भावै भणइ वातज आवा ठाण।।

३६ शांतिनाथ चरित्र भाषा (३६६५)

सेवाराम पाटनी हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। शातिनाथ चरित्र उनके द्वारा लिखा हुआ विशिष्ट काव्य है। कवि महापडित टोडरमल के समकालीन विद्वान् थे। उनको उन्होंने पूर्ण आदर के साथ उल्लेख किया

है । इन्ही के उपदेश से सेवाराम काव्य रचना की ओर प्रवृत्त हुए थे । शांतिनाथ चरित्र हिन्दी का अच्छा काव्य है जो २३० पत्रों में समाप्त होता है । सेवाराम ढूंढाहड देश में स्थित देव्याढ (देवली) नगर के रहने वाले थे । कवि ने काव्य के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

> देश ढूंढाहड आदि दे सबोधे बहुदेश ।
> रची रची ग्रन्थ कठिन टोडरमल महेश ।
> ता उपदेश लवास लही सेवाराम सयान ।
> रच्यो ग्रथ रुचिमान के हर्ष हर्ष अधिकान ।।२३।।
> संवत् अष्टादश शतक पुनि चौतीस महान ।
> सावन कृष्णा अष्टमी पूरन कियो पुरान ।
> अति अपार सुखसो बसे नगर देव्याढ सार ।
> श्रावक बसे महाधनी दान पूज्य मतिधार ।।२४।।

४० श्रीपाल चरित्र (४०५०)

श्रीपाल चरित्र ब्रह्म चन्द्रसागर की कृति है जो भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एव सकलकीर्ति के शिष्य थे । जो काष्ठासघ के रामसेन के परम्परा के भट्टारक थे । कवि ने सुरेन्द्रकीर्ति एव सकलकीर्ति दोनों की प्रशसा की है तथा अपनी लघुता प्रकट की है । काव्य की रचना सोजत नगर में सवत् १८२३ में समाप्त हुई थी ।

> सोजत्या नगर सोहामणु दीसे ते मनोहार ।
> सासन देवी ने देहरे परतापुरे अपार ।
> सकलकीर्ति तिहां राजता छाजता गुण भडार ।
> ब्रह्म चन्दसागर रचना रची तिहा वेसी मानाहार ।।३०।।

चरित्र की भाषा एव शैली दोनों ही उत्तम है तथा वह विविध छन्दों मे निर्मित की गयी है । इसकी एक प्रति फतेहपुर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध होती है ।

४१ श्रेणिक चरित्र (४१०३)

श्रेणिक चरित्र महाकवि दौलतराम कासलीवाल की कृति है । अब तक जिन काव्यों का विद्वत जगत को पता नहीं था उनमें कवि की यह कृति भी सम्मिलित है । लेकिन ऐसा मालूम पड़ता है कि कवि के पद्मपुराण, हरिवशपुराण, आदिपुराण, पुण्यास्रव कथाकोश एव अध्यात्मबारहखडी जैसी वृहद कृतियों के सामने इस कृति का अधिक प्रचार नही हो सका इसलिए इसकी पाण्डुलिपिया भी राजस्थान के बहुत कम भण्डारो मे मिलती है ।

श्रेणिक चरित्र कवि का लघु काव्य है जिसका रचनाकाल सवत् १७८२ चैत्र सुदी पचमी है ।

> सवत सतरैसै बीयासी, अौ चैत्र सुकल तिथि जान ।
> पंचमी दीने पूरण करी, वार चद्र पचान ।।

कृति ५०० पद्यो मे समाप्त होती है जिसमें दोहा, चौपई, छन्द प्रमुख है। रचना की भाषा अधिक परिष्कृत नही है। इसकी एक प्रति दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर मे सग्रहीत है।

४२ सुदर्शन चरित्र भाषा (४१८८)

सुदर्शन के जीवन पर महाकवि नयनन्दि ने अपभ्रंश भाषा मे सवत् ११०० में महाकाव्य लिखा था। उसी को देख कर जैनन्द ने संवत् १६३३ मे आगरा नगर मे प्रस्तुत काव्य को पूर्ण किया था। जैनन्द ने भट्टारक यश.कीर्ति क्षेमकीर्ति तथा त्रिभुवनकीर्ति का उल्लेख किया है। इसी तरह बादशाह अकबर एव जहागीर के शासन का भी वर्णन किया है। काव्य यद्यपि अधिक बडा नहीं है किन्तु भाषा एव वर्णन की दृष्टि से काव्य अच्छा है। काव्य की छन्द संख्या २०६ है। काव्य के प्रमुख छन्द दोहा, चौपई एव सोरठा है। कवि ने निम्न छन्द लिख कर अपनी लघुता प्रकट की है।

> छद भेद पद भेद हो, तो कछु जाने नाहे।
> ताको कियो न खेर, कथा भई निज भक्ति बस ॥

४३ श्रेणिक प्रबन्ध (४१०५)

कल्याणकीर्ति की एक रचना चारुदत्त चरित्र का परिचय हम ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग मे दे चुके हैं। यह कवि की दूसरी रचना है जिसकी उपलब्धि राजस्थान के फतेहपुर एव बूंदी के भण्डारो में हुई हैं। कवि भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा मे होने वाले भट्टारक देवकीर्ति के शिष्य थे। कवि ने इस प्रबन्ध को बागड प्रदेश के कोटनगर के श्रावक विमल के आग्रह से आदिनाथ मन्दिर में समाप्त की थी। रचना गीतात्मक है तथा प्रकाशन योग्य है।

कथा साहित्य

४४ अनिरुद्ध हरण-उषा हरण (४२२३)

यह रत्नभूषण की कृति है जो भट्टारक ज्ञानभूषण के शिष्य एव भ० सुमतिकीर्ति के परम प्रशंसक थे। अनिरुद्ध हरण की रचना भ० ज्ञानभूषण के उपदेश से ही हो सकी थी ऐसा कवि ने उल्लेख किया है। कवि ने कृति का रचनाकाल नही दिया हैं लेकिन भट्टारक ज्ञानभूषण के समय को देखते ही हुए यह कृति सवत् १५६० से पूर्व की होनी चाहिए। अनिरुद्ध हरण की भाषा पर मराठी भाषा का प्रभाव है कवि ने रचना को "रचना इ बहुरस कहू" बहुरस भरी कहा है। अनिरुद्ध प्रद्युम्न के पुत्र थे। कवि ने काव्य का नाम ऊषा हरण न देकर अनिरुद्धहरण दिया है।

४५ अनिरुद्ध हरण (४२२४)

अनिरुद्ध के जीवन पर यह दूसरा हिन्दी काव्य है जो ब्रह्म जयसागर की कृति है। ब्रह्म जयसागर भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य थे। ये सिंहपुरा जाति के श्रावक थे तथा हांसोर नगर में इन्होंने इस काव्य को सवत् १७३२ में समाप्त किया था। इसमें चार अधिकार हैं। इस रचना की भाषा राजस्थानी है तथा उस पर गुजराती का प्रभाव है। रत्नभूषण सूरि के अनिरुद्ध हरण से यह रचना बड़ी है।

अनिरुद्ध हरणज में करयु दुःख हरण ए सार ।
सांभलां सुख ऊपजे कहे जयसागर ब्रह्मचार जी ॥

४६ अभयकुमार प्रबन्ध (४२२६)

उक्त प्रबन्ध पदमराज कृत हिन्दी काव्य है जिसमे अभयकुमार के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। पदमराज खरतर गच्छ के आचार्य जिनहंस के प्रशिष्य एवं पुण्य सागर के शिष्य थे। जैसलमेर नगर मे ही इसकी रचना समाप्त हुई थी। प्रबन्ध का रचनाकाल संवत १६५० है। रचना राजस्थानी भाषा की है।

४७ आदित्यवार कथा (४२५१)

प्रस्तुत कथा पं० गगादास की रचना है जो कारंजा के भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे। आदित्यवार कथा एक लोकप्रिय कृति है जिसे उन्होने संवत १७५० मे समाप्त किया था। कथा की दो सचित्र प्रतियां उपलब्ध हुई है जिनमें एक भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर अजमेर में तथा दूसरी डूगरपुर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध हुई है। दोनों ही सचित्र प्रतियां अत्यधिक कलात्मक हैं। डूगरपुर वाली प्रति मे स्वय पं० गगादास एवं भ० धर्मचन्द्र के चित्र भी हैं। कथा की रचना शैली एव वर्णन शैली दोनों ही अच्छी है।

४८ कथा संग्रह (४३०८)

भट्टारक विजयकीर्ति अजमेर गादी के प्रसिद्ध भट्टारक थे। वे सन्त के साथ साथ विद्वान् एवं कवि भी थे इनकी दो रचनायें कर्णामृत पुराण एवं श्रेणिक चरित्र पहिले ही उपलब्ध हो चुकी है। कथा संग्रह इनकी तीसरी रचना है। इसका रचनाकाल संवत १८२७ है। इस कथा संग्रह मे कनक कुमार, धन्य कुमार तथा शालिभद्र की कथाएं चौपई छन्द मे निबद्ध हैं। रचना की एक पाण्डुलिपि भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर मे संग्रहीत है।

४९ चन्द्रप्रभ स्वामीनो विवाह (४३२६)

प्रस्तुत कृति भ० नरेन्द्रकीर्ति की है जिसे उन्होंने संवत १६०२ मे छन्दोबद्ध किया था। कवि ने इस काव्य को गुजरात प्रदेश के महसाना नगर मे समाप्त किया था। वे भट्टारक सुमतिकीर्ति के गुरु भ्राता भट्टारक सकलभूषण के शिष्य थे। विवाहलो भाषा एवं वर्णन शैली की दृष्टि से सामान्य है इसकी एक पाण्डुलिपि कोटा के बोरसली के मन्दिर में उपलब्ध हुई है।

५० सम्यक्त्व कौमुदी (४८२८)

जगतराय की सम्यक्त्व कौमुदी कथा हिन्दी कथा कृतियों मे अच्छी कृति है। इसमे विभिन्न कथाओं का संग्रह है। कवि आगरे के निवासी थे। कवि की पद्मनन्दि पचविंशतिका, आगमविलास आदि पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं। रचना सामान्यतः अच्छी है।

५१ होली कथा (४६००)

यह मुनि शुभचन्द्र की कृति है। जो आमेर गादी के भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य थे। मुनि श्री हूँडोती प्रदेश के कुजडपुर मे रहते थे। वहाँ चन्द्रप्रभ स्वामी का चैत्यालय था और उसी में इस रचना को छन्दोबद्ध किया गया था। रचना भाषा की दृष्टि से अच्छी कथा कृति है। इसकी रचना धर्मपरीक्षा मे वर्णित कथा के अनुसार की गयी है।

> मुनि शुभचन्द करी या कथा, धर्म परीक्षा मे ली जथा।
> होली कथा सुने जे कोई, मुक्ति तरणा सुख पावे सोय।
> सवत सतरासै परि जोर, वर्ष पचावन अधिक और ।। १२६ ।।

५२ वचन कोश (५२३२)

बुलाकीदास कृत वचनकोश हिन्दी भाषा की अच्छी कृति है। कवि की पाण्डवपुराण एव प्रश्नोत्तरोपासकाचार हिन्दी जगत की उत्तम कृतिया है जिन पर ग्रन्थ सूची के पूर्व भागों में प्रकाश डाला जा चुका है। वचनकोश के माध्यम से जैन सिद्धान्त को कोश के रूप मे प्रस्तुत करके कवि ने हिन्दी जगत की महान् सेवा की है। इस कृति का रचनाकाल सवत १७३७ है। यह कवि की प्रारम्भिक कृति है। रचना प्रकाशन योग्य है।

आयुर्वेद

५३ अजीर्ण मंजरी (५५६२)

न्यामतखां फतेहपुर (शेखावाटी) के शासक न्यामखां के शासन काल के हिन्दी कवि थे। उन्होंने आयुर्वेद की इस कृति को वैद्यक शास्त्र के अन्य ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात लिखी थी। इससे ज्ञात होता है कि न्यामतखा सस्कृत एव हिन्दी दोनों ही भाषाओ के विद्वान थे। इसकी रचना संवत १७०४ है। कवि ने लिखा है कि उसने यह रचना दूसरों के उपकारार्थ लिखी है।

> वैद्यक शास्त्र को देखि करी, नित यह कियो बखान।
> पर उपकार के कारणै, सो यह ग्रन्थ सुखदान ।। १०२ ।।

५४ स्वरोदय (५७६४)

आयुर्वेद विषय पर यह मोहनदास कायस्थ की रचना है। यद्यपि इस विषय की यह लघु रचना है। नाडी परीक्षा पर भी स्वर के साथ इसमे विशेष वर्णन है। सवत १६८७ मे इस रचना को कन्नोज प्रदेश मे स्थित नैमखार के समीप के ग्राम कुरस्थ मे समाप्त किया गया था।

रास, फागु वेलि

५५ ब्रह्म जिनदास की रास संज्ञक रचनायें

ब्रह्म जिनदास सस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही महाकवि थे। दोनों ही भाषाओं पर इनका समान अधिकार था। इसलिये जहां इन्होंने संस्कृत में बड़े बड़े पुराण एवं चरित्र ग्रन्थ लिखे वहां हिन्दी में रास संज्ञक

रचनायें लिख कर १५ वीं शताब्दी में हिन्दी के पठन पाठन में अपना अपूर्व योग दिया। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में ही इनकी ६५ रचनाओं का परिचय दिया गया है। इनमें संस्कृत की ५, प्राकृत की एक तथा शेष ५६ रचनायें हिन्दी भाषा की हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में सबसे अधिक कृतिया इन्ही की है इसलिये ब्रह्म जिनदास साहित्यिक सेवा की दृष्टि से सर्वोपरि है। कवि की जिन रास सञ्ज्ञक रचनाओं की उपलब्धि हुई है इनके नाम निम्न प्रकार है—

१. अजितनाथ रास	(६१३३)	२. आदिपुराण रास	(६१३५)
३. कर्मविपाकरास	(६१४६)	४. जम्बूस्वामी रास	(६१५३)
५. जीवंधर रास	(६१५७)	६. दानफल रास	(६१६१)
७. नवकार रास	(६१७१)	८. धर्मपरीक्षा रास	(६१६५)
९. नागकुमार रास	(६१७२)	१०. नेमीश्वर रास	(६१७६)
११. परमहंस रास	(६१८०)	१२. भद्रबाहु रास	(६१८१)
१३. यशोधर रास	(६१९७)	१४. रामचन्द्र रास	(६२०२)
१५. राम रास	(६२०३)	१६. रोहिणी रास	(६२०६)
१७. श्रावकाचार रास	(६२१४)	१८. श्रीपाल रास	(६२१५)
१९. श्रुतकेवलि रास	(६२२३)	२०. श्रेणिक रास	(६२२५)
२१. सोलहकारण रास	(६२३९)	२२. हनुमत रास	(६२४३)
२३. अनतव्रत रास	(१०२३९)	२४ अठाईसमूलगुण रास	(१०१२०)
२५. करकडुनो रास	(६१४७)	२६. चारुदत्त प्रबध रास	(१०२०९)
२७. धन्यकुमार रास	(६१६३)	२८. नागश्रीरास	(१०२३९)
२९. पानीगालण रास	(१०१२०)	३०. बकचूल रास	(८१९०)
३१. भविष्यदत्त रास	(६१९३)	३२. सम्यक्त्व रास	
३३. सुदर्शन रास	(१०२३१)	३४ होली रास	(१०२३९)

१५ वी शताब्दी मे होने वाले एक ही कवि के इतनी अधिक रास सञ्ज्ञक कृतियो का उपलब्धि हिन्दी साहित्य के इतिहास मे सचमुच एक महत्वपूर्ण कहानी है। कवि का राससीतारास ही महाकवि तुलसीदास की रामायण से बडी रामायण है। वैसे कवि की कुछ कृतियो को छोड कर सभी रचनायें महत्वपूर्ण तथा भाषा एवं शैली की दृष्टि से उल्लेखनीय है। कवि का राजस्थान का बागड प्रदेश एवं गुजरात मुख्य कार्य स्थान रहा था। इसलिये इनकी रचनाओं पर गुजराती भाषा एव शैली का भी अधिक प्रभाव है।

ब्रह्म जिनदास की रचनाओ का अभी मूल्याकन नही हो पाया है। यद्यपि कवि पर राजस्थान विश्व विद्यालय मे शोध कार्य चल रहा है लेकिन अभी तक अनेक साहित्यिक दृष्टिया हैं जिनके आधार पर कवि का मूल्याकन किया जा सकता है। एक ही नही बीसो शोध निबन्ध लिये जा सकते है।

कवि भट्टारक सकलकीर्ति के भाई ही नही किन्तु उनके प्रमुख शिष्य भी थे। इन्होंने अपनी कृतियों में पहिले सकलकीर्ति को और उनकी मृत्यु के पश्चात भ० भुवनकीर्ति का स्मरण किया है जो उनके पश्चात भट्टारक गादी पर बैठे थे। ब्र० जिनदास रास सञ्ज्ञक रचनाओं के अतिरिक्त और भी रचनायें लिखी है। जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कवि सर्वतोमुखी प्रतिभा वाले विद्वान थे।

५६ चतुर्गति रास (६१४६)

बरिचन्द हिन्दी के अच्छे कवि थे। इनकी अब तक कितनी ही रचनाओं का परिचय मिल चुका है। इन रचनाओं में चतुर्गति रास इनकी एक लघु रचना है। जिसकी एक पाण्डुलिपि कोटा के बोरसली के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। रचना प्रकाशन योग्य है।

५७ वर्धमान रास (६२०७)

भगवान महावीर पर यह प्राचीनतम रास संज्ञक काव्य है जिसका रचना काल सवत १६६५ है तथा जिसके निर्माता हैं वर्द्धमान कवि। रास यद्यपि अधिक बड़ा नहीं है फिर भी महावीर पर लिखी जाने वाली यह उल्लेखनीय रचना है। काव्य की दृष्टी से भी यह अच्छी रचना है। वर्धमान कवि ब्रह्मचारी थे और भट्टारक वादिभूषण के शिष्य थे।

सवत सोल पासोठ मार्गसिर सुदि पचमी सार ।
ब्रह्म वर्धमानि रास रच्यो तो सामलो तम्हे नरनारि ॥

५८ सीताशील पताका गुणवेलि (६२३२)

वेलि संज्ञक रचनाओं मे आचार्य जयकीर्ति की इस रचना का उल्लेखनीय स्थान है। इसमें महासती सीता के उत्कृष्ट चरित्र का यशोगान गाया गया है। आचार्य जयकीर्ति हिन्दी के अच्छे कवि थे। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में ही उनकी ६ रचनाओं का परिचय दिया गया है। इनमे अकलकयतिरास, अमरदत्त मित्रानन्द रासो, रविव्रत कथा, वसुदेव प्रबन्ध, शीलसुन्दरी प्रबन्ध उक्त वेलि के अतिरिक्त हैं। कवि ने काव्य के विविध रूपों मे रचनायें लिखी थी तथा अपनी कृतियों को विविध रूपों मे लिख कर पाठकों की इस ओर रुचि जाग्रत किया करते थे।

आ० जयकीर्ति ने भट्टारकीय युग मे भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा मे होने वाले भ० रामकीर्ति के शिष्य ब्रह्म हरखा के आग्रह से यह वेलि लिखी थी। इस का रचना काल संवत १६७४ ज्येष्ठ सुदी १३ बुधवार है। यह गुजरात प्रदेश के कोटनगर के आदिनाथ चैत्यालय में लिखी गयी थी। प्रस्तुत प्रति की एक और विशेषता है कि वह स्वय ग्रन्थकार के हाथ से लिखी हुई है जैसा कि निम्न प्रशस्ति मे स्पष्ट है—

सवत १६७४ आषाढ सुदी ७ गुरो श्री कोटनगरे स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ आ० श्री जयकीर्तिना स्वहस्ताभ्यां लिखितेय ।

५९ जम्बूस्वामीरास (५१५४)

प्रस्तुत रास नयविमल की रचना है। इसमें अन्तिम केवली जम्बूस्वामी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। यह रास भाषा एवं शैली की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। रास में रचनाकाल नहीं दिया है लेकिन यह १८ वीं शताब्दी का मालूम देता है। इसकी एक प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा में संग्रहीत है।

६० ध्यानामृतरास (६१७०)

यह एक आध्यात्मिक रास है जिसमे ध्यान के उपयोग एव उसकी विशेषताओ के बारे में विस्तृत प्रकाश डाला गया है। रास के निर्माता है ब्र० करमसी। जो भट्टारक शुभचन्द्र के प्रशिष्य एव मुनि विनयचन्द्र के शिष्य थे। रास की भाषा एवं शैली सामान्य है। कवि ने अपना परिचय निम्न प्रकार दिया है—

जिन सासण चिरजयो विबुद्ध पद्य पयासण सूर।
चउविह सघ सदा जयो विघन जायो तुम्ह दूर।।
श्री शुभचन्द्र सूरि नमी समरी विनयचन्द्र मुनिराय।
निज बुद्धि अनुसरि रास कियो ब्रह्म करमसी हरसाय।।

६१ रामरास (६२०४)

रामरास कविवर माधवदास की कृति है। यह कृति बाल्मीकि रामायण पर आधारित है। रचना सवत नही दिया हुआ है लेकिन रास १७ वी शताब्दी का मालूम पडता है। सवत् १७६८ की लिखी हुई एक पाण्डुलिपि दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर मे संग्रहीत है।

६२ श्रेणिकप्रबंधरास (६२२४)

यह ब्रह्म सघजी की रचना है जिसे उन्होंने सवत् १७७५ मे समाप्त की थी। कवि ने अपनी कृति को प्रबध एव रास दोनो लिखा है। यह एक प्रबध काव्य है और भाषा एव शैली की दृष्टि से काव्य उल्लेखनीय है। भगवान महावीर के प्रमुख उपासक महाराजा श्रेणिक का जीवन का विस्तृत वर्णन किया गया है। रचना प्रकाशन योग्य है।

६३ सुकौशलरास (६२३५)

वेणीदास भट्टारक विश्वसेन के शिष्य थे। सुकौशलरास उन्हीं की रचना है जिसे उन्होंने १७ वी शताब्दी मे निबद्ध किया था। यद्यपि यह एक लघु रास है लेकिन काव्यत्व की दृष्टि से यह एक अच्छी कृति है। रास की पाण्डुलिपि अहमदाबाद के शान्तिनाथ चैत्यालय मे सवत् १७१४ की माघ सुदी पचमी का की गयी थी जो आजकल डूंगरपुर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है।

६४ वृहद्तपागच्छ गुरावली (६२९८, ६२९९)

श्वेताम्बरीय तपागच्छ मे होने वाले साधुओ की विस्तृत पट्टावली की एक प्रति दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर और एक प्रति पंचायती मन्दिर भरतपुर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है। दोनो ही पाण्डुलिपिया प्राचीन है लेकिन भरतपुर वाली प्रति अधिक बडी है और ६४ पत्रो मे पूर्ण होती है। अलवर वाली प्रति मे मुनि सुन्दरसूरि तक के गुरुओ की पट्टावली दी हुई है। जबकि भरतपुर वाली प्रति स्वयं मुनि सुन्दर सूरि की लिखी हुई है और उसका लेखन काल सवत् १४९० फागुण सुदी १० है।

६५ भट्टारक सकलकीर्तिनुरास (६३१०)

भट्टारक सकलकीर्ति १५ वी शताब्दी के जबरदस्त विद्वान सत थे। जैन वाङ्मय के निष्णात ज्ञाता थे। उनकी वाणी मे सरस्वती का वास था एव वे तेजोमय व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने बागड देश में भट्टारक सस्था की इतनी गहरी नीव लगायी कि वह आगामी ३०० वर्षों तक उपने समस्त समाज पर एक छत्र राज्य किया। भट्टारक सकलकीर्ति स्वय ऊचे विद्वान एव अनेक शास्त्रो के रचयिता थे। इसके प्रशिष्य भी बड़े भारी साहित्य सेवी होते रहे। प्रस्तुत रास मे भट्टारक सकलकीर्ति एव उनके शिष्य भ० भुवनकीर्ति का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। रास ऐतिहासिक है और यह उनके जीवन की कितनी घटनाओं का उद्घाटित करता है। रास के प्रारम्भ मे आचार्यों की परम्परा दी है। और फिर भ० सकलकीर्ति के जन्म, माता, पिता, अध्ययन, विवाह, संयम ग्रहण, भट्टारक पद ग्रहण, ग्रथ रचना आदि के बारे मे सक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसके पश्चात् २४ पद्यो मे भ० भुवनकीर्ति के गुणो का वर्णन किया गया है। भ० भुवनकीर्ति की सर्व प्रथम सवत् १४८२ मे डूंगरपुर मे दीक्षा हुई थी। रास पूर्णतः ऐतिहासिक हैं।

ब्र० सामल की यह रचना अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिसकी एक पाण्डुलिपि उदयपुर के सभवनाथ मन्दिर मे सग्रहीत है।

विलास एवं संग्रह कृतियां

६६ बाहुबलि छन्द (६४७६)

यह लघु रचना भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य वादिचन्द्र की कृति है। इसमे केवल ६० पद्य हैं जिसमें भरत सम्राट के छोटे भाई बाहुबलि की प्रमुख जीवन घटनाओ का वर्णन है। रचना अच्छी है। तथा एक संग्रह ग्रथ में सग्रहीत है।

६७ चतुर्गति नाटक (६५०४)

डालूराम हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। ग्रथ सूची के उसी भाग मे उनकी ६ और रचनाओ का विवरण दिया गया है। चतुर्गति नाटक मे चार गति देव, मनुष्य, तिर्यञ्च और नरकगति मे सहे जाने वाले दुःखों का वर्णन किया गया है। यह जीव स्वय जगत् रूपी नाटक का नायक है जो विभिन्न योनियो को धारण करता हुआ ससार परिभ्रमण करता रहता है। रचना अच्छी है तथा पठनीय है।

६८ संबोध संत्तारणनु दूहा (६७७६)

यह वीरचन्द की रचना है जो सबोधनात्मक है। वीरचन्द का परिचय पहिले दिया जा चुका है। भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना सामान्य है।

स्तोत्र

६९ अकलंकदेव स्तोत्र भाषा (६७९४)

अकलंक स्तोत्र संस्कृत का प्रसिद्ध स्तोत्र है और यह उसी स्तोत्र की परमतखण्डिनी नाम की भाषा टीका है। इस टीका के टीकाकार चंपालाल बागडिया है जो झालरापाटण (राजस्थान) के निवासी थे। टीका विस्तृत

है तथा वह पद्यमय है। टीकाकाल सवत् १६१३ श्रावण सुदी ३ है। टीका की एक प्रति बूंदी के पार्श्वनाथ मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे संग्रहीत है।

७० आदिनाथ स्तवन (६८०७)

यह स्तवन तपागच्छीय साधु सोमसुन्दर सूरि के शिष्य मेहउ द्वारा निर्मित है। इसका रचनाकाल संवत् १४९९ है भाषा हिन्दी एवं पद्य सख्या ४८ है। इसमें राणकपुर के मन्दिर का सुन्दर वर्णन किया गया है रचना ऐतिहासिक है। स्तवन का अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

> भगति करूं सामी तणी ए छइ दरसण दाण।
> चिहु दिसि कीरति विस्तरी, ए धन धरण प्रधान।
> संवत चउदनवाणवइ ए धुरि काती मासे।
> मेहउ कहइ मइ स्तवन कीउ मनि रंगि लासे।। ४८।।
> इति श्री राणपुर मंडण श्री आदिनाथ स्तवन संपूर्ण।।

७१ भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका (७१७३)

भक्तामर स्तोत्र की हेमराज कृत भाषा टीका उल्लेखनीय कृति है। दि० जैन मन्दिर कामा के शास्त्र भण्डार में २९ पृष्ठों वाली एक पाण्डुलिपि है जो स्वयं हेमराज की प्रति थी ऐसा उस पर उल्लेख मिलता है। यह प्रति सवत् १७२७ की है। स्वय ग्रथकार की पाण्डुलिपियों में इसका उल्लेखनीय स्थान है।

७२ भक्तामर स्तोत्र वृत्ति (७१८५)

भक्तामर स्तोत्र पर भ० रत्नचन्द्र की यह सस्कृत टीका है। टीका विस्तृत है तथा सरल एव सुबोध है। अजमेर की एक प्रति के अनुसार इसकी टीका सिद्ध नदी के तट पर स्थित ग्रीवापुर नगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय में की गई थी। टीका करने में श्रावक करमसी ने विशेष आग्रह किया था।

७३ वर्धमान विलास स्तोत्र (७२८७)

प्रस्तुत स्तोत्र भट्टारक ज्ञानभूषण के प्रमुख शिष्य भ० जगद्भूषण द्वारा विरचित है। इसमे ४०१ पद्य है स्तोत्र विस्तृत है तथा उसमें भगवान महावीर के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है। पाण्डुलिपि अपूर्ण है तथा प्रारम्भ के ३ पत्र नही है फिर भी स्तोत्र प्रकाशन होने योग्य है।

७४ समवशरण पाठ (७३५४)

सस्कृत भाषा मे निबद्ध उक्त समवशरण पाठ रेखराज की कृति है। रेखराज कवि ने इसे कब समाप्त किया था इसके बारे में कोई उल्लेख नही मिलता है। रचना सामान्यतः अच्छी है।

इसी तरह समवशरण मगल मङ्गार्काव मायाराम का (७३५५) तथा समवशरण स्तोत्र (विष्णुसेन) भी इस विषय की उल्लेखनीय कृतिया है।

पूजा एवं विधान साहित्य

उक्त विषय के अन्तर्गत उन रचनाओं को दिया गया है जो या तो पूजा साहित्य में सम्बन्धित हैं अथवा प्रतिष्ठा विधान आदि पर लिखी गयी है। प्रस्तुत विषय की १६७५ पाण्डुलिपियों का परिचय इस भाग में दिया गया है ग्रंथ सूची के भाग में सबसे अधिक कृतियां इन्हीं विषयों की है। ये पूजाएं मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की है। पूजा साहित्य का मध्यकाल मे कितना अधिक प्रचार था यह इन पाण्डुलिपियों की संख्या से जाना जा सकता है। इस विषय की कुछ अज्ञात एवं उल्लेखनीय रचनाये निम्न प्रकार है—

१	अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	मल्लिसागर	(७४६४)	संस्कृत
२	अनन्तचतुर्दशी पूजा	शान्तिदास	(७४६१)	,,
३	अनन्तनाथ पूजा मडल विधान	गुणचन्द्राचार्य	(७५०८)	,,
४	अनन्तव्रत कथा पूजा	ललितकीर्ति	(७५१६)	,,
५	अनन्तव्रत पूजा	पाण्डे धर्मदास	(७५१७)	,,
६	अनन्तव्रत पूजा उद्यापन	सकलकीर्ति	(७५३१)	,,
७	अष्टाह्निका व्रतोद्यापन पूजा	प० नेमिचन्द	(७५५६)	,,
८	आदित्यवार व्रतोद्यापन पूजा	जयसागर	(७५७१)	,,
९	कल्याण मन्दिर पूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(७६४७)	,,
१०	चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	विद्यानन्दि	(७६८१)	,,
११	चौबीस तीर्थंकर पूजा	देवीदास	(७७२७)	हिन्दी
१२	चतुर्विंशति तीर्थंकर पंचकल्याणक पूजा	जयकीर्ति	(७८४४)	संस्कृत
१३	जम्बूद्वीप पूजा	प० जिनदास	(७८६८)	,,
१४	तीस चौबीस पूजा	प० साधारण	(७६२५)	,,
१५	त्रिकाल चतुर्विंशति पूजा	त्रिभुवनचन्द्र	(७६४६)	,,
१६	त्रिलोकसार पूजा	नेमीचन्द	(७६६२)	हिन्दी
१७	,,	सुमतिसागर	(७६७२)	संस्कृत
१८	दशलक्षणव्रतोद्यापन पूजा	भ० ज्ञानभूषण	(८०६५)	संस्कृत
१९	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	प० जिनेश्वरदास	(८२२६)	,,
२०	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	विरधीचन्द	(८२३१)	हिन्दी
२१	पंच कल्याणक पूजा उद्यापन	गुजरमल ठग	(८२३६)	,,
२२	पंच कल्याणक पूजा	प्रभाचन्द	(८२४१)	संस्कृत
२३	पंच कल्याणक	वादिभूषण	(८२४४)	,,
२४	पंच कल्याणक विधान	हरी किशन	(८२८०)	हिन्दी
२५	पद्मावती पूजा	टोपण	(८३८८)	संस्कृत
२६	पूजाष्टक	ज्ञानभूषण	(८४५२)	,,
२७	प्रतिष्ठा पाठ टीका	परशुराम	(८६२३)	,,
२८	लघु पंच कल्याणक पूजा	हरिमान	(८७६०)	हिन्दी

२६	व्रत विधान पूजा	अमरचन्द	(८८०८)	हिन्दी
३०	षोडशकारण व्रतोद्यापन पूजा	सुमतिसागर	(८८६३)	संस्कृत
३१	सम्मेदशिखर पूजा	ज्ञानचन्द	(८६८१)	हिन्दी
३२	सम्मेदशिखर पूजा	रामपाल	(८६६८)	,,

गुटकासंग्रह

७६ सीता सतु (६१६६)

यह कविवर भगौतीदास की रचना है जो देहली के अपभ्रंश एवं हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। अजमेर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार मे एक बड़ा गुटका है जिसमे सभी रचनाये भगौतीदास विरचित है। सीतासतु भी उन्ही मे से एक रचना है जो दूसरे गुटके मे भी सग्रहीत है। यह सवत् १६८४ की रचना है कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

> गुरु मुनि महिंदसैण भगौती, रिसि पद पकज रेणु भगौती।
> कृष्णदास वनि तनुज भगौती, तुरिय गह्यो व्रतु मनुज भगौती।
> नगरि बूडिये वासि भगौती, जन्म भूमि चिरू ग्रामि भगौती।
> अग्रवाल कुल बस लगि, पंडित पद निरखि भमि भगौती।

सीतासतु की कुल पद्य संख्या ७७ है।

७७ मृगी संवाद (६१६६)

यह कवि देवराज की कृति है जिसे उन्होने सवत् १६६३ मे लिखी थी। सवाद रूप मे यह एक सुन्दर काव्य है जिसकी पद्य सख्या २५० है। कवि देवराज पासचन्द सूरि के शिष्य थे।

७८ रत्नचूडरास (६३००)

रत्नचूडरास सवत् १५०१ की रचना है। इसकी पद्य सख्या १३२ है। इसकी भाषा राजस्थानी है तथा काव्यत्व की दृष्टि से यह एक अच्छी रचना है। कवि वडतपगच्छ के साधु रत्नसूरि के शिष्य थे।

७६ बुद्धि प्रकाश (६३०१)

थेल्ह हिन्दी के अच्छे कवि थे। बुद्धिप्रकाश इनकी एक लघु रचना है जिसमे केवल २७ पद्य है। रचना उपदेशात्मक एव सुभाषित विषय से सम्बद्ध हैं।

८० वीरचन्द दूहा (६३६६)

यह लक्ष्मीचन्द की कृति है जिसमे भट्टारक वीरचन्द के बारे मे ६६ पद्यो में परिचय प्रस्तुत किया है। रचना १६ वी शताब्दी की मालूम पड़ती है। यह एक प्रकाशन योग्य कृति है।

८१ अर्गलपुर जिन वन्दना (६३७१)

यह रचना भी कविवर भगवतीदास की है जो देहली निवासी थे। इसमे आगरे में सवत् १६५१ मे जितने भी जिन मन्दिर एवं चैत्यालय थे उन्हों का वर्णन किया गया है। रचना ऐतिहासिक है तथा "अर्गलपुर पट्टणि जिण मन्दिर जो प्रतिमा रिमि गाई" यह प्रत्येक पद्य की टेक है। प्रत्येक पद्य १२ पंक्ति वाला हैं। पूरी रचना मे २१ पद्य है। आगरा मे तत्कालीन श्रावकों के भी कितने ही नामों का उल्लेख किया गया है। एक उदाहरण देखिये—

साहु नराइनी करिउ जिनालय अति उत्त ग धुज सोहइ हो।
गधकुटी जिन बिंब विराजत अमर खचर खोहइ हो।
जगभूषनु भट्टारक तिह थलि करि करि छमइ यो हो।
श्रुत सिद्धान्त उदधि बुधि गण हस पचम काल दिसिद हो।
तिनि इकु श्लोकु सुनायो मुख भानी रामपुरी धनि लोक हो।
जिह सरवरि निस हंस विराजइ सोम खस वर स्तोक हो।
नृप मराल अंड आंति जहा ते तिह मरि सोभा नाही हो।
ज्ञानी अरु ज्ञानी जग मडण समुझि लखो मनमाही हो।
समुझि लखहि मन माहि सगुण जण सुनि वानी गुरु देवा।
सर सुखु देखि अभै पदु पावहि करहि साधु रिसि सेवा ॥१६॥

८२ संतोष जयतिलक (६४२१)

यह बूचराज कवि का रूपक काव्य है जिसमे सतोष की लोभ पर विजय का वर्णन किया गया है। सतोष के प्रमुख अंग है शील, सदाचार, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र, वैराग्य, तप, करुणा क्षमा एव सयम। लोभ के प्रमुख अंगों मे मान, क्रोध, मोह, माया कलह आदि है। कवि ने इन पात्रों की सयोजना करके प्रकाश और अन्धकार पक्ष की मौलिक उद्भावना प्रस्तुत की है। इसमे १३१ पद्य हैं जो मात्रिक, रड रगिक्का, गाथा, दोहा, पद्धडी, अडिल्ल, रासा, आदि छन्दों में विभक्त है। इस काव्य की एक प्रति दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ बूंदी के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है।

८३ चेतन पुद्गल धमालि (६४२१)

यह कवि का दूसरा रूपक काव्य है। वैसे तो कवि का 'मयणजुज्झ' अत्यधिक प्रसिद्ध रूपक काव्य है। लेकिन भाषा एव शैली की दृष्टि से चेतन पुद्गल धमालि सबसे उत्तम काव्य है। इसमें कवि ने जीव और पुद्गल के पारस्परिक सम्बन्धों का तुलनात्मक वर्णन किया है। वास्तव मे यह एक सवादात्मक रूपक काव्य है। जिसके जड एव जीव दोनो नायक है। काव्य का पूरा संवाद रोचक है तथा कवि ने उसे बडे ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। इसमें १३६ पद्य हैं जिनमे १३१ पद्य दीपकराग के तथा ५ पद्य अष्ट छप्पय छन्द के हैं। रचना मे रचनाकाल का उल्लेख नहीं है। अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

जे वचन श्रीजिण वीरि भासे, तास नित धारहु हीया।
इव भणइ बूचा सदा निम्मल, मुकति सरूपी जिया ॥

८४ आराधना प्रतिबोधसार (६६४६)

यह कृति भ० विमलकीर्ति की है जो संभवत: भ० सकलकीर्ति के पश्चात् गादी पर बैठे थे लेकिन अधिक दिनों तक उस पर टिके नहीं रह सके। इस कृति मे ५५ छन्द हैं। कृति आराधना पर अच्छी सामग्री प्रस्तुत करती है। इसकी भाषा अपभ्रंश मय है।

> हो अप्पा दसण णाण हो, अप्पा सयम जाण।
> हो अप्पा गुण गमीर हो, अप्पा शिव पद धार ।।५१।।
> परमप्पा परमवछेद, परमप्पा अकल अभेद।
> परमप्पा देवल देव, इम जाणी अप्पा सेव ।५१।।

८५ सुकौशल रास (६६४६)

यह सांसू कवि की रचना है जो प्रमुख रूप से चौपई छन्द मे निबद्ध है। प्रारम्भ मे कवि का नाम साधु भी दिया गया है। इसी तरह कृति का नाम भी "सुकोसल रास चउपई" दिया है। कवि ने अपने नामोल्लेख के अतिरिक्त अन्य परिचय नहीं दिया है और न अपने गुरु परम्परा का हो उल्लेख किया है। रास की भाषा सरल एवं सुबोध है। एक उदाहरण देखिये—

> अजोध्या नगरी अति भली, उत्तम कहीइ ठाम।
> राज करि परिवार सु, कीर्त्ति धवल तस नाम ।।१०।।
> तस धारि राणी रूयडी, रूयवत सुव सेव।
> सहि देवी नामि सुगु, भक्ति भग्तार विवेक ।।११।।

८६ बलिभद्र चौपई (६६४६)

यह चोपई काव्य ब्रह्म यशोधर की कृति है जिसमे त्रेसठ शलाका महापुरुषो मे से ९ बलिभद्रो पर प्रकाश डाला गया है। इसका रचना काल सवत १५८५ है। स्कंध नगर के अजित नाथ चैत्यालय मे इसकी रचना की गयी थी। ब्र० यशोधर भ० रामदेव के अनुक्रम मे होने वाले भट्टारक यश कीर्ति के शिष्य थे। चोपई मे १८६ पद्य है।

> सवत पनर पच्यासई, स्कंध नगर मझारि।
> भवणि अजित जिनवर तणि ए गुण गाया सार ।।१८६।।

८७ यशोधररास (६६४६)

यह सोमकीर्ति का हिन्दी काव्य है जिसमें महाराजा यशोधर के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना गुढली नगर के शीतलनाथ स्वामी के मन्दिर में की गयी थी। सारा काव्य दश ढालों से विभक्त है। ये ढाले एक रूप से सर्ग का ही काम देती है। इसकी भाषा राजस्थानी है जिसमे कहीं कहीं गुजराती के शब्दो का भी प्रयोग हुआ है। रास की संवत १६८५ की पाण्डुलिपि बूंदी नगर के मन्दिर केगुटके में उपलब्ध होती है।

६० चूनड़ी, ज्ञान चूनड़ी आदि (६७०८)

चूनड़ी एव ज्ञान चूनड़ी, पद संग्रह, नेमि व्याह पच्चीसी, बारहखड़ी एव शारदा लक्ष्मी सवाद आदि सभी रचनायें वेगराज कवि की हैं। कवि १६ वी शताब्दी के थे।

६१ नेमिनाथ को छन्द (६६२२)

'नेमिनाथ को छंद' कृति हेमचन्द्र का है जो श्रीभूषण के शिष्य थे। इसमें नेमिनाथ का जीवन चित्रित किया गया है। रचना विविध छन्दों में विभक्त है छन्द की भाषा सस्कृत निष्ठ है लेकिन वह सरल एवं सामान्य है। इसकी पद्य संख्या २०५ है। रचना प्रकाशन होने योग्य है।

८८ शालिभद्ररास (६६७८)

यह श्रावक फकीर की रचना है जो बघेरवाल जाति के खडीय्या गोत्र के श्रावक थे। इसका रचना काल संवत् १७४३ है। रास की पद्य संख्या २२१ है। रचना काल निम्न प्रकार दिया गया है—

> ग्रहो सबत् सतरासैं वरस तीयाल।
> मास बैसाख पूर्णिम प्रतिपाल।
> जोग नीखतर सब भल्या मिल्या गुढामभी।
> पूरणवास रखने ग्रनरथ राजई।
> ग्रहो सगली मन की पूगली ग्रास सालिभद्र गुण वरणउ ॥२२१॥

८९ गुणठाणा गीत (६६८३)

गुणठाणा गीत (गुणस्थान गीत) वद्ध वर्द्धन की कृति है जो सोमाचन्द सूरि के शिष्य थे। गीत बहुत छोटा है और १७ छन्दो में ही समाप्त हो जाता है। इसमें गुणस्थान के बारे में अच्छा प्रकाश डाला गया है। भाषा राजस्थानी है।

६२ पद (६६३६)

यह एक मुसलिम कवि की रचना है जिसमे नेमिनाथ का गुणानुवाद किया गया है। नेमिनाथ के जीवन पर किसी मुसलिम कवि द्वारा यह प्रथम पद है। कवि नेमिनाथ के जीवन से परिचित ही नहीं था किन्तु वह उनका भक्त भी था। जैसा कि पद की निम्न पक्ति से जाना जा सकता है—

> छपन कोटि जादो तुम मुकुट मनि।
> तीन लोक तेरी करत सेवा।
> खान मुहम्मद करत हो वीनती।
> राखिने शरण देवाधिदेवा ॥६॥

९३ धनकुमार चरिउ (१०,०००)

धन्यकुमार चरिउ महाकवि रइधू की कृति है। रइधू अपभ्रंश के १५ वी शताब्दि के जबरदस्त महा कवि थे। अब तक इनकी २० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं। धन्यकुमार चरित इसी कवि की रचना है जिसकी पाण्डुलिपि कामा के दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे संग्रहीत है।

९४ तीर्थंकर माता पिता वर्णन (१०१३७)

यह संवत् १५४८ की रचना है जिसमे ३० पद हैं। इसके कवि है हेमनु जिसके पिता का नाम जिनदास एवं माता का नाम वेल्हा था। वे गोलापूर्व जाति के वणिक थे। इसमें २४ तीर्थंकरों के माता पिता, शरीर, आयु आदि का वर्णन मिलता है। वर्णन के भाषा एवं शैली सामान्य है। यह एक गुटके मे संग्रहीत है जो जयपुर के लश्कर के दि० जैन मन्दिर मे संग्रहीत है।

९५ यशोधर चरित (१०१८१)

मनसुखसागर हिन्दी के अच्छे कवि थे। इनका सम्मेदशिखर महात्म्य हिन्दी कृति पहिले ही मिल चुकी है। प्रस्तुत कृति मे यशोधर के जीवन पर वर्णन किया गया है। यह संवत् १८८७ की कृति है। इसी संवत् की एक प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर फतेहपुर मे संग्रहीत है। यह हिन्दी की अच्छी रचना है। मनसुखसागर की अभी और भी रचना मिलने की संभावना है।

९६ गुटका (१०२३१)

दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर मे एक गुटका पत्र संख्या १८-२९८ है। यह गुटका संवत् १६११ से १६४३ तक विभिन्न वर्षो मे लिखा गया था। इसमे १८८ रचनाओं का संग्रह है। गुटका के प्रमुख लेखक भट्टारक श्री विद्याभूषण के प्रशिष्य एवं विनयकीर्ति के शिष्य ब्र० धन्ना थे इसमें जितनी भी हिन्दी कृतिया है वे सभी महत्वपूर्ण एवं अप्रकाशित हैं। उन्हें कवि ने भिण्डि, रैवपल्ली नगरो मे लिखा था। गुटके मे कुछ महत्वपूर्ण पाठ निम्न प्रकार है—

१	जीवंधररास	त्रिभुवनकीर्ति	रचना काल संवत् १६०६
२	श्रावकाचार	प्रतापकीर्ति	
३	सुकमाल स्वामीरास	धर्मरूचि	
४	बाहुबलिवोलि	शान्तिदास	—
५	सुकोशलरास	सागु	—
६	यशोधररास	सोमकीर्ति	—
७	भविष्यदत्तरास	विद्याभूषण	—

९७ भट्टारक परम्परा

डूंगरपुर के शास्त्र भण्डार मे एक गुटका है जिसमे १४७१ से १८२२ तक भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा मे होने वाले भट्टारको का विस्तृत परिचय दिया गया है। सर्व प्रथम बागड देश के भूमच राज्य मे

होने वाले देहली पट्टस्थ भट्टारक पद्मचन्द से परम्परा दी गयी है। उसके पश्चात् भ० पद्मनन्दि एवं उसके पश्चात् भ० सकलकीर्ति का उल्लेख किया गया है। भ० सकलकीर्ति एवं भुवनकीर्ति के मध्य में होने वाले भ० विमलेन्द्रकीर्ति का भी उल्लेख हुआ है। पट्टावली महत्वपूर्ण है तथा कितने ही नये तथ्यों को उद्घाटित करती है।

९८ भट्टारक पट्टावलि (६२८६)

उदयपुर के सम्भवनाथ मे ही यह एक दूसरी पट्टावली है जिसमे जो १६६७ मार्गशीर्ष सुदी ३ शुक्रवार से प्रारम्भ की गयी है इस दिन प० क्षमा का जन्म हुआ था जो भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के पश्चात् भट्टारक बने थे। इसके पश्चात् विभिन्न नगरो मे विहार एवं चातुर्मास करते हुए श्रावको को उपदेश देते हुए सन् १७५७ की मार्गशीर्ष बुदी ४ के दिन अहमदाबाद नगर मे ही स्वर्गलाभ लिया। उस समय उनकी आयु ६० वर्ष की थी। पूरी पट्टावली क्षमेन्द्रकीर्ति की है। ऐसी विस्तृत पट्टावली बहुत कम देखने मे आयी है। उनकी ६० वर्ष की जो जीवन गाथा कही गयी है वह पूर्णतः एतिहासिक है।

९९ मोक्षमार्ग बावनी (१५९३)

यह मोहनदास की बावनी है। मोहनदास कौन थे तथा कहा के निवासी थे इस सम्बन्ध मे कवि ने कोई परिचय नही दिया है। इसमे सवैय्या, दोहा, कुडलिया एवं छप्पय आदि छन्दो का प्रयोग हुआ है। बावनी पूर्णतः आध्यात्मिक है तथा भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना उत्तम है।

> है नाही जामै नही, नहि उतपति विनास।
> सो अभेद आतम दरब, एक भाव परगास ॥ १३ ॥
> चित थिरता नहि मेर सम, अथिर न पत्र समान ॥
> ज्यो तर पवन झकोलतै ठोर न तजत सुजान ॥ १४ ॥

१०० सुमतिनाथ पुराण (३१०४)

दीक्षित देवदत्त सस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। उनकी सस्कृत रचनाओ मे सगर चरित्र, सम्मेदशिखर महात्म्य एवं सुदर्शन चरित्र उल्लेखनीय रचनाये हैं। सुमतिनाथ पुराण हिन्दी कृति है जिसमे पाचवे तीर्थकर सुमतिनाथ के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इसमे पाच अध्याय हैं। कवि जिनेन्द्र भूषण के शिष्य थे। पुराण के बीच मे सस्कृत के श्लोको का प्रयोग किया गया है।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

प्रस्तुत ग्रथ सूची मे बीस हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियों का वर्णन है। जिनमे मूल ग्रथ ५०५० हैं। ये ग्रथ सभी भाषाओ के हैं लेकिन मुख्य भाषा सस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी है। प्राकृत भाषा के भी उन ही ग्रंथो की पाण्डुलिपिया है जो राजस्थान के अन्य भण्डारों मे मिलती है। अपभ्रश को बहुत कम रचनायें इस सूची मे आयी है। अजमेर एवं कामा जैसे ग्रथागारो को छोडकर अन्यत्र इस भाषा की रचनायें बहुत कम मिलती है

संस्कृत भाषा में सबसे अधिक रचनायें स्तोत्र एवं पूजा सम्बन्धी हैं। बाकी रचनाये वही सामान्य है। समयसार पर संस्कृत भाषा की जो तीन संस्कृत टीकाए उपलब्ध हुई है और जिनका ऊपर परिचय भी दिया जा चुका है वे महत्वपूर्ण है। लेकिन सबसे अधिक रचनायें हिन्दी भाषा की प्राप्त हुई हैं। वस्तुतः अब तक जो हिन्दी जैन साहित्य प्रकाश मे आया है वह तो ग्रंथ सूची मे वर्णित साहित्य का एक भाग है। अभी तो सैकडो ऐसी रचनाये हैं जिनका विद्वानो को परिचय भी प्राप्त नहीं हुआ है और जो हिन्दी की महत्वपूर्ण रचनायें है। सैकडो की सख्या मे गीत मिले है जो गुटको मे सग्रहीत हैं। इन गीतों मे नेमि राजुल गीत पर्याप्त सख्या मे है। इनके अतिरिक्त हिन्दी की अन्य विधाओ की भी रचनाये उपलब्ध हुई है वास्तव मे जैन विद्वानो ने काव्य के विभिन्न रूपो में अपनी रचनाये प्रस्तुत करके अपनी विद्वत्ता का ही प्रदर्शन नही किया किन्तु हिन्दी को भी जनप्रिय बनाने में अत्यधिक योग दिया।

ग्रंथ सूची के इस विशालकाय भाग में बीस हजार पाण्डुलिपियो के परिचय मे यदि कही कोई कमी रह गयी हो अथवा लेखक का नाम रचनाकाल आदि देने मे कोई गलती हो गयी हो तो विद्वान् उन्हे हमे सूचित करने का कष्ट करेंगे। जिससे भविष्य के लिये उन पर ध्यान रखा जा सके। शास्त्र भण्डारो के परिचय हमने उनकी सूची बनाते समय लिया था उसी आधार पर इस सूची मे परिचय दिया गया है। हमने सभी पाण्डुलिपियों का अधिक से अधिक परिचय देने का प्रयास किया है। सभी महत्वपूर्ण ग्रंथ एवं लेखक प्रशस्तिया भी दे दी गयी है जिनकी सख्या एक हजार से कम नही होगी। इन प्रशस्तियो के आधार पर साहित्य एवं इतिहास के कितने ही नये तथ्य उद्घाटित हो सकेंगे तथा राजस्थान के कितने ही विद्वानों, श्रावकों एवं शासकों के सम्बन्ध मे नवीन जानकारी मिल सकेगी।

राजस्थान के विभिन्न नगरो एवं ग्रामों में स्थापित कुछ भण्डारो को छोड़कर शेष की स्थिति अच्छी नही है और यही स्थिति रही तो थोडे ही वर्षों में इन पाण्डुलिपियों का नष्ट होने का भय है। इन भण्डारों के व्यवस्थापको को चाहिये कि वे इन्हे व्यवस्थित करके वेष्टनों मे बाधकर विराजमान करें, जिससे वे भविष्य में खराब भी नही हो और समय २ पर उनका उपयोग भी होता रहे।

महावीर भवन
जयपुर
दिनांक २५-१२-७१

कस्तूरचन्द कासलीवाल
अनूपचन्द न्यायतीर्थ

कतिपय अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रंथों की नामावलि

क्रम संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	भाषा
१	६७६८	अकलंकदेव स्तोत्र भाषा	नथमल बागडिया	हिन्दी
२	५५६२	अजीर्ण मंजरी	[illegible]मनसा	,,
३	६१३३	अजितनाथ रास	ब्र० जिनदास	,,
४	४२२३	अनिरुद्ध हरण (उषाहरण)	रत्नभूषण	,,
५	४२२४	अनिरुद्ध हरण	[illegible]यसागर	,,
६	४२२६	अभयकुमार प्रबन्ध	पदमराज	,,
७	४४५१	आदित्यवार कथा	गंगाराम	,,
८	१०१२०	अठाईस मूलगुणरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
९	६३७१	अर्गलपुर जिनवन्दना	भगवतीदास	,,
१०	६१३५	आदिपुराण रास	ब्र० जिनदास	,,
११	७८०७	आदिनाथ स्तवन	मेहउ	,,
१२	६१०५	आदिपुराण रास	ब्र० जिनदास	,,
१३	७५३१	अनन्तव्रत पूजा उद्यापन	सकलकीर्ति	संस्कृत
१४	४३०८	कथा संग्रह	विजयकीर्ति	हिन्दी
१५	८१	कर्मविपाक सूत्र चोपई	—	हिन्दी
१६	८२	कर्मविपाक रास	—	,,
१७	६६६	क्रियाकोश भाषा	दौलतराम कासलीवाल	,,
१८	६१४६	कर्मविपाक रास	ब्र० जिनदास	,,
१९	६१४७	करकण्डुनोरास	,,	हिन्दी
२०	१६८८	गुण विलास	नथमल बिलाला	,,
२१	६६८३	गुणठाणागीत	ब्रह्म वर्द्धन	,,
२२	७६८१	चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	विद्यानन्दि	,,
२३	७७२७	चौबीस तीर्थंकर पूजा	देवीदास	हिन्दी
२४	१०५८	चतुर्विंशतिचारणी	दौलतराम कासलीवाल	,,
२५	६१४९	चतुर्गतिरास	वीरचन्द	हिन्दी
२६	६५०४	चतुर्गति नाटक	डालूराम	,,
२७	४३२६	चन्द्रप्रभ स्वामीनो विवाह	नरेन्द्रकीर्ति	,,
२८	३३२	चौदह गुणस्थान वचनिका	अखयराज	,,
२९	३४१	चौबीस गुणस्थान चर्चा	गोविन्दराम	,,

क्रम संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	भाषा
३०	१०२३६	चारुदत्त प्रबन्धरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
३१	२००२	चेतावणी ग्रंथ	रामचरण	,,
३२	६४२१	चेतन पुद्गल धमालि	ब्र० बूचराज	,,
३३	६७०८	चूनडी एवं ज्ञान चूनडी	वेगराज	,,
३४	७८६८	जम्बूद्वीप पूजा	प० जिनदास	संस्कृत
३५	३३५८	जीवंधर चरिउ	रइधू	अपभ्रंश
३६	३३५६	जीवंधर चरित	दौलतराम कासलीवाल	हिन्दी
३७	३३६०	जीवंधर चरित्र प्रबंध	भ० यश.कीर्ति	हिन्दी
३८	६११७	जीवंधर रास	ब्र० जिनदास	,,
३९	६११३	जम्बूस्वामीरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
४०	५१५४	,,	नयविमल	,,
४१	२०५५	ज्ञानार्णव गद्य टीका	ज्ञानचन्द	संस्कृत
४२	५३०	तत्वार्थ सूत्र भाषा	साहिबराम पाटनी	,,
४३	६२३	त्रिभंगी सुबोधिनी टीका	आशाधर	संस्कृत
४४	१०१३७	तीर्थंकर माता पिता वर्णन	हेमराज	हिन्दी
४५	१०,०००	धनकुमार चरित्र	रइधू	अपभ्रंश
४६	३८६१	धर्मशर्माभ्युदय टीका	यश.कीर्ति	संस्कृत
४७	६१६५	धर्मपरीक्षा रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
४८	६१३०	ध्यानामृत रास	ब्र० करमसी	,,
४९	३८८०	नागकुमार चरित	नथमल बिलाला	हिन्दी
५०	६१०१	नवकार रास	ब्र० जिनदास	,,
५१	६१०२	नागकुमार रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
५२	६१०६	नेमीश्वररास	,	,
५३	१०२३६	नागश्री रास	,,	,,
५४	६८८२	नेमिनाथ को छन्द	हेमचन्द	हिन्दी
५५	२१२१	परमात्मप्रकाश भाषा	बुधजन	,,
५६	२१२७	परमात्मप्रकाश टीका	ब्र० जीवराज	हिन्दी
५७	२८७१	पद्मचरित टिप्पण	श्रीचन्द मुनि	संस्कृत
५८	३५२०	पार्श्व चरित्र	तेजपाल	अपभ्रंश
५९	१०१२०	पानीगालण रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
६०	२०१३	पुराणसार	सागरसेन	संस्कृत
६१	२०८६	परमार्थ शतक	भगवतीदास	हिन्दी
६२	६१८०	परमहंस रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
६३	१८५७	ब्रह्म बावनी	निहाल चन्द	,,

क्रम संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	भाषा
६४	६६४६	बलिभद्र चौपई	ब्र० यशोधर	हिन्दी
६५	,,	बाहुबलिवेलि	शान्तिदास	,,
६६	६६६०	बारा आरा महाचौपई बध	ब्र० यशोधर	हिन्दी
६७	६३०१	बुद्धि प्रकाश	थेल्ह	,,
६८	७१७३	भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका	हेमराज	,,
६९	७१८५	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	भ० रत्नचन्द	,,
७०		भट्टारक परम्परा	—	हिन्दी
७१	६२८६	भट्टारक पट्टावलि	—	हिन्दी
७२	६१६४	भविष्यदत्त रास	विद्याभूषण	हिन्दी
७३	३७२१	भोजचरित्र	भवानीदास व्यास	,,
७४	६१६६	मृगोसवाद	देवराज	,,
७५	१५६३	मोक्षमार्ग बावनी	मोहनदास	,,
७७	१५३६	मुक्ति स्वयंवर	वेणीचन्द	,,
७८	६८२४	यशोधर चरित्र	देवेन्द्र	हिन्दी
७९	६१९७	यशोधर रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
८०	६६४६	यशोधर रास	सोमकीर्ति	,,
८१	१०१८१	यशोधर चरित्र	मनसुखसागर	,,
८२	६३००	रत्नचूडरास	—	,,
८३	३८८८	रत्नपालप्रबन्ध	श्रीपति	,,
८४	६२०३	रामरास	ब्र० जिनदास	,,
८५	६२०२	रामचन्द्ररास	,,	,,
८५	६२०४	रामरास	माधवदास	हिन्दी
८७	५२३२	वचनकोश	बुलाकीदास	,,
८८	६६६४	वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा	ऋषभदास	,,
८९	२०८२	वर्द्धमानपुराण भाषा	नवलराम	
९०	२०७०	वर्द्धमानपुराण	नवलशाह	,,
९१	६२०७	वर्धमानरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
९२	६३६९	वीरचन्द दूहा	लक्ष्मीचन्द	हिन्दी
९३	३६३१	विक्रम चरित्र चौपई	माउ	,,
९४	१६६४	वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा	—	
९५	६२९८	वृहद् तपागच्छ पट्टावली	—	संस्कृत
९६	७२८७	वर्धमान विलास स्तोत्र	भ० जगद्भूषण	,,
९७	३०९८	शांतिपुराण	प० आशाधर	संस्कृत
९८	३०९५	शांतिनाथपुराण	ठाकुर	हिन्दी

क्रम संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	भाषा
९९	३९६५	शांतिनाथ चरित्र भाषा	सेवाराम पाटनी	,,
१००	६३७८	शालिभद्ररास	फकीर	हिन्दी
१०१	२७०२	श्रावकाचार	ब्र० जिनदास	,,
१०२	१०२३१	श्रावकाचार	प्रतापकीर्त्ति	
१०३	४०५०	श्रीपालचरित्र	ब्र० चन्द्रसागर	,,
१०४	४१०३	श्रेणिक चरित्र	दौलतराम कासलीवाल	,,
१०५	४१०५	श्रेणिकप्रबन्ध	कल्याणकीर्ति	,,
१०६	६२२३	श्रुतकेवलीरास	ब्र० जिनदास	,,
१०७	२२८७	समयसार टीका	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत
१०८	२३०६	समयसार टीका	देवेन्द्रकीर्ति	,,
१०९	२३०५	समयसार वृत्ति	प्रभाचन्द्र	,,
११०	४८२८	सम्यक्त्व कौमुदी	जगतराय	हिन्दी
१११	७३५४	समवसरणपाठ	रेखराज	,,
११२	७३५५	,,	मायाराम	,,
११३	६३१०	सकलकीर्तिनुरास	ब्र० सामल	,,
११४	६७७६	सबोध सताणनुदूहा	वीरचन्द	,,
११५	५७९४	स्वरोदय	मोहनदास	,,
११६	९४२१	संतोष तिलक जयमाल	बूचराज	,,
११७	२५२१	सामायिक पाठ भाषा	श्यामराम	,,
११८	६२३५	सुकौशलरास	वेणीदास	,,
११९	६९४९	,,	सांगु	,,
१२०	३१०४	सुमतिनाथ पुराण	दीक्षित देवदत्त	,,
१२१	४१८८	सुदर्शन चरित्र भाषा	जैनन्द	,,
१२२	१०२३१	सुकुमाल स्वामी रास	धर्मरुचि	,,
१२३	१०२३१	सुदर्शन रास	ब्र० जिनदास	,,
१२४	१३९१	सुखविलास	जोधराज कासलीवाल	,,
१२५	२२५६	षट् पाहुड भाषा	देवीसिंह	,,
१२६	४९००	होली कथा	मुनि शुभचन्द्र	हिन्दी

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

को

ग्रंथ सूची-पंचम भाग

विषय-आगम, सिद्धान्त एवं चर्चा

१. **अनुयोगद्वार सूत्र**— × । पत्र सख्या ५६ । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । रचना-काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—यह पाच मूल सूत्रों मे से एक सूत्र है ।

२. **अर्थप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल** । पत्र स० ४६८ । आ० १५×७½ इञ्च । भाषा–राजस्थानी (ढूंढारी गद्य) । विषय–सिद्धान्त । रचना काल स० १६१४ वैशाख सुदी १० । लेखन काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर । वेष्टन स० १ ।

विशेष—इसका रचना कार्य स० १६१२ मे प्रारम्भ हुआ था । यह तत्त्वार्थसूत्र पर सदासुख जी की वृहद् गद्य टीका है ।

३. **प्रति सं० २** । पत्र स० ३६५ । ले० काल स० १६२६ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

४. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ४१६ । आ० १२×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर, अलवर । वे० सं० १४३ ।

५. **प्रति सं० ४** । पत्र स० ३०६ । आ० १३×६½ इञ्च । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर, बूंदी ।

६. **प्रति सं० ५** । पत्र स० २८६ । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल स० १६५० वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, टोडारायसिंह ।

७. **प्रति सं० ६** । पत्र स० ३२१ । आ० ११½×७½ इञ्च । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—गणेशलाल पाण्ड्या चौधरी चाटसू वाले ने प्रतिलिपि कराई । पुस्तक साह भैरूबगसजी कस्य धन्नालाल जी इन्द्रगढ़ वालों ने मथुरालाल जी अग्रवाल कोटा वालों की मारफत लिखाई ।

८. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ३१२ । आ० १२×७½ इञ्च । लेखन काल स० १६३३ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष –श्रावक माधोदास ने इसी मन्दिर मे ग्रन्थ को चढाया था।

९. प्रति सं० ८ । पत्र स० ६१६ । आ० १०½×७ इञ्च । लेखन काल ×। पूर्ण । वेष्टन सख्या ५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१०. प्रति सं० ९ । पत्र सख्या १६३ । आ० १२½×७ इञ्च । लेखन काल १६३० । पूर्ण । वेष्टन सख्या ५ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

११. प्रति सं० १० । पत्र सख्या १२१ । आ० १०×६½ इञ्च । लेखन काल सवत् १६५५ सावरण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटियोका नैणवा

१२. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६०१ । लेखन काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रिखबदास जैसवाल रहने वाला हवेली पालम जिला दिल्ली वाले ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१३. प्रति सं० १२ । पत्र सख्या १०६ । आ० ११½×५½ इञ्च । लेखन काल स० १६४० भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ४६५ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—रिखबचन्द बिन्दायक्या ने प्रतिलिपि की थी तथा सवत् १६६६ कार्तिक कृष्णा ८ को लश्कर के मदिर मे विराजमान किया था ।

१४. अर्थसंदृष्टि— × । पत्र सख्या ५ । आ० १२×४ इञ्च। भाषा प्राकृत-सस्कृत । विषय--आगम । र० काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सख्या ७१७ । ६५५ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१५. आगमसारोद्धार—देवीचन्द । पत्र सख्या ८० । आ० ८½ ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल स० १७४६ । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ३७० । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—गुटका के रूप मे है । टीका का नाम सुखबोध टीका है ।

१६. प्रति सं० २ । पत्र सख्या १६ । आ० १० [illegible] । लेखन काल × । वेष्टन सख्या १६६/१२६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह [illegible]

इति श्री खरतरगच्छे श्री देवेन्द्रचन्द्रमणि विरचिता श्री आगम[illegible]र बालावबोध सपूर्णा ।

१७. अन्तगडदसाओ— × । पत्र सख्या [illegible] । आकार [illegible] ४½ इञ्च । **भाषा प्राकृत** विषय–आगम । रचना काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या [illegible] । **प्राप्ति स्थान**-- भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसका सस्कृत मे अन्तकृद्दशाग नाम है । यह जैनागम का आठवा अङ्ग है ।

१८. अन्तकृतदशांग वृत्ति— × । पत्र सं० ८ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय–आगम । र० काल × । लेखन काल स० १६७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है–स० १६७५ वर्षे शाके १५४० प्रवर्तमाने आश्विनिमासे शुक्ल

पक्षे पूर्णमास्या तिथौ बुधवासरे श्री चन्द्रगच्छे श्री हीराचन्द सूरि शिष्य गगादास लिखितमल ।

१६. आचारांग सूत्र— × । पत्र स० २८ । आ० १०×४३/४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है कही कही हिन्दी टीका भी है । प्रथम श्रुतस्कध तक है । आचारांग–सूत्र प्रथम आगम ग्रन्थ है ।

२०. प्रति सं० २ । पत्र सख्या ५ । लेखन काल × । वेष्टन स० ६६८ । अपूर्ण ।**प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

२१. आचारांग सूत्र वृत्ति—अभयदेव सूरि । पत्र स० १–१६५ । आ० १०३/४×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–आगम । र० काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५३ । **प्राप्ति-स्थान**–दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है पर बीच के कितने ही पत्र नही हैं ।

२२. आचारांग सूत्र वृत्ति × । पत्र स० १०० । आ० १०३/४×४१/४ इञ्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । विषय—आगम । र० काल—× । ले काल—× । पूर्ण । वे. स १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूंदी ।

२३. आवश्यक सूत्र—× पत्र स० –१० से ४४ । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । रचना काल–× । लेखन काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ७४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम षडावश्यक सूत्र भी है । ग्र थ मे प्रतिदिन पाली जाने योग्य क्रियाओं का वर्णन है ।

२४. आवश्यक सूत्र निर्युक्ति ज्ञानविमल सूरि—पत्र सख्या–४४ । भाषा–सस्कृत । विषय–आगम । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८८३ । पूर्ण । वेप्टन स० ६३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर

२५. आश्रव त्रिभंगी-नेमिचन्द्राचार्य—पत्र स० २–३२ । आ १०×४३/४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय– सिद्धान । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं, ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२६. प्रति सं. २. । पत्र स० १० । आ १२×५१/२ इञ्च । ले० काल । × वे० स० ६३३ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष— प्रति टीका सहित है ।

२७. प्रति सं. ३. । पत्र स ८७ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे. स. १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बू दी ।

विशेष— ८७ से आगे के पत्र नही है ।

२८. प्रति सं. ४ । पत्र सं ६० । आ० १३×५१/२ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३१ (२) **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोड़ारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—इति श्रीनेमिचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्तीविरचितायां **श्री सोमदेव पण्डितेन** कृत टीकाया श्रीआश्रवबंधउदय उदीरण सत्व प्रभृति लाटी भाषाया समाप्ता। प्रति सटीक है। टीकाकार प० सोमदेव है।

२६. इक्कीस ठाणाप्रकरण—नेमिचंद्राचार्य। पत्र स० ७। आ०-१०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल स० १८२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

विशेष—नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी।

३०. प्रति सं २.। पत्र स० १४। आ० ११×४¾ इञ्च। ले० काल ×।। वे० स० १८६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लशकर, जयपुर।

३१. प्रति सं. ३.। पत्र सं० ८। आ० १०×४ इञ्च। लेखन काल ×। पूर्ण। वे० स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३२. उक्तिनिरूपण— ×। पत्र स० २१। आ० १०¼×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७६। ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ।

३३. उत्तरप्रकृतिवर्णन— ×। पत्र सं० १२। आ०-१०×७¼ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—सिद्धान्त। र काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वे० स० १३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी।

विशेष - पं० विरधीचन्द ने स्वपठनार्थ मुदारा मे प्रतिलिपि की थी।

३४. उत्तराध्ययन सूत्र- ×। पत्र स० ३६। आकार-१०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आगम शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—प्रति जीर्ण है। गुजराती गद्य टीका सहित है। लिपि देवनागरी है।

३५. प्रति सं. २। पत्र सख्या—७। भाषा-प्राकृत। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० ७१६। **प्राप्ति स्थान**—पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—बीसवा अध्याय सस्कृत छाया सहित है।

३६. उत्तराध्ययन टीका— ×। पत्र स ११४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत-सस्कृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ५४४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३७. प्रति सं. २। पत्र स० ७६-३२८। आ० १०¼×५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वे स० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३८. उत्तराध्ययन सूत्र वृत्ति— ×। पत्र स. २-२१६। भाषा—संस्कृत। विषय—आगम। र० काल - ×। ले० काल - ×। अपूर्ण। वे० स० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष— बीच के बहुत से पत्र नही है ।

३९. उत्तराध्ययनसूत्र बलावबोधटीका- × । पत्र सं २-२०५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल । स० १६४१ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे० स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६४१ वर्षे कार्तिक सुदी १३ वारसोमे श्री जैसलमेरमध्ये लिपिकृता श्रावके ऋषि श्री ज्येठा पठनार्थं ।

४०. उत्तराध्ययन सूत्र बालावबोध टीका × । पत्र स० २१९ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४१. उपासकादशांग—पत्र सं० ७८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन स० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष – मूल के नीचे गुजराती प्रभावित राजस्थानी गद्य टीका है । संवत् १६०७ मे फागुण सुदी २ को साधु माणक चन्द ने ग्राम नाथद्वारा मे प्रतिलिपि की थी ।

४२. प्रति सं० २ । पत्र स० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४३. उवाई सूत्र—× । पत्र स० ७८ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र० काल—× । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४४. प्रति सं० २ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष—राजपाटिका नगर प्रतिलिपि कृत ।

४५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ८४ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन० मन्दिर बोरसली, कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा सटीक है ।

४६. एकषष्ठि प्रकरण × । पत्र स० २१ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धात । र० काल × । ले० काल स० १७६४ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर, बयाना ।

विशेष—जिनेश्वरसूरि कृत गुजराती टीका सहित है । अर्थ गाथाओं के ऊपर ही दिया है ।

४७. **एकसौग्रड़तालीस प्रकृति का व्यौरा**— × । पत्र स० ३ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८. **अङ्गपण्णत्ती**—× । पत्र स० २५ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६. **प्रति सं० २** । पत्र स० ५–८ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १५६६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है । सवत् १५६६ वर्षे पौष बुदी ५ भौमवासरे श्रीगिरिपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूल सघे भट्टारक श्री शुभचन्द्र गुरुपदेशात् लिखितं ब्र० तेजपाल पठनार्थं ।

५०. **कर्म प्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्रसं० १६ । ग्रा. ११ × ४¾ इञ्च । भाषा—प्राकृत विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । ले०काल—स० १६८८ पौष बुदी ग्रमावस । पूर्ण । वेष्टनसं० १३८१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६८८ वर्षे मिति पौषमासे असितपक्षे अमावस्या तिथौ शुभनक्षत्रे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये मडला-चार्य श्री ५ श्रीयश कीर्तिस्तच्छिष्य ब्र० गोपालदासस्तेन स्वयमर्थं लिपिकृत स्वात्मपठनार्थं नगरे श्रीमहाराष्ट्र राजा श्रीवीठलदासराज्ये ।

५१. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ३० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

५२. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १२ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५३. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० २८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८७२ । **प्राप्ति स्थान** उपरोक्त मन्दिर ।

५४. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०८० । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

५५. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० १३ । ग्रा० १० × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३८३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५६. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बू दी ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

५७. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० १२ । ले०काल—स० १७०२ । पूर्ण । वेष्टनस० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विषय—त्रिलोक चन्द के पठनार्थ लिखा गया था ।

५८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १२ । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५६. प्रतिसं० १० । पत्रस० २६ । आ० १०×४ इञ्च । लेखन स० १८०६ माघ बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामा मे जिर्नासह के शासन काल मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे रतनचन्द ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६०. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १४ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

६१. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० ८२ । ले०काल स० १५८६ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । इस प्रति की खडेलवालान्वय वैद गोत्रवाले प० लाला भार्या लालसिरि ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६२. प्रतिसं० १३ । पत्रस० १६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

६३. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १२ । ले०काल स० १७०० । पूर्ण । वेष्टनस० २५२-१०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर ।

प्रशस्ति—स० १७०० वर्षे फागुणमासे कृष्णपक्षे ११ दिने गुरुवासरे डडुकाग्रामे श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री रत्नचन्द्राम्नाये ब्रह्म केशवा तत् शिष्य ब्र० श्री गगदास तत् शिष्य ब्र० देवराजाख्य पुस्तक कर्मकाडसिद्धान्त लिखितमस्ति स्वज्ञानावर्णकर्म-क्षयार्थ ।

६४. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १-१७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७८३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० १० । आ० ११×५ । वेष्टनस० १० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६६. प्रतिसं० १७ । पत्रस० १८ । आ० ११×५ । लिपिकाल सं० १७६५ माघ सुदी २ । वेष्टनसं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । महाराजा श्री जयसिंह के शासन काल मे अम्बावती नगर मे प० चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६७. वेष्टनस० । **१८** । पत्रस० १६ । आ० १०×४½ । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६८. कर्मप्रकृति टीका-अभयचन्द्राचार्य । पत्रस० १५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६. **कर्मप्रकृति टीका**—भ० सुमतिकीर्ति एवं ज्ञानभूषण । पत्रसं० ५५ । आ० १०३/४ × ४१/२ । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल — × । लिपिकाल —स० १६४५ चैत्र बुदी । वेष्टनसं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष – लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

७०. **कर्मप्रकृति वर्णन**— × । पत्रसं० १२० । आ०-४१/२ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय – सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

विशेष - अन्य पाठ भी हैं ।

७१. **कर्मप्रकृति वर्णन**—× । पत्रस० २ । आ० ११ × ४१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२०६ । **प्राप्ति स्थान** —भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—१४८ प्रकृतियो का ब्यौरा है ।

७२. **कर्मप्रकृति वर्णन**— × । पत्रस० २४-८३ । आ० ११ × ४१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस०—२५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३. **कर्मप्रकृति वर्णन** — × । पत्रस० ११ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय —सिद्धान्त । र०काल — × । ले०काल स० १८११ । पूर्ण । वेष्टनस० १५६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७४. **प्रतिसं०** २ । पत्रस० ३५ । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टनस० — २३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५. **प्रतिसं०** ३ । पत्रस० ६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६६ । २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह ।

७६. **कर्मविपाक**— × । पत्रस० १५ । आ०—१२ × ५१/२ इञ्च । भाषा —संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल-- × । ले० काल - × । पूर्ण । वेष्टनस० १५८ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

७७. **कर्मविपाक—बनारसीदास** । पत्रस० १० । आ०— ६१/२ × ६१/२ इञ्च । भाषा —हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल —१७०० । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टनस० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७८. **कर्मविपाक—भ० सकलकीर्ति** । पत्रस० १६ । आ० १० × ४१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २३१ । **प्राप्ति स्थान**--भ० दिगम्बर जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कर्मो के विपाक (फल) का वर्णन है ।

७९. **प्रतिसं०** २ । पत्रस० ३३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

८०. प्रतिसं० ३—पत्रसं० २४ । ले० स० १६१७ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

८१. कर्मविपाकसूत्र चौपई— × । पत्रसं० १२७ । प्रा० ११½ × ५ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रंथ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है :—

श्री परमात्मने नम । श्री सरस्वत्यै नमः ।

देव निरन्जण्ण नमु, अलख अजर अभिराम ।
घट घट अन्तर आतमा, परम जोत परणाम ॥ १ ॥
सावद वचन सवे तजि, रार्जरिष भडार ।
वनवासी मुनीवर नमु, जे सुद्धा अणगार ॥ २ ॥
जिनवर वाणी थे नमु, भविक जीव हितकार ।
जनम मरण ना दुख थकी, छुटे ने निरधार ॥ ३ ॥
शीलवत नर नार नै, समकीत वरत सहित ।
हरष धरी तेहने नमु, कर्म सुभट जेणें जीत ॥ ४ ॥

मध्यभाग (पत्र ७१)

देव तीरीय मनुष्य ते जाण । लेप काष्ट अने पाषाण ।
ए च्यारे नो करु बखाण, पण थे सुण जो चतुर सुजान ॥ १४०३ ॥
मन वचन काया ये जाण । एह मोकले धरमनी हाण ।
ए त्रणे चोगणा च्यार । लेवे करना था ये वार ॥ १४०४ ॥
करन करावत अनमोदना, तिगणावार करो एक मना ।
एम करना छत्ती से भया । इन्द्री पच गणा ते मया ॥ १४०५ ॥
अन्तिम—

संतोषी कवले सदा ममता सहित सुजाण ।
इरया विसरया रहे सदा ते पहुँचै निरवाण ॥ २४०७ ॥
आगमवाणी उचरै उर न बोले बोल ।
दयापरुपै रात दिन हसाये रहे अबोल ॥ २४०८ ॥
एक भगत चूके नही पाछे जल नो त्याग ।
आतम हेन जाणे सही ते समझे जिनमाग ॥ २४०९ ॥
पर निंद्या मुखनवि गर्मे हास्यादि न करत ।
सका काक्षा कोए नहीं जीत्यो ते शिवमंत ॥ २४१० ॥
एहने मारग जे चले ते नर जाणो साध ।
एण थी बीजा जे नरा ते सब जाणो बाध ॥ २४११ ॥

इति श्री कर्मविपाक सूत्र चौपई सपूर्णम् । श्री उदयपुर नगर मध्ये लिपि कृता ।

८२. **कर्मविपाक रास**— । पत्रसं० १८३ । ग्रा०—६½ × ५ इञ्च । भाषा- हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धात । र०काल स० १८२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

८३. **प्रतिसं० २** । पत्र संख्या १५६ ग्रा० ६¾×६ इञ्च । ले०काल स० १८८२ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोक) ।

८४. **कर्मविपाक सूत्र**—पत्रस० १४ से १७ । ग्रा० १० × ४ इच । भाषा—प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल सं० १५१२ भादवा सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ५४५ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—श्रीखानपेरोजविजयराज्ये श्रीनागपुरमध्ये वृहद्गच्छे सागरभूतसूरिशिष्य श्रीदेवतिलक तच्छिष्य मुनि भुतमेरुणा लेखि । रा० देल्हा पुत्र संघप मेघा पठनार्थं ।

८५. **कर्मविपाक सूत्र—देवेन्द्रसूरि— 'ज्ञानचन्द्रसूरि के शिष्य'** । पत्रस० ११ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल स० × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

८६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ५६ । ग्रा० १०½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर दबलाना ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

८७. **कर्मसिद्धान्त मांडणी**— × । पत्रसं० ६ । ग्रा०-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल- × । ले०काल- × । पूर्ण । वेष्टनस० ११३-६ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर बाड़ा बीस पथी दौसा ।

विशेष—हिन्दी (गद्य) अर्थ सहित है ।

८८ **कल्पसूत्र—भद्रबाहु स्वामी** । पत्रस० २०-५० । ग्रा०-६½ × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत विषय आगम । र०काल × । ले०काल स० १६१३ चैत्र सुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—श्रीपत्तननगरे भट्टारक श्री धर्ममूर्त्तिसूरिलिखापित जयमडनगणि पठनार्थं ।

८९. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ८५ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६५५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९०. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २-१५६ । ले०काल स० १८२३ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १३३७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

९१. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ६ । ले०काल स० १५८४ चैत्र सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

९२. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० १४६ । ले०काल स × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

९३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३४ । ले०काल × । पूर्ण (८ अध्याय तक) । वेष्टन स० १६।५५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पंथी, दौसा ।

विशेष—पत्र स० २५ तक गाथाओं के ऊपर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है । इसके बाद बीच मे जगह २ अर्थ दिया है । भाषा पर गुजराती का अधिक प्रभाव है ।

९४. प्रति सं० ७—पत्र सं० ७५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

९५. प्रति सं० ८ । पत्र स० २-९३ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८८ । ६८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र के आधे हिस्से पर चित्र है ।

९६ प्रति सं० ९ । पत्र स० १२२ । ले०काल स० १५३६ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बसवा ।

विशेष—प्रति सचित्र है तथा चित्र बहुत सुन्दर हैं । अधिकतर चित्रो पर स्वर्ण का पानी या रंग चढ़ाया गया है । चित्रो की सख्या ३९ है । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

९७ कल्पसूत्र टीका—× । स० १२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—गुजराती । विषय—आगम । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है लिपि देवनागरी है ।

९८. कल्पसूत्र बालावबोध—× । पत्र स० १२८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय—आगम । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का, डूगरपुर ।

९९ कल्पसूत्र वृत्ति—× । पत्र स० १४० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—आगम । र०काल—× । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बून्दी ।

विशेष—१४० से आगे पत्र नही है । प्रति प्राचीन है । प्रथम पत्र पर सरस्वती का चित्र है ।

१०० कल्पसूत्र वृत्ति—× । पत्र स० १८३ । भाषा—प्राकृत-गुजराती लिपि—देवनागरी । विषय—आगम । र०काल—× । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष—श्री जिनचन्द्रसूरि तेह तणी आलाइ एवविध श्री पर्यु षणीपर्व आराधनउ हु तउ श्रीसघ आचन्द्रार्क जयवंत पगउ ।

१०१. कल्पाध्ययन सूत्र—× । पत्रसं० १०२ । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र०काल-× । ले०काल स १५२८ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स०-२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष—सवत् १५२८ वर्षे कार्तिक बुदी ५ शनौ तद्दिने लिलिखे । प्रति सचित्र है तथा इसमे ४२ चित्र हैं जो बहुत ही सुन्दर है ।

१०२. **कल्पावचूरि**–× । पत्रसं० ४० । आ० १०३/४×४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

१०३. **कल्पावचूरि**—× । पत्रसं०१४१ । आ० १०×४३/४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आगम । र०काल—× । ले०काल—सवत् १६६१ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

१०४. **कल्पलता टीका—समयसुन्दर उपाध्याय** । पत्रस० १२४ । भाषा — सस्कृत । विषय—आगम । र०काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस०—६२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५. **कषायमार्गणा** –× । पत्रस० १–२५ । आ० १२३/४× ७ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । वेष्टनसं०—७३७ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

१०६. **कार्माणकाययोग प्रसंग**—× । पत्रस०—५ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं०—६७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० पचायती जैन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र टीका श्रुत सागरी मे से दिया गया है ।

१०७. **कूटप्रकार**— × । पत्रस०–२ । आ० १२×५ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं०—२१७—६४८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—अनंतानुबधी कषायों का कूट वर्णन है ।

१०८. **क्षपणासार—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव** । पत्रस० १४२ । आ० ११ × ६१/२ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मंदिर दीवानजी, कामा ।

१०९. **गर्भषडकृतसंख्यापरिमाण**—× । पत्रस० २ । आ० १२ × ४ इन्च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २१६ । ६४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

११०. **गुणस्थान चर्चा**— × । पत्रसं० ३० । आ०—१०१/२ × ४१/२ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०काल— × । ले० काल—स० १७०५ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ, टोडारायसिंह ।

१११ **गुणस्थान चर्चा**— × । पत्रस० १८० । आ०—९ × ४ इन्च । भाषा –हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ, बूंदी ।

११२. **गुणस्थान चर्चा**— × । पत्रसं० ७० । आ० ११ × ५१/२ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय–चर्चा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—पंचकल्याणको की तिथि भी दी हुई है। गुटका साइज मे ग्रन्थ है।

११३ गुणस्थान चर्चा— × । पत्रसं० ५१ । आ०—१२½ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०काल— × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बडा बीस पथी दौसा ।

११४. गुणस्थान चर्चा— × । पत्रसं० ५२ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७–७५–**प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा ।

११५. गुणस्थान चर्चा— × । पत्रसं० २–६७ । आ० १० × ४½ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० २५ । अपूर्ण—प्रथम पत्र नही है । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

११६. प्रति सं० २ । पत्रसं० १–१८ । आ० १०½ × ४¾ । ले० काल × । वेष्टनसं० २६ । अपूर्ण—१८ से आगे के पत्र नही है । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

११७ गुणस्थान चर्चा— × । पत्रसं० १–८ । आ० ११ × ५ । भाषा- हिन्दी । विषय— चर्चा । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० ७०१ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

११८. गुणस्थान क्रमारोह— × । पत्रसं० २ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

११९. गुणस्थान गाथा— × । पत्रसं० ३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय— सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४० । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१२०. गुणस्थानचर्चा— × । पत्रसं० १३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१२१. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३० । ले०काल सं० १७०५ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारायसिंह ।

१२२. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १८० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूदी ।

१२३. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० २० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, राजमहल

विशेष—पच कल्याणको की तिथिया भी दी हुई है । गुटका साइज मे ग्रन्थ है ।

१२४. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ५१ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

१२५. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ५२ । ले०काल-× । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७।७५ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

१२६. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० २६७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

१२७. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० १-१८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २६ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—१८ से आगे के पत्र नही हैं ।

१२८. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० १८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७०१ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१२९. **गुणस्थान चौपई—ब्रह्म जिनदास** । पत्रसं० ४ । आ०-६¾×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० १९२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारायसिह (टोंक) ।

१३०. **गुणस्थान मार्गणा वर्णन—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्रसं०-५८ । आ०-१०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—सं० १८८४ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४४-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—आमेर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१३१. **गुणस्थान मार्गणा चर्चा**—× । पत्रसं०—१२१ । आ०—१२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—इसमें अन्य पाठ भी है ।

१३२. **गुणस्थान मार्गणा वर्णन**—× । पत्रसं०—७५ । आ०-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं०—१७६-३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—यंत्र सहित वर्णन है । पंच परावर्त्तन का स्वरूप भी दिया है ।

१३३. **गुणस्थान वर्णन**—× । पत्रसं०—८-४४ । आ०—११×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं०—२६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

१३४. **गुणस्थान वर्णन**—× । पत्रसं०—७ । आ०—१०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—सं० १७८७ । भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं०-६३७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१३५. **गुणस्थान रचना**—× । पत्रसं०-२० । आ०-१२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स०—१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा ।

१३६. गुणस्थान वृत्ति—रत्नशेखर सूरि । पत्र स०—३५ । आ०—६½ × ४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स०—४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—सूत्र स० २-६-८ नही है ।

अन्तिम—प्राय. पूर्वापिरचितै श्लोकै रुद्धतो रत्नशेषर:सूरिभि ।

बृहद्गच्छीय श्रीवज्रसेनसूरिशिष्यै. ।

श्रीहेमतिलकसूरिपट्टप्रतिवृत्त.

श्रीरत्नशेखरसूरि: स्वपरोपकाराय प्रकरणरूप तथा ।।

ग्रन्थाग्रन्थ सं० ६६० ।

१३७. गोम्मटसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स०—१५ । आ०—११½ × ४½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स०—१३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

१३८. प्रतिसं० २—पत्र स०—१४० । ले० काल स० १६५६ । **पूर्ण** । वेष्टन सं०—१४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि ०जैन मन्दिर महावीरजी बूंदी ।

विशेष—धर्मभूषण के शिष्य जगमोहन के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी । मति सस्कृत टीका सहित है ।

१३९. प्रतिसं०—३ पत्रस०—२३ । ले० काल— × । पूर्ण । **वेष्टन सं०**—२०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह ।

विशेष— अन्तिम तीन पत्रो मे जीव एव धर्म द्रव्यो का वर्णन है ।

१४०. प्रतिसं०—४. पत्रसं०—८७ । ले० काल—स० १७५६ (शक सं० १६२४) पूर्ण । वेष्टन सं०—६४ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती मन्दिर बयाना ।

१४१. प्रतिसं०—५. पत्र सं०—८७ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं०—१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर, डीग

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४२. प्रतिसं०—६. पत्रस०—६७ । ले० काल— × । **अपूर्ण । वेष्टन** सं०—१७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर

विशेष—प्रतिक्रमण पाठ के भी कुछ पत्र हैं ।

१४३. प्रतिसं०—७ । पत्रसं०—३-४५ । ले० काल स०— × । **अपूर्ण** । वेष्टन स०—२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४४. प्रतिसं०—८ । पत्रसं०—८७ । ले० काल—स० **१६११ । पूर्ण** । वेष्टन सं०—१८२/७७ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूंगरपुर।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

१४५. गोम्मट्टसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्रसं०—५३७। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल—×। ले० काल-१७६८ द्वि० भादवा सुदी १। पूर्ण। **वेष्टन सं०**—३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर, डीग।

विशेष—श्री हेमराज ने लिखी थी। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१४६. प्रति सं० २। पत्रसं०—२८१। आ०—१२×५½ इञ्च। ले० काल—×। अपूर्ण। **वेष्टन सं०**—१६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१४७. प्रति सं० ३। पत्रसं०—२४१। आ० १२½ × ८ इञ्च। ले० काल—×। अपूर्ण। **वेष्टन सं०**—२७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

विशेष—प्रति तत्व प्रदीपिका टीका सहित है।

१४८. गोम्मटसार—नेमिचन्द्राचार्य ×। पत्रसं० ३८७। आ० १२½ × ६ इञ्च। भाषा—प्राकृत-संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १७०५। अपूर्ण। वेष्टन सं० १५२ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—बहुत से पत्र नही है। प्रति संस्कृत टीका सहित है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७०५ भादवा सुदी ५ श्रीरायदेशे श्रीजगन्नाथजी विजयराज्ये भीलोडा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालये . . . . . ।

१४९. गोम्मटसार टीका—सुमतिकीर्ति। पत्रसं० ३४७। आ० १४×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल—सं० १६२०। भाद्रपद सुदी १२ ले० काल—सं० १६६७। पूर्ण। **वेष्टन सं०** १४८-२११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

१५०. प्रति सं० २। पत्रसं० ३२। आ०—१२ × ४½ इञ्च। ले० काल—सं० १७६५ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—वसुपर में पंडित दोदराज ने पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

१५१. प्रति सं० ३। पत्रसं० ६५। ले० काल सं० १८०६। पूर्ण। वेष्टन सं० १८०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी ४ कामा।

१५२. प्रति सं० ४। पत्रसं० ४८। ले० काल ×। पूर्ण। **वेष्टन सं०** १६२। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर दीवानजी, कामा।

१५३. प्रति सं० ५। पत्रसं० ६०। ले० काल ×। अपूर्ण। **वेष्टन सं०** ६६। **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति जीर्ण है। ग्रन्थ का नाम कर्म प्रकृति भी दिया है।

१५४. प्रति सं० ५। पत्रसं०१ से ६६। ले० काल — × । अपूर्ण। वेष्टन सं०—६७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरह पन्थी मन्दिर, बसवा।

१५५. प्रति सं० ६। पत्र स० ४७। आ० ११½×५ इञ्च। ले० काल स० १८५६ भादवा सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६८। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१५६. गोम्मटसार (कर्म काण्ड टीका)—नेमिचन्द्र। पत्र स० १४। आ० ११×४¾ इञ्च। भाषा—प्राकृत सस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र०काल—×। ले० काल १७५१ मार्गशीर्ष सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ७९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रशस्ति संवत १७५१ वर्ष मार्ग सुदी १५ बुधे श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेव तत्पट्टे भट्टारक श्री ३ सुरेन्द्रकीर्तिदेव तद्गुरु भ्राता प० बिहारीदासेन लिखित स्वहस्तेन ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं। प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१५७. प्रति सं० २। पत्र स० ५२। ले० काल—सं० १८६४ जेष्ठ बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० २८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

१५८. प्रति सं० ३। पत्र स० ३-११६। ले०काल— ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २४। **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन मदिर तेरह पथी दौसा।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१५९. गोम्मटसार कर्मकाण्ड— ×। पत्र स० १०। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र०काल— ×। ले०काल— ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर, भरतपुर।

१६०. गोम्मटसार चर्चा— ×। पत्र स० ४। आ०१२×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—सिद्धात। र०काल— ×। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३२-१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर।

१६१. गोम्मटसार चूलिका— ×। पत्र स० ७। भाषा—सस्कृत। विषय—सिद्धात। र०काल— ×। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६७। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष—हेमराज ने लिखा था।

१६२. गोम्मटसार पूर्वार्द्ध (जीवकांड)— ×। पत्र स० १२३। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सिद्धात। र०काल— ×। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०४३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१६३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा टीका— ×। पत्र सं० ४०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत हिन्दी। विषय—सिद्धात। र०काल— ×। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

१६४. गोम्मटसार (जीवकाण्ड) भाषा-महा पं० टोडरमल । पत्रस० १०० । आ० १३×७½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी गद्य) । विषय—सिद्धांत । र०काल—× । ले०काल —× । अपूर्ण । वेष्टनसं० ११७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१६५. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४८० । आ० १२×८½ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६-१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

१६६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१४ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—केवल प्रथम गाथा की टीका ही है ।

१६७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २६ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा ।

१६८. गोम्मटसार भाषा-महा पं० टोडरमल । पत्रस० १–८० । आ० १२½×६ । भाषा-राजस्थानी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल —× । वेष्टनस० ७३६ । अपूर्ण । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६९. गोम्मटसार भाषा-महा पं० टोडरमल । पत्रस० ५७२ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी) गद्य विषय—सिद्धान्त । र०काल —स० १८१८ माघ सुदी ५ ले०काल - । अपूर्ण । वेष्टनस० १५७५ **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७०. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८९० । ले०काल - । पूर्ण । वेष्टनस० १८०० । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान-चन्द्रिका टीका सहित है ।

१७१. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०२० । ले०काल स० - । अपूर्ण । वेष्टनस० ५५ ८५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन बीस पथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान-चन्द्रिका टीका सहित है ।

१७२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १०२१ । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ५२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

१७३. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १०२६ । ले०काल स० १८५६ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बूदी ।

१७४. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ३२५ । ले०काल - । अपूर्ण । वेष्टनस० ६२० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१७५. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ७६४ । ले०काल स० १८६० भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२३ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति लब्धिसारक्षपणासार सहित है । कुम्हेर मे रणजीत के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१७६. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ६८२ । ले०काल सं०—× । पूर्ण । वेष्टनस० २३ । **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

१७७. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ३०६ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर चेननदास पुरानी डीग ।

विशेष—प्रति सदृष्टि सहित है । पत्रस० १५६ तक लब्धिसार क्षपणासार है । ९७ वे पत्र मे संदृष्टि भूमिका तथा अन्तिम ५० पत्रो मे लब्धिसार, क्षपणासार तथा गोम्मटसार की भाषा है ।

१७८. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ५०४ । ले०काल सं०—१८१९ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—पत्रस० २७० से ५०४ तक दूसरे वेष्टनस० मे है ।

१७९. प्रतिसं० १० । पत्रस० १००० । ले०काल स० १ ‌८ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७ । **प्राप्तिस्थान** – दि० जैन मन्दिर कोट्योका नेणवा (बूंदी) ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान चन्द्रिका टीका सहित है ।

१८०. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ६३२ । ले काल स०—× । पूर्ण । वेष्टनस० १५।१७१ । **प्राप्तिस्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१८१. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ६८१ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० १४५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टौंक ।

विशेष --६८९ के आगे के पत्र नही है ।

१८२. प्रतिसं० १३ । पत्रस० १३४६ । ले० काल स० १९२२ सावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन बडा मन्दिर फतेहपुर (शेखावाटी)

विशेष --यह ग्रन्थ ४ वेष्टनो मे बधा है । टीका का नाम सम्यक्ज्ञान चन्द्रिका है । लब्धिसार क्षपणासार सहित है । प० सदासुखदासजी कासलीवाल ने उधव लाल पाण्डे चाकसू वालो से प्रतिलिपि करवाई थी ।

१८३. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १२६५ । ले० काल स० १८९० माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १५।६१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान चन्द्रिका टीका है सदृष्टि भी पूरी दी हुई है । यह ग्रन्थ तीन वेष्टनो मे बधा हुआ है ।

१८४. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ७६-३८५ । आ०—१२×८ इञ्च । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० ८४-३८ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दौसा ।

१८५. गोम्मटसार भाषा —× । पत्रस० २५ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७८।५६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१८६. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज । पत्रस० ६९ । आ० १४×८½ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल—१७३४ आसोज सुदी ११ । ले० काल स० १९५४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४।१६ । **प्राप्तिस्थान** । दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

१८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८६४ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१८९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०७ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बून्दी ।

१९०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

१९१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १९३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—रसिक लाल मुंशी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१९२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६७ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, बयाना ।

विशेष—सवत् १९४१ मे गूजरमल गिरधरवाका ने ग्रन्थ को मन्दिर मे चढाया था ।

१९३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६५ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्तिःस्थान**—दि० जैन मन्दिर बीम पथी दौसा ।

विशेष—श्रवक खेमचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१९४. प्रति सं० । ९ पत्र सं० ७६ । ले० काल— सं० १८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—अनन्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१९५. प्रति सं० १० । पत्र सं० १२७ । ले० काल—× । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

१९६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८२३ प्रथम माघबुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८।२२ **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१९७. गोम्मटसार 'पंचसंग्रह' वृत्ति—× । पत्र सं०—२३८ । आ०—१४×७ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल– × । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं०—११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है । २३८ के आगे पत्र नहीं है ।

१९८. प्रति सं० २ । पत्र सं०—३२० । आ०—१४×६½ इञ्च । ले० काल—सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन सं०—५३-३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

१९९. गोम्मटसार (पंचसंग्रह) वृत्ति—अभयचन्द्र । पत्र सं० ४०१ । आ० १४×६ इञ्च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× लेo काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०—५३७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२००. प्रति सं०–२ । पत्र सं०–१–१५७ । आ०–१०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल–× । वेष्टन सं०–७६४ । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२०१. प्रति सं०—३ । पत्र सं०—१४६ । आ०–१२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं०—१८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

२०२. प्रति सं०—४ । पत्र सं०—३३० । आ०—१४ × ६ इञ्च । ले० काल—सं० १७१७ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं०—३४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रशस्तिका में श्वे० धर्मघोष ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३. गोम्मटसार वृत्ति—केशववर्णी । पत्र सं०—३७६ । आ०—१४ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—वीर सं० २१७७ ज्येष्ठ सुदी ५ । वेष्टन सं०—६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सहसमल्ल के कहने से प्रति लिखी गई थी ।

२०४. गोम्मटसार वृत्ति— × । पत्र सं० ४२६ । आ० १२ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १७०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मंदिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है -संवत् १७०५ वर्षे वैशाख शुक्ला द्वितीया भौमवासरे राय देशस्य श्री पुलिंदपुरे श्री चन्द्रप्रभुचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे ·················· भट्टारक सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० भुवनकीर्ति ·················· तत् शिष्य मुनि श्रीदेवकीर्ति तत् शिष्याचार्य श्री कल्याणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म तेजपालेन स्वज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थ·················· कल्याण कीर्ति तत् शिष्याचार्य श्री त्रिभुवनचन्द्र-पठनार्थं ।

२०५. गोम्मटसार जीवकाण्ड वृत्ति (तत्वप्रदीपिका)— × । पत्र सं० २६ से १६८ । आ०—१० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल — × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी ।

२०६. गोम्मटसार संदृष्टि—आ० नेमिचन्द्र । पत्र सं० ११ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × अपूर्ण । वेष्टन सं० २०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

२०७. गौतमपृच्छा सूत्र— × । पत्र सं० १३ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत—हिन्दी । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दबलाना ।

विशेष—१२ वां पत्र नहीं है । प्राकृत के सूत्र सामने हिन्दी अर्थ सूत्र रूप में है । सूत्र सं० ६४ ।

२०८. गौतमपृच्छा— × । पत्र सं० १८ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-

आगम । र० काल— × । ले० काल-सवत् १७८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पचायती, दूनी (टोंक) ।

विशेष—पंडित शिवजीराम ने शिष्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ दूणी नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

२०६. **प्रति सं० २** । पत्र स० १६ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । र० काल— × । ले० क ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—(दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—श्री फतेहचन्द के शिष्य वृन्दावन उनके शिष्य शीतापति शिष्य प० शिवजीलाल तत् शिष्य नेमिचन्द ...कल्याणार्थ ।

२१०. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२११. **प्रति सं० ४** । पत्र स० ४२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२१२. **गौतम पृच्छा**— × । पत्र स०—७६ । भाषा – सस्कृत । विषय — सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल—१८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१३. **प्रति सं० २** । पत्र स० ४२ । भाषा—सस्कृत । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

२१४. **गौतम पृच्छा**— × । पत्र स० ४ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा -- हिन्दी । विषय — सिद्धान्त र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५८२ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—११६ पद्य है ।

२१५. **प्रति सं० २**—पत्र सं० ६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

२१६. **चतुःशरणप्रकीर्णक सूत्र**—पत्र स०— ४ । भाषा — सस्कृत । विषय – सिद्धान्त । र० काल — × । ले० काल—स० १७०३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जै० पचायती मदिर डीग ।

२१७. **चतुःसरण प्रज्ञप्ति**- — × । पत्र स० २ से ५ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय —आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

२१८. **चर्चा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति** । पत्र स० १३ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय —चर्चा । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—जैन सिद्धान्तो को चर्चा के माध्यम मे समझाया गया है ।

२१९. **चर्चा** — × । पत्र स० ३ । आ० ६½ × ४½ । भाषा —सस्कृत । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ६७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

२२०. **चर्चा**—पत्रस० ३८ । आ० १३ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

२२१. **चर्चाकोश**—× । पत्रस० १२४ । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन० स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरह पंथी मंदिर बसवा ।

२२२. **चर्चा ग्रन्थ**—× । पत्र स० २-६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । मन्दिर विषय—चर्चा । ले० काल—× । र० काल—× । वेष्टन स० ७१४ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लश्कर, जयपुर ।

२२३. **चर्चा नामावली**—× । पत्र स० ३३ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल—× । ले० काल०—स० १८७६ माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—जैन सिद्धान्तों की चर्चाओं का वर्णन है ।

२२४. **चर्चा नामावली हिन्दी टीका सहित**—× । पत्र स० ५७ । आ०—१०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र० काल—× । ले० काल०— स० १६३६ सावन बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

२२५. **चर्चापाठ**—× । पत्र स० १८ । आ०—×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल— । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

२२६. **चर्चाबोध** –× । पत्र स० १४ । आ० १½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय चर्चा । र० काल- × । ले० काल– × स०१६७३ । पूर्ण । वेष्टन स० । ६१ । २२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

२२७. **चर्चाग्रंथ**—× । पत्र स० ४० । आ० ११×५½ इ च । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल–× । ले० काल-स० १८०२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

२२८. **चर्चाशतक—द्यानतराय** । पत्र स० ६ । आ० १०¾×५इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । र० काल -× । ले० काल– × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

विशेष— सैद्धान्तिक चर्चाओं का वर्णन है ।

२२९. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ६२ । ले० काल-स० १६४० काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १४७७ । **प्राप्ति स्थान**--भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

२३०. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १७ । ले० काल०—× । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२३१. प्रतिसं० ४। पत्रसं० १०२। ले०काल स० १६५२ आसोज सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—झगडावत कस्तूरचन्द जी तत् पुत्र चोखचन्द ने प्रतापगढ़ के चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे लिखवाया था।

२३२. प्रतिसं० ५। पत्रस० १९। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टनसं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

२३३. प्रतिसं० ६। पत्रस० २६। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदा बूंदी।

२३४. प्रतिसं० ७। पत्रस० ७१। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन म० १६३। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—प्रथम पत्र नही है।

२३५. प्रतिसं० ८। पत्रस० १००। ले० काल—स० १६४२। पूर्ण। वेष्टन स० २७। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

२३६. प्रतिसं० ९। पत्रस० १५। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन स० २२३। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

२३७. प्रतिसं० १०। पत्रस० ६६। ले०काल—स० १६८३। पूर्ण। वेष्टन स० ३९। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह टोंक।

२३८. प्रतिसं० ११। पत्रस० १६। ले०काल म० १८६०। पूर्ण। वेष्टन स० ४५। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा।

२३९. प्रतिसं० १२। पत्रस० १०२। ले०काल म० १८२७। आसोज बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ८०। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

२४०. प्रतिसं० १३। पत्रसं० ६३। ले०काल स० १६३८। ज्येष्ठ सुदी ३। वेष्टन स० १२८/२०। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ।

विशेष—प्रति बहुत सुन्दर है तथा हिन्दी गद्य टीका सहित है।

२४१. प्रतिसं० १४। पत्रस० १६। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १४३।१६। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ।

२४२. प्रतिसं० १५। पत्रस० २५। ले०काल स०—×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ।

२४३. प्रतिसं० १६। पत्रसं० १५। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० १७०। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—१६ वें पत्र से द्रव्य संग्रह है ।

२४४. **प्रतिसं० १७** । पत्रस० ६६ । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है । टीकाकार राजमल्ल पाटनी है ।

२४५. **प्रतिसं० १८** । पत्रस० ७५ । ले०काल—× । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—हिन्दी गद्यार्थ सहित है ।

२४६. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० ५६ । आ० १०½×७ इन्च । ले०काल स० १६३८ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ६० । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर बयाना ।

२४७. **प्रतिसं० २०** । पत्रसं० ६५ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन दीवानजी का मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

२४८. **प्रतिसं०—२१** । पत्रस०-५३ । ले० काल-१८६४ । पूर्ण । वेष्टन स०—३५८ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२४६. **प्रतिसं०—२२** । पत्रस०—५५ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०—३६४ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२५०. **प्रतिसं०—२३** । पत्रस०—१८ । ले० काल—१८१८ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स०—३६५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—भरतपुर मे प्रतिलिपि की गई थी । मूल पाठ है ।

२५१. **प्रतिसं०—२४** । पत्रस०—५३ । ले० काल—१८६८ । पूर्ण । वेष्टन स०—३६६ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है । उपरोक्त मन्दिर ।

२५२. **प्रति सं०—२५** । पत्रस०—५३ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०-४२२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२५३. **प्रति सं०—२६** । पत्रस०-१० । ले० काल—स० १६२२ । पूर्ण । वेष्टन स०—११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष- लश्कर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२५४. **प्रतिसं०—२७** । पत्रस०—८८ । भाषा—हिन्दी । ले० काल—स० १६२८ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स०—८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

२५५. **प्रतिसं०—२८** । पत्रस०—५४ । ले० काल—स० १८२० । पूर्ण । वेष्टन स०-२०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२५६. **प्रतिसं०—२६** । पत्रस०—५३ । ले० काल-१६३१ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

२५७. प्रतिसं०— ३० । पत्रसं०-५६ । ले० काल-१८३२ । पूर्ण । वेष्टन स०—५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का, डीग ।

२५८. प्रतिसं०—३१ । पत्रस०—५६ । ले० काल – × । अपूर्ण । वेष्टन स०—६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानी डीग ।

विशेष--प्रति अशुद्ध एव अव्यवस्थित है ।

२५९. प्रतिसं०—३२ । पत्रस०--१०४ । ले० काल--स० १८८७ असाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स०—६३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—हिन्दी गद्य मे टीका भी है । जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६०. प्रतिसं०—३३ । पत्र स० ७७ । ले० काल-स० १८३४ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शखावाटी (सीकर)

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है काष्टासिंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्य आम्नाय भट्टारक जी श्री श्री १०८ श्री ललितकीर्ति भट्टारकजी श्री श्री १०८ श्री राजेन्द्रकीर्ति जी तत् शिष्य पडित आगाचर चद जी लिखायो फतेहपुर मध्ये लिपिकृत प्रेमसुख भोजक ।

२६१. प्रतिसं० ३४ । पत्र स० १२ । ले० काल—ग० १८०० कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी ।

विशेष—माली लूनचन्द ने लिपि की थी ।

२६२. प्रतिसं० ३५ । पत्र स० ६२ । ले० काल—स० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन स०—८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

२६३. प्रतिसं० ३६ । पत्र स०२६ । ले०काल--१८०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर ।

२६४. प्रतिसं० ३७ । पत्र स०—३८ । ले० काल-- स० १ ८६ कार्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स०-- ५१३ ।

विशेष--रिषभचन्द बिन्दायक्या ने प्रतिलिपि कर लश्कर के मदिर मे विराजमान किया । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२६५. चर्चाशतक टीका—हरजीमल । पत्र स० ५९ । आ० १२ ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य तथा गद्य) । विषय—चर्चा । र०काल— × । ले० काल—स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स०-३४ **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—हरजीमल पानीपत वाले की टीका सहित है । १०४ पद्य है । मिश्र ठाकुरदास हिण्डौन वाले ने प्रतिलिपि की थी । लिखाइत लालाजी माधोसिहजी पठनार्थ सुखलाल कानूनगो का बटा नाती हुलासी राम का, गोत्र चादुवाड बयाना वाले ने माधोदास श्रावक उदासीन चादवाड कारण आप घर स रिक्त होकर यह ग्रन्थ लिखवाकर चन्द्रप्रभु के पुराने मन्दिर मे चढाया ।

२६६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ७६ । विषय-चर्चा । र० काल - × । ले० काल- × । पूर्ण ।

वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—इति चर्चाशतक भाषा कवित्त द्यानतराय कृति तिनकी अर्थ टिप्पण हरजीमल पाणीपथ की बणाई सपूर्ण । यह पुस्तक श्री अभिनदनजी का मदिर की छै ।

६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६७ । ले० काल-स० १९४६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन ं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी, बू दी ।

२६८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ८० । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर महावीर स्वामी, बू दी ।

२६९. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ५३ । ले० काल-स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, बू दी ।

२७०. चर्चाशतक टीका— नाथूलाल दोसी । पत्र स० ८६ । आ० १२×८½ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सिद्धान्त-चर्चा । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०—८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, बू दी ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

२७१. चर्चा समाधान— × । पत्र स० १३ । आ० ६½×७ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चर्चा । ले०काल—× । र०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

२७२. चर्चासमाधान - भूधरदास । पत्र स० १५५ । आ० ८½×४½ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय--चर्चा । र०काल —स० १८०६ माघ सुदी ५ । ले०काल—स० १८८७ सावण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

२७३. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८७ । ले०काल—स० १९३९ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष -- सवत् १९३९ भाद्रपद कृष्णा २ बुधवारे लिखायत पंडित छोगालाल लिखित मिश्र रूपनारायण भीलाय मध्ये ।

२७४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६१ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बू दी ।

२७५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ४७ । आ०—११×५½ इन्च । ले०काल—स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बू दी ।

२७६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १११ । आ०-- १२½×६ इन्च । ले०काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, नैणवा ।

विशेष—धर्ममूर्ति गोट्ट ने स्योवसी विप्र से लोचनपुर मे प्रतिलिपि कराई थी ।

२७७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ११४ । आ० ९×६ इन्च । ले०काल—स० १८७४ । वैशाख बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूणी ।

२७८. प्रति सं० ७ । पत्र स० १२३ । ग्रा० ६½ × ५½ इञ्च । ले०काल—स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—राजमहल बा दूणी मध्ये लिखित । कटार्या मोजीराम ने राजमहल के चन्द्रप्रभ मन्दिर को भेंट किया था ।

२७९. प्रति सं० ८ । पत्र स० ८६ । ग्रा० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल—स० १८५० चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—विजयकीर्ति जी तत् शिष्य पडित देवचन्दजी ने तक्षकपुर मे ग्रादिनाथ चैत्यालय मे व्यास महजराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

२८०. प्रति सं० ९ । पत्र स० ६६ । ग्रा० १०¾ × ५½ इञ्च । ले०काल—स० १८८२ । पौष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५-३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह

विशेष—तक्षकपुर में गुमानीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२८१. प्रति सं० १० । पत्र स ८४ । ग्रा० ११ × ४ इञ्च । ले०काल—स० १९७८ ग्रषाढ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी ।

विशेष—बाबूलाल जैन ने मार्फत बाबू वेद भास्कर मे ग्रागरे मे लिखवाया था ।

२८२. प्रति सं० ११ । पत्र स० ७७-१०८ । ग्रा०—११ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८६८ । पौष बुदी ५ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ६४।८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

२८३. प्रति सं० १२ । पत्र स० १३५ । ग्रा० १२ × ७ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ६।३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

२८४. प्रति सं० १३ । पत्र स० ८५ । ग्रा० १२ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२८५. प्रति सं० १४ । पत्र स० १९८ । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८६. प्रति सं० १५ । पत्र स०—१९१ । ले०काल स० १८२३ जेठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—पुस्तक कामा मे लिखी गई थी ।

२८७. प्रति सं० १६ । पत्र स० ११८ । ले० काल स० १९२४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी तया दो प्रतियो का मिश्रण है ।

२८८. प्रति सं० १७ । पत्र स० ९१ । ले०काल—स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८६. प्रति सं० १८ । पत्र स० १३१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल—म० १८१५ । माह बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

२६०. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ८६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

२६१. प्रति सं० २० । पत्र स० १५८ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन म० ४६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

२६२. प्रति सं० २१ पत्र स० ११८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल—स० १८३४ कार्तिक मुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष— बगालीमल छाबडा ने करौली नगर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

२६३. प्रति सं० २२ । पत्र स० १३५ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल—स० १८१४ आश्विन मुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

२६४. प्रति सं० २३ । पत्र स० १०३ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले० काल–१८०७ जेठ मुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२/२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—चद्रप्रभ चैत्यालय करौली मे साहिबराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२६५ प्रति सं० २४ । पत्र स० १२२ । ले० काल—सं० १८५२ ज्येष्ठ मुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २०-३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बडा बीस पथी दौसा ।

२६६. प्रति सं० २५ । पत्र स० ६ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल—स० १८१५ । पूर्ण । वेष्टन स०१३१-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

विशेष—चिमन लाल छाबडा ने प्रतिलिपि की थी ।

२६७. प्रति सं० २६ । पत्र स० १२६ । ले० काल स० १८२३ फागुण मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७/४० **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर मादवा (राजस्थान) ।

२६८. प्रति सं० २७ । पत्र स० १६७ । ले० काल–स० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स० ४४/१०६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर मादवा (राज०) ।

विशेष—भवरलाल पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी ।

२६६. प्रति सं० २८ । पत्र स० ११७ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल—स० १६३१ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—ईश्वरीय प्रसाद शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

३००. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १११ । ले० काल—स० १८२८ फागुण मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—साह रतनचन्द ने स्वय के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३०१. चर्चा समाधान—भूधर मिश्र । पत्र स० ५३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी

गद्य । विषय—सिद्धांत चर्चा । र०काल—× । ले०काल—स० १७५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५–४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—हूबड ज्ञातीय लघु शाखा के पाडलीय नवलचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०२. चर्चासागर—पं० चम्पालाल । पत्र स०–३६० । आ० १३×६½ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०काल—स० १६१० । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर, शेखावाटी ।

३०३. चर्चासागर बचनिका—पत्र स० ३८६ । आ० ११×७¾ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १२५२ । **प्राप्तिस्थान**—भ. दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३०४. चर्चासार-धन्नालाल—पत्र स० २७ । आ० १०½×६¼ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—स० १६४७ फागुण सुदी १० । ले०काल—स० १६४७ फागुण सुदी १२ । **प्राप्तिस्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

३०५. चर्चासार—पं० शिवजीलाल । पत्र स० १५० । आ० ११½×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—स० १६१३ । ले०काल—स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

विशेष—पडित शिवजीलाल ने ग्रथ रचा यह सार ।

सकल शास्त्र की साखि लै देखि कीयो निराधार ।।

३०६. प्रतिसं० २ । पत्र स० १०७ । ले० काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३०७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १११ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी, टोंक ।

३०८. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ५८ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ११०-५४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह, टोंक ।

३०९. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ६६ । ले०काल—स० १६२६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

३१०. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १२७ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

३११. चर्चासार—× । पत्र स० ४० । आ० १०×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१२. चर्चासार—× । पत्र स ६६ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१३. चर्चासार— × । पत्र सं० ७९ । आ० १०३/४ × ५१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धांत चर्चा । र०काल— × । ले० काल— स० १९२९ फागुन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

३१४. चर्चासार— × । पत्र स० ५३ । आ० ९१/२ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

३१५. चर्चासार संग्रह—भ० सुरेन्द्र भूषण । पत्र स० ९ । आ० १०१/२ × ४१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—सिद्धात चर्चा । र०काल— × । ले०काल—स० १७३४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष— ब्राह्मण चपे ने बूंदी में छोगालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१६. चर्चासार संग्रह—पत्र स० २९९ । आ० १४१/२ × ७१/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—स० १९०० । ले०काल— स० १९६० । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर, सीकर ।

३१७. चर्चा संग्रह— × । पत्र स० १० । आ० ९ × ७ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा ।

विशेष - प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

३१८. चर्चा संग्रह— × । पत्र स० २१ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । हिन्दी । विषय— चर्चा । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ७३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३१९. चर्चासंग्रह— × । पत्र स० २५ । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२०. प्रतिसं० २ । पत्र स० २६ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२१. चर्चा संग्रह— × । पत्र स० १५३ । आ० १२१/२ × ६१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल— × । ले०काल— स० १८५२ माघ बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—विविध प्रकार की चर्चाओं का सग्रह है ।

३२२. चर्चा संग्रह— × । पत्र स० ६२ । आ०११ × ४ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा । अपूर्ण । र०काल— × । ले०काल— × । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी, मालपुरा ।

३२३. चौदह गुणस्थान वर्णन—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० ३४ । आ० १०३/४ × ५१/२ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धात चर्चा । र०काल— × । ले०काल—स० १८३० आषाढ़ सुदी १ । पूर्ण ।

वेष्टन स० ११३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—चौदह गुणस्थानो का वर्णन है ।

३२४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३८ । ले०काल स० १२४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२३ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ११ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ४६१ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२६. चौदह गुणस्थान वर्णन—पत्र सं० २ । भाषा-संस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल-× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ७१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२७. चौदह गुणस्थान चर्चा—× । पत्र सं० ३६ । ग्रा० ६३/४×६३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—स० १८४५ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—भूरामल की पुस्तक मे महादास ने प्रतिलिपि की थी ।

३२८. चौदह गुणस्थान चर्चा—× । पत्र स० ३७ । ग्रा० ६×६३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—स० १८४४ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

३२९. चौदह गुणस्थान चर्चा—× । पत्र स० ६ । ग्रा० १०×६१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३३०. चौदह गुणस्थान चर्चा—× । पत्र स० २६६ । ग्रा० ६×६१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—तालिकाओ के रूप मे गुणस्थानो एव मार्गणाओ का वर्णन किया हुआ है ।

३३१. चौदह गुणस्थान बचनिका-अखयराज श्रीमाल—पत्र स० १०२ । ग्रा० १०१/२×४ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी)—गद्य । विषय—चर्चा । सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३३२. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३६६ । ग्रा० १११/२×६ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

विशेष—नातूराम तेरह पथी ने चिमनलाल तेरहपथी से प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रारम्भ—

धर्म धुरन्धर आदि जिन, आदि धर्म करतार ।
मै नमो अघ हरण नै, सब बिधि मगल सार ।।१।।
अजित आदि पारस प्रभू, जयवन्ते जिनराय ।
घाति चतुष्क कर्ममल, पीछे भये शिवराय ।

वरधमान वर्तो सदा, जिन शासन सुद्ध सार ।
यह उपगार तुम तर्जौ, मैं पाये सुखकार ।

× × × ×

अथ शास्त्र गोमट्टसार जी वा त्रिलोकसार जी वा लब्धिसार जी के अनुसारि वा किंचत और शास्त्रां के अनुसारि चर्चा लिखिये है सो हे भव्य तुं जानि सो ज्याम् जाण्या पदारथा का सरूप जयार्थ जाण्यां जाय । अर पदारथ का सरूप जाणि वा करि सम्यक्त्व की प्राप्ति होय । अर सम्यक्त्व की प्रापति से शुद्ध स्वरूप की प्रापति होय सो एही बात उपादेय जाणि भव्य जीवन के चर्चा सीखवौ उचित है ।

अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री चौदह गुणस्थानक की वचनिका करी श्री जिनेसर की वाणी के अनुसारि सपूर्ण ।

दोहा—चौदह गुणस्थानक कथन, भाषा सुनि सुख होय ।

अखयराज श्रीमाल नें, करीं जथामति जोय ।।

इति श्री गुणस्थान टीका सपूर्ण । ग्रन्थ कर्त्ता अखयराज श्रीमाल ।

३३३. प्रति सं०—३ । पत्र स०—३९ । ले० काल-× । अपूर्ण । वेष्टन स०—६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दौसा ।

विशेष—पत्र स० ३० से ३४ व ३९ से आगे नही हैं ।

३३४. प्रति सं०—४ । पत्र म०-५२ । ले० काल स० १७४१ कार्तिक बुदी ६ । वेष्टन स० ६०६ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३३५. प्रति सं०--५ । पत्र स०—२० । आ०—६×४½ इन्च । अपूर्ण । वेष्टन स०—२६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३३६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ४२ । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १८१२ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे तीज तिथौ शनिवासरे गुणस्थान की भाषा टीका लिखी उदयपुर मध्ये ।

ग्रन्थ प्रमाण--प्रति पत्र १२ पक्ति एव प्रति पक्ति ३५ अक्षर ।

३३७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५३ । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६, २८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

३३८. प्रति सं० ८ । पत्र स० ५२ । ले० काल सं० १७५० कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामा मे गोपाल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

३३९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६५ । आ० १०½ × ४¾ इन्च । ले० काल सं० १७५८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४०. प्रति सं० १० । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १७४१ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजीकामा ।

३४१. चौबीस गुणस्थान चर्चा— गोबिन्द दास । पत्र स० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गुणस्थानों की चर्चा । र० काल स० १८८१ फाल्गुन सुदी १० । ले०काल स० १८....। पूर्ण । वेष्टन सं० ४३-११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

प्रारम्भ—

गुण छियालीस करि सहित, देव अरहत नमामि ।
नमो आठ गुण लिये, सिद्ध सब हित के स्वामी ॥
छत्तीस गुणा करि, विमल आप आचारिज सोहत ।
नमो जोरि कर ताहि, सुनत बानी मन मोहत ।
अरु उपाध्याय पच्चीस गुण सदा बसत अभिराम है ।
गुण आठ बीस फिरि साधु है, नमो पच सुख धाम है ॥

अन्तिम—

सस्कृत गाथा कठिन, अर्थ न समझ्यो जाय ।
ता कारण गोंबिद कवि, भाषा रची बनाय ॥
जो या कौ सीखे सुर्ण, अरथ विचारे जोय ।
सभा माह आदर लहै, मूरिख कहै न कोय ॥
अक्षर अर्थ यामैं घटि बढि होय ।
बुधजन सबै सुधारज्यो माफ कीजिये मोय ॥
अठारासै ऊपरै गनू, इक्यासी और
फागुण सुदी दशमी सुतिथि, शशि वासर शिरमौर ५६ ॥
दादूजी को साधु है, नाम जो गोविन्ददास ।
तानै यह भाषा रची, मनमाहि धारि उल्हास ॥
नासरदा ही नगर मे रच्योजु, भाषा ग्रथ ।
जो याकू सीखे सुर्णं लहै जैन मत पथ ॥

३४२. चौदह मार्गणा टीका—× । पत्र सं० ८६ । आ० ८ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४३. चौबीस ठाणा—× । पत्र स० २४ । आ० ६¾×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४४. चौबीस ठाणा चर्चा— नेमिचन्द्राचार्य । टिप्पणकार — दयातिलक — पत्र स० १२३ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल स० १८४०-अगहन । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महाराजा सवाई प्रतापसिंह के शासन काल मे प० रत्नचन्द्र ने जयपुर के लश्कर के मन्दिर मे पूर्ण किया तथा प्रारम्भ "चम्पावती नगर में किया । ग्रन्थ का नाम "जैन सिद्धान्त सार" भी दिया है जिसको दयातिलक ने आनन्द राय के लिये रचा था ।

३४५. चौबीस ठाणा चर्चा— × । पत्र सं० १० । आ० १६ × ११½ इन्च । भाषा–संस्कृत । **विषय—**सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल स० १६४३ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ, (कोटा)

विशेष—बड़ा नक्शा दिया हुआ है ।

३४६. चौबीस ठाणा चर्चा—आ० नेमिचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० १०½ × ४½ इन्च । **भाषा**–प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४७. प्रति सं०— २ पत्र स० ३० । आ० १०½ × ४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३४८. प्रति सं० ३ पत्र सं० २८ । ले० काल–स० १८२८ श्रावण बुदी ५ । वेष्टन सं २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ठाकुरसी ने ब्राह्मण चिरजीव राजाराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

३४९. प्रति सं० ४ ।पत्र सं० ३२ । ले० काल– । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टिप्पण सहित है । कृष्णगढ के चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३५०. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५२ । ले०काल–स० १७८४–फागुण सुदी १२ । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है –

संवत्सरे १७८४ फागुणमासे शुक्लपक्षे द्वादशतिथौ रविवारे उदयपुरनगरे श्रीपार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे भट्टारकेन्द्र भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्तिजी आचार्य श्री शुभचन्द्रजी तत् शिष्याचार्यवर्याचार्यजी श्री १०८ क्षेमकीर्त्ति जी तच्छिष्य पाडे गोर्द्धनाख्यस्तेनेदं पुस्तक लिखित ।

३५१. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५–७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

३५२. प्रति सं० ७ पत्र स० २६ । ले० काल स० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ११०/११ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैनमन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है— सवत् १७३१ वर्षे आषाढमासे बुदी ६ शुक्रे श्री गिरिपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राजकीर्ति ब्र० श्री अभयरुचि पठनार्थं ।

३५३. प्रति सं० ८ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १७१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१२ । १६७ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—स० १७१३ कार्तिक सुदी ७ सोमवार को सागवाडा के मन्दिर मे रावल श्री पुंज विजय के शासन मे कल्याणकीर्ति के शिष्य तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी।

३५४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४१३ । १६८ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३५५. प्रतिसं० १० पत्र स० ३० । ले० काल स० १७७४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१४/१६६ **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—स० १७७४ मगसिर सुदी ४ रविवार को श्री सागपत्तन नगर मे आदिनाथ चैत्यालय मे नौलम चैत्यालय मध्ये ब्र० केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

३५६. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३५७. प्रतिसं० १२ । पत्र सं० ४४ । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन ८१-११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

३५८. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान** द० जैन मन्दिर बडा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

३५६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६०. प्रतिसं० १५ । पत्र स० २३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिन्र दीवानजी कामा ।

३६१. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १७३६ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६२. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६३. प्रतिसं० १८ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६४. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ६७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११२/८ **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

३६५. प्रतिसं० २० । पत्र स० ३० । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

३६६. प्रतिसं० २१ । पत्र स० २४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३६७. प्रतिसं० २२ । पत्र सं० १७ । आ० ११×५½ इञ्च ले० काल— स० १६१७ श्रावण

सुदी । पूर्ण । वे० सं० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूंदी ।

प्रशस्ति— अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६१७ श्रावणमासे शुक्लपक्षे नक्षत्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे तदाम्नाये भ्रा० श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० जिनचन्द्रदेवा सकलतार्किक-चूडामणि श्री सिंघकीर्तिदेव तत्पट्टे भ० धर्मकीर्तिदेवानदम्नाये ससारीशरीरनिर्विन्न त्रयोदशविधिचारित्र-प्रतिपालक भव्यजनकुमुदप्रतिबोधित चंद्रोदये मेनार आचार्य श्री मदनचद तत्शिष्य पंडिताचार्य श्रीध्यानचंदेन इदं चतुर्दशस्थान लिपिकृत । प्रतितत्पर पुस्तक कृत्वा लेखकाना श्रीमोहनवास्तव्येन सा० अरहदास पठनार्थं कर्मक्षयनिमित्त ।

३६८. प्रतिसं० २३ । पत्र स० ४२ ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूंदी ।

३६९. प्रतिसं० २४ । पत्र स० ४८ । ले० काल—स० १८५६ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

३७०. प्रतिसं० २५ । पत्र स० २३ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदीनाथ बूंदी ।

३७१. प्रतिसं० २६ । पत्र स० ३० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

३७२. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या २१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चर्चा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३७३. चौबीसठाणा चर्चा— × । पत्र स० २६४ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल × । ले० काल स० १७५५ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७४. चौबीसठाणा चर्चा— × । पत्र स० १६२ । आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४५८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७५. चौबीसठाणा चर्चा— × । पत्र स० १५० । आ० ११$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय-चर्चा । र० काल × । ले० काल स० १६१५ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २/४५ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—पन्नालाल ने माधोगढ मे प्रतिलिपि कराई थी ।

३७६. चौबीसठाणा चर्चा— × । पत्र सं० ७५ । आ० ८$\frac{1}{2}$× ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चर्चा । र०काल × । ले० काल-पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

३७७. चौबीसठाणा चर्चा— × । पत्र स० १ । आ० ४८×१४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय-सिद्धान्त चर्चा । ले० काल × । र० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०/७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

३७८. **चौबीसठाणा चर्चा**— × । पत्र स०-९ । ग्रा०—१०×६½ इञ्च । विषय—हिन्दी । (पद्य) विषय—सिद्धान्त चर्चा । र० काल— × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स०—३७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी ।

३७९. **चौबीसठाणा चर्चा**— × । पत्र सं०—२३ । ग्रा०—९० × ७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त-चर्चा । र० काल— × । ले० काल-स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन स०—४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

३८०. **चौबीसठाणा चर्चा**— × । पत्र स०-४२ । ग्रा०-१०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त-चर्चा । र० काल— × । ले० काल— × पूर्ण । वे० स०—१९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

३८१. **प्रति सं—२** । पत्र स०—४५ । ले० काल— × । पूर्ण । वे० स०—१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

३८२. **प्रति सं०—३** । पत्र स०-५६ । ले० काल-स० १८२९ । पूर्ण । वे० स०- २४-१८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—भादवा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३८३. **चौबीसठाणा चर्चा** × । पत्र स०—५४ । ग्रा०— ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र० काल— × । ले० काल— × । अपूर्ण । वे० स०—१४०-६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३८४. **चौबीस ठाणा**— × । पत्र स० ८ । ग्रा० ११×३¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त चर्चा । ले० काल— × । पूर्ण । वे० स०—१३२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—बसवा मे प० परसराम ने चि० अनतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३८५. **प्रति सं०—२** । पत्र स०—६ । ग्रा०—१०¾×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल- × । पूर्ण । वे० स०—२९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३८६. **प्रतिसं०—३** । × । पत्र स०—१८ । ले० काल- × । पूर्ण । वे० स०-१८९ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

३८७. **चौबीसी ठाणा पीठिका**— × । पत्र स०-२-६५ । ग्रा०—८½×५½ इञ्च । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वे० स०—३८२-१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३८८. **चौरासी बोल**— × । पत्र स०—८ । ग्रा०—११½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र० काल— × । ले० काल-स० १७२८ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—लिखित प० जगन्नाथ ब्राह्मण लघुदेवगिरी वास्तव्य ।

३८९. छियालीस ठाणा चर्चा—× । पत्र स०—१५ । आ०—१०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—स० १८५० आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वे० स०—१९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—त्रेषठ शलाका पुरुषो के नाम भी दिये हुये हैं । शेरगढ में पार्श्वनाथ चैत्यालय मे लिखा गया था ।

३९०. छत्तीसी ग्रन्थ— × । पत्र स० ११–६६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—गुणस्थान चर्चा । र० काल × । ले० काल स० १६४८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६४८ वर्षे आसोज बुदी १३ दिने श्री मूलसघे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषण गुरूपदेशात् नागद्रा ज्ञातीय सा० अचला भार्या वछा पुत्री राजा एतैः स्वज्ञानावरणीय कर्मक्षयार्थं इद छत्तीसी नाम शास्त्र लिखाप्य ब्रह्म भट्टारक श्री विजयकीर्ति ब्रह्म नारायणाय दत्तमिद ··· ······ ············ पठनार्थं दत्त । शुभ भवतु । छत्तीसी ग्रन्थ समाप्त ।

पंक्ति १२ प्रति पक्ति २९ अक्षर है ।

३९१. जीव उत्पत्ति सज्झाय—हरखसूरि । पत्र स० २ । आ०—९$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—नदषेण सज्झाय भी है ।

३९२. जीवतत्त्वस्वरूप— × । पत्र स० १० । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ । २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

३९३. जीवविचार सूत्र— पत्र स० १० । आ० ९ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना बूदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा शातिसूरि कृत हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३९४. जीवस्वरूप— × । पत्र स० ७ । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना बूदी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३९५. जीवाजीव विचार— × । पत्र स० ८ । आ०- १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १८१९ । पूर्ण । वेष्टन स० ७९ ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

३९६. ज्ञातृधर्म सूत्र— × । पत्र सं० १०२ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैं० मंदिर दीवानजी कामा ।

३९७. जीवविचार प्रकरण— शांतिसूरि । पत्र स० ८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र० काल × । ले० काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी की टीका है ।

३९८. प्रति सं०—२ । पत्र स०—७ । आ०—१०×४½ इञ्च । ले० काल म० १७६३ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

३९९. प्रति सं०—३ । पत्र स०—८ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०—५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४००. प्रति सं०—४ । पत्र स०—७ । ले० काल—× । पूर्ण । वे० स०—४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है । पत्र ७ मे दिशाशूल वर्णन भी है ।

४०१. प्रति सं—५ । पत्र स०-७ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं०-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

४०२. प्रति सं०—६ । पत्र स०— ८ । आ०-१०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४०३. जीवसमास विचार— × । पत्र स०— ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०—१२५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

४०४. जीवस्वरूप वर्णन— × । पत्र स०—१ मे १५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत-प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—× । वे० स०—७५८ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । गोम्मटसार जीवकांड मे से जीव स्वरूप का वर्णन किया गया है ।

४०५. ज्ञान चर्चा—× । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वे० सं०—१३२६ ।

प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४०६. **प्रति सं०—२** । पत्र स०—२-५५ । ले० काल स० १८२८ भादों सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं०—२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक)

४०७. **प्रति सं०—६** । पत्र स०—३७ । ले० काल—× । पूर्ण । वे० स०—३५/११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—विभिन्न चर्चाओं का सग्रह है ।

४०८. **ज्ञानसार—मुनि पोमसिंह** । पत्र स० ५ । आ० १०½×४¾ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र० काल—१०८१ श्रावण सुदी ६ । ले० काल—स० १८२१ भादवा सुदी ११ । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—पडित श्री चोखचन्द्र के शिष्य श्री सुखराम ने नैणसागर से प्रतिलिपि कराई थी ।

४०९. **ठाणांग सुत्त**—× । पत्र स०—१,१३-२३३ । आ० १०×३½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—आगम । र० काल—× । ले०काल स० १६५६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है । टीका विस्तृत है । सवत् १६५६ वर्षे कार्तिक सुदी द्वितीया भौमे लिपिकृत आत्मार्थे । अभयदेव सूरि विरचिते स्थानाख्य तृतीयाग विवरणस्थानकाख्ये । अन्त मे—ठाणाग बालावबोध समाप्त च हींडवाणा स्थाने । २ से १२ तक पत्र नही है । इस ग्रंथ के पत्र १,१३-२३२ तक वेष्टन स० १८२ मे है । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४१०. **प्रति सं० २** । पत्र स०—१ से ६६ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४११. **ढाढसी गाथा—ढाढसी** । पत्र स०—२-६ । आ० ११×४ इच । भाषा—प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८० । २४७ । सस्कृत टीका सहित है । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

४१२. **तत्त्वकौस्तुभ—पं० पन्नालाल पांड्या** । पत्र स०—८७४ । आ० १२×७½ इच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १९३४ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १३६—१३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—तत्वार्थराजवार्तिक की हिन्दी टीका है ।

प्रति दो वेष्टनो मे है—पत्र स०—१-४०० तक वेष्टन सं० १३६

पत्र स०—४०१-८७४ तक वेष्टन सं० १३७ ।

४१३. **तत्त्वज्ञानतरंगिणी-भ० ज्ञानभूषण** । पत्र सं०७६ । आ० १३×७½ इच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल—स० १५६० । ले० काल सं०—१९७९ । पूर्ण । वेष्टन सं०—१६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

४१४. प्रतिसं० २ । पत्र स०—३० । श्रा० १०×६ इच । ले० काल स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८/४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० मन्दिर कोटडियो का, डूंगरपुर ।

४१५. तत्ववर्णन—× । पत्रस० ३ ३६ । श्रा० १०×४½ इच । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी गद्य है ।

४१६. तत्वसार—देवसेन । पत्र स० ४ । श्रा० १३½×६ । भाषा—अपभ्रंश । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४१७. तत्वानुशासन-रामसेन । पत्र स० १७ । श्रा० १०×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४१८. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल-× । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४१९. तत्वार्थबोध—बुधजन । पत्र स० १०६ । श्रा०-११×७ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र०काल स० १८७९ कार्तिक सुदी ५ । ले० काल स० १८८२ फाल्गुन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

४२०. प्रति सं० २ । पत्र स० ७४ । श्रा० १३×८ इच । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा ।

४२१. प्रति सं० ३ । पत्र स० १४४ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

४२२. प्रति सं० ४ । पत्र स०—८१ । ले० काल—स० १९८० फाल्गुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—प० हरगोबिन्द चौबे ने प्रतिलिपि की थी ।

४२३. तत्वार्थरत्नप्रभाकर—भ० प्रभाचन्द्र । पत्र स० १२६ । श्रा० ११½×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल स०—१४८९ भादवा सुदी ५ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र की प्रभाचन्द्र कृत टीका है ।

४२४. प्रति सं २ । पत्रस० १७२ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

४२५. प्रति सं ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल स०—१६८० कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । **वेष्टन** स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, करौली ।

४२६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७८ । आ० ११×८ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०—७२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

४२७. प्रति सं० ५ । पत्र स० १४३ । आ० १२×४½ । ले०काल स० १६८३ बैशाख बुदी ५ । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४२८. तत्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंक । पत्रस० ८७४ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × ले० काल— × पूर्ण । **वेष्टनस० ३/१३८** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

४२९. प्रति स०—२ । पत्रस० ६२ । आ०—१३×८ इञ्च । ले०काल—× । अपूर्ण । **वेष्टनस० १२४** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

४३० प्रति सं० ३ । आ० १४×८½ इञ्च । पत्रस०-४१२ । ले०काल १६६२ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

४३१. प्रति सं०- ४ । पत्रस० १२ । ले० काल—× । **वेष्टनसं० ३३** । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष १२ स आगे पत्र नही लिखे गये है ।

४३२. प्रति सं०—५ । पत्रस० ५८० । आ०—११×४½ इञ्च । ले०काल— × । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४३३. तत्वार्थवृत्ति पं० योगदेव । पत्रस० १ से १८६ । आ०—१२×४¼ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । अपूर्ण । **वेष्टनसं० ५७** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रति पत्र मे ६ पक्ति एवं प्रति पक्ति मे ३२ अक्षर है । १००—११६ तक अन्य प्रति के पत्र है ।

४३४. तत्वार्थश्लोकवार्तिक आ० विद्यानन्दि । पत्रस० ५४३ । आ०–१२×८ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय - सिद्धान्त । र०काल — × । ले०काल स० १६७६ पौष सुदी ६ । पूर्ण । **वेष्टनस० ३८** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

४३५. तत्वार्थसार—अमृतचन्द्राचार्य । पत्रस० ३३ । आ०—११×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १६३६ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । **वेष्टनस० १२५** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इति अमृतचन्द्रसूरीणा कृति सुतत्वार्थसारो नाम मोक्षशास्त्र समाप्त । अथ ग्रन्थाग्रन्थश्लोक स० ७२४ ।

प्रशस्ति सवत् १६३६ वर्षे आसोज सुदी ३ बुधे श्री मोजिमपुर चैत्यालये श्रीमूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री सुमतिदेवास्तत्पट्टे भ० गुणकीर्तिदेवा ब्र० कर्मसी पठनार्थ देवे माहवजी लक्ष्मी त……… ।

४३६ **प्रति सं० २** । पत्रस० ५६ । ले०काल १८१४ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे लिखा गया था ।

४३७. तत्वार्थसारदीपक—भ० सकलकीर्ति । पत्रस० ६३ । आ०- १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७६—४३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । **अन्तिम प्रशस्ति**-सागवाडा वास्तव्य सं० जावऊ भार्या वाई जिमणादे तयोः पुत्री बाई अणु अरिक्सा पठनार्थं ।

४३८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६६ । आ० १२ × ५$\frac{3}{4}$ । ले०काल—स० १८२६ । वेष्टनसं० ४५ । दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजा सवाई पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे जयपुर नगर मे केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

४३६. तत्वार्थसूत्र मंगल— × । पत्रसं० ४ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष— हिन्दी मे तत्वार्थ सूत्र का सार दिया हुआ है ।

४४०. तत्वार्थसूत्र-उमास्वामि । पत्र स० ३३। आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स०× पूर्ण । वेष्टनस० ११०६ । **प्राप्ति स्थान** -भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—इसी का दूसरा नाम मोक्षशास्त्र भी है ।

४४१. **प्रति सं० २** । पत्र स० ११ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० स० ६८४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४२. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १६ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले०काल स०१८२५ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १३२३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४३. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ५ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १००३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

४४४. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ४० । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी । हिन्दी टीका सहित है ।

४४५. **प्रति सं०**—६ । पत्र स० १७ । ले०काल × । पूर्ण वेष्टनस०—२२८ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी टीका भी है ।

४४६. **प्रति सं०**—७ । पत्र सं० ४८ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—उक्त मन्दिर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४४७. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ७ । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दनस्वामी बूंदी ।

४४८. **प्रति सं० ९** । पत्र स० २६ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दनस्वामी, बूंदी ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

४४९. **प्रति सं० १०** । पत्र स० २४ । ले०काल—स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० १५० **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है । प० रतनलाल चिमनलाल की पुस्तक है ।

४५०. **प्रतिसं०—११** । पत्र स० १६ । ले०काल स० १६४७ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों मे लिखी हुई है । चंपालाल श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

४५१. **प्रति सं०—१२** । पत्र स० ५० । आ०-- १० × ५½ इञ्च । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनसं०--४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्योका नैणवा ।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्न पाठो का सग्रह और है—

जिनसहस्रनाम— (सस्कृत) **आदिनाथजी की वीनती** किशोर-(हिन्दी) ।

श्री सकलकीर्ति गुरु बदी काति स्याम दसेमी ।

विनती रचीय किशोर पुर केथोरण वसै जी ।

जो गावे नर नारि सुस्वर भाव धरेजी ।

त्या घरि नोनधि होई धन कोष भरे जी ।

पाश्वनाथ स्तुति-बलु-हिन्दी (र० काल सं० १७०४ असाढ बुदी ५)

आदिनाथ स्तुति-कुमदचन्द्र-हिन्दी ।

प्रारम्भ—प्रभु पायि लागु करु सेव थारी ।

तुम्हे साभलो श्री जिनराज महारी ।

अन्तिम—घरण विनउ हूं जगनाथ देवो ।

मोहि राखि जे भवै भवै स्वामी सेवो ।।

या विनती भावसु जे भणीजे ।

कुमुदचन्द्र स्वामी जिसो हो खमीजे ।।

अक्षर माला—मनराम-हिन्दी ।

विषापहार स्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति-हिन्दी (र० काल सं०- १७१५)

विशेष—नारनौल मे इस ग्रन्थ की रचना हुई थी ।

४५२. **प्रतिसं०—१३** । पत्र सं० ४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २१ । **प्राति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

४५३. प्रतिसं० १४। पत्रस० ८। ले० काल— ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १४४। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर, राजमहल।

४५४. प्रतिसं० १५। पत्रस०—५२। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टनसं०—५०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिह।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है।

४५५. प्रतिसं० १६। पत्रस०-३३। ले० काल सं० १८५३। पूर्ण। वेष्टनसं०-५६। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भी दिया हुआ है

४५६. प्रतिसं० १७। पत्रस०—५४। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टनस०—१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिह (टोक)। हिन्दी टीका सहित है।

४५७. प्रतिसं० १८। पत्रस०—१२-३०। लेकाल स० १८१६ पूर्ण। वेष्टनस०—२८६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—इसी मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे तत्वार्थ सूत्र की पाच प्रतिया और है।

४५८ प्रति सं० १६। पत्रस०—३८। ले० काल-सं० १६४० आषाढ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८।४०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है। नसीराबाद की छावनी मे प्रतिलिपि की गई थी। इस ग्रन्थ की दो प्रतिया और है।

४५६. प्रतिसं० २०। पत्रस०-२ से १०। विषय — सिद्धान्त। र० काल -×। ले०काल स० १६३०। अपूर्ण। वेष्टनस०—२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

४६०. प्रतिसं० २१। पत्र स० ११। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० २२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष – सस्कृत टव्वा टीका सहित है।

४६१. प्रतिसं० २२। पत्र स० १४। ले० काल—स० १७६७ कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २७६। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

४६२. प्रतिसं० – २३। पत्र स० १५। ले०काल – ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५४। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

४६३ प्रतिसं० – २४। पत्र स० २०। ले०काल—स० १६४८ पौष शुक्ला १२। पूर्ण। वेष्टन स०१५३। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन खण्डेलवाल पञ्चायती मदिर अलवर।

विशेष—स्वर्णाक्षरो मे बहुत सुन्दर प्रति है।

४६४. प्रतिसं० २५। पत्र स० २०। ले०काल—स० १६४८ फाल्गुन सुदी १०। पूर्ण। वेष्टनसं० ३२। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन अग्रवाल पञ्चायती मदिर अलवर।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो में लिखी हुई है। चिम्मनलाल ने प्रतिलिपिकी थी।

४६५. **प्रतिसं० २६** । पत्र स० ३४ । ले०काल- × । पूर्ण । वेष्टनसं०६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है । बहुत सुन्दर है ।

४६६. **प्रतिसं० २७** । पत्र स० १५ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

४६७ **प्रतिसं० २८** । पत्र स० ४७ । ले०काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टनस० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है तथा अक्षर मोटे हैं ।

४६८. **प्रतिसं० २९** । पत्रस० ६३ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १८४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मंदिर, भरतपुर ।

विशेष--सामान्य अर्थ दिया हुआ है । इस मन्दिर मे तत्वार्थ सूत्र की १३ प्रतिया और है।

४६९. **प्रतिसं० ३०** । पत्रस० १६ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १२१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर, बयाना ।

४७० **प्रतिसं० ३१** । पत्रस० २७ । ले०काल—स० १८३८ । पूर्ण । वेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन पञ्चायती मंदिर, बयाना ।

विशेष—प्रति हिन्दी तथा टीका सहित है ।

४७१. **प्रतिसं० ३२** । पत्रस० २१ । ले०काल--स० १९०४ । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना ।

विशेष—इसी मन्दिर मे दो प्रतिया और है ।

४७२. **प्रतिसं० ३३** । पत्रस० ३० । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर, कामा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है । इसी मंदिर मे दो प्रतिया और हैं ।

४७३. **प्रतिसं० ३४** । पत्र स० २० । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०९ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४७४ **प्रतिसं० ३५** । पत्र स० १२ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १९ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—नीले रङ्ग के पत्रो पर स्वर्णाक्षरों की प्रति है ।

४७५. **प्रतिसं० ३६** । पत्र स० १२ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १०९ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

४७६. **प्रतिसं० ३७** । पत्रसं० १२१ से १६२ । ले०काल — × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

४७७. **प्रतिसं० ३८** । पत्रसं० २१ । ले०काल—स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

४७८. **प्रतिसं० ३६** । पत्रस० १६ । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का, डीग ।

४७६. **प्रतिसं० ४०** । पत्रस० ७० । ले०काल—१६५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४८०. **प्रतिसं० ४१** । पत्रस० १२ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४८१. **प्रतिसं० ४२** । पत्रसं० २-१६ । ले०काल — × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७७ । जीर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

४८२. **प्रतिसं० ४३** । पत्रस० ८ । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

४८३. **प्रतिसं० ४४** । पत्रस० २० । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ मे १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४८४. **प्रतिसं० ४५** । पत्रस० ११ । ले०काल—स० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ से १०१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—ईश्वरलाल चादवाड ने प्रतिलिपि की थी ।

४८५. **प्रतिसं० ४६** । पत्रस० २८ । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—लिपि सुन्दर है । अक्षर मोटे हैं । हिन्दी गद्य में अर्थ दिया हुआ है ।

४८६. **प्रति सं० ४७** । पत्रस० २० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति सुनहरी है पर किसी २ पत्र के अक्षर मिट से गये हैं ।

४८७. **प्रतिसं० ४८** । पत्रस० १३ । ले०काल – सं० १८४३ आसोज बदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

४८८. **प्रतिसं० ४६** । पत्रस० १६ । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष —ऋषिमडल स्तोत्र गौतम स्वामी कृत और है जिसके पांच पत्र हैं ।

४८९. प्रतिसं० ५० । पत्रस० ४२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—एक प्रति और है । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

४९०. प्रतिसं० ५१ । पत्रसं० १० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४९१. प्रतिसं० ५२ । पत्रसं० ६-१३० । ले०काल सं० १८७७ चैत बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है । लेकिन वह अशुद्ध है ।

प्रमाण नयैरधिगम :—चत्वारि सजीवादीनां नव पदार्थं तत्व प्रमाण भेद द्वं करि । नय कथिते भेद द्वयं प्रमाण भवति । नय भवति विकल्प द्वय । तत्र प्रमाण कोऽर्थ । प्रमाणे भेद द्वय । स्वार्थ प्रमाणं परार्थ प्रमाण । तत्र च अय प्रमाण को विशेष । प्रधानश्रुतज्ञानगरिष्टसिद्धातशास्त्र स्वार्थं प्रमाणं भवति । यत् ज्ञानात्मक भावश्रुत श्रुतमूक्ष्मजल्पना अभ्यनरि आत्मज्ञान । यस्य परमार्थ भवति । स्वार्थ प्रमाण वचनात्मकं । परमार्थ प्रमाण तस्य वचनात्मक श्रुत ज्ञानस्य विकल्पना एव प्रमाण विशेषः । नय कोऽर्थ. । नयस्य भेद-द्वय । द्रव्यार्थनय व्यवहारनय । अधिगम्य कोथ. उपयातर प्रमाणनयस्य । इति भावार्थः ॥

४९२. प्रतिसं० ५३ । पत्रस० २६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है एव हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४९३. प्रति सं० ५४ । पत्रस० ३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

४९४. प्रति सं० ५५ । पत्रस० १८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६—६२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

४९५. प्रति सं० ५६ । पत्रस० ८ । ले०काल × । वेष्टन स० ४०७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४९६. प्रति सं० ५७ । पत्रसं० २३ । ले०काल × । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४९७. प्रतिसं० ५८ । पत्रस० ८२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४९८. प्रतिसं० ५९ । पत्रस० ८९ । ले० काल × । वेष्टनसं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मदिर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४९९. प्रति सं० ६० । पत्र सं० २० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५७ । १६० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

५००. प्रति सं० ६१ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५८ । १६१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर । प्रति प्राचीन है ।

५०१. प्रति सं० ६२ । पत्र सं० ८४ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १६१२ चैत्र बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । भरतपुर में प्रतिलिपि करायी गयी थी । श्री सुखदेव की मार्फत गोपाल से यह पुस्तक खरीदी गयी थी ।

चढायत जैन मंदिर कामा के रामसिंह कासलीवाल दीवान उमरावसिंह का बेटा वासी कामा के सावण सुदी ५ स० १६२८ मे ।

५०२. प्रति सं० ६३ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १६४६ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । आनदीलाल दीवान कामावाले ने प्रतिलिपि कराकर दीवान जी के मंदिर मे चढायी थी ।

५०३. प्रति सं० ६४ । पत्र स० ७८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा सस्कृत टीका सहित है ।

५०४. तत्वार्थ सूत्र भाषा × । पत्र स० ५३ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १६१३ भादवा सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर अलवर ।

५०५. प्रति सं० २ । पत्र स० ३३ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—हिन्दी में टिप्पण दिया हुआ है ।

५०६. तत्वार्थ सूत्र टीका—श्रुतसागर । पत्र स० ३१६ । आ०—११ × ५ इञ्च । भाषा —सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूदी ।

विशेष —जयपुर मे श्वे० प्रयागदास ने प्रतिलिपि की थी ।

५०७. प्रति सं० २ । पत्र स० ३६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है । ग्रन्थ के दोनों पुट्ठे सचित्र हैं ।

५०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७६ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६।१४ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोक)।

५०६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३३३। ले० काल सं० १८४६ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ स० ६०००। लिखायत टोडानगर मध्ये।

५१०. प्रति सं० ५। पत्र स० ३१५। ले० काल सं० १८२१। पूर्ण। वेष्टन सं० २५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

५११. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४६३। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति अशुद्ध है।

५१२. तत्वार्थ सूत्र भाषा — महाचन्द्र। पत्र स० ४। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २३० - ६३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

अन्तिम—सप्त तत्व वर्णन कियो, उमास्वामी मुनिराय।
दशाध्याय करिके सकल शास्त्र रहस्य बनाय।
स्वल्प वचनिका इम पढो, स्वल्प मती बुध चिन्ह।
महाचन्द्र सोलापुर रहि, पचन कहे अधीन ॥

५१३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १६५५ काती बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० २३३–५८३। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन समवनाथ मन्दिर, उदयपुर।

विशेष— भट्टारक कनककीर्ति के उपदेश से हू बडज्ञातीय महता फतेलाल के पुत्र ने उदयपुर के समवनाथ चैत्यालय मे इस प्रति को चढाई थी। भीडर मे गोकुल प्रसाद ने प्रतिलिपि की थी।

५१४. तत्वार्थसूत्र भाषा— कनककीर्ति। पत्र स० २–६२। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय-–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १६०४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५१५. प्रति सं० २। पत्र स० ५५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५।३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)।

५१६. प्रति सं० ३। पत्र स० ११८। ले० काल स० १८४४ पौष बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

विशेष—आचार्य विजयकीर्ति के शिष्य प० देवीचन्द ने प्रति लिखाई थी। लिखत माली नन्दू मालपुरा का।

५१७. प्रति सं० ४। पत्र स० २२०। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर।

५१८. प्रति सं० ५। पत्र स० ६८। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७८। **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

५१९. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १६७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०६–१५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

५२०. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ८४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

५२१ प्रतिसं० ८ । पत्र स० १६६ । आ० ११×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३-५० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—रतनचन्द पाटनी ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

५२२ प्रतिसं० ९ । पत्र स० १६३ । ले०काल स० १७८५ जेष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५-४० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—रडिन ईसर अजमेरा लालसोट वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

५२३. प्रतिसं० १० । पत्र स० ३७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १८६१ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—भवानीराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

५२४. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १२६ । आ० १०½×७½ इञ्च । ले०काल स० १८५६ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८–३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—प्रति उत्तम है । सेवाराम ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

५२५. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ८८ । ले०काल स०१८१२ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स०—२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

५२६. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ४-६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—इसका नाम तत्वार्थरत्नप्रभाकर भाषा भी दिया है ।

५२७. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ६० । ले०काल स० १७५५ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स०–३१ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

५२८. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ७६ । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र की श्रुतसागरी टीका के प्रथम अध्याय की भाषा है ।

५२९. तत्वार्थसूत्र टीका—गिरिधरसिंह । पत्र स०– ७७ । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल १९३५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, भरतपुर ।

विशेष—टीका वही मे लिखी हुई है ।

अन्तमें—ऐसे स्वामी उमास्वामी आचार्य कृत दशाध्यायी मूल सूत्र की सर्वार्थसिद्धि नामा संस्कृत टीका ताकी भाषावचनिका तैं संक्षेप मात्र अर्थ लैके दीवान बालमुकन्द के पुत्र गिरिवरसिह वासी कुंभेर के ने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार मूल सूत्रनि को अर्थ जानिवे के लिए यह वचनिका रची और स० १६३५ के ज्येष्ठ सुदी २ रविवार के दिन सपूर्ण कीनी ।

५३०. तत्वार्थसूत्र भाषा—साहिबराम पाटनी । पत्रस० ४० । आ० ११½ × ६ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धात । र०काल स० १८१८ । **ले०काल** स० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष—ग्रन्थ गुटका साइज में है । ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—सुमरण करि गुरु देव द्वादशागवाणी प्रणमि ।
सुरगमुक्ति मग मेव, सूत्र शब्द भाषा कहौ ।
पूर्वकृत मुनिराय, लिखी विविध विधि वचनिका ।
तिनहू अर्थ समुदाय लिख्यौ अन्त न नख्यौ परे ।

टीका—शिवमग मिलवन कर्मगिर भजन सर्व तत्वज्ञ ।
बदौ तिहंगुण लब्धिको वीतराग सर्वज्ञ ।।

अन्तिम—कवि परिचय —है अजाना जिन आश्रमी वर्ण वनिक व्यवहार ।
गोत पाटणी वश गिरि है बूदी आगार ।। २१ ।।
वसुदश शत परि दसरुवसु माघ विशति गुणग्राम ।
ग्रन्थरच्यौ गुरुजन कृपा सेवक साहिबराम ।। २२ ।।

ऋषि खुशालचन्द ने बयाना मे प्रतिलिपि की थी ।

५३१. तत्वार्थ सूत्र भाषा—छोटेलाल । पत्रस० ७५ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल स० १६५८ । ले० काल स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—छोटेलाल जी अलीगढ वालों ने रचा था । कवि का पूर्ण परिचय दिया हुआ है तथा गुटका साइज है ।

५३२. तत्वार्थ सूत्र भाषा-पं० सदासुख कासलीवाल । पत्रस० ८० । आ० १२×५½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धात । र०काल स० १६१० फालगुण बुदी १० । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५३३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८८ । ले० काल-स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि०जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५३४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १७७ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल स० १६५२ । अपूर्ण । **वेष्टन सं०**—३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना बूदी ।

५३५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३७ । आ० १०½×५½ इञ्च । **ले०काल** स १६१४ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६।६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ, कोटा ।

५३६. **प्रति सं० ५** । पत्रस० ७३ । ले०काल—सं० १६१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२-३६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—भैरवबक्श ने प्रतिलिपि करायी थी ।

५३७. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ६५ । आ० १२×५इञ्च । ले०काल सं० १६१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५३८. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ६६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १६२५ । पूर्ण । वेष्टनस० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५३९. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ६७ । ले०काल स० १६६२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५४०. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० १०७ । ले०काल १६६२ चैत्र बुदी ४ । वेष्टनसं० २० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५४१. **प्रतिसं० १०** । पत्रस० ६७ । आ० १४×६½ इञ्च । ले०काल स० १६५६ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २६ **प्राप्ति स्थान** – उपरोक्त मन्दिर ।

५४२. **प्रतिसं० ११** । पत्रस०५६ । आ० १५½×५½ इञ्च । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

५४३. **प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ७३ । आ० १४×८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

५४४. **प्रतिसं० १३** । पत्रस० ७३ । ले०काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

५४५. **प्रतिसं० १४** । पत्रस० ६३ । आ० १३×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५४६. **प्रतिसं० १५** । पत्र स० ३० । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

५४७. **तत्वार्थसूत्र भाषा – (वचनिका)**—पन्नालाल सघी । पत्र स० ५५ । आ० १¾×८ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय-सिद्धांत । र०काल स० १६३८ । ले० काल स०१६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर श्री महावीरजी बूदी ।

विशेष—बीजलपुर मे प्रतिलिपि हुई ।

५४८. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

५४९. **तत्वार्थसूत्र भाषा-(वचनिका)-जयचन्द छाबडा** । पत्र स० ३६३ । आ० ११¾× ६ इञ्च । भाषा–राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय–सिद्धात । र०काल सं० १८६५ चैत्र सुदी ५ । ले०काल–सं० १८८० माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

५५०. प्रतिसं० २। पत्रसं० २६६। आ० १३×७ इञ्च। ले०काल सं० १६४१ माघ सुदी १४। पूर्ण। वेष्टनसं० ११–३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—धन्नालाल मांगीलाल के पठनार्थ लिखी गयी थी।

५५१. प्रतिसं० ३। पत्रस० ३५४। आ० १३×८½ इञ्च। ले० काल सं० १६४५ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १६६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५५२. प्रतिसं० ४। पत्रस० ३५४। आ० ११×६ इञ्च। ले० काल० स० १६१८। पूर्ण। वेष्टनस० १४२। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

५५३. प्रतिसं० ५। पत्रस० ३१०। आ० १४×६½ इञ्च। ले० काल स० १६२६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

५५४. प्रतिसं० ६। पत्रस० ३५४। आ० १०×८ इञ्च। ले० काल० स० १८६५। पूर्ण। वेष्टन स० २१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

५५५. प्रतिसं० ७। पत्र स० ५३। आ० ११×४ इञ्च। ले०काल सं० १६६७। पूर्ण। वेष्टनस० १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

५५६. प्रतिसं० ८। पत्रस० २६। आ० ११½×५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० २। **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मंदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)।

५५७. प्रतिसं० ९। पत्रस० ४४७। आ० १०½×७½ इञ्च। ले०काल स० १९५८। पूर्ण। वेष्टनस० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्योंका, नैणवा।

५५८. प्रति स० १०। पत्रस० ३०१। आ० १३×६ इञ्च। ले०काल स० १६३२ आषाढ़ बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर बयाना।

५५९. प्रति स० ११। पत्रस० ३२१। आ० १२½×५¾ इञ्च। ले०काल स० १६११ आषाढ बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

५६०. तत्वार्थसूत्र भाषा—×। पत्रस० ३८। आ०११×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। र०काल— ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

५६१. तत्वार्थसूत्र भाषा.......। पत्रस० ६। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धात। र०काल— ×। **ले०काल** १७५५ आषाढ बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग।

५६२. तत्वार्थसूत्र भाषा.......। पत्रसं० ८४। आ० १२×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। **विषय**–सिद्धात। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

५६३. तत्वार्थसूत्र भाषा....... । पत्रसं० ४३। आ० ११×६½ इञ्च। भाषा—सस्कृत—हिन्दी। विषय—सिद्धात। र०काल ×। **ले०काल** १६५३। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

५६४. तत्वार्थसूत्र भाषा……। पत्रसं० २२ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल-× । ले०काल स० १८२६ माह सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

५६५. तत्वार्थसूत्र भाषा……। पत्रस० ३४ । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धांत । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मन्दिर, भरतपुर ।

५६६. तत्वार्थसूत्र भाषा …… । पत्रस० ४१ । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन-सं० ५५० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५६७. तत्वार्थसूत्र भाषा …… । पत्रसं० ५५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५६८. तत्वार्थसूत्र टीका……। पत्रसं० ८३ । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—गुटका साइज है ।

५६९. तत्वार्थसूत्र भाषा…… । पत्रस०-१५ । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५५ ।

विशेष—हासिये के चारो ओर टीका लिखी है । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५७०. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ८२ । भाषा—हिन्दी । र०काल—× । ले० काल-१७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—श्रुतसागरी टीकानुसार कनककीर्ति ने लिखा था ।

५७१. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ६५ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान । र०काल × । ले०काल १६२८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—मूल सहित है ।

५७२. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ३० । आ० ६¾ × ४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-सिद्धान । र०काल × । ले०काल स० १८१६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७३. तत्वार्थसूत्र—भाषा × । पत्रस० ७६ । आ० ७½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल स० १६०५ आसोज बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७४. तत्वार्थ सूत्र भाषा × । पत्रस० ६६ । आ० ११¾ × ६¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७५. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० २० । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सिद्धांत । र०काल — × । ले०काल—स० १८४६ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२१ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मंदिर, अजमेर ।

५७६. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ११६ । आ. ११¾ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल — × । ले०काल स० १८०७ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन तेरहपंथी मंदिर, नैणवा ।

विशेष—जीवराज उदयराम ठोल्या ने तोलाराम वैद्य से नैणवा में प्रतिलिपि कराई थी ।

५७७ तत्वार्थसूत्र - भाषा × । —पत्रस० ४२ । आ० ७½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५७८. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० १४३ आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३-४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

५७९. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ६ से ५३ । आ० १२ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०६-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

५८०. तत्वार्थ सूत्र भाषा × । पत्रस० ११६ । आ० १० × ६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल स० १९१३ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर कोट्यो का, नैणवा ।

५८१. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० १५७ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल स० × । ले०काल स० १८८८ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यो का, नैणवा ।

विशेष—नैणवा नगर मे लछमीनारायण ने टोडूराम जी हंडा के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

५८२. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० २७ । आ० १२ × ७½ इञ्च । भाषा संस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का, नैणवा ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

५८३. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ६३ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल स० १७८३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर, उदयपुर ।

५८४. तत्वार्थसूत्र—भाषा × । पत्रस० १०० । आ० = ६½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका दी हुई है ।

५८५. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ६० । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत—हिन्दी (गद्य) । विषय - सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

५८६. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ३४ । ग्रा० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १९२३ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ११३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५८७. तत्वार्थसूत्र—भाषा × । पत्रस० २-३८ । ग्रा० १४ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बू दी ।

५८८. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ६१ । ग्रा० ६ × ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बू दी ।

विशेष— लेखक प्रशस्ति का पत्र नही है ।

५८९. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ८० । ग्रा० १३ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १९०७ द्वि० जेठ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी, बू दी ।

५९०. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० ३९ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल स० १९६५ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

५९१. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० ६५ । ग्रा० १२ × ८ इञ्च । भाषा—सस्कृत । हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १९५४ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५९२. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० ४३ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा सस्कृत । हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले० काल—स० १९०१ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४-११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५९३. तत्वार्थसूत्र—भाषा × । पत्र स० १२ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल स० १८१८ । ले०काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४९७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५९४. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० ७१ । ग्रा० १२ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

५९५. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० १५१ । ग्रा० १२½ × ८ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १८४२ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन

स० १५७९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

५९६. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० १६६ । आ० ९ × ८ इञ्च । भाषा हिन्दी । **विषय**—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १८४३ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—किशनगढ मे प० चिमनलाल ने प्रतिलिपि की ।

५९७. तत्वार्थसूत्र भाषा — × । पत्र स० ६१ । आकार १०½ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—स० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

५९८. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० १२७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी—(गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । ले०काल स० १८७७ आषाढ बुदी २ । पूर्ण वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टोंक) ।

विशेष श्लोक स० २००० प्रमाण ग्रन्थ है ।

५९९. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० २५० । आ० १४ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य विषय सिद्धान्त । र०काल — × । **ले०काल** स० १८९३ । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

६००. **तत्वार्थसूत्र**.भाषा × । पत्रस० २२९ । आ० १० × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल स० १९१० । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान** खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

६०१. **तत्वार्थसूत्र** भाषा × । पत्रस० ६० । आ० ११½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १८०० मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८/३३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर भादवा (राज) ।

विशेष—मालपुरा मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

६०२. **तत्वार्थसूत्र** भाषा— × । पत्रस० ३८ । आ०—१० × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ३९-२३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर कोटडियों का डूगरपुर ।

६०३. **तत्वार्थसूत्र** भाषा × । पत्रस० ७६ । आ०—१२½ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय— सिद्धान्त । र०काल — × । ले०काल—स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

६०४. **तत्वार्थसूत्र** भाषा × । पत्रस० २९ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा—सस्कृत—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

६०५. तत्वार्थसूत्र भाषा— × । पत्रस० ५१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

विशेष—*केवल प्रथम अध्याय तक है ।*

६०६. तत्वार्थसूत्र भाषा । पत्रस० ४६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस०—८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

६०७. तत्वार्थसूत्र भाषा — × । पत्रस० १०० । आ०—११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा – हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय की टीका है और वह भी अपूर्ण है ।

६०७ (क). तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस०३६ । आ०—१२$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । र०काल । ले० काल स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । ज्ञानचद तेरापथी ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

६०८. तत्वार्थसूत्र वृत्ति— × । पत्रस० ४० । आ० ८ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल– × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति श्रीमदुमास्वामी विरचित तत्वार्थसूत्र तस्य वृत्तिस्तत्वार्थदीपिका नाम्नी समाप्तम् । इस वृत्ति का नाम तत्वार्थ दीपिका भी है ।

६०९. तत्वार्थसूत्र वृत्ति— × । पत्रस० ३८४ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा - सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । ले० काल—स० १७६१ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

६१०. तत्वार्थसूत्र वृत्ति— × । पत्रसं० २३ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६२-८० । **प्राप्ति-स्थान** – दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६११. तत्वार्थसूत्र वृत्ति— × । पत्रस० ६५ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० ११।३२५ **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मंदिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

६१२. त्रिभंगीसार-नेमिचन्द्राचार्य । पत्रस० ७४ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १८०७ वैशाख बुदी १० । पूर्ण । **वेष्टनस० १६२** । **प्राप्ति स्थान** । भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६१३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६१ । ले०काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टनस० २६२ । **प्राप्ति**

स्थान – दि०जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है तथा टीकाकार स्वरचन्द ने स० १६३३ मे टीका की थी ।

६१४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३३ । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर, डीग ।

विशेष—कठिन शब्दों का अर्थ भी है ।

६१५. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ५६ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६१६. प्रतिसं० ५। पत्रस० ४४ । आ० ११½ × ५½ । र०काल— × । लिपिकाल— × । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६१७. त्रिभंगीसार टीका—विवेकनन्दि । पत्रस० ५६ । आ० १२ × ५½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय – सिद्धान्त । टीकाकाल— × । ले०काल स० १७२७ आसोज बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

६१८. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६७ । आ० ११ × ४½ इन्च । ले० काल— × । पूर्ण वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

६१९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६७ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल– × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरर दीवान जी, कामा ।

६२०. त्रिभंगीसार भाषा × । पत्रस० ५८ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धात र०काल— × । ले०काल स०—× । अपूर्ण । वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । ले०काल —× । अपूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

६२२. त्रिभंगीसार भाषा × । पत्रस० २२ । भाषा – हिन्दी । विषय — र०काल — × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७५ । **प्राप्तिस्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

६२३. त्रिभंगी सुबोधिनी टीका—प० आशाधर । पत्रसं० २७ । आ० ११½ × ५ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । लिपिकाल—स० १७२१ माह सुदी १० । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ग्रथ समाप्ति के पश्चात् निम्न पक्ति लिखी हुई है—

"यह पोथी मालपुरा का सेतावर पासि लई छै। तातै यह पोथी साह जोधराज गोदीका सागानेर वालों की छै।"

६२४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८६ । लिपिकाल—स० १५८१ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—हस्तिकान्तिपुर मे गगादास ने प्रतिलिपि की थी ।

६२५. त्रेपनभाव चर्चा— × । पत्रस० ४ । ग्रा०— ६½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल— × । ले०काल स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—अजमेर मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

६२६. दशवैकालिक सूत्र— × । पत्रस० ५८ । भाषा—प्राकृत । विषय-आगम । र०काल × । ले०काल स० १७५३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७८७ ।**प्राप्तिस्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—गुजराती (लिपि हिन्दी) टीका सहित है गाथाओ पर अर्थ है ।

६२७. प्रतिसं० २ । पत्रस० १७ । ले०काल—सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६० । उपरोक्त मन्दिर । दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

६२८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५६ । ग्रा० ६½ × ४½ । ले०काल स० १६७६ माह बुदी ११ । पूर्ण । वेप्टन स० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

६२९. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २० । ग्रा० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १५६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—सवत् १५६१ वर्षे प्रथम श्रावरण सुदि ३ शनौ ज्ञानावरणादिक कर्मक्षयार्थं तेजपालेन इद ग्रंथ स्वहस्तेन लिखित ।

६३०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ६१ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७६१ माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १५१ ।**प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६३१ द्रव्यसमुच्चय-कजकीर्ति । पत्रस० २ । ग्रा० १२ × ५ । भाषा—सस्कृत । विषय सिद्धान्त । र०काल × । लिपि काल०— × । वेष्टन स० ६ **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—शुभचन्द्र की प्रेरणा से कजकीर्ति ने रचना की थी ।

६३२ प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । ग्रा० ११ × ५ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । लिपिकाल × । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६३३. द्रव्यसंग्रह नेमिचन्द्राचार्य । पत्रस० ८ । ग्रा० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—स० १८४८ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

६३४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० २ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । इस मन्दिर में सस्कृत टीका सहित ४ प्रतिया और है ।

६३५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ७ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । लिपि स० १६६८ । वेष्टनसं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। आचार्य हरीचन्द नागपुरीय तपागच्छ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

६३६. प्रति सं० ४। पत्रसं० ४। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे ४ प्रतिया और है।

६३७. प्रति सं० ५। पत्रसं० ५। ले०काल — स० १७५०। पूर्ण। वेष्टनसं० ३१४। **प्राप्ति—स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष—इस मन्दिर मे ४ प्रतिया और हैं जो सस्कृत टीका सहित हैं।

६३८. प्रति सं० ६। पत्रसं० २१। ले०काल—स० १७२६ फाल्गुन सुदी १३। पूर्ण। **वेष्टनसं०** २२। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

६३९. प्रति सं० ७। पत्रसं० ५। ले०काल— ×। पूर्ण। **वेष्टनसं०** ७। २०। **प्राप्ति—स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

६४०. प्रति सं० ८। पत्रसं० ४। ले०काल—स० १७६८ जैष्ठ सुदी १२। पूर्ण। वेष्टनसं०—५६-१९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—गोनेर मे महात्मा मानिमल ने प्रतिलिपि की थी।

६४१. प्रति सं० ९। पत्रसं० ४। ले०काल—स० १९०० माह बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं०—२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

६४२. प्रति सं० १०। पत्रसं० २४। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८७।१६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६४३. प्रति सं० ११। पत्रसं० ४। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ९८। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

६४४. प्रति सं० १२। पत्रसं० ५६। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बून्दी।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

६४५. प्रति सं० १३। पत्रसं० १०। ले०काल—स० १९५२ सावन सुदी ९। पूर्ण। वेष्टनसं०—१०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—भगडावत कस्तूरचन्द के पुत्र चोकचन्द ने लिखी थी।

६४६. प्रति सं० १४। पत्रसं० ५। ले०काल—स० १८७८ माह बुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं०—२६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प० हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

६४७. प्रति सं० १५। पत्रसं० ५। ले०काल — ×। अपूर्ण। **वेष्टनसं०** १३। **प्राप्तिस्थान**—

दि० जैन मदिर दबलाना (बून्दी)।

६४८. **प्रतिसं० १६।** पत्रसं० ११। आ० ६×४ इञ्च। ले०काल— ×। पूर्ण। **वेष्टनसं०**– १११-६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ।

विशेष—एक प्रति और है।

६४९. **प्रतिसं० १७।** पत्रस० १४। ले०काल—सं० १७१३। पूर्ण। वेष्टनस० ३६८–१४१। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—पाडे जमा ने नागपुर मे प्रतिलिपि की थी।

६५०. **प्रतिसं० १८।** पत्रसं० १८। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल— ×। पूर्ण। **वेष्टनस०** १६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर अलवर।

६५१. **प्रतिसं० १९।** पत्रसं० १७। आ० ८½×४½ इञ्च। ले०काल—स० १९४९ सावन बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनस० १५०। **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरी है। तथा सुन्दर है। चम्पालाल ने प्रतिलिपि की थी।

६५२. **द्रव्यसग्रह टीका—प्रभाचन्द्र।** पत्रस० १५। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र०काल— ×। ले०काल—स० १८२० माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टनस० ६८०। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६५३. **द्रव्य सग्रह टीका**—पत्रसं० १५। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र०काल— ×। ले०काल—स० १८२२। पूर्ण। वेष्टनस० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

६५४. **द्रव्यसग्रह वृत्ति—ब्रह्मदेव।** पत्रस० ११६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र०काल— ×। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३११। **प्राप्ति स्थान**–भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

६५५. **प्रतिसं० २।** पत्रस० ११७। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

६५६. **प्रतिसं० ३।** पत्रस० ५१। ले०काल–स० १७५३ चैत्र सुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० ६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)।

६५७. **प्रतिसं० ४।** पत्रस० ६। आ० १२½×५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस०– १४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर, उदयपुर।

६५८. **प्रतिसं० ५।** पत्रस० १०१। ले०काल—स०१७१० जेष्ठ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टनस०– १२२। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, आदिनाथ बूदी।

विशेष—स० १७१० ज्येष्ठ बुदी १ को आचार्य महेन्द्रकीर्त्ति के पठनार्थ विद्यागुरु श्री तेजपाल के उपदेश से वृ दावती मे जयसिह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी।

६५९. **प्रतिसं० ६।** पत्रस० ६४। आ० ६½×४½ इञ्च। ले०काल—सं० १८०७ आषाढ़ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टनस० ६६।३१। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सोगणियों का मन्दिर, करौली।

६६०. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० १०६ । आ० १० × ५½ इञ्च । ले०काल -- । अपूर्ण । वेष्टन स०– २४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६१. प्रतिसं० ८ । पत्रसं०—१७१ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६२. द्रव्यसंग्रह वृत्ति— × । पत्रसं० ८६ । आ० ११ × ६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय**—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६३. द्रव्यसंग्रह टीका— × । पत्रसं० ८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । **विषय**—सिद्धान्त । र०काल— × । **ले०काल**—सं० १७६० ज्येष्ट सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६४. द्रव्यसंग्रह टीका— × । पत्र स० ४७ । आ०—११½ × ७ इञ्च । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल— × । ले०काल—स० १८१७ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० २३।२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

६६५. द्रव्यसंग्रह भाषा— × । पत्र सं० १६ । ले०काल—स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२।१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी, टोंक ।

विशेष—टोडा के नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

६६६. द्रव्यसंग्रह भाषा टीका । पत्र स० ५-१० । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले०काल—स० १७१६ । वैशाख सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष— लेखक प्रशस्ति ।

सम्वत् १७१६ वर्षे वैसाख मासे शुक्लपक्षे १३ रवौ सागपत्तन शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्री रत्नभूषण भ० श्री जयकीर्ति भ० श्री कमलकीर्ति तत्पट्टे भ० भुवनकीर्ति विद्यमाने भ० श्री कमलकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म श्री गगसागर लिखितं स्वय पठनार्थं ।

६६७. द्रव्यसग्रह भाषा — × । पत्र स०—१७ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । विषय–सिद्धात । रचना काल– × । लेखन काल स० १९५० ज्येष्ठ बुदी अमावस । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ, कोटा ।

विशेष—श्री धन्नालाल बघेरवाल पुत्र जिनदास ने इन्दरगढ को अपने हाथ से प्रातिलिपि की थी ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सम्वत् उन्नीस-सै-पचास शुभ ज्येष्ठ हि मासा । कृष्णा मावस चन्द्र पूर्ण करि चित्तहुलासा ।।
धन्नालाल बघेरवाल मे गोत्र सुभघर । लघु सुत मै जिनदास लिखी इन्दरगढ निजकर ।
पठनार्थ आत्महित शुद्ध चित्त सदा रहो सुभा भावना । हो भूल सुद्ध करियो तहा मो परि क्षमा रखावना ।

६६८. द्रव्य संग्रह टीका × । पत्र संख्या-५० । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–

सिद्धात । रचना काल — × । लेखन काल-स० १८६३ । पूर्ण । वेप्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—बखतलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६६९. **द्रव्यसंग्रह सटीक** — × । पत्र स० २९ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धात । र. काल × । ले० काल स० १८९१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

६७०. **द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी** । पत्र स० ४३ । आ० १२ × ४½ इञ्च । भाषा — गुजराती । लिपि हिन्दी । विषय —सिद्धात । र० काल — × । ले० काल स १७७० । वेष्टन स० २१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

६७१. **प्रति सं० २** । पत्रस० २३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल स० १७५१ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना, बूदी ।

६७२. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ७२ । लेखन काल स० १७६२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४०९-१५३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोटडियान, डूगरपुर ।

६७३. **द्रव्यसंग्रह भाषा** — × । पत्र सख्या १६ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा -- हिन्दी विषय—सिद्धात । र० काल — × । लेखन काल — × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—गाथाओ के नीचे हिन्दी गद्य मे अनुवाद है—

अन्तिम—सर्वगुन के निधान बडे पडित प्रधान ।
बहु दूषन रहित, गुन भूषण सहित है ।
तिन प्रति विनवन, नेमिचन्द मुनि नाथ ।
सौधियो जु जाको, तुम अर्थ जे अहित है ।
ग्रन्थ द्रव्य सग्रह, सुकीति मे बहुत थोरो ।
मेरी कक्ष बुद्धि अल्प, शास्त्र सोमहित है ।
तातै मै जु यह ग्रथ रचना करी है ।
कुछु गुन गहि लीजो एसी वीनती कहित है ।

६७४. **द्रव्यसग्रह भाषा**— × । पत्र स० २६ । आ० ९×७½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । हिन्दी । विषय --सिद्धात । र० काल × । लेखन काल × । वेष्टन स०६४८ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—गणेशलाल बिन्दायक्या ने स्वय पठनार्थ लिखी थी ।

६७५. **द्रव्यसंग्रह भाषा**— × । पत्र स० ३९ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । ले० काल — × । पूर्ण । वे स ९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६७६. **द्रव्यसंग्रह भाषा** — × । पत्रस० ६१ । आ० १०½ × ६ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल — × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी, कामा ।

६७७. **द्रव्यसग्रह भाषा**— × । पत्रस० २५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । **विषय**—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १७२१ फागुरण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ७७।५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—ब्रह्मगुण सागर ने प्रतिलिपि की थी ।

६७८. **द्रव्यसग्रह भाषा**—× । पत्रस० २० । आ०—१२ × ५½ इञ्च । भाषा— हिन्दी। विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । ले० काल—स० १८२२ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

विशेष—साहिबी पाण्डे ने भरतपुर मे इच्छाराम से प्रतिलिपि कराई ।

६७६. **द्रव्यसंग्रह भाषा** × । पत्रस० १३ । भाषा —हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र०काल–× । ले०काल १६३१ । पूर्ण । वेष्टनस० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

वशेष—मधुपुरी म लिपि की गई थी ।

६८०. **द्रव्यसग्रह भाषा टीका**— **बसीधर** । पत्रस० ५१ । आ० ६¾ × ५¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल स०—१८१८ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर करौली ।

विशेष—पडित लालचद ने करौली मे प्रतिलिपि की थी ।

६८१ **प्रतिसं०** २ । पत्रस० २८ । ले० काल— स० १८६२ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ७०-२० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बड़ा बीस पथी दौसा ।

विशेष– महात्मा गुलाबचद जी ने प्रतिलिपि की थी ।

६८२ **द्रव्यसग्रह भाषा-पं० जयचन्द छाबड़ा** । पत्रस०–१ ५, २०-४५ । आ० ८×६ इञ्च। भाषा --राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय---सिद्धान्त । र०काल स० १८६३ । ले० काल × । वेष्टनस० ६६७ ।अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८३ **प्रतिसं०** २ । पत्रस०— ६४ । । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६८४ **प्रति सं० ३** । पत्रस० १३ । ले० काल × । अपूर्ण वेष्टनस० १० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन, मदिर श्री महावीर बू दी ।

६८५. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० १३ । आ० ६½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**— दिगम्बर जैन मदिर श्री महावीर बू दी ।

६८६. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० १३ । ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बू दी ।

६८७. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ४० । ले०काल सं० १६४५। पूर्ण । वेष्टनसं० १४८ । **प्राप्ति–स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६८८. **प्रतिसं०** ७ । पत्रस० ५० । ले०काल सं० १६५२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६८६. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० ४४ । र०काल × । ले०काल सं० १६४० । पूर्ण । वेष्टनसं० १३२/३३ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा) ।

६६०. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ४७ । ले०काल स० १८७६ कार्तिक दुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा ।

विशेष—मंजराम गोधा वासी गाजी का थाना का टोडाभीम मे आत्मवाचनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६६१. प्रतिसं० १० । पत्रस० ५० । ले०काल स० १८७० । पूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर, अलवर ।

विशेष—जहानाबाद मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६६२. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० ४६ । ले०काल स० १८७६ कार्तिक वदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

६६३. प्रति सं० १२ । पत्रस०—६६ । आ० ८$\frac{3}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

६६४. प्रति सं० १३ । पत्रस०—४७ । ले० काल स० १६८३ पूर्ण । वेष्टनसं०—१६१ (अ) । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर

६६५. प्रतिसं० १४ । पत्रस०—३६ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनस०—३६।२१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

६६६. धर्मचर्चा .... । पत्रसं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनस० ७७ **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६७. धर्मकथा चर्चा × । पत्रसं० २२ । आ० ६ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी प० । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल—स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३५-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—प्रश्नोत्तर के रूपमे चर्चाएं हैं । भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य प० सुखराम के पठनार्थ भीलोडा मे लिखा गया था ।

६६८. नवतत्व गाथा .... । पत्रसं० २४ । आ०—१०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत विषय—नौ तत्वों का वर्णन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि जैन मदिर दीवान जी कामा ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

६६६. प्रति सं० २ । पत्रस० ६ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—बालावबोध हिन्दी टीका सहित है ।

७००. नवतत्व गाथा भाषा—पन्नालाल चौधरी—पत्रस० ४१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल १६३४ । ले० काल स० १६३५ वैशाखबुदी ६ । पूर्ण ।

वेष्टनसं० ३८।१७८ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मंदिर अलवर ।

विशेष—मूलगाथाएं भी दी हुई हैं ।

७०१. नवतत्व प्रकरण—× । पत्रसं० ६ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—नव तत्वों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जीव अजीव आश्रव बंध संवर निर्जरा मोक्ष एवं पुण्य तथा पाप इन नव तत्वों का वर्णन है । इस भण्डार मे ३ प्रतियां और हैं ।

७०२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६ । आ०—११ × ५ इञ्च । ले० स० १७८५ बैशाख बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७०३. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—४४ गाथायें हैं ।

७०४. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ११ । ले०काल—× पूर्ण । वेष्टनसं० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—मूल के नीचे गुजराती गद्य मे उल्था दिया है । मुनि श्री नेमिविमल ने शिव विमल के पठनार्थ इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की थी । इस भण्डार मे चार प्रतियां और है ।

७०५ प्रतिसं० ५ । पत्रस०१० । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १७८–७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । इस भण्डार मे एक प्रति और है ।

७०६. प्रतिसं०६ । पत्रस० ४ । ले० काल स० १७७६ । पूर्ण । वेष्टनस०—१२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

७०७ प्रतिसं० ७ । पत्रस०–८ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल— × । पूर्ण वेष्टनस०—५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खण्डेलवाल उदयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७०८. नवतत्व प्रकरण टीका—टीकाकार पं० भान विजय । पत्रस०—३१ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल स० १७४६ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं०—२१–६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—मूल गथाएं भी दी हुई है ।

७०६. नवतत्व शब्दार्थ— × । पत्रसं०–१६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल सं० १६६८ बैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं०—५१ ।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ— जीवा १ जीवा २ पुन्न ३ पावा ४ श्रव ५ संवरोय ६ निजरणा ७ ।
बंधो ८ मुक्कोय ६ तहानव तत्ता हुनिनायव्वा ।। १ ।।

व्याख्या—साची वस्तुनउ स्वरूप ते तत्व कहिये । ते सम्यगदृष्टिनउ जाण्या चाहियउ । तेह भणी पहिली तेहना नाम लिखियइ छइ । पहिलिउ जीव तत्व बीजउ
अजीव तत्व पुण्य तत्व ३ पाप तत्व ४ आश्रव तत्व ५ सवर तत्व ६ निर्जरा तत्व ७ ।
बध तत्व ८ मोक्ष तत्व ६ तथा ए नव तत्व होहि विवेकीएइ जाणिवा ।

अन्तिम—अनउसप्पिणी अगानापुग्गाल परियट्टो मुणेयव्वो ।
तेणनानिम अद्धा अगागयद्धा अणतुगुणा ।।

व्याख्या—अनत उत्सर्पिणीइ अवसर्पिणी एक पुद्गल परावर्त होइ । मुणेयव्वो कहता जाणिवउ ।
ते पुद्गल परावर्त अतीत कालि अनता अनागत कालि अनतगुणा इहा कहिउ उ पछइ
श्री जिन वचन हुइ ते प्रमाण इनि नव तत्व शब्दार्थ समाप्तः ।

ग्रन्थ स० २७५ । सवत १६६८ वर्षे बैशाख मासे कृष्ण पक्षे प्रतिपदा तिथौ सोमवासरे अर्गलापुर मध्ये फोफलिया गोत्रे सा० रेखा तद्भार्या रायजादी पठनार्थ ।

७१०. नवतत्व सूत्र × । पत्रस० ८ । भाषा—प्राकृत । विषय—नव तत्वो का वर्णन । र० काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस०—६६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

७११. नाम एवं भेद सग्रह—× । पत्रस०—२५ । भाषा —हिन्दी । विषय— सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । वेष्टनस० ४५४ **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७१२. नियलावति सुत्त—× । पत्रस० ३८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा -- प्राकृत विषय—आगम । र०काल × । ले० काल स० १७०१ फागुन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर खंडेलवाल उदयपुर ।

७१३. नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव । पत्रस० १०३ । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५६ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष– स० १६४७ मे भीमराज की वहू ने चढाया था । मूल्य १५ ६४ पैसे ।

७१४. प्रतिसं० २ पत्रस० १६४ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १०३५ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १४२१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७१५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ८३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १७६५ मङ्गसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७१६. नियमसार भाषा– जयचन्द छाबडा । पत्रस० १५३ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल वीर स० २४३८ । ले०काल स० १६६४ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

विशेष—चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७१७. पंचपरावर्त्तन टीका × । पत्रस० ४ । ग्रा० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय–सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३ । **प्राप्तिस्थान**–म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१८. पचपरावर्त्तन वर्णन × । पत्रसं० २ । ग्रा० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय–सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०६५ । **प्राप्ति स्थान**–उपरोक्त मन्दिर ।

७१९. पंचपरावर्त्तन वर्णन × । पत्रसं० ३ । ग्रा० ८$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०६८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७२०. पचपरावर्त्तन स्वरूप × । पत्रसं० ४ । ग्रा० १०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धात । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७२१. पचसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्रस० २० । ग्रा० ११$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल—स० १८३१ । अपूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**–म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२२. प्रति स० २ । पत्रस० ६३ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

७२३. प्रतिस. ३ । पत्रस० १७२ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । ले०काल—स० १७६७ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बून्दी ।

विशेष—जनी नैणसागर ने पांडे खीवसी से जयपुर मे लिखवायी थी । प्रति जीर्ण है ।

७२४. पचसग्रह वृत्ति—सुमतिकीर्ति । पत्रसं० ३७४ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल—स० १६२० भादवा सुदी १० । ले०काल—स० १८१२ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—इसका दूसरा नाम लघु गोम्मटसार टीका है ।

७२५. प्रतिसं० २ । पत्रस० २०५ । ले०काल—स० १७८४ सावन सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस०–२६६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—आगरा मे केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

७२६. पंच ससार स्वरूप निरूपण × । पत्रस० ५ । ग्रा० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल—स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टनस०१७६-७५ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष—स० १६३६ वर्षे आसोज सुदी १२ उपाध्याय श्री नरेन्द्रकीर्त्ति पठनार्थं ब्रह्मदेवदासेन ।

७२७. पंचास्तिकाय-आ० कुन्दकुन्द । पत्रस० ३५ । ग्रा० ६ × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, बैर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७२८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १६ । प्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १६०६ । वेष्टन सं० ५०/१६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है।

७२६. पंचास्तिकाय-कुंदकुंदाचार्य । पत्रसं० १४८ । प्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १७१८ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति अमृतचन्द्राचार्यकृत सस्कृत टीका एव पाण्डे हेमराज कृत हिन्दी टीका सहित है।

श्री रूपचन्द गुरु के प्रसाद थी। पाण्डे श्री हेमराज ने अपनी बुद्धि माफिक लिखित कीना। जे बहुश्रुत हैं ते सवारिकें पढियो ॥६॥ इति पचास्तिकाय ग्रंथ समाप्त । संवत् १७१८ वर्षे चैत सुदी ११ दीतवार रामपुर मध्ये पचास्तिकाय ग्रंथ स्वहस्तेन लिपी कृता पाण्डे सेमेन इदं आत्मपठनार्थं ।

७३०. प्रति सं० २ । पत्रस० ७६ । प्रा० १२× ५ इञ्च । ले०काल स० १५१३ । पूर्ण । वेष्टन-सं० १७५ २४१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । प्रशस्ति—संवत्सरेस्मिन १५१३ वर्षे आश्विन बुदि ७ शुक्रवासरे श्री आदिनाथ चैत्यालये मूलसघे ······ इससे आगे का पत्र नही है ।

७३१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३० । प्रा० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७३२. पञ्चास्तिकाय टीका-टीकाकार-अमृतचन्द्राचार्य । पत्रस० ५० । प्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १५७३ माघ सुदी १३ । वेष्टन स० २८ । दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

७३३. प्रति स० २ । पत्रस० ११५ । ले०काल—स० १७४७ माघ बुदी ६ । वेष्टन स० २६ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—महात्मा विद्याविनोद ने फागी मे लिखा था ।

७३४ प्रति सं० ३ । पत्रस० ४६ । ले०काल स० १५७७ आसोज बुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन स० २२३ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५७७ वर्षे आश्विन बुदि ६ बुधवारे लिखित **तिजारास्थाने** अल्लावलखान राज्यप्रवर्त्तमाने श्रीकाष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीहेमचन्द्र तदाम्नाये अगरवालान्वये मीतल गोत्रे सा० महादास तत्पुत्र सा० धौपाल तेनेद पचास्तिकाय पुस्तक लिखाप्य पडित श्री साधारणाय पठनार्थं दत्त ।

७३५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ७७ । ले०काल स० १६१४ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन-सं० १६६ ।**प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—राजपाटिकाया लिखितोय ग्रंथ·

७३६. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १३७ । आ० १३ × ५ इञ्च । **ले०काल** सवत् १६३२ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कुरुजागलदेश सुवर्णपथ सुभस्थान योगिनीपुर मे अकबर बादशाह के शासनकाल में अग्रवाल जातीय गोयल गोत्रीय साहु चांदण् तथा पुत्र अजराजु ने प्रतिलिपि कराई । लिखितं पाण्डे चद्र हरिचंद पुत्र ·· । प्रशस्ति विस्तृत है । पत्र चूहे काट गये है ।

७३७. पंचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्र । पत्रस० ४१ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । **विषय**—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७३८. पचास्तिकाय टीका— × । पत्रस० ४७ । आ० १० × ४ इञ्च । **भाषा**—सस्कृत । **विषय**—सिद्धान्त । र०काल — × । ले०काल स० १७४८ कार्तिक बुदी ७ पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७४८ वर्षे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे सप्तम्यातिथौ शनिवारे श्री विजय गच्छे श्री भट्टारक श्रीसुमतिसागरसूरि तत् शिष्य मुनि वीरचद लिपीकृत श्रीअकबराबादमध्ये ।

७३९. पंचास्तिकाय टब्बा टीका— × । पत्र स० ३० । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—प्रा० हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० २०३-८४ । **प्राप्ति- स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७४०. पचास्तिकाय बालावबोध —× । पत्र स० १३५ । आ० ८¾ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । अपूर्ण । वेष्टन स० ६-१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४१. पचास्तिकाय भाषा-हीरानंद । पत्रस० १८६ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दीपद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल स० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले०काल—स० १७११ । अपूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच के कितने ही पत्र नही हैं ।

७४२. पचास्तिकाय भाषा-पाण्डे हेमराज । पत्र स० १३८ । भाषा-हिन्दी पद्य । **विषय**—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल —स० १८७४ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४३. प्रति स० २ । पत्र स० १५४ ।ले०काल—स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले०काल—१७२७ कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष—लिखाइतं साह श्री देवीदास लिखत महात्मा दयालदास महाराजा श्री कर्मसिंह जी विजय-राज्ये गढ़ कामावती मध्ये ।

७४५. प्रति सं० ४। पत्र स० १४५ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० २२। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

७४६. प्रतिसं० ५। पत्र स० ११०। आ० १२ $\frac{1}{2}$ × ५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल—स० १६२६ । **पूर्ण** । वेष्टन स० १२२। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर, बयाना ।

७४७. प्रतिसं० ६ । पत्र स०—१३१। आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७४८. प्रति स० ७। पत्र स० ६६ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८/२३ । जैन मन्दिर भादवा (राज०)

७४९. प्रति स० ८ पत्र । स० ६७ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल—स० १९३६ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५०. प्रति स० ९ ।प त्र स० १३६ । आ०१ १$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले०काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५१. प्रति स० १० । पत्र स० १५० । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा - हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४०-६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—अन्तिम दो पत्रो मे ब्रह्म जिनदास कृत शास्त्र पूजा है ।

७५२. प्रति स. ११ । पत्र स० ११० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त ।र०काल— × । ले०काल — स० १७६६ पोष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २४-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

७५३. प्रति स० १२ । पत्र स० १८१ । आ०—१२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल स० १८६२ माघ सुदी १३ पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—धनराज गोधा सुत रामचद ने टोडा मे मालपुरा के लिये प्रतिलिपि करवाई थी ।

७५४. पचास्तिकाय भाषा—बुधजन—पत्र स० ६३ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धात । र० काल स० १८८२ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—दीवान अमरचन्द की प्रेरणा से ग्रथ लिखा गया ।

७५५ । परिकर्माष्टक— पत्र स० १० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल— × । अपूर्ण । **वेष्टन स० ५१७ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—गोम्मटसार की संदृष्टि आदि का वर्णन है ।

७५६. पक्खिय सुत्त — × । पत्र स० ६ । आ० ७½ × ३½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । **विषय**—आगम । र०काल × । ले०काल—स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टन स० २८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६५५ वर्षे श्रावण बुदि द्वितीयाया सोमवासरे श्रीवृहत्खरतरगच्छे शृ गारहार श्रीमज्जिनसिंहसूरि राजेश्वराणां शिष्य कवि लालचन्द पठनार्थं लिखित श्री लाभपुर महानगरे । इसके आगे श्री जिनपद्मसूरि का पार्श्वनाथ स्तवन (सस्कृत) भी लिखा हुआ है ।

७५७. प्रतिसं० २ । पत्र स १५ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७५८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ८ । आ० ११×४½ इञ्च । **ले०काल**—सं० १६५५ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसी भण्डार मे इसकी एक प्रति और है ।

७५९. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २ से ५ । आ० ८½ × ५ इञ्च । **ले०काल** — × । **अपूर्ण** । वेष्टनस० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है । लिपीकृत जती कल्याणेन विजय गच्छे महिमा पुरे मकसूसावादमध्ये ।

७६०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १८ । आ० ११×४¾ इञ्च । **ले०काल** — × । पूर्ण । **वेष्टनस०** १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना ।

विशेष – १०वें पत्र मे साधु अतिक्षार एवं २४वें तीर्थंकर दिया हुआ है ।

७६१. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ६ । आ०१०½ × ४½ इञ्च । **ले०काल**—स० १५६५ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी)

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत १५६५ वर्षे कार्तिक सुदी १४ सोमवासरे श्रीयोगिनीपुरे । श्रीखरतर गच्छ । श्री उहेम निधान तत्पहे श्री श्रीपाल तत्पहे श्री श्री मेदि ऋषि मुनि तत् शिष्य महासती रूप सुन्दरी तथा गुण सुन्दरी पठिनार्थं कर्मक्षय निमित्त । लिखित विशून ।

७६२. पारखी सूत्र—× । पत्रस० १४ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । **विषय**—(चिंतन) । र०काल — × । **ले०काल** — × । **अपूर्ण** । वेष्टनस० २५६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नही है । प्रति प्राचीन है ।

७६३. प्रज्ञापना सूत्र (उपांग) — × । **पत्रस०** ५४१ । **आ०** १०½×४½ इञ्च । **भाषा**—प्राकृत । विषय—आगम ग्रन्थ । र०काल — × । ले०काल — स० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४–२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—मलयागिरि सूरि विरचित सस्कृत टीका के अनुसार टव्वा टीका है। प० जीवविजय ने गुजराती भाषा टीका की है। टीकाकाल स० १७८४।

७६४. प्रश्नमाला — × । पत्रस० २१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल— × । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टनस० १४४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सुदृष्टि तरंगिणी आदि ग्रन्थों मे से सग्रह किया गया है।

७६५. प्रतिसं० २ । पत्रस० २८ । आ० १२¾×६½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर फतेहपुर (सीकर)

७६६. प्रश्नमाला वचनिका— × । पत्रस०—२८ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल —सं० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति—स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी (नेमिनाथ) बूदी ।

७६७. प्रश्नव्याकरण सूत्र — × । पत्रस० ५१ । भाषा—प्राकृत । विषय-आगम । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६८. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टव्वा टीका सहित है ।

७७९. प्रश्नव्याकरण सूत्र वृत्ति—अभयदेव गणि । पत्रस० ११६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष— *श्री सर्वग्रहविहारिणि श्रुतनिधि चारित्रचूडामणि प्रशिष्येणाभयदेवाख्यसूरिणा विवृति* कृता प्रश्नव्याकरणागस्य श्रुत भक्तया समासता निवृत्ति कुलनभसुन चन्द्रद्रोणाख्यसूरि मुख्येन'' पडित गणेन गुणावतप्रियेया न गुणवतप्रियेना सशोधिना वय ।

७७०. प्रश्नशतक—जिनवल्लभसूरि । पत्रस० ४७ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**—चर्चा । र०काल × । ले०काल स०१७१४ अषाढ़ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति - स० १७१४ वर्षे अषाढ सुदी २ शुक्रवासरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री सरोजपुर नगरे भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति देवस्य शिष्य गुणदासेन इद पुस्तक लिखित ।

७७१. प्रश्नोत्तरमाला — × । पत्रस० ५३ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा- हिन्दी । **विषय**—चर्चा । र०काल × । ले०काल—स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर फतेपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—सुदृष्टितरङ्गिणि के आधार पर है ।

७७२. प्रति सं० २ । पत्रस० ३८ । आ० १०¾×५½ इञ्च । ले०काल —स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मंदिर ।

७७३. प्रश्नोत्तररत्नमाला अमोघवर्ष । पत्रसं० २ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले०काल-स० १७८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७७४. प्रश्नोत्तरी—× । पत्रस० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६३-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर ।

७७५. बासठ मार्गणा बोल । पत्रस० ४ से ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल× ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७६. बियालीस ढाणी—× । पत्रस० २३ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-सिद्धात चर्चा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान** - पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, टोडारायसिंह (टोंक)

७७७. बधतत्व—देवेन्द्रसूरि । पत्रस० ३ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात (बध) । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७८. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७२६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७७९. भगवती सूत्र × । पत्रस० ६६० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल—स० १९१४ कार्तिक सुदी १० । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७८०. भगवती सूत्र वृत्ति—× । पत्रस० ३५-५२२ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रारम्भ के ३४ तथा ५२२ से आगे पत्र नही हैं ।

७८१. भावत्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्रस० ३३५ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा - प्राकृत । विषय - सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

७८२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७८३. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७८४. प्रतिसं० ४ । पत्रसं १४३ । ले०काल स० १७२६ । पूर्ण । वेष्टन स ८३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७८५. भावसग्रह-श्रुतमुनि । पत्रस० १३ । आ० ११½ × ४¾ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल — × । लिपिकाल—स० १७३४ । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर ।

विशेष – अबावती कोट मे साह श्री बिहारीदास ने महात्मा डू गरसी की प्रेरणा से प्रतिलिपि की थी।

७८६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६८ । लिपिकाल स० १७८७ माह बुदी ५ । **वेष्टनसं० १८** । **प्राप्ति स्थान** – उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष केशूरिण नगर मे दुर्जनशाल के राज्य मे लिखा गया था । त्रिभंगीसार भी इसका नाम है ।

७८७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५-५१ । आ० १२½ × ५ इञ्च । लिपि काल० स० १६३७ आषाढ बुदि १२ । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७८८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४६ । ले०काल सं० १७४७ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस०—२१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७८९. मार्गरणासत्तात्रिभंगी-नेमिचन्द्राचार्य—पत्रस० १७ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । र०काल — × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६, २०१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—तीन प्रतिया और हैं । जिनके वेप्टन स० १००,२०२, १०१/२०३ एव १०२, २०४ है ।

७९०. मार्गरणास्वरूप— × । पत्रस० ६१ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस०—२५८ । **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

७९१. रत्नकोश – × । पत्रस० १२ । आ० १२ × ४ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४४७ । २८१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन समवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

प्रारभ —

जयति रणधवलदेव मकलकलकेलिकोविद :
कुशलविचित्रवस्तुविज्ञान रत्नकोषमुदाहृत ।

७९२. रयणसार-कुदकुदाचार्य । पत्रस० ११ । आ०—११ × ५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल– × । ले० काल– × । पूर्ण । वेष्टनस० १२५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७९३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ११ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७९४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४-६ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६६-६ । **प्राप्ति स्थान**— दिगम्बर जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

७६५. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ११ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । लेखकाल सं० १८२१ भादवा बुदी ७ । वेष्टनसं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—पं० चोखचद के शिष्य सुखराम ने नैणसागर तपागच्छी से जयपुर मे आदीश्वर जिनालय मे प्रतिलिपि करायी थी ।

७६६. लघु संग्रहणी सूत्र । पत्रस० ४ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष-- मूल गाथाओ के नीचे हिन्दी मे टीका है ।

७६७. लघुक्षेत्रसमासविवरण रत्नशेखर सूरि । पत्रस० ६१ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १५३२ सावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष —प्रति मलयगिरि कृत टीका सहित है । कुल २६४ गाथाएं हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १५३२ सवत्सर प्रवर्त्तमाने श्रावण बदि पचम्या शनौ अद्येह श्रीपत्तनवास्तव्या दीसावाल ज्ञातीय म० देवदासेन लिखित । श्री नागेन्द्रगच्छे प० जिनदत्त मुनि गृहीता ।

७६८. लब्धिसार भाषा वचनिका-पं० टोडरमल । पत्र स. १८४ । आ० १०×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढ ढारी) गद्य । विषय—सिद्धात । र० काल × । ले० काल । × । पूर्ण । वे० स० १५६१ । **प्राप्ति स्थान**—भा० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० १५ । आ० १५ × ७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

८००. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १६६ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान (बूंदी) ।

८०१. प्रति सं० ४ । पत्र स० २२७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर उदयपुर ।

८०२. लब्धिसार क्षपणासार भाषा वचनिका-पं० टोडरमल । पत्र स० ३३२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढ ढारी) गद्य । विषय-सिद्धात । र० काल स० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल—स० १८८६ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६६ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२७ । ले० काल स० १८७४ सावन बदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—अन्तिम दो पृष्ठो पर गोम्मटसार पूजा सस्कृत मे भी है ।

८०४ प्रति सं० ३ । पत्र स० २५४ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन० मन्दिर तरहपथी दौसा ।

विशेष—नानूलाल तेरापंथी ने प्रतिलिपि कराई थी ।

८०५. विचारसंग्रहणी वृत्ति— × । पत्रसं० २४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—आगम । र० काल सं० १६०० । ले० काल स० १७१२ पूर्ण । वेष्टन सं० ४६३ × । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूंगरपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टव्वा टीका सहित है । टीका काल स० १६६३ है ।

८०६. विपाक सूत्र— × पत्रस० ३० से ४६ । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र०काल-× । **ले०काल**— × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५२ । दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८०७. विशेषसत्ता त्रिभगी-नेमिचन्द्राचार्य । पत्रस० ५-३७ तक । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

८०८. प्रति स० २ । पत्रस० ३० । ले०काल स० १६०६ ज्येष्ट बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० / १२४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० शुभचन्द्रदेवा त० भ० जिनचंद्र देवा त. भ सिद्धकीर्त्ति त. भ. श्री धर्मकीर्त्ति तदाम्नाये बाई महासिरि ने लिखवाया था ।

८०९. शतश्लोकी टीका-त्रिमल्ल । पत्रस० १० । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १८६४ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना ।

विशेष— प० रत्नसौभाग्येन चिरदेवेन्द्रविमल वाचनार्थ सदा १८६४ वर्षे ज्येष्ठ कृष्णा ७ गुरुधमे महाराजा जी शिवदानसिंह जी विजयराज्ये ।

८१०. श्लोकवार्तिक—विद्यानंदि । पत्र स० ३१६ । आ० ११¾ × ४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १७२० । पूर्ण । वेष्टन स० १८० ७ । दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष -प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७२० वर्षे कातिकमासे कृष्णपक्षे पचम्या रविदिने श्री मूलसघो सरस्वतीगच्छे बलात्कार गणे भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक-कोहिम कदायप्तमान भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्र तत्शिष्य पंडित कुशला लिखित बूदी नगरे अभिनन्दन चैत्यालय तत्वार्थ टीका समाप्त ।

८११. श्लोकवार्तिकालंकार । पत्र स० ७ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७६/२१० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

८१२. सत्तात्रिभगी —आ० नेमिचन्द्र । पत्र स० ४० । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । र०काल × । ले०काल स० १८७० पूर्ण । वेष्टन सं० ४३५-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—हिन्दी गद्य में अर्थ दिया हुआ है । मार्गणाओं के चित्र भी दिये हुये हैं ।

८१३. सत्तास्वरूप—× । पत्र स० ४३ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धांत । र०काल × । ले०काल स० १६३३ कार्तिक सुदी ५ पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८१४. प्रतिसं० २ । पत्र स० १८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

८१५. सप्ततिका × । पत्र स० ३०-३६ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर । इति कर्मग्रन्थ षटक सूत्र समाप्त ।

८१६. सप्तपदार्थ वृत्ति × । पत्र स० २६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-सिद्धात । र०काल—× । ले०काल स० १५४१ आसोज बुदी ११ । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—रत्नशेखर ने स्वय के पठनार्थ लिखी थी ।

८१७. सप्तपदार्थी टीका—भावविद्येश्वर । पत्र स० ३७ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष—इति भावविद्येश्वर रचिता चमत्कार · ··· नाम सप्तपदार्थी टीका ।

८१८. समयभूषण—इन्द्रनदि । पत्र स० ३ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ ४३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—इति श्री मदिन्द्रनद्याचार्य विरचितो नाम समयभूषणापरपेय ग्रन्थ ।

८१९. समवायांग सूत्र । पत्र स० ७७ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ८६ ४१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८२०. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद । पत्रस०—१८० । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय -सिद्धान्त । र०काल— । ले० काल स १८३१ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०—८६ । **प्राप्ति स्थान**- भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष अजमेर मे भट्टारक श्री त्रिलोकेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

८२१. प्रतिसं० २ । पत्रस०—१ से १६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०--११३२ । **प्राप्ति स्थान**--उपरोक्त मन्दिर ।

८२२. प्रतिसं० ३ । पत्रस०—४ से १०८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०—१०३८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८२३. प्रतिसं० ४ । पत्रस०—२१२ । ले० काल सं० १७४५ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं०—१७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

८२४. प्रति सं० ५ । पत्रस०–१८५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०—६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

८२५. प्रति सं० ६ । पत्रसं०—१६६ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ । ले० काल—स० १७७६ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स०—३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—हिण्डौन में प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

८२६. प्रतिसं० ७ । पत्रस०—२१६ । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{2}$ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०–६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

८२७. प्रतिसं०८ । पत्रस० १११ । आ० १०$\frac{1}{4}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल म०—१६८० कार्तिक बदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १८० । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर पचायती करौली ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

८२८. प्रतिसं० ९ । पत्रस०—१५४ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल–१६७० पौष सुदी ६ ।पूर्ण । वेष्टन स० ६/१२ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर सौगाणियो का करौली ।

८२९. प्रतिसं० १० । पत्रस० ३८–२०७ । ले०काल स० १३७० पौष बुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन स० १०१–१० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रत्येक पत्र मे १० पक्ति एव प्रति पक्ति मे ३१ – ३४ अक्षर है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सवत १३७० पौष बुदी १० गुरुवासरे श्री योगिनीपुरस्थितेन साधु श्री नारायण सुत भीम सुत श्रावक देवधरेण स्वपठनार्थं तत्त्वार्थवृत्ति पुस्तक लिखापित । लिखित गौडान्वय कायस्थ प० गधर्व पुत्र बाहडदेवेन ।

लिप्पदीक्षित चित्तचड्डविहगा, पचाप्यक्षकृत्यानका ।
त्यागव्वस्तसमस्तकिल्विषविषा, शास्त्रा बुधे पारगा ।
हेलोन्मूलितकर्म्मकर्दनिचया कारुण्य पुण्याशया ।
योगीन्द्रा भयभीमदैत्यदलना कुर्वन्तु वो मगल ॥
लेखक पाठयो शुभ भवतु । इसके पश्चात दूसरी कलम से निम्न प्रशस्ति और दी हुई है

श्रीमूलसघे भ० श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्री भुवनकीर्तिदेवा तच्छी श्री गौतमश्री पठनार्थ शुभ भवतु ।

८३०. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १७० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का नैनवा ।

विशेष—स० १६६३ आसोज सुदी ४ कोटडिया का मन्दिर मे ग्रन्थ चढाया ।

८३१. सर्वार्थसिद्धि भाषा—पं० जयचन्द । पत्रस० २९६ । आ० १३ × ७ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल स० १८६१ चैत्र सुदी ५ । ले०काल सवत् १८६६ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६६ (क) । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२ प्रतिसं० २ । पत्र स० २६४ । र० काल स० १८९० । पूर्ण । वे० स० ५३४ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष लालसिंह बडजात्या ने लिखवायी थी ।

८३३. प्रतिसं० ३ । पत्र सख्या—३१३ । लेखन काल स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल कामावाले ने लिखवाया था ।

८३४. प्रति सं. ४ । पत्र स २८३ । ले०काल — X । पूर्ण । वे०स० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८३५. प्रति सं. ५ । पत्र स० ४७२ । ले० काल स० १८३४ सावरण बुदी १२ । पूर्ण । वे स०—८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८३६. सारसमुच्चय—कुलभद्राचार्य । पत्र स० १८ । भाषा—सस्कृत । । विषय—सिद्धान्त । र०काल —X । ले० काल स० १८०२ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० २८८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३७. सिद्धांतसार - जिनचन्द्राचार्य । पत्रस० ८ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल X । ले०काल स० १५२४ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । **वेष्टनस० १६** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—साभर मे प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

८३८. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८ । आ० ८ × ३½ इञ्च । **ले०काल** स० १५२५ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

विशेष—केवल प्रशस्ति अपूर्ण है ।

८३९. प्रति स ३ । पत्र स० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १५२५ । पूर्ण । वे० स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—स० १५२५ वर्षे श्रावण सुदी १३ श्री मूलसघे भ० श्री जिन चन्द्रदेवा बील्ही लिखापित ।

८४० प्रति स० ४ । पत्र स० १२ । आ० ८¾ × ३½ इञ्च । लेखन काल स० १५२४ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष फागी ग्राम प्रतिलिपि हुई थी ।

८४१. प्रति सं. ५ । पत्र स० ६ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष कही कही सस्कृत मे टिप्पणी भी हैं ।

८४२. सिद्धान्तसार दीपक—भ० सकलकीर्ति । पत्रस० १२५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल X । **ले०काल** स० १८१५ चैत सुदी १५ । पूर्ण । **वेष्टनस०**—१०२३ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

८४३. प्रति स० २ । पत्रस० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४४. प्रति स० ३ । पत्र स०— १२–१५१ । श्रा० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४५. प्रति स० ४ । पत्रसं०—१६० । श्रा० ६ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८४८ आषाढ सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रारम्भ के ८१ पत्र वेष्टन स० २२१ मे है ।

८४६. प्रति स० ५ । पत्रस०—१-४५,१६६ । ले० काल—१८२३ माघ बदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन स० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

८४७. प्रति स० ६ । पत्रस०—५२ से १५७ । ले० काल - × । अपूर्ण । वेष्टन स० २-६४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४८. प्रति स० ७ । पत्र स०—२३१ । ले० काल स० १७६० आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जिहानाबाद मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८४९. प्रति स० ८ । पत्र स० १६० । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

८५०. प्रति स० ९ । पत्र स० १३६ । ले० काल—१८१७ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स०-६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प० जीवनराम ने फतेहपुर मे रामगोपाल ब्राह्मण मौजपुर वाले से प्रतिलिपि कराई थी ।

८५१ प्रतिसं० १० । पत्र स० ८२ । ले० काल स० १७२८ चैत्र बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८५२. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ३–१६४ । श्रा० १०×६½ इञ्च । ले० काल – × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

८५३. प्रतिसं० १२ । पत्र स० २५७ । ले० काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—श्लोक स ५५०० ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—मिति पोष सुदी ६ नौमी शुक्रवासरे लिपिकृत आचार्य विजय चि० सदासुख चौवे रूपचन्द को बाई खुशाल्या मिति पौष सुदी ६ सम्वत् १८८३ का नन्दग्राम नगर हाडा राज्ये महारावजी श्री उम्मेदस्यघजी राज्ये एकमार भाला गोत्रे राज्य जालिमस्यघ जी पडितजी श्रीलाल जी नानाजी तत् स भौसा गोत्रे साहजी श्री हीरानन्दजी त| पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्ति कुल उधारणीक खुस्यालचन्द जी भार्या कस्तूम्भलदे तत पुत्र शाहजी श्री धर्ममूर्ति कुल उधारणीक साह छाजुरामजी भार्या छाजादे बाई चन्द्रा शास्त्र घटापित । शास्त्र जी दीन्हू पुण्य अर्थ ।

८५४. प्रति सं० १३ । पत्र स० १६६ । ले० काल स० १७६४ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष – सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८५५. प्रति सं० १४ । पत्र स० ३४६ । आ० $10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ । ले० काल स० १७८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८५६. प्रति सं० १५ । पत्र स० २-२२६ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल—१७५४ मगसिर सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है । धर्मपुरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८५७. प्रति स० १६ । पत्र स० १४० । आ० $13 \times 6\frac{1}{2}$ । ले० काल स० १९१६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा ।

विशेष—स० १९२८ मे चन्द्रलाल वैद ने चढाया था ।

८५८. प्रति स १७ । पत्र स० २७१ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८८५ सावन सुदी २ पूर्ण वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी ।

विशेष—श्री भाग्यविमलजी तत् शिष्य प० मोतीविमलजी तत् शिष्य प० देवेन्द्रविमलजी तत् शिष्य सुखविमलेन लिपि कृत ।

८५९. प्रति सं० १८ । पत्र स० ११३ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल — × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

८६०. सिद्धांत सारदीपक—नथमल बिलाला । पत्र स० ३७८ । आ० $12 \times 6\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धात । र०काल स० १८२४ माह सुदी ? । ले० काल स० १८६४ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

८६१. प्रति सं० २ । पत्र स० ३४६ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—२०१ तथा २०२ का पत्र नही है ।

८६२. प्रति स० ३ । पत्र स० २०६ । ले०काल— । पूर्ण । वेष्टन स० ५६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८६३. प्रति सं० ४ । पत्र स० २६६ । ले० काल स० १८७७ । फागुण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल के पुत्र उमरावसिंह व पौत्र लालजीमल वासी कामा ने लिखवाया था ।

८६४. प्रति सं० ५ । पत्र स० १५८ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

८६५. प्रति सं० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति**

स्थान - दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

८६६. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३०६ । ले० काल स० १८२५ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—२ प्रतियो के मिले हुए पत्र है । प्रथम प्रति के २६८ तक तथा दूसरी प्रति के २६१ से ३०६ तक है ।

८६७. प्रतिसं० ८ । पत्रस० २३७ । आ० १   ४ इन्च । **ले०काल** स० १६२१ चैत सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—स० १६३२ मे इस ग्रन्थ को मंदिर मे चढाया गया था ।

८६८. प्रति सं० ६ । पत्रस० २११ । आ० ११   ५ इन्च । **ले०काल** स० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

८६९. प्रति सं० १० । पत्र स० १३१ । आ० १२ × ६½ इन्च । **ले०काल**   । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करोली ।

८७०. प्रति स० ११ । पत्र स० २२३ । आ० १३ × ५½ इन्च । **ले०काल** स० १८६८ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

८७१. प्रति सं० १२ । पत्र स० २६५ । आ० ११ × ५ इन्च । ले०काल स० १८८८ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियो का मालपुरा (टोंक)

८७२. प्रति स० १३ । पत्र स० १४३ । आ० १३½ × ६½ इन्च । ले०काल स० १८८५ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पचायती राजमहल (टोंक)

विशेष—महात्मा स्यभुराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की ।

८७३. प्रति सं० १४ । पत्र स० २११ । आ० ११ × ६½ इन्च । ले०काल स० १८८३ । पूर्ण वेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

८७४. प्रति स १५ । पत्र स० १७६ । आ० १३½ × ४½ इन्च । ले०काल स० १-७२ फागुन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर महावीर स्वामी बूंदी ।

८७५. प्रति सं० १६ । पत्र स० २७२ । आ० १२ × ६ इन्च । ले०काल स० १८७० कार्ती सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८-११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—इन्दरगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८७६. प्रति सं० १७ । पत्र स० १२१ । आ० ११ × ५ इन्च । ले०काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूगरपुर ।

८७७. प्रति सं० १८ । पत्र स० २३६ । आ० ११ × ७ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बीसपथी दौसा ।

८७८. प्रतिसं० १९ । पत्र स० १८७ । आ० ११ × ७½ इन्च । **ले०काल** स० १८६४ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६-३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—श्री गोरीबाई ने पन्नालाल चुन्नीलाल साह से प्रतिलिपि करवाई थी ।

८७६. प्रतिसं० २० । पत्र सं० २०६ । आ० ११×७½ इञ्च । **ले०काल** सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर, भादवा ।

८८०. प्रतिसं० २१ । पत्र सं० १७७ । आ० १३×६ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी नेमिनाथजी बूंदी ।

८८१. सिद्धांतसागरप्रदीप × । पत्रसं० १२६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय – सिद्धान्त । र०काल × ले०काल – सं० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियान डूंगरपुर ।

८८२. सिद्धांतसार संग्रह—नरेन्द्रसेन । पत्रसं० २६७ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय – सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल सं० १९३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

८८३. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ७८ । आ० १० ×६½ इञ्च । **ले०काल** सं० १८२२ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष - महारोठ नगर में राठौड़ वंशाधिपति महाराजाधिराज महाराजा श्री विजयसिंहजी के शासनकाल में रूपचन्द्र पाण्ड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

८८४. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १०२ । आ० १२ ×६ इञ्च । **ले०काल** सं० १८०६ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जिहानाबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

८८५. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ५ । आ० १०¾×४½ । र०काल × । ले०काल । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

८८६. सूत्र प्राकृत - कुंदकुंदाचार्य । पत्र सं० ६ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र०काल । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

८८७. सूत्र सिद्धांत चौपई । पत्र सं० १० । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल— । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

८८८. सूत्र स्थान × । पत्र सं० १३२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी नेमिनाथ बूंदी ।

८८९. संग्रहणी सूत्र— × । पत्र सं० ६१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले० काल सं० १७७७ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

८६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल स० १७७१ । पूर्ण । वे० स० १७१-४६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ ।

विशेष—सवत् १७७१ वर्षे माह बुदी ८ दिने लिपीकृत कौटडामध्ये ।

८६१. सग्रहणी सूत्र—मल्लिषेण सूरि । पत्र स० १२ । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८-४४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६५७ वर्षे आसौज बुदी १४ दिने शनिवासरे श्री मागलउर नगरे वाणारसि श्री नयरग गणि तत् शिष्य जती तेजा तत् शिष्य जती व्रासण लिखित ।

८६२. प्रति सं० २ । पत्र स० ३१ । आ० ८×३½ इञ्च । ले० काल स० १६०१ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

सवत् १६०१ वर्षे भाद्रपद बुदी ७ शनौ भट्टारक श्री कमलसेन पठनार्थं लिखित सम्मत श्री बहोडा नगरे ।

८६३. संग्रहणी सूत्र—देवभद्र सूरि । पत्र स० २६ । आ०-१०×४ इञ्च । भाषा— प्राकृत । **विषय**—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल स० १७०७ । अपूर्ण । वे० स० २६६ । **प्राप्तिस्थान** - दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—संस्कृत मे चूर्णि सहित है ।

८६४. सग्रहणी सूत्र— × । पत्र स० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा पुरानी हिन्दी । **विषय**—आगम । र० काल × । ले० काल स० १७०६ । । वे० स० ६०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—सवत् १७०६ वर्षे आषाढ मासे शुक्ल पक्षे १ दिने मेदवरे श्रीपांचपुरे मतिकीर्ति रलिखित्यति ।

८६५. प्रति सं० २ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १७१३ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी)

८६६. सग्रहणी सूत्र भाषा—दयासिंह गणि । पत्र स० ४७ । आ० १०×४½ इञ्च । **भाषा**—प्राकृत हिन्दी । विषय—आगम । र०काल × । ले० काल स० १४४७ सावण सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष— बीयाइ सुयपरेसु इगहीणाऊ हु तिपनीउ ।
सत्तमि महिपयरे दिमि इक्कक्के विदिसिनार्ण्य ।। ८८

बीया कहता बीजइ प्रतरह । पत्तई २ एके कउ उद्धउ करण । सातमइ नरकइ उगणचास मइ प्रतरइ दिसइ एकेकउ नरकावास उद्धइ । विदसाइ एकइ नरकावास उ नही ।।८८।।

समाप्ति—सवत् १४६७ द्वितीय सावण सुदी चउदसि शुक्रवार तिणइ दिवसइ तपागच्छ

नायक भट्टारक श्री रत्नसिंहसूरि नइं शिष्यदइं पंडित याहेमगणइ ए बालावबोध रच्चउ सबसौख्य मांगलिक्य नइ अर्थइ हुवउ ।

८९७. संघयण सूत्र— × । पत्र सं० १२ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बून्दी ।

विशेष—गणि श्री जीव विजयग णि शिष्यणि गत जी विजयेन लिखित मुनि जसविजय पठनार्थं ।

विषय – धर्म एवं आचार शास्त्र

८६८. **अर्चानिर्णय**— × । पत्र स० २५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय–चर्चा । र०काल × । ले० काल स० १६१८ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—त्रेसठशलाका पुरुषो की चर्चा है ।

८६९ **अतिचारवर्णन**—पत्र स० २ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र० काल—× । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

९०० **अनगारधर्मामृत— प० आशाधर** । पत्र स० २२–२८७ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम यत्याचार भी है । इसमे मुनि धर्म का वर्णन है प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

९०१ **प्रतिसं०** २ । पत्र स० २२४ । आ० १०½ × ४ इञ्च । र० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२२४ से आगे पत्र नही है । प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

९०२ **अनित्यपचाशत – त्रिभुवनचद** । पत्र स० ८ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—मूलकर्त्ता पद्मनदि है ।

९०३ **अमितिगति श्रावकाचार भाषा—भागचद** । पत्र स० १८७ । आ० १६ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय आचार शास्त्र । र०काल स० १९१२ आषाढ सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नागदी, बूदी ।

९०४ **प्रति स० २** । पत्र स० २०१ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १९८१ । पौष बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मदिर फतहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

९०५. **अर्हन् प्रवचन**— × । पत्र स० ६ । आ० – ११½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६०६, अष्टाह्निका व्याख्यान—हृदयराम । पत्र स० ११ । भाषा —सस्कृत । विषय —धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६०७ अहिंसाधर्म महात्म्य— × । पत्र स० ८ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**—धर्म । र०काल × । ले० काल स० १८८१ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १४६१ । **प्राप्ति स्थान**- भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६०८ आचारसार–वीरनन्दि । पत्र स० ६१ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८२३ आषाढ सुदी १। पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान** - भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६०६. प्रति स० २ । पत्र स० १२६ । आ० ११ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १५६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

६१०. आचारसार वचनिका – पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ६० । आ० १४ × ८½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल स १६३४ वैशाख बुदी ६ । ले० काल स० १६७७ माघ वदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प० हीरालाल ने बाबू वेद भास्कर जी जैन आगरा निवासी द्वारा बाबूलाल हाथरस वालो से प्रतिलिपि कराई ।

६११. आचार्यगुणवर्णन - × । पत्रस० ३ । **भाषा**—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६१२. आराधना प्रतिबोधसार–सकलकीर्ति - पत्रस० ३ । भाषा--हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६१, २४८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष अ तिम भाग निम्न प्रकार है—

> जय मणइ सुणइ नर नार ने जाइ भवनइ पारि ।
> श्री सकलकीर्ति कहि सुविचारि आराधना प्रतिबोधसार ।।
> इति आराधनासार समाप्त । दीक्षित वेणीदास लिखित ।

६१३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । आ० ६×५ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस०३३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल— × पूर्ण । **वेष्टनस०** २८३–१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६१५. आराधनासार—देवसेन । पत्रस० ३-७६ । आ० १२ × ४ इञ्च भाषा—प्राकृत । **विषय**—धर्म । र०काल— × । ले०काल — × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ३१६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नही हैं। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

९१५.(क) प्रतिसं० २। पत्रस० ११। आ० ११ × ५ इञ्च। ले०काल— ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १०/३२५। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

९१६. आराधनासार—अमितिगति। पत्रसं० २-६६। आ० १० × ४½ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र० काल— ×। ले०काल— स० १५३७ श्रावण बुदी ८। अपूर्ण। वेष्टनसं० १४६६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

९१७. आराधना— ×। पत्रस० ६। आ० ६ × ४ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल— ×। ले०काल — ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

९१८. आराधनासार भाषा टीका— ×। पत्रस० २१। आ० १० × ६½ इच। भाषा—प्राकृत-हिन्दी (गद्य)। विषय—आचार शास्त्र। र०काल स० १९२१। ले०काल—स० १९५३ श्रावण मुदी १५। पूर्ण। वेष्टनस० १६७/६३. **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ कोटा।

९१९. आराधनासार टीका—×। पत्रसं० ३८। आ० ११ × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल— ×। ले०काल—स० १६३२। पूर्ण। वेष्टनस० ११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

९२०. आराधनासार टीका—नदिगणि। पत्रस० ८०३। आ० ११ × ४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र० काल ×। ले०काल ।पूर्ण। वेष्टनस० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है। प्रशस्ति पूर्ण नही है।

९२१. आराधनासार टीका—प० जिनदास गगवाल। पत्रस० ६५। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—आचार शास्त्र। र०काल स० १८३०। ले०काल—स० १८६० चैत मुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० ३७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)।

९२२ प्रतिसं० २। पत्रस० १०६। आ० ११ ६ इञ्च। ले०काल स० १८३१ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० ३३४। **प्राप्तिस्थान** - दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा।

विशेष—भानपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

९२३. आराधनासार भाषा-दुलीचन्द। पत्रस० २५। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। रचना काल २० वी शताब्दी। ले०काल— ×। पूर्ण। वष्टन स० ४३६। **प्राप्ति-स्थान**- दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—स० १९४० मे भरतपुर मन्दिर मे चढाया गया था।

९२४. आराधनासार वचनिका—पन्नालाल चौधरी। पत्रस० ३०। आ० १२½ × ४½ इञ्च। *भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—आचार शास्त्र। र० काल स० १९३१ चैत बुदी ६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८/१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, भादवा (राज०)।*

६२५. आराधना पंजिका—देवकीर्त्ति । पत्र स० १७८ । आ० १२ × ५ । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल स० १७८० पौष सुदी ६ । वेष्टन स ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म० लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सूरत बन्दरगाह के तट पर बद्रीदास ने लिखा था ।

६२६. आराधनासूत्र--सोमसूरि । पत्रस० ३ । आ० ६¾×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लिखत तिलकसुन्दरगणि ।

६२७. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १२ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७८८ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ५४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—६६ गाथाएं है । प्रति टब्बा टीका सहित है ।

६२८ प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२६ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—स० १६४८ वर्षे वैशाख सुदी १३ भृगुवारे लिखिता मु० हसम्तेन सुश्राविका सवीरा पठनार्थ ।

६२९. आसादना कोश ······ । पत्र स० १५ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय आधार शास्त्र । र०काल । ले० काल × । वे० स० ६३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६३०. इक्कावन सूत्र— × । पत्र स० २८ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा--हिन्दी । विषय धर्म । र०काल स० १९८० चैत्र बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेज—धर्म का ५१ सूत्रो मे वर्णन किया गया है

६३१. इन्द्रमहोत्सव-- × । पत्र स० ४ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—भगवान के जन्मोत्सव पर ५६ कुमारी देवियां आदि के आने को वर्णन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३२. इष्ट छत्तीसी—बुधजन । पत्र स० २ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ६५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६३३. प्रतिसं० २ । पत्र स० २ । आ० १०×५½ इञ्च । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ, (कोटा)

६३४. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्र स० २-२७ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा —सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स ६१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६३५. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६ । आ० १२×७ इञ्च । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४-१३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—प० तिलोक ने बून्दी मे प्रतिलिपि की थी । कही २ संस्कृत मे कठिन शब्दो के अर्थ भी दिए हुए है ।

६३६. उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण । पत्र स० ६७ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय -आचार शास्त्र । र० काल स० १६२७ श्रावण सुदी ६ । ले० काल स० १८३१ सावण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३७. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४२ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १६७४ भादवा सुदी ६ । वेष्टन स० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३८. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १४४ । ले० काल स० १६८६ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३९. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १२६ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स० २९४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जोबनेर के मन्दिर जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६४०. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १०५ से १७० । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८४३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूदी ।

विशेष—प० जिनदास के लिये लिखी गई थी ।

६४१. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १२४ । आ० ९½×६ इञ्च । ले० काल स० १८५५ पोष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—खडारि मे प० सदासुख ने प्रतिलिपि की थी ।

६४२. प्रति सं० ७ । पत्रस० २१६ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८९६ ज्येष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी)

विशेष—विमल ने इन्द्रगढ़ मे शिवसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि की थी ।

६४३ प्रतिसं० ८ । पत्रस० ७९ । आ० १२×६½ इञ्च । ले० काल स० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५-३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—स० १८७१ आसोज सुदी १३ बुधवासरे लिखित भरतपुर मध्ये पोथी आचारज श्री सकलकीर्तिजी ।

६४४. प्रति सं० ९ । पत्रस० १३९ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४३-६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६४५. प्रतिसं० १० । पत्रस० १४४ । आ० १०½×५ । ले० काल स० १७८० माह सुदी ११ । वेष्टनसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अम्बावती कर्वटे नगर मे महाराजा रामसिंह के शासन काल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६४६. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० १०१–१३८ । आ०१५ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १७७६ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७२२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—हीरापुर मे प० नरसिह ने प्रतिलिपि की थी ।

६४७. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० ४२ । आ० १२ × ५½ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६८८ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६४८. उपदेशसिद्धांतरत्नमाला-नेमिचन्द्र भण्डारी । पत्रसं० १३ । आ० १०½ × ५½ इन्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय – धर्म एव आचार शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—गाथाओ पर सस्कृत मे अर्थ दिया हुआ है ।

६४९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

६५० प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

६५१ प्रतिसं० ४ । पत्रसं० २१ । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

६५२ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला-पाण्डे लालचन्द । पत्र स० ११६ । आ० १६ × ६ इन्च । भाषा —हिन्दी पद्य । विषय – धर्म एव आचार । र०काल स० १८१८ । ले०काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर, अलवर ।

६५३ उपदेशरत्नमाला-धर्मदास गणि । पत्रसं० ५५ । आ० १० × ४ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूंदी) ।

विशेष - प्रतिजीर्ण है । मूल गाथाओ के नीचे हिन्दी मे अर्थ दिया है ।

६५४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २७ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टनस० २०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष- प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

।।श्री।। स० १६६३ वर्षे कार्तिक सुदि ७ भौमदिने [आगरा नगरमध्ये लिखायित ऋषि टोडर । पठनार्थं सुश्रावक श्रीमाल गोत्र पारमान सु श्रावक मानसिह तत्पुत्र श्रावक महासिह तस्य भार्या सुश्राविका पुण्य प्रभाविका देवगुरुभक्तिकारिका श्राविका रमा पठनार्थ ।

६५५. उपदेशसिद्धांतरत्नमाला—भागचन्द । पत्र स० २६ । आ० १०½ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल स० १९१२ आषाढ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

९५६, **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ४५ । ग्रा० ६×५½ इन्च । ले० काल सं० १६५४ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

९५७. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

९५८. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ३४ । ग्रा० १४ × ८ इन्च । ले० काल सं० १९३० चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—ठाकुरचन्द मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

९५९ **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० ३३ । ग्रा० १२½ × ५½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

९६०. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० २८ । ग्रा० १३ × ८ इच । ले०काल—सं० १९३१ । वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर करौली ।

विशेष—जती हरचद के मदिर वियाने मे ठाकुर चद मिश्र हिण्डौन वाले ने प्रतिलिपि की ।

९६१. **प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ६४ । ग्रा० १२½ × ४¾ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

९६२. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० ३४ । ग्रा० १३ × ६ इन्च । ले०काल सं० १९१६ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर (शेखावाटी) ।

विशेष—इस प्रति मे र०काल सं० १९१४ माघबुदी १३ दिया हुआ है ।

९६३. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० ४६ । ग्रा० ९¾ × ७ इच । ले०काल सं० १९३८ फागुन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर स्वामी बूंदी ।

९६४. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ४८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

९६५. **प्रतिसं० ११** । पत्रसं० ४३ । ग्रा० ११ × ८ इन्च । ले०काल सं० १९३३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मदिर अलवर ।

९६६. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० ४० । ले०काल सं० १९३४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर, अलवर ।

९६७. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० ७१ । ग्रा० १२¾ × ४¾ इन्च । ले०काल सं० १९४० मगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

९६८. **उपासकाचार-पूज्यपाद** । पत्रसं० ६ । ग्रा० ११ × ४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९६९. **उपासकाचार-पद्मनंदि** । पत्रसं० १०५ । ग्रा० ११×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३९-६३ । **प्राप्ति स्थान**—

दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—१०५ से आगे पत्र नहीं है ।

९७०. उपासकसंस्कार—पद्मनंदि । पत्रसं० ४ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा–संस्कृत विषय—आचार । र०काल × । ले० काल सं० १५४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१ । १५८ **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—

सूतक वृद्धिहानिभ्या दिनानि दशद्वादश ।
प्रसूति–स्थान मासैक वासरे पच श्रोत्रिग ॥
प्रसूति च मृत बाले देशानरमृते रणे ।
सन्यासे मरणे चैव दिनेक सूतक भवेत ॥

प्रशस्ति सं० १५४२ वर्षे वैशाख सुदी ७ लिखत ।

९७१. उपासकाध्ययन–पंडित श्री विमल श्रीमाल । पत्रसं० १८३ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२३-१२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

९७२. उपासकाध्ययन टिप्पण— × । पत्रसं० १-५ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय– आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १५८७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४३/१६३ **प्राप्ति स्थान** दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका एव प्रशस्ति निम्न प्रकार है—इति श्री वसुनंदिसिद्धान्तविरचितमुपासकाध्ययनटिप्पणक समाप्त ।

संवत् १५८७ वर्षे चैत्र बुदी ६ रवौ श्री मलसघे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये आचार्य श्री रत्नकीर्तिस्तच्छिष्य मुनि श्रीहरिभूषणेनेद लिखित कर्मक्षयार्थं ।

९७३. उपासकाध्ययन विवरण— × । पत्रसं० १७ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९७४. उपासकाध्ययन श्रावकाचार–श्रीपाल । पत्रसं० १-२३७ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष अन्तिम छन्द—

त्रेपन क्रिया ए त्रेपन क्रिया ए गम अनोपम ।
शुभ श्रावकाचार मनोहर
प्रबंध रच्या रलियामणो सुललित वचन भविजन सुखकर ।
भणे भणावे सांभलो भावसु लखै लखावे सार ।
श्रीपाल कहे जे सांभलस्ये तेह घर मंगल घर तेह जय जयकार ॥

इति उपासकाध्ययनाख्याने श्रीपालविरचिते । सघपति रामजी नामाकिते श्रावकाचार ग्रभिधाने प्रबध समाप्त ।

गाधी वर्द्धमान् तत्पुत्र गाधी पूषालजी भार्या पानबाई पुत्र जोतिसर जवेरचन्द्र जडावचन्द्र एते कुटुबपरवार श्रावकाचारनी ग्र थ लखावो ।

९७५. उपासकाध्ययन सूत्र भाषा टीका— × । पत्रस० ४४ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । विषय—ग्राचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १७०३ ग्रापाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—हिन्दी ग्रर्थ सहित है । समरणोपासक श्रावकमथपु ग्राभिगत जिगधर्म पालनु विचरइ । ति द्वारइ नेह गोमाल् मखली पुण्हवी । कथा वार्त्ता लाधा सावली । इम खलु निश्चि सहाल् पुन्य ग्राजीविकाना धर्म धीटली नइ प्रांगा निर्ग्रंथु धर्म तेह् पडिव ज्यो ग्रादरसा ।

९७६. कल्पार्थ— × । पत्रस० ४२ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० १११-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

९७७. कुदेव स्वरूप वर्णन— पत्र स० २४ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर बैर (बयाना) ।

९७८. कुदेव स्वरूप वर्णन—× । पत्र स० ३७ । ग्रा० ९½ ५¼ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय धर्म । र०काल × । ले०काल स० १९११ द्वि० ग्रापाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

९७९. कुदेव स्वरूप वर्णन— × । पत्र स० २५ । ग्रा० ११½ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १८९९ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ७४, ४६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—रघराज गवका भादवा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

९८०. कुदेवादि वर्णन । पत्र सख्या २१ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८८ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

९८१. केशरचन्दन निर्णय × । पत्रस० १६ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—ग्राचार शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष– सग्रह ग्र थ है ।

९८२. क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्रस० २-६० । भाषा—सस्कृत । विषय—ग्राचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८०७ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

९८३. प्रतिसं० २। पत्रसं० ४३। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल० ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ९०-४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

९८४. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ४४। आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

९८५. क्रियाकोश—दौलतराम कासलीवाल। पत्रसं० ११०। आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—आचार शास्त्र। र० काल स० १७९५ भादवा सुदी १२। ले० काल० ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४५०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इसका दूसरा नाम त्रेपन क्रियाकोश भी है।

९८६. प्रतिसं० २। पत्र स० ९३। आ० १२×६ इञ्च।—ले०काल स० १८६७ मगसिर बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर।

विशेष—बैर मे प्रतिलिपि की गई थी।

९८७. प्रतिसं० ३। पत्रस० ११२। आ० ११×७$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल स० १९५४ भादवा सुदी १२। पूर्ण। वेष्टनस० ८८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

९८८. प्रति स० ४। पत्रस० १०६। आ० ९$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १८७७ सावन बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० १११। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—भोपतराय बाकलीवाल बसवा वाले ने सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि की थी।

९८९. प्रति स० ५। पत्रस० १०६। आ० ९$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल स० १८९९ द्वि० आषाढ बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदीनाथ बूंदी।

विशेष—सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

९९०. प्रतिसं० ६। पत्रस० १३०। आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स १९४७। पूर्ण। वेष्टन स० २२। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूंदी।

९९१. प्रतिसं० ७। पत्रस० १२७। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल स० १९५२। पूर्ण। वेष्टनस० १९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—छबड़ा मे प्रतिलिपि हुई थी।

९९२. प्रतिसं० ८। पत्रस० १२५। ले०काल स० १९०१। पूर्ण। वेष्टन स० ११४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

९९३. प्रतिसं० ९। पत्रस० ११२। आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १९०४ पौष बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन स० २२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—गोमदलाल बटवाल ने मोतीलाल से कोटा के रामपुरा मे लिखाया था।

९९४. प्रतिसं० १०। पत्रस० ९०। आ० १३×६$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल स०१८९९ आषाढ बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना।

विशेष—गुमानीराम रावका ने बयाना मे प्रतिलिपि की थी। इस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी का।

शासन था । श्रावको के ८० घर तथा १ मन्दिर था ।

९९५. प्रति सं० ११ । पत्रसं० ११० । आ० २३/४×६ इञ्च । ले० काल स० १८९६ भादों बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११-३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—नानिगराम द्वारा करौली मे प्रतिलिपि की गई थी ।

९९६. प्रति सं० १२ । पत्रसं० १३६ । आ० १०×७१/२ इञ्च । ले०काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टनस० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—स्वय ग्र थकार के हाथ की मूल प्रति है ग्र थ रचना उदयपुर मे हुई थी । अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

> सवत् सत्रासौ पच्यागव भादवा सुदी बारस तिथि जागव ।
> मङ्गलवार उदयपुर का है पूरन कीनी समै ना है ।।१८७१।।
> आनन्दसुत जयसु..... को मन्त्री जय को अनुचार ज्याहि कहै ।
> सो दौलति जिन दासनि दास जिन मारग की सरग गहे ।।

९९७ प्रति सं० १३ । पत्रस० ९७। ले० काल . । पूर्ण । वेष्टनस० ४१९।१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

९९८. प्रति सं० १४ । पत्रस० ९३ । आ० १३१/२ ×६ इञ्च । ले० काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन स० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

९९९ प्रति स० १५ । पत्र स० १०६ । आ० ९१/२ ×६ इञ्च । ले०काल स० १८८० आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ दौसा ।

विशेष—नोनन्दराम छाबडा ने सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०००. प्रति सं० १६ । पत्र स० ८५० । आ० १२१/२ × ६ इञ्च । ले० काल । अपूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

१००१. क्रियाकोश भाषा—किशनसिह । पत्र स० ७७ । आ० १२ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १७८४ भादवा सुदी १५ । ले० काल स० १८०३ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—गृहस्थो के आचार का वर्णन है ।

१००२. प्रति स० २ । पत्र स० ७९ । आ० १० ×४ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ५१६ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१००३. प्रति स० ३ । पत्र स० ६७ । आ० १३ × ६१/२ इञ्च । । ले०काल स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

१००४. प्रति स० ४ । पत्र स० ११५ । आ० १०१/२ × ५ इञ्च । ले०काल—स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० २४७—९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१००५. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ६८ । आ० १२१/२ ×५ इञ्च । ले०काल स० १८२२ । पूर्ण ।

वेष्टन सं० ६२-४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

१००६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३४ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६६/१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

१००७. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ६६ । आ० १३×७ इञ्च । ले०काल स० १६३७ आषाढ़ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—लाला रामचन्द बेटे लालाराम रिखबदास अग्रवाल श्रावक फतेहपुरवासी (दूकान शहर दिल्ली) ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१००८. प्रति सं० ८ । पत्र स० ८० । आ० १२¾×७ इञ्च । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर (सीकर)

विशेष—फतेहपुर वासी अग्रवाल लक्ष्मीचन्द्र के पुत्र मोहनलाल ने रतलाम में प्रतिलिपि करवाई थी । द मगनजी श्रावक ।

१००९ प्रतिसं० ९ । पत्रस० १८५ । आ० १० × ६ इञ्च । ले०काल स० १८३१ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ५ १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

१०१०. प्रतिसं० १० । पत्रस० १५१ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८६६ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष पन्नालाल भाट ने प्रतिलिपि की थी ।

१०११. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १८३ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरापथी दौसा ।

विशेष—भीगने से अक्षरो पर स्याही फैल गई है ।

१०१२. प्रतिसं० १२ । पत्रस० २१४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मदिर हण्डी वालो का डीग ।

१०१३ प्रतिस० १३ । पत्रस० ६६ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टनस० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

१०१४. प्रति स० १४ । पत्रस० १२१ । आ० ८¼ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८५५ द्वि० अषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

१०१५. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १५६ । आ० १६ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८८७ । ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, कामा ।

१०१६ प्रतिसं० १६ । पत्रस० ८७ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले० काल स० १८६६ फागुण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष बक्षीराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०१७. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ११६ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल स० १६७७ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

१०१८. प्रतिसं० १८। पत्रस० ५२। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० २८२। **प्राप्ति स्थान**— दिगम्बर जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१०१९. प्रतिसं० १९। पत्र स० १३२। ले०काल—स० १८७४। पूर्ण। वेष्टन स० २८३। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष – इसे कामा के जोधराज कासलीवाल ने लिखवायी थी।

१०२०. प्रतिसं० २०। पत्र स १११। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१०२१ प्रतिसं० २१। पत्रस० ८३। **ले०काल**—स० १८११ आषाढ बुदी १२। पूर्ण। वेष्टनस० २८५। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—इसे जिहानाबाद मे प० भयाचन्द्र ने लिखवायी थी।

१०२२. प्रतिसं० २२। पत्रस० १४२। ले०काल स० १८२५ वैसाख सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० २८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर निवासी गूजरमल के लिए बसावा मे प्रतिलिपि की गई थी।

१०२३. प्रतिसं० २३। पत्रस० ६४। ले०काल— स० १८४७ सावन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० २८७। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष – हुलाशराय चौधरी ने प्रतिलिपि करवायी थी।

१०२४. प्रतिसं० २४। पत्रस० ५६ से १०४। ले०कालस० १७८५। अपूर्ण। वेष्टन स० ४१५। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१०२५. प्रति सं० २५। पत्रस० ११२। आ० १२×७ इञ्च। ले०काल — ×। पूर्ण। वेष्टन स० ९७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

१०२६. प्रतिसं० २६। पत्रस० ९२। आ० १२½×५½ इञ्च। ले०काल – स० १८०६ माह सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ४४, १६४। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

१०२७ प्रतिसं० २७। पत्रस० १३४। ले०काल स० १६४६। पूर्ण। वेष्टनस० ४५ १४। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

१०२८ प्रतिसं० २८। पत्रस० १०५। ले०काल—स० १८७४ भादवा सुदी २। वेष्टनस० ४६ १५। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

१०२९. प्रतिसं० २९। पत्रस०—३५-७९। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल – स० १८८३। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष—कोटा मे प्रतिलिपि हुई थी।

१०३०. प्रतिसं० ३०। पत्रस० १५२। आ० १० × ५ इञ्च। ले०काल स० १९२२। पूर्ण। वेष्टन स० ११८/७७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—लिखाइत मुवानीलाल जी श्रावगी बासवान माधोपुर या लिखाई इन्द्रगढ मध्ये।

१०३१. प्रतिसं० ३१ । पत्रसं० २ से ८४ । आ० १२ × ५३/४ इञ्च । ले०काल — स० १६०८ कार्तिक बुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक) ।

१०३२. प्रतिसं० ३२ । पत्रसं० ११५ । आ० ११×५१/२ इञ्च । ले०काल स० १८८६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—राजमहल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०३३. प्रतिसं० ३३ । पत्रस० ३१ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का आवा (उणियारा) ।

१०३४. प्रतिसं० ३४ । पत्र स० १२४ । आ० १०१/२ × ४१/२ इञ्च । ले०काल स० १८५० वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक) ।

१०३५. प्रति सं० ३५ । पत्रस० ६४ । आ० ११ × ५१/२ इञ्च । ले०काल - स० १८५४ माघ शुक्ला ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मंदिर कोटयो का, नैणवा ।

१०३६. प्रतिसं० ३६ । पत्रसं० १०२ । आ० ११ × ६१/२ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

१०३७. प्रतिसं० ३७ । पत्रस० ७३ ।आ० १११/२ × ६१/२ इञ्च । ले०काल स० १८१४ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

मिति मगसर सुदी १५ रवौ सवत् १८१४ का साल की पोथी सगही सुखदेव सागानेर का की से उतारी छै लिखत तोलाराम खुश्यालचन्द वैद की पोथी नग्र नैणवा मध्य वाचै जीनै श्री सबद वचा । श्री तेरापथी का म दिर चढाया मिती फागुण सुदी ६ सवत् १६११ चिरजी कालु के चढाया श्री गिरनार जी की यात्रा के चढाया श्री सावलयानाथ स्वामी के ।

१०३८. प्रतिसं० ३८ । पत्रस० १६-६६ । आ० १०×७ इञ्च । ले०काल स० १६८६ । अपूर्ण । वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

१०३९. प्रतिसं० ३९ । पत्रस० ११८ । आ० १२ × ५१/२ इञ्च । ले०काल स० १६३७ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—मालपुरा निवासी प० जौहरीलाल ने टोडा मे सावला जी के मदिर मे लिखा था ।

१०४०. प्रति स० ३० । पत्रस० १२३ । आ० ११ × ५१/२ इञ्च । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष--सहजराय व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४१ प्रति सं० ४१ । पत्रस० १५५ । आ० ६ × ७१/२ इञ्च । ले० कालस० १६४० । पूर्ण । वेष्टनस० ११३ ६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष— लाखेरी मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१०४२. प्रतिसं० ४२ । पत्रस० १२५ । आ० ६१/२ × ६ इञ्च । ले० काल--स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टनस० १८० । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०४३. प्रतिसं० ४३ । पत्रस० ६५ । आ० १० × ७ इञ्च । ले० काल स० १८२६ फाल्गुन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६-४७ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

विशेष —लालसोट मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१०४४ प्रतिसं० ४४ ।पत्रस० ६४ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल- स० १९२० फाल्गुण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १२७ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मदिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

विशेष प० लक्ष्मीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४५. प्रतिसं० ४५ । पत्रस० १४१ । आ०— १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८०४ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १८१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि जैन पचायती मदिर करौली ।

१०४६. क्रियाकोष भाषा—दुलीचन्द । पत्रस० ५७ । भाषा -हिन्दी गद्य । विषय गृहस्थ की क्रियाओं का वर्णन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** × । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

१०४७. क्रियापद्धति × । पत्रस० ५ । आ० ८×५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय — आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर नागदी (बूदी) ।

विशेष- जैनेतर ग्रन्थ है ।

१०४८. क्रियासार भद्रबाहु । पत्रस० १८ । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । भाषा - प्राकृत । विषय - आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

१०४९. क्षेत्रसमास × । पत्रस० ५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा- प्राकृत । विषय - धर्म । र०काल × । ले०काल स० १७४३ । पूर्ण । वेष्टन स०४८ । **प्राप्ति स्थान** --भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अलवर नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१०५०. क्षेत्रसमास प्रकरण— । पत्र स ८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा प्राकृत । **विषय—धर्म** । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४१ । **प्राप्ति स्थान** -भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५१. गुणदोषविचार— । पत्र स० ५ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा सस्कृत । **विषय—आचार** । र०काल । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष— देवशास्त्र गुरु के गुण तथा दोषों पर विचार है ।

१०५२. गुरुपदेशश्रावकाचार- -डालूराम । पत्र स० २०३ । आ० १३ × ७ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल स० १८६७ । ले० काल स० १९८४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८१ । **प्राप्ति स्थान—**भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५३. प्रति सं० २ । पत्र स० २२१ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८५७ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४०७ । **प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८५ । आ० १०×७½ इञ्च । ले० काल सं० १९५० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजी बूंदी ।

१०५५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३६ । आ० १२½×७ इञ्च । ले० काल सं० १९४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन० मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

१०५६. गृहप्रतिक्रमण सूत्र टीका—रत्नशेखर गणि । पत्र सं० ५८ । भाषा -संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५७. चउसरणवृत्ति— × । पत्र सं० १२ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५८. चतुरचितारणी—दौलतराम । पत्र सं० २-५ । आ० १० × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—इह चतुर्रचितारणि भवजल तारणि ।

कारणि शिवपुर साधक है

बाचो अर राचो या मे माचौ

दौलति अविनाशी……… ।

इति श्री चतुर्रचितारणी समाप्त ।

१०५९. चतुर्दशी चौपई—चतुरमल । पत्र सं० २७ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल सं० १६७२ पोष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर हण्डावालों का डीग)

१०६०. चतुष्कशरण वर्णन—पत्र सं० ८ । आ० १०¾×३¾ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—गाथाओं के ऊपर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

१०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

१०६२. चतुर्मास धर्म व्याख्यान— × । पत्र सं० ५ से १२ । भाषा– हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६२८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०६३. चतुर्मास व्याख्यान—समयसुन्दर उपाध्याय । पत्र सं० ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

१०६४. प्रतिसं० २। पत्र स० ३-५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६६६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

१०६५. चारित्रसार—चामुण्डराय। पत्र स० ५१। आ० ११½×५¾। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल स० १५२१ ज्येष्ठ सुदी६। वेष्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

१०६६. प्रतिसं० २। पत्र स० ६२। आ० ११×५½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १२६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—५७ मे ६२ पत्रों पर सस्कृत मे टिप्पणी भी दी गई है।

१०६७. चारित्रसार—वीरनंदि। पत्र स० २-१६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय– अचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल स० १५८८ चैत्र बुदी ११। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

विशेष—फागुण सुदित्ती वर्ष सवत् १५० लिखते आचार्य श्रीसिधनदि देवाम् आचार्य श्रीधर्मकीर्ति देवा तत् शिष्यणी खुल्लकीबाई पारो। लिखते ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ।। स० १५८८ वर्षे चैत्र बुदी एकादसी मङ्गलवारे ३ स्वात्मपठनार्थ लिखते क्षल्लकी पारो।।

१०६८. प्रतिसं० २। पत्र स० ७८। आ० ½×४½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २३१। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—७८ से आगे के पत्र नही है प्रति प्राचीन है।

१०६९. चारित्रसार वचनिका मन्नालाल। पत्रस० ६८। आ० १२×६½ इच। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—आचार शास्त्र। र०काल स० १८७१ माघ सुदी ५। ले०काल—स० १८०३। पूर्ण। वेष्टनस० १३१-५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डू गरपुर।

१०७०. प्रति सं० २—पत्रस० १८३। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल - स० १८८६। पूर्ण। वेष्टन स० १०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

१०७१. प्रतिसं० ३। पत्रस० १६१। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

१०७२. प्रतिसं० ४। पत्रस० १००। ले०काल ×। अपूर्ण। वष्टनस० ४१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

१०७३. चारों गति का चौढालिया ×। पत्रस० ८। आ० ६×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वष्टनस० ३४। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—गुटके मे है तथा अन्य पाठो का सग्रह भी है।

१०७४. चौबीस तीर्थकर माता पिता नाम— ×। पत्रस० ३। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस०-६०६। **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१०७५. चौबीस दण्डक—धवलचन्द्र। पत्रस० ७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत, हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल ×। ले०काल—स० १८११ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस०-१८०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। सवत् १८११ माघ सुदी ५ भगत विमल पठनार्थ रामपुरे लिपी कृत-नेमिजिन चैत्यालये।

१०७६. चौबीस दण्डक—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्रस० २। आ० १०×६¾ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वे०स० २०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी।

१०७७. प्रतिसं० २। पत्रस० ३। आ० १०½×५। ले०काल ×। वेष्टनस०-३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—एक पत्र और है।

१०७८ चौबीस दडक भाषा—पं दौलतराम। पत्रस० ३। आ० ८½×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल १८वी शताब्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५०-६८। **प्राप्ति स्थान** दि०जैन मन्दिर कोटडियों का डू गरपुर।

१०७९. प्रतिसं० २। पत्रस० ४। आ० १२×६½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २५४-१०२। **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर।

१०८०. प्रतिसं० ३। पत्रस० ६। आ० ११×४¾ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५८६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१०८१. प्रतिसं० ४। पत्रस० १२। आ० ९×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५२२। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर।

विशेष—प्रथम ८ पत्र पर व्रत उद्यापन विधि है।

१०८२. प्रतिसं० ५। पत्रस० ८। आ० ११×५ इच। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनस० १६५। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी।

१०८३. प्रतिसं० ६। पत्रस० ८। आ० १२ × ४ इच। ले०काल स० १८७८ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ३२। १३८। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टौक)।

१०८४. प्रतिस० ७। पत्रस० ५। आ० १०×४½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, करौली।

१०८५. चौबीस दण्डक ×। पत्रस० ६। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८०८-१५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियान डू गरपुर।

१०८६. प्रतिसं० २। पत्र स० ३। आ० १०¼×४½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१०८७. प्रतिसं० ३। पत्रस० ११। आ० ६½×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी।

१०८८. प्रति सं० ४। पत्रस० ११ । ग्रा० १२×७ इञ्च । ले०काल स० १९२९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

१०८९. चौबीस दण्डक— × । पत्रस० १० । ग्रा० ११×५¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—पाडे गुलाब सागवाडा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१०९०. चउबोली की चौपई—चतरू शिष्य सांवलजी । पत्रस० ३७ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १७९८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१०९१. चौरासी बोल— × । पत्र स० १ । भाषा हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७५ । **विशेष स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०९१. (क) चौरासी बोल— × । पत्रस० १९ । ग्रा० १० × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १७५० पूर्ण । वेष्टन स० १९२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—काष्ठासघ की उत्पत्ति, प्रतिष्ठा विवरण एव मुनि ग्राहार के ४६ दोषो का वर्णन है ।

१०९२ छियालीस गुण वर्णन— × । पत्रस० ६ । ग्रा० ६¾ × ५¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८४ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

१०९३. जिनकल्पी स्थविर ग्राचार विचार— × । पत्र स० १३ । ग्रा०१०, ४ इञ्च । भाषा - प्राकृत, हिन्दी (पद्य) । विषय—ग्राचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८०४ । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०९४. जिन कल्याणक-प ग्राशाधर । पत्र स० ५ । ग्रा० ११×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल—× । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० ५५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०९५. जिन प्रतिमा स्वरूप— × । पत्रस० ६५ । ग्रा० ११ × ७¾ इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र० काल—× । ले०काल स० १९४४ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

१०९६. जिन प्रतिमा स्वरूप— × । पत्रस०- ५८ । ग्रा० १० ७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीरजी बूंदी ।

१०९७. जिन प्रतिमास्वरूप भाषा-छीतरमल काला । पत्र सख्या—८२ । ग्रा० ८¾ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र०काल स० १९२५ बैशाख सुदी ३ । ले०काल स० १९३३ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६।३१ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—उत्तमचन्द व्यास ने मलारणा डूगर मे प्रतिलिपि की थी। प्रश्नोत्तर रूप मे है।

१०६८. जीव विचार प्रकरण। पत्रसं० ६। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र०काल ×। ले०काल—स० १८६१। पूर्ण। वेष्टनस० ६२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—अलवर मे प्रतिलिपि की गई थी।

१०६६. जीव विचार। पत्रस० ३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल - ×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टनस०—१७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी।

११०० जीवसार समुच्चय—×। पत्रस०—२८। आ० १२× ५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टनस०—३११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

११०१. जैन प्रबोधिनी द्वितीय भाग—×। पत्रस० २६। आ० ८$\frac{3}{4}$ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म। र०काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टनस०६६८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

११०२. जैनश्रावक आम्नाय—समताराम। पत्रस०—२८। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—आचार। र०काल ×। ले० काल सं० १६१५ आसोज बुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० २६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

विशेष—कवि भेलसा का रहने वाला था। रचना सम्वत निम्न प्रकार है—

सवत एका पर नो उमै पचदश जानो सोय।
कारगपक्ष अष्टमी रवी भगु बैसाख ज्ञ होय।
पत्र २६ से २८ तक प्यारेलाल कृत अभिषेक बावनी है।

११०३. जैन सदाचार मार्तण्ड नामक पत्र का उत्तर—×। पत्र स० २७। आ० ११$\frac{1}{2}$× ८ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय आचार शास्त्र। र०काल—×। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

११०४ ज्ञानचिन्तामणि - मनोहरदास। पत्रस० ६। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल स० १७००। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

११०५. ज्ञानदर्पण - दीपचन्द। पत्रस० ३१। आ० ११ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल स० १८७० जेठ सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

११०६. प्रति स० २। पत्र स० ८२। आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च। ले० काल—स० १८६०। माघ बुदी ६। पूर्ण। वे० स० ६६-१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा।

११०७. ज्ञानदीपिका भाषा ×। पत्र स० ३०। आ० १२ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र०काल स० १८३१ सावन बुदी ३। ले० काल स० १८६० फागुन वदी १३। पूर्ण। वे० सं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर करौली।

विशेष—सवाई माधोपुर मे ही रचना एव प्रतिलिपि हुई थी। लेखक का नाम दिया हुआ नही है।

११०८. ज्ञानपच्चीसी-बनारसीदास। पत्र स० १ । आ०-१०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल स० १७७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—कोकिद नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

११०९. प्रति सं० २ । पत्र स०— १ । ले० काल × । पूर्ण । वे०स० ६८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१११०. ज्ञानपंचमी व्याख्यान-कनकशाल। पत्र स० ६ । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल—स० १६५५ । पूर्ण । वे० स० ७३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—मेडता मे लिपि हुई थी।

११११. ज्ञानानद श्रावकाचार-भाई रायमल्ल। पत्रस० २२९ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढू ढारी) गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०—१६०८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर । अजमेर ।

१११२ प्रति सं० २। पत्र स० १३५ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जै० मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

१११३. प्रति सं० ३। पत्र स० १२९ । आ० १२ × ६¾ इञ्च । ले० काल स० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर श्री महावीर स्वामी बूदी ।

१११४. प्रति सं० ४। पत्र स० ११७ । आ० १३½×५ इञ्च । ले० काल स० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर, नैणवा ।

१११५. प्रति सं० ५। पत्र स० २०१ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले० काल स० १९५२ पौष शुक्ला ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी। लिपि कराने मे १६।।।) खर्च हुए थे।

१११६. प्रतिसं० ६। पत्र स० १८६ । आ० १२½ × ८ इञ्च । ले०काल स० १९५२ मगसिर बुदी १० । पूर्ण । वे० स० २५ ४१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१११७. प्रतिसं० ७। पत्र स० १८६ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले० काल स० १९६२ अषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—गृहस्थ धर्म का वर्णन है।

१११८. प्रतिसं० ८। पत्र स० १९५ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले० काल—स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१११९. प्रतिसं० ९। पत्र स० १६६ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल १९०५ आषाढ़ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—टोंक मे प्रतिलिपि हुई थी।

११२०. प्रति सं० १० × । पत्र स० १४६ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर अलवर ।

११२१. प्रति स० ११ । पत्र सख्या २६३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा, (राज) ।

विशेष—रूघनाथगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

११२२. ढूढियामत उपदेश × । पत्र स० १४ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

११२३. तत्वदीपिका × । पत्र स० २२ । आ० १२¾ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११२४. तत्वधर्मामृत । पत्र स० २० । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

११२५. तीर्थवंदना आलोचन कथा × । पत्र स० १३ । आ० १०¾ ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल- × पूर्ण । वेष्टन स० ६१-१७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

११२६. तीस चौबीसी × । पत्र स० ४ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय धर्म । र०काल— । ले० काल स० १८३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

११२७. तेरहपथ खडन—पन्नालाल दूनीवाले । पत्रस० १६ । आ० १० ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १९४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

११२८. त्रिवर्णाचार—श्री ब्रह्मसूरि । पत्रस० ५७ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोक) ।

ग्रन्थ का प्रारम्भ—ऊँ नम श्रीमच्चतुर्विशति तीर्थेभ्यो नम ।

अथोच्यते त्रिवर्णाना शौचाचार-विधि-क्रम ।
शौचाचार विधि प्राप्तौ, देह सस्कर्तु मर्हते ।।

सन्धि समाप्ति पर-

इति श्री ब्रह्मसूरि विरचिते श्रीजिनसंहिता सारोद्धार प्रतिष्ठातिलक नाम्नि त्रिवर्णिकाचारसग्रहे सूत्र प्रसगेसंध्यावदनदेवाराधनायात विश्वदेवसतर्पणादि-विधानिय नाम चतुर्थ पर्व ।

११२६. त्रिवर्णाचार-सोमसेन। पत्रसं० १२१। आ० १० × ६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार। र०काल सं० १६६७ कार्तिक सुदी १५। ले०काल सं० १८६२ माह सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन-सं० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

११३०. प्रति सं० २। पत्रसं० १४४। आ० १० × ४½ इञ्च। ले०काल सं० १८६८। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—गोर्द्धन ने तक्षकगढ टोडानगर के नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

११३१. प्रति सं० ३। पत्रसं० १०-१५३। आ० १०½ × ५½ इञ्च। र०काल ×। ले०काल। अपूर्ण। वेष्टन सं० १७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक।

११३२. प्रति सं० ४। पत्रसं० १५२। आ० ९½ × ४ इञ्च। ले०काल सं० १८९५ सावन सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—१०१ मे ४९ तक के पत्र नही है। इसका दूसरा नाम धर्म रसिक ग्रंथ भी है।

११३३. प्रति सं० ५। पत्रसं० ८२। भाषा—संस्कृत। ले०काल सं० १८७१। पूर्ण। वेष्टन सं० २८०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर। इस मन्दिर मे एक अपूर्ण प्रति और है।

विशेष चुन्नीलाल ने भरतपुर मे प्रतिलिपि कर इसे मन्दिर मे चढाया था।

११३४. प्रति सं० ६। पत्रसं० १०५। आ० ११ × ५ इञ्च। ले०काल सं० १८५२ पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

११३५. प्रति सं० ७। पत्र सं० १०१। आ० १२ × ६½ इञ्च। ले०काल सं० १८७९ सावन सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली।

विशेष गुमानीराम ने कल्याणपुरी के पंचायती मंदिर नेमिनाथ मे प्रतिलिपि की थी।

११३६. प्रति सं० ८। पत्रसं० १०३। आ० १२ × ६½ इञ्च। ले०काल सं० १८७०। चैत बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० १४-२१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

११३७. दण्डक ×। पत्रसं० २१। आ० १०½ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय आचारशास्त्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४१६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

११३८. दंडक— ×। पत्र सं० ५। आ० १० × ४¾ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय आचार शास्त्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०१४। **प्राप्ति स्थान** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

११३९. दंडक— ×। पत्र सं० १२। आ० १० × ४½। भाषा—हिन्दी। विषय आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१८। **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

११४०. दंडक— ×। पत्र सं० ४। आ० ११ × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल सं० १८१३। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१७। भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

११४१. दडक— × । पत्रस० २७ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल — × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

११४२. दडक प्रकरण-जिनहस मुनि । पत्रस० २६ । भाषा—प्राकृत । विषय–धर्म । र०काल– × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ६०७ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

११४३. दंडक प्रकरण— वृन्दावन । पत्रस० २–२६ । आ० ६½ × ६ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय—आचार । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटया का नैणवा ।

११४४. दंडक वर्णन × । पत्रस० १६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-आचार । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६३ । **प्राप्ति स्थान** । दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—१६ से आगे पत्र नहीं है ।

११४५. दंडक स्तवन-गजसार । पत्रस० ५ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा —प्राकृत । विषय—आचार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है । लिखित ऋषि श्री ५ घोमग तस्य शिष्य ऋषि श्री ५ गोपाल जी प्रसाद ऋषि ...तसी लिखित पठनार्थ बाई कुमरि बाई ।

११४६. प्रति स० २ । पत्रस० ७ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ~५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सस्कृत टव्वा टीका सहित है ।

११४७. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १७०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष— प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

११४८. दशलक्षणधर्म वर्णन – । पत्रस० ३५ । आ० ८ × ६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत, । विषय —धर्म । र०काल । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० १५५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११४९. दशलक्षणधर्म वर्णन । पत्रस० ४३ । आ० ८ ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ११६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर, अजमेर ।

११५०. दशलक्षणधर्म वर्णन— । पत्रस० १४ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

११५१. दशलक्षणधर्म वर्णन-रइधू । पत्र स० २१ । **भाषा**—अपभ्र श । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल— × । अपूर्ण । वेप्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर, बसवा ।

११५२. दशलक्षण भावना—प० सदासुख कासलीवाल । पत्रस० २६ । आ०—१४½ × ८ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढू ढाडी) गद्य । विषय – धर्म । र०काल—× । ले०काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—मांगीराम शर्मा ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी । रत्नकरण्ड श्रावकाचार मे से उद्धृत है ।

११५३. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३८ । आ० १२½×५ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

११५४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २७ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल स० १६७७ फागुन सुदी १० पूर्ण । वेष्टनस० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

११५५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ७८ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जेन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

११५६. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ४६ । आ० १०¾ × ६¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३० । आ० १३½ × ६½ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ३५८।१३६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

११५८. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ३१ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

११५९. दर्शनविशुद्धि प्रकरण –देवभट्टाचार्य । पत्रस० १५१ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८ ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—सोलह कारण भावना का वर्णन है ।

११६० दर्शनसप्तति— । पत्र स० ३ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १७८२ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवानजी कामा ।

११६१. दर्शनसप्ततिका— । पत्रस० ७ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा - प्राकृत । विषय- धर्म । र०काल । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी गद्य मे अर्थ दिया है । अन्त मे लिखा है—

इति श्री सम्यक्त्वसप्ततिकावृत्ति ।

११६२. दानशील भावना—भगौतीदास । पत्रस० ३-५ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ११०-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बीसपथी दौसा ।

११६३. दानशीलतप भावना—मुनि प्रसोग । पत्रसं० ३ । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल— × । ले०काल सं०— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ ६८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अंतिम—

छदाइम छाग अयागयग असोग नामा मगि पु गवग ।
सिद्ध तनि स्मरेय इमि जिग हीगाहिय सूरि खगतु नग । इति

११६४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६ । आ० १०, ४ इञ्च । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६-८४ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—८६ गाथायें है ।

११६५. दानादिकुलकवृत्ति—पत्रसं० २०८ । भाषा - संस्कृत । विषय - आचार शास्त्र । र०काल — × । ले० काल -- × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

११६६. द्विजमतसार । पत्रसं० २१ । आ० १२१ ×८१ इञ्च । भाषा -संस्कृत । विषय — धर्म । र०काल — × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०) ।

११६७. धर्म कु डलियां—बालमुकुन्द । पत्रसं० २६ । आ० १२१ × ८ इञ्च । भाषा - हिन्दी । विषय धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १८२१ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

११६८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १९ । ले०काल - × । अपूर्ण । वष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर दीवानजी भरतपुर ।

११६९ धर्मढाल । पत्र सं० १ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय --- धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४५ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रारंभ की ढाल दी हुई है ।

११७० धर्मपरीक्षा- अमितिगति । पत्र सं० ७० । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा- संस्कृत । विषय-- धर्म । र०काल सं० १०७० । ले०काल सं० १५३७ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर (अजमेर) ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

सवत् १५३७ वर्षे कार्तिक सुदि ५ सोमे मरोठ(?) स्थाने श्री अजितनाथ चैत्यालय राजाधिराज-श्री अजयमल्ल--विजयराज्ये श्रीमत् काष्ठासंघे नदीतटगच्छे विद्यागण भट्टारक श्री रामसेनान्वये भ० रत्नकीर्ति तत्पट्टे भ लखमसेन तत्पट्टे धर्मसेन पट्टाचार्य भ श्री सोमकीर्ति तत् शिष्य आचार्य श्री वीरसेन आचार्य विमलसेन मु विजयसेन म जयसेन ब्र वीरम । ब्र माना । ब्र कान्हा । ब्र सगोवा । ब्र [illegible] । आर्यिका बाई जिनमती आर्यिका विनयश्रि । आ जिनश्रि । [illegible] । [illegible] । पंडित [illegible] । पंडित वेला । प० जिनराज । प० नरसिंह । प० बीसपाली छात्र माना ।

११७१. प्रति सं० २ । पत्र स० १५५ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १७३३ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५० । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

११७२. प्रति स. ३ । पत्र स० १०० । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १७२१ । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

११७३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८६ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२०/१७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

११७४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १ से ६६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

११७५. प्रति सं० ६ । पत्र स० ११६ । ले० काल सं० १६८७ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६-१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

विशेष—सवत् १६८७ वर्षे कार्तिक बदि १३ शनिवासरे मोजमाबाद मध्ये लिखत जोसी राधा । स्वस्ति श्री वीतारागायनम. सवत् १७१२ सागानेरी मध्ये जीगा चैत्याले ठोल्या के देहुरे आर्यिका चन्द्रश्री बाई हीरा । चेलि नान्हि—द्रर्म्मप्रिक्षा (धर्मपरीक्षा) शास्त्र अठाई के व्रत कै निमति । अर्यका चन्द्र श्री देहुरे मेल्हो (कर्म) कृमखै कै निमित मिति चैत्र वदी ८ भुमीवार ।

११७६. प्रति सं० ७ । पत्रस० ११२ । आ० ११ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

११७७. प्रति सं० ८ । पत्र स०१०२ । ले०काल स० १७६६ वैसाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

११७८. प्रति सं० ९ । पत्र स० ११० । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० । पूर्ण । वेष्टनस० स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति अशुद्ध है ।

११७९. प्रति सं० १० । पत्र स० ८९ । ले०काल स० १८५५ माह सदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० २२७ । **प्राप्ति स्थान**- - दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष— फरूखाबाद मे प्रतिलिपि की गई । स० १८२२ मे भरतपुर के मन्दिर मे चढाया था ।

११८०. प्रति सं० ११ । पत्र स० ८८ । र०काल × । ले० काल० स० १७८२ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २३४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

११८१. प्रति सं० १२ । पत्र स० ११६ । आ० १२ ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय । ले०काल स० १६६४ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२७ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति— सवत् १६६४ वर्षे फागुण बुदी ८ गुरुवासरे मोजवा वास्तव्ये राजाधिराज महाराजा श्री मानसिह राजप्रवर्तमाने अजतिनाथ जिनचैत्यालये श्री मूलसघे ब स गच्छे कुन्द० भ शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे पद्मनदिदेव खडेलवाल दोसी गोत्र वाले सघवी रामा के वशवालो ने प्रतिलिपि कराई थी । आगे पत्र फट गया है ।

११८२. प्रति सं० १३। पत्र स० ८७। आ० १०½ × ५½ इञ्च। ले० काल स० १८३६ सावरण सुदी ६। पूर्ण। वे० स० १५६/३६। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

११८३. प्रतिसं० १४। पत्र स० ८५। आ० १२×६ इच। ले०काल स० १८७८ माघ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)।

विशेष—ग्रन्थ के पत्र एक कोने मे फटे हुये है।

११८४. प्रतिसं० १५। पत्र स० ८१। आ० १३×६ इच। ले० काल स० १८७७। पूर्ण। वे० स० १०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)।

११८५. प्रतिसं० १६। पत्र स० ५। आ० १२×५ इच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूदी।

११८६. धर्मपरीक्षा ×। पत्र स० २८। आ० १०×४½ इञ्च। **भाषा**—सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल—×। ले०काल स० १४४८ शाके फागुन सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—पार्श्वपुर नगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

११८७. धर्मपरीक्षा भाषा—मनोहरदास सोनी। पत्रस० ६४। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल स० १७००। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० १६१७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

११८८. प्रतिसं० २। पत्र स० १२१। आ० १२½×५½ इञ्च। ले०काल स० १८८३ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १०८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

११८९. प्रतिसं० ३। पत्र स० १३८। आ० ६½×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७५/४३। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

११९०. प्रतिसं० ४। पत्रस० ७३। आ० ६½×७½ इञ्च। ले०काल स० १७९८। पूर्ण। वेष्टन स० २९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—गुटका रूप मे है।

११९१ प्रतिसं० ५। पत्र स० ११८। आ० ११½×६ इञ्च। ले०काल स० १९७२। पूर्ण। वेष्टन स० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

११९२. प्रति सं० ६। पत्रस० १८३। आ० ७½×६½ इञ्च। ले०काल स० १८५२। पूर्ण। वेष्टन स० ६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

११९३. प्रति सं० ७। पत्रस० ८३। आ० १३×५½ इञ्च। ले०काल स० १८९०। पूर्ण। वेष्टनस० १६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

मिति पौष सुदी ६ बृहस्पतिवार स० १८९० का श्रीमान परमपूज्य श्री राजकीर्ति जी तत् शिष्य पण्डितोत्तम पण्डित श्री जगरूपदासजी तत् शिष्य पण्डितजी श्री दुलीचन्दजी तत् शिष्य लिपिकृतं पण्डित

देवकरणाम्नाय अजयगढ का लिखायित पुन्यपवित्र दयावत धर्मात्मा साहजी श्री तोलजी गोत्रे राउका स्वात्मार्थ बोधनीय प्राप्ति भवतु । ग्राम इन्द्रपुरी मध्ये ।

११९४. प्रति सं० ८ । पत्रस० ६३ । आ० ११½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १६०७ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावटी (सीकर) ।

११९५. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ८५ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल—स० १८०४ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२।५२ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष सीताराम के पठनार्थ परशुराम लुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी ।

११९६. प्रतिसं० १० । पत्रस० ८४ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल स० १८३७ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६।६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष – सुखदास रावका ने भादवा मे प्रतिलिपि की थी ।

११९७. प्रति सं० ११ । पत्रस० १४४ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८०-७२ । **प्राप्तिस्थान** - दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष — दौलतराम तेरापथी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

११९८. प्रति सं० १२ । पत्रस० ११३ । ले०काल स० १८५१ । पूर्ण । वेष्टनस० ५१-३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—महाराजा प्रतापसिह जी के शासनकाल मे दौसा मे प्रतिलिपि की गई थी ।

११९९. पति सं. १३ । पत्रस० १३३ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजागरी करौली ।

१२००. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १०२ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर करौली ।

१२०१. प्रतिसं० १५ । पत्र स० ७० । ले० काल स० १८१२ आषाढ सुदी । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन बड़ा पचायती मदिर (डीग) ।

१२०२. प्रतिसं० १६ । पत्र स० १२६ । ले०काल स० १८१५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति-स्थान** - दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष —सेवाराम पाटनी ने लिखवाया था ।

१२०३ प्रतिसं० – १७ । पत्र स० ११३ । ले०काल—स० १८८२ भादो बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पञ्चायती मदिर हण्डा वालो का डीग ।

१२०४. प्रतिसं० १८ । पत्र स० १३३ । आ० १२ × ७½ इञ्च । ले०काल—स० १८१२ पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मदिर कामा ।

१२०५. प्रतिसं० १९ । पत्रस० १०४ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १८४१ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बैर ।

विशेष—बैर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१२०६. प्रति सं० २० । पत्र सं० ६३ । आ० ११ × ८ इञ्च । **ले०काल** स० १८२० । मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—८६ पत्र के आगे भक्तामरस्तोत्र है । ले० काल स० १८३४ दिया है । प्रति जीर्ण शीर्ण है ।

१२०७. प्रति सं० २१ । पत्र स० १८२ । ले०काल १८७५ सावन बदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—जोधराज ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१२०८. प्रति सं० २२ । पत्र स० २२५ । **ले०काल** स० १७८८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष – विद्याविनाद ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी । गुटका साइज ।

१२०९. प्रति सं० २३ । पत्र स० १५६ । लेखन काल १८२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे जवाहरसिंह जी के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई ।

१२१०. प्रति सं० २४ । पत्र स० ६६ । ले०काल स० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२११. प्रति सं० २५ । पत्र स० ६८ । ले०काल स० १८१३ पूर्ण । **वेष्टन स०** ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष तक्षकपुर म प्रतिलिपि हुई थी ।

१२१२. प्रति सं० २६ । पत्र स० १२५ । ले० काल १८१३ । पूर्ण । **वेष्टन** स० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२१३. प्रति सं० २७ । पत्र स० १२३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२१४. प्रति सं० २८ । पत्र स० १३२ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल स० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**— अग्रवाल दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

१२१५. प्रति सं० २९ । पत्र स० ११३ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ ६७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

१२१६ प्रति स० ३० । पत्र स० १०३ । ले०काल स० १६२२ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१२१७. प्रति सं० ३१ । पत्र स० ८६ । आ० १२ × ८½ इञ्च । ले० काल-- × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१२१८. प्रति सं०—३२ । पत्र स० ८६ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१२१६. प्रतिसं० ३३ । पत्रसं० १४२ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टनस० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूंदी) ।

१२२०. प्रतिसं० ३४ । पत्रस० ८७ । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वेष्टनस० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी मालपुरा (टोंक) ।

१२२१. प्रतिसं० ३५ । पत्रस० १२ । ले० काल स० १६०१ आषाढ सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टनस०-३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१२२२. प्रतिसं० ३६ । पत्रस०४८ । आ० ८½ × ६ इञ्च । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं०१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

१२२३. प्रतिसं० ३७ । पत्रस०—१३४ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टनस०—६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—भट्ट तोलाराम भवानीराम दमोरा ने प्रतिलिपि की थी ।

१२२४ प्रति सं० ३८ । पत्रस० ६५ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल- । अपूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर आवा (उणियारा) ।

१२२५. प्रतिसं० ३६ । पत्रस० २-१०४ । आ० १०¾ × ६¼ इञ्च । ले०काल स० । पूर्ण । वेष्टनस० -११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)।

१२२६. प्रतिसं० ४० । पत्र स० १०६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मंदिर पंचायती दूनी (टोंक)

१२२७. प्रति स० ४१ । पत्रस० १०७ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८८० फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर कोटयों का नैणवा ।

१२२८. प्रतिसं० ४२ । पत्र स० १०१ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८८० फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरह पंथीमंदिर, नैणवा ।

१२२६. प्रति स० ४३ । पत्र स० ११२ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० [illegible] । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर श्री महावीर स्वामी बूंदी ।

१२३०. प्रति सं० ४४ । पत्र स० ६० । आ० १० × ६½ इञ्च । ले० काल स० १७०० पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष अग्रगपुर मे विनयसागर के शिष्य ऋषिदयाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२३१. प्रति सं० ४५ । पत्र स० ६६ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले०काल—स० १७७० पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—लोचनपुर मे लिखा गया था ।

१२३२. प्रति सं० ४६ । पत्र स० ६३ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल—स० १८४६ अषाढ सुदी ६। पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त ।

विशेष—सवाई माधोपुर के गढ रणथम्भोर मे आमेर के राजा प्रतापसिंह के शासन काल मे सगही पाथुराम के पुत्र निहालचंद ने प्रतिलिपि कराई थी ।

पुस्तक प० देवीलाल चि० विरधूचंद की है ।

१२३३. प्रति सं० ४७ । पत्र स० १०५ । आ० १२½×७ इच । ले०काल—स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१२३४. धर्मपरीक्षा वचनिका-पन्नालाल चौधरी । पत्रस० १८२ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल स० १६३२ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी, बूंदी ।

१२३५. प्रति सं २ । पत्र स० ११७ । आ० १२½ × ८ इञ्च । ले० काल स०—१६५१ आषाढ़ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी बूदी ।

१२३६. धर्मपरीक्षा भाषा-बाबा दुलीचन्द । पत्र स० २५१ । भाषा—हिन्दी । भाषा—धर्म । र०काल— × । ले०काल स० १६४० वैसाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१२३७. धर्मपरीक्षा भाषा सुमतिकीर्ति । पत्र स० ७६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र०काल स० १६२५ । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान ।** दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

१२३८. धर्मपरीक्षा भाषा—दशरथ निगोत्या । पत्रस० ११० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । र०काल स०—१७१८ फागुन बुदी ११ । ले०काल—स० १७६० । पूर्ण । वेष्टन स-२३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

१२३९. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३५ आ० १०½ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८२० माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर, करौली ।

१२४०. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २३५ । आ०१२×५½ इञ्च । लेखन काल–स० १७५० । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—गद्याश

ससार मे भैना जीवा के सुखदुख की आतर हाई केनौ मेर मिरम्योजे तो जाणिज्यो ।

भावार्थ से योजु ससारी जीवानै दुखतौ मेरु बराबर अर सुख न सरसी बराबरि जाणज्यौ ।। २१ ।।

अन्तिम पाठ—

माह श्री हेमराज सुत मानु हमीर दे जाणि ।

कुल नि गोत श्रावक धर्म दशरथराज बखाणी ।। १।।

सवत् सतरासै सही अष्टदश अधिकाय ।

फागुण तम एकादशी पूरण गाम सुभाय ।। २ ।।

धर्म परीक्षा बचनिका सुन्दरदास रहाय ।

साधर्मी समझिवै दशरथ कृति चित लाय ।। ३ ।।

इति श्री ग्रमितगति कृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी वचनिका बालबोध नाम ग्रपर नाम तात्पर्यर्यार्थ टीका तरय धर्मार्थ दशरथेन कृता समाप्ता ।

१२४१. धर्मपंचविशतिका—ब्र० जिरणदास । पत्र स० ३ । ग्रा० ११ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ ।

विशेष—ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है—

ग्रादि भाग—भव्व कमल मायड सिद्ध जिरगनि हुयारिगद सद पुज्ज ।
रोमि समि गुरुवीर परगमियतिय मुधिभव महरग ।।
ससामज्झि जीवो हिंडियमिच्छत्त विसयससत्तो ।
ग्रलहतो जिरणधम्म बहुविहयञ्जाय गिएहेइ ।। २ ।।
चउगइ दुह सतत्तो चउरासी लक्ख जोरिग ग्रइक्खिरणो ।
कम्मफल भुजतो जिरण धर्म विवज्जिउ जीवे ।। ३ ।।

ग्रन्तिम—जिरणधम्म मोक्खछ ग्ररणग हवेहि हिमगायरगा ।
इय जारिग भव्वजीवा जिरगग्रक्खिय धम्मु ग्रायरहि ।। २० ।।
रिगम्मल दसरणभत्ती वयग्ररगुपेहाय भावरगा चरिया ।
ग्र ते सलेहरगा कग्जिइ इच्छहि मुत्तिवररमरगी ।। २५ ।।
मेहा कुमुइरिग चद भवदु मायरह जागापनमिरग ।
धम्मविलासमुदह भरिगद जिरगदास वम्हेरग ।। २ ।।
इतिधर्म पचविशतिका सम्पूर्णम ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१२४२. धर्मप्रश्नोत्तरी । पत्र स० १ । ग्रा० ८ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा - हिन्दी । र०काल—× । ले०काल स० १८८६ ग्रपाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नरहपत्री मालपुरा (टोक) ।

विशेष— जन्म पत्र की साइज का लम्बा पत्र है ।

१२४३. धर्ममडन भाषा—लाला नथमल । पत्रस० ७० । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । लेखन काल स० १६२६ पूर्ण । वेष्टन स० २३०-९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१२४४. धर्मरत्नाकर—जयसेन । पत्र स० ६० । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल स० १०५५ । ले० कालस० १८३४ चैत सुदी ३ । पूर्ण । वे स १०३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—ग्रजमेर मध्ये लिखित ।

१२४५. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६१ । ग्रा० ६ × ५$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८४८ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १२०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष—प० गोपालदास ने ग्रजमेर मे प्रतिलिपि की थी ।

१२४६. प्रति सं० ३। पत्रसं० १६५। आ० ६×४½ इञ्च। ले० काल स० १७७५ वैशाख सुदी ७। वेष्टन स० ८७। **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैनमन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—महात्मा धनराज ने स्वय पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१२४७. धर्मरसायन—पद्मनन्दि। पत्र सख्या १३। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० ४०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१२४८. प्रति सं० २। पत्र स० १०। आ० १० × ५½ इञ्च। ले० काल। पूर्ण। वेष्टन स० ५०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१२४९. धर्मशुक्लध्यान निरूपण—×। पत्र स० ३। भाषा—सस्कृत। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६८।२४६। **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

१२५०. धर्मसग्रह श्रावकाचार पं० मेधावी। पत्र स० ६३। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार। र० काल स० १६६०। ले०काल स० १५२६। पूर्ण। वेष्टन स० ३०१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१२५१. प्रति स० २। पत्र स० ४५। आ० १२ × ६½ इञ्च। ले० काल स० १७८८ श्रावण सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—द्रव्यपुर नगर के चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे यशकीर्ति के शिष्य छाजूराम ने प्रतिलिपि की थी।

१२५२. प्रति स० ३। पत्र स० ८६। आ० ६½ × ५½ इञ्च। ले०काल स० १८३५। वेष्टन स० ८०। **प्राप्ति स्थान** शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष- महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल म बख्तराम के पुत्र सेवाराम ने नेमिजिनालय मे लिखा था।

१२५३. धर्मसार—प० शिरोमणिदास। पत्रस० ३६। आ० १०¾ × ५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय धर्म। र० काल स० १७३२ वैशाख सुदी ३। ले०काल स० १८५६। पूर्ण। वेष्टन स० १६२२। **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन भण्डार अजमेर।

१२५४. प्रति स० २। पत्रस० ५८। आ० १० × ५ इञ्च। ले०काल स० १७७६ अगहन सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सख्या ५११। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन भण्डार अजमेर।

१२५५. प्रति सं० ३। पत्रस० ७२। आ० ९ × ६ इञ्च। ले०काल स० १८८६ भादवा सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ३१२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१२५६. प्रति स० ४। पत्रस० ३५। आ० १२ × ६ इञ्च। ले० काल स० १८६१ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ८६-६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—श्री नानूलाल दौसा वाले ने सवाई माधोपुर म ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी। ग्रंथकर्ता ने सकलकीर्ति के उपदेश से ग्र थ रचना होना लिखा है।

१२५७. प्रति स० ५। पत्रस० ४४। आ० १३ × ६ इञ्च। ले०काल स० १८५८ सावन सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१२५८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

१२५९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५६ । आ० ६½×६½ इञ्च । ले० काल स० १८५९ बैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

१२६०. प्रति सं० ८ । पत्र स० ५५ । आ० ९ × ५¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—७९३ पद्य है ।

१२६१. प्रति सं० ९ । पत्रसं० ६६ । **ले०काल स०** १८९९ । पूर्ण । वेष्टन स० २९६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

१२६२. प्रति सं० १० । पत्रस० ५६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८९५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, कामा ।

विशेष—हेमराज अग्रवाल सुत मोतीलाल शेखावाटी उदयपुर मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२६३. प्रति सं० ११ । पत्रसं० ५३ । **ले०काल**—१८७९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१२६४. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ६९ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

१२६५ प्रतिसं० १३ । पत्रस० ६८ । ले०काल स० १८७९ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—दीवान जोधराज के पठनार्थ लिखी गई थी ।

१२६६. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ४९ । आ० ९ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा ।

विशेष—सकलकीर्ति के उपदेश से ग्रन्थ रचना की गई थी ।

१२६७. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ४२ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल स०— १९५१ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१२६८. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ४७ । आ० १० × ७½ इञ्च । ले०काल स० १९५१ । पूर्ण । वेष्टन स० २१० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१२६९. प्रतिसं० १७ । पत्र स० ४८ । आ० १० × ७ इञ्च । ले० काल स १९५१ वैशाख शुक्ला १५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१२७०. धर्मसार— × । पत्र स० २६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र०काल—× । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

१२७१. धर्मसारसंग्रह—सकलकीर्ति । पत्र स० २६ । आ० १२½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल- स० १८२२ । पूर्ण । **वेष्टनस०** ९३-६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियो का डूगरपुर ।

१२७२. धर्मोपदेश-रत्नभूषण । पत्र सं० १५८ । आ० १०½ × ५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय-- आचार । र०काल स० १६६६ । ले०काल स० १८०३ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** २६६–११६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर कोटड़ियो का डूंगरपुर ।

अन्तिम पुष्पिका—श्री धर्मोपदेशनाम्नि ग्रंथे श्रीमत्सकलकलापडित कोटीरहीद भूतभूतल विख्यातकीर्त्ति. भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्त्तिपदसस्थित सूरिश्रीरत्नभूषण विरचिते प्रह्नोदपादि सकल दीक्षाग्रहण शुभगति. गमनोनाम एकादश सर्गः ।

देवगढ मध्ये भट्टारक देवचन्द जी हूबड जाति लघु शाखाया ।

१२७३ प्रति सं० २ । पत्र स० ७४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । **ले०काल** स० १७७६ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—मालपुरा के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे श्री भुवन भूषण के शिष्य पडित देवराज ने स्वपटनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१२७४. धर्मोपदेश—× । पत्रस० १६ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । **वेष्टनस०** १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१२७५. धर्म्मोपदेश रत्नमाला-भण्डारी नेमिचद । पत्रस० २३ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा --प्राकृत । विषय — धर्म । र०काल × । **ले०काल**— × । पूर्ण । **वेष्टनस०** १०० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष --प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

१२७६. **धर्मोपदेश श्रावकाचार-ब्र.नेमिदत्त ।** पत्रस० ७० । आ० १०¾ × ५½ इञ्च । भाषा —सस्कृत । विषय —आचार शास्त्र । र०काल × । **ले०काल** स० १६५८ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० १३२७ । **प्राप्ति स्थान** -भट्टारकीय दि० जैन मदिर, अजमेर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम धर्मोपदेशपीयूष भी है ।

१२७७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३१ । ले०कालस० १८२५ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष —थागा मे केसरीसिंह ने लिखी थी ।

१२७८ प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३१ । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । ले०**काल**— × । पूर्ण । वेष्टनस० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, दीवानजी कामा ।

१२७६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ३१ । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** २२६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

१२८०. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ६–२६ । ले०काल— × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१२८१. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ३५ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल - स० १८१२ चैत बुदी १० । पूर्ण । **वेष्टनस०** २ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

१२८२. प्रति सं० ७ । पत्र स० २३ । आ० ११½×४½ इंच । ले० काल स० १६८१ भादवा सुदी २ । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१२८३. प्रति स० ८ । पत्रस० २३ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र०काल— × । ले० काल × । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१२८४. प्रति सं० ९ । पत्र स० २६ । आ० ११½×४½ । ले० काल × । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१२८५. प्रति सं० १० । पत्र स० २४ । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर डीग ।

१२८६. धर्मोपदेश श्रावकाचार—प० जिनदास । पत्र स० ११७ । आ० १० × ४ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—साह टोडर के आग्रह से ग्रथ रचना की गयी थी । प्रारम्भ मे विस्तृत प्रशस्ति दी गई है ।

१२८७. धर्मोपदेश श्रावकाचार-धर्मदास । पत्र स० ४५ । आ० १०½ × ४½ इन्च । भाषा हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल स० १५७८ वैशाख सुदी ३ । ले० काल स० १६७० कार्तिक बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—चपावती मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२८७. धर्मोपदेशसिद्धान्त रत्नमाला—भागचन्द । पत्रस० ७७ । आ० ८ × ५ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल स० १९१२ आषाढ बदी २ । ले०काल स० १९२८ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७-११३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

१२८९. प्रति सं० २ । पत्रस० २६ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । ले० काल स० १९५१ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२९०. नमस्कार महात्म्य— । पत्रस० २ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल— । ले०काल— । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१२९१. नरक दुःख वर्णन- भूधरदास । पत्रस० ५ । आ० ७½ × ७ इन्च । भाषा हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—कविवर द्यानतराय की रचनायें भी है ।

१२९२. नवकार ग्रर्थ— × । पत्र स० ३ । आ० ६½ × ४ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १७३३ कार्त्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

१२६३. नवकार बालावबोध। पत्रस० ४। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल × ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१२६४. नित्यकर्मपाठसंग्रह। पत्रस० १०। आ० ११×५½ इच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म। र०काल—×। ले०काल स० १६३७। पूर्ण। वेष्टन स० १८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

१२६५. पंच परम्मेठी गुण वर्णन—×। पत्रस० २३। आ० १०½×६½ इच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा।

विशेष—ग्रन्थ बही की साइज मे है।

१२६६. पंचपरावर्तन वर्णन ×। पत्रस० ४। आ० १२×४½ इंच। भाषा—हिन्दी(गद्य)। विषय—धर्म। र०काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० २६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

१२६७. पचपरावर्त्तन वर्णन—×। पत्रस० ३। आ० ११½×५½ इच। भाषा—हिन्दी (ग०)। विषय—धर्म। र०काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० २०७। **प्राप्ति-स्थान**- दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

१२६८. पचपरावर्त्तन वर्णन -×। पत्रस० ६। आ० ११×७ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—चितन धर्म। र०काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६/५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

१२६९. पचप्रकार ससार वर्णन—×। पत्रस० ४। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय धर्म। र०काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६। **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भडार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१२६९. **(क) प्रतिसं० २**। पत्रस० ३। आ० १०½×५½ इञ्च। **ले०काल** ×। वेष्टन स० ३७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

१३००. पन्द्रहपात्र चौपई—**भ. भगवतीदास**। पत्रस० ३। आ० १०×६½ इच। भाषा—हिन्दी। विषय धर्म। र० काल ×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० ८२-४४। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर।

आदि—

नमो देव अरिहन कौ नमो सिद्ध शिवराय।
नमे साध के चरण को जोग त्रिविध के भाव।
पात्र कुपात्र अपात्र के पनरह भेद विचार।
ताकी है रचना कहूँ जिन आगम अनुसार॥

अन्तिम—

गिरे तो दम मैं पुर निरवार
मरण करे तो चोथे सार।

ऐसे भेद जिनागम मांहि
त्रिलोकसार गोमतसार ग्रंथ की छाह ।।
भाषा करहि भविक इहि हेत
पाछि पढत अर्थ कहि देत ।
बाल गोपाल ढहि जे जीव
भैया ते सुख लहि सदीव ।।

१३०१. पद्मनंदि पंचविंशति—पद्मनंदि । पत्रस० १३२ । ग्रा० १०½×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्राचार शास्त्र । र०काल—× । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

१३०२. प्रतिसं० २ । पत्रस० १३१ । ग्रा० १०¾×४½ इच । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—साहमलू ने इस ग्रंथ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

१३०३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ८५ । ग्रा० १२ × ५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनस० १२० । ग्रपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—८५ से ग्रागे पत्र नही हैं ।

१३०४ प्रति सं० ४ । पत्र स० १-५० । ग्रा० १०½×४¾ । ले०काल × । वेष्टनस० ७६२ । ग्रपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

१३०५ प्रति सं० ५ । पत्र स० ७-६६ । ग्रा० ११×४¾ । ले०काल × । विषय ग्राचार ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ८२२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पत्र मोटे है । प्रति १६वी शताब्दी की प्रतीत होता है ।

१३०६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ५३ । ग्रा० १०½×५ इच । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० १६०-७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१३०७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १४-१५ । ग्रा० १३½×५ इच । ले०काल— × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ३०८/२४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रतिजीर्ण है तथा सभी पत्र सील मे चिपके हुए है ।

१३०८. प्रतिसं० ८ । पत्र स० १६२ । ग्रा० १३×४ इच । ले०काल— × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ४०६/२४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१३०९. प्रति सं० ९ । पत्र स० ८० । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ४१०/२४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१३१०. प्रतिसं० १० । पत्र स० ७७ । ले०काल स० १५६१ । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ४११/२४३ । प्रतिजीर्ण है एव प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १५६१ वर्षे प्रथम श्रावण बुदी २ शुक्रवासरे स्वस्ति श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीति तत्पट्टे भुवनकीर्ति तत्पट्टे श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे विजयकीर्ति

तत्पट्टे शुभचन्द्र प्रवर्तमाने रायदेशे ईडर वास्तव्य हुंबड ज्ञातीय भोडा करमसी भार्या पूतलियो सुत हो भाडा मेघराजचात् डोभाडा चांपा भार्या चापलदे तयो मुत डोभाडा मिहराज भार्या दाडमदे एते स्वज्ञानावर-णादि कर्म क्षमार्थ स्वभावरुच्चते श्रीपद्मनंदि पंचविंशतिका लिखित्वा ईडर शुभस्थाने श्री सभवनाथालये सुस्थितायां श्री विजयकीर्ति शिष्याय प्रदत्तं। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथमन्दिर उदयपुर।

१३११. प्रतिसं० ११। पत्र स० १४४। श्रा० ६×८ इच। ले० काल स० १७८३ आसोज सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स०—६१-६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष संस्कृत पद्यो के ऊपर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है।

१३१२. प्रति सं० १२। पत्रस० ८४। श्रा०- ६×६३/४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७५। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१३१३. प्रतिसं० १३। पत्रस० १३१। ले०काल स० १९१४। पूर्ण। वेष्टनस० ७४। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मंदिर हण्डावालों का डीग।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१३१४. प्रति सं० १४। पत्र स० ७२। श्रा० १०१/२×६१/२ इच। ले०काल—स० १८३२। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१३१५. प्रतिसं० १५। पत्रस० ५३। श्रा० ११×५१/२ इञ्च। ले०काल —×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१३१६ प्रतिसं० १६। पत्र स० ५७। श्रा० १३×५१/२ इञ्च। ले० काल स० १७३२। पूर्ण। वेष्टनस० १०७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१३१७. प्रतिसं० १७। पत्र स० ३२। श्रा० ६×६१/२ इञ्च। ले०काल स० १६३२। पूर्ण। वेष्टन स० ११८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है।

१३१८. प्रतिसं० १८। पत्र स० ६५। ले० काल स० १७५० आसोज सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ४७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१३१९. प्रतिसं० १९। पत्र स० १६४। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

१३२०. प्रतिसं० २०। पत्र स० ८६। श्रा० १२×५ इञ्च। ले० काल०×। पूर्ण। वेष्टन स० १७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

१३२१. प्रतिसं० २१। पत्र स० ११४। श्रा० ११×४१/२ इञ्च। ले० काल स० १७३५ पौष बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—इस प्रति को आचार्य शुभकीर्ति तत् शिष्य जगमति ने गिरधर के पठनार्थ लिखी थी।

१३२२. प्रतिसं० २२। पत्र स० ६७। श्रा० ११×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

१३२३. प्रतिसं० २३ । पत्रसं० १६१ । आ० ५×६ इञ्च । ले०काल सवत् १८३१ आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१३२४. प्रतिसं० २४ । पत्रस० ६७ । आ० ११½ × ४¼ इञ्च । ले०काल स० १५८० पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष प्रशस्ति—स० १५८० वर्षे पौषमासे शुक्लपक्षे पचमी भृगो आद्येह श्री घर्नदेन्द्रुगे चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसघे भारतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री ३ देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० विद्यानंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री श्री श्री ···· ···· ।

१३२५. प्रतिसं० २५ । पत्रस० १०८ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल स० १७१५ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—स० १७१५ मार्गशिर सुदी ११ लिखित ब्रह्म सुखदेव स्वयमात्मा निमित्त नैणपुरमध्ये । सूरसिह सोलखी विजयराज्ये शुभ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ श्रीपद्मकीर्ति ब्रह्म सुखदेव पठनार्थ । लिखित सुखदेव ।

१३२६. प्रतिसं० २६ । पत्र स० ६६ । आ०१०×४½ इञ्च । ले०काल स० १७६१ माघ बुदी ६ । पूर्ण ।वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बू दी)

विशेष—प्रशस्ति । सं० १७६१ वर्षे शाके १६१८ प्रवर्त्तमाने माघ मासे कृष्णपक्षे षष्ठमिति को शुक्रवासरे पडितोत्तमपडित श्री १०८ श्री अमरविमलजी तत् शिष्य गणे श्री ३५ श्री रत्नविमलजी तत् शिष्य मुनि मेघविमलेन लिखित नयणवानगरमध्ये साहजी श्री जोधराजजी पुस्तकोपरि लिपि कृता दीवानश्री बुधराज्ये शुभ भवतु । श्री रस्तु ।

१३२७. प्रतिसं० २७ । पत्र स० ११३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स ४५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

विशेष—कठिन शब्दो के अर्थ दिये हुए है । प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नही है । प्रति प्राचीन है ।

१३२८. प्रतिसं० २८ । पत्र स० ६७ । आ० १३½ ६½ इञ्च । ले० काल स० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नेणवा ।

विशेष—चन्दालाल बैद ने नैणवा के मंदिर मे लिपि करवा कर चढाया था ।

१३२९. प्रतिसं० २९ । पत्रस० ८२ । आ० १० × ६ इञ्च । ले०काल स० १६०३ माघ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२३ । **प्राप्तिस्थान**-- दि० जैन मंदिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

अथ संवत्सरेस्मिन श्रीविक्रमादित्यराज्ये सवत् १६०३ वर्षे माघ बदि २ शुक्रवासर निज सोभास्पर्द्धितस्वर्गे श्रीमन्नवग्रामपुरे ।। श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगण श्री कुंदकुंदाचार्यान्वय भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा । तदाम्नाये मडलाचार्य श्री धर्मकीर्तिदेवा दिगनरालाचार-सैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तत् प्रियशिष्यालकाचार्य श्री जिनदासब्रह्म । तदाम्नाये महलवाल कुल कमलभानुसाहु पद्म तद्भार्या पल्हो तयो ज्येष्ठ पुत्र साहु लोला भार्या देवल । प्रथम पुत्र वाला तद्भार्या कपूरी । द्वितीय पुत्र डूगर । तद्भार्या अरणमा । साहु पद्मा द्वितीय पुत्र साहु डाला तद्भार्या चाऊ प्रथम पुत्र धनपालु तद्भार्या रूडी द्वितीय पुत्र कौरू । तृतीय पुत्र सेना । चतुर्थ पुत्र सांगदास

साहु पद्म तृतीय पुत्र दूलहु तद्भार्या सरो । तयो पुत्र ऊदा । एतेषा मध्ये साहु लोल पद्मनंदि पंचविंशतिका कर्मक्षयनिमित्त लिख्यावि ।

१३३०. प्रति सं० ३० । पत्रस० ६१ । आ० १४ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १५६३ । पूर्ण । वेष्टन स० २४-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—स० १५६३ वर्षे चैत्र सुदी १ सोमे श्रीमूलसंघे भ० श्री विजयकीर्ति तत् भ० श्री **कुमुदचन्द्र** (शुभचन्द्र) त. ब्रह्म भोजा पाठनार्थ ।

१३३१. प्रति सख्या ३१ । पत्रस० ६७ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले०काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

१३३२. प्रति सं० ३२ । पत्रस० ५३ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पचायती दूनी ।

विशेष—स्योबक्स दांसा वालो ने प्रतिलिपि की थी । शिवजीराम के शिष्य प० नेमीचंद के पठनार्थ दूणी से हीरालाल कोठ्यारी ने इसे भेंट स्वरूप प्रदान की थी । प० हीरालाल नेमीचंद की पुस्तक है ।

१३३३. प्रति सं० ३३ । पत्रस० ८६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र नही है ।

१३३४. प्रति सं० ३४ । पत्रस० ४५-७६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनंदन स्वामी, बूंदी.

१३३५. प्रतिसं० ३५ । पत्रस० ६० । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० १७८८ पौष सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष- प० छाजूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१३३६. पद्मनंदिपचविंशति टीका— × । पत्रसं० १३५ । आ० १२½ × ७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१५ । **प्राप्ति स्थान** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१३३७. पद्मनंदिपचविंशति टीका— × । पत्रस० ६२ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १७५२ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १०२२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१३३८. पद्मनन्दिपचविंशतिका—पत्रस० २६७ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १६७१ आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

लेखक प्रशस्ति—सवत् १६७१ वर्षे आषाढ बुदी २ वार सोमवासरे हरिराणादेसे पथ-वास्तव्ये अकब्बर सुत जहांगीर जलालदी सलेमसाहि राजि प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री विजयसेनदेवास्तत्पट्टे सिद्धान्तजलसमुद्रविवेककलाकमलिनी-विकाशनैक-दिनमणि भट्टारक नयसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री अश्वसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री अनतकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री क्षेमकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे

श्री हेमकीर्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्रीकुमारसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री हेमचंद्रदेवा तत्पट्टे श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे पचममहाव्रतधारका पचसमिति-त्रिगुप्ति-गुप्तान् देश-विदेस-विज्ञानमान् पंच-रस-त्यागी भट्टारक यश. कीर्त्ति तत्पट्टे निर्ग्रथचूडामणि बावीस-परीसह-साहन सीला कमलमलिनगात्रान् चारित्रपात्रान् गिरनेरि-जात्रा लब्धि-विजयानय-रोपणीरो भट्टारक श्रीगुणचद्र तत्पट्टे कुदेंदुहारहास-काश-सकाश जशोभर धनतर-धनसार-पूर-पूरित चतुर्दश ब्रह्मांड-भाडान् श्री जिनसामन-उद्धरण परम भट्टारक-मन्यत् भट्टारक सकलचंद्र तदाम्नाये अग्रोतकान्वये सिंघलगोत्रे बूलह्मागि सुवर्णपथ-वास्तव्ये साह पलसी तस्य भार्या साध्वी चीमाही तस्य पुत्र ६ ... ... एतेषामध्ये सर्वज्ञध्वनिनिर्गत जीवादि-पदाथ द्रव्यगुणपर्याय श्रद्धापर शास्त्रदान निरतरायकारी चतुषष्टिकलासुन्दर सुन्दरी निहकर-क्रीडा-विहारान् राज: सभा सकल-कल-कामिनी मन कम कातियुत-कठ-भूषण-हारिहारान् चौधरी भवानीदास सुतेनेद पद्मनदिपचासिका टीका लिखापित ।।

१३३६. पद्मनन्दिपंचविंशति टीका × । पत्रस० २०७ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

१३४०. पद्मनंदिपच्चीसी भाषा-जगतराय । पत्र स० १०४ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १७२२ फागुन सुदी १० । ले० काल स० १८६१ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

१३४१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११८ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

१३४२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १०१ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले०काल स० १६६२ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०—७० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

१३४३. प्रति सं० ४ । पत्र स० १३४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१३४४. पद्मनंदि पच्चीसी भाषा—मन्नालाल खिन्दूका । पत्रस० ३८३ । आ० १४ × ७ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय—धर्म (आचार शास्त्र) । र०काल स० १६१५ मगसिर बुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७४ । **प्राप्ति स्थान**- भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

१३४५. प्रति सं० २ । पत्रस० २४६ । आ० १३½ × ८ इच । ले०काल स० १६६१ सावन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१३४६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २५ । आ० १४ × ८ इच । ले०काल स० १६५८ सावन बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१३४७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २८७ । आ० १२ × ८ इच । ले०काल स० १६३२ चैत बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टौक)

विशेष—भैरुलाल पहाडिया बूरुवाले ने मदिर के पचो ने लिखवाया था ।

१३४८. प्रतिसं० ५ । पत्रस० २८३ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले०काल स० १६३० आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—प० मिश्र नन्दलाल ने चन्द्रापुरी मे प्रतिलिपि की थी। चुन्नीलाल रावका की बहु एव मोतीलाल शाह की बेटी जानकी ने भेंट किया था।

१३४९. पद्मनंदि पच्चीसी भाषा × । पत्रस० ४२ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टौंक ।

१३५०. पद्मनंदि श्रावकाचार—पद्मनन्दि । पत्रस० १४ । आ० १३×८ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, ...नेर ।

१३५१ प्रति सं० २ । पत्रस० ५८ । आ० ११¾×४½ इंच । ले० काल स० १७१३ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १२८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन, मदिर अजमेर ।

१३५२. प्रति सं० ३ । पत्रस० ५७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १८५४ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १४६८ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१३५३ प्रति स० ४ । पत्रस० ६१ । आ० १०×७½ इञ्च । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

१३५४. प्रति स० ५ । पत्रस० ५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा पचायती डीग ।

१३५५. पुरुषार्थ सिद्धय्पाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्रस० ११ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १६७२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम 'जिन प्रवचन रहस्यकोष' भी है ।

१३५६. प्रति स० २ । पत्र स० २–१५ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है । ८ पत्र तक सस्कृत टिप्पणी भी है ।

१३५७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ८६ । आ० ११½ × ४½ । ले०काल स० १८१७ ज्येष्ठ सुदी १५ । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति नैणसी कृत सस्कृत टीका सहित है ।

१३५८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ८ । आ० १०½ × ४½ । ले०काल स० १७४७ भादवा सुदी १३ । वेष्टनस० ६१/५६ । **प्राप्ति स्थान** दि जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—द्रव्यपुर पत्तन मे खेमा मनोहर अमर के लिए प्रतिलिपि हुई थी ।

१३५९. प्रति सं० ५ । पत्रस० ४२ । आ० १३×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

१३६०. प्रति स० ६ । पत्रस० २७ । ले० काल स० १८८१ मङ्गसिर सुदी ३ पूर्ण । वेष्टनस० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

१३६१. प्रति सं० ७ । पत्रसं० २६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १७५० । पूर्ण । वेष्टनस० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१३६२. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१३६३. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय भाषा—महापंडित टोडरमल । पत्रस० ८६ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय—धर्म । र०काल स० १८२७ । ले० काल स० १८६५ मङ्गसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १५३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस ग्र थ की अधूरी टीका को पंडित दौलतरामजी कासलीवाल ने सवत् १८२७ मे पूरा किया था ।

१३६४. प्रति स० २ । पत्रस० १२६ । आ० ११½×६ इञ्च । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१३६५. प्रति स० ३ । पत्रस० १२७ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१३६६. प्रति स० ४ । पत्रस० ७४ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

१३६७ प्रति स० ५ । पत्र स० २१ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

१३६८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर (बयाना) ।

१३६९. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ६६ । आ० १२ × ३ इञ्च । ले०काल स० १६११ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

विशेष—चाकसू मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१३७०. प्रति स० ८ । पत्रस० ८२ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८५९ । पूर्ण । वेष्टन-स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

१३७१. प्रति सं० ९ । पत्रस० ८८ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १८३८ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा ।

विशेष—ब्राह्मण सीताराम नागपुर मध्ये लिपि कृत ।।

१३७२. प्रति स० १० । पत्र स० ८१ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोठ्यो का नैणवा ।

विशेष—लोचनपुर मे भोपतराम जी धापाराम जी ठग ने बलदेव भट्ट से प्रति कराकर कोठ्यो के मंदिर मे भेंट की थी ।

१३७३. प्रति संख्या ११ । पत्रस० १२५ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

१३७४. प्रति सं० १२। पत्रसं० ८७। आ० १२½ × ५½ इञ्च। ले०काल सं० १८६२। पूर्ण। वेष्टन सं० १०६/२४। **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा।

विशेष—ब्राह्मण भोपतराम ने सवाईमाधोपुर मे प्रतिलिपि की थी। यह प्रतिउ णियारा के मदिर के वास्ते लिखी गयी थी।

१३७५. प्रति स० १३। पत्रसं०–१२८। आ० १२ × ५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७५/१७०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर अलवर।

१३७६ प्रति सं० १४। पत्र स० १२४। ले०काल स० १६२०। **पूर्ण**। वेष्टन स० ४८–१७०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

१३७७. प्रति सं० १५। पत्र स० १०४। ले०काल ×। अपूर्ण। **वेष्टन** स० ६५/१०४। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर पचायती अलवर।

१३७८. प्रति सं० १६। पत्र स० ६६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

१३७९. प्रति स० १७। पत्रसं० ८०। ले० काल स० १८७२। पूर्ण। वेष्टन स० ३२२। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

१३८०. प्रति स० १८। पत्रसं० ७४। ले० काल स० १८६५। पूर्ण। **वेष्टन** स० ३२३। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

१३८१. प्रतिसं० १९। पत्रसं० ८८। आ० १२ × ५ इञ्च। ले० काल– ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०६। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

१३८२. प्रति स० २०। पत्र स० ६३। आ० १२ × ७ इञ्च। ले० काल स० १८७६ सावण बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ३६६। **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष--दौलतराम जी ने टीका पूर्ण की थी। जोधराज ने प्रतिलिपि कराई थी।

१३८३. प्रति सं० २१। पत्र स० १२८। लेखन काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३६। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

१३८४. प्रति सं २२। पत्र स० ६२। आ० १२ × ८ इञ्च। ले० काल स० १८७८ क्वार सुदी २ पूर्ण। वेष्टन स० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

१३८५. प्रति स० २३। पत्र स० १०६। आ० १२½ × ५½ इञ्च। ले० काल स० १८६० माघ बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० १३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर करौली।

१३८६. प्रति स० २४। पत्र स० १००। आ० ११½ × ८। ले० काल स० १६४१। पूर्ण। वेष्टन स० ३४–४८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दौसा।

विशेष—रतनचद दीवान की प्रेरणा से दौलतराम ने टीका पूर्ण की थी। शिवबक्स ने दौसा मे प्रतिलिपि की। पुस्तक छोटीलाल जी बिलाल ने दौसा के मन्दिर मे चढाई।

१३८७. प्रति सं० २५। पत्र स० १५२। आ० १०½ × ५ इञ्च। ले० काल स० १६१८ वैशाख सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—रघुनाथ ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी। लाला सुखानन्द की धर्म पत्नी ने अनन्तव्रत चतुर्दशी उद्यापन मे स० १६२६ भादवा सुदी १४ को बडा मन्दिर मे चढाई।

१३८८. प्रति स० २६. । पत्र स० १०८। आ० १३ × ६½ इञ्च। ले० काल स० ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—राजमहल मध्ये सा तेजपाल जी भाई नाराम जी तस्य पुत्र नेमलाल ज्ञाति खंडेलवाल गोत्र कटार्या ने ब्राह्मण सुखलाल से प्रतिलिपि कराकर चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे विराजमान कराया।

१३८९. पुरुषार्थसिद्धयुपाय भाषा—×। पत्र स० ८२। आ० १२ × ७ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र०काल—×। ले०काल स० १९८१। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी बूंदी।

विशेष—चदेरी मे (ग्वालियर राज्य) प्रतिलिपि हुई। प्रति मूला साह केमन्दिर की है।

१३९०. परिकर्म विधि—×। पत्र स० ५३। आ० १० × ५ इञ्च। भाषा—सस्कृत (पद्य)। विषय—धर्म। र०काल—×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रत्येक पत्र पर १० पक्ति एव प्रति पक्ति मे ३४ अक्षर है।

१३३९. पाण्डवी गीता—×। पत्र स० ११। आ० ९ × ५½ इञ्च। भाषा सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल—×। ले० काल स० १६६७ आषाढ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० १५८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१३९२. पुण्यफल—×। पत्र स० १। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय धर्म। र०काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० २६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

१३९३. प्रतिज्ञापत्र। पत्र स० १। भाषा—हिन्दी। विषय—आचार। र०काल ×। ले० काल स० १८८८। पूर्ण। वेष्टन स० ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१३९४. प्रतिमा बहतरी—द्यानतराय। पत्रस० ६। आ० १०½ × ५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल—×। ले०काल स० १८०७। पूर्ण। वेष्टन स० ४५। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

१३९५. प्रव्रज्याभिधान लघुवृत्ति—×। पत्र स० २ से १० तक। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल—×। ले०काल स० १५८१ आसोज सुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन स० २११। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

१३९५. प्रश्नमाला भाषा—×। पत्र स० २०। आ० १३ × ६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल—×। ले०काल स० १८०७ पोष सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना

विशेष—ला० तेजराम ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी थी।

१३९७. प्रश्नमाला—× । पत्र सं० ३८ । आ० ११३/४×६३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—सुदृष्टितरंगिणी में से पाठ संग्रह किया गया है ।

१३९८. प्रश्नोत्तर मालिका—× । पत्र सं० ४२ । आ० ८ ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल सं० १८९० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १८९० वर्षे शाके १७५५ प्रवर्त्तमाने उत्तरगोले उत्तरायणगत सूर्य ग्रीष्म दिने महामांगल्य प्रदेशे मासोत्तममासे ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ २ रविवासरे उदैपुर मध्ये (कुशलगढ) आदिनाथ चैत्यालये मंडलाचार्य श्री रामकीर्ति जी लिखित ग्रंथ प्रश्नोत्तर मालिका सम्पूर्ण ।

१३९९. प्रश्नोत्तररत्नमाला वृत्ति—आचार्य देवेन्द्र । पत्र सं० १४३ । आ०१० × ४३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन गद्य संस्कृत टीका सहित है । १४३ से आगे पत्र नहीं है । इत्याचार्य श्री देवेन्द्र विरचितायां प्रश्नोत्तर रत्नमाला वृत्तौ परधनामधारणायां नागदत्ता कथा ।

१४००. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८-१५१ । आ० ६१/२×४१/२ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

१४०१. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—× । पत्र सं० १६ । आ० ६३/४×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३७-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडिया का डूगरपुर ।

१४०२. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार भ. सकलकीर्त्ति । पत्रसं० २०६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १७०० फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३६ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष-ले० काल के अतिरिक्त निम्न प्रकार और लिखा है—सं० १८०१ माह सुदी १४ को अजमेर में उक्त ग्रंथ की प्रतिलिपि हुई ।

१४०३. प्रति सं० २ । पत्रसं० ११५ । आ० ८१/२ ५ इञ्च । ले० काल सं० १८४० आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०४. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १५१ । ले०काल सं० १६६५ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२८५ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०५. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १३२ । आ० १०×४३/४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०६. । प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६५ । ले०काल सं० १५८२ भादवा सुदी ११ भौम दिने । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—श्री मूलसंघे लिखित नाल्ह भोजराजा सुत ।

१४०७. प्रति सं० ६ । पत्र स० ७३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०८. प्रति स० ७ । पत्रस० ७२ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १५५३ श्रावण बुदी । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

प्रशस्ति—राउल गङ्गदास विजयराज्ये स० १५५३ वर्षे श्रावण मासे कृष्णपक्षे सोमे गिरपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण आचार्य श्री रतनकीर्ति हुबडज्ञातीय श्रेष्टि ठाकार बाई रूपिणी सुत साइआ भार्या सहिजलदे एते धर्मप्रश्नोत्तर पुस्तक लिखापित । मुनि श्री माघनदि दत्त ।

१४०९. प्रतिसं० २ । पत्र स० १२४ । **ले०काल** × । **पूर्ण** । वेष्टन स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर, अजमेर ।

१४१०. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १६४ । आ० ६½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४११. प्रति सं० ४ । पत्रस०—१६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०—१४१७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४१२. प्रति सं० ५ । पत्रस० १६ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले० काल । अपूर्ण । वेष्टन स०—१२८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४१३. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ५४ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल स० १८६५ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स०—११८६ । **प्राप्ति स्थान** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४१४. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १६० । आ० १२½×६¾ इञ्च । विषय आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८१३ फागुन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ १० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर सौगाणियो का करौली ।

विशेष—साहिबराम सौगाणी ने करौली मे प्रतिलिपि की थी ।

१४१५. प्रतिसं० ८ । पत्रस० १३२ । आ० १०½ ६ इञ्च । ले० काल स० १६०४ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

प्रशस्ति—सवत् १६६४ वर्षे पौष सुदी १४ तिथौ बुधवासरे मृगसिरनक्षत्र महाराजाधिराज श्री माधवसिंह जी राज्ये कोटा नगरे श्री महावीरचैत्यालय श्री मूलसघे नद्याम्नाय बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्द**कुन्दान्वये** भट्टारक श्री प्रभाचददेवा तत्पट्टे भ० श्रीचदकीतिदेवा तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्ति देवा तत्पट्टे भट्टारकेन्द्र भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये सोगाणी गोत्रे साह श्री सागा तद्भार्ये द्वे ··· ··एतया मध्ये साम्यक्त्वालकृतगात्र-शील्कान्ति-सौजन्य दार्यवीर्यादिगुणावलिभूषित साहजी नादा तस्य भार्या चतुर्विध ··· ।

१४१६. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ६१ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० १७३२ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—ब्र० वादिचन्द्र के पठनार्थ लिखा गया था ।

१४१७. प्रति सं० १० । पत्रसं० ८८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—चतुर्थ परिच्छेद तक है ।

१४१८. प्रति सं० ११ । पत्रसं० १३४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल संख्या १८५७ माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर पंचायती दूणी (टोंक) ।

विशेष—श्री सन्तोषराम जी स्योजीराम जी ने पंडित सीताराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

१४१९. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १०१ । आ० ११½ × ८ इञ्च । ले० काल सं० १५६७ । पूर्ण । वे० सं० १४ ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति संवत् १५६७ वर्षे द्वितीय चैत्रमासे शुक्लपक्षे द्वितीयादिने रविवासरे अद्येह धिनोई दुर्गे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसंघे श्रीसरस्वतीगच्छे श्रीबलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० विद्यानन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री वीरचन्ददेवास्तत्पट्टे श्री भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवाभ्यो नमोस्तु । मुमुक्षुणा **सुमतिकीर्तिना** कर्मक्षयार्थं श्रावकाचारो ग्रंथोलिखित ग्रंथ सं० २८८० ।

१४२० प्रति स १३ । पत्र सं० ११६ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल सं० १७५२ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७५२ वर्षे वैशाख बुदी ५ सोमवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री रत्नचन्द तत्पट्टे भट्टारक श्री हर्षचन्द्र तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे सकलतार्किकचक्रचूडामणी भट्टारक श्री अमरचन्द्र विजय राज्ये तदाम्नाये ब्रह्मचारी श्री नागराज तच्छिष्य रत्नजी विनयविनत पंडितशिरोमणीना प्रश्नोत्तररत्नमाला श्रावकाचारिय ग्रंथ स्वहस्तेन लिखितमस्ति श्री मद्यानपत्तन श्रीमज्जीर्णप्रासाद आदिनाथचैत्यालये तत्रस्थित्वा लिखिताय ग्रंथ ।

१४२१. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६१ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल सं० १६१० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—प्रशस्ति संवत् १६५० समये वैशाख बुदी चउथी ४ लिखायित पुस्तक जयराम पाड श्रावक लिखत रामकरण सुत दुर्गादास मुकाम हाजिपुर नगरे मध्य दवहरा सुभय ।

१४२२. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १७० । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १८११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पंडित श्री भार्गवदास के शिष्य नवनिधिराम नागरचाल देश में महाराजा सरदारसिंह जी के शासनकाल में नगरग्राम में चतुर्विंशति तीर्थंकर चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१४२३. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३० । ले०काल १-३२ । आसाढ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१४२४. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२७ । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१४२५. प्रति सं० १८ । पत्र सख्या—११६ । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१४२६. प्रति सं. १९ । पत्र स० १७८ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वे०स० ३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१४२७. प्रति सं. २० । पत्र स० १४० । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल स० १८३६ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१२२८.प्रति सं० २१ पत्र स० ७६ । आ० १३½×५½ इञ्च । ले० काल स० १६६६ भाद्रपद । पूर्ण । वे० स० २४७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१४२९. प्रति स० २२ । पत्रस० ८ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल स० १७०८ । पूर्ण । **वेष्टनस०** ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१४३०. प्रतिसं० २३ । पत्रस० १४८ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५९-५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है ।

१४३१. प्रति सं २४ । पत्र सं०२१४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१४३२. प्रति स० २५ । पत्र स० ८३-१५७ । आ० १२ × ५½ इञ्च । लेखन काल स० १६०३ पौष सुदी १० । अपूर्ण । वे० स० ७४६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अलवरगढ महादुर्ग मे सलेमशाह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी । ग्र थ लिखवाने वाले की विस्तृत प्रशस्ति दी है ।

१४३३. प्रति सं. २६ । पत्र स० १-६७ । आ० ११½×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१४३४. प्रति स० २७ । पत्रस० ६७ । आ० ११ ×७½ इञ्च । ले०काल स० १८८२ मगसिर सुदी १२ । **वेष्टनस०**—१६७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—किशनगढ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१४३५. प्रति स० २८ । पत्र स० ४२ । आ० १२×५½ । ले०काल स० १८१६ फाल्गुण बुदी ८ । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान** शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष- -सवाई जयपुर मे व्यास गुमानीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३६. प्रति सं० २९ । पत्र स० ६० । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूदी) ।

१४३७. प्रति सं० ३० । पत्र स० ६७ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४३८. प्रति सं० ३१ । पत्र स० ६५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४३९. प्रति सं० ३२ । पत्र स० ५६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १६६४ पूर्ण । वेष्टन स० ११६-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति– सवत् १६६४ वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे १५ रवौ लिखित ब्र० श्री ठाकरसी तत् शीष्य आचार्य श्री अमरचन्द्र कीर्ति ... ।

१४४०. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा वचनिका- × । पत्र स० ८६ । आ० १४ × ६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत हिन्दी (गद्य) । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१४४१. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा वचनिका— × । पत्र स० ५४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१४४२. प्रायश्चित ग्रंथ × । पत्र स० ३२ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा —प्राकृत-हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६०४ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

१४४३. प्रायश्चित ग्रंथ — × । पत्र स० ३० । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा —प्राकृत-सस्कृत । विषय आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६ ।
प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष झालरापाटन के सभवनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१४४४. प्रायश्चित शास्त्र—मुनि वीरसेन । पत्र स० १८ । आ० ११ × ५½ । भाषा — सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६०४ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—ग्रथ समाप्ति के बाद लिखा हुआ अश—

तर्कव्याकरणे जिनेन्द्रवचने प्रख्यातमान्यो गुरु ;

श्रीमल्लक्ष्मणसेनपट्टविमल श्री गोरसेनोद्भव ।।

सिद्धान्ते जनि पदगुरु सुविदित श्री वीरसेनो मुनि. ।

तेनेनद्रचित विशा यमखिल श्री वीरसेनामिधै. ।।

सम्वत् १६०४ वर्षे ज्येष्ठ द्वितीय शुक्ल १५ सोमवारे ।

१४४५ प्रायश्चितशास्त्र—अकलकदेव । पत्र स० ६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय - आचार । र० काल × । ले०काल स० १४४८ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६१ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन भण्डार अजमेर ।

१४४६ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूदी ।

१४४७. प्रति स० ३ । पत्र सं० १६ । आ० ४×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० **प्राप्तिस्थान** – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

१४४८. प्रति सं० ४ । पत्र स० ८ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—स० १८८५ लिपि कृत प० रतिरामेण । श्री चन्द्रप्रभाचैत्यालये ।

१४४९. प्रायश्चित समुच्चय वृत्ति—नन्दिगुरु । पत्र स० ५२ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचारशास्त्र । ले०काल × । ले०काल स० १५६४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१४५०. प्रति स० २ । पत्र स० ५४ । आ० १०¾×५¼ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१४५१. बाईस अभक्ष्य वर्णन— × । पत्र स० ६३ । आ० १०½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

१४५२. बाईस परीषह-भूधरदास । पत्र स० ३–१४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा--हिन्दी । विषय –धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१४५३. बालप्रबोध त्रिंशतिका-मोतीलाल पन्नालाल । पत्र स० ६५ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल स० १६७७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

१४५४. बुद्धिप्रकाश-टेकचंद । पत्र स० ६४ । आ० १३¾×६½ इञ्च । भाषा - हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र०काल स० १८२६ ज्येष्ठ बुदी ८ । ले० काल स० १६८० फाल्गुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

आदिभाग—

> मन दुख हर कर शिवसुग नग सकल सुखदाय ।
> हरा कर्म अरटक अरि, ते सिध सदा सहाय ।।
> त्रिभुवन तिलक त्रिलोक पति त्रिगुणात्मक फलदाय ।।
> त्रिभुवन फिर तिरकाल तैं तीर तिहारे आप ।।२।।

अन्तिम भाग—

> समत अष्टादश सत जोय, और छवीस मिलावो सोय ।
> मास जेठ बुदि आठेसार, गृ थ समापत को दिनधार ।।२२।।
> या ग्र थ के अवधार ते विधि पूरव बुधि होय ।
> छद ढाल जानें घनी समुभै बुधजन जोय ।।२३।।
> तातैं मो निज हित चहौ, तो यह सीख मनाय ।
> बुधि प्रकास सुध्याय के बाढै धर्म सुभाय ।।२४।।

पढ़ी सुनी सीखो सकल, बुध प्रकास कहत ।
ता फल शिव अघ नासिकै टेक लहो शिवसत ।।२५।।

इति श्री बुधप्रकाश नाम ग्रंथ संपूर्ण । पडित कृपाराम चौबे ने प्रतिलिपि की थी । विविध धर्म सम्बन्धी विषयो का सुन्दर वर्णन है ।

२४५५. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११५ । ग्रा० १२$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—प्रथम यह इन्दौर मे लिखा गया फिर माडल मे इसे पूरा किया गया ।

१४५६. बुद्धिविलास-बख्तराम । पत्र स० १०१ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—हिंदी पद्य । विषय—धर्म । र० काल स० १८२७ । ले० काल स० १८६६ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १२१-१०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—इसमे जयपुर नगर का ऐतिहासिक वर्णन भी है ।

१४५७. ब्रह्मबावनी-निहालचन्द । पत्र स० ४ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल स० १८०१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—मकसूदाबाद (बगाल) मे ग्रंथ रचा गया था ।

१४५८. प्रश्नोत्तरोपासकाचार-बुलाकीदास । पत्रस० ११६ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । र० काल स० १७४७ वैशाख सुदी २ । ले० काल स० १८०२ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन शास्त्र भडार अजमेर ।

१४५९ प्रतिसं० २ । पत्रस० १६२ । ले० काल स० १८७६ भादो सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति दीवान जोधराज कासलीवाल ने लिखवाई थी ।

१४६०. प्रति सं० ३ । पत्रस० १४२ । ले० काल स० १८१३ आसोज वदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष निहालचन्द अर्ता द्वारा लिखी गयी थी ।

१४६१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १२४ । ग्रा० ११×८ इञ्च । ले० काल स० १८८८ कार्तिक वदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४ । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१४६२. प्रति सं० ५ । पत्र स० १२१ । लेखन काल स० १८३३ पौष वदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

१४६३. प्रति सं० ६ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा ।

१४६४. प्रति सं० ७ । पत्र स० ११८ । ग्रा० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८५७ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ६३-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तेरहपथी दौसा ।

विशेष – चिमनराय तेरापथी ने इसकी प्रतिलिपि की तथा दौलतराम तेरापथी ने इसे दौसा के मन्दिर मे चढाया था।

१४६५. प्रति स० ८ । पत्र स० १२६ । ले०काल स० १७६१ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण। वेष्टन स० ८२-१५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर।

१४६६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १६१। ले० काल स० १८८५ पौष बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ४३-१५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

१४६७. प्रति सं० १० । पत्र स० १४२। आ० ६½ × ६¾ इञ्च। ले० काल स० १८०० चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

१४६८. प्रति स० ११ । पत्र स० १-५७। आ०-११½ × ५½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

१४६९. प्रति स० १२ । पत्र स० १२१। आ० १२ × ५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८६-६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारार्यासह (टोक)।

विशेष —मालपुरा मे शिवलाल ने लिपि की थी। स० १८३६ मे नदलाल गोधा की बहू ने टोडा के मन्दिर मे चढाया था।

१४७०. प्रति सं० १३ । पत्र स० १२७। आ० १०½ × ३½ इञ्च। ले० काल स० १८५०। पूर्ण। वे० स० ३६६। **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी)

१४७१. प्रति स० १४ । पत्र स० १०६। आ० १२ × ६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३१६-११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

१४७२. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १५३। आ० ११½ × ५½ इञ्च। ले०काल स० १८२७। पूर्ण। वेष्टनसं० २००-८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

१४७३. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ६६। आ० ११ × ७ इञ्च। ले०काल स० १८८६ श्रावण सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० ४०-२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

१४७४. प्रति सं० १७ । पत्रस० १३५। आ० ८½ × ६½ इञ्च। ले०काल स० १७५५ वैशाख सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

१४७५ प्रति सं० १८ । पत्रस० १३६। आ० १२ × ५ इञ्च। ले० काल स० १७२४ सावरा बुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

१४७६. प्रतिसं० १९ । पत्रस० ६७। ले० काल—स० १८७६। पूर्ण। वेष्टनस० २४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—जीर्ण-पानी मे भीगे हुए पत्र है।

१४७७. प्रति स० २० । पत्रस० १४४। आ० १२ × ४½ इञ्च। **ले०काल**—स० १७८२ पौष बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ४०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

१४७८. प्रतिसं० २१ । पत्रस० १२४। आ० १२ × ५ इञ्च। ले०काल स० १६१०। पूर्ण। वेष्टनस० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)।

विशेष—पं० गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४७९. प्रतिसं० २२। पत्रसं० १४१। आ० १२ × ५½ इञ्च। ले०काल सं० १८४१ पौष बुदी १२। पूर्ण। वेष्टनसं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा।

विशेष—कोट्यो के देहरा मे ब्रजवासी के पठनार्थ पडित अखैराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४८०. प्रति सं० २३। पत्रसं० ८०। आ० ११½ × ६ इञ्च। ले०काल— सं० १६१०। पूर्ण। वेष्टन सं० १६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)।

१४८१. भगवतीआराधना—शिवार्य। पत्रसं० ११। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १२३। **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१४८२. प्रतिसं० २। पत्रसं० १२३। आ० १२½×५½ इञ्च। **ले०काल** सं० १७३२ चैत्र सुदी ६। वेष्टन सं० ५७। **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—मालपुरा मे राजा रामसिंह के शासन काल मे प्रतिलिपि हुई थी।

१४८३. प्रतिसं० ३। पत्र सं० ६५। र०काल ×। ले०काल सं० १५११ वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग।

प्रशस्ति—संवत् १५११ वर्षे वैशाख वदि ७ गुरौ पुष्यनक्षत्रे सकलराज-शिरोमुकुट-माणिक्य मरीचि पं० अगीकृत चरणकमलपादपीठस्य श्री राणा कुंभकर्ण सकल-साम्राज्य-धुरौ विभ्राणस्य समये श्री मंडलगढ शुभस्थाने आदिनाथ चैत्यालये ......।

१४८४. भगवती आराधना टीका। पत्र सं० २०८। आ० १२½×६¾ इञ्च। भाषा—प्राकृत—संस्कृत। विषय—आचार। र०काल ×। ले०काल सं० १६३२ मंगसिर सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है।

१४८५. भगवती आराधना टीका। पत्र सं० २८१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत संस्कृत। विषय—आचार। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टन सं० १५४६। **प्राप्ति-स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है। सं० १६११ मे यह प्रति सेठ जुहारमल जी सोनी के घर से चढाई गई थी।

१४८६. भगवती आराधना (विजयोदया टीका) अपराजित सूरि। पत्र संख्या ११८ से ५६४। आ० ११ × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार। र०काल ×। लेखन काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४३८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

१४८७. प्रतिसं० २। पत्रसं० ५१४। ले०काल सं० १७६४ भादो वदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० २८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१४८८. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ३३३। आ० १२½×६½ इञ्च। ले० काल सं० १८६४ चैत्र बुदी ७। वेष्टन सं० ३०। **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—महात्मा शभुराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१४८९. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २४८ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले०काल स० १७८६ कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० १७५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

१४९०. भगवती आराधना टीका—नन्दिगणि । पत्रस० ४३८ । आ० १०½ × ७ इञ्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन शास्त्र मन्दिर अजमेर ।

१४९१. प्रति स० २ । पत्र स० ३०८ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३-७५ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प० शिवजीराम की दूणी के चैत्यालय की प्रति है ।

१४९२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६५२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

१४९३. भगवती आराधना भाषा—प. सदासुख कासलीवाल । पत्रस० [illegible] । आ० १२½ × ७ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय-आचार । र०काल स० १९०८ भादवा सुदी २ । ले०काल– स० १९६१ कार्तिक बुदी १० । अपूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान** - भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१४९४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५२६ । आ० १४ × ८½ इञ्च । ले०काल स० १९[illegible] भादवा बुदी [illegible] । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर फतहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—पन्नालाल [illegible] पद्मावती पोरवाल [illegible] सिकन्दरा (आगरा) [illegible] करवाई थी ।

१४९५ प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४४८ । आ० ११ × [illegible] इञ्च । ले० काल स० १९[illegible] म[illegible] बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० २/७ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर [illegible] ।

१४९६. प्रति स० ४ । पत्र स० २८३ से ६८१ । आ० ११ × [illegible] इञ्च । ले० काल स० १९१० । आषाढ सुदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन [illegible] मंदिर [illegible] ।

१४९७. प्रतिसं० ५ । पत्र स० [illegible] । आ० ११ × ८¼ इञ्च । ले० काल स० १९१० [illegible] बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान** —दि०जैन [illegible] मन्दिर [illegible] ।

१४९८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० [illegible] । ले०काल [illegible] । पूर्ण । वेष्टनस० [illegible] । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जयपुर मे लिखवाकर ग्रन्थ भरतपुर के मन्दिर मे [illegible] ।

१४९९. प्रतिस० ७ । पत्रस० ४०० । आ० [illegible] । ले०काल [illegible] । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर, [illegible] ।

१५०० प्रतिसं० ८ । पत्र स० ५०० । आ० [illegible] ½ इञ्च । ले० काल स० १९२० । [illegible] । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मंदिर [illegible] ।

१५०१ प्रतिसं० ६ । पत्र स० ५१६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १४ १० ।**प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

१५०२. प्रतिसं० १० । पत्र स० ८६० । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोठ्यो का नैणवा ।

१५०३. प्रति स० ११ । पत्र स० ८६ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

१५०४. प्रति स० १२ । पत्र स० ८२० । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले०काल स० १८३० मङ्गिसर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना के पच श्रावको ने मिश्र गनेश महुआ वाले से प्रतिलिपि करायी थी ।

१५०५. प्रति स० १३ । पत्र स० ३०१ । आ० १०½ × ७½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१५०६. प्रति स० १४ । पत्र स० ८६५ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ८६-२८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१५०७. प्रति स० १५ । पत्र स० ८२८ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१५०८. प्रति स० १६ । पत्र स० २८२ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर [illegible] ।

१५०९ भद्रबाहु सहिता—भद्रबाहु । पत्र स० ३० । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—[illegible] । र० काल [illegible] । ले० काल—वीर निर्वाण स० २४४१ । पूर्ण । वेष्टन ५६/३५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—[illegible] प्रतिलिपि की थी ।

१५१०. प्रति स० २ । पत्र स० १०-३२ । आ० १०½ × ८½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० ८२ । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान)

१५११. भावदीपक भाषा— । पत्र स० ५४ । आ० १३ × ६½ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल । ले० काल । अपूर्ण । वेष्टन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर [illegible] कोटा ।

१५१२. भाव प्रदीपिका— × । पत्रस० ५०-२१५ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल । ले०काल । अपूर्ण एव जीर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तेरहपथी दौसा ।

१५१३. भावशतक—नागराज । पत्र स० ११ । आ० ११ × ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर । लिखित ब्रह्म डालू आभेरी ।

१५१४ भावसंग्रह—वामदेव। पत्र स० ४२। ग्रा० १४×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० ६१-३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—भ० विजयकीर्त्ति की प्रति है।

१५१५ प्रतिसं० २। पत्रस० २३। ग्रा० १२×६½ इञ्च। ले०काल स० १८६१ भादवा बुदी ३। पूर्ण। वेष्टनसं० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—पत्रो को चूहो ने खा रखा है। नोनदग्राम जी पुत्र हनुलाल जी ने दौसा के मन्दिर के वास्ते भोपत ब्राह्मण से सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

१५१६. प्रतिसं० ३। पत्रस० ४१। ग्रा० ११×४¾ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१५१७. प्रतिसं० ४। पत्रस० ४६। ग्रा० ११×४½ इच। ले० काल स० १६०३ पौष सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी।

१५१८ प्रतिसं० ५। पत्रस० ६०। ग्रा० १३×५½ इञ्च। ले० काल स० १६३३ श्रावण सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी।

१५१९. भावसंग्रह—देवसेन। पत्रस० ३८। ग्रा० १०½×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल ×। ले०काल स० १५४१ पौष बुदी ८। वेष्टनस० १३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन शास्त्र भण्डार मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—मु० गयासुद्दीन के राज्य मे कोटा दुर्ग मे श्री वर्द्धमान चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

१५२० प्रतिस० २। पत्रस० ३५। ग्रा० ११½×५। ले० काल स० १६०० आषाढ बुदी १४। पूर्ण। वेष्टनस० १२४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—वडवाल नगर के आदिनाथ चैत्यालय म प्रतिलिपि हुई थी।

१५२१. प्रतिसं० ३। पत्रस० ६१। ग्रा० ११×५ इच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ११। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)।

विशेष—प्रति प्राचीन है लिपिकाल के पत्र पर दूसरा पत्र चिपका दिया गया है।

१५२२. भावसंग्रह—श्रुतमुनि। पत्र स० ३८। ग्रा० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६७८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर शास्त्र भण्डार अजमेर।

१५२३ भावसग्रह टीका—×। पत्र स० ९६। ग्रा० १० ×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल- ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

१५२४ भावसग्रह टीका—×। पत्र स० १९। ग्रा० १०×६½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल-×। ले० काल स० १८३२ श्रावण शुक्ला ८। पूर्ण। वे० स०—२५६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—सवाई जयपुर मे पं० केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२५. महादण्डक—विजयकीर्ति । पत्र स० ६६ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल—स० १८२६ । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७०८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—

सोरठा—सवत् जानि प्रवीन अठारासै गुणतीस लखि ।

महादडक सुभ दीन, ज्येष्ठ चोथि गुरु पुस्य शुक्ल ।।

गढ अजमेर सुथान श्रावक सुख लीला करैं

जैन धर्म बहु मान देव शास्त्र गुरु भक्ति मन ।

इति श्री महादडक करर्णानुयोग भट्टारक श्री विजयकीर्ति विरचिते लघु दण्डक वर्णन इकतालीसमा अधिकार ४१ । स० १८२६ का ।

१५२६. मिथ्यात्वखण्डन—बख्तराम ।पत्र स० ६३ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-धर्म । र०काल स० १८२१ पोष सुदी ५ । ले० काल स० १८६२ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४०१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, शास्त्र भडार अजमेर ।

१५२७ प्रतिसं० २ । पत्र स० ८६ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१५२८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ११८ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८५३ आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२ । **प्राप्ति स्थान** -- भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष --जयनगर मे मन्नालाल लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२९ प्रति स० ४ । पत्र स० २५ । आ० ११ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८६३ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्तिस्थान**--दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

१५३० मिथ्यामतखडन । पत्र स० ४ । भाषा -हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल— × । ले०काल - × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१५३१ मिथ्यात्व निषेध । पत्र स० १६ । आ० १३$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

१५३२. मिथ्यात्व निषेध-- × । पत्रस० ४४ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र० काल - × । ले० काल०—× । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—तनसुख अजमेरा ने स्वय पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । कुल लागत १।।।) ≡ ।

१५३३. मिथ्यात्व निषेध— × । पत्रस० २७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १८६८ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—पन्नालाल वैद अजमेरा ने लिखा ।

१५३४. मिथ्यात्व निषेध— । पत्र सं० ३१ । ग्रा० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी(गद्य) । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल सं० १८९८ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—मोहनलाल ने गढ गोपाचल (ग्वालियर) में प्रतिलिपि की थी । श्रीराम के पठनार्थ पुन बलदेव ने ग्वालियर में पुस्तक लिखी थी ।

१५३५. मिथ्यात्व निषेध— × । पत्र सं० ३४ । ग्रा० १२½×७ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । र०काल-- × । **ले०काल** सं० १९९९ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—चौबे छुट्टीलाल चदेरीवालों ने खुरई मे प्रतिलिपि की थी ।

१५३६. मिथ्यात्व निषेध— × । पत्र सं० ३६ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल　। ले०काल १८३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१५३७. मिथ्यात्व निषेध । पत्र सं० ३० । ग्रा० १०½×५½ इञ्च । भाषा--हिन्दी (पद्य) । विषय-चर्चा । र०काल—× । **ले०काल** सं० १८९९ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन　। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१५३८. मिथ्यात्व निषेध । पत्र सं० ३२ । ग्रा० १३×५ इञ्च । भाषा --हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१५३९. मुक्तिस्वयंवर—वेणीचन्द । पत्रसं०—३१८ । ग्रा० १३½×[illegible] इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य पद्य) । विषय—धर्म । र०काल सं० १९३४ कार्तिक बुदी ९ । ले० काल सं० १९[illegible] [illegible] बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं०—१३६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर फतेहपुर [illegible] ।

अन्तिम　लसकर सौं आर भियो पूरण इन्दौर जान ।
कार्तिक वद नौमी दिना मध्य उगनीससै चालीस मान ।
जा दिन से आर भियो पूरण के दिन मान ।
याही बरस मगसर वदी तेरस रवी प्रमान ।
स्वात नक्षत्र जिस दिवस मिथुन लग्न मझार ॥
जग माता परसाद ते पूरण भयो जु सार ॥ ३ ॥
इति श्री मुक्ति स्वयंवर जी ग्रंथ भाषा वचनिका सपूर्ण ।
वणीचन्द मलूक चन्द का पुत्र फलटन का निवासी था ।

१५४०. मुनिराज के छियालीस अन्तराय—भैय्या भगवतीदास । पत्रसं० २ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय--आचार शास्त्र । र०काल सं० १७५० आषाढ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान** --भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१५४१. मूलाचार सूत्र—वट्टकेराचार्य । पत्रसं० ३० । ग्रा० ११½×४½ इञ्च । भाषा--प्राकृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१५४२. मूलाचार वृत्ति—वसुनंदि । पत्रसं० ६ से २४७ । आ० १२३/४×५१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१५४३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २६० । आ० १११/२×४१/२ इञ्च । ले०काल सं० १७३० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५-७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १७३० वर्षे पौष बुदी ५ बुधे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिस्तदन्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि तत्पट्टे श्री देवेन्द्रकीर्तिगुरूपदेशात श्री उदयपुरे श्री शभवनाथचैत्यालये हूं बडज्ञातीय वृद्धसाख्य गढीआ भीमा भार्या बाई पुरी तयो पुत्र गढीआ रणछोड भार्या लक्ष्मी तयो सुत लालजी राघवजी एते स्वज्ञानावरण कर्मक्षयार्थं श्री मूलाचार ग्रंथ मूल्येन गृहीत्वा ब्रह्म श्री संघ जी तत्शिष्य ब्रह्म लाडूकायदत्त ॥

१५४४. मूलाचार प्रदीप—सकलकीर्त्ति । पत्रसं० १८२ । आ० ९×४१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८७५ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—राजगढ़ में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५४५. प्रति सं० २ । पत्रसं० १०४ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल सं० १८६१ चैत्र बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

१५४६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १६० । आ० १११/२×४१/२ इञ्च । ले०काल १८[illegible] चैत्र बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—श्वेताम्बर मालीराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१५४७ मूलाचार भाषा ऋषभदास निगोत्या । पत्रसं० ३२३ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल सं० १८८८ कार्तिक सुदी ७ । ले०काल [illegible] । पूर्ण । वेष्टन सं० २९ [illegible] । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—वसुनन्दि की संस्कृत टीका के आधार पर भाषा टीका की गई थी । इस ग्रंथ की भाषा सर्व प्रथम नन्दलाल ने प्रारम्भ की थी तथा ६ अधिकार ४ गाथा तक भाषा टीका पूर्ण करने के पश्चात् उनका स्वर्गवास हो गया था फिर इसे ऋषभदास ने पूर्ण किया ।

१५४८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ४४४ । आ० १४ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९३४ [illegible] बदी [illegible] । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयूर [illegible] [illegible] ।

विशेष—[illegible] सं० १९४४ [illegible] सुदी ८ [illegible] बालचंदजी [illegible] फतेहपुर [illegible] ने जैन मन्दिर में चढ़ाया था । [illegible] वेष्टनों में है ।

१५४९. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० [illegible] । आ० [illegible] इञ्च । ले०काल सं० [illegible] । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—इसमें मूलाचार के चरित का वर्णन [illegible] [illegible] [illegible] चन्देरी में १५१ रु. में इस प्रति को खरीदा है ।

१५५०. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ३६१ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

१५५१. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ४४८ । आ० १५ × ६ इंच । ले० काल सं० १६५५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

१५५२. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ४०८ । आ० ११½ × ६ इंच । ले०काल सं० १६०० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—फागी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५३. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ४६२ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १६४१ । वेष्टन सं० ८३/२ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—मागीलाल जिनदास ने गणेशलाल पाण्ड्या चाटसू वाले से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१५५४. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ३७२ । ले० काल १८६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सगही अमरचन्द दीवान की प्रेरणा से यह ग्रंथ पूरा किया गया था । श्री कुन्दनलाल द्वारा इसकी जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५५. प्रतिसं० ९ । पत्र सं० ६७४ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले० काल सं० १६३२ वैसाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं०३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष —गनेश महुआ वालो ने प्रतिलिपि की थी ।

१५५६. प्रतिसं० १० । पत्रसं० १–१५० । आ० १०½ × ७½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

१५५७. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ४०० । आ०-१३½ × ७½ इञ्च । ले० काल सं० १६५१ फागुन बुदी ४ । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, करौली ।

१५५८. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६३० । आ० १२ × ८ इञ्च । ले० काल सं० १६०४ । अपूर्ण । वे०सं० १०/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा ।

१५५९. प्रतिसं० १३ । पत्र सं० ३६२ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५-७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् अठारहसै अठ्यासी मास कातिग मे ।
स्वेत पक्ष सप्तमी गुरतिथि शुक्रवार है ।
टीका देश भाषा मय प्रारम्भी सुनन्दलाल ।।
पूरन करी ऋषभदास निरधार है ।

इति श्री वट्टकेर स्वामी विरचित मूलाचार नाम प्राकृत ग्रंथ की वसुनन्दि सिद्धांत चक्रवर्ति विरचित आचार वृत्ति नाम सस्कृत टीका के अनुसार यह सक्षेपक भावार्थ मात्र देश भाषा मय वचानिका सपूर्ण ।

१५६०. मोक्षमार्ग प्रकाशक महा—प० टोडरमल। पत्रस० २८८। आ० ८३/४×७१/२ इच। भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य। विषय—धर्म। र०काल स० १८२७ के आस पास। ले०काल स०—१६२४। अपूर्ण। वेष्टन सं० १६०७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इसमे मोक्ष माग के स्वरूप का बहुत सुन्दर ढग से वर्णन किया गया है टोडरमल जी की अन्तिम कृति है जिसे वे पूर्ण करने के पहले ही शहीद हो गये थे।

१५६१. प्रति सं० २। पत्रस० २४७। आ० १०×७१/२ इच। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी।

१५६२. प्रति सं० ३। पत्रस० २३७। आ० ११×५ इन्च। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० ७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

१५६३. प्रति सं० ४। पत्रस० १५० से ३२७। आ० १३१/२×७ इन्च। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

विशेष—श्री आदिनाथ महाराज के मन्दिर मे श्री जवाहरलाल जी कटारया ने अनतव्रत जी के उपलक्ष मे चढाया मिती भाद्रपद शुक्ला स० १६३६।

१५६४ प्रति सं० ५। पत्रस० २४६। आ० १११/२×६ इच। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टनस० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल, टोक।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है।

१५६५ प्रति सं० ६। पत्रस० १९९। आ० १३×७ इच। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टनस० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

१५६६. प्रति सं० ७। पत्रस० २८६। आ० १२१/२×६१/२ इन्च। ले० काल० ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

१५६७. प्रति सं० ८। पत्रस० ४४३। आ० ६×६१/२ इन्च। ले० काल स० १८८५ आषाढ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपन्थी मालपुरा (टोक)।

विशेष—प० शिवप्रिय ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

१५६८. प्रति सं० ६। पत्र स० २६७। आ० ११×८ इन्च। ले०काल स० १६२२ पौष सुदी १२। अपूर्ण। वेष्टन स० १४३। **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

१५६९. प्रति सं० १०। पत्रस० २४६। आ० १३१/२×७ इन्च। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टनस० १० ७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर।

१५७०. प्रति स० ११। पत्रस० २६७। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन स० ११/६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

१५७१. प्रति स० १२। पत्रस० २१२। ले०काल—×। पूर्ण। जीर्ण शीर्ण। वेष्टन स० १४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१५७२. प्रति सं० १३। पत्रस० २०६। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—माधोसिह ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१५७३. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ३०५ । ले०काल × । अपूर्ण (२ से १८४ तक पत्र नही है) । वेष्टनस० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१५७४. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १०८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१५७५. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २३६ । आ० १३×६½ इञ्च । ले०काल स० १६३१ चैत बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—हीरालालजी पोतेदार ने प्रतिलिपि करवायी थी । बयाना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५७६. प्रतिसं० १७ । पत्रस० २४० । आ० १२½×७½ इञ्च । ले०काल स० १६०० । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

१५७७ प्रतिसं० १८ । पत्रस० २३० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२ (क) । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मन्दिर बैर (बयाना) ।

१५७८. प्रतिसं० १९ । पत्र स० १६-६७ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

१५७९. प्रतिसं० २० । पत्र स ३१० । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल स० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१५८०. प्रति स० २१ । पत्रस० २०२ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

१५८१. प्रतिसं० २२ । पत्रस० २०२ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

१५८२ प्रतिसं० २३ । पत्रस० १४४-२६४ । ले० काल स० १६१५ आषाढ सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टनस० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

१५८३. प्रतिसं० २४ । पत्रस० १४३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

१५८४. प्रति स० २५ । पत्रस० २७८ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

१५८५. प्रति स० २६ । पत्रस० १५७ । आ० ११½ × ६½ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २४, २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

१५८६. प्रति स० २७ । पत्रस० २४७ । आ० १२ × ५ इच । ले०काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ७१/६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—साह जीवणराम ने भादवा मे प्रतिलिपि करवाई । दो प्रतियो का मिश्रण है ।

१५८७. प्रति स० २८ । पत्रस० १८० । आ० १३½ × ६½ इच । ले०काल स० १६१८ श्रावण सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टनस० ३४ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—हरिकिशन अग्रवाल ने स्वय पठनार्थ व्यास सिवलाल ममाई (बम्बई) नगर मे कराई। प्रति पूरी नकल नही हुई है।

१५८८. प्रति स० २६। पत्रसं० २१२। आ० १३$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १६७७ आषाढ बुदी ८। पूर्ण। वेष्टनस० १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—वीर स० २४४६ भादवा सुदी ७ को जगावरमल मटरूमल ने बडा मन्दिर मे चढाया।

१५८९. प्रति स० ३०। पत्रस० २१०। आ० १३×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बून्दी।

विशेष—२१० से आगे पत्र नही है।

१५९०. प्रति सं० ३१। पत्र स० २६१। आ० ११ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

१५९१. प्रति स० ३२। पत्रस०२१०। आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

१५९२. प्रति स० ३३। पत्रस० ४०३। आ० १३×७ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १५३/१३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

१५९३. मोक्षमार्ग बावनी – मोहनदास। पत्र स० ७। आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय – धर्म। र०काल ×। ले० काल स० १८३५ मङ्गसिर सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० २६१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—ग्रथ रामपुरा (कोटा) मे लिखा गया था।

१५९४. मोक्ष स्वरूप — ×। पत्र स० २५। आ० १०×३$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३६२। **प्राप्ति स्थान**–भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१५९५ यत्याचार वृत्ति – वसुनदि। पत्र स० १३-३८०। आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय – आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल स० १५९५। अपूर्ण। वेष्टन स० २३४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

१५९६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार—आचार्य समन्तभद्र। पत्रस० १३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—श्रावक धर्म का वर्णन। र०काल ×। ले० काल स० १५८३। पूर्ण। वेष्टन स० १०४२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—संस्कृत मे संक्षिप्त टीका सहित है।

१५९७. प्रति सं० २। पत्र स० १३। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११२३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

१५९८. प्रतिसं० ३। पत्र स० ३०। र०काल ×। ले० काल स० १९५३। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालों का डीग।

१५९९. प्रतिसं० ४। पत्र सं० १८। आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल स० १७५६ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १५३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१६००. प्रति स० ५। पत्र स० १५। ले० काल स० १६५४। वेष्टन स० ४४८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१६०१. प्रति स० ६। पत्र सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर।

१६०२. प्रति सं० ७। पत्रस० ८। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल सं० १६२१। पूर्ण। वेष्टनस० १५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

१६०३. प्रतिसं० ८। पत्रसं० ११। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १८/१३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

१६०४. प्रतिसं० ६। पत्र स २७। आ० १०½ × ४ इञ्च। ले०काल स० १६५४। वैशाख बुदि १४। पूर्ण। वेष्टन स० ६३। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर, आदिनाथ बूंदी।

१६०५. प्रति स० १०। पत्र स० १५। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण वे० स० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी

१६०६. प्रति सं० ११। पत्र स० १३। आ० १३ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३४४/१६० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

१६०७. प्रति सं० १२। पत्र स० १८। आ० ९×४ इञ्च। ले० काल स० १६६६। पूर्ण। वेष्टन स० ४५०/१६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६६ वर्षे फागुण सुदी १५ श्री मूलसघे भट्टारक श्री वादिभूषण शिष्य ब्र वर्द्धमान पठनार्थं। ग्रथ का नाम उपासकाध्ययन भी है।

१६०८. प्रति स० १३। पत्र स० १६। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

१६०९ प्रतिसं० १४। पत्र स० ३५। आ० ६½×५ इञ्च। ले० काल । वेष्टन स० ६५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति सस्कृत व्याख्या सहित है।

१६१०. रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका-प्रभाचन्द। पत्र स० २४। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल स० १४४६। पूर्ण। वेष्टन ×। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१६११. प्रतिसं० २। पत्रस० ५६। आ० १० × ४½ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

१६१२. प्रतिसं० ३। पत्रस० १८। आ० ११½ × ५ इञ्च। भाषा— ×। ले०काल स० १५३३ वैसाख सुदी ३। वेष्टनस० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१६१३. प्रतिसं० ४। पत्रस० ५६। आ० १० × ४ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है। प्रति प्राचीन है।

१६१४. रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका: × । पत्रस० १-३० । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० ७१६ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६१५. रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका । पत्रस० ५६ । आ० ६ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६५६ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटयों का नैणवा ।

विशेष—मथुरा चौरासी मे लिखा गया था । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१६१६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा-प० सदासुख कासलीवाल । पत्र स० २३१ । आ० १४×८ इच । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय—श्रावक धर्म वर्णन । र०काल स० १६२० चैत्र बुदी १४ । ले०काल सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टनस० १५६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—आ० समन्तभद्र के रत्नकरण्ड श्रावकाचार की भाषा टीका है ।

१६१७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३५ । आ० ११ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × अपूर्ण । वेष्टन स० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—सदासुख कासलीवाल की लघु वचनिका है ।

१६१८. प्रति स० ३ । पत्रस० ४०१ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६३५ जेठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—बघेरा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१६१९. प्रति स० ४ । पत्रस० १६६ । ले०काल स० १६२१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१६२०, प्रतिसं० ५ । पत्र स० ३३२ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२१. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ५५७ । आ० १३×५ इञ्च । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२२. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ५७३ । ले० काल स० १६२० । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२३ प्रतिसं० ८ । पत्र स० ३६४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ८ इञ्च । ले०काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

१६२४. प्रतिसं० ९ । पत्रस० २६१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ८ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३२६ । आ० १४$\frac{1}{4}$ × ७$\frac{3}{4}$ इंच । ले०काल स० १६२४ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर (शेखावाटी-सीकर) ।

विशेष—सदासुख की स्वय की लिखी हुई प्रति मे प्रतिलिपि की गई थी। यह ग्र थ स्व० सेठ निहालचद की स्मृति मे उनके पुत्र ठाकुरदास ने फतेहपुर के बड़े मदिर मे चढाया सवत् १९८४ आषाढ सुदी १५।

१६२६. प्रति सं० ११ । पत्र स० ४१६ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल स० १९५५ माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—प्रति सुन्दर है। द्वारिकाप्रसाद ने प्रतिलिपि की थी।

१६२७. प्रति सं० १२ । पत्र सख्या ५७० । ले० काल स० १९२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—प्रति दो वेष्टनो मे है। सदासुख कासलीवाल डेडाका ने गोरूलाल पाड्या चौधरी चाटसू वाले से प्रतिलिपि कराई थी।

१६२८. प्रति सं० १३ । पत्र स० ४३२ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११/४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

विशेष—स्वय ग्र थकार के हाथ की लिखी हुई प्रति प्रतीत होती है।

१६२९ प्रति स० १४ । पत्र स० ३९६ । आ० १२ × ७¾ इञ्च । ले० काल स० १९३१ आषाढ वदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१६३०. प्रति सं० १५ । पत्र स० २२७ । आ० १२ × ७½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१६३१. प्रति सं० १६ । पत्र स० ४५२ । आ० १२ × ७½ इञ्च । ले० काल- × पूर्ण । वेष्टन स० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१६३२. प्रति सं० १७ । पत्र स० ३०८-६५० । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले० काल । स० १९३२ । अपूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—अखयगढ मे प्रतिलिपि की गई थी।

१६३३. प्रति सं० १८ । । पत्रस० २१२ । आ० १२¾ × ७½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—पत्र स० २१२ से आगे के पत्र नही है।

१६३४. प्रति सं० १९ । पत्रस० ३४० । आ० १२ × ७ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

१६३५. प्रति सं० २० । पत्र स० ३६२ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—३६२ के आगे के पत्र नही हैं।

१६३६. प्रतिसं० २१ । पत्र स० ४८० । ले० काल स० १९२१ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१६३७. प्रति सं० २२ । पत्र स० ३२९ । आ० १५ × ९ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

१६३८. प्रति सं० २३। पत्र स० २५८। आ० १२½ × ७½ इञ्च। ले० काल स० १६७५। पूर्ण। वेष्टन स० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

१६३९. प्रति सं० २४। पत्र स० २६६। आ० १३×८ इञ्च। ले० काल स० १६३१। पूर्ण। वेष्टन स० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

१६४०. प्रति स० २५। पत्र स० ४०६। आ० ११ × ८ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मदिर अलवर।

१६४१. प्रति सं० २६। पत्र स० ३६०। आ० १३ × ८ इञ्च। ले० काल स० १६२४। अपूर्ण। वेष्टन स० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)।

१६४२. प्रति सं० २७। पत्र स० ४१४। आ० १२ × ८ इंच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—पत्र स० ४१४ से आगे नहीं है।

१६४३. प्रतिसं० २८। पत्र स० ३६६ से ५३०। आ० ११½ × ७½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

१६४४. प्रति स० २६। पत्रस० ३८७। आ० १२ × ७ इंच। ले०काल—स० १६६३। पूर्ण। वेष्टनस० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बधेरवालों का, आवा (उणियारा)।

विशेष—चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

१६४५. प्रति सं० ३०। पत्रस० ५००। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा

१६४६. प्रतिसं० ३१। पत्रस० ५०६। आ० ११ × ७½ इच। ले०काल—स० १६२४। पूर्ण। वेष्टनस० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी बूदी।

१६४७. प्रतिसं० ३२। पत्रस० ४८६। आकार ११ × ७½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी बूदी।

१६४८. प्रति सं० ३३। पत्रस० ३५६। आ० १४ × ८ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १५०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी।

१६४९. प्रति सं० ३४। पत्रस० ४१३। आ० १२½ × ६½ इञ्च। ले०काल स० १६५५। पूर्ण। वेष्टनस०-२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

१६५०. प्रति स० ३५। पत्र स० ३२२। आ० ६४ × ७½ इञ्च। ले० काल स० १६६१ चैत्र वदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

विशेष—चदेरी मे चोबे दामोदर ने प्रतिलिपि की थी।

१६५१. रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा वचनिका—पन्नालाल दूनीवाला। पत्रस० ३४। आ० १०¾ × ६¾ इञ्च। भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य। विषय—श्रावक धर्म का वर्णन। र०काल स० १६३१ पौष बुदी ७। ले० काल स० १६५६। पूर्ण। वे० स० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—पं० फतेहलाल ने इस टीका को शुद्ध किया और पं० रामनाथ शर्मा ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

१६५२. रत्नकोश सूत्र व्याख्या— × । पत्र स० ७ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१६५३. रत्नत्रय वर्णन— × । पत्र स० ३७ । ग्रा० १२½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—पत्र २२ से आगे दश लक्षण धर्म वर्णन है पर वह अपूर्ण है ।

१६५४. लाटीसंहिता—पांडे राजमल्ल । पत्र स० ७७ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १६४१ । ले० काल स०१८४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१६५५. प्रति सं० २ । पत्र स० ६४ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले० काल स० १७१० । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

विशेष—पत्र भीगे हुए हैं ।

१६५६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७८ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले० काल स० १८८६ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूणी ।

विशेष—दूणी नगर मे पार्श्वनाथ के मन्दिर मे पडित जी श्री १०८ श्री सीताराम जी के शिष्य शिवजी के पठनार्थ लिखी गयी थी ।

१६५७. लोकांमत निराकरण रास-सुमतिकीर्त्ति । पत्र स० १३ । ग्रा० १४½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल स० १६२७ चैत्र बुदी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१६५८. वसुनन्दि श्रावकाचार—आ० वसुनन्दि । पत्र सं० १७ । ग्रा० १० × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८१० माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

वशेष—इसका दूसरा नाम उपासकाध्ययन भी है ।

१६५९. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११ । ग्रा० ११½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६६०. प्रति सं० ३ । पत्रस० १६ । ग्रा० ११×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर ।

१६६१. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५५ । ग्रा० ८½×६ इञ्च **ले०काल सं०** १८६४ पौष बुदी ६ । वेष्टन सं० ७[illegible] । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजा जगतसिह के शासनकाल मे साह श्री जीवणराम ने प्रागदास मोट्टाकावासी से सवाई जयपुर म प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६६२. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० २० । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । **ले०काल** × । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१६६३. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ५३ । आ० १२×८ इञ्च । ले० काल स० १६८४ । **पूर्ण** । वेष्टन सं० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है कीमत ८।) है ।

१६६४. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा—ऋषभदास । पत्र स० ३४७ । आ० ६ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १६०७ । ले०काल स० १६२४ । **पूर्ण** । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—अन्तिम ।

गर्ग देश झल्लरि प्रथम पत्तन पूर सु अनूप ।
झालावार सुहावनी मदनसिंह तसु भूप ।।
पृथ्वीराज सुत तास के सौभितु पद कूं पाय ।
राजकरै पालै प्रजा सबही कू सुखदाय ।।
तिमि पत्तन मे शांति जिन राजै सबकू शाति ।
आधि व्याधि हरै सदा कर्म क्षोभ की भ्राति ।।
ताकी **थुति तिय** भवन की सोभा कही न जाय ।
देखत ही अघ हरत है सुर सिव मग दरसाय ।।
पार्श्वनाथ को भुवन इक ऋषभदेव को और ।
नाना सोभा सहित पुनि राजत है इसि ठौर ।।
भव्य जीव वदै सदा पूजै भाव लगाय ।
नर नारी गावे सदा श्री जिन गुण हरषाय ।।
तिसी पुरी मे ज्ञाति के लोग वसै जु पुनीत ।
तामै **हूंबड़** जानि के वगवर देस जनीत ।।
श्री नेमिश्वर वस सुत वाल सोम आख्यात ।
सो चउ भ्रात नियुक्त है ताके सुत विख्यात ।।
नाभिजदास बखानिये ताकै सुत दो जानि ।
तामै श्रेष्ठ बखानिये पडित सुनो बखानि ।।
वासु पूज्य जिन जनम की पुरी राज सुत जानि ।
··· ····फुनि अरुण सुत लघु भ्राता जु कहानि ।।
तामैं गुरु भ्राता सही मूढ एक तुम जान ।
सब जैनी मे बसत है दो सुत सुत अभिराम ।।
ताकू श्री वसुनदि कृत नाम श्रावगाचार ।
गाथा टीका बध कू पढि वै कू सुख कार ।।
भट्टारक आमेर के देवेन्द्र कीर्त्ति है नाम ।

जयपुर गर्जे गुणनिधि देत भए अभिराम ।।
ताकू लखि मन भयौ विचार ।
होय वचनिका तो सुख कार ।।
सब ही वाचें सुनौ विचारैं ।
सुगम जानि नही आलस धारै ।।
सो उपाय मन लहि करि लिखी ।
बालबोध टीका विन सुखी ।।
यामैं बुद्धी मद बसाय ।
फुनि प्रमाद मुरखता लाय ।।
ऋषि पूरण नव एक पुनि माघ पूनि शुभ श्वेत ।
जथा प्रथा प्रथम कुजवार, मम मगल होय निकेत ।।

१६६५. वसुनंदि श्रावकाचार वचनिका — × । पत्र स० ४६६ । आ० १२½ × ६ इन्च । भाषा — हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १६०७ । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७—२६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

ऋषि पूरण नव एक पुनि माघ पूनि शुभ श्वेत ।
जथा प्रथा प्रथम कुजवार मम मगल होय निकेत ।।

१६६६. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा-दौलतराम । पत्र स० ५५ । आ० ११½ × ४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल स १८१८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—मूल कर्त्ता आ० वसुनन्दि है । प्रति टब्बा टीका सहित है ।

१६६७. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा-पन्नालाल । पत्र स० १२७ । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावक धर्म । र०काल स० १६३० कार्तिक सुदी ७ । ले० काल स० १६३० पूर्ण । वेष्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१६६८. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा—पत्र स० २७८ । आ० ११ × ५½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५८१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६६९. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा । पत्र स० ३५१ । आ० १२ × ५ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बून्दी ।

१६७०. वर्द्धमानसमवशरण वर्णन-ब्र० गुलाल । पत्र स० १२ । आ० ६ × ३ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल स० १६२८ माघ बुदी १० । ले०काल— । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर (बयाना) ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

जिनराज अनन्त गुणनिधान मगल सिव सत ।
जिनवाणी सुमरण मति बढ़ै ।
ज्यो गुणठाण खिपक विग चढ़ै ।।
गुरू निर्ग्रंथ चरण चित लाव ।
देव शास्त्र गुरू मगल भाव ।।
इनही सुमरि बणौ सुखकार ।
समोसरण जै जै विस्तार ।।

अन्तिम पाठ —

सोलहसै अठबीस मे माघ दसै सुदी पेख ।
गुलाल ब्रह्म मनि नीत इनी जयो नद को सीख ।।
कुरु देश हथनापुरी राजा विक्रम साह ।
गुलाल ब्रह्म जिन धर्म ज्य उपमा दीजे काह ।

१६७१. विचारषर्टात्रिशकावर्वूरिण—पत्र स० १३ । भाषा—सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल स०१५७८ । ले०काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१६७२. विचार सूखड़ी— पत्रस० ८ । भाषा–सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल स० १८७२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१६७३. विद्वज्जन बोधक-सघी पन्नालाल दूनीवाला । पत्र स० ६३७ । आ० १३½ × ८½ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढ्ढारी) गद्य । विषय-धर्म । र०काल स० १९३९ माघ सुदी ५ । ले०काल स० १९६६ फागुन सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष— लिखाई,	सुधाई	स्याही	कागज	वस्ता पट्टा	डाकखर्च
४१॥ – ॥।	२०॥ ≡॥	१। –	६॥ =	१॥	२)

टोटल— ४७ ≡ ।

१६७४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५४८ । आ० १३¾×८¼ इञ्च । ले०काल स० १९९२ श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वष्टन स० ५०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—रिषभचन्द बिन्दायक्याने प्रतिलिपि की थी ।

१६७५ विवेक विलास-जिनदत्तसूरि । पत्रसं० २३ । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनस० १३१ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—सस्कृत पद्यो के साथ हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६७६. विशस्थान × । पत्रसं० ३६ । भाषा—हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १८७९ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१६७७. व्रतनाम— × । पत्रसं० १२ । आ० १० × ४३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । **विषय-धर्म** । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोंक ।

१६७८ व्रतनिर्णय— × । पत्रसं० ५२ । आ० ११ × ८ इञ्च । भाषा – सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १५४६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

१६७९. व्रतसमुच्चय— × । पत्रसं० ३१ । आ० ११ × ५१/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । **विषय-धर्म** । र०काल × । ले०काल स० १८३३ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१६८०. व्रतसार— × । पत्रसं० ७ । आ० ९१/२ × ४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१६८१. व्रतोद्योतन श्रावकाचार-अभ्रदेव । पत्रसं० ५५ । आ० ९ × ३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

१६८२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २६ । आ० १०१/२ × ४१/२ इञ्च । र०काल । ले० काल स० १५६३ पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—अथ सवत्सरेस्मिन् सवत् १५६३ वर्षे पौष सुदी २ आदित्यवासरे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुन्दाचार्यान्वये ब्र. मानिक लिखापित आत्म पठनार्थं परोपकाराय ।

सवत् १६५७ वर्षे ब्रह्म श्री देवजी पठनार्थं इद पुस्तक ।

१६८३. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३३ । आ० ११ × ५१/२ इञ्च । ले०काल स० १८८२ श्रावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

१६८४. व्रतों का ब्यौरा— × । पत्रसं० ५ । आ० ११३/४ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५८७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६८५. व्रतो का ब्योरा— × । पत्रसं० १६ । आ० ११×४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५८२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६८६. व्रत ब्यौरा वर्णन । पत्रसं० ७ । आ० १११/२ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । **विषय**-आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६८७. शलाका पुरुष नाम निर्णय-भरतदास। पत्रसं० ६१ । आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल स० १७८८ वैशाख सुदी १५ । ले० काल स० १८८८ सावरा सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—कविनाम—

गोसुत केरो नाम तास मे दास जु ठानो ।
तासुत मोहि जान नाम या विधि मन आनो ।।
मधुकर को अरी जोय, राग फुनि तामे ह्वीजे ।
यह कर्त्ता को नाम अर्थ पडित जन कीजे ।।

झालरापाटन के शातिनाथ चैत्यालय में ग्र थ रचना हुई थी । कवि झालरापाटन का निवासी था । र०काल सम्बन्धी दोहा निम्न प्रकार है—

शुभ एक गिग हीग शील उत्तर भेदन मे ।
मदवसु तापै धरगा भेद जो होवे इनमे ।।

१६८८. शास्त्रसार समुच्चय— ×। पत्रस० ५ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

प्रारम्भ —श्रीमन्नम्रामरस्तोत्र प्राप्तानत चतुष्टय ।
नत्वा जिनाधिप वक्ष्ये शास्त्रसार समुच्चय ।।१।।
अथ त्रिविधोकाल ।।१।। द्विविधो वा ।।२।।
षड्विधोवा ३।। दशविधा कल्पद्रुमा ।

अन्तिम —
चतुराध्यायसपन्ने शास्त्रसार समुच्चये ।
पठने त्रयोपवासस्य फल स्यान्मुनिभाषने ।।
श्रीमाघनन्दियोगीन्द्रै सिद्धात बोधिचन्द्रमा ।
अभिकर्तु विचितार्थ शास्त्रसारसमुच्चये ।।२५
मुमुक्षु सुमतिकीर्त्ति पठनार्थं ।

१६८९. शिव विधान टीका— × । पत्रस० ८ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

१६९० शीलोपदेशमाला – सोमतिलक । पत्रस० १३२ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति टीका सहित है । एव प्राचीन है ।

१६९१. श्रावकक्रिया × । पत्रस० २७ । आ० ११ × ५ इञ्च । **भाषा**—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८८५ माह सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १४७० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इति कल्पनाकरनग्र थे श्रावक नित्य कर्म षट् तत्र षष्टमदान षष्टोध्याय ।

१६६२. श्रावक क्रिया × । पत्रसं० १६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१६६३. श्रावक क्रिया × । पत्रसं० १६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६/७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

१६६४. श्रावक गुण वर्णन × । पत्रसं० ३ । भाषा—प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

१६६५. श्रावक धर्म प्ररूपणा— × । पत्रसं० ११ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६६६. श्रावकाचार······ ······ । पत्र सं० १५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल सं० १५१४ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—मडल दुर्ग मे रचना की गई । ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१६६७. श्रावकाचार— × । पत्र सं० ५ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३००/१५४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

१६६८. श्रावकाचार—उमास्वामी । पत्र सं० १६ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १६६६ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१६६९. श्रावकाचार—अमितिगति । पत्र सं० ७५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१७००. प्रति सं० २ । पत्रसं० ७४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १६७० फाल्गुन सुदी ८ । वेष्टनसं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**–उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—जहांगीर नूरमोहम्मद के राज्य मे—हिसार नगर मे प्रतिलिपि करवाकर श्रीमती हेमरत्न ने त्रिभुवनकीर्ति को भेंट की थी ।

१७०१. श्रावकाचार × । पत्रसं० ३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १८१७ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १८८-१२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१७०२. श्रावकाचार रास—पदमा। पत्रस० ११६। आ० ११×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय--आचार शास्त्र। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनस० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रथम पत्र नही है।

प्रारम्भ :—

समोसर्ण माहे जब गया
तिण आनन्द भवियण मन भया।
मुखिकन जिय जयकार,
भेट्या जिनवर त्रिभुवन तार॥
तीन प्रदक्षणा भावै दीघ,
अष्टप्रकारि पूजा कीध॥
जल गध अक्षित पुष्प नैवेद।
दीप धूप फल अरघ वसु भेद॥

अन्तिम :—

श्रावकाचार तणु श्रावकाचार तणा,
रास कीउ मि सगी परि।
भविजन मनरजन भजन कर्म कठोर,
निर्भर पञ्च परमेष्टी मन धरि।
समरि सदा गुरु निर्ग्रंथ मनोहर
अनुदिन जे धर्म पालसि
हाली सव जनीचार जिन सेवक।
पदमो कहि ते पामसि भवपार॥२५

१७०३. श्रावकाराधन—समयसुन्दर। पत्रस० ३। भाषा—सस्कृत। विषय—श्रावक धर्म। र०काल । ले०काल । पूर्ण। वेष्टनस० ६५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१७०४. प्रतिसं० २। पत्रस० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। **वेष्टनस० ६६१। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१७०५. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला—अमरकीर्ति। पत्रस० ८१। आ० १२½×६ इञ्च। भाषा-अपभ्रश। विषय-आचार शास्त्र। र०काल स० १२४७। ले० काल स० १६०० चैत्र बुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० १६०२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१७०६. प्रतिसं० २। पत्र स० ८-८३। आ० १२×४ इञ्च। ले०काल । अपूर्ण। वेष्टन स० ६६०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर अजमेर।

१७०७. प्रति स० ३। पत्रस० १०४। आ० १०×५ इञ्च। ले० काल स० १६५२ फागुण सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ७८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है।

१७०८. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला—सकल भूषण । पत्र स० १३६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र०काल स० १६२७ । ले० काल स० १८५७ पौष बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७०९. प्रति स० २ । पत्र स० १०४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—१०४ से आगे पत्र नही है ।

१७१०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १६५ । ले०काल सं० १८२० चैत बुदी ६ । पूर्ण । **वेष्टनस०** २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—विराट नगर मे प्रतिलिपि की गई ।

१७११. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १२४ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ३७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१७१२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ११४ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१७१३. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला भाषा—पाण्डे लालचन्द । पत्रस० १४६ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार । र०काल स० १८१८ माह सुदी ५ । ले०काल स० १८८७ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२६ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर पट्टे श्री १०८ श्री रत्नभूषण जी तत् शिष्य पण्डित पन्नालाल तत् शिष्य प० चतुर्भुज इद पुस्तक लिखापित ।

ब्राह्मण श्रीमाली सालगराम वासी किशनगढ ने अजयगढ (अजमेर) मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

१७१४. प्रति सं० २ । पत्रस० १७१ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीयदि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१७१५. प्रति सं० ३ । पत्रस० १४२ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १६११ मगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष – हरकिशन भगवानदास ने दिल्ली से मगाया ।

१७१६ प्रति सं० ४ । पत्रस०-१६४ । आ० १०½×५ इच । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ७१-२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

१७१७. प्रति सं०—५ । पत्रस० १३५ । आ० १०½×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

१७१८. प्रति सं०—६ । पत्रस० ८५ । आ० १३×६½ इञ्च । ले०काल सं० १६०८ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल नैणवा ।

१७१९. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १८४ । लेखन काल स० १८६३ । पूर्ण । **वेष्टनस०** ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी बसवा ।

१७२०. प्रति सं० ८ । पत्र स० १२४ । आ० १२×६½ इच । ले०काल सं० १८८२ मंगसिर बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१७२१. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १५३ । आ० १२×६ इच । ले०काल स० १८१६ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पचायती बयाना ।

विशेष—श्री मिट्ठूराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७२२. प्रतिसं० १० । पत्र स० १०६ । आ० १२½×७½ इच । ले० काल ×। अपूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१७२३. प्रति स० ११ । पत्रस० १३७ । ले० काल स० १८१६ वैसाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा प्रशस्ति विस्तृत है ।

१७२४. प्रति सं० १२ । पत्र स० १६१ । आ० ११½×७ इञ्च । ले० काल सं० १८६४ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष राजमहल मे वैद्यराज सन्तोषराम के पुत्र अमीचन्द, अभयचन्द्र सौगानी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१७२५. प्रति स० १३ । पत्र स० १६६ । आ० ६½ × ६¾ इञ्च । ले० काल स० १८५६ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—प० देवीचन्द ने व्यास सहजराम से तक्षकपुर मे प्रतिलिपि कराई ।

१७२६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १६१ । आ० १०¾ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८२७ जेठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पञ्चायती करौली ।

विशेष—टेकचद विनायक्या ने करौली मे प्रतिलिपि कराई थी ।

१७२७. प्रतिसं० १५ । पत्र स० १५६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८११ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ ३६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

१७२८. प्रति सं० १६ । पत्रस० १८३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७-४२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

१७२६. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ८७ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोक)

१७३०. प्रति स० १८ । पत्रस० १२२ । आ० १२ × ७½ इञ्च । ले०काल—स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

१७३१. प्रति स० १६ । पत्रस० ६१ । आ० १२½ × ६¾ इञ्च । **ले०काल स० १६५४** । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ २६ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—सवत १६५४ भाद्रव शुक्ल पक्ष रविवासरे लिखित झगड़ावत कस्तूरचद जी चोखचंद्र ।

१७३२. प्रतिसं० २० । पत्र स० १०५ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१७३३. षडशीतिक शास्त्र— × । पत्र सं० १२ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल स० १७१५ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सुपार्श्वगणि के शिष्य तिलक गणि ने भडस्दा नगर में प्रतिलिपि की थी ।

१७३४. षडावश्यक— × । पत्र संख्या ३० । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म एवं आचार । र०काल— × । लेखन काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है

१७३५. षडावश्यक बालावबोध टीका— × । पत्र स० २८ । आ० १० × ३ इञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १६१७ भादवा सुदी ? । पूर्ण । वेष्टन स०६८–८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—टब्बा टीका है । अहमदाबाद मे प्रतिलिपि की गई थी ।

पत्र १—नमो अरिहंताणं-अरिहंत नइ नमहारू नमस्कार । नमो सिद्धाणं-सिद्ध नउ नमस्कार । नमो आयरियाणं आचार्य नइ नमस्कार । नमो उवज्झायाणं-उपाध्याय नइ नमस्कार । नमो लोए सव्व साहूणं लोक कहिता मनुष्य लोक तेह माहि सर्व साधु नइ नमस्कार ।

पत्र ३—सिद्धाणं बुद्धाणं-सिद्ध कहीइ आठ तउ क्षय करी सीधा छइ । बुद्धाणं कहीइ ज्ञात तत्व छइ । पार गयाणं-ससार नइ पारि गया छइ । परंपार गयाणं चऊद गुणठाणा नी परि पगइ पुहता छइ । लो अग्ग भुवग्ग पीढा-लोकाग्र कहीइ सिधि तहा उवगयाणं कहीइ पुहता छइ । नमोसयासव्व सिद्धाणं सदैव सकलना सिद्धि नइ नमस्कार हउ ।

१७३६. षडावश्यक बालावबोध— × । पत्र स० ९८ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल— × । ले० काल स० १५७९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मूल प्राकृत के नीचे संस्कृत मे टीका है ।

प्रशस्ति—संवत् १५७९ वर्षे आश्वन शुदि १३ गुरौ ।

१७३७. षडावश्यक बालावबोध-हेमहस गणि । पत्र स० ६५ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गुजराती मिश्रित) । र०काल × । ले०काल स० १५२१ । पूर्ण । वेष्टन स० २६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

पहिलउ सकल मगलीक तउ,
मूल श्री जिनशासनऊ सार ।
इग्यारह अग चऊद पूर्व नउद्धार,
तो देव श्वासनत् श्री पच परमेष्टि महामत्र नउकार ।

अंतिम पुष्पिका---

इति श्री तपागच्छ नायक सकल सुविहित पुरंदर श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि पद-कमल ससेविता शिष्य पंडित हेमाहसगणिना श्राद्धवराभ्यर्थनया कृतोऽयं षडावश्यक बालावबोध आचन्द्रार्क नद्यात् । ग्रंथ सं० ३३०० । सं० १५२१ वर्षे श्रावण वदि ११ रविवासरे मालवमंडले उज्जयिन्या लिखित ।

१७३८. षडावश्यकविवरण— × । पत्र सं० २६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय-आचार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७३९. षोडश कारण दशलक्षण जयमाल-रइधू । पत्र सं० ३६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती कामा ।

१७४०. षोडशकारण भावना-पं० सदासुख कासलीवाल । पत्रसं० ७२ । आ० १२½ × ८ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूंढाडी) (ग०) । र०काल × । **ले०काल** सं० १९६४ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२७ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

१७४१. प्रति सं० २ । पत्रसं० ११० । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन संख्या ४६३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१७४२. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ६० । आ० १४½ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष मार्गाराम शर्मा ने दौसा में प्रतिलिपि की थी ।

१७४३. प्रति सं० ४ । पत्रसं० २ से २१४ । ले० काल सं० १९६४ पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—रत्नकरंड श्रावकाचार से उद्धृत है ।

१७४४. संदेह समुच्चय ज्ञानकलश । पत्रसं० १६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

१७४५. सप्तदशबोल × । पत्र सं० ४ । आ० ८ × ३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्तिस्थान**- दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

१७४६. सप्ततिका सूत्र सटीक— × । पत्र सं० ५४ । आ० × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल सं० १७८३ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी में गद्य में टीका है । बूंदी में प्रतिलिपि हुई थी ।

१७४७. सम्यकित वर्णन × । पत्रसं० ११ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य) । **विषय**—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

१७४८. सबोध पंचासिका-गौतम स्वामी । पत्रस० १५ । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल-सावन सुदी २ । ले०काल स० १८६६ फागुन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका महित हैं तथा अर्खगढ मे प्रतिलिपि हुई ।

१७४९. सबोध पंचासिका— × । पत्रस० १४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १८२८ द्वि. आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६६ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१७५०. सबोध पंचासिका × । पत्रस० १३ । आ० १२ × ७ इञ्च । भाषा-प्राकृत, संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ९४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१७५१. प्रति सं० २ । पत्रस० २९ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१७५२. संबोध पंचाशिका-द्यानतराय । पत्रस० १२ । आ० ६ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—इस रचना का दूसरा नाम सबोध अक्षर बावनी भी है ।

१७५३. संबोध सत्तरी-जयशेखर सूरि । पत्र स० ६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

१७५४ सबोध सत्तरी - × । पत्रस० ७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९० । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

१७५५. संबोध सत्तरी प्रकरण- × । पत्रस० २ । आ० ८ × ४ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय —धर्म । र०काल × । ले०काल स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

१७५६. सबोध सत्तरी बालावबोध- × । पत्र स० ८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

१७५७. सम्यक्त्व प्रकाश भाषा-डालूराम । पत्र स० १२६ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय – धर्म । र०काल १८७१ चैत सुदी १५ । ले० काल १९३४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१७५८. सम्यक्त्व बत्तीसी-कवरपाल । पत्र स० ६ । भाषा – हिन्दी । विषय – धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१७५९. सम्यक्त्व सप्तषष्टि भेद- × । पत्र स० ८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१७६०. सागर धर्मामृत-प० आशाधर । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र०काल स० १२९६ । ले० काल स० १५६५ । आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१७ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—रितिवासानगरे सूर्यमल्ल विजयराज्ये ।

१७६१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३ से १३७ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२७८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६३ । आ० ११¼×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६३. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

१७६४. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ४४ । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स १०८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१७६५. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ८२ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६५४ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६६. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ५८ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल स० १६३५ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—मोजमाबाद मे सा० हेमा ने प्रतिलिपि की थी ।

१७६७. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ५३ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६८. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ४१ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

१७६९. प्रतिसं० १० । पत्रस० ६६-१५२ । आ० १३×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका सहित है । प्रारम्भ के ६५ पत्र नही ।

१७७०. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ४३ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल स० १६५६ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २०/१३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है साह श्री भोटाकेनस्य माडागारे लिखापित ।

१७७१. प्रतिसं० १२ । पत्र स० १३० । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १८२० चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बून्दी ।

विशेष महाराज माधवसिंह के शासन मे चम्पावती नगरी मे प्रतिलिपि की गयी थी प्रति सटीक है ।

१७७२. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ३० । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० १५५७ कार्तिक वदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बून्दी ।

१७७३. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० ८६ । आ० ६½ × ४ इञ्च । ले०काल स० १५८० वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८० वर्षे वैशाख सुदी ५ बुधवासरे श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्री पद्मनंदिदेव तत्पट्टे भ श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्य म० श्री धर्मचन्द्रास्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये मू द् गोधे सा देव तद्भार्या गौरी तत्पुत्र सा वाला तद्भार्या होली । तत्पुत्रा चत्वार प्रथम सा सरवण स्योराज सा डूगर मा. डालू । सा सरवण भार्या सरस्वती तत्पुत्र सा हीला, तालह । सा हीला भार्या टपोन तत्पुत्र सा नाथू । सा स्योराज भार्या लाली । तत्पुत्रा टला खीवा हीरा, सा डूंगर भार्या लाडी एतेषा मध्ये साह डालू नामा इदशास्त्र श्रावकाध्ययनं लिखाप्य धर्मचन्द्रायाय दत्त ।

१७७४. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ३८ । आ० १२ × ५½ । ले०काल स० १८१६ वैशाख सुदी १५ । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजा माधवसिंह के शासनकाल मे जयपुर मे पडित चोखचन्द के शिष्य सुखराम ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१७७५. प्रतिसं० १७ । पत्रसं० १-७३-१३३ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

१७७६. प्रति सं० १८ । पत्र स० ६-४० । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १७२५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७२५ वर्षे माघ सुदी ८ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे भ श्री देवेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये आचार्य श्री कल्याणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म संघ जिष्णोदिग पुस्तक ।

१७७७. प्रति सं० १६ । पत्र स० १३२ । ले०काल स० १५५२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४, ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सवत् १५५२ वर्षे कार्तिक बुदी ५ शनिवासरे शुभमस्तु घटेरा ज्ञातीय संघई नीउ भार्या नागश्री तस्य पुत्र संघई दौसा भार्या रत्नाश्री सुत धनराज भार्या तस्य पुत्र सोनापाल एतै- कर्मक्षयार्थं लिखापित ।

१७७८. प्रति स० २० । पत्र स० १८५ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल स० १६७१ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१७७९. सागार धर्मामृत भाषा— × । पत्र स० २१२ । आ० ११ × ५½ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १६८० आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—चंदेरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

१७८०. साधु आहार लक्षण— × । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इन्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१७८१. साधु समाचारी— × । पत्र सं० ५ । भाषा–संस्कृत । विषय–साधु चर्या । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१७८२. सारचतुर्विंशतिका—सकलकीर्त्ति । पत्रसं० १५० । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

१७८३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १०४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

१७८४. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १०० । आ० ११×५ इन्च । ले० काल सं० १८७१ । पूर्ण । वेष्टनसं० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष - कोटा में प्रतिलिपि हुई थी ।

१७८५. सारचौबीसी--पार्श्वदास निगोत्या । पत्रसं० ४०० । आ० १३$\frac{1}{2}$×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय धर्म । र०काल सं० १९१८ कार्तिक सुदी २ । ले० काल सं० १९६८ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष जयगोविंद नागचन्द की बहिन ने बड़ा मन्दिर में चढ़ाया था ।

१७८६. प्रति सं० २ । पत्रसं० ४३८ । आ० १२×७$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल सं० १९४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३८ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१७८७ सार समुच्चय—कुलभद्र । पत्रसं० १७ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय धर्म । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—पत्र बहुत जीर्ण है ।

१७८८. सारसमुच्चय । पत्रसं० १६ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

१७८९. सार समुच्चय । पत्रसं० १६ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५६-७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

१७९०. सार संग्रह— × । पत्रसं० २५७ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय–धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—संस्कृत तथा हिन्दी मे टीका भी दी हुई है।

१७६१. सुखविलास—जोधराज कासलीवाल। पत्र स० ६४। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र०काल १८८४ मंगसिर सुदी १४। ले० काल स० १९३६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

विशेष—प० दौलतराम के पुत्र जोधराज ने कामा मे सुखविलास की रचना की थी।

१७६२. प्रति सं० २। पत्रस० ३११। ले०काल १८८४ पूर्ण। वेष्टन स० ५४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—पोदकर ब्राह्मण से जोधराज ने कामा में लिपि कराई थी।

१७६३. प्रति सं० ३। पत्रस० ३६४। ले०काल × । १८८६। पूर्ण। वेष्टन स० ५४५। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—जो यामे अलप बुद्धि के जोग ते कही अक्षर अर्थ मात्रा की भूल होय तो विशेष ज्ञानी धर्म बुद्धि मोकूं अल्प बुद्धि जानि क्षमा करि धर्म जानि या कौ सोध के सुद्ध करि लीज्यो।।

प्रारम्भ—

णमो देव अरहन्त कौ नमौ सिद्ध महाराज।
श्रुत नमि गुर को नमत हो सुख विलास के काज।।
येही चउ मगल महा ये चउ उत्तम सार।
इन चव को चरणो गहू होह सुमति दातार

अन्तिम—

जिन वाणी अनुस्वार सब कथन महा सुखकार।
भूले पथ अनादि तें मारग पावै सार।।
मारग दोय श्रुत मे कहे मोक्ष और ससार।
सुख विलास तो मोक्ष है दुख थानक ससार।।
जिन वाणी के ग्रन्थ मुनि उमग्यो हरप अपार।
ताते सुख उद्यम कियौ ग्र थन के अनुसार।।
व्याकरणादिक पढ्यो नही, भाषा हू नही ज्ञान।
जिनमत ग्रन्थन ते कियो, केवल भक्ति जु आनि।।
भूल चूक अक्षर अरथ, जो कुछ यामे होय।
पडित सोय सुधारियो, धर्म बुद्धि धरि जोग।।
दौलत सुत कामा वसौ, जौध कासलीवाल।
निज सुख कारण यह कियो, सुख विलास गुणमाल।।
सुख विलास सुखथान है, सुखकारण सुखदाय।
सुख अर्थ सेयो सदा, शिव सुख पावो जाय।।
कामा नगर सुहावनै, प्रजा सुखी हरपत।
नीत सहत तहा राज है, महाराज बलवन्त।।

जिन मन्दिर तहा चार हैं सोभा कहिय न जाय ।
श्री जिन दर्शन देख तै आनन्द उर न समाय ।।
श्रावक जैनी बहु बसै आपस मे बहु प्रीति ।
जिन वाणी सरधा करै पाखंडी नहिँ रीत ।।
एक सहस्र अरु आठ मत असी ऊपरचार ।
सो समत सुभ जानियो शुकल पक्ष भृगुवार ।।
मंगसिर तिथि पाचौ विषं उत्तरापाढ़ निहार ।
ता दिन यह पूरण कियौ शिव सुख को करतार ।।
सुख विलास इह नाम है सब जीवन सुखकार ।
या प्रसाद हम हू लहै निज आतम सुखकार ।।
सुखी होहु राजा प्रजा सेवो धर्म सदीव ।
जैनी जन के भाव ये सुख पावै सब जीव ।।

अन्तिम मङ्गल—

देव नमो अरहन्त सकल सुखदायक नामी ।
नमो सिद्ध भगवान भये शिव निज सुख ठामी ।।
साध नमौ निरग्रंथ सकल परिग्रह के त्यागी ।
सकल मुख्य निज थान मोक्ष ताके अनुरागी ।।
बन्दो सदा जिन धर्म को देय सर्व सुख सम्पदा ।
य सार धार तिहू लोक मे करो क्षेम मङ्गल सदा ।।

मर्गसिर सुदी ५ स १८८४ मे जोधराज कासलीवाल कामा के ने लिखवाया था ।

१७६४. सुदृष्टितरंगिणी—टेकचन्द । पत्रस० ६३४ । आ० १२$\frac{3}{4}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल स० १८३८ । ले०काल स० १६१० पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दीवानजी कामा ।

१७६५. प्रति सं० २ । पत्रस० ५६६ । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० ५३७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१७६६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५३८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१७६७. प्रति सं० ४ । पत्रस० ३१० । आ० १५ × ८ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१७६८. प्रतिसं० ५ । पत्रस० २-२०० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२०० से आगे पत्र नही है ।

१७६९ प्रति सं० ६ । पत्र स० १५० । आ० ११$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३/६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि को गयी थी।

१८०० प्रति सं० ७। पत्र स० ७०७। आ० १०½×५¾। ले०काल स० १९०८ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

१८०१ प्रति सं० ८। पत्र स० ३१। आ० १२×७। ले०काल स० १९३३। अपूर्ण। वेष्टन स० ४८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

१८०२. प्रति स० ९। पत्रस० ५४७। आ० ११ × ७ इञ्च। ले०काल स० १९०७। पूर्ण। वेष्टन स० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर।

१८०३. प्रति सं० १०। पत्रस० ४३५। आ० १०½ × ८ इञ्च। **ले०काल** स० १९१२ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

१८०४. प्रतिसं० १२। पत्रस० ३०५। आ० १४×११ इंच। ले०काल स० १८८१ आसोज सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तेरहपंथी दौसा।

विशेष—नानूलाल तेरापंथी ने पन्नालाल तेरापंथी स प्रतिलिपि करवायी थी।

१८०५ प्रतिसं० १३। पत्रस० ३५३। आ० १३×७½ इंच। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, करौली।

१८०६. प्रतिसं० १४। पत्रस० १ से ९३। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर हूण्डावालो का डीग।

१८०७. प्रतिसं० १५। पत्रस० ४९१। आ० १३ × ७ इंच। ले०काल स० १९८३। पूर्ण। वेष्टन स० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का आवा, (उणियारा)।

१८०८. प्रतिसं० १६। पत्रस० २५७-४७५। आ० १३½ × ७½ इंच। ले०काल स० १९२८। अपूर्ण। वेष्टन स० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)।

१८०९. प्रतिसं० १७। पत्र स० २९५। आ० १६ × ७ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४२, २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)।

१८१०. प्रतिसं० १८। पत्रस० ४३०। आ० १३¾ × ६ इंच। ले० काल स० १९०८ पाष बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा।

विशेष—बल्देव गुजराती मोट चतुर्वेदी नैन मध्ये लिखित।

१८११. प्रतिसं० १९। पत्रस० ३८। आ० १२ × ६ इंच। ले०काल स० १९४५। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

१८१२. प्रतिसं० २०। पत्र स० ५४४। आ० १३×६ इंच। ले०काल स० १९२५। पूर्ण। वेष्टन स० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—लोचनपुर (नैणवा) में लिखा गया था।

१८१३. प्रतिसं० २१। पत्र स० १९। आ० १०×७ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

१८१४. सूतक वर्णन—भ० सोमसेन। पत्र स० १७। आ० १०×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले०काल स० १६२५। पूर्ण। वेष्टन स० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पञ्चायती मंदिर अलवर।

१८१५. सूतक वर्णन— ×। पत्र स० २। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१८१६. सूर्य प्रकाश—आ० नेमिचन्द्र। पत्र स० १११। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५६। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१८१७. सोलहकारण भावना— ×। पत्र स० १। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३३४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१८१८. स्वरूप संबोधन पच्चीसी— ×। पत्र स० २। भाषा—संस्कृत। विषय – धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६५, २५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर।

१८१९. स्वाध्याय भक्ति— । पत्रस० २। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा – संस्कृत। विषय—धर्म। र०काल । ले०काल स० १८४४ अगहन बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

— ० —

विषय – अध्यात्म चिंतन एवं योग शास्त्र

१८२०. अध्यात्मोपनिषद्-हेमचंद्र। पत्र स० २०। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २६२। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर, अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

१८२१. अध्यात्म कल्पद्रुम—मुनि सुन्दरसूरि। पत्र स० ७। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० ६२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

१८२२. अध्यात्म तरंगिणी—आचार्य सोमदेव। पत्र स० १०। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१८२३. अध्यात्म बारहखडी—दौलतराम कासलीवाल—पत्र स० २०४। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-अध्यात्म। र०काल स० १७९८ फागुण सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८१। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

विशेष—पाच हजार पद्यो से अधिक की यह कृति अध्यात्म विषय पर एक सुन्दर रचना है। यह अभी तक अप्रकाशित है।

१८२४. प्रतिसं० २। पत्र स० ८३। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरापथी मन्दिर बसवा।

१८२५. प्रति सं० ३। पत्र स० १३२। आ० १२ × ६ इञ्च। ले० काल स० १८९०। पूर्ण। वेष्टन स० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—हनूलाल जी तेरहपथी ने माधोपुर निवासी ब्राह्मण भोपत से प्रतिलिपि करवाकर दौसा के मन्दिर मे विराजमान की थी।

१८२६. प्रति सं० ४। पत्र स० १५६। आ० १०½ × ७ इञ्च। ले०काल स० १८३१ कार्त्तिक बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

१८२७. प्रतिसं० ५। पत्र स० २१६। आ० १२ × ६ इञ्च। ले० काल स० १८७६ फागुण सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १७-२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—भवानीराम ने अलवर म प्रतिलिपि की थी।

१८२८. प्रति सं० ६। पत्र स० १२८। ले० काल स० १८०३ आसोज सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ४३३। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१८२९. प्रति सं० ७। पत्र स० २८०। आ० १०×८ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर।

१८३०. प्रति स० ८ । पत्र स० ३२ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर वैर (बयाना)

विशेष—४०० पद्य है ।

१८३१. अध्यात्म रामायण— × । पत्र स० ३३६ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १८५५ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री अध्यात्मरामायणे ब्रह्मपुराणे उत्तरखंडे उमामहेश्वरसवादे उत्तरखंडे नवम सर्ग । अध्यात्मोत्तरकांडे ग्रह सम्यया परिक्षिप्ता । उत्तर कांड ।

१८३२. अनुप्रेक्षा संग्रह— × । पत्र स० ७ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प) । विषय-चिंतन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—तीन तरह से बारह भावनाओं का वर्णन है ।

१८३३. अनुभव प्रकाश-दीपचन्द कासलीवाल । पत्रस० २५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-अध्यात्म । र०काल स० १७८१ पौष बुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२-४५ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

१८३४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८१२ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दीवानजी चेतनदास पुरानी डीग ।

१८३५. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६० । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर कामा ।

१८३६ प्रति सं० ४ । पत्रस० ६७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६३४ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१८३७. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ५६ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । ले० काल — । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

१८३८. असज्झाय नियुक्ती × । पत्रस० ४ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल — । पूर्ण । वेष्टन स० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१८३९. अष्ट पाहुड—कुंदकुंदाचार्य । पत्रस० ८२ । आ० १२ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टनस० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

१८४० प्रति सं० २ । पत्रस० ५६ । ले०काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१८४१. अष्टपाहुड भाषा-जयचन्द छाबडा । पत्रस० १७० । आ० १३½×८½ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय-अध्यात्म । र०काल स० १८६७ भादवा सुदी १३ । ले०काल

स० १६७२ पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२७ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—टीकमचन्द सोनी ने पुत्र दुलीचद के प्रसाद बडाघडा के मदिर मे चढाया ।

१८४२. प्रति सं० २ । पत्र स० १५२ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १८७७ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १५६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

१८४३ प्रति सं० ३ । पत्र स० २७० । आ० ११ × ५¾ इञ्च । ले०काल स० १६१६ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—मध्य पीपली चौंट बजार दौलतराम ने अपने पुत्र के पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८४४. प्रति सं० ४ । पत्र स० २०६ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल स० १६४० फागुन वदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६/४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर सौगाणियो का करौली ।

१८४५. प्रति स० ५ । पत्र स० २६२ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८७२ सावन सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती करौली ।

विशेष—अलवर नगर मे जयकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १७० । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर छोटा बयाना ।

विशेष—श्रावक माघोदास ने यह ग्र थ मदिर मे भेट किया था ।

१८४७. प्रति सं० ७ । पत्र स० २२६ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती कामा ।

१८४८. प्रति सं० ८ । पत्र स० २४५ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल स० १६५७ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—दिगम्बर जैन सरस्वती भण्डार मथुरा के मार्फत प्रतिलिपि हुई थी ।

१८४९. प्रति सं० ९ । पत्र स० १६१ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले०काल स० १६०८ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती कामा।

१८५०. प्रति स० १० । पत्र स० २२२ । ले०काल १८७३ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—जोधराज के पुत्र उमरावसिंह ने लिखवायी थी ।

१८५१. प्रतिसं० ११ । पत्र स० २११ । ले० काल स० १८७२ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१८५२ प्रति स० १२ । पत्र स० १६० । ले० काल १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे चिम्मनराम बजाज ने लिखवायी थी ।

१८५३. प्रति सं० १३ । पत्र स० २१२ । आ० १३½ × ८¾ इञ्च । ले०काल स० १६६२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—रिषभचन्द बिन्दायक्या ने लश्कर पाटोदी के मन्दिर जयपुर मे महाराजा सवाई माधोसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी।

१८५४. प्रति सं० १४ । पत्र स० २८६ । आ०१२ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १८७२ सावन बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

१८५५. प्रति स० १५ । पत्र स० १६६ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले०काल स १६३८ सावण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

१८५६. प्रतिसं० १६ । पत्र सख्या १८५ । आ० १२ × ८ इञ्च । । लेखन काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११०–१२ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ, कोटा

१८५७. प्रति सं. १७ । पत्र स० २५४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८८२ । पूर्ण । वे०स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)।

विशेष—आचार्य श्री माणक्य नन्दि के शिष्य ने लिखा था।

१८५८. प्रति सं. १८ । पत्र स०१६० । आ० १० × ६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे स० ११८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

१८५९. प्रति सं० १९ । पत्र स० २५१ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १६४५ । पूर्ण । वे० स० २३ । **प्राप्ति स्थान** -- दि०जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

१८६०. प्रति स० २० । पत्रस० २२२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८८४ (शक स० १७४६) । पूर्ण । वेष्टनस० ७६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—जोशी गोपाल ने लोचनपुर (नैणवा) मे लिखा है।

१८६१. प्रतिसं० २१ । पत्रस० १७६ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल स० १६२६ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)।

विशेष—सदासुख वैद ने अपने पठनार्थ लिखी।

१८६२. प्रति सं २२ । पत्र स० २०५ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

१८६३. आत्म प्रबोध । पत्र स० ३ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । लेखन काल स० १८२० कार्तिक सुदी १ । अपूर्ण । वे०स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी।

१८६४. आत्म प्रबोध—कुमार कवि । पत्र स० १४ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १५७२ आश्विन बुदी १० । वे० स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—वीरदास न दौवलाणी के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

१८६५. प्रति स० २ । पत्रस० ११ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १५४७ फागुण सुदी ११ ।पूर्ण । वेष्टनस०— ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—श्रीपथा नगरे खण्डेलवाल वश गगवाल गोत्रे सघई मेठापाल लिखापित ।

१८६६. आत्म सबोध—रइधू । पत्र स० २१ । भाषा—अपभ्र श । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० ५१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१८६७. प्रति सं० २ । पत्र स० ६-२६ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल स० १५५३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १५५३ वर्षे चैत्र सुदी ६ पुष्य नक्षत्रे बुधे धृतिनाम्नियोगे गौणौलीय पत्तने राजाधिराजा श्री···· राज्य प्रवर्त्तमाने जोतिश्रीलाल तच्छुपुत्र जोति गोपाल लिखत पुस्तक लिखिमिति । शुभ भवतु ।

१८६८. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र स० १-२० । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर ।

१८६९. प्रति सं० २ । पत्रस० ३५ । ले०काल १६१० चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग ।

विशेष—प्रति जीर्ण है तथा सस्कृत टीका सहित है ।

१८७०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५० । आ० ११½×६ इ च । ले०काल । वेष्टन स० ६०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१८७१. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७२. प्रति स० ५ । पत्रस० ५२ । आ० १०×४ इ च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७३. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ५८ । आ० ११½ × ४½ इ च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष —प्रति के प्रारम्भ मे आचार्य श्री श्री हेमचन्द्र परम गुरुभ्या नम ऐसा लिखा है । सस्कृत मे कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुए है ।

१८७४. प्रति सं० ७ । पत्रस० ११ २६ । आ० १२×५ इ च । ले०काल स० १७८३ मगसिर सुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष —मनसाराम ने कामा मे प्रतिलिपि की थी ।

१८७५. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ४७ । आ० १०×५ इ च । ले०काल स० १६८१ फागुण बुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

१८७६. आत्मानुशासन टीका—टीकाकार पं० प्रभाचन्द्र । पत्रस० ८२ । आ० १०×४½ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १५८० आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हिसार नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१८७७. प्रति सं० २ । पत्र स० ८१ । आ० १०३/४ × ४ इञ्च । **ले०काल सं० १५४८ पौष बुदी ३** । पूर्ण ।वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—गोपाचल दुर्ग मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१८७८. प्रति सं० ३ । पत्रस० ३३ । आ० १०३/४×५ इञ्च । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७९. आत्मानुशासन भाषा··· । पत्र स० १-५८ । आ० १२ × ५१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय--अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ७२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

१८८०. आत्मानुशासन भाषा—× । पत्रस० १६१ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय --अध्यात्म । र० काल × । ले०काल स० १६४२ फागुन सुदी ६ । पूर्ण। वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

१८८१. आत्मानुशासन भाषा टीका -× । पत्रस० ११० । आ० ११३/४ × ६१/२ इञ्च। । भाषा—सस्कृत हिन्दी । विषय अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८६० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष---रामलाल पहाड्या ने हीरालाल के पठनार्थ पचेवर मे प्रतिलिपि की थी ।

१८८२ आत्मानुशासन भाषा—टोडरमल जी । पत्र स० १४० । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल १६३१ पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—अर्थगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१८८३. प्रति सं० २ । पत्र स० १४६ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८२४ । पूर्ण । वेष्टनस० २३ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.) । सग्रामपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१८८४ प्रति स० ३ । पत्र स० ८८ । आ० १२१/२ × ६१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

१८८५. प्रति सं० ४ । पत्र स० १४५ । आ० १०१/२ × ५१/४ इञ्च । ले० काल स० १८८७ सावन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर मालपुरा (टोक)

विशेष—श्री चन्द्रप्रभ के मन्दिर मे जीवणराम कासलीवाल ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की ।

१८८६. प्रति सं० ५ । पत्र स० ८७ । आ० ११३/४ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह पथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

१८८७. प्रति सं० ६ । पत्र स० १३८ । आ० १३ × ७१/२ इञ्च । ले०काल स० १८५२ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

१८८८. प्रति सं० ७ । पत्रस० १३६ । आ० १३ × ६ इञ्च । **ले०काल** स० १८७५ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर, अलवर ।

१८८६. प्रति सं० ८। पत्रसं० १६३। आ० ११ × ७ इञ्च। ले०काल सं० १८७० ज्येष्ठ बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

१८६०. प्रति सं० ९। पत्रसं० १६०। ले०काल सं० १८३० चैत सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—पं० लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१८६१. प्रति सं० १०। पत्रसं० १०६। ले०काल सं० १८३० फागुन बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष—कुशलसिंह ने प्रतिलिपि करवाई थी तथा आमेर की गई थी।

१८६२. प्रति सं० ११। पत्रसं० १४५। ले०काल सं० १८५२। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—रूदावल की गद्दी में प्रतिलिपि की गई थी।

१८६३. प्रति सं० १२। पत्रसं० १८७। आ० ११ × ४¾ इञ्च। ले०काल सं० १८०७ वैशाख सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० ११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर करौली।

विशेष—बुधलाल ने प्रतिलिपि की थी।

१८६४. प्रति सं० १३। पत्रसं० ८६। आ० ११½ × ६½ इञ्च। ले०काल सं० १८३४ सावण सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

१८६५. प्रति सं० १४। पत्रसं० ८७। आ० ९ × ६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३१। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

१८६६. प्रति सं० १५। पत्रसं० १८। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २३। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्दरगढ (कोटा)

१८६७. प्रति सं० १६। पत्रसं० १३६। आ० १२½ × ५ इञ्च। ले०काल सं० १८६८ पौष सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १२५/७१। प्राप्ति स्थान—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्दरगढ (कोटा)

१८६८. प्रति सं० १६क। पत्रसं० १५८। आ० १२ × ८½ इञ्च। **ले०काल** सं० १८४८ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा)

१८६९. प्रति सं० १७। पत्रसं० ४७। आ० १० × ८ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

१९००. प्रति सं० १८। पत्रसं० ११०। आ० १०½ × ७½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

१९०१ प्रति सं० १९। पत्रसं० ८५। आ० ९ × ६ इञ्च। ले०काल सं० १८३७ चैत्र सुदी १२। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा)।

१९०२. प्रति सं० २०। पत्र सं० २०३। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल सं० १८३६ आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि हुई थी।

१६०३ प्रतिसं० २१। पत्र स० १३५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती खण्डेलवाल मन्दिर अलवर।

१६०४. प्रतिसं० २२। पत्र स० १७३। आ० १२½ × ६ इञ्च। ले०काल स० १६१० कार्तिक सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—लाला रामदयाल फतेहपुर वासी ने ब्राह्मण हरमुख प्रोहित से मिर्जापुर नगर में प्रतिलिपि करवाई थी।

१६०५. प्रति सं० २३। पत्रस० ११०। आ० ११×८ इञ्च। ले०काल स० १८५७। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

१६०६. प्रतिसं० २४। पत्रस० १३२। आ० १४×५ इञ्च। ले० काल स० १८६० मगसिर सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ८–२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष—उदैचन्द लुहाडिया देवगिरी वासी (दौसा) ने प्रतिलिपि की थी।

१६०७. प्रतिसं० २५। पत्रस० ७१। आ० १२½ × ५½ इञ्च। ले०काल स० १८५५ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ४२–६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा।

१६०८. प्रतिसं० २६। पत्र स० १७५। आ० ११×५ इञ्च। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

१६०९. प्रति स० २७। पत्रस० १२८। आ० १२½ × ५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०३। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

विशेष—तेरापथी चिमनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

१६१०. प्रति स० २८। पत्रस० ६२। आ० ११ × ७½ इञ्च। ले० काल स० १६६२ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१६११ प्रति स० २९। पत्र स० १०६। आ० १२×५¾ इञ्च। ले० काल स० १८६८। पूर्ण। वेष्टन स० ६१–१०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष- दसकत स्योबगस का व्यास कासी का।

१६१२. प्रति सख्या ३०। पत्रस० १२२। आ० ६ × ६ इञ्च। ले०काल स० १८३२ पौष बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० २८–६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—हरीसिंह टोग्या ने रामपुरा (कोटा) मे प्रतिलिपि करवाई थी।

१६१३. प्रति स० ३१। पत्रस० ११६। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल स० १८६७। पूर्ण। वेष्टनस० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

१६१४. प्रति स० ३२। पत्रस० १७४। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल स० १८६६ सावण सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा।

विशेष—लिखित प० श्री ब्राह्मन भगवानदास जो बांचै सुनै कौ श्री जिनेन्द्र।

१६१५. प्रति सं० ३३ । पत्र स० ११८ । ग्रा० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १६१५ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी नैणवा ।

विशेष—पुस्तक चपालाल वैद ने की है ।

१६१६. प्रति सं० ३४ । पत्र स० ११४ । ग्रा० १२½ × ६ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, बूंदी ।

विशेष—११४ से आगे पत्र नही है ।

१६१७. प्रतिसं० ३५ । पत्र स० १८२-२६२ । ग्रा० ६ × ५ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१६१८· प्रति स० ३६ । पत्रस० १२६ । ग्रा० १०½ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७८-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१६१६. प्रति सं० ३७ । पत्रस० ११७ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १८४८ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ५० । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूंदी ।

विशेष—सवाई प्रतापसिह के राज्य में सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि हुई ।

१६२०. प्रति स० ३८ । पत्रसं० ७८ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूंदी ।

१६२१. प्रति सं० ३६ । पत्रस० १३१ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८३५ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूंदी ।

विशेष—सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१६२२. । प्रति सं० ४० । पत्र स० १२८ । ग्रा० १० × ६½ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर ।

१६२३. प्रतिसं० ४१ । पत्र स० १०४ । ग्रा० १२½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—१०४ से आगे पत्र नही है ।

१६२४ प्रतिसं० ४२ । पत्र स० ६४ । ग्रा० १० × ¾ × ७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—ग्रारम्भ के पत्र किनारे पर कुछ कटे हुये है ।

१६२५. प्रति सं० ४३ । पत्र स० २४८ । ग्रा० ११ × ६ इञ्च । ले० काल स० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान** — दि जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—साहजी श्री दौलतराम जी कासलीवाल ने लिखवाया था ।

१६२६. प्रति स० ४४ । पत्रस० १-१३० । ग्रा० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६५ । ग्रपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६२७ प्रतिसं० ४५ । पत्रस० १७३ । ग्रा० ११ × ८ । ले० काल × । वेष्टन स० ८२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१९२८. प्रति सं० ४६। पत्रसं० ११७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

१९२९. प्रतिसं० ४७। पत्रसं० १०३। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल सं० १८०४। पूर्ण। वेष्टनसं० ८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१९३०. प्रति सं० ४८। पत्र सं० ९३। आ० १०½ × ७½ इञ्च। लेखन काल सं० १९०७। आसोज बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १३०९। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१९३१. आत्मावलोकन—दीपचन्द कासलीवाल। पत्र सं० १०६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल सं० १७२१। पूर्ण। वेष्टन सं० ८५। **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर।

१९३२. प्रति सं० २। पत्र सं० १८५। ले० काल सं० १९२७ आषाढ शुक्ला १। अपूर्ण। वे० सं० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवानजी भरतपुर।

१९३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५६। आ० १२ × ६½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१९३४. प्रति सं० ४। पत्रसं० ९१। आ० १२½×७ इञ्च। **ले०काल सं०** १८८३ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायती कामा।

विशेष— जोधराज उमरावसिंह कासलीवाल कामा ने प्रतिलिपि कराई थी। सेढमल बोहरा भरतपुर वाले ने अचनेरा में प्रतिलिपि की थी। श्लोक सं० २२५०।

१९३५. प्रतिसं० ५। पत्र सं० १०७। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले०काल सं० १७९९ आसोज सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० १२९। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर, कामा।

विशेष—श्री केशरीसिंह जी के लिये पुस्तक लिखी गई थी।

१९३६. आलोचना ×। पत्र सं० ७। भाषा–हिन्दी संस्कृत। विषय–चिंतन। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१९३७. आलोचना— ×। पत्रसं०–१। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चिंतन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं०—१७४–१२६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

१९३८. आलोचना जयमाल – ब्र० जिनदास। पत्रसं० ३। आ० ९¾×४¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय-चिंतन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१९। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—किये हुए कार्यों का लेखा जोखा है।

१९३९. आलोचनापाठ— ×। पत्रसं० १३। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय-चिंतन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं०–१३७९। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१६४०. इन्द्रिय विवरण— × । पत्रस० ३ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । **विषय**—चिन्तन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० २१४/८५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

१६४१. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्रस० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१६४२. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्तिकेय । पत्रस० २७ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६४३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६४४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३४ । ले०काल स० १६१७ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेप्टन स० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मडलाचार्य भुवनकीति के शिष्य मुनि विशाल कीर्ति मे साह जाट एव उसकी भार्या जाटम दे खडेलवाल भौसा ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६४५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २८ । आ० १३×५ इञ्च । ले०काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १७८/१७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रतिजीर्ण है ।

प्रशस्ति—स० १६१० वर्षे वैशाख वुदी १४ सोमे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री विजयकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र तद् शिष्य ब्र० कृष्णा ब्र० जीवा पठनार्थ हुवड गोत्रे द्या रामा भा० रमादे सु० द्या० पचायगि भा० पारिमलदे इद पुस्तक कर्म क्षयार्थ लिखापित ।

कठिन शब्दो के अर्थ दिये हुए है ।

१६४६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २३ । आ०१२½×५ इञ्च । ले०काल स० १६३८ । पूर्ण । वेप्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६३८ वर्षे मार्गशिर वदि २ भौमे जयतारणा-शुभस्थाने श्री जिनचैत्यालय श्री मूलसघे बलात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये श्री पद्मकीर्ति, सकलकीर्ति, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण विजयकीर्ति, शुभचन्द्र देवा सुमतिकीर्तिदेवा श्री गुणकीर्ति देवास्तद् गुरु भ्राता ब्रह्म श्री मामल पठनार्थ ।

१६४७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ७६ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल स० १५७२ भादवा सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन स २६२ । **प्राप्ति स्थान**- अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

१६४८. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—सस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

१६४६. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ७५ । आ० ८ × ६ इञ्च । **ले०काल सं०** १८६६ चैत बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर वैर (बयाना) ।

१६५०. प्रति सं० ९ । पत्रसं० २१ । आ० १०½ × ५ इञ्च । **ले०काल** सं० १८११ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष – रत्नविमल के शिष्य पं० रामविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० १० । पत्रसं०— । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

१६५२ प्रति सं० ११ । पत्र सं० २५ । आ० १०×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टन** सं० १२६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१६५३. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ९-५६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण। **वेष्टनसं०** ५११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष— प्रारंभ के ८ पत्र नहीं हैं ।

१६५४. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १३ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१६५५. प्रति सं० १४ । पत्रसं० ६० । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर, लश्कर, जयपुर ।

विशेष -- कहीं २ कठिन शब्दों के संस्कृत में अर्थ एवं टिप्पणी दिये गए हैं ।

१६५६. प्रति सं० १५ । पत्रसं० २६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल । ले० काल । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष —मुनि लक्ष्मीचन्द्र ने कर्मचन्द्र के पठनार्थ लिखा था ।

१६५७. प्रति सं० १६ । पत्रसं० २४ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । **ले० काल-सं० १५३५ मार्ग शीर्ष सुदी** १५ । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर **लश्कर, जयपुर** ।

१६५८. प्रति सं० १७ । पत्र सं० २० । आ० ८½ × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०-४६ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

१६५९. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ४१ । लेखन काल × । पूर्ण । वेश्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मंदिर डीग ।

१६६०. कार्तिकेयानुप्रेक्षा टीका-शुभचन्द्र । पत्र सं० २८६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चिंतन । र०काल सं० १६०० । ले० काल सं० १७८८ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७६ । **प्राप्ति स्थान**-- भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१६६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६०-१८४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१९६२. प्रति स० ३। पत्र स० ३२६। ले० काल सं० १७८० कार्तिक सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २६०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर।

विशेष—सूरतनगर मे लिखा गया था।

१९६३. प्रति सं० ४। पत्र स० २३६। ग्रा० १२ × ६ इञ्च। ले० काल स० १७६०। पूर्ण। वेष्टन स० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

१९६४. प्रतिसं० ५। पत्रस० २–१४५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१९६५. प्रतिसं० ६। पत्र सख्या ५०। ग्रा० १४½ × ६½ इञ्च। लेखन काल स० १६२४ पौष सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० १५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

स्वाति श्री सवत १६२४ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे दशम्या १० तिथौ श्री बुधवारे श्री ई लावा शुभस्थाने श्री ऋषभ जिन चैत्यालये श्री मूलसघे श्री सरस्वती गच्छे श्री बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वय भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्र कीर्ति देवास्तत्पट्टे श्री विद्यानदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री मल्लि भूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचन्द्र परमगुरु देवास्तत्पट्टे भ० श्री वीरचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञान भूषण गुरवो जयतु तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र गुरवो नदतु। श्री ग्राचार्य श्री सुमति कीर्तिना लिखापिता स्वहस्तेन शोधितेय टीका। ग्राचार्य रत्नभूषण जयतु। श्री कार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीका समाप्ता।

१९६६. कार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा—जयचन्द्र छाबडा। पत्र स० १०८। ग्रा० १२ × ८ इञ्च। भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य। विषय—ग्रध्यात्म। र०काल स० १८६३ सावन बुदी ३। ले० काल स० १८६४ वैशाख बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० १५७०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—ग्रथ रचना के ठीक ६ माह बाद लिखी हुई प्रति है।

१९६७. प्रतिसं० २। पत्र स० १०६। ग्रा० ८½ × ६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दि ग्रग्रवालों का ग्रलवर।

१९६८. प्रतिसं० ३। पत्र स० १०६। ग्रा० १०½ × ७ इञ्च। ले०काल १८७१। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रग्रवालो का ग्रलवर।

१९६९. प्रतिसं० ४। पत्रस० १३६। ग्रा० ११½ × ५½ इञ्च। ले० काल स० १८८७। पूर्ण। वेष्टनस० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी मालपुरा (टोंक)।

विशेष—जीवनराम कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

१९७०. प्रतिसं० ५। पत्रस० २३७। ग्रा० १०×७ इञ्च। ले० काल स० १९५३। पूर्ण। वेष्टनस० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

१९७१. प्रति सं० ६। पत्रस०६३। ग्रा० १३×८ इञ्च। ले०काल स० १९६१। पूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रगवाल मदिर नैणवा।

१६७२ प्रति स० ७ । पत्रस० ६७ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनस० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

१६७३. प्रति सं० ८ । पत्र स० १४७ । आ० १२×८ इञ्च । ले०काल स० १६४६ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १०४/५ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

१६७४. प्रति स० ९ । पत्र स० ६३ । आ० ६$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८३७ चैत बुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

१६७५. प्रति स० १० । पत्रस० १०८ । आ० ११×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर खण्डेलवाल अलवर ।

१६७६. प्रति स० ११ । पत्र स० ८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१६७७. प्रति सं० १२ । पत्रस० ४०१ । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टनस० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष— भरतपुर मे हेतराम रामलाल ने बलवन्तसिह जी के राज्य मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६७८. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ११५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१६७९. प्रति स० १४ । पत्रस० १०८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१६८०. प्रति सं० १५ । पत्र स० २३२ । आ० १० × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा बयाना ।

१६८१. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ११२ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती कामा ।

विशेष - प्राकृत म मूल भी दिया हुआ है ।

१६८२. प्रति सं० १७ । पत्रस० १६२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

१६८३. प्रति सं० १८ । पत्रस० ४८ । आ० १३ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८६२ भादो बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ८४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर करोली ।

विशेष—चिम्मनलाल बिलाला ने नेमिनाथ चैत्यालय मे इस प्रति को लिखवाई थी ।

१६८४. . प्रतिस० १९ । पत्रस० १०९ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष - १०९ से आगे के पत्र नही है ।

१६८५. प्रति स० २० । पत्रस० १५० । आ० १२ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८६१ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—श्री चौबेराम ने चन्द्रपुरी मे प्रतिलिपि की थी ।

१६८६. प्रति सं० २१। पत्रस० ११२। आ० १२ × ६½ इञ्च। ले०काल स० १६१२। पूर्ण। वेष्टन स० ३५३-१३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर।

१६८७. गुणतीसीभावना – ×। पत्र स० ५। आ० ६ × ४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय--चितन। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २६० १६६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर सम्भवनाथ उदयपुर।

अन्तिम—उगगत्रीसीभावना तगोजे मत्य विचार।
जेमनमाहि समरसि ते तरमे ससार॥

१६८८. गुण विलास—नथमल विलाला। पत्र स० ६१। भाषा--हिन्दी (पद्य)। विषय—अध्यात्म। रचना काल १८२२ अषाढ बुदी १०। **ले०काल** १८२२ द्वि० अषाढ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन म० २७१। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१६८९. चारकषाय सज्झाय—पद्मसुन्दर। पत्रस० ८। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय--चितन। र०काल ×। ले० काल स० १७६३ पोष बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ३०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष- ऋषि रत्न ने उदयपुर मे लिखा।

१६९०. चिद्विलास—दीपचन्द कासलीवाल। पत्र स० ४४। आ० १०½ × ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय—अध्यात्म। र०काल स० १७७६ फागुण बुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०५०। **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१६९१. प्रति स० २। पत्र स० २४। आ० १२ × ४½ इञ्च। ले०काल स० १८६१। पूर्ण। वेष्टन स० १२२। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

विशेष—महात्मा जयदेव ने जोबनेर मे प्रतिलिपि की थी।

१६९२ प्रति स० ३। पत्र स० १४१। आ० ८½ × ४ इञ्च। ले० काल स० १८५४ ज्येष्ठ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ३७/७। **प्राप्तिस्थान** - दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रत्येक पत्र मे ७ पक्ति एव २२-२४ अक्षर है।

१६९३. प्रति सं० ४। पत्र स० ६७। आ० ९ × ४½ इञ्च। ले०काल स० १७७६। पूर्ण। वेष्टन स० ११४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१६९४. प्रति सं० ५। पत्रस० ५१। आ० १३ × ७½ इञ्च। ले०काल स० १९०६। पूर्ण। वेष्टनसं० ८। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

१६९५. प्रतिसं० ६। पत्रस० ५६। आ० १०½ × ७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती बयाना।

विशेष— मोहनलाल कासलीवाल भरतपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी। माह सुदी १४ स० १६३२ मे पौतदार चुन्नीराम बैनाडा ने बयाना के मदिर में चढाया था।

१६९६. प्रतिसं० ७। पत्रस० ६६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर।

विशेष—जोधराज कासलीवाल ने लिखवाया था ।

१६६७. प्रति सं० ८। पत्रस० ६५ । ले०काल स० १६५४ । पूर्ण । **वेष्टनस०** ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—भुसावर वालो ने भरतपुर मे चढाया था ।

१६६८. प्रति सं० ६। पत्रस० १४१ । आ० ६×४½ इञ्च । **ले०काल** स० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१६६६. प्रति सं. १० । पत्रम० ६८ । आ० ८½×६ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२०००. **प्रतिसं० ११** । पत्रस० ६४ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल स० १७५१ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती खडेलवाल अलवर ।

विशेष – इस प्रति मे रचनाकाल स० १७८६ तथा लेखनकाल स० १७५१ दिया है जबकि अन्य प्रतियो मे रचना काल स० १७७६ दिया है ।

२००१. **प्रतिसं० १२** । पत्र स० ६६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर खडेलवाल अलवर ।

२००२. **चेतावणी ग्रंथ रामचरण ।** पत्र स० ७ । आ० १३ × ५ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—सुभाषित एव अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—आदिभाग—

> प्रथम नमो भगवन्त कू , फिर नमो सब साध ।
> कहू एक चेतावणी सुवाणी विमल अगाध ।।
> बंधे स्वाद रस भोग सू इन्द्रया तणा अरथ ।
> उन जीवन के चेतबे करू चितावणी ग्रंथ ।।
> रामचरण उपदेश हित करू ग्रंथ विस्तार ।
> पड्यो प्राण भव कूप मे निकसै अथ विचार ।।

चौकी—दिवाना चेत रे भाई, तुज सिर गजब चलि आई ।
> जरा की फौज अनि भारी, करे तन लूट के स्वारी ।।

अन्तिम—रामचरण जज राम कू सत कहे समझाय ।
> सुख सागर कू छोड के मत छीलर दुख जाय ।।

सोरठा—भरीयादक कलि जाय सबद ब्रह्म नाही कले ।
> रामचरण रहत माहि चोरासी मट काटले ।।
> चोरासी की मार भजन विना छुटे नही ।
> ताते हो हुशियार एह सीख सतगुरू कही ।।१२१।।
> इति चेतावणी ग्रंथ ।

लिखित सुनेल मध्ये प० जिनदासेन परोपकारार्थ ।।

२००३. **छहढाला-टेकचन्द ।** पत्र स० ६ । आ० ८ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चिन्तन । र०काल × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर भादवा (राज.) ।

२००४. **छहढाला—दौलतराम पल्लीवाल** । पत्र स० १२ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन । र०काल सं० १८९१ वैशाख सुदी ३ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२००५. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १५ । आ० ७½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—अत मे बारहमासा भी दिया हुआ है जो अपूर्ण है ।

२००६. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १७ । आ० ७½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर छोटा बयाना ।

२००७. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १० । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

२००८. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० २८ । आ० १२×६½ इञ्च । ले० काल—स० १९६५ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प० जगन्नाथ चदेरी वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२००९. **प्रति स० ६** । पत्रस० १० । आ० ८×६½ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

२०१०. **प्रति स० ७** । पत्रस० १० । आ० ६½×५½ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८७/६२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

२०११ **प्रति सं० ८** । पत्र स० १३ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल—स० १९४३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्रीमहावीर बूदी ।

२०१२ **छहढाला—बुधजन** । पत्र स० २ । आ० १२×६ इच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चितन । र०काल स० १८५६ वैशाख सुदी ३ । ले०काल स० १८६० आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६/१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ जी टोडारायसिंह ।

विशेष—प० उदैराम ने डिग्गी मे प्रतिलिपि की थी । प्रति रचना के एक वर्ष बाद की ही है ।

२०१३. **ज्ञानचर्चा**— × । पत्र स० ४७ । आ० १२½×६ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८५४ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ५५५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२०१४. **ज्ञान दर्पण—दीपचंद कासलीवाल** । पत्र स० २८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १८६५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—रामपुरा के कोटा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२०१५ प्रतिसं० २ । पत्र स० ३१ । आ० ६ × ६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर नैणवा ।

विशेष—३१ से आगे के पत्र नही हैं ।

२०१६. ज्ञानसमुद्र—जोधराज गोदीका । पत्र स० ३४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल स० १७२२ चैत्र बुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१, २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

२०१७. प्रति सं० २ । पत्र स० २६ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८६५ आषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—हेमराज अग्रवाल के पुत्र मोतीराम ने प्रतिलिपि की थी । कृपाराम कामा वाले ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२०१८. ज्ञानार्णव—आचार्य शुभचन्द्र । पत्रस० १४२ । आ० १०¼ × ४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय -योग । र०काल × । ले० काल स० १६५० ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । **वेष्टन स०** ४०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२०१९. प्रतिसं० २ । पत्रस० १४६ । आ० १० × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन स०** ५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२०२०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १५१ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १७६५ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १२५८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

२०२१. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २०६ । आ० ६ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८१२ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२०२२. प्रति स० ५ । पत्रस० ७५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १७७३ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—तक्षकपुर मे प० कर्पूरचन्द्र ने आत्म पठनार्थ लिखा था ।

२०२३. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १२० । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले० काल स० १७६७ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १२०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२०२४ प्रतिसं० ७ । पत्रस० ८२ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** ११५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२०२५. प्रति स० ८ । पत्रस० ६७ । आ० ८½ × ७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टनस०** ८६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—ग्रंथ चिपका हुआ है । गुटका साइज मे है ।

२०२६. प्रति स० ९ । पत्रसं० ७७-१४८ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२०२७. प्रति स० १० । पत्रस० २-१५ । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—केवल योगप्रदीपाधिकार है प्रति प्राचीन है ।

२०२८. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १३ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन स० ४१-८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०२६. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ७६ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०३०. प्रति सं० १३ । पत्रस० ३-४३ । आ० १०½ × ८ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०३१. प्रति सं० १४ । पत्रस० ७६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२०३२. प्रतिसं० १५ । पत्र स० १०७ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० १७२८ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—रामचन्द्र ने लक्ष्मीदास से जहानाबाद जैसिंहपुरा में प्रतिलिपि कराई । कार्तिक वदी ५ ५ स० १८७८ मे जट्टमल्ल के पुत्र ज्ञानीराम ने बडा मन्दिर फतेहपुर में चढाया ।

२०३३. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ११ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—केवल योगप्रदीपाधिकार है ।

२०३४. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ११७ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १७५२ पूर्ण । वेष्टनसं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०३५. प्रति स० १८ । पत्र स० १२७ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०३६. प्रति स० १६ । पत्र स० ११८ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १७८६ भादवा सुदी २ पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०३७. प्रतिसं० २० । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १६६६ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २५६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष —सिरोज मे लिखा गया था ।

२०३८. प्रतिसं० २१ । पत्र सं० १३६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२०३६. प्रतिसं० २२ । पत्र सं० १३३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२०४०. प्रति सं० २३। पत्र स० ९३। आ० १२×४ इंच। ले०काल स० १५४८। पूर्ण। वेष्टन स० १३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—सवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी २ गुरुवासरे गोपाचलगढ दुर्गे महाराजाधिराज श्री मानसिंहदेव राज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासघे मथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री यशकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री मलयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे महासिद्धात आगम विद्यानुवाद-उद्घाटन समर्थीन. तत्पडिताचार्य श्री गुणभद्रदेवा तस्य आम्नाये अग्रोत्कान्वये गर्गगोत्रे सादिल्ल ज्ञानार्णव ग्रथ लिखापित कर्मक्षयनिमित्त।

२०४१. प्रति सं० २४। पत्र स० १९९। आ० ५ × ४ इञ्च। ले० काल स० १७१४ फागुण सुदी १५। पूर्ण। वे० स० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—चन्द्रपुरी मे महाराजाधिराज श्री देवीसिंह के शासनकाल मे श्री सावला पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई थी। सिरोजपुर मध्ये पडित मदारी लिखित।

२०४२. प्रतिसं० २५। पत्रस० १७१। आ० ९½ × ६ इञ्च। ले०काल स० १८३२ मङ्गसिर बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ३०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

२०४३. प्रतिसं० २६। पत्र स० ५८। आ० ९½ × ४½ इञ्च। ले०काल स० १७५१ भादवा बुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

२०४४. प्रति स० २७। पत्र स० ९९। आ० ११½ × ५ इञ्च। ले०काल स० १५६७ आसोज सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० १००-७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह।

विशेष—प्रशस्ति।

सवत् १५६७ वर्षे आसो मासे शुक्ल पक्षे दशम्या तिथौ सोमे। लैहु श्री बटाद्रा शुभस्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मूलसघे भारती गच्छे श्री कुदकुदान्वय भ० श्री लक्ष्मीचद्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री वीरचद्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण देवास्तत्पट्टे भ० प्रभाचद्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री वादिचद्र देवास्तेषा शिष्य ब्रह्म श्री कीर्तिसागरेण लिखित।

२०४५. प्रति स० २८। पत्र स० १५४। आ० ११½ × ५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स १२५। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मंदिर पचायती दूनी (टोक)।

२०४६. प्रति सं० २९। पत्र स० ११५। आ० १०½ × ६½ इञ्च। ले०काल स० १९३४ अषाढ बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा।

२०४७. प्रति स० ३०। पत्र स० ३४७। आ० ९ × ५½ इञ्च। ले० काल स० १८१२ मगसिर बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ३। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मंदिर नैणवा।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है।

२०४८. प्रतिसं० ३१। पत्र स० ११९। आ० १२ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी।

विशेष—अन्तिम पत्र दूसरी प्रति का है।

२०४९. प्रति स० ३२। पत्र स० १३७। आ० १०½ × ५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी

२०५०. प्रति सं० ३३ । पत्र स० ६६ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—४२ वी संधि तक पूर्ण ।

२०५१. प्रति सं० ३४ । पत्रस० ८३ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—८३ से आगे के पत्र नही हैं ।

२०५२. ज्ञानार्णव गद्य टीका—श्रुतसागर । पत्र स० ११ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । र०काल × । ले० काल स० १६६१ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—जोबनेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२०५३. प्रति सं० २ । पत्रस० ११ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टनस०** ४६/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्द्रगढ (कोटा)।

२०५४. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६ । आ० १३$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२०५५. ज्ञानार्णव गद्य टीका-ज्ञानचन्द । पत्र स० × । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-योग । र०काल स० १८६० माघ बुदी २ । ले०काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० २३६-६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२०५६. ज्ञानार्णव गद्य टीका—पत्र स० ५ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । वि० योग । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२०५७. ज्ञानार्णव भाषा—टेकचद । पत्रस० २६६ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय योग । र०काल × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—२६६ से आगे पत्र नही है ।

२०५८. ज्ञानार्णव भाषा— । पत्रस० २८६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-योग । र०काल × । ले०काल स०१६३० भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२०५९ ज्ञानार्णव भाषा-लब्धिविमल गरिण । पत्रस० १६४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल स० १७२८ आसोज सुदी १० । ले० काल स० १७६८ सावरण सुदी १३ । पूर्ण । **वेष्टनस०** ७६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—दूसरा नाम लक्ष्मीचद भी है ।

२०६०. प्रति स० २ । पत्र स० ८१ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल स० १८१६ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १७ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

२०६१. प्रति सं० ३ । पत्र स० १३६ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल स० १८२१ आषाढ़ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर करौली ।

विशेष—अतिम-इति श्री ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे गुण दोष विचारे आ० शुभचंद्र प्रणीतानुसारेण श्रीमालान्वये वदलिया गोत्रे भैया ताराचद स्याम्यार्च नया पडित लक्ष्मीचद्र बिहिता सुखबोधनार्थ शुक्लध्यान वर्णन एकचत्वारिंशत प्रकरण ।

अग्रवाल वशीय शोभाराम सिगल ने करौली मे बुधलाल से प्रतिलिपि कराई ।

२०६२. प्रति सं० ४ । पत्रस० ६३ । आ० ११½× ६½ इञ्च । ले०काल १७६६ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर करौली ।

विशेष—किसनदास सोनी व शिष्य रतनचद ने हीरापुरी मे प्रतिलिपि की ।

२०६३. प्रति स० ५ । पत्रस० १३५ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल स १८५४ । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, कामा ।

२०६४ प्रतिसं० ६ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १७६१ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

२०६५. प्रति सं० ७ । पत्रस० ११२ । आ० १३×५½ इच । ले० काल स० १७८० फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टनस० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—१११ वा पत्र नही है ।

२०६६. प्रति स० ८ । पत्रस० १५८ । ले०काल १७८२ अषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—मोहरी मे लिखी गई ।

२०६७ प्रति सं० ६ । पत्रस० १११ । ले० काल स० १७८४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन, पञ्चायती मदिर भरतपुर ।

२०६८. प्रति सं० १० । पत्रस० ४६ । ले० काल स० १७८४ । अपूर्ण । वेष्टनस० ६८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पञ्चायती मदिर भरतपुर ।

२०६९. ज्ञानार्णव भाषा-जयचन्द छाबडा । पत्रस० २६० । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-योग । र०काल स० १८६६ माघ सुदी ५ । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टनस० १६१५ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२०७०. प्रति स० २ । पत्रस० ३३४ । आ० ११×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०७१. प्रति स० ३ । पत्रस० ३०२ । आ० १४×७½ इञ्च । ले०काल—सं० १६७१ माघ वदी २ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ७** । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—परशादीलाल ने सिकन्द्रा (आगरे) मे प्रतिलिपि की ।

२०७२. प्रति सं० ४ । पत्र स० २६६ । आ० १३×७¾ इञ्च । ले०काल स० १६०१ द्वि सावरण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २।२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

विशेष—माधोसिह ने भरतपुर में सेढूराम से प्रतिलिपि करवाई ।

२०७३. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ३२६ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १६०७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—नगर करौली मे श्रावक चिमनलाल विलाला ने नानिगराम से प्रतिलिपि करवाई ।

२०७४. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३६५ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले०काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०७५. प्रति सं० ७ । पत्रस० ६० । आ० १२¾ × ८ इञ्च । ले०काल स० १८६७ वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

२०७६ प्रति स० ८ । पत्रसं० १३४ । आ० १२½ × ६½ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, छोटा बयाना ।

२०७७. प्रतिसं० ९ । पत्र स० २१२ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०—१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा बयाना ।

२०७८. प्रति सं० १० । पत्रस० २८८ । ले०काल १८७५ । ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२०७९. प्रतिसं० ११ । पत्रस० २८५ । ले०काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

२०८० प्रति सं० १२ । पत्र स० ३५७ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल—स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२०८१. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ३५६ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले०काल— । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२०८२ प्रतिसं० १४ । पत्र स० २६० । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल स० १९०० आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—प० शिवलाल ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की ।

२०८३. प्रतिसं० १५ । पत्र स० ३११ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले०काल स० १९७० पाष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

२०८४. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ३९० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

२१८५. प्रतिसं० १७ । पत्र स० ४०० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

२०८६. प्रतिसं० १८ । पत्र स० १३२ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

२०८७. प्रतिसं० १९। पत्र स० २७१। आ० १३×६½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नही है।

२०८८. प्रतिसं० २०। पत्र स० ४४०। आ० ११×८ इञ्च। ले० काल म० १८८३ सावण बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ५१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—कालूराम साह ने खुशाल के पुत्र सोनपाल भाँवसा से प्रतिलिपि करायी।

२१८९ तत्वत्रयप्रकाशिनी टीका—×। पत्र स० १२। भाषा-संस्कृत। विषय-योग। र० काल ×। ले० काल स० १७५२। पूर्ण। वेष्टन सं० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—म० १७५२ वर्षे माह शुक्ला त्रयोदमी तिथौ लिखितमाचार्य कनक कीर्त्ति शिष्य पंडित राय मल्लेन गुरोनि। ज्ञानार्णव से लिया गया है।

२०९०. द्वादशानुप्रेक्षा कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र स० ६। आ० १०½×४¾ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। वेष्टन म० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२०९१. प्रति स० २। पत्र स० १२। आ० १०¾×५ इञ्च। ले० काल स० १८८८ वैशाख बुदी ७। वेष्टन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—माणकचन्द ने लिपि की।

२०९२. द्वादशानुप्रेक्षा-गौतम। पत्र स० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय-अध्यात्म। र० काल—×। ले० काल ×। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२०९३. ध्यानसार—×। पत्र स० ६। आ० ६×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—योग। र० काल—×। ले० काल स० १६०३। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

२०९४. निर्जरानुप्रेक्षा—×। पत्र स० १। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म। र० काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० २०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

२०९५. पच्चक्खाणभाष्य—×। पत्र स० २६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—चिन्तन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी।

२०९६. परमार्थ शतक—भगवतीदास। पत्रस० ७। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म। र० काल—×। ले० काल स० १६०६। पूर्ण। वेष्टन स० ५०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२०९७. परमात्मपुराण—दीपचन्द कासलीवाल। पत्र स० ३७। आ० ६×६ इञ्च।

भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । र०काल—स० १७८२ असाढ सुदी ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती कामा ।

विशेष—दीपचद साधर्मी तेरापथी कासलीवाल ने आमेर मे स० १७८२ मे पूर्ण किया । प्रतिलिपि जयपुर में हुई थी ।

२०९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४-४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—आमेर मे लिखा गया ।

२०९९. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र स० १२ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६० । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२१००. प्रति सं० २ । पत्र स० १८ । आ० ६ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१०१. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १७४ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५ इ च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१०२. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १५ । आ० ११$\frac{1}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इ च । ले० काल । पूर्ण । वे० स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डू गरपुर ।

२१०३. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २३ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८२८ ज्येष्ठ सुदी १ । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२१०४. प्रतिसं० ६ । पत्र स. २३ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८२८ ज्येष्ठ बुदी १३ । वे० सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—रामपुरा मे प्रतिलिपि हुई ।

२१०५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ४ । आ० १३$\frac{1}{2}$ × ६ इ च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

२१०६. प्रतिसं० ८ । पत्र स० २० । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनदन स्वामी, बू दी ।

विशेष—३४३ दोहे है ।

२१०७. परमात्म प्रकाश टीका—पाण्डवराम । पत्र स० १८३ । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १७५० वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१०८. प्रतिसं० २ । पत्रस० १७२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१०९. परमात्मप्रकाश टीका— × । पत्रस० १५५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सं स्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १७९४ मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२११०. परमात्मप्रकाश टीका—ब्रह्मदेव । पत्र स० १७५ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश संस्कृत एवं हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १८६१ द्वि० चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४-१७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—दौलतराम की हिन्दी टीका सहित है ।

देवगिरी निवासी उदैचन्द लुहाडिया ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

२१११. परमात्मप्रकाश टीका— × । पत्रस० १८० । आ० ६½ × ३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० १२६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अति प्राचीन है । अक्षर मिट गये है ।

२११२. परमात्मप्रकाश टीका-ब्र. जीवराज । पत्रस० ३५ । आ० ११ × २ इञ्च । र०काल स० १७६२ । ले०काल स० १७६२ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—बखतराम गोधा ने चाटसू मे प्रतिलिपि की थी । टीका का नाम बालावबोध टीका है ।

अन्तिम प्रशस्ति—

श्रावक कुल मोट सुजस, खण्डेलवाल बखाण ।
साहवडा साखा बडी, भीम जीव कुल भाण ।।१।।
राजै तसु सुत रेखजी, पुण्यवन सुप्रमाण ।
ताको कुल सिणगार, सुत जीवराज सुवजाण ।।२।।
पुर नोलाही मे प्रसिद्ध राज सभा को रूप ।
जीवराज जिन धम मे, समझै आतमरूप ।।३।।
करि आदर बहु तिन कह्यो, श्री धमसी उयभाव ।
परमात्म परकास को, वार्तिक देहु बनाय ।।४।।
परमात्म परकास सो सास्त्र अथाह समुद्र ।
मेठा अर्थ गम्भीर भणि, दलै अग्यान दलिद्र ।।५।।
सुगुरु ग्यान ग्रैवक सजे पाये कीय प्रतद्य ।
अर्थ रत्न धरि जतनसु , देखो परखौ पद्य ।।६।।
सतरेसै बासठि समं, पखयजु सुगसार ।
परमात्म परकास को, वार्तिक कह्यो विचारि ।।७।।
कीरति सु दर सुभकला, चिरजीव जीवराज ।
श्री जिन सासन सासधे, सुधर्म सुभिरवसुराज ।।८।।
इति श्री योगीन्दुदेव, विरचिते तीनसौपैतालीस.
दोहा पद प्रमाण, परमात्म प्रकास को बालाबोध ।
सम्पूर्ण सवत् १७६२ वर्ष माह बुदी ५ दसकत
बखतराम गोधा चाटसू मध्ये लिखित ।।

२११३. प्रति सं० २ । पत्रस० ५१ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२११४. प्रति सं० ३। पत्र स० ७४ । ग्रा० ६×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

२११५. प्रति स० ४ । पत्र स० ५-६६ । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । । ले० काल स० १८२६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—सवाईजयपुर मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई । जती गुणकीर्ति ने ग्र थ मन्दिर मे पधराया स० १८२८ मे प० देवीचन्द ने चढाया ।

२११६. परमात्मप्रकाश टीका— × । पत्र सं० १२३ । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—अपभ्र श-सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १५२८ वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—१२२ वा पत्र नही है । टीका ४४०० श्लोक प्रमाण बनाया गया है । गोपाचल मे श्री कीर्तिसिहदेव के शासन काल मे प्रतिलिपि हुई ।

२११७. परमात्मप्रकाश भाषा—पांडे हेमराज । पत्र स० १७४ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$ ६इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० २४६-१०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियोका डूगरपुर ।

२११८. परमात्मप्रकाश भाषा— × । पत्रस० १०२ । ग्रा० १३ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल　। ल०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६/४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

२११९ परमात्म प्रकाश भाषा— × । पत्र स० १-१४० । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२१२०. परमात्मप्रकाश भाषा— × । पत्रस० ३४ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)

रचयिता-वृन्दावनदास लिखा है ।

२१२१. परमात्म प्रकाश भाषा—बुधजन । पत्रस० ५४ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हूण्डावालो का डीग ।

२१२२. परमात्मप्रकाश वृत्ति— × । पत्रस० ५६-१७८ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। श्लोक स० ४००० है।

२१२३. **परमात्मप्रकाश भाषा—दौलतराम कासलीवाल।** पत्र स० २६५। आ० १०½ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल स० १८९९ पौष बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० १२६८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२१२४. **प्रतिसं० २**। पत्रस० १६२। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल स० १८८२ मङ्गसिर सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायनी मन्दिर अलवर।

विशेष—ब्रह्मदेव की सस्कृत टीका का हिन्दी गद्य मे अनुवाद है।

२१२५. **प्रतिसं० ३**। पत्र स० १८५। आ० १२½×७½ इञ्च। ले०काल स० १९०४ फागुण सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती बयाना।

विशेष—ग्रथ श्लोक स० ६८९० मूलग्रथकर्ता—आचार्य योगीन्दु टीकाकार ब्रह्मदेव (सस्कृत) लालाजी माधोसिहजी पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी।

२१२६. **प्रतिसं० ४**। पत्र स० १८६। आ० १२×७½ इञ्च। ले० काल स० १९३४। पूर्ण। वेष्टन स० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा (बयाना)।

२१२७. **प्रतिसं० ५**। पत्र स० २०२। आ० ११½×५½ इञ्च। ले० काल स० १९२७ पौष सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० २०/६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती अलवर।

२१२८. **प्रति सं० ६**। पत्र स० १७६। ले० काल स० १९५६ ज्येष्ठ बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर।

२१२९. **प्रति सं० ७**। पत्रस०२१६१। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल स० १८८८ मगसिर सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक)

विशेष—मालपुरा मे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई।

२१३०. **प्रति सं० ८**। पत्रस० ११८। आ० १२½×८½ इञ्च। ले०काल स० १८८२ मगसिर सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

विशेष—चिम्मनलाल ने दौसा मे प्रतिलिपि की।

२१३१. **प्रति सं० ९**। पत्र स० २८७। आ० १२½×८ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

२१३२. **प्रतिसं० १०**। पत्र स० ६१-१२७। आ० ११×८ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २६७। **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

२१३३. **प्रतिसं० ११**। पत्र स० १८४। आ० ११½×८ इञ्च। ले० काल स० १८९८। पूर्ण। वेष्टन स० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक

विशेष—प्रोहित रामगोपाल ने राजमहल मे प्रतिलिपि की।

२१३४. **प्रति सं० १२**। पत्रस० ५०७। ले०काल स० १८८६। पूर्ण। वेष्टनस० २६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—अक्षर काफी मोटे है।

२१३५. **प्रतिसं० १३** । पत्र स० १६० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२१३६. **परमात्मस्वरूप**— × । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—२४ पद्य है ।

२१३७. **पाहुड दोहा—योगचन्द्र मुनि** । पत्र स० ८ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

२१३८. **प्रतिक्रमण**— × । पत्र स० ४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५६/२८० । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१३९. **प्रतिक्रमण**— × । पत्र स० १६ । भाषा—प्राकृत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५/४१५ **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१४०. **प्रतिक्रमण**— × । पत्रस० २३ । आ० ११ ×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत-प्राकृत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टनस० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है ।

२१४१. **प्रतिक्रमण**— × । पत्रस० १३ । आ० १०×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२१४२. **(वृहद्) प्रतिक्रमण**— × । पत्रस० ४० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२१४३. **(वृहद्) प्रतिक्रमण**— × । पत्रस० १७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिनन । र०काल × । ले०काल स० १५७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२१४४. **(वृहद्) प्रतिक्रमण**— × । पत्रस० ६ से २० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—चिनन । र०काल × । ले० काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टनस० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२१४५ **(वृहद्) प्रतिक्रमण** । पत्र स० ५-२० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७१-४१७ । **प्राप्ति स्थान**-सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१४६. प्रतिक्रमण पाठ— × । पत्र स० ८ । आ० ८ × ६½ इञ्च । भाषा–प्राकृत-हिन्दी । **विषय**—चितन । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १५०–२७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

२१४७. प्रतिक्रमण—गौतमस्वामी । पत्रस० १८० । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल स० १५६६ चैत सुदी १५ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ११ प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्रभाचन्द्रदेव कृत सस्कृत टीका सहित है ।

२१४८ प्रतिसं० २ । पत्रस० ६६ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति पृष्ठ १० पक्ति एव प्रति पक्ति ३६ अक्षर हैं ।

२१४९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १७२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१७/४१४ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—श्री प्रभाचन्द्र कृत सस्कृत टीका सहित है । प्रति जीर्ण है ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री गौतम स्वामी विरचित वृहत् प्रतिक्रमण टीका श्रीमत् प्रभाचन्द्रदेवेन कृतेय ।

सवत् १७२६ कार्तिक वदि ३ शुभे श्री उदयपुरे श्री सभवनाथ चैत्यालये राजा श्रीराजसिंह विजय-राज्ये श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक सकलकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक भुवनकीर्त्ति……श्री कल्याणकीर्त्ति शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पठनार्थ लिपिकृत ।

२१५०. प्रतिक्रमण— × । पत्रस० ३१ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । **विषय**–चितन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—१७ वा पत्र नही है ।

२१५१. प्रतिक्रमण —× । पत्रस० १७ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चितन । र०काल × । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी) ।

२१५२. प्रतिक्रमण टीका—प्रभाचन्द्र । पत्रस० २७ । भाषा—सस्कृत । विषय—आत्म चितन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० । २७ । ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१५३. प्रतिक्रमण सूत्र— × । पत्र स० ७ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय–चितन । र०काल × । ले०काल स० १७०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२१५४. प्रतिक्रमण सूत्र— × । पत्रस० २ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । **विषय**—चितन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२१५५. प्रतिक्रमण सूत्र—× । पत्र स० ३ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—गुजराती टब्बा टीका सहित है ।

२१५६. प्रतिक्रमण सूत्र—× । पत्र स० २० । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—आत्मचिन्तन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी ।

२१५७. प्रवचनसार—कु दकु दाचार्य । पत्र स० ६२ । भाषा—प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१५८. प्रवचनसार टीका—प० प्रभाचन्द । पत्र स० ५० । आ० १३ × ६ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १६०५ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

प्रशस्ति—श्री सवत् १६०५ वर्षे मगसिर सुदी ११ रवौ । अद्येह श्री वाल्मीकपुर शुभस्थाने श्री मुनिसुव्रत जिन चैत्यालये श्री मूल सघे श्री सरस्वतीगच्छे श्री बलात्कारगणे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्पट्टे श्री देवेन्द्रकीर्ति दवास्तत्पट्टे भ० श्री विद्यानदि दवास्तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मी चन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० वीरचन्द देवास्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण गुरूपदेशात् तदन्वय आचार्य श्री सुमतिकीर्तिना कर्मक्षयार्थं स्वपरोपकाराय प्रवचनसार ग्रथोय लिखित । [illegible] श्री रत्नभूषणना सिद । (प्रति जीर्ण है) ।

> विद्यानदीश्वर देव मल्लि भूषणसद्गुरु ।
> लक्ष्मीचद च वीरेन्दु वदे श्री ज्ञान भूषण ।। १ ।।

२१५९. प्रवचनसार टीका—× । पत्र स० ११७ । आ० ११ × ४½ इन्च । भाषा—प्राकृत सस्कृत । विषय अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८५८ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६२५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२१६०. प्रवचनसार टीका—× । पत्रस० १२७ । आ० ८½ × ५½ इन्च । भाषा - सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १७४४ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक) ।

२१६१. प्रवचनसार भाषा—× । पत्रस० १४६ । आ० १२ × ५½ इन्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८५७ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । **वेष्टनस०** ६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—तेरापथी चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२१६२. प्रवचनसार भाषा—× । पत्रस० १४६ । आ० १२ × ६ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १७१७ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०/४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर मादवा (राज०) ।

विशेष—श्री विमलेशजी ने डूंगरसी से प्रतिलिपि करवायी।

२१६३. **प्रवचनसार भाषा**—×। पत्रसं० २०१। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल सं० १७४३। पूर्ण। वेष्टन सं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

२१६४. **प्रवचनसार भाषा**—×। पत्रसं० १७२ आ० ६½ × ४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टन सं० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

२१६५. **प्रवचनसार भाषा वचनिका—हेमराज**। पत्रसं० १७७। आ० ११ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—अध्यात्म। र० काल सं० १७०९ माघ सुदी ५। ले० काल सं० १८८५। वेष्टन सं० ११७३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२१६६. **प्रतिसं० २**। पत्रसं० २२०। आ० १२×५½ इंच। ले०काल सं० १८८६ आषाढ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० २६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२१६७. **प्रतिसं०३**। पत्र सं० २८३। आ० १०½×७½ इञ्च। ले० काल सं० १९४१ अगहन बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन सं० २६ ६३। **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर।

२१६८. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० ३५४। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २७/६३। **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर।

२१६९. **प्रतिसं० ५**। पत्र सं० १७०। आ०१२×५½ इञ्च। ले० काल सं० १८४० माघ सुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा।

विशेष—बीच बीच में कुछ पत्र नहीं हैं। गंगाविष्ण ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

२१७०. **प्रतिसं० ६**। पत्र सं० २८२। आ०१२×६ इञ्च। ले०काल १७८५ पूर्ण। वेष्टन सं० ५४-८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—रामदास ने प्रतिलिपि की थी।

२१७१. **प्रतिसं० ७**। पत्र सं० १६७। आ०१४×५½ इंच। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १३२। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक।

२१७२. **प्रतिसं० ८**। पत्र सं० २३०। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ९२ ५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दोसा।

विशेष—पत्र १६० तक प्राचीन प्रति है तथा आगे के पत्र नवीन लिखवा कर ग्रंथ पूरा किया गया है।

२१७३. **प्रतिसं० ९**। पत्र संख्या १४४। आ० ११ × ७ इञ्च। लेखन काल सं० १८३८। पूर्ण। वेष्टन सं० २१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

२१७४. **प्रतिसं० १०**। पत्रसं० १८०। आ० १२½×६ इञ्च। ले० काल सं० १७८८। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६/१७। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

२१७५. प्रतिसं० ११। पत्रस० ३०१। आ० ११ × ४३/४ इञ्च। ले०काल स० १८५६। पूर्ण। वेष्टनसं० १०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—स० १८५६ भादवा कृष्ण ६ रविवार उदयपुर मध्येसार जीवणदास खडेलवाल के पठनार्थ लिख्यो।

२१७६. प्रतिसं० १२। पत्रस० १९५। आ० १२ × ५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बूंदी।

२१७७. प्रति सं० १३। पत्रस० २०६। ले०काल स० १७२४। पूर्ण। वेष्टनसं० ३१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२१७८. प्रतिसं० १४। पत्र स० १९८। ले०काल स० १७२४। पूर्ण। वेष्टनस० ३१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—हेमराज ने ग्रंथ कामागढ मे पूर्ण किया। साह अमरचन्द बाकलीवाल ने ग्रंथ लिखाकर भरतपुर के मन्दिर में चढाया था।

२१७९. प्रतिसं० १५। पत्र स० १४८। आ० १३×६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

२१८०. प्रति सं० १६। पत्रसं० २५१। आ० १० × ८१/२ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

२१८१. प्रति सं० १७। पत्र स० २५५। आ० ११३/४ × ५३/४ इञ्च। ले० काल स० १८७२ फागुन सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—करौली मे प्रतिलिपि हुई।

२१८२. प्रतिसं० १८। पत्र स० २१३। आ० १२ × ५ इञ्च। ले० काल स० १७९५। पूर्ण। वेष्टन स० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

२१८३. प्रतिसं० १९। पत्र स० १४८। आ० ११ × ५१/२ इञ्च। ले० काल स० १७१९ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—कामावती नगर मे प्रतिलिपि हुई।

२१८४. प्रति सं० २०। पत्रसं० १७६। ले०काल स० १७४९ आसोज सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० २४४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२१८५. प्रतिसं० २१। पत्रस० १९५। ले० काल स० १७५२ ज्येष्ठ बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२१८६. प्रति सं० २२। पत्रस० २७१। ले०काल—स० १७८२ ज्येष्ठ बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० २४६। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

२१८७. प्रति सं० २३। पत्रस० २८६। आ० १२ × ५१/२ इञ्च। **ले०काल स० १७५४** आसोज सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० २३२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२१८८. प्रतिसं० २४। पत्र सं० २०६। आ० १२ × ५१/२ इञ्च। **ले०काल स० १७५४।** पूर्ण। वेष्टन सं० १२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२१८६. प्रति सं० २५ । पत्र स० ७० । आ० १२×६ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१९०. प्रतिसं० २६ । पत्रसं० २२६ । आ० ११×७½ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

२१९१. प्रतिसं० २७ । पत्र स० २१० । आ० १२½×७½ इच । ले० काल स० १९२६ फागुणबुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती कामा ।

विशेष—प्राकृत मे मूल तथा सस्कृत मे टीका दी हुई है । चूरामन जी पोदार गोत्र बनावरी बयाना वालो ने ग्र थ की प्रतिलिपि करवायी । व्यास स्योबक्ष ने अखैगढ मे प्रतिलिपि की ।

२१९२. प्रवचनसार भाषा—हेमराज । पत्रस० ६१ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय अध्यात्म । र०काल स० १७२४ आषाढ सुदी २ । ले० काल स० १८८५ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—प्रतिलिपि दौलतराम निरमैचद ने की थी । इसको बाद मे काट दिया गया है ।

२१९३. प्रति सं० २ । पत्र स० २२६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

२१९४. प्रति स० ३ । पत्रस० ४१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—ग्र थ जीर्ण एव पानी मे भीगा हुआ है ।

२१९५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २११ । आ० ११½ × ७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—म० पचाय दि० जैन मंदिर बयाना ।

२१९६. प्रवचनसार वृत्ति-अमृतचद्र सूरि । पत्रस० २-६६ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष – प्रथम पत्र नहीं है ।

२१९७ प्रति स० २ । पत्रस० ७१ । ले०काल १८०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा पचायती डीग ।

२१९८. प्रवचनसार वृत्ति × । पत्रस० १४३ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १५९० । अपूर्ण । वेष्टन स० २४० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

२१९९. प्रवचनसारोद्धार— × । पत्र सं० १४८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले०काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूदी ।

विशेष—इति श्री प्रवचन सारोद्धार सूत्र ।

२२०० प्रायश्चित पाठ– अकलंकदेव। पत्रस० ८–२७। आ० १० × ४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चिंतन। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २६६।१५७ **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर।

२२०१. प्रायश्चित विधि—पत्रस० ५। भाषा—संस्कृत। विषय-चिन्तन। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मंदिर भरतपुर।

२२०२. प्रायश्चित समुच्चय—नंदिगुरु। पत्र स० १२। आ० १२ × ४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—चिंतन। र०काल ×। ले०काल स० १६८० पूर्ण। वेष्टन स० २७०/२५६। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है –

संवत् १६८० वर्षे पौष वदि ११ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे भट्टारक श्री वादिभूषण तत्पट्टे भट्टारक रामकीर्ति विजयराज्ये ब्रह्मगायमलाय आहार भय भैषज्य शास्त्र दान वितरणैक तत्पराणा अनेक जीर्णनीनन मासाद्वोद्धरणधीराना जिन बिम्ब प्रतिष्ठाद्यनेक धर्म कर्म करं गमक् चित्ताना। कोट नगरे हुवडज्ञातीय वृहच्छाखो सघपति श्री लक्ष्मणाख्याता भार्या लवतादे द्वितपा भा० स० शृगार दे ताभ्या स० जिनदास भा० स० मोहग दे **सं० काहानजी भ० स० कपूरदे स०** मानजी भा० सकोपदद द्वि भा० स० मनरगदे स० भीमजी भार्या स० भक्तादे एतैः स्वज्ञानावर्ण कर्म क्षयार्थ प्रायश्चित ग्रंथ लिखाप्य दत्त।

२२०३. प्रति स० २ । पत्र स० १–१०८। आ० ११½ × ४½ इञ्च। ले० काल ×। वेष्टन स० ७५७ अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

२२०४. बारह भावना— ×। पत्र सं० ४। आ० ६½ × ४ इञ्च। भाषा-–हिन्दी (गद्य)। विषय - चिंतन। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३३। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

२२०५. ब्रह्मज्योतिस्वरूप श्री धराचार्य। पत्र स० ५। आ० १०½ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय - अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टन स० २६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२२०६. भवदीपक भाषा—जोधराज गोदीका—पत्रस० २१८। आ० १०½ × ७½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—योग शास्त्र। र०काल ×। **ले०काल**—स० १९४४ फागुण सुदी ८। पूर्ण। वष्टनस० ६१। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्दरगढ (कोटा)।

२२०७. भव वैराग्यशतक— ×। पत्रस० ५। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय—चिंतन। र०काल ×। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३७६-१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

२२०८. भगवद्गीता—×। पत्रस० ६८। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल ×। **ले०काल**— ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३०। **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर हण्डावालो का डीग।

२२०९. **भावदीपिका**— पत्रस० १७७। भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र०काल × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**-पचायती दि० जैन मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

२२१०. **मोक्षपाहुड—कुंदकुंदाचार्य ।** पत्रस० ३८ । आ० १०×६ इच । भाषा-प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन प० २४१–६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डू गरपुर ।

२२११. **योगशास्त्र—हेमचन्द्र** । पत्रस० ४१ । आ० १०×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले०काल—स० १५८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

सवत् १५८७ वर्षे आषाढ सुदी ११ रवौ । आगमगच्छे श्री उदय सूरिभ्यो नम प्रवर्त्तनी लडाधड श्री गणि शष्यागणी जयश्रीगणि लक्ष्यापित पठनार्थ प्रक्षेपिकावादर्षी ।

२२१२. **प्रति सं० २** । पत्रस० ७-१४ । आ० १० ४½ इच । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—इसमें द्वादश प्रकाश वर्णन है । यहा द्वादश प्रकाश में पचम प्रकाश है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति परमर्हित श्री कुमारपाल भूपाल विरोचन शुश्रुषिते आचार्य श्री हेमचन्द विरचिते अध्यात्मोपनिषन्नामि सजात पट्टबधे श्री योगशास्त्रे द्वादश प्रकाश समाप्त ।

२२१३. **प्रतिस० ३** । पत्रस० १८ । आ० १०½ ४½ इच । ले०काल स० १५४५ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २०७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष - सवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदी २ शुक्ले । श्रीमति मदन दुर्ग नगरे । महोपाध्याय श्री आगम सदन । शिष्यगण लिखापिता गा० शिवदास । सघविपि सहजगदे कृते ।

२२१४ **प्रतिसं० ४** । पत्रस० १० । आ० १०½×४½ इच । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२२१५. **योगसार—योगीन्द्रदेव** । पत्रस० ७ । आ० १२×५½ इच । भाषा-अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल—स० १८३१ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष--मिति चैत सुदी १ स वत १८३१ का लिखित आचार्य श्री राजकीर्ति पडित सवाई रोमण भेसलाणा मध्ये ।

२२१६. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १७ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल० स० १६६३ माह बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

विशेष—लिखायत श्री १०८ आचार्य कृष्णदास वाचन हेतवे लिखित सेवग आज्ञाकारी मुलतान ऋषि कर्णपुरी स्थाने ।

२२१७. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ११ । ले० काल स० १७५५ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—कामा मे प्रतिलिपि हुई ।

२२१८. प्रतिसं० ४। पत्र स० ३०। ग्रा० ११ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४२६/२२६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति *श्री योगसार भाषा टब्बा अर्थ सहित सम्पूर्ण।*

२२१९. प्रतिसं० ५। पत्र स० २४। ग्रा० १०½×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६२-७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियो का डूंगरपुर।

२२२०. प्रति सं० ६। पत्रस० ६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

२२२१. योगसार वचनिका— ×। पत्र स० १७। ग्रा० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—योग। र०काल ×। ले०काल स० १८३२। पूर्ण। वेष्टन स० २८२-११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियो का डूंगरपुर।

विशेष—नौगावा नगर मे आदिनाथ चैत्यालय मे ब्रह्म करणोफल जी ने प्रतिलिपि की।

२२२२. योगेन्दु सार—बुधजन। पत्रसं० ७। भाषा—हिन्दी। विषय—योग। र०काल १८९५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

२२२३. वज्रनाभि चक्रवर्ति की वैराग्यभावना—×। पत्रस० ८। ग्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—चिंतन। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—निम्न रचनाएँ और हैं—वैराग्य सज्झाय छाजू पवार (हिन्दी) विनती देवाब्रह्म।

२२२४. वैराग्य वर्णमाला ×। पत्रस० १०। ग्रा० ८×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—वैराग्य चिंतन। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—अन्त मे **सज्जन चित्त वल्लभ** का हिन्दी अर्थ दिया हुआ है।

२२२५. वैराग्यशतक। पत्रस० ६। भाषा—प्राकृत। विषय—वैराग्य। र०काल ×। ले०काल स० १६५७ पौष वदी १४। पूर्ण। वेष्टनस० ६४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

२२२६. प्रतिसं० २। पत्र स० ६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष—टीका सहित है।

२२२७. वैराग्य शतक-थानसिंह ठोल्या। पत्र स० ३०। ग्रा० १०½×६¾ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—चिंतन। र०काल स० १८४६ वैशाख सुदी ३। ले० काल स० १८४६ जेष्ठ वदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

२२२८. शान्तिनाथ की बारह भावना ×। पत्र स० १२। ग्रा० १३ × ७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—चिंतन। र०काल ×। ले० काल स० १९४४ चैत बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ४३।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

विशेष—दसकत छोगालाल लुहाडया ग्राकादो हे।

२२२९. **शील प्राभृत—कुन्दकुन्दाचार्य।** पत्र सं० ४। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय - अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं २५४। **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रारंभ मे लिंग पाहुड भी है।

२२३०. **प्रति सं० २।** पत्रसं० ४। आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। **ले०काल** ×। पूर्ण। **वेष्टनसं०** ३११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२२३१. **श्रावक प्रतिक्रमण**—×। पत्रसं० १३। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चिन्तन। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। **वेष्टनसं०** १७७-१६३। **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

२२३२. **श्रावक प्रतिक्रमण**— ×। पत्र सं ३-१५। आ० ६×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चिंतन। र०काल ×। ले०काल सं० १७४५ माघ बुदि ५। अपूर्ण। वेष्टन सं० २७१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, दबलाना बूंदी।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी मे अर्थ दिया है।

२२३३. **श्रावक प्रतिक्रमण**—×। पत्र सं० ७। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—चिंतन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६/८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—प्रति जीर्ण है।

२२३४. **श्रावक प्रतिक्रमण**— ×। पत्र सं० ६। आ० १३$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चिंतन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२२३५. **षट्पाहुड—आ० कुन्दकुन्द।** पत्र सं० ४८। आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

२२३६. **प्रति सं० २।** पत्र सं० ३२।। ले० काल सं० १७६७ मार्ग सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० २४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२२३७ **प्रतिसं० ३।** पत्र सं० १६। आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२२३८. **प्रतिसं० ४।** पत्रसं० २८। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल सं० १७२३। वेष्टन सं० १६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—सिरूजशहर मध्ये पण्डित बिहारीदास स्वपठनार्थ सं० १७२३ वर्षे भादु सुदी ३ दिने।

२२३९. **प्रतिसं० ५।** पत्रसं० २८। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ३ इञ्च। ले०काल सं० १८१६ पौष सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५/४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)।

२२४०. प्रति स० ६ । पत्रसं० ५८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १७५० । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४१. प्रति सं० ७ । पत्रस० ६ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२२४२. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ७४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४३. प्रतिसं० ९ । पत्र स० २३ । ले० काल स० १७२१ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष —सागानेर मे प्रतिलिपि हुई । ग्रन्थाग्रन्थ ६०८ मूलमात्र ।

२२४४. प्रतिसं० १० । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १७१२ मगसिर बुदी । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—देहली मे शाहजहां के शासनकाल मे सुन्दरदास ने महात्मा दयाल से प्रतिलिपि कराई ।

२२४५. प्रतिसं० ११ । पत्र स० २३ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४६. प्रतिसं १२ । पत्रस० ३१ । आ० १०½ × ४½ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४७. प्रति स० १३ । पत्र सं० ९७ । आ० ११¾ × ४¾ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष – प्रति प्राचीन है ।

२२४८. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० ५४ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८५१ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १००/३९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इंदरगढ (कोटा) ।

विशेष—लिखत ब्राह्मण अमेदावास वान आत्रदा का । लिखाइत बाबाजी ज्ञान विमलजी तत् शिष्य ध्यानविमलजी लिखत इंद्रगढ मध्ये ।

२२४९. प्रति सं० १५ । पत्र स० ६२ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल स० १७६५ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है ।

२२५०. प्रति सं० १६ । पत्र स० ६७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १७१७ मगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प० मनोहर ने लिखा ।

२२५१. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ६२ । आ० ६ × ६ इच । ले० काल स० १७६६ जेठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२२५२. प्रति सं० १८ । पत्र स० ३१ । आ० ८½ × ४ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)

२२५३. षटपाहुड टीका—× । पत्र स० ३-७३ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

२२५४. षट्पाहुड टीका—। पत्र स० ६४ । आ० १०×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १७८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

लेखक प्रशस्ति—सवत १७८६ का वर्षे माह बुदी १३ दिने । लिखत जती गगाराम जी माणपुर ग्रामे महाराजाधिराज श्री सवाई जयसिह जी राज्ये ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२२५५ प्रतिसं० २ । पत्रस० ५० । आ० १०×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल सं० १८२४ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

सवत १८२४ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे तिथि ३ वार सनीचर वासरे कोटा का रामपुरा मध्ये महाराजा हरकृष्ण लिपि कृता पाडेजी बखतराम जी पठन हेतवे । गुमानसिंघ जी महाराव राज्ये ।

प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२२५६. षट्पाहुड भाषा—देवीसिंह छाबडा । पत्र स० ५० । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल सं० १८०१ सावण सुदी १३ । ले० काल स० १९४२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५/२२७ । प्राप्ति स्थान—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई ।

२२५७. प्रति सं० २ । पत्र स० २७ । आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वे० स० ११६ ८६ । प्राप्ति स्थान—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्द्रगढ (कोटा) ।

विशेष—राजूरागवाल ने इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की ।

२२५८. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १८५० । पूर्ण । वे० स० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

२२५९. षट् पाहुड भाषा (रचनिका)—जयचन्द छाबडा । पत्र स० १९३ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल स० १८६७ भादवा सुदी १३ । लेखन काल × । वेष्टन स० ७८ । प्राप्तिस्थान—तेरहपथी दि० जैन मदिर नैणवा ।

२२६०. प्रति स० २ । पत्र स० १६६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

विशेष—पन्नालाल साह बसवा वाले ने दौसा मे प्रतिलिपि की । नाथूलाल तेरापथी की बहू ने चढाया ।

२२६१. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १८० । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

षटपाहुड वृत्ति—श्रुतसागर । पत्रसं० १८३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म। र० काल × । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० १०५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२२६२. प्रतिसं० २ । पत्रस० २०३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १७८५ मगसिर सुदी ३ पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२२६३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२२६४. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ६१ । आ० ६¾×४½ इञ्च । ले० काल स० १७७० । पूर्ण । वेष्टन स० १५१ ४० । **प्राप्ति-स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ़, कोटा ।

विशेष—लिखत साह ईसर अजमेरा गैगोली मध्ये लिखी स० १७७० माह सुदी ५ शनीवारे ।

२२६५ प्रतिसं० ५ । पत्र स० २३० । आ० १३×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, कामा ।

२२६६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १६० । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२२६७. षोडशयोग टीका — × । पत्र स० २० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—योग । र० काल × । ले० काल स० १७८० पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

लेखक प्रशस्ति—सवत् १७८० वर्षे श्रावण वदि ७ शनौ लिखत श्री गौडज्ञातीय श्रीमद् नरेश्वर सुत जयरामेण ओवेर ग्राम मध्ये जोसी जी श्री मल्लारि जी गृहे ।

२२६८, समयसार प्राभृत—कुंदकुंदाचार्य । पत्र स० १-५४ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति आत्मख्याति टीका सहित है ।

२२६९. प्रति सं० २ । पत्रस० ३५ । आ० १३½×६½ इञ्च । ले०काल स० १८३२ काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—इसका नाम समयसार नाटक भी दिया है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२२७०. प्रति सं० ३ । पत्रस० १०७ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८/२२७ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ श्लोक स० ४५०० । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२२७१. समयसार कलशा—अमृतचन्द्राचार्य । पत्रसं० ६१ । आ० ११¾ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२२७२. प्रतिसं० २ । पत्रस० २५ । आ० १०$\frac{3}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६०१ वैशाख सुदी ६ । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२२७३. प्रति सं० ३ । पत्रस० १२ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २५१-१०१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

२२७४. प्रति सं० ४ । पत्रस० ३३ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । **अपूर्ण** । **वेष्टनसं०** १२४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष—पत्र १६ तक हिन्दी मे अर्थ भी है । ३३ से आगे के पत्र नही है ।

२२७५. प्रति स० ५ । पत्र स० ७६ । आ० ६$\frac{3}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

२२७६. प्रति स० ६ । पत्रस० १४ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३४ । **प्राप्तिस्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२२७७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १०१ । आ० १८×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनस०** ३१२/२१८ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति बहुत प्राचीन है । पत्र माटे है ।

२२७८. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ३६ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल स० १७१८ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी दौसा ।

२२७९. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२२८०. प्रतिसं० ९ । पत्रस० २७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १६५० वैशाख बुदी ७ । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

२२८१. प्रतिसं० १० । पत्रस० ५७ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

२२८२. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ६७ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल —× । अपूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—४४६ श्लोक तक है । प्राकृत मूल भी दिया हुआ है ।

२२८३. प्रतिसं० १२ । पत्र स ४१ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६४६ कार्तिकी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नैनपुर मे प्रतिलिपि की गयी ।

२२८४. प्रति सं० १३ । पत्रसं० १५ । आ० १०×४ इच । **ले०काल स०** १६३४ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४४ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।**

२२८५. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० ३३ । आ० १३ × ५½ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

विशेष—टीका का नाम तत्वार्थ दीपिका है ।

२२८६ **समयसार कलशा टीका—नित्य विजय** । पत्रसं० १३२ । आ० १२×५½ इंच । **भाषा**—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

इति श्री समयसार समाप्त ।। कुंदकुदाचार्य प्राकृत ग्रथ रूप मदिर कृत समयसार शास्त्रस्य मया अमृत चन्द्रेण सस्कृत रूप कलशः कृतस्तस्य मदिरोपरि ।

नित्य विजय नामाह भाव सारस्य टिप्पर्ण ।
आनन्द राम संज्ञस्य वाचनाव्यलीलिखम् ।

प्रारम्भिक—

सिद्धान्नत्वान्लिखानीद मर्थ सारस्य टिप्पण ।
आणंदराम सज्ञस्य वाचनाय च शुद्धये ।।

प्रति टव्वा टीका सहित है ।

२२८७. **समयसार टीका (अध्यात्म तरंगिणी)—भ० शुभचन्द्र** । पत्रस० १३० । आ० १०×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल स० १५७३ आसोज सुदी ५ । ले०काल सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—

प्रारंभ—आदिभाग—

शुद्धं सच्चिद्रूप भव्याबुजचन्द्रममृत मकलक ।
ज्ञानाभूप वंदे सर्व विभाव स्वभाव सयुक्तं । १ ।।
सुधाचन्द्रमुंने र्वाक्या पद्यात्युद्धृत्य रम्माणि ।
विवृणोमि भक्तितोह चिद्रूपे रक्त चित्तश्च । २ ।।

अन्तभाग—

जयतु जित विपक्षः पालिताशेषशिष्यो
विदित निज स्वतत्वश्चोदितानेक सत्व ।।
अमृतविधुयतीशः कुंदकुदो गणेश. ।
श्रुतसुजिन विवाद स्याद्विवादाधिवादः ।। १ ।।
सम्यक् समार वल्लीवलय-विदलनेमत्तमातगमानी ।
पापातापेभकुम्भोद् गमन करा कुण्ठ कण्ठीरवारि. ।।
विद्वद्विद्याजिनोदा कलित मति रहो मोहतामस्य सार्या ।।१।।
चिद्रूपोद्भासिचेता विदित शुभयतिर्ज्ञानि भूषस्तु भूयात ।। २ ।।
विजयकीर्ति यतिर्जगता विमल[1]कीर्ति धरोधृति धारक. ।
जयतु शासन भासन भारती मय मतिर्दलिता पर वादिकः ।। ३ ।।

---

१. गुर्वविधृत धर्म धुरीद् वृत्तिधारक : ऐसा भी पाठ है ।

शिष्य स्तस्य विशिष्ट शास्त्र विशदः ससार भीताशयो ।
भावाभाव विवेक वारिधि तरत् स्याद्वाद् विद्यानिधिः ॥
टीका नाटक पद्यजा वग्गुणाध्यात्मादि स्रोतस्विनी ।
श्रीमच्छ्रीशुभचन्द्र एष विधिवत् संचकरीतिस्म वै ॥ ४ ॥
त्रिभुवन वरकीर्ति र्जीन रूपात्तमूर्ते.
शमदम-मयपूर्नेराग्रह राग्रहन्नाटकस्य
विशद विभव वृत्तो वृत्तिमाविश्चकारः
गतनयशुभचन्द्रो ध्यान सिद्धचर्थमेव ॥ ५ ॥
विक्रमवर भूपालात् पर्चात्रशते त्रिसप्तति व्यधिके (१५७३)
वर्षेऽप्यश्विन मासे शुक्ले पक्षेऽथ पचमीदिवसे ॥६॥
रचितेय वर टीका नाटक पद्यस्य पद्ययुक्तस्य ।
शुभचन्द्रेणमुजयमताविद्यामवरन न पद्यपद्याकात् ॥ ७ ॥
... .पातनिकाभिश्च भिन्न भिन्नाभि. ।
जीयादाचन्द्रार्क स्वाध्यात्मतरगिणी टीका ॥ ८ ॥

इति श्री कुमतद्रुम मूलोन्मूलनमहानिर्भरणी श्रीमदध्यात्मतरगिणी टीका ।
स० १७६५ वर्षे पौष वदी १ शनौ । लिखिता ।

२२८८ समयसार टीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्रस० १९१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत सस्कृत। विषय—अध्यात्म । र० काल ×। ले०काल स० १४६३ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—*ग्रन्थाग्रन्थ स० ४५०० है ।*

लेखक प्रशस्ति—

स्वस्ति श्री सवत् १४६३ वर्षे मार्गकृष्ण त्रयोदश्या सोमवासरे अद्येह श्री कालपी नगरे समस्त राजावली समालकृत विनिर्जितारिवर्गी प्रचड महाराजाधिराज सुरत्राण श्री महमूदसाहि विजयराज्य प्रवर्त्तमाने अस्मिन् राज्ये श्री काष्ठासघेमाथुरान्वये पुष्कर गच्छे लोहाचार्यान्वये प्रतिष्टाचार्य श्री अनन्तकीर्ति देवाः तस्य पट्ट गगनागणे भट्टारक कल्पा श्री क्षेमकीर्ति देवाः तत्पट्टे श्री हेमकीर्ति देवाः तत् शिष्य श्री धर्मचन्द्र देव. तस्य धर्मोपदेशामृतेन हृदिस्थित मनोवल्ली सिच्यमानेना रोहितास नगरे वास्तव्य श्री काल्पीनगर स्थित अग्रोतकान्वय मीतण (ल) गोत्रीय पूर्व पुरुष साधु खेत नाम्नि तस्य वसे दीवाण ठा० प्रसिद्ध सर्वकार्य कुशल साधु नयग तस्य द्वौ भार्यौ कोकिला माता नाम्नो एतेषा कुक्षे उत्पन्नः एकादश प्रतिमा धारकः सा. सहजपाल हदरति प्रसिद्ध साधु श्री नरपति कुलमडण साधु हेमराजी एतै साधु सहजपाल पुत्र गुरुदास हरिराज सा. नरपति भार्या साधु नमिडण अन भो पुत्र जिणदास वील्हा वीरदास । सा हेमराज पुत्र गणराज गुरुदास पुत्र साधु नरपति पुत्र साधु श्री बाल्हचन्द्र तस्य द्वौ भार्यौ साधुनी जौणपाल ही लहुवडि नाम्नी अनयो पुत्र साधु देवराज तस्य भार्या राल्ही नाम्नी एतयोः पुत्र पल्हचन्द एतै. जिनप्रणीत मार्ग रतैः चतुर्विध दानदायकैः सघनायकैः जिनपूजा पुरदरैः एतेषा मध्ये साधु नइण पौत्रेण साधु नरपति पुत्रेण साधु श्री बाल्हचन्द्र देवेन साधुनी जौणपाल ही लहुवडिकातेन साधु राज जातेन पौत्र साधु 'श्री पाल्हणचन्द्र समुद्भवेन श्री समयसार पुस्तकं

लिखाप्य ससार समुद्रो तारणार्थं दुरितदुष्ट विध्वस नार्थ ज्ञानावरणाद्यपृक कर्मक्षयार्थ श्री धर्महेतोः सुगुरोः धर्मचन्द्र देवेभ्य. पुस्तकदान दत्तं ।

२२८६. **प्रति स० २ ।** पत्रस० १७१ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १७३७ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२२९०. **प्रति स० ३ ।** पत्रस० १२६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १५७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रतिलिपि रोहितक ग्राम मे हुई । श्री हेमराजजी के लिये प्रतिलिपि की गई ।

अन्तिम—वणिक् कुल मडन हेमराज सोय चिरजीवतु पुत्र पौत्री ।

तदर्थं मेतल्लिखितं च पुस्त दातव्य मे तद्धि दुले प्रयत्नात् ।।

२२९१. **प्रति सं० ४** । पत्रस० १४३ । ले०काल स० १६५८ माघ सुदी ५ । पूर्ण । **वेष्टन सं० १६५ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मूलसघे भारती गच्छे बलात्कार म० विद्यानद्याम्नाये श्री मल्लिभूषणदेवा त० प० भ० श्री लक्ष्मीचन्द्र देवा तत्पट्टे श्री अभय चन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री रत्नकीर्ति तद्गुरु भ्राता ब्रह्म श्री कल्याणसागर-स्येद पुस्तक काकुस्थपुरे विक्रियेत नीत मुनफरीये देवनीत अर्गलपुरस्थ कल्याण सागरेण पडित स्वामाय प्रदत्तं पठणाय ।

२२९२. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० १६६ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनस० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२२९३. **प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० १४३ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६२५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

२२९४. **प्रतिसं० ७ ।** पत्र स० १४३ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल स० १७८८ वैशाख वदी ११। पूर्ण । वेप्टन स० १३/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

२२९५. **प्रति सं० ८ ।** पत्रस० ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४० । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मदिर बसवा ।

२२९६. **प्रति स० ९ ।** पत्रस० १६४ । आ० १०¾ × ५¾ इच । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टनस० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

२२९७. **प्रति स० १० ।** पत्रस० १९ । आ० ११ × ५ इच । ले०काल स० १७३९ । पूर्ण । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दनस्वामी, बूदी ।

विशेष—इस टीका का नाम आत्मख्याति है । लवाण मे आ० ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि की ।

२२९८. **प्रति सं० ११ ।** पत्रस० १३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष —तात्पर्य वृत्ति सहित है ।

२२९९. **प्रतिसं० १२** । पत्रस० २०२ । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १८४० । पूर्ण । वेष्टन स० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष—तात्पर्य वृत्ति सहित है।

प्रशस्ति—सवत् १४४० वर्षे चैत्र सुदी १० सोमवासरे अद्येह योगिनिपुर पेरोजसाहि राज्यप्रवर्तमाने श्री बिमलसेन श्री धर्मसेन भावसेन सहस्रकीर्तिदेवाः तरुजजिनगरे श्री श्रेष्ठि कुलान्वये गर्गगोत्र साह धन्ना गच्छे ······· तेना समयसार ब्रह्मदेव टीका कर्त्ता मूलकर्त्ता श्री कुन्कुन्दाचार्यदेव विरचित लिखाप्य सहस्रकीर्ति आचार्य प्रदत्त ।

२३००. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० २३ । आ० १४×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २६-६३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

२३०१. **प्रतिसं० १४** । पत्रस० ५० । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १६०७ सावण बुदी ६। पूर्ण । वेष्टन स० ३३५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष प्रशस्ति—सवत् १६०७ वर्षे सावण बुदि ६ खक नाम नगरे पातिसाहि अलेमिसाहि राज्ये प्रवर्तमाने श्री शातिनाथ जिन चैत्यालये श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे ··· ·· ···· ।

२३०२. **प्रतिसं० १५** । पत्रस० ६३ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ६१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर, आदिनाथ बूंदी ।

२३०३. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० ६८ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रतिपत्र १० पंक्ति एव प्रति पक्ति अक्षर ३७ हैं ।

प्रति प्राचीन है ।

२३०४ **प्रतिसं० १७** । पत्रस० १६७ । आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४०१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अन्तिम पृष्ठ नही है पाडेराजमल्ल कृत टीका एवं पं० बनारसीदास कृत नाटक समयसार के पद्य भी है ।

२३०५. **समयसार वृत्ति—प्रभाचन्द** । पत्रस० ६५ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १६०२ मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ११८१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२३०६. **समयसार टीका—भ० देवेन्द्रकीर्ति** । पत्रसं० १५ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र०काल स० १७८८ भादवा सुदी १४ । ले०काल स० १८०४ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बून्दी ।

विशेष—आ० कुन्दकुन्द के समयसार पर आमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्त्ति की यह टीका है जो प्रथम बार उपलब्ध हुई है ।

प्रशस्ति—

वास्वष्ट युक्त सप्तेन्द्र युते वर्षे मनोहरे,
शुक्ले माद्रपदेमासे चतुर्दश्यां शुभे तिथौ ।
ईसरदेति सद्ग्रामे टीकेयं पूर्णतामिता ।
भट्टारक जगत्कीर्त्ति पट्टे **देवेन्द्रकीर्त्तिना** ।।२।।

दुः कर्म्महानये शिष्य मनोहर गिराकृता ।
टीका समयसारस्य सुगमा तत्वबोधिनी ।।३।।
बुद्धिमद्भिः बुधैः हास्यं कर्त्तव्यंनो विवेकभिः ।
शोधनीय प्रयत्नेन यतो विस्तारता वृजेत् ।।४।।
बुधैः सपाठ्यमान च वाच्यमानं श्रुत सदा ।
शास्त्रमेतच्छुम कारि चिर सतिष्टताभुवि ।।५।।
पूज्यदेवेन्द्रकीर्त्ति सशिष्येण स्वात हारिणा ।
नाम्नेय **लिखिता** स्वहस्तेन स्वबुद्धये ।।६।।

सवत्सरे वसुनाग मुनींद्र द्रमिते १७८८ भाद्रमासे शुक्ल पक्ष चतुर्दशी तिथौ इसरदा नगरे श्रीराजि श्री अजीतसिहजी राज्य प्रवर्त्तमाने श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये ......। भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तितेनेयं समयसार टीका स्वशिष्य मनोहर कमनाद् पठनाय तत्वबोधिनी सुगमा निज बुद्धया पूर्व टीका अवलोक्य निहिता बुद्धि मद्भि शोधनीया प्रमादाद्वा अल्पबुद्धया यत्र हीनाधिक भवेत् तद्वोधनीय सभोभवीत् श्री जिन प्रत्यसत्ते ।

सवत् सरेन्दवसु शून्यवेदयुते १८०४ युते वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे त्रयोदश्या चद्रवारे चन्द्रप्रभ चैत्यालये पडितोत्तमपडित श्री चोखचन्दजी तत् शिष्य रामचन्द्रेण टीका लिखितेय स्वपठनार्थं झिलडी नगरे वाचकानां पाठकाना मगलावली सवोभवतु ।।

२३०७ समयसार प्रकरण—प्रतिबोध । पत्र स० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्याम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७७/५८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

२३०८. समसार भाषा टीका—राजमल्ल । पत्र स० २६८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका है ।

२३०९. प्रति सं० २ । पत्र स० १७६ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल स० १६०७ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

विशेष—अकबराबाद (आगरा) मे प्रतिलिपि हुई ।

२३१०. प्रति स० ३ । पत्रसं० २१० । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १७२५ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

२३११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१८ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२३१२. प्रति सं० ५ । पत्रस० ६३ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

२३१३. प्रति सं० ६ । पत्र स० ५७-२६४ । आ० ६½ × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

२३१४. प्रति सं० ७। पत्र स० २३७। आ० १३ × ७½ इञ्च। ले० काल स० १८६८ आषाढ बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ६०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—कामा मे प्रतिलिपि हुई।

२३१५. प्रतिसं० ८। पत्रस० १४५। आ० ११½×४½ इञ्च। ले० काल स० १७५०। **पूर्ण।** वेष्टन स० १६१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

२३१६. समयसार टीका— ×। पत्र स० २५। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५१। **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मदिर तेरहपंथी नैणवा।

२३१७. **समयसार भाषा—जयचन्द छाबडा।** पत्र सख्या ४१८। आ० ११ × ७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य (ढूढारी)। विषय–अध्यात्म। र० काल स० १८६४ कार्तिक बुदी १०। ले० काल सं० १६११ फागुण बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—महानन्द के पुत्र रामदयाल ने स० १६१३ भादवा सुदी १४ को मदिर मे चढाया था।

२३१८. प्रति स० २। पत्र स० ३३६। आ० १½० × ७½ इञ्च। ले०काल स० १६३७। पूर्ण। वेष्टन स० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

२३१९. प्रति स० ३। पत्रस० ३६०। आ० ११×६ इञ्च। ले० काल स० १८६८ **पौष बुदी** १। पूर्ण। वेष्टन स० ७३–१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—बखतलाल तेरहपथी ने कालूराम से प्रतिलिपि करवाई।

२३२०. प्रति सं० ४। पत्र स० १६८। आ० १२½ × ६ इञ्च। ले० काल स० **१८७६** वैशाख बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—बख्तराम जगराम तथा मूसेराम की प्रेरणा से गुमानीराम ने करौली मे प्रतिलिपि की।

२३२१. प्रतिसं० ५। पत्रस० २६६। ले०काल स० १८६५। पूर्ण। वेष्टन स० ५२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर नगर मे लिखा गया।

२३२२. प्रतिसं० ६। पत्र स० २६४। ले० काल स० १८७४। पूर्ण। वेष्टन स० ५२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

२३२३. प्रति सं० ७। पत्र स० २५७। आ० ११ × ७½ इञ्च। ले० काल स० १८७६ माह सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई।

२३२४. प्रति सं० ८। पत्र स० ३१८। आ० १४ × ७½ इञ्च। ले० काल स० १६४३ माघ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

२३२५. प्रति स० ९। पत्रस० ३७२। आ० १३ × ५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२३२६. प्रतिसं० १०। पत्रस० ३८७। आ० १२¾×७½ इञ्च। ले०काल स० १६५४। पूर्ण। वेष्टन स० ८१/१। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा)

विशेष— मांगीलालजी जिनदासजी इन्दरगढवालों ने सवाई जयपुर मे जैन पाटशाला, शिल्प कम्पनी बाजार (मणिहारों का रास्ता) में मारफत मोलीलालजी सेठी के स० १६५४ मे यह प्रति लिखाई। लिखाई मे पारिश्रमिक के ३२॥। ≡)॥ लगे थे ।

२३२७. प्रति सं० ११ । पत्रस० २४४ । ग्रा० १०½ × ८ इञ्च । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—पत्र सं० १-१५० एक तरह की तथा १५१-२४४ दूसरी प्रकार की लिपि है ।

२३२८. समयसार भाषा—रूपचन्द । पत्र स० २२२ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र० काल स० १७०० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान** - तेरहपथी दि० जैन मदिर नैणवा ।

विशेष—महाकवि बनारसीदास कृत समयसार नाटक की हिन्दी गद्य मे टीका है ।

२३२९. प्रति सं० २ । पत्रसं० ३११ । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७३५ सावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—ग्रागरा में भगवतीदास पोखाड ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की ।

२३३०. प्रति सं० ३ । पत्रस० १७३ । ग्रा० १०½ × ३½ इञ्च । ले०काल स० १७६५ वैशाख बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

२३३१. समयसार नाटक—बनारसीदास । पत्र सं० १११ । ग्रा० ८½ × १½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । र० काल स० १६६३ ग्रासोज सुदी १३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२३३२. प्रति सं० २ । पत्र स० १४२ । ग्रा० ६½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२३३३. प्रति स० ३ । पत्रस० २३४ । ग्रा० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२३३४. प्रति स० ४ । पत्रस० ६६ । ग्रा० ६ × ६ इञ्च । ले० काल स० १७३३ । वेष्टन सं० १५०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—(गुटका स० २७६)

२३३५. प्रति स० ५ । पत्र स० १०८ । ग्रा० ७ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२३३६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १०२ । ले०काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

२३३७. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० १५६ से २३० । ग्रा० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५-२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—ब्रह्म विलास तथा समयसार नाटक एक ही गुटके मे हैं ।

२३३८. प्रति सं० ८ । पत्रस० ७२ । ग्रा० ६½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२-५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटड़ियों का डूगरपुर ।

२३३९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४२ । आ० ८×६½ इञ्च । ले०काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—४२ पत्र के बाद कुछ पत्रों में कबीर साहब तथा निरजन की गोष्टि दी हुई है ।

२३४०. प्रति सं० १० । पत्र स० १४० । आ० ७×४½ इञ्च । लेखन काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३८-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

२३४१. प्रति सं० १० । पत्र सं० १० । आ० ६½×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१०-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—१० से आगे पत्र नही है ।

२३४२. प्रति सं० ११ । पत्र स० ८६ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अग्रवाल उदयपुर ।

२३४३. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६२ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १७२३ भादवा सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स ५१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति पत्र ११ पक्ति एव प्रति पक्ति ३३ अक्षर है ।

खोखरा नगर मे प्रतिलिपि हुई ।

२३४४. प्रति सं० १३ । पत्रस० ७३ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२३४५. प्रति सं० १४ । पत्रस० १६६ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल स० १७२८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । (हिन्दी गद्य टीका)

२३४६. प्रति सं० १५ । पत्र स० ८८ । आ० १०×४ इञ्च ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बनारसी विलास के भी पाठ है ।

२३४७. प्रति सं० १६ । पत्र स० १२५ । आ० ८×६½ इञ्च । ले० काल स० १७५६ कार्त्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

(गुटकाकार न० १२)

२३४८. प्रति सं० १७ । पत्र स० ४६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मदिर उदनपुर ।

२३४९. प्रति सं० १८ । पत्र स० १७४ । आ० ११½ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२३५०. प्रति सं० १९ । पत्र स० ३-६७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२३५१. प्रति सं० २० । पत्र सं० ६६ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८९३ सावण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सरावगी लिखमीचंद ने लिखाया तथा भादवा सुदी १४ स० १८६३ में व्रतोद्यापन पर फतेपुर के मदिर में चढ़ाया।।

२३५२. प्रति सं० २१। पत्र सं० १३०। आ० १४×८$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—प० हीरालाल जैन ने बाबूलाल आगरे वालो से प्रतिलिपि कराई।

२३५३. प्रति सं० २२। पत्र स० ५०। आ० १३$\frac{1}{2}$×७ इञ्च। ले० काल स० १९१४ माघ सुदी ५। पूर्ण। वे० स० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

२३५४. प्रति स० २३। पत्रस० ७०। आ० १३ × ६ इञ्च। ले०काल—स० १९१६ पौष वदी १३। पूर्ण। वेष्टनस० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—व्यास सिवलाल ने जै गोविन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की।

२३५५. प्रति सं० २४। पत्रस० १८०। आ० ९ × ६ इञ्च। ले० काल—स० १७४८ काती बुदी १२। पूर्ण। वेष्टनसं०—१०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)।

विशेष—जोबनेर मे प्रतिलिपि हुई।

२३५६. प्रति सं० २५। पत्रस० २२१। आ० १२$\frac{1}{2}$× ६ इञ्च। ले० काल—स० १८५७ कार्त्तिक बुदी १। पूर्ण। **वेष्टनसं०**—३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—चिमनलाल तेरहतथी ने प्रतिलिपि की।

२३५७. प्रति सं० २६। पत्रस० ३-१०। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल— ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १०५-९। **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा।

२३५८. प्रति स० २७। पत्रस० १३७। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० १३१। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

२३५९. प्रति सं० २८। पत्र स० ३-३६६। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन स०६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेननदास पुरानी डीग।

विशेष—अमृतचन्द्र कृत कलशा तथा राजमल्ल कृत हिन्दी टीका सहित है। पत्र जीर्ण है।

२३६०. प्रति सं० २९। पत्रस० ६०। आ० १० × ५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

२३६१. प्रति सं० ३०। पत्रस० ७९। ले० काल स० १६६७ ज्येष्ठ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी, कामा।

२३६२. प्रति सं० ३१। पत्र स० ९-१४५। आ० ९ × ५ इञ्च। ले० काल— ×। अपूर्ण। वे० स० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२३६३. प्रतिसं० ३२। पत्र स० २०९। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल स० १८९४ असाढ सुदी ११। पूर्ण। वे० स०३५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—रिषभदास कासलीवाल के पुत्र ने कामा मे प्रतिलिपि कराई।

२३६४. प्रति सं० ३३ । पत्रसं० १६५ । आ० १२½×५½ इञ्च । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

२३६५. प्रतिसं० ३४ । पत्रसं० ७३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२३६६. प्रति सं० ३५ । पत्रस० १०३ । ले०काल सं० **१७२१** आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ क । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२३६७. प्रति सं० ३६ । पत्र स० ६३ । आ० १०×६½ इञ्च । **ले०काल** स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर कामा ।

विशेष—जोधराज कामलीवाल ने प्रतिलिपि करायी थी ।

२३६८. प्रतिसं० ३७ । पत्रस० १०६ । आ० १० ×६½ इञ्च । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

२३६९ प्रतिसं० ३८ । पत्रस० ३५७ । ले०काल सं० **१७५२** सावरण सुदी ३ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—पहिले प्राकृत मूल, फिर सस्कृत तथा पीछे हिन्दी **पद्यार्थ है** ।

पत्र जीर्ण शीर्ण अवस्था मे है ।

२३७०. प्रति सं० ३९ । पत्र स० ६० । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन म० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

२३७१. **प्रति सं०** ४० । पत्र स० १२३ । आ० ६×५½ इञ्च । ले० काल स० १७४८ माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन म० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती बयाना ।

विशेष—बेगमपुर मे भवानीदास ने प्रतिलिपि की थी । १२३ पत्र के आगे २१ पद्यों मे बनारसीदास कृत सूक्ति मुक्तावली भाषा है ।

२३७२. **प्रति सं० ४१** । पत्रस० ७७ ।ले०काल स० १८५५ पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष— बयाना मे प्रतिलिपि हुई ।

२३७३. प्रतिसं० ४२ । पत्रस०—७० । लेखन काल सं० **१९२९** फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती बयाना ।

विशेष—श्री ठाकुरचन्द मिश्र ने माधोसिह जी के पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी तथा स० १९३२ मे मदिर में चढाया ।

२३७४. प्रतिसं० ४३ । पत्र सख्या—४१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—जीर्ण है ।

२३७५. प्रतिसं० ४४ । पत्र सं० २-५९ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायतती भरतपुर ।

२३७६. **प्रतिसं० ४५** । पत्रसं० १६२ । ले०काल सं० १८६६ पूर्ण । वेष्टन सं० ५२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३७७. **प्रतिसं० ४६** । पत्रस० ६५ । ले०काल सं० १७०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३७८. **प्रतिसं० ४७** । पत्रस० ६१ । ले०काल सं० १७३३ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

२३७९. **प्रतिसं० ४८** । पत्रस० २३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३८०, **प्रति स० ४९** । पत्रस० १५४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

२३८१. **प्रति सं० ५०** । पत्र सं० २२३ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७३४ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२३८२. **प्रतिसं० ५१** । पत्र स० ६० । ले०काल स० १७७९ । अपूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्तिस्थान**—खडेलवाल दि० जैन मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार किया हुआ है ।

२३८३. **प्रतिसं० ५२** । पत्र स० ११७ । ले०काल स० १९०१ पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मदिर अलवर ।

२३८४. **प्रति सं० ५३** । पत्र स० ९३ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२३८५. **प्रति सं० ५४** । पत्रस० ६० । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३/१६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

२३८६. **प्रति स० ५५** । पत्र स० १४९ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १९०३ पूर्ण । वेष्न स० ३८१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

२३८७. **प्रति सं० ५६** । पत्र स० ३२-७१ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८३१ द्वितीय वैशाख बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टनसं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—दौलतराम चौधरी ने मनसाराम चौधरी की पुस्तक से उतारी । प्रतिलिपि टोडा मे हुई ।

२३८८. **प्रति सं० ५७** । पत्र स० ११७ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल स० १७३३ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पंथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—कर्णपुरा मे लिखा गया ।

२३८९. **प्रति सं० ५८** । पत्रसं० ३-११८ । आ० ८ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८५० पौष सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०९-१३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—सहजराम व्यास ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की।

२३६०. प्रति सं० ५६। पत्रस० ६८। आ० १०×५ इञ्च। **ले०काल** स० १८६१। पूर्ण। वेष्टन सं० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टौंक)।

२३६१. प्रतिसं० ६०। पत्रसं० ६१। आ० ११ × ५½ इंच। **ले०काल** ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल टोक।

विशेष—अंतिम पत्र नही है।

२३६२. प्रतिसं० ६१। पत्रस० ८०। आ० १० × ४ इंच। **ले०काल** स० १८२५। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टोक)।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवत् १८२५ वर्षे माह मासे कृष्ण पक्षे अष्टमी दिने बुधवारे कतु आरा ग्रामे श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्र जी तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देवचन्द जी भट्टारक श्री १०८ धर्मचन्द जी तत् शिष्य गोकलचन्द जी तत् लघु भ्राता ब्रह्म मेघजी।

ग्रंथ के ऊपरी भाग पर लिखा है—

श्री रूपचन्द जी शिष्य सदामुख बाबाजी श्री विजयकीर्ति जी।

२३६३. प्रतिसं० ६२। पत्रस० १३८। आ० ६ × ५½ इञ्च। ले० काल स० १८४०। अपूर्ण। वेष्टन स० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा।

विशेष—प्रारम्भ के ३० पत्र जिनोदय सूरि कृत हसराज वच्छराज चौपई (रचना स० १६८०) के है।

२३६४. प्रतिसं० ६३। पत्रस० ८१। आ० १०½ × ६½ इञ्च। **ले०काल** स० १६३३ कार्तिक बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा।

विशेष—नैणवा मे प्रतिलिपि हुई।

२३६५. प्रतिसं० ६४। पत्रस० ११६। आ० १०½ × ५ इंच। **ले०काल** स० १८६६ **चैत्र** बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा।

विशेष—नैणवा नगर मे चुन्नीलाल जी ने लिखवाया।

२३६६. प्रतिसं० ६५। पत्र स० ६५। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले० काल स० **१७३३** आसोज सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ३५। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा।

विशेष—पूजा की प्रतिलिपि पडित श्री शिरोमणिदास ने की थी।

२३६७. प्रति सं० ६६। पत्रस० ३३७। आ० १२×७ इंच। ले० काल स० **१६४३**। पूर्ण। वेष्टन स० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

२३६८. प्रतिसं० ६७। पत्रस० ८२। **ले०काल** स० १८६२ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी बूंदी।

२३६९. प्रति स० ६८। पत्रस० १३२। आ० १०×४ इञ्च। ले० काल स० १८८७। पूर्ण। वेष्टनस० २०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

२४००. प्रति सं० ६६। पत्रसं० १४०। आ० ११ × ७ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका सहित है टोंक नगर मे लिपि की गई थी।

२४०१. प्रति स० ७०। पत्रस० ६-१००। आ० ९×४ इच। ले०काल स० १८४४ वैशाख बुदी ६। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

२४०२. प्रति सं० ७१। पत्रस० ३१। आ० ६½×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

२४०३. प्रति स० ७२। पत्रस० ६६। आ० ६½×६½ इञ्च। ले० काल १८८२। पूर्ण। वेष्टनस० ५८। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी।

२४०४. प्रतिसं० ७३ पत्रस० ६०। आ० १२×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

२४०५. प्रतिसं० ७४। पत्र स० ८१। आ० ११×५½ इञ्च। ले० काल स० १७०४ कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)।

विशेष—सवत् १७०४ कार्तिक बुदी १३ शुक्रवार लखि हरि जी शुभ भवतु।

२४०६. प्रति सं० ७५। पत्र स० ४ से ६४। आ० ६½×२½ इच। ले० काल स० १८१४ कार्तिक। अपूर्ण। वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर चौधरियान (मालपुरा)।

विशेष—८६ से आगे भक्तामर स्तोत्र है।

२४०७. प्रति सं० ७६। पत्र स० ६६। आ० ११½ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ४६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२४०८. प्रति सं० ७७ पत्र स० ६६। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल स० १६२६। पूर्ण। वेष्टन स० ५०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२४०९. प्रतिसं० ७८। पत्र स० १०१-१२६। आ० १२ × ५½ इञ्च। ले० काल १६४६। वेष्टन स० ७५६। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२४१०. समाधितत्र—पूज्यपाद। पत्र स० ८। आ० ६½×५¾ इञ्च। भाषा सस्कृत। विषय—। योग र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४५५। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

२४११. प्रतिसं० २ पत्रस० १४। ले०काल × पूर्ण। वेष्टन स० २६६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२४१२. समाधितंत्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी। पत्र स० १५७। आ० १३ × ६½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी. गुजराती। विषय—योग। र० काल ×। ले० काल स० १७४५ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२४१३. प्रतिसं० २। पत्र स० १००। आ० १२½×७¾ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११६७। **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२४१४. प्रति सं० ३ । पत्र स० १५८ । आ० ११×६ इच । ले० काल १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० २२२-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

२४१५. प्रति सं० ४ । पत्र स० १५४ । आ० ११×५ इच । ले०काल स० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६८ मे वर्ष फागुग बुदी १२ दिने श्री परतापपुर शुभस्थाने श्री नेमिनाथ चैत्यालये कुदकुदा चार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्ति तदाम्नाये भ० रामकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री पद्मनन्दिगण शिष्य ब्रह्म नागराजेन इद पुस्तक लिखित ।

२४१६. प्रति सं० ५ । पत्रस० १८७ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल स० १७३७ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सागवाडा के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२४१७. प्रति सं० ६ । पत्र स० १७६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल स० १७०६ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१०/२२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प० मागला पठनार्थ ।

२४१८. प्रति स० ७ । पत्र स० १७८ । आ० ११¾×५½ इञ्च । ले०काल स० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२४१९. प्रति स० ८ । पत्र स० २६६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १८०८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत १८०८ वर्षे शाके १६७३ प्रवर्त माने मासोत्तमे मासे फागुणमासे शुक्लपक्षे पचमीतिथौ ।

२४२०. प्रति स० ९ । पत्र स० १३१ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल स० १८७५ काती सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—फतेहपुर के डेडराज के पुत्र कवीराम हीराकरणी ने प्रतिलिपि कराई । मालवा मे अष्टा नगर है वहा पोरवार पद्मावती धासीराम श्रावक ने घाटतले कुण्ड नामक गाव मे प्रतिलिपि की थी ।

२४२१ प्रति सं० १० । पत्र स० ११३ । आ० १४×६½ इच । ले०काल १८२७ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १/८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०) ।

जोबनेर मे प्रतिलिपि की गई ।

२४२२ प्रति सं० ११ । पत्र स० १८३ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—आरतिराम दौसा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२३ प्रति सं० १२ । पत्रस० ११६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८५२ सावन बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १३-३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—हीरालाल चादवाड ने चिमनराम दौसा निवासी से प्रतिलिपि करवाई थी ।

२४२४. प्रति सं० १३ । पत्र स० २०१ । ग्रा० ६½ × ८¾ इञ्च । ले०काल स० १७४८ सावन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—रामचन्द्र बज ने साह जयराम विलाला की पोथी से मानगढ मध्ये उतरवाई ।

२४२५. प्रति स० १४ । पत्र सं० १३७ । ग्रा० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२४२६. प्रति स० १५ । पत्रस० ११३ । ग्रा० १३×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४२७. प्रति स० १६ । पत्र स० ३०१ । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४२८. प्रति सं० १७ । पत्रस० १३६ । ले० काल सं० १७४१ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—वयाना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२४२९. प्रति सं० १८ । पत्र सं० २२० । ग्रा० ११ × ४½ इंच । ले०काल स० १७२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४३०. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १२ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४३१. प्रति सं० २० । पत्र स० ३१६ । ग्रा०११ × ४ इञ्च । ले० काल स० १७०५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

२४३२. प्रति स० २१ । पत्र स० १३५ । ग्रा० ११ × ७½ इञ्च । ले०काल स १८७७ ग्रासोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती कामा ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल कामा वालो ने सेढमल बोहरा भरतपुर वाले से प्रतिलिपि कराई थी । श्लोक स० ४५०१ ।

२४३३. प्रतिसं० २२ । पत्र संख्या २०६ । ग्रा० ११½ × ४¾ इञ्च । ले०काल स० १७३० कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—काशीराम के पठनार्थ पुस्तक की प्रतिलिपि हुई थी । प्रति जीर्ण है ।

२४३४. प्रति सं. २३ । पत्र स० १८२ । ले०काल स० १७७४ । पूर्ण । वे०स० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—गुटका साइज है ।

२४३५. प्रति सं. २४ । पत्र सं० २०० । ले० काल स० १७७० । पूर्ण । वे. स० ५६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२४३६. प्रति सं० २५ । पत्र सं० १५८ । ग्रा० ६¾ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८३५ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

२४३७. **प्रति स० २६** । पत्रस० १८३ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १८८२ अषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८/१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

२४३८. **प्रतिसं० २७** । पत्रस० २०८ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल स० १८२३ सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—साहजी श्री मोहणरामजी ज्ञाति बघेरवाल बागडिया ने कौटा नगर में स्वयभूराम वाकलीवाल से प्रतिलिपि कराई ।

२४३९. **प्रति सं २८** । पत्र सं० १७२ । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल सं० १७८१ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० स० १/६५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ (कोटा) ।

विशेष—कोटा नगर मे चन्द्रभाण ने बाई नान्ही के पठनार्थ लिखा था ।

२४४०. **प्रति सं० २९** । पत्र स० १८३ । आ० ११½ × ५ इञ्च । लेखन काल सं० १७८१ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वे०स० ७६/६६ । **प्राप्तिस्थान** —पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष— अंतिम पत्र दूसरे ग्रंथ का है ।

धरणी वसु सागरे दुहायने नभतरे च ।
मासम्यासितपक्षे मनुतिथि मुरराजपुरोधरे ।।

लि० चन्द्रभाणेन बाई नान्ही सति शिरोमणि जैनधर्मधारिणी पठनार्थ कोटा नगरे चौहान वंश हाडा दुर्जनमाल राज्ये प्रतिलिपि कृत । पुस्तक बडा मदिर इन्दरगढ की है ।

२४४१. **प्रति सं० ३०** । पत्र स० १७६ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १९१८ । पूर्ण । वे० स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—सवाईमाधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२४४२. **प्रति स० ३१** । पत्रस० १८ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं०—३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

२४४३. **प्रति सं० ३२** । पत्रस० ७१ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल स० १७६५ चैत सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ७०–११४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

२४४४. **प्रति सं० ३३** । पत्रस० ३१७ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल स० १७७६ पौष बुदी ९ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नाथूराम ब्राह्मण जोशी बणहटे के ने प्रतिलिपि की । लिखाई साह मोहनदास ठोलिया के पुत्र जीवराज के पठनार्थ । चिमनलाल रतनलाल ठोलिया ने स० १९०८ मे नैणवा मे तेरहपंथियो के मंदिर मे प्रति चढाई ।

२४४५. **प्रति सं. ३४** । पत्रस० १११ । आ० १३×६½ इञ्च । ले०काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

२४४६. **प्रतिसं० ३५** । पत्रस० १५७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७३८ मगसिर सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सावलदास ने बगरू मे प्रतिलिपि की थी ।

२४४७. प्रति सं० ३६। पत्र स० २६३ । आ० ६½ × ५ इञ्च । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

२४४८. प्रति सं० ३७। पत्र स० २११ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल स० १८८३ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

२४४६. समाधितत्र भाषा—नाथूलाल दोसी । पत्रस० १०१-१४२ । आ० १२½ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योग । र० काल १६२३ चैत सुदी १२ । ले० काल स० १६५३ प्र ज्येष्ठ सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४५० समाधितंत्र भाषा-रायचंद । पत्रस० ५७ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—योग शास्त्र । र० काल × । ले०काल स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—अन्तिम पद्य—

जैसी मूल श्री गुरु कही तैसी कही न जाय ।
पै परियोजन पाय कै लखी जुह चदराय ।।

२४५१. समाधितंत्र भाषा— × । पत्र स० ६१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी (गद्य) । विषय—योग शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२४५२. समाधि तत्र भाषा — × । पत्र स० २४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योग । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष —२४ से आगे पत्र नही है ।

२४५३. समाधितंत्र भाषा-माणकचंद । पत्रस० १८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । गद्य । विषय—योग । र० काल × । ले०काल स० १६५७ चैत सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—वृषभदास निगोत्या ने सशोधन किया था ।

२४५४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३८ । आ० ७½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२४५५. समाधिमरण भाषा—द्यानतराय । पत्र स० २ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चितन । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ६४५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

२४५६. समाधिमरण भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्रस० १५ ।आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चितन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४५७. समाधिमरण भाषा— × । पत्र सं० २७ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले०काल स० १९१६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४५८. समाधिमरण भाषा— × । पत्र स० १४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६१३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४५९. समाधिमरण भाषा— × । पत्र स० १७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ग० । विषय—चिंतन । र०काल **×** । ले० काल स० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन स० २२-६८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

२४६०. समाधिमरण भाषा— × । पत्र स० १८ । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० **जैन** तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

२४६१. समाधिमरण भाषा—× । पत्र स० १४ । आ० १२½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चिंतन । र०काल × **।** ले० काल स० १९१६ कार्तिक सुदि १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर फतेहपुर, शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सरावगी हरिकिसन ने व्यास शिवलाल देवकृष्ण से बम्बई मे प्रतिलिपि कराई थी ।

२४६२. समाधिमरण भाषा-- × । पत्र स० १९ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । (गद्य) । विषय—आत्मचिंतन । र०काल **×** । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२४६३. समाधिमरण स्वरूप-- **×** । पत्र स० १३ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । र०काल × । ले० काल स० १८२० ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

२४६४. समाधि स्वरूप— × । पत्र स० १६ । भाषा—संस्कृत । विषय—चिंतन । र०काल—× । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३/२५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२४६५. समाधिमरण स्वरूप— × पत्रस० २३ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—योग । र०काल × । ले०काल **×** । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२४६६. समाधिशतक—पूज्यपाद । पत्रस० ७ । आ० १२×५¾ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४६७. प्रति स० २ । पत्रस० ८ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक) ।

२४६८. प्रति स० ३ । पत्रस० ८ । आ० १०¾×५ इंच । **ले०काल** × । वेष्टन स० ५५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२४६६. समाधिशतक टीका—प्रभाचन्द्र । पत्रस० १० । ग्रा० १२ × ५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४७०. प्रति सं० २ । पत्रस० २६ । ग्रा० १२×४ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४७१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३० । ग्रा० ११×५ इंच । ले०काल स० १७४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४७२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २-४३ । ग्रा० १०×५ इंच । ले०काल स० १५८० । अपूर्ण । वेष्टन सं० २४० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५८० वर्षे ज्येष्ठ मासे १४ दिने श्री मूलसंघे मुनि श्रीभुवनकीर्ति लिखापित कर्मक्षयनिमित्त ।

२४७३. प्रति स० ५ । पत्र स० २१ । ग्रा० ११¾ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४७४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०/२३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर । गलमात्र है ।

२४७५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १२ । ग्रा० ११½ × ४¾ इञ्च । ले० काल स० १७६१ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—बसवा मे जगत्कीर्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

२४७६. प्रति सं० ८ । पत्रस० ११ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४७७. समाधि शतक—पन्नालाल चौधरी । पत्रस० ६० । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

२४७८. सामायिक पाठ—× । पत्रस० ८ । भाषा–प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६८-१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

२४७६. प्रति सं० २ । पत्रस० ११ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

२४८०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १४ । ग्रा० १० × ६ इञ्च । ले० काल— स० १६०६ सावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—अन्त मे दौलतराम जी कृत सामायिक पाठ के अन्तिम दोहे हैं जो स० १८१४ की रचना है। सस्कृत मे भी पाठ दिये हैं।

२४८१. प्रति सं० ४. पत्रस० ९। आ० ७$\frac{3}{4}$ × ३$\frac{1}{2}$ इञ्च। **ले०काल सं० १४८३। पूर्ण।** वेष्टन सं० २५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

सवत् १४८३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनौ नागपुर नगरे जयाणद गणि लिखतं चिरनद तात् श्री सघे प्रसादात्।

२४८२. प्रति सं० ५। पत्रस० १५६। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० २४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२४८३ प्रति स० ६। पत्रस० २५। आ० ८ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

२४८४. प्रति सं० ७। पत्रस० १५। ले०काल स० १७६२। पूर्ण। वेष्टन सं० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर डीग।

विशेष—डीग मे प्रतिलिपि हुई थी।

२४८५. प्रति सं० ८। पत्रस० १४। आ० ११×५ इञ्च। वेष्टन सं० ३७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२४८६. प्रति सं० ९। पत्रस० ५८। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। सेठ बेलजी सुत बाघजी पठनार्थ लिखी गयी।

२४८७. प्रति सं० १०। पत्र स० ११। आ० ११×५ इञ्च। लेखन काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० २८१-१११। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष—सस्कृत मे भी पाठ है।

२४८८. प्रति स० ११। पत्रस० २१। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च। ले०काल स० १६१२ भादवा बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ३७३-१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

२४८९. प्रति सं० १२। पत्रस० ७। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

२४९०. सामायिकपाठ - ×। पत्र स० ३३। आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल स० १९१३। पूर्ण। वेष्टन स० ५१२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

२४९१. सामायिक पाठ—×। पत्र स० ७२। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल सं० १६४१। पूर्ण। वेष्टन स० ६/४१८। **प्राप्तिस्थान**—सभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सवत् १६४१ वर्षे श्री मूलसवे सरस्वतीगच्छे धनोट द्रुगे चन्द्रनाथ चैत्यालये भ० श्री ज्ञानभूषण प्रभाचन्द्राणा शिष्येण उपाध्याय श्री धर्मकीर्तिणा स्वहस्तेन लिखित ब्रह्मश्रजित सागरस्य पुस्तकेद । ब० श्री मेघराजस्तच्छिष्य ब० सवजीस्तच्छिष्य ।

दर्शनविधि भी दी हुई है ।

२४६२. सामायिक पाठ—× । पत्रस० १६ । ग्रा० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ग्रध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

२४६३. सामायिक पाठ (लघु)—× । पत्र स० ४१ । ग्रा० १२ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ग्रध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र भी है ।

२४६४. सामायिक पाठ—× । पत्रस० १६ । ग्रा० ६ × ६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ग्रध्यात्म । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

२४६५. सामायिक पाठ—× । पत्र स० २० । भाषा—सस्कृत । विषय-ग्रध्यात्म । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२४६६. सामायिक पाठ—× । पत्र स० ३ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२४६७. सामायिक पाठ—× । पत्र स० १३ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ग्रध्यात्म । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

२४६८. सामायिक पाठ—× । पत्र स० १७ । ग्रा० ६½ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ग्रध्यात्म । र०काल × । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० २५६-१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२४६६. सामायिक पाठ—× । पत्रस० २३ । ग्रा० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ग्रध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२५००. साधु प्रतिक्रमण सूत्र—× । पत्रसं० ६ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल स० १७३० माघ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—हिन्दी ग्रर्थ भी दिया हुआ है ।

२५०१. सामायिक पाठ(वृहद्)—×। पत्रस० १४। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० १७६-१६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

२५०२. सामायिक पाठ (लघु)—×। पत्रस० १। आ० १०×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

२५०३. सामायिक पाठ (लघु)—×। पत्र स० ४। आ० ८×६ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—अध्यात्म। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २०५-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—सस्कृत मे भी पाठ दिये है।

२५०४. सामायिक पाठ—बहुमुनि। पत्र स० ५१। आ० ९×६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२५०५. प्रति सं० २। पत्र स० १७। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल स० १९१७ वैशाख सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ३४। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा।

२५०६. सामायिक पाठ ×। पत्रस० ४। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२५०७. सामायिक पाठ भाषा—जयचन्द छाबडा। पत्रस० ७०। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय-अध्यात्म। र० काल स० १८३२ वैशाख सुदी १४। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३६४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२५०८. प्रतिसं० २। पत्रस० ३८। आ० ११½ × ५ इञ्च। ले०काल स० १८८७ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ३०७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२५०९. प्रतिसं० ३। पत्र स० ४५। आ० ११×५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ९८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२५१०. प्रति सं० ४। पत्र स० १४। आ० ७ × ६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—जिनदास गोधा कृत सुगुरु शतक तथा देव शास्त्र गुरु पूजा और है।

२५११. प्रतिसं० ५। पत्रस० ६२। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल स० १९१८ चैत बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

२५१२. प्रतिसं० ६। पत्र स० ४४। आ० ९×७ इञ्च। ले०काल स० १९२९ पौष सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

२५१३. प्रति स० ७। पत्र स० ४३। आ० १२×६½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

२५१४. प्रति सं० ८ । पत्र स० २५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ४४१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२५१५. प्रति सं० ९ । पत्र स० २४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर (भरतपुर) ।

२५१६. प्रति सं० १० । पत्र स० ४४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

२५१७. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ४८ । ग्रा० १३×६ इञ्च । ले० काल म० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

२५१८. सामायिक पाठ भाषा – भ. तिलोकेन्दुकीर्त्ति । पत्रस० ६८ । ग्रा० ७×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्रध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८४१ सावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२५१९. सामायिक पाठ भाषा—धन्नालाल । पत्रस० ३१ । ग्रा० ६¾×६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल स० १९४५ ग्रासोज बुदी ६ । ले० काल म० १९७१ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ २१ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—गोविन्दकवि कृत चौबीस ठाणा चर्चा पत्र स० २७-३१ तक है । इसका र०काल स० १८८१ फागुण सुदी १२ है ।

२५२०. प्रति सं० २ । पत्रस० २७ । ग्रा० ६½ × ६ इञ्च । ले०काल म० १९४६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ४/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—२५ से २७ तक चौबीस ठाणा चर्चा भी है जिसकी गोविन्दकवि ने स० १८११ मे रचना की थी ।

२५२१. सामायिक पाठ भाषा—श्यामराम । पत्रस० २३ । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रध्यात्म । र०काल १७४६ । ले०काल × । पूर्ण । वष्टनस० ४६० । **प्राप्ति स्थान**— जैन दि० पञ्चायती मन्दिर, भरतपुर ।

२५२२. सामायिक पाठ— × । पत्रस० ४ । ग्रा० ९ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—ग्रध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

२५२३. सामायिक पाठ— × । पत्रस० ९ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—ग्रध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

२५२४. सामायिक पाठ— × । पत्रस० ७६ । ग्रा० ६½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

२५२५. **सामायिक पाठ संग्रह**— × । पत्रस० ६४ । आ० १३½ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८२७ आषाढ़ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर मे महाराजा पृथ्वीसिंह के राज्य मे चिमनराम दोषी की दादीने नैणसागर से प्रतिलिपि करवाकर चढाया था ।

मुख्यत निम्न पाठों का सग्रह है—

वृहद् सामायिक, भक्ति पाठ, चौतीसअतिशयभक्ति, द्वितीय नदीश्वर भक्ति, वृहद् स्वयमूस्तोत्र, आराधना सार, लघुप्रतिक्रमण, वृहत् प्रतिक्रमण कायोत्सर्ग, पट्टावली एव आराधना प्रतिबोध सार ।

२५२६. **सामायिक प्रतिक्रमण**— × । पत्रस० १०८ । आ० १०½ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १६४४ पूर्ण । वेष्टन स० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२५२७. **सामायिक टीका**— × । पत्रस० ४७-७७ । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**—अध्यात्म । र० काल । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७६/४१६ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५२८. **प्रति स० २** । पत्रस० २-२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८०/४२० । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५२९. **प्रति सं० ३** । पत्र स० २-१७ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८१/४२१ । **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२५३०. **सामायिक पाठ टीका**— × । पत्रस० ६८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० २१-८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—स्योजीराम लुहाडिया ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२५३१. **सामायिक टीका**— × । पत्रस० ७३ । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

२५३२. **सामायिक पाठ टीका**— × । पत्रस० ५१ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८१४ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सवत् १८१४ चैत मासे शुक्लपक्षे पचम्या लिपिकृत पडित आलमचन्द तत् शिष्य जिनदास पठनार्थं ।

२५३३. **सामायिक पाठ टीका**— × । पत्रस० ४५ । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७६० आषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२५३४. सामायिक पाठ टीका— × । पत्र सं० ४५ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल सं० १८३० ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

२५३५. सामायिक टीका— × । पत्र सं० ७५ । आ० ६ × ७ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल सं० १८४१ चैत सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३/७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—रतनचन्द पाटनी ने दौसा मे प्रतिलिपि की ।

२५३६. सामायिक पाठ टीका सहित— × । पत्रसं० १०० । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल सं० १७८७ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—जहानाबाद मे प्रतिलिपि हुई ।

२५३७. साम्यभावना— × । पत्रसं० ३ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२/१६८ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५३८. सवराग्रनुमप्रेक्षा—सूरत । पत्रसं० ३ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ८१५ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—द्वादश अनुप्रेक्षा का भाग है ।

२५३९. संसार स्वरूप— × । पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—आचार्य यश कीर्त्तिना स्वहस्तेन लिखित ।

२५४०. सरवगसार संत विचार—नवलराम । पत्रसं० २७८ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल सं० १८३४ पौष बुदी १४ । ले० काल सं० १८३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—(गुटका मे है)

प्रारम्भ—

सतगुरु मुझि परि, महरि करि बगसो बुधि विचार ।
श्रवङ्गसार एह ग्रंथ, जो ताको करू उचार ।
ताको करूं उचार साखि सता की ल्याऊ ।
उर्कति जुर्कति परमाण, ग्रौर अतिहास सुनाऊं ।
नवलराम सरणं सदा, तुम पद हिरदै धारि ।
सतगुरु मुझपर महर करी, बगसो बुधि विचार ।

२५४१. सिद्धपचासिका प्रकरण— × । पत्रस० १० । आ० ६३/४×४१/२ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५४२. स्वरूपानन्द—दीपचन्द । पत्रस० ११ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल स० १७५१ । ले०काल स० १८३५ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—कोटा के रामपुर मे महावीर चैत्यालये मे प्रतिलिपि हुई थी ।

— ० —

विषय - न्याय एवं दर्शन शास्त्र

२५४३. अष्टसहस्री—आ० विद्यानन्दि । पत्र स० २५१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—देवागम स्तोत्र की विस्तृत टीका है ।

२५४४. प्रति स० २ । पत्रस० २८५ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८६ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२५४५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २८१ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । बीच मे कितने ही पत्र नही है । भ० वादिभूषण के शिष्य ब्र० नेमिदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२५४६. अष्टसहस्री (टिप्पण)—× । पत्रस०-५३ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५४७. आप्त परीक्षा—विद्यानन्द । पत्रस० १४३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—मुनि श्री धर्मभूषण तत् शिष्य ब्रह्म मोहन पठनार्थ ।

२५४८. प्रति सं० २ । पत्र स० ७३ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० १६३५ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अकबर जलालुद्दीन के शासनकाल मे अरगलपुर (आगरा) मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२५४९. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६३ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५५०. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २४४/२३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२५५१. आप्तमीमांसा—आचार्य समन्तभद्र । पत्रस० ८० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५० । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गोविन्ददास ने प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम देवागम स्तोत्र भी है ।

२५५२. प्रति स० २ । पत्रस० ३५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १५७/५१० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। "ब्र. मेघराज सरावगी" लिखा है।

२५५३. प्रति सं० ३। पत्रसं० २६। आ० १२½×८ इञ्च। ले० काल सं० १६५६ ज्येष्ठ बुदी ४। पूर्ण। वेष्टनस० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

२५५४. आप्तमीमांसा भाषा—जयचन्द छाबडा। पत्रसं० ११६। आ० १०¾ × ११ इञ्च। भाषा—राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य। विषय—न्याय। र०काल स० १८६६ चैत बुदी १४। ले०काल स० १८८६ माह बुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० ११८५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

नोट—इसका दूसरा नाम देवागम स्तोत्र भाषा भी है।

२५५५. प्रति स० २। पत्रस० १०४। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७२। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२५५६. प्रति स० ३। पत्र स० ७६। आ० १०½×७ इञ्च। ले० काल स० १६६१। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—चन्देरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

२५५७. प्रति सं० ४। पत्र स० ८२। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल स० १८८० भादवा बुदी १। पूर्ण वेष्टन स० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल पचायती उदयपुर।

२५५८. प्रति सं० ५। पत्र स० ६६। ले० काल स० १८६४। पूर्ण। वेष्टन स० ३१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२५५९. प्रति सं० ६। पत्र स० ६१। ले० काल स० १८६६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३११। **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२५६०. प्रति स० ७। पत्रस० १०१। आ० ११ × ५¾ इञ्च। ले० काल स० १६२५ कार्तिक सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० ५३ ११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

२५६१ प्रति सं० ८। पत्रस० ६७। आ० १२×८ इञ्च। ले० काल स० १८६८। पूर्ण। वेष्टन स० ८० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—साह धन्नालाल चिरन्जीव मागीलाल जिनदास शुभघर इन्दरगढ वालो ने जयपुर मे प्रतिलिपि कराई थी।

२५६२. प्रति सं० ९। पत्रस० ५६। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल स० १८६७। पूर्ण। वेष्टनस० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

विशेष—फागी मे प्रतिलिपि की गयी थी।

२५६३. प्रति सं० १०। पत्रस० ६१। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

२५६४. प्रति सं० ११। पत्र स० ५६। आ० १३×७½ इञ्च। लेखन काल सं० १६४१ सावन बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करोली।

विशेष—चुन्नीलाल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

२५६५. प्रति सं० १२ । पत्रस० ६८ । ग्रा० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल स० १६८२ चैत बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—बसुवा मे सोनपाल बिलाला ने प्रतिलिपि की थी ।

२५६६. ग्राप्तस्वरूप विचार— × । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष—ग्र त मे स्त्री गुण दोष विचार भी दिया हुग्रा है ।

२५६७. ग्रालाप पद्धति—देवसेन । पत्र स० ७ । ग्रा० १२$\frac{1}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल स० १८६१ सावण बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० ११७८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—ब्राह्मण भोपतराम ने माधवपुर मे ताराचन्द गोधा के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२५६८. प्रति सं० १ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८३० वैशाख बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ११७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

२५६९. प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२५७० प्रति सं० ३ । पत्र स० ११ । ग्रा० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

२५७१ प्रतिसं० ४ । पत्र स० ११ । ग्रा० ६ × ७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी, बूदी ।

विशेष—ले० काल पर स्याही फेर दी गयी है ।

२५७२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ८ । ग्रा० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

२५७३. प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२५७४. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १० । ग्रा० १३×५ इञ्च । ले० काल स० १७७२ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सवत् १७७२ मे सागानेर (जयपुर) नगर मे डूगरसी ने नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी । कठिन शब्दो के सकेत दिये है । ग्रन्त मे नवधा उपचार दिया है ।

२५७५. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ७ । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ७३१** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है तथा प्रति प्राचीन है ।

२५७६. प्रतिसं० ९ । पत्रस० १० । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १७६४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२५७७. प्रतिसं० १० । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १७६८ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२५७८. प्रति सं० ११ । पत्रस० ८ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

२५७९. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

२५८० प्रतिसं० १३ । पत्रसं० १६ । आ० ८$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२५८१. प्रति स० १४ । पत्रस० ८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२५८२. प्रति सं० १५ । पत्रस० ९ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १७८६ । वेष्टनसं० ६०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—कोटा नगर मे भट्टारक देवेन्द्र कीर्त्ति के शिष्य मनोहर ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है ।

२५८३ प्रतिसं० १६ । पत्र स० १३ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले०काल— स० १७७८ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सागानेर मे भ. देवेन्द्रकीर्ति के शासन मे प० चोखचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२५८४. ईश्वर का सृष्टि-कर्तृत्व खंडन— × पत्र स० २ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ४४४ ५०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मंदिर उदयपुर ।

२५८५. उपाधि प्रकरण— × । पत्रस० ३ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१८/६४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मंदिर उदयपुर ।

२५८६. खंडनखाद्य प्रकरण— × । पत्रसं० ६५ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२५८७. चार्वाकमतीझडी— × । पत्रस० १८ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय - न्याय । र०काल × । ले० काल—स० १८६३ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प जयचन्द छावडा द्वारा प्रतिलिपि की गयी थी ।

२५८८. तर्कदीपिका--विश्वनाथाश्रम । पत्रसं० ६ । आ० १०×४½ इच । भाषा-संस्कृत (गद्य) । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२४८६. तर्क परिभाषा—केशवमिश्र । पत्रस० ३५ । आ० ११¾×५½ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२५६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल—स० १७२८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२५६१. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २२ । आ० १०×४ इच । ले०काल × पूर्ण । वेष्टनसं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बदलाना (बूंदी) ।

२५६२ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५४ । आ० १२¾×५ इच । ले०काल स० १५६१ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२५६३. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ३–४४ । आ० १० x ४½ इञ्च । ले० काल स० १६६४ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६४ वर्षे कृष्ण पक्षे वैशाख .सुदी २ दिने मार्त्तण्डवासरे मालवविषये श्री मारगपुर शुभ स्थाने श्री महावीर चैत्यालये सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री रत्नचन्द्र तदाम्नाये ब्र० श्री जेसा तत् शिष्य ब्र० श्री जसराज तत् शिष्य ब्रह्मचारी श्री रत्नपाल तर्कभाषा लिखिता ।

२५६४. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १२ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२५६५. तर्कभाषा - × । पत्रस० ११ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर

२५६६. तर्क परिभाषा प्रकाशिका—चेन्नभट्ट । पत्र स० ६३ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल । ले० काल स० १७७५ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सुस्थान नगर के चितामणि पार्श्वनाथ मदिर मे सुमति कुशल ने सिह कुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२५६७. तर्कभाषावार्त्तिक— × । पत्र स० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

२५६८. तर्कसंग्रह-अन्नंभट्ट । पत्रसं० २४ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल स० १७६१ आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२५९९. प्रति सं० १ । पत्रस० ३ । ले०काल सं० १८२० वैशाख सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ३१४ प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

२६००. प्रति सं० २ । पत्र स० १७ । आ० ११×६¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७४-७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

२६०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल स० १७५८ । पूर्ण । वेष्टन स० ९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६०२. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १६ । आ० ९ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १७९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

२६०३. प्रतिसं० ५ । पत्र सख्या १६ । आ० ९ × ४ इञ्च । लेखन काल स० १८६६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १३९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

२६०४. प्रति स० ६ । पत्र स० ९ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८२१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—जयनगर मे श्री क्षेमेन्द्रकीर्त्ति के शासन मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६०५. प्रति स० ७ । पत्र स० ७ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स ४७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२६०६. प्रति सख्या ८ । पत्रस० ७ । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

२६०७. प्रतिसं० ९ । पत्रस० १४ । आ० ९ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १८०१ मगहन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष —लिखित खातोली नगर मध्ये । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२६०८. प्रति सं० १० । पत्र स० ८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२६०९. प्रति स० ११ । पत्र स० १७ । ले० काल । पूर्ण × । वेष्टन सं० ७५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२६१०. प्रति सं० १२ । पत्रस० ११ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३३२ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२६११. प्रति सं० १३ । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

२६१२. दर्शनसार—देवसेन । पत्र स० ६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५९ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६१३. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

२६१४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—देवीलाल के शिष्य थिरधी चन्द ने प्रतिलिपि झालरापाटन मे की ।

२६१५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल स० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दीवानजी कामा ।

२६१६. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४ । आ० १२×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५६/८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६१७. प्रति सं० ६ । पत्रस० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५७/८५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२६१८. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

२६१९. द्रव्य पदार्थ— × । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—तर्क (दर्शन) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२६२०. द्विजवदनचपेटा— × । पत्र स० १० । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—वादविवाद (न्याय दर्शन) । र०काल × । ले० काल स० १७२५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३२/५०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६२१. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३३/५०६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२६२२. नयचक्र—देवसेन । । पत्र स० १५ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल स० १६४४ माघ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०११२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बून्दी ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२६२३. प्रति सं० २ । पत्रस० ४८ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२६२४. नयचक्र भाषा वचनिका—हेमराज । पत्र स० ११ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—दर्शन । र०काल स० १७२६ फागुण सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६२५. प्रति सं० २ । पत्र स० २७ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२६२६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १३ । ग्रा० १०×८ इञ्च । **ले० काल** × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

२६२७. प्रति सं० ४ । पत्रस० १२ । ग्रा० १२½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री पडित नरायणदासोपदेशात् साह हेमराज कृत नयचक्र की सामान्य वचनिका सम्पूर्ण ।

२६२८. प्रति सं० ५ । पत्रस० २२ । ग्रा० १०¾ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर, इन्दरगढ (कोटा)

२६२९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ग्रा० १२½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६/२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.) ।

२६३०. प्रति सं० ७ । पत्रस० १७ । ग्रा० ८¾×७½ इञ्च । लेखन काल स० १६३४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—पत्र स० ४ नही है । लाला श्रीलाल जैन ने रतीराम ब्राह्मण कामावाले से प्रतिलिपि कराई थी ।

२६३१ प्रति सं० ८ । पत्र स० १४ । ग्रा० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

२६३२. प्रति सं० ९ । पत्र स० १५ । ग्रा० ११ × ५½ इञ्च । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानी डीग ।

२६३३. प्रति सं० १० । पत्रस० १६ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**–भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२३३४. नयचक्र भाषा-निहालचन्द ? पत्र स० ६५ । ग्रा० १२ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—न्याय । र०काल स० १८६७ मार्गशीर्ष वदी ६ । ले० काल स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष---सहर कानपुर के निकट कपू फोज निवास ।
तहा बैठि टीका करी थिरता को अवकास ।।
सवत अष्टादस सतक ऊपर सठ सठि आन ।
मारग वदि षष्टी विषै वार सनीचर जान ।।
ता दिन पूरन भयौ बडौ हर्ष चित आन ।
र कै मातृ निधि लई त्यौ सुख मो उर आन ।।

टीका का नाम स्वमति प्रकाशिनी टीका है ।

२६३५. प्रति सं० २ । पत्रस० ४७ । ग्रा० १४×५ इञ्च । **ले० काल** × । पूर्ण । **वेष्टनस०** १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

२६३६. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ४५ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

२६३७. **न्याय ग्रंथ**— × । पत्र स० २-६५ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

२६३८. **न्याय ग्रंथ**— × । पत्र स० ६ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-जैन न्याय । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

२६३९. **न्याय ग्रंथ**— × । पत्रसं० ३-२३५ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन न्याय । र०काल × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४२०/२८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

२६४०. **न्यायचन्द्रिका—भट्ट केदार** । पत्रस० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत विषय-न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४३७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६४१. **न्यायदीपिका-धर्मभूषण** । पत्रसं० ३६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-जैन न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६४२. **प्रति सं० १** । पत्र स० ३० । ले० काल सं० १८२५ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

२६४३. **प्रतिस० २** । पत्रस० ३५ । आ० ६¾ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८५३ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष - स्योजीराम ने प० जिनदास कोटे वाले के प्रसाद से लिखा ।

२६४४. **प्रति स० ३** । पत्रस० ३४ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १७०५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६४५. **प्रति सं० ४** । पत्रस० २१ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनस० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२६४६. **प्रति सं० ५** । पत्र स० २८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनस० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२६४७. **न्याय दीपिका भाषा वचनिका—संघी पन्नालाल** । पत्र स० ६१ । आ० १३½ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय—न्याय । र०काल स० १६३५ मगसिर वदी ७ । ले० काल सं० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

२६४८. **न्यायावतारवृत्ति**— × । पत्र स० ५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

२६४६. न्याय बोधिनी × । पत्र सं० १-१७ । आ० ११¾ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय—न्याय** । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ७४४ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रारंभ—निखिलागम संचारि श्री कृष्णाख्यं परमदः ।
ध्यात्वा गोवर्द्धनं सुधीस्तनुते न्यायबोधिनीम् ।।

२६५०. न्यायविनिश्चय–आचार्य अकलंकदेव । पत्रस० ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१/२०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

२६५१. न्यायसिद्धांत प्रभा—अनंतसूरि । पत्र स० २३ । आ० १०¾×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ७१४ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६५२. न्यायसिद्धांतदीपक टीका-टीकाकार शशिधर । पत्रस० १२७ । आ० १०× ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—एक १८ पत्रो की अपूर्ण प्रति और है ।

२६५३. पत्रपरीक्षा—विद्यानन्दि । पत्रस० ३३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-दर्शन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२६५४. परीक्षामुख-माणिक्यनंदि । पत्रस० ५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०२/१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६५५ परीक्षामुख (लघुवृत्ति)— × । पत्रस० २० । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पत्र स० ७ से 'आप्तपरीक्षा' दी गई है ।

२६५६. परीक्षामुख भाषा-जयचन्द छाबड़ा । पत्रस० १२७ । आ० १४ × ८½ इञ्च । भाषा–राजस्थानी (ढूंढारी) गद्य । विषय–दर्शन । र०काल स० १८६० । ले०काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३ ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

२६५७. प्रतिसं० २ । पत्र स० १८८ । ले०काल स० १६२२ जेठ कृष्णा ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दीवान जी भरतपुर ।

२६५८. प्रमाणनयतत्वालोकालंकार-वादिदेव सूरि । पत्र सं० ६८–१६८ । आ० ११¾× ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२६५६. प्रमाणनयतत्वालोकालंकार वृत्ति—रत्नप्रभाचार्य । पत्र स० ३–८७ । आ० ११ × ४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—दो प्रतियो का सम्मश्रण है । टीका का नाम रत्नाकरावतारिका है ।

२६६०. प्रति स० २ । पत्रस० ८६ । आ० १०½ × ४½ । ले०काल स० १५५२ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—विप्र श्रीवत्स ने वीसलपुर नगर में प्रतिलिपि की थी और मुनि मुजाणनगर के शिष्य पं० श्री कल्याण सागर को भेंट की थी ।

२६६१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ७६ । ले०काल स० १५०१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१/४६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव जीर्ण है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

प्रमाणनयातत्वालकारे श्री रत्नप्रभविरचिताया रत्नावतारिकाख्य लघु टीकाय वादस्वरूप निरूपणी-यानामष्टम परिच्छेद समाप्ता । श्री रत्नावतारिकाख्य लघुटीकेति । सवत् १५०१ माघ सुदि १० तिथौ श्री ५ भट्टारक श्री रत्नप्रभसूरि शिष्येण लिखितमिद ।

२६६२. प्रमाणनय निर्णय-श्री यशःसागर गणि । पत्रस० १६ । आ० १० × ४½ इन्च । **भाषा-सस्कृत ।** विषय-न्याय । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० २७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२६६३. प्रमाण निर्णय—विद्यानंदि । पत्र स० ५७ । आ० ११ × ५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष प्रति प्राचीन है । मुनि धर्मभूषण के शिष्य ब्र० मोहन के पठनार्थ प्रति लिखायी गयी थी ।

२६६४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है पं० हर्षकल्याण की पुस्तक है । कठिन शब्दो के अर्थ भी है ।

२६६५. प्रमाण परीक्षा—विद्यानंद । पत्र स० ७५ । आ० ११ × ५ इच । भाषा—संस्कृत । **विषय—**न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आदिभाग—

जयति निर्जिताशेष सर्वथैकातनीतय: ।
सत्यवाक्याधियाशश्वत् विद्यानदो जिनेश्वरा ।।
अथ प्रमाण परीक्षा तत्र प्रमाण लक्षण परीक्ष्यते ।

मुनि श्री धर्म भूषण के शिष्य ब्रह्म मोहन के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

२६६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४७ । आ० १४½ × ५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३१, ४६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन स भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भट्टारक वादिभूषण के शिष्य ब्र० नेमीदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

२६६७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६३ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२६६८. प्रमाण परीक्षा भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्रसं० ६० । आ० १३ × ७ इंच । भाषा—हिन्दी ग० । विषय दर्शन । र०काल स० १६१३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२६६९. प्रमाण प्रमेय कलिका—नरेन्द्रसेन । पत्र स० १० । आ० ११½ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले०काल स० १७१४ फाल्गुन सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी

विशेष—श्री गुणचद्र मुनि ने प्रतिलिपि की थी ।

२६७०. प्रमाण मंजरी टिप्पणी— × पत्रसं० ४ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १६१५ वर्षे भादवा सुदी १ रवौ श्री शुभचन्द्रदेवा तत् शिष्योपाध्याय श्री सकलभूषणाय पठनार्थं ।

२६७१. प्रति सं० २ । पत्रस० २४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति अति प्राचीन है ।

२६७२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २७ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६७३. प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य । पत्रस० ७० । आ० ११ × ६ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल स० १८६१ कार्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ११८० । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—परीक्षा मुख की विस्तृत टीका है ।

२६७४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७०४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर मे सभवनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । धर्मभूषण के शिष्य ब्र० मोहन ने प्रतिलिपि की थी । कही कहीं टीका भी दी हुई है ।

२६७५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५३ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६७६. प्रति सं० ४। पत्र स० ७५। अपूर्ण। वेष्टन स० २२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२६७७. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३३। आ० १२ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन स० ६८७। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

२६७८. पंचपादिका विवरण—प्रकाशात्मज भगवत। पत्र स० १८६। आ० १०$\frac{1}{2}$× ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—न्याय। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १११। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत् परमहंस परिव्राजकान्यानुभव पूज्यपाद शिष्यस्य प्रकाशात्मज भगवत् कृतौ पचपादिका विवरणे द्वितीय सूत्र समाप्तम्।

२६७९. भाषा परिच्छेद—विश्वनाथ पंचानन भट्टाचार्य। पत्र स० ७। आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—न्याय। र०काल—×। ले०काल ×। पूर्ण वेष्टन स० ४६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२६८०. महाविद्या—×। पत्र सं० ५। आ० १३×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—जैन न्याय। र०काल। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४४५/५००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

अन्तिम पुष्पिका—

इति तर्क प्रवाणीना महाविद्याभियोगिना।
इति विद्यातकी ·· ····शास्त्रं समाप्त ॥

२६८१. रत्नावली न्यायवृत्ति—जिनहर्ष सूरि। पत्रस० ४७। भाषा—सस्कृत। विषय—न्याय। र०काल ×। ले०काल। पूर्ण। वेष्टन स० ५८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—जिनहर्ष सूरि वाचक दयारत्न के शिष्य थे।

२६८२. विदग्ध मुखमंडन—धर्मदास। पत्र सं० १८। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—न्याय। र०काल—×। ले० काल सं० १७६३ माघ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

विशेष—ब्रह्म केसोदास के शिष्य ब्रह्म कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी।

२६८३. प्रति सं० २। पत्रस० १६। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

२६८४. प्रति सं० ३। पत्र स० ६। आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल स० १७१४ चैत बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० २०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२६८५. प्रतिसं० ४। पत्र स० २८। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रति संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२६८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८१५ श्रावण सुदी १२ । वेष्टन सं० ४६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२६८७. प्रति स० ६ । पत्र सं० ५ । आ० १३½×५¾ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ६८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत टीका सहित है ।

२६८८. विदग्ध मुखमंडन—टीकाकार शिवचन्द । पत्र स० ११७ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

२६८९. वेदान्त संग्रह— × । पत्र सं० ५१ । आ० १२½×३½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय**—दर्शन । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टन स० ४७** । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२६९०. षट् दर्शन— × । पत्र स० ४ । आ० १२×५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

२६९१. षट् दर्शन बचन— × । पत्र स० ६ । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६/४६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६९२. षट् दर्शन विचार । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

२६९३. षट् दर्शन समुच्चय— × । पत्रस० १० । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० १२०४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२६९४. षट् दर्शन समुच्चय—हरिचन्द्र सूरि । पत्र स० २८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले०काल स० १५५८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ८२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पत्र स० १६ पर स० १५५८ वर्षे आसोज वदि ८—ऐसा लिखा है पत्र २६ पर हेमचन्द्र कृत 'वीर द्वात्रिंशतिका' भी दी हुई है ।

२६९५. प्रति सं० २ । पत्रस० २ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०५/४९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६९६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । आ० १०×५¾ इंच । ले०काल स० १८३१ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२६९८. **प्रति सं० ४** । पत्र स० ३७ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल स० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—सवाईमाधोपुर में नोनदराम ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है ।

२६९९. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० ६ । ले०काल स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टनस० १०४/५०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सवत् १६३५ वर्षे तथा शाके १४९९ प्रवर्तमाने मार्गसिर सुदी शनौ ब्र० श्री नेमिदासमिद पुस्तक ।।

२७००. **षट् दर्शन समुच्चय टीका—राजहंस** । पत्रसं० २२-२८ । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले०काल सं० १५९० आसोज बुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर डीग ।

२७०१. **षट् दर्शन समुच्चय सूत्र टीका**— × । पत्रस० ४५ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—सस्कृत हिन्दी । र०काल × । ले० काल स० १८१० वैशाख बुदी । पूर्ण । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बू दी ।

२७०२. **षट् दर्शन समुच्चय सटीक**⋯⋯ । पत्र स० ७ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति अपूर्ण है । चौथा पत्र नही है एव पत्र जीर्ण है ।

२७०३. **षट् दर्शन के छिनव पाखंड**— × । पत्र स० १ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०-१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

२७०४. **सप्तपदार्थी—शिवादित्य** । पत्र स० १५ । आ० १२×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२७०५. **प्रति सं० २** । पत्रस० ६ । आ० ६×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त, मन्दिर ।

२७०६. **सप्तभंगी न्याय**— × । पत्रस० २ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५१ २६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२७०७. **सप्तभंगी वर्णन**— × । पत्रस० १२ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२७०८ **सर्वज्ञ महात्म्य**— × । पत्रस० २ । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस०,५८ ६४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—देवागम स्तोत्र की व्यास्या है ।

२७०६. **सर्वज्ञसिद्धि** । पत्रसं० २० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५४/२६४ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७१०. **सार संग्रह—वरदराज** । पत्रसं० २-१०० । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत (गद्य) । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं० १२** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७११. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम तार्किक रास भी है ।

२७१२. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ६३ । आ० ११¾ × ४¾ इञ्च । ले०काल सं० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२/३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७१३. **सांख्य प्रवचन सूत्र**— × । पत्र सं० १४० । आ० ६¾ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल सं० १७९५ फागुन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली काटा ।

२७१४. **सांख्य सप्तति** × । पत्र सं० ४ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल सं० १८२१ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर नगर मे प० चोखचन्दजी के शिष्य प० सुखराम ने नैणसागर के लिए प्रतिलिपि की थी ।

२७१५. **सिद्धांत मुक्तावली**— × । पत्र सं० ६८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल सं० १८१० भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२७१६. **स्याद्वाद मंजरी—मल्लिषेण सूरी** । पत्र सं० ३६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७१७. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५/६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—प्रति प्राचीन एव टीका सहित है ।

विषय—पुराण साहित्य

२७१८. अजित जिनपुराण—पंडिताचार्य अरुणमणि । पत्र स० २१६ । आ० १२½ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल स० १७१६ । ले०काल स० १७६७ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० सं० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति जीर्ण क्षीर्ण है ।

२७१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—अजितनाथ द्वितीय तीर्थंकर है । इस पुराण मे उनका जीवन चरित्र विस्तृत है ।

२७२०. आदि पुराण महात्म्य— पत्र स० २ । आ० १० × ४¾ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—महात्म्य वर्णन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

२७२१. आदिपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र स० ४४० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १८७३ पौष बुदी । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं. ३६२ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल स० १६५६ पूर्ण । वे० सं० १४४३ । **प्राप्ति स्थान**—उरोक्त मन्दिर ।

२७२३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४८१ । आ० १०¾ × ४¾ इच । ले० काल स० १६८१ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

२७२४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४०५ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

२७२५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७६२ । आ० ११ × ६ इच । ले०काल स० १८८५ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६७ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२७२६. प्रति सं० ५ । पत्रस० २८८ । आ० ११½ × ६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७२७. प्रति स० ६ । पत्रस० ७ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टन सं०** ३६/६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७२८. प्रति सं० ७ । पत्र स० ४४३ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

२७२९. प्रति सं० ८ । पत्र स० ३५१ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्तिस्थान**—पचायती दि० जैन मदिर करौली ।

विशेष—ले० प्रशस्ति अपूर्ण है ।

चादनगाव महावीर मे गूजर के राज्य मे पाण्डे मुखलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२७२६(क) प्रति सं० ६ । पत्र स० ४२४ । आ० ११$\frac{3}{4}$×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

२७३०. प्रति स०१० । पत्र स० ४६४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल स० १६६६ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६, २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

२७३१. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ६०६ । ले० काल स० १७३० कार्तिक सुदी १३ बुधवार । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष प्रति जीर्ण शीर्ण है ।

प्रशस्ति—श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकल कीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति त० प० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० विजयकीर्ति तत्पट्टे भ० शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० सुमति कीर्ति तत्पट्टे भ० गुणकीर्ति तत्पट्टे भ० वादिभूषण तत्पट्टे भ० राजकीर्ति तत्पट्टे भ० पद्मनदि तत्पट्टे देवेन्द्र कीर्ति तत्पट्टे क्षेमेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये आचार्य कल्याणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म श्री ५ सघजीत तत् शिष्य ब्रह्मचारि नागजित्पणवे अहमदावाद नगरे सारिगपुरे शीतल चैत्यालये हुबडज्ञातीय लघुशाखाया बधियागोत्रे साह श्री सघजी तत्पुत्र साह श्री सूरजी भार्या बाल्हबाई तयो पुत्र साह परेक्षसुन्दर भार्या सिप्ताबाई तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सामदास द्वितीय पुत्र धर्मदास एतै. स्वज्ञानावरणीय कर्मक्षयार्थ श्री वृहदादिपुराण लिखाप्य दत्त ब्रह्मचारयकासाहायात् ।

२७३२. प्रति स० १२ । पत्र स० १८७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

२७३३ प्रतिसं० १३ । पत्रस० २४२ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल स० १७४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—स ग्रामपुर निवासी साहजी श्री द्यानतरायजी श्रीमाल ज्ञातीय ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी ।

२७३४. प्रति स० १४ । पत्रस० ३६६ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १७२२ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू द. ।

लेखक प्रशस्ति—

श्री भुवनभूषणेन स्वहस्तेन भट्टारक श्री जगत्कीर्त्तिजितरूपदेशात् सागावत्या मध्ये सवत् १७२२ मधुमासे शुक्लपक्षे षटी भृगुवासरे ।

२७३५. प्रति सं० १५ । पत्रस० ३४१ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल स० १८६१ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर नागदी, बू दी

विशेष— जयपुर मे पन्नालाल खिदूका ने प्रतिलिपि करवायी थी । प्रारम्भ के १८५ पत्र दूसरी प्रति के है ।

२७३६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ६० । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १६७६ जेष्ठ वदि ८ । अपूर्ण । वेष्टन स० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

२७३७. प्रति सं० १७ । पत्रस० १६६ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७३८. **आदिपुराण—पुष्पदंत ।** पत्र सं० २३४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । **विषय**—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १६३१ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है । मालपुरा नगर मे प्रतिलिपि हुई थी । इसमें प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का जीवन वृत्त है ।

२७३९. **प्रति स० २ ।** पत्रस० २८६ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

२७४०. **आदिपुराण ।** पत्रस० १७२ । आ० ११ × ५ । भाषा–सस्कृत । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनस० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन, मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—रत्नकीर्त्ति के शिष्य ब्र० रत्न ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२७४१. **आदिपुराण—भ० सकलकीर्ति ।** पत्रस० १९७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १८८० चैत सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ४६४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—श्री विद्यानदि के प्रशिष्य रूडौ ने प्रतिलिपि की थी ।

२७४२. **प्रति सं० २ ।** पत्रस० २१८ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १७७६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—तक्षकपुर (टोडारायसिह) मे प० विजयराम ने आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

२७४३. **प्रति सं० ३ ।** पत्रस० १८८ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

२७४४. **प्रति स० ४** । पत्रसं० १४६ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल—स० १६०५ पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—बूंदी मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२७४५. **प्रति स० ५** । पत्र स० २२७ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल सं० १७५२ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त ।

विशेष—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य ब्र० कल्याणसागर ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७४६. **प्रति स० ६ ।** पत्रस० १६७ । आ० ११½×६ इञ्च । ले०काल स. १७७६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, अभिनन्दनस्वामी, बूंदी ।

विशेष—मालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२७४७ **प्रतिसं० ७ ।** पत्र स० १७६ । आ० १० × ६ इञ्च । ले० काल स० १६१० वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—बूंदावती में नेमिनाथ चैत्यालय मे प० चिम्मनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२७४८. प्रति सं० ८। पत्रस० २१५। आ० १०½×६½ इंच। ले० काल सं० १८२५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)।

२७४९. प्रति सं० ९। पत्र स० २१४। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल स० १६६७ वैशाख सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ३२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—ओ ह्री स्वस्ति श्री संवत् १६६७ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे सप्तमी बुधवासरे सरूज नगरे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये श्रीमद्दिगबर काष्टासघे जैन गच्छे चारित्रगणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० सोमकीर्त्ति तदनुक्रमेण भ० रत्नभूषण तत्पट्टाभरण भट्टारक जयकीर्त्ति विजयराज्ये तत् सिष्य ब्र० शिवदास तत् शिष्य पं० दशरथ लिखत पठनार्थं। परमात्मप्रसादात् श्री गुरुप्रसादात् श्री पद्मावती प्रसादात्।

२७५०. प्रति सं० १०। पत्रस० १५१। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२७५१. प्रति सं० ११। पत्रस० २३८। ले० काल स० १६७६ मगसिर बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

२७५२. प्रति सं० १२। पत्रस० १-३२। आ० १२×५½ इञ्च। **ले०काल** ×। **अपूर्ण।** वेष्टन स० ७०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२७५३. आदिपुराण—ब्र० जिनदास। पत्रस० १८०। आ० १० × ५½ इञ्च। **भाषा**—राजस्थानी पद्य। विषय—पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। **वेष्टन स०** ३८८-१४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडिया का डूगरपुर।

२७५४. प्रति स० २। पत्रस० १६५। आ० ११×६½ इच। **ले०काल** स० १८८२। **पूर्ण।** वेष्टनस० ८२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

विशेष मरोला ग्राम मे प्रतिलिपि की गई थी।

२७५५. आदिपुराण भाषा—पं० दौलतराम कासलीवाल। पत्र स० ६२५। आ० ११½×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के जीवन का वर्णन। र०काल स० १८२४। ले० काल स० १६७१। पूर्ण। **वेष्टनस०** २२५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२७५६. प्रतिसं० २। पत्र स० २०१। आ० १४× ७ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १५७३। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२७५७. प्रतिसं० ३। पत्र स० १५०। आ० १०½×७½ इञ्च। ले० काल ×। **अपूर्ण।** वेष्टन स० १०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—आगे के पत्र नही है।

२७५८. प्रति स० ४। पत्र स० ३६५। आ० ११×६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

२७५९. प्रतिसं० ५। पत्र स० ४३। आ० १३×७ इच। ले०काल ×। **अपूर्ण।** **वेष्टन स०** ६०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर।

२७६०. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० ५५८ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७६१. **प्रतिसं० ८** । पत्र संख्या ६०१ । आ० १२ × ६½ इञ्च । लेखन काल स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन स० २७८-११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—रतलाम मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२७६२. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० २०४ । आ० ११½×८ इञ्च । ले० काल स० १६४० । अपूर्ण । वेष्टन स० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—६६ अध्याय तक है । मल्लिनाथ तीर्थंकर तक वर्णन है ।

२७६३ **प्रति संख्या १०** । पत्र स० २९९-४२७ । आ० १२×६ इच । ले० काल स० १९१७ आषाढ सुदी ८ । अपूर्ण । वेष्ट सं ० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—रामचन्द छाबडा ने दौसा मे प्रतिलिपि की की ।

२७६४. **प्रति सं० ११** । पत्र स० ४७३ । लेखक काल× । पूर्ण । वेष्टन सख्या ४२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२७६५. **प्रति सं० १२** । पत्र संख्या २ से ३१८ । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सख्या ४२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२७६६. **प्रति सं० १३** । पत्र सख्या ५१ से ४३१ । आ० १५×६½ इच । लेखन काल—स० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन संख्या ११।७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोंक)

विशेष - जयकृष्ण व्यास ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२७६७ **प्रति सं० १४** । पत्र स० ४६६ । आ० १६×१० इच । ले. काल स० १६६७ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

२७६८. **प्रतिसं० १५** । पत्र सख्या ८८८ । आ० १२×५½ इच । ले० काल स० १८५३ कार्तिक बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सख्या २५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मदिर, नैणवा

विशेष-*पत्र सख्या ७०२ से ७७५ तक नहीं है । ब्राह्मण सालिगराम द्वारा प्रतिलिपि की गयी थी ।*

२७६९ **प्रति संख्या १६** । पत्र सख्या ५८० । आ० १३×७ इच । ले० काल सख्या १९२२ । पूर्ण । वेष्टन सख्या १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—लोचनपुर नैणवा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२७७०. **प्रति सं० १७** । पत्र सख्या ६३० । आ०-१३ × ६½ इच । ले० काल स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सेवाराम पहाड्या केशी वाले ने अपने सुत के लिये लिखवाया था ।

२७७१. **प्रति सं० १८** । पत्र सख्या ६२२ । आ० १४×६½ इच । ले० काल स० १९०७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प० सदासुख जी **अजमेरा** ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२७७२. **प्रति संख्या १९** । पत्र स० १०१-५०७ । आ० १०×७ इच । ले० **काल ×** । अपूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

२७७३. प्रति सं० २० पत्र स० ६०२ । आ० १२½×५ इंच । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । **वेष्टन** सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक)

२७७४. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ८२६ । आ० १०×७ इच । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटयो का, नैणवा

२७७५. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ४८ से १३८ । आ० १२×६½ इंच । ले० काल ×। अपूर्ण । **वेष्टन** सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

२७७६. प्रति सं० २३ । पत्र स० ६६२ । आ० १२½×६ इच । ले०काल × । वेष्टन स० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

२७७७. प्रति सं० २४ । पत्र स० ७१६ । आ० १२×७½ इंच । ले० काल स० १६१६ माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती अग्रवाल मन्दिर, अलवर ।

२७७८. प्रति सं० २५ । पत्र स० ५१० । आ० १५×७½ इंच । ले० काल सं० १६१० वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती अग्रवाल मंदिर, अलवर ।

विशेष—ग्रन्थ तीन वेष्टनो मे है ।

२७७९. प्रति सं० २६ । पत्र स० ५८१ । आ० १०½×६ इंच । ले० काल स० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ ।

विशेष—पाडे लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर, बयाना ।

२७८०. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ४५२ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

२७८१. प्रति सं० २८ । पत्र सं० ८४३ । आ० १२×७½ इंच । ले० काल स० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पंचायती मन्दिर, कामा

विशेष—बीच के पत्र नही है ।

२७८२. प्रति सं० २९ । पत्र स० २२२ । आ० १३×६½ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

२७८३. प्रति सं० ३० । पत्र स० ६१३ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

२७८४ प्रति सं० ३१ । पत्र स० ४८५ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले० काल स० १६०६ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

विशेष—करौली नगर मे नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२७८५. प्रति सं० ३२ । पत्र स० ७२८ । आ० १२¾×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४/४ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२७८६. प्रति सं० ३३ । पत्र सं० ११२३ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

२७८७. प्रति स० ३४। पत्रस० ८८६। ग्रा० १५ × ७ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—दो वेष्टनो मे है। इसे श्री भगवानदास ने जयपुर से मगवाया था।

२७८८. प्रति सं० ३५। पत्र स० ३१६। ग्रा० १३×६$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल स० १६०६ मगसिर सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—पाडे जीवनराम के पठनार्थ रामगढ मे ब्राह्मण गोपाल ने प्रतिलिपि की थी।

२७८९. प्रति सं० ३६। पत्र स० २२३ से ४२६। ग्रा० १३×७ इञ्च। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० ३८। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

२७९०. प्रति सं० ३७। पत्र स० ५२६। ग्रा० ११×६ इञ्च। ले० काल स० १८२८ सावन बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—करौली मे लिखा गया था।

२७९१. उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य। पत्र स० ४५८। ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र० काल। ले० काल स० १७०५। पूर्ण। वेष्टन स० ७५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—भगवान ग्रादिनाथ के पश्चात् होने वाले २३ तीर्थंकरो एव ग्रन्य शलाका महापुरुषो का जीवन चरित्र निबद्ध है। सवत्सरे बाणरध्रमुनीदुमिते।

२७९२. प्रतिसं० २। पत्र स० २२०। ग्रा० ११ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७२४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२७९३. प्रति सं० ३। पत्रस० ४०६। ग्रा० ११ × ५$\frac{1}{4}$ इञ्च। ले०काल स० १७५० फागुन बुदी ८। पूर्ण। वेष्टनस० ११७४। **प्राप्ति स्थान**--भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—प्रति जीर्ण है

२७९४. प्रतिसं० ४। पत्र स० ३१३। ग्रा० १३×४ इञ्च। ले० काल स० १८४६ फागुण बुदी १४। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० १२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—ग्राचार्य श्री विजयकीर्ति ने बाई गुमाना के लिए प्रतिलिपि करवायी थी।

२७९५. प्रति सं० ५। पत्रस० ३२५। ग्रा० १२ × ५ इञ्च। ले०काल स० १७८५ ग्राषाढ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनस० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी।

विशेष—बूदी मे **ज्योतिर्विद** पुष्करने रावराजा दलेलसिह के शासनकाल मे ग्रादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

२७९६. प्रति सं० ६। पत्रस० ३६८। ग्रा० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बून्दी।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२७९७. प्रतिसं० ७। पत्रस० ३००। ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १८२५ प्र. सावन सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० २५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूदी।

विशेष—पं० महाचन्द्र ने जीर्ण पुस्तक से शोधकर प्रतिलिपि की थी। दो प्रतियो का मिश्रण है।

२७६८. **प्रतिसं० ८।** पत्र स० ३२४। आ० १३×७ इञ्च। ले०काल स० १६५३। पूर्ण। वेष्टन स० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी।

२७६६. **प्रति सं० ६।** पत्रस० २६४। आ० १२½×५½ इञ्च। ले०काल स० १८११ भादवा बुदी ३। पूर्ण। वेष्टनस० ३८४/२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

२८००. **प्रतिसं० १०।** पत्रस० ३६०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—कही २ कठिन शब्दो के अर्थ हैं।

२८०१ **प्रति सं० ११।** पत्रस० २३१। आ० १३×६½ इच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १२७-५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

२८०२. **प्रति सं० १२।** पत्रस० ११४। आ० १३×५½ इंच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२८०३. **प्रतिसं० १३।** पत्र सं० १६२। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२८०४. **प्रति स० १४।** पत्र स० ३४७ से ५४८। आ० ११ × ५½ इञ्च। ले० काल स० १६४४ कार्तिक सुदी ६। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है। इसके अतिरिक्त एक प्रति और है जिसके १–१२२ तक पत्र हैं।

२८०५. **प्रति सं० १५।** पत्र स० ८५-३००। आ० १०½×५½ इञ्च। ले० काल स० १८४०। पूर्ण। वे० स० २०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

२८०६. **प्रतिसं १६।** पत्रस० ४०८। आ० ११ × ४ इच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३०६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२८०७. **प्रतिसं० १७।** पत्रस० ३८४। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३१०. **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२८०८. **प्रति स० १८।** पत्र स० २-४५२। आ० १२×६इच। ले० काल स० १८३३। अपूर्ण। वेष्टन स० ३६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—सवत् १८३३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पचम्या तिथौ भौमवासरे मालवदेशे मुसनेर नगरे पडित आलमचन्द तत् शिष्य प जिनदास तयोंन मध्ये प० आलमचन्देन पुस्तक उत्तरपुराण स्वय……।

२८०६. **प्रतिसं० १६।** पत्रस० २८५। आ० १४×६ इञ्च। ले० काल सं० १७८३ फागुण सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० १२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—उदयपुर मे महाराणा सग्रामसिंह के शासन काल मे सभवनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

२८१०. प्रति सं० २० । पत्र स० २३१ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । दो प्रतियों का मिश्रण है । कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुए है ।

२८११. प्रति सं० २१ । पत्रस० ४६४ । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टनस० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८१२. प्रति सं० २२ । पत्रस० ११५-२२० । ले०काल १६६६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८१३. प्रति सं० २३ । पत्रस० ४१६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

२८१४. प्रति सं० २४ । पत्रस० ४३४ । ले०काल स० १७२६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**- उपरोक्त मन्दिर ।

२८१५. प्रति सं० २५ । पत्रस० ५०१ से ५३६ । ले०काल स० १८२२ । अपूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२८१६. उत्तरपुराण—पुष्पदत । पत्र स० ३२५ । आ० १२$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । र०काल × । ले०काल स० १५३८ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२/६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

लेखक प्रशस्ति—सवत १५३८ वर्षे कार्तिक सुदी १३ आदित्यवारे अश्वनिनक्षत्रे सुलतान गयासुद्दीन राज्य प्रवर्तमाने तोडागढस्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवा । तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्र देवा तत् शिष्य मुनि जयनन्दि द्वितीय शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्त्ति । मुनि जैनिन्द तत् शिष्य ब्रह्म अचलू इद उत्तरपुराण शास्त्र आत्म हस्तेन लिखित ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थ मुनि श्री मडलाचार्य रत्नकीर्त्ति तत् शिष्य ब्रह्म नरसिह जोग्य पठनार्थ ।

२८१७. उत्तरपुराण—सकलकीर्त्ति । पत्रस० १६२ । १२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल । ले०काल स० १८८० पौष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

२८१८. उत्तरपुराण भाषा—खुशालचन्द । पत्र स० २७१ । आ० १५×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र०काल स० १७९९ । ले०काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१९. प्रति सं० २ । पत्र स० ३१७ । आ० १५ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—भगवान आदिनाथ को छोडकर शेष तेईस तीर्थंकरो का जीवन चरित्र है ।

२८२०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४८८ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८२४ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक

विशेष—राजाराम के पुत्र हठीराम ने जयपुर में बखना से प्रतिलिपि कराई थी ।

२८२१. **प्रति सं० ४ ।** पत्र सं० २७१ । आ० १४ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६५८ कार्त्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा ।

२८२२. **प्रति सं० ५ ।** पत्र स० ६३१ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

२८२३. **प्रति सं० ६ ।** पत्रस० ४४१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

२८२४. **प्रति सं० ७ ।** पत्र स० २०२-२५१ तक । आ० १४×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ के २०१ पत्र नही है ।

२८२५. **प्रति सं० ८ ।** पत्र स० २६८ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

२८२६. **प्रति सं० ९ ।** पत्र स० ४६१ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

२८२७. **प्रति सं० १० ।** पत्र स० ३३५ । आ० १२ × ६$\frac{3}{4}$ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४-२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

२८२८. **प्रति सं० ११ ।** पत्र स० २६५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—जीर्णोद्धार किया गया है ।

२८२९. **प्रति स० १२ ।** पत्र स० ४६६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

२८३०. **प्रति स० १३ ।** पत्रस० ४१२ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८४२ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—फौजीराम सिगल ने स्व एव पर के पठनार्थ प्रतिलिपि करवाई ।

२८३१. **प्रति सं० १४ ।** पत्रस० १०५ । आ० १२ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—शान्तिनाथ पुराण तक है ।

२८३२. **प्रतिसं० १५ ।** पत्रस० १८८ । आ० १३ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८७८ श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—पाडे सावतसिंह जी आपमनके देहरा मे दयाचन्द से प्रतिलिपि करवाई जो दिल्ली में रहते थे ।

२८३३. **प्रतिसं० १६ ।** पत्र स० ३५६ । आ० १३ × ७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२८३४. प्रतिसं० १७ । पत्र सं० ३५४ । आ० १४×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मदिर अलवर ।

२८३५. प्रति स ० १८ । पत्रसं० २६७ । ले० काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, भरतपुर ।

विषय—कुशलसिंह कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२८३६. प्रति स० १९ । वेष्टनस० ४०५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८३७. उत्तरपुराण भाषा—पन्नालाल । पत्र स० ४८६ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय पुराण । र० काल स० १९३० । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी ।

२८३८. कर्णामृत पुराण—भ० विजयकीर्ति । पत्रस० ८६ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय– पुराण । र० काल । ले०काल स० १८२६ पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १०१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

२८३९. प्रति स० २ । पत्रस० २४९ । आ० ५×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९०९ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष– दूसरा नाम महादण्डक करणानुयोग भी दिया है ।

२८४०. प्रति स० ३ । पत्रस० ३८ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११३५ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

२८४१. प्रतिस० ४ । पत्र स० १३१ । आ० १२×८ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० ३१८-३१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

२८४२. गरुडपुराण । पत्रस० ६५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय पुराण र०काल × । ले०काल स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—दशम अध्याय तक है ।

२८४३. गरुडपुराण × । पत्र स० ३२ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

२८४४. चौबीस तीर्थंकर भवान्तर । पत्रस० २ । आ०१२½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक)

२८४५. चन्द्रप्रभपुराण—भ० शुभचन्द्र । पत्रस० ७२ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पुराण । र० × । ले०काल स० १८२६ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर, अजमेर

विशेष—आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र है ।

२८४६. **प्रति स० २** । पत्रस० ६० । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ । **ले०काल** सं० १८३२ चैत्र सुदी १३ । **वेष्टन स०** १७३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म० लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर नगर मे झाझूराम साहने प्रतिलिपि की थी ।

२८४७ **चन्द्रप्रभपुराण—जिनेन्द्रभूषण** । पत्रस० २४ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय पुराण । र०काल सवत १८४१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—इटावा मे ग्रंथ रचना की गयी थी । ग्रथ का आदि अत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ - चिदानद भगवान सब शिव सुख के दातार ।
श्री चन्द्रप्रभ नाम है तिन पुराण सुख सार ।।१।।
जिनके नाम प्रताप से कहे सकल जजाल ।
ते चन्द्रप्रभ नाम है करौ ………………पुर पार ।।२।।

अंतिम पाठ —

मूल सघ है मै सरस्वति गच्छ ज्यू ।
बलात्कार गण कह्यो महाराज परतछ ज्यू ।
आमनाय कहै बीच कुन्दकुन्द ज्यू ।
कुन्दकुन्द मुनराज ज्ञानवर आपज्यू ।।२७।।
भट्टारक गुणकार जगतभूषण भये ।
विश्वभूषण सुभ आप ज्ञान पूरन ठये ।
तिनके पद उद्धार देवेन्द्रभूषण कहे ।
सुरेन्द्रभूषण मुनराज भट्टारक पद लहे ।
जिनेन्द्र भूषण लघु शिष्य बुद्धिवरहीन ज्यू ।
कह्यो पुराण सुज्ञान पूरण पद जान ज्यू ।
सवत ठरासै इकतालीस सामते ।
सावन मास पवित्र पाप भक्ति कौ गलै ।।
सुदि दूवै द्वैज पुनीत चन्द्र रविवार है ।
पूरन पुण्य पुराण महा सुखदाइ है ।
शहर इटावौ भलौ तहा बैठक भई ।
श्रावक गुन सयुक्त बुद्धि पूरन लई ।।

इसके आगे ८ पद्य और है जिनम कोई विशेष परिचय नही है ।

इति श्री हर्षसागरस्यात्मज भट्टारक श्री जिनेन्द्रभूषण विरचिते चन्द्रप्रभपुराणे चन्द्रप्रभ स्वामी निर्वाण गमनो नाम षष्टम सर्ग । श्लोक स प्रमाण १०६१ ।

मध्य भाग—

सब रितु के फल ले आया तिन भेंट करी सुखदायी ।
राजा सुनि मनि हरषावै तब आनन्द भोर बजावै ।।२४।।

सब नगर नारि नर आये बदन चाले सुख पाये।
चन्द्री सब परिजन लेई जिनवर चरनन चित देई ।।२५।।

२८४८. प्रति सं० २ । पत्रस० १२½ × ७½ इञ्च । ले०काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२८४९. चन्द्रप्रभचरित्र भाषा—हीरालाल । पत्र स० १८२ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल सं० १९०८ । ले०काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२८५०. जयपुराण—ब्र० कामराज । पत्र स० २६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल स० १७१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति-निम्न प्रकार है—

स० १७१३ पौष सुदी २ रवौ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्ति तदाम्नाये भ० श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री पद्मनदि तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्ति गुरुपदेशात् गुर्जरदेशे श्री अमदावादनगरे हुवड ज्ञातीय गगाउ गोत्रे सा० धर्मदास भार्या धर्मादे तयो सुत सा कल्पा भार्या जमा सुत विमलादास प्रेमसी महस्रवीर प्रतापसिह एतै ज्ञानावरणी क्षयार्थ आचार्य नरेन्द्रकीर्ति तत् शिष्य इल ब्र० चारी लाडयाकान्............ ब्र० कामराजाय जयपुराण लिखाप्य दत्त ।

२८५१. प्रति स० २ । पत्र स० ८६ । ले० काल स० १८१८ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प० बख्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२८५२. त्रिषष्टि स्मृति— × । पत्र स० ३१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६०६ वर्षे श्री मगसिर सुदी ३ गुरुदिने श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्तिदेवा तदन्वये ब्र० श्री जिनदास तत्पट्टे ब्र० शांतिदास ब्र० श्री हसराज ब्र० श्री राजपालस्तल्लिखाय कर्मक्षयार्थ निमित्त ।

२८५३. त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्रस० ६६ । आ० १४×४ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल—स० १४६४ चैत्र मास । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

२८५४. त्रेसठशलाका पुरुष वर्णन— × । पत्रस० ७ । आ० १०×४ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसमे त्रेसठशलाका पुरुषों का अर्थात् २४ तीर्थंकर ९ नारायण, ९ प्रतिनारायण, ९ बलभद्र एवं १२ चक्रवर्तियो का जीवन चरित्र वर्णित है ।

२८५५. नेमिपुराण भाषा—भागचंद । पत्रसं० १८२ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । रचना काल स० १६०७ । ले०काल—स० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

२८५६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १६० । आ० १३½×७ इञ्च । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—चदेशी मे लिखा गया था । नेमीश्वर के मदिर मे छोटेलाल पन्नालाल जी गढवाल वालो ने चढाया था ।

२८५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७० । आ० १¾×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

२८५८. नेमिनाथ पुराण—ब्र० नेमिदत्त । पत्रस० २६८ । आ० १०¾×४½ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १६४५ चैत बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम नेमिनाथ चरित्र है ।

२८५९. प्रति सं० २ । पत्रस० ९२ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२८६०. प्रति स० ३ । पत्रस० २२४ । आ० १०¾ × ४½ इ च । ले०काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टनस० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १८३० ना वर्षे द्विनिय चैत्र मासे शुक्ल पक्षे श्री वाग्वर देशे पुल्लंदपुर मध्ये श्री शातिनाथ चैत्यालये । भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्र जी तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देवचन्द्र जी तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ श्री धर्मचन्द्र जी तत्शिष्य ब्रह्ममेघजी स्वय हस्तेन लिपि कृत ।

२८६१. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २-२२० । आ० ९½×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

२८६२. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० १६४ । आ० १०½×७ इञ्च । ले० काल स० १६२४ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूदी ।

विशेष—शिवलाल जी का चेला विरदीचद ने प्रतिलिपि की थी । यह प्रति जो जोवनेर मे लिखी गई सं० १६६६ वाली प्रति मे लिखी गई थी ।

२८६३. प्रति सं० ५ क । पत्र स० १२४ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल० स० १७६६ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—रत्नविमल के प्रशिष्य एव मुक्तिविमल के शिष्य धर्मविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

२८६४. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० १३५ । आ० १२½×६¾ इञ्च । ले०काल स० १६७३ । पूर्ण । वेष्टन स० १८१-७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

२८६५. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० २४२ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

२८६६. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० १४३ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ **प्रतिसं० ९** । पत्रस० २४३ । ले०कालस० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन पचायती मन्दिर डीग ।

२८६८. **प्रतिसं० १०** । पत्र स० १६५ । आ० १२½×६ इच । ले०काल स० १८१७ द्वि. चैत सुदी १५ । वेष्टन स० १७–१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—लालचद के पुत्र खुशालचन्द ने करौली मे प्रतिलिपि की थी ।

२८६९. **प्रतिसं० ११** । पत्र स १३८ । ले०काल स० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

२८७०. **प्रति स० १२** । पत्रस० ८६ । आ० १३×६½ इच । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनस० २३२ १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२८७१. **पद्मचरित टिप्पण—श्रीचन्द मुनि** । पत्रस० २८ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । भाषा - सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १५११ चैत्र सुदी ११ । वेष्टन स० १०२ । दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

लेखक प्रशस्ति—सवत् १५११ वर्षे चैत्र सुदी २ श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत् पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्र देव. भट्टारक श्री पद्मनन्दि शिष्य मुनि मदनकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म नरसिंघ निमित्त खण्डेलवालान्वये नायक गोत्रे सा' उधर तस्य भार्या उदयश्री तयो पुत्र माल्हा सोढा डाल् इद शास्त्र कर्म्मक्षय निमित्त ।

२८७२ **पद्मनाभ पुराण—भ० शुभचन्द्र** । पत्रस० ११० । आ० १२×४¾ इञ्च । भाषा—स[illegible] । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनस० १८७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रारम्भ के ६५ पत्र नवीन लिखे हुए है ।

२८७३. **प्रति सं० २** । पत्रस० ७१ । आ० ११¾ × ५ इञ्च । ले०काल स० १६५४ आसोज सुदी [illegible] । वेष्टनस० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—भट्टारक अमरकीर्ति के शिष्य ब्र० जिनदास, प० शान्तिदास आदि ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७४. **प्रति स० ३** । पत्र स० १०७ । आ० १०[illegible] × ५ इञ्च । ले० काल स० १८२६ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

२८७५. **पद्मपुराण—रविषेणाचार्य** । पत्रस० ७१२ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १६७७ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० [illegible] । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—संवत् १६७७ वर्षे शाके १५४२ प्रवर्त्तमाने श्रावण बुदी ६ शुक्रवारे नक्षत्रे श्रतिगतनामजोगे महाराजाधिराज रावश्री भावसिंह प्रतापे लिखत जोसी अलाबक्स बु दिवाल पञ्चायती मध्ये ।

२८७६. प्रतिसं० २। पत्रस० ४६० । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८७६ पौष बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १०५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२८७७. प्रतिसं० ३। पत्रस० ५१२ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इच । **ले०काल** स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—पडित शिवजीराम ने लिखा था ।

२८७८. प्रतिसं० ४। पत्रस० ५६० । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७/८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

विशेष—रामपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२८७९. प्रतिसं० ५। पत्रस० २८६ । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—अशुद्ध प्रति है ।

२८८०. प्रति स० ६। पत्रस० ३४१ । आ० १० ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८५० कार्तिक सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

२८८१. प्रति स० ७। पत्र स० ५७३ । आ० ११$\frac{1}{2}$ ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

२८८२ प्रतिसं० ८। पत्रस० ८-४८८ । आ० ११ ५ इञ्च । ले०काल स० १५६२ । अपूर्ण । वेष्टनस० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५६२ वर्षे कार्तिक सुदी ६ बुधे अद्येह गोरिल ग्रामे प० नसा सुत पेथा भ्रातृ भीकम लिखित ।

२८८३. पद्मपुराण - ब्र० जिनदास। पत्रस० ४४३ । आ० १२$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १११९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर, अजमेर ।

२८८४. प्रतिसं० २। पत्र स ५३५ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८७१ क्वार सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० १०६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

२८८५. प्रतिसं० ३। पत्र स० २८८ । आ० १२×६ इंच । ले०काल स० × । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—सस्कृत मे सकेतार्थ दिये है । स०१७३६ मे भट्टारक श्री महरचन्द्र जी को यह ग्रन्थ भेंट किया गया था ।

२८८६. **पद्मपुराण—भ०धर्मकीर्ति**। पत्र स० ३२६। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—**पुराण**। र०काल-×। ले०काल स० १७१५। पूर्ण। वेष्टन स०२७०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—सवत् १७१५ वर्ष भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पचम्या तिथौ गुरुवासरे श्री सिरोज नगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री ···· ।

२८८७. **पद्मपुराण—भ० सोमसेन**। स० २८२। आ० १०½×५ इन्च। भाषा—संस्कृत। **विशेष**—पुराण। र०काल। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टन स० १५३२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर

२८८८. **प्रति स० २**। पत्रस० २७६। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टन स० २२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

२८८९. **प्रति सं० ३**। पत्र स० ३०९। आ० १०×६ इञ्च। ले० काल स० १८९८ माघ सुदी ५। पूर्ण। वे० स० १७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल।

विशेष—राजमहल नगर मे प० जयचंद जी ने लिखवाया तथा बिहारीलाल शर्मा ने प्रतिलिपि की थी।

२८९०. **पद्मपुराण भाषा**—दौलतराम कासलीवाल पत्र सं० १६६। आ० १३×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—पुराण। र०काल स० १८२३ माघ सुदी ९। ले०काल×। अपूर्ण। वेष्टन स० १४४२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२८९१. **प्रति स० २**। पत्र स० ६४५। आ० १२×५¾ इञ्च। ले०काल स० १८९० ज्येष्ठ बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन स०१७९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

२८९२. **प्रति सं० ३**। पत्रस० ८४३। ले०काल स० १९३१। पूर्ण। वेष्टनस०। २६३। **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२८९३. **प्रति स० ४**। पत्रस० १–२७५। आ० ११×७इञ्च। ले०काल×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—२७५ से आगे पत्र मे नही है।

२८९४. **प्रतिस० ५**। पत्रस० ७३७। आ० १३×८ इञ्च। ले०काल स० १९५५ कार्तिक सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनस० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर आवा (उणियारा)

विशेष—प० रामदयाल ने चदेरी मे प्रतिलिपि की थी।

२८९५. **प्रतिसं० ६**। पत्रस० ३९०। आ० ९½×९½ इञ्च। ले० कालस० १८४६। चैत सुदी ११ पूर्ण। वेष्टनस० १२५। ×। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दौसा।

२८९६. **प्रतिसं० ७**। आ० १४×७½ इञ्च। ले० काल स० १८७८। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७-७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—चिमनराम तेरहपथी ने प्रतिलिपि की थी।

२८९७. प्रति सं० ९ । पत्रसं० २२४-५२१ । ग्रा० १३×७ इन्च । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर मादवा (राज०)

२८९८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६०७ । ग्रा० ११×७½ इन्च । ले० स० १९१५ । पूर्ण । वे० काल स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दो वेष्टनो मे है ।

२८९९. प्रति सं० ११ । पत्र स० ६३८ । ग्रा० १२×६½ इन्च । ले०काल स० १९२९ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दो वेष्टनो मे है ।

२९००. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ९२८ । ग्रा० ११ ×८ इन्च । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२९०१. प्रतिसं० १३ । पत्रस० २४० । ग्रा० ११×८ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण ।वेष्टनसं० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२९०२. प्रति सं० १४ । पत्र स० ५३७ । ग्रा० १२½×६½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर

२९०३. प्रति सं० १५ । पत्र स० ७४७ । ग्रा० १०×७½ इन्च । ले० काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०१/८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२९०४. प्रति सं० १६ । पत्रस० ५२८ । ग्रा० १०½×७ इञ्च । ले०काल स० १८५१ । पूर्ण । वेष्टनस० २१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२९०५. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ४५६ । ग्रा० १०½×०½ इंच । ले० काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेप्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है— स० १८५४ पौष सुदी १३ महाराजाधिराज श्री सवाई प्रतापसिहजीराज्ये सवाईजयनगरमध्ये लिखापित साह श्री मानजीदासजी बाकलीवाल तत् पुत्र कवर मनसाराम जी चिमनरामजी सेवारामजी नोनधराम जी मनोरथरामजी परमार्थ शुभ भूयात् ।

लिखित सवाईराम गोधा सवाईजयनगरमध्ये अ बावनी बाजार मध्ये पाटोदी देहुरे आदि चैत्यालये जतीजी श्री कृष्णसागरजी के जायगा लिखी ।

२९०६. प्रतिसं० १८ । पत्र सख्या ४७ । ग्रा० १०×९ इंच । ले०काल सं०१८२३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

२९०७. प्रति सं० १९ । पत्र स० ५९९ । ग्रा० १२ × ९ इन्च । ले० काल सं० ११४३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३।९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

विशेष—ऋषि हेमराज नागौरी गच्छवाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२९०८. प्रतिसं० २० । पत्रस० १५२ । ग्रा० ११×८ इन्च । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४१।२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोक)

२६०६. प्रति सं० २१ पत्र स० ४४६ । आ० १४×६½ इच । ले० काल सं० १६५६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन अग्रवाल मदिर, नैणवा

२६१०. प्रतिसं० २२ । पत्रस० ६०८ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बू दी ।

२६११. प्रतिसं० २३ । पत्रस० ५०५ ।आ० १३×८ इच । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

२६१२. प्रतिसं० २४ (क) । पत्र सख्या ३२४ से ५१६ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले० काल स० १८६२ । अपूर्ण । वेष्टन स० २४८ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—शेष पत्र अभिनन्दन जी के मदिर मे है । सवाईमाधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१३. प्रति स० २४ । पत्र स० २-३२३ । आ० १३×७ इञ्च । अपूर्ण । ले० काल × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष--पत्र १ तथा ३२४ से अन्तिम पत्र तक पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर मे है ।

२६१४. प्रति स० २५ । पत्रस० ८२८ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८८७ आषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोक) ।

२६१५. प्रति स० २६ । पत्रस० ६१३ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल० स० × चैत्र बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १०१—१ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—शातिनाथ चैत्यालय मे लिखा गया था ।

२६१६. प्रतिसं० २७ । पत्र स० ६०६ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले० काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५/७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर, इन्दरगढ (कोटा))

२६१७. प्रति सं० २८ । पत्रस० ७२ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

२६१८. प्रति स० २६ । पत्रस० ६५३ । आ० ११½×६ इञ्च । ले०काल स० १८६६ वैशाख सुदी १० । वेष्टन स० १०१ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—गुलाबचंद पाटोदी से सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि कराई थी ।

२६१६. प्रतिसं० ३० । पत्र स० ५०८ । आ० १५ × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२६२०. प्रति सं० ३१ । पत्र स० ४५० । आ० १५ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२६२१. प्रति स० ३२ । पत्रस० ५८२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

२६२२. प्रति सं० ३३ । पत्र स० ६७१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२६२३. प्रति सं० ३४ । पत्र स० ५५१ । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १/६० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पञ्चायती मंदिर अलवर ।

२६२४. प्रति स० ३५ । पत्र स० ५५१ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर अलवर ।

२६२५. प्रतिसं० ३६ । पत्र स० ५१४ । आ० १३½×८ इञ्च । ले० काल सं० १६५६ फागुन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मंदिर अलवर ।

विशेष—अलवर मे लिखा गया था ।

२६२६. प्रतिसं० ३६ (क) । पत्र सं० ८४६ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल सं० १८७२ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स ३५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२६२७. प्रति सं० ३७ । पत्रस० ५३६ । ले०काल स० १८६३ माघ शुक्ला ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी, भरतपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२६२८. प्रतिसं० ३८ । पत्रस० २०१ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—आगे के पत्र नही है तथा जीर्ण है ।

२६२९. प्रतिसं० ३९ । पत्र स० ३०१ से ४८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३६३०. प्रतिसं० ४० । पत्र स० ५६५ । ले० काल स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८० । **प्राप्ति स्थान** – उपरोक्त मन्दिर ।

२६३१. प्रति सं० ४१ । पत्र स० २८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १८२ । **प्राप्ति स्थान** उपरोक्त मंदिर ।

२६३२. प्रतिसं० ४२ । पत्र स० ८८१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

२६३३. प्रतिसं० ४३ । पत्र स० २११-३४४ । आ० १४½×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

२६३४. प्रति सं० ४४ । पत्र स० ४७६ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले० काल सं० १६२६ माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना ।

२६३५. प्रति सं० ४५ । पत्र स० ५०१ । आ० १४×६ इञ्च । ले० काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन पचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—जती खुशाल ने बयाना मे ग्र थ की प्रतिलिपि की थी ।

२६३६. प्रति सं० ४५ (क) । पत्र स० ५१६ । आ० १४×६ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ मगसिर बुदी १० । पूर्ण । वेस्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—वैर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६३७. प्रति सं० ४६। पत्रसं० ७६७। आ० १३ × ७ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

२६३८. प्रति सं० ४७। पत्रस० ४३८। आ० १५ × ८ इन्च। ले० काल ×। अपूर्ण। **वेष्टन सं०**—३५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२६३९. प्रति सं० ४८। पत्रस० ७२७। ले० काल स० १८२६। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

२६४०. प्रति सं० ४९। पत्रस० ३०१। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रनि जीर्ण है।

२६४१. प्रति सं० ५०। पत्रसं० ३६४। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७२। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग।

२६४२. प्रति सं० ५१। पत्र स० ४-१०५। आ० १४×५$\frac{3}{4}$ इन्च। ले०काल—×। अपूर्ण। **वेष्टन स०** ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

२६४३. प्रति सं० ५२। पत्रस० ३२२ से ७०६। आ० १३ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। **वेष्टन स०** ११८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली।

२६४४. प्रति सं० ५३। पत्रस० ३२१। आ० १३×५$\frac{3}{4}$ इन्च। ले० काल ×। अपूर्ण। **वेष्टन सं०** ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर करौली।

२६४५. प्रति सं० ५४। पत्र स० ७४४। आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इन्च। ले० काल—स० १६५८ ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वे० स० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—अजमेर वालो के चौबारे जयपुर मे लिखा गया था।

२६४६. प्रतिसं० ५५। पत्र स० ५२८। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{3}{4}$ इन्च। ले० काल स० १६५५ आषाढ़ सुदी ११। पूर्ण। वे० स०३१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मन्दिर करौली।

विशेष—छीतरमल सोगाणी ने प्रतिलिपि की थी।

२६४७. प्रतिसं० ५६। पत्र स० ६३६। ले०काल स० १८३५। पूर्ण। वेष्टन स० ५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

२६४८. प्रति स० ५७। पत्रस० ५२३। आ० १४$\frac{1}{4}$×७ इन्च। ले०काल स० १८८२। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ५४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रथम पत्र नही है।

२६४९. पद्मपुराण—खुशालचन्द काला। पत्रस० २६१। आ० १२ × ६$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—पुराण। र० काल स० १७८३ पौष सुदी १०। ले०काल सं० १८४६। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ७४२। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२६५०. प्रति सं० २। पत्र स० ३४०। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इन्च। ले०काल सं० १८४१। सं० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा।

विशेष — अखैराम ब्राह्मण ने नैणवा में प्रतिलिपि की थी ।

२६५१. प्रति सं० ३ । पत्र स० २७२ । आ० १३ × × ६३ इञ्च । ले० काल सं० १६०४ । अपूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

२६५२. प्रति सं० ४ । पत्र स० २१६ । आ० १२×७½ इञ्च । ले० काल स० १८५१ श्रावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—श्रीमत् श्री विजयगच्छे श्रीपुजि श्री १०८ श्री विद्यासागर सूरि जी तत् शिस्य ऋषिजी श्री चतुर्भुज जी त० सि० ऋषिजी श्री सावल जी तत्पट्टे ऋषिजी श्री ५ रूपचद जी त० शिष्य रिखव, बखतराम लखत नानता ग्राम मध्ये राज्य श्री ५ जालिमसिंह राज्ये । कवर जी श्री नातालाल माधोसिंह जी श्रीरस्तु ।

२६५३. प्रति सं० ५ । पत्र स० २५५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२६५४. प्रति सं० ६ । पत्रस० २३८ । आ० १२×६ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—२२६ से २३८ तक के पत्र लम्बे है ।

२६५५. प्रति सं० ७ । पत्र स० ४२१ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६७६ सावन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १८, ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मदिर अलवर ।

२६५६. प्रति स० ८ । पत्र स० १८५ । आ० ११½×७½ इञ्च । ले०काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—तेरापथी चिमनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२६५७. प्रति स० ९ । पत्र स० ३२४ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १७८८ आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वे० स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष— दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६५८. प्रति स० १० । पत्र स० २६४ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले० काल स० १७६२ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—हिरदैराम ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

२६५९. प्रति स० ११ । पत्र स० २६२ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८२४ वैशाख बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष— माधोसिंह के शासन काल मे नाथूराम पोल्याका ने प्रतिलिपि की थी ।

२६६०. प्रति सं० १२ । पत्र स० ३४८ । ले०काल स० १८०० । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२६६१. पाण्डवपुराण—श्री भूषण (शिष्य विद्याभूषण सूरि) । पत्र सख्या ३०८ । आ० १० × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल स० १६०७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्न स० २५ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२९६२. प्रति सं० २ । पत्र स० २५२ । आ० १२×६ इंच । ले० काल स० १८५४ चैत्र बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

२९६३. प्रति सं० ३ । पत्र स० २९८ । ले०काल स० १६९८ म गसिर सुदी । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—ब्रह्म शामलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

२९६४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ११५ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वे० स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच २ के पत्र नहीं है । प्रत्येक पत्र मे ११ पक्तिया एव प्रत्येक पक्ति मे ४५ अक्षर है ।

उक्त ग्र थ के अतिरिक्त भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा विरचित वृषभनाथ चरित्र एव गुणभद्राचार्य कृत उत्तर पुराण के त्रुटित पत्र भी है ।

२९६५ प्रति सं० ५ । पत्रस० २२६ । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल स० १७३२ मगसिर बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी ।

विशेष —मनोहर ने नैणवा ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

२९६६. पाण्डवपुराण—भ०शुभचन्द्र । पत्र स० ४१५ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल स० १६०८ । ले०काल स० १७०४ चैत्र सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष —खण्डेलवालगोत्रीय श्री खेतसी द्वारा गोवर्धनदास विजय राज्य मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

२९६७. प्रति सं० २ । पत्रस० २०४ । आ० ११½×६' इञ्च । ले०काल स० १८९६ भादवा सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष —माधवपुर नगर के कर्वटाक्षपुर मे श्री महाराज जगतसिह के शासन मे भ० श्री क्षेमेन्द्रकीर्ति के शिष्य श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे सुखेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये साह मलूकचन्द लुहाडिया के व श मे किशनदास के पुत्र विजयराम श भुराम गंगराज । शम्भुराम के पुत्र द्वौ—नोनदराम पन्नालाल । नोनदराम ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

यह प्रति बू दी के छोगालाल जी के मन्दिर की है ।

२९६८. प्रति सं० ३ । पत्रस० २२० । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १६७७ माघ शुक्ला २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बून्दी ।

प्रशस्ति—सवत् १६७७ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे द्वितीया तिथौ अम्बावती वास्तव्ये श्री महाराजा भावसिघ राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलसघे ...... भ० श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये भौसा गोत्रे सा० ऊदा भार्या तुदलदे ...... । प्रशस्ति पूर्ण नही है ।

२९६९. प्रति सं० ४ । पत्र स० २४८ । आ० १५×५इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बू दी ।

२९७०. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३०१ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० १९३९ । अपूर्ण । । वेष्टन स० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—वृन्दावती नगर मे प० सेवाराम ने लिखा । १–६५ तक के पत्र दूसरी प्रति के हैं । ६६ से १८४ तक पत्र नही है ।

२६७१. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० १३६ । आ०१०½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८३४ आषाढ़ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८–२७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—चम्पावती नगरी मे श्री वृदावन के शिष्य सीताराम के पठनार्थ लिखा गया था ।

२६७२. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० १५६ । आ० १२ × ५ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६७३ **प्रतिसं० ८** । पत्रस० २५७ । ले० काल स० १६६७ । पूर्ण । वेष्टनस० २८/२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

प्रशस्ति—सवत् १६६७ वर्षे श्री शालिवाहन शाके १५६२ प्रवर्त्तमाने मार्गशिर सीतात ५ रविवासरे श्रीमालवदेशे श्रीउदयपुरनगरे श्रीशांतिनाथचैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे आचार्य श्री कुन्दकुन्दान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवा तत्पट्टे भ० सकलकीर्तिदेवा त० भ० श्रीभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्ट आचार्य श्री ज्ञानकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ श्रीसकलचन्द्रदेवा त भ. श्री रत्नचन्द्रदेवा त. भ श्री हर्षचन्द्रदेवा तस्य आम्नाये श्रीकपूरात् शिष्य श्रीसूरजी बघेरवाल ज्ञातीय षटोडगोत्रे सेनगणि साह श्रीराधो तद्भार्या गोजाई पुत्र सह ठोला गोत्रे साह श्री धाउ तद्भार्या गगाई तयो पुत्र साह श्री पल्हा भाया गोरा ...... साह श्री आया हरमोरा गोत्रे साह श्री गागु तद्भार्या चगाई तयो पुत्र साह श्री .... एतेषा मध्ये ... इद शास्त्र श्री सूरजीनी लिखाप्य दत्त ।

पुन सवत् १७१२ की प्रशस्ति दी है । सभवत दुबारा यही ग्रथ फिर किसी के द्वारा मडलाचार्य गुणकीर्ति को भेट किया गया था ।

२६७४. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० ३५० । आ० १०¾ × ६½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२६७५. **पांडवपुराण—यशःकीर्त्ति** । पत्रस० २०–११०, २०५–२४६ । आ० १२ × ५इञ्च । भाषा —अपभ्रश । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव जीर्ण है ।

२६७६. **पाण्डवपुराण—ब्र० जिनदास** । पत्र स० ५३१ । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल स० १५२८ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रशस्ति महत्वपूर्ण है ।

२६७७. **पाण्डवपुराण—देवप्रभसूरि** । पत्र स० ४६ से २६१ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६७८. **पाण्डव पुराण**— × । पत्रसं० १७६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय**—पुराण । र०काल × ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२६७६. **पाण्डव पुराण**— × । पत्रस० १०१ । आ० ११×८ इच । भाषा–हिन्दी (गद्य) । **विषय**–पुराण । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६८०. **पाण्डवपुराण—बुलाकीदास** । पत्रस० १६२ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल स० १७५४ आषाढ सुदी २ । ले०काल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६८१. **प्रतिसं० २** । पत्रस० २०४ । आ० १०½×४½ इच । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६८२. **प्रति सं० ३** । पत्रस० २१६ । आ० १३×७ इञ्च । ले०काल स० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३–१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)

विशेष—सदासुख वैद्य ने दूनी मे प्रतिलिपि की थी ।

२६८३ **प्रतिसं० ४** । पत्र स० २४५ । आ० १०×५½ इंच । ले० काल स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

२६८४. **प्रति सं० ५** । पत्र स० १८२ । आ० ११×७½ इच । ले०काल स० १६४६ चैत बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—हीरालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२६८५. **प्रति सं० ६** । पत्र स० २२६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन स ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा

२६८६. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० २६८ । आ० ११×५½ इच । ले०काल स० १८४१ । आषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष - अर्बराम ने नैणवा मे प्रतिलिपि की थी ।

२६८७. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० ३७७ । आ० १५×७½इंच । ले० काल स० १८६६ भादवा सुदी । १० ।पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मंदिर अलवर

२६८८. **प्रति सं० ६** । पत्र स० २३८ । ले० काल स० १७८३ आसोज बदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

२६८६. **प्रति सं० १०** । पत्र स० १४७ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

२९९०. प्रति सं० ११ । पत्रसं० १८६ । आ० १४ × ७½ इन्च । ले०काल १६६३ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

२९९१. प्रतिसं० १२ ।पत्रसं० २-९५ । आ० १२×६ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८१ १ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानीडीग

२९९२. प्रतिसं० १३ । पत्र स० १६१ । आ० । ११×५½ इन्च । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष —अन्तिम दो पत्र आधे फटे हुये है ।

२९९३. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० २६० । आ० १२×६¾ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

२९९४.प्रतिसं० १५ । पत्र स० २३२ । आ० १३×६ इन्च । ले० काल सं० १८६६ आसोज बुदी ९। पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—पन्नालाल भाट ने प्रतिलिपि की थी ।

२९९५. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १९५ । आ० ११½×५½ इन्च । ले० काल० स० १८११ शाके १६७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ ।प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

२९९६. प्रतिसं० १७ । पत्रसं० २४२ । आ० १२×५½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)

विशेष – अन्तिम दो पत्र नही है ।

२९९७. प्रति सं० १८ ।पत्रस० २४३ । आ० ११ ¾×५¾ इन्च । ले०काल सं० १९२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

२९९८. प्रतिसं० १९ । पत्रस० २३५ । आ० १३½×७ इंच । ले० काल स० १९५३ आषाढ बुदी । १४ । पूर्ण वेष्टन स० ४२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

२९९९. प्रति सं० २० । पत्रस० ३२८ । आ० १२½×६ इच । ले० काल स० १९११ बैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० ।प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मदिर ।

विशेष-- रामदयाल श्रावक फतेहपुर वासी ने मिर्जापुर नगर मे प्रोहित भूरामल ब्राह्मण से प्रति-लिति कराई थी ।

३००१. प्रतिसं० २१ । पत्रस० १९० । आ० १४×६½ इन्च । ले०काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३००२. प्रतिसं० २२ । पत्रसं० ११८ । आ० १२×७ इन्च । ले०काल सं० १९६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

३००३. प्रतिसं० २३ । पत्रसं० १७६ । ले०काल सं० १९५६ आसोज । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

३००४. पाण्डव पुराण वचनिका—पन्नालाल चौधरी। पत्रसं० २४६। आ० १३×८½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। **विषय—**पुराण। र०काल सं० १६३३। ले०काल स० १६६५ वैशाख बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० १२११। **प्राप्ति स्थान—**भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३००५. पार्श्व पुराण—चन्द्रकीर्त्ति। पत्र स० १२८। आ० १०×५ इञ्च। **भाषा—**संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल स० १६५४। ले०काल सं० १६८१ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ४५। **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)।

विशेष—आचार्य चन्द्रकीर्त्ति श्रीभूषण के शिष्य थे। पुराण मे कुल १५ सर्ग हैं। पत्र १ से ५६ तक दूसरी लिपि है।

३००६. पार्श्वपुराण—पद्मकीर्त्ति। पत्र स० १०८। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। **विषय—**पुराण। र०काल स० ९९९। ले० काल स० १५७४ काती बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० १७७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—चित्रकूटे राणाश्रीसग्राम राज्ये⋯⋯ भ० प्रभाचन्द्रदेवा खण्डेलवालान्वये भौसा गोत्रे साहु महक भार्या महाश्री पुत्र साह मेघा भार्या मेघसी द्वितीय भा. मा जीगा भार्या जौगाश्री तृतीय भा. मा सूरज भार्या सूर्यदे चतुर्थ भ्राता सा पूना भार्या पूनादे एतेषा मध्ये साह मेघा पुत्र हीरा ईसर महेसर करमसी इद पार्श्वनाथचरित्र मुनिश्री नरेन्द्रकीर्त्ति योग्य घटापित।।

३००७. पार्श्वपुराण—रइधू। पत्रसं० ८१। आ० ११¾×५ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। **विषय—**चरित्र। र०काल ×। ले० काल स० १७४३ माघ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० २८७। **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष—१७४३ वर्षे माघ कृष्ण ३ चन्द्रवारे लिखित महानन्द पुष्कर मल्लन्मज पालव निवासी।

३००८. पार्श्वपुराण—वादिचन्द्र। पत्र स० १३२। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। **विषय—**पुराण। र०काल ×। ले० काल स० १८१० माघ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० २६८। **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष—नरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य प० बूलचन्द ने इस ग्रंथ की प्रतिलिपि की थी।

३००९. प्रति स० २। पत्रस० ७३। आ० १०×५ इंच। ले०काल स० १८५०। पूर्ण। **वेष्टन** स० २३४-९३। **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—नौतनपुर मे ब्र. नेमिचन्द्र ने ग्रंथ का जीर्णोद्धार किया था।

३०१०. पुराणसार (उत्तरपुराण)—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र स० १९२। आ० १०×४¾ **इञ्च।** भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल स० १८६० भादवा बुदी १५। पूर्ण। **वेष्टन** स० १५५८। **प्राप्ति स्थान—**भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३०११. प्रतिसं० २। पत्र स० ३४। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल स० १८२६ आसोज बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० १४५६। **प्राप्तिस्थान—**भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—मण्डलाचार्य भट्टारक विजयकीर्त्ति की आम्नाय मे साकम्भरिनगर (सांभर) मे महाराजा पृथ्वीसिंह के राज्य मे श्री हरिनारायणजी ने शास्त्र लिखवाकर पडित माणकचन्द को भेट किया था।

३०१२. प्रति सं० ३। पत्रस० २३६। आ० १०×५ इञ्च। ले० काल सं० १७७० पौष बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

३०१३. पुराणसार—सागरसेन। पत्रसं० ६२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले०काल स० १६५७। पूर्ण। वेष्टन सं० १०७३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत १६५७ वर्षे भादवा बुदी ६ वार शुक्रवार अजमेर गढ मध्ये श्रीमद्अकवरसाहिमहासुरत्राण राज्ये लिखित च जोसी सूरदास साह धारणा ततपुत्र साह सिरमल।

३०१४. भागवत महापुराण— ×। पत्रस० १३३। आ० १२×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल स० १८१२। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—३१ वें अध्याय तक पूर्ण है।

३०१५. भागवत महापुराण— ×। पत्रस० २०५। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—दशमस्कध पूर्वार्द्ध तक है।

३०१६. भागवत महापुराण— ×। पत्रस० २-१४६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—पुराण। र०काल स० १७०० श्रावण बुदी १०। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, आदिनाथ बूंदी।

३०१७. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (एकादश स्कंध)—श्रीधर। पत्रस० १२६। आ० १३×५ इंच। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल स० १८०१। पूर्ण। वेष्टन स० १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०१८. प्रति सं० २। पत्रस० ३५। आ० १५×६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ११७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

३०१९. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (तृतीय स्कंध)—श्रीधर। पत्रस० १३२। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०२०. प्रति स० २। पत्रस० ७७। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बूंदी।

३०२१. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (द्वादश स्कंध)—श्रीधर। पत्र सं० ४४। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी।

३०२२. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (चतुर्थ स्कंध)—श्रीधर। पत्र स० ६७। श्रा० १५×७ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०२३. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (द्वितीय स्कंध)—श्रीधर। पत्र स० ३२। श्रा० १५×७ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०२४. प्रति सं० २। पत्र स० ४३। श्रा० १५×६ इच। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०२५. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (सप्तम स्कंध)—श्रीधर। पत्र स० ६४। श्रा० १५ × ७ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर नागदी बूदी।

३०२६ भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (षष्टम स्कंध)—श्रीधर। पत्रस० ६२। श्रा० १५ × ६½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल स० १७७६। पूर्ण। वेष्टनसं० १०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०२७. प्रति सं० २। पत्रस० ६२। श्रा० १५×७ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०२८. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (अष्टम स्कध)—श्रीधर। पत्रस० ५८। श्रा० १५×६½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०२६. भागवत महा पराण भावार्थ दीपिका (नवम स्कंध)—श्रीधर। पत्र स० ५१। श्रा० १५×६½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र० काल ×। ले०काल स० १८६१। पूर्ण। वेष्टन स० १०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०३०. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (पंचम स्कंध)—श्रीधर। पत्र स० ८३। श्रा० १५×६½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल स० १७४६। पूर्ण। वेष्टन स० १०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०३१. प्रति सं० २। पत्र स० १६–२३। श्रा० १५×६½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १०६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

३०३२. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (प्रथम स्कंध)—श्रीधर। पत्रसं० ६०। श्रा० १३×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले०काल स० १८६६। पूर्ण। वेष्टनसं० १०४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

३०३३. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (दशम स्कंध)—श्रीधर। पत्रस० ४३७। श्रा० १२×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल स० ×। ले०काल स० १७४५ माघ बुदी ५५। पूर्ण। वेष्टनसं० १०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—इद पुस्तकं लिखितं ब्राह्मण जोशी **प्रह्लाद** तत्पुत्र चिरंजीव मथुरादास चिरंजीव भाई गंगाराम तेन इद पुस्तकं लिखित । जबूद्वीप पटणस्थले । श्री केशव चरण सन्निध्यौ ।

३०३४. मल्लिनाथ पुराण— × । पत्रसं० २६ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३०३५. मल्लिनाथ पुराण भाषा—सेवाराम पाटनी । पत्र सं० १०८ । आ० १०½ × ५¾ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल स० १८५० । ले०काल सं० १८९४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—लेखराज मिश्र ने कोसी मे प्रतिलिपि की थी । सेवाराम का भी परिचय दिया है । वे दौसा के रहने वाले थे तथा फिर डीग मे रहने लगे थे ।

३०३६. महादण्डक— × । पत्र स० ४ । आ० १०¾ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय × । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इति श्री जैसलमेर दुर्गस्थ श्री पार्श्वनाथ स्तुतिश्चकेड चक्रेण चेत साखाचक्र सहजकीर्ति नाम महादडकेन स० १६८३ प्रमाणे विजयदशमी दिवसे । लिख्यतानि ' महादण्डक विदुषाक्षपरगमेण मागा नगरमध्ये मिती ज्येष्ठ प्रतियद्दिवसे स० १७८२ का ।

३०३७. महादंडक—भ० विजयकीर्ति । पत्रस० १७५ । आ० ९½ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल स० १८३६ । ले०काल सं० १८४० पूर्ण । वेष्टन स० १४३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—किशनगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३०३८. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १८२ । आ० ९½ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रथ मे ४१ अधिकार है तथा अजयगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३०३९. **महापुराण—जिनसेनाचार्य—गुणभद्राचार्य** । पत्र स० १-१४५ । आ० १३ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२१/२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०४०. प्रति स० २ । पत्रस० ६-४१७ । आ० ११½ × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन पं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—बीच २ मे कई पत्र नही हैं । प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है ।

२०४१. प्रतिस० ३ । पत्र सं० ३६६ । आ० ११ × ५½इञ्च । ले०काल १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० १२/८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी । (टोंक)

३०४२. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ६४० । ले० काल सं० १६६३ । पूर्ण । वे० स ३० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—रणथंभौर के चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

३०४३. प्रति सं० ५। पत्र स० ३६२। ले० काल सं० १७६५। पूर्ण। वेष्टन सं० २७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

३०४४. प्रति सं० ६। पत्र स० १ से ४८४। ले० काल सं० X। अपूर्ण। वेष्टन सं० २८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

३०४५. प्रति सं० ७। पत्रस० ४३५। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल सं० X। अपूर्ण। वेष्टनसं० २३२। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—३७१से ४३४ तक तथा ४३५ से आगे के पत्र मे नही है।

३०४६. महापुराण-पुष्पदंत । पत्र स० ३५७। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय | पुराण। र०काल। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टनस० ४३७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष-प० भीव लिखित।

३०४७. प्रतिसं० २। पत्र स० ६४६। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६। **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मदिर।

३०४८. प्रति सं० ३। पत्रस०३१५। आ० ११½×५ इञ्च। ले०काल X। अपूर्ण। वेष्टनस० २६ X। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दौसा।

विशेष—बहुत से पत्र नहीं है।

३०४९. प्रतिसं० ४। पत्र स० ११। आ० ११½×५½ इञ्च। ले०काल X। अपूर्ण। वेष्टन सं० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—प्रति प्राचीन एव जीर्ण। पत्र पानी मे भीगे हुये है।

३०५०. प्रति सं० ५। पत्र स० २५७। आ० ११½ X ४½ इञ्च। ले० काल स० X। पूर्ण। वेष्टन स० ८३। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—प्रतिप्राचीन है। प्रशस्ति काफी वडी है।

३०५१. प्रतिसं० ६ पत्र स० १३८। ले० काल X। अपूर्ण। वेष्टन सं० २६/४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

३०५२. महापुराण चौपई—गगादास (पर्वतसुत)। पत्रस० ११। आ० १०½ ×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय – पुराण। र०काल। ले० काल स० १८२५ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ३१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी।

३०५३. प्रतिसं० २। पत्रसं० १०। ले०काल सं० X। अपूर्ण। वेष्टन सं० १०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

३०५४. महाभारत—X। पत्र स० ६१। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय पुराण। र०काल X। ले०काल X। अपूर्ण। वेष्टन स० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—कर्णपर्व-द्राधिप सवाद तक है।

३०५५. मुनिव्रत पुराण—ब० कृष्णदास। पत्र सं० १६६। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल स० १६८१। पूर्ण। वेष्टन स० ३६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—अन्तिम पत्र जीर्ण हो गया है।

३०५६. रामपुराण—सकलकीर्ति। पत्र स० ३४५। आ०१२ × ६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल स० १८७१। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—भट्टारक भुवनकीर्ति उपदेशात् ढुढाहर देशे दीर्घपुरे लिपीकृतं।

३०५७. रामपुराण—भ० सोमसेन। पत्र स० १८८। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-पुराण। र०काल ×। ले० काल। पूर्ण। वेष्टन सं० १०५५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३०५८. प्रति सं० २। पत्र स० २३०। आ० १३½×६¾ इञ्च। ले०काल स० १८६६ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० १४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

३०५६. प्रतिसं० ३। पत्र स० २७६। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल स० १७२३। पूर्ण। वेष्टन सं० १८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

प्रशस्ति—स० १७२३ वर्षे शाके १५८८ चैत्र सुदी ५ शुक्रवासरे अंबावती महादुर्गे महाराजाधिराज श्री जयसिंह राज्य प्रवर्तमाने विमलनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्ति के समय मोहनदास भौसा के वशजों ने प्रतिलिपि कराई थी।

३०६०. प्रति सं ४। पत्रस० १६४। आ० ११ × ५½ इञ्च। **ले०काल** १८५७। पूर्ण। वेष्टन स० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—वृंदावती मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे सेवाराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०६१. प्रतिसं० ५। पत्रसं० २५०। ले०काल सं० १८४८। अपूर्ण। वेष्टन स० ११। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

३०६२. प्रतिसं० ६। पत्र स० ३८-२५४। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३०६३. प्रति सं० ७। पत्रस० २३६ से ३६२। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल सं० १८४३। अपूर्ण। वेष्टन सं० २१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ।

३०६४. प्रतिसं० ८। पत्र सं० २६० से ३४४। आ० ११×५½। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ।

३०६५. प्रतिसं० ६। पत्र सं० २३७। आ० १३×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२८। **प्राप्तिस्थान** – दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३०६६. **वर्द्धमान पुराण** -- × । पत्र स० १६६ । आ० ११½ × ७½ इञ्च । भाषा – हिन्दी । विषय-पुराण । र०काल — × । ले०काल स० १६४१ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३०६७. **वर्द्धमान पुराण भाषा**— × । पत्र स० १४७ । आ० ११ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी' बूंदी ।

३०६८. **वर्द्धमान पुराण—कवि असग** । पत्रसं० १०५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय —पुराण । र०काल स० १००६ । ले० काल स० १५४० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५४० वर्षे ।। फाल्गुण शुल्क नवम्यां श्री मूलसंघे नंद्यम्नाये बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्ततृशिष्य मुनि रत्नकीर्ति स्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये पाटणी गोत्रे ······ ··· ।

३०६९. **वर्द्धमान पुराण**— × । पत्रस० २१४ । आ० १३½ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल सं० १९३९ फागुन वदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३०७०. **वर्द्धमानपुराण—नवलशाह** । पत्र स० १५७ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल स० १८२५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—पुराण में १६ अधिकार हैं ।

प्रारंभिक पाठ—

> ऋषभादिमहावीरं प्रणमामि जगद्गुरुं ।
> श्री वर्द्धमानपुराणोऽयं कथयामि अह ब्रवीत् ।
> ओंकार उच्चारकरि ध्यावत मुनिगण सोइ ।
> तामैं गरमित पंचगुरु तिनपद बदौ दोइ ।
> गुण अनन्त सागर विमल विश्वनाथ भगवान ।
> धर्मचक्र मय वीर जिन बदौ सिर धरि ध्यान ।।२।।

अंतिम पाठ—

> उज्जयति विक्रम नृपति सवत्सर गिनि तेह ।
> सत अठार पचीस अधिक समय विकारी एह ।।३२।।
> द्वादंश में सूरज गिनै द्वादश अशहि ऊन ।
> द्वादशमो मासहि भनौं शुक्लपक्ष तिथि पुन ।।३३।।
> द्वादशनक्षत्र चलामियें बुधवार वृद्धि जोग ।
> द्वादश लगन प्रभात मे श्री दिम लेख मनोग ।।३४।।

रितबसत प्रफुल्ल अति फागु समय शुभ हीय ।
वर्द्धमान भगवान गुन ग्रंथ समापति कीय ।

कवि की लघुता—

द्रव्य नवल क्षेत्रहि नवल काल नवल है और ।
भाव नवल भव नवल अतिबुद्धि नवल इहि ठौर ।।
काय नवल अरु मन नवल वचन नवल विसराम ।
नव प्रकार जत नवल इह नवल साहि करि नाम ।।

अंतिम पाठ—दोहा—

पच परम गुरु जुग चरण भवियन बुध गुन धाम ।
कृपावत दीजै भगति, दास नवल परनाम ।।४२।।

३०७१. प्रतिसं० २ । पत्र स० १३६ । आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६१५ सावन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३०७२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी ।

विशेष—भगवानदास ने बबई मे प्रतिलिपि कराई थी । स० १९२६ मे श्री रामानद जी की बहू ने फतेपुर के मदिर इसे चढाया था ।

३०७३. वर्द्धमान पुराण—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ६८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

३०७४. प्रतिसं० २ । पत्रस० १२१ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

३०७५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १३८ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३०७६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १३८ । आ० १२×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—करौली नगर मे किसनलाल श्रीमाल ने लिखा ।

३०७७. प्रति सं० ५ । पत्रस० १२६ । आ० ११×८ इंच । ले०काल स० १६०२ पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३०७८. प्रति स० ६ । पत्र स० १०३ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल सं० १५८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार—

सवत् १५८८ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १२ गुरु प० नला सुत प० पेथा भ्रात अकिम·········लिखितं ।

दूसरी प्रशस्ति—

स्थवीराचार्य श्री ६ चन्द्रकीर्ति देवा: ब्रह्म श्रीवंत तत् शिष्य ब्रह्म श्री नाकरस्येद पुस्तक पठनार्थं।

३०७९. प्रति सं० ४। पत्र स० २०६। आ० १२×६½ इन्च। भाषा – हिन्दी। विषय— पुराण। र०काल स० १८२५। ले० काल स० १६०८। पूर्ण। वेष्टन म० २३०। **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—

कामा के मन्दिर में दीवान चुन्नीलाल ने भेंट किया।

३०८०. प्रति सं० ५। पत्रस० १८८। आ० ६½×७½ इन्च। ले०काल सं० १६५६। पूर्ण। वेष्टनसं० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा)।

३०८१. प्रति सं० ६। पत्रस० १३०। ले० काल स० १८८६। पूर्ण। वेष्टनस० ७६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

३०८२. वर्द्धमान पुराण भाषा—नवलराम। पत्रस० २४३। आ० ११×७ इन्च। भाषा– हिन्दी पद्य। विषय—पुराण। र०काल सं० १६६१ अगहन सुदी। ले० काल सं० १६०३। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृन है वैश्य कुल की ८४ गोत्रो का वर्णन किया गया है।

दोहरा—

सोरहसं इक्याणवं अगहण सुभ तिथि वार।
नृप जुझार बु देल कुल जिनके राजमभार।
यह सक्षेप बखाणकरि कहौ पनिष्ठा धर्म,
परजाग जुन वाडी विमव निग उत्पति बहुवर्म ॥

दोहरा—

क्षत्रसालवती प्रबल नाती श्रीहरि देस।
सभासिह मुत हिन्दपति करहि राज इहदेस ॥
ईति भीति व्यापं नही परजा अनि आगद।
भाषा पढहि पढावहि पट् पुर श्रावक वृ द।

पद्धडी छंद—

ताहि समय करि मन मे हुलास,
    कीजे कथा श्री जिण गुणहि दास।
वक्ताप्रभाव बडौ उर आन।
    तब प्रभु वर्द्धमान गुणखान।
करी अस्तवण भाषा जोर।
    नवलसाह तज मदमण मोर।
सकलकीर्ति उपदेश प्रवाण।
पितापुत्र मिलि रच्यो पुराण।

अन्तिम दोहा—

पंच परम जग चरण नमि, भव जरा बुद्ध जुत धाम ।
कृपावत दीजे भगत दास नवल परणाम ।।

ग्रंथ कामापुर के पचायती मन्दिर मे चढाया गया ।

३०८३. **विमलनाथपुराण—ब्र० कृष्णदास ।** पत्र स० २६६ । आ० १२×७½ इञ्च । **भाषा**—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल स० १६७४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

३०८४. **प्रतिसं० २ ।** पत्र स० १५१ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८/११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

३०८५. **विमलनाथ पुराण भाषा—पांडे लालचन्द ।** पत्र स० १०० । आ० १४ × ८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८३७ । ले० काल स० १९३४ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३०८६. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ११८ । आ० ६½×६ इञ्च । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

३०८७. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १३७ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १९३३ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

३०८८. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ११८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—ब्रह्म कृष्णदास विरचित सस्कृत पुराण के आधार पर पाडे लालचन्द ने करौली में ग्रंथ रचना की थी ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

अडिल्ल—

गढ गोपाचल परम पुनीत प्रमानिये,
तहा विश्वभूषण भट्टारक जानिए ।
तिनके शिष्य प्रसिद्ध ब्रह्म सागर सही,
अग्रवार वर वश विषै उत्पत्ति लही ।

काव्य छन्द—

जात्रा करि गिरनार सिखर की अति सुख दायक ।
फुनि आये हिंडौन जहा सब श्रावक लायक ।
जिन मत को परभाव देखि निज मन थिर कीनो ।
महावीर जिन चरण कमल को शरणौं लीनौ ।।

दोहा—

ब्रह्म उदधि के शिष्य फुनि पांडेलाल अयान ।
छंद कोस पिंगल तनौ जामे नाही ज्ञान ।

प्रभु चरित्र किम मिस विषय कीनों जिन गुणगान ।
विमलनाथ जिनराज को पूरण भयो पुराण ।।
पूर्व पुरान विलोकि कै पाडेलाल अयान ।
भाषा वन्ध प्रवंध मे रच्यो करौरी थान ।।

चौपाई—

सवत् अष्टादश सत जान ताउपर तैंतीस प्रमान ।
अस्विन सुदी दशमी सोमवार ग्रंथ समापति कीनौ सार ।।

३०८९. विष्णु पुराण— × । पत्रसं० ७-४० । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—पत्र सं० ७-६ तक अठारहपुराण तथा ६-४० तक विष्णुपुराण जिसमे आदिनाथ का वर्णन भी दिया हुआ है ।

३०९०. श्रेणिक पुराण—विजयकीर्त्ति । पत्र सं० ८१ । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । र०काल सं० १८२७ फागुन बुदी ५ । ले० काल स० १६०३ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३०९१. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४५ । आ० ११½ × ५½ इञ्च भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल स० १८८७ । वेष्टन स० ६६४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—भट्टारक परिचय दिया गया है । भट्टारक धर्मचन्द्र ठोल्या वैराठ के थे तथा मलयखेड के सिंहासन एव कारजा पट्ट के थे ।

३०९२. शान्ति पुराण—अशग । पत्र स० ८४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १८४१ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—उणियारा नगर मे ब्रह्म नेतसीदास ने अपने शिष्य के पठानार्थ लिखा था ।

३०९३. प्रतिसं० २ । पत्रस० १२४ । आ० ११½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३०९४. शान्ति पुराण—पं. आशाधर कवि । पत्र स० १०७ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल १५६१ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स०२०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है ।

३०९५. शांतिनाथ पुराण—ठाकुर । पत्र स० ७४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी हिन्दी । विषय-पुराण । र०काल स० १६५२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३०९६. शान्तिनाथ पुराण—सकलकीर्त्ति । पत्रस० २०३ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा— विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १८६३ आषाढ़ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

३०९७. प्रति सं० २ । पत्रस० २२४ । ले०काल सं० १७८३ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

विशेष—इसे पं० नरसिंह ने लिखा था ।

३०९८. प्रति सं० ३ । पत्र स० २२७ । आ० १२½ × ५ इञ्च । **ले०काल** सं० १७९८ मगसिर सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २८/१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

३०९९. शान्तिनाथ पुराण—सेवाराम पाटनी । पत्र सं० १५७ । आ० १३½ × ८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल स० १८३४ सावन बुदी ८ । ले०काल स० १९६५ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

३१००. प्रति सं० २ । पत्र स० १५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३१०१. प्रति सं० ३ । पत्र स०२२१ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

३१०२. प्रति सं० ४ । पत्रस० १९४ । आ० १३ × ८ इञ्च । **ले०काल** स० १८६३ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—सेवाराम ने प० टोडरमल्लजी के पथ का अनुकरण किया तथा उनकी मृत्यु के पश्चात् जयपुर छोड के चले जाना लिखा है । कवि मालव देश के थे तथा मल्लिनाथ चैत्यालय मे ग्रंथ रचना की थी । ग्रंथ रचना देवगढ मे हुई थी । कवि ने हुबड वशीय अंबावत की प्रेरणा से इस ग्रंथ की रचना करना लिखा है ।

आलमचन्द बैनाडा सिकन्दरा के रहने वाले थे । दैवयोग से वे बयाना मे आये और यहा ही बस गये । उनके दो पुत्र थे खेमचन्द और विजयराम । खेमचन्द के नथमल और चेतराम हुए । नथमल ने यह ग्रंथ लिखाकर इस मन्दिर मे चढाया ।

३१०३. शान्तिनाथ पुराण भाषा—× । पत्रस० २४९ । आ० १३×९½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० १४६** । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३१०४. सुमतिनाथ पुराण—दीक्षित देवदत्त । पत्रस० ३-४२ । आ० १२×६ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल × । **ले०काल** सं० १८४७ चैत सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष अन्तिम—भगवान सुमति पदारविदनि ध्याइमान सानंद के ।
कवि देव सुमति पुराण यह, विरच्ये ललित पद छद के ।
जो पढ़ई आपु पढाई औरनि सुनहि बाच सुनावही ।
कल्याण मनवंछित सुमति परसाद सो जन पांव ही ।

इति श्री भगवत् गुणभद्राचार्यानुक्रमेण श्री भट्टारक विश्वभूषण पट्टाभरण श्री ब्रह्म हर्षसागरात्मज श्री भट्टारक जिनेन्द्रभूषणोपदेशात् दीक्षित देवदत्त कवि रचितेन श्री उत्तरपुराणान्तर्गत सुमति पुराणे श्री निर्वाण कल्याण वर्णनो नाम पंचमो अधिकार । भगवानदास ने भटेर में प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ मे त्रिभगी सार का अंश है ।

३१०५. हरिवश पुराण—जिनसेनाचार्य । पत्रसं० ४२६ । ग्रा० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय -पुराण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१०६. प्रति सं० २ । पत्र स० ४०६ । ग्रा० १२ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र नही है ।

३१०७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १४० । ग्रा० १०½×५½ इञ्च । ले० काल× । अपूर्ण । वे० स० १२७६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३१०८. प्रति स० ४ । पत्रस० २६४ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३१०९. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ३१४ । ग्रा० १२×५ इच । ले०काल १७५६ ग्रासोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८/११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—रावराजा बुधसिंह के बूंदी नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३११०. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ३१६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—तीन चार प्रतियो का सग्रह है ।

३१११. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ३६२ । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३११२. प्रतिसं० ८ । पत्रस० १६ । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १७११ । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** १५१/७६ । सभवनाथमन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति – स० १७११ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे श्री सागपत्तने श्री आदिनाथ चैत्यालये लिखित । श्री सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री वादिभूषण, तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनंदि त० भ. श्री देवेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये आचार्य श्री महीचन्द्रस्तत्‌शिष्य ब्र० बीरा पठनार्थ ।

३११३. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६५ । ग्रा० १२½×५¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच के अनेक पत्र नहीं हैं । तथा ६५ से आगे पत्र भी नहीं है ।

३११४. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३०२ । आ० १३×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३११५. हरिवंशपुराण भाषा—खड्गसेन । पत्र सं० १७० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—३१३३ पद्य हैं । गागरड़ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३११६. हरिवंश पुराण— भट्टारक विद्याभूषण के शिष्य श्रीभूषण सूरि । पत्र सं० ३३५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १७०१ भादवा बुदी १ पूर्ण । वेष्टन सं० २५-१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—राजनगर मे लिखा गया था ।

३११७. हरिवंशपुराण—यशःकीर्ति । पत्र सं० १८९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पुराण । ले० काल × । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८/२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६६१ चैत्र सुदी २ रविवासरे पातिसाह श्री अकब्बर जलालदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री आगरा नगरे श्रीमत् काष्टासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्री श्रीमलयकीर्तिसूरी-श्वरान् तत्पट्टे मुजसोगशिमुश्रीकृतदृग्वलयाना प्रतिपक्षसिरिस्फोटान् प्रवीभव्याजविकासिना मुमालिना कुवादेन्दीवरमकोचनैकशीनरूचीना सद्ग्रन्थवैचनजलमुचां चारूचारित्रचरितां ·········· भ० गुणभद्र देवा । तत्पट्टे वादीभकु भस्थल विदारणैक········ भ० श्री भानकीर्तिदेवा तत्पट्टे·········· भ० कुमारसेनदेवा तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोयलगोत्रे इदानी आगरा वास्तव्यं सुदेसप्रदेसविख्यातमात्यान् दानप्रतिश्रेयासावतारान दीपकराइबल तस्य भार्या सील तोयतर गिनि विनम्रवागेश्वरी साध्वी अर्जुनदे तयो पुत्र पंच । प्रथम पुत्र देवीदास तस्यभार्या नागरदे तत्पुत्र कुंवर तस्य भार्या देवल तयो. पुत्र द्वय प्रथम पुत्र चन्द्रसेनि द्वितीय पुत्र कपूर । राइवल् द्वितीय पुत्र रामदास तस्यभार्या देवदत्ता । राइवल तृतीय पुत्र लक्ष्मीदास तस्य भार्या अनामिका । राइवल् चतुर्थ पुत्र पेमकरण तस्य भार्या देवल । राइवल पंचम पुत्र दानदानेश्वरान् जैनसभाश्रृंगार हारान् जिनपूजापुरंदरान्········ साहु आसकरण तस्य भार्या········ साध्वी मोतिगदे तयो पुत्र······ साहु श्री स्वामीदास जहरी तस्य भार्या········ साध्वी बेनमदे तयो पुत्र पंच । प्रथम पुत्र भवानी, द्वितीय पुत्र मुरारी तस्य भार्या नारंगदे । तयो तृतीय पुत्र लाहुरी भार्या नथउदास तस्य भार्या लोहगमदे तयो पुत्र त्रय गोकलदास तस्य भार्या कस्तूरी पुत्र मुरारि । स्वामिदास तृतीयपुत्र पंचमीप्रत उद्धरणधीरान्········ साहु प्रथीमल तस्यभार्या सुन्दरदे तस्य पुत्र मायीदास स्वामीदास चतुर्थ पुत्र साहु मथुरादास स्वामीदास पंचम पुत्र जिन शासन उद्धरणधीरान्········साह········। इससे आगे प्रशस्ति पत्र नहीं है ।

३११८. हरिवंश पुराण—शालिवाहन । पत्र सं० १६७ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल सं० १६९५ । ले० काल—सं० १७८९ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

३११९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल १७९४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

३१२०. प्रति सं० ३ । पत्रस० १३० । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल सं० १८०३ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—शाहजहांनाबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

अग्रवाल ज्ञातीय वशल गोत्रे फतेपुर वास्तव्ये वागड देशे साह लालचंद तत्पुत्र साह सदानद तत्पुत्र साह राजाराम तत्पुत्र हरिनारायण पाडे स्वामी श्री देवेन्द्रकीर्त्ति जी फतेपुर मध्ये वास्तव्य तेन दिल्ली मध्ये पातसाह मोहम्मद साहि राज्ये सपूर्ण कारापित ।

३१२१. हरिवंश पुराण—दौलतराम कासलीवाल । पत्रस० ३८६ । आ० १५×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल स० १८२६ । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५/११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—जयकृष्ण व्यास फागी वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३१२२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४६२ । आ० १३×५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । र०काल स० १८२६ चैत सुदी १५ । ले० काल स० १८७२ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

३१२३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४६८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल स० १८२६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

३१२४. प्रति सं० ४ । पत्रस० २०२ से ६१३ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२६ । ले० काल स० १८६३ । अपूर्ण । वेष्टनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—चौधरी डोडीराम पुत्र गोविन्दराम तथा सालगराम पुत्र मन्नालाल छाबडा ने राजमहल मे टोडानिवासी ब्राह्मण सुखलाल से प्रतिलिपि कराकर चन्द्रप्रभु स्वामी के मंदिर मे विराजमान किया ।

३१२५. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ५३८ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८२६ । लेखन काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३१२६. प्रति सं० ६ । पत्रस० ४४४ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८२६ । ले० काल स० १८६३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—ग्रथ का मूल्य १५) रु० ऐसा लिखा है ।

३१२७. प्रति [illegible] ७ । पत्रस० ४५४ । आ० १२½ × ७इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२६ चैत सुदी १५ । ले०काल स० १९६१ माघ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३१२८. प्रति सं० ८ । पत्रस० ३८६ । आ० १५½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८२६ । ले० काल १८६४ वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक) ।

३१२९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६१७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल स० १८२६ । ले०काल स० १८८१ कातिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८/८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० पार्श्वनाथ जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

३१३०. प्रति स० १० । पत्र स० २१३ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पुराण । र०काल स० १८२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३१३१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ४२७ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । र०काल स० १८२६ । ले० काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ख० पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—कुमावती नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

३१३२. प्रति सं० १२ । पत्र स० ३२६ । आ० १६ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय-पुराण । ले० काल स० १८८४ पौष वदी १३ । र०काल स० १८२६ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति दो वेष्टनों में है ।

३१३३. प्रति सं० १३ । पत्रसं० ४०६ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल स० १८२६ । ले० काल स० १८४२ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—नवनिधिराय कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

३१३४. प्रति सं० १४ । पत्रस० ३५७ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल स० १८२६ चैत सुदी १५ । ले० काल स० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३१३५. प्रति स० १५ । पत्रस० ४७५ । ले०काल १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—कुभावती मे प्रतिलिपि हुई थी । स० १८६१ मे मन्दिर मे चढाया गया ।

३१३६. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ४६३ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८२६ चैत सुदी १५ । ले०काल—स० १८५५ कात्तिकसुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

३१३७. प्रति सं० १७ । पत्र स० ४६८ । आ० १३×७ इंच । भाषा—ले०काल × । अपूर्ण एव जीर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वैर भरतपुर ।

३१३८ प्रति स० १८ । पत्र सं० २२४ । आ० १३½×८½ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

३१३९. प्रति सं० १९ । पत्र स० ४८० । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय पुराण । र०काल सं० १८२९ । ले० काल स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, हण्डावालो का डीग ।

३१४०. प्रति सं० २० । पत्रसं० २ से २४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

३१४१. प्रतिसं० २१ । पत्रस० ६०२ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल सं० १८२९ चैत सुदी १५ । ले० काल सं० १८९५ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—नगर करौली मे साहबराम ने गुमानीराम द्वारा लिखाया था । बीच के कुछ पत्र जीर्ण है ।

३१४२. प्रतिसं० २२ । पत्र स० १–२०५ । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२९ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

३१४३. प्रति सं० २३ । पत्र स० ४४० । आ० १२$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय-पुराण । र०काल स० १८२९ चैत सुदी १५ । ले० काल स० १८९४ माघ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—जीवणराम जी ने ब्राह्मण बिजाराम आत्माराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

३१४४. प्रतिसं० २४ । पत्रस० ५०६ । आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १८२९ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—चिमनलाल तेरहपथी ने प्रतिलिपि की थी ।

३१४५. प्रतिसं० २५ । पत्रस० ३२७ । आ० १३×१० इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय—पुराण । र०काल सं० १८२९ । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३१४६. प्रति सं० २६ । पत्रस० ३०० । आ० ११ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पुराण । र०काल स० १८२९ चैत्र सुदी १५ । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३१४७. प्रति सं० २७ । पत्रस० ४४१ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल स० १८२९ । ले०काल स० १८५९ । पूर्ण । वेष्टनस० २६-१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियों का डूगरपुर ।

३१४८. हरिवंश पुराण—ब्र० जिनदास । पत्रस० २४५ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १८४····(?) फागुण सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनसं० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—बूंदी नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३१४९. प्रति सं० २ । पत्रस० २७७ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पञ्चायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

३१५०. प्रति सं० ३ । पत्रसं० २०८ । आ० ८¾×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१५१. प्रति सं० ४ । पत्रस० १८६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३१५२. प्रति सं० ५ । पत्रस० ३६५ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले०काल स० १५६३ । पूर्ण । **वेष्टन सं० ३४३** । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१५३ प्रति सं० ६ । पत्रसं० ३४३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले०काल स० १५८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१५४. प्रति सं० ७ । पत्रसं० २०७ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

३१५५. प्रति सं० ८ । पत्रस० ३०६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—संवत् १६५७ वर्षे भाद्रव सुदि १३ बुधवासरे श्री मूलसंघे श्रीयथावयानौ शुभस्थाने राजाधिराज श्रीमद् अकबरसाहिराज्ये चंद्रप्रभ चैत्यालये खंडेलवाल ज्ञातीय समस्त पंचाइतु बयानै को पुस्तक हरिवंश शास्त्र पडित बूरा प्रदत्त । पुस्तक लिखित ब्राह्मनु परासर गोत्रे पाडे प्रहलादु तत्पुत्र मित्रसौनि लेखक पाठक ददातु । इद पुस्तक द्रव्यकृतवा पडित सभाचन्द तदात्मज रघुनाथ सवत् १७६७ वर्षे अश्वनि मासे कृष्णा पक्षे तिथौ ६ बुधवारे ।

३१५६. प्रति सं० ९ । पत्रसं० २८५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३१५७. प्रति सं० १० । पत्रसं० २२१ । आ० १२ ×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० ५१** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—अन्तिम २ पत्र फट गये है । प्रतिजीर्ण है । सावडा गोत्र वाले श्रावक सुलतान ने प्रतिलिपि की थी ।

३१५८. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १२२ । आ० १० × ५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३१५९. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १२३-२२५ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १७९६ । पूर्ण । वे० सं० ३३७ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री हरिवंश सपूर्ण । लिखितं मुनि धर्मबिमल धर्मोपदेशाय स्वयं वाचनार्थं सीसवाली नगर मध्ये श्री महावीर चैत्ये ठाकुर श्री मानसिंहजी तस्यामात्य सा० श्री सुखरामजी गोत छाबडा चिरजीयात् । संवत् १७९६ वर्षे मिती चैत्र बुदी ७ रविवासरे ।

३१६०. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ३७० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७-६२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

३१६१. प्रति सं० १४ । पत्र सं० २०६ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२-७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—तक्षकपुर मे पं० शिवजीराम टोडा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३१६२. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २२२ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६/१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

३१६३. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २२५ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७/१० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैनपार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३१६४. प्रति सं० १७ । पत्र सं० २४४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६८६ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—नैनवा वासी सगही श्री हरिराज खंडेलवाल ने गढनलपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

३१६५. प्रति सं० १८ । पत्र सं० २७१ । आ० १०¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १७७६ फागुन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—बादशाह फर्रूकसाह के राज्य मे परशुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३१६६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १से१२७ । भाषा—संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वे० सं० १० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

३१६७. प्रति सं० २० । पत्र सं० ३१० । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल स० १८१६ । पूर्ण । वे० स० १६८ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३१६८. प्रतिसं० २१ । पत्रस० ३२३ । आ० ११×५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय—पुराण ।र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३७ । ग्रथाग्रथ ६६६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३१६६. प्रति सं० २२ । पत्रसं० ३१७ । आ० १०¾×४ ¾ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल सं० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८–५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूगरपुर ।

३१७०. प्रतिसं० २३ । पत्र स० २१७ । आ० ११½ × ५इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल १६६२ । पूर्ण । वे० स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

३१७१. प्रति सं० २४ । पत्र स० २६३-२६२ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र०काल × । ले० काल स० १६८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६५/७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष · स० १६८५ वर्षे फागुण सुदी ११ शुक्रवासरे मालवदेशे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे कुंद-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीत्ति तत्पट्टे म० रत्नकीत्ति तत्पट्टे भ० यश.कीर्ति तत्पट्टे भ० गुणचन्द्र तत् भ०जिनचन्द्र तत् भ० सकलचन्द्र तत्पट्टे भ० रत्नचन्द्र तदाम्नाये ब्र० श्री जैसा तत् शिष्य आचार्य जयकीर्ति तत् शिष्य आ० मुनीचन्द्र कर्मक्षयार्थ लिख्यत । वागडदेशे सागवाडा ग्रामे हु बडज्ञातीय बजीयणा गोत्रे सा० गोसल भार्या दमनी । तत् पुत्र सा० चपा भा० कला तत् पुत्र सा० गणेश भार्या गगदे पुत्र आ० मुनीचन्द्र लिखीतं । स १६८५ वर्षे फागुण बुदी ६ सोमे सुजालपुरे पार्श्वनाथ चैत्यालये ब्र० जेसा शिष्य जयकीर्ति शिष्य आ० मुनिचन्द्र केन ब्रह्म भोगीदासाय गुरु भ्रात्रे हरिवंश पुराण स्वहस्तेन लिखित्वा स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ दत्त । रणायर नगरे लिखित । श्री आचार्य भुवनकीर्ति तत् शिष्य ब्र० श्री नारायणदासस्य इद पुस्तक ।

३१७२. प्रति स० २५ । पत्र स० ३६६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १५५८ । अपूर्ण । वेष्टन स० २४७/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—६० से २७६ तक के पत्र नही है ।

प्रशस्ति—संवत् १५५८ वर्षे पौष सुदी २ रवौ श्री मूलसघे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये म० श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे म० श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे ज्ञानभूषण तत्पट्टे श्री विजयकीर्ति गुरूपदेशात् वागवरदेशे नुगामास्थाने राउल श्री उदयसिहजी राज्ये श्री आदिनाथचैत्यालये हु बड ज्ञातीय विरजगोत्रे दोसी भाया भार्या सारू सुत सम्यक्त्वादिद्वादशव्रतप्रतिपालक दोसी भाइया भा० देसति सुत आगमवेत्ता दोसी नेमिदास भार्या टबकू भ्रातृ दो संतोषी भा० सरीयादे भ्रा० दो० देवा भार्या देवलदे तेषा पुत्रा श्रीपाल रामारूडा एतै हरिवंश पुराणं लिखाप्य दत्तं । ब्रह्म रामा पठनार्थं ।

३१७३. प्रति सं० २६ । पत्र स० ४०३ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल स० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन स० १५४/१० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६०१ वर्षे कार्तिक मासे शुक्लपक्षे ११ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री भुवनकीर्नि तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे भ० विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा तत् शिष्य ब्र० श्रीरगा ज्ञानावर्णकर्मक्षयार्थ लक्षित्वा बागडदेशे गुयाजीग्रामे श्री शातिनाथ चैत्यालये शुभ भवति आचार्य श्री पद्मकीर्तिये दत्त हरिवंशाख्य महापुराण ज्ञानावर्ण क्षयार्थ ।।

३१७४. प्रति सं० २७ । पत्र स० २३० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा-सास्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६५३ वर्षे माघ सुदी ७ बुधे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवा तत्पट्टे भुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे ज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्तिस्त भ० शुभचन्द्रदेवास्तत् भ० सुमतिकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० गुणकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री वादिभूषण तादाम्नाये श्री ईलप्रकारे श्री सम्भवनाथ चैत्यालये श्रीसघेन इद हरिवशपुराण लिखावि स्वज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थ ब्रह्म लाडकाय दत्त ।

३१७५. हरिवंश पुराण—खुशालचन्द । पत्र स० २२३ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १७८० । ले० काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—फागी मे स्योबक्स ने प्रतिलिपि की थी ।

३१७६. प्रति सं० २ । पत्रस० २१६ । आ० १२×६ इञ्च । विषय-पुराण । र०काल स० १७८० वैशाख सुदी ३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३५० । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१७७. प्रति सं० ३ । पत्रस० २३६ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-पुराण । र०काल म० १७८० । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१७८. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३१४ । आ० १०½×५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । र०काल सं० १७८० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**· दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३१७९. प्रति सं० ५ । पत्रस० २६६ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र० काल सं० १७८० वैशाख सुदी ३ । लेखन काल स० १८३५ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**--तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—महाराजा विशनसिंह के शासन मे सदासुख गोदीका सांगानेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३१८०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२२ । आ० १३¾×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । **विषय**—पुराण । र०काल सं० १७८० । ले० काल स० १८३१ चैत बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३१८१. प्रति सं० ७ । पत्र स० २३१ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । र० काल स० १७८० । ले० काल सं १८६० श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०६१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३१८२. प्रति सं० ८ । पत्र । स० २४१ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र० काल × । ले०काल स० १८४० । पूर्ण । **वेष्टनस० ५६ । प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

३१८३. प्रति सं० ९ । पत्रस० २७६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० वैशाख सुदी ३ । ले०काल स० १८३६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०३-२०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—संवत् १९१५ में साह हीरालाल जी तत्पुत्र जैकुमार जी अमरचन्द जी ने पुण्य के निमित्त एव कर्मक्षयार्थ टोडा के मन्दिर सांवलाजी (रैरा)के मे चढाया था ।

३१८४. प्रतिसं० १० । पत्र स० २१७ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल स० १८८५ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६/७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—ब्रजभूमि मथुरा के पास मे पटेल साहिब के लश्कर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३१८५. प्रति सं० ११ । पत्रस० २०१ । आ० १३×६इंच । **भाषा**—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १७८० । **ले०काल** स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३१८६. प्रति सं० १२ । पत्रसं० २२३ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४३ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—२२३ से आगे पत्र नही है ।

३१८७. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २४२ । आ० ११½×६½इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० १६ । प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

३१८८. प्रति सं० १४ । पत्र सं० २३१ । भाषा—हिन्दी । **विषय**—पुराण । र० काल स० १७८० वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—संवत् १७९३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे द्वितीया शनौ लिखितोयं ग्रंथ । साधर्मी पंडित सुखलाल चेला श्री सुरेन्द्रकीर्ति का जानो ।

विशेष—कुन्दनलाल तेरापथी ने प्रतिलिपि की थी।

दोहा—

देश ढूंढाड सुहावनो, महावीर संस्थान।
जहां बैठ लेखन कीयौ धर्म ध्यान चित आन।
तीन सिखिर मडीप अति सौभै।
गीरद चहु कोर मन मोहे ॥
वन उपवन सोभत अधिकार।
मानौं स्वर्गपुरी अवतार ॥
दर्शन करन जात्री आवै।
धर्म ध्यान अति प्रीति बढावै ॥
श्री जिनराज चरन सो नेह।
करत सकल सुख पावै तेह ॥
चन्दनपुर अकबर पुर जानि।
मन्दिर ढिग जैसिंह पुर आनि ॥
नदी गम्भीर चौगिरदा मानि।
पडित दो नर है तिस थान ॥
सुखानन्द सोभाचन्द जान।
ता उपदेश लिखौ पुरान ॥
मार्ग सुद दोज सो जान ॥६॥
ता दिन लिख पूरन करौ सो हरवश मोसार।
पढै सुनै जो भाव सौ जो भवि उतरै पार ॥

३१८६. प्रति सं० १५। पत्रसं० २३८। आ० १२$\frac{3}{4}$×६ इञ्च। **ले०काल** स० १८७८ भादवा बुदी ऽऽ। पूर्ण। **वेष्टन सं०** १४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर करौली।

३१९०. प्रतिसं० १६। पत्रस० ३३७। आ० १२$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाष-हिन्दी पद्य। विषय—पुराण। र०काल स० १७८० बैशाख सुदी ३। अपूर्ण। वे० स० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगानी मन्दिर करौली।

३१९१. प्रतिसं० १७। पत्र स० २६७। भाषा—हिन्दी। विषय—पुराण। र० काल स० १७८०। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

३१९२. प्रतिसं० १८। पत्रस० १८५। आ० १२×८$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—पुराण। र० काल स० १७८० बैशाख सुदी ३। ले०काल ×। पूर्ण। **वेष्टनसं०** ५–६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दौसा।

३१९३. प्रतिसं० १९। पत्रसं० १४५। आ० १२×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—पुराण। र० काल सं० १७८०। ले०काल ×। पूर्ण। **वेष्टनसं०** ६३। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

३१६४. प्रतिसं० २० । पत्रसं० ३१५ । आ० ११×५ इन्च । भाषा—हिन्दी विषय—पुराण । र० काल सं० १७८० । ले०काल सं० १८२८ । पूर्ण । **वेष्टनसं० १७१** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३१६५. प्रतिसं० २० (क) । पत्रसं० २४० । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । **विषय**—पुराण । र०काल स० १७८० । ले०कालस० १८६४ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—भालरापाटन मध्ये श्रीशांतिनाथ चैल्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे श्रीकुन्दनाचार्यान्वये ।

३१६६. प्रतिसं० २१ । पत्रस० १६० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल सं० १७८० । **ले०काल ×** । पूर्ण । वेष्टन स० ४२/२५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर मादवा ।

३१६७. प्रतिसं० २२ । पत्रस० २२७ । आ० १०½×५½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल सं १७८० । ले०काल स० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७/२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, मादवा (राज०) ।

३१६८. प्रतिसं० २३ । पत्रसं० २६५ । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल १७८० । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पचायती मन्दिर, डीग ।

विशेष—४-५ पत्तियों का सम्मिश्रण है ।

३१६९. प्रतिसं० २४ । पत्रस० २८६ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य विषय— पुराण । र० काल स० १७८० । ले० काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी चेननदास पुरानी डीग ।

३२००. प्रतिसं० २५ । पत्रस० २३० । आ० १२½×५इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० बैशाख सुदी ३ । **ले०काल** स० १७६२ कार्तिक सुदी .. रविवार । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—ग्र थ श्लोक स० ७५०० । बयाना मे प० लालचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी। श्री खुशाल ने ग्र थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

३२०१. प्रतिसं० २६। पत्रस० १८१ । भाषा—हिन्दी विषय—पुराण । र० काल १७८० बैशाख सुदी २ ।ले०काल स० १८६६ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सुखलाल बुधसिह ने भरतपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

३२०२. प्रतिसं० २७ । पत्रस० ३०३ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र०काल सं०१७८० । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सागरमल्ल ने भरतपुर मे लिखवाया था ।

३२०३. प्रति सं० २८ । पत्रसं० २६४ । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । र०काल स०१७८० । बैशाख सुदी ३ । ले०काल स० १७६२ । पूर्ण । वेष्टनस० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

३२०४. प्रति सं० २९ । पत्र सं० २६२ । ले०काल सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विषय -- काव्य एवं चरित

३२०५. अकलंक चरित्र— × । पत्रसं० ४१ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । **विषय**—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६८२ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

३२०६. अमरुक शतक— × । पत्रस० १-९ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विषय**-काव्य । र० काल × । ले०काल सं० १८२० । वेष्टन सं० ७२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—देवकुमार कृत संस्कृत टीका सहित है ।

३२०७. अंजना चरित्र—भुवनकीर्ति । पत्र सं० २५ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल १७०३ । ले०काल स० १९६० । पूर्ण । वेष्टनस० ७१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२०८. अंजना सुन्दरी चउपई - पुण्यसागर । पत्र सं० ३२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय–काव्य । र०काल स० १६८९ सावरण सुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

अन्तिम भाग—

ते गछ दीपं दीपतउ साच उर मझार ।
वीर जिरणेसर रो जिहा तीरथ अछइ उदार ।।
तासुपाटि अनुक्रम आलस सागर नूर ।
विनयराज कर्मसागरु वाचक दोह सनूर ।।
तासु सीस पुण्यसागरु वाचक भरणं एम ।
अंजनासुन्दर चउपई परणवचते प्रेम ।।
संवत सोल निवासीयं श्रावरण मास रसाल ।
सुदि तिथि पचम निर्मली ऋद्धि वृद्धि मंगल माल ।।
।। सर्वगाथा २४६ ।।

३२०९. प्रति सं० २ । पत्र स० १७ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७२१ कार्तिक सुदी । पूर्ण । वेष्टन स० ७३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मेडतापुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३२१०. अंबड चरित्र— × । पत्र स० ३-५० । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य)। **विषय**–चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

प्र खड चतुर्थ आदेश समाप्त ।।

३२११. आदिनाथ चरित्र— × । पत्र सं॰ ३५ । आ॰ ८$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र॰काल × । ले॰ काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं॰ ८६०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—रचना गुटका के आकार मे है ।

३२१२. आदिनाथ के दस भव— × । पत्रस॰ १० । भाषा–हिन्दी । विषय–जीवन चरित्र । र॰काल × । ले॰काल × । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—पत्र ४ के बाद पद सग्रह है ।

३२१३. उत्तम चरित्र······· । पत्रसं॰ १३ । आ॰ १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—चरित्र । र॰काल × । ले॰काल × पूर्ण । वेष्टनसं॰ १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—श्वेताम्बरनाथ के अनुसार 'धन्ना शालिभद्र' चरित्र दिया हुआ है ।

३२१४. ऋतु संहार—कालिदास ।पत्र ।स॰ २१ । आ॰ १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र॰ काल × । ले॰काल स॰ १८८२ आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स॰ २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

३२१५. करकण्ड चरित्र—मुनि कनकामर । पत्र स॰ ३-७७ । आ॰ १०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । विषय—चरित्र काव्य । र॰ काल × । ले॰ काल × । अपूर्ण । वेष्टनस॰ १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

३२१६. करकण्डुचरित्र—भ॰शुभचन्द्र । पत्रस॰ ५८ । आ॰ ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत ।विषय—चरित्र । र॰काल स॰ १६११ । ले॰काल स॰ १६७० । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४१ । **प्राप्ति स्थान**-दि॰ जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३२१७. प्रति सं॰ २ । पत्रस॰ ६५–१६६ । आ॰ ११×४ इञ्च । ले॰काल सं॰ १५७३ । अपूर्ण । वेष्टनसं॰ १६३/५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १५७३ वर्षे श्री आदिजिनचैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ॰ विद्यानन्दिदेवा तत्पट्टे भ॰ लक्ष्मीचन्ददेवा स्तेषां पुस्तक ।। श्री मल्लिभूषण पुस्तकमिद ।

३२१८. काव्य संग्रह— × । पत्र सं॰ १५ । आ॰ १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र॰ काल × । ले॰ काल स॰ १६५८ सावन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं॰ १८६-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—मेघाभ्युदय, वृन्दावन, चन्द्रदूत एवं केलिकाव्य आदि टीका सहित है ।

३२१९. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय काव्य । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—नवरत्न सम्बन्धी पद्य है ।

३२२०. प्रति सं० ३ । पत्रसं० २ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

३२२१. किरातार्जुनीय—भारवि । पत्र स० १०८ । आ० ८½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२२२. प्रति सं० २ । पत्र स० १०२ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनस० १२८१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२२३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४४ । आ० ११×४½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३२२४. प्रति स० ४ । पत्रस० १३४ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले०काल स० १७६८ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३२२५. प्रति स० ५ । पत्र स० ४४ । आ० १०×४ इच । ले० काल × । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३२२६. प्रति स० ६ । पत्र स० ११२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सामान्य टीका दी हुई है ।

३२२७. प्रति सं० ७ । पत्र स० १४४ । आ० १२½×६ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—मेघकुमार साधु की टीका सहित है ।

३२२८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० । ले० काल × । पूर्ण । (प्रथम सर्ग है ।) वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर हाण्डावालों का डीग ।

३२२९. प्रति सं० ९ । पत्रस० ४३ । आ० ११×५¾ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—धर्ममूर्ति शालिगराम के पठनार्थ द्विज हरिनारायण ने प्रतिलिपि की थी ।

३२३०. प्रति सं० १० । पत्रस० ५० । आ० ९×६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ में लिखा है—संवत् १८६६ मिति पौष बुदी ११ को लिखी गई शिवराम के पठनार्थ।

३२३१. प्रति सं० ११ । पत्र स० १५५ । आ० $१२\frac{१}{२}\times४\frac{१}{२}$ इञ्च । ले० काल स० १७८५ आषाढ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—प्रति व्याख्या सहित है।

३२३२. प्रतिसं० १२ ।। पत्रस० ११४। आ० $८\frac{१}{२}\times४$ इञ्च। ले० काल १७५० ज्येष्ठ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी।

विशेष—लिपि विकृत है—१८ सर्ग तक है।

३२३३. प्रतिसं० १३। पत्रसं० ७६। आ० ६×५ इञ्च। **ले०काल** स० १६०७ चैत सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

विशेष—११ सर्ग तक है। कही २ सस्कृत में शब्दार्थ दिये हुये है।

३२३४. प्रतिसं० १४। पत्र स० १२१। आ० $११\times४\frac{१}{२}$ इच। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३२३५. प्रतिसं० १५। पत्रस० ४६। आ० १०×६ इंच **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

विशेष—११ सर्ग, तक है।

३२३६. प्रतिसं० १६। पत्र स० ३२। आ० $११\frac{१}{२}\times४\frac{१}{२}$ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३२३७. प्रति सं० १७। पत्रस० ×। ले० काल सं० १७१२ भादवा सुदी ३। पूर्ण। वेष्टनसं० २४२-६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—प० भट्टनाथ कृत संस्कृत टीका सहित है

प्रशस्ति—सवत् १७१२ वर्षे भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे तृतीया ''''''लिपि सूक्ष्म है।

३२३८. कुमारपाल प्रबन्ध—हेमचन्द्राचार्य। पत्रस० ८-२४। आ० $१०\frac{१}{४}\times४\frac{३}{४}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। **वेष्टनसं०** १६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

३२३९. कुमार संभव—कालिदास। पत्र स० ६६। आ० $१०\frac{१}{२}\times४$। इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—काव्य। र०काल ×। लेखन काल सं० १७८६। वेष्टन स० २८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर; जयपुर।

विशेष—टौंक नगर में प० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३२४०. प्रति स० २। पत्रस० ३२। आ० $१०\frac{१}{२}\times४$ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन स० २८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

३२४१. प्रति सं० ३। पत्रसं० ४३। आ० $८\frac{३}{४}\times३$ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन सं० २८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

३२४२. **प्रतिसं० ४।** पत्र सं० ७४ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८४० पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टौंक) ।

३२४३. **प्रति सं० ५।** पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन २२४ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टौंक) ।

विशेष—श्री चंपापुरी नगरे वाह्य चैत्यालये पं० वृन्दावनेन लिपि कृतं ।

३२४४. **प्रति सं० ६ ।** पत्र सं० ५३ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—सात सर्ग तक है ।

३२४५. **प्रति सं० ७ ।** पत्र स० ६० । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० १७१६ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—शुक्रवासरे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक जयकीर्ति के शिष्य पंडित गुणदास ने लिखा था ।

३२४६. **प्रति सं० ८ ।** पत्र स० ३८ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवत् १६६६ वर्षे आषाढ बुदी द्वितीया शुक्रे श्री खरतरगच्छे भट्टारक श्री जिनचंद्र सूरिभि· तत् शिष्य सोमकीर्त्ति गणि तत् शिष्य कनकवर्द्धन मुनि तत् शिष्य कमल तिलक पठनार्थ लेखि ।

३२४७. **कुमारसंभव सटीक—मल्लिनाथ सूरि ।** पत्र स० ११४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सातसर्ग तक है ।

३२४८. **प्रति सं० २ ।** पत्रस० ७६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३२४९. **क्षत्रचूडामणि – वादीभसिंह ।** पत्र स० ४६ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३२५०. **खंडप्रशस्ति काव्य**— × । पत्र स० ४ । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९०/२६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३२५१. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १९१/२७० । **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

३२५२. **गजसुकुमाल चरित्र—जिनसूरि ।** पत्र स० २० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल सं० १६९९ वैशाख मुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२५३. गजसिंहकुमार चरित्र—विनयचन्द्रसूरि। पत्रसं० २-३३। ग्रा० ९×४½ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल सं० १७५४। अपूर्ण। वेष्टनसं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है।

अन्तिम पुष्पिका एव प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

इति श्री चित्रकीयगच्छे श्री विनयचन्द्र सूरि विरचिते गजसिंह कुमार चरित्रे केवली देशना पूर्वभाव-स्मृता वर्णन दीक्षा मोक्ष प्राप्तिवर्णनो नाम पचम विश्राम सम्पूर्ण।

स० १७५४ वर्षे आश्विन सुदी ६ शनौ श्री बृहत्खरतरगच्छे पीपल पक्षे श्री खेमडाधिशाखायां वाचक धर्मवाचना धर्म श्री १०८ ज्ञानराजजी तत् शिष्य सीहराजजी तत् विनय पंडित श्री अमरचन्द जी शिष्य रामचन्द्रे नालेखिभद्र भूयात्। श्रीमेदपाटदेशे विजय प्रधान महाराजाधिराज महाराणा श्री जैसिंहजी कुंवरश्री अमरसिंह जी विजय राज्ये बहुदिन श्री पोटलग्रामु चनुर्मास।

३२५४. गुणवर्मा चरित्र—माणिक्यसुन्दर सूरि। पत्रसं० ७४। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल स० १८७४। पूर्ण। वेष्टनसं० ६०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

विशेष—मिरजापुर में प्रति लिखी गई थी।

३२५५. गौतम स्वामी चरित्र—धर्मचन्द्र। पत्रस० ५२। ग्रा० ११½×५ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २। ले०काल सं० १८१७ वैशाख सुदी १३। पूर्ण। वेष्टनस० १०५०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—अजयगढ मे जिनचैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

३२५६. प्रतिसं० २। पत्रस० ५२। ग्रा० ११½×४½ इंच। ले०काल × पूर्ण। वेष्टनसं० १५६४। **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

३२५७. प्रतिसं० ३। पत्र स० ४४। ग्रा० ११ × ५¾ इन्च। ले०काल स० १८४० माह बुदी १। वेष्टनसं० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—सवाई प्रतापसिंह के शासन काल मे श्री बख्तराम के पुत्र सेवाराम स्वयं ने प्रतिलिपि की थी।

३२५८. प्रति सं० ४। पत्र स० ३४। ग्रा० १३¾×४¾ इन्च। ले० काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २। वेष्टन स० १५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रति रचनाकाल के समय ही प्रतिलिपि की हुई थी। प्रतिलिपिकार प० दामोदर थे।

३२५९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५०। ग्रा० १२×३½ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

३२५९. प्रति सं० ६। पत्रसं० ५०। ग्रा० १०×५ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—भगवन्ता तनसुखराय फतेहपुर वालों ने पुरोहित मोतीराम से प्रतिलिपि कराई थी।

३२६०. प्रतिसं० ६। पत्रसं० ५६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १८४२। पूर्ण। वेष्टनसं० ३६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३२६१. घटकर्पर काव्य—घटकर्पर । पत्रसं० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। **वेष्टनसं० ३०६। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३२६२. प्रतिसं० २। पत्रस० ४। आ० १०½×५ इंच । र० काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० ३१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

३२६३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल ×। वेष्टन स० ३११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

३२६४. प्रतिसं० ४। पत्रसं० ५ । आ० १२ × ४½ इञ्च। ले०काल स० ११०४। पूर्ण। वेष्टनसं० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३२६५. चन्दनाचरित्र—भ० शुभचन्द्र। पत्रस० ३०। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १२३७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

३२६६. प्रतिसं० २। पत्रस० ३३। आ० ११×५¾ इच । ले० काल स० १८३२ आषाढ बुदी ११। पूर्ण। वेष्टनसं० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर।

विशेष—जयपुर के लश्कर के मन्दिर मे सुखराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

३२६७. चन्द्रदूत काव्य—विनयप्रभ । पत्र स० १। आ० १०¾ × ५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। ले० काल स० १८२५ आषाढ । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

३२६८. चन्द्रप्रभचरित्र—यशःकीर्ति। पत्र स० १२१। आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

३२६९. चन्द्रप्रभु चरित्र-वीरनंदि। पत्रस० ६७ । आ० १०½ × ५¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत। विषय—काव्य। र० काल सं० १०८२। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—जीर्ण शीर्ण प्रति है।

३२७०. प्रति सं० २। पत्र स० १२२। आ० ११½×५ इंच । ले० काल स० १६७६ भादवा सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ६४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३२७१. प्रति सं० ३। पत्र स० १२। आ० ८×६½ इञ्च। ले० काल ×। **वेष्टनस० ६४३। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लश्कर मन्दिर जयपुर।

केवल प्रथम द्वितीय सर्ग [illegible] प्रकरण है दिया है। प्रथम सर्ग अपूर्ण है।

३२७२. प्रति सं० ४ । पत्र स० १३८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले० काल सं० १८२६ बैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दीर्घ नगर जवाहरगज मे चेतराम खण्डेलवाल सेठी ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३२७३. प्रति सं० ५ । पत्रस० १२३ । आ० १२×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३२७४. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२० । ले० कालसं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है तथा अलग २ अध्याय है ।

३२७५. प्रति सं० ७ । पत्रस० ११६ । ले० काल स० १७२६ भादवा सुदी २ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३६–४१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३२७६. प्रति सं० ८ । पत्र स० ३–२०४ । आ० ११×४ इच । ले०काल स० १६०८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८७/२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

सवत् १६०८ वर्षे आषाढ मासे शुक्ल पक्षे ११ तिथौ रविवासरे सुरत्राण श्री महमूद राज्य प्रवर्तमाने श्री गधार मन्दिरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कु दकु दाचार्यान्वये—

इसके आगे का पत्र नही है ।

३२७७. प्रति सं० ९ । पत्र स० ३–६५ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल स १७२२ आसोज सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टनस० २६७/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच २ मे पत्र चिपके हुए है तथा कुछ पत्र भी नही है । प्रति जीर्ण है ।

प्रशस्ति—स० १७२६ मे कल्याणकीर्ति के शिष्य ब्रह्मचारी संघ जिष्णु ने सागपत्तन में श्री पुरुजिन चैत्यालय मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३२७८. प्रति सं० १० । पत्र स० ८४ । आ० ६$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—प्रशस्ति—मिती बैशाख बुदी ६ मगलवार दिने सवत्१८६६ का शाके १७६४ का साल का । लिखी नगरणा रायसिह का टोडा मे श्री नेमिनाथ चैत्यालये लिखी आचार्य श्रीकीर्तिजी

३२७९. प्रति सं० ११ । पत्रस० ८६ । आ० १२×८$\frac{1}{2}$ इच । ले० काल स० १६४६ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इ दरगढ ।

३२८०. चन्द्रप्रभ चरित्र—सकलकीर्ति । पत्रस० २२–५२ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{3}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३२८१. चन्द्रप्रभ चरित्र—श्रीचन्द । पत्रस० १२६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १७६३ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण वेष्टनसं० २२१–८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डू गरपर ।

३२८२. चन्द्रप्रभ चरित्र—हीरालाल । पत्र स० २३२ । ग्रा० १२½×७७ इञ्च । भाषा—हिन्दी प० । विषय-चरित्र । र० काल स० १६१३ । ले०काल स १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्यारेलाल ने देवीदयाल पण्डित से वडवत नगर में प्रतिलिपि कराई ।

३२८३. चन्द्रप्रभ काव्य भाषा टीका । पत्र स० १३३ । भाषा—हिन्दी । **विषय**—काव्य । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२८४. चन्द्रप्रभ काव्य टीका । पत्र स० ५० । भाषा—हिन्दी विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे०स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

३२८५. चारुदत्त चरित्र—दीक्षित देवदत्त । पत्रस० । १४२ । भाषा—सस्कृत । **विषय**—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १८४७ । पूर्ण । वे. स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—रामप्रसाद कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी ।

३२८६. जम्बूस्वामी चरित (जम्बूसामि चरिउ)—महाकवि वीर । पत्र स० ६६ । **ग्रा० १०×४½** इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—काव्य । र०काल स० १०७६ । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन स० ११३** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३२८७. जम्बूस्वामीचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र स० ६२ । ग्रा० १०¾×४¾ इञ्च । **भाषा**—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । **ले०काल स० १६६६ चैत्र बुदी ५** । पूर्ण । वेप्टन स० **१२६२** । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२८८. प्रति स० २ । पत्र स० ५३ । ग्रा० १०¾ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३३ । **प्राप्ति स्थान** – भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२८९. प्रति सं० ३ । पत्रसं० **११२** । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० **१८०६** । पूर्ण । वेष्टनस० ३४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—उग्रवास मध्ये श्री नथमल घटायितं । खण्डेलवाल लुहाडिया गोत्रे ।

३२९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८६ । ले० काल स० १६८५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

३२९१. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ७६ । ग्रा० ११½×४ इञ्च । ले० काल स० **१७०० माघ बुदी ७** । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२४/५२ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । बीच में कुछ पत्र नहीं हैं । सवत् १७०० मे उदयपुर मे सभवनाथ मदिर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३२९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६६७ । पूर्ण । **वेष्टन सं० १७४** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६६७ वर्षे भादवा सुदी १ दिने श्री वाग्वरदेशे लिखितं पं० कृष्णदासेन ।

३२६३. प्रति सं० ७। पत्रस० ६१। ग्रा० ११×५ इञ्च । **ले०काल** ×। **पूर्ण वेष्टन** स० २५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर।

३२६४. जम्बूस्वामी चरित्र—ब्रह्म जिनदास। पत्र स० ६३। ग्रा० ११×४½ इञ्च। **भाषा**—संस्कृत। विषय चरित। र०काल ×। ले०काल स० १७०६ कार्तिक सुदी ५। वेष्टन सं० ३। **पूर्ण**। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है।

३२६५. प्रतिसं० २। पत्रस० ८४। ग्रा० ११×५ इञ्च। **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन स० १४५०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३२६६. प्रति सं० ३। पत्रस० १२१। ग्रा० ६½ × ४ इञ्च। ले०काल स० १८२८ मगसिर सुदी १४। पूर्ण। वेष्टनस० ४०१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३२६७. प्रतिसं० ४। पत्र स० १०६। ग्रा० ११½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टन सं० २०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

३२६८. प्रति स० ५। पत्रस० ७५। **ले०काल** ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

३२६९. प्रतिसं० ६। पत्र स० ६८। ग्रा० १०½ × ५½ इञ्च। ले० काल सं० १६७०। पूर्ण। वेष्टन स० २६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३३००. प्रतिसं० ७। पत्र स० ६२। ग्रा० ११ × ५ इञ्च। ले० काल स० १६५१ आसोज सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

प्रशस्ति—संवत् १६५१ वर्षे आश्विन सुदी ६ शुक्रवासरे **मगधाक्ष** देशे राजाधिराज श्री मानसिंह राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये।

३३०१. प्रति स० ८। पत्र स० १५४। ग्रा० ८½ × ५ इञ्च। ले०काल सं० १८७४ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के गुरु भ्राता कृष्णचन्द्र ने दौलतिराव महाराज के कटक में लिखा गया।

३३०२. प्रति सं० ९। पत्र स० ६६। ग्रा० १०×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी।

३३०३. प्रतिसं० १०। पत्रस० ११६। ग्रा० १०×५ इञ्च। ले० काल स० १६३२। **पूर्ण**। **वेष्टन** सं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—चम्पावती मे प्रतिलिपि की गयी थी। प्रशस्ति अपूर्ण है।

३३०४. प्रति सं० ११। पत्रस० ८८। ग्रा० १०½ × ५ इञ्च। **ले०काल** ×। **पूर्ण**। **वेष्टन** सं० २०४-८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

३३०५. जम्बूस्वामीचरित्र-पाण्डे जिनदास। पत्र स० ३-४६ । आ० १०½×५½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी (प०) । विषय—चरित्र । र०काल स० १६४२ भादवा बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति अशुद्ध है ।

३३०६. प्रति सं० २ । पत्रस० ६७ । आ० ८ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८८६ । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रतिजीर्ण है । कामा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३३०७. प्रति सं० ३ । पत्रस० १३० । आ० ४½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८२२ मार्गशीर्ष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है । ग्यानीराम ने सवाई जैपुर मे प्रतिलिपि की थी । पत्र १२७ से चौबीसी वीनती विनोदीलाल लालचंद कृत और है ।

३३०८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १२५ । आ० ९ × ५¾ इञ्च । ले०काल स० १९२५ फागुन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८/५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

अन्तिम—

सवन सोलासै तौ मए, वियालीस ता उपरि गए ।
भादो बुदि पाचौ गुरुवार ता दिन कथा कीयो उचार ।।
अकबर पातसाह कउ राज, कीन्ही कथा धर्म कै काजु ।
कोर धर्म निधि पामा साह, टोडर सुत आगरे सनाह ।।
ताकै नाव कथा ईह धरी, मथुरा पासै नित ही करी ।।
रिखवदास अर मोहनदास, रूपमगद् अरु लक्ष्मीदास ।
धर्म बुद्धि तुम्हारे हियो नित्य, राजकरहुँ परिवार सजुत ।।
पढ़ै सुनै जे मन दे कोय, मन बछित फल पावै सोय ।।१।।

मिती फागुन सुदी १ शुक्रवार स० १९२५ को मदा सुख वैद ने पूर्ण नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

३३०९. प्रति सं० ५ । पत्र स० २६ । आ० ११½×८ इञ्च । ले०काल स० १८५४ । अपूर्ण । **वे० सं०** ४६/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

३३१०. प्रतिसं ६ । पत्रस० २५२ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १९२० । पूर्ण । **वेष्टन स०** ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—स० १८४१ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

३३११. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २८ । आ० ११¾×६½ इञ्च । ले०काल स० १९६५ मगसिर सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

३३१२. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ । आ० ११×५½ इंच । ले० काल स० १७४५ **वैशाख सुदी १३** । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ११७ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—साजगंज आगरा मे प्रतिलिपि हुई ।

३३१३. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० २० । ग्रा० १०½ × ७ इञ्च । ले० काल स० १६५५ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६/७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर

३३१४. प्रतिसं० १० । पत्र स० २१ । ले०काल स० १६२६ । ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७/४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३३१५. प्रति सं० ११ । पत्रस० ६२ । ग्रा० ११ × ५¾ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३३१६. प्रतिसं० १२ । पत्रस० २३ । ग्रा० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

३३१७ प्रति सं० १३ । पत्रस० २४ । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्टनसं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

३३१८. प्रति सं० १४ । पत्रस० १८ । ग्रा० १२½ × ६ इंच । ले० काल स० १८०० माघ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)

३३१९. जम्बूस्वामी चरित्र—नाथूराम लमेचू । पत्रस० २८ । ग्रा० ११ × ७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १६८६ अषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—हरदत्तराय ने स० १६६१ कार्तिक सुदी १५ अष्टाहिन का पर चढाया था ।

३३२०. जम्बू स्वामी चरित्र—× । पत्र स० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३३२१. जम्बू स्वामी चरित्र—× । पत्र स० २० । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य प्रभाव । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सवत् १८२६ जेष्ठ बुदी ५ वार सोमे लखीवे माजपुर मध्ये लीखत आगाजा सोना ।

३३२२. जम्बू स्वामी चरित्र—× । पत्र स० ६ । ग्रा० ६ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (ग०) । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १७४८ माह सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

३३२३. जम्बू स्वामी चरित्र— × । पत्र सं० ७ । ग्रा० ११ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६५/८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३३२४. जम्बू स्वामी चरित्र—× । पत्र स० १३४ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच २ मे पत्र नहीं हैं ।

३३२५. जयकुमार चरित्र—ब्र. कामराज। पत्र सं० ६१ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—६१ से आगे के पत्र नही है ।

३३२६. प्रति सं० २ । पत्र स० १३२ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १८१८ पौष सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—पत्र स० ८२ से ६५ व ११२ से १३१ तक नही है ।

भरतपुर नगर मे पाण्डे वखतराम से साह श्री चूढामणि ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३३२७. जसहरचरिउ—पुष्पदंत । पत्र स० ६१ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ४ इ च । भाषा—अपभ्र श । विषय—काव्य र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

३३२८. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६३ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी) ।

३३२९. जसहर चरिउ— × । पत्रस० २६ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल स० १५७८ ग्रासोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टिप्पण सहित है ।

३३३०. जिनदत्त चरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र स० ५३ । ग्रा० १२$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३३३१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ४५ । ग्रा० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३३३२. प्रति सं० ३ । पत्रसं०५४ । ग्रा० ६×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३३३३. प्रति स० ४ । पत्र स० ३६ । ग्रा० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इ च । ले० काल स० १८६२ । पूर्ण । वे० स० २३४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—कोटा के रामपुरा मे श्री उम्मेदसिंह के राज्यकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३३४. प्रति सख्या ५ । पत्रस० ३८ । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—यह पुस्तक सदासुख जी ने जती रामचन्द्र को दी थी ।

३३३५. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६१ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

३३३६. प्रति सं० ७ । पत्र स० ४३ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३३३७. प्रति सं० ८ । पत्रस० ५० । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भगवतीदास ने प्रतिलिपि की तथा नेमिदास ने संशोधित की थी ।

३३३८. प्रति सं० ९ । पत्रस० ३६ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले० काल स० १६१६ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति पूर्ण है । गिरिपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३३३९. जिनदत्त चरित्र—प० लाखू । पत्र स० १६४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र० काल स० १२७५ । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

३३४०. प्रति सं० २ । पत्रस० १००–१५६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बीसपंथी दौसा ।

३३४१. जिनदत्त चरित्र—रत्नभूषण सूरि । पत्रस० २८ । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८८/७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—हासोट नगर मे ग्रंथ रचना हुई थी ।

३३४२. प्रति सं० २ । पत्रस० २३ । ले० काल सं० १८०० । **पूर्ण** । वेष्टन स० ६६/७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३३४३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७/७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मंदिर उदयपुर ।

३३४४. जिनदत्त चरित्र— × । पत्र स० ६२ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १९८६ ज्येष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३३४५. जिनदत्त चरित्र-विश्वभूषण । पत्रस० ७१ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

प्रारम्भ—

श्रीजिन वन्दौ भावसों तोरि मदन को बाण ।
मोह महातम पटल को प्रगट भयो मनु भानु ॥१॥

मध्यम भाग—

वनितासों बातैं कहैं आयो हमारो देस ।
सुभर ग्राम चम्पापुरी बन में कियो प्रवेश ॥

चौपई

दम्पति बन मे पहुंचे जाइ सूर्य ग्रस्त रजनी भई ग्राइ ।
कही प्रिया बनवारि मिटाइ, समनु करी विस्मै सुखपाई ।।३६।।

ग्रन्तिम पाठ—

संवत सत्रहसं ग्रस्तीस, नाम प्रमोदा ब्रह्मावीस,
ग्रगहन वदि पांचै रविवार, ग्रश्लेष ऐन्द्र जोग सुघार ।
यह चरित्र पूर्ण जब भयौ, ग्रति प्रमोद कविता चित ठयो,
यह जिनदत्त चरित्र रसाल, तामैं भासौ कथा विशाल ।
भव्यकजन पढियो चितुलाइ
पठत सुनत सम्यकत्व ढिठाई ।
धर्म विरुद्ध छन्द करि छीन,
ताहि बनायौ पम्यौ परवीन ।
भव्य हेत मै रच्यौ चरित्र, सुनौ भव्य चित दै वृष मित्र ।
याकै सुनत कुमति सब जाइ, सम्यक्दिष्टि सुध होइ भाइ ।।६४।।
याके सुनत पुण्य की वृद्धि, याके सुनत होई गृह रिद्धि ।
यातै सुनौ भव्य चितलाइ, याके सुनत पाप मिट जाइ ।
याहि सुनत सुख सम्पति होई, यातै सुनत रोग नही कोइ ।
याकै सुनत दु ख मिटि जाई, याकै सुनत सुख होई भाइ ।।६६।।
नर नारि मन देकं सुनौ, ताकौ जसु तिलोक मे गनौ ।
यह चरित्र सुनियो मन लाइ, विश्वभूषण मुनि कहत बनाइ ।।

छप्पै

गगा सागर मेर खोट ग्रामापति मगा ।
ब्रह्मा विष्ण महेस तोय निधि गौरी ग्रगा ।
जोलो जिनवर धर्म तारा भुव मडल सोभा ।
जो लौं सिद्धसमूह मुक्ति रामा सू लोभा ।
तो लौं तिष्ठो ग्र थ यह श्री जिनदत्त चरित्र ।
विश्वभूषण भाषा करी सुनियो भविजन मित्त ।।६८।।
।। ६ संधिया दं ।।

३३४६. प्रति सं० २ । पत्र स० ७८ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८२३ चैत बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

विशेष—सोमचन्द भोजीराम ग्रग्रवाल जैन ने करौली मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

३३४७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५२ । ग्रा० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

३३४८. प्रतिसं० ४ । पत्र स. १०४ । ग्रा० ६¾ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १८७४ ग्रगहन बुदी १० । पूर्ण । वे० स० ६५/८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

विशेष—ब्रजलाल ने गुमानीराम से करौली में प्रतिलिपि करवाई थी।

३३४६. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ७१ । ले०काल स० १८०० चैत सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३३५०. प्रति सं० ६ । पत्र स० ८७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३३५१. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ५१ । ग्रा० १३ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६५६ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३/८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

३३५२. जिनदत्त चरित्र भाषा—कमलनयन । पत्र स० ६६ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय - कथा । र०काल स० १६७० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष— ० ७ ६ १

गगन ऋषीश्वर रघ्रफुनि चन्द्रतथा परमान ।
सब मिल कीजे एकठे सवतसर पहिचान ।।

३३५३. जीवन्धर चरित्र— × । पत्र स० १५० । ग्रा०.११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

३३५४. जीवन्धर चरित्र—शुभचन्द्र । पत्र स० ११६ । ग्रा० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल स० १६०७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३३५५. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८३ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३३५६ प्रतिसं० ३ । पत्रस० ७६ । ग्रा० १२ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३३५७. प्रति स० ४ । पत्रस० ६१ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)

प्रशस्ति—सवत् १६१५ वर्षे फालगुन बुदी ८ बुधे श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री विजयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तस्य शिष्य आचार्य श्री विमलकीर्त्तिस्तस्य शिष्य ब्रह्म गोपाल पठनार्थ जीवंधर चरित्र अनेक सीमंत राज सुमेवित चरणारविंद चतुरगसेन्य सकल लक्ष्मी लक्षित राउल ग्रामकरण राजे श्रीमजित प्रसादराजि विराजिते सकलर्द्धिसकुल श्रावकजन सभृत शुद्ध सम्यकत्वादि द्वादशव्रत प्रतिपालक षट् जीवनकाय दयोपलक्षित चातुर्य्य गुणालकृतविग्रह सदासद् गुर्वाज्ञा प्रतिपालन परेणो विराजिते गिरासु गिरपुरे जिन पूजनाया गच्छद् गच्छदिभः बहुभि स्त्रीपुरषै नित्योत्सवे विराजिते निर्दलित कलि लीला विलास श्री आदिनाथ चैत्यालये हुबडान्वये स्वबशमंडण मणिसमान सघवी धमसी तस्य भा० धम्मा तयो.सुत प्रथम जिनयज्ञयी श्रायजनपतिसर्ग चतुर्विधदानंचतुरसाधर्मिक जनदान महोत्सव बशत सतति विहित-पुण्य-परम्परा पविभ्रितःनिजकुलाकाश सूर्यसम संघवी जीवा तस्य भाया जीवादे तयोपुत्र

जगमाल तस्य भातृं स० जयमाल भार्या जयतादे तस्य भगनी पूर्व पुण्यार्पित पूर्णं ललित लक्षण तल्लचना सभतृं गणोभूया पक्ष तिलकोपमा सीलेन सीता समामाश्राविका जयवती द्वितीया भगनी माका निमित्य जीवधर चरित्र शास्त्र लिखाप्यदत्त कर्मक्षयार्थं ।

३३५८. जीवन्धर चरित्र—रइधू । पत्र स० १८५ । आ० ११¾×४¾ इञ्च । **भाषा**—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १६५८ भावा बुदी ७ पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—अकबर के शासनकाल में रोहितगढ दुर्ग मे बालचन्द सिंगल ने मडलाचार्य सहसकीर्ति के लिए पाडे केसर से प्रतिलिपि करवायी थी । प्रशस्ति काफी बडी है ।

३३५९. जीवन्धर चरित्र—दौलतराम कासलीवाल । पत्रस० ६० । आ० १०¾×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १८०५ आषाढ सुदी २ । ले०काल स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टनस० २२० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—स्वय ग्र थकार के हाथ की लिखि हुई मूलप्रति है । इस ग्र थ की रचना उदयपुर धानमढी अग्रवाल जैन मन्दिर मे स १८०५ मे हुई थी । यह ग्र थ अब तक प्राप्त रचनाओ के अतिरिक्त है तथा एक सुन्दर प्रबन्ध काव्य है ।

३३६०. जीवन्धर चरित्र प्रबन्ध—भट्टारक यशःकीर्ति । पत्र स० ३१ । भाषा—हिन्दी । **विषय**—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १८६३ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७, ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—दक्षिणदेश मे मुरमग्राम मे चन्द्रप्रभु चैत्यालय मे हुमडज्ञातीय लघुशाखाइ मे बाई ज्येष्ठी ताराचन्द बेटी श्री गुजरदेशे मुमेई (मु बई) ग्रामे ज्ञानावरणकर्म क्षयार्थ शास्त्रदाना करनाव ।

३३६१. जीवन्धर चरित्र—नथमल विलाला । पत्रस० १०५ । आ० १०½×८½ इच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल स० १८३५ कार्तिक सदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विषय—गोरखराम की धर्मपत्नी जडिया की माता ने वीर स० २४४२ मे बडे मदिर फतेहपुर मे चढ़ाया था ।

३३६२. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४४ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगन बू दी ।

३३६३. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६३ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० १५०** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

३३६४. प्रति सं० ४ । पत्रस० १६१ । आ० ११½×५½ इच । **ले०काल** × । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती करौली ।

विशेष—करौली में बुधलाल ने लिखवाया था ।

३३६५. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ११४ । आ० १२×६½ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०६५-११४** । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

विशेष—तेरापंथी चिमनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३३६६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८७ । आ० ११ × ८½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टन सं०** १३५ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—दौसा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३६७. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १०५ । ले० काल स० १६३२ । पूर्ण ।वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

३३६८. प्रति स० ८ । पत्र स० २१३ । आ० १३½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८६८ भदवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १०/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगानी करौली ।

३३६९. प्रतिसं० ९ । पत्र स० १३७ । आ० १३ × ६ इंच । ले०काल स० १८३९ भादवा बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्तिस्थान** - दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

विशेष—पत्र २ से ४९ तक नही है । नयमल विलाला ने अपने हाथों से हीरापुर मे लिखा ।

३३७०. प्रति सं० १० । पत्रस० १८४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८३९ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष – सवत् अष्टादस सतक गुनतालीस विचार ।
भादो वदी तृतीया दिवस सहसरस्म वर वार ।।
चरित्र सुलिख पूरन कियो हीरापुरी मझार ।
नयमल ने निजकर थकी, धर्म हेतु निरधार ।।

३३७१. प्रति सं० ११ । पत्रस० १३० । ले० काल स० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—गोपालदासजी दीघ (डीग) वालो ने आगरे मे प्रतिलिपि कराई थी ।

३३७२. प्रति सं० १२ । पत्रस० ११-१४६ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । **ले०काल** × । **अपूर्ण** । वेष्टनस० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

३३७३ प्रति सं० १३ । पत्र स० १२७ । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८६७ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष – आलमचन्द के पुत्र खिमानद तथा विजयराम खडेलवाल बनावरी गोत्रीय ने बयाना में प्रतिलिपि की । हीरापुर (हिण्डौन) के जती बसन्त ने बयाना मे प्रतिलिपि की की थी ।

३३७४ प्रति स० १४ । पत्रस० १५२ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले०काल × । **अपूर्ण** । **वेष्टनसं०** १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नही है ।

३३७५. प्रतिस०१५ । पत्रसं० १३५ । आ० १२½ × ७¾ इञ्च । ले० काल १९५६ **चैत्र** बुदी ५ पूर्ण । वेष्टनसं० ४८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन, मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—बद्रीनारायण ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

३३७६. प्रतिस० १६ । पत्रस० ८५ । ले० काल सं० १८९६ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ७८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

३३७७. प्रति सं० १७। पत्रसं० १४६। ग्रा० ८½×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ७। **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

३३७८. प्रति सं० १८। पत्रसं० १११। ग्रा० १३×८ इञ्च। ले०काल १६६२ भादवा बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं० ६४, २०४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

३३७९. प्रति सं० १९। पत्रसं० ११७। ले०कालसं० १९९८ मगसिर बुदी ६। पूर्ण। **वेष्टनसं०** ६५/२०४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

३३८०. प्रति सं० २०। पत्र सं० ६७-१०७। ग्रा० १२×८ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८४।। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैणवा।

३३८१. प्रति सं० २१। पत्रसं० १२०। ग्रा० १३½×६½ इञ्च। ले०काल सं० १६०५। पूर्ण। **वेष्टनसं०** ५७। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा।

३३८२. णायकुमारचरिउ— पुष्पदन्त। पत्रसं० ८२। ग्रा० १०½×४½ इञ्च। भाषा— अपभ्रंश। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल सं० १६२५। अपूर्ण। वेष्टनसं० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

३३८३. प्रतिसं० २। पत्र सं० ६६। ग्रा० १०×६ इञ्च। ले०काल सं० १५६४ फाल्गुण बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष— जिनचन्द्राम्नाये इक्ष्वाकवंशे गोलारान्वये साधु बीरसेन पचमी व्रतो द्यापन लिखायितम्।

३३८४. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ३-४८। ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—ग्रादि अन्त भाग नही है।

३३८५. णेमिचरिउ—महाकवि दामोदर। पत्रसं० ६२। ग्रा० ११×५ इञ्च। भाषा— अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—६२ से ग्रागे पत्र नही है।

३३८६. त्रिषष्ठिशलाका पुरुषचरित्र—हेमचन्द्राचार्य। पत्रसं० १६-११७। भाषा— संस्कृत। विषय— चरित्र। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६६। **प्राप्ति स्थान**— तेरहपथी दि० जैन मन्दिर बसवा।

३३८७. दीपालिका चरित्र— ×। पत्र सं० ४। ग्रा० ६×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। **विषय**—चरित्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय **दि०** जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—मुनिशुभकीर्ति लिखित।

३३८८. दुर्गमबोध सटीक— ×। पत्रसं० ४०। ग्रा० १४×६½ इञ्च। भाषा— संस्कृत। विषय—काव्य। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

३३८९. दुर्घट काव्य × । पत्रसं० ६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ३१४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर, लश्कर, जयपुर ।

३३९०. धन्यकुमार चरित्र-गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३३९१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६३ । आ० ११×४ इंच । ले०काल स० १५९५ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—देवनाम नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे श्री सूर्य सेन के राज्य मे व श्री रावत वैरसल्ल के राज्य में बाकुलीवाल गोत्र वाले सा० फौरात तथा उनके वशजों ने प्रतिलिपि करायी थी ।

३३९२ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५२ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल स० १५९५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७९/३२ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५९५ वर्षे ज्येष्ठसुदी ११ बृहस्पतिवासरे श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये काधावालगोत्रे सा० चोखा द्वार्या चोखसिरि सा० नाथू द्वि. नरह तृतीय गागा । नाथू भार्या नयणश्री द्वि नेमा तृ० भुभ । नाल्हा भार्या नारगदे । गगाभार्या गौरादे एतेषा मध्ये सा० नाथू इद शास्त्र लिखाप्य मडलाचार्य श्री धर्मचन्द्राय दत्त··· यह पुस्तक इन्दरगढ मदिर की है ।

३३९३. प्रतिस० ४ । पत्र स० ४४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १६७६ भादवा सुदी २ वेष्टन स० १२६१ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष– जहागीर के राज्य मे चम्पावती नगर मे प्रतिलिपि हुई । प्रशस्ति विस्तृत है ।

३३९४ प्रतिसं० ५ । पत्रस० ५० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०कालस० १५८२ ज्येष्ठ सुदी १० । **वेष्टनस० १६३** । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष— हस्तनपुर नगर के नेमिजिन चैत्यालय मे श्रुतवीर ने प्रतिलिपि की ।

३३९५. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४१ । आ० ११×५ इंच । ले०काल स० १६०५ माह बुदी ६ । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । तक्षक गढ़ मे सोलकी राजा रामचंद के राज्य में आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई ।

३३९६. धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्ति । पत्र सं ५६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६७३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३३९७. प्रति सं० २ । पत्रस० ५३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०३/४७ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३३९८. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४०४/४८ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३३९९ प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०५/५० । **प्राप्ति स्थान**— सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३४००. प्रति सं० ५ । पत्रस० २-३५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४०६/४९ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

३४०१. प्रति स० ६ । पत्र सं० ७० । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । वेप्टन स० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

३४०२. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ५३ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल स० १८६७ । पूर्ण । वे० स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—बूंदी मे पं० नन्दलाल ने प्रतिलिपि की ।

३४०३. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ४१ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १६६७ पूर्ण । वेप्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—चपावती मे ऋषि श्री जेता जी ने प्रतिलिपि करवायी ।

३४०४. प्रतिसं० ९ । पत्रस० २० । आ० १३×५½ इञ्च । ले० काल स० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

विशेष—वृन्दावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई ।

३४०५. प्रतिसं० १० । पत्र स० ४२ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

३४०६. प्रति स० ११ । पत्र स० ६-४० । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १७४८ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

३४०७. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ३७ । आ०१२×५ इञ्च । ले०काल स० १७९८ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६९ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

विशेष—प० केशरीसिह ने सवाई जयपुर मे लिखा ।

अन्तिम प्रशस्ति—*पातिसाह श्री महमद साह जी महाराजाधिराज श्री सवाई जयसिंह जी का राज में लिखो सागा साहू के देहुरो जी मध्ये प० बालचद जी के शास्त्रमूं उतारो छै जी ।*

३४०८. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ४७ । आ० १०½ × ५ इच । ले०काल स० १८५८ जेष्ठ वदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैनमन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प० शम्भूनाथ ने कोटा मे लिखाया ।

३४०९ प्रतिसं० १४ । पत्रस० ६० । ले० काल स० १७५२ वैसाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—कनवाडा नगर मे प्रतिलिपि हुई ।

३४१०. प्रतिसं० १५ । पत्र स० ३० । आ० ११×५ इच । ले० काल स० १८१२ श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

विशेष—देवपुरी मे प्रतिलिपि हुई ।

३४११. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ४२ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १६३५ पूर्ण । वेष्टन स० १२४-५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति सवत् १६३५ वर्षे आसोज बुदी ४ शनौ श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे **भट्टारक** श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्री जसकीर्त्ति तत् शिष्य मडलाचार्य श्री गुणचंद्र तत् शिष्य आचार्य श्री रत्नचद्र तत् शिष्य ब्रह्म हरिदासाय पठनार्थं ।

३४१२. प्रति सं० १६ । पत्र स० २५ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८७१ । पूर्ण । वे० सं० ४३-२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—लिखी भरतपुर माह मिती जेठ वदी १ वार वीमपतवार सवत् १८७१ ।

३४१३ प्रति सं० १८ । पत्र सं० ४५ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७२८ पूर्ण । वेष्टन स० ४८-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—स० १७२८ वर्षे श्रावण वदी ४ । शनौ रामगढ मध्ये लिखीतं ।

भ० विजय कीर्त्ति की यह पुस्तक है ऐसा लिखा है ।

३४१४. धन्यकुमार चरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र स० २४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १७०२ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३४१५. प्रति सं० २ । पत्रस० २३ । आ० १० × ६ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

३४१६. प्रति सं० ३ । पत्रस० २० । आ० १२ × ५ इञ्च । **ले०काल** स० १५६६ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३४१७. प्रति सं० ४ । पत्र स० २४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १७२६ आसोज बुदी १४ । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—बालकिशन के पुत्र जोसी नाथू ने कोटा मे महावीर चैत्यालय मे प० बिहारी के लिए प्रतिलिपि की ।

३४१८. प्रति सं० ५ । पत्र स० २६ । आ० ६½ × ५ इञ्च । **ले०काल** स० १७८३ माघ बुदी ५ । **वेष्टन** सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—भलायनगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे ब्र० टेकचन्द्र के शिष्य पाण्डे दया ने प्रतिलिपि की ।

३४१९. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४३ । आ० ८ × ४½ इञ्च । **ले० काल** सं० १७२४ मगसिर बुदी ५ । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—हीडौली नगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे श्री आचार्य कनककीर्त्ति के शिष्य प० रायमल्ल ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की ।

३४२०. प्रति स० ७ । पत्रस० ४१ । आ० ६½ × ४½ इंच । **ले० काल सं० १७७१** । पूर्ण । **वेष्टन सं० ५०** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

विशेष—मबावती मे ग्रंथ लिखा गया था । भ० नरेन्द्रकीर्त्ति की आम्नाय में हमीरदे ने ग्रंथ लिखवाया ।

३४२१. प्रति सं० ८। पत्रस० २७ । आ० १०× ४½ इञ्च । ले० काल स० १७०३ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक) जीर्ण ।

विशेष—ब्रह्म मतिसागर ने स्वय अपने हाथो से लिखा ।

३४२२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १८ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल सं० १६६८ **पूर्ण ।** वेष्टन सं० १५८-७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६६८ वर्षे कार्तिक सुदि २ रवौ प्रतापपुरे श्री नेमिनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री वादिभूषण तत्सीष्य आचार्य श्री जयकीर्ति तत्सीष्य ब्र० सवराज पठनार्थ उत्तेश्वर गोत्रे सा० छाछा भार्या भावका तयोपुत्र सा० सतोष तस्य भार्या जयती दि० पुत्र श्री वत तस्य भार्या करमइती एतै स्व ज्ञानावर्णी कर्म्म क्षयार्थ ।

३४२३. धन्यकुमार चरित्र—भ० मल्लिभूषण । पत्रस० २० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३४२४. धन्यकुमार चरित्र— × । पत्रसं० ५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** १७८/५३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

३४२५. धन्यकुमार चरित्र—खुशालचन्द काला । पत्रस० ४० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विपय—चरित्र । र०काल × । **ले०काल** सं० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४२६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ४२ । आ० ११½×८½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४२७. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६१ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मदिर नैणवा ।

विशेष—अतिम पद्य निम्न प्रकार है—

चद कुशाल कहै हित लाय,
जे ज्ञानी समझै निज पाय ।
सुधातम लो लावन आन,
अशुभ कर्म सब ही मिट जात ।

प्रारंभ के तथा बीच २ के कई पत्र नहीं है ।

३४२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५२ । आ० ९½×५ इञ्च । ले० काल स० १९७६ । **पूर्ण ।** वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

३४२९. प्रति सं० ५ । पत्रस० ३५ । आ० १२½×६½ इञ्च । **ले०काल** स० १८९९ । **पूर्ण ।** वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर कोटयो का (नैणवा)

३४३०. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ४७ । आ० ११ × ५ इञ्च । **ले०काल सं०** १९०३ । **पूर्ण ।** वेष्टन सं० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, पचायती दूणी (टोंक) ।

३४३१. प्रति सं० ७ । पत्रस० ३१ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

३४३२. प्रति सं० ८ पत्र स० १६ । आ० १०½×५ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

३४३३. प्रति सं० ९ । पत्र स० ६६ । आ० १०½×५½ इंच । ले० काल सं० १८६२ फागुन सुदी ७ पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—अमीचन्द के लघु भ्राता ग्रावचन्दजी ने राजमहल के चन्द्रप्रभ चैत्यालय में ब्राह्मण सुख-लाल वाम टोडा से प्रतिलिपि करवाई ।

३४३४. प्रति सं० १० । पत्र स० २६ । आ० १४×७½ इंच । ले० काल स० १६०७ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी ।

३४३५. प्रति सं० ११ । पत्र स० ६३ । आ० १०×७ इंच । ले०काल स० १६५५ । वेष्टन सं० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

३४३६. प्रति सं० १२ । पत्र स० ६६ । आ० ६½×४½ इंच । ले० काल स० १८७४ सावन सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—नेमीचन्द्र ने गुमानीराम से करोली में प्रतिलिपि कराई ।

३४३७. प्रति सं० १३ । पत्र स० ४१ । आ० ६½×६ इंच । ले० काल सं० १७०० बैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

विशेष—अवावती नगरी मे प्रतिलिपि हुई ।

३४३८. प्रति सं० १४ । पत्र स० ८५ । आ० ६×४½ इंच । ले० काल सं० १८१६ माघ शीर्ष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

३४३९. प्रतिसं० १५ । पत्र स० ५५ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १८८७ अषाढ सुदी ८ । । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

३४४०. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर डीग ।

विशेष— करौली मे प्रतिलिपि हुई । मन्दिर कामा दरवाजे का ग्रन्थ है ।

३४४१. प्रति सं०१७ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

३४४२. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ४० । आ० ११×८ इंच । ले० काल सं० १६२१ फागुन बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३४४३. प्रतिसं० १९ । पत्र सं० ३५ । आ० १२½×६½इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३४४४. प्रति सं० २० । पत्र स० ५४ । आ० १० ×६ इञ्च । ले० काल सं० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

३४४५. प्रतिसं० २१ । पत्र सं० ३४ । आ० १४×२½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

३४४६. प्रतिसं० २२ । पत्र सं० ६३ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल स० १६०७ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

३४४७. प्रतिसं० २३ । पत्र स० ६६ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर अलवर ।

३४४८. प्रतिसं० २४ । पत्र संख्या ५४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ १०५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मंदिर अलवर ।

३४४९. प्रतिसं० २५ । पत्रस० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५/१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३४५० प्रति स ख्या २६ । पत्र स० ३६ । ले० काल × पूर्ण । वेष्ट स० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३४५१. प्रति सं० २७ । पत्र स० ५२ । लेखक काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन तेरहपंथी मदिर बसवा ।

३४५२ धन्यकुमार चरित्र वचनिका—× । पत्र स० ३४ । आ० १०×६½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३४५३. धन्यकुमार चरित्र भाषा—जोधराज । पत्र स० ३७ । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल स० १८१० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर मादवा (राज०)

३४५४. धन्यकुमार चरित्र भाषा × । पत्र सख्या २६ । आ० ११×६ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १८९४ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

३४५५. धन्यकुमार चरित्र भाषा—× । पत्र सख्या १०८ आ० ७×७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । पूर्ण । ले० काल स० १८९८ । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

३४५६. धर्मदत्त चरित्र—दयासागर सूरि । पत्र स० ६-६७ । आ० ६×५½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मदिर बोरसली कोटा ।

३४५७. धर्मदत्त चरित्र—माणिक्यसुन्दर सूरि । पत्र सं० १० । आ० ११×४ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १६६६ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—माणिक्यसुन्दर सूरि आचार्य मेरुतु ग सूरि के शिष्य थे । लिखित गुणसागर सूरि शिष्य ऋषि नाथू पठनार्थ असराणापुर मध्ये ।

३४५८. **धर्मशर्माभ्युदय—महाकवि हरिचन्द्र** । पत्र संख्या ६६ । आ० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल स० १५१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८६/१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन समवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रतिप्राचीन है । पत्र कैंची से काट दिये गये हैं (ठीक) करने को ।

प्रशस्ति—सवत् १५१४ वर्षे आषाढ सुदी ६ गुरौ दिने धोधाविले घूले श्री चन्द्रप्रभ चल्यालये श्री मूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकीय श्री पद्मनंदिदेवा तत् शिष्य श्री मदन कीर्तिदेवा तत् शिष्य श्री नयणनंदिदेवा तन्निमित्त इंद पुस्तक हुंवडज्ञातीय श्रावकै लिखाप्यदत्तं । समस्त अभीष्ट भवतु । भ० श्री ज्ञानभूषण तत् शिष्य मुनि श्री विशालकीर्ति पठनार्थं । प० पाहूना समर्पितं । भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत् शिष्य ब्र० श्रीपाल पठनार्थ प्रदत्त ।

३४५९ **प्रति सं० २** । पत्र सख्या ११२ । आ० १०×४ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

३४६० **प्रति सं० ३** । पत्र स० ६४ । आ० १०½ ×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—४६ पत्र तक सस्कृत टीका (सक्षिप्त) दी हुई ।

३४६१. **धर्मशर्माभ्युदय टीका—यशःकीर्ति** । पत्रस० १६२ । आ० १३½× ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ११७०** । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन भट्टाकीय मन्दिर अजमेर ।

विशेष—धर्मनाथ तीर्थंकर का जीवन चरित्र वर्णन है ।

३४६२. **प्रति सं० २** । पत्रस० ७४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११७१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४६३. **प्रति सं० ३** । पत्रस० १११ । ले०काल स०१६३७ । सावण सुदी ७ अपूर्ण । **वेष्टनसं० ११७२** । **प्राप्तिस्थान** भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर के पार्श्वजिनालय मे प्रतिलिपि हुई । २१ सर्ग तक की टीका है ।

३४६४. **प्रति सं० ४** । पत्रस० १८८ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४६५. **प्रति स० ५** । पत्रस० १०३ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन आदिनाथ मन्दिर बूंदी ।

विशेष—टीका का नाम सदेहध्वात दीपिका है । १०३ से आगे पत्र नही है ।

३४६६. **नलोदय काव्य—कालिदास** । पत्र सं० ३३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × अपूर्ण । वेष्टन स० २३-२२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिचन्द टोडारायसिंह (टोंक) ।

३४६७. **नलोदय टीका**—× । पत्र सं० १-२३ । आ० ११½ × ५½ भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—टीका महत्वपूर्ण हैं ।

३४६८ नलोदय टीका—रामऋषि पत्र स० ७ । भाषा—सस्कृत विषय—काव्य ।र० काल सं० १६६४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डा-वालो का डोग ।

विशेष—प्रतिम चक्रे राम ऋषि विद्वान् बुद्ध कालात्मक जा सुधी ।
नलोदयीमिया टीका शुद्धा यमक बोधिनी ।

रचना स० । ४६६ वेदागरस चन्द्राख्यो वर्षे मासे तु माधवे । शुक्ल पक्षेतु सप्तम्यां गुरौ पुष्ये तथोड्नि ।

३४६९. नलोदय काव्य टीका-रविदेव । पत्र स० ३७ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाशा-संकृत । विषय—काव्य । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—रामऋषि कृत टीका की टीका है ।

३४७०. प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १७५१ । पूर्ण । वे० स १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—प्रवावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे भ० जगत्कीर्ति की आज्ञानुसार दोदराज ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३४७१. प्रति स० ३ । पत्रस० ३१ । ग्रा० ११½×६ इञ्च । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—इति वृद्ध व्यासात्मज मिश्र रामर्षिदाधीच विरचिताया रविदेव विरचित महाकाव्य नलोदय टीकाया यमकबोधिन्या नलराज ब्रह्म नाम चतुर्थ आश्वास समाप्त ।

३४७२. नागकुमार चरित्र—मल्लिषेणसूरि । पत्र स० २३ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय - चरित्र । र० काल × । ले०काल स० १६३४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३८८/१२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सवत् १६३४ वर्षे फागुन बुदी ११ भोमे श्री शातिनाथ चैत्या-लये श्री मूलकाष्ठासघे नन्दीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये भ० श्री भुवनकीर्ति आचार्य श्री जय-सेन तत् शिष्य मु० कल्याणकीर्ति ब्रह्म श्री वस्ता लिखित ।

सवत् १६८४ वर्षे मार्ग शीर्ष बुदी ५ रवी श्रीशीलचन्द्र तत् शिष्याणी वाई पोहोना तथा ब्रह्म श्री मेघराज तत् शिष्य ब्र० सवजी पठनार्थ इद नागकुमार चरित्र प्रदत ।

३४७३. प्रति सं० २ । पत्र स० ३३ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सुमतिकीर्ति के गुरु भ्राता श्री सकलभूषण के शिष्य श्री नरेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ लिखा गया था ।

३४७४. प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ ग्रा० ११½×५½ इञ्च । र०काल × । ले०काल सं० १६५४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३४७५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २३ । ग्रा० ११½×४¾ इञ्च । ले० काल स० १६६० । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

३४७६. नागकुमार चरित्र—विबुधरत्नाकर। पत्र सं० ३९। आ० ११½ × ६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६/१६। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर, इन्दरगढ (कोटा))

३४७७. प्रति स० २। पत्रसं० ४६। आ० ६½×५ इञ्च। **लेखकाल** स० १८८३। पूर्ण। वेष्टन सं० २४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—गोठडा में चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

३४७८. प्रति सं० ३ पत्र स० ५२। आ० ११×४½ इंच। ले० काल सं० १९६१ फागुण सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर, नैणवा।

विशेष—पं० रत्नाकर ललितकीर्ति के शिष्य थे।

३४७९. प्रति सं० ४। पत्रस० ४७। आ० १३½×५ इञ्च। ले० काल सं० १८७५ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी।

विशेष—ब्राह्मण चिरजी ने उणियारा मे प्रतिलिपि की थी। पं० निहालचन्द ने इसे जैन मन्दिर मे रावराजा भीमसिंहजी के शासन मे चढाया था।

३४८०. नागकुमार चरित्र—नथमल बिलाला। पत्र सं० ८७। आ० १२×५¾ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—चरित्र। र० काल स० १८३७ माह सुदी ५। ले० काल स० १८७८ सावन सुदी ८। पूर्ण। वेस्टन स० १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—नेमिचन्द्र श्रीमाल ने करौली में गुमानीराम से प्रतिलिपि करवाई थी।

३४८१. प्रति सं० २। पत्र सख्या १०६। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल स० १९६१ फाल्गुन सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

३४८२ प्रति स० ३। पत्र स० ४८। आ० ११½×५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५६/६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है।

३४८३. प्रति स० ४। पत्रस० १०७। आ० ११×५½। ले० काल सं० १८७९ सावण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दोसा।

विशेष—मोतीलाल की बहूने प्रतिलिपि कराई।

३४८४. प्रतिसं० ५। पत्रस० ७५। आ० ११½×८ इञ्च ले०काल स० १८७७ द्वि ज्येष्ठ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—जसलाल तेरहपथी ने पन्नालाल साह बसवा वाले से देवगिरि (दौसा) मे प्रतिलिपि करवाई।

३४८५. प्रतिसं० ६। पत्र स० ८०। आ० ११½×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६२/८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बडा बीस पथी दौसा।

३४८६. प्रतिसं० ७। पत्र स० ४९-९६। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडाबीस पंथी दौसा।

विशेष—चिम्मनराम तेरहपंथी ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

३४८७. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ६४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८३६ प्र० जेष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—१५३७ छंद हैं ।

प्रथम जेठ पुनं सुदी सहस्त्ररस्म वर वार ।
ग्रंथ सुलिख पूरन कियो हीरापुरी मझार ।
नथमलतैं निजकर थकी ग्रंथ लिख्यौ घर प्रीत ।
भूलचूक जो यामें लखौ तो सुध कीजो मीत ।।
प्रति ग्रंथकार के हाथ की लिखी हुई है ।

३४८८. **प्रति सं० ९** । पत्र स० ६१ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल सं० १८७७ आषाढ़ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—करौली से गुमानीराम से ग्रथ लिखाकर बयाना के मन्दिर मे विराजमान किया ।

३४८९. **प्रति सं० १०** । पत्रस० ७७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३४९० **प्रतिसं० ११** । पत्र स० ५३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३४९१. **नेमि चरित्र—हेमचन्द्र** । पत्र सं० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—२६ से आगे पत्र नही है । प्रति प्राचीन है । त्रिषष्टि शलाका चरित्र में से है ।

३४९२. **नेमिचन्द्रिका भाषा**— × । पत्र स० २० । ६½×६½ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र० काल स० १८८० ज्येष्ठ सुदी ११ । ले० काल स० १८८६ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर सौगाणी करौली ।

३४९३. **नेमिजिन चरित्र—ब्र. नेमिदत्त** । पत्र स० ६२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ४२७ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४९४. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १७५ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४९५. **नेमिदूत काव्य—महाकवि विक्रम** । पत्र संख्या १३ । आ० १०¾×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । लेखन काल स० १६८९ कार्तिक बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० २५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बून्दी ।

विशेष—इति श्री कवि विक्रम भट्ट विरचितं मेघदूतां तत्पाद समस्यासंयुक्त श्रीमन्नेमिचरिताभिधानां काव्य समाप्तं । सं० १६८९ वर्षे कार्तिकाशित नवम्या ९ आचार्य श्रीमद्रत्नकीर्त्ति तच्छिष्येण लि० विजयहर्षेण ।

पुस्तक प० रतनलाल नेमिचन्द की है ।

३४९६. प्रति स० २। पत्रसं० २४। आ० १२½×७ इन्च। **ले०काल** स० १९८९ आसोज सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है।

३४९७. प्रति सं० ३। पत्रस० १५। आ० ११×५¾। **ले०काल** सं० १६८५ कार्तिक बुदी १। वेष्टन स० १५३। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मं० लश्कर, जयपुर।

३४९८. प्रति सं० ४। पत्र सं० १४। आ० १०½ × ४½ इन्च। **ले०काल** ×। वेष्टन स० १५४। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

३४९९. नेमिनाथ चरित्र— ×। पत्रस० १०६। आ० १०×५ इन्च। भाषा—प्राकृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल। अपूर्ण। वेष्टनसं० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है

३५००. नेमिनाथ चरित्र—×। पत्र स० ६६। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ६१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

३५०१. नेमिनाथ चरित्र—×। पत्र स० १०३। भाषा-सस्कृत। विषय चरित्र। र०काल×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५८७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैनपचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है तथा नेमिनाथ के अतिरिक्त कृष्ण, वसुदेव व जरासिन्ध का भी वर्णन है।

३५०२. नेमिनिर्वाण—वाग्भट्ट। पत्रसं० ८३। आ० ११×५ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। ले०काल स० १८३० वैशाख बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० १०७/५७। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष - रामपुरा मे गुमानीरामजी के पटनार्थ प्रतिलिपि की गई।

३५०३. प्रति सं०२। पत्रस०६६। आ० १२¼×५ इन्च। ले० काल स० १७२६ कार्तिक बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ३०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३५०४. प्रति स० ३। पत्रस० ६-६१। आ० १० × ६ इन्च। ले० काल स० १७६८। अपूर्ण। वेष्टन स० २३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—सवत् १७६८ वर्षे कार्तिक बुदी ८ भूम पुत्रे श्री उदयपुर नगरे महाराणा श्री जगतसिहजी राजवी लिखतद खेतसी स्वपनार्थ।

३५०५. प्रतिसं० ४। पत्र सं० ८६। आ० ९×५½ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५७/४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली।

३५०६. प्रतिसं० ५। पत्रस० १०८। आ० ९¾×४ इंच। ले० काल सं० १७१५। पूर्ण। वेष्टन सं० २७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष - सं० १७१५ मेरुपाट उदयपुर स्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये साहराज राणा राजसिंह विजयराज्ये श्री काष्ठासंघे नन्दीतटगच्छे विजयगणे भट्टारक रामसेन सोमकीर्ति, यशःकीर्ति उदयसेन त्रिभुवन कीर्ति रत्नभूषण, जयकीर्ति, कमलकीर्ति. भुवनकीर्ति, नरेन्द्रकीर्ति।

प० गगादास ने लिखा ।

३५०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७० । ग्रा० १२ × ४ इन्च । ले० काल स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सवत् १६७६ ब्रह्म श्री बालचन्द्रेन लिखित ।

३५०८. प्रति सं० ७ । पत्र स० ५३ । ग्रा० १०३⁄४ × ५३⁄४ इन्च । ले० काल स० १८४२ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

३५०९. नैषध चरित्र टीका— × । पत्र स० २-६ । ग्रा० १३ × ५१⁄२ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, लश्कर, जयपुर ।

३५१०. नैषधीय प्रकाश—नरसिंह पांडे । पत्र सं० ८ । ग्रा० १० × ४१⁄२ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ५६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं अपूर्ण है ।

३५११. पद्मचरित्र— × । पत्र स० ४ । ग्रा० १३ × ४ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४२/७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३५१२. पद्मचरित्र—विनयसमुद्रवाचक गरिण । पत्रसं० ६५ । ग्रा० ११1⁄2 × ४1⁄2 इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३५१३ पद्मनंदिमहाकाव्य टीका—प्रह्लाद । पत्र सं० १३६ । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । लेखन काल स १७६८ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वेप्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष—वसुवा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई ।

इति श्री पद्मनद्याचार्यं विरचिते महाकाव्यटीका सूत्र सपूर्ण । तस्य धनपालस्य शिष्यस्तेन शिष्येण नाम्नाप्रहलादेन श्री पद्मनदिन. सूरे आचार्य कृते काव्यस्य टिप्पणक प्रकट सानद ।

३५१४. परमहंस संबोध चरित्र—नवरंग । पत्रस० १० । ग्रा० १० × ४1⁄2 इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३५१५. परमहंस संबोध चरित्र— × । पत्र स० २६ । ग्रा० १०1⁄2 × ४1⁄2 इच । भाषा—प्राकृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

३५१६. पवनंजय चरित्र—भुवनकीर्त्ति । पत्र सं० २४ । ग्रा० ११ × ४1⁄2 इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

३५१७. पाण्डवचरित्र—ब्र० जिनदास । पत्र स० १-३६ । ग्रा० १० × ४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—ग्र थ का अपर नाम नेमिपुराण भी है ।

३५१८. पाण्डव चरित्र—देवप्रभसूरि । पत्र स० ३६६ । ग्रा० १२ × ४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १४५४ । पूर्ण । वे० सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १४५४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ७ सप्तमी शुक्रवारे श्री पाण्डव चरित वयरमलेन लिखितं मद्याहडीय गच्छे श्री सूरिप्रभसूरीणा योग्य ।

३५१९. पारिजात हरण—पंडिताचार्य नारायण । पत्र सं० १२ । ग्रा० ९½×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेप्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत् विकुलतिलकश्रीमन्नारायण पडिताचार्य विरचिते पारिजात हरणे महाकाव्ये तृतीयं स्वासः । श्री कृष्णार्पणमस्तु ।

इन्द्रगढ मे देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

३५२०. पार्श्वचरित्र—तेजपाल । पत्रस० १०१ । ग्रा० १०×५ इन्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र०काल स० १५१५ कार्तिक बुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैनमन्दिर अजमेर ।

विशेष—अनिम पत्र नही है ।

आदिभाग—

गणवयनवसायरउ वारिज सायरू, गिरुवमवासय मुहणिलउ ।
पणविवि तिथकर कइयण मुहयरु रिसहु रिसीसर कुल तिलउ ।।
देविदेहिग ओवगे मिवयगे कल्याण मालापरो ।
भाग जेण जिउ थिरं अणहिओ कम्मट्ठ दुट्ठा ।
सवोसीय पास जिणदु सघ वरदो वोच्छं चरित्त तहो ।।१।।

तीसरी सधि की समाप्ति निम्न प्रकार है —

इय सिरि पासचरित्त रइय कइ तेजपाल साणद अग्गुमणियं सुहद्दं घूघलि सिवराम पुत्तेण जउणहि माणमहणे पासकुमारे विवड्ढिगेहे णिवकीला वण्णणए तइओ सधी परिसम्मतो ।

३५२१. पार्श्वपुराण—ग्रा० चन्द्रकीर्ति । पत्रस० १२५ । ग्रा० ८ × ६ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १८२६ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३५२२. पार्श्वनाथचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र स० ११६ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान—** भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३५२३. प्रति स० २ । पत्रस० २३ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** १०२४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३५२४. प्रति सं० ३ । पत्रस० १६२ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८४७ **ज्येष्ठ बुदी** ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १५४४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३५२५. प्रति सं० ४ । पत्रस० ६८ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—२३ सर्ग हैं ।

३५२६. प्रति सं० ५ । पत्रस० १५१ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६०६ मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—टोडरमल वाकलीवाल के वशजो ने ग्रथ लिखवाया था कीमत ४।।) रु०

३५२७. प्रति स० ६ । पत्रस० ११२ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** १७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३५२८ प्रति सं० ७ । पत्र स० ७ । आ० १० × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । **वेष्टन स०** ८५, ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३५२९ प्रति स० ८ । पत्रस० ३० से ७० । आ० १० × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टनस० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

३५३०. प्रति स० ९ । पत्र स० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । **अपूर्ण** **वेष्टन स०** ६४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति तृतीय सर्ग तक पूर्ण है ।

३५३१. पार्श्वनाथ चरित्र— × । पत्र स० २७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १६२० ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३५३२. पार्श्वनाथ चरित्र— × । पत्र स० ११२ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**— खडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३५३३. पार्श्वपुराण—भूधरदास । पत्र सख्या १०५ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १७८९ आषाढ सुदी ५ । ले०काल सं० १८६२ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १४७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष— सावूणमध्ये लिपिकृत पं० विरधीचन्द पठनार्थ ।

३५३४. प्रति सं० २ । पत्र स० ८६ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८८४ । **पूर्ण** । **वेष्टन सं०** ३५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३५३५. प्रति सं० ३ । पत्र स० १२६ । ग्रा० ६×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३३ । **प्राप्ति स्थान** - भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३५३६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५७ । ले० काल स० १८८१ वैशाख सुदी १ । **पूर्ण** । **वेष्टन सं० १५४२** । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३५३७. प्रति सं० ५ । पत्रस० ८३ । ग्रा० १२½×५½ इंच । ले० काल स० **१८४६** । पूर्ण । वेष्टन स० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

३५३८. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२६ । ग्रा० ६ × ४½ इञ्च । ले० काल स० **१८४७** **पौष** सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २६० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—नौतनपुर ग्राम मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३५३९. प्रति स० ७ । पत्र स० ६३ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १८६४ । **पूर्ण** । **वेष्टन** स० १६१–७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३५४०. प्रति सं० ८ । पत्र स० १०० । ग्रा० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० **१६३२** चैत सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३५४१. प्रति सं० ९ । पत्रस० ७७ । ग्रा० १२½×५½ इंच । ले० काल स० १८५५ **वैशाख** सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रामबक्स ब्राह्मण ने रूपराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५४२. प्रति सं० १० । पत्र सख्या ६४ । ग्रा० ११×५½ इच । ले०काल स० **१८३६** । पूर्ण । वेष्टन स० ४३/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, भादवा (राज०)।

३५४३. प्रति सं० ११ । पत्र स० ६५ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल सं० **१८२५** । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—नालमोट मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३५४४. प्रति सं० १२ । पत्रस० ६१ । ले० काल स० १८१६ । पूर्ण । जयपुर मे प्रतिलिपि हुई । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

३५४५ प्रति सं० १३ । पत्रस० १०६ । ले०काल स० १८४६ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर बसवा ।

३५४६. प्रति सं० १४ । पत्रस० ७४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर बसवा ।

३५४७. प्रति सं० १५ । पत्र स० ११५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मंदिर बसवा ।

३५४८. प्रति सं० १६ । पत्र स० ७५ । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले० काल सं० १७६४ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६/२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—यती प्रयागदास ने जयपुर मे प्रतिलिपि की ।

३५४९. प्रति सं० १७। पत्रस० ६६। आ० १२½×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३-१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा।

३५५०. प्रति सं० १८। पत्र स० ६५। आ० १२½ × ६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—चिमनलाल तेरहपथी ने प्रतिलिपि की।

३५५१. प्रति स० १९। पत्रस० ६७। आ० ११½ ×५½ इञ्च। ले०काल सं० १९३२। पूर्ण। वेष्टन स० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—नन्दलाल सोनी ने प्रतिलिपि की थी

३५५२. प्रति सं० २०। पत्रस० ७६। आ० १३×½ ७ इञ्च। ले०काल स० १९०० सावरण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं० ३५५। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—लक्ष्मूलाल अजमेरा ने अलवर मे प्रतिलिपि की थी।

३५५३. प्रतिसं० २१। पत्रस० ८६। ले०काल स० १८३७। पूर्ण। वेष्टन स० ३६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

३५५४. प्रति सं० २२। पत्रस० ८५। आ० ६½×५½ इञ्च। ले० काल स० १७९२। पूर्ण।वेष्टनसं० २५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

३५५५ प्रतिसं० २३। पत्र स० २०६। आ० ८¾×४½ इञ्च। ले०काल स **१८६६** **आसोज** सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सोगानी करौली।

३५५६. प्रतिसं० २४। पत्रस०। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल स० १८१४ मगसिर **बुदी** ६। पूर्ण। वेष्टन स० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मन्दिर करौली।

विशेष— हेडराज के पुत्र मगनीराम ने पाडे लालचन्द से करौली मे लिखवाया।

३५५७. प्रति सं० २५। पत्र स० ६४। आ० १०½ × ५½ इञ्च। ले० काल० स० १८४३। पूर्ण। वेष्टन स० ४२। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दीवानजी चेतनदास पुरनी डीग।

३५५८. प्रतिसं० २६। पत्रस० ७३। आ० १२½×६ इञ्च। ले०काल स० १८७०। पूर्ण। वेष्टन स० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—जीवारामजी कासलीवाल ने सूरतरामजी व इनके पुत्र लिछमनसिंह कुम्हेर वालो के पठनार्थ वैर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

३५५९. प्रतिसं० २७। पत्रस० ८७। ले०कालस० १८५५। पूर्ण। वेष्टन म० ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मन्दिर हन्डावलो का डीग।

विशेष—प्रागदास मोहावाले ने इन्दौर मे कासीरावजी के राज्य मे प्रतिलिपि की थी।

३५६०. प्रतिसं० २८। पत्र सं० ६४। ले० काल स० १८७४ आषाढ वदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालों का डीग।

३५६१. प्रति सं० २९। पत्र सं० १०२। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरदबलाना बूंदी।

३५६२. प्रतिसं० ३० । पत्रसं० ७६ । आ० १२½×६½ इंच । ले०काल सं० १८८४ आसोज बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६-७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

३५६३. प्रति सं० ३१ । पत्रसं० ६३ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

३५६४. प्रति सं० ३२ । पत्रसं० ११७ । आ० १० × ५ इंच । ले०काल स० १८८४ पूर्ण । वेष्टनस० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली काटा ।

३५६५. प्रतिसं०३३ । पत्र सं० ८६ । आ० ६½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३५६६. प्रतिसं० ३४ । स० ११४ । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन खडेलवाल मन्दिर अलवर ।

३५६७. प्रति स० ३५ । पत्रस० ६४ । आ० १२½×७ इञ्च । ले० काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४,८० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३५६८. प्रतिसं० ३६ । पत्र स० ६६ । ले० काल सं० १६५८ । पूर्ण । वे० स० ५/१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३५६९. प्रतिसं० ३७ । पत्र स० ६५ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स १८६७ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३५७०. प्रतिसं० ३८ । पत्रस० ५६ । ले०काल स १८४५ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पचयती मन्दिर अलवर ।

३५७१. प्रतिसं० ३९ । पत्र सं० १२६ । ले० काल स० १८१४ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष— पाडेलालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३५७२. प्रतिसं० ४० । पत्रस० ६६ । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर जयपुर ।

३५७३. प्रति स० ४१ । पत्र स० ६१ । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर भरपुर ।

३५७४. प्रति सं० ४२ । पत्रस० ६६ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—स० १८८८ मगसिर सुदी ५ के दिन नथमल खडेलवाल ने इस ग्रंथ को चन्द्रप्रभ के मदिर मे भेंट दिया था ।

३५७५. प्रति सं० ४३ । पत्रस० १०८ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर वैर ।

३५७६. प्रति स० ४४ । पत्र सं० ६६ । आ० १०½×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

३५७७. **प्रति सं० ४५।** पत्र स ८१। ग्रा० ११½×५ इञ्च। ले० काल स० १८३४। पूर्ण। वेष्टन स० १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दीवानजी कामा।

३५७८. **प्रति सं० ४६।** पत्र सं० ८२। ग्रा० १२½×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती दीवानजी कामा।

३५७६. **प्रति सं० ४७।** पत्र सं० २०४। ग्रा० १०·८७ इञ्च। ले० काल स० १६५३ मगसिर बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी बू दी।

विशेष—म ठालाल शर्मा ने प्रतिलिपि की।

३५८०. **प्रति सं० ४८।** पत्र सं० ५३। ग्रा० १२½×६½ इञ्च। ले० काल स० १८६६ पौष सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा।

विशेष—लिखाइत साहाजी श्री भैरूरामजी गगाराल तत्पुत्र चिरजीव कवरजी श्री जैलालजी पठनार्थ। यह ग्र थ १८७३ में तेरापथी के मन्दिर मे चढाया था।

३५८१. **प्रति सं० ४६।** पत्र स० ७२। ग्रा० ११×७ इञ्च। ले० काल स० १६५६। पूर्ण। वेष्टन स० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी।

३५८२. **प्रतिसं० ५०।** पत्रस० ५६। ग्रा० १०¾×५¾ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

३५८३. **प्रति सं० ५१।** पत्र सं० ७७। ग्रा० १२ × ५½ इञ्च। ले० काल स० १८४० मंगसिर सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोठ्यों का नैणवा।

विशेष—नैणवा मे ब्राह्मण सीताराम ने प्रतिलिपि की थी।

३५८४. **प्रति सं० ५२।** पत्र स० ८६। ग्रा० १०×६ इञ्च। ले० काल स० १६१४ श्रावण सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोठ्यो का नैणवा।

विशेष—साह पन्नालाल ग्रजमेरा ने प्रतिलिपि की थी।

३५८५. **प्रतिसं० ५३।** पत्र स० ८६। ग्रा० १२ × ५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६, १८। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

३५८६. **प्रतिसं० ५४।** पत्र स० १५४। ग्रा० १२×५½ इञ्च। ले० काल स० १८८८। पूर्ण। वेष्टन स० ३७/१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष - सर्वसुख गोधा मालपुरा वाले ने दीवान ग्रमरचन्दजी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी।

३५८७. **प्रति सं० ५५।** पत्र स० ४४। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खडेलवालों का, ग्रावा (उणियारा)

विशेष—जन्म कल्याणक तक है।

३५८८. **प्रति स० ५६।** पत्र स० ८५। ग्रा० ६½×६¾ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष - पद्य स० ३३३ है।

सवत् १८७६ चैत्रमासस्य शुक्लपक्ष ९ राजमहल मध्य कटारया मोजीराम चन्द्रप्रभ चैत्यालये स्थापित।

३५८९. प्रति सं० ५७ । पत्रस० ७० । लेखकाल सं० १६५७ सावण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—लिखित प० लखमीचन्द कटरा अहीरों का फिरोजाबाद जिला आगरा ।

३५९०. प्रति स० ५८ । पत्रस० १३३ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । लेखकाल स० १८४६ सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—तक्षकपुर में व्यास सहजराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३५९१. प्रतिसं० ५९ । पत्रस० ९३ । आ० ११ × ५ इञ्च । लेखकाल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

३५९२. प्रतिसं० ६० । पत्र स० १२५ । आ० ११½ × ५¾ इञ्च । लेखकाल × । पूर्ण । **वेष्टन** स० ११०/६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

३५९३. प्रति सं० ६१ । पत्र स० ६१ । आ० ११¾ × ७¾ इंच । ले० काल स० १६०४ फागुन बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०-८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—टोडारायसिंह के श्री सांवला जी के मन्दिर मे जवाहरलाल के बेटा बिसनलाल ने व्रतोद्यापन के उपलक्ष मे भादवा सुदी १४ स० १९४८ को चढाया था ।

३५९४ प्रतिसं० ६२ । पत्र स० ११६ । आ० १०¾ × ४¾ इञ्च । लेखकाल । अपूर्ण । वेष्टन स०१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

३५९५. प्रति स० ६३ । पत्रस० ६८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्तिस्थान** - दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—धनराज गोधा रूपचन्द सुत के पठनार्थ लिखा गया था ।

३५९६. प्रति स० ६४ । पत्र सं० ३-१२० । आ० ९ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८८५ । जीर्ण शीर्ण । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिरते रहपंथी मालपुरा (टोक)

३५९७. प्रतिसं० ६५ । पत्र स० ५२ । आ० १२ × ८ इञ्च । लेखकाल स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

३५९८. प्रतिसं० ६६ । पत्रस० १३५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

३५९९. प्रति सं० ६७ । पत्र स० ५७ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल स० १८९९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—बूंदी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६००. प्रतिसं० ६८ । पत्र स० ८३ । आ० १३ × ५½ इञ्च । लेखकाल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—खडार मे लिक्षमणदास मोजीराम बाकलीवाल का बेटा ने लिख चढायो ।

३६०१. प्रतिसं० ६९ । पत्रस० १०१ । आ० १३ × ५ इञ्च । लेखकाल सं० १८३१ आषाढ बुदी १ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—दासणौती के जीवराज पांड्या ने लिखा था ।

३६०२. **प्रति सं० ७०** । पत्रसं० ७८ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १८५१ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—रणथंभोर में नाथूराम ने स्व पठनार्थ लिखा था ।

३६०३. **प्रति सं० ७१** । पत्र सं० ६७ । आ० १२½×६½ इन्च । ले० स० १६७४ । पूर्ण । वे० स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—इन्दौर मे प० बुद्धसेन इटावा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३६०४. **प्रति सं० ७२** । पत्रस० १४८ । आ० ६×५ इञ्च । ले०काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

३६०५. **प्रति सं० ७३** । पत्रस० ४६ । ले०काल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

३६०६. **पार्श्वपुराण** — × । पत्रस० २५७ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय —पुराण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर । बसवा ।

३६०७. **प्रद्युम्नचरित—महासेनाचार्य** । पत्रस० ६६ । आ० ११×४½ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय —चरित । र०काल × । ले०काल स० १५३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भट्टारक ज्ञान भूषण के पठनार्थ लिखी गयी थी ।

३६०८. **प्रति सं० २** । पत्रसं० १२६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल सं० १५८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—छीतर ने ब्र० रतन को भेंट दिया था ।

प्रशस्ति—संवत् १५८६ वर्षे चैत्र सुदी १२ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री जिनचन्द्र तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द तदाम्नाये खंडेलवालान्वये वाकलीवाले गोत्रे स० केल्हा तद्भार्या कम्मा ·· ·· · ········ ।

३६०९ **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ६४ । आ० १२½×५¾ इंच । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६१०. **प्रद्युम्नचरित्र | सोमकीर्ति** । पत्र स० १७२ । आ० १०½×४½ इंच । **भाषा**—सस्कृत । विषय - चरित्र । र०काल स० १५३१ पौष सुदी १३ बुधवार । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स १५३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३६११. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १५६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स ४५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६१२. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १७३ । आ० १०×४½ इंच । ले०काल सं० १८१० पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२/३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—वप्रास्य पत्तनस्य रामपुर मध्ये श्री नेमिजिन चैत्यालये ग्रासांवर मनस्य व्याघ्रान्वये षटोड गोत्रे सा० श्री ताराचदजी श्री लघु भ्रातृ सा० जगरूपजी कियो कारापित जिन मन्दिर तस्मिन् मदिरे चतुर्मासिक कृत ·····।

३६१३. प्रतिसं० ४। पत्र स० २३७। ग्रा० १२×५ इंच। ले० काल स० १८१० कार्तिक सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ३०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

३६१४ प्रति सं० ५। पत्र स० १६५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर डीग।

३६१५. प्रति सं० ६। पत्र स० १६२। ग्रा० ११ × ४½ इञ्च। र० काल स० १५३१। ले० काल स० १६७५। पूर्ण। वेष्टन स० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

३६१६. प्रति स० ७। पत्र स० २७३। ले० काल स० १६६६। पूर्ण। वेष्टन स० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालों का डीग।

विशेष—ग्रलवर में लिखा गया था।

३६१७. प्रति सं० ८। पत्र स० २२०। ग्रा० ११×५ इच। ले० काल स० १६१४ माह सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १२४। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—घट्याली मे प्रतिलिपि कराई। मुनि श्री हेमकीर्त्ति ने सशोधन किया। प्रशस्ति भी है।

३६१८. प्रति सं० ९। पत्रस० १५५। ग्रा० ९¾×५ इञ्च। ले०काल स० १८२० मगसिर बुदी १२। पूर्ण। वेष्टनस० ३३६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—दबलाना मे प्रतिलिपि हुई।

३६१९. प्रद्युम्नचरित्र—शुभचन्द। पत्र स० ९७। ग्रा० १०½ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नही है।

३६२०. प्रद्युम्न लीला वर्णन—शिवचन्द गणि। पत्र स० २६१। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६०२। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

३६२१. प्रद्युम्नचरित्र— ×। पत्रस० ४२। ग्रा० १०½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३६२२. प्रद्युम्न चरित्र— ×। पत्र स० ७६-२१५। ग्रा० १४×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले०काल स० १६५७। अपूर्ण। वेष्टन स० २०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—प्रारम्भ के ७५ पत्र नहीं है।

३६२३. प्रद्युम्न चरित्र— ×। पत्र सं० १८७। ग्रा० १३ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७९। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी।

३६२४. प्रद्युम्न चरित्र— × । पत्र स० ३३५ । भाषा – हिन्दी । विषय—जीवन चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६२५. प्रद्युम्न चरित्र टीका— × । पत्रसं० ७५ । आ० १४ × ७ इञ्च । **भाषा–हिन्दी (गद्य)** । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३६२६ प्रद्युम्न चरित्र रत्नचंद्र गरिण । पत्रस० १०५ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । **विषय**–चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७–३२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

३६२७. प्रद्युम्न चरित्र वृत्ति–देवसूरि । पत्र स० २ से १०४ । भाषा -सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६२८. प्रद्युम्न चरित—सधारु । पत्रसं० ३२ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल स० १४११ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा जनवरी ६० मे प्रकाशित । इसके सपादक स्व० प० चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ एव डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल एम. ए पी. एच, डी है ।

३६२९. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४० । आ० १२ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८८१ वैशाख बुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष—खोज एव अन्य प्रतियो के आधार पर सही र०काल स० १४११ भादवा सुदी ५ माना गया है जबकि इस प्रति मे र०काल स० १३११ भादवा सुदी ५ दिया है । बीच के कुछ पत्र नही है तथा प्रति जीर्ण है ।

३६३०. प्रद्युम्नचरित्र—मन्नालाल । पत्रस० २५६ । आ० १३ × ७$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १९१६ ज्येष्ठ बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६३१. प्रद्युम्न चरित्र भाषा—ज्वालाप्रसाद बख्तावरसिंह । पत्रस० २११ । आ० ११$\frac{1}{2}$× ८ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १९१४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—ग्रंथ की भाषा प्रथम तो ज्वाला प्रसाद ने की लेकिन स० १९११ में उनका देहान्त होने से चन्दनलाल के पुत्र बख्तावरसिंह ने १९१४ मे इसे पूर्ण किया ।

मूलग्रंथ सोमकीर्ति का है ।

३६३२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३०३ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले०काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर, नैणवा ।

३६३३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २१६ । आ० १२ × ८ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७/१२७ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३६३४. प्रति सं० ४ ।पत्रस० २६३ । ले०काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८/५० **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३६३५. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १६७ । आ० १५ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३६३६. प्रति स० ६ । पत्रसं० १७६ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल स० १६६४ आसौज बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—स वत १६१५ मे पन्नालाल जी ने प्रारम्भ किया एव १६१६ मं बख्तावरसिंह ने पूर्ण किया ऐसा भी लिखा है ।

३६३७. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २८७ । ले०काल स० १६४६ सावरण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

३६३८. प्रद्युम्नचरित्र भाषा—खुशालचन्द । पत्र स० ३० । आ० १२$\frac{3}{4}$ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६३९. प्रद्युम्नचरित्र भाषा— × । पत्र स० ३६४ । आ० १३ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा राज० ।

विशेष—इन्दौर मे प्रतिलिपि हुई ।

३६४०. प्रद्युम्न प्रबंध—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्रसं० २३ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—काव्य । र० काल स० १७२२ चैत सुदी ३ । ले०काल स० १८६५ काती बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६८ ६६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - देवेन्द्रकीर्ति निम्न आम्नाय के भट्टारक थे—

श्री मूलसघे भट्टारक सकलकीर्ति तत् शिष्य भुवन कीर्ति तत्पट्टे ज्ञानभूषण तत्पट्टे विजयकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० सुमति कीर्ति तत्पट्टे गुणकीर्ति तत्पट्टे वादिभूषण तत्पट्टे रामकीर्ति तत्प. पद्मनदि सूरि त प देवेन्द्रकीर्ति··········· ।

आदि अत भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग— **दोहा** ।

सकल भव्य सुखकर सदा नेमि जिनेश्वर राय ।
यदुकुल कमल दिवस पति प्रणमु तेहना पाय ।
जगदबा जय सरस्वती जिनवाणी तुझ काय ।
अविरल वाणी आप जो भू भू ठी मुझमाय ।

अंतिम भाग—

तसपटकमल कमल बहु श्रीय देवेन्द्रकीर्ति गच्छइसरे ।
प्रद्युम्न प्रबध रच्यो तिमि भवियण भण जो निशदोसरे ।।४३।।
सं वत सतर बावीस सुदि चैत्र तीज बुधवार रे ।
माहेश्वरमाहि रचना रची रहि चन्द्रनाथ ग्रह द्वार रे ।।४४।।

सुरथ वासी संघपति क्षेमजी सुरजी दातार रे।
तेह ग्राग्रह थी प्रद्युम्न नो ए प्रबध रच्यो मनोहार रे।।४५।।

दूहा—
मनोहार प्रबंध ए गुंथ्यो करी विवेक।
प्रद्युम्न गुरिए सुत्रे करी स्तवन कुसुम ग्रनेक।।
भवियरण गुरण कठे धरो एह ग्रपर्व हार।
घिरे मगल लक्ष्मी घरणी पुण्य तरणो नहीं पार।।
भरणे भरणावे साभलो लिखे लिखावे एह।
देवेन्द्र कीर्ति गछपति कहे स्वर्ग मुक्ति लहें तेह।।

इति श्री प्रद्युम्न प्रबध संपूर्ण श्री दक्षरण देशे ग्ररणगर ग्रामे पं० खुश्यालेन प्रतिलिपि कारित।
ग्रंथ का ग्रपर नाम प्रद्युम्न प्रबंध भी मिलता है।

३६४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १८१२ फागुरण बुदी । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)।

विशेष—भट्टारक श्री शुभचन्द्र ने रामपुरा में प्रतिलिपि की थी।

३६४२. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ५७ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८०२ पूर्ण। वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

विशेष— ब्रह्म श्री फतेचन्द ने लिखवाया था।

३६४३. प्रबोध चंद्रिका— × । पत्र स० ८-३२ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। **विषय—काव्य** । र०काल × । ले० काल स० १८६४ कार्तिक बुदी २ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३६४४. प्रबोध चंद्रोदय—कृष्ण मिश्र । पत्र स० ३६ । ग्रा० १० × ५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

३६४५. प्रभंजन चरित्र— × । पत्र स० २ से ४२ । ग्रा० ६½×६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। **विषय**—चरित्र। र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण। वेष्टनस० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३६४६. प्रभंजन चरित्र—× । पत्रसं० २१ । ग्रा० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र०काल × । ले० काल स० १६२३ ग्रासौज सुदी १ । **वेष्टनसं० १५०** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—ग्रा० श्री लखमीचन्द्र के शिष्य प० नेमिदास ने स्वय के पठनार्थ लिखवाया।

३६४७. प्रश्न षष्टि शतक काव्य टीका-टीकाकार पुण्य सागर । पत्रस० ७४ । ग्रा० ११ × ४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। टीका स० १६४० । ले०काल स० १७१४ सावन सुदी ७ । पूर्ण। वेष्टनसं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३६४८. प्रीतिकंर चरित्र—सिहनन्दि । पत्रसं० १६ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६४९. प्रीतिकर चरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्रसं० ३० । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६०४ पूर्ण । वेष्टनसं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६५०. प्रतिसं० २ । पत्र स० १ से २५ तक । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६५१. प्रति सं० ३ । पत्रस० २३ । आ० ६ × ६ इञ्च । **ले०काल** स० १६०७ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३६५२. प्रीतिकर चरित्र—जोधराज गोदीका । पत्र सं० २३ । आ० ६½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल सं० १७२१ फागुण सुदी ५ । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६५३. प्रति सं० २ । पत्रस० १० । आ० ११ × ६ इञ्च । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तेरहपथी मालपुरा (टोंक) ।

३६५४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३० । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८८५ । पूर्ण वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक) ।

३६५५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३६५६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ४५ । ले०काल सं १७६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जोधराज मनीराम के पुत्र चादवाल ने भोजपुर मे लिखा ।

३६५७. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३३ । ले०काल स० १६०२ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६५८. प्रति सं० ७ । पत्र स० ६६ । आ० ६½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १७८४ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वे०सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

३६५९. बसतवर्णन—कालिदास । पत्रसं० । १७ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८६६ सावण सुदी १० । पूर्ण । वे. स० १४३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६६०. बारा आरा महाचौपईबंध—ब्र० रूपजी । पत्रसं० १८ । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८/१४३ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकरों के शरीर का प्रमाण, वर्ण आदि को पद्यों में संक्षिप्त वर्णन है ।

आदि अत भाग निम्न प्रकार है :—

प्रारंभ—ओंनमः सिद्धेम्य । बारा आरा चौपई लिख्यते ।

प्रथम वृषभ जिन निस्तवु जे जुग आदि सार ।
भव एकादश ऊजला भव्य उतारण पार ।।१।।
इह प्रथम जिनद दुख दावानल कद
भव्यकज विकाशनचन्द सुधकाधिव धारणाचन्द ।। २ ।।
सरस्वती निवलीनमुं जेह ज्ञान अपार ।
मनवाछु जेहथीफली कविजन लाम सार ।। ३ ।।
श्री मूलसघ सहामणों सरस्वतीगच्छे सार ।
बलात्कर शुभगण भण्यो श्री कुंदकुंद सारि ।। ४ ।।

इस से आगे भ० पद्मनंदि, सकलकीर्ति भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति शुभचन्द्र, सुमतिकीर्ति गुणकीर्ति की परम्परा और उसके वाद

वादीभूषण नेह अनुक्रमि रामकीरतिज सार ।
पद्मनदि निवलीस्तवु मेल रहित सुखकार ।
तेहना शिष्यज उजलो करि बार आर विचार ।
ब्रह्मरूपजी नामिभण्यों सुणज्यो सज्जनसार ।।
समतभद्र देमेज कवि गुणभद्र गुणधार
तेहनागुण मनमांहि धरि कवि बोलु सुखकार ।

अन्तिम—

चध्द्रसूरज ग्रह तारा जाण
रामयशनाक निर्वाण
त्यार लगिये चोपे रहो
आंसांबर कंठिकरी कहो ।।६३ ।।
सतर उत्त बीस दूहा सही
मात्री सत्रग सिचोए कही
ब्रह्मरूपजी कहे प्रमाण
सुणता भणता पचकल्याण ।।

इति महाचौपई बंधे ब्रह्मरूपजी विरचिते अष्टकाल स्वरूप कथानाम तृतीय उल्लास । इति बारा आरा महाचौपई बधे समाप्तः ।

स्वय पठनाय स्वय कृतं स्वयं लिखितं । महिमाणा नगर आदि जिन चैत्यालये कृता । इसमें कुल तीन उल्लास है—

१. कालत्रय स्वरूप
२. चतुर्थ काल वर्णन स्वरूप
३. अष्टकाल स्वरूप वर्णन ।

३६६१. भद्रबाहु चरित्र—रत्ननंदि । पत्रस० २४ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—सकृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६६२. प्रतिसं० २ । पत्र स० २१ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६२७। पूर्ण । वेष्टन स० ११४० । **प्राप्तिस्थान**—भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कही २ कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये है ।

३६६३. प्रति सं० ३ । पत्रस० २६ । आ० १०×६ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

३६६४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २०१ । आ० ६×५½ इञ्च । **ले०काल सं० १८०८** । **पूर्ण** । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वमी बूंदी ।

३२६५. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २४ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल स० १८३२ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

३६६६. प्रतिस० ६ । पत्रस० २५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिरनदूनी (टोक)

३६६७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० कालस० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३६६८. प्रतिसं० ८ । पत्रस० २७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १८१६ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

३६६९ प्रतिसं० ९ । पत्रस० ३१ । आ० ६×४ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

३६७०. प्रति सं० १०। पत्र स० ३३ । आ० १०¾×४½ इञ्च । पूर्ण ले०काल × । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६७१. प्रतिसं० ११ । पत्रस० २-१६ । आ० १२×५½ इच । **ले०काल सं० १७६० माघ** सुदीअ १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७५२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

३६७२. भद्रबाहु चरित्र भाषा—किशनसिंह पाटनी । पत्र स० ४३ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) विषय—चरित्र । र०काल स० १७८३ माघ बुदी ८ । ले०काल स० १८८२ माह सुदी १२ । पूर्ण वेष्टनस० १४८२ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—किशनसिंह पाटनी चौथ का बरवाडा के रहने वाले थे ।

३६७३. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल स० **१६०५ पौष** सुदी ५ । पूर्ण वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

३६७४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४७ । आ० ६½×६½ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३-४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

३६७५. प्रति सं० ४ । पत्रस० २८ । आ० १२½×७ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३६७६. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १९७५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

३६७७. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० १९ । ग्रा० १०$\frac{3}{4}$×५ $\frac{3}{4}$इञ्च । ले० काल स० १९७६ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

३६७८. **प्रति सं० ७** । पत्रस० ३५ । ग्रा० १०×६ इञ्च । ले०काल स० १९५० । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैरणवा ।

३६७९. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० ३२ । ग्रा० ९ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९०० । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैरणवा ।

विशेष—लोचनपुर शुभ ग्राम मे सिंघराज जिनधाम ।
बुद्धि प्रमाण लिख्यो मुझे जपिये श्री जिननाम ।। १ ।।
साइ करो मुझि ऊपरै, दोषहरो भगवान ।
सरण नगण ग्रादिकसहू घ्राऊं श्री जिनवाणि ।
पन्नाग्ररण बनाय के भावै बिनती एह ।
देव धर्म श्रुत साधु को चरण नमूं धरि नेह ।।
सभव है पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८०. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० २८ । ग्रा० १०×७ इञ्च । ले०काल स० १९०२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का नैरणवा ।

विशेष—महाराजाधिराज श्री रामसिहजी का राज मे बूंदी के परगणे नैरणवा मध्ये ।

३६८१. **प्रति स० १०** । पत्र सं० २६ । ग्रा० ११×७ इञ्च । ले०काल स० १९९२ । पूर्ण । वेष्टन १० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बघेरवालो का (उरिणयारा)

३६८२. **प्रति सं० ११** । पत्र स० ४३ । ग्रा० १०×७ इञ्च । ले०काल १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टौंक)

३६८३. **प्रति सं० १२** । पत्र स० ३१ । ग्रा० १२×८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९१/५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (टौंक)

विशेष—भेलीराज ज्ञानि सावडा चम्पावती वाले ने माधोराजपुरा मे प्रतिलिपि कराई थी ।

३६८४. **प्रतिसं० १३** । पत्रस० ४१ । ग्रा० १०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । र०काल स० १७८३ माघ बुदी ८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७९ । । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३६८५. **प्रतिसं० १४** । पत्रस० २० । ग्रा० १२$\frac{1}{2}$ × ७ $\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—५६५ पद्य है ।

३६८६. **प्रतिसं० १५** । पत्र सं० ५७ । ग्रा० ९$\frac{1}{2}$×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८१३ आसोज सुदी १० । । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है-शुभ सवत् १८१३ वर्षे आसोज मासे शुक्लपक्षे दशम्यां रविवासरे खण्डेलवालान्वये गिरधरवाल गोत्रे श्रावकपुनीत श्री उदैरामजी तस्य प्रभावनागकारक श्री चूरामलजी तस्य पुत्र

द्वय ज्येष्ठ पुत्र लीलापती लघुसुत बनारसीदास पौत्रज राधेकृष्ण एतेषां साहजी श्री चूरामणिजी तेनेद शास्त्र लिखापितं ।

दोहा—चूरामनि ने ग्रन्थ यह निजहित हेत विचार ।
लिखवायो भविजन पढो ज्यो पावै सुखसार ।।

३६८७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ८८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—उपगूहन कथा ऋषि मण्डल स्तोत्र, जैन शतक (स० १७६१) बीस तीर्थंकरों की जखड़ी आदि भी है ।

३६८८. प्रतिसं० १७ । पत्रसं० ४१ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० १८५७ असाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—चिमनलाल तेरहपंथी दौसा ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८९. प्रतिसं० १८ । पत्र स० ४४ । ले० काल १८२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा ।

विशेष—कामागढ मे भोलीलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३६९०. प्रतिसं० १९ । पत्र स० ४१ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १८५२ बैशाख सुदी १ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६७-६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—चूहों ने खा रखा है ।

३६९१. भद्रबाहु चरित्र भाषा—चंपाराम । पत्र सं० ४३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय--चरित्र । र०काल स० १८६४ सावन सुदी १५ । ले०काल सं० १९२६ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—ब्राह्मण पुष्करणा फतेराम जात काकला में प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १९२८ भादवा सुदी १४ को अनन्तव्रतोद्यापन के उपलक्ष मे हरिकिसन जी के मन्दिर में चढाया था ।

३६९२. प्रति स० २ । पत्र स० २३ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

३६९३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७१ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १९४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४/५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर, इन्दरगढ (कोटा)

३६९४. प्रति स० ४ । पत्रस० ५९ । आ० ९½×६ इञ्च । ले० काल सं० १९२३ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२/५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

३६९५. प्रति सं० ५ । पत्रस० ३४ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल स० १८६९ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

३६९६. भद्रबाहु चरित्र भाषा— × । पत्र सं० ८५ । आ० ९ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३६९७. भद्रबाहु चरित्र सटीक— × । पत्रसं० ४१ । आ० १२ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय— चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १९७७ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रत्नन्दि कृत संस्कृत की टीका है ।

३६९८. भविष्यदत्त चरित्र—श्रीधर । पत्रसं० ६५ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १६८५ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९९ । **प्राप्ति स्थान** – भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १६१३ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—तक्षकमहादुर्ग मे मंडलाचार्य ललितकीर्तिदेव की आम्नाय मे सा हीरा भौसा ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

३७०१. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ६३ । ले० काल १६४३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४९ ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

प्रशस्ति—

संवत् १६४३ वर्षे श्रावण बुदी ५ तिथौ रविवासरे श्री चन्द्रावतीपुर्या श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० भुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे श्री विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म मेघराज पठनार्थं । सिरोजवास्तव्ये परवार ज्ञातौ चौधरी मांडू तद्भार्या अडा तयो पुत्र धर्मभारधुरंधरावत दानशील पूजादिगुण सयुक्ता चौधरी वाघराज तद्भार्या भानमती ताभ्या ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं श्री भविष्यदत्त पचमी चरित्रे लेखित्वादत्त ॥

३७०२. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ५५ । आ० १०½ × ५½ इंच । ले०काल सं० १७३१ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प० लक्ष्मीदास ने स्व पठनार्थं लिखा था ।

३७०३. प्रति सं० ६ । पत्रसं० २६–४८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं०७०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

३७०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८८ । आ० १०½ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १५५९ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)

प्रशस्ति—संवत् १५५९ वर्षे श्रावण मासे कृष्णपक्षे प्रति पत्तियौ बुध दिने गंधारे मन्दिरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तच्छिष्य मुनि श्री गुणभूषण पठनार्थं बाई शांतिका मदनश्री ज्ञानावरणीय कर्म्मक्षयार्थं लिखापित भविष्यदत्त चरित्र ॥

३७०५. प्रतिसं० ८। पत्रस० ८६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—स० १६५६ काती सुदी ५ गुरुवारे अउडक्ष देशे भेदकी पुर नगरे राजाधिराज मानस्यंघ राज्ये प्रतिलिपि हुई थी ।

३७०६. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ५० । आ० १२½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३७०७. प्रतिसं० १० । पत्र सं० २–६६ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३७०८. प्रति सं० ११ । पत्रस० १–७५ । ले० काल सं० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

३७०९. प्रति सं० १२ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १४८२ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष-- प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

स वत् १४८२ वैशाख सुदी १० श्री योगिनीपुरे साहिजादा मुरादखान राज्य प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्कर गणे आचार्य श्री भावसेन देवास्तत् पट्टे श्री गुणकीर्ति देवास्तत् शिष्य श्री यश कीर्ति देवा उपदेशेन लिखापित ।

३७१०. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ६३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १६३१ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३७११. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १–८८ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—८८ पत्र से आगे के पत्र नही है । प्रति प्राचीन है ।

३७१२. भविष्य दत्त चरित्र— × । पत्रस० १६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

३७१३. भविष्यदत्त चौपई—ब्र० रायमल्ल । पत्रस० ४२ । आ० १०×४½८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल स० १६३३ काती सुदी १४ । ले० काल स० १७६४ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७१४. प्रति सं० २ । पत्र स ५० । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६५५ काती सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल सं० १८४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल, टोक ।

विशेष—महात्मा ज्ञानीराम सवाई जयपुर वाले ने प्रतिलिपि की । लिखायित पं० श्री देवीचन्द जी राजारामस्यंघ के डेरा मध्ये ।

३७१६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४४ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

लेखक प्रशस्ति—मिति भादवा बुदि ११ वर दीतवार सवत् १८३० साके १६६५ प्रवर्तमान भट्टारक श्री १०८ श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति जी प्रवृतमान मूलसंघे बलात्कार गणे सुरसती गच्छे ग्राम्नाये श्री कुंद-कुन्दाचार्ये लिखिनार्थं साहा नाथूराम सोनी जाति सोनी । लिखतुं रूडमल गोधा । श्री ग्रादिनाथ के देहुरा ।

३७१७. प्रति सं० ५ । पत्रस० ५३ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । **वेष्टनस०** ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ईश्वरदास साह ने प्रतिलिपि की ।

३७१८. भुवन भानु केवली चरित्र × । **पत्रस०** ३७ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × . ले०काल स० १७४७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री भवनभानु केवलि महाचारित्रे वैराग्यमय समाप्त ।

सवत् १७४७ वर्षे शाके १६१२ मिति फागुण बुदि १ पडितोत्तम श्री ५ श्री लक्ष्मी विमलगणि शिष्य पडित शिरोमणि पडित श्री ५ श्री रंगविमलगणि शिष्य ग्रमर विमल गणि शिष्य गणि श्री रत्नविमल ग. पठनार्थ भगवतगढ नगरे पातिसाह श्री ग्रौरंगसाह विजैराज नवाब ग्रस्तवागी नामे राजश्री सादुलसिहजी राजे लिखत ।

३७१९. भोजप्रबंध—पं० बल्लाल । पत्रस० ४० । ग्रा० १३ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल स० १७५५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३७२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १८६६ । वे० स० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३७२१. भोज चरित्र—भवानीदास व्यास । पत्रसं० ३५ । ग्रा० १० × ४½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल स० १८२५ । वेष्टन स० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—गढ जोधाण सतोल धाम ग्राई विलाडे ।
पीर पगठकल्याण सुजस गुण गीत गवाडे ।।
भोज चरित तिण सु कह्यो कविपण सुख पावे ।
व्यास भवानीदास कवित्त कर बात सुणावे ।।
मुणी प्रबध चारण प्रते भोजराज बीन कह्यो ।
कल्याणदास भूपाल को धर्म ध्वजाधारी कह्यो ।

इति श्री भोज चरित्र सम्पूर्ण । सवत् १८२५ वर्षे मित कातिग बुदि ४ दिने बावीढारे लिखितं । पचायक विजेयण श्रीमन्नागपुरे श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् ।

३७२२. भोजप्रबंध— × । पत्रस० २० । आ० ६×४ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

३७२३. भोजराजकाव्य— × । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । **विषय**—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३७२४. मणिपति चरित्र—हरिचन्द सूरि । पत्र स० १८ । भाषा—प्राकृत । विषय-चरित । र०काल स० ११७२ । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

३७२५. मयणरेहाचरित्र— × । पत्रस० ७ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १९१६ काती बुदी २ । पूर्ण । **वेष्टनस० ३६** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३७२६. मलयसुन्दरीचरित्र—जयतिलक सूरि । पत्र सं० ६७ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १४९० माघ सुदी १ सोमदिने । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

३७२७. मलयसुंदरी चरित्र भाषा—अखयराम लुहाडिया । पत्रस० १२४ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १७७४ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—प्रारंभ —

रिषभ आदि चौबीस जिन जिन सेया आनन्द ।
नमस्कार त्रिकाल सहित करत होय सुखकंद ।।

३७२८. मल्लिनाथ चरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० २७ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल स० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७२९. प्रति सं० २ । पत्र स० ३८ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २७८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७३०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४१ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३७३१. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४१ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल स० १६२३ आसोज बुदी १४ पूर्ण । वेष्टनस० २५५/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—दीमक लगी हुई है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६२३ वर्षे आश्वनि १४ शुक्रे श्री मूलसघे भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० विजयकीर्ति तत्पट्टे भ० शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्ति स्तदाम्नाये

गिरिपुर वास्तव्य हुबडज्ञातीय का० साइया भार्या सहिजलदे तयौ सुत सम्यक्त्वपानीय प्रक्षालित पापकर्द्दम अङ्गी-कृत द्वादशव्रतनियम। दानदत्ति सर्तपित त्रिविधपात्र विहित श्री शत्रु जयेताजीयेत तु गी प्रमुख तीर्थ पात्र समस्त गुणगणादेय को जावड तद्भार्या शीनेवशील संपन्ना दानपूजापरायणालावण्य जलधेर्वता वचनामृतवापिका श्राविका गोरा नाम्नी द्वितीय भार्या मुहणदे तयो पुत्र को सामलदास एतै. ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ ब्र० कर्ण-सागराय श्री मल्लिनाथ चरित्र सालिखाप्यप्रदत्त।

३७३२. प्रतिसं० ५। पत्रस० ७६। ले०काल १६२२ आषाढ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० २२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर।

विशेष—भरतपुर मे पन्नालाल बढजात्या ने लिखवाई थी।

३७३३. मल्लिनाथ चरित्र—सकलभूषण। पत्र स० ४१। आ० ११½ × ५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल स० १८०८ फाल्गुन बुदी ५। पूर्ण। **वेष्टन स०** १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी (बू दी)।

३७३४. मल्लिनाथ चरित्र भाषा—सेवाराम पाटनी। पत्रस० ५६। आ० ११ × ७½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र०काल स० १८५० भादवा बुदी ५। **ले०काल** स० १८८४। पूर्ण। वेष्टन स० १०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—कामा मे सदासुख रिषभदास ने प्रतिलिपि की थी।

प्रारम्भ—

(नम.) श्री मल्लिनाथाय, कर्ममल्लविनाशने।
अनन्त महिमासाय, जगत्स्वामिनिनिश॥

पद्य—

मल्लिनाथ जिनको सदा वदो मनवचकाय।
मङ्गलकारी जगत मे, भव्य जीवन सुखदाय॥
मङ्गलमय मङ्गलकरण, मल्लिनाथ जिनराज।
आरम्यो मैं ग्रथ यह, सिद्धि करो महाराज॥२॥

हिन्दी गद्य का नमूना—

समस्त कार्य करि जगत गुरु नै ले करि इन्द्र बडी विभूति सु पूर्ववत पुर नै ले आवता हुआ। तहा राज आंगण कै विर्षे बडा सिंहासन पाइ हर्ष करि सर्वाङ्ग भूषित इन्द्र बैठतो हुई।

अन्तिम प्रशस्ति—

रामसुख परभातीमल्ल, जोवराज मगहि बुधिमल्ल।
दीपचन्द गोधो गुणवान इनि चाग्या मिलि कही बखानि॥१॥
मल्लिनाथ चरित्र की भाषा, करो महा इह अति विख्यात।
पढै सुनै साधरमी लोग, उपजै पुण्य पाप क्षय होय॥२॥
तब हमने यह कियो विचार, वचनरूप भाषा अतिसार।
कीजे रचना सुगम अपार, सब जन पढै सुनै सुखकार॥३॥
माथाचन्द को नदन जानि, गोतपाटणी सुखकी खानि।
सेवाराम नाम है सही, भाषा कवि को जानौ इहि॥४॥

अल्प बुद्धि मेरी अति घणी, कवि जन सूं विनती इम भणी ।
भूल चूक जो लेहु सुधार, इहि अरज मेरी अवधार ।।५।।
प्रथम वास द्योसा का जानि, डीगमाहि सुखवास बखानि ।
महाराज रणजीत प्रचड, जाटवंश मे अतिवलवड ।।६।।
प्रजा सबै सुखसो अति बसै, पर दल ईति भीतिनही लसै ।
न्यायवत राजा अति भलौ, जंवतो महि मडल खरो ।
सवत् अष्टादशशत जानि, और पचास अधिक ही मान ।।
भादौमास प्रथम पक्षि माहि, पाचैं सोमवार के माहि ।
तब इह ग्र थ सपूर्ण कियो, कविजन मन वाछित फल लियो ।।

३७३५. प्रति सं० २ । पत्र स० २६ मे ६४ । ले० काल स० १८५० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

३७३६ प्रति सं० ३ । पत्र स० ५६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६ इंच । **ले०काल** स० १८५० भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—स० १८५० भादवा बुदी ५ सोमवार डीग सहर मे लिख्यो सेवाराम पाटनी मयाचन्दजी का ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ ।

प्रति रचनाकाल के समय की ही है । तिथि तथा सवत् एक ही है ।

३७३७. प्रति स० ४ । पत्रस० ८४ । आ० १०×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । **ले०काल** स० १८८३ काती सुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर कामा ।

विशेष—कामा में सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की । महाराजा सवाई बलवतसिंह जी के शासनकाल मे फौजदार नाथूराम के समय मे लिखा गया था ।

३७३८ महावीर सत्तावीस भव चरित्र—× । पत्र स० ३ । आ० ६×३$\frac{1}{2}$ इच । **भाषा**—प्राकृत । विषय-चरित्र । र० काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—जिनवल्लभ कवि कृत सस्कृत टीका सहित है ।

३७३६. महीपालचरित्र—वीरदेव गणि । पत्र स० ६१ । **आ० ११** × ४ इञ्च । भाषा—**प्राकृत** । **विषय—**चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १७३६ । पूर्ण । **वेष्टन** स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

३७४०. महीपाल चरित्र—चारित्रभूषण । पत्र स० ५० । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—**सस्कृत** । विषय—चरित्र । र०काल स० १७३१ श्रावण सुदी २ । ले० काल सं० १८४२ माघ सुदी । पूर्ण । वेष्टन स० १०५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर मे प्रतिलिपि हुई ।

३७४१. प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । आ० १२×५ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७४२. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ४८ । आ० ६¾×४½ इञ्च । ले०काल स० १८६५ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४/८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प० मोतीलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७४३. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० २६ । आ० १२¾ × ६¾ इञ्च । ले०काल स० १७८३ सावण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—उणियारामध्ये रामपुरा के गिरधारी ब्राह्मण ने जती जीवणराम के कहने से लिखाया था ।

३७४४. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ४२ । आ० १०¾ × ६ इञ्च । ले०काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोक ।

३७४५. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ३६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३७४६. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ४० । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १८५५ कार्त्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ठन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—कोटा नगर के रामपुरा शुभ स्थान के प० जिनदास के शिष्य हीरानन्द के पठनार्थ प० लालचन्द ने लिखा था ।

३७४७. **महीपाल चरित्र भाषा—नथमल दोसी** । पत्र स० ६६ । आ० १०×६ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल सं० १६१८ आसोज बुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—दुलीचन्द दोसी के सुपौत्र तथा शिवचन्द के सुपुत्र नथमल ने ग्रथ की **भाषा** की थी ।

३७४८. **प्रति सं० २** । पत्रस० ४३ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—प्रतापगढ नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३७४९. **प्रति सं० ३** । पत्रस० ६१ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवालो का नैणवा ।

३७५०. **प्रति सं० ४** । पत्र स० ६८ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३७५१. **प्रति सं० ५** । पत्र स० १३३ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १६३४ श्रावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३२-१२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

३७५२. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० ४८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

३७५३. **प्रति सं० ७** । पत्र स० ७२ । आ० ९ × ७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३७५४. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० ६१ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल सं० १९४८ आसोज बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

३७५५. प्रति सं० ६ । पत्र स० ५७ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल सं० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूंदी) ।

३७५६. महीभट्ट काव्य—महीभट्ट । पत्रसं० ७२ । आ० ६½×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (बूंदी)

३७५७. मुनिरंग चौपाई—लालचन्द । पत्रसं० ३३ । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

३७५८. मेघदूत—कालिदास । पत्रसं० २६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७५६. प्रति सं० २ पत्र स० १७ । आ० ६×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६०३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७६०. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३७६१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १० । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्द स्वामी, बूंदी ।

३७६२. प्रति सं० ५ । पत्रस०१४ । आ० १२× ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिदन्दन स्वामी, बूंदी ।

३७६३. प्रति स० ६ । पत्र स० १७ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण ।वे० स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

३७६४. प्रति सख्या ७ । पत्रस० ८ । आ० ६× ४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

३७६५. प्रतिसं० ८ । पत्र स० १७ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० १८१६ फागुण बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टनस० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

३७६६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सजीवनी टीका सहित है ।

३७६७. प्रतिसं० १० । पत्र सं० २८ । आ० ८½×४ इञ्च । ले० काल सं० १६८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—संवत् १६८७ वर्षे बैशाख मासे शुक्लपक्षे एकादश्यां तिथौ भौमवासरे बूंदीपुरे चतुर्विशति ज्ञातिना शारंग घरेण लिखितं इदं पुस्तकं ।

३७६८. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १७ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

३७६९. प्रतिसं० १२ पत्रस० ४७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५२० । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है ।

३७७०. प्रति स० १३ । पत्रस० २३ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८४-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं टीका सहित है ।

३७७१. मेघदूत टीका (संजीवनी)—मल्लिनाथ सूरि । पत्र स० २-३३ । आ० ६$\frac{3}{4}$×२$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल स १७४७ । अपूर्ण वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ स० १७०० प्रशस्ति निम्न प्रकार । है—सवत् १७४० वर्षे मगसिर सुदी ६ । दिने लिखित शिष्य लालचन्द केन उदैपुरे ।

३७७२. मृगावती चरित्र—समयसुन्दर । पत्र स० २–४६ । आ० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय - चरित्र र० काल स० १६६८ । ले० काल स० १६८७ फागुण सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३७७३. मृगावती चरित्र × । पत्रस० ३२ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ११५-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

३७७४. यशस्तिलक चम्पू—आ० सोमदेव । पत्र स० ४०४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल स० ८८१ (शक) वि० स० १०१६ । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७७५. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २४४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७७६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २६४ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल स० १८७६ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने खधारि मे प्रतिलिपि की थी ।

३७७७. प्रति सं० ४ । पत्रस० २७० । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

३७७८. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ३६२ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १७१६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—सरवाड नगर मे राजाधिराज श्री सूर्यमल्ल के शासन काल मे आदिनाथ चैत्यालय में श्री कनककीर्ति के शिष्य पं० रायमल्ल ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत मे कठिन शब्दों का अर्थ भी है ।

३७७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २०१-२८२ । आ० ११×५¾ इञ्च । ले० काल स० १४६० वैशाख बुदी १२ ।अपूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—नेमिचन्द्र मुनिना उद्दत हस्ते लिखापित पुस्तकमिद ।

३७८०. यशस्तिलक टिप्पण—× । पत्रस० ३५३ । आ० १२×८ इञ्च ।**भाषा—संस्कृत** । (गद्य) विषय—काव्य र०काल × । ले० काल स १६१२ । अषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७८१. यशस्तिलक चम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्रस० ३० । आ० ११ × ७½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल स० १६०२ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण वेष्टनसं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

विशेष—सवाई मानसिह के शासन काल मे जयपुर के **नेमिनाथ चैत्यालय** मे (लश्कर) विजयचन्द की भार्या ने अष्टाह्निका व्रतोद्यापन मे प० भांभूराम से प्रतिलिपि करवाकर मन्दिर मे भेट किया ।

३७८२. यशोधर चरित्र—पुष्पदंत । पत्र स० ७२ । आ० ११ ×५½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—स० १६२६ मे चादमल सौगानी ने चढाया था ।

३७८३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८६ । आ० ११ ×४इञ्च । ले० काल स० १५६४ । पूर्ण । वेष्टन स०४८८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति - सवत् १५६४ फागुण सुदी १२ । श्री मूल सघे सरस्वती गच्छे कुदकुंदाचार्यान्वये श्री धर्मचन्द्र की आम्नाय मे खण्डेलवाल हर्रासह की भार्या याशस्वती ने आचार्य श्री नेमिचन्द्र को ज्ञानावरणी क्षयार्थ दिया ।

३७८४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १०७ । आ० १२ ×४½ इञ्च । ले०काल स० १५५६ पूर्ण । वेष्टनस० ३८६।३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सवत् १५५६ वर्षे ज्येष्ठ वुदी ८ भौमे श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वय भट्टारक श्री सकलकीर्ति देवातत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति देवातत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण देवा तद्भ्रातृ आ० श्री रत्नकीर्तिदेवा तत् शिष्य ब्रह्मरत्न सागर उपदेशेन श्रीमती गधार मन्दिरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये हूबड ज्ञातीय श्री घना भार्या परोपकारिणी द्वादशानुप्रेक्षा चितन विधायिनी शुद्धशील प्रति पालिनी माजी नाम्नी स्वश्रेय श्रे ०से श्री यशोधर महाराज चरित्र लिखाप्य दत्त ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ शुभ भवतु । कल्याणभूयात् ।

३७८५. यशोधर चरित्र टिप्पणी—प्रभाचन्द्र । पत्रस० १२ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १५७४ । अपूर्ण । वेष्टनस० ४८७ । **प्राप्ति स्थान**—जैन दि० मन्दिर सम्भनाथ उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १५७४ ज्येष्ठ सुदी ३ बुधे श्री हसपत्तने श्री वृषभ चैत्यालये श्री मूलसघे श्री भारती गच्छे श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदि त. प देवेन्द्रकीर्ति त. भ. विद्यानदि तत्पट्टे भ. मल्लिभूषण त. प. भ. लक्ष्मीचन्द्र देवानां शिष्य श्री ज्ञानचन्द्र पठनार्थ श्री सिंहपुरा ज्ञाते श्रेष्ठि माला श्रेष्ठि माधव सुता बार हरखाइ तस्या पुत्र जन्म निमित्त लिखापित्त ।

३७८६. यशोधर चरित्र पीठिका— × । पत्रस० १८ । ग्रा० ११×६ इञ्च । भाषा — संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १६८६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—ग्रग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६८६ श्रावण वदी ११ दिने श्री मूलसंघे भट्टारक श्री पद्मनंदी तद् गुरुभ्रता ईस ब्रह्मचारी लाडयका तत् शिष्य ब्रह्म श्री नागराज ब्रह्म लालजिष्णुना स्वहस्तेन पठनार्थं ।

३७८७. यशोधर चरित्र पीठबंध—प्रभंजनगुरु । पत्रसं० २०२ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६४४ फागुण सुदी ११ सोमे श्री सूरपुरे श्री ग्रादिनाथ चैत्यालये ब्र० कृष्णा पं० रामई ग्रास्यां लिखापित ।

ग्रन्तिम पुष्पिका—इति प्रभंजन गुराश्चरिते (रचिते) यशोघरचरित पीठिका बंधे पचम सर्ग ।

३७८८. यशोधरचरित्र—वादिराज । पत्रस० २-२२ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । **ले०काल** सं० १६६२ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**— ग्रग्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—संवत् १६६२ वर्षे माह सुदी १३ । शनौ श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषण तत् शिष्य पं० वेला पठनार्थं शास्त्रमिद साहराम लखितमिदं । लेखक पाठकयो शुभ भवतु ।

३७८९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २० । ग्रा० ६×४½ इच । ले०काल स० १५८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८५ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८१ वर्षे श्रावण बुदी ७ दिने श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा तदाम्नाये गोलारान्डान्वये पं० श्री घनश्याम तत्पुत्र पडित सुखानन्द निजाध्ययनार्थमिद ग्रंथ लिखापित ।

३७९०. यशोधर चरित्र—वासवसेन । पत्रस० ५१ ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

३७९१. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ७८ । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष – जयपुर नगर मे महाराज सवाई ईश्वरसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई ।

३७९२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १७ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ७६३ । ग्रपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३७९३. यशोधरचरित्र—पद्मनाभकायस्थ। पत्रसं० ६०। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले०काल स० १८६५ पौष सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १५५१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३७९४. प्रति सं० २। पत्रसं० ७६। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

३७९५. प्रति सं० ३। पत्रस० ४१-७०। आ० ११¾×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले०काल स० १८४१ फागुण सुदी ६। वेष्टनस० १४६। अपूर्ण। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

३७९६. यशोधर चरित्र—पद्मराज। पत्र सं० १-४०। आ० १२×४½। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टन स० ७४२। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

३७९७. यशोधर चरित्र—आचार्य पूर्णदेव। पत्रस० १८। आ० ६¾×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल स० १६७५ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनस० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा।

विशेष—पाडे रेखा पठनार्थ जोशी भ्रमरा ने प्रतिलिपि की।

३७९८. प्रति सं० २। पत्रस० २८। आ० ६½×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—लेखत पद्म विमल स्वकीय वाचनार्थ

३७९९. प्रति सं० ३। पत्रसं० १३। आ० १०×५ इंच। वेष्टनसं० १४७। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—कही २ कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये गये हैं।

३८०० यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति। पत्र सं० २८। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६५८। पूर्ण। वेष्टन स० ४८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० संभवनाथ जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६५८ वर्षे चैत्र सुदी ३ भौमे जवाछा नगरे राजधिराज श्री चन्द्रमाणराज्ये श्री आदिनाथ चैत्यालये काष्ठासंघे नन्दीतटगच्छे श्री रामसेनान्वये भ० सोमकीर्ति भ० यशः कीर्ति त० भ० उदयसेन त०भ० त्रिभुवनकीर्ति त०प०भ० रत्नभूषण आचार्य श्री जनसेन श्री जयसेन शिष्य कल्याणकीति तत् शिष्य ब्र० कचराकेन लिख्यते।

३८०१. यशोधर चरित्र—सकलकीर्ति। पत्रसं० २२। आ० ६½ × ४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ११४२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३८०२. प्रति सं० २। पत्रसं० २६। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

३८०३ **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ६१ । आ० १०$\frac{1}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इच । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष —उदयपुर नगरे श्री तपागच्छे ।

३८०४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३८०५. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५५ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष – प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६४१ **वर्षे पौष** सुदी ७ भौमे ईलदुर्ग मध्ये लिखत चेला श्री धर्मदास लिखत गढराय सघ जीवनाथ वास्तव्य हुँबड ज्ञातीय कोठारी विजातत् भार्या रंगा सुत जे संग जीवराज इद पुस्तक ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ मुनि जयभूषण दत्त लिखापित ।

३८०६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ३$\frac{1}{2}$ इञ्च । र० काल × । **ले०काल** स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२-१३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सम्वत् १६७६ वर्षे कार्तिक सुदी ३ लिखित पुस्तक रामपुरा ग्रामे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये श्री ५ सकलचन्द तत्पट्टे गच्छ भार धुर धर भ० श्री पूरनचन्द तत् शिष्य ब्रह्म बूचरा बागड देशे ·· वास्तव्य हूँबड ज्ञातीय सा० भोजा भार्या सिरधा भात मीया अचीडा ब्रह्म बूचरा कर्मक्षयार्थ इद यशोधर पुस्तक लिखापितं । शुभ भवतु ।

३८०७ प्रति सं० ७ । पत्र स० ३८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६ इच । ले० काल पूर्ण । वेष्टन × । स० ५१-४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३८०८. प्रति सं० ८ । पत्र स० ८२ । आ० १३× ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

३८०९. प्रति सं० ९ । पत्रस० १२ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इच । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३/१८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इंदरगढ (कोटा) ।

३८१०. प्रतिसं० १० । पत्रस० २४ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६५० । पूर्ण । वेष्टनस० १०१ १९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३८११. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ६६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८० । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—टोडानगरे श्री श्याम मन्दिर पं० शिवजीरामाय चौ० शिवबक्सेन दत्त ।

३७१२. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ८० । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल स० १८२१ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३८१३. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ३५ । आ० १२¾ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—स० १९३० मे भादवा सुदी १४ को घासीलाल ऋषभलाल बैद ने तेरहपंथियो के मन्दिर मे चढाया ।

३८१४. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० ४४ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल स० १९११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

विशेष—बूंदी में प्रतिलिपि की गई थी ।

३८१५. प्रतिसं० १५ । पत्र सं० ४० । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७५५ द्वि० ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—नूतनपुर में मुनि श्री लाभकीर्त्ति ने अपने शिष्य के पठनार्थ लिखा ।

३८१६. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० ५४ । आ० ६½ × ४ ½ इञ्च । ले०काल स० १८७७ प्र० ज्येष्ठ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

सवत् १८४७ का वर्षे ज्येष्ट कृष्णपक्षे अष्टम्या शुक्रवासरे श्री नेमिनाथ चैत्यालये वृन्द्रावती मध्ये लिखितं प डूंगरसीदासजी तस्य शिष्यत्रय सदासुख, देवीलाल, सिवलाल तेषां मध्ये सदासुखेन लिपि स्वहस्तेन ।

३८१७ यशोधर चरित्र × । पत्र स० २२ । आ० ११×४½ इञ्च भाषा—सस्कृत । विषय-चरित्र । । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३८१८ यशोधर चरित्र— × । पत्रसं० २ से २० आ० ११½×५ इञ्च भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स. १९१५ फागुन बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १५६१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३८१९. यशोधर चरित्र— × । पत्रस० ४१ । आ० ११½ ×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०७१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३८२०. यशोधर चरित्र— × । पत्रस० २० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वष्टन स० ३४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३८२१. यशोधर चरित्र × । पत्रस० १५ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—दबलाणा मे प्रतिलिपि हुई । ३२७ श्लोक है ।

प्रारम्भ—प्रणम्य वृषभ देव लोकलोक प्रकाशकं ।
अतस्तत्वोपदेष्टारं जगत पूज्य निरंजनं ॥
अर्हतस्त्रि जगतपूज्यान्नष्ट धाति चतु प्रणमयि ।
सदा सातान विश्व विघ्न प्रशातप ॥ २ ॥

अन्तिम—यस्याद्यापिच सिष्योय पूर्ण देवोमही तले ।
जगत मन्दिर मुहूर्त कीर्तिस्तभी विराजते ॥ ३२६
सो व्याघ्री सुव्रत सश्वस्तः भव्यानांभक्ति कारिणा ।
यस्य तीर्थे समुत्पन्नयशोधरं महीभुज ॥ ६२३ ॥

३८२२ **यशोधर चरित्र** — × । पत्रसं० १३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १८२६ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३८२३. **यशोधर चरित्र** × । पत्रस० ११० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल सं० १८५५ चैत बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

३८२४. **यशोधर चरित्र—विक्रमसुत देवेन्द्र** । पत्र स० १३५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । र०काल सं० १६८३ । ले० काल सं. १७३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३८-१६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

३८२५. **प्रति सं० २** । पत्रस० १७१ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०-३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डुंगरपुर ।

विशेष—प्रतापगढ में लिखा गया ।

३८२६. **यशोधर** । पत्रस० २२ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल स० १६७० । पूर्ण । वेष्टनसं० १४५-६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियों का डूंगरपुर ।

दोहा—सवत् सोरह से अधिक सत्तर सावन मास ।
सुकलसोम दिन सप्तमी कही कथा मृदुमास ।।
अडिल्ल—अगरवाल वर वस गोसना थान को ।
गोइल गोत प्रसिद्ध चिन्हना ध्वान को ।।
माताचन्दा नाय पिता भैरो भन्यो ।
परिहान (द) कही मनमोहन अगन गुन ना गन्यो ।। ६३ ।।

विशेष—ग्रन्थ में दो चित्र है जो सस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है ।

३८२७. **प्रति सं० २** । पत्रस० ३६ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल स० १६७० सावन सुदी ७ । ले०काल स० १८५२ असाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२। २५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३८२८. **प्रति सं० ३** । पत्र स० २५ । आ० १२×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६।२० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३८२९. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ४२ । ले०काल स० १६४३ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७। १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

३८३०. **प्रति सं० ५** । पत्र स० ३४ । ले० काल स० २६११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३८३१. **प्रति सं० ६** । पत्रस० ४६ । ले०काल स० १६२६ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६/१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मदिर अलवर ।

३८३२. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० ४२ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७६५ असाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बयाना ।

विशेष—चूडामणि के वश मे होने वाले सा. मुकुटमणि ने शास्त्र लिखवाया ।

३८३३. प्रति सं० ८ । पत्र स० २२ । ले०काल स० १८६७ चैत सुदी ५ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बयाना ।

३८३४. प्रतिसं० ९ । पत्र स० ४५ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल सं० १८१० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वैर ।

३८३५. प्रति स० १० । पत्रस० ४६ । ले०काल स० १८२० पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बसवा ।

३८३६. यशोधर चरित्र भाषा—खुशालचन्द काला । पत्र सं० ६१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३८३७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५१ । आ० १२×८ इञ्च । ले० काल १९६० । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर नैणवा ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि कराई थी ।

३८३८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ७३ । आ० ९× ४$\frac{1}{2}$इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—७३ से आगे के पत्र नही है ।

३८३९. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ८३ । आ० ९×४$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल × । अपूर्ण ।वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैणवा ।

३८४०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ४६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का नैणवा ।

३८४१. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८४ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

३८४२. प्रति सं० ७ । पत्रसं० स० ३९ । आ० १३× ५ इञ्च । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टनस० ११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

३८४३. पत्रस० ५८ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १९७६ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ४३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

३८४४. प्रतिसं० ९ । पत्र स० ४९ । आ० १०$\frac{1}{2}$×८ । इञ्च । ले० काल स० १९२५ फागुन सुदी ५ । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक) ।

३८४५. प्रति स० १० । पत्रस० ७३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १९४५ । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

३८४६. प्रति सं० ११ । पत्रस० ४५ । ले०काल स० १८०० वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ५७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३८४७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५५ । आ० १०½×५½ इंच । ले० काल स०१८१६ । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

३८४८. प्रति स० १३ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १८१२ सावन सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—स्वामी सुन्दर सागर के व्रतोद्यापन पर पाण्डे तुलाराम के शिष्य पाण्डे माकचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३८४९. प्रति सं० १४ । पत्र स० ६६ । आ० १०½ × ५½ इन्च । ले० काल स० १८१७ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

३८५०. यशोधर चरित्र भाषा—साह लोहट । पत्र स० २-७६ । आ० ८½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-चरित्र । र०काल स० १७२१ । ले०काल स० १७५६ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष-मुनि शिवबिमल ने इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की थी । कवि ने बूदी मे ग्रन्थ रचना की थी । इसमे १३६६ पद्य है ।

३८५१. यशोधर चरित्र भाषा— × । पत्रस० ३६ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा--हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ (क) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

३८५२. यशोधर चरित्र भाषा— × । पत्र स० १०-४५ । आ० ६ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी प० । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

३८५३. यशोधर चौपई— × । पत्रस० ६२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—गुटका आकार है ।

३८५४. रघुवंश—कालिदास । पत्रस० १०८ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४७६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३८५५. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १०६ । आ० ११½×४½ इच । ले०काल स० १७२७ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७० । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३८५६. प्रति सं० ३ । पत्र स० २२ से १०४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३८५७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १८३··· । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६-४६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति- सवत् १८३····वर्षे मास वैशाख वदी ३ गुरुवासरे देवगढ नगरे मल्लिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री अमरचन्द्र तत्पट्टे भ०

श्री हर्षचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० अमरचन्द्र तत्पट्टे भट्टारक श्री रतनचन्द तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ देवचद्र जी तत् शिष्य ब्र. फतेचन्द जी रघुवंश काव्य लिखापित ।

३८५८. प्रति स० ५ । पत्र स० ६० । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १७९९ अगहन सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—लण्हरा नगर में प्रतिलिपि हुई ।

३८५९. प्रति स० ६ । पत्रस० १९ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)

३८६०. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २–२७२ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६७ २२० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—प्रति प्राचीन है लगभग स० १६०० की प्रतीत होती है ।

३८६१. प्रति स० ८ । पत्रस० ११३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल स० १८५१ । आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—इन्द्रगढ़ मध्ये महाराजा श्री सन्मतिसिंह जी विजयराज्ये लिपिकृत ।

३८६२. प्रति स० ९ । पत्रस० ६१ । ले०काल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी) ।

३८६३. प्रति स० १० । पत्र स० ३८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३४० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

३८६४. प्रति सं० ११ । पत्र स० ३० । अ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

३८६५. प्रति सं० १२ । पत्रस० १४ आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ (?) । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—द्वितीय सर्ग तक है ।

३८६६ प्रति सं० १३ । पत्रस० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९९ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष —द्वितीय सर्ग तक है ।

३८६७ प्रति सं० १४ । पत्रस० १२५ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । वेष्टनस० ६२८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष— प्रति प्राचीन है ।

३८६८. प्रति सं० १५ । पत्र स० १४२ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

३८६९. प्रति सं० १६ । पत्रस० ४-१३ । लेखन काल सं० १७१५ अपूर्ण । वेष्टन सं० २२७ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—प्रारंभ के ३ पत्र नही हैं ।

३८७०. प्रति सं० १७। पत्र स० ७२। आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)।

३८७१. प्रति सं० १८। पत्र स० १६०। ले० काल स० १७६० फागुण सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

विशेष—रणछोडपुरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

३८७२. प्रति सं० १९। पत्र स० २१। लेखन काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डा वालो का डीग।

३८७३. प्रतिसं० २०। पत्र सं० २२। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

विशेष—मल्लिनाथ कृत सस्कृत टीका सहित केवल ८ वा अध्याय है।

३८७४. प्रति सं० २१। पत्र स० २६। आ० १० × ६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

विशेष—४ सर्ग तक है।

३८७५. रघुवंश टीका—मल्लिनाथ सूरि। पत्र स० ६१ से ६०। आ० १० × ४ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १३-२२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)।

विशेष—टीका का नाम सजीवनी टीका है।

३८७६. प्रतिसं० २। पत्र स० १४। आ० १० × ४ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी।

३८७७. प्रति सं० ३। पत्रसं० १६२। आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८४६ माघ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनस० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

विशेष—साधु सणदराज दादूपंथी ने वृन्दावती में प्रतिलिपि की थी।

३८७८. प्रति सं० ४। पत्रसं० १६५। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च। ले० काल स० १८७६ श्रावण बुदी २। वेष्टन स० २६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

३८७९. प्रति सं० ६। पत्रस० ६०। आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७-६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)।

विशेष—द्वितीय सर्ग तक है।

३८८०. प्रति सं० ७। पत्र सं० २८१। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १७१५ कार्त्तिक बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—सवत् १७१५ वर्षे शाके १६८० प्रवर्त्तमाने निगते श्री सूर्ये कातिग मासे शुक्लपक्षे पचम्या तिथौ बुधवासरे वशपुर स्थाने वासपूज्य चैत्यालये श्रीमत् काष्ठामघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्त्ति भ० रत्नभूषण त० भ० जयकीर्त्ति त०भ० कमलकीर्त्ति तत् पट्टोभरण भट्टारक श्री ५ भुवनकीर्त्ति तदाम्नाये पवनामधर मडलाचार्य आचार्य श्री केशवसेन तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री

विश्वकीर्त्ति तस्य लघु भ्राता आचार्य रामचद्र ब्र० जिनदास ब्र० श्री बलभद्र बाई लक्ष्मीमति पडित मायाराम पडित भूपत समन्वितान् श्री वलभद्र स्वय पठनार्थ लिखत ।

३८८१. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ५० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हूण्डावालो का डीग ।

३८८२. रघुवंश टीका—समय सुन्दर । पत्र स० ३६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय–काव्य । र०काल स० १६६२ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

३८८३. रघुवंश टीका— × । पत्रस० २-६४ । आ० ११ × ५¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं० १४७-६७ । प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

३८८४. रघुवश काव्य वृत्ति—सुमति विजय । पत्रस० २१८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

अन्तिम प्रशस्ति—इति श्री रघुवशे महाकवि कालिदासकृतौ पडित सुमतिविजय कृताया सुगमान्यप्रबोधिकायामेकोनविशति सर्ग समाप्ता ।

श्रीमन्न दिविजयाख्याना पाठकानाम भूधर ।
शिष्यःपुण्यकुमारेति नामा सपुण्यवारिधिः ।।१।।
तस्याभवन् विनेयाश्च राजसारास्तु वाचकाः ।
सज्जनोक्तक्रियायुक्ता वैराग्यरसर जिता ।।२।।
शिष्यमुखामु तेषां तु हेमधर्मा सदाह्वयः ।
शिष्टदिष्टा गुणाभिष्टा वभूव साधुमडले ।।३।।
सप्रत तद्विनयश्च जीया सुधी घनाचेइ ।
पाठकवादिवृ देन्द्रा. श्रीमद् विनयमेरवः ।।४।।
सुमतिविजयेनेव विहिता सुगमान्वया ।
वृत्तिर्बालबोधार्थ तेषा शिष्येण धीमता ।।५।।
विक्रमाख्ये पुरे रम्ये भीष्टदेवप्रसादतः ।
रघुकाव्यस्य टीकाय कृता पूर्णा मया शुभा ।।६।।
निर्विग्रह रसशशिसवत्सरे फाल्गुन सितै—
कादश्यां तिथौ संपूर्ण कीरस्तु मगल सदा कर्तु र्हीमान ।।७।।

ग्र थाग्र थ १३००० प्रमाण

प्रारम्भ---प्रणम्य जगदाधीश गुरु सदाचारनिरमलं ।
वामागप्रभव ज्ञात्वा वृत्ति मन्यादि दण्ध्येय ।।
सुमतिविजयाख्येन क्रियते सुगमान्वया ।
टीका श्रीरघुकाव्यस्य ममेय शिशुहेतवे ।।२।।

३८८५. प्रति सं० २ । पत्रस० १४६ । ग्रा० १२ × ५½ इन्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा ।

३८८६. रघुवंश काव्य वृत्ति—गुणविनय । पत्रस० ४१ । ग्रा० ९¾×६ इन्च । भाषा—संकृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३३४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—तृतीय ग्रधिकार तक है ।

३८८७. रघुवंशसूत्र— × । पत्र स० ६२ । ग्रा० १० × ४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ४५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३८८८ रत्नपाल प्रबन्ध—ब्र० श्रीपति । पत्रस० ६२ । ग्रा० ९½×४½ इन्च । भाषा—हिन्दी प० । विषय-चरित । र०काल स० १७३२ । ले०काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० ३३७-१३२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३८८९. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६-११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३८९०. रसायन काव्य—कवि नाथूराम । पत्रसं० १८ । ग्रा० ९×५½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय -- काव्य । र०काल × । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८७-१४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

३८९१. राक्षस काव्य × । पत्रस० ५ । ग्रा० ११ × ५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३८९१.(क) प्रति स० २ । पत्रस० ५ । ग्रा० १०½ × ६ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनस० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३८९२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४ । ग्रा० १०½×६ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३८९३. राघव पांडवीय—धनंजय । पत्रस० २६६ । ग्रा० १२ × ६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ बूदी ।

ग्रंथ का नाम द्विसधान काव्य भी है ।

विशेष-- चपावती नगर मे प्रतिलिपि हुई थी । चाटसु मध्ये कोटिमाहिल देहरे ग्रादिनाथचैत्यालये द्विसंधान काव्य की पुस्तक पडितराज-शिरोमणि प० दोदराज जी के शिष्य पडित दयाचद के व्याखान के ताई लिखायो मान महात्मा बहुँ ।

प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

३८९४. राघव पाण्डवीय टीका—नेमीचन्द । पत्रस० ४०९ । ग्रा० ११×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

विशेष—शेरपुर नगर मे राजाधिराज श्री जगन्नाथ के शासन में खडेलवाल ज्ञातीय पहाड्या गोत्रवाले डाडुकी भार्या लाडमदे ने यह ग्रंथ लिखवाया था।

पाण्डुलिपि मे द्विसधान काव्य नाम भी दिया हुआ है।

३८९५. प्रतिसं० २। पत्रस० ५८। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल स० १८२३। पूर्ण। बेष्टन सं० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

३८९६. राघवपाण्डवीय टीका-चरित्रवर्द्धन। पत्रस० १४-१४५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १२६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३८९७. राघव पांडवीय—कविराज पडित। पत्रस० ५०। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ९७१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इति श्री हलधरणीप्रसूत कादबकुलतिलक चक्रवर्त्ति वीर श्री कामदेव प्रोत्साहित कविराज पडित विरचिते राघवपाण्डवीये महाकाव्ये कामदेव्याके श्रीरामयुधिष्ठिर राज्यप्राप्ति नाम त्रयोदश सर्ग। ग्रथ स० १०७०।

३८९८. राघव पांडवीय टीका—×। पत्रस० १-४५। आ० ११ × ४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४८१/१८। **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

३८९९. वरांग चरित्र तेजपाल। पत्रस० ५६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३९००. वरांगचरित्र—भट्टारक वर्द्धमानदेव। पत्रस० ७८। आ० ८½×५¼ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल स० १८१२ पोष सुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० १२०१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३९०१. प्रति सं० २। पत्र स० ५५। आ० ११½ × ५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३९०२. प्रतिसं० ३। पत्र स० ५५। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल स० १९८०। पूर्ण। वेष्टन सं० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६८० वर्षे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री गुण-कीर्त्ति तत्पट्टे भ० वादिभूषण तत्पट्टे भ० रामकीर्ति तत् गुरुभ्राता पुण्यधाम श्री गुणभूषण वराग चरित्रमिद पठनार्थ।

३६०३. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ८६ । आ० १२×४½ इंच । ले०काल स० १६६० ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—राजमहल नगर मे महाराजा मानसिह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६०४. प्रतिसं० ५ । पत्र सं. ५६ । आ० १२½×५ इञ्च । ले० काल स० १८६६ सावन बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६१/५२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली

विशेष—करौली मे लिखा गया था ।

३६०५. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ७६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८२३ । **पूर्ण** । वेष्टनसं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—सोमचन्द और मोजीराम सिघल अग्रवाल जैन ने करौली में प्रतिलिपि करवायी थी ।

३६०६. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ५७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दयाराम के पठनार्थ लिखी गई थी ।

३६०७. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ६८ । ले० काल स० १८१४ आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प० लालचन्द जी बिलाला ने प्रतिलिपि की थी ।

३६०८. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ७५ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल स० १८३८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—गोठडाग्रामे चन्द्रप्रभ चैत्यालये लिखित व्यास रूपविमल शिष्य भाग्यविमल ।

३६०९. प्रतिसं० १० । पत्र स० ६२ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले० काल स० १५४६ आश्विन बुदी ११ । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष-स० १५४६ वर्षे आश्विन बुदि ११ भूमवासरे लिखित माथुरान्वय कायस्थ श्री गोइद तत् पुत्र श्री गूजर श्री हिरं जयपुर नगरे । जलवानी सुल्तिान अहमद साहि तत्पुत्र सुल्तिान महमदसाहि राज्य प्रवर्त्तमाने ।

३६१०. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ४२ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल १६०० वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सांगानेर मे राव सागा के राज्य मे लिखा गया था ।

३६११. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ७० । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १८४५ आषाढ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर प्रतिलिपि हुई थी ।

३६१२ प्रति सं० १३ । पत्रसं० ३२ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति वाला पत्र नही है ।

३६१३. वरांग चरित्र—कमलनयन । पत्र स० १२१ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १६३८ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—ग्रंथ प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

जाति बुंदेलेवंस पट्टु, मैनपुरी सुखवास ।
नागएवार कहावते, कासियो तसु तासु ।।
नंदराम इक साहु तह, पुरवासिन सिर मौर ।
है हरचंद सुदास तह, वंद्य क्रियाधर मौर ।
तिनही के सुत दोय हैं, माषू तिनके नाम ।
क्षितपति दूजो कंजदृग, धरें भाव उर साम ।
लघु सुत कीनी जह कथा भाषा करि चित ल्याय ।
मङ्गल करौ भवीन कौ, हूजे सब सुखदाय ।
एन समै घरतें चलिकें वरवास कियो तु पराग मझारी ।
हीगामल सुत लालजी तासो तहा धर्म सनेह बाढा अधिकारी ।
तह तिनको उपदेशहि पायकें कीनी कथा रुचि सौं सुविचारी ।
होहु सदा सब कौ सुखदायक राम वरांग की कीरति भारी ।

दोहा—

सवत नवइते सही सतक उपरि फुनि भाषि ।
युगम सप्त दोउधरी अकवाम गति साखि ।
इह विधि सव गन लीजिये करि विचार मन बीच ।
जेठ सुदी पूनौ दिवस पूरन करि तिहि खीच ।।

इति लिपिकृत प० साखूरिणस्थ अमीचन्द शिष्य जुगराज बाराबंकी नवाबगजमध्ये सवत् १९३८ का कार्तिक कृष्णा ७ ।

३६१४. वरांग चरित्र—पांडे लालचन्द । पत्रसं० ६६ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल स० १८२७ माह सुदी ५ । ले०काल स० १८८३ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

विशेष—*ब्रजलाल ठोल्या ने गुमानीराम से करोली में प्रतिलिपि करवाई थी ।*

३६१५. प्रति सं० २ । पत्र स० ८५ । आ० ११¾×५¾ इञ्च । ले० काल स० १८३५ आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

३६१६. प्रति सं० ३ । पत्रस० १०४ । आ० ११×५½ इंच । ले० काल स० १८३३ वैशाख सुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—१०३ वा पत्र नही है । मोतीराम ने अपने पुत्र प्राणसुख के पठनार्थ बुधलाल से नगर रूदावल मे लिखवाया था ।

३६१७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६३ । आ० ११½×६ इञ्च । ले०काल स० १८८३ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि की गई थी ।

३६१८. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० १०१ । आ० ८½×६ इञ्च । ले० काल स० १८७५ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष-पाडे लालचन्द पांडे विश्वभूषण के शिष्य थे तथा गिरनार की यात्रा से लौटने समय हिंडौन तथा श्री महावीरजी क्षेत्र पर यात्रार्थ आये एव नथमल बिलाला की प्रेरणा से ग्र थ रचना की । इसका पूर्ण विवरण प्रशस्ति मे दिया हुआ है ।

३६१६. वड्ढमाण (वर्द्धमान) काव्य—जयमित्रहल । पत्रस० १-५५ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—पंचम परिच्छेद तक पूर्ण है ।

३६२०. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ४६ । आ० ११× ५ इञ्च । ले० काल स० १५४६ पौष बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—गोपाचल दुर्ग में महाराज मानसिंह के राज्य मे जैसवाल ज्ञातीय साधु नाइक ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

३६२१. वर्द्धमान चरित्र—श्रीधर । पत्रस० ७८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६/१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—१० वा परिच्छेद का कुछ अ श नही है ।

३६२२. वर्द्धमान चरित्र—असग । पत्र सं० १११ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय— चरित्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३६२३. वर्द्धमान चरित्र—मुनि पद्मनन्दि । पत्र स० ३५ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—इति श्री वर्द्धमानकथावतरे जिनरात्रिव्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि पद्मनन्दिविरचिते मुन सुखनामांकिते श्री वर्द्धमान निर्वाण गमन नाम द्वितीय परिच्छेदः समाप्त ।

३६२४. वर्द्धमान चरित्र—विद्याभूषण । पत्रस० २३६ । आ० १०×५$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०/३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

३६२५. वर्द्धमान चरित्र—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १४५-२१० । आ० १२×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६५६ जेष्ठ सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—मालपुरानगरे माधवसिंह राज्ये चन्द्रप्रभ चैत्यालये········ ······ लिखित । प्रति जीर्ण हो चुकी है ।

३६२६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १०३ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

३६२७. प्रति स० ३ । पत्र स० ५-११ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३६२८. प्रति सं० ४ । पत्र स० १३२ । आ० १०३/४×४३/४ इञ्च । ले० काल सं० १८५८ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४/२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—इन्द्रगढ मध्ये महाराजा शिवदानसिह के राज्य मे ज्ञान विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

३६२९. बलि महानरेन्द्र चरित्र—× । पत्रस० ६६ । भाषा-सस्कृत । विषय-जीवन चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६३०. विक्रम चरित्र—रामचन्द्र सूरि । पत्रस० ५६ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल स० १४८० । **ले०काल ×** । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

३६३१. विक्रम चरित्र चौपई—माऊ कवि । पत्रस० २५ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × ले०काल स १५८८ । पूर्ण । वेष्टन स० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूदी ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—दूहा—नमो नमो तुम्ह चन्डिका तुम गुन पार न हुंति ।
एकचित्त लिउ सुमरता सुख सम्पति पामति ।
तइहेज महिपासुर बधिउ देत्यज मोडयामान ।
जाणु शभु निशभुना तइ हरिया तसु प्राण ।

अन्तिमभाग—

सवत् पनर अठासिइ तिथि बलि तेरह हुति ।
मगसिर मास जाण्यो रविवार जते हुति ।
नडी तरणइ पसाउ सचहुउ प्रबन्ध प्रमाण ।
उवभाय भावै भणइ वातज आवा ठाण ।
इति विक्रमचरित्र चौपई ।

३६३२. विजयचन्द चरिय— × । पत्र स० ८ । आ० १० × ४३/४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

३६३३. वृषभनाथ चरित्र—सकलकीर्ति । पत्र सं० १४६ । आ० १२१/२ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १८३६ फागुण सुदी १५ । पूर्ण । **वेष्टनसं० १२७३** । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६३४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १८६ । आ० १०×४ इञ्च । **ले०काल** स १७६३ आसोज सुदी १४ । अपूर्ण ।वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सासवाली नगर मध्ये राज्ञ श्री मानसिंघाख्यमन्त्रिणो धर्ममूर्तयः सा श्री सुखरामजी श्री बखतरामजी श्री दोलतरामजी तेषा सहायेन लिखितं । मुनिधर्मविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

३९३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३०६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—संवत् १६७५ मगसिर सुदी ३ के दिना आदिपुराण सा. नानौ मौसो बेगौ को घटापितं बाई भनीरानौ मौजाबाद मध्ये ।

३९३६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४८/८० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

३९३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६–४७ एव १०३ से १३७ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

३९३८. प्रति सं० ६ । पत्र स० १८६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १७९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६।१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—स० १७९६ कार्तिक सुदी ११ को उदयपुर मे श्री राणा जगतसिंह के शासन काल मे श्वेतांबर पृथ्वीराज जोधपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थाग्रन्था । ४९२८ । रोडीदास गांधी ने ग्रन्थ भेंट दिया था ।

३९३९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०६ । आ० १० × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० ११०-५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूंगरपुर ।

३९४०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १७१ । आ० १० $\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७४१ आषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

३९४१. प्रति सं० ९ । पत्रस० १४८ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल स० १५७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैणवा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार **है—**सवत् **१५७५** वर्षे आश्विन मासे कृष्णपक्षे पचम्या तिथौ श्री गिरिपुरे पौथी लिखी । श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० विजयकीर्ति तत् शिष्य आ. हेमचन्द पठनार्थ आदिपुराण श्री संघेन लिखाप्य दत्त ।

३९४२. प्रति सं० १० । पत्रसं० १३४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैणवा ।

विशेष—१३४ से आगे के पत्र नही है ।

३९४३. प्रति सं० ११ । पत्रसं० २५७ । आ० १० × ६$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १८२२ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३९४४. विद्वद्भूषणकाव्य— × । पत्रस० १५ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३९४५. शतश्लोक टीका—मल्लभट्ट । पत्रस० ११ । आ० ११$\frac{1}{4}$ × ५$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३६४६. शांतिनाथ चरित्र— × । पत्रस० १२८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत गद्य । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायका ग्रंथ है । १२८ से आगे पत्र नही है ।

३६४७. शांतिनाथचरित्र—अजितप्रभसूरि । पत्र सं० १२६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल सं० १३०७ । लेखन काल × ।पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३३४८. प्रतिसं० २ । पत्रस० १८६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल स० १८५१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३६४६. शांतिनाथ चरित्र—आणंद उदय । पत्रस० २७ । आ० १०½ ×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) ।विषय-चरित्र । र०काल सं १६६८ । ले०काल स० १७६६ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

३६५०. शांतिनाथ चरित्र—भावचन्द्र सूरि । पत्रस० १३८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत (गद्य) । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल १५३५ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—भावचन्द्र सूरि जयचन्द्र सूरि के शिष्य तथा पार्श्वचन्द्र सूरि के प्रशिष्य थे ।

३६५१. प्रति सं० २ । पत्रस० १२८-१७२ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६५२. शांतिनाथ चरित्र—सकलकीर्ति । पत्र स० १८३ । आ० १२×५ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १८६८ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर नगर मे नेमीचन्द जी कासलीवाल ने प्रतिलिपि करायी थी ।

३६५३. प्रतिसं० २ । पत्र स० १६७ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल स० १८७० आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ७१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—महारोठ नगरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंह जी राज्ये प्रवर्तमाने मिडत्यासावे महाराज श्री महेसदास जी श्री दुर्जनलाल जी प्रवर्तमाने खंडेलवाल जातीय ला० सिभुदास जी ने प्रतिलिपि कराई ।

३६५४. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १६७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन स० १५७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३६५५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १८६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६५६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १२४ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल १८०६ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

३६५७. प्रति सं० ६ । पत्रसं० ३२५ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। लेo काल स० १७२६ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन प० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जोधराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३६५८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल १६६० । पूर्ण । वेष्टन स० १००/४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६६० वर्षे आषाढ सुदि १२ शुक्रे सागवाडा शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुदकुंदाचार्यान्वये मडलाचार्य श्री गुणचद्र तत्पट्ट मडलाचार्य श्री जिनचंद्र तत्पट्टे म० श्री सकलचन्द तदाम्नाये स्थविराचार्य श्री मल्लिभूषण आचार्य श्री हेमकीर्ति तत् षिष्य वाई कनकाण बारसै चोतीस श्री शातिनाथ पुराण ब्र० श्री भोजा ने लिखापि दत्त ।

३६५९. प्रति सं० ८ । पत्र स० ६-१६६ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० कालस० १६१० । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७२।१५ **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—*प्रशस्ति निम्न प्रकार है*—

सवत् १६१० वर्षे शाके १४७५ प्रवर्तमाने मेदपाट मध्ये जवाछस्थाने आदीश्वर चैत्यालये लेखक महजी लिखत्त । श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि तत्पट्टे म० श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भवनकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे श्री विजयकीर्ति तत्पट्टे म० श्री शुभचन्द्र तदाम्नाये ब्रह्म श्री जिणदास तत् पाट ब्र० श्री शांतिदास ततपाट ब्र० श्री हसा तस्य शिष्या बाई धनवती बाई श्री लतमती चरणकमल मधुननावस्या चैली बाई धनवती कर्मक्षयार्थं पठनार्थं इद पुस्तक लिखापित ।

३६६०. प्रति सं० ९ । पत्रसं० १४४ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल स० १५६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**-सम्भवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी ११ शुक्ले श्री मूलसघे श्री गिरिपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये हुबड ज्ञातीय खरजा गोत्रे बुहरा गोपा भार्या माणक्यदे तस्य पुत्री रमा तस्य जमाई गाधी वाछा भार्या नाथी श्री शातिनाथ चरित्र लिखाप्य दत्त । कर्म क्षयार्थ शुभ भवतु । कुदकुंदाचार्यान्वय भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत् शिष्य आचार्य श्री नेमिचन्द्र त. सु श्री गुणकीर्ति । भट्टारक श्री पद्मनदिभि ब्र० अमराय प्रदत्त पुस्तकमिद ।

किनारों पर दीमक लग गई है किन्तु ग्रन्थ का लिखा हुआ भाग सुरक्षित है ।

३६६१. प्रतिसं० १० । पत्रसं० ४० से १२८ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३६६२. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० १६६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्थ मे १६ अधिकार हैं । ग्रन्थाग्रन्थ स० ४३७५ है ।

३६६३. प्रति सं० १२ । पत्रसं० ६०-१४० । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस०१३० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

३६६४. शांतिनाथ चरित्र—मुनिदेव सूरि। पत्रसं० ११८। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल सं० १५१३। पूर्ण। वेष्टन स० ११८। **प्राप्ति-स्थान**-खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

३६६५. शांतिनाथ चरित्र भाषा—सेवाराम। पत्र स० २३०। आ० ११×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। र०काल स० १८३४ श्रावण बुदी ८। ले० काल सं० १८८७। पूर्ण। वेष्टन स० ६-८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—

देश ढूंढाहड आदि दे संबोधे बहुदेस,
रची रची ग्रन्थ कठिन टोडरमल्ल महेश।
ता उपदेश लवांस लही सेवाराम सयान,
रच्यो ग्रन्थ रुचिमान के हर्ष हर्ष अधिकान ॥ २३ ॥
संवत् अष्टादस शतक फुनि चौतीस महान।
सावन कृष्ण अष्टमी पूरन कियो पुरान।
अति अपार सुखसो बसे नगर देव्याढ सार,
श्रावक बसे महाधनी दान पूज्य मतिधार ॥ २४ ॥

३६६६. शालिभद्र चरित्र—पं० धर्मकुमार। पत्रस० १५। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र०काल × ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २०२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

३६६७. शालिभद्र चौपई—जिनराज सूरि। पत्रसं० २८। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र०काल स १६७८ आसोज बुदी ६। ले० काल स० १७६६ चैत बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ६४०। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

३६६८. प्रति सं० २। पत्र स० २५। ले० काल स० १७६६। पूर्ण। वेष्टन स० ५००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

३६६९. प्रतिसं० ३। पत्रस० २१। ले०काल स० १७६६। पूर्ण। वेष्टन स० ५६१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

३६७०. प्रतिसं० ४। पत्र स० १६। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल स० १८७८। पूर्ण। वेष्टनस० १६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा।

३६७१. शिशुपालवध--माघ कवि। पत्र स० १६। आ० १२×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५६७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—४ सर्ग तक है।

३६७२ प्रतिसं० २। पत्र सं० ७०। आ० १० × ५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १४४०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है। प्रति प्राचीन है।

३६७३. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ३६-१८२ । प्रा० ११३/४×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

३६७४. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ३०७ । प्रा० ११×६ इञ्च । ले०काल स० १८८० । **वेष्टन सं०** २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैनमन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—लश्कर के मन्दिर में प० केशरीसिह के शिष्य···· " ने देवालाल के पढ़ने के लिए प्रति-लिपि की थी।

३६७५. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १०६ । प्रा० १२१/२×५ इंच ।ले०काल स० १८३६ । वेष्टन सं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष-जयपुर नगर मे श्री ऋषभदेव चैत्यालय में प० जिनदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३६७६. प्रतिसं० ६ । पत्र स ५ । प्रा० १०१/२× ५ इञ्च । ले०काल × । प्रथम सर्ग पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३६७७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १७ । प्रा० १०× ७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४/१६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोंक) ।

३६७८. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ६ । प्रा० १०×४१/२ इञ्च । **ले०काल** × पूर्ण । वेष्टन स० १८८-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

३६७९. शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथ सूरि । पत्रस० २२ । प्रा० १३× ६ १/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टनस० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३६८०. श्रीपाल चरित्र—रत्नशेखर । पत्र सं० ३८ । प्रा० ६१/२×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-कथा । र०काल स० १४२८ । ले०काल स० १६६६ चैत सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—म० १६६६ वर्षे चैतमित त्रयोदस्या तिथौ गुरु दिने । गणिगण गघसिधु रायमणे गणेन्द्र गणि श्री रूपचन्द शिष्य मुक्ति चंद्रणा लिलेखि । पुस्तक चिरजीयात । लिखित धनेगीया मध्ये ।

३६८१. प्रति सं० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १८८४ आसौज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी (गुजराती मिश्रित) अर्थ सहित है ।

३६८२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६८३. श्रीपाल चरित्र—प० नरसेन । पत्र स० ३७ । प्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय-चरित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६८४. प्रति सं० २ । पत्र स० ४६ । प्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६८५. **श्रीपाल चरित्र—जयमित्रहल।** पत्र सं० ६० । आ० ११ × ४३ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६२३ आषाढ़ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—भैरवदास ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८६. **श्रीपाल चरित्र—रइधू।** पत्र सं० १२५ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १६०६ आसोज बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—शुक्रवासरे कुरुजांगल देसे श्री सुर्णपथ शुभस्थाने सुलितान श्री सलेमसिंह राज्य प्रवर्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्कर गणे उभयभाषाप्रवीण तपोनिधि भट्टारक श्री उद्धरसेनदेवा तत्पट्टे भ० श्री धर्मसेनदेवा तत्पट्टे श्री गुणकीर्त्ति देवा तत्पट्टे भ० श्री यशोकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे श्री मलयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणभद्रसूरीदेवा तत्पट्टे भानुकीर्तिदेवा ।

३६८७. **श्रीपाल चरित्र—सकलकीर्त्ति।** पत्र सं० ३५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल स० १५ वी शताब्दी । ले० काल सं० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०५-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत १६६४ वर्षे महासुदि १० सोमे श्री मूलसंघे सरस्वतीगछे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिस्तदन्वये भट्टारक श्री रामकीर्त्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनंदिस्तदाम्नाये ब्रह्म श्री लाड्यका तत्शिष्य मुनि श्री धर्मभूषण तत्सिष्य ब्रह्म मोहनाय श्रीईडर वास्तव्य हूँबड ज्ञातीय गग्य गोत्रे लघु शाख्यया तबोली आखिराज भार्या उत्तमदे तयो सुतः लाधा तथा लट्टूजी एतै स्वज्ञानावरणीय कर्म्म क्षयार्थ श्रीपालाख्ये चरित्र लिखाप्य दत्तं ।

३६८८. **प्रति सं० २** । पत्र स० ४६ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल स० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

३६८९. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ४५ । आ० ११½ × ४¾ इञ्च । ले० काल स० १७६८ । वेष्टन स० २०० । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है ।

३६९०. **प्रति सं० ४** । पत्र स० ३६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—ग्र थाग्र थ स० ८८४ । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६४८ वर्षे श्रावण सुदी ८ शनिवासरे बडोद शुभस्थाने श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार गणे श्री नेमिजिनचैत्यालये भ० श्रमयनंदिदेवाय तत्सिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्ति पठनार्थं । श्रीपालचरित्र लिखितं जोसी जानार्दन ।

३६९१. **प्रति सं० ५** । पत्रस० ३२ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८७८ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—टोडा नगर के श्री सांवला जी के मन्दिर में पं० शिवजीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी । प्रति जीर्ण है ।

३९९२. प्रति सं० ६ । पत्रस० ५३ । आ० १० × ५½ इञ्च। ले०काल स० १९३९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैणवा ।

३९९३. प्रति स० ७ । पत्रस० ३८ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले०काल स० १७७३ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—पं० मयाराम ने परानपुर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

३९९४. श्रीपाल चरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्रस० ६६ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-चरित । र०काल स० १५८५ आषाढ सुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३९९५. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६० । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १९०५ मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १२८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३९९६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६९ । आ० १२ × ५ इच । ले० काल स० १८३२ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३९९७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ५५ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

३९९८. प्रति स० ५ । पत्रस० ८३ । ले० काल स० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन स० २७५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई थी ।

३९९९. प्रति स० ६ । पत्र स० ६६ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८८५ । अपूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

४०००. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २५ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०८-१७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

४००१. प्रतिसं० ८ । पत्र सं० १३५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १८७९ जेष्ठ सुदी ५ । पुर्ण । वेष्टन स० ४०/२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

४००२. प्रतिसं० ९ । पत्र स० ६६ । लेखन काल × । पूर्ण । वे०स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

४००३. प्रतिसं० १० । पत्र स० ४७ । आ० १२½×६ इञ्च । ले० काल स० १९०५ । पूर्ण । वे० सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प० सदासुखजी एव उनके पुत्र चिमनलाल जी को बूंदी मे लिखवाकर भेंट किया था ।

४००४. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ५५ । आ० ९×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—सिद्धचक्र पूजा महात्म्य भी इसका नाम है ।

४००५. श्रीपाल चरित्र—गुणसागर । पत्रस० १८ । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

४००६. **श्रीपाल चरित्र**— × । पत्र स० ११ । ग्रा० १० × ४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६१० सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४००७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १ से २१ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४००८. **प्रति सं० ३** । पत्रस० २१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४००९. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० ५३ । ग्रा० १०×६½ इंच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०/१६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक) ।

४०१०. **प्रति सं० ५** । पत्रस० १०८ । ग्रा० १२×७ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खडेलवालों का ग्रावा (उणियारा) ।

विशेष—बीच के बहुत से पत्र नही हैं । १०८ से ग्रागे भी पत्र नही हैं ।

नोट—पुण्यास्रवकथाकोश के फुटकर पत्र है ग्रौर वह भी अपूर्ण है ।

४०११. **श्रीपाल चरित्र—परिमल्ल** । पत्रस० १३७ । ग्रा० १०×६½ इच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल स० १६५१ ग्राषाढ बुदी ५ । ले०काल स० १८१० ग्रासोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष —कवि ग्रागरा के रहने वाले थे तथा उन्होने वही रचना की थी ।

४०१२. **प्रति सं० २** । पत्रस० ६१ । ग्रा० १३×८ इंच । ले० काल स० १६११ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १– । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति ग्रच्छी है ।

४०१३. **प्रति सं० ३** । पत्रस० ५६ । ग्रा० १३×५¾ इन्च । ले०काल स० १८६६ ग्राषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—मोहम्मदशाह के राज्य मे दिल्ली की प्रति से जो मनसाराम ने लिखी, प्रतिलिपि की गई ।

४०१४. **प्रति सं० ४** । पत्र स० ८५ । ग्रा० ११¾×६½ इन्च । ले०काल स० १६१७ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

४०१५. **प्रति सं० ५** । पत्रस० १८० । ग्रा० १०×७ इंच । ले०काल स० १६६६ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

४०१६. **प्रति सं० ६** । पत्र स० १२० । ग्रा० ८½ × ५½ इन्च । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वे० सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४०१७. **प्रति सं० ७**। पत्र स० १२५ । ग्रा० १०×६½ इन्च । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२/३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बडा बीसपंथी दौसा ।

४०१८. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ६६ । ले०काल स० १७७४ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडाबीस पथी दौसा ।

विशेष—जादौराम टोग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४०१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६७ । श्रा० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८२० कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—डेडराज के बडे पुत्र मगनीराम ने करौली नगर में बुधलाल से लिखवाया था। प्रति जीर्ण है ।

४०२० प्रति स० १० । पत्रस० ११७ । श्रा० १३ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८८६ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—गुमानीराम ने करौली में प्रतिलिपि की थी ।

४०२१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १६० । श्रा० ८ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४०२२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६१ । श्रा० ८$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

४०२३. प्रतिसं० १३ । पत्रस० १५० । श्रा० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मंदिर करौली ।

विशेष—बयाने मे प्रतिलिपि हुई तथा खुशालचन्द ने सौगाणी के मन्दिर मे चढाया ।

४०२४. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० ६५ । लेखन काल स० १६५७ श्रावण शुक्ला ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हूण्डावालो का डीग ।

४०२५. प्रतिसं० १५ । पत्र स० १२६ । श्रा० ११×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर कामा ।

४०२६. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० १३० । श्रा० १२×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष—पन्नालाल बोहरा ने प्रतिलिपि की थी ।

४०२७. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ११७ । श्रा० ११×६ । ले० काल सं० १६१८ मादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना में लिपि कराकर चन्द्रप्रभ मन्दिर मे चढाया ।

४०२८. प्रति सं० १८ । पत्रसं० १५८ । श्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १७६६ मावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

४०२६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ६८ । श्रा० १२×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८०४ प्रथम चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—अग्रवाल जातीय नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी । कुल पद्य स० २२६० है ।

४०३०. प्रतिसं० २० । पत्र स० १०३ । ले० काल स० १८८० माघ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर बयाना ।

विशेष—आगरा में पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

४०३१. **प्रति सं० २१**। पत्र स० १२३। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल स० १८८६ फागुण बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन सं० ५०२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—महुवा में साह फतेचन्द मुन्शी के लडके विजयलाल ने ताराचन्द से लिखवाया था।

४०३२. **प्रति सं० २२**। पत्र सं० २०५।। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४०३३. **प्रति सं० २३**। पत्र स० १००। ले० काल १८४४। पूर्ण। वेष्टन स० ५८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भीमराज प्रोहित ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४०३४. **प्रति सं० २४**। पत्रस० १४५। ले० काल स० १८२६। पूर्ण। वेष्टन स० ५८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०३५. **प्रति स० २५**। पत्र स० ६७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४०३६. **प्रति सं० २६**। पत्र सं० १०१। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च। ले० काल सं० १६०३ जेष्ठ सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० १०। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर पचायती अलवर।

४०३७. **प्रति स० २७**। पत्रस० १४२। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १८७२। पूर्ण। वेष्टन स० ५६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पञ्चायती मदिर अलवर।

४०३८. **प्रति सं० २८**। पत्र सं० १२१। ले० काल सं० १८६१। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, दीवानजी भरतपुर।

विशेष—बलवन्तसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०३९. **प्रति सं० २९**। पत्र सख्या ११०। आ० १२ × ७ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मदिर अलवर।

४०४०. **प्रति सं० ३०**। पत्र स० १३१। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर, चौधरियो का मालपुरा (टोक)।

४०४१. **प्रति सं० ३१**। पत्रस० १४३। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८७७ फागुण बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

विशेष—प० रामलाल ने प० चोली भुवानीवक्स से शाहपुरा मे करवाई थी।

४०४२. **प्रति सं० ३२**। पत्रसं० ११६। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल टोंक।

विशेष—२२०० चौपई है।

४०४३. **प्रति सं० ३३**। पत्र स० १६४। आ० १२ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १८७६। पूर्ण। वेष्टन स० ८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)।

विशेष—रावराजा श्री चांदसिह जी के शासनकाल दूणी मे हीरालाल ओझा ने प्रतिलिपि की।

४०४४. **प्रतिसं० ३४** । पत्र स० ५७ से १११ । ग्रा० ११½×६ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८, २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)।

४०४५. **प्रतिसं० ३५** । पत्रस०१२४ । ग्रा० ६½×६½ इन्च । ले०काल स० १८६० काती सुदी ४ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ४७** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटयो का नैणवा ।

विशेष—साह नदसम ने ग्रावा मे ग्र थ लिखा । स० १६६५ मे साह रोडलाल गोपालसाह गोठडा वाले ने नैणवा मे कोटयो के मदिर मे चढाया ।

४०४६. **प्रतिसं० ३६** । पत्रस० १०४ । ग्रा० १२½ × ६½ इन्च । **ले०काल ×** । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

४०४७. **प्रति सं० ३७** । पत्र स० १२६ । ग्रा० १२×६ इन्च । ले० काल स० १६७२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बू दी ।

विशेष—वृन्दावती मे लिखा गया था ।

४०४८. **प्रतिसं० ३८** । पत्रस० ६७ । ग्रा० १० × ६½ इन्च । **ले०काल** स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर, नैणवा ।

४०४९. **प्रति स० ३९** । पत्र स० ६४ । ग्रा० १२ × ६ इन्च । ले०काल सं० १६०२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७०/४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)।

विशेष—प्रति शुद्ध एव उत्तम है । फागी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४०५०. **श्रीपाल चरित्र—चन्द्रसागर** । पत्र स० ५० । ग्रा० १०½ × ६ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल स० १८२३ । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—आदिभाग—

> सकल शिरोमणि जिन नमू तीर्थंकर चौबीस ।
> पच कल्याणक जेह लह्या पाम्या शिवपद ईश ॥१॥
> वृषभसेन आ देकरि गौतम अन्तिम स्वामि ।
> चउदमे बावन उपरि सदगुरु परिणाम ॥२॥
> जिन मुख ली जे उपनी, सारदा देवी सार ।
> तिह चरण प्रणमी करी, आये बुद्धि विशाल ॥३॥
> सुरेन्द्रकीर्त्ति गुरु गछपती कीर्त्ति तेह अवदात ।
> तेह पाट अतिराजता सकलकीर्त्ति गुण क्षात ॥
> तस पद कमल भ्रमर सम चन्द्रसागर चितधार ।
> श्रीपाल नरेन्द्र तणो कहुँ चरित्र रसाल ॥

अन्तिम भाग—

> काष्टा सघ सोहामणु, उदयाचल जिमभाण ।
> गछ तट नदी तट रामसेन आम्नाय बखाण ॥

तद अनुक्रमे हुवा गछपति विद्या भूषण सूरि राय ।
तेह पाटे अति दीपता श्री श्री भूषण यतिराय ।।२१।।

त्रोटक—तेह पाटे अति सोमता चन्द्रकीर्ति कीर्त्ति अपार ।
वादी मद गजन जनु केशरीसिंह सम मनुधार ।।२२।।
तेह पाटे वलि शोभता राज्य कीर्त्ति विद्या भडार ।
लक्ष्मीसेन अति दीपता जेह पाटे अनुसार ।।२३।।

चाल—तेह पाटे अति दीपता इन्द्रभूषण अवतार ।
सुरेन्द्र कीर्त्ति गुरु गच्छपति तेह पाटे अवतार ।
कीर्त्ति देश विदेश मे जाण आगम अपार ।
तेह पाटे सूरिवर सही सकलकीर्त्ति गुणधार ।।२४।।

त्रोटक—गुणधार ते सकल कीर्त्ति ते सूरिवर विद्यागुण भडार ।
लक्षण द्वात्रिंशलकस्या कला वोहोत्तर तनु धार ।।२५।।
व्याकर्ण तर्क पुराण सागर वादी मद ते निवार ।
गुण अनन तेह राजता ते कोई न पावे पार ।।२६।।

चाल—व्या तेह पद कमल सोहामणु मधुकर सम ते जाणि ।
ब्रह्मचन्द्र सागर कहे वाल ख्याल मन आणि ।
व्याकर्ण तर्क पुराणन ते न्ही जाणु भेद ।
मुझ मति अल्प ज्यु कहत हुं कवि गुण अगम अभेद ।।२७।।

त्रोटक—श्रीपाल गुण ते अति घणा मुझ मति अल्प अपार ।
कविता जन हौसि न कीजे तुम्हे गुण तणी भडार ।।२८।।
बाल कर मति जोय ए मे ए रचना रची अपार ।
जे मणे ते वलि साभले ते लहे सौख्य भडार ।।२९।।

चाल—सोजन्या नयर सोहामणु दीसे ते मनोहार ।
सासन देवी ने देहरे परतापुरे अपार ।
सकलकीर्त्ति तिहा राजता छाजता गुण भडार ।।
ब्रह्म चन्द्रसागर रचना रची तिहा वेसी मानाहार ।।३०।।

त्रोटक—मनोहार नगर सोहामणु दीसे ते भा कडमाल ।
श्रावक तिहा वलि शोभता मेवाडा नामे विख्यात ।।३१।।
पूजा करे ते नित्य प्राते बखाण सुणे मनोहार ।
नागकुमार जिम दीपता श्रावक श्राविका तेह नारि ।।३२।।

चाल—ग्रथ सख्या तम्हे जाणज्यो पचदश मत प्रमाण ।
तेह ऊपर वलि शोभता साठ बत्तीस ते जाणि ।।
ढाल बत्रीस ते सोभती मोहनी भवियण लोक ।
साभलता सुख ऊपजे, नासे विधन ते शोक ।।३३।।

त्रोटक—शोक नासे जाय चिंता पामे रिद्धि भडार ।
पुत्र कलत्र सुभ सपजे जयकीर्त्ति होइ अपार ॥३४॥
मन प्रनीते जु सांचले जे पूजे ते मनोहार ।
मन वांछित फल पामीइ स्वर्ग मुगति लहे अवतार ॥३५॥

चाल—सवत शत अष्टादश त्रय विंशति अवधार ।
तेह दिवसा पूरण थयो ए ग्रंथ शुभ सार ॥
श्रीपाल गुण अगम अपार केवलि सिद्ध चक्र भवतार ।
तुम गुण स्वामी आपज्यो अवर इच्छा नहि सार ॥
मुझ सेवक अवधार ज्यो दीज्यो अविचल थान ।
ब्रह्म चन्द्रसागर कहे सिद्धचक्र महाधाम ॥२॥
माघ मास सोहामणों धवल परव मनोहार ।
त्रीज तिथि अति सोभती शुभ तिथि रविवार ॥३॥

इति श्री श्रीपाल चरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत् शिष्य श्री ब्रह्मचन्द्रसागर विरचिते श्रीपाल चरित ।

मालव देश तलपुर मे मुनिसुव्रतनाथ चैत्यालय में पंडित नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४०५१. श्रीपाल चरित्र—× । पत्र स० १२ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४०५२. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र सख्या ११५ । आ० ८×८½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—प्रति गुटका आकार है । ११५ से आगे के पत्रो मे पत्र सख्या नही है । इन पत्रों पर पच मंगल, है जिनसहस्रनाम तथा एकीभाव स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

४०५३. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र सं० १५ से ३० । आ० ११¾× ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

४०५४. श्रीपाल चरित्र—× । पत्रस० २७ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १९३६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

४०५५. श्रीपाल चरित्र—× । पत्र स० २६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर नैणवा ।

४०५६. श्रीपाल चरित्र—× । पत्र स० ४७ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १८४१ सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—संग्रही अमरदास ने प्रतिलिपि की थी। कथाकोष मे से कथा उद्धृत है।

४०५७. श्रीपाल चरित्र—× । पत्रसं० ४१ । आ० ८½×६¾ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १९९२ भादवा बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—रिखबचन्द विदायक्या ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

४०५८. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र सं० ३५ । आ० १० × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

४०५९. श्रीपाल चरित्र × । पत्र सं० ५८ । भाषा-हिन्दी । विषय-जीवन चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

४०६०. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र सं० ३९ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १९२३ वैशाख बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—कुल पद्य सं० ११११ हैं।

संवत् अठारे सतसठे सावण मास उतग ।
कीसन पक्ष की सप्तमी रवीवार शुभचग ॥ ११०८ ॥
तादिन पूरण लिखो चरित्र सकल श्रीपाल ।
पढो पढाओ बुधजन मन धूहरख विशाल ॥११०९॥
नगर उदयपुर रूबडो सकल सुखा की धाम ।
तहा जिन मन्दिर सोमही नानाविध अभिराम ।१११०॥
ताहा पारिस जिनराज को मन्दर अत सोहंत ।
तहा लिखो ए ग्रन्थ ही बरतो जग जयवत ॥ ११११ ।
इति श्रीपाल कथा संपूर्ण ।

नगर भीडर मध्ये श्री रिखबदेवजी के मन्दिर, श्रीमत् काष्टासंघ नदितटगच्छे विद्यागणे आचार्य श्री रामसेन तत्पट्टे श्री विजयसेण तत्पट्टे श्री भ० श्री हेमचन्द्रजी तत्पट्टे भ० श्री क्षेमकीर्ति तत् सिष्य प. मन्नालाल लिख्यत । सं० १९२३ वैशाख बुदी ५ ।

प्रारम्भ मे गौतम स्वामी का लक्ष्मीस्तोत्र दिया है। आगे श्रीपाल चरित्र भी है। प्रारम्भ का पत्र नहीं है।

४०६१. श्रीपाल चरित्र—लाल । पत्र सं० १४२ । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल सं० १८३० । ले०काल सं० १८८९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४०६२. श्रीपाल प्रबंध चतुष्पदी— पत्रसं० ४ । भाषा-हिन्दी । विषय × । र०काल × । ले०काल सं० १८८९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४०६३. श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्रसं० १३७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १६७७ भादवा सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जोशी श्रीधर ने अम्बावती मे प्रतिलिपि की थी ।

४०६४. प्रति सं० २ । पत्रसं० १०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४०६५. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १०० । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२२३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

४०६६. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ६५ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले०कालस० १८३६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

४०६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७४ । आ० ११½ × ४¾ इञ्च । ले०काल सं० १८१६ । भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३८६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—गुलाबचन्द छाबडा ने महारोठ नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

४०६८. प्रति स० ६ । पत्रस० ७६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

४०६९. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १४८ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—कोटा नगर के खुस्यालाडपुरा स्थित शान्तिनाथ चैत्यालय में आ० विजयकीर्ति तशिष्य सदासुख चेला रूपचन्द पंडित ने प्रतिलिपि की थी ।

४०७०. प्रतिस० ८ । पत्र सं० ६० । आ० १३×५ इञ्च । ले०काल स० १८०२ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—सवाई जयपुर में नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४०७१. प्रतिसं० ९ । पत्रस० १०५ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

४०७२. प्रति सं० १० । पत्रस० ६७ । आ० ११×८ इञ्च । ले०काल स० १९२३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

विशेष—दौसा के तेरहपंथियों के मंदिर का ग्रंथ है ।

४०७३. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १४७ । आ० १०¾ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १७८२ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७, १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

४०७४. प्रतिसं० १२ । पत्र स० १३४ । आ० ७½×४½ इञ्च । ले० काल स० १७२७ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—संवत् १७२७ वर्षे महामागल्य कार्त्तिक मासे सुकुलपक्षे तिथौ एकादशी आदित्यवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्य तदाम्नाये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्शिष्य पंडित मनोरथेन स्वहस्तेन हुबड ज्ञातीय स्वपठनार्थं कर्मक्षयार्थं ।

४०७५. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० ६८ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४०७६. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० ६८-८६ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल सं० १६६४ मगसिर बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—संवत् १६६४ वर्षे मगसिर वदि १३ रवौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री सरोजनगरे सुपार्श्वनाथचैत्यालये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्ति तत् शिष्य प० बूलचन्द तत् शिष्य पं० आलमचन्द ।

४०७७. **प्रति'स० १५** । पत्र स० ६४ । आ० ११×४ इञ्च । **ले०काल स०** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४०७८. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० १२८ । ले०काल स० १८२४ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । **वेष्टनस०** २३२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—आशाराम ने भरतपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४०७९. **प्रतिसं० १७** । पत्रस० १८२ । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं० १०** । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डीग ।

४०८०. **प्रतिसं० १८** । पत्रस० ७७ । आ० १०½ × ५½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४०८१. **प्रतिसं० १९** । पत्र स० ४४ । आ० ११×५ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

४०८२. **प्रतिसं० २०** । पत्रस० २२-१४२ । आ०१०¾×४½ इञ्च । ले०काल स० १६६२ । अपूर्ण । वेष्टन स० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४०८३ **प्रतिसं० २१** । पत्रस० १२१ । आ० ६×५ इच । ले०काल स० १६६५ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ब्रह्म श्री लाड्यका पठनार्थ ।

४०८४. **प्रति सं० २२** । पत्रस० ६१ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के कुछ पत्र नही हैं । इसका दूसरा नाम पद्मनाभ पुराण भी है ।

४०८५. **श्रेणिक चरित्र भाषा—म० विजयकीर्त्ति** । पत्र सं० ६२ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र०काल स० १८२७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

प्रशस्ति—

गढ अजमेर सकल सिरदार । पट नागौर महा अधिकार ।।
मूलसघ मुनि लिखिय वणाय । भट्टारक पट् नो भव भाय ।।
सारद गच्छ तणु सिंगार । बलात्कार गण जानुसार ।।
कुन्दकुन्द **मुन्यय** सही । पट अनेक मुनि सो अप सही ।।
रत्नकीर्त्ति पट विद्यानद । तसु पट महेद्रकीर्त्ति सवमुद ।।
अनन्तकीर्त्ति पट धारि भया । तसु पट भूवन भूषण चिर जीया ।।
विजयकीर्ति भट्टारक जानि । इह भाषा कीनि परमाण ।।
संवत् अठारासय सतवीस । फागुण सुदी साते सु जगीस ।।
बुधवार इह पूरण भई । स्वांति नषत्र वृद्धज पामु थई ।।
गोत पाटनी है मनिराय । विजयकीर्त्ति भट्टारक थाय ।।
तसु पट धारी श्री मुनि जानि । बडजात्या तसु गोत्र पिछानि ।।
त्रिलोकेन्द्र कीर्त्ति रिषराज । निति प्रति साधय आतम काज ।।
विजयमुनि सिष्य दुतिय सुजाण । श्री वैराड देश तसु आण ।।७६।।
धर्म्मचद भट्टारक नाम, ठोल्या गोत वण्यो अभिराम ।
मलयखड सिंहासन सही । कारजय पट सोभा लही ।।८०।

४०८६. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १२८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

४०८७. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ७१ । आ० ५$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले० काल स० १८६१ पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

४०८८. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ८६ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८६४ फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४०८९. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० ८८ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल स० १८२६ सावण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजबगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४०९०. **प्रति सं० ६** । पत्र स० ७७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८४ चैत्र बुदी ३ ।पूर्ण । वे० सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—पद्य स० २००० है ।

४०९१. **प्रति सं० ७** । पत्र स० ६३ से ११७ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८७६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७-२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—दूनी मे रावजी श्री चादसिह जी के राज्य में माणिकचन्द जी संघी के प्रताप से ओझा हरीनारायण ने प्रतिलिपि की थी ।

४०६२. **प्रति सं० ८** । पत्र स० १०१ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । लेo काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

४०६३. **प्रति सं० ९** । पत्रस० १५२ । आ० ११ × ५ इञ्च । **विषय-चरित्र** । **लेoकाल** स० १८६१ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—सथोक (सतोष) रामजी सौगाणी तत् अमीचन्द अभैचन्दजी राजमहल मध्ये चैत्यालय चन्द्रप्रभ के मे ब्राह्मण सुखलाल वासी टोडारायसिंह से प्रतिलिपि कराकर चढाया था ।

४०६४. **प्रतिसं० १०** । पत्रस० १३० । आ० ६ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । लेoकाल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४०६५. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० ६१ । आ० १५×७ इञ्च । लेo काल स० १६०१ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

४०६६. **प्रति सं० १२** । पत्र स० ७८ । आ० १२×८ इञ्च । **लेoकाल** × । अपूर्ण । **वेष्टन स०** २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

४०६७. **प्रतिसं० १३** । पत्र सं० १५३ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । लेo काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

४०६८. **प्रति स ० १४** । पत्रस० १२६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । लेo काल स० १६२७ आसोज बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० अग्रवाल पचायती जैन मन्दिर अलवर ।

४०६६. **प्रतिसं० १५** । पत्रस० ६६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । **लेoकाल** स० १६३० चैत वदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

४१००. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० ८५ । आ० १२ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । **लेoकालस०** १६१८ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना मे धनराज बोहरा ने प्रतिलिपि की थी ।

४१०१. **प्रतिसं० १७** । पत्र स० १२७ । लेo काल स० १६१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हूण्डावालो का डीग ।

४१०२. **प्रति स० १८** । पत्र स० १०८ । आ० १३$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । लेo काल स० १६३१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—शमशाबाद (आगरा) मे ईश्वरप्रसाद ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

४१०३. **श्रेणिक चरित्र भाषा—दौलतराम कासलीवाल** । पत्रस० २५ । भाषा—हिन्दी । **विषय-चरित्र** । र०काल × । लेoकाल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

४१०४. **श्रेणिक चरित्र—दौलतआसेरी** । पत्रस० १७२ । आ० ११×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १८३४ मगसिर सुदी ७ । लेo काल स० १६६१ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—८।) कल्दार में स० १६६२ में लिया गया था।

४१०५. श्रेणिक प्रबन्ध—कल्याणकीर्त्ति । पत्र स० ५७ । आ० १० X ६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र०काल स० १७७५ आसोज सुदी ३ । ले०काल सं १८२८ चैत वदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

आदिभाग—

ॐ नमः सिद्धेभ्य.—श्री वृषभाय नम.।

दोहा—सुखकर सन्मति शुभ मती चौबीस भो जिनराय।
अमर खचरनि करि ··· सेवित पाय ॥१॥
ते जीन चरण कमलनसी हृदय कमल धरी नेह।
जिन मुख कमल थी उपति नमु वाग्वादिनी गुण गेह ॥२॥
गुण रत्नाकर गौतम मुनि वयण रयण अनेक।
ते मध्यि केता ग्रही रचु प्रबध हार विवेक ॥३॥
श्री मूलसंघ उदयाचलि, प्रभाचद्र रविराय।
श्री सकलकीरति गुरु अनुक्रमि, नमश्री रामकीरति शुभकाय ॥४॥
तस पद कमल दीवाकरु नमू, श्री पद्मनदी सुखकार।
वादि वारण केशरि अकलक एह अवतार ॥५॥
नीज गुरू देव कीरति मुनि प्रणमू चित धर नेह ॥
मडलीक महा श्रेणीक नो प्रबन्ध रचु गुण गेह ॥६॥
नमी देवकीरति गुरु पाय ॥ जिन० भावि० ॥ ६ ॥
कल्याण कीरति सूरी वरे रच्यो रे ॥ लाल लो० ॥
ए श्रेणिक गुण मणिहार ॥ जिन० भावि० ॥
वागड विमल देश सोभते रे ॥ लाल लो ॥
तिहाँ कोट नयर सुखकार ॥ जिन० भावि० ॥ १० ॥
धनपति विमल वमे घणा रे ॥ लाल लो ॥
धनवत चतुर दयाल ॥ जिन० ॥ भावि० ॥
तिहो आदि जिन भवन सोहामणु रे ॥ लाल लो ॥
तशिका तोरण विशाल ॥ जिन० भावि० ॥ ११ ॥
उत्सव होयि गावि माननी रे ॥ लाल लो ॥
बाजे ढोल मृदग कशाल ॥ जिन० ॥ भावि० ॥
आदर ब्रह्मसिंघ जी तणोरे ॥ लाल लो ॥
तहा प्रबंध रच्यो गुणमाल ॥ जिन० ॥ भावि० ॥ १२ ॥
सतत सतर पचोतरि रे ॥ लाल लो० ॥
आसो सुदि त्रीज रवि ॥ जिन० भावि० ॥
ए सामलि गायि लिखि भावसु रे ॥ लाल लो ॥
ते तहि मंगलाचार ॥ जिनदेवरे भावि जिन पद्मनाभ जाणज्यो ॥१३॥

इति श्री श्रेणिक महामंडलीक प्रबन्ध संपूर्ण।

अन्तिम—

मनोहर मूलसघ दीपतो रे ।। लाल लो ।।
सरस्वती गच्छ श्रृंगार ।। जिन० भावि० ।।४।।

पटोधर कुंदकुंद सोमतोरे ।। लाल लो ।।
जिणि जलचर कीधा कुंदहार ।।जिन० भावी० ।।५।।

अनुर्क्रम सकल कीरतिह वरि ।। लाल लो० ।।
श्री ज्ञान भूणप सुभकाय ।। जिन० भावि० ।। ६ ।।

विजय कीरति विजय सुरी रे ।। लाल लो० ।।
तस पट शुभचंद्र देव ।। जिन० ।। भवि० ।।

शुभ मिनी सुमतिकीरति रे ।। लाल लो० ।।
श्री गुणकीरति करु सेव ।। जिन० भावि०।।
श्री वादि भूषण वादी जीयतो ।। लाल लो ।।

रामकीरति गछ राय ।। जिन० ।। भवि० ।।
तस पट कमल दिवाकरु रे ।। लाल लो ।।
जेनो जस वहु नरपति गाय ।। जिन० भावि० ।।७।।

सकल विद्या तणे वारिध रे ।। लाल लो ।।
गछपति पद्मनंदि राय ।। जिन० ।। भावि० ।।८।।

एसहू गछपति पदनमी रे ।। लाल लो ।।

प्रशस्ति—संवत् १८२८ का मासोत्तम मासे चैत्रमासे कृष्णपक्षे तिथि त्रोदसी वार ब्रहस्पतवार सूर्यपुरिमध्ये चद्रप्रभ चैत्यालये श्रेणिक पुराण संपूर्ण। श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगछे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री विसालकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री राजेन्द्र कीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री रत्नेन्द्रकीर्त्ति स्वहस्तेन लिपि कृते कर्म्मक्षयार्थ पठनार्थं।

४१०६. प्रति सं० ७। पत्रस० १७१। आ० १०×७ इञ्च। **ले०काल** स० १९५६। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ४९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

४१०७. श्रेणिकचरित्र—लिखमीदास। पत्र स० ८५। आ० ११ × ५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र० काल सं० १७४९। ले०काल सं० १८४१। पूर्ण। वेष्टन स० १२०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

४१०८. प्रति सं० २। पत्रसं० ९८। आ० १२ × ६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

४१०६. प्रति सं० ३ । पत्रस० १०५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन बडा पंचायती मन्दिर डीग ।

४११०. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १०३ । ग्रा० ६×५½ इञ्च । ले० काल स० १८६४ ग्रासोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

४१११. प्रति सं० ५ । पत्र स० ६७ । ग्रा० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४११२. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ५६ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

४११३. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १२१ । ग्रा० ६½×६½ इञ्च । ले० काल स० १८७६ ग्राषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

४११४. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ६५ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले० काल स० १८२२ प्र. सावण बुदी १ । पूर्ण । वे० स ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—ग्रन्तिम भाग ।—

सोरठा—

देस ढूंढाहर माहि राजस्थान ग्राबावती ।
भूप प्रभाव दिपाहि राजसिंघ राजै तिहा ॥६१॥

दोहा—

ता समीप सागावती धन जन करि भरपूर ।
देवस्थल महिमा घणी भला ग्रहस्त सनूर ॥६२॥
पडित दशरथ सुभग सुत सदानन्द तसु नाम ।
ता उपदेश भाषा रची भविजन कौ विसराम ॥६३॥
सवत सतरासै ऊपरै तेतीस ज्येष्ठ सुदी पक्ष ।
तिथि पचम पूरण लही मङ्गलवार सुभक्ष ॥६४॥
फेर लिखि गुणचास मे लखमीदास निज बोध ।
भूल्यो चूक्यो सबद कोउ बुधजन लीज्यो सोधि ॥६५॥
इति श्रेणिक चरित्र सपूर्ण ।

बलिराम के पुत्र सालिगराम बोहरा ने बयाना मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे यह ग्रथ ऋषि बसत से हीरापुरी (हिडौन) मे लिखवाकर चढाया । सालिगराम के तेला के उद्यापनार्थ चढाया गया ।

४११५. प्रति स० ९ । पत्रस० ८८ । ग्रा० १२½×६½ इञ्च । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

४११६. प्रतिसं० १० । पत्र सं० १४८ । ग्रा० ५½×५½ इञ्च । ले० काल स० १८०० माह बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है । रचना पडित दशरथ के पुत्र सदानन्द की प्रेरणा से की गई थी ।

४११७. प्रति स० ११ । पत्र स० १४४ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६-८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

४११८. प्रति सं० १२ । पत्रस० १४२ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १८२६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—कोठीग्राम मे सुखानन्द ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

४११६. सगरचरित्र—दीक्षित देवदत्त । पत्रसं० १८ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४१२०. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६२ । **प्राप्ति स्थान** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४१२१. सीताचरित्र—रामचन्द्र (कवि बालक) । पत्र सं० १०५ । आ० १२×५½ इ च । **भाषा**—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १७१३ मङ्गसिर सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४१२२. प्रति स० २ । पत्रस० १२४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—मागानेर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

४१२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११५ । आ० १२×८ इ च । ले० काल स० १६२३ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

४१२४. प्रति सं० ४ । पत्र स० १३६ । आ० १२×६ इ च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बैर ।

४१२५. प्रति सं० ५ । पत्रस० १४७ । आ० १०½×५½ इ च ।ले०काल स० १८४१ । अपूर्ण । वेष्टन स० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—४६ वा पत्र नही है ।

४१२६. प्रति सं० ६ । पत्र स० २३८ । आ० ५×५ इंच । ले० काल स० १७६० मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४१२७. प्रति सं० ७ । पत्र स० २३८ । आ० ६×६ इंच । ले० काल स० १७६० मगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।वेष्टनस० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१२८. प्रति सं० ८ । पत्रस० ११५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सदासुख तेरापथी ने प्रतिलिपि कराई थी ।

४१२६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १६१ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल सं० १७५६ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६-२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—दीपचन्द छीतरमल सोनी ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि कराई।

४१३०. प्रति सं० १०। पत्र स० २६६। आ० ८ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति जीर्ण है। गुटका साइज मे है।

४१३१. प्रति सं० ११। पत्रस० ११-१२८। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण।। वेष्टनस० २७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष दोहा—

कियो ग्रंथ रविषेणनै रघुपुराण जियजान।
वहै अरथ इनमे कह्यो रामचन्द उर आन ।।३०।।

कहै चन्द कर जोर सीस नय अत जै।
सकल परमाव सदा चिरनन्दि जै।
यह सीता की कथा सुनै जो कान दे।
गहै आप निज भाव सकल परदान दे ।।३१।।

४१३२. प्रति सं० १२। पत्र स० ६७। आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इन्च। ले० काल स० १७७७। वैशाख सुदी २। पूर्ण। वे० स० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बयाना।

विशेष—बयाना मे प्रतिलिपि, की गई थी।

४१३३. प्रति सं० १३। पत्रस० १६०। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बयाना।

४१३४. प्रति सं० १४। पत्र सं० १०६। आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—श्लोक स० २५००।

४१३५. प्रति सं० १५। पत्रस० १६४। ले०काल सं० १७८४। पूर्ण। वेष्टन स० ५७२। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पचायत भरतपुर।

विशेष—गुटका साइज है तथा भाफरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

४१३६. प्रति सं० १६। पत्रस० १२८। ले० काल स० १८१६। पूर्ण। वेष्टन स० ५७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

४१३७. प्रति सं० १७। पत्र स० १२६। ले० काल स० १८१४। पूर्ण। वेष्टन स० ५७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

४१३८. प्रति सं० १८। पत्र स० ६७। ले० काल स० १८४६। पूर्ण। वेष्टन स० ५७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४१३९. प्रति सं० १९। पत्र स० १६३। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ७ इच। ले०काल सं० १८७७ आसोज बुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ४८। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन पंचायती मदिर अलवर।

४१४०. **प्रति सं० २०** । पत्र स० १०१-१३२ । ग्रा० ९ × ६½ इंच । ले० काल स० १९२६ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—राजमहल मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१४१. **सुकुमालचरिउ—मुनि पूर्णभद्र (गुणभद्र के शिष्य)** । पत्रसं० ३७ । ग्रा० ९×५ इञ्च । भाषा—ग्रपभ्रंश । विषय – चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १६२२ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ७६** । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैनमन्दिर ग्रजमेर ।

४१४२. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४७। ग्रा० ९×५ इंच । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ९५६ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४१४३. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ३९ । ग्रा० ४½×४ **इञ्च** । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १२९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—इसमे ६ सधियां हैं । लेखक प्रशस्ति वाला ग्रन्तिम पत्र नहीं है ।

४१४४. **सुकुमालचरिउ—श्रीधर** । पत्र स० १-२१ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-ग्रपभ्रंश । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपथी दौसा । जीर्ण जीर्ण ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पत्र पानी मे भीगने से गल गये हैं ।

४१४५. **सुकुमालचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति** । पत्र स० ४४ । ग्रा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १५३७ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ९८९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर ग्रजमेर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५३७ वर्षे पौष सुदी १० मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य मुनि श्री जैनन्दि तदाम्नाये खडेलवालान्वये श्रेष्ठि गोत्रे स० वील्हा भार्या पेढी तत्पुत्रा. स० वादू पार्श्व वादू भार्या इल्हू तत्पुत्र सा० गोल्हा वालिराज, भोजा, चोया, चापा, एतेषा मध्ये वालिराजेन इद सुकुमाल स्वामी ग्रथ लिखाप्यत । प० ग्रामुयोगु पठनार्थ निमित्त समर्पित ।

४१४६. **प्रति सं० २** । पत्र स० ४९ । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १८२० चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

४१४७. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ९६ । ले० काल सं० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४१४८. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ४७ । ग्रा०१२×५½ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूदी ।

४१४९. **प्रतिसं० ५** । पत्रसं० २० । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनसं० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

४१५०. प्रति सं० ६ । पत्र स० २३-४३ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १७८७ सावण बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—लाखेरी ग्राम मध्ये..... .. ....)

४१५१. प्रति सं० ७ । पत्र स० १०० । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल स० १८७८ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)

विशेष—हरिनारायण ने प्रतिलिपि की थी। धर्ममूर्ति जैन धर्म प्रतिपालक साहजी सोलाल जी अजमेरा वासी टोडा का ने दूनी के आदिनाथ के मन्दिर मे चढाया था ।

४१५२. प्रति सं० ८ । पत्रस० ६४ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इच । ले० काल सं० १८७६ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोंक)

विशेष—हरीनारायन से सोहनलाल अजमेरा ने प्रतिलिपि करवाई थी

पडित श्री शिवजीराम तत् शिष्य सदासुखाय इद पुस्तक लिख्यापित्त । अजमेरा गोत्र साहजी श्री श्री मनसारामजी तत्पुत्र साह शिवलालेन ।

४१५३. प्रति सं० ९ । पत्र स० ४८ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—बिमलेन्द्रकीर्तिदेव ने लिखाया था ।

४१५४. प्रति सं० १० । पत्रस० ६६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टनस० १६–१२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

संवत् १६०६ वर्षे माघ शुक्लपक्षे पचम्या तिथौ गुरुवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा... ... क्षयार्थ लिखाप्य दत्तं । ब्रह्म · दत्तं आचार्य श्री हेमकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म मेघराज प्रेमी शुभ भवत । लि. धर्मदास लिखापित महात्मा लिखमीचन्द नाथूजी सुत खरतर गच्छे ।

४१५५. प्रति सं० ११ । पत्रस० ६० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २२४–४४ ।**प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन किन्तु जीर्ण है ।

४१५६. प्रति सं० १२ । पत्रस० ५४ । ले० काल स० १५८७ । पूर्ण । वेष्टनस० ६०/४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ स० ११०० है ।

प्रशस्ति—सवत् १५८७ वर्षे भादवा सुदी १० भृगौ अद्येह देलुलिग्राम वास्तव्यं मेदपाट ज्ञातीय शवदोसन लिखिता ।

बाद मे लिखा हुआ हैं—

श्री मूलसघे भ० श्री शुभचन्द्र तत् शिष्य मुनि वीरचन्द्र पठनार्थं । स० १६४१ वर्षे माहसुदी १ शनौ भट्टारक श्री गुणकीर्ति उपदेशात्.... ।

४१५७. प्रति सं० १३ । पत्रस० ५६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४१५८. प्रति स० १४ । पत्रस० ४४ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२५ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—नवम सर्ग तक पूर्ण है । **अन्तिम** पुष्पिका निम्न प्रकार है—

भट्टारक श्री सकलकीर्ति विरचिते आचार्य श्री विमलकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म गोपाल पठनार्थ । शुभ भवतु ।

४१५९. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ३६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४१६०. सुकुमाल चरित्र—नाथूराम दोसी । पत्रस० ६१ । आ० १३½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-चरित्र । र०काल सं० १६१८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

४१६१. प्रति सं० २ । पत्र स० ७१ । आ० १०½ × ८½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४१६२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७२ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

४१६३. सुकुमाल चरित्र भाषा—गोकल गोलापूर्व । पत्र स० ५२ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र०काल स० १८७१ कार्तिक बुदी १ । ले०काल स० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इहि प्रकार इहि शास्त्र की भाषा का सक्षेप रूप मद बुद्धि के अनुसार गोलापूर्व गोकल ने की ।

४१६४. प्रतिसं० २ । पत्र सख्या ६३ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४१६५. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ४५ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले० काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

४१६६. सुकुमाल चरित्र वचनिका—× । पत्र संख्या ७२ । आ० १३×८ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन संख्या १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

४१६७. सुकुमाल चरित्र वचनिका— × । पत्र स० ७७ । आ० १० ×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल सं १६५५ आसोज बुदी ७ पूर्ण । वेष्टनस० १२७२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—चन्द्रापुरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१६८. **सुकुमाल चरित्र भाषा**—× । पत्रस० ६२ । भाषा हिन्दी । विषय-जीवन चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४१६९. **सुकुमाल चरित्र भाषा**-× । पत्रस० ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डालालो का, डीग ।

४१७०. **सुकुमाल चरित्र**-× । पत्रस० ५३ । ग्रा०१२×५ ३/४ इञ्च ।भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२७ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

४१७१. **सुकुमाल चरित्र**-× ।पत्रस० ११ । ग्रा० १०१/२×४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत ।विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—११ से आगे के पत्र नही है ।

४१७२. **सुकुमाल चरित्र**—× । पत्रस० ६२ । ग्रा० ११×५ । भाषा-सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४१७३. **सुकुमाल चरित्र**—× । पत्र स० ४६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल × अपूर्ण । वेष्टन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४१७४. **सुकुमाल चरित्र—भ० यशःकीर्ति** । पत्र स० ५८ । ग्रा० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १८८५ मगसिर सुदी ५ रविवार । पूर्ण । वेष्टन स० ४२६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

मुनिस्वर नागचन्द्र वत्सर मे मार्गसिर शुक्ल मास ।
पचमी रविवार सुयोगे पूर्ण ग्रन्थ करयोभास ।
विद्यमान नही मुललेश कवित्व कला नहि मान ।
स्वपर जीवतणे हित कारणे करयो प्रवध बखान ।
गछनायक भये तपस्वी ज्ञानतना भण्डार ।
यशकीर्ति ए कथा प्रबध वर्ण म कहह्यो हितकार ।।
× × ×
मेदपाट वर देशपति ये नगर सलू वर सार ।
उत्तम वर्ण बसै तिहां श्रावक पाले श्रावकाचार ।
वृहत् न्यात नागद्रा हु मड गुरुमुखी श्रावक जेह ।
धर्म दिगम्वर पाले उत्तम दान पूजा करे तेह ।
आदिनाथ जिन मन्दिर सोहै तहा रहै सुखै नीवास ।
सकल सघ नो आदर जानि चरित्र कहयो उल्लास ।

सावला ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

४१७५. सुखनिधान—जगन्नाथ। पत्र सं० ४४। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र०काल ×। ले० काल स० १७६७। पूर्ण। वेष्टन स०६६२। **प्राप्ति स्थान** - भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४१७६. सुदंसण चरिउ-नयनन्दि। पत्र स० १-६६-१०६। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र०काल स ११००। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २६०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

४१७७. सुदर्शन चरित्र—भ० सकलकीर्त्ति। पत्रस० २-४६। आ० ११ × ४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल स० १६७२ चैत सुदी ३। अपूर्ण। वेष्टन स० २६८/४१। **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति—

संवत् १६७२ वर्षे चैत सुदी ३ भौमे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे .बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० वादिभूषणदेवा तत्पट्टे भ० श्री रत्नकीर्तिदेवा आचार्य श्री जयकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म श्री सवराजाय गिरिपुर वास्तव्य पटुयावच्छा भार्या गुजाणदे तयो पुत्र पं० काहानजी भार्या कसुबदे ताभ्या सु दर्शनचरित्र स्वज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं दत्त।

४१७८. प्रति सं० २। पत्रस० ३३-४४। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २५८। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४१७९. प्रति सं० ३। पत्रस० ६३। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

४१८० सुदर्शन चरित्र—मुमुक्षु विद्यानंन्दि। पत्र स० ७३। आ० ९×५ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल स० १८३५ चैत्र शुक्ला ९। पूर्ण। वेष्टन स० ८२। **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

४१८१. प्रति सं० २। पत्रस० ७७। आ० १०×४¾ इच। ले० काल स० १८७३। पूर्ण। वेष्टन स० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

विशेष बूदावती नगर मे श्री नेमिनाथ चैत्यालय मे श्री डूंगरसी के शिष्य सुखलाल ने प्रतिलिपि की थी।

४१८२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १-२५। आ० ११¾×५ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन स० ७५०। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

४१८३. सुदर्शनचरित्र—दीक्षित देवदत्त (जैनेन्द्रपुराण)। पत्र स० १०५। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्ट स० २३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

इति श्रीमन्मुमुक्षु दिव्य मुनि श्री केशवनद्यनुक्रमेण श्री भट्टारक कविभूषण पट्टाभरण श्री ब्रह्म हर्ष सागरात्मज श्री भ० जिनेन्द्रभूषण उपदेशात् श्रीदीक्षित देवदत्त कृते श्रीमज्जिनेन्द्र पुराणान्तर्गत श्रीपचनमस्कारफलव्यावर्णा श्री सुदर्शन मुनि मोक्ष प्राप्ति वर्णनो नाम एकादशोधिकारः।

४१८४. प्रति स० २। पत्र स० ८७। ले० काल स० १८४८ वैसाख सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० २३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४१८५. सुदर्शन चरित्र—ब्र० नेमिदत्त। पत्र स० ७९। आ० १०३/४ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४१८६. प्रति सं० २। पत्रस० ६३। आ० ११३/४ × ५ इञ्च। **ले०काल** स० १६०५ भादवा सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० २३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—इदं पुस्तक ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ पुस्तक श्री जिनमन्दिर चढ़ोडित रामचन्द्र सुत भवानी-राम अजमेरा वास्तव्य बूंदी का गोठडा अनार सुखपूर्वक इन्द्रगढ वास्तव्य।

४१८७. प्रति सं० ३। पत्रस० ८८। आ० १०×४१/२। **ले०काल** स० १६१६ भादवा सुदी १२। वेष्टन स० २०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म० लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है।

४१८८. सुदर्शनचरित्र भाषा—यशः कीर्ति। पत्रसं० २८। आ० १०१/२ × ८ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। र०काल सं० १६६३। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष— प्रारंभ—

प्रथम सुमरि जिनराय महीतल सुरासुर नाग खग।
भव भव पातिक जाय, सिद्ध सुमति साहस बढ़ै ॥१॥

दोहा।

इन्द्र चन्द्र औ चक्कवै हरि हलहर फनिनाह।
तेउ पार न लहि सकै जिनगुण अगम अथाह ॥२॥

चौपई—

सुमरौ सारद जिनवर वानि, करौ प्रणाम जोरिकरि पान।
मूरख सुमरे पडित होय, पाप पंक कहि घातै सोय ॥३॥
जो कबि कवित कहै पुरान, ते मानेहि सो देव की आनि।
प्रथम सुमरि सारद मन धरं, तौ कछु कवित बुद्धि कौ धरं ॥४॥
हसचढी कर वीना जासु, सिद्ध बुद्धि लयु जान्यौ तासु।
मुक्तामनि मई माग सवारि, ऊग्यो सूरज किरन पसारि ॥५॥
श्रवनहि कुंडल रतननि खचे, नौनिधि सकति आपनी रचै।
छुटेछरा कठ कठ सिरी, विना सकति आपनी धरी ॥६॥
उज्जलहार अनूपम हिये, विधना कहै तिसोई किये।
पग नूपर उजल तन चीर, कनक काति मय दिपै शरीर ॥७॥

सोरठा— विद्या और भडार जौ मागे सौ पावही।
कित आयौ ससार जायहि वर तेरो नही ॥८॥

दोहा— मन वच क्रम गुरू चरण नमि परहित उदति जे सार।
करहु सुमति जैनदको होइ कवित्त विस्तार ॥९॥

चौपई—

गुरू गौतम गणधरदे आदि, द्वादशाग अमृत आस्वाद ।
सुमति गुप्त पालन तप धीर, ते बदौ जो ज्ञान गम्भीर ॥१०॥
गणधर पदपावन गुणकद, भट्टारक जसकीर्त्ति मुनिन्द ।
तापर प्रगट पट्टमि जग जासु, लीला कियो मौन को वास ॥११॥
नाम सुखेमकीर्ति मुनिराइ, जाके नामु दुरित हरि जाय ।
ताहि पढत श्रुत सागर पाए, त्रिभुवनकीर्ति कीर्ति विस्तार ॥१२॥
ताहि समीप सुमति कछु लही, उत्तम बुद्धि मेरे मन भई ।
नैनानन्द आदि जो कही, तैसी विधि बाचौ चौपई ॥१३॥

अंतिम पाठ—

सोरठा— छद भेद पद भेद हौं तो कछु जांनै नहीं ।
ताकौ कियो न खेद, कथा भई निज भक्ति वस ॥१९८॥

दोहा अगम आगरो पवरूपुर उठ कोह प्रसाद ।
तरे तरङ्गि नदी बहे नीर अमी सम स्वाद ॥१९९॥

चौपई

भाषा भाउ भली जहि रीत, जानै बहुत गुणी सौ प्रीत ।
नागर नगर लोग मब सुखी, परपीडा कारन सब दुखी ॥२००॥
घन कन पूरन तु ग अवास, सबहि नि सेक धर्म के दास ।
छत्राधीस हमाउ वस, अकबर नन्दन वैर विध्वस ॥१॥
तखत बखत पूरो परचड, सुर नर नृप मानहि सब दंड ।
नाम काम गुन आयु जियोग, रवि पचि आयु विधाता योग ॥२॥
जहांगिर उपमा दोजे काहि, श्री सुलतान नु दीसै साहि ।
कोस देस मन्त्री मति गूढ, छत्र चमर सिंघासन रूढ ॥३॥
करं असीस प्रजा सब नाहि, बरनो कहा इति मति आहि ।
सवत सोलहसे उपरत, श्रेसठि जानहु बरस महत ॥२०४॥

सोरठा— माघ उजारी पाख, गुरवासुर दिन पञ्चमी ।
बध चौपई भाषा, कही सत्य साखरती ॥२०५॥

दोहा— कथा सुदर्शन सेठ की पढै सुनै जो कोय ।
पहिलै पावै देव पद पाछै सिवपुर होय ॥२०६॥

इति सुदर्शन चरित्र भाषा सपूर्णम्

४१८६. सुबाहु चरित्र—पुण्यसागर । पत्र सं० ५ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा—हिन्दी** । **विषय—**चरित्र । र० काल स० १६७४ । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० ३३७** । **प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रन्तिम—

सवत सोल चडोतर वरसइ जेसलमेर नयर सुभ दिवसइ ।
श्रीजिन हंस सूरि गुरु सीसइ पुन्यसागर उवझाय जगासइ।।
श्री जिन माणिक मूरि ग्रादेसइ सुबाहु चरित्र भरणीउ लव लसई ।
पास पसाइए हरिषि थुणता रिधि सिधि थाउ नितु मरणता ।।
।। इति सुबाहु वरित्र सपूर्णम् ।।

४१६०. सुमीम चरित्र—रत्नचन्द्र । पत्रस० ५६ । ग्रा० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल सं० १६८३ भादवा सुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४१६१. प्रति सं० २ । पत्र स० २६ । ग्रा० १२½ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८३८ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

४१६२. सुलोचना चरित्र—वादिराज । पत्रसं० ८४ । ग्रा० ११ × ५ इच । भाषा सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

४१६३. सुषेरण चरित्र × । पत्र स० ४४ । ग्रा० १० × ६¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल १६०६ ग्राषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—कोटा मे लिखा गया था

४१६४. समवजिन चरिउ--तेजपाल । पत्रस० ३२से ५१ । भाषा अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

४१६५. हनुमच्चरित्र--ब्र० अजित । पत्रस० ६४ । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । **ले०काल** स० १६०४ पौष सुदी ११ । पूर्ण ।वेष्टनस० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—टोडागढ में रामचन्द्र के शासन काल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१६६. प्रति सं० २ । पत्र स० ७४ । ग्रा० १३ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४१६७. प्रति स० ३ । पत्रस० १०६ । ले०काल × । पूर्ण ।वेष्टनस० २३३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४१६८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ८३ । ग्रा० १२ × ५ इञ्च । ले० काल १६१७ पौष बुदी ६ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन, मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—फागुई वास्तव्ये कवर श्री चन्द्रसोलि राज्य प्रवर्तमाने शातिनाथ चैत्यालये खण्डेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सघी सूरज के वशजो ने प्रतिलिपि की थी ।

४१६६. प्रतिस० ५ । पत्रस० ६५ । ग्रा० १०½×४¾ । ले० कालस० १६१० ग्राषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—ग्रलवर गढ मे लिपि की गई थी ।

४२००. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ७५ । ग्रा० १३× ६½ इन्च । ले० काल सं० १८१७ बैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० २२ २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगानी मन्दिर करौली ।

विशेष—कल्याणपुरी (करौली) मे चन्दप्रभ के मन्दिर मे लालचन्द के पुत्र खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४२०१. प्रति सं० ७ । पत्र स० ६४ । ग्रा० १२½×५ इन्च । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टनस० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२०२. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ४-३६ । ले०काल × ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ५४/३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४२०३. हनुमच्चरित्र--ब्र० जिनदास । पत्रस० ४१ । ग्रा० १२½×५½इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स०१५६२ । पूर्ण । **वेष्टनसं० २६७ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२०४. हनुमान चरित्र—ब्र. ज्ञानसागर । पत्रस० ३५ । ग्रा० १०×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय चरित्र । र०काल स० १६३० ग्रासोज सुदी ५ । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १८५/४० । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है रचना का ग्रतिम भाग निम्न प्रकार है—

श्री ज्ञानसागर ब्रह्म उचरि हनुमत गुणह ग्रपार ।
कर जोडी करि बीनती स्वामी देज्यो गुण सार ॥
सम्वत् सोलत्रीसि वर्षे ग्रश्वनीमास मझार ।
शुक्ल पक्ष पचमी दिन नगर पालुवा सार ।
शीतलनाथ भुवनु रच्यु रास भलु मनोहार ।
श्री संघ गिरुउ गुणनिलु स्वामी सैल करयु जयकार ।
हुँबड न्याति गुनिलू साह ग्रकाकुल भाण ।
ग्रमरादेउ घर ऊपनउ श्री ज्ञानसागर ब्रह्म सुजाण ।

इससे ग्रागे के ग्रक्षर मिट गये हैं ।

४२०५. हनुमच्चरित्र—यशःकीर्त्ति । पत्रस० १११ । भषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल सं० १८१७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

४२०६. हनुमान चरित्र— × पत्रस० ११० । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनसं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

४२०७. **हरिश्चन्द्र चौपई--कनक सुन्दर।** पत्र सं० १६। भाषा- हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—हरिश्चन्द्र राजा ऋषि राणी तारा लोचनी चरित्रे तृतीय खंड पूर्ण।

४२०८. **होली चरित—पं० जिनदास।** सं० २१। आ० ११½ × ५½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित। र०काल सं० १६०८। ले० काल सं० १८१४ ज्येष्ठ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० ५१४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—अजबगढ़ मध्ये लिखित आ० राजकीर्ति पठनार्थं लि० सवाईराम।

४२०९. **प्रति सं० २।** पत्रसं० ४। आ० ९×६ इन्च। ले० काल सं० १८४८ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)।

विशेष—अजमेर में लिखा गया थी।

४२१०. **होलिका चरित्र**— ×। पत्र स० ३। आ० ९ × ६½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित। र० काल×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विषय -- कथा साहित्य

४२११. **अगलवत्तक कथा-जयशेखर सूरि ।** पत्र सं० ५ । आ० १४ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १४६८ माघ सुदी ११ रविवार । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

४२१२. **अठारहनाते का चौढालिया-साह लोहट**—पत्रस० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल १८ वी शताब्दि । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १५८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३१३ **अठारह नाते की कथा—देवालाल ।** पत्रस० ४ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प०) । विषय कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** ४०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४२१४. **अठारह नाते की कथा--श्रीवंत ।** पत्र सं० ५ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०६/१०५ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -अंतिम पुष्पिका—इति श्रीमद्धर्माख्यवर्णित तच्छिष्य ब्र० श्रीवंत विरचिता अष्टादश परस्पर सम्बन्ध कथा समाप्त ।

४२१५ **अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा—खुशालचन्द** । पत्र सं० ७ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९८-९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—भाद्रपद सुदी १४ को अनन्त चतुर्दशी के व्रत रखने के महात्म्य की कथा ।

४२१६ **प्रतिसं० २** ।पत्रस० ९ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

४२१७. **अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा—** × । पत्रस० ५ । आ० ६ ×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८२१ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४२१८. **अनंतव्रतकथा—भ० पद्मनन्दि** । पत्रस० ६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विषय-कथा** । र० काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

४२१९. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ५ । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४२२०. **अनन्तव्रतकथा—** × । पत्रसं० ४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८८१ सावण बुदी १२ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १५२८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४२२१. अनन्तव्रतकथा—ज्ञानसागर । पत्रस० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—ऋषि खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४२२२. अनन्तव्रतकथा—ब्र० श्रुतसागर । पत्र स० ४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

४२२३. अनिरुद्धहरण (उषाहरण)—रत्नभूषण सूरि । पत्र स० ३२ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय —कथा । र०काल × । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स भवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—आदि अत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारभ—दूहा

परम प्रतापी परमतु परमेश्वर स्वरूप ।
परमठाय को लहीजे अकल अक्ष अरूप ।
सारदादेवी सुन्दरी सारदा तेहनु नाम ।
श्रीजिनवर मुख थी उपनी अनोपम उमे उत्तमा ठाम ।।
अगा ·· ··· नव क्रोडि जो मुनिवर प्रान महत ।
तेह तरगा चरण कमल नमु जेहता गुण छे अनत ।
देव सरस्वती गुरु नमी कहुँ एक कथा विनोद ।
भवियण जन सहुँ साभलो निज मन धरी प्रमोद ।
उषा हरण जे जन कहि जे मिथ्याती लोक ।
अणिरुधि हरिकारि आणयो तहनी वचन ए फोक ।।
शुद्ध पुराण जोइ करी कथा एक एक सार ।
भवियण जन सहु साभलो अनिरुधि हरण विचार ।।
बात कथा सहु परहरो परहरो काज निकाम ।।
एह कथा रस साभलो चित्त धरो एक ठाम ।।५६।।

मध्यभाग—

ऊषा बोलि मधुरी वाणि, सामल सखी तु सुखनी खाण ।
लखी लखी तु देखाडि लोक, ताहरी म सागति सघली फोक ।।५७।।
अरे जिन त्रेश्रीम तणा जे वश अनि बीजा रूप लख्या परसंस ।
भूमि गोचरी केरा रूप नगमि तेहनि एक सरूप ।।५८।।
द्वारावती नगरी को ईस जेहनि बहुजन नामि सीस ।
राजा समुद्रविजय विख्यात, नेमीश्वर केरो ते तात ।।५९।।
एह आदि हरिवशी जेह कपटि लिख्या पांडवना देह ।
तेह माही को तेहनि नविगमि, लखी तुकामुर्भात नमी ।।६०।।

जरासिंघ केरो सुत युवा, ग्रनि जो जजोउ ते ते नवा ।
रूप लखी देख्या ज्या तास केहि सहथी नवि पोहचि ग्रास ।
वसुदेव केरा सुन्दरपुत्र, जिणे घर राख्या घरना सत्र ।
सुन्दर नारायण तिराम रूप देखाग्या ते ग्रभिराम ।।६१।।

ग्रन्तिम—

श्री गिरनारि पाडियो सिद्ध तणु पद सार ।
सुख ग्रनता भोगवे ग्रकल ग्रनत ग्रपार ।।१।।
उषा थि मन चितव्यु ए संसार ग्रसार ।
घडी एक करि मोकली लीधो सयम भार ।।२।।
लिग छेदु नारी तणु, स्वर्गिहिरा सुरदेव ।
देव देवी क्रीडा था करि पूजी श्री जिनदेव ।।३।।
ग्रणिरुध हरणज साभलो एक चित्तसहु ग्राज ।
जिनपुराण जोई रच्यु जिथी सरि बहुकाज ।।४।।
श्री ज्ञानभूषण ज्ञानी नमु जे ज्ञान तणो भडार ।
तेह तणा मुख उपदेश थी रच्यो ग्रणिरुधहरण विचार ।।५।।
सुमतिकीरति मुनिवर नमु जे बहुजननि हितकार ।
मात तत्व नित नितवि जिन शासन शृगार ।।६।।
दक्षिण देश नो गच्छपति श्री धर्मचन्द्र यतिराय ।
तेहणा चरण कमलन की कथा कही जदुराय ।।७।।
देव सरस्वती गुरुनमी कहु ग्रणिरुध हरण विचार ।
रत्नभूसण सूरिवर कहि श्री जिन शासन सार ।।८।।
करि जोडी कहु एटलु तव गुणद्यो मुझ देव ।
विन्नु कामि मागु नही भवे भवे तुम्हारा पद सेव ।।९।।
रचना इ बहुरस कहु या साभलो सहुजनसार ।
श्री रत्नभूषण सूरीस्वर कहि वरतो तम्ह जयकार ।।१०।।

इति श्री ग्रनिरुध हरण श्री रत्नभूषण सूरि विरचित समाप्त ।

प्रशस्ति—

सवत् १६६६ वर्षे भादवा सुदी २ भोमे मेगला ग्रामे श्री ग्रादीश्वर चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक पद्मनंदि देवा सद्गुरू भ्राता मुनि श्री मुनिचन्द्र तत् शिष्य मुनि श्री ज्ञानचन्द्र तत् शिष्य वर्णि लाघाजीना लिखित । शुभ भवतु ।

४२२४. ग्रनिरुद्धहरण कथा—ब्र० जयसागर । पत्रस० ४६ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$ × ४ इञ्च । **भाषा—** हिन्दी । **विषय—कथा** । र०काल स० १७३२ । ले०काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० २४६/६५ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रतिम भाग निम्न प्रकार है |

अनिरुध स्वामी सुगतिगामी कीधू' तेह बखाण जी ।
भवियण जन जे भावे भणसे पामे सुख खाण जे ।।१।।
अल्प श्रुत हूँ कांइ न जाण देज्यो मुझ ने ज्ञानजी ।
पूर्ण सूरि उपदेशे कीधो अनिरुध हरण सरधानजी ।।२।।
कविजन दोष मां मुझने दीज्यो कहूं हूँ मूंकि मान जी ।
हीनाधिक जे एहमा होवे सोधज्यो सावधानजी ।।३।।
मूलसघ मा सरस्वती गच्छे विद्यानद मुनेंदजी ।
तस पट्टे गोर मल्लिभूषण दीठे होय अनदजी ।।४।।
लक्ष्मीचन्द्र मुनि श्रुत मोहन वीर चन्द्र तस पाटेजी ।
ज्ञानभूषण गोर गौतम सरिखो सोहे वश ललाट जी ।
प्रभाचन्द तस पाटे प्रगट्यो हुँबड चागी विडिल विक्षात जी ।
वादिचन्द्र तस अनुक्रम सोहे वादिचन्द्रमा क्षान जी ।।
तेह पाटे महीचन्द्र भट्टारक दीठे नर मन मोहे जी ।
गोर महिचन्द्र शिष्य एम बोले जयसगर ब्रह्मचारजी ।
अनिरुध नामजे नित्य जपे तेह घर जयजयकार जी ।
हांसोटे सिंहपुरा शुभ ज्ञाते लिख्यू पत्र विशाल जी ।
जीववर कीतातणे वचने रचियो जू जूये ढाले जी ।।२।।
दूहा—अनिरुघ हरणज मैं करयु' दुःख हरण ऐ सार ।
साभला सुख ऊपजे कहे जयसागर ब्रह्मचारजी ।।

इति श्री भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्रह्म श्री जयसागर विरचिते अनिरुद्धहरणाख्यानो अनिरुद्ध मुक्ति गमन वर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकार सपूर्णमस्तु ।

सवत् १७९६ मा वर्षे श्रावणमासोत्तम मासे शुभकारि शुक्लपक्षे द्वितीया भृगुवासरे श्री परतापपुर नगरे हुँबड ज्ञातीय लघु शाखायां साह श्री मेघजी तस्यात्मज साह दयालजी स्वहस्तेन लिखितमिदं पुस्तक ज्ञानावर्णी क्षयार्थं ।

४२२५. **प्रतिसं० २** । पत्रस० २७ । ले० काल स० १७९० चैत बुदी १ पूर्ण । **वेष्टनसं०** २५०/६६ । **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२२६. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ३९ । आ० ११×४ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४२२७. **अपराजित ग्रंथ (गौरी महेश्वर वार्ता)** । पत्र स० २ । भाषा--संस्कृत । विषय-सवाद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३८/३९२ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२२८. **अभयकुमार कथा**— × । पत्र सं० ६ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**—**दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी** ।

अन्तिम—अभयकुमार तजी कथा पढि है सुणि जो जीव ।
सुर्गादिक सुख भोगि के शिवसुख लहै सदीव ।
इति अभयकुमार काव्य ।

४२२९. **अभयकुमार प्रबंध—पदमराज** । पत्रसं० २७ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । **विषय-कथा** । **र०काल** सं० १६५० । ले०**काल** × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०**८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर बसवा ।

विशेष—

सवत् सोलहसइ पंचासि जैसलमेरू नयर उललासि ।
खरतर गछनायक जिन हस तस्य सीस गुणवंत सस ।
श्री पुण्यसागर पाठक सीस पदमराज पभणइ सुजगीस ।
जुगप्रधानजिनचद मुणिंद विजयभान निरूपम ग्रानन्द ।
भणइ गुणइ जे चरित महत रिद्धिसिद्ध सुखते पामन्ति ।

४२३०. **अवंती सुकुमाल स्वाध्याय—पं० जिनहर्ष** । पत्र सं० ३ । आ० ११×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल सं० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४२३१. **अशोक रोहिणी कथा**—× । पत्र सं० ३७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । **भाषा** संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४२३२. **अष्टावक्र कथा टीका-विश्वेश्वर** । पत्रसं० ४८ । आ० १०×४½ इञ्च । **भाषा**—सस्कृत । विषय —कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष – सवत् १७२ " माह मासे कृष्ण पक्षे तिथि २ लिखितं सारंगदास ।

४२३३. **अष्टांग सम्यक्त्व कथा—ब्र० जिनदास** । पत्र स० ५५ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा - हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १६६/६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४२३४. **अष्टाह्निकाव्रत कथा**— × । पत्र सं० ६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल सं० १७८१ फागुण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प० रूपचन्द नेवटा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालये ।

४२३५. **अष्टाह्निका व्रत कथा** — × । पत्रसं० ११ । आ० १० ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय —कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३६. **अष्टाह्निका व्रत कथा— ×** । पत्रसं० ११ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय-कथा** । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३६ । **प्राप्ति स्थान** - भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३७. अष्टाह्निकाव्रत कथा— × । पत्र स० १८ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विषय**—कथा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३८. अष्टाह्निव्रत कथा— × । पत्रसं० १४ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**—कथा । र० काल × । **ले० काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३९. अष्टाह्निकाव्रत कथा— × । पत्रस० ६ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-सम्कृत । **विषय**-कथा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैरणवा ।

४२४०. अष्टाह्निकाव्रत कथा—भ० शुभचन्द्र । पत्रस० ८ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । भाषा —संस्कृत । विषय— कथा । र० काल × । ले० काल × । **वेष्टन सं०** २३१ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४२४१. प्रति सं० २ । पत्रस० ५ । आ० ११½×५½ इच । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर नगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प० चोखचदजी के शिष्य प० रामचन्द्र जी ने कथा की प्रतिलिपि की थी ।

४२४२. प्रति सं० ३ । पत्रस० ४ । आ० ११½ × ३½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन स०** २३५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

४२४३. प्रति सं० ४ । **पत्रस०** १७ । आ० १०½ × ५ इच । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी थी ।

विशेष—लश्कर में नेमिनाथ चैत्यालय में झाझूराम ने प्रतिलिपि की ।

४२४४. अष्टाह्निकाव्रत कथा—ब्र. ज्ञानसागर । पत्र स० ५० । आ० १०×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२४५. प्रति सं० २ । पत्रस० १० । आ० ६½×६ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४२४६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४ । आ० १२×६ इञ्च । **ले०काल** स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४२४७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३ । आ० १२×५½ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

४२४८. अक्षयनवमी कथा— × । पत्रस० ७ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८१३ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—स्कध पुराण मे से है। सेवाराम ने प्रतिलिपि की थी।

४२४९. **आदित्यवार कथा**— पत्रस० १०। भाषा-हिन्दी। **विषय-कथा**। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—राजुल पच्चीसी भी है।

४२५०. **प्रतिसं० २**। पत्रस० १० से २१। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४२५१. **आदित्यवार कथा**—**पं० गंगादास**। पत्रसं० ४१। आ० ९×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १७५० (शक स० १६१५) **ले०काल सं० १८११** (शक स० १६७६) पूर्ण। वेष्टन स० १५२५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—प्रति सचित्र है। करीब ७५ चित्र हैं। चित्र अच्छे हैं। ग्रंथ का दूसरा नाम रविव्रत कथा भी है।

४२५२. **प्रति सं० २**। पत्र स० ९। आ० १०½×५ इन्च। ले०काल स० १८२२। पूर्ण। वेष्टन स० १७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

४२५३. **प्रतिसं० ३**। पत्रस० ९। आ० १०½×५ इंच। ले०**काल** स० १८३९। पूर्ण। वेष्टनस० १८। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

४२५४. **प्रतिसं० ४**। पत्र सं० १८। आ० १० × ७ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। **वेष्टनस०** १-२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष—प्रति सचित्र है तथा निम्न चित्र विशेषतः उल्लेखनीय हैं—

पत्र १ पर—पार्श्वनाथ, सरस्वती, धर्मचन्द्र तथा गगाराम का चित्र, बनारस केराजा एवं उसकी प्रजा
१ २ ३ ४

पत्र २ पर मतिसागर श्रेष्ठि तथा उसके ६ पुत्र इनके अतिरिक्त ४९ चित्र और हैं। सभी चित्र कथा
५

पर आधारित हैं उन पर मुगल कथा का प्रभुत्व है। मुगल बादशाहो की वेशभूषा बतलायी गयी है। स्त्रिया लहगा, ओढनी एव काचली पहने हुये है कपडे पारदर्शक हैं अग प्रत्यग दिखता है,

आदि भाग—

प्रणमु पास जिनेसर पाय, सेवत सुख सपति पाय।
बदु वर दायक सारदा, यह गुरु चरन नयन युग सदा।
कथा कहुँ रविवार जक्षणी, पूर्व ग्रंथ पुराणे भणी।
एक चित्त सुने जे साभले तेहने दुख दालिद्रह टले।

अन्त भाग—

देश बराड विषय सिणगार, कारजा मध्ये गुणधार।
चद्रनाथ मन्दिर सुखकंद, भव्य कुसुम भामन वर चद्र ॥११०॥
मूलसघ मतिवंत महत, धर्मवत सुरवर अति संत।
तस पद कमल दल भक्ति रस कूप, धर्मभूषण रद रोबे भूप ॥१११॥

विशाल कीर्त्ति विमल गुण जाण, जिन शासन पकज प्रगट्यो मान ।
तत पद कमल दल मित्र, धर्मचन्द्र धृत धर्म पवित्र ॥११२॥
तेहनो पंडित गंगादास, कथा करी भविष्य उल्हास ।
शाके सोलासत पञ्चरसार, सुदि आषाढ बीज रविवार ॥११३॥
अल्प बुद्धि थी रचना करी, क्षमा करो सज्जन चित धरी ।
भणे सुणे भावे नरनारि, तेह घर होये मगलाचार ।।१४।।

इति धर्मचन्द्रानुचर पडित गगदास विरचिते श्री रविवार कथा सपूर्ण ।

४२५५. आदित्यव्रत कथा—भाऊकवि । पत्र स० १० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन सं० ६१४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस का नाम रविव्रत कथा भी है ।

४२५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७८० माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—रामगढ में ताराचद ने प्रतिलिपि की थी ।

४२५७. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

४२५८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल स० ११०८ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—प० सदासुख ने नेमिनाथ चैत्यालय मे लिखा था ।

४२५९. प्रति सं० ५ । पत्रसं० १५ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन स०** १६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

४२६०. प्रति सं० ६ । पत्रस० १३ । आ० १२½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन स०** ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२६१. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८ । ले०काल सं० १८५० आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४३ । **प्राति स्थान** दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—नेमिश्वर की वीनती तथा लघु सूत्र पाठ भी है । भरतपुर मे लिखा गया था ।

४२६२. आदित्यवार कथा—ब्र. नेमिदत्त । पत्रस० १७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी, (गुजराती का प्रभाव) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल पूर्ण । **वेष्टनसं०** ५२१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

श्री शांति जिनवर २ नमते सार ।
तीर्थंकर जे सोलमुं..वांछित फल बहुदान दातार ।

सारदा स्वामिणि वली तवुं बुद्धिसार म सरोइ माता ।
श्री सकलकीर्ति गुरु प्रणामीने श्री भुवनकीर्ति अवतार
दान तणा फल वरणवूं ब्रह्म जिणदास कहिसार
ब्रह्म जिणदास कहिसार ।।

अन्तिभाग—

श्री मूलसंघ महिमा विरमलोए, सरस्वती गच्छ सिणगारतो ।
मल्लिभूषण अति भलाए श्री लक्ष्मीचन्द सूरिराय तो ।
तेह गुरु चरणकमल नमीए, ब्रह्म नेमिदत्त भणि चगतो ।
ए व्रतथे भवियणकरिए, तेल हिमी अभगतो ।। ३० ।।
मनवछित सपदा लहिए, ते नर नारी सुजाणतो ।
इम जाणी पास जिणतणो, ए रविव्रत करो भवि माणतो ।
ए व्रतभावना भावे तेहां, जयो जयो पार्श्वं जिणदतो ।
शाति करो हम शारदाए सद्गुरु करो आणदतु ।

वस्तु—

पास जिणवर पास जिणवर बालब्रह्मचारी ।
केवलणाणी गुणनिलो, भवसमुद्र तारण समरथउ ।
तसु तणो अदित व्रत भलो जे करि भवीयण सार ।
ते भव सकट भजिकरि सुख पामिइ जगितार ।।
इति श्री पार्श्वनाथदितवारनी कथा समाप्त ।

४२६३. **आदितवार कथा—सुरेन्द्रकीर्ति** । पत्र स० १३ । **भाषा**—हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १७४४ । ले० काल स० पूर्ण । वेष्टन स० ४४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—राजुल पच्चसी भी है ।

४२६४. **आराधना कथा कोश**—× । पत्र स० ६८ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं०४७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२६५. **आराधना कथा कोश**—× । पत्र स० ८५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा र०काल × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन सं० ७२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष— आराधना संबधी कथाओ का संग्रह है ।

४२६६. **आराधना कथा कोश**—पत्रस० १०४ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । **विषय-कथा** । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

४२६७. **आराधना कथा कोष**— × । पत्रसं० १६८ । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन संभ्रवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४२६८. **आराधना कथाकोश—बख्तावरसिंह रतनलाल**। पत्रस० २६२। आ० १०$\frac{1}{2}$× ७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल सं० १८६६। ले० काल स० १६३२ वैशाख सुदी १२।। पूर्ण।वेष्टन सं० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

४२६९. **प्रतिसं० २**। पत्र स० २८२। ले० काल स० १६०३। पूर्ण। वेष्टन स० ४४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४२७०. **आराधना कथाकोश—ब्र० नेमिदत्त**। पत्रस० २५७। आ० ११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५३०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

४२७१. **प्रतिसं० २**। पत्र सं० ६२। आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इन्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १३६५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४२७२. **प्रतिसं० ३**। पत्र सं० २६०। ले० काल स० १८११ चैत बुदी ५। पूर्ण वेष्टन स० २६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर मे लिपि की गई थी।

४२७३. **आराधना कथाकोश-श्रुतसागर**। पत्रस० १५। आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा–सस्कृत। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

विशेष—पात्र केशरी एव अकलंकदेव की कथाये है।

४२७४. **आराधना कथाकोष—हरिषेण**। पत्रस० ३३८। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र०काल स० ६८६ ले० काल × ।पूर्ण। वेष्टन स० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४२७५. **आराधनासारकथा प्रबंध--प्रभाचन्द्र**। पत्र स० २००। आ० १०×५ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल स० १६०८। पूर्ण। वेष्टनसं० २६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४२७६. **प्रतिसं० २**। पत्रस० १-६२। आ० ११×५ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७२०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४२७७. **आराधना चतुष्पदी—धर्मसागर**। पत्र स० २०। ६×४ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६६५ आसोज सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

४२७८. **एकादशी महात्म्य**—×। पत्र स० १०। आ० ११×५ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र०काल ×। ले०काल स० १६२१। पूर्ण। वेष्टन स १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

विशेष—स्कद पुराण मे से है।

४२७९. **एकादशी महात्म्य—** × । पत्र सख्या १०१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-महात्म्य । र०काल × । लेखन काल सं० १८५२ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूंदी)।

४२८०. **एकादशी व्रत कथा—** × । । पत्र स ७ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । **विषय**—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—इसका नाम 'सुव्रतऋषिकथा' भी है ।

४२८१. **ऋषिदत्ता चौपई—मेघराज ।** पत्रस० २२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १६५७ पौष सुदी ५ । ले०काल सं० १७६६ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

४२८२. **ऋषिमण्डलमहात्म्य कथा**— × । पत्र सं० १० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४२८३. **कठियार कानडरी चौपई—मानसागर ।** । पत्र स० ५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इ च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १७४७ । ले० काल स० १८४० । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४२८४. **कृपण कथा—वीरचन्द्रसूरि ।** पत्रस० २ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विपय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०७/१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम—

दाभतो तब दुखि उथयो नरक सातमि मरीनिगयो ।
जपि वीरचन्द्र सूरी स्वामि एम जाणि मन राखो गम ।।३२।।

४२८५. **कथाकोश**— × । पत्र सं० ४१-६८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-मस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं०३३८/१६७ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४२८६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ८ । ले० काल स० १७२० । पूर्ण । वेष्टन स० १६०/५६४ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२८७. **कथाकोश—चन्द्रकीर्ति** । पत्र सख्या १५-६६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । **भाषा**—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

श्रीकाष्ठसंघे विबुधप्रपूज्ये
श्रीरामसेनान्वय उत्तमेस्मिन् ।
विद्याविभूषायिध सूरिरासीत्
समस्ततत्वार्थकृतावतार ।।७१।।

तत्पादपंकेरुहर्षचरीकः
श्रीभूषणसूरि वरो विभाति ।
सध्नष्ट हेतु व्रत सत्कथांच ।
श्रीचन्द्रकीर्तिस्त्विमकाचकार ।।७२।।

इति श्री चन्द्रकीर्त्याचार्यविरचिते श्री कथाकोशे षोडषकारणव्रतोपाख्याननिरूपणं नामसप्तमः सर्ग ।।७।।

४२८८. **कथाकोश—ब्र० नेमिदत्त** । पत्र सं० २२० । आ० १२½ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय** - कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

४२८९. **प्रतिसं० २** । पत्र संख्या १७३ । आ० ११ × ४ इञ्च । लेखन काल स० १७६३ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मालपुरा में लिखा गया था ।

४२९०. **प्रति सं० ३** । पत्र स० २५७ । आ० ११×५½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४२९१. **प्रति सं० ४** । पत्र स० १४४-२१९ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४२९२. **कथाकोश—भारामल्ल** । पत्र स० १२९ । आ० १३×५½ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल सं० १९५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मंदिर अलवर ।

४२९३. **कथाकोश—मुमुक्ष रामचन्द्र** । पत्र स० ४४ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी ।

४२९४. **कथाकोश—श्रुतसागर** । पत्र स० ९६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय**—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८२० पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२९५. **कथाकोश—हरिषेण** । पत्र स० ३५० । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२९६. **कथाकोश**— × । पत्र स० ७८ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । **विषय**—कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—१, २ एव २८ वां पत्र नही है ।

४२९७. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ७९ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल स० १९११ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—४७ से ५१ तक पत्र नही है ।

निम्न कथाओं एव पाठो का सग्रह है।

कथा का नाम	कर्त्ता का नाम	
१. आदिनाथजी का सेहरा—	ललितकीर्त्ति—	र० काल × । हिन्दी पत्र १से८ ।
विशेष—बाहुबलि रास भी नाम है।		
२. द्रव्यसग्रह भाषा टीका सहित—		× ।— × । प्राकृत हिन्दी । पत्र ८ से २६ तक।
३. चौबीस ठाणा—		× ।— × । हिन्दी । पत्र २६ से २६ तक ।
४. रत्नत्रय कथा—	हरिकृष्ण पांडे	र० काल स० १७६६ हिन्दी । पत्र २६ से ३१ तक।
५. अनन्तव्रत कथा—	,,	र० काल × । हिन्दी । पत्र स० ३१ से ३४ तक।
६. दशलक्षण व्रत कथा	,,	र० काल स० १७६५ । हिन्दी पत्र स० ३४से३६
७. आकाश पचमी कथा	,,	र० काल १७६२ । हिन्दी । पत्रस० ३६ से ३९
८. ज्येष्ठ जिनवर कथा	,,	र० काल सं० १७६८ । हिन्दी पत्र सं० ३९–४१
९ जिन गुण सपत्ति कथा	ललितकीर्त्ति	र० काल × । हिन्दी । पत्र ४१ से ४६ तक
१०. सुगधदशमी कथा—	हेमराज	र० काल × । हिन्दी । पत्र ४६ से ५३ तक। अपूर्ण
११ रविव्रत कथा—	अकलक	र० काल स० १६७६ । हिन्दी । पत्र ५३–५४
१२. निर्दोषसप्तमी कथा—	हरिकृष्ण	र० काल स० १७७१ । हिन्दी । पत्र ५४ । अपूर्ण
१३. कर्मविपाक कथा—	,,	र० काल × । हिन्दी । पत्र ५४ से ५८
१४. पद—	विनोदीलाल	पत्र ५८-५९
१५. समोसरन रचना—	ब्रह्मगुलाल	पत्र ५९ से ५३ । र० काल १६६८
१६ षट दर्शन	×	पत्र ६३ पर
१७. रविव्रत कथा —	भाऊ कवि	पत्र ६३ से ७१ तक
१८. पुरदरविधान कथा—	हरिकृष्ण	र० काल १७६८ फाल्गुन सुदी १० । पत्र ७१–७२
१९. निःशल्य अष्टमी कथा—	,,	र० काल × । पत्र ७२-७३
२० मकुटचौथ कथा —	देवेन्द्रभूषण	र० काल × । पत्र ७३ से ७५
२१. पचमीव्रत कथा —	सुरेन्द्रभूषण	र० काल स० १७५७ पौष बुदी १० । पत्र ७५–७९

४२६८. **कथाकोश**— × । पत्र स० २७६ आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर दौसा ।

४२६९. **कथासंग्रह**— × । पत्रसं० ५३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है—

पुष्पाञ्जली, सोलहकरण, मेघमाला, रोहिणीव्रत, लब्धिविधान, मुकुटसप्तमी, सुगंधदशमी, दशलक्षण कथा, आदित्यव्रत एवं श्रावणद्वादशी कथा ।

४३००. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प० सुमतिसुन्दरगणिभिरलेखि श्री रिणीनगरे ।

धन्यकुमार, शालिभद्र तथा कनककुमार की कथाएं है ।

४३०१. **कथा संग्रह**— × । पत्रसं० १२४ से २०५ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४३०२. **कथा संग्रह**—× । पत्रसं० ८६ । आ० १०×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (राज०)

४३०३. **कथा संग्रह**—× । पत्रसं०........। भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । वेष्टनस० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

१. अष्टाह्निका कथा—भ० सुरेन्दकीर्ति । स्स्कृत

२ पुष्पाजलिव्रत कथा— श्रुतसागर । ,,

३. रत्नत्रय विधानकथा— ,, । ,,

४३०४. **कथा संग्रह**— × । । पत्रस० २८ । आ० १०×६½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—भारामल की चार कथाओ का सग्रह है ।

४३०५. **कथा संग्रह**—× । पत्रस० ३७–५६ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५६/१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३०६. **कथा संग्रह**—× । । पत्रस० ५६ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५८, १०७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—निम्न कथाओं का सग्रह है ।

१—अष्टाह्निका कथा—	सस्कृत		अपूर्ण
२—अनन्तव्रत कथा	भ० पद्मनदि	'	,,
३ —लब्धि विधान	प० अभ्रदेव	,,	पूर्ण
४ – रूक्मिणी कथा	छत्रसेनाचार्य	,,	,,
५—शास्त्र दान कथा	अभ्रदेव	,,	.
६—जीवदया	भावसेन	,,	,,
७ —त्रिकाल चौबीसी कथा	प० अभ्रदेव	,,	,,

४३०७. **कथा संग्रह**—× । पत्र स० २१ । भाषा-प्राकृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३०८. **कथा संग्रह—विजयकीर्ति** । पत्रसं० ५८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल सं० १८२७ सावरण बुदी ५ । **ले०काल** सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४५ । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष-कनककुमार, धन्यकुमार, तथा सालिभद्र कुमार की कथाएं चौपई बध छद मे है ।

४३०९. **कलिचौदस कथा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति** । पत्रसं० ५ । आ० ११×५इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० १०२** । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४३१०. **कार्तिक पंचमी कथा** । पत्रसं० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च ।भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४।२०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—प्रति प्राचीन है । १७ वी शताब्दी की प्रतीत होती है ।

४३११. **कार्तिक सेठ को चोढाल्यो** × । पत्रसं० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी **विषय**—कथा । र० काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । **वेष्टन सं० १३०** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना बूंदी ।

४३१२. **कार्तिक महात्म्य** — × । पत्र सं० ८ । आ० ९½ ×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जैनेतर) । र०काल × । ले०काल सं० १८७२ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८-१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—पद्मपुराण से ब्रह्म नारद सवाद का वर्णन है ।

४३१३. **कालक कथा**—× । भाषा—प्राकृत । विषय-कथा । र० काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४०-३१/२८२-८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष— दो प्रतियो के पत्र है । फुटकर है ।

४३१४. **कालाकाचार्या कथा—श्री माणिक्यसूरि** । पत्रसं० ४ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३१५. **कालकाचार्य कथा—समयसुन्दर** । पत्रसं० ११ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७१५ वैशाख बुदी १ । वेष्टनसं० १२६ । पूर्ण । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—देलवाडा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४३१६. **कालकाचार्य प्रबंध—जिनसुखसूरि** । पत्र सं० १९ । भाषा—हिन्दी । **विषय**—कथा । र०काल × । ले०काल १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

४३१७. **कुंदकुंदाचार्य कथा**— × । पत्रसं० २ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । **विषय—कथा** । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ५५** ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बून्दी ।

विशेष—अन्त मे लिखा है-इति कु दकु दस्वामी कथा । या कथा दक्षरणमू एक पडित छावरणी माफरो भयो उक अनुसार उतारी है ।

४३१८. कौमुदी कथा—× । पत्रस० ४६–१०४ । ग्रा० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विषय**—कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

४३१९. कौमुदी कथा—× । पत्रसं० ६० । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स १७३६ । अपूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर डीग ।

४३२०. कौमुदी कथा—× । पत्र स० १३६ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८२६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूंदी) ।

विशेष—राजाधिराज श्री पातिसाह अकबर के राज्य मे चम्पानगरी के मुनिसुव्रननाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । स० १६६२ की प्रति से लिखी गयी थी ।

४३२१. गर्जसिंह चौपई—राजसुन्दर । पत्रस० १६ । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय कथा । र०काल स० १५५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपर ।

विशेष—प्रत्येक पत्र पर १७ पक्तिया एवं प्रति पक्ति मे ३५ अक्षर है ।

मध्य भाग—

—नगर जोइनइ आवियो कुमर जे आवा हेठि ।
नारी ते देखइ नही, जोवइ दस दिसि देठि । १५६ ।।
मनिचितइ कारण कियउ केणि हरीरा वाल ।
पगजोतइ सहू तेहना धारि बुद्धि सुविसाल । १५७ ।
नरमहि घूरतना पढो बैठया नारी माहि ।
पखी माही वाइस सही जोवउ पगहू जाहि । १५८ ।।
वउ आखें अजनाकरि चाल्यउ ननर मझारि ।
पग जोवतउ नारी तणी पहुतउ वेस दुवारि १५९

४३२२ गुणसुन्दरी चउपई—कुशललाभ । पत्र स० ११ । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-राजस्थानी । विषय कथा । र०काल स० १६४८ । ले०काल स० १७४९ । पूर्ण । वेष्टनस० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४३२३. गोतम पृच्छा—× । पत्र स० ६७ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १८१० । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

४३२४. चतुर्दशी कथा—डालूराम । पत्र स० २१ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १७५५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४३२५. **चंदराजानी ढाल—मोहन** । पत्र स० १ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०६/६६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३२६. **चन्द्रप्रभ स्वामिनो विवाह—भ० नरेन्द्रकीर्ति** । पत्रस० २४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—रजस्थानी । विषय—कथा । र०काल स० १६०२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

आदि भाग—

सकल जिनेश्वर भारती प्रणमीने
गणधर लहीय पसाउ ।
लोए श्री चन्द्रप्रभ वर नमित नरामर
गायस्यु' तेह वीवाहलोए ।।१।।

मध्य भाग—

जइने बोलावे मात्त लक्ष्मणा देवी मात ।
उठोरे जिनेश्वर कहिए' एक बात ।।१।।
सामीरे देखीजें रे पुत्र साहिजे सदा पवित्र ।
रजसु भदासे वछ निरमल गात्र ।

अन्तिम भाग—

विक्रमराय पछी सवत् सोल वय सवत्सर जांण
वैशाख वदी भली सप्तमी दिन सोमवार सुप्रमाण
गुजरदेश सोहामणो **महीसान** नयर सुसार ।
विवाउ लउ रचउ मनरली आदिश्वर भवन मझार ।।
श्री मूलसघ गछपति शुभचन्द भट्टारक सार ।
तत्पदकमल दिवाकरु, श्रीय सुमतिकीरति भवतार ।।
गुरु भ्राता तम जाणड श्रीय सकलभूषण सुरी देव ।
नरेन्द्रकीरती सुरीवर कहे, कर जोडि ते पद सेव ।
जे नरनारी भावे सुरें, भणेंद सुणें यह गीत ।
ते पद पामे साम्वता, श्री चन्द्रप्रभुनीरीति ।।

इति श्री चन्द्रप्रभ स्वामिनो विवाह सपूर्ण । ब्रह्म श्री गोनम लखीतं । पठनार्थ ब्रह्म श्री रूपचन्दजी ।

४३२७. **चन्दनमलयागिरी चौपई—भद्रसेन** । पत्रस० २० । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल १७वीं शताब्दी । ले०काल स० १७६० जेष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १/१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १७६० वर्षे मासोतममासे जेष्ठ मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशाम्यां तिथौ भौमवासरे इद पुस्तकं लिखापित कार'जा नगर मध्ये श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये लेखक पाठकयो शुभं भवतु ।

प्रति सचित्र है तथा उसमे निम्न चित्र है—

१. राधाकृष्ण	—	पत्र १ पर
२. राजा चन्दन रानी मलयागिरी	—	१
३. महल राजद्वार	—	१
४. राज्य देव्या संवाद	—	२
५. राजा चन्दन कुल देवता से बात पूछै छै	—	३
६. रानी मलियागिरी राजा चन्दन	,,	३
७. रानी मलियागिरी और राजा चन्दन सायर के तीर	—	४
८. ,, ,,	—	५
६. ,, पार्श्वनाथ के मन्दिर पर	—	५
१०. सायर नीर गौउ चरावे छै	—	५
११ चोवदार सौदागर	—	६
१२. रानी बनखंड में लकडी बीनवे	—	६
१३. रानी मलयागिरी एव चोबदार	—	७
१४. ,,	—	८
१५ मलियागिरी को लेकर जाते हुए	—	६
१६. रानी मलयागिरी एवं सौदागर	—	१०
१७ धीर, सायर नदी नीर अमरालु	—	११
१८ राजा चन्दन स्त्री	—	१२
१६. राजा चन्दन पर हाथी कलश ढोलवे	—	१३
२० राजा चन्दन महूल मा जाय छै	—	१४
२१ राजा चन्दन आनन्द नृत्य करवा छै	—	१६
२२ राजा चन्दन भलो छै	—	१६
२३ नीर सायर मीला छै रानी मलियागिरी	—	१६
२४ राजा चन्दन रानी मलियागिरी सौदागर भेट कीधी	—	१७
२५ राजा चन्दन के समक्ष सायर नीर पुकार करे छै	—	१८
२६. चन्दन मलियागिरी	—	१६

४३२८. **चंदनषष्ठीव्रत कथा—खुशालचन्द ।** पत्र सं० ६ । आ० १२×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८२८ । पूर्ण । वेष्टनस० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

४३२६. **चपावती सीलकल्याणदे—मुनि राजचन्द ।** पत्र स० ६ । आ० ११×५ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल स० १६८४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४३३०. **चारमित्रों की कथा**— × । पत्र सं० ६६ । आ० ११×५ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४३३१. **चारुदत्त कथा—** × । पत्रसं० ५ । ग्रा० ११×४½ इञ्च । भाषा - संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४३३२. **चारुदत्त सेठ (णमोकार) रास—ब्र० जिनदास** । पत्रस० ३५ । ग्रा० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १७५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

४३३३. **चारुदत्त प्रबन्ध—कल्याणकीर्ति** । पत्रसं० । १३ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल स० १६८२ । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वे. स० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

४३३४. **चित्रसेन पद्मावती कथा—गुणसाधु** । पत्र सं० ४४ । भाषा – सस्कृत । विषय—कथा । र० काल सवत १७२२ । ले०काल स० १८६८ ग्रासोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी ग्रर्थ सहित है ।

४३३५. **चित्रसेन पद्मावती कथा—पाठक राजवल्लभ** ।पत्र स० २३ । ग्रा० ९½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल स० १५२४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

४३३६. **प्रति सं० २** । पत्र स० ५२ । ग्रा० १०¾ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—कुल ५०७ पद्य है । प० हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४३३७. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ६ । ग्रा० १०×४ इञ्च । ले०काल स० १६५१ फागुण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है ।

४३३८. **चित्रसेन पद्मावती कथा**— × । पत्र स० २१ । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल सं० १४२८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३३९. **चेलणासतीरो चोढालियो—ऋषि रामचन्द** । पत्र स० ४ । ग्रा० ६×४ इच । भाषा—राजस्थानी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी)

४३४०. **चोबोली लीलावती कथा--जिनचन्द** । पत्र सं० १५ । ग्रा० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल स० १७२४ । ले०काल स० १८४६ । पूर्ण । वे०स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४३४१. **चौबीसी कथा**— × । पत्रसं० ७ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४३४२. **चौबीसी व्रत कथा**— × । पत्र स० ८७ । ग्रा० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

४३४३. **जम्बूकुमार सज्झाय**— × । पत्रस० १ । ग्रा० १०½×४ इञ्च । भाषा – हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा ।

४३४४. **जम्बूस्वामी ग्रध्ययन—पद्मतिलक गरिण** । पत्र सं० ६३ । ग्रा० ८¾×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल स० १७८६ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—पद्मसुन्दरगरिण कृत हिन्दी टब्बार्थ टीका सहित है ।

४३४५. **जम्बूस्वामी कथा**— × । पत्र स० ५ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

४३४६. **जम्बूस्वामी कथा**— × । पत्रसं० ३१ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४३४७. **जम्बूस्वामी कथा-पं० दौलतराम कासलीवाल** । पत्र स० २ से २७ । ग्रा० ११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—पुण्यास्रव कथाकोश मे से है । प्रथम पत्र नहीं है ।

४३४८. **जिनदत्त कथा**— × । पत्र स० २५ । ग्रा० ११ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल स० १५०० जेष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)

प्रशस्ति—सवत् १५०० वर्षे जेष्ठ बुदि ७ रवौ गधार मन्दिरे श्रीसघे भट्टारक श्री पद्मनन्दि तच्छिष्य श्री देवेन्द्रकीर्ति तच्छिष्य विद्यानन्दि तद्दीक्षित ब्र० हरदेवेन कर्मक्षयार्थं लिखापित ।

"श्रेष्ठि ग्रर्जुन सुत भूठा लिखापित म० श्री ज्ञानभूषणस्तत्पट्टे भ० श्री प्रभचद्राणा पुस्तक । ये शब्द पीछे लिखे गये मालूम होते है ।

प्रारम्भ—

महामोहतमछन्न भुवनाभोजभानव ।
सतु सिद्ध यगना सङ्ग सुखिन सपदे जिना: ॥१॥
यदा पत्ता जगद्वस्तु व्यवस्थेय नमामि ता ।
जिनेन्द्रवदनाभोज राजहसी सरस्वती ॥२॥
मिथ्याग्रहाहिनादष्ट सद्धर्मामृतपानत: ।
आश्वासयति विश्व ये तान् स्तुवे यतिनायकान् ॥३॥

अन्तिम—

कृत्वा सारतरं तपो बहुविध शांताश्चिरं चारिका ।
कल्प नास्तमशापुरेत्यनरता दत्तो जिनाग्रिगुं तः ।
यत्रासौ सुखसागरातरगणा विज्ञाय सर्वेपिते ।
न्योन्य तत्र जिनादि वदनपराः प्रीताः स्थिति तन्वते ॥६८॥

६ सर्ग हैं ।

४३४६. **जिनदत्त चरित—गुणभद्राचार्य** । पत्र सं० ४७ । श्रा० १२×७½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित । र०काल × । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वेष्टन सं० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसका नाम जिनदत्त कथा दिया हुआ है ।

४३५०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३८ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६८० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३५१ **जिनदत्त कथा भाषा**— × पत्रसं० ५८ । ग्रा० १२×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स० १९६२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा ।

४३५२. **जिनरात्रिव्रत महात्म्य—मुनि पद्मनन्दि** । पत्र सं० ३६ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल स० १५६४ पौष बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष द्वितीय सर्ग की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वर्द्धमानस्वामि कथ वतारे जिनरात्रिव्रतमहात्म्य दर्शके मुनिश्रीपद्मनंदिविरचिते मनः सुखाय नामाकिते श्री वर्द्धमाननिर्वाणगमन नाम द्वितीय सर्गः ॥२॥

४३५३. **जिनरात्रि विधान**— × । पत्र स० १५ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४३५४. **ज्ञातृधर्म कथा टीका**— × । पत्रसं० ६६ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत संस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८७४ मगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६/७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—वगपुर मध्ये नयशेखर ने प्रतिलिपि की थी ।

४३५५. **ढोला मारुणी चौपई**— × । पत्र सं० १४ । ग्रा० १२ × ५½ इच । भाषा-राजस्थानी (पद्य) । विषय–कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

४३५६. **णमोकार मंत्र महात्म्य कथा**— × । पत्र सं० ६८६ । ग्रा० १३× ७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सचित्र प्रति है। चित्र सुन्दर है।

४३५७. ताजिकसार— × । पत्रस० ८ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५८८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३५८. त्रिकाल चौबीसी कथा—पं० अभ्रदेव । पत्रस० ५ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४३५९. त्रिलोकदर्पण कथा—खडगसेन । पत्रसं० १८४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान कथा । र० काल स० १७१३ चैत्र सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४३६०. प्रतिसं० २ । पत्र स० १५६ । आ० १२½×४½ इञ्च । ले० काल स० १७७७ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—केशोदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४३६१. प्रति सं० ३ । पत्र स० १७६ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल स० १८४६ आसोज सुदी ६ गुरुवार । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष—लिखायित देवदीदास जी लिखत व्यास सहजरामेण तक्षकपुर मध्ये ।

इस प्रति में रचना काल स० १७१८ सावण सुदी १० भी दिया हुआ है -

४३६२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १८० । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल स १८६३ सावण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—ब्राह्मण सुखलाल ने राजमहल मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

४३६३. प्रति स० ५ । पत्रस० ८२ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १७६३ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण वेष्टनस० ५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

४३६४. प्रति सं० ६ । पत्रस० १५७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १८३२ कात्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १११-८८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह टोक ।

विशेष—सुरतराम चौकडाइत भोमा चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४३६५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १६८ । आ० १० ×४½ इञ्च । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४३६६. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ११३-१३६ । ले० काल स० १७५७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

४३६७. प्रतिसं० ९ । पत्रस० १४२ । आ० ११ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

४३६८. प्रतिसं० १० । पत्र स० ११४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४३६९. प्रति सं० ११ । पत्रस० १६५ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले०काल स० १८०० । पूर्ण । वेष्टन स०६६-४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

४३७०. प्रति सं० १२ । पत्रस० १८४ । ग्रा० ८½× ५ इञ्च । ले०काल सं० १८२२ ग्राषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल पंचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष—ग्रानन्दराम गोधा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

४३७१. प्रति स० १३ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १८२४ सावन बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ३७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३७२. प्रति सख्या १४ । पत्रस० ७६ । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३७३. त्रिलोक सप्तमी व्रत कथा—ब्र० जिनदास । पत्र स० ७ । ग्रा० ११ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६३/१२४ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४३७४. दमयंती कथा—त्रिविक्रम भट्ट । पत्र सं० १२१ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत (गद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७५७ श्रावरण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—इन्द्रगढ मे मुनि रत्नविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

४३७५. दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र स० ३७ । ग्रा० १३½×६½ इञ्च । भाषा—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४३७६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३७ । ग्रा० १०½×५½ इञ्च । ले०कालस० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४३७७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २ से २५ । ग्रा० १३¾ × ७ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० १२२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—१,१० एव ११ वा पत्र नही है ।

४३७८ प्रति सं० ४ । पत्रस० २८ । ग्रा० १२¾×७¾ इच । ले०काल स० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७-७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का डूगरपुर ।

४३७९. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० २७ । ग्रा० १२½×८ इञ्च । ले०काल स० १६४३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४३८०. प्रति सं० ६ । पत्र स० २२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४३८१. प्रति सं० ७ । पत्र स० २८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४३८२. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० ३४ । ग्रा० १०½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

४३८३. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५५ । ग्रा० १२½×५½ इञ्च । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४३८४. प्रति सं० १० । पत्रसं० ३८ । ग्रा० १० ×६¾ इञ्च । ले०काल स० १६२८ ग्रासोज बदी ८ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—सौगाणी दि० जैन मंदिर करौली ।

विशेष—प्रथम पत्र नही हैं ।

४३८५. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ५८ । ग्रा० ९ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६५९ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—चिरजीलाल व गूजरमल वैद ने करौली मे प्रतिलिपि की थी ।

४३८६. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० ४१ । ग्रा० १०½×५½ इञ्च । ले०काल स० १९२७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष—पत्र स २३ ग्रौर ३६ की दो प्रतिया ग्रौर है ।

४३८७. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० २८ । ग्रा० ११×७¾ इञ्च । ले०काल सं० १९६१ कार्त्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेप्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

४३८८. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ४९ । ग्रा० ८½×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४३८९. प्रति सं० १५ । पत्रस० २४ । ग्रा० १३ × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४३९०. प्रति सं० १६ । पत्रस० ३२ । ग्रा० १०×७ इञ्च । ले०काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बू दी ।

४३९१. प्रति सं० १७ । पत्रस० २३ । ग्रा० १२½ × ८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५३७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४३९२. दशलक्षरण कथा—× । पत्रस० ३ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४३९३. दशलक्षरण कथा—× । पत्रसं० ४ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४३९४. दशलक्षरण कथा—हरिचन्द । पत्र स० १० । ग्रा० ११×४¾ इञ्च । भाषा-ग्रपभ्रंश । विषय-कथा । र०काल स० १५२४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष ग्रागे तीन कथाएं ग्रौर दी हुई है

प्रारम्भ—ग्रो नमो वीतरागाय ।

वंदिवि जिरण सामिया सिव सुह गामिय
पयडमि दह लखरगामि कहा ।

सासय सुह कारण भवरिणहितारण
भवियहरिण सुगह्न भत्ति यहा ।।

अंतिम—

सिरि मूलसंघ बलत धारगरिण । सरसइ गच्छवि संसार मरिण ।।
यहचंद पोम नदिसुवरं, सुहचन्दु भडार उप पट्टुधरं ।।
जिणचन्द सूरि गिजियडयरण, तह्न पट्ट सिहकीर्ति विसुगंरण
मुनि खेमचन्द सूरि मयमोहहरण, श्री विजयकीत्ति तवखीरण तेरणं ।।
अज्जिय सुमदरणसिरे पयरणमियं
पडित हरियदु विजयसहिय ।।
जिरण आइराह चोइहरय ।
विग्हय दहलवखरण कह सुवय ।।
उवएसय कहिय गुरणग्गलयं ।
पदहसइ चउबीस मलय ।
भादव सुदी पंचमि अइ बिमल ।
गुरुवारु विसारयरगु खलु अमल ।।
गोवागिरि दुग्ग द्दारणइय ।
तोमरह वस किल्हरण समयं ।
वर लवुकचु वसहितल ।
जिरगदास सुधम्म पुरग हण्णलय'।।
भज्जावि सुमीला गुरग सहिय ।
रणदरण हरिपारु बुद्धि गिहिय ।।
रणदह्न जे पढहि पढावहिय ।
वाचहि बखारगहि दखसहिय ।।
ते पावहि सुरगार सुक्खवर ।
पाछे पुरणु मोक्खलच्छिय वरं ।

घत्ता—

सासय सुहरत्त भवगिहिवत्त
परम पुरिमु आराहिमरगा ।
दह धम्मह भाउ पुरण सय हाउ
हरियद रणमसिय जिरगवररणा ।।
इति दस लाखरिणक कथा समाप्त ।

इसके अतिरिक्त मौनव्रत कथा (संस्कृत) रत्नकीर्ति की, विद्याधर दशमीव्रत कथा (सस्कृत) तथा नारिकेर कथा (अपभ्रंश) हरिचन्द की और है।

४३९५. दशलक्षरण कथा-ब्र० जिनदास । पत्र स० १६ । आ० ५×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १९४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४३९६. **दशलक्षण कथा** । पत्रस० ६ । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १९६८ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—व्रत कथा कोष मे से ली गई हैं । पुष्पाजलि कथा और है ।

४३९७. **दान कथा—भारामल्ल** । पत्र स० ८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाष- हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल ×।पूर्ण । वेष्टन सं० ३९९/९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३९८. **प्रति सं० २** । पत्रस० १० । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० ४००/९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३९९. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ३० । आ० ११×७½ इञ्च । ले० काल स० १९४३ । पूर्ण । वेप्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का आवा (उणियारा)

विशेष—सीलोर ग्राम मे प्रतिलिपि की गई थी ।

४४००. **प्रति सं० ४** । पत्रस० ५८ । आ० ७ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन स०** ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यों का नैणवा ।

४४०१. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० २९ । आ० १०½×६½ इञ्च । ले० काल स० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

४४०२. **प्रति सं० ६** । पत्रस० २-३४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

४४०३. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० ३२ । आ० ९½× ६ इञ्च । ले० काल स० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

४४०४. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० ३२ । ले०काल स० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

४४०५. **प्रतिसं० ९** । पत्र स० ३७ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल १८९१ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

४४०६. **प्रतिसं० १०** । पत्र स० २४ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

४४०७. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० ३० । आ० १०½ × ७½ इञ्च । ले०काल स० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

४४०८. **प्रति सं० १२** । पत्र स० २९ । आ० ९×६ इञ्च । **ले०काल** × । **पूर्ण** वेष्टन स० १५१ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी ।

४४०९. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० २९ । आ० १०½×७½ **इञ्च** । **ले०काल** **१९३७** । **पूर्ण** । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी ।

४४१०. **प्रति सं० १४** । पत्र स० ३० । आ० ८½×६ **इञ्च** । **ले०काल** × । **पूर्ण** । **वेष्टन स०** १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४४११. प्रतिसं० १५ । पत्रस० २६ । ग्रा० ११½ × ६½ इञ्च । **लेखकाल** १६३० माह बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७१ १८४ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष—१८ पत्रो की एक प्रति और है ।

४४१२. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २६ । ग्रा० १०½ × ६½ इञ्च । **ले०काल** स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४४१३. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २८ ।ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

४४१४. प्रति सं० १८ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६२६ पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मदिर बसवा ।

४४१५. प्रति सं० १६ । पत्रस० २६ । ग्रा० १२½×८ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टनस० ५३५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४४१६. दान कथा—× । पत्र स० ६४ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—निशि भोजन कथा भी दी हुई ।

४४१७. दानशील कथा—मारामल्ल । पत्र स० ७० । भाषा हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—कठमर मे लिखा गया था ।

४४१८. दानशील सवाद—समयसुन्दर । पत्र स० ७ । ग्रा० ६ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१/१७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—कोट ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४४१६. दानडी की कथा—× । पत्र स० ५ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३८-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो डूगरपुर ।

४४२०. द्वादशव्रत कथा—पं० ग्रभ्रदेव । पत्र स० ६ । ग्रा० ११½ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४४२१. द्वादशव्रत कथा (अक्षयनिधि विधान कथा)— × । पत्रसं० ३८ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४२२. द्वादशव्रत कथा— × । पत्रस० ६ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—**अजयगढ** मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४४२३. **द्रिढप्रहार—लावन्यसमय** । पत्रसं० १ । भाषा--हिन्दी । विषय-कथा । र० काल ×। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०८/६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

पाय प्रणमीय सरसति वरसति वचन विलास ।
मुनिवर केवल घरणार सुमहिम निवास ।
तुरे गायसु केवल घरे ते मुनिवर द्रिढप्रहार ऋषिराज ।
सीहतणी परि सयम पाली जिणइ सार्या सविकाज ।
कवण दीपपुर मातपिता कुण किमए प्रगटु नाम ।
कहिता कवियण सुणयो भवियण भाव धरी अभिराम ।।

अन्तिम—

सिरि वीर जिणेसर सासनि सोहइ सार ।
मगलकर केवलनाणी द्रिढ प्रहार तुरे द्रिढ प्रहार ।
केवल केरु सुणिइसार चरित्र जेणइ धार
त्याह उतारि काया करी पवित्र ।
विणध पुरन्दर समय रतन गुरु सुन्दर तमु पाय पामी ।
सीस लेख लावण्यसमय इम जगइ जयशिव गामी ।
इति द्रिढ प्रहार ।

४४२४. **दीपमालिका कल्प**······ । पत्र स० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १७७३ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४४२५. **दीपावली कल्पनी कथा**— × । पत्रस० २५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल स० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४४२६. **देवकीनोढाल**— × । पत्रस० ५८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ३५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी) ।

४४२७. **देवीमहात्म्य**— × । पत्रस० ६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—जैनेतर साहित्य है । मार्कडेय पुराण मे से ली गयी है ।

४४२८ **धन्नाचउपई—मतिशेखर** । पत्रस० १४ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १५७४ । ले०कालस० १६४० । पूर्ण । **वेष्टनसं० ११२/६** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

प्रारम्भ—

पहिलउं पणमीय पय कमल वीर जिणंदह देव ।
भविय सुणौ धन्ना तणौ चरिय भणउ संखेवि
जिणवर चिहु परिभासीउ सासणि निम्मल धम्म ।
तिह धुरि पससिउ जिह तूटइ सवि कम्म ।।२।।

पत्र ८ पर—

वहुय वचन मनि हरषियो निसिभरि धनसार ।
नीसरियो आगलि करी, सहुयइ परिवार ।।६५।।
गामि २ घरि २ करइ जिउ काम वराक ।
तऊन पूरउ हुव वरउ, धिग धिग कर्म विपाक ।

अन्तिम पाठ—

श्री उवएस गछ सिणगारो, पहिलउ रयणप्पहु गणधारो ।
गुण गोयम अवतारे ।।
जख एव सूरिद प्रसीधउ, तासु पट्टि जिणि जगि जसु लीधौ ।
सयम सिरि उरिहारो ।।२७।।
अनुक्रमदेव गुप्ति सूरीय, सिद्ध सूरि नमहि तसु सीस ।
मुनिजन सेविय पाय ।
तासु पट्टि सयम जयवतउ, गछनायक महि महिमा वतउ ।
कक्कसूरि गुरुराय ।।२८।।
सयहब्वि व्यापी पतिण गणहारी, गुणवतशील सुन्दर वाणारि ।
वरीय जेणि अणगो ।
तासु सीस **मतिशेखर** हरषिहि, पनरहसय चउदोत्तर वरसिहि ।
कीयो कवित्त अति चगो ।।२९।।
एह चरित धन्ना नउ भाविहि, भणइ गुणइं जे कहइ कहावइ ।
जे सपत्ति देइ दान ।
ते नर मन वछिय फल पावइ । घरि वइठा सवि सपद आवइ ।
विलसइ नवई रिधान ।।३०।।

इति धन्ना चउपई समाप्ता ।

संवत् १६४० ·· ··· बुदी ६ शनिवारे । खेतइ रिपनो भाईई लिख दीइ ।।

४४२९. धर्मपरीक्षा कथा—देवचन्द्र । पत्रस० २८ । आ० १२×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले० काल स० १६५५ फागुन सुदी २ । वेप्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—जगन्नाथ ने आचार्य लक्ष्मीचन्द के लिए प्रतिलिपि की थी

४४३०. धर्म बुद्धि कथा— × । पत्रसं० ८-१३० । आ० ७×५ इच । भाषा—हिन्दी । **विषय—कथा** । र०काल × । ले० काल स० १८५२ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

४४३१. **धर्मबुद्धि मत्री कथा—बखतराम।** पत्र स० १७। ग्रा० ८३/४×८३/४ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र०काल स० १८६० ग्रासोज बुदी ८। ले० काल स० १८७४ सावण सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—धर्मयुक्त बुद्धि को मत्री के रूप मे सलाहकार माना गया है।

४४३२. **नरकनुढाल—गुणसागर।** पत्रस० २। ग्रा० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल० ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

४४३३ **नलदमयंती चउपई**— ×। पत्रस० ५६। ग्रा० ९×४१/२ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र०काल ×। ले०काल ×। ग्रपूर्ण। वेप्टन स० ११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

४४३४. **नलदमयंती सबोध—समयसमुन्दर।** पत्रस० ३०। ग्रा० ६३/४×४१/४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल स० १६७३। ले० काल स० १७१८ मगसिर सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० १३६५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर।

विशेष—ग्रजयगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

रचना का ग्रन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

> सवत मोलतिहुत्तरइ मास वसात ग्रणद।
> नगर मनोहर मेडतो जिहा वासपूज्य जिणद।
> वासुपूज्य तीर्थंकर प्रसाद गछ खरतर गह गहइ।
> गछराय जयप्रधान जिनसिघसूरि सद्गुरु जस लहइ।
> उवझाय इम कहइ समयसुन्दर कीयो ग्रग्रह नेतसी।
> चउपई नलदमयती किगी चतुरमागास चित्त वसी।

इति श्री नल दमयती सम्बन्ध भापसदेव कृत सप्तकोटी स्वर्ग वृष्टि।

४४३५. **नलोपाख्यान**— ×। पत्रस० ४७। ग्रा० १२×७१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टनस० ५२५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—राजा नल की कथा है।

४४३६ **नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण।** पत्रस० २२। ग्रा० १०३/४×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल स० १६७५ ग्रासोज सुदी ९। पूर्ण। वेष्टन स० ७०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

४४३७. **प्रति सं० २।** पत्रस० २६। ग्रा० ६३/४×४ इञ्च। ले० काल स० १८३० चैत्र सुदी ५। ग्रपूर्ण। वेष्टनस० ६८२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—इसका ग्रपर नाम नागकुमार कथा भी है।

४४३८. **प्रति स० ३।** पत्रस० ३८। ग्रा० ९×४१/२ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३४८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

४४३६. प्रति सं० ४। पत्र स० २७। आ० १२× ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८७/१४८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४४४०. प्रतिसं० ५। पत्र स० २-१५। आ० ११ × ४ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २५३/१४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर।

४४४१. प्रति सं० ६। पत्रस० ३-२७। ले०काल स० १६१६। अपूर्ण। वेष्टन स० २५४/१३३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति—संवत् १६१६ वर्षे गुरु कोटनगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये भट्टारक श्री शुभचन्द्र शिष्य मुनि वीरचन्द्रेण ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ स्वहस्तेन लिखित शुभमस्तु। ब्रह्म धर्मदास।

४४४२. प्रतिसं० ७। पत्र स० २-२०। आ० १०×४ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २३६-१२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर।

४४४३. प्रतिसं०। पत्र स० २०। ले० काल १६०७। अपूर्ण। वेष्टन स० ४७/१२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है। "ब्रह्म नेमिदास पुस्तकमिद।"

४४४४. प्रति स० ६। पत्र स० २८। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल सं० १७१४। पूर्ण। वेष्टन स० ६०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७१४ वर्षे भादो मासे कृष्णपक्षे ५ बुधे श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मकीर्ति तत्पट्टे श्री सकलकीर्ति साधु श्री द्वारकादास ब्रह्म श्री परमस्वरूप अनातरामेण लिखित। ललितपुर ग्रामेषु मध्ये श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय शुभ भवतु।

४४४५. नागश्रीकथा—ब्र० नेमिदत्त। पत्रस० २०। आ० १०¾×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय कथा। र०काल × ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६। प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

४४४६. प्रति सं० २। पत्रस० ४१। आ० १०½×५½ इञ्च। ले० काल स० १६०८। पूर्ण। वेष्टनस० २२/१२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर कोटडियो का, डूगरपुर।

प्रशस्ति—सवत् १६०८ वर्षे पौष सुदी १४ तिथौ भृगु दिने श्री घनोघेन्दुगे श्री आदिनाथ चैत्यालये मूलसंघे सारस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भ० पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भ० देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विद्यानदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भारतिभूषणदेवा तत्पट्टे प० श्री लक्ष्मीचंददेवा तत्पट्टे भ० श्री वीरचददेवा श्री जिनचन्देन लिखापित।

४४४७. प्रति सं० ३। पत्रस० १६। आ० १०× ५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १२३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूदी।

४४४८. प्रतिसं० ४। पत्र स० १८। आ० १०×४¾ इञ्च। ले० काल स० १६४२ माह सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० २४१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रशस्ति सुन्दर है।

४४४६. निर्झरपंचमी विधान- × पत्र स० ३। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। **विषय-कथा**। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर **दीवानजी** कामा।

४४५०. निर्दोषसप्तमी कथा—ब्रह्म रायमल्ल। पत्रस० २। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५१-१८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

अन्तिम—

जिनपुराण मह इम सुण्णो,
जिहि विधि ब्रह्मरायमल भण्यो ॥५६॥

४४५१. निशिभोजनकथा—किशनसिंह। पत्रस० २-१५। आ० १४ × ६½ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी। विषय-कथा। र०काल स० १७७३ सावन सुदी ६। ले० काल स० १६१८। अपूर्ण। वेष्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बयाना।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

माथुर बस तराय बोहरा को परधान।
सगही कल्याणराव पाटनी बखानिये।
रामपुर वास जाको सुत सुखदेव सुधी।
ताको सुत कृष्णसिह कविनाम जानये।
तिहि निशभोजन त्यजन व्रत कथा सुनी
ता कीनी चौपई सुआगम प्रमानिये।
भूलिचूकि अक्षर जु धरे ताको
बुध जान सोधि पढो विनती हमारी मानिये।

छप्पय

प्रथम नागश्रिय चरित्र देवभाषा मय सोहै
सिघनदि शिष्य नेमिदत्त करता बुध जोहै।
ता अनुसार जु रची वचनिका दसरथ पडित।
व्रत निशभोजन त्यजन कथन जामे गुण मडित।
चौपई बध तिह ग्रन्थ कौ कियो किशनसिंह नाम कवि
जो पढय सुनय सरधान कर अनुक्रम शिव लह भवि ॥५॥

दोहा

सवत सत्रैसै अधिक सत्तर तीन सुजान।
श्रावन सित जटवार भृग हर पूर्णता ठान ॥६॥
कथा माहि चौपई च्यारसे एक बखानी
इकतीसापन छप्पन दोय नव बोधक जानी।

सब इक ठौर किये चारसे सत्रह गनिये
मुज मति लघु कछु छद व्याकरण न भनिये ।
बढ घट जवरल पद मात्र जो होय लखविमो दीनती
कर मुद्ध पढेजे तज कर जौर करै कवि विनती ।।
रचना दूसरा नाम 'नागश्रीकथा भी है

४४५२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३६ । आ० १०×५½ इंच । **ले०काल सं०** १८१२ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ (अ) । **प्राप्ति स्थान**—य दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

४४५३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२ । आ० ६×४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मन्दिर करौली ।

४४५४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३२ । आ० ६×६ इन्च । ले० **काल सं०** १६४० । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

४४५५. प्रति स० ५ । पत्रस० २२ । आ० १२×५½ इच । **ले०काल** स० १६७६ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४४५६. प्रति सं० ६ । पत्रसं० २६ । ले०काल स० १६०५ -वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४४५७. प्रति सं० ७ । पत्र स० १७ । ले० काल स०१८१६ । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४४५८. प्रति सं० ८ । पत्र स० ३१ । आ० १०½×५ इन्च । ले० **काल स०** १८४७ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का नैणवा ।

४४५९. प्रति स० ६ । पत्रस० २३ । ले०**काल सं०** १८४४ पूर्ण । **वेष्टनस०** ५७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४४६०. निशि भोजनकथा—भारामल्ल । पत्र स० १३ । आ० १०½×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवनजी कामा ।

४४६१. प्रति सं० २ । पत्र स० १२ । आ० १३×८ इन्च । ले० काल स० १६५२ । वेष्टन स० ४६/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

४४६२. प्रति सं० ३ । पत्र स० १७ । आ० १०×३½ इन्च । ले० काल स० १६०२ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४२ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

४४६३. प्रति सं० ४ । पत्रस० १३ । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ४३ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

४४६४. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १२ । आ०१२×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टनस० १६८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४४६५. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० २-१४ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल स १६३७ । पूर्ण । **वेष्टन** सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

४४६६. **प्रति सं० ७** । पत्र स० २१ । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

४४६७. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० २६ । आ० ७$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल स० १६१८ अगहन बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

४४६८. **प्रतिसं० ९** । पत्रसं० १३ । आ० १०×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स १६३५ सावन बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

४४६९. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० २१ । आ० ७ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—चदेरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

४४७०. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० १४ । आ० १०$\frac{1}{2}$× ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । **पूर्ण** । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूदी ।

४४७१. **प्रति सं० १२** । पत्रस० ७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०१/६७ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७२. **प्रति स० १३** । पत्र स० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४०२ १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७३. **निशिभोजन कथा**— × । पत्र स० १६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा - हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १९५७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

४४७४. **नंदीश्वर कथा—शुभचन्द्र** । पत्रस० पत्र स०११ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

विशेष—इसे अष्टाह्निका कथा भी कहते है ।

४४७५. **नंदीश्वर व्रत कथा** । पत्र स० ८६ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७६. **नंदीश्वर व्रत कथा** — × । पत्रस० २-६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{4}$ इञ्च । **भाषा**—संस्कृद । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८२७ ज्येष्ठ बुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४४७७. **नन्दीश्वर कथा**— × । पत्रस० ८ । आ० १० × ४½ इच । भाषा–सस्कृत । **विषय**—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०६/८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४४७८. **पंचतंत्र**— × । पत्रस० २-६३ । आ० १०½ × ४½ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५८ । **प्राप्ति स्थान**–भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४७९. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १०३ । आ० १०¾ × ४½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४८०. **पचमीकथा टिप्पण— प्रभाचन्द्र** । पत्र स० २-२० । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा–अपभ्र श, सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिह (टोक) ।

४४८१. **पचपरवी कथा –ब्रह्म विनय** । पत्रस० ६ । आ० १०½ × ५½ इच । भाषा-हिन्दी प०। विषय-कथा । र०काल स० १७०७ सावण सुदी २ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रघुनाथ ब्राह्मण गूजर गौड ने लिपि की थी ।

अन्तिम—

> मतरासै सत्तोतरै कही सावरण बीज उजाली सही ।
> मन माहै धरियो आनद, सकल गोठ सुखकरी जिण द ।
> मूलसघ गछ मडलसार, महावली जीन्यो जिहूपार ।।
> जसकीरत सभै गछपती, सोभै दिगवर नवै नरपति ।
> माथ मिघाडो रहै अतूप, सेवा करे बडैरा भूप ।
> महाव्रती अणुव्रती धार, सेवै चरण फिरत है लार ।।
> तास शिष्य विणमें ब्रह्मचार, करी कथा सब जन हितकार ।
> थोडी बुद्धि रणीकी चालि, जाणे गोत बाकलीवाल ।
> आनन्दपुर छै आनद थानि, भला महाजन धरम निधान ।।
> देव शास्त्र गुरु मानै आण, गुणग्राहक रु सकलसुजाण ।
> पांच परवी कथा परवान, हितकर कही भविक हित जानि ।
> मन बच तन सुद्धर सिर थान पढै सुनै पावै निरवाण ।।

४४८२. **पचाख्यान—विष्णुदत्त** । पत्र स० १८६ । आ० १०½ × ५ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल स० १८५– । पूर्ण । वे० स० १६/१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—सहजराम व्यास ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की थी । द्रोणीपुर (दूनी) मे पार्श्वनाथ के मन्दिर में नेमीचद के पठनार्थ लिखा गया था ।

४४८३. **पंचालीनी व्याह—गुणसागर सूरि** । पत्र स० १ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—२५ पद्यों में वर्णन है ।

अन्तिम—सप्तारणमी हालमइ पंचालीनो व्याह ।
कहि श्री गुणसागर सूरि जी गजपुर माहि उछाह ।

४४८४. **परदारो परशील सज्भाय—कुमुदचन्द** । पत्र स० १ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४४८५. **परदेसी राजानी सज्भाय**— × । पत्र स० १ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४४८६. **पर्वरत्नावलि—उपाध्याय जयसागर** । पत्रस० २० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्रत कथा । र०काल सं० १७४८ । ले० काल स० १८५१ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १२५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—कोटा के रामपुरा मे वासुपूज्य जिनालय मे प० जिनदास के शिष्य हीरानद ने प्रतिलिपि की ।

४४८७. **पल्य विधान कथा** – × । पत्रस० ७ । आ० १०½ × ४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

४४८८. **पल्यविधान कथा—खुशालचन्द काला** । पत्रस० १५६ । आ० १०×७ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । र०काल स० १७८७ फागुण वुदी १० । ले०काल स० १६३८ सावण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

विशेष—अक्षयगढ़ मे प्रतिलिपि की गयी ।

४४८९. **पल्यविधान व्रतोद्यापन कथा—श्रुतसागर** । पत्रस० ५८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १८२६ काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४९०. **पल्यव्रत फल**— × । पत्रस० ११ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४९१. **पुण्यास्रव कथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र** । पत्र स० १४८ । आ० १०½ × इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा र०काल × । ले०काल स० १८४० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४९२. प्रति सं० २ । पत्रस० १३५ । ग्रा० ६३/४ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४९३. प्रति सं० ३ । पत्रस० ११४ । ग्रा० १३१/२ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—बूंदी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४४९४. प्रति स० ४ । पत्र स० १५६ । ग्रा० १२१/२ × ५१/२ इञ्च । ले०काल स० १८३६ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष-जयपुर नगर के लश्कर के मन्दिर मे साह सेवाराम ने प० केशव के लिए प्रतिलिपि की थी ।

४४९५. प्रति स० ५ । पत्र स० २४८ । ग्रा० १०३/४ × ४३/४ इञ्च । ले० कालस० १८९४ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

४४९६. प्रति स० ६ । पत्रस० १०३ । ग्रा० १२ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४१९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

४४९७. प्रति सं० ७ । पत्रस० २३८ । ग्रा० १० × ४१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२-३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)

४४९८. प्रति सं० ८ । पत्रस० १८७ । ग्रा० १०१/२ × ४१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४४९९. प्रति सं० ९ । पत्रस० १४८ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टन सं० ५२** । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दीवानजी कामा

४५००. प्रति सं० १० । पत्र स०.... । ग्रा० १३×५३/४ इंच । ले०काल स० १५९० बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भ० सकलकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्री विजयकीर्ति तत्पट्टे श्री शुभचन्द्र प्रवर्तमाने सवत् १५९० वर्षे बेशाख सुदी ४ शुक्रे ईडर वास्तव्ये हूबड ज्ञातीय साह लाला भार्या श्राविका दाडिमदे तयो पुत्री बाई पातलि तथा ईडर वास्तव्य हुबड ज्ञातीय दो देवा लघु भ्राता दो हासा तस्य भार्या श्राविका हांसलदे एताभ्या पुण्यास्रवश्राविकभिधान ग्रन्थ ज्ञानावरणादिकर्मक्षयार्थ ब्र० तेजपालार्थ लिखापित शुभ ।

४५०१. पुण्यास्रवकथाकोश भाषा—दौलतराम कासलीवाल— × । पत्र स० १४७ । ग्रा० १०१/२ × ४१/२ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र०काल स० १७७७ भादवा बुदी ५ । ले०काल सं १९५५ मगसिर बुदी १२ पूर्ण । वेष्टन स० १५४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कवि की यह प्रथम कृति है जिसे उन्होने अपने आगरा प्रवास मे समाप्त किया था ।

४५०२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २०० से ३८८ । ग्रा० १०१/२×७१/२ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९९५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४५०३. प्रति सं० ३ । पत्र स० २०० । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४५०४. प्रति सं० ४ । पत्रस० २४४ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६५१ आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—पुस्तक हेमराज व्रती की है । छबडा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४५०५. प्रति सं० ५ । पत्र स० २१० । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टन स०** ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर (बूंदी)

४५०६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२५-३६४ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

४५०७. प्रति सं० ७ । पत्रस० २४३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×८$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १६३८ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—भैरुलाल पहाडिया चूरु वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४५०८ प्रति सं० ८ । पत्रस० ३३७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १०८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती दूनी मन्दिर (टोंक)

विशेष—अन्तिम पृष्ठ आधा फटा हुआ है ।

४५०९. प्रति सं० ९ । पत्रस० २१६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६०५ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

४५१०. प्रति सं० १० । पत्र स० २२३ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल स० १८२३ बैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

४५११. प्रति सं० ११ । पत्रस० ३५६ । आ० १०× ६ इञ्च । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

४५१२. प्रति स० १२ । पत्र स० २३७ । आ० ११×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैंणवा

विशेष—गुटका रूप मे है लेकिन अवस्था जीर्ण है ।

४५१३. प्रति सं० १३ । पत्रस० २४६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

४५१४. प्रति सं० १४ । पत्रस० १२५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्तिस्थान**- दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

४५१५. प्रति सं० १५ । पत्र स० २६१ । ले० काल स० १८७० ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती बडा मदिर डीग ।

४५१६. प्रति सं० १६ । पत्र सख्या १५१ । ले०काल स० १८८२ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

४५१७. **प्रति सं० १७** । पत्र स० ३५२ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना में प्रतिलिपि हुई थी ।

४५१८. **प्रति सं० १८** । पत्रसं० ३२६ । आ० १० × ७ इञ्च । ले० काल स० १८६६ आषाढबुदी २ । पूर्ण । वेप्टन स० ६६-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—थाणा निवासी गोपाललाल गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

४५१६. **प्रति सं० १६** । पत्रस० ३२५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १७८८ मगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—खोहरी मे लिखा गया था ।

४५२०. **प्रति सं० २०** । पत्र स० १८७ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले० काल × ।अपूर्ण । वेष्टन स० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४५२१. **प्रति सं० २१** । पत्रस० १-३६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बयाना ।

४५२२. **प्रति सं० २२** । पत्र स० २८४-३८४ । ले०काल स० १८७० चैत सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बयाना ।

विशेष—जीवारामजी मिश्रा वैर वालो ने प्रतिलिपि कराई थी ।

४५२३ **प्रति सं० २३** । पत्र स० २८० । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति अपूर्ण है किन्तु महत्वपूर्ण है ।

४५२४. **प्रति स० २४** । पत्रस० १८३ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले०काल स० १६२६ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

४५२५. **प्रति सं० २५** । पत्र स० २३६ । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४५२६ **प्रति सं० २६** । पत्र स० २६५ । ले०काल स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—बेणीराम चादवाड ने ग्रन्थ लिखवाया था ।

४५२७ **प्रति स० २७** । पत्र स० १५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

४५२८. **प्रति सं० २८** । पत्रस० १३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५२६. **प्रति सं० २६** । पत्र सं० १०६ से २२३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५३०. प्रति सं० ३० । पत्र सं० १२६ । ले० काल १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५३१. प्रति सं० ३१ । पत्र स० २०१ । ग्रा० १३ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८७१ ग्राषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर, ग्रलवर ।

४५३२. प्रति सं० ३२ । पत्र स० २८० । ले०काल स० १८६६ ग्रापाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७/४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मदिर ग्रलवर ।

४५३३. प्रति सं० ३३ । पत्र स० २६० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८/८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर ग्रलवर ।

४५३४. प्रति सं० ३४ । पत्रस० २६० । ग्रा० १२ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८५८ चैत्र शुक्ला ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मदिर ग्रलवर ।

४५३५. प्रति सं० ३५ । पत्र स० ५०६ । ग्रा० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० २१२-८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४५३६. प्रति सं० ३६ । पत्र सं० ३८५ । ग्रा० १२¾ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १८८४ ग्रासोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—फतेहपुर वासी हरकठराय भवानीराय ग्रग्रवाल गर्ग ने मिश्र राधाकृष्ण से सामनी नगर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

४५३७. प्रति सं० ३७ । पत्र स० १-१८६ । ग्रा० ६ × ४½ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४५३८. प्रति सं० ३८ । पत्र स० ३३६ । ग्रा० ११ × ७½ । ले० काल स० १६५३ सावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६-७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

४५३९. प्रति स० ३९ । पत्रस० २३४ । ग्रा० १०½ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५/४५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—शेरगढ नगर मे ग्राचारजजी श्री सुखकीर्त्तिजी बाई रूपा चि० तत् शिष्य पडित मानक चन्द लिखी ।

४५४०. पुण्यास्त्रवकथा कोश— × । पत्रस० ३२७ । ग्रा० १२½ × ५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १८१६ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४५४१. पुण्यास्त्रवकथा कोश— × । पत्र स० ८४५ । ग्रा० ७¾ × ३¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८७० भादो सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१/५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—लकडी का पुट्ठा चित्र सहित बडा सुन्दर है ।

४५४२. पुण्णासव कहा—पं० रइधू । पत्र स० ३-८१ । भाषा-ग्रपभ्रंश । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सीम लगने से ग्रक्षरों पर स्याही फिर गई है ।

४५४३. पुरंदर कथा—भावदेव सूरि । पत्र सं० ७ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३-९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बडा बीसपंथी दौसा ।

४५४४. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १३ । ले०काल स० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५४५. पुष्पांजलि कथा सटीक— × । पत्र स० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६० । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित जीर्ण है ।

४५४६. पुष्पांजलि विधान कथा— × । पत्रस० ११ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४५४७. पुष्पांजलि व्रत कथा—खुशालचन्द । पत्रस० १३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा दीवानजी बयाना ।

विशेष—द्यानतराय कृत रत्नत्रय पूजा भी दी हुई है ।

४५४८. पुष्पांजली व्रत कथा—गंगादास । पत्र स० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८९८ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५/१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

४५४९. पुष्पांजलि व्रत कथा—मेधावी । पत्रसं० ३१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल स० १५४१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४५५०. पूजा कथा (मैंडक की) ब्र० जिनदास । पत्रसं० ६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०५–१०६ । प्राप्ति **स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४५५१. प्रत्येक बुद्ध चतुष्टय कथा— × । पत्र स० १५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७०३ भादवा । पूर्ण । वेष्टन स० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४५५२. प्रद्युम्न कथा प्रबन्ध—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० ५५ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७६२ चैत सुदी ३ । ले०काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० २५८/१०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

गुटका साइज है । मलारगढ मे आणद ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

४५५३. प्रियमेलक चौपई— × । पत्रस० ८० । आ० ५×४ इञ्च । **भाषा—**हिन्दी । **विषय**—कथा । र० काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७४ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गुटका है । दान कथा मे प्रियमेलक का नाम आया है एक दान कथा और भी दी हुई है ।

४५५४. प्रियमेलक चौपई—समयसुन्दर । पत्र स० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**–राजस्थानी (पद्य) । **विषय–कथा** । र० काल सं० १६७२ । ले०काल सं० १६८० । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

मंगलाचरण—

प्रणम् सद्गुरु पाय, समरु सरसती सॉमणी ।
दान धरम दी पाप, कहिसि कथा कौतक भणी ।
धरमा माहि प्रधाना, देता रूडा दीसियइ ।
दीधउ वरसी दान, अरिहत दीक्षा अवसरइ ।।

सोरठिया दोहा—

उत्तम पात्र तउ एह, साधन इदी जउ सूझ तउ ।
लहियइ लाछि अछेह, अटलिक दान जउ आपियइ ।।
अति मीठा आहार सरवरा देज्यो साधना इ ।
सुख लहिस्यउ श्रीकार, फल बीजा सरिषा फलइ ।।४।।
प्रथिवी माहि प्रसिद्ध, सुणिपइ दान कथा सदा ।
प्रियमेलक अप्रसिद्ध, सरस घणु सम्बन्ध छई ।।
सुणउ मिलइ जउ सेवण सुगुता जेउ घस्यइ ।
उमाण सहि अगलित्र के मुझ वचनि को रस नही ।।

× × × × ×

राग वमराडी ढालछठी जलालीयानी—

तिण अवसरि तर सीथ दूरि, रूपवती करइ अरदास ।
जीवन मोराजी कु ली री काया तावड आकर उरि ।
पाणिगी लागी मुनइ प्यास ।।१।।
पाणीरि पायउ हु तरसी थई खिण एक मइ नव माय जीए ।
कठ मूकइ काया तपईरि जीभइ बोल्यउ न जाय ।।

× × × × ×

दूहा—

कथा षाट मू की किहर कातरहितकुमार ।
नगर कुमर ते निरखता निरखी त्रिए द्वे नारि ।।
के इक दिन रहना थका विस्तरी सगलइ बाद ।
कुमरी क्रिया त्रिण तपस्या करइ परमारथ न प्रीछना ।।
बोल एक बोलइ नही दिव्य रूप वृष देह ।
अन्न पान को आणि घइ नउते खापइ तेह ।।

राजामती आवी रली साचउ एह नउ मत्त ।
जिम तिम बोली जेउ जइं चिट पट लागी चित्त ॥

× × × × ×

अन्तिम प्रशस्ति—

सवत मोल बहुत्तरि मेडता नगर मझार ।
प्रियमेलक तीरथ चउपइरी कीधी दान अधिकार ॥
कवर उभावक कौतकीगि 'जेसलमेरा जाग ।
चतुर जोडावी जिण ए चउपई मूल आग्रह मुलताण ॥
इण चौउपई एह विशेष छइरि सगवट सगली ठाम ।
बीजी चउपई बहु देख जोरि नहि सगटनु ना ॥
श्री खरतर गछ सोहता श्री जिणचन्द्र सूरीस ।
शिष्य सकलचन्द्र सुभ दिसारि समयसुन्दर तसु सीस ॥
जयवता गुरू राजिया श्री जिनसिंह सूरि राय ।
समयसुन्दर तसु सनिधि करी इम भणइं उवझाय ॥
भणता गुणता भावसु सामलता सु विनोद ।
समयसुन्दर कहइ सापजर पुण्य अधिक परमोद ॥

सर्वगाथा—२०३० । इति श्री दानाधिकार प्रियमेलक तीर्थ प्रबंध सिंहलसुत चउपई समाप्त ॥ सवत् १६८० वर्षे मार्गसिर सुदी १४ दिन लिखत वरधमान लिखत । (बाई भमरा का पाना) ।

४५५५. पुण्यसार चौपई—पुण्यकीर्त्ति । पत्रस० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १६६० मगसिर सुदी १० । ले० काल स० १७०० । **पूर्ण** । वेष्टन स० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—यह सागानेर मे रचा गया एव जाठगा ग्राम मे लिखा गया था ।

४५५६. बुधाष्टमी कथा— × । पत्रस० ३ । आ० १२×५ इञ्च । **भाषा**-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८४० भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० **४१** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—जैनेतर साहित्य है ।

४५५७. वैतालपर्चावंशतिका—शिवदास । पत्र स० ३६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० **१४३५** । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४५५८. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४२ । आ० १०×४इञ्च । **ले०काल** × । **पूर्ण** । वेष्टन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२५ कहानियों का सग्रह है ।

४५५९. वैतालपच्चीसी— × । पत्रस० २० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । **विषय**—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४५६०. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ७ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४५६१. **बकचोर कथा—(धनदत्त सेठ की कथा) नथमल** । पत्रसं० ३३ । भाषा—हिन्दी । विषय कथा । र०काल सं० १७२५ आषाढ सुदी ३ । ले०काल स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

४५६२. **भक्तामरस्तोत्र कथा**— × । पत्र स० १२ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२/५०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

४५६३. **भक्तामरस्तोत्र कथा—विनोदीलाल** । पत्र स० २२७ । आ० ६½ × ६¾ इच । भाषा—हिन्दी (ग. प.) । विषय-कथा । र० काल सं० १७४७ सावरण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर नैणवा ।

४५६४. **प्रतिसं० २** । पत्र स० २०६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—बसवा मे प्रतिलिपि हुई ।

४५६५. **प्रति स० ३** । पत्रस० १६३ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

४५६६. **प्रति स०** ४ । पत्र सं० २०४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

४५६७. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० १०८ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

४५६८. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० फुटकर पत्र । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान** — अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

४५६९. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १८७ । आ० १२ × ७ इञ्च । लेखन काल स० १६१४ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे०सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**-अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

४५७०. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० ३१८ । ले० काल स० १८६६ चैत सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १४४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—लालजीमल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

४५७१. **प्रतिसं० ९** । पत्रस० १५२ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल स० १८३६ चैत बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—श्लोक स० ३७६० । प्रधान आनन्दराव ने प्रतिलिपि की थी ।

४५७२. **प्रतिसं० १०** । पत्रस० ४१ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर कामा ।

४५७३. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० १३८ । आ० ११×५½ इंच । ले०काल स० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—पं० खेमचन्द ने प्रतिलिपि की थी। स० १९२९ मे अनन्त चतुर्दशी के व्रतोद्यापन मे साहजी सदाराम जी के पौत्र तथा चि० अमीचद के पुत्र जोखीराम ने ग्रंथ मन्दिर फतेहपुर में विराजमान किया।

४५७४. प्रति सं० १२। पत्रस० १७८। आ० १०×६ इन्च। ले०काल सं० १८५४ कार्त्तिक सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनस० २५/२८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सौगाणी मदिर करौली।

विशेष—२ प्रतियो का मिश्रण है।

४५७५. प्रति सं० १३। पत्र स० १८२। आ० ९½×६½ इच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३८-२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

४५७६. प्रति सं० १४। पत्रसं० स० २१३। आ० १२× ५½ इन्च। ले० काल स० १८०२। पूर्ण। वेष्टनस० २४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

४५७७. प्रति स० १५। पत्रस० १९६। आ० १३½×८½ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १०। **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

४५७८ भक्तामर स्तोत्र कथा—नथमल। पत्र स० ६१। आ० ९×५¾ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय कथा। र० काल स० १८२९ जेठ सुदी १०। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—करौली मे लिखी गई थी।

४५७९. प्रति स० २। पत्रस० ५२। आ० ११ × ५½ इन्च। ले०काल स० १८२९। पूर्ण। वेष्टन स० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—कल्याणपुर मे बाबा रतनलाल भौसा ने प्रतिलिपि की थी।

४५८०. प्रति सं० ३। पत्रस० १९८। ले०काल स० १९२१। पूर्ण। वेष्टन स० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

४५८१. प्रति सं० ४। पत्र स० ४७। आ० १०½×६ इञ्च। ले०काल स० १८३० फागुन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० १२३। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष –बगालीमल छावडा ने करौली मे प्रतिलिपि करवाई थी।

४५८२. भद्रबाहुकथा—हरिकिशन। पत्र स० ३९। आ० १२ × ५½ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल स० १९७५ सावण सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० १४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी।

४५८३. भरटक कथा — ×। पत्रस० १३। आ० ११×४½ इन्च। भाषा-सस्कृत गद्य। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल × पूर्ण। वेष्टन स० ९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—२७ कथाएं है।

४५८४. भविसयत्तकहा—धनपाल। पत्र सं० २-८८। आ० ११×५ इन्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ९५७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४५८५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १३८ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

४५८६. **भविष्यदत्त कथा—ब्र० रायमल्ल** । पत्र सं० ८० । आ० ६½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४ । ले०काल सं० १८२६ माघ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर बयाना ।

४५८७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४६ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

४५८८. **भविष्यदत्त कथा**— × । पत्र सं० ३१ । आ० ११½ × ६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

विशेष—३१ से आगे पत्र नहीं है ।

४५८९. **मधुमालती कथा**— × । पत्र सं० २८-१५८ । आ० ९ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८३५ वैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह ।

४५९०. **मनुष्य भवदुर्लभ कथा**— × । पत्र सं० २ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४५९१. **मलयसुन्दरी कथा—जयतिलकसूरि** । पत्र सं० २-५९ । आ० १२ × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल सं० १५२० । वेष्टन सं० ७६५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—ग्रंथ सं० ८३२ । संवत् १५२० वर्षे माघ वदि मंगले लिखित वा. कमलचन्द्र प्रमादात् त. पाचाकेन मूंडा ग्रामे श्री रस्तु । शुभमस्तु ।

४५९२. **मलयसुन्दरी कथा**— × । पत्रसं० ४० । आ० ११ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—४० से आगे पत्र नहीं है । प्रति प्राचीन है ।

४५९३. **महायक्षविद्याधर कथा—ब्र० जिनदास** । पत्र सं. १० । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४५९४. **महावीरनिर्वाण कथा**— × । पत्रसं० ५ । आ० ७ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४५९५. **माधवानल कामकंदला चौपई—कुशललाभ** । पत्र सं० २-१२ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-राजस्थानी । विषय-कथा । र०काल सं० १६१६ फागुण सुदी १४ । ले० काल सं० १७१४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना ।

विशेष—नाई ग्राम मध्ये लिखत ।

४५९६. **प्रति सं० २** । पत्र स० ३१ । आ० ९×५½ इञ्च । ले० काल स० १८०३ चैत्र वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

४५९७. **माधवानल चउपई**—× । पत्र स० ८ । आ० ९½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प० जगजीवन कुशल ने प्रतिलिपि की थी ।

४५९८. **मुक्तावली व्रत कथा—सुरेन्द्रकीर्त्ति** । पत्र सं० ५ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सुरेन्द्रकीर्त्ति सकलकीर्त्ति के शिष्य थे ।

४५९९. **मेघकुमार का चोढाल्या—गणेस** । पत्र स० २ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४६००. **मौन एकादशी व्रत कथा—ब्रह्म ज्ञानसागर** । पत्र सं० १३६-१६६/३१ पत्र । आ० ११×५ इच । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—दौलतरावजी तेरापथी की बहू ने लिखा था ।

४६०१. **मृगचर्मकथा**—× । पत्र स० ४ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६३/२२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)

विशेष—गिरधरलाल मिश्र ने देवडा मे प्रतिलिपि की थी ।

४६०२. **मृगापुत्र सज्झाय**—× । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४६०३. **यशोधरकथा—विजयकीर्ति** । पत्र सख्या १७ । आ० ९½×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १५३९ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६०४. **रतनाहमीररी बात**—× । पत्र स० २४-५१ । आ० × ४ इञ्च । भाषा-राजस्थानी गद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५० । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—बडे ग्रन्थ का एक भाग है ।

४६०५. **रत्नपाल चउपई—भावतिलक** । पत्र सं० १२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र० काल सं० १६४१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

४६०६. **रत्नत्रयव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति** । पत्रस० ६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४६०७. **रत्नत्रयकथा—मुनि प्रभाचन्द्र** । पत्रस० ८ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६०८. **रत्नत्रयकथा**—× । पत्र स० ४ । आ० ११ × ४ ½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल स० १८८० मगसिर बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६०९. **रत्नत्रयकथा**—× । पत्र स० ५ । आ० ११×८ इच । भाषा-सस्कृत । । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १६३६ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२१४ । **प्राप्ति स्थान**--भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४६१०. **रत्नत्रयकथा**—× । पत्रस० ५ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६११. **रत्नत्रयकथा टब्बा टीका सहित** । पत्रस० २ । आ० ११¾ × ५¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले० काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०–२०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिह (टोक)

४६१२. **रत्नत्रयकथा**—× । पत्रस० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

४६१३. **रत्नत्रयविधानकथा—ब्र० श्रुतसागर** । पत्र स० ६ । आ० ११½ × ५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३८ ।**प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

४६१४. **रत्नत्रयविधानकथा-पद्मनंदि** । पत्रसं० ७ । आ० ११ × ५ इच । भाषा–सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२७।१३४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४६१५. **रत्नशेखर रत्नावतीकथा** । पत्र स० १६ । आ० ११ × ४¾ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्द स्वामी बूदी ।

४६१६. **रयणागरकथा**—× । पत्र स० २४ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०५।६५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४६१७. रविवारकथा—रइधू । पत्रसं० ४ । भाषा-अपभ्रंश । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४६१८. रविवार प्रबन्ध—ब्र० जिनदास । पत्रसं० ५ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

सवत १७३४ वर्षे आसोज सुदी १० शुक्रे श्री राजनगरे श्री मूलसंघे श्री आदिनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिस्तदाम्नाये मुनि श्री धर्म भूषण तत् शिष्य ब्रह्म बाघजी लिखित ब्रह्मरायमाण पठनार्थं ।

४६१९. रविव्रतकथा--सुरेन्द्रकीर्ति । पत्रसं० १५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल सं० १७४४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २५० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

आदिभाग—

प्रथम सुमरि जिनवर चौबीस चौदहसे त्रेपन मुनि ईस ।
सुमरौ सारद भक्ति अनत, गुरु देवेन्द्रकीर्ति महन्त ।।
मेरो मन इक उपजौ भाव, रविव्रत कथा करन को चाव ।
मैं तुक हीन जु अक्षर करौ, तुम गन पर कवि नीकर्कै धरो ।।

अन्तिम भाग—

सुरेन्द्रकीर्ति अत्र कही रवि गुन रूप अनूप सब ।
पडित मृतु कवि सुधवर लीजै, चूक सुधाक अब
गढ गोपाचल गाम नौ, सुभथान बखानौ ।
सवत विक्रम भूप गई, भलौ सत्रह सै जानौ ।।
तौ ऊपर चवालीस जेठ सुदी दसमी जानो
वार जो मगलवार हस्त नक्षत्र जु परियो तब ।
हरि विबुध कथा सुरेन्दर रचना सुव्रत पुनजु अनन्त ।।

४६२०. रविव्रतकथा-विद्यासागर । पत्रसं० ४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८-१६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

प्रारम्भ—

पचम गुरु पद नमी, मन धरी जिनवाणी ।
रविव्रत महिमा कहु असार शुभ आण द आणी ।।
पूरब दिसि सोहे सुदेश, काश्मीर मनोहार ।
वाणारसी तेह मध्य सार नगर उदार ।।१।।
न्यायवत नरपति तिहा सप्तागे सोहे ।
पुस्याल नाम सोहामणो गुणी जनमन मोहे ।।

तेह नयरे धन कणे करी धनवंत उदार ।
मतिसागर नामे सु श्रेष्ठी शुभमति भंडार ।।२।।

अन्तिम—

विधि जे व्रत पालि करि मन भावज आणइ ।
समकित फले सुरग गति गया कहे जिन इम वाणी ।।
मन वच काया शुद्धे करी व्रत विध जे पालई ।
ते नरनारी सुख लहे मणि माणक पावई ।।३५।।
श्री मूलसघे मडण हवो गछ नायक सार ।
अभयचंद्र सूरि वर जयो वहु भव्याधार ।।
तेह पद प्रणमीने कहे अति सुललित वाणी ।
विद्यासागर वेद सुणी मनि आण द आणी ।।३६।।
इति रविव्रत कथा सपूर्ण

४६२१. **रक्षाबंधनकथा—ब्र० ज्ञानसागर।** पत्रस० ३ । आ० १०½×५½ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १८७६ पौष सुदी ८ । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प० देवकरण ने मौजमाबाद मे प्रतिलिपि की थी ।

४६२२. **रक्षाबंधनकथा—विनोदीलाल ।** पत्र स० २६ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १९१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४६२३. **रक्षाबंधनकथा**—× । पत्र सं० ७ । आ० १३½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

४६२४. **रक्षाबंधनकथा**—× । पत्र स० ३ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८७७ आषाढ बुदी १० पूर्ण । वेष्टन स० ११६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४६२५. **रक्षाबंधनकथा**—× । पत्रस० ५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १८८७ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ११५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६२६. **रक्षाविधान कथा—सकलकीर्ति ।** पत्र स० ४ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर ।

४६२७. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४ । आ० १२×५ इच । ले०काल स० १८१७ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वमी बूंदी ।

४६२८. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ६ । ग्रा० ८×४ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४६२९. **रात्रिविधानकथा**—× । पत्रस० २ । भाषा–सस्कृत । **विषय**-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०३।५० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर ।

४६३०. **रक्षाख्यान--रत्ननंदि** । पत्रस० ५ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७०४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६३१. **राजा विक्रम की कथा**— × । पत्र स० ३६ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा । र०काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० १००-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—आगे के पत्र नही हैं ।

४६३२. **राजा हरिचंद की कथा**— × । पत्रस० २३ । ग्रा० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४६३३. **रात्रिभोजन कथा—ब्रह्म नेमिदत्त** । पत्र स० १६ । ग्रा० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । **ले०काल** स० १६७७ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६७७ वर्षे कातिक सुदी ११ गुरौ श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० सुमतिकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे वादिभूषण तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्तिदेवास्तदाम्नाये ब्रह्म श्री मेघराज तत् शिष्य शिवजी पठनार्थ ।

४६३४. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ६ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १७६३ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४६३५. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १२ । ग्रा० १०×४ इञ्च । ले०काल सं० १८२६ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष-- भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने प० जिनदास को प्रति दी थी ।

४६३६. **रात्रिभोजन कथा—भ० सिंहनंदि** । पत्रस० २१ । ग्रा० १२½ × ६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल- × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—पत्र १६ मे भक्तामर एव स्वयभू स्तोत्र है ।

४६३७. **रात्रिभोजन चौपई—सुमतिहंस** । पत्र स० ११ । ग्रा० १०×४½ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल स० १७२३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

अन्तिम—

रात्रि भोजन दोष दिखाया, दीनानाथ बताया जी ।।१।।
अचल नाम तिहाँ रहवाया, दिन दिन तेज सवाया जी ।।२।।
धन २ जे नर ए व्रत पालइ, भोजन त्यागी टालइ जी ।
नव २ नूर सदा तिया भाखइ विलसइ लील विसालइ जी ।
सतरइ सइ तेवीस वरसइ हे जइ हीयडउ हरसइजी ।
मगसिर वदि छटि वर बुध दिवसइ चउपई कीधी सुवसइ जी ।।३।।
श्री खरतर गछ गगन दिणदा श्री जिण हरष सुरिदा ।
आचारिज जिन लबधि मुणीदा, उदया पूनिम चदाजी ।
श्री जिणहरष सुरिद सुसीसइ, सुमति हस सुजगीसइ जी ।
पद उवझाय धरइ निसि दीसै भासै विसवा वीसइजी ।
विमलनाथ जिनेस प्रसादइ जाय तारणि सुभसादइ जी ।
रिद्धि वृद्धि सदा आणदइ सघ सकल चिर नदइ जी ।
अमरसेन जयसेन नरिदा थापा परमानदा जी ।
जयसेना राणी सुखकदा जस साखी रवि चदा जी ।
साधु-शिरोमणि गुण गाया सगला रइ मनि भाया जी ।
जीभ जनम सफली की काया मल्हि सुगुण मल्हाया जी ।।४।।

आदिभाग—

सुबुधि लवधि नव निधि समृद्धि सुखमपद श्रीकर ।
पासनाह पयपणवता वसु जस हुवइ विसतार ।।
श्री गुरु सानिधि लही रमणी भोजन पाय ।
कहिस्यु शास्त्र विचार सु भगवत म घ उपाय ।।

४६३८. रात्रिभोजनत्याग कथा—श्र तसागर । पत्रसं० २२ । आ०१०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७५८ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १४६२ । **प्राप्ति स्थान—**भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६३९. रामयशरसायन-केशराज । पत्रस० ६४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा । र०काल स० १६८० आसोज सुदी १३ । ले० काल स० १७३० । पूर्ण । वेष्टनस० ८५-६३ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दौसा ।

विशेष—प्रारम्भ का पत्र फटा हुआ है अत ११ वें पद्य से प्रारम्भ किया जाता है ।

जंबूद्वीपइं क्षेत्र भरत भलउ, लकानगरी थानिक निरमलउ ।
निरमलउ थानिक पुरी लका द्वीप तउ राक्षस जुउ ।
अजित जिनवर तणइ बारइ भूप घन बाहन हुइ ।
महारक्ष सुत पाटि थापी अजित स्वामी हाथिए ।।
चरण पामी मोक्ष पहुँतउ घणा मुनिवर साथिए ।।११।।

राक्षस राजा राजकरी घणउ अवसर जाणी ।
तप सयम तणउ अवसर जाणी ।
पुण्य प्राणी देव राक्षस सुत मणी ।
राज आपी ग्रही संयम लही मोक्ष सोहामणी ॥
असंख्याता हुआ भूपति समइ दशया जिन तणा ।
कीर्त्ति धवल नरेद्रनी कउ राय आडवर घणइ ॥१८॥

अन्तिम—

संवत् सोलै अमीइरे, आछउ आसो मास तिथि तेरसि ।
अंतरपुर माहि आणी अति उल्हास, सीता आवै रे घरि राग ॥ढाल॥
विद्दय गछि गछ नायक गिरड गोतम नउ अवतार ।
विजयवत विजय ऋषि राजा कीधउ धर्म उद्धार ॥
धर्म मुनि धर्म नउ धोरी धर्म तणो भडार ।
खिमा दया गुण केरउ सागर सागर क्षेम उदार ॥६१॥
श्री गुरु पद्म मुनीश्वर मोटौ जेह नउ वंश ।
चउगामी गछ मे जाणी तउ प्रगट पणइ परसंस ॥६२॥
तस पटोधर गुणाकरि गाजै गुण सागर जयवत ।
कइसुतन कलप तरु कलि मे सूरि शिरोमणि सत ॥६३॥
ए गुरुदेव तणौ सुपसाइ ग्रंथ चढिउ सुप्रमाण ।
ग्रंथ गुणे गिरि मेरु सरीखउ नवरस माहि वखाण ॥६४॥
एव वासवि ढाल सुधनि वचन रचन सुविसाल ।
रामयशो रे रसायण नामा ग्रंथ रचिउ सुरसाल ॥
कवि जन तउ कर जोडि करे रे पडित सु अरदास ।
पाचा आगे तउ वचि वउ जण हू अइणा अभ्यास ।
अक्षर भगे ढाल जु भगे रागज भगइ जोइ ।
वाचना रे चमन ने भगे रस नहीं उपजइ कोइ ॥६७॥
अक्षर जाणी ढालज जाणी कागज जाणी एह ।
पाचा आगे वाचना थो ऊजि सिइ अति नेह ॥६८॥
जब लग सायर नउ जल गाजै जब लग सूरिज चद ।
केशराज कहै तब लगि ग्रंथ करउ आनद ॥६९॥

कानडा—

रामलक्ष्मण अने रावण सनी सीता नी चरी ।
कही भाषा चरित साखी वचन रचन करी खरी ॥
सघ रंग विनोद वक्ता अने श्रोता मुख मणी ।
केशराज मुनिद जपै सदा हर्ष वधामणी ॥२००॥

४६४०. रामसीता प्रबध--समयसुन्दर। पत्र स० १–७६ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल ×। अपूर्ण । वेष्टन न० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४६४१. रूपसेन चौपई— × । पत्र स० २२ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२२ से आगे पत्र नही लिखे हुये है ।

४६४२. रूपसेन राजा कथा—जिनसूरि । पत्रस० ४३ । ग्रा० ९½×४¾ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४६४३. रोटतीज कथा— × । पत्र सं० १ । ग्रा० ११ × ५¼ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६४४. रोटतीज कथा— × । पत्रसं० २ । ग्रा० १०½ × ५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४६४५. रोटतीजकथा— × । पत्र स० ३ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४६४६. रोटतीज कथा— × । पत्र स० ३ । ग्रा० ९½ × ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

४६४७. रोटतीज व्रत कथा—चुन्नीराय वैद । पत्र सं० १२ । ग्रा० ७½×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–कथा । र०काल स० १६०९ भादवा सुदी ३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—

सवत सत गुनईससै ता ऊपर नव जान ।
भादो सुद त्रितिया दिना बुद्धवार उर आन ॥६३॥
एक रात दिन एक मैं नगर करौली माहि ।
चुन्नी वैदराय ही करी कथा सुखदाय ॥६४॥

४६४८. रोटतीजकथा—गुणनन्दि । पत्रस० २ । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४६४९. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६ । ग्रा० ७ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४६५०. **रोहिणी कथा**— × पत्रसं० १६ । आ० ६½×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-कथा। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३७० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६५१. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १५ । ले०काल सं० १८७३ पौष बुदी १३। पूर्ण । वेष्टनसं० १२७१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६५२. **रोहिणीव्रत कथा**—**भानुकीर्ति** । पत्र सं० ४ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६५३. **रोहिणी व्रत कथा**— × । पत्रसं० ११ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १८८४ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६५४. **रोहिणी व्रत प्रबंध**—**ब्र० वस्तुपाल** । पत्रसं० १४ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १६५४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५/१३१ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है एव पत्र चिपके हुए है । आदि अंत भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारम वस्तु छंद—

वास पूज्य जिन नमूं ते मार ।
तीर्थंकर जे बारमो मन वछित बहु दान दातार सार ए ।
अरुण वरण सोहामणो सेव्या दिपि मुख तार ऐ ।
बाल ब्रह्मचारी रुवडो सत्तरि काय उन्नत सहुजल ।
वस् पूज्य राम नादनु निपुण विजयादेवी मात कुक्षि निरमल ।
जस पसाइ जाणीमि कठिन कला सुविचार ।
विघन सब्र दूरि टलि मगल वर्ति सार ॥१॥

रागमल्हार—

तह पद प कज प्रणमीनि रास करूं रसाल ।
रोहिणी व्रत तणो मिलो सुणज्यो बाल गोपाल ॥१॥
सारदा स्वामिनि बली सुव सह गुरू लागू पाय ।
विघन सवि दूरि टलि जिम निर्मल मति थायि ॥२॥
भजन विजन सहु सामलो करू वीनती कर जोडि ।
सजन सभाति निर्मला दुर्जन पाडि खोडि ॥३॥

अंतिम-दूहा

पुत्री आर्यिका जेह तारे स्त्री लिंग करीय विणास ।
सरगि गया सोहामणा पाम्पा देव पद वास ॥१॥
पुत्र आठे सयम लीयोरे बासु पूज्य हसू सार ।
स्वर्ग मोक्ष दो पामीया तप सासते लार ॥१॥

रोहिणी कथा व्रत साभलीरे श्रेणिक राजा जाणि ।
नमोस्तु करी निज थानकि गयो भोगवि मुख निरवाण ॥३॥
नर नारी जे व्रत करि भावना भावि चग ।
अशोक रोहिणि वधि ते लहि उपज्यु पुण्य प्रसंग ॥४॥
सावली नयर सोहामणा राय देश मभारि ।
रास करोति रूबडो कथा तणि अनुसारि ॥५॥

वस्तु—

मूलसघ मडण २ सरसती गच्छ सणगार ।
बलात्कार गणे आगला शुभचन्द्र सार यतीश्वर ।
तस्य पटोधर जाणीयि सुमतिकीरति सार सुखकर ।
तस्य पद पंकज मधुकर गुणकीरति सुविसाल ।
तस्य चरणे नमी सदा बोलि ब्रह्म वस्तुपाल ।

दोहा—

विक्रमराय पछि सुणो सवच्छर सोलसार ।
चोवनो ते जाणीइ आषाढ मास सुखकार ॥१॥
श्वेत पक्ष सोहामणो रे तृतीयानि सोमनार ।
श्री नेमिजिन भुवन भलु रास पुरुहु चोसार ॥२॥
पढि गुणि जे सामलि मनि आणी बहु भाव ।
ब्रह्मवस्तुपाल सुधु कहि तेहनि भव जल नाव ॥३॥

इति रोहिणी व्रत प्रबध समाप्त ।

४६५५. लब्धिविधान कथा--पं० अभ्रदेव । पत्रस० ११ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १६७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०७/१२१ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६७७ वर्षे आसोज सुदी १३ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री रामकीर्तिदेवास्तदाम्नाये ब्र० श्री मेघराज तत् शिष्य ब्र० सवजी पठनार्थं । श्री इल्ला प्राकारे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये कोठारी जनी भार्या जमणदि तयो सुत कोठारी भीमजी इय लब्धि विधान कथा लिख्यत ब्र० श्री मेघराज तत् शिष्याय दत्तं ।

४६५६. लब्धिविधानव्रत कथा—किशनसिंह । पत्रस० १७ । आ० १० × ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा । र०काल स० १७८२ फागुण सुदी ८ । ले०काल स० १६१० मगसिर वदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—फतेहपुर मे लिखा गया था ।

४६५७. प्रति सं० २ । पत्रस० २६ । आ० ६ × ४½ इन्च । पूर्ण । वेष्टनसं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायत मदिर करौली ।

४६५८. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० २२ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

४६५९. **लक्ष्मी सुकृत कथा**— × । पत्रसं० ७ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ११८** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—कनक विजयगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

४६६०. **वर्द्धमान स्वामी कथा : मुनि श्री पद्मनन्दि** । पत्र सं० २१ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल सं० १५३७ फाल्गुन सुदी ५ । वेष्टन सं० १९० ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६६१. **व्रतकथाकोश—श्रुतसागर** । पत्र स० ८७ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—२४ व्रत कथाओ का संग्रह है । अंतिम पल्यव्रतविधान कथा अपूर्ण है ।

४६६२. **प्रति सं० २** । पत्रस० १४४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४६६३. **प्रति स० ३** । पत्रस० ७२ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ । ले०काल × । वेष्टन स० १७० । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मं० लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रथम ७ पत्र नवीन लिखे हुए हैं तथा ७२ से आगे पत्र नहीं है ।

४६६४. **प्रति स० ४** । पत्रस० १२८ । ले०काल १७६८ चैत बदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर डीग ।

४६६५. **व्रतकथाकोश—देवेन्द्रकीर्ति** । पत्र स० ७९ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६६.—**प्रति सं० २** । पत्र स० १३३ । आ० १०$\frac{3}{4}$×६ इञ्च । ले० काल सं० १८८६ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६७. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० २-६२ । आ० १२$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन म० १२९-५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४६६८, **व्रतकथाकोश—ब्र० नेमिदत्त** । पत्र स० १६८ । आ० ११×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६९. **व्रतकथाकोश—मल्लिभूषण** । पत्र स० १६६ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले० काल स० १६०९ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

४६७०. **व्रतकथाकोश—मु० रामचन्द्र ।** पत्र स० ११० । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय कथा कोश । र० काल × । ले० काल सं० १७८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी ।

४६७१. **व्रतकथाकोश—सकलकीर्ति** । पत्र सं० ४६ । आ० १२×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७९६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१ । **प्राप्ति स्थान** | दि० जैन खडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—लिखे प्रथीराज पं० खेतसी साह दत्तं । स० १७९६ आषाढ बुदि ३ बुधे उदैपुर राणा जगतसिंह राज्ये ।

४६७२. **व्रतकथाकोश—पं० अभ्रदेव ।** पत्रसं० १०४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय कथा । र० काल × । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६४-१३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—दीमक ने खा रखा है । प्रशस्ति-संवत् १६३७ वर्षे मगसिर सुदी ७ रवौ । देव महावजी लिखत मोठ वेदी पाटणी । उ० श्री जयनन्दी पठनार्थं ।

४६७३. **व्रतकथाकोश** — × । पत्र स० ८० । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८२६ भादवा बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष —कथाओ का सग्रह है ।

४६७४. **व्रतकथाकोश** — × । पत्रसं० २१२ । आ० ६½×४½ ६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १८३२ आषाढ़ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ब्राह्मराम जी गूजर गौड ने अर्जुनगर में प्रतिलिपि की थी ।

४६७५. **व्रतकथाकोष**— × । पत्र स० १०६ । आ० १८ × ७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—विभिन्न कथाओं का सग्रह है ।

४६७६. **व्रतकथाकोष**— × । पत्र स० ५५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल-× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०-२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—निम्न व्रत कथाओं का सग्रह है—

१.	अष्टाह्निका व्रत कथा	सोमकीर्ति ।
२.	अनत व्रत कथा	ललितकीर्ति ।
३.	रत्नत्रय कथा	"
४.	जिनरात्रि कथा	"

५. आकाश पंचमी कथा — ,,
६. दशलक्षणी कथा — ,
७. पुष्पांजलि व्रत कथा — ,,
८. द्वादश व्रत कथा — ,,
९. कर्म निर्जरा व्रत कथा — ,,
१०. षट्रस कथा — ,,
११. एकावली कथा — ,,
१२ द्विकावली व्रत कथा — विमलकीर्ति ।
१३. मुक्तावलि कथा — सकलकीर्ति ।
१४. लब्धि विधान कथा — प० अभ्र ।
१५. जेष्ठ जिनवर कथा — श्रुतसागर ।
१६. होली पर्व कथा — ,,
१७. चन्दन षष्ठि कथा — ,,
१८. रक्षक विधान कथा — ललितकीर्ति ।

४६७७. **व्रतकथाकोश**— × । पत्रस० १२५ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८५१ **पौष** बुदि १ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (छोटा) ।

४६७८. **व्रतकथाकोश**— × । पत्र स० ६ । आ० १३$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । **अपूर्ण** । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष – ६ठा पत्र आधा लिखा हुआ है आगे के पत्र नही लिखे गये मालूम होते हैं ।

४६७९. **व्रतकथाकोश**— × । पत्रस० २-८२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । **पूर्ण** । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

निम्न कथाओ का संग्रह है—

१. नदीश्वर कथा—	रत्नपाल	अपूर्ण
२. षोडशकारण कथा	ललितकीर्ति	पूर्ण
३. रत्नत्रय कथा	,,	,,
४. रोहिणीव्रत कथा	,,	,,
५. रक्षा विधान कथा	,,	,,
६- धनकलश कथा	,,	,,
७. जेष्ठ जिनवर कथा	,,	,,
८. अक्षय दशमी कथा	,,	,,
९, षट्रस कथा	शिवमुनि	,,
१०. मुकुट सप्तमी कथा	सकलकीर्ति	,,

११. श्रुत स्कंध कथा	×	"
१२. पुरन्दर विधान कथा	×	"
१३. आकाश पंचमी कथा	×	"
१४. कजिकाव्रत कथा	ललितकीर्ति	"
१५. दशलाक्षणिक कथा	ललितकीर्ति	पूर्ण
१६. दशपरमस्थान कथा	"	"
१७. द्वादशीव्रत कथा	×	"
१८. जिनरात्रि कथा	×	"
१९. कर्मनिर्जरा कथा	×	"
२०, चतुर्विशति कथा	अभ्रकीर्ति	"
२१. निर्दोष सप्तमी कथा	×	"

४६८०. **व्रतकथाकोश**—× । पत्रसं० १९२ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी ।

४६८१. **व्रतकथाकोश**—× । पत्र सं० ९८ । आ० ११ ३/४×५ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय**—कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७७० माघ सुदी १३ ।पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ चौगान मंदिर बूंदी ।

४६८२. **व्रतकथाकोश**—× । पत्र सं० फुटकर । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × × । अपूर्ण । वेष्टन ३७५।१३६ **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

४६८३. **व्रतकथाकोश—खुशालचन्द** । पत्रसं० २६ । आ० ९ १/२×४ १/२इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल सं० १७८७ फागुण बुदी १३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—निम्न कथाओं का सग्रह है—

आकाश पचमी, सुगंधदशमी, श्रावणद्वादशी व्रत, मुक्तावलीव्रत, नंदूकी सप्तमी, रत्नत्रय कथा, तथा चतुर्दशी कथा ।

४६८४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १६१ । आ० १० १/२×५ इञ्च । ले० काल सं० १९१४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४०-७२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टोंक)

४६८५. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १२२ । आ० ११×५ ३/४ इञ्च । ले० काल १८५५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—टोडा मे भट्टारक श्री महेन्द्रकीति की आम्नाय के दयाराम ने महावीर चैत्याल मे प्रतिलिपि की थी ।

४६८६. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ९८ । आ० १० १/२×५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०९ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—२३ कथाओं का सग्रह है ।

४६८७. प्रतिसं० ५। पत्र स० १३२। आ० १०× ६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

४६८८. प्रति सं० ६। पत्र स० ७४। आ० १२×७½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १५८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

४६८९. प्रतिसं० ७। पत्र स० १३५। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७२/४८। प्राप्ति स्थान – दि० जैन तेरहपंथी मदिर दौसा।

विशेष – आगे के पत्र नही है।

४६९०. प्रति सं० ८। पत्रसं० १४२। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल १९०८। पूर्ण। वेष्टनसं० ७२।३६। प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—जयपुर मे नाथूलाल पाण्ड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४६९१. प्रति सं० ९। पत्र स० ११९। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७९३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

४६९२. प्रतिसं० १०। पत्र संख्या ११०। आ० १२ × ५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र०काल ×। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

विशेष—मूलकर्त्ता श्रुतसागर है।

४६९३. प्रति स० ११। पत्र सं० ६७। आ० १२½×६ इंच। ले०काल स० १६०० पौष सुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० २६५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—जहानाबाद जैसिंघपुरा मध्ये लिखावतं साहजी ..

४६९४ प्रति सं० १२। पत्र स० २६६। आ० ६¾×६½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी।

विशेष – इस कथा सग्रह मे एक कथा पत्र ६४ से ७९ तक पल्यव्रत कथा धनराज कृत है उसका आदि अन्त निम्न प्रकार है—

आदिभाग –

प्रथम नमो गणपति नमो सरस्वती दाता।
प्रणमौं सदगुर पाय प्रगट दीयौ ग्यान विख्याता॥
पच परम गुरु सार प्रणवि कथा अनोपम।
भावी श्रुत अनुसार विविध आगम मैं अनूपम॥
श्रुतसागर ब्रह्म जु कही पल्य विधान कथानिका।
भाषा प्रसिद्ध सो कहु सुणौ भव्य अनुक्रमनिका॥

दोहा—

द्वीप मांही प्रसिद्ध अति, जंबूदीपवर नाम।
भरत क्षेत्र तामैं सरस, सोहे सुख की धाम॥

अन्तिम भाग—

विक्रम नृप परमाणि, सतरासै चौरासी जीर्ण ।
मास आषाढ शुक्ला पक्षसार ।
दशमी दिन अरू श्री गुरुवार ।।२५८।।
आचारिज चिहुं दिसि परसिधि ।
चदकीर्ति महीयल जससिद्धि ।
ता सिष हर्षकीर्ति भीवसी,
सोहे बुद्धि बृहस्पति सी ।।२६६।।
श्रुतसागर भाषित व्रत एह,
पल्य नाम महियल सुखदेह ।
ताकी भाषा करो धनराज,
पडित भीवराज हितकाज ।।२६०।।
रहो चिरजय सकलसघ गछपति जती समाज ।
वक्ता श्रोता विविधजन एम कहै धनराज ।।

इति श्री श्रुतसागरकृत व्रतकथाकोश भाषाया आचार्य श्री चन्दकीर्ति तत् शिष्य **भीवसी** कृत पल्य व्रतकथा संपूर्ण ।

४६६५. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ११५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महात्मा राधेलाल कृष्णगढ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४६६६. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ४४ । आ० ११½ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १६८२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष-मुख्यत. निम्न कथाओं का सग्रह है । मुकुटसप्तमी, अक्षयनिधि, निर्दोष सप्तमी, सुगन्ध दशमी, श्रावण द्वादशी, रत्नत्रय, अनतचतुर्दशी, आदि व्रतो की कथाएं है ।

४६६७. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १२३ । आ० ६ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १८७१ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२८-१२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—जोधराध ने प्रतापगढ मे लिखा था ।

४६६८. व्रतकथा कोश × । पत्र स० ८-१८ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८५-१२० । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

४६६६. व्रतकथारासो— × । पत्र स० १४ । आ० १३×७¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८६८ जेष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० २१२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—आनन्दपुर नगर मे लिखा गया था ।

४७००. **व्रतकथा संग्रह**— ×। पत्र सं० ११ । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

४७०१. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ६–७३ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

४७०२. **व्रतकथा संग्रह**— × । पत्र स० १४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मुख्य कथाएं निम्न हैं—

१. **शीलव्रत कथा—मलूक** । र० काल स० १८०६ ।

कह **मलुको** सुणो ससार हूं मूर्ख मत्त दीण अपार ।
आसोजा सुद आठै कही, थाकचल लाग सोसही ।।
जोडी गाव सात्तडा ठान, सम्मत अठाराछै क माह ।
कुडी हुत सो दूर करो, वाकी सुध **सुनो** रही धरो ।।

२. **सुगंध दशमीव्रत कथा—मकरंद** । र० काल १७५८ ।

सत्रैसे अठानवे श्रावण तेरस स्वेत ।
गुरुवामरपुरी करी सुणयो भविजन हेत ।
कथा कही लघु मत्तीनी पट्ट पद्मावती परवार ।।
पाठय गाय **मकरंद** ने पंडित लेहो संभाल ।।

३. **रोहिणीव्रत कथा—हेमराज** । र० काल १७४२ ।

रोहणी कथा सपूर्ण भई, ज्यो पूरव परगासी गई ।
हेमराज ई कही विचार, गुरू सकल शास्त्र अब धार ।।
ज्यो वृत फला ······ मे लही, सोविधि ग्रथ चौपई लही ।
नगर वीरपुर लोग प्रवीन, दया दान तिनको मन लीन ।।

४. **नंदीश्वर कथा—हेमराज** ।

यह व्रत नन्दीश्वर की कथा ।
हेमराज परगासी यथा ।।
सहर इटावो उत्तम थान ।
श्रावक करें धर्म सुभ ध्यान ।।
सुने सदा जे जैन पुरान ।
गुरो लोक को राखै मान ।।
तिहिठा सुनो धर्म सम्वन्ध ।
कीनी कथा चौपई बध ।।

५. **पंचमी कथा—सुरेन्द्रभूषण** । र० काल सं० १७५७ ।

अब व्रत करे भाव सो कोई ।
ताको स्वर्ग मुक्ति पद होइ ।

सत्रहसे सत्तावन मानि ।
संवत पोष दसै वदि जानि ।।
हस्तिकांतपुर में पट्ट सची ।
श्री सुरेन्द्रभूषण तह रची ।।
यह व्रत विधि प्रतिपाले जोइ ।
सो नर नारि अमरपति होइ ।।

विशेष—सीगोली ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४७०३. **व्रत कथा संग्रह—** × । पत्र स० ६ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । **विषय**-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—निम्नलिखित कथाएं हैं ।

१. दशलक्षव्रत कथा—हरिकृष्ण पांडे । र० काल स० १७६५ । पत्र स० २ तक ।

अन्तिम—

अैसी कथाकोश मे कही, तैसी ग्रंथ चौपई लही ।
सत्रह पर पैंसठ मानि, सवत भादव पचमि जानि ।।
तापरि यम सरौ लोग विख्यात ।
दयाधर्म पालें सुभगात ।।
सब श्रावग पूजाविधि करैं ।
पात्रदान दें सुकृत लुनें ।।३५।।
मन मैं धर्म वुधि जव भई ।
हरिकृष्ण पाडे कथा अर ठई ।।
यो इह सुनै भाव धरि कोय ।
सोतो निहचै अमरापति होइ ।।३६।।
इति दशलक्षण व्रत की कथा सपूर्ण ।

२. अनतव्रत कथा— × । × । पत्र सं० ३ से ४
३. रतनत्रय कथा—हरिकृष्ण पाडे । र० काल स० १७६६ सावन सुदी ७ । पत्र स० ४ से ७
४. आकाशपचमी कथा— ,, । पत्र ७ से ६
५, पचमीरास कथा— × । × । पत्र स० ३
६. आकाशपचमी कथा — × । र० काल १७६२ चैत सुदी २ । पत्र ३

४७०४. **वसुदेव प्रबंध—जयकीर्त्ति** । पत्रस० १४ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । **विषय**—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७३५ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ६३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

ओं नमः सिद्धेभ्यः । राग सोरठा ।

दूहा—

इन्द्रवरण सहू ओष नागेन्द्र जाति देव ।
पंच परमेष्टी जे असाकरीतिहुंनी सेव ।।१।।
वसुदेव प्रबध रचु भले पुन्द तणो फल जेह ।
देवशास्त्र गुरु मन धरी प्रसिद्ध समृद्धि एह ।।२।।
हरिवंश कुल सोहामणु अंधक वृष्टि राय ।
सौरीपुर सोहिये थकी वासव सम शुभगाय ।।३।।

अन्तिम भाग—

श्रीमूलसंघे उजागजी, सरस्वती गच्छ मुजाणजी ।
गुणकीरति गुणग्रामजी बंदू वादिभूषण पुण्यधामजी ।।१३।।

दूहा—

ब्रह्म हरखा गुण अनुसरी कह्यु आख्यान ।
भणज्यो सुणज्यो भावसी लसिस्यो सुख संतान ।।१।।
कोट नगर कोडामणी वासे श्रावक पुण्यवत ।
चैत्यालु आदि देवनु धर्म समुद्र समसत ।।
तिहां जिनवर सेवाकरी वसुदेव तप फल एह ।
जयकीरति एम रच्यु धरज्यो धरमी नेह ।।

इति श्रीवसुदेव आख्याने तृतीय सर्ग संपूर्ण । सवत् १७३५ वर्षे ज्येष्ठ बुदी १० ब्र० श्री कामराज तत् शिष्य ब्र० श्री बाघजी लिखित ।

४७०५. **प्रति स० २** । पत्रसं० १४ । आ० ११×५ इञ्च । ले०**काल सं०** १६७५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४७०६. **विक्रमलीलावती चौपई—जिनचन्द्र** । पत्र सं० १७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स० १७२४ आषाढ सुदी ७ । ले० काल सं० १७६८ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लिखित चेला खुशाल बीजन लिपी कृता दरीबा मध्ये ।

४७०७. **विदरभी चौपई—पारसदत्त** । पत्र सं० १४ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १७८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

४७०८. **विल्हण चौपई—कवि सारग** । पत्र सं० ४२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल स० १६३६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

प्रारम्भ—

प्रणमुं सामिणि सारदा, सकल कला सुपसिद्ध ।
ब्रह्मा केरी बेटडी, आवे अविकल बुद्धि ॥१॥
सुसर अलापइ नादरस हस्ति बजावइ वीण ।
दिनि दिन प्रति आणद भर, सयल सुरासर लीण ॥२॥
आदि कुमारी आज लगि, ब्रह्म रूद्र हरिमात ।
अलख अनत अगोचरी सुयश जगत्र विख्यात ॥३॥
कासमीर मुख मडणी, सेवक पूरइ आस ।
सिद्धि बुद्धि मगलकरइ, सरस बचन उल्हास ॥४॥
श्री सद्गुरू सुपसाउ कर, समरी अनुपम नाय ।
जास पसाइ पामीइ, मन वछित सविकाम ॥५॥
नारी नामि ससिकला तेह तणु भरतार ।
कवि विल्हण गुण वर्णनु सील तणइ अधिकार ॥६॥
सील सवि सुख सपजइ सीलैं सपति होइ ।
इह भवि परिभवि सुख लहइ, सील तणा फल जोइ ॥७॥
सील प्रभावि आपदा टाली पाप कलक ।
कवि विल्हण सुख विलासिया सुणज्यो मूकी सक ॥८॥

अन्तिम—

ए कवि विल्हणनी चुपई मणइ एक मनावइ ।
तास घरे नव निधि विस्तरइ निसुणता सुख सपति करइ ॥
विरही तणा विरह दुख टलइ,
मनगमती रस रमणी मिलइ ॥
समझई श्रोता चतुर सुजाण ।
मूरिख म लहइ भाग अजाण ॥

दोहा—

सुज्जाणासिउ गोठ की, लाहु विहु परेह ।
अहूरा पूरा करइ पूरा आमो रेइ ॥४॥

श्लोक—

अप्रसुखमाराध्य सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः ।
ज्ञानलवदुर्विदग्ध ब्रह्मापि नर नर जयति ॥५॥
वर पर्वतदुर्गेषु भ्रांत वनचरैः सह ।
या मूर्खजनससर्गः सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥६॥
पंडितोऽपि वर शत्रु मा मूर्खो हितकारकः ।
वानरेण हतो राजा विप्रा चौरेण रक्षित ॥७॥

चौपई—

हंस कोइ मय करसिउ तथा ।
मति अनुसारि बधि कथा ।।
उछु अधिकु अक्षर जेह ।
पडित मूधउ कर सो तेह ।।८।।

दूहा—

श्रीमन्नाहड गछवर विद्यमान जयवंत ।
ज्ञानसागर सूरी अछइ गुहिर महागुणवंत ।।
तास गछि अति विपुल मति पद्मसुन्दर गुरुसीस ।
कविसारंग इणि परि कहइ आणी मनह जगीस ।।
ए गुण च्यालइ वर्छरि ऊपरि सइल सोल ।
सुदि आसाढी प्रतिपदा कीउं कवित्त कल्लोल ।
पुण्य नखित्र वार गुरु ···· अमृत सिद्ध ।।
श्री जवालेपुरि प्रगट कोतिग कारण विद्ध ।।
सज्जण जणु सभलइं खति मनि आण ।
रिद्ध वृद्धि पामइ सही कुशल खेम कल्याण ।।

बीच बीच मे स्थान चित्रो के लिए छोडा गया है ।

४७०६. विष्णुकुमार कथा— × । पत्रसं० ५ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४७१०. प्रति सं० २ । पत्र स० ५ । आ० ११×१ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक)

४७११. शालिभद्र चौपई— × । पत्रसं० २२ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा – हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

४७१२. शालिभद्र चौपई—जिनराज सूरि । पत्र स० २६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय– कथा । र०काल स० १६७८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

४७१३. शालिभद्र चौपई—मनसार । पत्र स० २७ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल स० १६०८ आषाढ बुदी ६ । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**— सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—श्री सागवाडा में आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

अन्तिम—

सोलहसम अठोतिर वरस्यइ आसू वदि छठि दिवसइजी ।

श्रीजिनसिंह सूरि सीष मनसारइ भवियण उपगारइजी ।
श्री जिनराज वचन अनुसारइ चरितइ कह्या सुविचारइजी ।।

४७१४. **शालिभद्र चौपई - विजयकीर्ति** । पत्र सं० ४६ । आ० १०¾×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स० १८२७ । ले० काल १६७२ । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष —दान कथा का वर्णन है ।

४७१५. **शालिभद्र धन्ना चोपई - सुमति सागर** । पत्र सं० २० । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल स० १८२६ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—बुरहानपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

४७१६. **शालिभद्र धन्ना चौपई - मनसार** । पत्रस० २० । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल १६०८ आसोज बुदी ६ । ले० काल १७४५ शाके १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० ७०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४७१७. **शीलकथा—भारामल** । पत्र स० ३१ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल स० १६४४ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४७१८. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ३४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४४। **प्राप्ति स्थान** —भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष —सेठ मूलचन्दजी सोनी ने संवत १६५८ आषाढ सुदी २ की बडा धडा की नशिया में चढाया था ।

४७१९. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ५० । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४७२०. **प्रति सं० ४** । पत्रस० ४४ । ले० काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

४७२१. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० २२ । आ० १३×८½ इञ्च । ले०काल सं० १६६३ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७०/१८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—पत्र सं० ३६ और ३३ की दो प्रतियां और हैं ।

४७२२. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ४० । ले० काल सं० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४७२३. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० ५२ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

४७२४. **प्रति सं० ८** । पत्रसं० ३१ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

४७२५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५३ । ले० काल स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४७२६. प्रति सं० १० । पत्र स० ३२ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४७२७. प्रति सं० ११ । पत्रसं० ३७ । आ० ६½×६½ इञ्च । र० काल × । **ले०काल** सं० १८६० कातिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.)

विशेष—सरवणराम सेठी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

४७२८. प्रति सं० १२ । पत्र स० ५३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७/४६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर बसवा ।

४७२९ प्रतिसं० १३ । पत्रस० २-३६ । आ० १०½×६ इञ्च । ले०काल सं० १६२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह पथी मन्दिर नैणवा ।

४७३०. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ४८ । आ० १२½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विषय – तनमुख अजमेरा स्वाध्याय करने के लिये प्रति अपने घर लाया ऐसा निम्न प्रकार से लिखा है—

"तनसुख अजमेरो लायो वाचबा ने गरु सं० १९५४ ।

४७३१. प्रतिसं० १५ । पत्र स० २५ । आ० १३×८ इञ्च । र० काल × । **ले०काल सं०** १९५३ । पूर्ण । वेष्टन ४५ २५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

४७३२. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ३२ । आ० ६×६ इञ्च । र०काल × । ले०काल सं० १९१० पूर्ण । वेष्टन स० ७२ १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष— केकडी मे गणेशलाल ने प्रतिलिपि की थी । पद्य स० ५४७

४७३३. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २५ । आ० १२×८ इञ्च । ले० काल स० १९५५ । पूर्ण । वेष्टसं० १९/७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—५६९ पद्य सख्या है ।

४७३४. प्रतिसं० १८ । पत्र स० ३२ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

४७३५. प्रतिसं० १९ । पत्र स० २२ । आ० १२½×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४७३६. शीलकथा— × । पत्र स० १० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन सं० **१२५** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.)

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

४७३७. **शीलकथा**— × । पत्र स० १४ । ग्रा० ७$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४७३८. **शीलकथा—भैरोंलाल** । पत्र स० ३६ । ग्रा० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा – हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

शील कथा यह पूरण भई ।
भैंरोलाल प्रगट करि गहि ।।
पढ़ें सुनौ ग्रब जो मन लाई ।
जन्म जन्म के पातिग जाई ।।४५।।
सील महात्तम जानि भवि पालहु सुख को वास
हृदै हरख वहु धारिकै लिखी जो उत्तम नाम ।।४६।।

इति श्री शीलकथा सपूर्ण लिखते उत्तमचन्द व्यास मलारणा का ।

४७३९. **शीलतरंगिरणी—(मलयसुन्दरी कथा) ग्रखयराम लुहाडिया** । पत्रस० ८८ । ग्रा० १०$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प.) । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १८६ सावन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रारम्भ के ५३ पत्र नवीन है । ग्रागरा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४७४०. **प्रति स० २** । पत्र स० ७७ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल० × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ५०८ । । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ग्रन्तिम पत्र नही है ।

४७४१. **शीलपुरंदर चौपई—×** । पत्रस० १० । ग्रा० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७२० । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर ववलाना (बूंदी) ।

विशेष—मुनि ग्रमरविमलगरिण ने बीकानेर मे प्रतिलिपि की थी ।

४७४२. **शीलसुन्दरीप्रबध—जयकीर्ति** । पत्रस० १६ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १६६० । पूर्ण । वेष्टनस० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—ग्रग्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४७४३. **शीलोपदेश रत्नमाला—जसकीर्त्ति** । पत्र स० ११ । ग्रा० ११ × ४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मदिर ग्रलवर ।

विशेष—गुजराती भाषा मे टिप्पण है । जसकीर्ति जयसिंह सूरि के शिष्य थे ।

४७४४. **शीलोपदेश माला—मेरुसुन्दर** । पत्र स० १६६ । ग्रा० ९$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल सं० १८२९ भादवा बुदि ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

४७४५. श्रीपाल सौभागी आख्यान—वादिचन्द्र । पत्रस० २२ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल सं० १६५१ । ले० काल स० १७६० कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २४६, ७६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । प्रति अत्यन्त जीर्ण है ।

४७४६. प्रति सं०२ । पत्रस० ३० । आ० १०½×५ इच । ले०काल स० १७५३ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४७४७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २ ३६ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल स० १८१६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४७४८. श्रुतावतार कथा—× । पत्रस० ५ । आ० ११×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

४७४८ क. प्रतिसं० २ । आ० ११×५¾ इञ्च । ले० काल स० १८६३ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महाराज सवाई रामसिंह के राज्य मे जयपुर मे लश्कर के नेमि जिनालय मे प० झाझूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४७४९. श्रेणिक महामांगलिक प्रबन्ध—कल्याणकीर्ति । पत्र स० ३६ । आ० ११ ×४½ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय कथा । र०काल स० १७०५ । ले० काल स० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

४७५०. षटावश्यक कथा—× । पत्र स० ६ । आ० १०×४½ इच । भाषा हिन्दी । विषय कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है । ५ कथा तक पूर्ण है । प्रति प्राचीन हैं ।

४७५१. सगर प्रबन्ध—आ० नरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १० । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य । विषय कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४७५२ सदयवत्छ सार्वलिगा चौपई— × । पत्र स० १२ आ० ८¾×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—पत्र ६ तक है आगे चोबीस बोल है वह भी अपूर्ण है ।

४७५३ सप्तव्यसन कथा—सोमकीर्ति । पत्रसं० १०२ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल स० १५२६ माघ सुदी १ । ले०काल स० १८३६ अगहन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—लाखेरी नगर मध्ये लिखित बाबा श्री ज्ञानविमल जी तत् शिष्य रामचन्द्र ।

४७५४. प्रतिसं० २। पत्रसं० ११२। आ० ६$\frac{3}{4}$×६ इञ्च। ले० काल स १८८३। पूर्ण। वेष्टन स० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

ग्रन्थाग्रन्थ २०६७ श्लोक प्रमाण है।

४७५५. प्रति स०३। पत्रसं० २/११६। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल स० १७३८। पूर्ण। वेष्टन स० ३५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—सवत् १७३८ वर्षे प्रथम चैत्र बुदी १ रवि दिने ब्रह्म श्री धनसागरेण लिखित स्वयमेव पठनार्थ।

४७५६. प्रतिसं० ४। पत्र स० ६६। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १६६० ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० २०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६० वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे पूरिणमा तिथौ भौमे भेलसा महास्थाने श्री चन्द्रप्रभ चैत्या–लये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगरणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिदेवा भ० श्री भुवन कीर्तिदेवा भ० श्री ज्ञानभूषणदेवा भ० श्री विजयकीर्तिदेवा भ० श्री शुभचन्द्रदेवा भ० श्री सुमतिकीर्ति भ० श्री गुणकीर्तिदेवा भ० श्री वादिभूषणदेवा भ० श्री रामकीर्तिदेवा भ० पद्मनंदि तत् शिष्य ब्रह्म रूडजी स्वय लिखित। शुभं भवतु।

४७५७. प्रतिसं० ५। पत्र स० ७६। आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १६०५। पूर्ण। वेष्टन स० १४४–६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६०५ समये आश्विन बुदी ३ बुधवासरे श्री तीर्थराज प्रयाग ग्रामे सलेम साहिराज्ये।

४७५८. प्रतिसं० ६ ×। पत्र स० ६३। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल स० १६१६। पूर्ण। वेष्टन स० १४४ ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डुगरपुर।।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—सवत् १६१६ वर्षे आषाढ बुदी ८ भौमे पूर्व भाद्रपद नक्षत्रे श्रीमत् काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे श्रीरामसेनान्वये श्री वादीमकुंभस्थविदारणैकपचानन भट्टारक श्री सोमकीर्तिदेवा तत्पट्टे त्रयोदशप्रकारचरित्रप्रतिपालक भट्टारक श्री विजयसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री विद्वज्जनकमलप्रतिबोधन मार्तण्डावतार भट्टारक श्री कमलकीर्तिदेवा तत्पट्टे को धारणश्रीरसरस्वती शृगारहार षट्भाषानिवास भट्टारक श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्पट्टे चरित्रचूडामणि भट्टारक श्री महेन्द्रसेनदेवा तत्पट्टावर धवय हिम करोयम् सरस्वती कण्ठाभरण भूषित सर्वागकलाप्रवीण सदेमपरदेशलब्धप्रभाप्रतिष्टोदय भट्टारक श्री विशालकीर्ति आचार्य श्री सिधकीर्तिदेवा तत् शिष्य ब्रह्म श्री भोजराज भट्टारक श्री महेन्द्रसेन शिष्यनी आर्यका जीवाकेण तया इद सत व्यसनस्य पुस्तक लिखापित ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थ ब्रह्म भोजराज पठनार्थ।

४७५९. प्रति सं० ७। पत्रस० १४२। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल स० १६५८। पूर्ण। वेष्टन स० २४३-६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४७६०. प्रतिसं० ८ । पत्र सं० ७६ । आ० १०½ × ५ इन्च । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—शेरगढ मे दयाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४७६१. प्रति सं० ९ । पत्र स० ६७ । आ० १० × ४ इन्च । ले० काल स० १७५१ माह सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४७६२. प्रति सं० १० । पत्रस० ६७ । आ० ११½×४½ इन्च । ले०काल सं० १७८५ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस०७७९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष—वृन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

४७६३. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ११३ । आ० ६½ × ६ इंच । ले० काल स० १६२५ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

४७६४. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ६८ । आ० १२×५½ इन्च । ले०काल सं० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर नागदी, बूंदी ।

विशेज—प० गुलाबचदजी ने कोटा मे प्रतिलिपि की थी ।

४७६५. प्रतिसं० १३ । पत्र स० २५ । आ० १३ × ५½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—निम्न प्रशस्ति दी हुई है

मिति आसोज शुक्ला प्रतिपदा सोमवासरान्वित लिखितं नग्र कोटा मध्ये लिखापित पडितोत्तम पडितजी श्री १०८ श्री शिवलालजी तत्शिष्य श्री रत्नलालजी तस्य लघुभ्राता पडितजी श्री बीरदीलालजी तत् शिष्य श्री नेमिलाल दवलाणा हालानें ।

४७६६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १०८ । आ० ९×४ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—पत्र बडे जीर्ण शीर्ण है तथा १०८ से आगे नही है ।

४७६७. प्रतिसं० १५ । पत्र स० ३२ । आ० ९ × ५½ इन्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

४७६८. प्रतिसं० १६। पत्रस० ३५ । ले०काल × पूर्ण । वेष्टनसं० ७०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४७६९. सप्तव्यसन कथा—भारामल्ल । पत्रस० ७५ । आ० १२×६½ इन्च । ले०काल सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४७७०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०१ । आ० ११½×६ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८९–११९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

४७७१. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १६५ । आ० ११×५½ इन्च । ले०काल स० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—राजमहल नगर में सुखलाल शर्मा ने तेजपाल के लिये लिखा था।

४७७२. **प्रति सं० ४** । पत्रस० १०७ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

४७७३. **प्रति सं० ५** । पत्र स० १२६ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वे० सं० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—चदेरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

४७७४. **प्रति सं० ६** । पत्रस० ११४ । आ० १३½ × ८½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४७७५. **प्रति स० ७** । पत्र स० १२४ । आ० १० × ७ इञ्च । ले०काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टनस० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी ।

४७७६. **प्रति सं० ८** । पत्र स० १०० । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

४७७७. **प्रतिसं० ९** । पत्र स० ११३ । आ० १३½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करोली ।

४७७८. **प्रतिसं० १०** । पत्र स० ८१ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०कालस० १८७१ आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—गुरुजी गुमानीराम ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

४७७९. **सप्तव्यसन कथा** — × । पत्रस० ७५ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

४७८० **सम्यक्त्व कौमुदी—धर्मकीर्ति** । पत्रस० ३३ । आ० १० × ५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल स० १६७८ भादवा बुदी १० । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० २०-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

अन्तिम—

श्री मूलसंघेवरगच्छे बलात्कारगणे वने ।
कुंदकुंदस्य सताने मुनिर्ललितकीर्तिवाक्
तत्पदाबुजमार्तण्डे धर्मकीर्तिमुनिर्महान्
तेनाय रचितो ग्रन्थ सक्षिप्य स्वल्प बुद्धिना ॥४॥
अष्टर्षि रसचद्राके वर्षे भाद्रपदमिलने
दशम्या गुरुवारेय ग्रन्थ सिद्धोहि नन्दतात् ॥५॥
यदत्र सुवासित किंचिद ज्ञानाद्वा प्रमादत ।
तत् शोध्य कृपयासद्भि मतेपा सहजो गुण ।
विश्वेश्वरै पूजितपादपद्मो गणेश्वरै मनी ..... ।
तदिभ्य नरेश्वरैः सतत गण्यमानो जिनेश्वर ॥७॥

इति श्री सम्यक्त्वकौमुदीग्रंथे उदितोरूप महाराज सुबुद्धि मंत्रीश्रेष्ठी अर्हदास सुवर्ण खुर चौर स्वर्गगमनवर्णन नामः दशम सधि ।।

४७८१. **सम्यक्त्व कौमुदी — ब्रह्मखेता** । पत्रस० १८३ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८०६ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ६१ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४७८२. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १४३ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले० काल स० १८८५ वैशाख बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

४७८३. **प्रति सं० ३** । पत्र स० १२५ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल स० १६७३ श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है ।

४७८४ **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १६२ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९२६ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

लेखक प्रशस्ति— श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक धर्म्मचन्द्रजी तत् सि ब्रह्म गोकलजी तत् लघु भ्राता ब्रह्म मेघजी लीखितं । श्री दक्षिणदेशमध्ये अमरापुर नग्रे । श्री शातिनाथ चैत्यालये ।

४७८५. **प्रति स० ५** । पत्र स० १२० । आ० १२ × ४¾ इञ्च । ले० काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—श्री जिनाय नम सवत् १७४६ वर्षे मिति आश्विन कृष्णा पंचम्या भौमे । लिखित सावलराम जोसी वराहथ मध्ये । लिखापित पाडे वृंदावन जी ।

४७८६. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० ६० । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८५१ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

विशेष –सीताराम ने स्वपठनार्थ चाटसू नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

४७८७. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० १४४ । आ० ११×४¾ इञ्च । ले०काल स० १६३४ आसोज बुदी ८ । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष— धर्मचन्द्र की शिष्यणी आ० मणिक ने लिखवाकर श्रीहेमचन्द्र को भेंट की थी ।

४७८८. **प्रतिसं० ८** । पत्र सख्या ५६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १६६६ पौष बुदी १४ । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प० केशव के पठनार्थ रामपुरा में प्रतिलिपि हुई थी ।

४७८९. **सम्यक्त्वकौमुदी—जोधराज गोदीका** । पत्र स० ६२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल सं० १७२४ फागुण बुदी १३ । ले० काल स० १८६८ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४७६०. **प्रतिसं० २** । पत्र संख्या ४८ । ले० काल स० १८८५ कार्तिक बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन संख्या १५८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—किशनगढ मे लुहाडियो के मन्दिर मे प० देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

४७६१. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १५६ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले० काल स १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १६२० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६२. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ६३ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वे० स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४७६३. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० ६४ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल स० १६२३ पूर्ण । वेष्टन स० ३३/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—सदासुख ने दूनी मे प्रतिलिपि की थी । स० १६३१ मे पाव उपवास के उपलक्ष मे अभयचद की बहू ने चढाया था ।

४७६४. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० ६३ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १६३३ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

४७६५. **प्रतिसं० ७** । पत्र सं० ५४ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १६५६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

४७६६. **प्रति सं० ८** । पत्र स० ७७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १७५७ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ३१-१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—दयाराम भावसा ने घासीराम जी की पुस्तक से फागुई के तेरह पंथियो के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी ।

४७६७ **प्रति सं० ९** । पत्र स० ७७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १८३५ वैसाख सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन स० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४७६८. **प्रतिसं० १०** । पत्रस० ६३ । आ० ११ × ४½ इच । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६/८२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष —टोडा का गोडा मध्ये लिखित ।

४७६९ **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० ७२ । ले० काल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

४८००. **प्रति सं० १२** । पत्र स० ५१ । ले० काल स० १८८४ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

४८०१. **प्रतिसं० १३** । पत्रस० ४१ । आ० १२×५½ इंच । ले०काल सं० १८६६ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष— रोतमदासजी अग्रवाल के पुत्र ताराचंद ने प्रतिलिपि कराई थी ।

४८०२. प्रति सं० १४ । पत्र स० ५१ । आ० १३$\frac{1}{2}$×८ इञ्च । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

४८०३. प्रतिसं० १५ । पत्रसं० ८५ । आ० ९ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८४१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

४८०४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ६२ । आ०१२ × ७ इंच । ले० काल सं० १९५१ सावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१/१४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

४८०५. प्रतिसं० १७ । पत्र स० ४४ । ले० काल सं० १८९२ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२(क)/१४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर अलवर ।

४८०६. प्रति स० १८ । पत्रस० ७७ । ले०काल सं० १८७७ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ (ख) १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४८०७. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ९५ । ले० काल सं० १८८४ । पूर्ण । वे० स० ५६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४८०८. प्रति सं० २० । पत्र स० ४१ । ले० काल सं० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० ५७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४८०९. प्रति स० २१ । पत्र स० ९२ । ले०काल स० १७९९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—मनसाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४८१० प्रति सं० २२ । पत्र सं० १११ । आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

४८११ प्रतिसं० २३ । पत्रस० ६३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

४८१२. प्रतिसं० २४ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर बयाना ।

४८१३. प्रतिसं० २५ । पत्रस० ५७ । आ० १३×५$\frac{3}{4}$ इच । पूर्ण । वेप्टन सं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करोली ।

४८१४. प्रतिसं० २६ । पत्र सं० १०१ । आ० ९$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १९१० कार्त्तिक वदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६०/७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करोली ।

विशेष—करौली मे लिखा गया था ।

४८१५. प्रति स० २७ । पत्रसं० ५६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८९० फागुन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ६८-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष – सेवाराम श्रीमाल ने गुमानीराम से करौली में प्रतिलिपि करवाई थी ।

४८१६. प्रति स० २८ । पत्रसं० ४५ । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—नोनदराम लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी ।

४८१७. **प्रति स० २६** । पत्रसं० ५० । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन** सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

४८१८. **प्रति स० ३०** । पत्रस० ५४ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—डीग नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

४८१९. **प्रति सं० ३१** । पत्रस० ७० । आ० १२×६ इच । ले० काल स० १६११ । पूर्ण । **वेष्टन** सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

४८२०. **प्रति स० ३२** । पत्र स० ६५ । आ० ९×६½ इंच । ले० काल स० १८५६ पौष सुदी ६ । पूर्ण । **वेष्टन**स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—सेवाराम ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

४८२१. **प्रतिसं० ३३** । पत्रसं० ७१ । आ० १३×४½ इञ्च । ले० काल स० १८६१ द्वि० चैत्र बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १५-२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—देवगरी (दौसा) निवासी उदैचन्द लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी ।

४८२२. **प्रतिसं० ३४** । पत्रस० ६६ । आ० १२ × ६ इच । ले०काल स० १८६१ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७-७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—प्रमन महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई पृथ्वीसिंह जी का मे दीवान आरतिसिह खिंदूको सुसाहिब खुस्यालीराम बोहरो । लिखी सरूपचद खिदूका को बेटो पिरागदास जी खिन्दूको ।

४८२३. **प्रतिसं० ३५** । पत्र स० ५८ । आ० १३×६½ इञ्च । ले०काल स० १८४८ । पूर्ण । वेष्टन स० २८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—भीलोडा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४८२४. **प्रति सं० ३६** । पत्र स० ६७ । आ० १२×५½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४८२५. **प्रतिसं० ३७** । पत्र स० ८३ । आ० १०×६ इंच । ले० काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—राजमहल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४८२६. **सम्यक्त्व कौमुदी भाषा—मुनि दयाचद** । पत्र स० ६१ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—कथा । र०काल स० १८०० । ले० काल स० १८०२ आषाढ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

४८२७. **सम्यक्त्व कौमुदी—विनोदीलाल** । पत्र सं० ११२ । आ० १२×८ इच । **भाषा**–हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल सं० १७४६ । ले० काल स० १६२८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८२८. सम्यक्त्व कौमुदी—जगतराय । पत्र स० १०२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७२२ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—प्रशस्ति मे लिखा है—

काशीदास ने जगतराम के हित ग्रंथ रचना की थी ।

४८२६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ११६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

४८३०. सम्यक्त्व कौमुदी कथा × । पत्र स० ६३ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४८३१. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— × । पत्रस० ८८ । आ० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४८३२. सम्यक्त्व कौमुदी कथा — × । पत्र स० १२२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८५३ माह सुदी १३ । । पूर्ण । वे० स० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४८३३. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— × । पत्रस० ६४ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४८३४. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— × । पत्र स० ८६ । आ० १० × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८१२ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४८३५. सम्यक्त्व कौमुदी कथा — × । पत्र स० १३५ । आ० १२×५ इच । भाषा-सस्कृत । विपय कथा । र० काल × । ले० काल स० १६५६ । चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २३-१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष—आचार्य सकलचद्र के भाई प० जैसा की पुस्तक है ।

४८३६. सम्यक्त्व कौमुदी कथा—× । पत्र स०६२ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १६८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३-५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६६८ वर्षे चैत्र सुदि १३ दिने लिपी कृतं पूज्य श्री १०५ विशालसोमसूरि शिष्य सिंहमोम लिपि कृतं ।

४८३७. प्रति सं० २ । पत्र स० १२६ । आ० १३×७ इंच । ले० काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११४-५५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त ।

४८३८. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— × । पत्रसं० ५३ । आ० ११२ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८३९. सम्यक्त्व कौमुदी कथा । पत्रसं० १३४ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८३७ आसौज वदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

विशेष—वैष्णव जानकीदास ने डालचद के पठनार्थ करौली में प्रतिलिपि की थी ।

४८४०. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— × । पत्र स० १०० । आ० ९½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर बयाना ।

४८४१. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— × । पत्रसं० १-३४, ६६ भाषा-सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४८४२. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— × । पत्रस० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४८४३. सम्यक्त्वकौमुदी कथा— × । पत्र स० १०७ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७५५ । पूर्ण । वेष्टनस० २६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवत् १७५५ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्या तिथौ भौमवासरे श्री हीरापुरे लिखित सकलगणि नगेन्द्रगणि श्री ५ रत्नसागर तच्छिष्य गणिगणोत्तम सगणि श्री चतुरसागर तच्छिष्य गणि गणालकार गणि श्री रामसागर तच्छिष्य पंडित सुमतिसागरेण ।

४४८४. सम्यक्त्वकौमुदी— × । पत्रस० ११३ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी ।

विशेष—सवत् १७४६ वर्षे मिती कार्तिक शुक्ला तृतीयाया ३ भौमवासरे लिखितमिद चौबे रूपसी खीवसी ज्ञाति सिनावढ वणाहटा मध्ये लिखायत च पाहडया मयाचद माधो सुत ।

४८४५. सम्यक्त्वकौमुदी कथा— × । पत्रस० ४० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—लिखित कृषि कपूरचन्द नीमच मध्ये । प्रति प्राचीन है ।

४८४६. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— × । पत्र स० २-८२ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८५६ फागुण मुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष– प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। महोपाध्याय मेघविजयजी तत् शिष्य प० कुशलविजय जी तत् शिष्य ऋद्धिविजय जी शिष्य पं० भुवन विजयजी तत् शिष्य विनीत विजय गणि लिखितं।

४८४७. सम्यक्त्व कौमुदी कथा—× । पत्रसं० १४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६-२११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिह टोंक ।

४८४८. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— × । पत्रसं० १६ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १७२१ फागुन वदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—साह जोधराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

४८४९. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— × । पत्रस० ५५-१११ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १४५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

४८५०. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— × । पत्र स० ५५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृति । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४८५१. सम्यक्त्व कौमुदी कथा—× । पत्रस० ५४ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

४८५२. सम्यक्त्व लीलाविलास कथा—बिनोदीलाल । पत्र स० २२६ । आ० ६½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल । ले० काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

४८५३. सम्यग्दर्शन कथा—× । पत्र सं० १२६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४८५४. सिद्धचक्र कथा—शुभचन्द्र । पत्रस० ५ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल । × ले०काल सं० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

४८५५. प्रति सं० २ । पत्रस० ५ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८४२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूंदी ।

४८५६. सिद्धचक्र कथा—श्रुतसागर । पत्रस० २३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १५७६ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—आर्या ज्ञानश्री ने प्रतिलिपि करायी थी।

४८५७. सिद्धचक्र कथा – भ० सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ५ । आ० १५ × ६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल स १८७६। पूर्ण। वेष्टन स० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष-प्रशस्ति में निम्न प्रकार भट्टारक परंपरा दी है देवेन्द्रकीर्ति महेन्द्रकीर्ति क्षेमेन्द्रकीर्ति और सुरेन्द्रकीर्ति।

४८५८. सिद्धचक्रव्रत कथा—नेमिचन्द्र पत्रसं० १६६ । भाषा-संस्कृत। विषय—कथा। र०काल × । ले० काल × पूर्ण। वेष्टन सं० ७७-३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति विद्वद्वर श्री नेमिचन्द्र विरचिते श्री सिद्धचक्रसार कथा सबधे श्री हरिषेण चक्रधर वैराग्य दीक्षा वर्णनो नाम सप्तम सर्ग ।।७।।

४८५९. सिद्धचक्रव्रत कथा—नथमल। पत्र सं० २६ । भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल स० १८८६। पूर्ण। वेष्टन स० २००१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी

विशेष—जादूराम छाबडा चाकसूवाला ने बोली मे प्रतिलिपि करवाई थी।

ग्रन्थ का नाम श्रीपाल चरित्र है तथा अष्टाह्निका कथा भी है।

४८६०. प्रतिसं० २। पत्र स० १३। आ० १२½×८ ½इञ्च। ले०काल × पूर्ण। वेष्टन स ३५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४८६१. प्रति सं० ३। पत्रसं० ७। आ० १२×७¾ इञ्च। ले०काल स० १६४२ कार्तिक सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन स० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

४८६२. सिंहासन बत्तीसी-ज्ञानचन्द्र। पत्र स० २६। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० १८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

४८६३. सिंहासन बत्तीसी—विनय समुद्र। पत्र स० २६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—कथा। र०काल स० १६११। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन स० ७४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—इसमे ४१ पद्य है। रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

श्री सारदाई नम । श्री गुरूभ्यो नमः ।
सयल मगल करण आदीस ।
मुनयण दाइणि सारदा सुगुरु नाम निय ।
चितधारिय नीर राइ विक्रम तणउ ।
सत्तसील साहस विचारीय ।।

सिंहासन बत्तीसी जिनउ सिद्धसेन गणधारि ।
भाख्यु ते लवलेस लहि दायइ विनइ विचार ॥१॥

दूहा—

सिंहासन सौहग सभा निणि पूतली बत्तीस ।
भोजराइ आगलि करइ विक्रमराइ सतीस ॥२॥
ते सिंहासन केहनउ किणि आप्यु किम भोजि ।
लाधउ केम कथा कही ते सभलज्यो वोज ॥३॥

अन्तिम—

पास सतानी गुणे वारिट्ठ केमी गुरु सरिबा जगि जिट्ठ ॥
रयणप्पह सूरीसर जिसा अनुक्रमि कक्‍वु सूरिगुण निसा ॥३७॥
तासु पाटि देवगुपति गुरुचद,तेहनइ पाटहि सिद्ध सुरिदं ॥
तेहनई पद पंजक जिम भाण, जे गुरु गरु आगुणे निहाण ॥३८॥
स पइ विजयवत कक्‍वु सूरि, तम पसाइ मइ आणद सूरि ।
अतेवासी तेहनउ सदा, हर्ष समुद्र जिसो निधि मुदा ॥३९॥
तसु पयकमल कमल मध भृग, विनय समुद्र वाचकमन रंग ॥
सवत् सोलह वरसइ ग्यार, सिंघासण बत्तीसी सार ॥४०॥
लेइ बोधउ एह प्रबध, मदमती मइ चौउपइ बधि ।
भणतो गुणता हुइ कल्याण,अविचल वीकनीयर अहिठाण ॥४१॥

इति सिंधासणबत्तीसी कथा चरित्र सपूर्ण

४८६४. **सिंहासन बत्तीसी—हरिफूला** । पत्रस० १२३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १६३६ । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

प्रारम्भ—मगला चरण ।

आरादी श्री रिषभप्रभु जुगलाधर्म निवारि ।
कथा कहो विक्रमतणी, जास साकउ विस्तार ॥
साको वरत्यो दान थी दान बडो ससारी ।
बलि विशेष जिण सासणी बोल्या पंचप्रकार ॥
अभय सुपात्र दान चिहुँ प्राणी मोख सजोग ।
अनुकपा धरि तर्कु चित एत्रिहू दाने भोग॥

पत्र ७२ पर कथा ६

हिवसारारे नयरी, भोज निरंसरु ।
सिंधासण रे आवे शुभ महूर्त्त बरु ॥
तब राधारे दशमी बोलेऊ सही ।
विक्रम समरे होवै तो बैसे सही ॥

चंद—

वंसे सही इम सुयरी पूछै भोज ततखिण पूतली ।
किम हुयो विक्रमराय दाता भरणै ते हरखे चली ।।
नयरी भ्रवतीराय विक्रम सभा बैठो सन्यदा ।
धन खंड योगी एक भ्रायो कहै बनमाली तदा ।

भ्रन्तिम—प्रशस्ति निम्न प्रकार हैः—

श्री खरतर रे गरगहर गुरु गोयम समो,
निति उठी रे श्री जिनचद्र सूरि पय नमो ।
तसु गर्छं रे सप्रति गुरा पाठक तिलो ।
बड बादीने श्री विजयराज वसुधा निलो ।।
वसुधा निलो तसु सीस बोले सघनं भ्राग्रह करी ।
दे सैस बाल खडेह नयरी सदा जे भ्रारगद भरी ।
संवत् सोलह सौ छत्तीस मे बीत भ्रासू वदि कथा ।
तिहि कहिय सिंघासस बत्तीसी कही हीर सुणी यथा ।
परग चरितं रे दूहा गाहा चौपई ।
सहू भ्रकंशे वावीस सं वात्रीसथई ।।
खांमू बली हू सब से मुखि मान छोडिय भ्रापणो ।
जे सासत्र शार्क हुवे मिलतो तेह निरतो थापणं
ए चरित साभलि जेय मानव दान भ्रापो निज करं
जे पुण्य पसायं सुखी थावे रिधि पामं बहु परं ।

इति श्री कलियुग प्रधान दानाधिकार श्री विक्रमराय श्री भोजनरिंद सिंघासरण बित्तीसी चौपई संपूर्ण । लि० श्री जिनजी को खानाजाद नान्होंराम गोधो वासी सूरतगढ को, पढैत्या दनै श्री जिनाय नमः बच्या । भूल्यौं चूक्यो सुधारि लीज्योजी मिती द्वितीय भादवा सुदी १० दीतवार स० १८०६ का । लिखाई ब्रह्म श्री श्री रूपसागर जी विराजं वैराठमध्ये । शुभ भवतु ।

४८६५. **सिंहासन बत्तीसी**—× । पत्र स० २१ । भ्रा० ११$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५८५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर भ्रजमेर ।

४८६६. **सिंहासन बत्तीसी**— × । पत्र स० १६ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प चायती मन्दिर भरतपुर ।

४८६७. **सिंहासन बत्तीसी**—× । पत्रस० १२३ । भ्रा० ५ ×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १६५४ चैत बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूदी)

विशेष—चंपापुरी मे लिखा गया था ।

४८६८. **सिंहासन बत्तीसी**— × । पत्र सं० १० । भ्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भ्रादिनाथ स्वामी, मालपुरा (टोंक)

४८६९. **सुकुमार कथा**—× । पत्रस० ८ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८७०. **सुकुमालस्वामी छंद—ब्र० धर्मदास** । पत्र सं० ३ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल सं० १७२४ सावण बुदी २ । पूर्ण । **वेष्टन सं० २२५/४५ प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ब्र० शिवराज ने कोट महानगर मे प्रतिलिपि की थी । ब्र. धर्मदास सुमतिकीर्ति के शिष्य थे ।

४८७१. **सुखसंपत्ति विधान कथा**— × । पत्र सं० २ । ग्रा० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४८७२. **सुखसंपत्ति विधान कथा**—। पत्रसं० २ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४८७३. **सुगन्धदशमी कथा—राजचन्द्र** । पत्रसं० ६ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० १४३ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बूंदी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४८७४. **सुगन्धदशमी कथा—खुशालचन्द्र** । पत्र स० १२ । ग्रा० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४/६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

४८७५ **प्रति सं० २** । पत्र स० ११ । ग्रा० १०¾×५¾ । ले० काल सं० १६१२ ग्राजोज बुदी ८ । पूर्ण । वेप्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—लिखित सेवाराम बघेरवाल इन्दरगढ मध्ये ।

४८७६. **प्रति सं० ३** । पत्रस० १३ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६४४ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ५४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—पुन्दरलाल वैद ने लिखी थी ।

४८७७. **प्रति सं० ४** । पत्रस० ७ । ग्रा० १२½×७½ इञ्च । ले०काल सं० १६२७ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष-डीगवाले मोतीलाल जी बालमुकन्दजी जी के पुत्र के पठनार्थ भरतपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८. **प्रति सं० ५** । पत्रसं० १३ । ग्रा० ६¾×४½ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

४८७९. **प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० १५ । ग्रा० ६×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

४८८०. **सुगंधदशमी कथा**—× । पत्र सं० ४ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेस्टन स० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सूतक विचार भी हैं ।

४८८१. **सुभाषित कथा**— × । पत्रसं० १७१ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विषय**—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—इससे आगे पत्र नहीं है । रत्नचूल कथा तक है ।

४८८२. **सुरसुन्दरी कथा**—× । पत्रसं० १७ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७४/४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

४८८३. **सेठ सुदर्शन स्वाध्याय—विजयलाल ।** पत्र स० ३ । ग्रा० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल स० १६०२ । ले० काल स० १७१७ ग्राषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सूर्यपुर नगर मे लिखा गया था ।

४८८४. **सोमवती कथा**— । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—'महाभारते भीष्म युधिष्ठर सवादे' में से है ।

४८८५. **सौभाग्य पंचमी कथा**— × । पत्र स० १० । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल स० १६५५ । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० ६८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित है ।

४८८६. **संघवुल**— × । पत्रसं० ३, ७-१० । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा – हिन्दी (पद्य) । **विषय**—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४८८७. **संवादसुन्दर** × । पत्रस० ११ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—शारदापद्मपति सवाद, गगादारिक्षपय सवाद, लोकलक्ष्मी सवाद, सिह हस्ति सवाद, गोधूमचणक संवाद पञ्चेन्द्रिय सवाद, मृगमदचन्दन सवाद एव दानादिचतुष्क सवाद का वर्णन है ।

प्रारम्भ—

प्रणम्य श्रीमहावीर वर्द्धमानपुरंदरम् ।
कुर्व्वे स्वात्मोपकाराय ग्रंथ सवादसुन्दरम् ।।१।।

४८८८. स्थानक कथा— × । पत्रस० ६६ । ग्रा० ११ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ३३० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री एकादश स्थाने करुणदेवकथानक संपूर्ण । ११ कथायें हैं ।

४८८९. हनुमत कथा—ब्रह्म रायमल्ल । पत्रस० ३९ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी प. । विषय कथा । र०काल स० १६१६ । **ले०काल** स० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—ज्ञानचद तेरापथी दौसा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९०. प्रतिसं० २ । पत्रस० २७ । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

४८९१ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५९ । ग्रा० १२ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १९५० । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—जैन पाठशाला जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४८९२. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ७० । ग्रा० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४८९३. हरिश्चन्द्र राजा की सज्झाय — × । **पत्रसं०** १ । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४८९४. हरिषेण चक्रवर्त्ती कथा—विद्यानन्दि । पत्रसं० ५ । ग्रा० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

४८९५. होली कथा । पत्रस० ३ । ग्रा० ११$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० १७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४८९६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । ग्रा० ११×५ इच । ले० काल × । वेप्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

४८९७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५ । ग्रा० ९×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६७५ । **वेष्टनसं०** १८१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

विशेष—मोजाबाद मे रामदास जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९८. होली कथा— × । पत्रस० ३ । ग्रा० ११ × ५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × ले० काल सं० **१८७८ पौष बुदी ११** । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४८६६. होली कथा। पत्र सं० ३। ग्रा० ११½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल सं० १८६०। पूर्ण। वेष्टन स० १७७-७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

४६००. होली कथा—मुनि शुभचन्द्र। पत्रस० १४। ग्रा० ६½×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र०काल स० १७५५। ले०काल सं० १८६४। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

विशेष—इति श्री धर्म परीक्षा ग्रंथउतै द्धृत ग्राचाग्जि शुभचन्द्र कृत होली कथा संपूर्ण।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मूलसंघ भट्टारक संत, पट्ट ग्रामेरि महा गुणवत।
नरेन्द्रकीर्ति पाट सोहंत, सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारकवत ॥११६॥
ताके पाटि धर्म को थभ, सोहै जगतकीर्ति कुलथभ।
क्षमावत शीतल परिनाम, पडित कला सोहै गुण धाम ॥११७॥
ता शिष्य ग्राचारिज भेष. लीया सही सील की रेख।
मुनि शुभचन्द नाम प्रसिद्ध कवि कला मे ग्रधिकी बुद्धि ॥११८॥
ताके शिष्य पंडित गुणधाम, नगराज है ताको नाम।
मेधो जीवराज ग्रन जोगी, दिव चोखो जसो शुभ नियोगी ॥११६॥
देस हाडौती सुवसै देस, तामे पुर कुजड कही ·· ····।
ताकी शोभा ग्रधिक ग्रपार, नसिया सोहै बहुत प्रकार ॥१२०॥
हाडावशी महा प्रचण्ड, श्री रामस्यघ धर्म को माड।
ताके राज खुशाली लोग, धर्म कर्म को लीहा सजोग ॥१२१॥
तिहा पौण छतीसू क्रीडा करै, आपणो मार्ग चित्त मे धरै।
श्रावक लोग बसै तिहथान, देव धर्म गुरू राखै मान ॥१२२।
श्री चन्द्रप्रभ चैतालो जहा, ताकी मोभा को लग कहा।
तहा रहे हम बहोत खुश्याल, श्रावक की देख्या शुभ चाल।
तातै उदिय कियो शुभकर्म, होली कथा बनाई परम ॥
भाषा बध चौपई करी, स गति भली तै चित मे धरी ॥१२४॥
मुनि शुभचन्द करी या कथा, धर्म परीक्षा मे छी जथा।
होली कथा मनै जो कोई, मुक्ति तरुण, सुख पावै सोय ॥
संवत सतरासै परि जोर, वर्ष पचावन ग्रधिका ग्रौर ॥१२६॥
साक गरिण सोलाछैबीस, चैत सुदि सातै कहीस।
ता दिन कथा संपूरण भई, एक सो तीस चौपई भई ॥
सांयदिन मे जोडी पात, दोन्यू दिसा कुशलात ॥१२७॥

संवत १८६४ मे साह मोजीराम कटारया ने राजमहल मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि कराई थी।

४६०१. होली कथा--छीतर ठोलिया। पत्र सं० १०। ग्रा० ७½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी प०। विषय—कथा। र०काल सं० १६६० फाल्गुण सुदी १५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

४६०२. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ८ । आ० ११½×४½ इञ्च । **ले०काल सं०** १८८० फागुण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं०१६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

४६०३. **होलीपर्वकथा**— × । पत्रसं० ३ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६०८ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६०४. **होली पर्व कथा**— × । पत्रसं० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६०५. **होलीरज पर्वकथा**— × । पत्रसं० २ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८३/११५ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४६०६. **होलीपर्वकथा**— × । पत्रसं० ३ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६०७. **होलीरेणुकापर्व—पंडित जिनदास** । पत्रसं० ४० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल स० १५७१ ज्येष्ठ सुदी १० । **ले०कालस०** १६२८ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—खडेलवाल ज्ञातीय साह गोत्रोत्पन्न श्री पदारथ ने प्रतिलिपि करवायी । फागुई वास्तव्ये ।

४६०८. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ३६ । आ० १०¾×४½ ले०काल स० **१६१५** फागुण सुदी १ । वेष्टन स० १७८ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—तक्षकगढ़ मे महाराजा श्री कल्याण के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४६०९. **हसराज बच्छराज चौपई—जिनोदयसूरि** । पत्र सं० २८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । **ले०काल** स० १८७५ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—मिझल ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४६१०. **हंसराज वच्छराज चौपई**— × । पत्रस० २-१८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।विषय-कथा । र०काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विषय -- व्याकरण शास्त्र

४६११. **अनिटकारिका—** × । पत्र सं० १६ । आ० १०½ × ४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १७५४ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६४ । **प्राप्ति स्थान—** म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६१२. **अनिटकारिका—** × । पत्र स० ३ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५६ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६१३. **प्रति सं० २** । पत्र स० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६० । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६१४. **अनिटकारिका—** × । पत्र स० ४ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८५२ आषाढ शुक्ला ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष— श्रीचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१५. **अनिटसेटकारिका—** × पत्रस० ३ । आ० १० × ४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३१/५८५ । **प्राप्ति स्थान—** सभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष— भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य ब्र० मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४६१६. **प्रति सं० २** । पत्र स० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३२/५८४ । **प्राप्ति स्थान—** सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६१७. **अनेकार्थ संग्रह—हेमराज** । पत्र सं० ६५ । भाषा-सस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान—** सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मूलसंघे भट्टारक श्री सकलकीर्ति त० म० श्री भुवनकीर्ति त० भ० श्री ज्ञानभूषण देवस्तशिष्य मुनि अनतकीर्ति । पुस्तकमिद श्री गिरिपुरे लिखापित ।

४६१८. **अव्ययार्थ** — × । पत्रस० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० २७५ । **प्राप्ति स्थान—** भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४६१९. **अव्ययार्थ—** × । पत्रस० ५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

४६२०. **आख्यात प्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य।** पत्रस० १०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

४६२१ **प्रति सं० २।** पत्रसं० ६३। आ० ६½×५ इञ्च। ले० काल सं० १८७६ फागुन सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० ११८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष—सवाईमाधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६२२. **प्रतिसं० ३।** पत्र सं० ३०। आ० ११×४ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

४६२३. **उपसर्ग वृत्ति** ……। पत्रस० ४। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। वेष्टनस० २५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

४६२४. **कातन्त्ररूपमाला—शिववर्मा।** पत्र स० ६५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—६५ मे आगे पत्र नहीं है।

४६२५. **प्रतिसं० २।** पत्र स० २८। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

४६२६. **कातन्त्रविभ्रमसूत्र—शिववर्मा।** पत्रस० ८। आ० १०½×४½इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले०काल स० १६८१। पूर्ण। वेष्टनस० २६७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—अवचूरि सहित है।

४६२७. **प्रति सं० २।** पत्रस० ५। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४२५/५७२। **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति—

इति श्री कातन्त्रसूत्र विभ्रमसूत्र समाप्त। प० अमीपाल लिखित। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४६२८. **कातन्त्रतरूपमाला टीका—दौर्गसिंह।** पत्र स० ७३। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। **वेष्टनसं० ३६६-१४१। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर।

४६२९. **कातन्त्ररूपमाला वृत्ति—भावसेन।** पत्रस० ६६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६३०. **प्रति सं० २।** पत्रस० ११७। आ० १४×५ इच। ले०काल सं० १५५५। पूर्ण। वेष्टन स० ३०६/५७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति शुद्ध एवं सुन्दर है।

प्रशस्ति—संवत् १५५५ वर्षे आषाढ बुदी १४ भौमे श्री कोटस्थाने श्री चन्द्रप्रभ जिनचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीसकल कीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषणदेवा तत्शिष्य ब्रह्म नरसिंह जोग्य पठनार्थं गार्धा परवत ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थ रूपमालाख्य प्रक्रिया लिखित। शुभ भवतु।

४६३१. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० १३८ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२७/५७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—आगे पत्र फटा हुआ है।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

स्वस्ति संवत १६३७ वर्षे मार्गसिर वदि चतुर्थी दिने शुक्रवासरे श्रीमत् काष्ठासघे नन्दितट गच्छे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये भ० सोमकीर्ति भ० महेन्द्रसेन भ० विशालकीर्ति तत्पट्टे धरणीधर भ० श्री विश्व भूषण ब्र० श्री हीरा ब्र० श्री ज्ञानसागर ब्र० शिवाबाई कमल श्री बा० जयवती समस्तयुक्तं श्रीमत् मरहठदेशे जगदाल्हादनपुरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री भ० प्रतापकीर्ति गुर्वाज्ञापालण प्रवीण बघेरवाल ज्ञातीय नाटल गोत्र जिनाज्ञा पालक सा माउत भार्या मदाइ तयो. पुत्र सर्व कला सपूर्ण ....

४६३२. **कारकखंडन—भीष्म** । पत्र स० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री भीष्म विरचिते बलबधक कारकखंडन समाप्त। प्रति प्राचीन है।

४६३३. **कारकविचार**— × । पत्रस० ६ । आ० ६×४ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टनस० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोक।

विशेष—मालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६३४. **कारिका**— × । पत्रस० ६ । भाषा सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४६३५. **काशिकावृत्ति—वामनाचार्य** । पत्र स० ३५ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय— व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १५६७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०२/६८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति—संवत् १५ आषाढादि ६७ वर्षे शाके १४३२ प्रवर्तमाने आश्वन बुदि मासे कृष्णपक्षे तीया तिथौ भृगुवासरे पुस्तकमिदं लिखित।

४६३६. **कृदंतप्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य** । पत्र स० १६ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले०काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

४६३७. **क्रियाकलाप—विजयानन्द।** पत्रसं० ५। आ० १०×५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर, इन्दरगढ़ (कोटा))

४६३८. **चतुष्क वृत्ति टिप्पण—पं० गोल्हण।** पत्रसं० २-६२। आ० १३×४ इंच। भाषा—सस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४०८/२६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर, उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री पडित गोल्हण विरचिताया चतुष्क वृत्ति टिप्पणिकाया चतुर्थपादसमाप्त.

४६३६. **चुरादिगण**—×। पत्रसं० ७। आ० १०½×५ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल ×। ले०काल ×। वेष्टनसं० ६७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४६४०. **जैनेन्द्रव्याकरण—देवनंदि।** पत्र स० १३२। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १५७६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—ग्रथ का नाम पचाध्यायी भी है। देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है।

४६४१. **प्रति स० २।** पत्र स० २०१। आ० ११ × ४½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

४६४२. **प्रति सं० ३।** पत्रस० ८६। आ० १३×८ इञ्च।। ले०काल स० १६३५ माघ बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

४६४३. **तत्वदीपिका**—×। पत्रस० १८। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—सिद्धान्त चन्द्रिका की तत्वदीपिका व्याख्या है।

४६४४. **तद्धितप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य।** पत्रसं० ६५। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० २४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

४६४५. **तद्धितप्रक्रिया—महीभट्टी।** पत्र स० ६६। आ० ६×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल ×। ले० काल स० १८६५। पूर्ण। वेष्टन स० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

४६४६. **तद्धितप्रक्रिया**—×। पत्र सं० १६-४२। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० २६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

४६४७. **प्रति सं० २** । पत्र स० ७६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४६४८. **तर्कपरिभाषा प्रक्रिया—श्री चिन्नभट्ट** । पत्रस० ४६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८६/४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

४६४९. **धातु तरंगिणी—हर्षकीर्त्ति** । पत्रस० ५६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल स० १६६३ । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टनस० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका है । रिणीमध्ये स्थलीदेशे । महाराज श्री अतुपसाह राज्ये लिखित ।।
पत्र चिपके हुए हैं ।

४६५०. **धातुतरंगिणी**— × । पत्रसं० ५२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल स० १६६२ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६५१. **धातुनाममाला**— × । पत्र स० १२ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६५-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

४६५२. **धातुपद पर्याय** —× । पत्र स० ६ । आ० ६$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११०० । **प्राप्ति स्थान**—भ. दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६५३. **धातुपाठ—पाणिनी** । पत्र स० १७ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १६२४ वैशाख बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष--प० शिवदास सुत श्री नाथेन लिखित ।

४६५४. **धातुपाठ—शाकटायन** । पत्रस० १३ । आ० ११×५इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १७२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—शाकटायन व्याकरण मे से है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७२६ वर्षे वैशाख बुदी १३ शुक्ले श्री चाउंड नगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ. श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ. श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तदाम्नाये आचार्य श्री कल्याणकीर्ति तच्छिष्याचार्य श्री त्रिभुवनचन्द्रेण शाकटायन व्याकरण धातुपाठ ज्ञानावरणकर्म क्षयार्थ । शुभभवतु ।

४६५५. **धातुपाठ—हर्षकीर्त्ति** । पत्रस० १५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल स० १६१३ । ले०काल स १७८२ भादवा सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—अंतिम—

खंडेलवाल सद्व'शे हेर्मासहाभिध. सुधी :
तस्याभ्यर्थन पाथेय निर्मितो नदताश्चिरम् ।

४६५६. धातुपाठ— × । पत्र स० १८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १५८० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—भट्टारक लक्ष्मीचन्द के शिष्य पं० शिवराम के पठनार्थ लिखा गया था ।

४६५७. धातुपाठ— × । पत्रसं० १० । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विषय—केवल चुरादिगण है ।

४६५८. धातु शब्दावली— × । पत्र सं० ३० । आ० ७¾ × ५¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५-८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

४६५६. धातु समास— × । पत्रस० २८ । आ० ११×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६०. निदाननिरुत्त — × । पत्रस० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० १४** । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६६१. पंचसधि— × । पत्र सं० १४ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६६२. पंचसंधि— × । पत्रस० ४ । आ०८×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १८१६ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण । **वेष्टनसं० १४८** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—सग्रह ग्रंथ है । भाग्य विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

४६६३. पंचसधि— × । पत्रस० ७ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

४६६४. पंचसधि— × । पत्र स० १४ । आ० १०×५ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल सं० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—प्रति जीर्णावस्था मे है।

४६६५. पचसंधि – × । पत्र स० १३ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

४६६६. पाणिनी व्याकरण—पाणिनी । पत्रस० ७४७ । ग्रा० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २६५/५१५ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—बीच मे कई पत्र नही हैं। प्रति प्राचीन है। इसका नाम प्रक्रिया कौमुदी व्याख्यान समनप्रसाद : नामक टीका भी दिया है । सस्कृत मे प्रसाद नामी टीका है । ग्र थाग्र थ १५६२५ ।

४६६७. पातंजलि महाभाष्य—पातंजलि । पत्रस० ३६३ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४६६८ प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राचार्य । पत्र स० १२ । ग्रा० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । लेखन काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ७१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४६६९. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०५ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स १७१३ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष —साहिजिहाबादे लिखित भवानीदास पुत्र रणछोडाय ।

४६७०. प्रक्रिया कौमुदी— × । पत्र स० ५३ से ११७ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

४६७१. प्रक्रिया कौमुदी— × । पत्र स० १–७६ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—पाणिनि के ग्रनुसार व्याकरण है तथा प्रति प्राचीन है ।

४६७२. प्रक्रिया कौमुदी— × । पत्रस० १७६ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४६७३ प्रक्रिया संग्रह—× । पत्रस० १६६ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**—ग्रग्रवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

४६७४. प्रक्रिया व्याख्या—चन्द्रकीर्त्ति सूरि । पत्र स० २५-१५६ । ग्रा० १५ × ७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ४४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

४६७५. **प्रबोध चन्द्रिका—बैजल भूपति।** पत्रस० १५। आ० १२ × ७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २५३-१०२। **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डुंगरपुर।

४६७६. **प्रबोध चन्द्रिका—** ×। पत्र स० २०। आ० ११½ × ५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय व्याकरण। र०काल ×। ले०काल स० १८८०। पूर्ण। **वेष्टन सं० १६५। प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ।

विशेष—सवत् १८८० शाके १७४५ बाहुल स्याम पक्षे तिथो ६ षष्ठ्या शनिवासरे लिखत मुनि सुख विमल स्वातम पठनार्थं लिपि कृत गोठडा ग्राम मध्ये श्रीमद् लाछन जिनालय।

४६७७. **प्रसाद संग्रह—** ×। पत्र स० १८-१०, ५-३३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३३/३। **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४६७८. **प्राचीन व्याकरण—पाणिनि।** पत्र स० ५६। आ० ६½ × ४¾ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल स० १८२७ अषाढ मुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ६६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६७९. **प्राकृत व्याकरण—चंड कवि।** पत्रस० २६। आ० १० × ४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—व्याकरण। र० काल ×। ले०काल स० १८७६। पूर्ण। **वेष्टनसं० १६८। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

४६८०. **प्रतिसं० २।** पत्र स० १४। आ० १०½ × ४½ इञ्च। **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४६८१. **लघुसिद्धांत कौमुदी—भट्टोजी दीक्षित।** पत्र स० ८२। आ० ६×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५१५। **प्राप्ति स्थान—** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६८२. **प्रति सं० २।** पत्रस० ५६४। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ११६६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६८३. **प्रति स० ३।** पत्रस० १८। आ० १०×५ इञ्च। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

४६८४. **प्रतिसं० ४।** पत्र स० ५८। आ० १२ × ५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

४६८५. **महीभट्टी प्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य।** पत्रसं० ५६। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले० काल० स० १६००। पूर्ण। वेष्टनस० ८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

४६८६. **महीभट्टी व्याकरण—महीभट्टी।** पत्रस० ८१। आ० ६½×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय- व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ११७-२८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह।

४६८७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २० । आ० १०×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

४६८८. **प्रति सं० ३** । पत्रसं० ११ से ५२ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

४६८९. **राजादिगण वृत्ति**— × । पत्रस० २२ । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

४६९०. **रूपमाला—मावसेन त्रिविद्यदेव** । पत्रस० ४६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४६९१. **रूपमाला**— × । पत्रस० ५० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६९२. **रूपावली**— × । पत्रस० १०८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल, टोंक ।

४६९३. **लघुउपसर्गवृत्ति**— × । पत्रस० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६९४. **लघुजातकटीका—भट्टोत्पल** । पत्रस० ६० । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा- संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १४६५ आषाढ मासे ७ शनौ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०३/६८६ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

४६९५. **लघुनाममाला—हर्षकीर्ति** । पत्र स० ४२ । भाषा संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा ।

विशेष—बसवा में प्रतिलिपि हुई थी ।

इति श्री मन्नोगपुरीयतपागच्छीय भट्टारक श्री हर्षकीर्ति सूरि विरचितायां नाम्नीयाभिधानिया लघु नाममाला समाप्ता । सवत् १८३५ वर्षे शाके १७०० मिती भादवा शुक्ल पक्षे बार दीतवार एकै नै सपूर्ण कियो । जीवराज पाडे ।

४६९६. **लघुक्षेत्र समास**— × । पत्रस० ३२ । आ० ११×४½ इच । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १६८२ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

४६९७. **लघुशेखर (शब्देन्दु)**— × । पत्रस० १२४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० ६९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४९९८. लघुसिद्धांत कौमुदी - वरदराज । पत्र स० ६३ । आ० ११×४३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४९९९. प्रति स० २ । पत्रस० १९८ । आ० १०×४३/४ इञ्च । **ले०काल स०** १८३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५०००. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३२ । आ० ११ × ५१/२ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २४-१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूगरपुर ।

५००१.वाक्य मंजरी— × । पत्रस० ३० । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५००२. विसर्ग सधि— × । पत्रस० १२ । आ० ९१/२ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

५००३ शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । पत्रस० ७७१ । आ० ११ × ५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १६८१ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—सवत् १६८१ वर्षे जेष्ठ सुदी ७ गुरु समाप्तोय ग्रन्थ ।

५००४. शब्दरूपावली— × । पत्रस० १३ । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५००५. शब्द भेदप्रकाश—महेश्वर । पत्र स० २-२० । आ० १३१/२ ×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय– व्याकरण । र०काल × । **ले०काल स०** १५५७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५५७ वर्षे आषाढ वुदी १४ दिने लिखित श्री मूलसंघे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण गुरूपदेशात् हुबड ज्ञातीय श्रेष्ठि जइता भार्या पाचू पुत्री श्री धर्मणि ।

५००६ षट्कारक—विनश्वरनंदि आचार्य । पत्रस० १७ । आ० ११×४१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल शक स० १५४१ । अपूर्ण । वेष्टन स० १७१८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—इति श्री महान बोद्धाग्रगण्य षट्कारक समाप्ता विनश्वरनदि मह चार्य विरचितोय सम्बन्धो । शाके १५४१ कर्णाटक देशे गीरसोप्पानगरे आचार्य श्री गुणचंद्र तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीमत् भट्टारक श्री सकलचन्द्र शिष्य ब्रह्म श्री वीरदासेन लिखि बोद्धकारक ॥

५००७. षट्कारक विवरण— × । पत्रस० ३ । आ० ११३/४ × ४१/२ इञ्च । भाषा - संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टनस० ११६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५००८. **षट्कारिका**—× । पत्र सं० ५ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५००९. **षट्कारिका**—× । पत्र सं० ५ । आ० ११×५½ इञ्च । भाष —सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

५०१०. **षष्टपाद**—× । पत्र स० ९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—कृदन्त प्रकरण है ।

५०११. **सप्तसमासलक्षण**—× । पत्रस० २ । आ० ११ × ५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२३/५७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५०१२. **संस्कृत मंजरी—वरदराज** । पत्रस० ११ । आ० ११×६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल सं० १८६६ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर आदिनाथ (बूंदी)

५०१३. **संस्कृत मंजरी**× । पत्रसं० १० । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०१४. **संस्कृत मंजरी**—× । पत्र स० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा- सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०१५. **संस्कृत मंजरी**—× । पत्रस० ४ । आ० १०× ४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

५०१६. **संस्कृत मजरी**—× । पत्र स० १३ । आ० ९ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १८११ । पूर्ण । वे० स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

५०१७. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १२ । आ० ८×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त ।

५०१८. **संस्कृत मंजरी**—× । पत्रस० ७ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाष—सस्कृत । विषय-व्याकरण र०काल × । ले०काल स० १९३५ । पूर्ण वेष्टनसं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

५०१९. **संस्कृत मंजरी**—× । पत्रस० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १८६६ काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स२४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

५०२०. प्रति सं० २ । पत्रसं० ४ । ले० काल स० १८४७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—लाखेरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५०२१. समासचक्र—× । पत्रसं० ८ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०२२. समासप्रक्रिया × × । पत्र स० २६ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३१७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०२३. समास लक्षरण— × । पत्रस० १ । ग्रा० १०×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल । वेष्टन स० ३५१-५६० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन सभवनाथ मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है ।

५०२४. सारसिद्धान्त कौमुदी— × । पत्रस० २३ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८६-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५०२५. सारसंग्रह— × । पत्र स० ४ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२४-५७३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

५०२६. सारस्वत टीका— × । पत्र सख्या ७६ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५०२७. सारस्वत चन्द्रिका—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र स ४४ । ग्रा० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

५०२८. सारस्वत टोका—पुंजराज । पत्रस० १६३ । ग्रा० १०×४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४३, ५६६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—पुंजराज का विस्तृत परिचय दिया है ।

नमदवनसमर्थस्तत्वविज्ञानपार्थ. ।
सुजनविहिते तापः श्रीनिधिर्वीतादोषः ।
अवनिपतिशरण्यात् प्रोढधीमे च मंत्री ।
मफरलमलिकाख्या श्रीगयासाद्वायत् ।

पतिव्रता जीवनधर्मपत्नी धन्यामकूनामकुटबमान्या ।
श्रीपु जराजाख्यमसूत पुत्रं मु जं चेतेस्तेश्वारित. पवित्र ॥१४॥

२४ पद्य तक परिचय है । अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

योय रुचिर चरित्रो गुरोर्विचित्रैरपि प्रसभ ।
दिग्दताबल दतावली बलक्ष शस्तनुते ॥२३॥
साय टीका व्यरचयदिमां चारु सारस्वतस्य ।
व्युत्पिशूना समुपकृताय पुंजराजा नरेन्द्रः ॥२४॥
गभीरार्थरुचित विवृत्तेस्वीयसूत्रै पवित्रमेन ।
मभ्यस्यत इह मुदास्तु प्रसन्ना ॥२४॥

श्री श्री पुंजराजकृतेय सारस्वत टीका संपूर्ण । ब्र० गोपालेन ब्र० कृष्णाय प्रदत्त । ग्रथा ग्रंथ ४५०० । प्रति प्राचीन है ।

५०२९. प्रतिसं० २ । पत्र स० ७२ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४०० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति बहुत प्राचीन है ।

५०३०. सारस्वत दीपिका वृत्ति—चंद्रकीर्त्ति । पत्र स० २६० । आ० १०½ × ४½ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । पूर्ण । र०काल × । ले० काल स० १८३१ आसोज बुदी ६ । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—महात्मा मानजी ने सवाई जयपुर के महाराज सवाई पृथ्वीसिंह के राज्य मे लिखा था ।

५०३१. प्रति सं० २ । पत्रस० ४१ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—४१ से आगे पत्र नही है ।

५०३२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २२१ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी) ।

५०३३. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २०२ । आ० ६×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१/१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नागपुरीय तपागच्छाधिराज भ० श्री चन्द्रकीर्त्तिसूरि विरचिताया सारस्वत व्याकरण दीपिका सम्पूर्ण ।

५०३४. प्रतिसं० ५ । पत्र सख्या १८२ । आ० ११¾×५¾ इच । ले० काल स० १८५१ पौष बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

५०३५ सारस्वत धातुपाठ—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्रस० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५०३६. सारस्वत प्रकरण— × । पत्रस० १७-७५ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३३-१२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५०३७. सारस्वत प्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र स० १०१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—इस मन्दिर मे इसकी ११ प्रतियां और हैं ।

५०३८. प्रति सं० २ । पत्र स० ७४ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल स० १६४३ । वेष्टन स० ६०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

५०३९. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३२ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८८७ । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५०४०. प्रति सं० ४ । पत्र स० ८० से १३६ । ले०काल स० १७२८ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८२/५६८ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७२८ वर्षे पौष मासे कृष्ण पक्षे पचम्या तिथौ बुधवासरे देवगढे राज्य श्री हीरसिंघराज्ये भट्ट श्री कल्याण जी सनिधाने लिखितमिद पुस्तक रामकृष्णेन बागडगच्छेन वास्तव्येन भट्ट मेवाडा ज्ञातीय ··· · ··· लिखित ।

५०४१. प्रति सं० ५ । पत्र स० २४ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

५०४२. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६६ । आ० ११½×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५०४३ प्रतिसं० ७ । पत्रस० ३३-६६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५०४४. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ५१ । आ० १०×४¾ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—६१ से आगे पत्र नही है । प्रति प्राचीन है ।

५०४५. प्रतिसं० ९ । पत्र स १२ । आ० ६½ ½× ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५०४६. प्रतिसं० १० । पत्रस० ८० । आ० ११× ५ इञ्च । ले० काल स० १८७० । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५०४७. प्रतिसं० ११ । पत्रस० पत्र स० १३ । आ० १३½ × ५½ इच । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५०४८. प्रति स० १२ । पत्र स० १० । आ० १०½×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

५०४९. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ५७ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

५०५०. प्रतिसं० १४। पत्रस० १२८ । आ० १२×५ इञ्च। लेoकाल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१७। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

५०५१. प्रति सं० १५। पत्र स० ४५। आ० ६½×४½ इञ्च। ले० काल स० १८६५। पूर्ण। वेष्टन स० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

५०५२. प्रतिसं० १६। पत्र स० ६४ । आ० ११½ × ३½ इच । ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३१६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

५०५३. प्रतिसं० १७। पत्रस० २५ । आ० १०½×५ इञ्च । लेoकाल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

५०५४. प्रतिसं० १८। पत्रस० ३० । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १६०६ आसोज बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—कामा में बलवन्तसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

५०५०. प्रतिसं० १६। पत्र स० ६५। आ० १०× ५½ इञ्च। ले० काल स० १८६२ फागुण बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा।

५०५६. प्रति सं० २०। पत्रस० ६२ । ले० काल स० १८६४ । अपूर्ण। वेष्टनसं० ५१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

५०५७. प्रति स० २१। पत्र सं० ४५। आ० ६½×४½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६७। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ।

५०५८. प्रतिसं० २२। पत्र स० १०६ । आ० १०½×५½ इञ्च । लेoकाल स० १८४०। पूर्ण। वेष्टन स० २०७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५०५६. प्रति सं० २३। पत्रसं० १८। आ० ११×४½ इञ्च । लेoकाल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२६। **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर।

५०६०. प्रतिसं० २४। पत्रसं० २-६५ । लेoकाल स० १८५। अपूर्ण। वेष्टनसं० १३०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५०६१. प्रतिसं० २५। पत्र स० १५-५८। आ० १०½ × ४½ इञ्च। लेoकाल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

५०६२. प्रति सं० २६। पत्र स० ६३। आ० १० × ४ इच।ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)।

५०६३. प्रतिसं० २७। पत्र म० १३६। लेoकाल स० १७७३ पूर्ण। वेष्टन स० ४६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७७३ वर्षे चैत्र मासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ तृतीयाया ३ भृगुवासरे लिखित रूडामहात्मा गढ अंबावती मध्ये लिखाइत आत्मार्थे पठनार्थ पाना १३६ श्लोक पाना १ मे १५ जी के लेखे श्लोक अक्षर बत्तीस का २००० दो हजार हुआ। लिखाई रुपया ३।।।) बाचे जीनै श्रीराम श्रीराम श्रीराम छै जी।

५०६४. प्रति स० २८। पत्रस० ४६। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है।

५०६५. प्रति स० २६। पत्र स० ६। आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल स० १८६०। पूर्ण। वेष्टन स० ७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)।

विशेष—विसर्ग सन्धि तक है। द्रव्यपुर (मालपुरा) मे प्रतिलिपि हुई थी।

५०६६. प्रतिसं० ३०। पत्र स० १०५। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)।

५०६७. प्रतिसं० ३१। पत्र स० ४४। आ० १० × ६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

५०६८. प्रतिसं० ३२। पत्र स० ७५। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च। लेखन काल स० १६३८ पौष बुदी ३३। पूर्ण। वे० स० ६५-३६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर।

प्रशस्ति—सवत् १६३८ वर्षे पौष बुदी १५ शुक्रे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नागवाडा पुरोतमस्थान श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्त्ति देवा तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचद्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्त्ति देवास्त भ० श्री गुणकीर्त्ति गुरूपदेशात् स्वात्म पठनार्थं सारस्वत प्रक्रिया लिखित स्वज्ञानावर्णी क्षयार्थं स्वपठनार्थ। श्री शुभमस्तु।

५०६९. प्रतिसं० ३३। पत्र स० ६०। आ० ११ × ४ इञ्च। ले० काल स० १६६४। पूर्ण। वे० स० ३७२-१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर।

५०७०. प्रतिसं० ३४। पत्रस० ३६-६७। आ० १२×६ इञ्च। **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन स० २५६-१०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर।

५०७१. प्रतिसं० ३५। पत्र स० ६६। आ० ११×५ इच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६१-४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

५०७२. प्रतिसं० ३६। पत्र स० ५४। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—छोटी २ पाच प्रतिया और है।

५०७३. प्रतिसं० ३७। पत्रस० १४७। आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च। **ले०काल** ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

५०७४. प्रति स० ३८। पत्र स० ८७। आ० ११× ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। **ले०काल स०** १६३५। पूर्ण। वेष्टन स० १४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर (राजमहल) टोक।

विशेष—विद्वान् दिलसुखराय नृपसदन (राजमहल) मध्ये लिखित।

५०७५. प्रति स० ३६। पत्र स० ५१। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर हूण्डावालो का डीग।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है।

५०७६. प्रति सं० ४०। पत्रस० ७१-१५३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०काल × । वेष्टन स० ७१५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

५०७७. सारस्वत प्रक्रिया— × । पत्रस० ५ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६-१४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५०७८. सारस्वत प्रक्रिया— × । पत्रसं० १३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

विशेष - पचसधि तक है ।

५०७९. सारस्वत प्रक्रिया— × । पत्रसं० १० । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५०८०. सारस्वत प्रक्रिया वृत्ति—महीभट्टाचार्य । पत्रस० ६७ । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

५०८१. सारस्वत वृत्ति— × । पत्रसं० ६३ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{4}$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल सं० १५६५ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—जोधपुर महादुर्ग राय श्री मालदेव विजयराज्ये ।

५०८२. सारस्वत व्याकरण— × । पत्र स० २० । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८०-६३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—शब्द एवं धातुओ के रूप हैं ।

५०८३. सारस्वत व्याकरण दीपिका—भट्टारक चन्द्रकीर्ति सूरि । पत्र स० १२८ । आ० ११×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले०काल सं० १७१० भादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५०८४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५३ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०८५. सारस्वत व्याकरण पंच संधि—अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्रस० ६ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०८६. सारस्वत वृत्ति—नरेन्द्रपुरी । पत्र सख्या ७० । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०८७. सारस्वत सूत्र— × । पत्रसं० ७ । आ० १२×५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । **ले०काल** सं० १७२० । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१/५६५ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री भारतीकृत सारस्वत सूत्र पाठ संपूर्णम् ।

प्रशस्ति—संवत् १७२० वर्षे पौष सुदी ४ बुधे श्री कोटनगरे आदीश्वरचैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा तदाम्नाये आचार्य श्री कल्याणकीर्ति तत्शिष्य ब्र० तेजपालेन स्वहस्तेन सूत्र पाठो लिखितः ।

५०८८. सारस्वत सूत्र—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्रसं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०८९. प्रति सं० २ । पत्रसं० ३ । ले० काल सं० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०९०. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १६ । आ० १२½×६½ इञ्च । **ले०काल** सं० ४६-१८५ । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५०९१. सारस्वत सूत्र— × । पत्रसं० ११ । आ० ९½×४¾ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५०९२. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०९३. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

५०९४. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—३८ से आगे पत्र नहीं है ।

५०९५. सारस्वत सूत्र पाठ— × । पत्र सं० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । **विषय**-व्याकरण । र०काल × । ले० काल सं० १६६१ । वेष्टन सं० ६१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—संवत् १६६१ वर्षे भाद्रपद सुदि १० दिने लिखित आकोला मध्ये चेला कल्याण लिखित ।

५०९६. सिद्धांत कौमुदी— × । पत्र सं० १३५ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०९७. प्रति सं० २ । पत्रसं० १८२ । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४१८ १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५०९८. प्रति सं० ३ । पत्र स० १४ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल स० १५५० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—स० १५५० वर्षे आश्वनि मासे शुक्लपक्षे त्रयोदश्या तिथौ रविवासरे **घरी** ४६३ भाद्रपदे नक्षत्रे **घरी** ४० व्याघात योगे **घरी** १७ दिनहरावलय लिखितं श्री सिरोही नगरे राउ श्री जगमाल विजय राज्ये पूर्णिमापथे कछोलीवालगच्छे **यशस्ययाम** श्रीसर्वाणदसूरिस्तत्पट्टे भ० श्री गुणसागरसूरिस्तत्पट्टे श्री विजयमलसूरीणा शिष्य मुनि लक्ष्मीतिलक लिखित ।

५०९९. सिद्धांत कौमुदी (कृतन्द आदि)— × । पत्रस० १-६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

५१००. सिद्धांतचन्द्रिका—रामचन्द्राश्रम । पत्रस० ५६ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—ट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०१. प्रति सं० २ । पत्र स० ८६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८२८ द्वितीय आषाढ मुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ६७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६८ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५१०३. प्रति सं० ४ । पत्रस० १२८ । आ० १०×५ इ च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०४. प्रति सं० ५ । पत्रस० ५६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८४७ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १००६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०५. प्रति स० ६ । पत्र स० ६४ । आ० ११$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १७८४ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०६. प्रति सं० ७ । पत्र स० ६० । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२/३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५१०७. प्रति सं० ८ । पत्र स० ६६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—मुनि रत्नचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

५१०८. प्रति सं० ९ । पत्र स० ४५ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५१०९. प्रति सं० १० । पत्र स० ६१ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२८ । **प्राप्ति स्थान** - पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—सिद्धान्तचन्द्रिका की तत्वदीपिका नामा व्याख्या है ।

५११०. प्रति सं० ११ । पत्रस० १०२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—१०२ से आगे के पत्र नही है ।

५१११. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ६१ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १७६६ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५११२. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ३९ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५११३. प्रति स० १४ । पत्रस० २-६० । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५११४. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ७२ । आ० १३×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५११५. प्रति सं० १६ । पत्रस० ११५ । आ० ११×४½ इच । ले० काल स० १८९१ वैशाख मुदी । पूर्ण । वेष्टनस० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५११६. प्रति स० १७ । पत्रस० ५० । आ० ११ × ५ इञ्च । **ले०काल ×** । वेष्टन स० २६१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५११७. सिद्धांतचन्द्रिका—× । पत्र स० २५ । आ०८½×३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५११८ प्रति स० २ । पत्रस० ५५ । आ० १०½×५ इञ्च ।ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५११९. प्रति स० ३ । पत्र स० ७२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१२०. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१२१. सिद्धान्तचन्द्रिका × । पत्र स० २२ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** २१३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५१२२. सिद्धान्त चंद्रिका— × । पत्र स० २७ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५०-१०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५१२३. सिद्धान्त चन्द्रिका—× । पत्रस० ८ । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर करौली ।

५१२४. सिद्धान्त चन्द्रिका × । पत्र स० ४६ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** २१८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५१२५. सिद्धान्त चन्द्रिका टीका—सदानंद । पत्रस० १५२ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल– × । ले० काल स० १८७२ माह सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५१२६. प्रति सं० २ । पत्रस० ६ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर दबलाना बू दी ।

५१२७. सिद्धान्त चन्द्रिका टीका – × । पत्र स० ११३ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । **ले०काल** सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

५१२८. सिद्धान्तचन्द्रिका टीका-हर्षकीर्ति । पत्रस० १०७ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा —सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

५१२९. सिद्धहेम शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्रस० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । **ले०काल** स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन स० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति पत्र १५ पक्ति तथा प्रतिपक्ति ६० अक्षर । अक्षर सूक्ष्म एव सुन्दर है ।

प्रशस्ति – निम्न प्रकार है—

सवत् १६१५ वर्षे भाद्रपद सुदी १ शनौ श्रीमूलसघे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा नत् शिष्योपाध्याय श्री सकल भूषणाय पठनार्थ । इल प्राकार वास्तव्य हुंवड ज्ञातीय गगाउआ गोत्रे डोभाडा कर्मसी भार्या पूतनिगु सा० मेघराज भार्या पाची ताभ्या दत्तं मिद शास्त्र ।

५१३०. सिद्धहेमशब्दानुशासन स्वोपज्ञ वृति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ७१ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५१३१. प्रति सं० २ । पत्रस० १४ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३११/५९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५१३२. सुबोधिका— × । पत्रस० ४ से १५४ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १६४८ ज्येष्ठ सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन स० १३३८ । **प्राप्तिस्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१३३. सूत्रसार—लक्ष्मणसिंह । पत्रस० २५ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४३१ । **प्राप्तिस्थान**– भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१३४. संस्कृत मजरी — × । पत्रसं० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १८२० ज्येष्ट बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—केशरीसिह ने प्रतिलिपि की थी ।

विषय--कोश

५१३५. अनेकार्थध्वनि मंजरि—क्षपणक पत्रस० १० । आ० ६३/४×४ । भाषा-संस्कृत । **विषय**—कोश । र०काल × । ले०काल स० १८५६ फागुन सुदी १४ । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

५१३६. अनेकार्थध्वनि मंजरी—× । पत्र स० २७ । आ० ६×६३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—कोश । र० काल × । ले०काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५१३७. अनेकार्थध्वनि मंजरी—× । पत्र सं० ८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५१३८. अनेकार्थध्वनि मंजरी—× । पत्र स० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५१३९. अनेकार्थ नाममाला भ० हर्षकीर्ति । । पत्रस० ५६ । आ० ६× ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय —कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—दाहिने ओर के पत्र फटे हुये हैं ।

५१४०. अनेकार्थ नाममाला — × । पत्र स० १३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोष । र०काल × । ले०काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६४१ वर्षे बैशाख सुदी ५ गुरौ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे भ० सुमतिकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणकीर्ति गुरुपदेशात् भट्टारक श्री ५ पद्मनदि तत् शिष्य ब्रह्म कल्याण पठनार्थ ।

५१४१. अनेकार्थ मजरी—जिनदास × पत्र स० १० । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कोश । र०काल × । ले०काल स० १८७६ सावन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५१४२. प्रतिसं० २ । पत्रस० १० । आ० १३×४ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रारम्भ

तुव प्रभु जोति जगत मे कारन करन अभेव ।
विघ्न हरन सब सुख करन नमो नमो तिहिदेव ।

एकं वस्त अनेक है जगमगाति जग धाम ।
जिम कचन तैं किंकनी ककन कु डल दाम ॥२॥
उचरि सकं न संस्कृत श्रौ समझ न समरथ ।
तिन हित रणंद सुमति भाख अनेक अरथ ॥

अन्तिम—इति श्री अनेकार्थ मजरी नाम भा० नद कृत ।

५१४३. अनेकार्थ मंजरी—× । पत्रस० २१ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

५१४४. अनेकार्थ मंजरी—× । पत्रस० १५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले०काल स० १७८४ माह सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २७३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५१४५. अनेकार्थ शब्द मंजरी । पत्र स० ४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६०।६२१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

५१४६. अभिधान चिंतामणि नाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ५१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१४७. प्रति सं० २ । पत्र स० १८० । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६५१ । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसे हेमीनाम माला भी कहते है । प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६५१ वर्षे माघ सुदी ६ चन्द्रवासरे लिखित मुनि श्री कृष्णदास । मुनि श्री वर्द्धमान लिखित श्री अणिहिल्लपुरपत्तनमध्ये लिखित । भद्र भवतु सामत्तपागच्छे उपाध्याय श्री ७ शातिचन्द्र लिखापित ।

५१४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । आ० १२×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३-३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—कठिन शब्दो के अर्थ दिये हुये है ।

५१४९. प्रति स० ४ । पत्रसं० १३७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—दूसरा पत्र नहीं है । जोशी गणेशदास के पुत्र तुलसीदास ने नागपुर मे प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है ।

५१५०. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ११-१६२ । आ०६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २१०।६४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)

विशेष—सारोद्धार नाम की टीका वाचनाचार्य वादी श्री वल्लभ गणि की है जिसको स० १६६७ में लिखा गया था ।

५१५१. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५१५२. अभिधानसार संग्रह—× । पत्र स० ६४ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले०काल सं० १६४० माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

५१५३. अमरकोश—अमरसिंह । पत्र स० ११ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस मन्दिर में अमरकोश की ६ प्रतिया और है ।

५१५४. प्रति सं० २ । पत्रस० १६५ । आ० १०×४ इच । ले०काल स० १७२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५१५५. प्रति सं० ३ । पत्रस० १८७ । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५१५६. प्रति स० ४ । पत्र स० १७४ । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—ज्योतिषसार ग्रन्थ और है जिसका वे० स० २३०-६२ है पत्र स० भी इसी मे है ।

५१५७. प्रति स० ५ । पत्र स० ७७ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १११ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५१५८. प्रति स० ६ । पत्रस० २-६० । आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५१-६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५१५९. प्रति सं० ७ । पत्र स० १० । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४३ माघ बुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१६०. प्रति सं० ८ । पत्र स० २-१४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१६१. प्रति सं० ९ । पत्र स० ६८ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

५१६२. प्रति सं० १० । पत्र स० ४२ । आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इञ्च ।ले० काल × । दूसरे काड तक पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

५१६३. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ३३ । आ० ८ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

५१६४. प्रति सं० १२ । पत्र स० १५ । ले०काल × । पूर्ण ।वेष्टन सं० ४६८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

५१६५. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ५१ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—सागारधर्मामृत पत्र ३६ अपूर्ण तथा दर्शन पाठ पत्र २४ इसके साथ और है ।

५१६६. प्रति सं० १४ । पत्र स० ३-६६ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

५१६७. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ६२ । आ० १०½ ×५½ इञ्च । ले०काल स० १८५० चैत बुदी १४ । पूर्ण वे० स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५१६८. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २६ । आ० १०½× ५ इञ्च । ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण ।वेष्टनसं० १६२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—केवल प्रथम काण्ड ही है ।

५१६९. प्रति सं० १७ । पत्र स० ४३–८३ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५१७०. प्रतिसं० १८ । पत्र स० १०३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—इस मन्दिर मे २ प्रतिया और हैं ।

५१७१. प्रति सं० १९ । पत्रस० २७ । आ० ६×५½ इञ्च । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

५१७२. प्रतिसं० २० । पत्र स० ११–३४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

५१७३. प्रतिसं० २१ । पत्रस० ८६ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—पं० सेवाराम ने श्रावक गुमानीराम रावका से सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

५१७४. प्रति स० २२ । पत्र स० ३२ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

५१७५. प्रति सं० २३ । पत्र स० ३० ८५ । आ० ९×६ इञ्च । ले० काल स० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—बूंदी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५१७६. प्रतिसं० २४ । पत्रस० १६५ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० १८३** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५१७७. प्रतिसं० २५ । पत्र स० २३ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८७३ । वेष्टन स० २२१ । प्रथम काण्ड तक । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी । इस मन्दिर मे ८ प्रतियां और हैं ।

५१७८. प्रति सं० २६। पत्र सं० १३०। ग्रा० १०½×५ इञ्च। ले० काल स० १८४४ चैत्र बुदी ६। पूर्ण। वेप्टन स० २२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—जयपुर मे लश्कर के मन्दिर मे पडित केशरीसिह ने अपने शिष्य लालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

५१७९. प्रतिसं० २७। पत्रस० १६६। ग्रा० १२×५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

प्रति टीका सहित है।

५१८०. प्रतिसं० २८। पत्र स० ६०। ग्रा० १२×५ इच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

विशेष—द्वितीय खण्ड से है। टीका सहित है।

५१८१. प्रति सं० २९। पत्रस० स० १६। ग्रा० १२½×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

५१८२. उद्धारकोश—दक्षिणामूर्ति मुनि। पत्रस० १८। ग्रा० ११×८ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कोष। र०काल ×। ले०काल स० १८३७। पूर्ण। **वेष्टनसं० ५४६। प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—इति दक्षिणामूर्त्ति मुनिना विरचिते उद्धारकोशे सकलागमसूरि दशदेवी सप्तकुमार नवग्रह शिष्यदेविधान निर्णयो नामसप्तमकल्प।

५१८३. एकाक्षरी नाममाला— ×। पत्र सं० २। ग्रा० ६¾×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कोश। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ११६०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—दूसरा पत्र फटा हुआ है।

५१८४. प्रति स० २। पत्रस० २। ग्रा० १०½×४½ इञ्च। ले० काल सं० १६७१। पूर्ण। वेष्टन स० २०८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५१८५ प्रति स० ३। पत्र स० २। ग्रा० १०½×५ इच। ले०काल स० १६८१। वेप्टन स० ३०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—सागानेर मे प्रतिलिपि की गयी थी।

५१८६. प्रति सं० ४। पत्र स० २। ग्रा० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेप्टन सं० ७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

५१८७. एकाक्षर नाममालिका—विश्वशंभु। पत्र स० ४। ग्रा० ११×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कोश। र०काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० ३०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५१८८. प्रति सं० २। पत्रस० ६। ग्रा० १०½×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५१८६. प्रति सं० ३। पत्रस० ७। आ० १०३/४ × ५ इञ्च। ले०काल १८५५ ज्येष्ठ बुदी ८। वेष्टन सं० ३०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५१९०. एकाक्षरनामा— × । पत्रसं० ६। आ० १३१/२ × ६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११५/११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

५१९१. त्रिकाण्ड कोश—पुरुषोत्तमदेव। पत्रस० ४६। आ० १०३/४ × ५३/४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-कोश। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टनसं० ३००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५१९२. धनंजयनाममाला—कवि धनंजय। पत्र सं० १३। आ० ९ × ४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कोश। र०काल ×। ले० काल स० १८०६। पूर्ण। वेष्टन स० १४५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५१९३. प्रति सं० २। पत्रस० १६। आ० ११ × ४१/२ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १६२८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

५१९४. प्रति सं० ३। पत्र स० १५। आ० १० × ५१/२ इञ्च। ले०काल स० १८५१ पौष बुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं० १९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ।

५१९५. प्रति सं० ४। पत्र स० ३-१९। आ० ७ × ५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६४-१४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

५१९६. प्रति सं० ५। पत्रसं० २४। आ० १३ × ४१/२ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २६८-१०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

५१९७. प्रति सं० ६। पत्रस० १३। आ० १० × ५ इञ्च। ले०काल स० १८४४। पूर्ण। वेष्टनसं० ८४-४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

प्रशस्ति—सं० १८४४ का मासोत्तमे मासे शुक्लपक्षे तिथौ ७ भोभवासरे लिपीकृत तुलाराम। शुभ भवतु पठनार्थ पडित सेवकराम शुभ भवतु।

५१९८. प्रति सं० ७। पत्रस० १८। आ० १० × ४१/२ इञ्च। ले० काल स० १६४६। पूर्ण। वेष्टनसं० २३७-९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

प्रशस्ति—सवत् १६४६ वर्षे चैत्र सुदि २ गुरु श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० रत्नकीर्ति देवा त० मडलाचार्य भ० श्री जशकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणचन्द्र राजे तत्पट्टे मडलाचार्य श्री जिनचन्द्र गुरुपदेशात् सागबाडा नगरे हुबड ज्ञातीय भागलीया " ब० सिघ जी।

५१९९. प्रति सं० ८। पत्र स० २०। आ० ११ × ४ इञ्च। ले० काल स० १५८७ आसोज बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० २४८। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

५२००. प्रति सं० ९। पत्रसं० १५। आ० ९३/४ × ६ इञ्च। ले०काल स० १८१४। पूर्ण। वेष्टन सं० ३९। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

५२०१. प्रति स० १०। पत्र स० १ से ४६। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० २३। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर डीग।

५२०२. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ११ । श्रा० १२½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**— छोटा दि० जैन मंदिर बयाना ।

५२०३. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० १३ । श्रा० १०½× ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

५२०४. प्रति सं० १३ । पत्र स० २४-३३ । श्रा० १२½×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर कामा ।

५२०५. प्रति सं० १४ । पत्र संख्या १३ । श्रा० १२×५½ । ले०काल × । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५२०६. प्रतिसं० १५ । पत्र स० १० । श्रा० ६½×५½ इञ्च । ले० काल स० १७९९ । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५२०७. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० १५ । श्रा० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १६१६ श्रासोज सुदी ७ । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प० डूंगर द्वार प्रतिलिपि की गई थी । सम्वत् १६१६ वर्षे श्राश्विन सुदी सप्तम्या लिखितं प० डूंगरेण ।

५२०८. प्रति स० १७ । पत्र स० १७ । श्रा० ६×४½ इञ्च । ले०काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५२०९. प्रतिसं० १८ । पत्र सं० १६ । श्रा० ९½ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी ।

५२१०. प्रतिसं० १९ । पत्र स० १८ । श्रा० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—मालपुरा मे लिखा गया था ।

५२११. प्रतिसं० २० । पत्रस० १५ । श्रा० १०½× ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

५२१२. प्रति सं० २१ । पत्र स० १७ । श्रा० ६½×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५२१३. प्रतिसं० २२ । पत्रसं० ४६-१०१ । श्रा० १०½×४ इञ्च । ले०काल स० १७५० श्रावण बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्रादिनाथ बूदी ।

५२१४. प्रतिसं० २३ । पत्र स० १२ । श्रा० ९×४ इञ्च । ले०काल स० १७३७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

विशेष—स० १७३७ वर्षे मासोतममासो पोषमासे कृष्णपक्षे सप्तमी तिथौ पुनाली ग्रामे मुनि सुगण हर्ष पठन कृते । विद्या हर्षेण लेखिता ।

५२१५. प्रतिसं० २४ । पत्र स० ९ । श्रा० ११ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

५२१६. प्रतिसं० २५ । पत्र स० १३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५२१७. प्रतिसं० २६ । पत्र स० ५७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५२१८. नाममाला—नन्ददास । पत्र स० ३० । भाषा—हिन्दी । विषय—कोश । र०काल × । लेखन काल स० १८४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५२१९. नाममाला—हरिदत्त । पत्र स० ३ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

५२२०. नाममाला—बनारसीदास । पत्रसं० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कोश । र०काल स० १६७० आसोज सुदी १० । ले० काल स० १८६१ प्र० चैत बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

५२२१. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १२ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—नाममाला तक पूर्ण है तथा अनेकार्थ माला अपूर्ण है ।

५२२२. नामरत्नाकर— × । पत्रसं० ६१ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-कोश । र०काल स० १७८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२३. नामलिंगानुशासन—आ० हेमचन्द्र । पत्र स० ८६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२४. प्रति सं २ । पत्रस० १२० । आ० १०½× ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३९२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२५. नामलिंगानुशासन वृत्ति— × । पत्र स० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५२२६. नामलिंगानुशासन—अमरसिंह । पत्र स० १४४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोप । र०काल × । ले०काल स० १८०५ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कालाडेहरा मे साह दौलतराम ने श्री अनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराम को भेंट मे दी थी ।

५२२७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ११४ । आ० ६× ४ इञ्च । ले०काल स० १८२७ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १४५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—तृतीय खंड तक है।

५२२८. पाणिनीयलिंगानुशासन वृत्ति— × । पत्रसं० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**—सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल सं० १६६ ... .. । पूर्ण । **वेष्टन सं० २७१** । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२६. मान मंजरी—नन्ददास । पत्रस० २० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । **विषय**-कोष । र०काल × । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

५२३०. लिंगानुशासन (शब्द संकीर्ण स्वरूप)—धनंजय । पत्र स० २३ । भाषा-सस्कृत । **विषय**-कोष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८०/५६८ । **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इति श्री धनजयस्य कृतौ निघटसमये शब्दसाकीर्णस्वरूपे निरुपणो द्वितीय परिच्छेद समाप्त । मु० श्री कल्याण कीर्तिमिद पुस्तक ।

प्रति प्राचीन है ।

५२३१. लिंगानुसारोद्धार— × । पत्र स० १० । भाषा-सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८१/५६४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । लिपि सूक्ष्म है । प० सूरचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । स० तेजपाल की पुस्तक है ।

५२३२. वचन कोश—बुलाकीदास । पत्र सं० २५२ । आ० १५$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कोश । र० काल स० १७३७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

५२३३. प्रति सं० २ । पत्र स० २८२ । आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ १११ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

५२३४. वैदिक प्रयोग— × । पत्र स० ६ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल स० १५५७ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प० जेमा लिखित ।

५२३५. शब्दकोश—धर्मदास । पत्रस० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ—

सिद्धौपधानि भवदु:खमहागदानां,
पुण्यात्मना परमकर्णरसायनानि ।
प्रक्षालनैक सलिलानि मनोमलानां,
सिद्धोदने प्रवचनानि चिरं जयन्ति ॥१॥

५२३६. शब्दानुशासनवृत्ति— × । पत्रसं० ५७ । आ० ११$\frac{3}{4}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५२३७. शारदीयनाममाला—हर्षकीर्ति । पत्र स २५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स १३५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२३८. सिद्धांतरस शब्दानुशासन—× । पत्रस० ३७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल स० १८८४ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२३९. हेमीनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० २-४१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विषय--ज्योतिष, शकुन एवं निमित्त शास्त्र

५२४०. **अरहंत केवली पाशा**— × । पत्रस० ६ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले०काल स० १६७६ माघ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५२४१. **अरहंत केवली पाशा**— × । पत्र स० ४१ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

५२४२. **अरिष्टाध्याय**— × । पत्रस० ७ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । वेष्टनस० १३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५२४३. **अष्टोत्तरीदशाकरण**— × । पत्रसं० ४ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७८ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२४४. **अहर्गण विधि**— × । पत्र सं० २ । आ० ११ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५२४५. **अंगस्पर्शन**— × । पत्रस० १ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल स० १८१६ । वेष्टन स० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५२४६. **अंगविद्या**— × । पत्रस० १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

५२४७. **अंतरदशावर्णन**— × । पत्रस० १०-१५ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५२४८. **आशाधर ज्योतिर्ग्रंथ—आशाधर** । पत्र स० २ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४/५५२ । **प्राप्ति स्थान**— सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्न प्रकार है ।

> आसीद्दृष्टि सन्निहितादिवासी, श्रीमुद्गलो ब्रह्मविदांवरीष्ठः ।
> तरयान्वयो वेद विदावरीष्ट श्रीमानुनामारविवत् प्रसिद्धः ।।१६।।
> तस्योत्पन्नप्रथमतनयो विष्णुरणामा मनीषी ।
> वेदे शास्त्रे प्रतिहतमतिस्तस्य पुत्रो बभूव ।

श्रीवत्साख्यो धनपतिरसौ कल्पवृक्षोपमान ।
तस्यैकोभूतं प्रवरतनयो रोहिताख्यामृविद्वान् ॥१७॥
तस्याद्यमनुर्गणकाब्जभानुराशाधरो विष्णुपदाबुरक्तः ।
सदोत्तमाग कुरुते सचेदं चकार दैवज्ञ हिताय शास्त्रं ॥

इत्याशाधरोज्योतिग्रंथ समाप्तः ।

५२४६. कष्ट विचार— × । पत्रसं० २ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जिस वार को बीमार पडे उसका विचार दिया हुआ है ।

५२५०. कालज्ञान— × । पत्र स० १६ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५२५१. कुतूहलरत्नावली—कल्याण । पत्र स० ६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१३/६५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५२५२. केशवी पद्धति—श्री केशव दैवज्ञ । पत्र स० ५२ । आ० ६½ × ५⅛ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा ।

५२५३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । आ० ६½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८७८ चैत बुदि ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

केवल प्रथम सर्ग है ।

५२५४. कोणसूची—× । पत्रस० २ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६६/५५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५२५५ गणपति मुहूर्त—रावल गणपति । पत्रस० १०७ । आ० ११×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल स० १८५१ आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५२५६. गणितनाममाला—हरिदास । पत्रस० ७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—सूर्यग्रह अधिकार तक है ।

५२५७. गर्ग मनोरमा—गर्गऋषि । पत्रस० ८ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२५८. गर्भचक्रवृत— × । पत्रस० १४ । ग्रा० ११ × ४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—ग्रग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

५२५६. गुणघटित विचार— × । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

५२६०. गौतम पृच्छा — × । पत्र स० १० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । रचना काल × । ले० काल स० १७८० । पूर्ण । वेष्टन स० ५०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५२६१. ग्रहपचवर्णन— × । पत्रस० २ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

५२६२. ग्रहभाव प्रकाश— × । पत्र स० ५ । ग्रा० १३½ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८/५५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

५२६३. ग्रहराशिफल— × । पत्र स० २ । भाषा संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ ५५३ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

५२६४. ग्रहलाघव—गणेशदैवज्ञ । पत्र स० २१ । ग्रा० १० × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

५२६५. प्रतिसं० २ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—पुस्तक डूगरसी की है । एक प्रति अपूर्ण और है ।

५२६६. ग्रहलाघव–देवदत्त (केशव ग्रात्मज) । पत्र स० १३ । ग्रा० ६¾ × ४¼ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

५२६७. ग्रहलाघव— × । पत्रस० १६ । ग्रा० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५२६८. प्रति सं० २— × । पत्र स० ३ । ग्रा० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टनस० ६८४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५२६६. ग्रहणविचार— × । पत्र स० २ । ग्रा० ११½ × ५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनसं० ६८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५२७०. चमत्कार चिंतामणी—नारायण। पत्र स० ११ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२७१. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६ । ग्रा० ६×४ इञ्च । ले० काल स० १८३४ मंगसिर सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १११७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—ग्रजयगढ़ में पं० गोपालदास ने प्रतिलिपि की थी ।

५२७२. चमत्कार चिन्तामणि — × । पत्रस० ११ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५२७३ प्रति सं० २ । पत्रस० ६ । ग्रा० ६×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५२७४. चमत्कारफल— × । पत्रस० ६ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

विशेष—विभिन्न राशियो का फल दिया हुआ है ।

५२७५. चन्द्रावलोक— × । पत्र स० १२ । ग्रा० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १४०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर ग्रजमेर ।

५२७६. प्रति सं० २ । पत्रस० १-११ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले० काल × । वेष्टनस० ७०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

५२७७. चन्द्रावलोक टीका—विश्वेसर ग्रपरनाम गंगाभट्ट । पत्र स० १३० । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—बलवन्तसिह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५२७८. चन्द्रोदय विचार— × । पत्रस० १-२७ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

५२७९. चौघडिया निकालने की विधि— × । पत्रस० ४ । ग्रा० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

५२८०. छींक दोष निवारक विधि— × । पत्र स० १ । । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५२८१. जन्मकुण्डली— × । पत्र सं० ७। आ० १०×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल–× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४-१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५२८२. जन्मकुण्डली ग्रह विचार— × । पत्र सं. १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६ । **प्राप्ति स्थान** – खडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

५२८३. जन्म जातक चिन्ह— × । पत्र स० ६ । आ० ७½×६इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी ।

विशेष—सागवाडा का ग्राम सुदारा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५२८४. जन्मपत्री पद्धति— × । पत्रस० ४८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—दयाचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५२८५. जन्मपत्री पद्धति— × । पत्रसं० १० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय –ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५२८६. जातक—नीलकंठ । पत्र स० ३६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५२८७. जातकपद्धति—केशव दैवज्ञ । पत्र स० १६ । आ० ११¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १७८८ चैत सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ६७४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२८८. प्रति स० २ । पत्रस० १४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५२८९. जातक संग्रह— × । पत्रस० ६ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १९४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२९०. जातकाभरण—ढुंढिराज दैवज्ञ । पत्र सं० ८३ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—डूंगरसीदास ने नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी । ग्रंथ का नाम जातकमाला भी है ।

५२६१. प्रतिसं० २। पत्र स० ८६। आ० ११½×५½ इञ्च। लें०काल सं० १७८६ मगसिर बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

५२६२. प्रतिसं० ३। पत्रसं० १३। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल स० १८७८ भादवा बुदी ११। पूर्ण। वेष्टनस० ११७ ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

५२६३ जातकालंकार— ×। पत्र स० १७। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १६०३ चैत सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० १४०३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५२६४. प्रतिसं० २। पत्र स० २०। आ० ८¾×५¾ इञ्च। ले० काल स० १६१६ सावन बुदी १। पूर्ण। वे० स० १०६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

५२६५. प्रतिसं० ३। पत्र स० १४। आ० ११½×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

५२६६. जोग विचार— ×। पत्रसं० १६। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३६७-१४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

५२६७. ज्ञानलावणी— ×। पत्र स० २-८। आ० १०×४ इञ्च। भाषा सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४५२/२६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

५२६८. ज्ञानस्वरोदय—चरनदास। पत्र स० १६। आ० ६×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—शकुन शास्त्र। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ स्वामी, मालपुरा (टोंक)

५२९९. ज्योतिर्विद्याफल—×। पत्रस० ३। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६६/५५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

५३००. ज्योतिषग्रंथ—भास्कराचार्य। पत्र स० १२। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

५३०१. प्रति सं० २। पत्र स० ३३×२०। आ० ६½ × ४½ इञ्च। ले०काल० ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०१-४६। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—ज्योतिषोत्पत्ति एव प्रश्नोत्पत्ति अध्याय है।

५३०२. ज्योतिषग्रंथ-- ×। पत्र स० ४। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा--हिन्दी। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर दौसा।

५३०३. ज्योतिषग्रंथ— ×। पत्र स० १६। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६५। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

५३०४. प्रतिसं० २। पत्रस० २-१०। आ० १० × ४½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

५३०५. ज्योतिषग्रन्थ भाषा—कायस्थ नाथूराम । पत्रस० ४० । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । **विशेष**—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

५३०६. ज्योतिष रत्नमाला—केशव । पत्रस० ७६ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विशेष**—ज्योतिष ।र०काल × । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५३०७. ज्योतिष रत्नमाला—श्रीपतिभट्ट । पत्रस० ८-२३ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विशेष**—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

५३०८. प्रति सं० २ । पत्रस० ११० । आ० ६½×४½ इच । ले०काल स० १८४७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५३०९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३२ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल स० १७८६ माघ बुदी १३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

५३१०. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ७४ । आ० १०½×५½ इच । ले० काल स० १८४८ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष —प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

५३११ ज्योतिष रत्नमाला टीका—प० वैजा मूलकर्त्ता पं० श्रीपतिभट्ट । पत्रस० ११६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय ज्योतिष । र०काल × **ले०काल** स० १५१६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

अन्तिम पुष्पिका—ज्योतिषरत्नमालाविप्रवरा श्रीपतिमध्येय तस्यामृटीका प्रकटार्थ युक्ता दिनमिमिवाडवाणबीजाणोघान्वये धान्य इति प्रसिद्धो गोत्रप्रभूवाखिलशास्त्रवेत्त' सोमेश्वर च गुरु हस्तु वैजा बालावबोध सचकार टीका । इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष पडित वैजाकृत टीकाया प्रतिष्ट प्रकरणानि शर्न प्रकरण समाप्त ।

प्रशस्ति--सवत् १५१६ प्रवर्तमाने षष्ठाद्वयोर्म मध्ये सोभन नाम सवत्सरे ।। सवत् १६५१ वर्षे चैत सुदी प्रति पदा १ मगलवारे चपावती कोटात् मध्ये लिखित प्रकदर राज्ये लिखित पारासर गोत्रे प० खेमचंद आत्मज पुत्र पठनार्थ मोहन लिखित ।

५३१२. ज्योतिष शास्त्र—हरिभद्रसूरि । पत्र सं० ५६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१३. ज्योतिष शास्त्र—चिंतामणि पंडिताचार्य । पत्र सं० २६ । आ० ११ ×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५३१४. ज्योतिष शास्त्र—× । पत्र सं० १० । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५३१५. ज्योतिष शास्त्र × । पत्र सं० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११११ । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१६. ज्योतिष शास्त्र— × । पत्रस० ६ । आ० ६×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । आ०६½×४ इञ्च । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१८. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ११ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१९. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १६ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल स० १८३१ श्रावण सुदी ८ । वेष्टनस० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५३२०. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

५३२१. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । ले०काल स० १८८५ काती सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—२ प्रतियों का सम्मिश्रण है । नागढ़ नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५३२२. ज्योतिषसार—नारचन्द्र । पत्र स० ७ । आ० १½ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बू दी ।

५३२३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३२४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५३२५. ज्योतिष सारणी— × । पत्रसं० २६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८८५ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३२६. ज्योतिषसार संग्रह—मु जादित्य । पत्रसं० १६ । आ० ८ × ३½ वंच । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८५० आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३२७. ताजिकसार—हरिभद्रगणि । पत्र स० ४० । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८५४ ।'पूर्ण । वेष्टन स० ३४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५३२८. प्रतिसं० २ । पत्र सख्या ३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

५३२६. ताजिक ग्रंथ—नीलकंठ । पत्र स० २६ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष · र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५३३०. ताजिकालंकृति—विद्याधर । पत्रस० १२ । ग्रा० ८ × ६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन स० २८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—विद्याधर गोपाल के पुत्र थे ।

५३३१. तिथिदीपकयन्त्र— × । पत्रस० ६५ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गणित (ज्योतिष) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५३३२. तिथिसारिणी— × । पत्र स० ११ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५३३३ दिनचर्या गृहागम कुतूहल—भास्कर । पत्रस० ७ । ग्रा० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५३३४. दिन प्रमाण — × । पत्र स० १ । ग्रा० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३३५. दुघडिया मुहूर्त— × । पत्रस० ८ । ग्रा० ६× ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल । ले०काल स० १८६३ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—इति श्री शिवा लिखितं दुगडयो मुहूर्त्त ।

५३३६. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १८२० श्रावण । बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५३३७. दोषावली— × । पत्रसं० २ । ग्रा० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल सं० १८७३ जेठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७/२८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—साहीखेडा मे लिखी गई थी ।

५३३८. द्वादशराशि संक्रांतिफल— × । पत्र स० ७ । आ० ११ ×४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

५३३९. द्विग्रह योगफल— × । पत्र सख्या १ । आ० ११½ × ५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३४०. नरपति जयचर्या—नरपति । पत्र स० ५३ । आ० १०×५½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल स० १५२३ चैत सुदी १४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५६-१३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५३४१. नक्षत्रफल— × । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३४२. नारचन्द्र ज्योतिष—नारचन्द्र । पत्र स० १४ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १३४७ वर्षे आसु विदि ८ दि० प्रति लीधी । पातिसाह श्री अकबर विजइराजे । मेडता मध्ये महाराजि श्री बलिभद्र जी विजइराज्ये ।

५३४३. प्रतिसं०२ । पत्र स० ३ । आ० १०× ४½ इन्च । ले०काल स० १६६६ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३४४. प्रति सं० ३ । पत्र स० २३ । आ० ६×३¾ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३४५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ३१ । ले०काल× । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—देवगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५३४६ प्रति स० ५ । पत्रस० २२ । आ० १०½×५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति और है ।

५३४७. प्रति सं० ६ । पत्र स० २-७२ । आ० १०½ × ४ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५३४८. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २२ । आ० ६½×४½ इच । ले० काल स० १७४६ फाल्गुन ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५२४६. प्रतिसं० ८ । पत्र सं० ३३ । आ० ११ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १७१६ आसोज सुदी १३ ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५३५० निमित्तशास्त्र— × । पत्र सं० १-१२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ + ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३५१. नीलकंठ ज्योतिष – नीलकंठ । पत्रसं० ५ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५३५२. नैमित्तिक शास्त्र—भद्रबाहु। पत्रस० ५७ । आ० ११ $\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १६८० । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

५३५३. पचदशाक्षर—नारद । पत्रस० ५ । आ० ६, × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमर ।

५३५४. पंचांग— × । पत्र स० ५६ । आ० ११×७ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिप । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

विशेष—स० १६४६ मे ४६ तक के है ४ प्रतिया है ।

५३५५. सं० १८६० । पत्र स० १२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५३५६. पंचाग— × । पत्र स० ६ । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय – ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन ५४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मदिर दौसा ।

५३५७. पचाग— × । पत्रस० १२ । आ० ७$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष—स० १६१६ का पंचाग है ।

५३५८. पचाशत् प्रश्न—महाचन्द्र । पत्रस० ६ । आ० ७$\frac{1}{2}$ × ३$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल स० १८२४ आसोज बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३५६. पंथराह शुभाशुभ × । पत्र स० २ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३२२ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५३६०. पल्यविचार— × । पत्र स० ३ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३६१ पल्य विचार—× । पत्रसं० २ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—चित्र भी है ।

५३६२. प्रति सं० २ । पत्र स० २ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३६३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५३६४, पाराशरी टीका—× । पत्र सं० ७ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४०५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३६५.पाशा केवली— गर्गमुनि । पत्र स० २३ । आ० १०¾×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—नेमिनाथ जिनालय लश्कर, जयपुर के मन्दिर मे झाझूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

५३६६.—प्रति स० २ । पत्र स० १० । आ० १०¾×५ इञ्च । ले० काल स० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ११। १० आ०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३६८. प्रति स० ४ । पत्रस० ६ । आ० ४×४½ इञ्च । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५३६९. प्रति स० ५ । पत्रस० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनम० २६-५५५ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

५३७०. प्रति सं० ६ । पत्रसं० ८ । आ० ६×४ । **ले०काल** × । पूर्ण ।वेष्टन स० २८५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५३७१. प्रतिस० ७ । पत्रस० १४ । आ० १२×४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५३७२. प्रति स० ८ । पत्रस० १६ । आ० ११× ४½ इञ्च । ले०काल स० १८१७ आसोज सुदी ५। पूर्ण । वेष्टन स० १०, ४८ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इदरगढ़ (कोटा)

५३७३. पाशाकेवली—× । पत्र स० ४ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८२४ आसोज बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन **स० ११११** । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पंडित परमसुख ने चौमू नगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

५३७४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १६ । ले०काल स० १६४० पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १११२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

५३७५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १० । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८२८ ग्राषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

५३७६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६ । ग्रा० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष —प० जौहरीलाल मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

५३७७. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ८ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

५३७८. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८ । ग्रा० ६ × ५ इञ्च । ले०काल स० १६११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५३७९. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १० । ग्रा० १३ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६६-१०६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५३८०. प्रति स० ८ । पत्रस० २२ । ग्रा० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६६७ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन स० १५८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

५३८१. पाशाकेवली भाषा— × । पत्र स० ४ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५३८२. पाशाकेवली भाषा— × । पत्रस० ६ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४२२ । **प्राप्ति स्थान** —भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५३८३. पाशाकेवली भाषा । पत्रस० ६ । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३० । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

५३८४. प्रतिसं० २ । पत्रस० १५ । ले०काल सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टनस०४३१ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -टोडा मे लिपि हुई थी ।

५३८५. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० २४ । ले०काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५३८६. पाशाकेवली— × । पत्र संख्या ११ । ग्रा० ५ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

५३८७. पाशाकेवली— × । पत्र स० ११ । आ० ५½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

५३८८. पाशाकेवली— × । पत्रस० ८ । आ० १०¾ × ४½ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५३८९. पाशाकेवली— × । पत्र स० १२ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । **विषय**-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५३९०. पुरुषोत्पत्ति लक्षण— × । पत्रस० १ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विषय**-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३९१. प्रश्नचूडामणि— × । पत्र स० २१ । आ० ८¾ × ४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८८३ चैत्र बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३९२. प्रश्नसार— × । पत्र स० १० । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विषय**-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५९२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३९३. प्रश्नावली—श्री देवीनंद । पत्र स० ३ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र (ज्योतिष) । र०काल × । ले०काल स० १९२२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३९४ प्रश्नावली--- × । पत्रस० १३ । आ० १०¾ × ५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५३९५ प्रश्नोत्तरी— × । पत्र स० ४ । आ० ९ × ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—पहिले प्रश्न किया गया है और बाद मे उसका उत्तर भी लिख दिया गया है । इस प्रकार १६० प्रश्नो के उत्तर है ।

पत्रो के ऊपर की छोर की ओर पक्षियो के–मोर, बतक, उल्लू, खरगोश, तोता, कोयल आदि रूप मे है । विभिन्न मण्डलो के चित्र है ।

५३९६. प्रश्न शास्त्र × । पत्रस० १५ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १६५० पौष सुदी ६ । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५३९७. बत्तीस लक्षण छप्पय—गगादास । पत्रस० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय शकुन शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७९-१७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक) ।

५३९८. बसन्तराज टीका-महोपाध्याय श्री भानुचन्द्र गरिण । पत्रस० २०० । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-म स्कृत । विषय शकुन शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८५६ श्रावण बुदी ७ । वेष्टन स० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—**प्रशस्ति**—श्री शत्रु जयकरमोचनादि सुकृनकारि महोपाध्याय भानचन्द्रगणि । विरचितायां वसन्तराज टीकाया ग्र थ प्रभावक कथन नाम विशतिनमो वर्ग ।

५३९९. बालबोध ज्योतिष - × । पत्रस० १४ । आ० ८½ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६६-१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डूगरपुर ।

५४०० बालबोध—मु जादित्य । पत्रस० १४ । आ० ६½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६७ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४०१. प्रतिस० २ । पत्र स० ११ । आ० ७½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १८२० । पूर्ण । वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५४०२. प्रति स० ३ । पत्रस० १७ । आ० ९ × ६ इञ्च । **ले०काल** स० १७९८ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—लिखित छात्र विमल शिष्य वाली ग्राम मध्ये ।

५४०३. ब्रह्मतुल्यकरण—भास्कराचार्य । पत्र स० १२ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १७४४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवत् १७४४ वर्षे चैत्र सुदी २ शनौ लिखत मुनि नदलाल गौडदेशे गूर्जनगर मध्ये आत्मार्थी लिखित ।

५४०४. भड्डली— × । पत्रस० ५६ । आ० ६ × ४½ इच । भाषा सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—भड्डली बात विचार है ।

५४०५. भड्डली-- × । पत्र स० १ । आ० ९ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय- -ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—३५ पद्य है ।

५४०६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १२ । आ० १०½ × ६ इंच । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४०७. भडली— × । पत्रस० २२ ४२ । ग्रा० ६×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल सं० १८३० मादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७३ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५४०८. भडली पुराण—× । पत्रसं० १३ । ग्रा० ११½ × ६½ इन्च । भाषा हिन्दी प० । विषय-ज्योतिष । र०काल × : ले०काल स० १८५८ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५४०९. भडली वर्णन । पत्रस० १६ । भाषा-हिन्दी । विषय × । अपूर्ण । वेष्टनस० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५४१०. भडलीवाक्यपृच्छा— × । पत्रसं० ४ । ग्रा० १०½ × ५ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-ज्योतिष निमित्त । र० काल × । ले०काल स० १६४४ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—लिखत जोसी सूरदासु अर्जुन सुत ।

५४११. भडली विचार— × । पत्र स० ९ । ग्रा० ११ × ६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४७-२५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५४१२. भडली विचार— × । पत्रस० ४० ग्रा० १०×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८५७ । पूर्ण । वे० स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५४१३ भडली विचार—× । पत्रस० ५ । ग्रा० १० × ४ इन्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५४१४ भद्रबाहु संहिता—भद्रबाहु । पत्र सं० ९९ । ग्रा० ९½ ×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४१५. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६५ । ग्रा० ८×६½ इन्च । ले काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४१६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ९९ । ग्रा० १२ × ६ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५४१७ प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६२ । ग्रा० १३ × ५¾ इन्च । ले०काल स० १८६९ श्रावण बदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रूपलाल जी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि करवाई थी ।

५४१८. भावफल— × । पत्र स० १५ ग्रा० ११×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८६९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९-१५१ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टौंक) ।

५४१६. भाविसमय प्रकरण—पत्र सं० ८। भाषा प्राकृत सस्कृत। विषय- ×। रचना काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

५४२०. भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि। पत्र स० १४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—स स्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल सं० १५६६ भादवा बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १२४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

५४२१ प्रतिसं० २। पत्र स० १२। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

५४२२. भुवन दीपक— ×। पत्र स० १०। आ० १०¾×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० १५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

५४२३. भुवनदीपक टीका— ×। पत्र स० १६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। **वेष्टनसं० १६८**। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

५४२४. भुवनदीपक वृत्ति—सिंहतिलक सूरि। पत्र स० २५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। **पूर्ण**। वेष्टन स० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष— रम युग गुणेन्दु वर्ष १३२६ शास्त्रे भुवनदीपके वृत्ति। युवराज वाटकादिह विशोध्य बीजापुरे लिखिता ॥१॥

५४२५. भुवनविचार— ×। पत्र सं० २। आ० १०½×५ इञ्च। **भाषा**—सस्कृत। **विषय**-ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खडेलवाल उदयपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

५४२६. मकरंद (मध्यलग्न ज्योतिष)— ×। पत्र स० ६। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६/५६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

५४२७. मुहूर्तचितामणि—त्रिमल्ल। पत्र स० ३६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल स० १८७५। पूर्ण। वेष्टन स० १४४७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५४२८. मुहूर्तचितामणि— दैवज्ञराम। पत्रसं० ६७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल स० १६५७। **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन सं० **१६३**। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

५४२६. प्रति सं० २। पत्रस० १८। आ० १३×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६६। प्राप्ति **स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५४३०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ८५ । आ० १०३/४ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८५१ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

५४३१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ५१ । आ० ६३/४ × ४१/२ इञ्च । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—सवत् १८७६ शाके १७४४ मासानाम मासोत्तम श्रावणमासे शुभे शुक्लपक्षे १ भृगुवासरे चिरजीव सदासुख लिपिकृत करवाराख्य शुभेग्रामे ।

५४३२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ७४ । आ० ७१/४ × ४१/२ इञ्च । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३५, १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५४३३. प्रति स० ६ । पत्र स० ६६ । आ० ७१/४ × ४१/८ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३६ १३० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५४३४ मुहूर्तचितामरिण— × । पत्रस० १०३ । आ० १० × ४१/२ । भाषा सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८५५ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १११५ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—माराकचन्द ने किशनगढ मे प्रतिलिपि की थी

५४३५. प्रति सं० २ । पत्रस० ३६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५४३६. प्रति सं० ३ । पत्रस० ४० । आ० ११३/४ × ५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

५४३७. मुहूर्त्तपरीक्षा— × । पत्रस० २ । आ० ११३/४ × ५ । भाषा-सस्कृत । ले० काल स० १८१६ मगसिर । पूर्ण । वेष्टन स० ११२६ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५४३८. मुहूर्त्ततत्व - × । पत्रस० २ । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेस्टन स० १६७ ५४८ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५४३९. मुहूर्त्तमुक्तावली - परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्रस० ७ । आ० [illegible] इञ्च । भाषा--सस्कृत । विषय -ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेस्टन स० १४४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५४४० प्रति स० २ । पत्रस० १० । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वेस्टन स० १४५० । **प्राप्ति स्थान** --भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४४१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ११ । ले०काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टनस० ७५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है तथा लखनऊ मे लिखी गई थी ।

५४४२. प्रति सं० ४ । पत्रस० १३ । आ० ८३/४ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन स०१६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

५४४३ प्रतिसं० ५ पत्रसं० ८। आ० १०× ६ इञ्च। ले०काल । पूर्ण वेष्टन स० १७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी।

५४४४. मुहूर्त्त मुक्तावलि— × । पत्रस० ६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। **विषय**–ज्योतिष। र०काल × । ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

५४४५. मुहूर्त्त मुक्तावलि—× । पत्रस० १२। आ० ६½× ४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल × । ले०काल स० १८५४। पूर्ण। वेष्टन स० २८७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

५४४६ मुहूर्त्त मुक्तावलि—× । पत्र स० १२। आ० १२×४ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ३८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

५४४७ मुहूर्त्त मुक्तावलि—× । पत्रस० ३-७। आ० ८×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल स० १८२० प्रथम आषाढ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स०२७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

५४४८ मुहूर्त्त विधि–×। पत्रस० १७। आ० ११×५ इंच। **भाषा**-संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० २१६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५४४९ मुहूर्त्त शास्त्र—×। पत्रस० १७। आ० १०½× ५ इञ्च। र०काल ×। ले०काल स० १८८५। पूर्ण। वेष्टन स० ११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—विशालपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

५४५०. मेघमाला—शंकर। पत्रस० २१। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र०काल × । ले० काल स० १८९१। पूर्ण। वेष्टन स० ९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री शंकर कृ मेघ मालाया प्रथमोध्याय:।

इति श्री ईश्वरपार्वती संवादे सनिश्चरमता संपूर्ण। मिति आषाढ शुक्ल पक्षे मंगलवारे स० १८९१ आदिनाथ चैत्यालये। द० पंडित जैचन्द का परते सुखजी साजी की मु उतारी छै।

५४५१. मेघमाला— ×। पत्र स० ९। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ४२२-१५८। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

५४५२. मेघमाला (भड्डलीविचार)—×। पत्रस० ६। आ० ६×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल स० १८८२। अपूर्ण। **वेष्टन स० १३४। प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

५४५३. मेघमाला प्रकरण—×। पत्र स० १४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-निमित्त शास्त्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८२–५६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—भडलीविचार जैसा है ।

५४५४. योगमाला— × । पत्रस० ९ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

५४५५ योगातिसार—भागीरथ कायस्थ कानूगो । पत्र स० ३५ । ग्रा० १०×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८५० ग्रासोज सुदी १ । पूर्ण । वे० स० १११४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—सेवग चित्तौडवासी डेह्रा मालवा देश के नोलाई नगर में प्रतिलिपि की थी ।

५४५६. योगिनीदशा – × । पत्र स० ६ । ग्रा० ११$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा- सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० ११२९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५४५७. योगिनीदशा— × । पत्रस० ८ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$ ×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५४५८. रत्न चूड़ामणि— × । पत्र स० ७ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २००-४६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५४५९. रत्नदीपक – × । पत्र स० ११ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८७६ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५४६०. रत्नदीप— × । पत्र स० ८ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५४६१. रत्नदीपक— × । पत्र स० ७ । ग्रा० १३ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर ग्रजमेर ।

५४६२. प्रतिस० २ । पत्रस० ९ ।ग्रा० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४१ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मंदिर बारसली कोटा ।

५४६३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण ।वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

५४६४. रत्नमाला –**महादेव** । पत्र स० ५९ । ग्रा० १० × ४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १४८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७७ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—स्वास्नि संवत् १४८६ वर्षे कार्तिक बुदी ११ एकादश्या तिथौ भौमवासरे अथेह खाजू रिक पुरे वास्तव्य भट्ट मेदपाटेज्ञातीय ज्योतिषी कडूप्रात्मज रगकेन द्यास वादादि समस्त भ्रातृणा पठनाय नच शिशूनां पठनाय परोपकाराय रत्नमाल फलग्रन्थस्य भाष्यं लिलेख ।

५४६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५४६६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६-६० । आ० ११×५ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

सन्धि के अन्त मे निम्न प्रकार उल्लेख है—

शश्वत् वाक्यप्रमाणप्रवणमदुमते: वेदवेदागवेत्तु. सूनु. श्री लूणिगस्याचुत: चरणरति. श्री महादेवनामा तत् प्रोक्ते रत्नमाला रुचिरविवरणे सज्जनाना भोजयानो दुर्जनेन्द्रा प्रकरणमगमत् योग सज्ञा चतुर्थ ।

५४६७. रमल—× । पत्रस० ३ । आ० १० ×५½इच । भाषा-हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन स० १००० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४६८. रमल प्रश्न—× । पत्र स० २ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४६९. रमल ज्ञान—× । पत्र स० १६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४७०. रमल प्रश्नतंत्र—दैवज्ञ चिंतामणि । पत्र सं० २३ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

५४७१. रमलशकुनावली—× । पत्रस० ५ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५४७२. रमल शकुनावली— × । पत्र सं० ७ । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

अन्तिम—इति श्री मुसलमानी शकुनावली सपूर्ण । संवत् १८५३ का मिती चैत बुदी १२ सुखकीरत वाचनार्थ नगर मेलखेडा मध्ये ।

५४७३. रमल शास्त्र—× । पत्र स० ३५ । ग्रा० ६१/२ × ७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय ज्योतिष । र०काल × । **ले०काल** स० १८६६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—लिखित तिवाडी विद्याधरेन ठाकुर श्रीमं रुबक्सजी ठाकुर श्री रामबक्सजी राज्ये कलुखेडीमध्ये ।

५४७४. रमलशास्त्र—× । पत्र स० २५ । ग्रा० ६ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४७५. रमलशास्त्र × । पत्रसं० ४५ । ग्रा० ११ × ७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डू गरपुर ।

विशेष—प्रश्नोत्तर के रूप मे दिया हुआ है ।

५४७६. राजावली—× । पत्रस० ११ । ग्रा० १३ × ५१/२ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । **ले०काल** स० १७२१ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन म० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

इति सवत्सर फल समाप्त ।

५४७७. राजावली—× । पत्रस० १६ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८३८ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २३२ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—इति षष्ठि (६०) सवत्सरनामानि ।

५४७८. संवत्सर राजावलि—× । पत्रस० ५ । ग्रा० ६ × ४१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४३ । × **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर।

५४७९. राहुफल—× । पत्रस० ६ । ग्रा० १० × ४१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५४८०. राशिफल—× । पत्र स० ५ । ग्रा० ६ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

५४८१. राशिफल—× । पत्रस० २ । ग्रा० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । **ले०काल** स० १८१६ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

५४८२. लघुजातक—भट्टोत्पल । पत्र स० ६-४५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं० १८०६ भादवा सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५४८३. लघुजातक— । पत्रस० ६ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १७१७ द्वि ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४८४. लग्नचन्द्रिका—काशीनाथ । पत्रस० ३३ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५४८५ प्रतिसं० २ । पत्र स० ३२ । आ० ६½ × ४ इंच । ले०काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५४८६. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५८ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टनस० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—गोठडा में प्रतिलिपि हुई थी ।

५४८७ प्रति स० ४ । पत्रस० ७४ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५४८८. प्रति स० ५ । पत्रस० २४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५४८९. प्रति स० ६ । पत्रस० १२ । आ० ७½×६½ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

५४९०. वर्षतंत्र—नीलकंठ । पत्र स० ६८ । आ० ११½ × ५½ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४९१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३६ । आ० १२×४ इञ्च । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५४९२. वर्षफल—वामन । पत्रस० ३-६ । आ० १०½ × ४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ७१३ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४९३. वर्षफल— × । पत्र स० ६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०७-१८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक) ।

५४९४. वर्षभावफल— × । पत्र सं० ६ । आ० ६½×४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५४६५. विवाह पडल— × । पत्र स० २४ । आ० १०×४½ इ च । भाषा सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति ।

इति श्री विवाह पडल ग्रंथ सम्पूर्ण । लिखितेयं सकल पडित शिरोमणि पं० श्री जसवत सागर गणि शिष्य मुनि विनयसागरेण । सवत् १७६३ वर्षे श्री महावीर प्रसादात् शुभभवतु ।

५४६६. वृन्द संहिता—परम विद्यराज । पत्र स० १४३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ़ ।

५४६७. वृहज्जातक × । पत्र सं० १-१० । आ० ११½×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४६८. वृहज्जातक— × । पत्रस० ४२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५४६९. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६० । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५५००. वृहज्जातक (टीका)—वराहमिहर । पत्र स० ८८ । आ० १२×५½ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५५०१. शकुन वर्णन— × । पत्र स० १६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष (शकुन शास्त्र) । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

५५०२. शकुनविचार— × । पत्रस० ५ । आ० ६½ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५०३. शकुन विचार— × । पत्र स० १ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ८१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

५५०४. शकुन विचार— × । पत्रसं० ३ । भाषा—सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५५०५. शकुन विचार— × । पत्रस० २-१० । भाषा-सस्कृत । विषय-शकुन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५५०६. शकुन विचार— × । पत्र सं० १ । भाषा–संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२/५५६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आचार्य श्री कल्याणकीर्ति के शिष्य मुनि भुवनचद ने प्रतिलिपि की थी ।

५५०७. शकुन विचार— × । पत्र स० ३ । आ० ६ × ४ इच । भाषा–हिन्दी । विषय-ज्योतिस । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ७०८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५५०८. शकुन विचार— × । पत्रस० १२ । आ० १२½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

५५०९. शकुनावली—गौतम स्वामी । पत्रसं० ३ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । संस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । **वेष्टनसं०** १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५५१०. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५५११. शकुनावली— × । पत्रस० ६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७०-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५१२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८ । आ० १० × ७½ इञ्च । **ले०काल** सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५४/१३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५१३ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४ । आ० ६½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५५१४. शकुनावली— × । पत्रस० १४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १६६२ चैत सुदी ११ । **वेष्टनस०** ६३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५५१५. प्रतिसं० २ । पत्रस० १६ । आ० १०½ × ५¾ इच । ले० काल × । वेष्टन सं० ६४० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

५५१६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । **ले०काल** × । **वेष्टनसं०** ६७१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

५५१७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५५१८. । पत्रस० ४ । आ० ७ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८२० सावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—गोठडा में प्रतिलिपि हुई थी ।

५५१६. शीघ्रबोध - काशोनाथ । पत्रस० ८-२६ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-सस्कृत । **विषय**—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस० १०३१ । प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२०. प्रतिसं० २ । पत्र स० १० । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२१. प्रति सं० ३ । पत्रस० ३६ । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२२ प्रतिसं० ४ । पत्र स० ४३ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष – गुटका साइज मे है ।

५५२३. प्रति सं० ५ । पत्रस० ५८ । ग्रा० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८६ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—किशनगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५५२४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १५ । ग्रा० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल १६०३ । पूर्ण । **वेष्टन स० १११८** । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ३५ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५५२६. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ८-६१ । ग्रा० ७×५$\frac{1}{2}$ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

५५२७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ५६ । ग्रा० १३$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८६० भादवा बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—ला० नथमल के पठनार्थ बयाना मे प्रतिलिपि की गई थी ।

५५२८. प्रतिसं० १० । पत्रस० ३६ । ग्रा० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८४५ चैत्र शुक्ला ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

५५२९. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ६६ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$×४ इंच । **ले०काल स० १८५५** । **पूर्ण** । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५५३०. प्रति स० १२ । पत्र स० १३ । ग्रा० ८×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन स० २६०** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

५५३१. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ११ । ग्रा० ६×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । **पूर्ण । वेष्टन सं० २४३** । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

५५३२. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ३० । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल स० १८२० वैशाख** सुदी २ । । पूर्ण । **वेष्टनस० १६५** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

५५३३. प्रति सं० १५ । पत्रसं० १५ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हिन्दी मे टब्बा टीका है ।

५५३४. प्रति सं० १६ । पत्र स० २० । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल स० १७४७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५३५ प्रतिसं० १७ । पत्रस० १६ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५५३६. प्रतिसं० १८ । पत्र सं० ३३ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी) ।

५५३७. प्रतिसं० १९ । पत्र सख्या २१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५५३८. प्रतिसं० २०। पत्र स० २१-३२ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० २१६-८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५३९. षट्पंचाशिका – भट्टोत्पल । पत्रस० ४ । आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल स० १८५२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५५४०. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल स० १८२९ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रश्न भी दिये है ।

५५४१. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २२ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति संस्कृत वृत्ति सहित है ।

५५४२. प्रति सं० ४ । पत्र स० २-८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ७०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५४३ प्रतिसं० ५ । पत्र स० २ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८२५ मंगसिर सुदी ७ । वेप्टन स० ३२० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५५४४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—शेरगढ में पं० हीरावल ने लिखा था ।

५५४५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—लिखित मुनि धर्म विमलेन सीसवाली नगर मध्ये मिती कार्त्तिक बुदी २ सवत् १७९८ वर्षे गुरुवासरे सपूर्ण ।

५५४६. षड्वर्ग फल— × । पत्र सं० १३ । ग्रा० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय**—ज्योतिष । र०काल × । **ले०काल** सं० १६०३ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५४७. षष्ठि योग प्रकरण — × । पत्रसं० ८ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

५५४८. षष्ठिसंवतत्सरी—दुर्गदेव । पत्रस० १३ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत, **हिन्दी** । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १६६५ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

१६६५ वर्षे मगसिर सुदी १५ शनिवारे,
माडण ग्रामे लिखवता श्रीलक्ष्मीविमल गणे ।

५५४९. षष्ठि संवत्सरफल— × । पत्रस० २ । ग्रा० ९×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टनस० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५५०. सप्तवारघटी — × । पत्रस० १५० । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष (गणित) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

५५५१. समरसार—रामचन्द्र सोमराजा — । पत्रसं० ५ । ग्रा० १२ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५५५२. साठसंवत्सरी — × । पत्र स० ७ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन म० १७१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—संवत्सर के फलो का वर्णन है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७१२ वर्षे वैशाख बुदी १४ दिनोसागपत्तने श्री आदिनाथ चैत्यालये ब्रह्म भीराख्येन लिखि गमिद ।

५५५३. साठ संवत्सरी— × । पत्र स० २७ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२३-९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—संवत्सरी वर्णन दिया हुआ है । प्रति प्राचीन है । भ० विजयकीर्ति जी की प्रति है ।

५५५४. साठि संवत्सरी— × । पत्रस० ६ । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८१-१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५५५५. साठ संवत्सरी— × । पत्रस० ११ । भाषा-हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८/५३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५५५६. साठि संवत्सरी—× । पत्रसं० १० । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४८७-× । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५५५७. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ४ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५५८. साठिसंवत्सरग्रहफल—पण्डित शिरोमणि । पत्र सं० २१ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ६११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५५९. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रस० १० । आ० १०½ × ६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—लक्षण शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—शरीर के आंगो पागो को देखकर उनका फल निकालना ।

५५६०. सामुद्रिक शास्त्र — × । पत्र स० १२ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—लक्षण शास्त्र । र० काल × । ले० काल म० १६०२ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६१. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रस० ८ । आ० ९½ × ४½ इच । भाषा—हिन्दी विषय-लक्षण शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १७९५ चैत्र । पूर्ण । वेष्टन स० १०३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६२. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रसं० ५९ । आ० ८ · ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-लक्षण शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

५५६३. सामुद्रिक शास्त्र — × । पत्रस० २४ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षण शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११९४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६४. सारसग्रह— × । पत्रस० २० । आ० ९½ × ४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० १००२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६५. सिद्धांत शिरोमणि—भास्कराचार्य । पत्रसं० ७ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५५६६. सूर्य ग्रहण— × । पत्र स० १ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४१–× । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

५५६७ संकटदशा— × । पत्रस० १० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८–२८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५५६८. संवत्सर महात्म्य टीका— × । पत्रस० ६ । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सवत्सर का पूर्ण विवरण है ।

५५६९. संवत्सरी— × । **पत्रस०** १७ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८२४ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—सवत् १७०१ से १८०० तक के सौ वर्षों का फल दिया है । गोठडा ग्राम मे रूपविमल के के शिष्य भाग्यविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

५५७०. स्त्री जन्म कुंडली— × । पत्रस० १ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७१. स्वर विचार— × । पत्रस० २ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

५५७२. स्वप्न विचार — × । पत्र स० १ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा — हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—स्वप्न के फलो का वर्णन है ।

५५७३ स्वप्नसती टीका—गोवर्द्धनाचार्य । पत्रस० २६५ । आ० ६¾ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६८० पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७४. स्वप्नाध्याय— × । पत्रस० ५ । आ० ८ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल स० १८६८ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष—बयाना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५५७५ स्वप्नाध्यायी— × । पत्रस० २-४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१६/६४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

५५७६. स्वप्नाध्यायी—× । पत्रसं० ११ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—१४६ श्लोक हैं ।

५५७७. स्वप्नावली— .... । पत्र स० २१ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५७८. स्वप्नावली— × । पत्रसं० ३ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७६. स्वरोदय— । पत्रसं० ८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—नासिका के स्वरो सबधी ज्ञान का विषय है ।

५५८०. स्वरोदय— × । पत्र स० ५ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १७८५ बैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५५८१ स्वरोदय टीका— × । पत्र स० २७ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । । ले०काल स० १८०८ बैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५५८२. स्वरोदय —× । पत्र स० १८ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५५८३ स्वरोदय - × । पत्र स० १८ । आ० ८$\frac{3}{4}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १७१५ अगहन बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष - १२ से १७ पत्र नही है । पवन विजय नामक ग्रथ से लिया गया है ।

५५८४. स्वरोदय— × । पत्रस० ३२ । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३०-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५५८५. स्वरोदय— × । पत्रस० २७ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल स १६०५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२४-१२२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

इति पवनविजयशास्त्रे ईश्वर पार्वती संवादे तस्य भेद स्वरोदय संपूर्ण ।।

५५८६. स्वरोदय—मुनि कपूरचन्द। पत्रसं० २७। आ० ८×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय-निमित्त शास्त्र। र०काल ×। ले०काल स० १९२३ चैत सुदी। पूर्ण। वेष्टन स० ७३८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष— कृष्ण असाढी दशम दिन शुक्रवार सुखकार।
संवत वरण निपुणता नदचद धार।

५५८७. स्वरोदय—चरणदास। पत्र स० १५। आ० ९½×६½ इञ्च। भाषा हिन्दी (प)। विषय-निमित्तज्ञान। र०काल ×। ले० काल स० १९२५। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—रणजीत के शिष्य चरणदास दूसर जाति के थे। ये पहिले दिल्ली मे रहे थे। गोरीलाल ब्राह्मण दबलाना वाले ने प्रतिलिपि की थी।

५५८८. स्वोरदय—प्रहलाद। पत्र स० १४। आ० ९×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-निमित्त शास्त्र। र०काल ×। ले० काल स० १८५९। पूर्ण। वेष्टन स० ३३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—जती दूदा ने आत्रदा मे प्रतिलिपि की थी।

आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

गज बदन मुकभाल सुन्दर त्रिय नयण।
एक मुख दत कर पर सकल माला।
मोदक सघ मूसो वाहाण।
मुघये ससि मुस्वर मुल पाणी।
सुर सर जटा साखा सुकी कठ।
अरधग गोर गजबालसो देवो कुणाइ सुभवाणी।

अन्तिम—पाठक देत बखानी भाषा मन पवना जिहि दिढ करि राखी।
परम तत्व प्रहलाद प्रकासै जनम जनम के तिमिर विनासै।
पढे सुने सो मुकत कहावै गुरु के चरण कमल सिरनावै ॥
ऐसा मत्र तंत्र जग नाही जैसा ज्ञान सरोदा माही।

दोहा—

मिसर पाठक के कहे पाई जीवन मूल।
मणमूल जीव तह सदा अनुकूल।

इति श्री पवनजय सरोदा ग्रथ।

५५८९. होराप्रकाश— × पत्र स० ८। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल स० १९१४। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

५५९०. होरामकरंद— ×। पत्र स० ५८। आ० ८½×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १००५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५५९१. होरामकरंद-गुणाकर। पत्र स० ४८। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ११७। **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विषय--आयुर्वेद

५५६२. अजीर्ण मंजरी—न्यामतखां । पत्रस० १२ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल स० १७०४ । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ५३३ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—कृति का अतिम पाठ निम्न प्रकार है—

संवत् सतरंसौ चतुर परिवा अगहन मास ।
स पूर्ण **ममरेज** कहि कह्यो अजीर्ण नाम ॥६८॥
सब देसन मे मुकुटमणि **बागडदेस** विख्यात ।
सहर **फतेपुर** अतिसए परसिद्धि अति विख्यात ॥६६॥
क्यामखान को राज जहा दाता सूर सुज्ञान ।
न्यामतखां न्यामते निपुण धर्मी दाता जान ॥१००॥
तिनि यह कीयो ग्रंथ अति उकति जुवित परधान ।
अजीर्ण तास यह नाम धरि पढै जो पंडित आनि ॥१०१॥
वैद्यकशास्त्र कौ देखि करी नित यह कीयौ बखान ।
पर उपकार के कारर्णा सो यह ग्रथ सुखदान ॥१०२॥
पर उपगार को सुगम कीयो मोरू महीधरराज ।
तानगि पुस्तग थिर रहै सदा··· जि महाराज ॥१०३॥

इति श्री अजीर्णनाम ग्रथ सपूर्ण । स० १८२३ वैशाख बुदी ६ । लिखतं नगराज महाजन पठनार्थं ।

५५६३. अमृतमंजरी—काशीराज । पत्र स० ४ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हरिदुर्गे (किशनगढ़) मध्ये श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये ।

५५६४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । आ० ६ × ४ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० २०८-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५६५. अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह । पत्रस० ३३१ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । **पूर्ण । वेष्टनसं०** १०-८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४ । आ० १० × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—स्त्रियो के प्रदर रोग के लक्षण तथा चिकित्सा दी है ।

५५६७. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १६४ । आ० ८½ × ६ इञ्च । **ले० काल** × । पूर्ण । **वेष्टन** स० ५४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अमृतसागर ग्रंथ मे से निम्न प्रकरण हैं। अजीर्ण रोग प्रमेह रोग चौरासी प्रकार की वाय, रक्त पित्त रोग। ज्वर लक्षण, शल्य चिकित्सा, अतीसार रोग, सुद्ररोग, वाजीकरण, आदि।

५५९८. प्रति सं० ४ । पत्रसं० २६८ । आ० १३×६ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

विशेष—पत्र स० २६८ से आगे के पत्र नहीं है।

५५९९. प्रति स० ५ । पत्रसं० २८७ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले० काल स० १९०५ चैत बुदी ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—ग्रंथ मे २५ तरंग (अध्याय) है जिनमे आयुर्वेद के विभिन्न विषयो पर प्रकाश डाला गया है।

५६००. अवधूत— × । पत्र स० १३ । आ० १० ×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६०१. आंख के तेरह दोष वर्णन— × । पत्र स० ६ । आ० ६ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—गुटकाकार है। तीसरे पत्र से आयुर्वेद के अन्य नुस्खे भी है। दिनका विचार चौघडिया भी है।

५६०२. आत्मप्रकाश—आत्माराम । पत्र स० १५० । आ० १३½ × ६¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १९१२ बैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५६०३. आयुर्वेद ग्रंथ— × । पत्र स० ३५ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वे० स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५६०४. आयुर्वेद ग्रंथ—× । पत्र स० ६८ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे है।

५६०५. आयुर्वेद ग्रन्थ—पत्रस० १८ । भाषा सस्कृत । विषय-वैद्यक । रचना काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५६०६. आयुर्वेद ग्रंथ— × । पत्र स० २३ । आ० १०×४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७०-१७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५६०७ आयुर्वेद ग्रंथ— × । पत्र स० १६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५/८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—वेष्टन स० ८ में समयसारनाटक एवं पूजादि के फुटकर पत्र हैं।

५६०८. आयुर्वेद ग्रंथ— × । पत्रस० ८७ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६०९. आयुर्वेद के नुस्खे × । पत्र सं० १६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ८१४ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पत्र फुटकर है ।

५६१०. आयुर्वेद के नुस्खे— × । पत्र स० ८ । आ० ७×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५६११. आयुर्वेद निदान— × । पत्रस० २२ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५६१२. आयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्रस० ४०३ । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टनस० ४०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

५६१३. आयुर्वेदिक शास्त्र— × । पत्र स० ८४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ग० । विषय— आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस०८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

५६१४. औषधि विधि— × । पत्र स० ४-२४ । आ० ९× ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा- हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १७९३ भादवा सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५६१५. ऋतुचर्या—वाग्भट्ट । पत्रस० ८ । आ० ११×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५६१६. कर्मविपाक—वीरसिंहदेव । पत्र स० १२ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८५३ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—इति श्री तोमरवंशवतंसमूरि प्रभूत श्री वीरसिंहदेवविरचिते वीरसिंहावलोक ज्योतिशास्त्र कर्म विपाक आयुर्वेदोक्त प्रयोगोभिश्रकाध्यायः ।

५६१७. कालज्ञान— × । पत्र स० २५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल सं० १९१० । पूर्ण । वेष्टन स० २९२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६१८. कालज्ञान— × । पत्रसं० २८ । आ० ८$\frac{1}{4}$×३$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८०२ सावन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६३ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—व्यास गोविदराम चाटसू ने कोटा मे लिखा था ।

५६१६. कालज्ञान—× । पत्रसं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

५६२०. कालज्ञान— × । पत्रस० ११ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ ।

५६२१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८७८ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—चिरंजीव सदासुख ने प्रतिलिपि की थी ।

५६२२. कालज्ञान— × । पत्रसं० १६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । **ले०काल** सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० १२-८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

लिपिकृत कानकुब्ज ब्राह्मण शालिग्रामेण नगर मारवाड मध्ये सवत् १८८० मिती श्रावण बुदी २ शुक्रवारे ।

५६२३. प्रति सं० २ । पत्र स० २-१३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५६२४. कालज्ञान भाषा—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र स० १३ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८८१ वैशाख सुदी ८ पूर्ण । वेष्टन स० १५८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६२५. कालज्ञान भाषा— × । पत्रस० १३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा - हिन्दी । विषय — आयुर्वेद । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

५६२६. कालज्ञान सटीक— × । पत्र स० ३३ । आ० ८ ×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—७ वें समुद्देश तक है ।

५६२७. कृमि रोग का ब्योरा— × । पत्रस० १ । आ० १० ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५६२८. कुष्टीचिकित्सा— × । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५६२९. गुणरत्नमाला—मिश्रभाव । पत्र स० ४-८५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनसं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५६३०. चन्द्रोदय कर्प्प टीका—कविराज शङ्गधर । पत्रस० ६ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५६३१. चिकित्सासार—धीरजराम । पत्र स० १२६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८६० फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन भट्टारकीय मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजयगढ नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

अजमेर में पट्टस्थ भट्टारक भुवनकीर्ति के शिष्य प० चतुर्भु जदास ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

५६३२. जोटा की विधि—× । पत्रस० १ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

५६३३. ज्वर त्रिशती—शार्ङ्गधर । पत्रसं० ३३ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८८६। पूर्ण । वेष्टन सं० २९१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन भट्टारकीय मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कृष्णगढ मे देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३४. ज्वर पराजय— × । पत्र स० १९ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५६३५. दोषावली— × । पत्रस० २-४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३६-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५६३६. द्रव्यगुण शतक — × । पत्रसं० ३३ । आ० ६¾×४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६३७. नाडी परीक्षा—× । पत्रस० ४ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १९१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६३८. प्रति सं० २। पत्रसं० ८। आ० ६$\frac{3}{4}$×४ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। **वेष्टन सं०** ५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—पहिले सस्कृत मे बाद मे हिन्दी पद्य मे अर्थ दिया हुआ है।

५६३९. प्रति स० ३। पत्रस० ३। आ० ८×५ इञ्च। **ले०काल** स० १८६४। पूर्ण। वेष्टन सं० ८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

५६४०. निघंटु—×। पत्रस० १६८। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १०३४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६४१. प्रतिसं० २। पत्र स० ३ से १२७। आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६४२. प्रतिसं० ३। पत्रस० ६५। आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६४३. प्रतिसं० ४। पत्र स० ८०। आ० ६×४ इञ्च। **ले०काल** १७५५ प्रथम ज्येष्ठ सुदी ६। वेष्टन स० ३३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५६४४. प्रति सं० ५। पत्रस० ७०। आ० ६$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। **ले०काल** स० १८८८ माघ बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

५६४५. निघंटु—×। पत्रस० ४६। आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ।

५६४६. प्रतिसं० २। पत्र स० ४६। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। **ले०काल** स० १७५३ कार्त्तिक सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० २२१। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५६४७. निघटु टीका—×। पत्र स० ५-१३। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। **भाषा**-सस्कृत। **विषय**—आयुर्वेद। र०काल ×। लेखन काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

५६४८. निदान—×। पत्र स० १६। आ० ११×७ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय आयुर्वेद। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—पं० दिलसुख ने नृपहर्म्य (राजमहल) मे प्रतिलिपि की थी।

५६४९. निदान भाषा—श्रीपतभट्ट। पत्र स० ८२। आ० ८$\frac{3}{4}$×४ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी (पद्य)। विषय—आयुर्वेद। र०काल स० १७३० भादवा सुदी १३। ले०काल स० १८१० आसोज बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ४४६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—ग्रंथकार परिचय—

गुजराती औदीच्यकुलरावल श्रीगोपाल ॥
श्रीपुरुषोत्तम नाम सुत आयुर्वेद विमला ॥

तासो सुत श्रीपतिभिषक हिमतेषा परसाद ।
रच्यौ ग्रंथ जग के लिये प्रभु को आसीरवाद ।।

५६५०. पथ्य निर्णय— × । पत्रस० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५६५१. पथ्य निर्णय— × । पत्रस० ८४ । आ० १२×५½ । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५६५२. पथ्यापथ्यनिर्णय— × । पत्र स० १९ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५६५३. प्रति स० २ । पत्र स० १७ । आ० १०×५ इन्च । ले० काल स० १८७१ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

५६५४. प्रति सं० ३ । पत्रस० ९ । आ० ११½×५¾ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५६५५ प्रतिसं० ४ । पत्र स० २१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५६५६ पथ्यापथ्य विचार— × । पत्र स० ५२ । आ० ९×४½ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० २९० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष - कृष्णगढ मध्ये लिखापित ।

५६५७. पथ्यापथ्य विबोधक वैद्य जयदेव । पत्र स० २०२ । आ० ८½×६½ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १९०४ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६५८. पचामृत नाम रस— × । पत्रस० १० । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—१० पत्र से आगे नही है ।

५६५९. प्रकृति विच्छेद प्रकरण—जयतिलक । पत्रस० ३ । आ० ९¾×४½ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६६०. पाक शास्त्र—× । पत्रस० १२ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय —आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १९५-८० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—विविध प्रकार के पाको के बनाने की विधि दी है ।

५६६१. बाल चिकित्सा—X। पत्रसं० २०। आ० १०X५½ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन स० १०५/५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

५६६२. बालतंत्र—X। पत्रसं० ३६। आ० ११ X६ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र० काल X। ले०काल सं० १७५६। **वेष्टनसं० ४३१। प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६६३. बालतंत्र भाषा—पं० कल्याणदास। पत्र सं० ८६। आ० १२X५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। र० काल X। ले० काल स० १८८६ अषाढ सुदी १४। पूर्ण। **वेष्टनस० ५२०। प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६६४. बंधफल— X। पत्र सं० १। आ० ११X५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

५६६५. बंध्या स्त्री कल्प—X। पत्रस० १। आ० १०½X४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० २२३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—सतान होने आदि की विधि है।

५६६६ भावप्रकाश—भावमिश्र। पत्रस० १४३। आ० १३X६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टनसं० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी।

विशेष—प्रथम खड है।

५६६७. प्रतिसं० २। पत्रस० २३०। आ० १४ X६½ इञ्च। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टनसं० १४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—मध्यम खड है।

५६६८. भावप्रकाश—X। पत्र स० ६। आ० १३½ X ६½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र०काल X। ले० काल X। अपूर्ण। **वेष्टनस० २२६। प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५६६९. भावप्रकाश— X। पत्र स० २-६५। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

५६७०. माधवनिदान—माधव। पत्रस० २१०। आ० ११½X८ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—। र०काल X। ले०काल स० १९१६ आसोज सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ३६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

५६७१. प्रति सं० २। पत्र स० ७८। आ० १०½ X ४¾ इञ्च। **ले०काल** स० १७१०। पूर्ण। वेष्टन स० ४४८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है।

५६७२. प्रतिसं० ३। पत्र स० १२६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८५५ ।पूर्ण । वेष्टन स० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६७३. प्रति सं० ४। पत्रस० १२८ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १५६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६७४. प्रतिसं० ५। पत्र स० ४६ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल स० १८२२ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

५६७५. प्रतिसं० ६। पत्रसं० १११ । आ० १०×४ इञ्च । **ले०काल** स० १८७४ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

५६७६. प्रति सं० ७। पत्र स० ५६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पंचायती दूनी (टोक)

५६७७. प्रति सं० ८। पत्र स० ८६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६२२ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष—ऋषि मायाचद ने शिवपुरी मे प्रतिलिपि की थी।

५६७८. प्रतिसं० ९। पत्रस० २६ । आ० ८½×४½ इञ्च । **ले०काल** × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ६८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

५६७९. माधव निदान टीका—वैद्य वाचस्पति। पत्रसं० १३६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८१२ माघ सुदी ५ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष.. दयाचन्द ने चपावती के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

५६८०. मूत्र परीक्षा—× । पत्र स० २ । आ० १२×५¼ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६८१. मूत्र परीक्षा— × । पत्र स० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८८० पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

५६८२. मूत्र परीक्षा—× । पत्र स० ५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत ।विषय—वैद्यक । र०काल × । ले० काल स० १७८४ । पूर्ण । वे० स० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी।)

५६८३. योगचिंतामणि—हर्षकीर्ति × । पत्रस० १६० । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० **१५६४** । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६८४. प्रति सं० २। पत्र सं० ५० । आ० १२×५½ इञ्च । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

५६८५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५१ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष —वृन्दावती ग्राम मे नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६८६. योगचिंतामरिण-× । पत्रस० ६६ । ग्रा० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५६८७. योगचिंतामरिण टीका—ग्रमरकीर्ति । पत्र स० २५६ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८२७ मर्गसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३०६ ।**प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५६८८. योगतरगिणी—त्रिमल्ल भट्ट । पत्र स० ११४ । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ग्रायुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १७७४ ग्राषाढ सुदी १ पूर्ण । वेष्टनस० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५६८९. योगमुक्तावली—× ।पत्रस० ६ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ ×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विशेष**—ग्रायुर्वेद । ले०काल × । पूर्ण वेष्टनस० ८ । **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५६९०. योगशत—× । पत्रस० १३ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$× ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १७२६ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२४४ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—पचनाइ मे प० दीपचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५६९१. योगशत—× । पत्र स० ६ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—योगशास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५६९२. योगशत--× । । पत्रस० १४ । ग्रा० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा —सस्कृत । विषय—ग्रायुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ११०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

५६९३. योगशत—× । पत्र स० २-२२ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १६०६ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोक)

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा जीर्ण है । ग्रावे पत्र मे हिन्दी टीका दी हुई है ।

टीका—श्लोक १६—

वाता जु० । व्याख्या० वास ३ गिलोय किरमालो । काढो करि एरड को तेल ट ४ माहि घालि पीवणाया समस्त शरीर को वातरक्त भाजइ । वासादि क्वाथ रसाजन-व्याख्या-रसवति चौलाई जड । मधु । चावल के धोवण माहिधालि पीवणीया प्रदरू भाजइ ।

५६६४. योगशत टीका—× । पत्र सं० ३० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल सं० १७७६ कार्तिक सुदी १० । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैनमन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ—

श्री वर्द्धमान प्रणिपत्य मूधर्न समतभद्राय जनाय हेतो·

श्री पूर्णसेन सुखबोधनार्थं प्रारभ्यते योगशतस्य टीका ।।

अन्तिम— तपागच्छे पुन्यास जी श्री तिलक सौभाग्य जी केन लिखपित भैंसरोडदुर्ग मध्ये ।

५६६५. योगशत टीका—× । पत्रसं० ३१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल म १८५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—१८५४ वैशाखे सिते पक्षे तिथौ द्वादश्या दानविमलेन लिपि कृत नगर इन्दरगढ मध्ये विजये राज्ये महाराजा जी श्री सुनमार्नासह जी—

५६६६. योगशतक—धन्वन्तरि । पत्रसं० १६ । आ० × ६ ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-- आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—नेमीचद ने लिखवाया था ।

५६६७. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १८ । ले०काल १९४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६६८. योगशतक—× । पत्रसं० १५ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १८७३ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—चेला मोहनदास के पठनार्थ कृष्णगढ (किशनगढ़) मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५६६९ योगसार संग्रह (योगशत)—× । पत्र सं० ३१ । आ० ५×३$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल सं० १८२० । पूर्ण वेष्टन सं० ५२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७००. रत्नकोश—उपाध्याय देवेश्वर । पत्र सं० २६७ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १९२१ अषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७०१. रसचिंतामणि— × । पत्रसं० १६ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४४५ । **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७०२. रसतरगिणी—भानुदत्त । पत्र सं० २४ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १९०४ वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२९३ । **प्राप्ति स्थान**-- भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—व्यास श्री सालिगरामजी ने ब्राह्मण हरिनारायण गूजर गौड से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५७०४. रसतरंगिणी—वेणीदत्त । पत्र सं० १२४ । आ० $१०\frac{३}{४}$×$५\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८५५ भादो बदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५७०५. रसपद्धति— × । पत्रसं० ३६ । आ० ११×$४\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८२६ वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—ब्रह्म जैन सागर ने आत्म पठनार्थ लिखा ।

५७०६. रस मंजरी—भानुदत्त । पत्र स० २५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५७०७. रसमंजरी—शालिनाथ । पत्रस० ४४ । आ० ११×$४\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८२६ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७०८. रसरत्नाकर—नित्यनाथसिद्ध । पत्रस० ७१ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७०९. प्रति स० २ । पत्रस० २-१६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६६/२०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

५७१०. रसरत्नाकर—रत्नाकर । पत्रस० ४८ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५७११. रसरत्नाकर— × । पत्रस० ६८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५७१२. रामविनोद—नयनसुख । पत्रस० १०० । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८०८ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प० दीपचन्द ने आणी नगर मध्ये लिखित ।

५७१३. रामविनोद—रामचन्द्र । पत्रसं० १६३ । आ० ८¾ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-वैद्यक । र०काल × । ले०काल सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टनस० १२२२ । **प्राप्तिस्थान**— भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५७१४. प्रति सं० २ । पत्रस० ८३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७१५ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८८८ द्वितीय वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

५७१६. प्रति सं० ४ । पत्रस० ११४ । आ० ११¾ × ५ इञ्च । ले० काल स० १७३० । पूर्ण । वेष्टन स० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—सवत् १७३० वर्षे आसोज सुदी १० रविवार नक्षित्र रोहिणी पोथी लिखी साहुदा बेटा फकीर बेटा लालचन्द जी वालदिराम जाती वोरखक्या वासी मोजी मीया का गुढो । राज माधोसिह (दिल्ली) हाडा बूदी राव श्री भावसिंह जी **दिलो राज** पातिसाही औरगसाहि राज प्रवर्तत ।

५७१७. रामविनोद— × । पत्र स० ५६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ ११ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

५७१८. लंघनपथ्यनिर्णय—× । पत्रस० १६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १८६० कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मोतीराम ब्राह्मण ने गोपीनाथ जी के देवरा मे लिखा था ।

५७१९. लघनपथ्य निर्णय— × । पत्रस० १२ । आ० ११ × ८ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १९४५ वैशाख वदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७२०. वैद्यक ग्रंथ— × । पत्र स० ८७ । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७२१. वैद्यक ग्रंथ—× । पत्रस० ४२ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६-६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

५७२२. वैद्यक ग्रंथ—× । पत्र सं० २ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं ।

५७२३. वैद्यकग्रंथ— × । पत्र स० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय - आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५-६२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष— क्रम स० १६/६२३ से २४/६३० तक पूर्ण अपूर्ण वैद्यक ग्र थो की प्रतिया है ।

५७२४. वैद्यक नुस्खे—× । पत्र स० ४ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—वैद्यक । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण ।वेष्टनस० १२४६ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७२५. वैद्यक नुस्खे—× । पत्र स० ४ । भाषा सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डू गरपुर ।

५७२६. प्रति सं० २ । पत्र स० ८० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५७२७. वैद्यक शास्त्र—× । पत्र स० २८३ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १८८२ चैत बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ७११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७२८. वैद्यक शास्त्र — × । पत्रस० १६ ।आ० ११½ × ५¾ इञ्च । भाषा --सस्कृत । विषय - आयुर्वेद । र०काल स ० × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५७२९. वैद्यक समुच्चय—× । पत्रस० ५१ । आ० ९ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—वैद्यक । र० काल × । ले०काल १६९० फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

विशेष—दिलिकामडले पालवग्राममध्ये लिखित ।

५७३०. वैद्यकसार—× । पत्रस० ८२ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय-आर्वेयुद । र०काल × । ले०काल स० १९५३ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५७३१. वैद्यकसार—हर्षकीर्ति । पत्रस० १५ से १६१ । आ० १२ × ५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १८२५ चैत्र बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टनस० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३२. प्रति स० २ । पत्रस० ३५ । आ० १०×४½ इ च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३३. प्रति सं० ३ । पत्रस० १७५ । आ० ११¾ × ५½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति मिटा रखी है ।

५७३४. वैद्य जीवन—लोलिम्बराज । पत्रस० ५१ । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । ले०काल स० १९१२ । पूर्ण । वेष्टनस० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३५. प्रति सं० २ । पत्र स० ३७ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० १२४१** । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३७. प्रति सं० ४ । पत्र स० १५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६४-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५७३८. प्रति स० ५ । पत्र स० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३९. प्रति स० ६ । पत्रस० १६ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन स०** ६५४ । **प्राप्ति स्थान** —भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७४०. प्रति सं० ७ । पत्र स० ५३ । आ० १०½× ४¾ इञ्च । ले० काल स० १७५३ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

५७४१. प्रति सं० ८ । पत्र स० १७ । आ० ११¼×५¼ इञ्च । ले० काल स० १८८७ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५७४२. प्रति सं० ९ । पत्र स० २४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० माघ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५७४३. प्रति सं० १० । पत्र स० १३ । आ० १०¼ × ४¼ इञ्च । ले० काल स० १८०१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष —खानोली नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५७४४ प्रति सं० ११ । पत्र स० १२ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १९७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

५७४५. प्रति स० १२ । पत्र स० ३६ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष —हिन्दी अर्थ सहित है ।

५७४६ प्रति सं० १३ । पत्रस० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल स० १८०९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५७४७. प्रति सं० १४ । पत्रस० २३ । आ० ११× ४½ इञ्च । ले० काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—साहपुरा के शातिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५७४८. प्रति स० १५ । पत्रस० २ से १९ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १७१७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

५७४६. वैद्यजीवन टीका—हरिनाथ। पत्र सं० ४४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १२३६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७५०. प्रतिसं० २। पत्रसं० ३७। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६५५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७५१ प्रति सं० ३। पत्रसं० ४१। आ० ११ × ५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ४००। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७५२. प्रति सं० ४। पत्रसं० १६। ले०काल सं० १८३१। पूर्ण। वेष्टन सं० ४१० **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७५३. प्रति सं० ५। पत्रसं० ३१। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन सं०३३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

५७५४. प्रतिसं० ६। पत्रसं० ३१। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल ×। वेष्टनसं० ३४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

५७५५. वैद्यजीवन टीका—रुद्रभट्ट। पत्रसं० ४५। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र०काल ×। ले० काल० सं० १८८५ ज्येष्ठ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टनसं० ११६३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७५६. प्रतिसं० २। पत्र सं० ४६। ले०काल सं० १८८५ प्रथम आषाढ बुदी ऽऽ। पूर्ण। वेष्टन सं० ११६७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प० देवकरण ने किशनगढ मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

५७५७ वैद्यक प्रश्न संग्रह— ×। पत्र सं० १०। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत विषय—आयुर्वेद। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १०६३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

५७५८. वैद्य मनोत्सव—केशवदास। पत्र सं० ३४-४७। आ० ८½×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३६६-१४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

५७५६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। आ० १३×५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। **वेष्टनसं०** ३३-१३६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)।

५७६०. वैद्य मनोत्सव—नयनसुख। पत्र सं० १५। आ० ६¾×४¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। र०काल सं० १६४६ आषाढ सुदी २। ले० काल सं० १६०० भादवा सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १०७७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७६१ प्रति सं० २। पत्रसं० ११। आ० १०½×५¾ इञ्च। ले०काल सं० १८६१। पूर्ण। वेष्टन सं० १०२६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५७६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ । आ० ६×६ इञ्च । **ले० काल सं० १८१२** आषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७६३. प्रति सं० ४ । पत्रस० १३० । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—गुटका साइज मे है ।

५७६४. प्रति स० ५ । पत्रसं० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । ले० काल स० १८६७ माह बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ४७३ । **प्राप्ति स्थान**--भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७६५. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३७ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८५ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पं० क्षेमकरण ने किशनगढ मे प्रतिलिपि की थी ।

५७६६. प्रति सं० ७ । पत्रस० १७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८५१ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष - लिखी कुस्याली रामपुरा मध्ये पडित भु गग्सीदास ।

५७६७. प्रति स० ८ । पत्र स० १६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×६ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी) ।

५७६८. वैद्यरत्न भाषा— गोस्वामी जनार्दन भट्ट । पत्रस० ३० । आ० ५$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** २४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—लिखित साधु जैकृष्णमहतजी श्री प्रयीदासजी भाडारेज का शिष्य किशनदास ने लिखी हाडोती शेरगढ मध्ये ।

५७६९. वैद्यरत्न भाषा— × । पत्र स० ४७ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७७०. वैद्यवल्लभ— × । पत्रस० २६५ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

५७७१. प्रति स० २ । पत्र स० २५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

५७७२. वैद्य वल्लभ—हस्तिरुचि । पत्रस० ५६ । आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल स० १७२६ । ले०काल स० १६११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष— अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति मुरादिसाहि गुटिका स्तमनोपरि—

श्रीमत्तपागणाभोजभासनैक नभोमणि ।
प्राज्ञोदयरूचिनामा वभूव विदुषाग्रणी ॥
तस्यानेक महाशिष्या हितादि रूचयो वरा ।
जगन्मान्यारूपाध्याय पदस्यधारकादमुवन ।
आर्या तेषा शिपुना हस्तिरूचिना सद्वैद्य वल्भोग्र थ. ।
रस ६ नयन २ मुनिन्दु १ वर्षे स० १७२६ काराय विहितोय ॥

इति श्रीमत्तपागच्छे महोपाध्याय हितरूचि तत् शिष्य हस्तिरूचि कवि विरचिते वैद्यवल्लभे शेषयोग निरूपणो नामा अष्टमोऽध्याय. ।

५७७३. वैद्यवल्लभ— × । पत्र स० ३३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×३$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

५७७४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६५० । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५७७५. वैद्यवल्लभ टीका—× । पत्र स० ३६ । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—वैद्यक । र०काल × । ले०काल स० १६०६ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

५७७६. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७७७. वैद्यविनोद— × । पत्रस० ६६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८८६ ज्येष्ठ शु. १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लिखित प० देवकरण हरिदुर्ग (किशनगढ) मध्ये ।

५७७८. वगसेन सूत्र—वगसेन । पत्र स० ४७५ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १७६६ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—आदिभाग एव अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

प्रारभ—

नत्वा शिव प्रथमतः प्रणिपत्य चडी
वाग्देवता तदनुता पद गुरुश्च
सग्रह्यते किमपि यत्सुजनास्तदत्र
चेनो विधात्तु सुचित्तु मदनुग्रहेण ॥१॥

पुष्पिका—

इति श्री अगसेन ग्रंथिते चिकित्सा महार्णवे सकल वैद्यक शिरोमणि वगसेन ग्रंथ सम्पूर्ण ।

५७७६. शार्ङ्गधर— × । पत्रस० १० । आ० १० × ४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हरिदुर्ग (किशनगढ) के लुहाड्यो के मन्दिर में प० देवकरण ने लिखा था ।

५७८० शार्ङ्गधर दीपिका—आढमल्ल । पत्रस० ६४ । आ० १२½ × ८ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय— आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १६२१ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १२३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५७८१. शर्ङ्गधर पद्धति—शार्ङ्गधर । पत्रस० १५१ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५७८२. शार्ङ्गधर सहिता—शार्ङ्गधर । पत्र स० ३१ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७८३ प्रतिसं० २ । पत्र स० १३ । आ० ६ × ४ इञ्च । **ले० काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १३०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७८४· प्रतिसं० ३ । पत्र स० १२५ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५७८५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १७० । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल स० १८२७ आषाढ बुदी १३ । वेष्टन स० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५७८६. प्रति स० ५ । पत्रस० ५७ । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हुण्डावालो का डीग ।

५७८७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४२ मे ६६ । आ० १०¾ × ४¾ इञ्च । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

५७८८. श्वासभैरवरस— × । पत्रस० २-१५ । भाषा—स स्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर बसवा ।

५७८६. सन्निपातकलिका-- × । पत्रस० १७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १८६३ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७९०. सन्निपातकलिका— × । **पत्रसं०** २३ । आ० ८ × ३½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—१६ व २० वा पत्र नही है।

५७६१. सन्निपातकलिका — × । पत्रसं० ७ । ग्रा० १०×४$\frac{3}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

५७६२. संतान होने का विचार— × । पत्र स० ७ । ग्रा० ८×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय-ग्रायर्वेद । र० काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २१६-८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

५७६३. स्त्री द्रावरण विधि— × । पत्र स० ७ । ग्रा० ७×४$\frac{3}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत। विषय-ग्रायुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ८१७ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५७६४. स्वरोदय—मोहनदास कायस्थ । पत्रस० १२ । ग्रा० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय —ग्रायुर्वेद । र० काल स० १६८७ मगसिर सुदी ७ । ले० काल × । वेष्टनस० ६१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—इसमें स्वर के साथ नाडी की परीक्षा का वर्णन है—कवि परिचय दोहा—

कथित मोहनदास कवि काइथ कुल ग्रहिठान ।
श्री गर्ग के कुल ढिग कनोजे के ग्रस्थान ।
नैमखार के निकट ही कुरस्थ गाव विख्यात ।
तहा हमारो वासु नि श्री जादो मम तात ।
सवत् सोरह सै रच्यौ ग्रपरि ग्रसी सात,
विक्रमते बीते वस मारग सुदि तिथि सात ॥

इति श्री पवन विजय स्वरोदये ग्र थ मोहनदास कायथ ग्रहिठानै विरचिते भाषा ग्र थ निवृत्ति प्रवृत्ति मार्ग खड ब्रह्माड ज्ञान तथा शुभाशुभ नाम दक्षिण स्वर तन भय विचार काल साधन स पूर्ण ।

५७६५. हिकमत प्रकास—महादेव । पत्रस० ५६१ । भाषा संस्कृत । विषय-वैद्यक । र०काल × । ले०काल स० १८३१ । पूर्ण वेष्टनस० ७६६ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर

विषय--अलंकार एवं छन्द शास्त्र

५७९६. अलंकार चंद्रिका—अप्पयदीक्षित । पत्र सं० ७६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अलकार । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

५७९७. कवि कल्पद्रुम—कवीन्द्राचार्य । पत्रस० ६ । आ० १०½ × ४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अलकार । र०काल × । ले०काल × । पर्ण । वेष्टनस० २७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५७९८. कुवलयानन्द—अप्पयदीक्षित । पत्र स० ७७ । आ० १०½ × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-रस सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल स० १८५४ वैशाख बुदी ६ । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—लश्कर के इसी मन्दिर मे प० केशरीसिंह ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

५७९९. प्रतिसं० २ । पत्र स० १० । आ० ६×४½ । ले० काल × । वेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—कारिका मात्र है ।

५८००. प्रति स० ३ । पत्रस० ५३ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—ग्रंथ का नाम अलकार चन्द्रिका भी है ।

५८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । आ० ११ ×५ । ले० काल × । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५८०२. प्रति सं० ५ । पत्र स० १४ । आ० ६¾ × ५¾ । ले० काल × । वेष्टन सं० २०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५८०३. प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । आ० ६½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८२२ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५८०४. छंदकोश टीका—चंद्रकीर्त्ति । पत्र सं० १७ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-छद शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५८०५. छंदरत्नावलि—हरिरामदास निरंजनी । पत्रस० १७ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-छद शास्त्र । र०काल स० १७९५ । ले० काल स० १९०६ सावण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—ग्रंथ तथा ग्रंथकार का वर्णन निम्न प्रकार है ।

ग्र थ छदरत्नावली सारथ याको नाम ।
भूषन भरतीते भरयो कहै दास हरिराम ।।१०।।
५ ६ ७ १
सवतसर नव मुनि शशि नभ नवमी गुरूमान ।
डीडवान दृढ़ को पतहि ग्र थ जन्म थल जानि ।।

५८०६. प्रतिसं० २ । पत्र स० २४ । आ० ८ × ५३/४ इञ्च । ले० काल स० १६३५ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८०७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २-२५ । आ० ६ × ६ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर वयाना ।

विशेष—५-१०५ पद्य तक है ।

५८०८. छदवृत्तरत्नाकर टीका-पं० सल्हण । पत्र स० ३६ । भाषा-सस्कृत । विषय-छद शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १५६५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७६, ६०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

५८०९. अंतिम—इति पडित श्री सुल्हण विरचितायां छदोवृत्तौ षट् प्रत्याध्याय षष्ठ समाप्त. ।।

सवत् १५६५ वर्षे भाद्रपद मासे कृष्णपक्षे १ प्रतिपदा गुरौ श्री मूलसघे ।

५८१०. छंदानुशासन स्वोपज्ञ वृत्ति – हेमचन्द्राचार्य । पत्रस० ६० । आ० १४ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-छद शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १५६० । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३२ ५६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याचार्य श्री हेमचन्द्र विरचिताया स्वोपज्ञ छदानुशासनवृत्तौ प्रस्तारादि व्यावर्णो नाम षष्ठोध्याय समाप्त ।

प्रशस्ति—सवत् १५६० वर्षे कार्तिकमासे महमागाकेन पुस्तक लिखित । महात्मा श्री गुणनदि पठनार्थं ।

५८११. छांदसीय सूत्र—भट्टकेदार । पत्रस० ६ । आ० ११ × ४१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-छद शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५८१२ नदीय छद—नंदिताढ्य । पत्रस० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-छद शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १५३८ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—६४ गाथाएं है ।

५८१३. पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्रस० ११ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-छद शास्त्र । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५८१४. पिंगल सारोद्धार— × । पत्रस० २० । आ० ८३/४ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र०काल × ले०काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७३-१३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—जयदेव ने प्रतिलिपि की थी ।

५८१५. पिंगलरूपदीप भाषा— × । पत्रस० ६ । आ० ६३/४ × ४१/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-छद शास्त्र । र०काल सं० १७७३ भादवा सुदी २ । ले०काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—सोरठा—द्विज पोखर तेन्य तिस मे गोत कटारिया ।
सुनि प्राकृत सौ वैन तैसी ही भाषा रची ।।५४।।

दोहा—
बावन वरनी चाल सबै जैसी मोमैं बुद्ध ।
भूलि-भेद जाको कह्यो करो कवीश्वर सुद्धि ।।५५।।
सवत् सतरं मै वरष उर तिहत्तरै पाय ।
भादौ सुदि द्वितीय गुरू भयो ग्र थ सुखदाय ।।५६।।

इति श्री रूपदीप भाषा ग्र थ सपूर्ण । सवत् १८८६ का चैत्र सुदी ७ मगलवार लिखित राजाराम ।

५८१६. प्राकृत छंद — × । पत्रस० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा —प्राकृत । विषय—छद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८१७. प्राकृत छन्दकोश— × । पत्र स० ७ । आ० १२ × ४३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—छन्द । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनस० ४५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

५८१८. प्राकृत लक्षरण—चड कवि । पत्रस० २० । आ० १०१/२ × ४१/२ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—छन्द शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८१९. बडा पिंगल— × । पत्र स० ३७ । आ० ६३/४ × ४१/२ इच । भाषा सस्कृत । विषय-छन्द । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७२-१६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

५८२०. भाषा भूषरण—जसवतसिंह । पत्र स० १५ । आ० ६ × ४१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अलकार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—
लक्षिन तिय अरु पुरुषके हाव भाव रस धाम ।
अलंकार सजोग तै भाषा भूषरण नाम ।।
भाषा भूषरण ग्र थ को जे देखे चित लाइ ।
विविध अरथ सहित रस सभुर्भ सब बनाइ ।।३७।.

इति श्री महाराजाधिराज धनवधराधीश जसवतस्यध विरचिते भाषा भूषरण सपूर्ण ।

५८२१. रसमंजरी—भानु । पत्रसं० २१। आ० १० × ३½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। **विषय**—रस अलंकार। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २६३/२२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५८२२. रूपदीपक पिंगल— × । पत्रसं० १०। आ० ६¾×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। **विषय**—छन्द शास्त्र। र०काल सं० १७७३ भादवा सुदी २। ले०काल सं० १६०२ सावण बुदी ६। पूर्ण। **वेष्टन सं०** १०१५। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मंदिर अजमेर। इसका दूसरा नाम पिंगल रूप दीप भाषा भी है।

५८२३. वाग्भट्टालंकार वाग्भट्ट । पत्र सं० २१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अलंकार। र०काल ×। ले०काल सं० १६०४ वैशाख सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० १२८७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—इसकी एक प्रति और है। वेष्टन सं० ४८१ है।

५८२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ११२४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५८२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४। आ० १० × ५¾ इंच। ले० काल सं० १७६७ चैत सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० २०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष पंडित खुशालचन्द ने तक्षकपुर में लिखवाया था।

५८२६. प्रति सं० ४ । पत्रसं० २८। आ० १० × ४½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

५८२७. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ३१। आ० ६×४½ इञ्च। ले० काल सं० १८२६। पूर्ण। वेष्टन सं० १८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

विशेष—लिखापित पंडित जिनदासेन स्वपठनार्थं।

५८२८. प्रति सं० ६ । पत्रसं० १६। आ० १२×४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३२६/५५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

५८२९ प्रति सं० ७ । पत्रसं० १०। ले०काल सं० १५६२ आषाढ बुदी १३। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ३२५/५५८। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५८३०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७। आ० १०×४½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८५/७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

५८३१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १७। आ० ११¾×५¾ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

५८३२. प्रति सं० १० । पत्रसं० ११। आ० ११¾×५¾ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

५८३३. प्रति सं० ११ । पत्रसं० १८ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८१६ आषाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५८३४. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ८६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

५८३५. प्रति सं० १३ । पत्रस० २३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५८३६. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० २३ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

५८३७.वाग्भट्टालकार टीका—जिनवर्द्धन सूरि । पत्रस० ४ । आ० ११$\frac{1}{2}$× ५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय अलकार । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ११५८** । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८३८. वाग्भट्टालंकार टीका—वर्द्धमान सूरि । पत्रस० ३० । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५८३९. वाग्भट्टालंकार टाका—वादिराज (पेमराज सुत) । पत्र सं० ५६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय अलकार । र०काल स० १७२६ । ले०काल सं. १८४२ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स ४'१३ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—टीका का नाम कविचद्रका भी दिया है ।

५८४०. वाग्भट्टालंकार टीका—× । पत्र सं ३ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इ च । भाषा-स स्कृत । विषय-अलकार । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि. जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४१. वाग्भट्टालंकार टीका—× । पत्र स. २७ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय—अलकार । र०काल × । ले० काल स. १७५१ । पूर्ण । वेष्टन सं. ३२२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है ।

स. १७५१ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ दशम्यां चन्द्रवासरे श्री फतेहपुरमध्ये लि । ले. पाठकयो शुभं । प्रति सुन्दर है ।

५८४२. वाग्भट्टालंकार वृत्ति—× । पत्र सं० ५७ । आ. १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—अलकार शास्त्र । र०काल× । ले.काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं. ५१८ । **प्राप्ति स्थान**—म. दि. जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४३. वाग्भट्टालंकार वृत्ति—ज्ञानप्रमोद वाचकगणि । पत्र स. ५७ । आ. १२×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलकार । र.काल सं. १६८१ । ले,काल × । पूर्ण । १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

५८४४. वृतचन्द्रिका—कृष्णकवि । पत्र सं. २-४४ । आ० ६×६ इच । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-छद शास्त्र । र.काल × । ले. काल स. १८१६ । अपूर्ण । वेष्टन स ३५३ । **प्राप्ति स्थान**-भ. दि. जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री कृष्णकवि कलानिधि कृत वृतचन्द्रिकाया मात्रावर्ण वृत्त निरूपण नाम द्वितीय प्रकरण ।

मात्रा छद एव वर्ण छद अलग २ दिये है ।

मात्रा छद २१६ एव वर्ण छद ३८० है ।

५८४५. वृत्त रत्नाकार— × । पत्र सं. ९ । आ. ६½×४½ इच । भाषा-प्राकृत । विषय—छद शास्त्र । र०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं. १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

५८४६. वृत्त रत्नाकार—भट्ट केदार । पत्र स ० ८ । आ० ६½×४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—छद शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८१६ माह सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १२४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ. दि. जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४७. प्रति सं० २ । पत्रस० स० ८ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ. दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४८ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ११ । आ० १०½×५ । ले०काल स० १७७६ सावण बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६० । **प्राप्ति स्थान** – भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४९. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ६ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८५०. प्रति सं० ५ । पत्रस० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६४-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५८५१. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १८ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६६-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५८५२. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २४ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ४५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५८५३ प्रतिसं० ८ । पत्रस० १० । आ० ११¾ × ५¾ इञ्च । ले० काल स० १८३८ ज्येष्ठ बुदी ४ । वेष्टन स० ४५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर के आदिनाथ चैत्यालय मे विद्वान् कृष्णदास के शिष्य जिनदास ने पठनार्थं लिखा गया था ।

५८५४. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

५८५५. प्रतिसं० १० । पत्रस० १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७२, ६०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—छह प्रतियां और हैं जिनके वेष्टन स० ७३/६१० से ७८/६१६ हैं ।

५८५६. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ५७ । आ० ११×५ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५८५७. प्रति सं० १२ । पत्र स० १४ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल स० १८२६ मगसिर सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५८५८. प्रतिसं०१३ । पत्र स० १४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १६४० माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६/१६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—हुम्बड जातीय बाई जी श्री बाई ने भट्टारक वादिचन्द्र के शिष्य ब्रह्म श्री कीर्त्तिसागर को प्रदान किया था ।

५८५६. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १६ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० १७२० । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५८६०. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ३७ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

५८६१. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५८६२. वृत्तरत्नाकर—कालिदास । पत्र स० ८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । र० काल × । ले०काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—भानपुर मे रिषभदास ने प्रतिलिपि की थी ।

५८६३. वृत्तरत्नाकर टीका—पं० सोमचन्द्र । पत्र स० १४ । **भाषा**—संस्कृत । विषय—छंद शास्त्र । र०काल स० १३२५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—रचनाकाल निम्न प्रकार है ।

श्री विक्रमनृपकाल नदकर कृपीटयोनि कृपीटयोनि शशि सख्ये (स १३२५) समज निन्जोत्सवेदित वृत्तिरियं मुग्ध बोधा करी ।

५८६४. वृत्तरत्नाकर टीका—जनार्दन विबुध । पत्रस० २८ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय – छद शास्त्र । । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ११६** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प्रशस्ति इति श्री जनार्दन विबुध विरचिताया भावार्थ दीपिकाया वृत्तरत्नाकर टीकाया प्रस्तारादिनिरूपण नामा षष्टो अध्याय ।

५८६५. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३३ । आ० ६¾×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५८६६. वृत्तरत्नाकर वृत्ति—समयसुंदर । पत्र स० ४२ । आ० १०¾×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-छद शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । । पूर्ण । वे० स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

अन्तिम पुष्पिका—इति वृत्तरत्नाकरे केदार शैव विरचिते छंदसि.समयसुन्दरोपाध्याय विरचिते सुगम वृत्ती षष्ठोऽध्याय ॥७५०॥

५८६७. प्रति सं० २। पत्र स० ३० । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

५८६८. वृत्तरत्नाकर वृत्ति—हरिभास्कर। पत्रसं० ३७। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८४७ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० २९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५८६९. शब्दालंकार दीपक—पौंडरीक रामेश्वर। पत्र स० १८ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा – सस्कृत । विषय—अलकार । र०काल × । ले० काल स० १८२७ चैत्र सुदी १५ । वेष्टन स० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५८७०. श्रुतबोध—कालिदास। पत्र स० ६ । आ० ११×४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—छद शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८९८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५८७१. प्रति सं० २। पत्रस० ५ । आ० ९×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२९५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८७२. प्रति सं० ३। पत्र स० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८७३. प्रति सं० ४। पत्र स० ४ । ले०काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५८७४. प्रति सं० ५। पत्र स० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७०-१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूगरपुर ।

५८७५. प्रति सं० ६। पत्र स० ७ । आ० ९ × ५ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६७-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूगरपुर ।

५८७६. प्रति सं० ७। पत्रस० ६ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-छद । र०काल × । ले०काल स० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४८-९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष—सागपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५८७७. प्रति सं० ८। पत्रस० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$× ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५८७८. प्रति सं० ९। पत्रस० ६ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—इन्दरगढ में प्रतिलिपि हुई थी ।

५८७९. प्रतिसं० १० । पत्रसं० ४ । आ० १०× ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—भ० देवेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८०. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ३ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५८८१. प्रतिसं० १२ । पत्र सं० ५ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८८२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १८८२ आषाढ मासे शुक्ल पक्षे तृतीयायां गुरुवासरे सवाई जयपुर मध्ये हरचन्द लिपिकृतं वाचकानां ।।

५८८२. प्रतिसं० १३ । पत्र सं० ५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल सं० १८७७ । वेष्टन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५८८३. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० ६ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

५८८४. प्रति सं १५। पत्रसं० १५ । आ० ९×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

५८८५. प्रतिस० १६ । पत्रसं० ४ । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

५८८६. प्रति स० १७ । पत्र सं० ४ । आ० ९×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैणवा ।

५८८७. प्रतिसं० १८ । पत्र सं० ४ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१/१६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर पञ्चायती दूनी (टोंक)

५८८८. प्रतिसं० १९ । पत्रसं० ३ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५८८९. श्रुतबोध टीका—मनोहर शर्मा । पत्रसं० १४ । आ० ७½ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—छन्द शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८९०. श्रुतबोध टीका—वरशर्म्म । पत्रसं० १२ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १९३३ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

५८९१. श्रुतबोध टीका—हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० २० । आ० ११½×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—छन्द शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १९०१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

५८६२. शृंगारदीपिका—कोमट भूपाल। पत्र सं० ६। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—रस अलकार। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

५८६३. संस्कृत मंजरी— ×। पत्र स० ६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—छन्द। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २४५-६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

विषय--नाटक एवं संगीत

५८६४. इन्द्रिय नाटक— × । पत्रस० १६ । आ० १२×७½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—नाटक । र०काल स० १६५५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—नाटक की रचना ग्रंथकार ने अपने शिष्य तिलोका पाटनी, राजबल्लभ नेमीचन्द फूलचन्द पटवारी खेमराज के पुत्र आदि की प्रेरणा से आषाढ मास की अष्टाह्निका महोत्सव के उपलक्ष मे स० १६५५ मे केकडी मे की थी । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है ।

आदि भाग—

परम पुरुष प्रमेस जिन सारद श्री वर पाय ।
यथा शक्ति तुम ध्यानतैं नाटक कहू बनाय ।।

× × × × ×

इक दिन मनमदिर विषै सुविधि धारि उपयोग ।
प्रकट होय देखहि विविध इन्द्रीन को अनुयोग ।।

अन्तिम भाग—

जिय परणत त्रिय भेद बताई ।
शुभ अर अशुभ बुद्ध यू गाई ।
नाटक अशुभ शुभई दोय जानू ।
शुद्ध कथन अनुभव हियमानू ।।
सो नाटक पूरण रस थाना,
पडित जन उपयोग लगाना ।
उतपत नाटक की विव जानू ।
विद्या शिष्य के प्रेम लखानू ।
अष्टाह्निक उत्सव जिन राजा ।
माढ मास का हुआ समाजा ।
शुक्ल तिथि ग्यारस मुज पासा ।
आये शिष्य नाटक करि आसा ।।
गोत पाटणी नाम तिलोका,
राजमल्ल नेमीचन्द कोका ।
फूलचन्दजी है पटवारी,
कहे सब नाटक क्यो कहो सुखकारी ।।
खेमराज सुत बैन उचारी,
इन्द्री नाटक है उपकारी ।
धर्म हेतु यह काज विचारयो,
नाना अर्थ लेय मन धार्यो ।।

लाज त्याग उद्यत इस काजा,
लह्य भेद वेद न असमाजा ।
पारख क्षमा करो बुधि कोगी,
हेर अर्थ कू ल्याय घटोरी ।।
नीर बूंद मधि सीप समाई,
केम मुक्त नही हो प्रभुताई ।
कर उपकार सुधारहु वीरा,
रति एह नहि तुम धीरा ।।७।।
कवि नाम अरु गाम बताया,
अर्द्ध दोय चौपई पर गाया ।
मगल नृपति प्रजा सब साजा,
ए पूरण भयो समाजा ।।८।।
नादो चिरजीवो साधर्मी,
अन्त समाधी मिलो सतकर्मी ।
धर्मवासना सब सुखदायी,
रहो अखड यू होय बढाई ।।
उगणीसो पचत्रन विषै नाटक भयो प्रमान ।
गाव केकडी धन्य जहा रहे सदा मतिमान ।।

५८६५. ज्ञानसूर्योदय नाटक- वादिचन्द्रसूरि । पत्रस० ३७ । आ० ८½ X ५½ । भाषा—सस्कृत । विषय—नाटक । र०काल स० १६४८ माघ सुदी ८ । ले०काल स० १८०० । पूर्ण । वेष्टन स० १२६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

५८६६. प्रति सं० २ । पत्रस० ४३ । आ० ११ X ५½ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १२५६ । **प्राप्ति स्थान**- भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५८६७ प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३१ । आ० १२ X ५½ इञ्च । ले०काल स० १८२८ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

५८६८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ३६ । आ० १२ X ५½ इञ्च । ले०काल स० १७६२ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५८६९. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३३ । आ० ११ X ५ इञ्च । ले० काल स० १७३० आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोंक)

विशेष—ब्यावर नगर मे शातिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

५९००. प्रति स० ६ । पत्र स० ६६ । आ० ६¾ X ४½ इञ्च । ले० काल स० १८७४ माघ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—गुमानीराम के सुपुत्र जीवनराम ने लिखकर करौली के मन्दिर मे चढाया था ।

५६०१. ज्ञानसूर्योदय नाटक भाषा—भागचन्द । पत्रसं० ६० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—नाटक । र० काल स० १६०७ मादवा सुदी ७ । ले० काल स० १६२६ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५६०२ प्रति सं० २ । पत्रस० ६१ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५६०३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५१ । ले०काल सं० १६२२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

५६०४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १०४ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल स० १९१५ मादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

५६०५. प्रति सं० ५ । पत्रस० ५५ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल १६२८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

५६०६. प्रति सं० ६ । पत्रस० ८३ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १६३७ जेष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—पालमग्राम मे श्रावक अमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । लाला रिखबदास के पुत्र रामचन्द्र ने लिखवावा था ।

५६०७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ८४ । आ० १० × ६ इच । **ले०काल** स० १६४१ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी बूदी ।

५६०८. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ५४ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ८ इञ्च । ले० काल सं० १६३६ वैशाख बुदी ५ । वेष्टन स० २६ १०८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५६०९. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ७२ । आ० १३$\frac{1}{2}$ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

५६१०. प्रतिस० १० । पत्र स० ५६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

५६११. प्रति स० ११ । पत्रस० ६३ ले०काल स० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

५६१२. ज्ञानसूर्योदय नाटक - पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ७६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । र०काल स० १६१७ वैशाख बुदी ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५६१३. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५० । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५६१४. प्रति स० ३ । पत्र स० १०५ । आ० ६ × ६ इञ्च । ले० काल स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

५६१५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ४० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले०काल स १६३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

५६१६ प्रति सं० ५ । पत्रस० ४७ । आ० १२×५३ इञ्च । ले०काल स० १६३६ (ता० २-४-१८८२) । पूर्ण । वेष्टनस०११४-८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—राजा सरदारसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५६१६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३५ । आ० ११×८ इञ्च । ले० काल स० १६३६ फागुण बुदी ७ । वेष्टन स० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

५६१८ ज्ञान सूर्योदय नाटक— × । पत्रस० ६७ । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २८/१७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५६१६ प्रतिसं० २ । पत्र स० ५७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०/१६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५६२०. प्रबोध चंद्रोदय नाटक—कृष्णमिश्र । पत्रस० ७० । आ० १३३ ×५३ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विशेष**—नाटक । र०काल × । ले०काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—दीक्षित रामदास कृत सस्कृत टीका सहित है । बीच मे मूल तथा ऊपर नीचे टीका है ।

स० १७६५ वर्षे लिपिकृत वधनापुर मध्ये अविराम पठनार्थ प्रहोत (प्रोहित) उदैराम ।

५६२१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६८ । आ० ११×५३ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—इति श्री मदभट्ट विनायकात्मज दीक्षित रामदास विरचिते प्रकाशाख्ये प्रबोध चन्द्रोदय नाटक व्याख्याने जीवन्मुक्ति निरूपण नाम षष्टाक ।

५६२२. मदनपराजय—जिनदेवसूरि । पत्रस० ५२ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा सस्कृत । **विशेष**—नाटक । र०काल × । ले० काल स १६२८ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० २५० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६२३. प्रति सं० २ । पत्रस० ७४ । आ० ११×५ इच । ले०काल स० १८४१ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

५६२४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४६ । आ० ११×४३ इञ्च । ले० काल स० १६०७ फाल्गुन बुदी ५ सोमवार । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५६२५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ३५ । आ० ११ × ४३ इञ्च । ले० काल स० १८०० ज्येष्ठ सुदी १२ । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—लवाण नगर के चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प० भ० महेन्द्र कीर्ति ने प्रतिलिपि कराकर स्वय ने सशोधन किया था ।

५६२६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ३७ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १६२६ मगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६२६ वर्षे मार्गशिर वदि ४रवौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मनन्दि तत्पट्टे भट्टारक सकलकीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे भट्टारक विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक सुमतिकीर्तिदेवा तद्गुरु भ्राता आचार्य श्री सकलभूषण गुरूपदेशात् शिष्य ब्र० हरखा पठनार्थ भीलोडा वास्तव्य हुंबडज्ञातीय दो. मूला भार्या बा पूतिलि तयो सुत धर्मभारधुरधर जिनपूजापुरदर आहारभयभैषज्यशास्त्रदानवितरणैकतत्पर जिनशासनशृंगार हार दो. सकर भार्या सरूपदे एतेषा मध्ये दो. सकरस्तेन स्वज्ञाना वरणी कर्म क्षयार्थ श्री मदन पराजय नाम शास्त्रं लिखाप्य दत्तं ।।

ब्रा. शिवदास तत् शिष्य पडित वीरभाग पठनार्थ ।

५६२७ प्रति सं० ६ । पत्रसं० ३२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** सं० १६६० वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

प्रशस्ति—संवत् १६६० वर्षे मिती वैशाख मासे शुक्ल पक्षे नवम्या तिथौ रविवासरे श्री मूलसंघे नद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यन्वये मंडलाचार्य श्री नेमिचन्द्र जी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यश कीर्ति तच्छिष्य ब्रह्म गोपालदास स्तेनलिपिकृतमिद मदनपराजयाह्वय स्वात्मपठनार्थं कृसनगढ मध्ये ।

५६२८. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ४१ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । **ले०काल** सं० १८४२ चैत बुदि ३ ।पूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५६२९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १३७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५६३०. प्रतिसं० ९ । पत्र सं० ८९ । आ० ९×४$\frac{1}{2}$ इंच । ले० **काल** × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

५६३१. प्रतिसं० १० । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ५५-३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५६३२. मिथ्यात्व खंडन नाटक बखतराम साह । पत्र सं० १८३ । भाषा हिन्दी । विषय-नाटक । र०काल सं० १८२१ पोष सुदी ५ । ले०काल सं० **१९१२ आसोज सुदी १२** । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५६३३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १०६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल सं० १८५७ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६–६७ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—तक्षिकपुर में प० शिवजीराम ने सहजराम व्यास से लिखवाया था।

५६३४. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १८ । आ० ९ × ६ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

५६३५. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १६ से ११६ । आ० ६$\frac{1}{2}$× ६ **इञ्च । ले०** काल सं० १८४५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल **टोंक ।**

५६३६. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० १०१ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—दूनी के जैन मन्दिर मे सं० १९३६ मे हजारीलाल ने चढाया था।

५६३७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६१ । ग्रा० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल म० १८७६ प्रथम ग्रासोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—महात्मा गुमानीराम देवग्राम वासी ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

५६३८. प्रतिसं० ७। पत्र स० ३६ । ग्रा० १३×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

५६३६. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ५८ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २७० । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५६४०. प्रतिसं० ६ ।पत्रस० ४५ । ग्रा० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेप्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५६४१. प्रतिसं० १० । पत्रस० १२७ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १४६ ६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५६४२ प्रतिसं० ११ । पत्रस० ६३ । ग्रा० १२$\frac{1}{2}$× ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन सं० ४६-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५६४३. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ११५ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८६१ ग्रापाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—शुद्ध एव उत्तम प्रति है ।

५६४४. १३ । पत्र स० २८ । ग्रा० १२×८ इञ्च । ले०काल सं० १६५७ जेठ सुदी १५ । ग्रपूर्ण। वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

५६४५. मिथ्यात्व खंडन नाटक—× । पत्रस० २५ । ग्रा० १२ × ८ इञ्च । भापा-हिन्दी गद्य। विपय—नाटक । र०काल × । ले० काल स० १६५१ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टनस० २०-७८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक) ।

५६४६. हनुमन्नाटक—मिश्र मोहनदास । पत्र स० २७ । ग्रा० १३×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भापा-संस्कृत । विपय-नाटक । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५६४७. तालस्वरज्ञान— × । पत्र स० ६ । ग्रा० ११ ×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सगीत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

ग्रंतिम प्रशस्ति—इति श्री भावभट्टसगीतरामानुष्ठ्यचन्द्रवाप्ति विरचिते व्रतमुर्वष्यन्निति शत-पघस्य प्रथम श्रुति प्रभाव । विशति पद ताला: ।

५६४८. रागमाला— × । पत्रस० ५ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-राग रागनियों के नाम । र०काल— × । ले० काल × । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५६४६. रागरागिनी (सचित्र) — × । पत्र स० ३० । आ० १० × ७½ इञ्च । विषय-संगीत । पूर्ण । वेष्टन स० ३-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—३० राग रागनियों के चित्र हैं । चित्र सुन्दर हैं ।

५६५०. रागमाला— × । पत्रस० ५ । भाषा-हिन्दी । विषय-संगीत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

५६५१. सभाविनोद (रागमाला)—गंगाराम । पत्र स० २४ । आ० ८¾ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-संगीत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—आदिभाग—

गावत नाचत आपही डोरु मे सब अंग ।
नमो नाथ पैदा कहै सीस गग अरधग ।।१।।
दृष्टि न आवै अगम अति मनस्य की गम नाहि ।
विपट निकट सगही रहै बोलै घटघट माहि ।।

अंतिम—षट् राग प्रभाव कवित्त —

भैरव तै थानी विन त्रिरद किरत जात ।
माल कोश गाये गुनी अ गन जरातु है ।
हिडोर की आलापनै हिडोर आप भोटा लेत
दीपक गाये गुनी दीपक जरातु है ।
श्री मै इह गुन प्रकट बखानत है सु को ।
रूष हमो होत फिरि हुलसात है
गगाराम कहै मेघराग को प्रभाव
इह मेघ बरसातु है ।

इति श्री सभाविनोद रागमाला ग्र थ स पूर्ण ।

५६५२. संगीतशास्त्र— × । पत्र स० ६१-६५ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-संगीत । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६४/६१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५६५३ संगीतस्वरभेद— × । पत्र स० ४ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-संगीत । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६५/६१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

——:०:——

विषय -- लोक विज्ञान

५६५४. चन्द्रप्रज्ञप्ति— × । पत्रस० २६ । ग्रा० १३½ × ५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । **ले०काल** स० १५०३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७७/५३६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति पतले कागज पर है । एक पत्र पर २७ पंक्तिया है ।

ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति चन्दपण्णत्ती सूत्रं । ग्र थाग्र थ २०००॥

ग्र तिम— श्री गधारापुर्यां प्राग्वाट् ज्ञाति मुकुटमर्जानिष्ट ।

जोगाक: सघपति: समल्लमद्धर्मकर्ममति. ।।१।।

तस्यानुरक्त चित्तादयिताडारहीनगुणकलिता ।

तेनमोनाया मुविनयो लपामिध, समजाति समृद्ध: ।।

भ्रातृ नगराज गुणि ग्रामुक्ट गौरीप्रभृति बहुकुटु बयुत. ।

राणीजाति रया सृज्यानि पुण्यानुबधि जाते. ।।३।।

प्रथित तया बाण गगन गण भामन भाममाननानुमता ।

श्री जयचन्द्र गुरुणामुपदेशे नावगत तत्त्व ।।४।।

निजलक्ष्मी सुक्षेत्रे निक्षेप्तु मातुर्वर्द्धितोत्साह ।

लक्षानुमित ग्र थ विश्रोश लेखयान्नष: ।।५।।

लेखयतिस्य श्रीमच्चन्द्रप्रज्ञप्तमागसूत्रमिद ।

लोचन ख निधि मिताब्दे १५०३ विदुषा मततोययोगिस्तात् ।।६।।

क्रीडगम्तो राजहसावद्रदिकदल पुष्करे ।

यावत्तावदिद विद्वद्वाच्य नदतु पुस्तक ।।७।।

५६५५ जम्बूदीव पण्णत्ति— × । पत्र स० १३१ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५६५६. प्रतिसं० २ । पत्रस० १६६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५६५७. जम्बूद्वीप संघयरिण— **हरिभद्र सूरि** । पत्रस० ६ । ग्रा० १०×५ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—गणित । र० काल × । ले०काल स० १६०७ ग्रासोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८-१२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष— सस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

५६५८. तिलोय पण्णत्ति— **ग्राचार्य यतिवृषभ** । पत्रस० ३१६ । ग्रा० १२½×७½ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल स० १८१४ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—प० मेधावी कृत संस्कृत मे विस्तृत प्रशस्ति है। कामा में प्रतिलिपि हुई थी।

५९५९. प्रतिसं० २। पत्र सं० ३४६। आ० ११×५ इन्च। ले०काल स० १७९९ वैशाख बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १३४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दीवान जी कामा।

विशेष—अग्रवाल ज्ञातीय नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी। पत्र स० ३४० ३४६ तक मेधावीकृत संवत् १५१९ की विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है।

५९६०. प्रति सं० ३। पत्र स० २७। आ० ११×६½ इन्च। ले० काल सं० १७५०। पूर्ण। वेष्टन सं० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा।

५९६१. त्रिलोक दीपक—वामदेव। पत्र सं० ८६। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र०काल ×। ले० काल स० १७९५ सावन सुदी १। पूर्ण। **वेष्टनसं०** २८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—प्रति सचित्र है।

५९६२ प्रतिसं० २। पत्र स० ८२। आ० १२×७½ इन्च। ले० काल सं० १७३४ कार्तिक सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष—भ० रत्नकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी। प्रति सचित्र हैं।

५९६३. प्रतिसं० ३। पत्र स० २३ ७२। आ० १२ × ६ इन्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—सटिप्पणिया है।

५९६४ प्रतिसं० ४। पत्र स० १-३२। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

५९६५. प्रतिसं० ५। पत्रस० १०१। आ० १३×६ इच। **ले०काल** स० १५७२। पूर्ण। वेष्टन सं० १३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष--पत्र ४० पर एक चित्र भी है अभ्यन्तर परिषद् इन्द्र के रनिवास का चित्र है। वरुणकुमार सोमा, यम, आदि के भी चित्र हैं।

५९६६. त्रिलोक प्रज्ञप्ति टीका— ×। पत्रसं० २५। आ० ११×५ इंच। भाषा—प्राकृत संस्कृत। विषय लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। **वेष्टनसं०** १४९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति अच्छी है।

५९६७. त्रिलोक वर्णन—जिनसेनाचार्य। पत्र सं० १९-५९। भाषा—संस्कृत। विषय—लोक विज्ञान। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर।

विशेष—हरिवंश पुराण में से है।

५९६८. त्रिलोक वर्णन— ×। पत्रसं० १०। आ० ११×४½ इन्च। भाषा—प्राकृत। विषय—लोक वर्णन। र०काल ×। **ले०काल** सं० १५३० आषाढ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)।

५९६९. त्रिलोकसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्रस० ६६ । आ० ११ × ४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत । **विषय**—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति इस प्रकार है—सं० १६६१ वर्षे मूलसंघे भट्टारक श्री वादिभूषण गुरुपदेशात् तत् शिष्य ब्र० श्री वर्द्धमान पठनार्थं ।

५९७०. प्रति सं० २ । पत्रसं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४/१८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

५९७१. प्रति स० ३ । पत्रस० ७६ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल स० १६६७ पौष बुदी १० । वेष्टन स० २५१/६३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष – श्री गिरिपुर (डूगरपुर नगर) मे श्री आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५९७२. प्रति सं० ४ । पत्र स० २६ । आ० १० × ४½ इञ्च । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५९७३. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ३–१५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—१४ यन्त्रो के चित्र दिये हुए है ।

५९७४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १८ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १६८२ बैशाख सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर आदिनाथ (बू दी) ।

विशेष ब्रह्मचारी केशवराज ने ग्राम सालोडा में प्रतिलिपि की थी । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

५९७५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १५१८ काती सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष - प्रशस्ति—सवत् १५१८ वर्षे कार्तिक सुदी ३ मगलवारे देवसाह नयरे रावत भोजा मोकल राज्ये श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तस्य शिष्य महात्मा शुभचन्द्रदेव लिखापित श्री श्री नेमिनाथ चैत्यालये मध्ये । वणिक पुत्र माहराजेन वास्ते ।

५९७६. प्रतिसं० ८ पत्र स० १–२० । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ७४८ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५९७७. प्रतिसं० ९ । पत्रस० २७ । आ० १४ × ७ इञ्च । ले० काल स० १८३२ मगसिर बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा ।

विशेष—चन्दालाल बैद ने स्वय अपने हाथ से पढने को लिखा था ।

५९७८. प्रतिसं० १० । पत्र स० ६० । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । साह रोडु सभद्रा का बेटा मनस्या ने ज्ञान विमल की प्रति से उतारा था ।

५९७९. प्रतिसं० ११ । पत्र स० १०५ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७८६ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४/१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा)

५९८०. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ८४ । आ० १३×६३/४ इञ्च । लेo काल स० १७८६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८/२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

५९८१. प्रतिसं० १३ । पत्र सं० २८ । आ० १३×५ इञ्च । लेo काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—६३ शलाका के चित्र है ।

५९८२. प्रतिसं० १४ । पत्रस० २८ । आ० १०१/२×४१/२ इंच । लेo काल स० १५३० चैत बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—खण्डेलवाल ज्ञातीय पाटनी गोत्रोत्पन्न स० तोल्हा भार्या तोल्ही तथा उनके पुत्र खेतो पौत्र जिनदास टीला, तथा वोट्टा ने कर्मक्षय निमित्त प्रतिलिपि करवाई थी ।

५९८३. प्रतिसं० १५ । पत्र स० ५१ । आ० ५१/२×३१/२ इञ्च । लेo काल स० १५२७ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५९८४. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २६ । आ० १०१/२×४१/२ इच । लेoकाल × । पूर्ण । वेप्टन स० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५९८५. प्रतिसं० १७ । पत्र स० ७२ । आ० १२१/२×५ इच । लेoकाल स० १६०९ । अपूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति टीका सहित है किन्तु सब पत्र अस्त व्यस्त हो रहे है ।

५९८६ प्रतिसं० १८ । पत्र स० ८३ । आ० ११३/४×४१/२ इञ्च । लेo काल स० १५४४ । पूर्ण । वेष्टन स० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

५९८७. त्रैलोक्यसार संदृष्टि— × । पत्रस० फुटकर । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । लेo काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० २८४-८५/२०५-२०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५९८८. त्रिलोकसार— × । पत्र स० १७४ । आ० ११३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । लेo काल स० १६५६ पौष बुदी ४ । **पूर्ण** । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष— प्रशस्ति—

सवत् १६५६ पौष वदि चतुर्थी दिवसे वृहस्पतिवारे श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचद्र देवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री चन्द्रकीत्तिस्तदाम्नाये खडेलवालान्वये स बडा गोत्रे अबावती मध्ये राजा श्री मानसिघ प्रवर्त्तमाने साह धणराज तद्भार्ये प्रथम धणसिरि द्वितीया सुहागणि प्रथम भार्या······ ।

५९८९. प्रति स० २ । पत्रस० ९-८९ । आ० १११/२×५१/२ इञ्च । लेo काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

५९९०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २-३१ । आ० १०×५ इञ्च । लेoकाल स० १७५१ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

५९९१. प्रति सं० ४। पत्रस० १२३। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

५९९२. प्रति सं० ५। पत्रस० ९। आ० १०×५½ इञ्च। **ले०काल** ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

५९९३. त्रिलोकसार सटीक— ×। पत्र स० १०। आ० १२×८ इञ्च। भाषा—प्राकृत-संस्कृत। विषय—लोक विज्ञान। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

५९९४. त्रिलोकसार भाषा— ×। पत्र स० ३१। आ० ९×६ इञ्च। भाषा हिन्दी गद्य। विषय—भू विज्ञान। र०काल ×। ले०काल सं० १८१६ ज्येष्ठ सुदी ९। अपूर्ण। वेष्टन स० ७१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

विशेष—मालवा देश के सिरोज नगर मे लिखा गया था।

५९९५. प्रति सं० २। पत्रस० ३४-४३। आ० १२×६ इञ्च। **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

५९९६. प्रतिसं० ३। पत्रस० ९। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। **वेष्टनस०** २४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

५९९७. प्रति स० ४। पत्रस० २१। आ० १०×४ इञ्च। **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

विशेष—त्रिलोकसार में से कुछ चर्चाए है।

५९९८. त्रिलोक सार— ×। पत्र स० ११५। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—लोक विज्ञान। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १२२, १७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष—११५ से आगे के पत्र नही है।

५९९९. त्रैलोक्यसार टीका – नेमिचन्द्रगणि। पत्रस० २२। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय लोक विज्ञान। र०काल ×। ले०काल स० १५३१ आषाढ सुदी १३। वेष्टन स० १८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६००० प्रति सं० २। पत्र स० ३८। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन स० १८६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६००१. प्रतिसं० ३। पत्रस० ८६। आ० ११×४ इञ्च। ले० काल स० १५८३ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—चंपावती नगरी मे सोलकी राजा रामचन्द्र के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी।

६००२. प्रतिसं० ४। पत्र स० ७१। आ० १०⅓×४¾ इञ्च। **ले०काल स०** १५४० फागुन सुदी ३। वेष्टन स० १८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—जोशी श्री परसराम ने प्रतिलिपि की थी।

६००३. **प्रति सं० ५** । पत्रस० ६५ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । **ले०काल** स० १८८३ आसोज बुदी ६ । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६००४. **त्रिलोकसार टीका—माधवचन्द्रत्रिविद्य** । पत्रस० १४६ । आ० १२ ×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय लोकविज्ञान । र०काल × । **ले०काल** स० १५८८ सावण सुदी १४ । पूर्ण । **वेष्टन**स० ६२— .. । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

प्रशस्ति—सवत् १५८८ वर्षे श्रावण सुदि चतुर्दशी दिने गुरुवारे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिस्तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति देवास्तत्पट्टो भ० श्री ज्ञानभूषण देवा .... ।

स० १८२१ फागुण सुदी १० को प० सुखेण द्वारा लिखा हुआ एक विषय सूची का पत्र और है ।

६००५. **प्रतिसं० २** । पत्र स० २२८ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । **ले०काल** स० १५५१ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—खडेलवाल ज्ञातीय बाकलीवाल गोत्रोत्पन्न साह लाखा भार्या लखमी के वश मे उत्पन्न नेता व नाथू ने ग्र थ की लिपि करवायी थी ।

६००६. **प्रति सं० ३** । पत्रस० ६६ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर डीग ।

६००७. **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ६० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-लोकविज्ञान । र०काल × । ले० काल स० १७६५ फागुण बदि ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर करोली ।

विशेष—२ प्रतिया और है । नरसिह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की ।

६००८. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० ८६–११७ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वष्टन स० ७३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६००९. **प्रति स० ६** । पत्रस० १४५ । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** स० १७०१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६०१०. **प्रति सं० ७** । पत्र स० १६५ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष – दो प्रतियो का मिश्रण है । ६० मे आगे दूसरी प्रति के पत्र है । यह पुस्तक आचार्य त्रिभुवनचन्द के पढने की थी । प्रति प्राचीन है ।

६०११. **त्रैलोक्यसार टीका—सहस्रकीर्ति** । पत्र स० ५७ । **भाषा**-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल १७६३ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर डीग ।

६०१२. **त्रिलोकसार चर्चा— ×** । पत्रस० ६३ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चर्चा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०१३. त्रैलोक्य दीपक—वामदेव । पत्र स ८१ । ग्रा० २०×१२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक-विज्ञान । र०काल × । ले० काल स० १७२१ फाल्गुन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति बडे ग्राकार की है । कोटा दुर्ग में महाराज जगतसिंह के राज्य में महावीर चैत्यालय में जगसी एवं सावल सोगाणी से लिखवाकर भ० नरेन्द्र कीर्ति के शिष्य बालचन्द को भेंट की थी । प्रति सचित्र है ।

६०१४. त्रैलोक्य स्थिति वर्णन—× । पत्रस० १२ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

६०१५. त्रिलोकसार—सुमतिकीर्ति । पत्र स० १५ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लोक विज्ञान । र०काल स० १६२७ माघ सुदी १२ । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६०१६. प्रति सं० २ । पत्रस० १३ । ग्रा० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १७६३ ग्राषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

६०१७. प्रति सं० ३ । पत्र स० ११ । ग्रा० १० × ४¾ इञ्च । ले० काल स० १७६२ फाल्गुन सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६०१८. प्रति सं० ४ । पत्र स० २-४५ । ग्रा० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

६०१९. प्रति सं० ५ । पत्रस० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१०-१५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६०२०. त्रिलोकसार—सुमतिसागर । पत्रस० १२६ । भाषा सम्कृत । र०काल × । ले०काल सं० १७२४ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६०२१. त्रिलोकसार वचनिका— × । पत्रस० ३७६ । ग्रा० १२½×६¾ इच । भाषा—हिन्दी गद्य । विपय—लोकविज्ञान । र०काल . । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८२/६२ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

६०२२. त्रिलोकसार पट— × । पत्र स० १ । ग्रा० २८ × १३ इञ्च । विषय—लोक विज्ञान । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७३-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—कपडे पर तीन लोक का चित्र हैं ।

६०२३. त्रिलोकसार—× । पत्र स ५१ । ग्रा० १२×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १७२-७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६०२४. त्रिलोकदर्पण—खडगसेन । पत्र सं० १४६ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-लोक विज्ञान । र०काल सं० १७१३ । ले०काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक) ।

६०२५. प्रति सं० २। पत्रसं० २७०। आ० १० × ५ इञ्च। ले०काल स० १८१८ पौष सुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० १४०७। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

६०२६. प्रतिसं० ३। पत्रसं० १२१। आ० १२×५३/४ इञ्च। ले० काल सं० १८४८ पौष बुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं० ३१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

६०२७. प्रतिसं० ४। पत्रस० ६०। आ० १०×६१/२ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष--६० से आगे पत्र नही हैं।

६०२८. प्रतिसं० ५। पत्र सं० ११२। आ० १०×५ इञ्च। ले० काल स० १७६८ वैशाख बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १४४। **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर करौली। इसका दूसरा नाम त्रिलौक चोपाई, त्रिलोकसार दीपक भी है।

विशेष—स० १७६८ *वर्षे वैशाख मासे कृष्ण पक्षे सप्तम्यां गुरुवासरे श्री मूलसघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कु दकुन्दाचार्यान्वये ब्रजमडलदेशे कछवाहा गोत्रे राजा जैतसिघ राज्ये कामवनमध्ये।* भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रभूषणदेवास्तत्सिष्य पडित राजा रामेण सकलकर्मक्षयार्थं श्रीमत्त्रैलोक्यसारभाषा ग्रंथोय लिखित।

अथ ढिलावटीपुर सुभस्थाने तत्र निवास कानु सोगानी जाति साहजी मोहनदास तस्य भार्या हीरा *तत्पुत्र द्वौ ज्येष्ठ जगरूप तस्य भार्या अनदी तत्पुत्र भोगीराम द्वितीय जगरूपस्य भ्राता* वलूए तेषा मध्ये साह जगरूपेण लिखापित स्वज्ञानावर्णी क्षयार्थं। श्रीमत्त्रिलोकदीपक नाम ग्रंथ नित्य प्रणमति। सर्व ग्रंथ सख्या ५००६।

६०२९. प्रतिसं० ६। । पत्र संख्या ३२०। आ० ९×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोकविज्ञान। ले० काल स० १७३२। पूर्ण। वेष्टन सख्या ८८२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन भन्दिर अजमेर।

६०३०. प्रतिसं० ७। पत्र सं० १५०। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। ले०काल स० १८४१। पूर्ण। वेष्टन स० ५। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मंदिर नैणवा।

६०३१. त्रिलोकसार भाषा -- ×। पत्र स० २५२। आ० १३×६१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। र० काल स० १८४१। ले०काल स० १९४७। पूर्ण। वेष्टन स० १६१४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

६०३२. त्रिलोकसार भाषा— ×। पत्र स० ३५०। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय-त्रिलोक वर्णन। र०काल ×। ले०काल स० १८७४ मगसिर बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ दूनी (टोक)।

विशेष—लिखतं महात्मा जयदेव वासी जोवनेर लिख्यौ सवाई जयपुर मध्ये।

कटि कुवरी करवे डाडी, नीचे मुख अर नयण।
इण सकट पुस्तक लिख्यौ, नीकै रखियौ सयण॥

६०३३. त्रिलोकसार भाषा—महापंडित टोडरमल। पत्र सं० २५२ । भाषा-राजस्थानी ढूंढारी गद्य । विषय-तीन लोक का वर्णन । र० काल ×। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में विजयपाल चादवाड ने लिखवाया था ।

६०३४. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १४६ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर नैणवा ।

६०३५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २८७ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६०३६. प्रति स० ४ । पत्रस० २३५ । आ० ११×७½ इञ्च । ले० काल स० १८८३ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६०३७. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २८५ । आ० १०½ × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

६०३८ प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ३०८ । आ० १४×८ इञ्च । ले० काल स० १९७३ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—गुलजारीलाल रुस्तमगढ़ जि० एटा थाना निधौली कला मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६०३९ प्रतिसं० ७ । पत्रस० ४१८ । आ० ११½ × ७½ इञ्च । ले०काल स० १९२३ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सवाई जयपुर मे लिखा गया था । प्रति सुन्दर है ।

६०४०, प्रति सं० ८ । पत्रस० २५१ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १९०३ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६०४१. प्रतिसं० ९ । पत्रस० २५० । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले०काल स० १८१६ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा ।

६०४२ प्रतिसं० १० । पत्र स० ३६४ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन स० २९-१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये वागड पट्टे भ० श्री नेमिचद्र जी तत्पट्टे भ० श्री रत्नचन्द जी तत् शिष्य प० रामचन्द्र सदारा नगरे पार्श्वजिनचैत्यालये साह जी श्री वस्ताजी व्यवस्था तत् भार्या सोनाबाई इद पुस्तक दत्त ।

६०४३ प्रति सं० ११ । पत्रस० २५६ । आ० १४×७ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—आगे के पत्र नही है ।

६०४४. **प्रतिसं० १२** । पत्रस० ३०८ । आ० १५ × ७ इञ्च । ले० काल स० १९०२ भादवा बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—मालपुरा मे लिखा गया था ।

६०४५ फुटकर सवैय्या— × । पत्र सं० २२ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-तीन लोक वर्णन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२४-१६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६०४६. भूकंप एवं भूचाल वर्णन × । पत्रसं० १ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६०४७. संघायरिण—हेमसूरि । पत्र सं० ४८ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

६०४८. क्षेत्रन्यास — × । पत्र स० ३ । आ०१० × ६ इञ्च । भाषा- हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

६०४९. क्षेत्र समास— × । पत्र स० २३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा -प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल स० १४३९ । पूर्ण । वेष्टन म० २८८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष — प्रशस्ति—सवत् १४३९ वर्षे वैशाख सुदी ३ ।

— · —

विषय -- मंत्र शास्त्र

६०५०. आत्म रक्षा मंत्र × । पत्र सं० १ । आ० ११½ × ४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०५१. ओंकार वचनिका— × । पत्र सख्या ५ । आ० १२½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-मत्र शास्त्र । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज) ।

६०५२. गोरोचन कल्प— × । पत्र सं० १ । आ० १० × ५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-मत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८३-१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६०५३. घंटाकर्ण कल्प— × । पत्र स० १० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय—मत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२१-१५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६०५४. घंटाकर्ण कल्प—× । पत्र सं० ६ । आ० १२ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५५-१०२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—१३ यत्र दिये हुए है । यत्र एव मत्र विधि हिन्दी मे भी दी हुई है ।

६०५५ घटाकर्ण कल्प × । पत्रस० ११ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८५० चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सवाई जयनगरे लिखित ।

६०५६. घंटाकरण मंत्र— × । पत्र स ६२ । आ० ६½ × ३½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

६०५७. घटाकरण मंत्र विधि विधान— × । पत्र स० ६ । आ० १२ × ६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन स० २७७-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६०५८. जैन गायत्री— × । पत्रसं० १ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**-मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ४२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०५६ ज्ञान मंजरी— × । पत्रसं० २८ । आ० १०×४ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०१/२२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—त्रिपुर सुन्दरी को भी नमस्कार किया गया है ।

६०६०. त्रिपुर सुन्दरी यंत्र— × । पत्रसं० ३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—यंत्र का चित्र दिया हुआ है ।

६०६१. त्रैलोक्य मोहन कवच —। पत्रसं० ३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । **वेष्टन सं० २८६** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

६०६२. त्रैलोक्य मोहनी मंत्र— × । पत्रसं० ३ । आ० ८ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र । र० काल × । **ले० काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६०६३. नवकार मंत्र गाथा— × । पत्र सं० १ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-मंत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—३ मन्त्र और हैं । अन्तिम मन्त्र नवकार कथा का है ।

६०६४. पूर्ण बधन मन्त्र— × । पत्रसं० ७ । आ० १०×६ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । **विषय**—मन्त्र । र० काल × । **ले० काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४६- × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर ।

६०६५. बावन वीरा का नाम— × । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० ४२६** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०६६. बालत्रिपुर सुन्दरी पद्धति— × । पत्रसं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८७६ फाल्गुण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

६०६७. बीजकोष— × । पत्र सं० ४० । आ० ८½ × ७ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र० काल × । **ले० काल** सं० १९९३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६०६८. भैरव कल्प— × । पत्रसं० ५८ । आ० ११ × ५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टन सं० ११५** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६०६९. भैरव पद्मावती कल्प—ग्रा० मल्लिषेण । पत्रसं० २३ । ग्रा० १२ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १८६१ जेष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

६०७०. प्रति सं० २ । पत्रसं० २३ । ग्रा० १४ × ७½ इञ्च । ले०काल सं० १९२१ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६०७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ग्रा० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १६८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६५-१४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—संवत् १६८५ वर्षे माह मासे कृष्ण पक्षे २ दिने श्री मूल सघे मोडी ग्रामे पार्श्वनाथ चैत्यालये भ० सकलचन्द्र तत्पट्टे भ० खूबचन्द तदाम्नाये ब्र० श्री जेसा तत् शिष्य ग्रा० जयकीर्ति लिखितं ।

६०७२. मातृका निघंटु—महीधर । पत्रसं० ४ । ग्रा० ११ × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०७३ मोहिनी मंत्र— × । पत्रसं० २३ । ग्रा० ५ × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६०७४. मंत्र प्रकरण सूचक टिप्पण—भावसेन त्रैविद्यदेव । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५०१- × । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

ग्रन्तिम—इति श्री परवादिगजकेसरि वेदवादिविध्वंसक भावसेन त्रैविद्यदेवेन जिनसंहितया मन्त्र प्रकरण सूचक टिप्पणकं परिसमाप्तं । श्री नेत्रनन्दि मुनिना लिखापितं ।

६०७५. मंत्र यंत्र— × । पत्र सं० २ । ग्रा० १२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०७६. मंत्र शास्त्र— × । पत्रसं० ९ । ग्रा० ९ × ६ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—चामुंडादेवी का मन्त्र है ।

६०७७ मंत्र शास्त्र— × । पत्रसं० ६ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

६०७८. मंत्र शास्त्र— × । पत्र सं० २ । ग्रा० ११ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर संभवनाथ उदयपुर ।

६०७९. मंत्र संग्रह— × । पत्रसं० १५ । ग्रा० १२ × ५½ इंच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल सं० १९०५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १पाद जयनगरे मूलसघे सारदा गच्छे सुरि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी तस्य शिष्य रामकीर्ति जी प० लक्ष्मीराम, मन्नालाल, रामचन्द, लक्ष्मीचन्द, अमोलकचन्द, श्रीपाल पठनार्थ ।

६०८०. **मायाकल्प**— × । पत्रस० २ । भाषा सस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०८१. **यक्षिणीकल्प—मल्लिषेण** । पत्र स० ६ । भाषा —सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १७६८ वैशाख सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६०८२. **यंत्रावली—अनूपाराम** । पत्रस० ७० । आ० ६×४ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनं स० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

प्रारम्भ—

> दक्षिणामूर्त्तिगुरुं प्रणम्य तदीरित श्रीताडवस्था ।
> यत्रावली मकमयी प्रवस्तांव्य व्याकुर्महे सज्जनरजनाय ।।
> शिवनांडव टीकेयमनूपाराम सज्ञिता ।
> यत्रकल्पमद्र ममयी दत्तोद्वोभीप्ट सततिं ।।२।।

६०८३. **विजय यंत्र**— × । पत्रस० १ । आ० ४×४½ इञ्च । **विषय**—यत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—कपडे पर अङ्क ही अङ्क लिखे है । कोरो पर मत्र दिए है ।

६०८४ **विजयमत्र**— × । पत्रस० ८ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टनस० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६०८५. **विद्यानुशासन—मल्लिषेण** । पत्र स० १०२-१२६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ४३७/२१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६०८६. **विविध मत्र संग्रह**— × । पत्र स० १२० । भाषा—सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ४१५-१५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष—विविध प्रकार के मत्र तत्र सचित्र हैं तथा उनकी विधि भी दी हुई है ।

६०८७. **शान्ति पूजा मंत्र**— × । पत्रस० ६ । आ० १०¾× ४¾ इञ्च । भाषा— संस्कृत । **विषय**—मत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० ४४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६०८८. **षट् प्रकार यंत्र**— × । पत्र स० ३ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—मंत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १०६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०८९. **संवर्जनादि साधन—सिद्ध नागार्जुन** । पत्र सं० ८६ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री सिद्ध नागार्जुन विरचिते कक्षपुटे सवार्जनादि साधन पचदश पटल ।

६०९०. **सरस्वती मंत्र**— × । पत्र सं० १ । ग्रा० १०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-मंत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६०९१. **संध्या मंत्र—गौतम स्वामी** । पत्रसं० १ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—मंत्र संग्रह है ।

६०९२. **यंत्र मंत्र सग्रह—निम्न यंत्र मंत्रों का संग्रह है**—

१ **वृहद् सिद्ध चक्र यंत्र**— × । पत्र स० १ । ग्रा० २२½×२२½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—यंत्र ग्रादि । र०काल × । ले०काल सं० १६१९ फागुण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६१९ वर्षे फाल्गुन सुदी ३ गुरुवासरे ग्राश्वनि नक्षत्रे श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मडलाचार्य श्री ३ धर्मकीर्त्तिस्तत् शिष्य ब्रह्म श्री लाहड नित्य प्रणमति वातेनवृहत् सिद्धचक्र यंत्र लिखित ।

६०९३. २ **चितामणि यंत्र बडा**— × । पत्र सं० १ । ग्रा० १८×१८ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—यंत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—कपडे पर है ।

६०९४. ३ **धर्मचक्र यंत्र**— × । पत्र स० १ । ग्रा० २५×२५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । र०काल × । ले० काल स० १६७४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

सवत् १६७४ वर्षे वैशाख सुदी १५ दिने श्री ॥१॥
नागपुर मध्ये लिखापित । शुभ भवतु ॥ कपडे पर यंत्र है ।

६०९५. ४ **ऋषि मंडल यंत्र**— × । पत्रसं० १ । ग्रा० २१×२३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—यंत्र । र०काल × । ले०काल स० १५८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री श्री श्री शुभचन्द्र सूरिभ्योनमः । ग्रथ संवत्सररेस्मिन श्री नृप विक्रमादित्य गताब्दः सवत् १५८५

वर्षे कार्त्तिक वदि ३ शुभदिने श्री रिषि मंडल यत्र ब्रह्म अज्जू योग्य पं० अर्हदासेन शिष्य प० गजमल्लेन लिखितं। शुभं भवतु। कपडे पर यत्र है।

६०६६. ५ अढाई द्वीप मंडल— ×। आ० ४२×४२ इञ्च। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—यह कपडे पर है।

६ नंदीश्वरद्वीप मंडल— ×। यह पत्र २४×२४ इञ्च का है। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—इसमें अजनगिरि आदि का आकार पुराने मडल से सं० १९०६ में बनाया गया है।

——: o :——

विषय -- श्रृंगार एवं काम शास्त्र

६०९७. **अनंगरंग—कल्याणमल्ल** । पत्र स० ३० । ग्रा० १२×५३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काम शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०९८. **प्रति स० २** । पत्रस० ३३ । ग्रा० १०×५३/४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—मूल के नीचे गुजराती भाषा मे अर्थ दिया हुआ है ।

६०९९. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ४३ । ले० काल स० १७९७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६१००. **कोकमंजरी—ग्रानंद** । पत्र स० २८ । ग्रा० १०३/४×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काम शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६१०१. **कोकशास्त्र—कोकदेव** । पत्र स० ८ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काम शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—रणथभौर मे राजा भैरवसेन ने कोकदेव को बुलाया और कोकशास्त्र की रचना करवायी थी ।

६१०२. **कोकसार**— × । पत्रस० ३६ । ग्रा० १०×६१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—काम शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—सामुद्रिक शास्त्र भी दिया हुआ है ।

६१०३. **कोकसार** । पत्र स० ९ । ग्रा० १०×६१/२ इञ्च । भाषा हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३६ ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६१०४. **प्रेम रत्नाकर**— × । पत्र स० १३-४७ तक । ग्रा० ६×४३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—शृंगार । र० काल × । ले० काल स० १८४८ जेष्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० १०८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—इसकी पाच तरङ्ग है । प्रथम तरङ्ग नही है ।

६१०५ **बिहारी सतसई—बिहारीलाल** । पत्र स० १४८ । ग्रा० ६१/२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—शृंगार । र० काल स० १७८२ कार्तिक बुदी ४ । ले० काल स० १८८२ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—बिहारी सतसई की इस प्रति मे ७३५ दोहे है ।

६१०६. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २-४० । आ० ९×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६१०७. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ७० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६१०८. **बिहारी सतसई टीका**— × । पत्र स० २७ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-श्रृगार वर्णन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पहिले मूल दोहे फिर उसका हिन्दी गद्य में अर्थ तथा फिर एक एक पद्य में अर्थ को और स्पष्ट किया गया है ।

६१०९. **भामिनी विलास—प० जगन्नाथ** । पत्र स० ३ से २२ । भाषा—सस्कृत । विषय—काम शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८७९ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६११०. **प्रतिसं० २** । पत्र स० २४ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल स० १८-३ माह सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सरोजपुर मे चितामणिपार्श्वनाथ चैत्यालय मे प० बूलचद ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की थी ।

६१११. **भ्रमरगीत—मुकुंददास** । पत्र स० ३२ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—विरह (वियोग श्रृगार) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—७५ पद्य है । २५ वे पत्र से उषा चरित्र है जिसके केवल १४ पद्य है ।

६११२ **मधुकर कलानिधि—सरसुति** । पत्र स० ४० । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-श्रृगार । र०काल स० १८२२ चैत सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—अंतिम प्रशस्ति तथा रचनाकाल सबधी पद्य निम्न प्रकार है ।

इति श्री सारस्वत सरि मधुकर कलानिधि सपूर्णम् ।

सवत् अठारह सं बावीस पहल दिन चैत सुदी
शुक्रवार अंश उल्हास्यो सही ।
श्री महाराना माधवेश मन के विनोद हेत
सुरसति कीनो यह दूध ज्यो जमे नही ।।

६११३. **माधवानल प्रबन्ध—गणपति** । पत्र स० ५२ । आ० ११ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी प. । विषय—कथा (श्रृगार रस) । र०काल सं० १५९४ श्रावण बुदी ७ । ले० काल सं० १६५३ जेठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

६११४. **रसमंजरी**— × । पत्र स० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प.) । **विषय**-श्रृंगार रस । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६११५. रसमंजरी—भानुदत्त मिश्र । पत्रसं० ४१ । ग्रा० ११×५ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—शृंगार । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—गोपाल भट्टकृत रसिक रंजिनी टीका सहित है ।

६११६. प्रति सं० २ । पत्रस० ७४ । ग्रा० ११×५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—भट्टाचार्य वेणीदत्त कृत रसिकरंजिनी व्याख्यासहित है ।

६११७. रसराज—मतिराम । पत्रस० १७ । ग्रा० ६ × ६ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—शृंगार । र०काल × । ले० काल स० १८६६ फाल्गुण सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

६११८. रसिकप्रिया—महाराजकुमार इन्द्रजीत । पत्र सं० १३८ । ग्रा० ६ × ६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शृंगार रस । र०काल × । ले० काल स० १७५६ । पूर्ण । वे० स० ५०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६११९. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६-६४ । ले० काल स० १७५७ मगसिर सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

६१२०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ७१ । ग्रा० ६ × ५ इन्च । ले०काल स० १८४५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६१२१. शृंगार कवित्त— × । पत्र स० ५ । ग्रा० ११×६ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–शृंगार । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६१२२. शृंगार शतक—भर्तृहरि । पत्र स० ६ । ग्रा० ६× ४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-शृंगार रस । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ३/१६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—१०२ पद्य है ।

६१२३. प्रतिसं० २ । पत्र स० १२ । ग्रा० १०½×५ इन्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६१२४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २० । ग्रा० ११×५ इन्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति टिप्पण सहित है ।

६१२५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४० । ग्रा० १०½ × ५ इन्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ४६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—श्लोक स० ५५० है ।

६१२६. **सुन्दर शृंगार—महाकवि राज।** पत्र सं० ३२। ग्रा० ८$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—शृंगार। र०काल ×। ले०काल स० १८८३। पूर्ण। वेष्टन सं० १६१–७१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर।

यह सुंदर सिंगार की पोथि रचि विचारि।
चूक्यौ होइ कछु लघु लीज्यो सुकवि सुधारि ॥

इति श्रीमत् महाकविराज विरचित सुंदर सिंगार सपूर्ण।

सवत् १८८३ वर्षे शाके १७४८ प्रवर्त्तमाने पौष मासे शुक्ल पक्षे तिथौ २ शनिवासरे सायकाले लिखीत।

६१२७. **प्रतिसं० २।** पत्र स० ७। ग्रा० १०×५$\frac{1}{2}$ इच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६३-१४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूगरपुर।

६१२८. **प्रतिसं० ३।** पत्रस० २४। ग्रा० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

६१२६ **प्रतिसं० ४।** पत्र स० ११-६२। ग्रा० ७×६ इञ्च। लेखन काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिह (टोंक)।

६१३०. **प्रतिसं० ५।** पत्र स० २५। ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १७२८। वेष्टन स० ६१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—अंत मे सुन्दरदास कृत बारहमासा भी है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि मालपुरा मे हुई थी।

६१३१. **सुन्दरशृंगार—सुन्दरदास।** पत्र स० ४७। ग्रा० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी प.। विषय—शृंगार। र०काल ×। ले० काल स० १८५६। पूर्ण। वे० स० ५७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—नेमिनाथ चैत्यालय मे पं० विजयराम ने पूरा किया था।

६१३२. **प्रति सं० ६।** पत्रस० ४२। ग्रा० ८×५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

—:o:—

विषय -- रास, फागु वेलि

६१३३. अजितनाथ रास—ब्र० जिनदास । पत्र सं० ४० । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—रास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—वस्तु छंद—

अजित जिनेसर, अजित जिनेसर ।
पाय प्रणमि सुतीर्थंकर अति निरमला
मन वांछित फलदान सुभकर ।
गणधर स्वामी नमस्करू
सरस्वति स्वामिणि ध्याऊ निरमर ।
श्री सकलकीरति पाय प्रणमि
त्रिभुवन कीरति भवतार ।
रास करिसृहु निरमलो
ब्रह्म जिणदास तणिसार

भास यशोधर—

भवियण भावेइ मुगुण चग मनिधारे आनन्दु ।
अजित जिणेसर चारित्रसार कहु गुणचन्द ।।

अन्तिम—

श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीने
मुनि भवनकीर्ति भवतार ।
रास कीधो मै निरमल
अजित जिणेसर सार ।।
पढई गुणइ जे साभलइ मनि धरि अविचल भाव ।
तेहनइ रिद्धि घर गणा पामइ शिवपुर ठामी ।।
जिण सासण अति निरमलु भवि भवि देउ मुभसार ।।
ब्रह्म जिणिदास इम वीनवेइ श्री जिणवर मुगति दातार ।

इति श्री अजित जिणनाथ रास समाप्त ।

६१३४ अमरदत्त मित्रानंद रासो—जयकीर्त्ति । पत्र स० २७ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय-रासा साहित्य । र०काल स० १६८६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

६१३५. आदिपुराण रास—ब्र० जिनदास। पत्रस० १८०। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पुराण। र०काल १५ वी शताब्दी। ले०काल सं० १८३१ भादवा बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ११८-५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—भट्टारक नागौर के श्री जयकीर्त्ति तत् शिष्य आचार्य श्री देवेन्द्रकीर्त्ति के समय आदिनाथ चैत्यालय अजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

६१३६. प्रतिसं० २। पत्र स० ८। आ० १२×६½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४२८-१६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६१३७. आदिनाथ फागु—भ० ज्ञानभूषण। पत्रस० ३-१५। आ० ११ × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-फागु साहित्य। र०काल ×। ले०काल × अपूर्ण। वेष्टन स० ४८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—आचार्य नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य ब्र० शिवदास ने लिपि की थी।

६१३८. प्रति सं० २। पत्र स० २६। आ० १३½×६ इञ्च। ले० काल स० १८६८। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १८६८ फागुण बुदी १४ रविवासरे श्री सलूबर नगरे मूलसंघे सरस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री १०८ श्री श्री चन्द्रकीर्ति विजयराज्ये तत् शिष्य पडित श्री गुलाबचन्द जी लिखित।

६१३९. प्रति सं० ३। पत्र स० २८। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३७१ ४५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

विशेष—कुल ५०१ पद्य है।

६१४०. आषाढभूतरास—ज्ञानसागर। पत्रस० १२। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय कथा। र०काल × ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

६१४१. इलायचीकुमार रास—ज्ञानसागर। पत्र स० १०। आ० ९ × ४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय कथा। र०काल सं० १७१९ आसोज सुदी २। ले० काल स० १७२८ जेष्ठ मास। पूर्ण। वेष्टन स० ९५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

> सवत् १७१९ सावरसे शेषपुर मन हरषे।
> आसोज सुदी द्वितीया दिन सारे हस्तनक्षत्र बुधवारषे॥
> ग्यान सागर कहे…… ……………।

६१४२. प्रति सं० २। पत्र स० १४। आ० ११×४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

६१४३. अंजणा रास— ×। पत्रसं० १४। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले०काल सं० १९०७ माघ बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)।

६१४४. अंजना सुन्दरी सतीनो रास— × । पत्र सं० ५-१७ । आ० १० × ४ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १७१३ फागुन बदि ७ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६१४५. अंबिकारास— × । पत्रस० ३ । आ० ११ × ४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस० २६८** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६१४६. कर्म विपाकरास—ब्र० जिनदास । आ० १०½ × ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९-४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६१४७. करकुंडनोरास—ब्रह्म जि० दास । पत्रसं० २१ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल स० १९२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर **राजमहल** (टोंक) ।

विशेष—सवत् १९२१ वर्षे भट्टारक श्री १०८ धर्म्मचद्र जी तत्सीस ब्र. गोकलजी लिखीत तत् लघु भ्राता ब्र. मेघजी पठनार्थ ।

६१४८. गौतमरास— × । पत्रस० ३ । आ० १०¾ × ४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८०५ । पूर्ण । **वेष्टनसं० १३२१** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

६१४९. चतुर्गति रास—वीरचन्द । पत्रसं० ५ । आ० ९ × ४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चारगतियों का वर्णन । र०काल × । ले० काल सं० १८१४ । पूर्ण । **वेष्टनस० १०३** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६१५०. चारुदत्त श्रेष्ठोनो रास—भ. यशःकीर्ति । पत्रस० ३-४२ । आ० ९½ × ६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल सं० १८७५ ज्येष्ठ सुदी १५ । ले०काल स० १९७६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२३ ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—श्री मूलसघे बलात्कारगणे भारतीगच्छे कुदकुंदाचार्यान्वये सूरीश्वर सकलकीर्ति भुवनकीर्ति तत्पट्टे ज्ञानभूषण तत्पट्टे विजयकीर्ति तत्पट्टे शुभचन्द्र तत्पट्टे सुमतिकीर्ति तत्पट्टे गुणकीर्ति तत्पट्टे वादिभूषण तत्पट्टे रामकीर्ति तत्पट्टे पद्मनदि तत्पट्टे देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे क्षेमेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे नरेन्द्रकीर्ति तत्प. विजयकीर्ति नेमिचन्द्र जी भ० चन्द्रकीर्ति पट्टे कीर्तिराम इन्ही के गच्छपति यशःकीर्ति ने खडग देश मे धूलेव गाव मे आदि जिनेश्वर के धाम पर रचना की थी ।

बबेला मे भ० यशः कीर्ति के शिष्य खुशाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६१५१. चिद्रूपचिन्तन फागु— × । पत्रस० ३८ । आ० १२ × ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चिन्तन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२५२. चपकमाला सती रास — × । पत्रसं० ९ । आ० ९½ × ४½ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० २६३** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

६१५३. जम्बूस्वामीरास—ब्रह्म जिनदास। पत्रसं० ७३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-राजस्थानी पद्य। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल स० १६२१ पौष बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—सवत् १६२१ वर्षे पोस बदी ११ शुक्रवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगछे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्विये भट्टारक श्री १०८ रत्नचन्दजी तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ देवचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ धर्म्मचन्द्र जी तत् शिष्य ब्रह्म गोकल स्वहस्ते लखीता। स्व ज्ञानावर्णी कर्म्म क्षयार्थ।

५१५४. जम्बूस्वामी रास—नयविमल। पत्र सं० २४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६१५५. जिनदत्तरास—रत्नभूषण। पत्र स० ३०। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—आदिभाग निम्न प्रकार हैं—

सकल सुरासुर पद नमि नमू ते जिनवर राय
गणधरजी गोतम नमू, बहु मुनि सेवित पाय ॥१॥
सुखकर मारिग वाहनी, भगवती भवनी तार।
तेह तणा चरण कमल नमु, जे वेणा पुस्तक धार ॥२॥
श्री ज्ञानभूषण ज्ञानी नमू, नमू सुमति कीर्ति मुरिंद।
दक्षण देशनो गछपति नमु, श्री गुरु धर्मचन्द ॥३॥
एह तणा चरण कमल नमि, कहू जिनदत्तचरिउ विचार।
भवियण जनसहू साभलो, जिम होअ हरिष अपार ॥४॥

अन्तिम भाग—

मूलसघ सरसतीगच्छि सोहामणो रे,
काई कु दकु दयति राय।
तिणि अनुकारी ते बलात्कारगणी,
जाणीएरे ज्ञान भूषण नमि पाय ॥१॥
श्री सूरिवर रे सुमति कीरति पदनमीरे
नमी श्री गोर धमचन्द्र।
श्री जिनदत्त रास करिवा मनि उपन्नो रो,
कांइ एक दिवासी आनंद ॥

दूहा—

देवि सरस्वती गुरू नमीमि कीधी रास सार।
हणो होइ ते साधज्यो पूरो करज्यो सुविचार।
श्री हासोट नगरे सुहामणू श्री आदि जिनद भवतार।
तिणि नयरे रचना रची श्री जिन सासनि श्रृंगार।

आसो मास सोहामणो सुदि पंचमी बुधवार ।
ए रचना पूरी करी सांभलो भविजन सार ।।३।।
श्री रत्नभूषण सूरिवर कही जे वाचे जिनदतए रास ।
जिनदतनी परि सुख लही पोहोचि तेहनी आस ।।४।।
भरिण भणावि ए सही लिखि लिखावि रास ।
तेह घरि नवनिधि संपजि पूजता जिन पाय ।।५।।
भवियण जन जे साभलि रास मनोहर सार ।
श्री रत्नभूषण सूरीवर कही तेह घरि मगलाचार ।।६।।

६१५६. प्रति स० २ । पत्र स० ४० । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल स० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३१–१२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—सवत् १६६५ वर्षे फाल्गुण मासे कृष्णपक्षे १२ बुधवारेण लिखितमिदं जिनदत्त रास ।

६१५७. जीवंधर रास—ब्रह्म जिनदास । पत्रस० ७५ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१८/६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—एक त्रुटित प्रति और है ।

५१५८. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८० । ले० काल स० १८९५ । पूर्ण । वेष्टनस० ५०/५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स भवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—मेवाडदेश के गेगला ग्राम मे आदिनाथ चैत्यालय मे स० १८९५ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६१५९. जोगीरासा—जिनदास । पत्रस० ३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

६१६०. प्रतिसं० २ । पत्रस० २ । आ० १०½ x ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

६१६१. दानफलरास—ब्र० जिनदास । पत्रस० ९ । आ० ११×७ इच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय —कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—लुब्धदत्त एव विनयवती कथा भाग है ।
अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री दान फलचरित्रे ब्रह्म जिनदास विरचिते लुब्धदत्त विनयवती कथा रास । १८२२ वर्षे श्रावण बुदी ११ तिथौ पडित रूपचन्दजी कस्य वाचनार्थाय ।

६१६२. द्रौपदीशील गुणरास—आ० नरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० १३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६१६३. धन्यकुमार रास—ब्र० जिनदास। पत्रस० २६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—रास। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६१६४. प्रतिसं० २। पत्रस० ३३। ले०काल स० १६४५। पूर्ण। वेष्टन स० ३३/५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६१६५. धर्मपरीक्षारास—ब्र० जिनदास। पत्रस० ३-२८। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल स० १६३५। अपूर्ण। वेष्टन स० १४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवत् १६५१ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १० स्वस्ति श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे श्री विजयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्री सुमतिकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्तिदेवास्तदाम्नाये ब्र० जिनदास तत्पट्टे ब्र० श्री शांतिदास तत्पट्टे ब्र० श्री हेमराज तत्पट्टे ब्र० श्री राजपाल तद्दीक्षिता ज्ञान विज्ञान विचक्षण बाई श्री रूडीये धर्मपरीक्षा रास ज्ञानावर्णीय कर्मक्षयार्थं पडित देवीदास पठनार्थं।

६१६६. धर्मपरीक्षारास – सुमतिकीर्ति। पत्र स० १८३। आ० ११×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—धर्म। र०काल स० १६२५। ले० काल स० १८३५। अपूर्ण। वेष्टन स० ४०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६१६७. प्रति सं० २। पत्र स० ३६। आ० १०×६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६१६८. प्रति स० ३। पत्र स० १७८। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल स० १७३२ चैत्र बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० १७०/१११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

विशेष—अहमदाबाद मे प्रतिलिपि हुई थी।

६१६९. धर्मरासो— ×। पत्र स० १०। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी।

६१७०. ध्यानामृत रास—ब्र० करमसी। पत्र स० ३२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल सं० १६१६। पूर्ण। वे० स० २६१-११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूगरपुर।

६१७१. नवकाररास—ब्र० जिणदास। पत्रस० २। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय—कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११६२। **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—णमोकार मंत्र सम्बन्धी कथा है।

६१७२. नागकुमार रास—ब्र० जिनदास। पत्रसं० ६। आ० ११×४ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—रास साहित्य। र०काल १५ वीं शताब्दि। ले०काल सं० १८२६। पूर्ण। वेष्टन सं० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६१७३. प्रतिसं० २। पत्र स० ३१। ले०काल सं० १७१५। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२/१३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६१७४. नेमिनाथरास—पुण्यरतनमुनि। पत्रसं० ३। आ० १०×४½ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल सं० १५८६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ७३६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है।

आदि भाग—

सारद पय प्रणमी करी, नेमितणा गुण हीइ धरेवि।
रास भणु रलीयामणउ, गुण गुरुवउ गाइमूं संखेवि ॥१॥
हूँ बलिहारी जादव एक, रस उरथई छउवालि।
अपराध न मइ को कीयउ, काइ छोडइ नवयोवनबाल ॥२॥
सोरीपुर सोहामणउ, राजा समुदविजय नउ ठाम।
शिवादेवी राणी तसु तणी, अनोप रूपइ रभ समाण ॥३॥

अन्तिम पाठ—

सजम पाल्यउ सातसइ वरम सहसनउ पूरउ पूरउ आउ।
आसाढ सुदी आठमी मुकती पहूता जिणवरराय ॥६६॥
सवत पनरछियासिइ रास रचिउ आणी मन भाइ।
राजगछ मडण तिलउ गुरु श्री नदिवर्द्धन सूरि सुपसाई ॥६७॥
प्रह उठीनइ प्रणमीयइ श्री यादवमडन गिरिनारि।
मनवंछित फल ते ते लहइ हरिषिइं जो गावइ नरनारि ॥६८॥
समुदविजय तन गुण निलउ सेव करइ जसु सुर नर वृन्द।
पुण्य रतन मुनिवर भणइ श्री सघ सुप्रसन नेमि जिणद ॥६९।
श्री नेमिनाथ रास समापता।

६१७५. प्रतिसं० २। पत्र स० २। आ० ९×४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६१७६. नेमिनाथ विवाहलो—खेतसी। पत्रसं० १२। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—विवाह वर्णन। र०काल सं० १६९१ सावण। ले० काल सं० १७९३ कार्तिक बुदी १४। पूर्ण। वेष्टनसं० १८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६१७७. नेमिनाथ फागु—विद्यानंदि। पत्रस० ४०। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—फागु। र० काल स० १८१७ माघ सुदी ५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५/३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)।

विशेष—प्रति बहुत सुन्दर है तथा ७६६ पद्य है।

६१७८. प्रति सं० २ । पत्र स० ५४ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८३१ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६१७९. नेमीश्वररास—ब्र० जिनदास । पत्र स० १६५ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–रास साहित्य । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५३/८३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

६१८०. परमहंस रास—ब्र० जिनदास । पत्रस० ३८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—रूपक काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

६१८१. पल्यविधान रास—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ५ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रारम्भ—

श्री जिनवर कर मानस करी, पल्य विधान रे
भाई कहिस्यू कर्म विपाक हर ।
ए पुण्य तणु निधान रे भाई, व्योहत्परि उपवास,
पल्य तणा चेला च्यार छह छठार ।।
पाप पक दूर करि करतां मक सोह ठार ।।१।।
भाद्रवा माम वदि ६ वडी सूर्य प्रभ उपवासो ।
भाई उपवास पल्य तणुफल तस्य सर्व मुरासुर दासार ।।२।।

अन्तिम—

एणि परमारथ साघो, माया मोह मे बाधो ।।
शुभचन्द्र भट्टारक बोलि, शुद्धो धर्म ध्यान धरी बाधो ।।
पल्य ५ वस्तु ।

छटोमद्व्रत २
मुगति दातार भणतां सिव सुख सपजि ।
उपजि अग आणद कद हो अनत पल्य उपवास फल
सकल विपुल निर्मल आनंद कदह ।
भट्टारक शुभचन्द्रमणि जे भण सिवली रास ।
अमरखेचर सकट निवार लक्ष्मी होइ तस दास ।।१।।
इति पल्य विधानरास समाप्त ।

संवत् १६६० श्री मूलसंघे फागण वदि ५ दिने उदयपुरे पं० कानजि लिखितोयं रासः ब्र० लाल जी पठनार्थं ।

६१८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१८३. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२२/१२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१८४. प्रति सं० ४ । पत्र सख्या ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२३/१२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—पहिले पत्र के ऊपर की ओर 'नागद्रा रास' नागदा जाति का रास ज्ञानभूषण का हिन्दी मे दिया है । यह ऐतिहासिक रचना है पर अपूर्ण है । केवल अन्तिम २२ वा पद है ।

अन्तिम—

श्री ज्ञान भूषण मुनिवरि प्रसुगिया कीधु रास मै साराए
हवुय जिणवरि कहीय वसुणि श्रीग्रंथ
माहि रास रचु अति रूवडू हवि भणि जो नर नारे ।
भणिसी भगावेजे साभले ते लहिसीइ फल विचार ।

इति नागद्रारास सम्पूर्ण ।

६१८५. पाणीगालन रास—ज्ञानभूषण । पत्र स० ४ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१८६. पोषहरास—ज्ञानभूषण । पत्र स० २-८ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१८७. प्रद्युम्नरासो—ब्रह्मरायमल्ल । पत्रस० २० । ग्रा० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स० १६२८ । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टन स० ४४- × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—गढ हरसौर मे ग्रन्थ रचना हुई थी ।

६१८८. बुद्धिरास— × ।पत्रस० १ । ग्रा० ६½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६४ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—इसमे ५६ पद्य है । अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

सालिभद्र गुरु सकल्प हुए ए सवि सीख विधान ।
पावि ते मिय सपदाए निम धरि नवय विधान ।।५६।।

इति बुद्धिरास सपूर्ण ।

६१८९. बाहुबलिबेलि—वीरचन्द सूरि । पत्रस० १० । ग्रा० ११× ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७४४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१९०. बकचूलरास—ब्र० जिनदास । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा - हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उपा० श्री गुणभूषण तत् शिष्य देवसी पठनार्थ ।

६१६१. भद्रबाहुरास—ब्र०जिनदास । पत्रस० १० । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६१६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१६३. भविष्यदत्तरास—ब्रह्म जिनदास । पत्रसं० ८५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७३६ आसोज बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

६१६४. भविष्यदत्तरास—विद्याभूषणसूरि । पत्रस० २१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल म० १६३३ अषाढ सुदी १५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दौसा

६१६५. मुनि गुणरास बेलि—ब्र० गांगजी । पत्र स० १० । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । र० काल × । ले० काल सं० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६१६६. मृगापुत्रबेलि— × । पत्रस० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

६१६७. यशोधर रास—ब्र०जिनदास । पत्र स० २८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-राम (कथा) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन म० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६१६८. प्रतिसं० २ । पत्र स० २४ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन स० २०२-८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६१६६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४ । आ० १०½×४½ इञ्च । **ले०काल** सं० १८२२ । **पूर्ण ।** वेप्टन स० ५६-३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सं० १८२२ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे सोमवासरे कुशलगढ मध्ये श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये बागड पट्टे भ० श्री १०८ रतनचन्द जी तत्पट्टे भ० श्री १०८ देवचन्द्र जी तत्पट्टे भ० श्री १०८ धर्मचन्द्र जी तत् शिष्य पंडित सुखराम लिखित । श्री कल्याणमस्तु ।।

६२००. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ३५ । आ० १० × ४¾ इञ्च । ले० काल सं० १७२६ । पूर्ण । वेप्टन स० १५२-६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६२०१. रत्नपाल रास—सूरचन्द । पत्रस० ३० । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल स० १७३६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६५-११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६२०२. रामचन्द्ररास—ब्रह्म जिनदास। पत्र स० ३८० । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा-राजस्थानी । विषय-राम काव्य । र०काल सं० १५०८ । ले० काल सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—

संवत् १५ अठारोतरा मागसिर मास विसाल
शुक्ल पक्ष चउरिय दिने, हस्त नक्षत्र रास कियो तिसा गुणमाल ।

वस्तु बंध—रास कियो २ अतिसार मनोहार ।

अनेक कथा गुणी आगलो, रात तणो रास निरमल,
एक चित्त करि साभलो भाय धरी मन माहा उजल,
श्री सकलकीर्ति पाय प्रणमीने ब्रह्म जिनदास भणसे सार
पढे गुणे जो सांभले तहिने द्रव्य अपार ।

इति श्री रामचन्द्र महामुनीश्वर रास संपूर्ण समाप्त ।
झवूवा गांव में प्रतिलिपि की थी ।

विशेष—इसका दूसरा नाम रामराम/रामसीताराम भी है ।

६२०३. रामरास—ब्र०जिनदास । पत्रस० ४०५ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा-राजस्थानी विषय-रामकाव्य । र० काल स १५०८ । ले०काल स० १७४० । वेष्टनसं० ६-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १७४८ शाके १६१३ वर्षे आषाढ पद मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ रविवासरे प्रजापति सवत्सरे लिखित रामराम स्वामीनो श्री देउलग्रामे शुभस्थाने श्री मूलसंघे सेनगणे पुष्करगणेनाम्ना श्रीवृषभसेनान्वय पट्टावली श्री जिनसेन भट्टारक तत्पट्टे भट्टारक श्री समन्तभद्र साह श्री अर्जुन सुत रत्नकेश लिखित माइ श्री जयवत सा. मातापशाद कुक्षे जन्म वन ज्ञाती बघेरवालान् गोत्र साहूल ।

विशेष—इसका दूसरा नाम रामसीतारास । रामचन्द्र रास भी है ।

६२०४. रामरास—माधवदास । पत्रसं० ३६ । ग्रा० १०½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७६८ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२०५. रुक्मिणिहरणरास—रत्नभूषणसूरि । पत्र सं० ३-६ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७२१ । अपूर्ण । वेष्टन स० २४१/७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्थ का अन्तिम भाग एव प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रावण वदि रे सुन्दर जाणी कि वली एकादशी रास
सूरथ माहि रे एह रचना रची जिहा आदि जिन जगदीश
जे नर ए निरे भणिसि भणावसि तेहनि घर मगलाचार
श्री रत्न भूषण सूरीवर इम कहिसी आदि जिणद जयकार ।

इति श्री रुक्मिणी हरण समाप्ता ।

प्रशस्ति—संवत् १७२१ वर्षे वैशाख सुदी १३ सोमे श्री सागवाडा सुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे देवेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये श्री मुनि धर्मभूषण तत् शिष्य ब्र. बाघजी लिखित ।

६२०६. रोहिणीरास—ब्र०जिनदास । पत्रस० २४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी । विषय-रास । र० काल × । **ले०काल** स० १६८२ । पूर्ण । वेष्टन स० २८५-१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६८२ वर्षे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे चतुर्थी सोमवासरदिने लिखितोयं रास । श्री मूलसंघे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० वादिचन्द्र तत्पट्टे श्री महीचन्द्रणो शिष्य घासीसाह पठनार्थं ।

६२०७. वर्द्धमान रास—वर्द्धमानकवि । पत्र स० २३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल स० १६६५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२०८. विज्जु सेठ विजया सती रास - रामचन्द । पत्रस० २-५ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय –कथा । र०काल स० १६४२ । ले० काल स० १७४५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०२-६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

६२०९. व्रतविधानरासो—दिलाराम । पत्रस० २५ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल स० १७६७ । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

विशेष—ब्राह्मण भोपतराम ने माधोपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६२१० प्रति स० २ । पत्रस० २४ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल स० १८९४ मगसिर सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६२११. शिखरगिरिरास— × । पत्रसं० १३ । आ० १०½×५¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— माहात्म्य । र०काल × । ले० काल स० १९०१ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२१२ शीलप्रकासरास—पद्मविजय । पत्र स० ४९ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल स० १७१७ । ले० काल स० १७१९ । पूर्ण । वेष्टनस० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

६२१३. शीलमुदर्शनरास— × । पत्र स० १५ । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल । अपूर्ण । वेष्टन स० ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

६२१४. श्रावकाचाररास—जिणदास । पत्र सं० १३६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विजय—आचार शास्त्र । र०काल स० १६११ भादवा सुदी १३ । ले०काल सं० १७८३ माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४-२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—श्रीमत काष्ठा सगे मग्रामसि वारी साह ग्रदेसीध भार्या ग्रग्रुथदेभी लहोडा (लुहाडिया) गोत्रे सुत थानसिंह कर्मक्षयार्थ सामगिरपुर मध्ये श्री मल्लिनाथ चैत्यालये १० न्यास केशर सागर लिखी—ग्रामोर का रपा ३॥) साडा त्रण बैठ्या छैज्या।

६२१५. श्रीपालरास—ब्र०जिनदास । पत्रस० ३७ । ग्रा० १०$\frac{3}{8}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-राजस्थानी। विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल स० १६१३ मंगसिर बुदी १२ । वेष्टन सं० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन ग्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—संवत १६१३ वर्षे मगसिर बुदि १२ सनौ लख्यत बाई ग्रमरा पठनार्थं ।

६२१६. प्रति सं० २ । पत्रस० ३३ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनस० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६२१७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३६ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८२ फागुन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७-३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १८२२ वर्षे फागुन सुदी ५ दिन गुरुवासरे नगर भीलोडा मध्ये शांतिनाथ चैत्यालये भ० श्री रत्नचद तत्पट्टे भ० श्री देवचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री १०८ श्री धर्मचन्द तत् शिष्य प० सुखराम लिखित ।

६२१८. श्रीपालरास—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र स० १२-४७ । ग्रा० ६ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल स० १६३० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

६२१९ प्रति सं० २ । पत्रस० २१ । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १७५८ सावरण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६२२०. श्रीपालरास—जिनहर्ष । पत्र स० ३१ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १७४२ चैत्र बुदी १३ । ले० काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—झुंझनू मे लिखा गया था ।

६२२१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२२२. प्रति स० ३ । पत्र सं० ५६ । ले०काल स० १८६२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२२३. श्रुतकेवलिरास—ब्र०जिनदास । पत्र सं० ३९ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७६१ फाल्गुन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली, कोटा ।

६२२४. श्रेणिक प्रबन्ध रास—ब्रह्मसंघजी । पत्र स० ६३ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल स० १७७५ । ले०काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३९-१६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६२२५. श्रेणिकरास—ब्रह्म जिनदास । पत्रसं० ६२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल सं० १७७० । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति - संवत् १७७० प्रवर्तमाने असाढ सुदी २ गुरुवासरे भ० श्री सकलकीर्ति परम्परान्वये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे भ० श्री विजयकीर्ति विजयराज्ये श्री अमदाबाद नगरे श्री राजपुरे श्री हुबड वास्तव्य हुंबडज्ञातौ उत्रेस्वर गोत्रे साह श्री ५ धनराज कसनदास कोटडिया लखित ।

६२२६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७६० भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२२७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ४० । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल सं० १७६८ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—पत्र ३८ से पोषधरास दिया हुआ है । ले० काल सं० १७६६ काती सुदी १५ है ।

६२२८. श्रेणिकरास—सोमविमल सूरि । पत्र सं० २६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल सं० १६०३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० । ६६-६ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—२६ से आगे के पत्र नही है । प्रशस्ति दी हुई है ।

प्रारम्भ—

सकल ऋद्धि मंगल करण, जिण चउवीस नमेवि ।
ब्रह्मा पुत्री सरसती माय पय पणमेवि ॥१॥
गोयम गणहर नइ नमु विघन विणासण हार ।
सोहम स्वामि नमु सदा, जसु शाखा विस्तार ॥
सार सदा फल गुरु तणा, दुइं अविचल पट्ट ।
अनुक्रमि पचावन्न मइ, जसु नामिइ गट्टगट्ट ॥३॥
हेम विमल तणु दीपतु, श्री हेम विमल सूरिंद ।
तेह तणो चलणे नमी, हीयइ धरी आणंद ॥४॥
चंद परिचंडती कला, लमइ जेइ नइ नामि ।
सोभाग हरिष सूरिंद वर, हरषिउ तासु प्रणामि ॥५॥
मूरख अक्षर ज कदइ, ते सवि सुगुरु पसाय ।
वर्ण मात्र जिणि सीखविउ, तेहना प्रणमु पाय ॥

वस्तु—

सफल जिणवर २ चलण वदेवि ।
देवि श्री सरसति तणा पाय कमल बहुभक्ति जुत्तउ
प्रणमी गोयम स्वामि वर सुगुरुदाय, पय कमलि रत्तउ
श्रेणिक राजा गुणनिलु निर्मल बुद्धि विशाल ।
रचि सुरासहुं तेह तणु सुणिज्यो मति हरसाल ॥

अन्तिम—

तप गछ नायक गणधरु एहा, सोम सुन्दर सूरि राय ।
तस पटि गछपति वेद सूं एमा, सुमति सुन्दर सूरि पाय ।।
तसु शाखा मोहा करू एमा रत्नशेखर सूरिंद ।
तस पट गयग दीपावता एमा लिखिमी सागर सूरिचंद ।।
सुमति साधु सुरीपद एमा, अजमाल गुरु पाट ।
सोमागी सोहामणी एठा ए महा, जसु नामिइ गह गटसुं
हेम परिइ जगवल्लहु एगए मा श्रे. हेमविमल सूरि ।
सोभाग हरस पाट धर मा नामि सपद भूरि सु ।।
सोम विमल सूरि तास पाटि मा, पामी सु गुरु ए साय ।
श्री वीर जिनवर मधी एमा गायु श्रेणिक राज ।।
भुवन आकाश हिम किरण मा सवत् १६०३ इणि अहि नाणि सु ।
मादव मास सोहामणइ एमा, पडेवि चडिउ प्रमाणि ।
कुमरपाल राय थापीउ एमा कुमर गिरपुर सारसु ।
साति जिणंद सुपसाउ लए मा, रचु रास उदार सु ।।७८।।
चुपई दूहा वस्तु गात मा, सुवि मिलीए तुं मान सुं ।
वसइ असी आगलां एमा, जाणु सहुइ जाण ।
अधिक उछउ मइ भणउ एमा जे हुइ रास मझारि ।।
ते कवि जन सोधी करी, आगम नइं अनुसारि ।।७९।।
जे नर नारी गाई सउं सुणसिइं आणी रग ।
ते सुख सपद पामइ स ए मा, र ग चली परिचग ।
जा लग इ मेरु मही धरु ए, मा जा लगि इ ससि तार ।
···· चउ जपु ए मा मगल जय २ कार ।।८०।।

६२२९. **षट्कर्मरास—ज्ञानभूषण** । पत्र स० १० । आ० ८½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२३०. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४ । आ० १२ × ५ इंच । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

६२३१. **सनत्कुमार रास—ऊदो** । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १६७७ सावण सुदी १३ । ले०काल स० १७६२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१६/६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—

सुख कर सती सर नमुं सद्गुरु सेव करूं निसदीस ।
तास पसायें अणमरु सिद्ध सकल मननी जगीस ।

सनत्कुमार सहामगाउ उत्तम गुण मणिनउठाण।
चक्रीसर चउथउ सही चतुर पणं सोहै सपराण।

× × × ×

ग्रन्तिम—

सोलहसइ सत्तरोत्तरइ सावण सुद तेरस ग्रवधार।
उत्तराष भणे संवेपथी विरत थकी कीधउ उद्धार ॥८२॥
पासचन्द गुरु पाय नमी हरष घरीए रचीयउ रास।
ऋषि ते ऊदौ इम कहै भणइ तिहां घरि मगल लछि निवास ॥८३॥
इति श्री सनत्कुमार रास समाप्तेति।
संवत् सतरं सो बासठै मेदपट्ट सुख ठाम।
वीरमजी सुप्रसाद थी लिखतं जटमल राम।

६२३२. **सीताशीलपताकागुण बेलि—ग्राचार्य जयकीर्ति।** पत्रसं० ३१। भाषा–हिन्दी। **विषय**–कथा। र० काल स० १६०४। ले० काल सं० १६७४। पूर्ण। वेष्टन स० ५३/१४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर। यह मूल पांडुलिपि है।

विशेष—ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम—राग ग्रासावरी—

सकल जिनेश्वर पद युगल,
ग्रानि हृदय कमलि धरु तेह।
सिद्ध समूह गुण ग्ररोपम मनि
प्रणमवि परवी एह ॥१॥
सूरीवर पाठक मुनी सहु
ग्रानि भगवती भुवनाधार
सरस सिद्धात समूहनि
जिन मुखा प्रगटी प्रतार ॥२॥
ग्रति लो ग्रनादि गणधर होय
ग्रनि ग्रमृत मिष्टा विस्तार।
ग्राणद उल्लहि सहुय बन्दवि
बेल्ल ज्ञान की कहि कवीसार

× × × ×

ग्रन्तिम—

सीता समरण जिनवर करी ग्रानि सहु लोक प्रति कहि वाच
पर पुरुष ज्यो मि इच्छयो होय तो ग्रगन्य प्रकट करे सांच।
इम कही जब झपलावीयु तब ग्रगन्य गई जल थामि।
जय जय शब्द देव उच्चरि पूजि प्रणमी सीता तणा पाय।
सुद्ध थई गुरु की दीक्षा लेइ तप जप करी धर्म ध्यान।
समाधि सन्यासि प्राणनि तजी स्वर्ग सोलमि थयो इन्द्र जाणि।

सागर बावीस तरण आयसु लही सुख समुद्र मीलत ।
आगलि मुगत्य वधु वर थई सुम अवत गुण क्रीडत ।।३१।।

दूहा—

सकलकीरति आदि सहु गुणकीर्ति गुणमाल ।
वादिभूषण पट्ट प्रगटियो रामकीर्ति विशाल ।।१।।
ब्रह्म हरखा परसादथी जयकीर्ति कही सार ।
कोट नगरि कोडामणि आदिनाथ भवतार ।।२।।
सवत् सोल चउ उत्तरि सीता तणी गुण वेल्ल ।
ज्येष्ठ सुदि तेरस बुधि रची भणी करँ गेल्ल ।।३।।
भाव भगति भणि सुणि सीता सती गुण जेह ।
जयकीरति सूरी कही सुख सूं ज्यो पलहि तेह ।।४।।
सुद्ध थी सीता शील पताका ।
गुण वेल्ल आचार्य जयकीर्ति विरचिता ।

सवत् १६७४ वर्षे आषाढ सुदी ७ गुरौ श्री कोट नगरे स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ आ० **श्री जयकीर्तिना स्वहस्ताभ्यां** लखितेयं ।

६२३३. सीताहरणरास—जयसागर । पत्रस० १२६ । आ० ६×५ इंच । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । र०काल स० १७३२ वैशाख सुदी २ । ले०काल स० १७४५ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इस के कुल ८ अधिकार है । अन्त मे रामचन्द्र का मोक्ष गमन का वर्णन है ।

ग्रंथ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर पद नमु सारद समरु माय ।
गणधर गुरु गौतम नमु जे त्रिभुवन वदित पाय ।।१।।
महीचन्द गुरु पद नमी रामचन्द्र घर नारि ।
सीता हरण जहु कहू साभल ज्यो नरनारि ।।२।।

अन्त मे ग्रन्थ प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

रामचन्द्र मुनि केवल थइ नो सिद्ध थयो भवतार जी ।
ते गुण कहते पार न पावे समरता सौख्य अपार जी ।।१।।
मूलसघ सरसति वरगच्छे बलात्कारगण सारजी ।
विद्यानदि गुरु गोयम सरसो प्रणमू बारोबार जी ।।२।।
गधार नगरे प्रत्यक्ष अनिशय कलियुगे छे मनोहारजी ।
तेह तणे पाट मल्लिभूषण विद्याना वहिपार जी ।।३।।
लक्ष्मीचन्द्र ने अनुक्रमे जाणो लक्ष्मण पडित कायजी ।
वीरचन्द भट्टारक वाणी सांभलतां सुखधाम जी ।।४।।
ज्ञानभूषण तस पाटे सोहै ज्ञान तणो भडार जी ।
लाड वंसे उद्योतज कीधो भव्य तणो आधार जी ।।५।।

प्रभाचन्द्र गुरू तेहने पट्टे वाणी अमी रसाल जी ।
वादिचन्द्र वादी बहु जीत्या घर सरसति गुणपाल जी ।।६।।
महीचन्द मुनिजन मनमोहन वाणी जेहे विस्तार जी ।
परवादीना मान मुकाव्या गर्व न करे लगार जी ।।७।।
मेरुचन्द तस पाटे सोहे मोहे भवियण मन्न जी ।
व्याख्यान वाणी अमीय समाणी साभला एके मन्नजी ।।८।।
गोर महीचन्द्र शिष्य जयसागर रच्यु सीता हरण मनोहार जी ।
नर नारी जे भण सुधासे तस घरे जय जय कार जी ।६।
हु बड बस रामा सतोषी रमादे तेहनी नार जी ।
तेह तणो पुत्र श्याम सुलक्षण पंडित के मनोहार जी ।।१०।।
तेह तणे आदर सीता हरण ए कीधू मन उल्लास जी ।
सांभलता गाता सुख होसी सीता सील विसाल जी ।।११।।
सवत् सत्तर बत्रीसा बरसे वैशाख सुदि बीज सार जी ।
बुधवारे परिपूर्णज रच्यु **सूरत** नयर मझार जी ।।१२।।
आदि जिणेसुर तणे प्रसादे पद्मावती पसाय जी ।
साभलता गाता ए सहुने मन मा आनन्द थाय जी ।।१३।।
महापुराण तणे अनुसारे कीधू के मनोहार जी ।
कविजन दोस म देसो कोई सोध ज्यो तमे सुखकार जी ।।१४।।
मुझ आलसूने उजमचढ्यु सारदा ये मति दीध जी ।
तेह प्रसादे ग्र थ ए कीधो श्याम दासेज सतीध जी ।।१५।।
सीता सील तणो ए महिमा गाय सहू नरनार जी ।
भाव धरी जे गाने अनुदिन तस घर मंगलचार जी ।।१६।।

दूहा —

भाव धरी जे भणे सुणे सीता सील विसाल ।
जयसागर इम उच्चरे पोहचे तस मन आस ।

इति भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्र० जयसागर विरचिते सीताहरणाख्याने श्री रामचन्द्र मुक्ति गमन वर्णन नाम षष्ठोधिकार समाप्ता । शुभ । ग्रंथाग्रथ २५५० लिखत सवत् १७४५ वैशाख सुदी १ गुरो ।

६२३४. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ८६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६-८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

६२३५. सुकौशलरास—वेणीदास । पत्र स० १७ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । **विषय**—चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १७२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० **११८-५७** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डू गरपुर ।

अन्तिम—

श्री विश्वसेन गुरू पाय नमी,
वीनवी ब्रह्म वेणीदास ।

परम सौख्य जिहा पायीइ,

तेथु मुगति निवास ॥

इति सकोशल रास समाप्त ,

प्रशस्ति—संवत् १७१४ वर्षे श्री माघ वदी ५ शुक्रे श्रीअहमदाबाद नगरे श्री शीतलनाथ चैत्यालये श्री काष्टासंघे नदीतट गच्छे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये भ० श्री विद्याभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री चंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री ५ राजकीर्त्तिस्तच्छिष्य ब्र० श्री देवसागरेन लिखापितं कर्मक्षयार्थं ।

६२३६. सुदर्शनरास—ब्र० जिनदास । पत्रसं० ४-१७ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—रास कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २१५ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ब्र० नेमिदास की पुस्तक है पंडित तेजपाल के पठनार्थ लिखी गयी थी ।

६२३७. प्रतिसं० २ । पत्रस० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । **ले०काल** सं० १७२६ माह सुदी २। पूर्ण । वेष्टनस० ३८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६२३८. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २-२० । आ० १०$\frac{3}{4}$×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६२ ३८ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मदिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष—आचार्य रामकीर्ति जी ने ईलचपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६२३९. सोलहकारण रास—ब्र० जिनदास । पत्र सं० ८ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२४०. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६१-१३६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६२४१. प्रति स० ३ । पत्र स० १० । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५७ १३६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६२४२. स्थूलभद्रनुरास—उदयरतन । पत्रस० ६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६० । **प्राप्ति स्थान—**भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२४३. हनुमंतरास—ब्र० जिनदास । पत्रस० ४१ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र०काल × । ले० काल स० १७०५ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ८१-४४ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १७०५ वर्षे भाद्रपद वदि द्वितीया बुधे कारजा नगरमध्ये लखीतं । श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० देवेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे भ० धर्मचन्द्र तत्पट्टे भ श्री धर्म-भूषण त. प. भ. देवेन्द्रकीर्त्ति त प. भ० कुमुदचन्द्र त. प. भ. श्री धर्मचन्द्र तदाम्नाये व्याघ्रेलवाल ज्ञाति पहर सोरा गोत्रे शा. श्री रामा तस्य पुत्र शा. श्री मेघा तस्य भार्या हीराई तयो पुत्र शा. नेमा तस्य भार्या जीवाई

तयोः पुत्र शा. श्री शीतलमेघा द्वितीय पुत्र शा. भोजराज तस्य भार्या सोनाई तयोःपुत्र शा. श्री मेघा ऐतेषा मध्ये श्री भोजा साक्षेण भट्टारक श्री पद्मनन्दि तच्छिस्य ब्र. श्री वीरनि पठनार्थ ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ हनुमान रास लिखापित शुभ भूयात् ।

६२४४ **प्रति सं० २** । पत्र स० ६७ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६२४५. हनुमंत कथा रास—ब्र. रायमल्ल । पत्र सं० ४१ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—रास । र०काल सं० १६१६ वैशाख बुदी ६ । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—उगाही करके मिती काती सुदी १ स० १६६१ को जयपुर मे लिखा गया ।

६२४६. **प्रति स० २** । पत्रस० ४२ । ग्रा० १२×६ इञ्च । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोक) ।

६२४७. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ६-३३ । ग्रा० १३ × ७ इञ्च । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वे० स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—फागी मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

६२४८. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ३४ । ग्रा० १२ × ६ इच । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष ग्योवक्स ने फागी मे प्रतिलिपि की थी ।

६२४९. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० १०५ । ग्रा० × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

६२५०. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ८१ । ग्रा० × । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वेष्टनसं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

६२५१. **प्रति सं० ७** । पत्रस० ८३ । ले० काल १६२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

६२५२. **प्रति सं० ८** । पत्रस० ३७ । ले०काल स० १८८६ ग्रासौज बदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे लिखा गया था ।

६२५३. **प्रतिसं० ९** । पत्र स० ५४ । ले०काल सं० १९५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२५४. **प्रतिसं० १०** । पत्रस० ४४ । ग्रा० ६×५ इञ्च । ले०काल सं० १७५२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

६२५५. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० ८४ । ग्रा० ८ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—गुटका के आकार मे है। पत्र ७९ तक हनुमान चौपई रास है तथा आगे फुटकर पद्य हैं।

६२५६. प्रति सं० १२। पत्रसं० ४५। आ० ११½×६½ इञ्च। ले० काल सं० १९१८ भादवा सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

६२५७. प्रति सं० १३। पत्रस० ६७। आ० ८½×५½ इञ्च। ले०काल सं० १८१२ चैत बुदी १४। पूर्ण। वेष्टनस० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—वैर ग्राम मध्ये लिखित। अंतिम पाठ नही है। पद्य स० ८७० है पत्र स० ६८–७० तक पंच परमेष्टी गुण स्तवन है।

६२५८. प्रति सं० १४। पत्र स० ५९। आ० १०¾×५ इञ्च। ले० काल स० १८२९। पूर्ण। वेष्टन सं० १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली।

विशेष—हीरापुरी मे लालचन्द ने लिखा था।

६२५९. प्रति स० १५। पत्रस० ४०। आ० १०¾ × ७¾ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—२५–२६ वा पत्र नही है।

६२६०. प्रति सं० १६। पत्र स० ४७। आ० ९ × ५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

६२६१. प्रति सं० १७। पत्र स० ४३। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल स० १८९२ वैशाख बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ६९/३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

६२६२ प्रति सं० १८। पत्र स० ५६। आ० १०×६¾ इञ्च। ले० काल स० १९२८ आसोज वदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ४५। **प्राप्ति स्थान**—सौगाणी दि० जैन मदिर करौली।

विशेष—बगालीमल ने देवाराम से करौली नगर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

६२६३. प्रति सं० १९। पत्रस० ७०। आ० १२×४ इञ्च। ले०काल स० १८३७। पूर्ण। वेष्टनस० ४४६–३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—गाव स्वामी मध्ये लिखित। प० जसरूपदास जी।

६२६४. प्रति सं० २०। पत्रस० ७६। आ० ७½×५½ इञ्च। ले०काल स १८१५। पूर्ण। वेष्टनसं० २०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर।

—— ० ——

विषय -- इतिहास

६२६५. उत्सव पत्रिका— × । पत्रस० २ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पत्र लेखन इतिहास । र०काल × । ले०काल स० १९३० । पूर्ण । वेष्टनस० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—सागत्वपुर की पत्रिका है ।

६२६६. कुन्दकुन्द के पांच नामों का इतिहास — × । पत्र स० ६ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— इतिहास । र०काल × । ले० काल १९६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—इन्दौर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६२६७. कुलकरी— × । पत्रस० २४ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कुलकरो का इतिहास । र० काल × । ले० काल सं० १८०५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२०-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष—उदयपुर मे लिखा गया था ।

६२६८. गुरावली— × । पत्रस० २६ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—इतिहास । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२६९. गुर्वावलीसज्झाय— × । पत्र स० १० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—इतिहास । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२७०. ज्ञातरास—**भारामल्ल** । पत्रसं० २४ । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

विशेष—सघाधिपति देवदत्त के पुत्र भारामल्ल थे ।

६२७१. चौरासी गोत्र विवरण— × । पत्र स० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले०काल १८९९ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२७२. प्रतिसं० २ । पत्र सख्या ६ । आ० ११×९ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—चौरासी गोत्र के अतिरिक्त वश, गांव व देवियों के नाम भी हैं ।

६२७३. चौरासी जयमाल (माला महोत्सव)—**विनोदीलाल** । पत्र स० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६२७४. **चौरासीजाति जयमाल**— ×। पत्रसं० ७। आ० ७३/४×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १८६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६२७५. **चौरासी जाति की विहाडी**— × । पत्रस० ३। आ० १०१/२×५ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—चौरासी जातियों की देवियो का वर्णन है।

६२७६. **जयपुर जिन मंदिर यात्रा—पं० गिरधारी**। पत्र स० १३। आ० ६३/४×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—यात्रा वर्णन (इतिहास)। र०काल ×। ले० काल स० १६०८। पूर्ण। वेष्टन स० ५३६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६२७७. **तीर्थमाला स्तवन**— ×। पत्रस० ३। आ० १०१/२ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर

विशेष—सं० १५२६ वर्षे माघ बुदी ६ दिने शुक्रवारे लिखित।

६२७८. **निर्वाण काण्ड गाथा**— ×। पत्रस० ४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—इतिहास। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११-१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

६२७९. **प्रतिसं० २**। पत्रस० २। आ० १११/२×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

६२८०. **निर्वाण कांड भाषा—भैया भगवतीदास**। पत्रसं० ५। आ० ११×५१/२ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—इतिहास। र०काल स० १७४१। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—प्राकृत निर्वाण काण्ड की भाषा है।

६२८१. **पद्मनंदिगच्छ की पट्टावली—देवाब्रह्म**। पत्र स० ७। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३४२/४१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर।

विशेष—रचना निम्न प्रकार है—

विकसी भव्य पकज दर्श हथि गुरु इन्द्र समान ए जाणीएजु।
नदीनाथ मुतापति पुत्र विकट कुमिल हथि विस आणीएजु।
अज्ञान कि अध निकदन कुं एह ज्ञान कि भानु वरवाणी एजु।
देवजी ब्रह्म वाणी वदि गछ नायक पद्मनंदि जग मानियेजु ॥१॥
व्याकरण छद अलक्षिति काव्य सुतर्क पुराण, सिद्धात परा।
नवतेज महाव्रत पचसमिति कि आइपरे चरण अमरा।
ओर ध्यान किं ज्ञान गुमान नहि तजि लाभ लीय तरुण चीवरा।
रामकीर्ति पट्टोधर पद्मनंदि कहि देवजी ब्रह्म सेवो सुनरा ॥२॥

वादि गजेन्द्र तिहां जु भंडि जिहां पद्मनंदि मृगरंजन गजे ।
कौरव किचक त्याहाजु लडि ज्यहा भीम महा भड हाथ न बजे ।
रामकीर्ति के पट्टपयोज प्रबोदनकुं रविराज सुरजे ।
देवजी ब्रह्मवदि गच्छनायक सारदागच्छ सदा ए छाजे ॥३॥
वादि कुमत फणि दरवागापति बादिकरी सभमिह भयो है ।
वादि जलद समिरण ए गुरु वादिय वृंद को भेद लयो है ।
राय श्री सघ मिलि पद्मनदि कु रामकीर्ति को पट्ट दयो है ।
ब्रह्म भणे देवाजी गुरुजी याकूं इन्द्र नारद प्रणाम कियो है ॥४॥
राजगुरु पद्मनदि समोवर मेघ केउ नहि पावतहि ।
ताको निरतर चाहत चातक तोकु पाट जिन धावतहि ।
मेघ निरन्तर वरषत निरतु भारथि दानकि गाजतुहि ।
यो दान समिमुख सामतु गोर कल्याण मुनि गुण गावतहि ॥५॥
श्रीमूलसघ सणगार पद्मनदि भट्टारक सकलकीर्ति गुरुसार ।
भुवनकीर्ति भवतारक ज्ञानभूषण गुरुचग विजयकीर्ति सुभचन्द्र ।
सुमतिकीर्ति गुणकीर्ति बदो भवियण मनरगह तसपट्टे गुरु जाणिय ।
श्रीवादीभूषण यतिराय पु जराज इमि उच्चइं गुरु सेविनरपति पाय ॥६॥

पचमहाव्रतसार पचसमिति प्रतिपालि ।
गुप्तित्रय सुखकार मोह मोहा दूरि टारित ।
पचाचार विचार भेद विज्ञान सुजाणे ।
आगम न्याय विचारसार सिद्धांत बखाणे ।
गुणकीर्ति पट्टे निपुण श्री वादिभूषण बदो सदा ।
पु जराज पडित इम उच्चरे गुरुचरण सेवो मुदा ।
सबल निसाण घनाघन गर्जित माननी लाद जु मङ्गल गायो ।
विद्या के तेज रुदे धरि हेत कु उरवादिपाय बदन आयो ।
मेघराज के नाद जसि गुजरात तास जुगभानी को मान गमायो ।
वदे धर्मभूषण पद्मनदि गुरु पाटण माहि जुसामो करायो ।
एकरतावर पिर रहे करणी कथनी एक उर धरे ।
एक लोभ के कारण चारण मे एक मत्र धारि ।
म्येहमत फिरिहि एक स्यादिक नाम विकलडरि ।
यहे धर्मभूषण पद्मनंदि निकलक कु भूप प्रणाम करिहि ॥९॥

इसके आगे निम्न पाठ और हैं—

नेमिपच्चीसी	कल्याणकीर्ति	हिन्दी
चौबीस तीर्थंकर स्तुती	,,	,,

६२८२. पट्टावली—× । पत्रसं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—इतिहास । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—श्वेताम्बर पट्टावली है। संवत् १४६१ जिनवर्द्धन सूरि तक पट्टावली दी हुई है।

६२८३. **प्रतिसं० २**। पत्र स० २४। आ० ६½×५ इञ्च। ले० काल सं० १८३० सावन बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६ र। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष—श्वेताम्बर पट्टावली है।

६२८४. **प्रतिष्ठा पट्टावली**— × । पत्रसं० १८। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

६२८५. **भट्टारक पट्टावली**— × । पत्र सं० ४। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ६७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—सं० १०४ भद्राबहु से लेकर स० १८८३ भ० देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट तक का वर्णन है।

६२८६. **भट्टारक पट्टावली**— × । पत्र स० ३०। आ० ६॥ × ४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ४३४। **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—सवत् १६६७ से स० १७५७ तक के भट्टारको वर्णन है।

६२८७. **भट्टारक पट्टावलो**— × । पत्रस० २-८। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० स० ३८०-१४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

६२८८. **भट्टारक पट्टावली**—। पत्रस० १५। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० २८०-१११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६२८९. **मुनिपट्टावली**— × । पत्र स० ५५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० १५४८। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—संवत् ४ से सवत १८४० तक की पट्टावलि है।

६२९०. **प्रबंधचिन्तामणि—राजशेखर सूरि**। पत्रस० ६०। आ० १४×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत गद्य। विषय-इतिहास। र०काल × । ले० काल सं० १४०५ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० १२४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—ढिल्ली (देहली) मे मुहम्मद शाह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

६२९१. **प्रबध चिन्तामणि—आ० मेरुतुंग**। पत्रस० ४६। आ० १४×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-इतिहास। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

६२९२ **महापुरुष चरित्र—आ० मेरुतुंग**। पत्रसं० ५२। आ० १४×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-काव्य (इतिहास)। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

६२६३. **यात्रा वर्णन**— × । पत्रसं० ११ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-वर्णन । र०काल स० १६०६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६-४८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—गिरनार, महावीर, चौरासी, सौरीपुर आदि क्षेत्रों की यात्रा का वर्णन एवं उनकी पूजा बनाकर अर्घ आदि चढाये गये हैं।

६२६४. **यात्रावली**— × । पत्र स० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय—इतिहास । र० काल × । ले०काल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—१६३२ भादवा सुदी ६ की यात्रा का वर्णन है।

६२६५. **विक्रमसेन चउपई—विक्रमसेन** । पत्र स० ४७ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय-इतिहास । र० काल स० १७२४ कार्तिक । ले० काल स० १७५६ मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२६६ **विरदावली**— × । पत्र स० ५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—इसमे दिगम्बर भट्टारको की पट्टावली दी हुई है।

६२६७ **विरदावली**— × । पत्र स० ७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—इतिहास । र०काल × । ले० काल सं० १८३७ मार्गशीर्ष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सूरतिबिंदर (सूरत) मे लिखा गया था ।

६२६८. **वृहद् तपागच्छ गुरावली**— × । पत्र सं० १४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल स० १४६२ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—१४६६ तक के तयागच्छ गुरुओ का नाम दिया हुआ है। मुनि सुन्दर सूरि तक है।

६२६६. **वृहत्तयागच्छ गुर्वावली—मुनि सुन्दर सूरि** । पत्र संख्या ३ से ५५ । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल × ले०काल स० १४६० फागुन सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६१ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६३००. **शतपदी**— × । पत्र सं० २१-२४ । आ० १२ × ४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । र०काल × । ले०काल × । विषय-इतिहास । वेष्टन सं० ७०५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर

विशेष—श्वेताम्बर आचार्यों के जन्म-स्थान, जन्म-संवत तथा पट्ट संवत् आदि दिये है। सं. ११३६ से १४५४ तक का विवरण है।

६३०१. श्वेतांबर पट्टावली— × । पत्र सं० ५ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—महावीर स्वामी से लेकर विजयरत्न सूरि तक ६४ साधुओं का पट्ट वर्णन है ।

६३०२. श्रुतस्कंध—ब्र० हेमचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० १०×४ । इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६३०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । आ० १०½×४¾ । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६३०४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—पं० सुरजन ने प्रतिलिपि की थी ।

६३०५. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर उदयपुर ।

६३०६. श्रुतस्कध सूत्र—× । पत्रस० २९ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल स० १६६८ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बैर ।

विशेष – चपावनी नगर मे ऋषि मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

६३०७. श्रुतावतार— × । पत्र स० ५ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—इतिहास । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक) ।

६३०८. श्रुतावतार — × । पत्रस० ४ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय—इतिहास । र० काल × । ले०काल सं० १७०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८४/११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स वत् १७०६ वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे सप्तमी दिवसे अहिमदाबाद नगरे आचार्य श्री कल्याण कीर्ति तत् शिष्य ब्र० श्री तेजपाल लिखित ।

६३०९. श्रुतावतार—× । पत्र स० ४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१७/५०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

६३१०. भट्टारक सकलकीर्तिनुरास - ब्र० सामान । पत्र स० ११ । आ० ११ ×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१४/४१० । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग—

चउवीस जिणेसर प्रसादि
श्री भुवनकीर्ति नवनवलि नादि ।
जयवता सकल संघ कल्याण करए ।

इति श्री भट्टारक सकलकीर्तिनुरास समाप्तः । श्राविकाबाई पूतलि पठनार्थं ।

६३११. सम्मेदशिखर वर्णन— × । पत्रस० ४ । आ० १२$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल स० १९६२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रारंभ मे लघु सामायिक पाठ भी दिया है ।

६३१२. सम्मेदशिखरयात्रा वर्णन—पं० गिरधारीलाल । पत्रस० ७ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । र०काल सं० १८९९ भादवा बुदी १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

६३१३. सम्मेद शिखर विलास—रामचन्द्र । पत्रसं० ७ । आ० ८ × ५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल स० १९०४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५३/८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—प्रेमराज रावका ने प्रतिलिपि की थी ।

६३१४. संघ पगट्टक टीका - ब्र० जिनवल्लभ सूरि । पत्र स० २० । आ० ११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६३१५. प्रति सं० २ । पत्रस० २१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—उक्त मन्दिर ।

६३१६. संघपट्टप्रकरण । पत्र सं० ७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

६३१७. संवत्सरी-× । पत्रस० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—स० १७०१ से लेकर सं० १७४४ तक का वर्णन है । लिखित आर्या नगीना समत १८१७ वर्षे ।

विषय -- विलास एवं संग्रह कृतियां

६३१८. आगम विलास—द्यानतराय । पत्र स० ३६२ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सग्रह । र०काल सं० १७८४ । ले० काल स० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६-३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—कृष्णगढ मे श्वेताम्बर श्री कन्हीराम भाऊ ने प्रतिलिपि की थी। इसका दूसरा नाम द्यानत विलास भी है ।

६३१६. कवित्त— ×। पत्र सं० ६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६३२०. कवित्त—बनारसीदास । पत्रसं० १ । आ० १०×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय-फुटकर । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलना (बूंदी)

विशेष—दो कवित्त नीचे दिये जाते है —

कचन भडार पाय नैक न मगन हूजे ।
पाव नव योवना न हूजे ए बनारसी ।
काल अधिकार जाणें जगत बनारा सोई ।
कामनी कनक मुद्रा दुहु कू बनारसी ।
दोउ है विनासी सदैव तू है अविनासी ।
जीव याही जगतबीच पइडो बनारसी ।
याको तू सग त्याग कूप सू निकस भागी ।
प्राणि मेरे कहे लागी कहत बनारसी ।

× × × × ×

किते गिली बैठी है डाकिणी दिल्ली ।
इत मानकरी पति पडम सु ।
पृथ्वीराज कै सगी महाहित हिल्ली ।
हेम हमाऊ अकबर बब्बर ।
साहिजिहा सुभी कीनी है भल्ली ।
साहि जिहा सुखी मन रग ।

तउ विरची साहि औरंग मिल्ली ।
कोटि कटासु कहै तरुणी वै किते·······

६३२१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—समयसार नाटक के कवित्त है ।

६३२२. कवित्त—सुन्दरदास । पत्रस० ३ । आ० १०½×५ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी ।

विशेष—प० रतनचन्द के पठनार्थ लिखा गया था ।

६३२३. कवित्त एवं स्तोत्र संग्रह— × । पत्रस० ६० । आ० ११×५ इन्च । भाषा—हिन्दी काव्य । विषय—संग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—भजगोविन्द स्तोत्र, नवरत्नकवित्त, गिरधर कुंडलिया हैं ।

६३२४. गुणकरंड गुणावली—ऋषिदीप । पत्रस० ३१ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र०कालस० १७५७ । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ६७४** । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मिती आषाढ बुदी ११ स० १८१७ का श्रीमत श्री सकलसूरि शिरोमणि श्री मंडलाचार्य श्री १०८ श्री विद्यानंद जी तत् शिष्य प० श्री अवैरामजी लिपिकृत । शिष्य सूरि श्री रामकीर्ति पठनार्थं ।

६३२५ चमत्कार षट् पंचाशिका—महात्मा विद्याविनोद । पत्र स० ४ । आ० ११½×५½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विविध । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७८-१८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६३२६. ग्रंथसूची शास्त्र भंडार दबलाना—× । पत्रस० ६ । आ० २७×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सूची । र० काल × । ले०काल १८६६ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—बही की तरह सूची बनी हुई है ।

६३२७. चम्पा शतक—चम्पाबाई । पत्रस० २३ । आ० १०×८¾ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय— संग्रह । र०काल × । ले०काल सं० १६७५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६३२८. चेतनविलास -परमानन्द जौहरी । पत्रसं० १७० । आ० १२×७¾ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य-पद्य । विषय—विविध । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—ग्रंथकार के विभिन्न रचनाओं का संग्रह है । अधिकांश पद एवं चर्चायें हैं ।

६३२९. प्रति स० २ । पत्रसं० १७३ । आ० १२×८ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३३०. **चौरासी बोल**— × । पत्र सं० १० । ग्रा० ११$\frac{3}{4}$ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६-७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

६३३१. **जैन विलास—भूधरदास** । पत्रसं० १०५ । ग्रा० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—विविध । र०काल × । ले०काल सं० १८६६ माघ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—भूधरदास के विविध पाठों का संग्रह है । मिट्ठूराम ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करायी थी ।

६३३२. **ढालसागर—गुणसागर सूरि** । पत्र स० १२८ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—विविध । र०काल × । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टनस० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६६ वर्षे कात्तिक मासे शुक्ल मासे चतुर्दश्या तिथौ देवली मध्ये लिखितं ।

६३३३. **ढालसंग्रह—जयमल** । पत्र स० ३६ । भाषा-हिन्दी । विषय-फुटकर । र०काल× । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २०७/६६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

निम्न पाठो का सग्रह है—

१. परदेशीनी ढाल जयमल हिन्दी र० काल सं० १८७७ अपूर्ण ।

अन्तिम—

संवत अठारैसे सतोत्तरै रे बुद तेरस मास असाढ ।
सिघ प्रदेशीरायनी एक हीय सूत्र थी काढो रे ।।४६।।
पुज धनाजीप्रसाद थी रे तत् सिष भूधरदास ।
तास सिस जेमल कहै रे छोडे सलार नापसोरे ।
इति परदेशीनी सिद समाप्ता ।

२. मृगोलोढानी चरित्र जयमल हिन्दी ले०काल स० १८१५ अपूर्ण

इतिमरगालोढानो चरित्र समाप्ता ।

३. सुबाहु चरित्र जयमल हिन्दी अपूर्ण

६३३४ **दृष्टान्त शतक**— × । पत्रस० २३ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विविध । र० काल × । ले०काल स० १८४२ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पोथी पडित जिनदासजी की छै ।

६३३५. **दौलत विलास--दौलतराम** । पत्रस० २७ । ग्रा० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सग्रह । र०काल × । ले० काल स० १६६४ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

६३३६. **दौलत विलास—दौलतराम पल्लीवाल** । पत्रसं० ४३ । ग्रा० १२$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४१/११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष - दौलतराम की रचनाओ का संग्रह है।

६३३७. धर्मविलास—द्यानतराय। पत्र सख्या १७२ । आ० १४×७ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सग्रह। र० काल स० १७८१ । ले० काल स० १६३७ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिह (टोंक)।

विशेष—रामगोपाल ब्राह्मण ने केकडी मे लिखी थी।

६३३८. प्रतिसं० २। पत्र स० ४८ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल सं० १७८६ पौष बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६३३९. प्रति स० ३। पत्रस० १४० । आ० १३×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोक)।

६३४०. प्रतिसं० ४। पत्र स० २८७ । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८५८ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

६३४१. प्रतिसं० ५। पत्र स० २५५ । आ० ११×४⅞ इञ्च । ले० काल सं० १८८३ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—जयपुर नगर के कालाडेहरा के मन्दिर मे विजेराम पारीक सांभर निवासी ने प्रतिलिपि की थी।

६३४२. प्रति सं० ६। पत्र स० २६१ । आ० ४×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा।

६३४३ प्रतिसं० ७। पत्र स० ३८७। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष—भरतपुर मे लिखा गया था।

६३४४. प्रति सं० ८। पत्र स० १७० । आ० १२×६½ इञ्च। ले० काल स० १८२८ आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर।

विशेष—१४६ फुटकर पद्य तथा अन्य रचनाओ का संग्रह है।

६३४५. प्रति सं० ९। पत्रस० २७३ । आ० ११ × ५⅞ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

६३४६. प्रति सं० १०। पत्र स० २५० । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर हण्डावालो का डीग।

६३४७. प्रति सं० ११। पत्रसं० २७८ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर कामा।

६३४८. प्रति सं० १२। पत्र स० २३१ । आ० १०½×६ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

६३४९. प्रति सं० १३। पत्रसं० २६३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—बयाना में केशोदास कासलीवाल के पुत्र हिरदैराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में ग्रंथ लिखवाया था।

६३५०. प्रति सं० १४। पत्र सं० २६०। ले० काल स० १८०४ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ३३७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

६३५१. प्रति सं० १५। पत्रस० १६५। ले०काल सं० १८६७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—नानकराम ने भरतपुर में लिखी थी।

६३५२. प्रति सं० १६। पत्र सं० २६६। ले० काल सं० १८७७। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६३५३. प्रतिसं० १७। पत्रस० २०६। ले०काल स० १८७७ सावन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ४१०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—परमानन्द मिश्र ने धर्ममूर्त्ति दीवान जोधराज के पठनार्थ प्रतिलिपि की सावन सुदी ७ को।

६३५४. प्रति सं० १८। पत्रस० ७८। आ० १२½ × ७ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

६३५५. प्रति स० १९। पत्रस० २०१। आ० ११½×७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०१ **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

६३५६. प्रति सं० २०। पत्रस० १८१। आ० १२½ × ७½ इञ्च। ले०काल स० १९१२ माह सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ५६/८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

६३५७. प्रतिसं० २१। पत्रस० १७०। आ० १२½×८ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४८७। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

६३५८. प्रति स० २२। पत्रस० २५। आ० ६×६ इञ्च। ले० काल० सं० १९५५। पूर्ण। वेष्टनस० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

६३५९. प्रतिसं० २३। पत्र स० २०३। आ० ११½×७½ इञ्च। ले०काल स० १९३३ आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ८२-२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दौसा।

विशेष— जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

६३६०. प्रति स० २४। पत्र स० १५१। आ० १२½×६ इञ्च। ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनसं० १०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—नाथूलाल तेरापथी ने चिमनलाल तेरापथी से प्रतिलिपि करवाई थी।

६३६१. प्रति सं० २५। पत्र स० ३८। आ० १०½×८ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १२८-५४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

६३६२. नित्यपाठ संग्रह— × । पत्र सं० २५ । आ० १०×६½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पाठ संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैरणवा ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, सहस्रनाम-स्तोत्र, एव विषापहारस्तोत्र **भाषा** ।

६३६३. पद एवं ढाल—× । पत्र स० ७-२६ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—निम्न रचनाओ का मुख्यत: सग्रह है—

नेमि व्याहलो—हीरो हिन्दी । र० काल स० १८४० ।

विशेष—बूदी मे नेमिनाथ चैत्यालय मे ग्रंथ रचना की थी ।

सज्झाय – जैमल ,,

विशेष—कवि जैमल ने जालोर मे ग्रंथ रचना की थी ।

गपि जैमल जी कह जालोर मे है,

सूतर भापै सो परमाण है ।

पद—अजयराज हिन्दी

पद पदमराज गणि ,

६३६४ पद संग्रह—खुशालचन्द । पत्रस० ६ । आ० ६½×७ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैरणवा ।

६३६५. पद संग्रह—चैनसुख । पत्रस० ६ । आ० ११ × ८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—इसका नाम आत्म विलास भी दिया है ।

६३६६. पद संग्रह—देवाब्रह्म । पत्रस० ८६ । आ० १२ × ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पद सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत पद, विनती एव अन्य पाठो का सग्रह है ।

६३६७. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३६ । आ० १०×६½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६३६८. पद संग्रह—देवाब्रह्म । पत्रस० ५० । आ० ७×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पद संग्रह । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६३६९. पद संग्रह (गुटका)—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ६६ । आ० ८½×६½ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—गुटका सजिल्द है।

६३७०. पद संग्रह—हीराचन्द। पत्रसं० ३७। ग्रा० १३×५इञ्च। भाषा – हिन्दी। **विषय**—भजनों का सग्रह। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५७/४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष – ८० पदो का संग्रह है।

६३७१. पद संग्रह—×। पत्र सं० १३२। ग्रा० ५½×५ इच। भाषा- हिन्दी पद्य। विषय-पद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली (कोटा)।

विशेष—विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है।

६३७२. पद संग्रह। पत्र स० २ से ६८। ग्रा० १०½ × ५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष – प्रथम पत्र नही है। विभिन्न कवियो के पदों का वर्णन है।

६३७३. पद सग्रह। पत्र स०५–३४। ग्रा० ६ × ७ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

६३७४ पद संग्रह। पत्र स० २८। ग्रा० ६× ४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—किशनचन्द ग्रादि के पद हैं।

६३७५. पद संग्रह। किशनचन्द, हर्षकीर्ति, जगनराम, देवीदास, महेन्द्रकीर्ति, भूधरदास ग्रादि के पदो का सग्रह है। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा।

६३७६. पद संग्रह। पत्रस० ३४। ग्रा० ६ × ५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी, बू दी।

६३७७. पद सग्रह। पत्रस० ५७। ग्रा० ५ × ४ इञ्च। ले०काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० ७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा।

विशेष—ग्रंथ जीर्ण ग्रवस्था मे है तथा लिपि खराब है।

६३७८. पद सग्रह। पत्र स० ६२। ग्रा० ३½×३ इञ्च। ले० काल सं० १८६८ चैत्र बुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ७८। **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बू दी।

६३७९. पद संग्रह। पत्र स० ६६। ग्रा० १२×८½ इच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १६२१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—विभिन्न कवियो के पदों का सग्रह है।

६३८०. पद सग्रह। पत्र स० ६। ग्रा० ६¾×४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

६३८१. पद संग्रह। पत्रस० ६८। ग्र० १०½×४½ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २६७। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

६३८२. पद संग्रह । पत्रस० ६३ । भाषा–हिन्दी पद्य । श्रा० १०×४ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—ब्रह्म कपूर, समयमुन्दर, देवा ब्रह्म के पदो का सग्रह है ।

६३८३. पद संग्रह । पत्रस० ६० । भाषा–हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दौलतराम देवीदास ग्रादि के पदो का सग्रह है ।

६३८४. पद सग्रह । पत्र स० १६२ । भाषा–हिन्दी पद्य । ग्रा० ११×६½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—मुख्यतः निम्न कवियो के पदो का सग्रह है—
नवलराम, जगराम, द्यानतराय ग्रादि ।

६३८५. पद संग्रह । पत्र स० १६ । भाषा–हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—निम्न कवियो के पद एव रचनाए मुख्यत सग्रह मे है—

यशोदेवसूरि	पुरिसा दाणी पास जी भेटण अधिक उल्हास हे प्रभु ताहरं सनमुख जोडवं ग्रमृत नयण विकास ।।
गुणभद्रसूरि	नमस्कार महामत्र पत्र
राजकवि	उपदेश बत्तीसी
समयमुन्दर	पद वीतराग तेरा पाया सरण ।
गुणसागर	कृष्ण बलिभद्र सिज्झाय । मेघकुमार सिज्झाय ।
ग्रजित देवसूरि	पचेन्द्रिय सिज्झाय । पचबोल चौबीस तीर्थकर स्तवन ।
महमद	जीवमृत सिज्झाय ।
महमद	पद पद निम्न प्रकार है—

भूलो मन भ्रमरा काई भ्रमं भमं दिवसनं राति ।
मायानो बाध्यौ प्राणीयो भ्रमं परिमल जाति ।
कु भ काचो काया करिसी तेहना करो रे जतन्न ।
विणसता बार लागं नही निमल राखो मन्न ।।२।।
ग्र स्या डू गर जेवडी मरिबो पगला हेठि ।
धन रांचीनं काई मरो करिधो दंवनी वढि ।
कोना छोरु कोना वाछरु कोना माय नं बाप ।
प्राणी जावो छं एकलो सार्थं पुण्य व पाप ।।३।।
मूरिख कहै धन माहरो धोलं धान न खाय ।
बस्त्र बिना जाइ पैठिस्यो लखपति लाकड मांहि ।

लखपति छत्रपति सब गये गये लाखा न लाख ।
गरब करी गोखें बैसते भये जल बलि राख ।।६।।
भव सायर भव दुख भरयो तरिबो छै तेह ।
बिच मे बीहक सबल छै नर मे धमो मेह ।
उतर नथी प्राण चालिबो उतरि वोछै पार ।
श्रागैं हारम बगसियो सौबल लीज्यो लार ।।
मैहमद कहै वस्त्र वोहरी ये जो क्यू चालै श्राथि ।
लाहा श्रपणा ठगाहि ल्यै लेखा साधि हाथ ।

६३८६. पद संग्रह—× । पत्रस० २२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दीले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५३–× । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

६३८७. पद संग्रह—× । पत्रस० १८ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२७-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—नवल, भूधर, दीपचन्द, उदयराम, जादवराम, जगराम, धनकीर्ति, दास वसत, लालचन्द जोधा, द्यानत बुधजन, जिनदास, घनश्याम, भागचन्द, रतनलाल आदि कवियो के पद है ।

६३८८. पद संग्रह—× । पत्रस० ६६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२०-१५७ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६३८९. पद संग्रह—× । पत्र स० १ । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ८१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—नयन विमल, विमल विजय, शुभचन्द्र, ऋषभस्तवन, ज्ञान विमल । गोडी पार्श्वनाथ स्तवन रचना सवत् १६८२ है ।

६३९०. पद संग्रह—× । पत्र स० ८ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—बनारसीदास जोधराज आदि कवियो के नीति परक पद्यो का सग्रह है ।

६३९१. पाठ संग्रह— × । पत्र सं० ७० । आ० ११ × ५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सग्रह । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—विभिन्न पाठो का सग्रह है ।

६३९२. पाठ संग्रह—× । पत्र स० २० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष--भाव पूजा, चैत्य भक्ति, सामायिक आदि है ।

६३९३. पाठ संग्रह—× । पत्र स० १२७ से १७६ । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । **अपूर्ण** । **वेष्टनसं०** ६१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६३९४. पाठ संग्रह--× । पत्रस० १२ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—त्रिभुवन गुरु स्वामी की वीनती, भक्तामर स्त्रोत्र भाषा, कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा, पंच मंगल आदि पाठ हैं।

६३९५. पाठ संग्रह—× । पत्र सं० ५८–११३ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६३९६ पाठ संग्रह—× । पत्र सं० २३६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	पत्र १८४	अपूर्ण ।
उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	,,	८	,,
षट् पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	२७	,,
कर्मकाण्ड	नेमिचन्द्राचार्य	,,	४	,,
कलिकुण्डपूजा	,,	संस्कृत	५	,,
चौबीस महाराज पूजा	,,	हिन्दी	११	,,

६३९७. पाठ संग्रह—× । पत्रसं० १५ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, भक्तामर स्तोत्र एवं गोम्मट स्वामी पूजा हिन्दी) आदि है ।

६३९८ पाठ संग्रह—× । पत्रसं० २१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. भक्तामर स्तोत्र २–कल्याण मन्दिर स्तोत्र ३–दानशील तप भावना कुलक (प्राकृत)

हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

६३९९. पाठ संग्रह—× । पत्रसं० ११० । आ० ८×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५/८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१– नरक वर्णन	पत्र ५
२– समवशरण वर्णन	१३
३– स्वर्ग वर्णन	१४
४– गुणस्थानवर्णन	१२
५– चौसठ ऋद्धि वर्णन	१७
६– मोक्ष सुख वर्णन	१६
७– द्वादश श्रुत वर्णन	१७
८– अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन	६

६४००. पाठ संग्रह—× । पत्रसं० १६० । आ० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—विभिन्न पाठों का संग्रह है ।

६४०१. पारस विलास—पारसदास निगोत्या। पत्रसं० २७७ । ग्रा० ११½×८ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पारसदास की रचनाओं का संग्रह। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६४०२. पार्श्वनाथ कवित्त—भूधरदास। पत्रसं० ३। ग्रा० १०½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्फुट । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १००६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर ग्रजमेर ।

६४०३. बनारसी विलास—सं० कर्त्ता जगजीवन। पत्रसं० ६४ । ग्रा० १०×६इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। संग्रह काल सं० १७०१। ले०काल सं० १६५६। पूर्ण। वेष्टनसं० १५७१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—बनारसीदास की रचनाओं का संग्रह है।

६४०४ प्रति सं० २। पत्र सं० १३३। ग्रा० ६½×७ इञ्च। ले०काल सं० १८२६ वैशाख सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ६३३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

६४०५. प्रति सं० ३। पत्रसं० ११६। ग्रा० १२×५ इञ्च। ले०काल सं० १७४३। पूर्ण। वेष्टन सं० ११७/७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

६४०६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २-१०६। ग्रा० ११×४½ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन सं० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर दबलाना (कोटा)।

६४०७. प्रति सं० ५। पत्रसं० १६२ । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६४०८. प्रतिसं० ६। पत्रसं० १३५। ग्रा० ११ × ७½ इञ्च। ले०काल सं० १७४३ श्रावण सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग।

६४०९. प्रति सं० ७। पत्र सं० १३१। ग्रा० १२ ×५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान जी कामा।

६४१०. प्रति संख्या ८। पत्रसं० ७८। ग्रा० १४×८½ इञ्च । ले०काल सं० १८८६ असाढ सुदी १२। पूर्ण । वेष्टन सं० १०; । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—कामबन (कामा) मे प्रतिलिपि हुई थी।

६४११. प्रति सं० ९। पत्र सं० ६५। ले०काल सं० १८६३। पूर्ण। वेष्टनसं० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

६४१२. प्रति सं० १०। पत्र सं० १४७। ग्रा० १०×४½ इञ्च। ले०काल सं० १८६० फागुन बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० २५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—कोटा नगर मध्ये वासपूज्य जिनालये पंडित जिणदास उपदेशात् लिखापित खंडेलवालान्वये कासलीवाल गोत्रे धर्मज्ञ साह जैतरामेण स्वपठनार्थं।

६४१३. प्रतिसं० ११। पत्र सं० ४६। ग्रा० १०×५ इंच । ले० काल सं० १७८७ ग्राषाढ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)।

६४१४. **प्रतिसं० १२।** पत्रसं० १४८ । आ० ६×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मंदिर बयाना ।

विशेष—१२४ पत्र के आगे रूपचन्द के पदों का संग्रह है ।

६४१५. **प्रति सं० १३** । पत्रसं० ५४ । आ० १३½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १६०६ फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोठ्यों का नैणवा ।

विशेष—साह पन्नालाल अजमेरा ने प्रतिलिपि की थी ।

६४१६. **प्रति सं० १४** । पत्रसं० १६४ । आ० १० × ७ इञ्च । ले० काल स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का आंवा (उणियारा) ।

विशेष—नरसिंहदास ने लिखा था । समयसार नाटक भी है ।

६४१७. **प्रति सं० १५ ।** पत्र स० ६१ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६४१८. **प्रति स० १६** । पत्रस० १०२ । आ० १०½× ५ इञ्च । ले०काल सं० १८८७ कार्त्तिक बुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—श्योलाल जी ने पन्नालाल साह से प्रतिलिपि कराई थी ।

६४१६ **प्रतिसं० १७** । पत्र सं० ६६ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

६४२०. **प्रतिसं० १८ ।** पत्र स० ६५ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टनस० ५२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

६४२१. **प्रति सं० १९ ।** पत्रस० ७६-८० । आ० ६×५½ इञ्च । ले०काल स० १७३८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६-५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६४२२. **बुद्धि विलास—बखतराम साह ।** पत्र स० ८६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—विविध । र० काल स० १८२७ । ले०काल × । वेष्टन स० ८२७ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६४२३ **बुधजन विलास – बुधजन ।** पत्रस० १०० । आ० १२¾×७¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल स० १८६१ काती सुदी २ । ले०काल स० १६५५ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६४२४. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ७१ । र०काल स० १८७६ कार्त्तिक सुदी ५ । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६४२५. **प्रति सं ३** । पत्रस० ८४ । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६४२६. **प्रतिसं० ४ ।** पत्रसं० ७४ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६४२७. **ब्रह्म विलास —भैया भगवंतीदास।** पत्र सं० १३३। आ० १४×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सग्रह। र० काल ×। ले० काल स० १६१७ आसोज बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ३१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिह (टोक)।

विशेष—गोपाचल (ग्वालियर) मे प्रतिलिपि हुई थी।

६४२८. **प्रति सं० २।** पत्र स० १६६। ले० काल स० १८७६ प्र० आसोज सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

६४२९. **प्रति सं० ३।** पत्र स० १४८। ले० काल स० १८१४ कार्तिक सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० १५०। **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

६४३०. **प्रति सं० ४।** पत्र स० १०१। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

६४३१. **प्रतिसं० ५।** पत्रस० ६४। र० काल १७५५। ले० काल स० १८६५। पूर्ण। वेष्टनसं० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—सुखसीराम कासलीवाल वेरका ने भरतपुर मे महाराजा बलवतसिह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी। भरतपुर वासी दीवान गजसिह अपने पुत्र माधोसिह गौत्र वैद्य के पठनार्थ लिपि कराई।

६४३२. **प्रतिसं० ६।** पत्र स० १०२। आ० १३ × ७½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

६४३३. **प्रतिसं० ७।** पत्र स० १४४। आ० १२½×७½ इञ्च। ले० काल स० १६२६ पोष बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना।

विशेष - ठाकुरचन्द ने माधोसिह के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

६४३४. **प्रति स० ८।** पत्रस० ६५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना।

६४३५. **प्रतिसं० ९।** पत्र स० २३४। आ० ६½ × ६ इञ्च। ले० काल स० १८८२ आषाढ सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

विशेष— कामा निवासी ऋषभदास के पुत्र सदासुखजी कासलीवाल ने सवत् १८८२ मे प्रतिलिपि की थी।

६४३६. **प्रतिसं० १०।** पत्र स० १००। आ० १३×६ इञ्च। ले० काल स० १८८२ फागुण सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ।

विशेष—नैणवा मे ब्राह्मण गिरधारीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

६४३७. **प्रति सं० ११।** पत्र स० १०७। आ० १४½×८ इञ्च। ले० काल स० १८६६ पोष सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष - देवकीनन्दन पोद्दार ने प्रतिलिपि की थी।

६४३८. **प्रति सं० १२।** पत्र स० २२०। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल स० १६१७ भादवा सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६४३९. **प्रतिसं० १३।** पत्र स० १५८। आ० १२×७ इञ्च। ले० काल स० १९४१ भादवा बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

६४४०. **प्रति सं० १४** । पत्रस० २०० । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२०० से आगे पत्र नही है ।

६४४१. **प्रति सं० १५** । पत्रस० १२२ । आ० १०३/४ × ५३/४ इञ्च । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनस० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

उदयपुर सेर वसौ सुमथान , दीपै उत्तम सुरग समान ।
ब्रह्म विलास ग्रथो भाष, लीखीयो ता माही जिन खास ।
लिखापित साहा बेणीचन्द, ज्ञान चीतोडा नाम प्रसिद्ध ।
वाचनार्थ भव्य जीवनताई, मेलो जिन मन्दिर भाई ।
सवत् अष्टादश शत जान, ता ऊपर नीन्याण बखान ।
अगहन सुदी दशमी सार पुरो लिखो रजनी पतिवार ।।

६४४२. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० २३३ । आ० ७१/२ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टनस० १०२/७६ ।

विशेष—नन्दराम बिलाला ने प्रतिलिपि की थी ।

६४४३ **प्रतिसं० १७** । पत्र स० १३७ । आ० १२ × ५१/२ इञ्च । ले० काल स० १८५८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—नाथूलाल तेरहपंथी ने चिम्मनलाल तेरहपथी से प्रतिलिपि करवाई थी ।

६४४४ **प्रति सं० १८** । पत्रस० २२८ । आ० ६३/४ × ४३/४ इञ्च । ले० काल स० १८३४ कार्त्तिक सुदी ५। पूर्ण । वेष्टनस० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६४४५. **प्रतिसं० १६** । पत्र स० १८५ । आ० १० × ५३/४ इञ्च । ले०काल १६०८ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६४६४. **प्रतिसं०२०** । पत्र स० १२५ । आ० १२१/२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १६१३ भादवा सुदी २ । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष—चैद्यपुर मे लिखा गया था ।

६४४७. **प्रतिसं० २१** । पत्र स० ५७-११४ । आ० ११ × ४ इच । ले० काल स० १८५२ आषाढ बुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा ।

६४४८. **प्रतिसं० २२** । पत्र स० २११ । आ० ६ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १८५४ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—रतनचन्द पाटनी ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

६४४६. **प्रतिस० २३** । पत्रस० ५५ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल स० १७८७ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०१६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

६४५०. **प्रतिसं० २४** । पत्र स० २४४ । आ० १२ × ५३/४ इच । ले०काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—डीग में प्रतिलिपि की गई थी ।

६४५१. प्रति सं० २५ । पत्र सं० २१६–२४६ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १७६६ आसौज सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

६४५२. प्रतिसं० २६ । पत्रसं० १३२ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

६४५३. प्रति सं० २७ । पत्रसं० २०६ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल सं० १७६२ द्वितीय ज्येष्ठ सुदी । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

६४५४. प्रतिसं० २८ । पत्र सं० १४६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १८४० । पूर्ण । वेष्टन स० ६४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६४५५. प्रतिसं० २९ । पत्र स० ११७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८४५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५९-७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६४५६. प्रतिसं० ३० । पत्रस० १५५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४-२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६४५७. प्रतिसं० ३१ । पत्रस० १०१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । ले०काल स० १८७३ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६४५८. प्रतिसं० ३२ । पत्र स० २३५ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १९४१ माघ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

६४५९. प्रति सं० ३३ । पत्रस० ९६ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । ले० काल स० १९७७ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—जिल्द सहित गुटकाकार है ।

६४६०. प्रतिसं० ३४ । पत्र स० २०८ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १९२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६४६१. प्रतिसं० ३५ । पत्र स० २६५ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन स० २८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६४६२. प्रतिसं० ३६ । पत्रस० १६६ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल स० १७६६ भादवा सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बैर ।

विशेष—चौबे जगतराम ने प्रतिलिपि कराई थी ।

६४६३. भवानीबाई केरा दूहा—× । पत्र स० २-७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-राजस्थानी विषय—स्फुट । र०काल × । ले० काल स० १८८२ चैत्र सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

६४६४. **भूधर विलास—भूधरदास** । पत्र सं० ४६ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—संग्रह । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६४६५. **प्रति सं० २** । पत्र स० ६२ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६४६६. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ६३ । ले०काल स० १६५१ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६४६७. **प्रति सं० ४** । पत्रस० ८६ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १६०५ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—मिश्र रामदयाल ने फरुक नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

६४६८. **मनोरथमाला गीत—धर्मभूषण** । पत्रसं० ५ । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७०/४७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६४६९. **मरकत विलास—मोतीलाल** । पत्र स० १४८ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल १६८५ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष— प्रति सुन्दर है ।

६४७०. **माणकपद संग्रह—माणकचन्द** । पत्र स० २-५३ । आ० ११ × ६½ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पद । र०काल × । ले० काल स० १६५८ फागुण सुदी २ । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

६४७१ **मानबावनी**— × । पत्र स० २६ । आ० १२×४½ इंच । भाषा—पुरानी हिन्दी पद्य । विषय—स्फुट । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपथी दौसा ।

६४७२. **मानविनय प्रबंध**— × । पत्र स ७ । आ० १० × ४½ इच भाषा-पुरानी हिन्दी । विषय—स्फुट । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं. ४६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कोनो पर फटा हुआ है ।

६४७३. **यात्रा समुच्चय**— × । पत्र स० ४ । आ. ६×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय—विविध । र०काल × । ले.काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६४७४. **रत्नसंग्रह—नन्नूमल** । पत्र स. ६६ । आ. १३½ × ८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । र.काल सं. १६४६ मंगसिर सुदी ५ । ले०काल स० १६६७ चैत बुदी ४ । पूर्ण वेष्टनसं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—

प्रारम्भ—दोहा—

प्रथम वीर सन्मति चरण, दूतीया सारदा माय ।
नमू रतन सग्रह करन, ज्यो भववन नसि जाय ।।
ग्र थ समूह विचारते, तिनही के अनुसारि ।
रतन चुन इम कारने, पठत सुनत भव पार ।।२।।

अन्तिम—

शुभ सुथान मुहवतपुरा, जिला अलीगढ जान ।
शैली श्रावक जनन की, जन्म भूमि मुझ मान ।।८।।
मेंडू वासी श्रावक, जैसवाल कुल भान ।
वश इक्ष्वाक सु ऊपजे भोलानाथ प्रधान ।।६।।

चौपई—

सुत गोपालदास है तास, पुत्र युगल तिनके हम तास ।
अनुज गणेशीलाल वरवानि, दूजा भगवता गुरु मानि ।।
उर्फ लकव नन्नूमल कह्यो, जन्म सुफल जिन वच पढि भयो ।
भूल चूक धीमान सम्हार, अन्यमती लखि दया विचार ।।

सोरठा—

रतन पु ज चुनि लीन, पढौ पढ़ावौ सजन जन ।
कर्म वध हो क्षीन, लिखौ लिखावौ प्रीतिधर ।।
अब सपूर्ण कीन, सवत् सर विक्रम तनौ ।
युगल सहस मे हीन, अर्ध शतक चव मे मनौ ।।

गीतछंद—

मगसिर जु शुक्ला पचमी बुधवार पूर्वाषाढ के ।
दिन कियो पूरण रतन सग्रह शुभ सुवखानि के ।।
अनुमान अरु परिमान सारे है श्री जिनवानि के ।
अपनी तरफ से कुछ नही मै लिखा भविजन जानि के ।।

।। इति श्री रतन सग्रह समाप्त ।।

लिखत लाला परशादीलाल जैनी साकिन नगले सिकदरा जिला आगरा पोस्ट हिम्मतपुर मिती चैत कृष्णा ४ शनिवार सं० १६६७ विक्रम । रामचन्द्र बलदेवदास फतेहपुर वालो ने जैन मन्दिर मे चढाया हस्ते पं० हीरालाल आसोज सुदी ५ स० १६६७ ।

६४७५. लक्ष्मी विलास—**पं० लक्ष्मीचंद** । पत्रस० १२० । आ० १२½ × ७ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—संग्रह । र०काल × । ले० काल स० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—वैष्णव मत के विरोधी का खण्डन किया गया है

६४७६. विचारामृत संग्रह—× । पत्र स ६३ । आ० १०½ × ४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले. काल सं. १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं. २२० । **प्राप्ति स्थान**— दि. जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६४७७. **विचारसार षडशीति**—× । पत्र स. ३ । आ. १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । **विषय**—स्फुट । र०काल × । ले०काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टन स. ७४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि. जैन मन्दिर अजमेर ।

६४७८. **विनती संग्रह—देवब्रह्म** । पत्र सं० ७३ । आ० १०×६ इंच । भाषा—हिन्दी । **विषय**—स्तुति । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८७ । **प्राप्ति स्थान**— दि. जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

६४७९. **विनती संग्रह**—× । पत्रस० ३-१० । आ० १० ×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

वशेष—पा ठों का सग्रह है—

१—चउबीस तीर्थंकर विनती-जयकीर्ति । हिन्दी । पत्र ३ ५ आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारभ —

सकल जिनेश्वर प्रणमीया सरसती स्वामीए समरिमाय ।
वर्तमान चउबीसी जेह नव विधान बोलेहु तेह ।

अन्तिम—

काष्ठासघ नदी तट गच्छ यती त्रिभुवनकीर्ति सूरिश्वर स्वच्छ ।
रत्नभूषण रवितल गछपति सेन शुभकर मोहमती ।
जयकीर्ति सूरि पद धार हर्ष धरि करयु एही विचार ।
भणि सुणिजे भवीयणसार, ते निश्चतरसी समार ।।२।।

इति नव विधान चउबीसी तीर्थंकर वीनती सपूर्ण ।

२ परमानन्द स्तवन	स स्कृत	२५ श्लोक
३ बाहुबलीछद	वादिचन्द्र	हिन्दी

प्रारम्भ—

कोमल देश अयोध्या सोहि, राजा वृषभतण मनमोहि ।
धरि हो दीसि अनोपम राणी, रूप कलाघाती इन्द्राणी ।
जसोमति जाया भरतकुमार, बाहुबली सुनदा मल्हार ।
नीलजसा नाटिक विभग, वन्यु वैरागह चित्तिनिरज्य ।

अन्तिम—

सिद्ध सिद्ध युगती भरतार, बाहुबली करुसहु जयकार ।
तुभ पाये लागि प्रभाचन्द्र, वाणी बोलि वादिचन्द्र ।।६०।।

इति बाहुबली छद सपूर्ण ।

४ गुणत्तीसी भावना

अन्तिम—

भोगभलाजे नरलाहि हरषि जु देइदान ।
समकित विणा शिवपद नही जिहा अनत सुखठाम ।।

ए गुणत्रीसी भावना भणकि सुधु विचार ।
जे मन माही समरिसी ते तरसी ससार ।।३१।।

इति उगणतीसी भावना सपूर्ण

६४८०. **विनती संग्रह—देवाब्रह्म** —× । पत्र सं० १६ । ग्रा० ८३/४×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— स्तवन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—तीर्थंकरो की विनतियां हैं ।

६४८१. **विनती एवं पद संग्रह—देवाब्रह्म** । पत्र सं० ११३ । ग्रा० १०×४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—९९ पद एव भजनों का सग्रह है ।

६४८२. **विनती पद संग्रह—×** । पत्र सं० ४ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—ब्र० कपूर, जिनदास जगराम ग्रादि के पद हैं ।

६४८३. **विनती सग्रह—×** । पत्रस० ६ । ग्रा० ११३/४ × ५१/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियो का डूंगरपुर ।

विशेष—भूधर कृत विनतियों का सग्रह है ।

६४८४. **विवेक विलास—जिनदत्त सूरि** । पत्र स० १५-७० । ग्रा० १०१/२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दं. । विषय विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्यासिह (टोक)

६४८५. **वृंद विलास—कविवृन्द** । पत्र सं० १५ । ग्रा० १०× ४१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय कविवृंद की रचनाग्रो का सग्रह । र०काल × । ले०काल स० १८८२ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६४८६. **शास्त्रसूची**—× । पत्र स० १० । भाषा—हिन्दी । विषय—सूची । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१२-१५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६४८७. **शिखर विलास—लालचन्द** । पत्रस० ५७ । ग्रा० १०×६१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—महात्म्य वर्णन । र०काल स० १८४२ । ले०काल सं० १३४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०/१०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

६४८८. **श्लोक संग्रह—** × । पत्र स० ६ । ग्रा० १०×४१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—फुठकर । र० काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

६४८६. श्लोक संग्रह—×। पत्रसं० २४। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४०-१६५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष—विभिन्न ग्रंथो मे से श्लोक एवं गाथाएं प्रश्नो के उत्तर देने के लिए संग्रह की गई हैं।

६४६०. श्रावकाचार सूचनिका— × । पत्रस० ५। ग्रा० ११×४ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सूची। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनस० १४८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—श्रावकाचारो की निम्न सूची दी है।

१. रत्नकरण्ड श्रावकाचार	समन्तभद्र	श्लोक सं०	१२५
२. श्रावकाचार	वसुनन्दि	,,	५२६
३. चरित्रसार	चामुण्डराय	,,	७६५
४. पुरुषार्थसिद्धयुपाय	अमृतचन्द	,,	६६२
५. श्रावकाचार	अमितिगति	,,	१०५०
६. सागारधर्मामृत	आशाधर	,,	१२६२
७. प्रश्नोत्तरोपासकाचार	सकलकीर्त्ति	,,	१४६५

६४६१. यम विलास— × । पत्रस० १०। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। र०काल ×। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ४३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६४६२. शील विलास— × । पत्र स० २०। ग्रा० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल × । ले० काल स० १८३० चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० १२१६। प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६४६३. षट्त्रिंशति— × । पत्रसं० १०। ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय—विविध। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६३८। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६४६४. षट्त्रिंशतिका सूत्र— × । पत्र स० १-७। ग्रा०११×४ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—फुटकर। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १८२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

६४६५. प्रतिसं० २। पत्र स० ५। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० १८३/४२३। प्राप्ति स्थान— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—ब्र० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी।

६४६६. षट्पाठ— × । पत्र सं० ४६। ग्रा० १२×७ इन्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-संग्रह। र०काल ×। ले०काल स० १६३६। पूर्ण। वेष्टन सं० १३५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मदिर अलवर।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

दर्शन पच्चीसी, बुधजन छत्तीसी, वचन बत्तीसी तथा अन्य कवियों के पदों का संग्रह है।

६४९७. **सज्झाय एवं बारहमासा**— × । पत्र स० १ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्फुट । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६४९८. **सवैया--सुन्दरदास** । पत्रस० ६ । ग्रा० १०½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—२७ सवैया तथा ३३ पद्य हसाल छद के है ।

६४९९. **सारसंग्रह--सुरेन्द्रभूषण** । पत्र स० ७ । ग्रा० ९×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

६५००. **सुखविलास -जोधराज कासलीवाल** । पत्रस० २८२ । ग्रा० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सूक्ति सग्रह । र०काल स० १८८४ मगसिर सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३ २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६५०१. **प्रति सं० २** । पत्रस० ७७ । ग्रा० १३×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन स०** ३२/९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—कवि की विभिन्न रचनाओ का सग्रह है ।

६५०२. **संग्रह**— × । पत्रस० ६४ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पंचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष —जैन एव जैनेतर विभिन्न ग्रथो मे से मुख्य स्थलो का सग्रह है ।

६५०३. **सग्रह ग्रन्थ**— × । पत्रस० ७ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सग्रह । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—विविध विषयो के श्लोको का सग्रह है ।

६५०४. **संग्रह ग्रन्थ**— × । पत्रस० ९५ । ग्रा० १०×६½ इञ्च । ले०काल स० १९२० । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१. मदनपराजय   हिन्दी । अपूर्ण ।
२. ज्ञानस्वरोदय   चरणदास रणजीत   हिन्दी । पूर्ण । र०काल स० १८९९ ।

अन्तिम—

सुखदेव गुरु की दया सु साध तथा सुजान ।
चरणदास रणजीत ने कह्यो सरोदे ज्ञान ।।
डहरे मे मेरो जनम, नाम रणजीत बखानो ।
मुरली को सुत जान जाति दूसर पहचानो ।।

बाल अवस्था माहि वहुर दली मे आयो ।
रमति मिले सुखदेव नाम चरणदास कहायो ।।

इति ज्ञान सरोदो सपूर्ण सं० १८६६ को साल मे बरणायौ ।

भूलोय मे प्रतिलिपि हुई ।

३. बारह भावना   ४. अकृत्रिम वदना   ५. वज्र पजर स्तोत्र   ६. श्रुतबोध टीका
७. जिनपंजर स्तोत्र   ८. प्रस्ताविक श्लोक   ६. दशलक्षण मडल पूजा   १०. फुटकर श्लोक
११. चतुर्गति नाटक—डालूराम ।

आदि भाग—

अरिहत नमू सिरनाय पुनि सिद्ध मकल सुखदाई ।
अचारज के गुन गाऊ पद उपाध्याय सिर नाऊ ।
सिरनाय सकल उपाधि नासन सर्व साधू नमू सदा ।
जिनराय भाषित धर्म प्रणमू विघन व्यापै न हूँ कदा ।
य परम मगल रूप नवपद लोक मे उत्तम यही ।
जब नटत नाटक जगत जीय केयक पर तक्षक सही ।

अन्तिम—

ई विधि जीव नटवा नाच्यौ,
लख चौरासी र ग राच्यौ ।
इक इक भेष न माही,
नाचि काल अनत गुमाहि ।।
वीत्यौ अनतकाल नाचते उरधमध्य पाताल मे ।
ज्यो कर्म नाच नचावत जिय नट त्यो नचत बेहाल मे ।।
अवै छाडि कर्म कुसग वजिय नचि ज्ञान नृति बेहाल में ।
थिर रूप डालूराम गहि ज्यो होय सिव के सुख अवै ।

१२ बाईस परीषह   हिन्दी ।
चि० लाल ने पार्श्वनाथ मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी ।

६५०५. सगह ग्रन्थ— × । पत्र स० २ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—चौदह कला, पच्चीस क्रिया आदि का वर्णन है ।

६५०६. स्फुट पत्र संग्रह— × । पत्रस० १५ । आ० ८½ × ६½ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३८–१३२ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६५०७. **स्फुट पाठ संग्रह**— × । पत्रस० ५६ । ग्रा० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सग्रह । र० काल × । ले० काल स० १८२० । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—विविध पाठों एवं कथाग्रों का सग्रह है ।

६५०८. **स्फुट संग्रह**— × । पत्रसं० ५२ । भाषा—हिन्दी । विषय—साग्रह । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन ४४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—निम्न पाठ हैं ।

बाईस परीषह वर्णन, कवित्त छहढाला, उपदेश बत्तीसी तथा कृपण पचीसी है ।

——:०.——

विषय -- नीति एवं सुभाषित

६५०६. अक्षर बावनी—केशवदास (लावण्यरत्न के शिष्य)। पत्रस० १५। आ० १०× ४½ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र०काल स० १७३६ सावण सुदी ५ गुरुवार। **ले०काल सं०** १८६६ वैशाख बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—पत्रस० १३ से राजुल नेमी बारहमासा केशवदास कृत (स० १७३४) दिया हुआ है। शीतकाल सवैया भी दिया हुआ है।

अक्षर बावनी का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

ओंकार सदा सुख देवत ही जिन सेवत वंछित इच्छित पावै।
बावन अक्षर माहि शिरोमणी योग योगीसर इस ही ध्यावै।
ध्यान मे ज्ञान मे वेद पुराण मे कीरति जाकी सबै मन भावै।
केशवदास को दीजिये दौलत भावसू साहिब के गुण गावै ॥६॥

× × × × × ×

यादव कोडि बसै दुरदत के राजतिराज त्रिखडमुरारी।
होतव कोउन मेटि सकै जब देवपुरि खिन माहि उजारी।
जोर सुरासुर जोर करै छट्टी राति के लेखन लागतकारी।
आल जजाल कहा करो केशव कर्म की रेख टरै नहि टारी ॥५०॥

अन्तिम—

बावन अक्षर जोग करै भैया गावु पच्चावहि मैं भल आवै।
सतरसौत छत्तीस को श्रावण सुदि पांचै भृगुवार कहावै।
सुख सौभाग्यनी कौतिन कौ हुवै बावन अक्षर जो गुण गावै।
लावण्यरत्न गुरु सुपसावसु केशवदास सदा सुख पावै ॥

इति श्री केशवदास कृत अक्षर बावनी संपूर्ण।

६५१०. अक्षरबावनी— ×। पत्रस० १४। आ० १३×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—८ पत्र से आगे अध्यात्म बारहखडी है।

६५११. अङ्क बत्तीसी--चन्द। पत्र सं० ३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाशित। र०काल सं० १७२८। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

वोमकार अपार है जाको धरिये ध्यान ।
सर्व वस्तुकी सिद्धि ह्वं अरु घट उपजे ज्ञान ।
कथा कामिनि कनक सो मति बाधं तू हेत ।
ए दोऊ है अति बुरे अन्ति नरक मे देत ।।

× × × × ×

अन्तिम—

छिनक माझ करता पुरुष करन और सौ और ।
जनम सिरानौ जात है छाडि चन्द जग डोर ।।३५।।
सवत सत्रह सै अधिक बीते बीसर आठ ।
काती बुदि दोहज को कियो चन्द इह पाठ ।।३६।।

पार्श्वनाथ स्तुति भी दी हुई है ।

६५१२ इन्द्रनंदिनीतिसार—इन्द्रनंदि । पत्र स० ६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-नीति । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६०/८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६१/८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२/८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१५. उपदेश बावनी—किशनदास । पत्र स० ११ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र०काल स० १७६७ आसोज सुदी १० । ले० काल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० २१४/८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—

श्रीय सघराज लोकागछ सरिताज गुरु,
　　तिनकी कृपा ज कविताइ पाइ पावनी ।
सवत सत्तर सतसहे विजय दशमी को,
　　ग्रथ की समापत भइ है मम भावनी ।।
साध वीस ग्यानमा की जाइ श्री रतनबाई,
　　तज्यो देह तापे एह रची पर बावनी ।
मत कीन मति लीनी तत्वो ही पें रूची दीनी,
　　वाचक किशन कीनी उपदेश बावनी ।।

६५१६. उपदेश बीसी—रामचन्द ऋषि । पत्र सं० ३ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र०काल स० १८०८ वैशाख सुदी ६ । ले० काल स० १८३१ चैत्र बुदि । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

अ ंतिम—

संमत अठारैनीसै रे आठ,
वैसाख सुद कहै छै छठ ।
युज जैमलजी रा प्रतापसु,
तीवरी माहे कहै छै रीष रायचन्द ।
छोडो रे छोडो ससार नो फद, तू चेत रे ।।

(दीवरा पेठ तुरकपुर माहे लीखी छै । दसकत सरावक बेला कोठारी रा छै ।

६५१७. ज्ञानचालीसा— × । पत्र स० २२ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—सुभाषित । र०काल × । लेकाल सं० १६१५ बैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५१८. ज्ञान समुद्र—जोधराज । पत्रस० ३७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल स० १७२२ चैत्र सुदी ५ । ले० काल सं० १७५२ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

विशेष – हिण्डोली ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६५१९. चतुर्विधदान कवित्त—ब्रह्म ज्ञानसागर । पत्र स० ३ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १-१५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष—दान, पञ्चेन्द्रिय एवं भोजन सम्बन्धी कवित्त है ।

६५२०. चाणक्य नीति—चाणक्य । पत्र स० २० । आ० ७½ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-नीति शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८९६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिह (टोक)

६५२१ प्रति सं० २ । पत्र स० २४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

६५२२. प्रति स० ३ । पत्रस० १६ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

६५२३. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ७ । आ० ५ × ४ इञ्च । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८३ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

६५२४. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ११ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** २१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष – ११ से आगे पत्र नही है ।

६५२५. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० १२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १५९२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२/६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—

सवत् १५९२ वर्षे आश्वन बुदी १ शुभे लिखितं चाणायके जोशी देइदास । शुभमस्तु । नीचे लिखा है—

आचार्य श्री जयकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म संवराज इदं पुस्तक।

६५२६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । आ० १२×५ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—वृहद् एव लघु चाणक्य राजनीति शास्त्र है।

६५२७. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ७८ । आ० ४½×४½ इन्च । ले०काल स० १७५४ आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

६५२८. प्रतिसं० ९ । पत्रस० १५ । आ० १०½ ×५ इन्च । ले० काल सं० १८७३ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६५२९. प्रति सं० १० । पत्रस० ३-२३ । आ० १०×५½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२६-१२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६५३०. जैनशतक—भूधरदास । पत्रस० ६-४० । आ० ६ × ४½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र०काल सं० १७८१ । ले० काल स० १९२८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६५३१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३२-२३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६५३२. प्रति सं० ३ । पत्रस० स० १४ । आ० १० × ५¾ इन्च । ले०काल स० १८४७ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० २६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—लिखापितं सेरगढ मध्ये लिखि हरीस्यघ टोंग्या श्री पार्श्वनाथ चैत्यालै लिखापित । पडित जिनदास जी पठनार्थं।

६५३३. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १७ । आ० १० × ५ इन्च । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ३११ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर।

६५३४. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १८ । आ० १०×५ इन्च । **ले०काल** सं० १६४० । पूर्ण । वेष्टन स०३-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—श्री हजारीलाल साह ने अष्टमी, चतुर्दशी के उपवास के उपलक्ष मे दूनी के मन्दिर मे चढाई थी।

६५३५. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० १८ । आ० १३×७ इन्च । ले० काल स० १९४४ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—पुस्तक किसनलाल पांडया की है।

६५३६. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २० । आ० १०×४½ इन्च । ले० काल स० १९३९ द्वितीय सावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—अग्रवालो के मन्दिर की पुस्तक से उतारा गया है।

६५३७. प्रतिसं० ८ । पत्र स० १८ । आ० ९×५½ इन्च । ले०काल स० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

६५३८. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० ३–१६ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल स० १९१० । अपूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर बूंदी ।

विशेष— नगर भिलाय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६५३९ **प्रतिसं० १०** । पत्रस० ३१ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण ।वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष —इसके अतिरिक्त द्यानतराय कृत चरचाशतक भी है ।

६५४० **प्रतिसं० ११** । पत्र स० १६ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६५४१. **प्रतिसं० १२** । पत्रस० १२ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८१८ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर टोडारायसिंह (टोंक)

६५४२. **प्रति स० १३** । पत्रस० १८ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६५४३. **प्रति स० १४** । पत्रसं० १७ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल स० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन म० १६५–१२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारासिंह (टोंक)

६५४४. **प्रति स० १५** । पत्रसं० १७ । आ० ८×४ इञ्च । ले०काल स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५-७२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६५४५. **प्रतिस० १६** । पत्रस० १२ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले०काल स० १९४९ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

६५४६. **प्रति सं० १७** । पत्रस० ८१ । ले०काल स० १७८९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—गुटका मे है ।

६५४७ **प्रति सं० १८** । पत्र सं० ८ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ६८२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५४८. **प्रतिसं० १९** । पत्रस० १२ । आ० ९×७ इञ्च । ले०काल सं० १९९६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५४९. **प्रतिसं० २०** । पत्र स० १८ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८५९ । वेष्टन स० ७२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६५५०. **प्रति सं० २१** । पत्रस० १५ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १८८५ सावण सुदी १३ । वेष्टन स० ६०९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—दीवान सगही अमरचन्द खिन्दुका दसकत हबचन्द अग्रवाल का ।

६५५१. **जैन शतक दोहा** – × । पत्र सं० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूंदी ।

६५५२. वेशना शतक— × । पत्र सं० १८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल स० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्रीमच्चन्द्रगच्छे उपाध्यायजी श्री लिखमीचन्दजी तत् शिष्य वा श्री सं (सो) माचन्दजी तत् शिष्य लालचन्दजी लिखत । सं० १७६१ वर्षे बैशाख सुदी २ सोम श्री उदयपुरे भद्र भूयात् ।

६५५३. दोहा शतक— × । पत्र स० ४ । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विद्या भलपयण समुद्र जल अ भपणो ओकास ।
उत्तर पथ ने देवगत पार नही पृथवीराज । २६।।
कीयु कीजे साजना भीउन भाजे ज्याह ।
अजाकठ पयोहरा दूध न पाणी त्याह ।।५।।
किहा कोयल किहा अंब वन किहा ददुर किहा मेह ।
विसारिया न फिरे गिखा तणा सनेह ।।६१।।
कण काती तृण भादवे मोती आमो जरित ।
वहु बछेरा डीकरा निवडीया निरत ।।७१।।

६५५४. दृष्टान्त शतक – कुसुमदेव । पत्र स० ६ । आ० १० × ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६५५५. धर्मामृत सूक्ति संग्रह— × । पत्रस० ७८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

६५५६. नवरत्न वाक्य—× । पत्र स० १ । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष— विक्रमादित्य के नवरत्नों के वाक्य है

६५५७. नसीहत बोल— × । पत्रस० ५ । आ० १२¾ × ५½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर

६५५८ नीति मंजरी— × । पत्रस० ६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

६५५९. नीति वाक्यामृत—आ० सोमदेव । पत्र स० ३० । आ० १२×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति, शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६५६०. **नीति श्लोक** — × । पत्रस० १-११,१७ । आ० ६३/४ × ४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय—नीति । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६५६१. **नीतिसार—आ० इन्द्रनन्दि** । पत्रस० ८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

लेखक प्रशस्ति—सवत्सरे वसु वाण यमि सुधाकर मिते १७५८ वृन्दावतीनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे नद्यालाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकु दाचार्यान्वये भ० श्री नरेन्द्रकीर्तिस्तच्छिष्य आचार्यवर्य ५ श्रीमदुदयभूसण शिष्य पंडित जी ५ तुलसीदास शिष्य बुध तिलोकचद्रेणेद शास्त्र स्व-पठनार्थ स्वयुजेन लिखितं ।

६५६२. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १२ । आ० १०१/२ × ४१/२ इञ्च । ले०काल स० १८५० चैत्र मास सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५६३. **प्रति सं० ३** । पत्रस० १४ । आ० ६ × ५१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५६४. **प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ६ । आ० १११/२ × ५१/२ इच । ले०काल स १६७१ । पूर्ण । वेष्टन स० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५६५ **नद बत्तीसी—नदकवि** । पत्रस० ४ । आ० १०×४१/२ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । र० काल × । ले०काल स० १७८१ सावन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—नीति के श्लोक है ।

६५६६ **परमानंद पच्चीसी**— × । पत्र स० २ । आ० १०×६१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२-४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६५६७. **पंचतन्त्र—विष्णुशर्मा** । पत्र स० ६१ । आ०१० × ४१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—नीति शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६५६८. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १८ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८६/५८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

६५६९. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २३ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—सुहृद्भेद तक है ।

६५७०. **प्रति सं० ४** । पत्रसं० १०२ । आ० १०१/२ × ४३/४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—१०२ से आगे पत्र नही हैं।

६५७१. प्रतिसं० ५। पत्र सं० १२३। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल सं० १८४४ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजहमल (टोंक)।

विशेष—दौलतराम बघेरवाल शास्त्र घटायो पचाख्यान को सहर का हामलक हाडौती सहर कोटा को लाडपुरो राज राणावतजी को देहुरो श्री शांतिनाथजी को आचार्य श्री विजयकीर्ति ने घटायो पंडिता नानाछता।

६५७२. प्रतिसं० ६। पत्रसं० २३। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

६५७३. प्रतिसं० ७। पत्रसं० ११२। आ० १०×४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८२। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर।

६५७४. पंचाख्यान (हितोपदेश)— ×। पत्र स० ८३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—नीति शास्त्र। र०काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वेष्टन स० ८२/३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इदरगढ़ (कोटा)

विशेष—ऋषि बालकिशन जती ने करवर मे प्रतिलिपि की थी। मित्र भेद प्रथम तन्त्र तक है।

६५७५. प्रज्ञाप्रकाश षट्त्रिंशका—रूपसिंह। पत्रस० ४। आ० ६$\frac{3}{4}$×३$\frac{3}{4}$ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३२४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६५७६. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—अमोघहर्ष। पत्र स० ३। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल ×। ले० काल स० १६१६। पूर्ण। वेष्टनसं० २८५/८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति—सवत् १६१६ वर्षे पौष सुदी २ दिने स्वस्ति श्री अहमदाबाद शुभ स्थाने मोजमपुर श्री आदिजिन चैत्यालये लिखित। ब्र० सवराजस्येद।

६५७७. प्रश्नोत्तर रत्नमाला - अमोघहर्ष। पत्र सं० ४। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित र०काल×। ले०काल स० १६१७ फाल्गुण बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—बागडदेश के सागवाडा नगर मे श्री आदिनाथ जिन चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

६५७८. प्रतिसं० २। पत्र स० २। आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन स० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६५७९. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—बुलाकीदास। पत्रसं० २। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६५८०. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—विमलसेन। पत्र स० २। आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित।। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टन स० ९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६५८१. प्रश्नोत्तर रत्नमाला— × । पत्र स० ५७ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है ।

६५८२. प्रस्ताविक श्लोक— × । पत्र स० २२ । ग्रा० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८८० मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५८३. प्रस्ताविक श्लोक— × । पत्र सं० २४ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६५८४. प्रस्ताविक श्लोक— × । पत्र स० ६ । ग्रा० ६ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६५८५. प्रस्तावित श्लोक — × । पत्र स० २ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन खडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

६५८६. बावनी—जिनहर्ष । पत्र स० ४ । ग्रा० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल स० १७३८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५८७. बावनी—दयासागर । पत्रस० ३ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सूक्ति मुक्तावली का पद्यानुवाद है ।

१　७　६
सवत् चद समुद कथा निधि फागुण के वदि तीज भलीया ।
श्री दयासागर बावन अक्षर पूरण कीध कवित्त तेवीया ।।५८।।

६५८८. बावनी—ब्र० माणक । पत्र स० २-६ । ग्रा० ६ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६२/२८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग

ब्रह्मचारि मणक इम बोलइ ।
सघ सहित गुरु चिरजीवहु ।।

इससे आगे ज्ञानभूषण की वेलि दी हुई है ।

अन्तिम भाग—निम्न प्रकार है ।

सेवकरि सहु संघ सदा जस महिमा मेरु समान ।
श्री ज्ञानभूषण गुरु सइहाथ इथ थाकतु कीजई ज्ञान ।
अमीयपाल साह कर जो नइ बोलइ एगा परिग्रास ।
स्वामीइ वेलि वलीवलीए तलउ रागु उत्तम भरोदि उवास ।।
इति वेलि समाप्ता ।

६५८६. बुधजन सतसई—बुधजन। पत्र स० ३१ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र०काल सं० १८८१ ज्येष्ठ बुदी ६ । ले० काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० १११० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५६०. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३० । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १६३६ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष – मुकाम चन्द्रपुर मे लिखा गया है ।

६५६१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २३ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६५६२ प्रतिसं० ४ । पत्र स० २-५ । ले० काल स० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६५६३. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २४ । । ले०काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

६५६४. प्रति स० ६ । पत्रस० ३० । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६५६५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

६५६६. प्रतिसं० ८ । पत्र स० २८ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

६५६७ प्रति सं० ६ । पत्रस० १०७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—गुटके रूप मे है ।

६५६८ बुधिप्रकाश रास—पाल । पत्रस० ३ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी **पद्य** । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

उद्धरण—

मूरखो मति चालै सीयालै ।
जीमर मति चालै उन्हालै ।।

बामण होय भरण खायो ।
क्षत्री होय रिण मे भागो जाय ॥२०॥
कायथ होय र लेखो भूलै ।
एनी रू क्रियाहीन तोलै ॥२१॥
आबुधिसार तणो विचार ।
आलन आनै इण ससार ॥
भणै पाल पुरुषोत्तम युता ।
राजकरो परिवार सजुत्ता ॥२२॥
इति बुधप्रकाश रास सपूर्ण ।

६५६६. भर्तृहरि शतक—भर्तृहरि । पत्र स० ३३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल । ले० काल स० १८१६ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६००. प्रति सं० २ । पत्रस० १६ । ५ आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टन** सं० १२८० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—१३ वा १४ वा पृष्ठ नही है ।

६६०१. प्रति सं० ३ । पत्रस० ३८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२८२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६६०२. प्रति सं० ४ । पत्रस० २७ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल सं० १७५६ । पूर्ण । वेष्टनस० १३२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६०३. प्रति सं० ५ । पत्र स० २-४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६६०४. प्रति सं० ६ । । पत्र सख्या ३५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ७५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर हृण्डावालो का डीग ।

विशेष--सस्कृत टीक सहित है ।

६६०५. प्रति सं० ७ । पत्र स० १० । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष - शतक त्रय है ।

६६०६. प्रति सं० ८ । पत्र स० ३५ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वेष्टन स० २३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

विशेष—मूल के नीचे गुजराती मे अर्थ भी है ।

६६०७. प्रति सं० ६ । पत्र स० २१ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८६६ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—गोठडा ग्राम में रुप विमल के शिष्य भाग्य विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

६६०८. **प्रति सं० १०** । पत्रसं० २४ । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६६०९. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ३२ । आ० १२×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

६६१०. **भर्तृहरि शतक भाषा**—× । पत्र स० २९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-नीति । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी

विशेष—नीति शतक ही है ।

६६११. **भर्तृहरि शतक टीका**— × । स०पत्र २६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-नीति । र०काल × । ले०काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—भर्तृहरि काव्यस्यटीका श्री पाठकेन विदवेध्यनसार नाम्ना ।

६६१२. **भर्तृहरि शतक टीका**—× । पत्रसं० ४९ । भाषा-संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६६१३. **भर्तृहरि शतक भाषा—सवाई प्रतापसिंह** । पत्रस० २३ । आ० १३× ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । र०काल × । ले० काल स० १८९२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५१ । **प्राप्ति स्थान** - भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६१४. **मनराज शताक—मनराज** । पत्र स० ७ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा —हिन्दी । **विषय**-सुभाषित । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ४६८/२५७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभव नाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग—

समय सुजावन समय धन समय न बार बार ।
सलिल वहेति सुरतिकरि इह क्षुदखाति गयारि ।
समयादेतुमसकि लधि सु प्रीति जु कसी ।
एहनी गुणी थिर नहि चपल गजकन्नह जमी ।
पडित कुं मुख देखि अधिक हुसि लाज करंती ।
अधम तणा घरि महि दासजिम नीर भरती ।
इम जाणि समुअंकुसुय इह जग जुट्टिणि नवि भली ।
श्रीमानु कही नसि सगलो हो कहु कोई सधर चली ।।

कुल ३-४ पद हैं ।

६६१५. **मरण करण्डिका**—× । पत्रसं० १३० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत (पद्य) । **विषय**-सुभाषित । र०काल × । ले० काल स० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—स० १६२७ भादवा सुदी ३ गुरौ दिने सागवाडा ग्रामे पुस्तिका लेखक श्री राजचन्द्रेण ।

६६१६. राजनीति समुच्चय—चाणक्य । पत्रस० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

६६१७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८० । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

६६१८. राजनीति सवैया—देवीदास । पत्रसं० १८८ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—राजनीति । र०काल × । ले०काल स० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

आदि अन्त भाग निम्न प्रकार हैं—

प्रारम्भ—

नीतिही तै धर्म, धर्मतै सकल सीधि
नीतिहीतै आदर सभानि बीचि पाइयो ।
नीति तै अनीति छटै नीनिहीतै सुख लूटै
नीतिहीतै कोल भलो बकता कहाइयो ।
नीति हीतै राज राजै नीति हीतै पाया ही
नीति हीतै नोउखड माहि जस गाइयो ।
छोटन को बडो करै बडे महा बडे धरै
तातै सबही को राजनीति ही सुहाइयो ।

× × ×

अंतिम—

जब जब गाढ परी दासनि को
देवीदास जब तब ही आप हरि जूनै कीनी है ।
जैसे कष्ट नरहरि देव तु दयानिधान
ऐसो कौन अवतार दयारस भीनो है ।
मातानि पेटतै स्वरूप धरै और ठौर
सोतो है उचित ऐसो और को प्रवीन है ।
प्रहलाद देतु जानि ता घर कै बाधै
आपु थावर के पेट मैं ते अवतार लीनो है ।।१२२।।

इति देवीदास कृत राजनीति सवैया सपूर्ण ।

६६१९. राजनीति शतक— × । पत्र स० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६२०. लघुचाणक्य नीति (राजनीति शास्त्र)—चाणक्य । पत्र स० ११ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—राजनीति । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी ।

विशेष—बृहद् राजनीति शास्त्र भी है ।

६६२१. लुकमान हकीम की नसीहत—× । । पत्रस० ७ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल स० १६०७ श्रावण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा बयाना ।

विशेष—प्रथम पाच पत्र तक लुकमान हकीम की नसीहते है तथा इससे आगे के पत्रो मे १०० प्रकार के मूर्खों के भेद दिये हुए हैं ।

६६२२. वज्जवली—पं० वल्लह । पत्र स० १८ । आ० १४¾×४¾ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६२३. विवेक शतक—थानसिंह ठोल्या । पत्र स० ६ । आ० १०½×६¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

६६२४. वृन्द शतक—कवि वृन्द । पत्र स० ४ । आ० १०½×६½ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६ ।**प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर टोडारायसिह (टोक)

६६२५. सज्जन चित्त वल्लभ—मल्लिषेण । पत्रस० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६२६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १८०६ कार्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ ।**प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवाजी कामा ।

६६२७. सज्जन चित्तन वल्लभ—× । पत्रस० ३ । आ० ६¾×४¼ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०७ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६२८. सज्जन चित्त वल्लभ भाषा— ऋषभदास । पत्रस० १२ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य ।विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

६६२९. सज्जनचित्त वल्लभ भाषा—हरगूलाल । पत्रस० २२ । आ० १० ½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—सुभाषित । र०काल स० १६०७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५२–८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—लेखक करौली के रहने वाले थे तथा वहा से सहारनपुर जाकर रहने लगे थे । ग्र थ प्रशस्ति दी हुई है ।

६६३०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १६ । आ० ११½×७ इञ्च । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६६३१. सप्तव्यसन चन्द्रावल—ज्ञानभूषण। पत्रस० १। आ० १२×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २१०-६५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६६३२. सद्भाषितावली (सुभाषितावली)—सकलकीर्त्ति। पत्र सं० २६। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले० काल स० १७०२ फाल्गुन बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—महाराजसिह के शासनकाल मे साह पाबू ने अम्बावती गढ़ में लिपि की थी।

६६३३. प्रतिसं० २। पत्र सं० २३। आ० १०½×६ इञ्च। ले० काल स० १७। पूर्ण। वेष्टनस० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—चम्पावती महादुर्ग में प्रतिलिपि हुई लेखक प्रशस्ति बहुत विस्तार से है।

६६३४. प्रति सं० ३। पत्र स० ३४। ले० काल स० १६१०। पूर्ण। वेष्टन स० १७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हूण्डावालों का डीग।

६६३५. सद्भाषितावली—×। पत्र स० १६। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६६३६. सद्भाषितावली—×। पत्रस० १-२५। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६६३७. सद्भाषितावली—×। पत्र सं० ४२। आ० ९×५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० २६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

६६३८. सद्भाषितावली—×। पत्र स० २६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

६६३९. सदभाषितावली—×। पत्रस० २५। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग।

६६४०. सद्भाषितावली भाषा—पन्नालाल चौधरी—×। पत्र स० ११६। आ० ११¾×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय—सुभाषित। र० काल सं० १९३१ ज्येष्ठ सुदी १। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६६४१. प्रति सं० २। पत्रसं० १०२। आ० १३½×७ इञ्च। ले०काल सं० १९४६। पूर्ण। वेष्टनसं० ६५। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

६६४२. प्रतिसं० ३। पत्र स० ६१। आ० १३ × ७½ इञ्च। ले० काल सं० १९५२। पूर्ण। वेष्टन स० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

६६४३. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ६६ । आ० १२×७½ इञ्च । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—इन्दौर में लिखा गया था ।

६६४४. **सभातरंग**—× । पत्रसं० २७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६४५. **सारसमुच्चय**— × । पत्रस० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६४६. **सारसमुच्चय**— × । पत्रस० २२ । आ० १०½×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल स० १६५२ कार्तिक शुक्ला १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६४७. **सारसमुच्चय**—× । पत्र सं० १६ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६६४८. **सिन्दूर प्रकरण—बनारसीदास** । पत्रस० २४ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६६४९. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६२ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगानी करौली ।

विशेष—१८ पत्र से समयसार नाटक बधधार तक है आगे पत्र नही है ।

६६५०. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ५-२१ । आ० १० × ६ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

६६५१. **प्रतिसं० ४** । पत्र स० १३ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल स० १६०८ चैत सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—गणेशीलाल बैनाडा ने पुस्तक चढाई थी ।

६६५२. **प्रति स० ५** । पत्र स० १४ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६६५३. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० १८ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

६६५४. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० २-२२ । आ० ७ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८०८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यो का नैणवा ।

६६५५. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० १५ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८३४/८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

६६५६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । आ० ११×४ इंच । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

६६५७. प्रति सं० १० । पत्र सं० २–१३ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल सं० १६६६ भादवा सुदी १५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

सवत् १६६६ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमवासरे श्री आगरा मध्ये पातिसाह श्री साहिजहा राज्ये लिखित साह रामचन्द्र पठनार्थ लिखित वीरवाला ।

६६५८. प्रति सं० ११ । पत्रस० १६ । ले० काल स० १७१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग ।

६६५९. सिन्दूरप्रकरण भाषा— × । पत्रस० ४१ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सुभाषित । र०काल × । **ले०काल** × । **पूर्ण** । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

६६६०. सुगुरु शतक—जोधराज । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभापित। र०काल स० १८५२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

६६६१. सुबुद्धिप्रकाश—थानसिंह । पत्र स० ७६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल स० १८४७ फागुन बुदी ६ । ले० काल स० १६०० ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

६६६२ प्रति सं० २ । पत्र स० ११६ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल स० १६०० कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

६६६३. सुभाषित — × । पत्रस० १७ । आ० ६×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । **पूर्ण** । **वेष्टनसं० ४७०** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६६६४. प्रति सं० २ । पत्र स० २५ । आ० १०¾×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६६६५. प्रति सं० ३ । पत्रस० १६ । आ० ८×४ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६६६. सुभाषित दोहा — × । पत्र स० २-४२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६६७. सुभाषित प्रश्नोत्तर रत्नमाला—ब्र० ज्ञानसागर । पत्रसं० १४१ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सुभापित प्रश्नोत्तरमाणिक्यमालामहाग्रंथे ब्र० श्री ज्ञानसागर सग्रहीते चतुर्थोऽधिकारः।

६६६८. सुभाषित रत्नसंदोह—ग्रमितिगति । पत्रस० ११४ । ग्रा० ७½ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल सं० १५६५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १२०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६६९ प्रति स० २ । पत्रस० ७५ । ग्रा० ११¾ × ४¾ इञ्च । ले० काल स० १५७४ मगसिर सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

६६७०. प्रति स० ३ । पत्रस० ७१ । ग्रा० १०½ × ४¾ इञ्च । ले०काल स० १५९० । पूर्ण । **वेष्टन** सं० ७०९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६७१. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६५ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८४७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

६६७२ प्रति स० ५ । पत्रस० ४९ । ले० काल स० १८२७ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—ग्राशाराम ने भरतपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

६६७३. सुभाषितावली—सकलकीर्ति । पत्र स० ४२ । ग्रा० ९ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २९३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष—ग्रंथ का नाम सुभाषित रत्नावली एवं सद्भाषितावली भी है ।

६६७४. प्रतिसं० २ । पत्रस० २३ । ग्रा० ६ × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६७५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५१ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । ले०काल स० १६६७ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वष्टन स० १८६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष – मडलाचार्य यशःकीर्ति के शिष्य ब्र० गोपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६६७६. प्रति स० ४ । पत्र स० २९ । ग्रा० १०¾ × ४½ इञ्च । ले०काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६७७. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २२ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८३२ चैत सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०१०४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष—सिकदरा मे हरबशदास लुहाडिया ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

६६७८. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १८ । ग्रा० ९ × ५ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

६६७९. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ३३ । ग्रा० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६६८०. प्रतिसं० ८ । पत्रस० २१ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० १५८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

प्रशस्ति—सवत् १५८४ वर्षे आसोज सुदी १५ बुधवार लषत श्री मूलसंघे महामुनि भट्टारक श्री सकलकीर्ति देवातत्पट्टे भ० श्री ५ भुवनकीर्त्ति भ्रातृ आचार्य श्री ज्ञानकीर्ति शिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्ति तस्य शिष्य आ० श्री यशकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म विद्याधर पठनार्थं उपासकेन लिखाप्य दत्त ।

६६८१. प्रतिसं० ९ । पत्रस० १४ । आ० ९×५½ इञ्च । ले०काल स० १८५६ जेठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६६८२. प्रतिसं० १० । पत्रस० ६ । आ० ९×४½ इञ्च । ले० काल स० १७४८ माघ शुक्ला ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प० मनोहर ने आत्म पठनार्थं लिखा था ।

६६८३ प्रति स० ११ । पत्रस० ४० । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६६८४. प्रतिसं० १२ । पत्र स० २-३७ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६८५. प्रति सं० १३ । पत्रस० ४१ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १७१८ आसोज बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मोजमाबाद मे ऋषभनाथ चैत्यालय मे पडित भगवान ने स्वय के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६६८६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० २२ । आ० ९×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६६८७. प्रतिसं० १५ । पत्र स० १० । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण किन्तु प्राचीन है । प्रति की लिखाई सुन्दर है ।

६६८८. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २५ । आ० ९⅓×६ इञ्च । ले०काल स० १८७६ मगसिर बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

६६८९. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २४ । आ० ११½×५⅓ इञ्च । ले०काल स० १८२२ माघ बुदी ऽऽ पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—प्रतिलिपि दिल्ली मे हुई थी ।

६६९०. प्रतिसं० १८ । पत्रस० ७६ । ले०काल सं० १७२२ चैत बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६६९१. प्रतिसं० १९ । पत्रस० १७ । आ० १०×५ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलना (बूंदी)

६६९२. प्रति सं० २० । पत्रसं० ३३ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य ब्रह्म मेघजी ने प्रतापगढ नगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

६६९३. सुभाषितरत्नावलि— × । पत्र सं० १७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७५८ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पं० सुन्दर विजय ने प्रतिलिपि की थी ।

६६९४. सुभाषितावली—कनककीर्त्ति । पत्र सं० ३३ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

६६९५. सुभाषितावली—× । पत्रसं० १४ । आ० १०× ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टनसं० ४० । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६९६. सुभाषितावली—× । पत्र सं० ८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा – संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६०–२८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६९७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६१–२८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६९८. सुभाषितावली—दुलीचन्द । पत्र सं० १७ । आ० १३× ८$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल सं० १९२१ ज्येष्ठ सुदी १ । ले०काल सं० १९४६ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६६९९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ७५ । र०काल सं० १९२१ । ले०काल सं० १९५२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७००. सभाषितावली भाषा—खुशालचद । पत्रसं० २–८५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—सुभाषित । र०काल सं० १७९४ सावण सुदी १४ । ले०काल सं० १८०२ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

वीतराग देवजू कह्यो सुभाषित ग्रंथ ।
च्यारि ग्यान धारक गणी रच्यौ सुभाषजी ।
इन्द्र धरणीन्द्र चक्रवर्ति आदिक सेवतु है
तीनलोक के मोह को सुदीपक कहायजी ॥
साधु पुरुष के वैन अमृत सम मिष्ट अंन
धर्म बीज पावन सुभाषि फलदायजी

सर्वजिन हितकार जामैं सुख है अपार
ऐसो ज्ञान तीरथ अमोल चितलायजी।
दोहा—
सतरासै चौराणवें श्रावरण मास मझार।
सुदि चवदसि पूरण भयो इह श्रुत अति सुखकार
सबलसिंह पद्धा तणो नंदन राजाराम।
तीन उपदेसै मै रच्यो श्रुति खुशाल अभिराम ॥

इति सुभाषितावलि ग्रंथ भाषा खुशालचन्द कृत समाप्तम्।

६७०१. **प्रति सं० २**। पत्र सख्या ३३। आ० ८×४½ इञ्च। ले०काल सं० १८१२ आसोज बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

६७०२. **प्रतिसं० ३**। पत्रस० ६३। आ० १०×५½ इञ्च। ले०काल स० १८६६ पौष बुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

विशेष—छबीलचन्द मीतल ने करौली नगर में पार्श्वनाथ के मन्दिर में प्रतिलिपि कराई थी।

६७०३. **सुभाषितार्णव—शुभचंद्र**। पत्रस० ११३। आ० ९×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले० काल स० १८६६ सावन सुदी १३।। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२-५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगानी मन्दिर करौली।

६७०४. **प्रतिसं० २**। पत्रस० २५७। ले० काल स० १९३०। **पूर्ण**।। वेष्टनसं० ५३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६७०५. **प्रति सं० ३**। पत्रस० ४१। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल १७४४। पूर्ण। वेष्टन स० १६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६७०६. **सुभाषितार्णव**—×। पत्रस० ४५। आ० ११½×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल ×। ले०काल स० १७८४ माघ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोंक)

६७०७. **सुभाषितार्णव** -- ×। पत्रस० ४६। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल स० १६०७ भादवा बुदी ६। **पूर्ण**। वेष्टन स० ७३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—चम्पावती महादुर्ग में प्रतिलिपि हुई। लेखक प्रशस्ति बहुत विस्तार पूर्वक है।

६७०८. **सूक्ति मुक्तावली—आचार्य मेरुतुंग**। पत्रस० ३। आ० १४×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—महापुरुष चरित्र का मूलमात्र है।

६७०९. **सूक्तिमुक्तावली-आ० सोमप्रभ**। पत्रस० ८। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १४१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष---दो पंतिया और है ।

६७१०. **प्रति सं० २** । पत्रस० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । लेoकाल । पूर्ण । वेष्टन स० ११८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७११. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ७ । आ० १०× ४ इञ्च । लेoकाल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१२. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० २८ । आ० १०×५ इञ्च । लेoकाल स० १७८८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

६७१३. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० ८ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । लेoकाल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

टब्बाटीका सहित है तथा प्रति जीर्ण है ।

६७१४. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० १६ । आ० १०×५ इञ्च । लें० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८७ । **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१५. **प्रति स० ७** । पत्र स० ११ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १४२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१६. **प्रति सं० ८** । पत्र स० ६ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{4}$ इञ्च । लेoकाल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८६ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१७. **प्रति स० ९** । पत्र स० १० । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । लेoकाल स० १८११ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६७१८. **प्रतिसं० १०** । पत्रस० १५ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३७/२३२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

६७१९. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० ७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १७७८ । अपूर्ण । वेष्टन स० २५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६७२०. **प्रतिसं० १२** । पत्रस० १५ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टनस० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है –

सवत् १६४० वर्ष श्रावण बुदी ९ दिने लिखित शिष्य ब्र० टीला ब्र० नाथू के पाडे गोइन्द शुभ भवतु कल्याणमस्तु ।

६७२१. **प्रतिसं० १३** । पत्रस० १३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । लेoकाल स० १७२९ । पूर्ण । वेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—संवत् १७२९ मे सावण सुदी १० को श्री प्रतापपुर के आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई थी ।

६७२२. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० १८ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६७२३. **प्रतिसं० १५** । पत्र स० ११ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६७२४. **प्रति सं० १६** । पत्रस० २० । आ० १०½ × ५ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल स०१७२८ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—मोहम्मद शाह के राज्य मे शेरपुर मे चिन्तामणि पार्श्वनाथ के चैत्यालय मे हारिक्षेम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६७२५. **प्रतिसं० १७** । पत्रस० १४ । आ० १२ × ६ इञ्च । **ले०काल** स० १८४४ प्रथम श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—११-१२ वा पत्र नही हैं ।

६७२६. **प्रतिसं० १८** । पत्र स० १५ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—१५ मे आगे नही लिखा गया है ।

६७२७. **प्रतिसं० १९** । पत्रस० १२ । आ० १२×६ इ च । **ले०काल** स० १६४६ । पूर्ण । वेप्टन स० ६१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६७२८. **प्रतिसं० २०** । पत्रस० २-१५ । आ० ८½ × ३½ इ च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६७२९ **प्रतिसं० २१** । पत्र स० १० । आ० ९ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२५-१२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६७३० **प्रतिसं० १२** । पत्रस० १२ । आ० १० × ४½ इञ्च । **ले०काल** स० १७३१ श्रावण शुक्ला १ । पूर्ण । वेप्टन स० ३७८-१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६७३१ **प्रतिसं० १३** । पत्रस० १२। आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १२६-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६७३२. **प्रतिसं०१४** । पत्र स० १४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—भट्टारक शुभचन्द्र शिष्य मुनि श्री सोमकीर्ति पठनार्थं स्वहस्तेन लिखित ।

६७३३. **प्रतिसं० १५** । पत्र स० १४ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६७३४. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० १० । आ० १०½ × ५ इञ्च । **ले०काल स० १६०३** । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

लेखक प्रशस्ति—सवत् १६०३ वर्षे शाके १४६८ प्रवर्त्तमाने महामागल्य भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे दशम्या तिथौ रविवासरे तक्षक महादुर्गे राजाधिराज सोलकीराउ श्री रामचन्द विजयराज्ये [श्री ऋषभ जिन चैत्यालये श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे.............. मण्डलाचार्य धर्म्म तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये

बैद गोत्रे……… ………साह पोषा तस्य पौत्र सा. होला तद्भार्या खीवणी इद शास्त्र लिखाप्य मुनि श्री कमल-कीर्त्तिये दत्तं ।

६७३५. **प्रतिसं० १७** । पत्रस० ५ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६७३६. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० ३५ । आ० ६$\frac{3}{8}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष – मेडता मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६७३७. **प्रतिसं० १६** । पत्र स० १६ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

६७३८. **प्रतिसं० २०** । पत्र स० १३ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

६७३९. **प्रतिसं० २१** । पत्र स० १६ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दो प्रतिया और है ।

६७४०. **प्रति सं० २२** । पत्र स० ११ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १६६८ काती सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६७४१. **प्रतिसं० २३** । पत्रस० १७ । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६५५ काती सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

६७४२. **प्रतिसं० २४** । पत्र स० २२ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्ति कृत सस्कृत टीका सहित है ।

६७४३. **प्रतिसं० २५** । पत्रस० १६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ कोटा ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्ति कृत सस्कृत टीका सहित है ।

सवत् १६६६ वर्षे फागुण बुदी अमावस्यासोमे पाटण नगरे लिखितेयं टीका ऋषि लक्ष्मीदासेन ऋषि जीवाय वाचनार्थ । इन्दरगढ का बडा जैन मन्दिर ।

६७४४. **प्रतिसं० २६** । पत्रस०३६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२१/२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—करवाड ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

६७४५. प्रति सं० २६ । पत्र स० १० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले०काल स० १७८१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६७४६. प्रति सं० २७ । पत्र सं० १० । आ० १०½×४¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

६७४७. प्रति सं० २८ । पत्रसं० ६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—ध्यान विमल पठनार्थं ।

६७४८. प्रति सं० २९ । पत्रस० १० । आ० १० ×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल स० १५९२ माघ बुदी ३ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ५८/८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—प्रति जीर्ण है । वीर भट्टारक के लिए प्रतिलिपि की गई थी ।

६७४९. प्रति सं० ३० । पत्रसं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल स० १६६६ कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष – अहमदाबाद मे लिखा गया था ।

६७५०. प्रति सं० ३१ । पत्र स० ३-१५ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल स०१९०४ । पूर्ण । वेष्टन स० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—मूल के नीचे सस्कृत मे टीका भी है । वृन्दावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६७५१. प्रति सं० ३२ । पत्रस० ३० । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १९५५ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६७५२. प्रति सं० ३३ । पत्रस० २५ । आ० १० ×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी ।

६७५३. प्रति सं० ३४ । पत्र सं० ७६ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १७१७ कार्त्तिक बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—मौजमाबाद मे लिखा गया था ।

६७५४. प्रति सं० ३५ । पत्र सं० १७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल स० १८७६ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

६७५५. प्रति सं० ३६ । पत्रस० १३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल-× । ले० काल सं० १९५५ आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—कोटा स्थित वासूपूज्य चैत्यालय मे सभवराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६७५६ प्रतिसं० ३७ । पत्र सख्या २१ । ले०काल स० १७६५ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सुन्दरलाल ने सूरत मे लिपि की थी ।

६७५७. प्रतिसं० ३८ । पत्रस० २७ । ले०काल स० १८६२ चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में लिखी गई थी ।

६७५८. प्रतिसं० ३६ । पत्रसं० १६ । ले०काल स० १८२५ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सूत्रों पर दूदा कृत हिन्दी गद्य टीका है । केसरीसिह ने प्रतिलिपि की थी ।

६७५६. प्रति सं० ४० । पत्र स० ११ । ले०काल स १६५२ । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६७६०. प्रति स० ४१ । पत्रस० ३२ । ले०काल स० १८७२ । पूर्ण । वेष्टनस० ७१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्ति कृत सस्कृत टीका सहित है ।

६७६१. प्रति स० ४२ । पत्र स० ६६ । आ० ६ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

६७६२. प्रतिसं० ४३ । पत्रसं० १३ । आ० ११¾×५ इञ्च । ले० काल स० १८४७ माह सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

६७६३. सूक्तिमुक्तावली टीका—हर्षकीर्ति । पत्र स० ३५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १७६० प्रथम सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ कोटा ।

विशेष—अमर विमल के प्रशिष्य एव रत्नविमल के शिष्य रामविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

६७६४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४५ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० १७५० माघ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—शाकभरी वास्तव्ये श्राविका गोगलदे ने रत्नकीर्ति के लिए लिखवाया था ।

६७६५. प्रति स० ३ । पत्र सं० २६ । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ६४३ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७६६. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४२ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० २८ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष—नागपुरीयगच्छ के श्री चन्द्रकीर्ति के शिष्य श्री हर्षकीर्ति ने **सस्कृत टीका की है ।**

६७६७. **सूक्ति मुक्तावली भाषा—सुन्दरलाल** । पत्रस० ४६ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय–सुभाषित । र० काल स० १७६६ ज्येष्ठ बुदी २ । ले० काल स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—रचना सवत् के निम्न सकेत दिये है—

६ ६ ७ १

'रस युग सरा शशि'

६७६८. **सुक्तिमुक्तावली भाषा—सुन्दर** । पत्रस० ४५ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस० १२** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६७६९. **सूक्तिमुक्तावली टीका**— × । पत्र स० २-२४ । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७७०. **प्रति सं० २** । पत्र स० २६ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल स० १८३६ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८५ । **प्राप्ति स्थान**– भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७७१. **सूक्तिमुक्तावली भाषा**— × । पत्रस० ६६। आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । (गद्य) । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ (कोटा)

६७७२. **सूक्ति मुक्तावली वचनिका**—× । पत्र स० ४३ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा–सस्कृत हिन्दी । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६७७३. **सूक्तिसंग्रह**— ×। पत्रस० १० । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल×। ले०काल × । पूर्ण । वष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७७४. **सूक्ति संग्रह**— × । पत्रस० २७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२७-१२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

६७७५. **संबोध पंचासिका** - × । पत्र स० १३ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनस० २०६** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली, कोटा ।

६७७६. **संबोध संत्ताणु दूहा—वीरचन्द** । पत्रस० ६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र०काल × । ले०काल सं० १८३७ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ७०** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६७७७. **हरियाली छप्पय—गंग।** पत्र सं० ५। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। **विषय**—सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०६-५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६७७८. **हितोपदेश—वाजिद।** पत्रस० १-२१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। **विषय**—नीति शास्त्र। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

६७७९. **हितोपदेश—विष्णुशर्मा।** पत्र सं० ३-६०। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। **विषय**–नीति एव सुभाषित। र०काल ×। ले०काल सं० १८५२। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३६०। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

६७८०. **प्रति सं० २।** पत्रसं० ५५। आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल। अपूर्ण। वेष्टनसं० २००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६७८१. **हितोपदेश चौपई—** × । पत्रस० ६। आ० ६ × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय–सुभाषित। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

विषय--स्तोत्र साहित्य

६७८२. **अकलंकाष्टक-अकलंकदेव** । पत्र सं० ५–८ । आ० १२×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४५५/४३७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—एक प्रति वेष्टन स० ४५६/४३८ मे और है ।

६७८३ **प्रति सं० २** । पत्र स० २ । आ० १३½×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरलश्कर, जयपुर ।

६७८४. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ३ । आ० ६×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिरबोरसली कोटा ।

६७८५. **अकलंकाष्टक भाषा—जयचन्द छाबड़ा** । पत्र स० ११ । आ० ११½×८ इन्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६२६ फाल्गुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६-३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६७८६. **प्रति सं० २** । पत्र स० ६ । ले०काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७-३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६७८७. **अकलंकाष्टक भाषा—सदासुखजी कासलीवाल** । पत्र स० १४ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल स० १६१५ सावन सुदी २ । ले० काल स० १६६२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६७८८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६७८९. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्यारेलाल व्यास ने कठूमर में प्रतिलिपि की थी ।

६७९०. **प्रति सं० ४** । पत्र स० १६ । आ० ८×६½इन्च । ले०काल स० १६३८ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६७९१. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ११ । आ० १२½×७½ इन्च । ले०काल स० १६२६ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—सं० १६३२ में हिण्डौन मे प्रतिलिपि करवाकर यहां मन्दिर में चढाया था ।

६७९२. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १६ । आ० ११×५½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर दीवानजी कामा ।

६७६३. **प्रति सं० ७**। पत्र सं० ८। आ० १३ × ७½ इञ्च। ले० काल स० १६४१ कार्तिक बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० ४३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

६७६४. **अकलंकदेव स्तोत्र भाषा—चंपालाल बागडिया**। पत्रसं० ५४। आ० १०½ × ७ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १६१३। ले०काल स० १६२४। पूर्ण। **वेष्टनसं०** ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी।

विशेष—परमतखंडिनी नामा टीका है। श्री चपालाल जी बागडिया झालरा पाटन के रहने वाले थे।

प्रारम्भ—

श्री परमात्म प्रणम्य करि प्रणउ श्री जिनदेव वानि।
ग्रंथ रहित सद्गुरु नमो रत्नत्रय अमलान।
श्री अकलक देव मुनीमपद मैं नमिहो सिरिनाय।
ज्ञानोद्योतन अर्थमुभ कहू कथा सुखदाय ॥

अन्तिम—

श्रावण कृष्णा सुतीज रवि नयन ब्रह्म ग्रहचन्द्र।
पूरण टीका स्तोत्र की कृत अकलक द्विजेन्द्र ॥
सिद्ध सूरि पाठक वहुरि सर्व साधु जिनवानि।
अरु जिनधर्म नमौ सदा मगलकारि अमलान।

मारोठ ग्राम में पाश्वनाथ चैत्यालय मे विरधीचद्र ने प्रतिलिपि की थी।

६७६५. **अजितशांति स्तवन—नन्दिषेण**। पत्र स ४। आ० ६×४¾ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल स० १७६० आसोज बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स १५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६७६६. **अजित शांति स्तवन**—×। पत्रस० ३। आ० १०½ × ६½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३३१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—द्वितीय एव सोलहवें तीर्थंकर अजितनाथ और शान्तिनाथ की स्तुति है।

६७६७. **अजित शांति स्तवन**— ×। पत्रस० ३। आ० १०×४½ इच। भाषा— प्राकृत। विपय—स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४८७। **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६७६८. **अट्ठोतरी स्तोत्र विधि**— ×। पत्र स० ४। भाषा-हिन्दी। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। लेखन काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६७६९. **अध्यात्मोपयोगिनी स्तुति—महिमाप्रभ सूरि**। पत्र स० ४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६८००. अपराजित मंत्र साधमिका— × । पत्रसं० १ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

६८०१. अपामार्जन स्तोत्र— × । पत्र स० १२ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७७६ । पूर्ण । वे० स० २३३-९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६८०२. आसजज्झाय कुल— × । पत्रस० २ । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टन स० ६५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

६८०३. आणंद श्रावक सधि- श्रीसार । पत्र स० १४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गुजराती । विषय–स्तवन । र०काल स० १६८७ । ले०काल स० १८३० श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रारम्भ

वर्द्धमान जिनवर चरण नमता नव निधि होई ।
सधि करू आणदनी, समिलज्यो बहु कोई ॥१॥

अन्तिम—

सवत् रिमि सिधिग्स ससि तिणपुरी मई कीधो चौमास ।
ए सबध कीयौ रलिया मणौ, सुण माथाई उल्हास ॥२॥
रतन हरष गुरु वाचक माहरा हेमनन्द सुखकार ।
हेमकीरति गुरु वाधवनै कहइ प्रमगइ मुनि श्रीसार ॥१२॥

इति श्री आणद श्रावक सधि संपूर्ण ।

६८०४. आदिजिन स्तवन—कल्याण सागर । पत्रस० ५ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६८०५. आदित्य हृदय स्तोत्र — × । पत्र स० ८ । आ० १०½×६¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १९२८ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवन चेतनदास पुरानी डीग ।

६८०६. आदिनाथ मंगल—नयनसुख × । पत्र स० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

आदि जिन तीरथ सुनो तिसके अनुसवारि चिरित्त ध्यायो ।
भाग भज्यो नव जोग मिल्यो जगरामजी ग्रंथकुंनीकै सुनायो ।
वो उपदेश लगो हमे कुसुषभाव धरे जीव में ठहरायो
कहै नैण सुख सुनो भवि होय श्री आदिनाथ जी को मगल गायो ।।८६।।

६८०७. आदिनाथ स्तवन—मेहउ। पत्र सं० ३। आ० ८$\frac{3}{4}$ × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। **विषय**—स्तोत्र। र०काल स० १४६६। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—मुनि श्री माणिक्य उदय वाचनार्थ। राउपुर मंडन श्री आदिनाथ स्तवन।

६८०८. आदिनाथ स्तुति—×। पत्र सं० २। आ० १० × ५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय-स्तवन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। **वेष्टनसं० ३१३। प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—भगवान आदिनाथ की स्तुति है।

६८०९. आदिनाथ स्तोत्र। पत्रस० १३। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल स० १६०२ भादवा बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० २१०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—इति श्री शत्रुंजयाधीश श्री नाभिराय कुलावतंस श्री युगादिदेवस्त्रयोदश भव. स्तवन सपूर्ण मिति मई भवत्॥ श्री श्रमण सघस्यान्लिवरं नंदतु। स० १६०२ वर्षे भादवा बुदि ११ सोम दिने मन्नाट्डीयगच्छे पूज्य भट्टारक श्री पद्मसागर सुरि तत्पट्टे श्री नयकीर्त्ति तत्पट्टे श्री महीसुन्दर सुरि तत्पट्टालंकार विजयमान श्री ४ सुमयसागर वा श्री जयसागर लिखत श्राविका मल्ही पठनार्थं।

६८१० आनन्द लहरी—शंकराचार्य। पत्रसं० ३। आ० ८$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन स० २०७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

६८११. आराधना—×। **पत्रसं०** ५। आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन स० २६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—टब्बा टीका सहित है।

६८१२. आहार पचखाण। पत्रस० ६। आ०१०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६८१३. उपसर्गहर स्तोत्र—×। पत्र स० १। आ० १०$\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। **विषय**—स्तोत। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६८१४. उपसर्गहर स्तोत्र—×। पत्र स० १। आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। **विषय**—स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६८१५. एकाक्षरी छंद—×। पत्रस० ३। **आ०** ६ × ५$\frac{1}{2}$ **इञ्च**। भाषा हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। **ले०काल** ×। पूर्ण। **वेष्टनसं० २०२। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

६८१६. **एकादशी स्तुति—गुणहर्ष ।** पत्रसं० १ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६८१७. **एकीभाव स्तोत्र—वादिराज ।** पत्रस० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६०६ । **प्राप्ति स्थान** – भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८१८. **प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ७ । आ० ६½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष – प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

६८१९. **प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० ४ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६६ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

६८२०. **प्रति सं० ४ ।** पत्रस० ४ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६८२१. **प्रति स० ५ ।** । पत्र स० २३ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी गद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६८२२. **प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ८ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६८२३ **प्रति सं० ७ ।** पत्रस० ८ । आ० १०½ × ४ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८२४. **प्रति स० ८ ।** पत्रस० ४ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

६८२५. **प्रति सं० ६ ।** पत्रस० ४ । आ० १० × ४¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७५-५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष निर्वाण काण्ड गाथा भी दी हुई है।

६८२६. **प्रतिसं० १० ।** पत्रस० ४ । आ० १२×५ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०६-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

६८२७. **प्रतिसं० ११ ।** पत्रसं० १० । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७५ १४० । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर, नेदिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६८२८. **प्रतिसं० १२ ।** पत्रस० ७ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल स० १७४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६८२९. **प्रतिसं० १३** । पत्रसं० २ । आ० १३½×६ इञ्च । **ले०काल** × । वेष्टन सं० ४२१ । **प्राप्ति स्थान**—जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८३० **एकीभाव स्तोत्र टीका** × । पत्र स० ७ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १९३२ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६८३१: **एकीभाव स्तोत्र टीका** × । पत्रस० १६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा —संस्कृत विषय— स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । **वेष्टनस० ३९१** । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६८३२. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ८ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ३९४ । **प्राप्ति स्थान**—- दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—श्लोक १७ तक की राजस्थानी भाषा टीका सहित है ।

६८३३. **एकीभाव स्तोत्र भाषा**— × । पत्र स० ११ । आ० १३×५ इंच । भाषा हिन्दी प० । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७६४ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ, बूंदी ।

विशेष—कर्मप्रकृतिविधान एवं सहस्रनाम भाषा भी है ।

६८३४. **एकीभाव स्तोत्र भाषा**— × । पत्र स० ३१ । भाषा – हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४११-१५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष— सबोध पचासिका भाषा भी है ।

६८३५ **एकीभाव स्तोत्र भाषा**—भूधरदास । पत्र सं० ४ । आ० १०×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

६८३६. **एकीभाव स्तोत्र वृत्ति—नागचन्द्र सूरि** । पत्रस० ८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० ३८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८३७. **ऋद्धि नवकार यंत्र स्तोत्र**— × । पत्रस० १ । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचनाकाल × । लेखनकाल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७११ । **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मन्दिर, भरतपुर ।

६८३८. **ऋषभदेव स्तवन—रत्नसिंह मुनि** । पत्र स० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तुति । र०काल स० १६६६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—विक्रमपुर मे ग्रन्थ रचना हुई थी ।

६८३९. **ऋषिमण्डल स्तोत्र—गौतम स्वामी** । पत्र सं० १६ । आ० ६½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८९३ । पूर्ण । वेष्टनस० २९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है। उणियारे मे प्रतिलिपि हुई थी।

६८४०. प्रति सं० २। पत्रस० ७। आ० १३×७½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी।

६८४१. प्रति सं० ३। पत्र स० ४। आ० ८¾×४½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल स० १८८० भादवा बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० १०८६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर, अजमेर।

६८४२. प्रति सं० ४। पत्रस० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

६८४३. प्रति सं० ५। पत्रस० ५। आ० ८½×३¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल स० १७६४ माघ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० १०३७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

विशेष—लिखित सिकन्दरपुर मध्ये।

६८४४. प्रति सं० ६। पत्रस०६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर, उदयपुर।

६८४५. प्रति सं० ७। पत्रस० ७। भाषा-संस्कृत। विषय स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल स० १७२५ माह सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ४१६-१५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—देवगढ मध्ये श्री मल्लिनाथ चैत्यालये श्री मूल सघे नंद्याम्नाये भ० शुभचन्दजी तदाम्नाये ब्र० जसराजजी ब्रह्म मावजी लिखित।

८४६. प्रति सं० ८। पत्र स० ४। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर।

६८४७. प्रति सं० ९। पत्र स० ६। आ० १०¾×४ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १७४/४६। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर, इन्दरगढ (कोटा)।

६८४८. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन—भाव विजय वाचक। पत्रस० ५। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी-(पद्य)। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूदी)।

विशेष—इसमें ४४ छन्द है तथा मुनि दयाविमल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

६८४९. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन—लावण्य समय। पत्र स० ३। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-स्तवन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूदी)।

६८५०. करुणाष्टक—पद्मनन्दि । पत्र सं० १ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८५१. कर्मस्तवस्तोत्र— × । पत्रस० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

६८५२. कल्याण कल्पद्रुम—वृन्दावन । पत्र स० २३ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल १९६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—संकट हरण वीनती भी है ।

६८५३ कल्याणमन्दिर स्तवनावचूरि—गुणरत्नसूरि । पत्र स० १२ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल १९३२ काती बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६८५४. कल्याण मन्दिर स्तोत्र—कुमुदचन्द्र । पत्रस० ६ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ६०४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

६८५५. प्रति स० २ । पत्रस० १६ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल स० १७०० । पूर्ण । वेष्टन स० ७०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है । पडित कल्याण सागर ने अजीर्णगढ (अजमेर) नगर मे प्रतिलिपि की थी।

६८५६. प्रति सं० ३ । पत्रस० ३ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८५७. प्रति सं० ४ । पत्र स० १४ । आ० १०×४½ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८५८. प्रति सं० ५ । पत्रस० ४। आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मदिर अजमेर ।

६८५९. प्रति सं० ६ । पत्रस० ९ । आ० ९×५ इञ्च । ले०काल स० १८२३ प्रथम चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है । प्रति पत्र मे ६ पक्तिया एव प्रति पक्ति मे ३१ अक्षर हैं।

सवत् १८२७ मे प्रति मंदिर में चढाई गई थी ।

६८६०. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ११ । आ० ११×५ इंच । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष - मूल के नीचे हिन्दी टीका है ।

६८६१. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ५ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है एव सस्कृत टीका सहित है ।

६८६२. **प्रतिसं० ९** । पत्रस० ४ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६८६३. **प्रति सं० १०** । पत्र स० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६८६४. **प्रति स० ११** । पत्रस० २५ । आ० ८×६ इञ्च । **ले०काल** स० १८६६ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष – प० गुमानीराम ने बसतपुर मे श्री सुमेरसिहजी के राज्य मे मिश्र रामनाथ के पास पठनार्थ लिखा था ।

६८६५. **प्रतिसं० १२** । पत्र स० २ । आ० ८×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८६६. **प्रति सं० १३** । पत्र स० ६ । आ० १०×३½ इञ्च । ले० काल स० १८१४ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेप्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पंथी दौसा ।

विशेष—दयाराम ने देवपुरी मे प्रतिलिपि की थी ।

६८६७. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०१–६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—आगे के पत्र नही है ।

६८६८. **प्रतिसं० १५** । पत्र स० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४–६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है पुण्यसागर गणिकृत ।

स्तोत्र को सिद्धसेन दिवाकर द्वारा रचित लिखा हुआ है ।

६८६९. **प्रतिसं० १६** । पत्रसं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा कमलप्रभ सूरि कृत सस्कृत टीका सहित है ।

६८७०. **प्रतिसं० १७** । पत्रसं० ४ । आ० ११×४ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

६८७१. **प्रतिसं० १८** । पत्र सं० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति सटीक है।

६८७२. **प्रति सं० १६** । पत्रसं० ३ । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टनसं० ७१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६८७३. **प्रति सं० २०** । पत्र सं० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन सं० ६७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८७४. **प्रति सं० २१** । पत्रस० ७ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल स० १७५७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति व्याख्या सहित है ।

६८७५. **प्रति सं० २२** । पत्र स० ४ । आ० १०×४इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—२६ से आगे के श्लोक नही है ।

६८७६. **प्रति सं० २३** । पत्रस० ३ । आ० १३$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६८७७. **प्रतिसं० २४** । पत्र स० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८७८. **प्रतिसं० २५** । पत्रस० २ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८७९. **प्रतिसं० २६** । पत्रस० १० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

६८८०. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका—हर्षकीर्ति** । पत्रस० २१ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल ×। ले० काल स० १७१७ आसोज सुदी ४ । वेष्टनस० ३८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६८८१. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८२७ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—बुध केशरीसिंह ने स्वय लिखी थी ।

६८८२. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका—चरित्रवर्द्धन** । पत्र सख्या ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६८८३. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका**— × । पत्र सं० ७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८८४. कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका— × । पत्रस० २-१० । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७५५ माह सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टनसं० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—हिण्डोली नगरे लिखित ।

६८८५. कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका— × । पत्र स० २० । आ० ८¾ × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७८१ सावण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी) ।

६८८६. कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका—× । पत्रस० २६१ । आ० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—पत्र १६ मे आगे द्रव्य सग्रह की टीका भी हिन्दी मे है ।

६८७७ कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका— × । पत्र स० ३ । आ०,१० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल स० × । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० १८७-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

६८८८. **कल्याणमदिर भाषा—बनारसीदास** । पत्रस० २ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अत मे बनारसीदास कृत तेरह काठिया भी दिया है ।

६८८९. कल्याणमदिर स्तोत्र भाषा— × । पत्र स० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८२५ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा ।

विशेष—नन्दग्राम मे लिखा गया था ।

६८९०. कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा—अखयराज श्रीमाल । पत्रस० २१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल स० × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६८९१. प्रति सं० २ । पत्रस० २२ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल स० १७२२ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी, दौसा ।

६८९२ प्रति सं० ३ । पत्रसं० ३३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६८९३. कल्याणमन्दिर स्तोत्र वचनिका—पं० मोहनलाल । पत्रस० ४० । आ० ८½×४¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल स० १९२२ कार्तिक बुदी १३ । ले० काल स० १९६५ सावन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८६४. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र वृत्ति—देवतिलक।** पत्र सं० १२। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचनाकाल ×। लेखनकाल १७६०। पूर्ण। वेष्टन सं० ७२५। **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर, भरतपुर।

विशेष—टोंक मे लिपि हुई थी।

६८६५. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र वृत्ति—गुरुदत्त।** पत्र स० २०। आ० १२ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १६४० मगसिर सुदी १५। वेष्टन सं० ३८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६८६६. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र वृत्ति—नागचन्द्र सूरि।** पत्र स० १६। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल स० १६०४ वैशाख बुदी ३। वेष्टन स० ३८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६८६७ **कल्याण मन्दिर स्तोत्र वृत्ति—** ×। पत्र सं० २२। आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)।

विशेष—२२ से आगे के पत्र नही है।

६८६८. **क्षेत्रपालाष्टक—** ×। पत्र स० ६। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३३१। **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

६८६९. **कृष्णबलिभद्र सज्झाय—रतनसिंह।** पत्र स० १। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तुति। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० २२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)।

६९००. **गर्भषडारचक्र—देवनंदि।** पत्र स० ५। आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १८३७। पूर्ण। वेष्टन स० ६७६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

६९०१. **प्रतिसं० २।** पत्रस० ३। आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

६९०२. **प्रति स० ३।** पत्रस० १४। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

६९०३. **प्रतिसं० ४।** पत्र स० ४। आ० ११$\frac{3}{4}$ × ४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। **वेष्टन सं०** ८७-४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६९०४. **गीत गोविंद—जयदेव।** पत्रस० ४-३७। आ० १२ × ५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल स० १७१७। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६६०५. गुणमाला—ऋषि जयमल्ल । पत्र सं० ६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—निम्न पाठ और है ।

महावीर जिनवृद्धि स्तवन	समयसुन्दर
चित संभू की सज्झाय	×
स्तुति	भूधरदास
नवकार सज्झाय	×
चौबीस तीर्थंकर स्तवन	×
बभणवाडि स्तवन	×
शांति स्तवन	गुणसागर

६६०६. गुरावली स्तोत्र—× । पत्र स० १० । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६०७ गुरु स्तोत्र—विजयदेव सूरि । पत्र सं० २ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६-४०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवदाथ उदयपुर ।

विशेष—इति श्री विजयदेव सूरि स्वाध्याय सपूर्ण ।

६६०८. गोपाल सहस्र नाम— × । पत्रस० ३१ । आ० ४½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-श्रीकृष्ण स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

६६०९. गोम्मट स्वामी स्तोत्र— × । पत्र स० ६ । आ० १० × ७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१८-८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६६१०. गौडीपार्श्वनाथ छंद—कुशललाभ । पत्रस० १ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६४/४७२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६११. गौतमऋषि सज्झाय— × । पत्रस० १ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-गीत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—लिखित रिषि हरजी । बाई चापा पठनार्थ ।

६६१२. गंगा लहरी स्तोत्र—भट्ट जगन्नाथ । पत्र सं० ६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १८२५ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—गिरिपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

६६१३. चक्रेश्वरीदेवी स्तोत्र—। पत्रस० ६। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल सं० १८७६। पूर्ण। वेष्टन सं० १३८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६१४. चतुर्दश भक्तिपाठ। पत्रस० ३०। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल स० १६०४ मगसिर सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० २३/१५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

६६१५. चतुर्विध स्तवन— ×। पत्रस० ५। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर।

६६१६. चतुर्विशति जयमाला— माघनन्दि व्रती। पत्रस० १। आ० १३½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६६१७. चतुर्विशति जिन नमस्कार— ×। पत्र स० ३। भाषा-सस्कृत। विषय—स्तवन। र०काल ×। ले०काल स० ×। पूर्ण। वेष्टन स. ६६७। **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर भरतपुर।

६६१८. चतुर्विशति जिन स्तवन— ×। पत्र स० १। आ० १०½×५ इच। भाषा—प्राकृत। विषय—स्तवन। र०काल ×। ले०काल स० १४६५। पूर्ण। वेष्टन स० १८७-११७। **प्राप्ति स्थान**— दि जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)

६६१९. चतुर्विशति जिनस्तुति— ×। पत्रस० ४। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तवन। र०काल ×। ले०काल स० १८६२। पूर्ण। वेष्टन स० ६६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६६२० चतुर्विशति जिन स्तोत्र टीका—जिनप्रभसूरि—। पत्रस० ६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—बीच मे श्लोक है तथा ऊपर नीचे सस्कृत मे टीका है। गणि वीरविजय ने प्रतिलिपि की थी।

६६२१. प्रतिसं० २। पत्र स० १। आ० १२×४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५६/४६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६६२२. चतुर्विशति जिन दोहा— ×। पत्र स० २। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र० काल ×। ले०काल स० १६२६ माह सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

६६२३ चतुर्विशति स्तवन— ×। पत्रस० २-१३। भाषा—सस्कृत। विषय - स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६६२४. **चतुर्विंशतिस्तवन—पं० जयतिलक ।** पत्र स० १ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६/४७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६२५. **चतुर्विंशति स्तुति—शोभनमुनि ।** पत्रस० ६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १४८३ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—इति वर्द्धमान स्तुति. ।

मध्य देशस्थ **संकाशद्रंग** निवासी देवर्षिसुत. सर्वदेवस्तम्यात्मजेन शोभन मुनिना विहिता इमाश्चतु–र्विंशति जिनस्तुतय· तद्ग्रज पडित धनपाल विहिता विवरणानुसरेण त्रयमवचूर्णिर्महायमकवडनरूपाणां तासास्तुतीना लेशतोऽनेखि । सवत् १४८३ वर्षे आश्विनि मा व ४ ।

६६२६. **चतुर्विंशति स्तोत्र—प० जगन्नाथ ।** पत्र स० १५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष —प्रति सटीक है । प० जगन्नाथ भ० नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

६६२७. **चन्द्रप्रभु स्तवन—आनन्दघन ।** पत्र स० २ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६६२८. **चित्रबंध स्तोत्र**— × । पत्रस० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ११२० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—स्तोत्र की रचना को चित्र मे सीमित किया गया है ।

६६२९. **चित्रबन्ध स्तोत्र**— × । पत्रस० २ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । **वेष्टन स०** ३७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६६३०. **चित्रबन्ध स्तोत्र**— × । पत्रस० २ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष —महाराजा माधवसिंह के राज्य मे आदिनाथ चैत्यालय मे जयनगर मे प० केशरीसिंह के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति अच्छी है ।

६६३१. **चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र**—× । पत्र स० १ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६३२. **चेतन नमस्कार** —× । पत्र स० ३ । आ० ६¾×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६३३. **चैत्यवंदना**— × । पत्रसं० ४ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ४६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टब्वा टीका सहित है ।

६६३४. **चैत्यालय वीनती—दिगम्बर शिष्य** । पत्र स० ३ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पद्य—

दिगम्बर शिष्य इम भरणेइ ए वीनतीमइ करीए ।
द्यो प्रभु मो अनिवास सफल कीरती गुरु इम भरणे ए ।

विशेष—हिन्दी मे एक नेमीश्वर वीनती **और** दी हुई है ।

६६३५. **चौरासी लाख जोनना विनती—सुमतिकीर्ति** । पत्र स० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ **इञ्च** । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

श्री मूलसघ महतसंत गुरु लक्ष्मीचन्द ।
वीरचन्द विवुधवंत ज्ञानभूषरण मुनीद ।।
जिनवर वीनती जो भरणे मन धरी आनद ।
भुगती मुगती कर ते लहे परमानद ।।
सुमतिकीर्ति भावे कहिए ध्याजो जिनवर देव ।
ससार माही नही अवरचो पाम्यो सिवपद हेव ।।

इति चौरासी लक्ष जोनना वीनती सपूर्ण ।

६६३६. **चौबीस तीर्थंकर वीनती—देवाब्रह्म** । पत्र स० १६ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

६६३७. **चौबीस तीर्थंकर स्तुति**— × । पत्र स० २ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६३८. **चौबीस तीर्थंकर स्तुति (लघुस्वयंभू)**— × । पत्रसं० ३ । आ० ८ × ६$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६६३९. **चौबीस महाराज की विनती—चन्द्रकवि** । पत्र स० ६-२३ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १८६० आसोज सुदी १५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

६६४०. चौबीस महाराज की वीनती--हरिचन्द्र संघी। पत्र सं० २५। भाषा—हिन्दी। **विषय**—विनती। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। **वेष्टन सं०** २८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—कठिन शब्दो का अर्थ दिया हुआ है। प्रति प्राचीन है इसके अतिरिक्त निम्न और हैं—

१- जिनेन्द्रपुराण—दीक्षित देवदत्त। भाषा-सस्कृत। र० काल ×। ले० काल १८४७। पूर्ण।

विशेष—ब्रह्मचारी करुणा सागर ने कायस्थ रामप्रसाद श्रीवास्तव अटेर वालो से प्रतिलिपि करवाई थी।

२- पूजा फल— ×।

३- सुदर्शन् चरित्र—श्री भट्टारक जिनेन्द्रभूषण।

विशेष—श्री शौरीपुर वटेश्वर तै लश्करी देहरे मे श्री पं० केसरीसिह के लिए श्रुतज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ बनाई थी।

६६४१. चौसठ योगिनी स्तोत्र—×। पत्रसं० २। आ० १०½×४¾ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १८७९ कार्तिक सुदी ११। वेष्टन स० ४३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—लिपिकार प० झांझूराम।

६६४२. चौसठ योगिनी स्तोत्र— ×। पत्रस० २। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सास्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—ऋषि मडल स्तोत्र भी है।

६६४३. चन्द्रप्रभ छंद—ब्र० नेमचन्द। पत्रसं० ४६। आ० ६¾×६ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल स० १८५०। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७१/४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

६६४४. छंद देसंतरी पारसनाथ—लखमी वल्लभ गरिण। पत्रस० ६। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६६४५. जयतिहुयरण प्रकरण—अभयदेव। पत्र स० ३। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—स्तवन। र० काल। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४५३/२६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

अन्तिम—

एयम दारियजतदेव ईम न्हवण भहुसवज अणलिय।
गुणगहण तुम्ह अंगीकरिय गुणिगण सिद्धउ॥
एमह पसीअमु पासनाह थभणपुर ठियइअ।
मुणिवर श्री अभयदेव विनवयइ साणदिय॥

इति श्री जयतिहुयरण प्रकरण सपूर्ण।

६६४६. **जिनदर्शन स्तुति**— × । पत्र स० ३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

६६४७. **जिनपाल ऋषिकाचौढलिया—जिनपाल** । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल × । ले०काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

६६४८. **जिनपिंजर स्तोत्र—कमलप्रभ** । पत्र स० ३ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६६४६ **जिनपिंजर स्तोत्र**—। पत्र स० १ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६६५०. **जिनपिंजर स्तोत्र**— × । पत्रसं० ५ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

६६५१. **जिनपिंजर स्तोत्र**— × । पत्र स० ४ । आ० ६½ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ ४८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष – परमानद स्तोत्र भी है ।

६६५२. **जिनरक्षा स्तोत्र**— पत्र स० ५ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

६६५३. **जिनवर दर्शन स्तवन—पद्मनन्दि** । पत्रस० ४ । आ० ८½ × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६६५४. **जिनशतक** – × । पत्र स० १७ । आ० ८½ × ३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

६६५५. **जिनशतक** – × । पत्रस० २८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

६६५६ **जिनसमवशरणमगल—नथमल** । पत्र स० २४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल सं० १८२१ वैशाख सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर बयाना ।

विशेष—नथमल ने यह रचना फकीरचद की सहायता से पूर्ण की थी जैसा कि निम्न पद्य से पता लगता है—

चन्द फकीर सहायतें मूल ग्रंथ अनुसार ।
समोसरन रचना कथन भाषा कीनी सार ।। २०१ ।।

पद्यों की स० २०२ है।

६६५७. जिनदर्शन स्तवन भाषा— × । पत्र स० २ । आ० ६३/४ × ४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—मूलकर्ता पद्मनदि है।

६६५८. जिनसहस्रनाम—आशाधर । पत्रस० ४ । आ० ६१/२ × ४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६५९. प्रति स० २ । पत्र स० २५ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८६५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

६६६०. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६ । आ० १०१/२ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६६६१. प्रति सं० ४ । पत्र स० ८ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । ले० काल स० १६०६ (शक)। पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

६६६२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ७ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६६६३. प्रति स० ६ । पत्रस० १५ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । टीकाकार रत्नकीर्त्ति शिष्य यशकीर्त्ति । उपासको के लिए लिखी थी । प्रति प्राचीन है।

६६६४. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १० । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

६६६५. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ६ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६६६६. जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य । पत्र स० ७ आ० ६१/२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । श्रा० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६६८ प्रति सं० ३ । पत्र स० १३ । श्रा० ९×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६६६९. प्रति सं० ४ । पत्र स० १६ । श्रा० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६९७०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । श्रा० ८×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६९७१. प्रति स० ६ । पत्रस० ३६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भक्तामर आदि स्तोत्र भी है ।

६९७२. प्रति सं० ७ । पत्रस० ३८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

६९७३ प्रति स० ८ । पत्रस० १० । श्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६९७४. प्रति सं० ९ । पत्र स० ११ । श्रा० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६९७५. प्रति सं० १० । पत्र स० १२ । श्रा० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन स० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६९७६. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ११ । श्रा० ८×६$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

६९७७ प्रति सं० १२ । पत्रस० ९ । श्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६९७८. प्रतिसं० १३ । पत्र स० २५ । श्रा० ९$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

६९७९. प्रतिसं० १४ । पत्र स० २१-३५ । श्रा० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६९८०. जिन सहस्रनाम टीका—अमरकीर्ति × । पत्रसं० ६५ । श्रा० १२$\frac{1}{2}$× ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—मूल्य ७ रु० दस आना लिखा है ।

६६८१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ७५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल स० १६६२ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६६८२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७७ । आ० ६×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६८३. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १५३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवाना कामा ।

६६८४. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २-८ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इंच । ले०काल स० १७४२ मगसिर बुदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६८५. जिनसहस्र नाम टीका—श्रुतसागर । पत्रस० १४७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १६०१ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६३ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६८६. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०१ । आ० १३ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १५६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५६६ वर्षे पौष बुदी १३ भौमे परम निरग्रंथाचार्य श्री त्रिभुवनकीर्त्युपदेशात् श्री सहस्र नाम लिखापिता । मगलमस्तु ।

६६८७. प्रति सं० ३ । पत्र स० ११० । आ० १२$\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

६६८८. प्रति संख्या ४ । पत्रस० १०६ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

६६८९. प्रति सं० ५ । पत्र स० ७३ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६६९०. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १३७ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$इञ्च । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टनसं० १३३-६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६६९१. जिनसहस्त्र नाम वचनिका— × । पत्र स० २८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६६९२. जिनस्मरण स्तोत्र— × । पत्रस० ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

६६९३. जैनगायत्री— × । पत्रसं० ५ । आ० ८×३$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १६२७ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६९९४. **ज्वाला मालिनी स्तोत्र** × । पत्रस० २० । आ० ८ × ३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**-स्तोत्र । र०काल × । **ले०काल** × । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** १४३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैनमदिर अजमेर ।

६९९५. **ज्वाला मालिनी स्तोत्र**—× । पत्र स० ५ । आ० ११ × ८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

६९९६. **तकाराक्षर स्तोत्र**—× । पत्रसं० २ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । **विषय**-स्तोत्र । र०काल × । **ले०काल** स० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन स० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रत्येक पद तकार से प्रार म होता है ।

६९९७. **तारण तरण स्तुति (पच परमेष्टी जयमाल)**—× । पत्र स० २ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन म० ५३० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६९९८ **तीर्थ महात्म्य (सम्मेद शिखर विलास)—मनसुखराय** । पत्र स० ११० । आ० १०¼ × ६½ इञ्च । **भाष** — हिन्दी । **विषय**-महात्म्य स्तोत्र । **र०**काल स० १७४५ आसोज सुदी १० । ले०काल स० १९१० आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष— ज्ञानचद तेरापथी ने प्रतिलिपि की थी ।

६९९९. **त्रिकाल संध्या व्याख्यान**—× । पत्र स ०९ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विषय**-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७००० **थंभरण पार्श्वनाथ स्तवन**—× । पत्र स० ३ । भाषा—प्राकृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७००१. **दर्शन पच्चीसी—गुमानीराम** । पत्र स० ११ । आ० ७ × ६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विपय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—आनंदिराम ने सशोधन किया था ।

७००२. **प्रति सं० २** । पत्रस० ९ । आ० १२ × ६½ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन म० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७००३. **दर्शन स्तोत्र—भ० सुरेन्द्र कीर्त्ति** । पत्र सं० १ । आ० १०¾ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । वेप्टन स० ६९८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७००४. द्वात्रिंशिका (युक्त्यष्टक)— × । पत्रस० ३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

७००५. नन्दीश्वर तीर्थ नमस्कार— × । पत्रसं० ३ । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७००६. नवकार सवैया—विनोदीलाल । पत्रस० १२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६-६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूँगरपुर ।

७००७. नवग्रह स्तवन— × । पत्रस० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

विशेष—३ से ६ तक पत्र नही है । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

७००८. नवग्रह स्तोत्र—भद्रबाहु । पत्र स० १ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७००९. नवग्रह स्तोत्र— × । पत्रस० १ । आ० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ४२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७०१० नवग्रह पार्श्वनाथ स्तोत्र— × । पत्र स० १ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ४४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७०११ निर्वाण काण्ड भाषा—भैया भगवती दास । पत्रस० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल स० १७४१ । आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ६०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

७०१२. प्रति स० २ । पत्र स० २ । आ० ६ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७०१३. नेमिजिनस्तवन—ऋषिवर्द्धन । पत्रस० १ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७०१४. नेमिनाथ छंद—हेमचंद्र । पत्रसं० १६ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल सं० १८८१ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५३/६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष—बोरी मध्ये संभवनाथ चैत्यालये लिखितं ।

७०१५. नेमिनाथ नव मंगल—विनोदीलाल । पत्रस० ८ । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल सं० १७४४ । ले०काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७०१६. पद्मावती गीत—समयसुन्दर । पत्रसं० २ । आ० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । **विषय**-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—३४ पद्य हैं ।

७०१७. पद्मावती पंचांग स्तोत्र— × । पत्रसं० २६ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७८२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७०१८. पद्मावती स्तोत्र— × । पत्रसं० ५६ । आ० ३ × ३ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० ८६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७०१९. पद्मावती स्तोत्र—× । पत्र स० ४ । आ० ११$\frac{1}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७०२०. पद्मावती स्तोत्र—× । पत्रस० २४ । आ० ६ × ४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ६१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७०२१. पद्मावती स्तोत्र— × । पत्र स० ४ । आ० ११ × ५$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर ।

७०२२. पद्मावती स्तोत्र—× । पत्र स० २ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७०२३. पद्मावती स्तोत्र— × । पत्रस० १० । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७०२४. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७०२५. पद्मावती स्तोत्र—× । पत्र सं० ७२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४६/७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—यत्र साधन विधि भी दं. हुई हैं ।

७०२६. परमज्योति (कल्याण मन्दिर स्तोत्र) भाषा—बनारसीदास । पत्र स० ४। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७०२७. परमानन्द स्तोत्र—× । **पत्रस०** ३ । आ० ६×६ **इञ्च** । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

७०२८. पात्र केशरी स्तोत्र—पात्र केशरी । पत्र स० ५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७०२९. पात्र केशरी स्तोत्र टीका —× । पत्र स० १४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय— स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १६८७ आसोज बुदो ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५५।४३४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०३०. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५६/४३५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०३१. पार्श्वजिन स्तुति—× । पत्र स० १ । आ० ११×४ इञ्च । **भाषा**-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

७०३२. पार्श्वजिन स्तोत्र—जिनप्रभ सूरि । पत्रस० ४ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० १४४१** । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इति जिनप्रभ कृत पारसी भाषा नमस्कार काव्यार्थ ।

७०३३. पार्श्वजिन स्तोत्र—× । पत्र स० ३ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७०३४. पार्श्वदेव स्तवन—जिनलाभ सूरि । पत्र सं० १७ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७०३५. पार्श्वनाथ छंद—हर्षकीर्ति—× । पत्र स० ४ । आ. ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{4}$ इच । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले.काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—२८ छद है ।

तेरीवन जाऊ सोभा पाउ वीनतडी सुणंदा है ।
क्या कहुं तोसूं सगतमा बहोती तौसु मेरा मन उलंभदा है ।
सिद्धि दीवासी तिह रहवासी सेवक बल संदा है ।
पजाब निसाणी पासबप्राणी गुण हर्षकीर्ति गवंदा है ।।

७०३६. **पार्श्वनाथ छंद—लब्धरुचि (हर्षरुचि के शिष्य)** । पत्र स. २ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । **विषय**—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन** सं० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७०३७. **पार्श्वनाथजी की निशानी—जिनहर्ष** । पत्रसं० ४ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—**स्तुति** । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन** सं० ३४१/४०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम **पद्य** निम्न प्रकार है ।

> तहां सिद्धादावासीय निरदावा सेवक जस विलवदा है ।
> घुघर निसाणी सा पास बखाणी गुण जिणहर्ष सुणदा है ।।

७०३८. **प्रति सं० २** । पत्र स० १५ । ग्रा० ७$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । ले० काल स० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७०३९ **पार्श्वस्तवन**— × । पत्र स० १ । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७०४०. **पार्श्वनाथ स्तवन**— × । पत्रस० १ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन** सं० १०४-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

७०४१. **पार्श्वनाथ स्तवन**— × । पत्रस० १ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६०/४६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

७०४२. **पार्श्वनाथ स्तावन**— । पत्र स० ३ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कही २ कठिन शब्दो के अर्थ दिये है ।

७०४३. **पार्श्वनाथ (देसंतरी) स्तुति—पास कवि** । पत्रस० ३ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल स० १७६८ । पूर्ण । **वेष्टन** स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी बसवा ।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है ।

आदि भाग—

> सुवचन स पो सारदा मया करो मुक्त माय ।
> तोसु प्रसन सुवचन तणी कुमरणान श्री भावे काय ।।
> कालिदास सरिपा किया रक थकी कविराज ।
> महिर करे माता मुने निज सुत जाणि निवाज ।।

अन्तिम भाग—

जपै सको जगदीस ईस त्रय भवरा अखडित ।
अद्भुत रूप अनूप मुकुट फरिए मरिए सिर मडित ।
धरै ध्याए सहु ध्याहु उदधि मधि पजिताई ।
प्रकट सात पाताल सग्ग कीरति सुहाई ।
मिरिलविवल भवा पासु तन पूरए प्रभु वैकु ठपुरी ।
प्रणमेव पास कविराज इम तवीसो छद देमतरी ।।

इति श्री पार्श्वनाथ देसातरी छद सपूर्ण ।

७०४४. पार्श्वनाथ स्तोत्र— × । पत्र स० ४ । आ० $१३\frac{१}{२} \times ७\frac{३}{४}$ **इन्च** । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८६३ **माघ सुदी १५** । **पूर्ण** । **वेष्टनसं० १११** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

७०४५. पार्श्वनाथ स्तोत्र— × । पत्रस० १ । आ० $१३\frac{१}{२} \times ६$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७०४६. प्रतिसं० २ । पत्र स० २ । आ० ११×५ इन्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४३२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७०४७. पार्श्वनाथ स्तोत्र (लघु)— × । पत्र स० ६ । आ० $१० \times ४\frac{१}{२}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १६६२ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७०४८. पार्श्वनाथ स्तोत्र—पद्मनंदि । पत्र स० ८ । आ० $१०\frac{१}{२} \times ४\frac{१}{२}$ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

विशेष—पत्र ३ मे सिद्धिप्रिय तथा स्वयंभू स्तोत्र भी है ।

७०४९. पार्श्वनाथ स्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र स०१ । आ० $१०\frac{१}{२} \times ४$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७०५०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १ । आ० $१२ \times ५\frac{१}{२}$ **इन्च** । **भाषा-संस्कृत** । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १८२२ । वेष्टन स० ६६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—पत्र पर चारो ओर सस्कृत टीका दी हुई है । कोई जगह खाली नही है ।

७०५१. पोषह गीत—पुण्यलाभ । पत्र स० १ । आ० $१०\frac{१}{२} \times ४\frac{१}{२}$ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी) ।

७०५२. पंच कल्याणक स्तोत्र— × । पत्र सं० ६ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७०५३. पंच परमेष्ठी गुण— × । वेष्टनसं० ७ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७०५४. पंच परमेष्ठी गुण वर्णन— × । पत्र स० २० । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा— संस्कृत-हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७८-४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—इसके अतिरिक्त कर्म प्रकृतिया तथा बारह भावनाओ आदि का वर्णन भी है ।

७०५५. पंचमगल—रूपचन्द । पत्र सं० ८ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७०५६. प्रति सं० २ । पत्रस० ५ । आ० १० × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४/६२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

७०५७. प्रति सं ३ । पत्रस० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८१७ मगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७०५८. प्रति सं० ४ । पत्रस० ५-१३ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७०५९. प्रति स० ५ । पत्र सं० १२ । आ० ६ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७०६०. प्रति सं० ६ । पत्रस० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

७०६१. प्रति सं० ७ । पत्रस० ८ । आ० ६ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन छोटा मंदिर बयाना ।

७०६२. प्रति सं० ८ । पत्र स० ११ । पूर्ण । ले०काल × । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७०६३ प्रति सं० ९ । पत्र स० ७ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४४/६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ । (कोटा)

७०६४. पंचवटी सटीक । पत्र सं० ३ । आ० १२ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय— स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर एवं सरस्वती स्तुति सटीक है।

७०६५. पंचस्तोत्र—× । पत्रसं० २१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७०६६. पंचस्तोत्र—× । पत्रसं० ७३ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—प्रति टीका सहित है।

७०६७. पंचस्तोत्र व्याख्या × । पत्रसं० ११ । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६/४४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०६८. पंचमीस्तोत्र—उदय । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

> नेमि जिणवर नमित सुरवर सिघ वधूवर नायको ।
> आणंद आणी भजन प्राणी सुख सतति दायको ।
> वर विवुध भूषण विगत दूषण श्री शकर सौभाग्य कवीश्वरो ।
> तस सीस जपइ उदय इणि परि सयलि सघि मगल करो ।

इति पचमी स्तोत्र ।

७०६९ पंचकल्याण—× । पत्रसं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७०७०. प्रबोधबावनी—जिनरंग सूरि । पत्रसं० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल स० १७८१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७०७१. बगलामुखी स्तोत्र—× । पत्र सं० ३ । आ० ९ × ४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७०७२. बारा आरा का स्तवन—ऋषभो (रिखब) । पत्र सं० ५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल सं० १७५१ भादवा सुदी २ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—अन्तिम कलश निम्न प्रकार है—

> भलत वन कीधो नाम लीधो गोतम प्रश्नोत्तर सही ।
> सवत् सतरे इंदचंद सु भादवा सुदी दोयज मही ।

तपगच्छ तिलक समान सद्गुरु विजयसेन सूरि तणू ।
सागरसुत रिषभो इम बोलै पाप आलोवै आपणं ॥७५॥

इति की बारा आरा को स्तवन संपूर्णं ।

७०७३. भक्तामर स्तोत्र – मानतुंगाचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७०७४. प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । आ० ४×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । प्रति प्राचीन है ।

७०७५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १५ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६५ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

७०७६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८७० माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पद्मनदिकृत पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

७०७७. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ६ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल स० १७५७ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति टिप्पण सहित है । प० तिलोकचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

७०७८. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २७ । आ० ६×४½ इञ्च । ले० काल स० १८१२ पोष सुदी बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति सटीक है प० लालचन्द ने अपने लिये लिखी थी ।

७०७९. प्रति स० ७ । पत्रस० ८ । आ० ८ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५२ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष ५प्रतियां और है ।

७०८० प्रतिसं० ८ । पत्र स० ८ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

७०८१. प्रतिसं० ९ । पत्र स० ९ । आ० ६½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७२।४७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७०८२. प्रतिसं० १० । पत्रस० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक)

७०८३. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ८ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल सं० १७२० मगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—आचार्य रामचन्द तत् शिष्य श्री राघवदास के पठनार्थ गोपाचल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७०८४. प्रतिसं० १२ । पत्रस० २३ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति कथा तथा टब्बा टीका सहित है।

७०८५. प्रति सं० १३ । पत्रसं० ७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४/२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

७०८६. प्रति सं० १४ । पत्रसं० १६ । आ० ६ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रारम्भ मे आदित्यवार कथा हिन्दी मे और है।

७०८७. प्रति सं० १५ । पत्र स० ६ । आ० ७ × ६ इञ्च । ले० काल स० १६५१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७१-७३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

७०८८. प्रति सं० १६ । पत्रसं० ७ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४-३६ प्राप्ति **स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोटड़िया का डू गरपुर ।

विशेष—हिन्दी व गुजराती टब्बा टीका सहित है ।

७०८९. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २१ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल स० १६५१ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—मुख्यत. निम्न पाठो का सग्रह और भी है—तत्त्वार्थ सूत्र, कल्याण मन्दिर, एकीभाव । बीच के ११ से १६ पत्र नही है ।

७०९० प्रतिसं० १८ । पत्रसं० २-२४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष —प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

७०९१. प्रति सं० १९ । पत्रसं० ५ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले०काल · । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०९२ प्रति स २० । पत्रसं० २-१६ । आ० ११×६ इञ्च · ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष – प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

७०९३. प्रतिसं० २१ । पत्र स० १६ । आ० १० × ४ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—कही कहीं हिन्दी मे शब्दो के अर्थ दिये है ।

७०९४. प्रति सं० २२ । पत्रसं० ५ । आ० ११ × ४ इच । ले० काल स० १७५८ । पूर्ण । वेष्टन स० २८७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—घटा कर्ण यत्र भी है ।

७०९५. प्रति सं० २३ । पत्रसं० १२ । आ० ८ × ४ इञ्च । ले० काल स० १६८० । पूर्ण । वेष्टन ५४ ८८ । **प्राप्ति स्थान** · दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष —भादवा में भवरलाल चौधरी ने लिपि की थी ।

७०९६. प्रति सं० २४ । पत्र स० ११ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८, ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

७०९७. **प्रतिसं० २५।** पत्रसं० ८। आ० ८×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—एक प्रति और है।

७०९८. **प्रतिसं० २६।** पत्र स० ६। आ० ७½×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्वार्थसूत्र भी है जिसके ३२ पृष्ठ हैं। आच्युराम सरावगी ने मदनगोपाल सरावगी से प्रतिलिपि कराई थी।

७०९९. **प्रतिसं० २७।** पत्र स० ५। आ० ८×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४८-१३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—कही २ कठिन शब्दो के अर्थ दिये हैं।

७१००. **प्रति सं० २८।** पत्रसं० ८। आ० ८½×४½ इञ्च। ले०काल स० १९५८ चैत्र बुदी ११। पूर्ण। वेष्टनसं० १५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पंचायती मंदिर अलवर।

विशेष—इस प्रति मे ५२ पद्य है। प्रति स्वर्णाक्षरी है।

अन्तिम चार पद निम्न प्रकार है—

नाथ. पर: परमदेव वचोमिदेयो।
लोकत्रयेपि सकलार्थ वदस्ति सर्व्व।
उच्चैरतीव भवत: परिघोषयेतो।
नैदुर्गभीर सुरदुंदभय: समाया ॥४९॥
वृष्टिर्दिव· सुमनसां परित: प्रपात·।
प्रीतिप्रदा सुमनसा च मधुव्रताना,
प्रीती राजीव सा सुमनसा सुकुमार सारा,
सामोदस पदमराजि नते सदस्या ॥५०॥
सुप्ता मनुष्य महुसामपि कोटि सख्या,
भाजा प्रभाप्रसर मन्वहु माहुसति।
तस्यस्तम: पटलभेदमशक्तहीन,
जैनी तनु द्युतिरशेष तमो पहुनी ॥५१॥
देवत्वदीय शकलामलकेवलाव,
बोधाति गाद्य निहयह्लवरत्नराशि।
घोष स एव यति सज्जन तानुमेने,
गभीर मार भरित तव दिव्य घोष: ॥५२॥

७१०१. **प्रतिसं० २९।** पत्र स० ७। ले० काल स० १९७६। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—संस्कृत टीका सहित मिर्जापुर मे प्रतिलिपि हुई। भंडार मे ५ प्रतिया और हैं।

७१०२. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ६ । ग्रा० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १८७२ फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७१०३. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २५ । ग्रा० ११×७ इञ्च । ले० काल स० १९६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—४८ मंत्र यंत्र दिये हुए हैं । प्रति ऋद्धि मंत्र सहित है ।

७१०४. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ग्रा० १०×४ इञ्च । ले० काल स० १९०८ । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७१०५. प्रति सं० ३३ । पत्र सं० ६ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल सं० १९०४ । पूर्ण । वेष्टन स० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

विशेष—बूंदी मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । संस्कृत में संकेतार्थ दिए हैं ।

७१०६. प्रति सं० ३४ । पत्रस० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२५ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव जीर्ण है । ३ प्रतिया और है ।

७१०७. प्रतिसं० ३५ । पत्र स० ८ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—स्वर्णाक्षरो मे लिखी हुई है । श्लोकों के चारों ओर भिन्न २ प्रकार की रंगीन वार्डर है ।

७१०८. भक्तामर स्तोत्र भाषा ऋद्धि मंत्र सहित—× । पत्रसं० ७ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-स्तोत्र एव मंत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१०९. भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित— × । पत्र सं० २६ । ग्रा० १३×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १९२८ । अपूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष – प्रति जीर्ण है ।

७११०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ग्रा० १०×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७१११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १–२५ । ग्रा० ९×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन.स० १३४-६२ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७११२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । ग्रा० १०×६ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३५--६२ प्राप्ति **स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७११३. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ४८ । ग्रा० ९×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८६-१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७११४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २४ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९३/४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

७११५. **प्रति सं० ७** । पत्र सं०४५ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७११६. **प्रतिसं० ८** । पत्रसं० १-२१ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७११७. **प्रतिसं० ९** । पत्रस० ५२ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

७११८. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० ८६ । आ० ६¾ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १८४६ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

७११९. **प्रतिसं० ११** । पत्र सं० १६ । आ० ६½×४ इञ्च । ले०काल सं० १७९२ फाल्गुन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

७१२०. **प्रतिसं० १२** । पत्र स० २७ । आ० १०¾×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—चोबे जगन्नाथ चदेरीवाले ने चन्द्रपुरी मे प्रति लिपि की थी ।

७१२१ **भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित**— × । पत्र स० २४-६६ । आ० ४×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७१२२. **भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित** — × । पत्र स० २१ । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७१२३. **भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित**— × । पत्र सख्या ५ । आ० ६¾×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-मत्र स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ६६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७१२४. **भक्तामर स्तोत्र टीका—अमरप्रभ सूरि** । पत्र स० १० । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

७१२५. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २८ । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेप्टन स० ७४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—पत्र स० १६ से जीवाजीव विचार है ।

७१२६. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ८ । आ० ६¼×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—टीका का नाम सुखबोधिनी है । केवल ४४ सूत्र हैं । प्रति श्वेताम्बर आम्नाय की है ।

७१२७. **भक्तामर स्तोत्र टीका**— × । पत्रस० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—टीका का नाम **सुख बोधिनी टीका** है।

७१२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७१२६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६५ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१३०. प्रति स० ४ । पत्र स० ६७ । आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल सं० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६७ वर्षे ग० श्री गडू श्री जिणदास शिष्य ग० हर्षविमल लिखितं नरायणा नगरे स्वयं पटनार्थं ।

७१३२. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १६३२ काती बुदी ६ । पूर्ण । वेप्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७१३३. प्रति सं० ७ । पत्रस० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७१३४. प्रति सं० ८ । पत्र स० १६ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७१३५. प्रति सं० ६ । पत्रस० ४१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है।

७१३६. प्रति सं० १० । पत्रस० १५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

७१३७. प्रति सं० ११ । पत्र स० २१ । आ० ११×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स०१८५० अगहन बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १८१/४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—लाखेरी ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७१३८. प्रति सं० १२ । पत्र स० १४ । आ० १०×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७१३६. प्रति सं० १३ । पत्रस० २६ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३/३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—मंत्रों के चित्र भी दे रखे हैं।

७१४०. प्रति सं० १४ । पत्रस० ८० । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—गुटकाकार में है।

७१४१. **प्रति सं० १५** । पत्र सं० ३८ । आ० ६×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६५० ज्येष्ठ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

७१४२. **प्रति सं० १६** । पत्रस० ४० । आ० १३×७¾ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

७१४३. **प्रति सं० १७** । पत्रस० २४ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल सं० १९६९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—प्रति सुन्दर है।

७१४४. **प्रति सं० १८** । पत्रसं० २४ । आ० १०×४ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९३-११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७१४५. **प्रति सं० १९** । पत्र स० २७ । आ० ६½×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७१४६. **प्रति सं० २०** । पत्रस० २४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७१४७. **भक्तामर स्तोत्र बालावबोध टीका**— × । पत्र स० २-३५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८४४ आषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७१४८ **भक्तामर स्तोत्र बालावबोध टीका**— × । पत्र स० ११ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७१४९. **भक्तामर स्तोत्र भाषा—अखैराज श्रीमाल** । पत्रस० २४ । आ० १०×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७१५०. **प्रति सं० २** । पत्रस० १३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हूण्डावालों का डीग ।

७१५१. **भक्तामर स्तोत्र भाषा—नथमल बिलाला** । पत्रसं० ५२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल सं० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १० । ले०काल सं० १८८४ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७१५२ **प्रति सं० २** । पत्रस० ५० । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—प्रति ऋद्धि मंत्र सहित है। तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

७१५३. प्रति स० ३ । पत्रस० २-४४ । म्रा० ११ × ६½ इञ्च । ले० काल × । **म्रपूर्ण । वेष्टनसं०** ६४ ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा

७१५४. भक्तामर स्तोत्र भाषा—जयचंद छाबड़ा । पत्र स० ३६ । म्रा० ८½ × ८½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल सं० १८७० कार्तिक बुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर म्रजमेर ।

विशेष – लालसोट वासी प० बिहारीलाल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

७१५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७१५६ प्रति स० ३ । पत्रस० २० । म्रा० १३ × ८½ इञ्च । ले० काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म्रग्रवाल पचायती मन्दिर म्रलवर ।

७१५७. प्रति स० ४ । पत्र स० २३ । म्रा० १३ × ८ इञ्च । ले०काल० स० १६०८ ।। पूर्ण । वेष्टन स०१७२ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर म्रलवर ।

विशेष—दीवान बालमुकन्दजी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । एक दूसरी प्रति २० पत्र की म्रौर है ।

७१५८. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २० । म्रा० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६६४ मगसिर बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७१५९. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ३८ । म्रा० ११ × ४¾ इंच । ले०काल स० १६५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

७१६०. भक्तामर स्तोत्र भाषा—× । पत्र स० ४ । म्रा० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**——भ० दि० जैन मदिर म्रजमेर ।

म्रादि भाग—चौपई

म्रमर मुकुटमणि उद्योत । दुरित हरण जिन चरणह ज्योत ।
नमहु त्रिविधयुग म्रादि म्रपार । भव जल निधि परु नह आधार ।।

म्रन्तिम—

भक्तामर की भाषा भली । जानिपयो विचि सत्तामिली ।
मन समाध **जपि करहि** विचार । ते नर होत **जयश्री** सार ।।

इति श्री भक्तामर भाषा सपूर्णं ।

७१६१. भक्तामर स्तोत्र भाषा—× । पत्रसं० ५० । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—म्रन्तिम पत्र नही है ।

७१६२. भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका—विनोदीलाल । पत्र स० १७३ । म्रा० ६½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल स० १७४७ सावण बुदी २ । ले० काल १८४३ सावण बुदी ८ । पूर्णं । वेष्टन सं० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—प्रति कथा सहित है।

७१६३. प्रति सं० २। पत्र स० २३०। ले०काल स० १८६५ फागुन सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष—कुम्हेर नगर मे लिखा गया था।

७१६४. प्रति सं० ३। पत्र स० १७३। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

७१६५. प्रति सं० ४। पत्र स० १३०। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष - १६२६ मे मन्दिर मे चढाया था।

७१६६. प्रति सं० ५। पत्र स० २३६। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ६५। **प्राप्ति स्थान**-—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

७१६७. प्रति सं० ६। पत्रस० १३८। आ० १२×८ इञ्च। ले०काल स० १६६६। पूर्ण। वेष्टनसं० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

७१६८. प्रति सं० ७। पत्र स० १८३। आ० १३×७ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन स० १४२। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७१६९. प्रति सं० ८। पत्रस० १८३। आ० १२×७ इञ्च। ले०काल स० १८७६। पूर्ण। वेष्टन स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

७१७०. प्रति सं० ९। पत्रस० १७४। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनस० १३। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग।

विशेष—८५ से आगे पत्र नही है।

७१७१. प्रति स० ११। पत्रस० २२६। आ० १२½×७ इञ्च। ले०काल स० १८६५। पूर्ण। वेष्टन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

७१७२. भक्तामर स्तोत्र टीका—लब्धिवर्द्धन। पत्रस० २१। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

७१७३. भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका—हेमराज। पत्र स० ७६। आ० ६ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल × । ले०काल स० १७७०। पूर्ण। वेष्टन स० १५०४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

भक्तामर टीका सदा पढै सुनेजो कोई।
हेमराज सिव सुख लहै तन मन बछित होय।

विशेष— गुटका आकार मे है।

७१७४. प्रति सं० २। पत्र स० १४। आ० ७½×४ इञ्च। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टनसं० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—हिन्दी पद्य सहित है।

७१७५. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ४। आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२३-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष – हिन्दी पद्य टीका है ।

७१७६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ५ । आ० १० ×४ इञ्च । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—हिन्दी पद्य है ।

७१७७. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २८ । ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ शुक्ला ४ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जोधाराज कासलीवाल ने लिखवाई थी । हिन्दी पद्य है ।

७१७८. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ११२ । आ० ४$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८३० माघ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—वाटिकापुर मे लिपि की गई थी । प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है । गुटकाकार है ।

७१७९. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ८६ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—हिन्दी गद्य एव पद्य दोनों मे अर्थ है ।

७१८०. प्रतिसं० ८ । पत्रस० २६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** स० १७२७ । पूर्ण । वेष्टन स० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—हेमराज पाड्या की पुस्तक है ।

७१८१. भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका— × । पत्र स० २० । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । विषय स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८४४ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प० चिमनलाल ने दुलीचद के पठनार्थ किशनगढ मे प्रतिलिपि की थी ।

७१८२. भक्तामर स्तोत्र टीका—गुणाकर सूरि । पत्र स० ८५ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७१८३. प्रति सं० २ । पत्र स० ५४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

७१८४ भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—कनक कुशल । पत्रस० १५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १६८२ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बू दी ।

विशेष—वैराठ नगर में विजयदशमी पर रचना हुई थी । नारायना नगर मे नयनरुचि ने प्रतिलिपि की थी ।

७१८५. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—रत्नचन्द्र । पत्र स० २४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७१८६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इंच । ले०काल सं० १७५७ अगहन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७४-१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७१८७. **प्रति स० ३** । पत्रसं० ४६ । आ० १३× ८½ इञ्च । ले० काल सं० १८३४ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष— सिद्धनदी के तट ग्रीवापुर नगर में श्री चन्द्रप्रभ के मन्दिर मे करमसी नामक श्रावक की प्रेरणा से ग्रंथ रचना की गयी । प्रतिलिपि कामा मे हुई थी ।

७१८८. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १४-४३ । ले०काल सं०१८२५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

७१८९. **भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—ब्र० रायमल्ल** । पत्र स० ५७ । आ० ८ × ३¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल सं० १६६७ आषाढ सुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३९३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१९०. **प्रति सं० २** । पत्रस० ४७ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७४६ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१९१. **प्रति सं० ३** । पत्रस० ६४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१९२. **प्रति सं० ४** । पत्रस० ४२ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य ब्र० मेघ ने प्रतिलिपि की थी ।

७१९३. **प्रति सं० ५** । पत्र स० ३७ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १७८३ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

७१९४. **प्रति सं० ६** । । पत्र संख्या ४८ । आ० १०½×४ इञ्च । ले० काल सं० १७५१ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ३८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—*बगरू ग्राम में सवलसिंहजी के राज्य मे प० हीरा ने आदिनाथ चैत्यालय मे लिपि की थी ।*

७१९५. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ४३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष वृंदावादिमध्ये प० तुलसीद्वादसी के शिष्य ऋषि प्रहलाद ने प्रतिलिपि की थी ।

७१९६. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ४२ । आ० ९ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७१९७. **प्रति सं० ९** । पत्र स० ३९ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८९९ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—छत्र सिमल के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

७१९८. **प्रति सं० १०** । पत्रसं० ३४ । आ० ७½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १७८२ बैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

७१९९. प्रतिसं० ११। पत्र स० ३६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल सं० १८३५ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

७२००. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ४१ । आ० १०½ × ४ इञ्च । ले० काल स० १८१७ माघ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—नाथूराम ब्राह्मण ने लिखा था ।

७२०१. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० २-३७ । ले० काल स० १७३६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

विशेष—कामा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७२०२. प्रतिसं०१४ । पत्र स० ३३ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १६७२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७२०३. प्रतिसं० १५ । पत्र स० २४ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल स० १७१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७२०४. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ४३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७२०५. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति— × । पत्र स० ४४ । आ० ८¾×८ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२६७ । **प्राप्ति स्थान** – भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२०६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ७० । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—कथा भी है ।

७२०७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—पुस्तक पं० देवीलाल चि० विरधू की छै ।

७२०८. प्रति स० ४ । पत्रस० २५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—टीका सहित है ।

७२०९. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—× । पत्र स० १६ । भाषा–संस्कृत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७२१०. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा ३६ वीं काव्य तक टीका है । आगे पत्र नही हैं ।

७२११. भक्तामर स्तोत्रावचूरि— × । पत्र सं० २-२६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १६७१ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३११/४२४-४२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री मानतुंगाचार्यकृत भक्तामर स्तोत्राव चूरि टिप्पणकं संपूर्णं कृत ।

प्रशस्ति— रूहतगपुर वास्तव्य चौधरी वसावन तत्पुत्र चौधरी सूरदास तत् पुत्र चौधरी सौहल सुख चेन अर्गलपुर वास्तव्य लिखित कायस्थ माथुर दयालदास तत्पुत्र सुदर्शनेन । संवत् १६७१ ।

७२१२. भक्तामर स्तोत्रावचूरि— × । पत्र सं० १११ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नाय का ग्रंथ है । ४४ काव्य है ।

७२१३. भगवती स्तोत्र— × । पत्रस०३ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७२१४. भज गोविन्द स्तोत्र— × । पत्रसं० १ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२१५. भयहर स्तोत्र (गुरुगीता)— । पत्रस० ५ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

७२१६. भवानी सहस्रनाम स्तोत्र— × । पत्रस० १३ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अन्तिम दो पत्र मे रामरक्षा स्तोत्र है ।

७२१७. भवानी सहस्रनाम स्तोत्र— × । पत्रस० २-२८ । भाषा—संस्कृत । विषय —स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७६७ पौष सुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—भादसोडा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७२१८. भारती लघु स्तवन—भारती । पत्रस० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

७२१९. (यति) भावनाष्टक— × । पत्र स० १ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२२०. भावना बत्तीसी—आचार्य अमितगति । पत्रसं० २ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ४०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२२१. भाव शतक—नागराज । पत्रस० १७ । आ० १०½×६ इञ्च । **भाषा**–संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—६८ पद्य हैं ।

७२२२. प्रति सं० २ । पत्र स० ५ । आ० १०×४ इञ्च । **ले०काल** × । वेष्टन स० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—१०१ पद्य हैं । ग्रंथ प्रशस्ति अच्छी है ।

७२२३. भूपालचतुर्विशतिका—भूपाल कवि । पत्रसं०४ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२२४. प्रति स० २ । पत्रस० १३ । आ० ६×३ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ८८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२२५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७२२६. प्रति सं० ४ । पत्रस०४ । आ० १०½×४ इञ्च । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

सवत् १६०७ वर्षे श्रावण वदि ८ श्री मूलसघे बलात्कारगणे भट्टारक सकलकीर्तिदेवा तदाम्नाये ब्र० जिनदास ब्रह्म वाघजी पठनार्थं ।

७२२७. प्रति सं० ५ । पत्रस० १५ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल स० १७५७ । **वेष्टन स०** ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—तुलसीदास के साथ रहने वाले तिलोकचन्द ने स्वय लिखी थी । कही २ संस्कृत टीका भी है ।

७२२८. प्रति सं० ६ । पत्रसं० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है ।

७२२९. प्रति सं० ७ । पत्र स० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७२३०. प्रति सं० ८ । पत्र स० ३ । आ० १३½×६ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ४०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७२३१. भूपाल चतुर्विशतिका टीका—भट्टारक चन्द्रकीर्त्ति । **पत्रस०** १० । आ० ६½× ६½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६३२ कार्तिक बुदि २ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७२३२. भूपाल चौबीसी भाषा—अखयराज । पत्र स० १६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** २३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७२३३. प्रति सं० २ । पत्रसं० १२ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल सं० १७३३ काती बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५९३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है इसकी प्रति सांगानेर मे हुई थी ।

७२३४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १२ । आ० ११×४¾ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ६७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२३५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २७ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०९२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७२३६. प्रतिसं० ५ । पत्रस० २-१७ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल स० १७२३ चैत्र बुदी १ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—ईश्वरदास ठोलिया ने सग्रामपुर में जोशी आनन्दराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

७२३७. भूपाल चौबीसी भाषा × । पत्र स० २ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२३८. भैरवाष्टक—× । पत्र सं० १४ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७/९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

७२३९. मंगल स्तोत्र— × । पत्र स० २ । आ० १०×४¹ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

७२४०. मणिभद्रजी रो छन्द—राजरत्न पाठक । पत्रस० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७५/१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

सगरवाडापुर मडरगो अतुलवली अशरण शरण
राजरत्न पाठक जयो देव जय जय करण

७२४१. मल्लिनाथ स्तवन—धर्मसिंह । पत्रस० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल स० १६०७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३६-४०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्नप्रकार है ।

श्री रतन सघ गणीन्द्र तसपट केशवजी कुलचद ए ।
तस पटि दिनकर तिलक मुनिवर श्री शिवजी मुणिद ए ।।
धर्मसिंह मुनि तस शिष्य प्रेमी थूण्या मल्लि जिणद ए ।।५१।।
सवत नय निधि रस शशिकर श्री दीवाली भीकार ए ।
श्रृंगार मरुधर नयरसुन्दर बीकानेर मझार ए ।
श्रीसघ वीनती सरस जाणी कीधो स्तवन उदार ए ।

श्रीमल्लि जिनवर सेवक जननि सदाशिव सुखकार ए ।

इति श्री मल्लिनाथ स्तवन सपूर्ण । भार्या जवणादे पठनार्थं ।

७२४२. **महामहर्षिस्तवन** — × । पत्र स० २ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**—स्तोत्र । र०काल × । **ले०काल** × । वेष्टन सं० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७२४३. **महर्षि स्तवन**— × । पत्र स० १ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत व्याख्या सहित है ।

७२४४. **महर्षि स्तवन**— × । पत्र स० ८ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० १८६** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७२४५. **महाकाली सहस्रनाम स्तोत्र**— × । पत्रस० २६ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १७८४ । पूर्ण । **वेष्टनस० ८८४** । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—गुटका साइज मे है ।

७२४६. **महाविद्याचक्रेश्वरी स्तोत्र**— × । पत्र सं० १२ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इदरगढ (कोटा)

७२४७. **महाविद्या स्तोत्र मंत्र**— × । पत्र स० ३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७२४८ **महावीर स्तवन—जिनवल्लभ सूरि** । पत्र स० ४ । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प० चोखा ने पं० हर्ष के पठनार्थं लिखी थी ।

७२४९. **महावीर स्तवन—विनयकीर्त्ति** । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा हिन्दी । विषय स्तवन । र० काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । **वेष्टनस०** ३३५-४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम भाग—

इति श्री स्याद्वाद सूचक श्री महावीर जिनस्तवन संपूर्ण ।

७२५०. **महावीरनो स्तवन—सकलचन्द्र** । पत्रसं० २ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । **विषय**—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७२५१. महावीर स्तोत्र वृत्ति—जिनप्रभसूरि। पत्रसं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७२५२. महावीर स्वामीनो स्तवन— × । पत्र सं० १ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८४० चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—औरङ्गाबाद में लिखा गया था ।

७२५३. महिम्न स्तोत्र—पुष्पदताचार्य । पत्रस० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ४५२** । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२५४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

७२५५. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ७ । आ० ६×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७२५६. प्रति स० ४ । पत्रस० २–६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

७२५७. प्रति स० ५ । पत्रस० १० । आ० ११×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७२५८. मानभद्र स्तवन—माणक । पत्र सं० ५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७२५९. मार्त्तण्ड हृदय स्तोत्र—× । पत्रस० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल स० १८८६ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १३१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२६०. मुनि मालिका—× । पत्रस० २ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–स्तवन । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७२६१. मूलगुणसज्झाय—विजयदेव । पत्र स० १ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तुति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७२६२. मांगीतुंगी सज्झाय—अभयचन्द्र सूरि। पत्र स० ३ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

७२६३. यमक बध स्तोत्र— × । पत्र स० २ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० । २०२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—टीका सहित है ।

७२६४. यमक स्तोत्र— × । पत्रसं० ६ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा —सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०लका × । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष—पार्श्वनाथ स्तवन यमक अलंकार मे है ।

७२६५. यमक स्तोत्राष्टक—विद्यानंदि । पत्र स० ६ । आ० ११ × ८ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । अर्हंत् परमेश्वरीय यमक स्तोत्राष्टक है ।

७२६६. रामचन्द्र स्तोत्र—× । पत्र स० १ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा —संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६५-४७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

७२६७. रामसहस्र नाम—× । पत्रस० १७ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १८०६ वैशाख बुदी ५ ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

लिखित चिरजीव उपाध्याय मयारामेण श्रीपुरामध्ये वास्तव्य ।

७२६८. रोहिणी स्तवन—× । पत्र स० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७२६९. लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र स० १ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७२७०. लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्रसं० ७१ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७२७१. लक्ष्मी स्तोत्र—× । पत्र सं० २ । आ० ७½ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२७२. लक्ष्मी स्तोत्र—X । पत्र स० ६ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$ X ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल X । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२७३. लक्ष्मी स्तोत्र गायत्री—X । पत्रसं० २ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल X । ले०काल सं० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर बसवा ।

विशेष—पल्लीवाल गच्छ के सुखमल ने लिपि की थी।

७२७४. लक्ष्मी स्तोत्र टीका—X । पत्रसं० ४ । भाषा—संस्कृत । र० काल X । ले०काल सं० १८६० भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे लिखा गया था ।

७२७५. लक्ष्मी स्तोत्र टीका—X । पत्रस० ७ । ग्रा० ११ X ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण ।वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कटा ।

विशेष—सरोंज नगर में पं० मूलचन्द ने लिखा सं० १८४···· ।

७२७६. लक्ष्मी स्तोत्र टीका— X । पत्र सं० ४ । ग्रा० ८ X ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनस० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७२७७. लघुशांति स्तोत्र— X । पत्रसं० १ । ग्रा० १० X ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७२७८. लघु सहस्रनाम—X । पत्रसं० ४२ । ग्रा० १२ X ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२७९. लघुस्तवन टीका—भाव शर्मा । पत्र स० ३-३६ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ X ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल स० १५६० । ले०काल स० १७७० । अपूर्ण । वेष्टन स० ७५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अबावती मे नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगतकीर्ति के शिष्य दोदराज ने अपनी ज्ञान वृद्धि के लिए टीका की प्रतिलिपि अपने हाथ से की थी । इसही के साथ सवत् १७७०, चैत्र बुदि ५ की, ४० तथा ४१ वें पृष्ठ पर विस्तृत प्रशस्ति है, जिसमे लिखा है कि जगतकीर्ति के शिष्य प० दोदराज के लिए प्रतिलिपि की गई थी ।

७२८०. लघु स्तवन टीका— X । पत्र स० ४ । भाषा—संस्कृत । **विषय—स्तोत्र** । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

७२८१. लघु स्तोत्र विधि—X । पत्र स० ७ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७२८२. लघुस्वयंभू स्तोत्र—देवनंदि। पत्र सं० ५। आ० १०३/४ × ४१/२ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६०३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७२८३. प्रतिसं० २। पत्र सं० ७। आ० ७×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—दशलक्षण धर्म व सोलहकारण के भी कवित्त हैं।

७२८४. लघुस्वयंभू स्तोत्र टीका— ×। पत्र सं० ३३। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १७८४ कार्तिक बुदि ४। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर।

७२८५. वज्रपंजर स्तोत्र यंत्र सहित— ×। पत्र स० १। वेष्टन सं० ७७-४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

७२८६. वंदना जखडी— ×। पत्रस० ६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल स० १६४२। पूर्ण। वेष्टन सं० १७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी।

७२८७. वर्द्धमान विलास स्तोत्र—जगद्भूषण। पत्रस० ४ से ५८। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २२ (क)। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग।

विशेष—४०३ पद्य हैं। भट्टारक श्री ज्ञानभूषण पट्टस्थितेन श्री भट्टारक जगद्भूषणेन विरचित वर्द्धमान विलास स्तोत्र।

४०१ वा श्लोक निम्न प्रकार है।

एता श्रीवर्द्धमानस्तुति मतिविलसद् वर्द्धमानानुरागात्,
व्यक्ति नीता मनस्या वसति तनुधिया श्री जगद्भूषणेन।
यो धीते तस्य कायाद् विगलति दुरितं श्वासकाशप्रणाशो,
विद्या हृद्या नवद्या भवति विद्य सिता कीर्तिदद्दामलक्ष्मी ॥४०१॥

७२८८. वर्द्धमान स्तुति—×। पत्र सं० १। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७२८९. वसुधारा स्तोत्र—×। पत्रस० ८। आ० ७१/२×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १४६३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७२९०. वसुधारा स्तोत्र— ×। पत्र सं० ५। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १२४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

७२६१. **वसुधारा स्तोत्र**— × । पत्र सं० ४ । ग्रा० १२ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२६२. **विचारषड्त्रिंशिकास्तवन टीका—राजसागर** । पत्रस० ६ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १६८१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

७२६३ **विद्या विलास प्रबन्ध—ग्राज्ञासुन्दर** । पत्र स० १७ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । । विषय-स्तोत्र । र०काल स० १५१६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

७२६४. **विनती ग्रादीश्वर—त्रिलोककीर्त्ति** । पत्र स० २ । ग्रा० ४½ × ३½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय —स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष— ग्रादिजिनवर सेवियै रे लाल ।
धूलेवगढ जिनराज हितकारी रे ।
त्रिभुवनवांछित पूरवैरे लाल ।
सारै ग्रातमकाज हितकारी रे ।
ग्रादिजिनवर ············

७२६५. **विनती संग्रह – देवाब्रह्म** । पत्रस० ११ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूंदी ।

७२६६. **प्रति सं० २** । पत्र स० २२ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८-७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष —विनतियो का सग्रह है ।

७२६७. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ३१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

७२६८. **विषापहार स्तोत्र महाकवि धनंजय** । पत्र स० ७ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७२६९. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ७ । ग्रा० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—स्तोत्र टीका सहित है ।

७३००. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ३ । ग्रा० १०½×४¾ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । आ० १३½ × ६ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ४१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३०२. प्रति स० ५ । पत्रस० ४ । आ० १० × ४½ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७३०३. प्रति सं० ६ । पत्रस० ६ । आ० १०¾ × ५¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । जिनदास ने स्वयं के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

७३०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३०५. विषापहार स्तोत्र भाषा— × । पत्रस० ८ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बीसपथी दौसा ।

७३०६. विषापहार स्तोत्र टीका—नागचन्द्र । पत्रस० १३ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १६३२ काती सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७३०७. प्रति स० २ । पत्रस० १२ । आ० १०¾ × ४½ इञ्च । **ले०काल** × । वेष्टन स० ३८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३०८. प्रति सं० ३ । पत्रस० १७ । आ० ११½ × ४¾ इञ्च । **ले०काल** × । वेष्टनस० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—आचार्य विशालकीर्त्ति ने लिखवाई थी ।

७३०९. विषापहार स्तोत्र टीका—प्रभाचन्द । पत्र स० १६ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१७-१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७३१०. विषापहार स्तोत्र टीका × । पत्रसं० १५ । आ० ११ × ६¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७०१ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष - विजयपुर नगर मे श्री धर्मनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७३११. विषापहार स्तोत्र टीका— × । पत्र स० १० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय – स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—९ वा तथा १० से आगे पत्र नही हैं ।

७३१२. विषापहार स्तोत्र भाषा—अखयराज । पत्रस० ३० । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १९५२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी (बूंदी)

७३१३. प्रति सं० २। पत्रस० ६-२० । ग्रा० १२×४½ इञ्च । ले०काल सं० १७२३ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेप्टन स० १२ × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी, दौसा ।

विशेष—साह ईश्वरदास ठोलिया ने ग्रात्म पठनार्थ ग्रानन्दराम से प्रतिलिपि करवाई थी ।

७३१४. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १५ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १७२० मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

७३१५. विषापहार भाषा—ग्रचलकीर्त्ति । पत्र सं० ३२ । भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ४७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७३१६. वीतराग स्तवन—× । पत्रस० १ । ग्रा० १२×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल ×। ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३६८-४७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३१७. वीरजिनस्तोत्र—ग्रभयसूरि । पत्रस० — । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७३१८. वीरस्तुति—× । पत्रस० ४ । ग्रा० ८ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १८४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—द्वितीयांगम्य वीरस्तुति सुगडाग को षष्टमो ग्रध्याय. । हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७३१९. वृहद्शांति स्तोत्र—× । पत्रस० १ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२०. वृषभदेव स्तवन—नारायण । पत्र सख्या ३ । ग्रा० ७½ × ४ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल स० १७५३ । पूर्ण । वेप्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७३२१ वृषभ स्तोत्र—पं० पद्मनन्दि × । पत्र सं० ११ । ग्रा० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन सं० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तरकर जयपुर ।

विशेष—श्री पद्मनन्दि कृत दर्शन भी है । प्रति संस्कृत छाया सहित है ।

७३२२. वृहद् शांतिपाठ × । पत्रस० २ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । लै० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

७३२३. शत्रुंजय गिरि स्तवन—केशराज । पत्र स० १ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—

श्री विजयगच्छपति पद्मसागर पाठ श्री गुणसागर ।
केशराज गावइ सवि सुहावइ सहगिरवर सुखकरु ।।३।।

इति श्री शत्रुंजय स्तवन ।

७३२४. शत्रुंजय तीर्थस्तुति—ऋषभदास । पत्रसं० १ । ग्रा० १०×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय –स्तुति । र०काल स० × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—निम्न पाठ और हैं—

अइमाता ऋषि सज्झाय	आणंदचद	हिन्दी स्तवन (र०कालस० १६६७)

चद्रपुरी मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे रचना हुई थी

७३२५. शत्रुंजय मास—विलास सुन्दर । पत्र सं० १ । ग्रा० १०½ × ५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल स० × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२६. शत्रुंजय मंडल—सुहकर । पत्रसं० १ । ग्रा० १० × ४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-प्राकृत । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

७३२७. शत्रुंजय स्तवन—× । पत्रसं० ४ । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७२७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७३२८. शांतिकर स्तवन— × । पत्रस० २ । ग्रा० १०×४ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२९. शांतिजिन स्तवन—गुणसागर × । पत्र स० १ । ग्रा० १०×४ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७३३०. शांतिजिन स्तवन । पत्र स० ३-८ । ग्रा० १०×४ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी में अर्थ भी दिया है ।

७३३१. शांतिनाथ स्तवन—उदय सागरसूरि । पत्रसं० १ । ग्रा० १०½ × ४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—सीमधर स्तवन धुजमलदास कृत और है ।

७३३२. शांतिनाथ स्तवन—पद्मनंदि । पत्रस० १ । आ० १२ × ४ इन्च । भाषा संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६१-४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३३३. शांतिनाथ स्तवन—मालदेव सूरि । पत्र स० ३७ से ४७ । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तवन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—आरम्भ मे दूसरे पाठ है ।

७३३४. शांतिनाथ स्तुति—× । पत्रस० ७ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७३३५. शांतिनाथ स्तोत्र—× । पत्र स० १२ । आ० १०×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । श्लोको के ऊपर तथा नीचे टीका दी हुई है ।

७३३६. शांतिनाथ स्तोत्र—× । पत्रस० ४ । आ० १०½×६¾ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नेंणवा ।

७३३७. शाश्वतजिन स्तवन—× । पत्र स० २ । आ० १० × ४ इन्च । भाषा–प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७३३८. शिव मन्दिर स्तोत्र टीका—× । पत्रस० २ से २५ । आ० ८×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

७३३९. शीतलनाथ स्तवन-रायचंद । पत्र स० १ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय–स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७३४०. श्रीपालराज सिज्झाय - खेमा । पत्रस० २ । आ० ११०×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

७३४१. श्वेताम्बर मत स्तोत्र सग्रह— × । पत्रस० ६ । आ० ११×५ इच । भाषा–प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सप्तति जिनस्तोत्र, भयहर स्तोत्र, लघुशान्ति स्तोत्र, अजितशान्ति स्तोत्र एव मत्र आदि हैं ।

७३४२. शोभन स्तुति — × । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली, कोटा ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर स्तुति है ।

७३४३. श्लोकावली — × । पत्रस० ६ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १८२० ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८७-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष—श्री मडलाचार्य श्री रामकीरत जी पठनार्थ ग्राम उदैगढमध्ये ब्राह्मण भट्ट—

७३४४. षट आगमय स्तवन—जिनकीर्ति । पत्रसं० ३ । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—केवल तीसरा पत्र ही है ।

७३४५. षट्पदी—शंकराचार्य । पत्र सं० १ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३४६. षष्ठिशतक—भंडारी नेमिचन्द्र । पत्रसं० ६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १६०८ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७३४७. सकल प्रतिबोध—दौलतराम । पत्र स० १ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स ३७७-१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७३४८. सज्झाय—समयसुन्दर— × । पत्रस० ५ । आ० १०⅞×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७३४९. सप्तस्तवन × । पत्रस० १५ । आ० ६×३¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—निम्न स्तवन है—

उवझायागहर, तीजईपोन, कल्याणमदिर स्तवन, अजितशातिस्तवन, षोडशधिया स्तवन, वृहद्शांति स्तवन, गोतमाष्टक ।

७३५०. समन्तभद्र स्तुति—समन्तभद्र । पत्र सं० २६ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १६१६ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ब्र० रायमल्ल ने ग्रंथ की प्रतिलिपि की थी ।

७३५१. समन्तभद्र स्तुति— ×। पत्रसं० ६३ । म्रा० ८×५ इञ्च । भाषा —प्राकृत-संस्कृत । विषय-प्रतिक्रमण एवं स्तोत्र । र०काल ×। **ले०काल सं० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—संवत् १६६७ वर्षे वैशाख सुदी ५ रवौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री गुणकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० वादिभूषण गुरूपदेशात् ब्रह्मगोपालेन श्री देवनन्दिना इदं षडावश्यक प्रदत्त शुभं भवतु ।

इस ग्रंथ का दूसरा नाम षडावश्यक भी है प्रारम्भ में प्रतिक्रमण भी है ।

७३५२. समन्तभद्र स्तुति— × । पत्रसं० ६१ । म्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ३६ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—२ पत्र बंध त्रिभंगी के हैं तथा प्रतिक्रमण पाठ भी है ।

७३५३. समन्तभद्र स्तुति—× । पत्र सं० ३३ । म्रा० १०½×४½ इंच । भाषा संस्कृत । **विषय**-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १६६४ पौष बुदी ६ । **वेष्टन सं० ३५६ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । प० उदयसिंह ने नागपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

७३५४. समवशरण पाठ—रेखराज । पत्रस० ६० । म्रा० १०½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । **ले०काल** स० १८५६ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७३५५. समवशरण मंगल—मायाराम । पत्र स० २६ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल स० १८२१ । ले० काल स० १८५४ सावन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

७३५६. समवसरण स्तोत्र—विष्णुसेन । पत्र स० ८ । म्रा० ८×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८१३ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स०८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७३५७. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । म्रा० १३½×६½ इञ्च । **ले०काल** स० १८२७ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३५८. समवशरण स्तोत्र— × । पत्रस० ६ । म्रा०६½×४½ इञ्च । भाषा - संस्कृत । **विषय**—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७३५९. समवशरण स्तोत्र—× । पत्र स० ६ । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७३६०. समवसरण स्तोत्र । पत्रसं० ६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७३६१. समवसरण स्तोत्र— × । पत्र स० ६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८२५ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है ।

७३६२. समवसरण स्तोत्र—× । पत्र स० ६ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५/४३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३६३. समवसरण स्तोत्र— × । पत्र सं० ११ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७३६४. सम्मेदशिखर स्तवन— × । पत्रस० ६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३६५. सरस्वती स्तवन—× । पत्रस० २ । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—स्तवन के पूर्व थूलिभद्र मुनि स्वाध्याय उदयरत्न कृत दी हुई है । यह हिन्दी की रचना है । र०काल स० १७५६ एव ले०काल सं० १७६१ है । प्रति राधणपुर ग्राम में हुई थी ।

७३६६. सरस्वती स्तोत्र—अश्वलायन । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इंच । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२/४७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

७३६७. सरस्वती स्तुति—पं० आशाधर । पत्रस० १-६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६६/४६५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३६८. सरस्वती स्तोत्र— × । पत्र स० १ । आ० १०¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३६९. सरस्वती स्तोत्र— × । पत्र सं० ३ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७३७०. सर्वजिन स्तुति । पत्र स० ६ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

७३७१. सखुणारी सज्झाय—बुधचंद । पत्रस० २ । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १८५१ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । **वेष्टनसं० १७१** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—लिखतंग बाई जमना ।

७३७२. सहस्राक्षी स्तोत्र—× । पत्रसं० २-६ । आ० ८ × ३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०कालस० १७६२ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५/४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३७३. साधारण जिन स्तवन—भानुचन्द्र गणि । पत्र सं० ६ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७७० चैत सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

७३७४. साधारण जिन स्तवन—× । पत्रस० १ । आ० ६×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३७५. साधारण जिन स्तवन वृत्ति—कनककुशल । पत्र स० ३ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले०काल सं० १७४५ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७३७६ साधु वन्दना—आचार्य कुंवरजी । पत्रस० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय स्तुति । र०काल × । ले०काल स० १७४१ अषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—आल्हणपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

७३७७. साधु बन्दना—बनारसीदास । पत्र सं० ३ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

७३७८. सिद्धगिरि स्तवन—खेमविजय । पत्रस० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले०काल स० १८७६ प्रथम चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १४-२०४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७३७९. सिद्धचक्र स्तुति—× । पत्रस० १ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

७३८०. सिद्धभक्ति—× । पत्र स० ३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

७३८१. सिद्धिवण्डिका स्तवन—×। पत्रसं० १। ग्रा० ६ × ४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तवन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २-१५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—१३ गाथाएं हैं।

७३८२. सिद्धिप्रिय स्तोत्र—देवनन्दि। पत्र स० ३। ग्रा० ११×८ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७३८३. प्रतिसं० २। पत्रस० १४। ले०काल सं० १८३२। पूर्ण। वेष्टन स० २४५। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

७३८४. प्रतिसं० ३। पत्रस० १२। ले०काल ×। पूर्ण। वष्टन स० २४६। **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—कल्याण मन्दिर एव भूपाल स्तोत्र भी है।

७३८५. प्रतिसं० ४। पत्र स० १२। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४८। **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रति सटीक है।

७३८६. प्रति स० ५। पत्रस० २। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २५१। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

७३८७. प्रतिसं० ६। पत्र स० १०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २६६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

७३८८. प्रतिसं० ७। पत्रसं० १३। ग्रा० १०×५½ इञ्च। **ले०काल स०** १९०३। पूर्ण। वेष्टन स० ६५२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७३८९. प्रतिसं० ८। पत्र सं० ४। ग्रा० १०×४½ इञ्च। ले० काल स० १८८० सावण सुदी ३। पूर्ण। वेष्टनसं० १०८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है।

७३९०. प्रति सं० ९। पत्रस० ४। ग्रा० १० × ४ इञ्च। ले० काल स० १७५६ ग्रषाढ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर (कामा)

७३९१. प्रति सं० १०। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वेष्टन स० ५१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—टीका सहित है।

७३९२. प्रति सं० ११। पत्रस० ६। ग्रा० ६¾×४½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

७३६३. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ३ । ग्रा० ११३/४×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ३७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३६४. प्रति सं० १३ । पत्रस० २ । ग्रा० १३१/२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७३६५. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० ८ । ग्रा० १०१/२×५३/४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति संस्तृत टीका सहित है।

७३६६. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हूण्डावालों का डीग ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

७३६७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ७ । ग्रा० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—इन्दौर नगर में लिखा गया । प्रति सस्कृत टीका सहित है।

७३६८. सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका--ग्राशाधर । पत्रस० १० । ग्रा० ११×४१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १७०२ ज्येष्ठ सुदी १२ । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७३६६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका — × । पत्र स० ११ । ग्रा० ६१/२×४१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४००. सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका— × । पत्रस० ६ । ग्रा० १२×५१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७६० फागुन सुदी १ । वेष्टन स० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति टोंक मध्ये लिखी गई थी।

७४०१. सिद्धिप्रिय स्तोत्र भाषा—खेमराज । पत्रस० १३ । ग्रा० १२×४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १७२३ पौष सुदी १० । पूर्ण । **वेष्टनसं० ११** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—साह ईश्वरदास ठोलिया ने आत्म पठनार्थ आनन्दराम से प्रतिलिपि करवाई थी।

७४०२. सोमंधर स्तुति — × । पत्र स० १२ । ग्रा० ६×६१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७/५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

७४०३. सीमंधर स्वामी स्तवन—प० जयवंत । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४०/४०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—रचना का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

साधु शिरोमणि जागीइ श्री विनयमडन उवझायरे ।
तास सीस गुणि आगली बहुला पडित राय रे ।।
आसो सुदी ५ नेमिदिनि शुक्रवार एकाति रे ।
कागल जयवत पडितिइ लिखी उमा झिमगणिइ रे ।।

इति श्री सीमाधर स्वामी लेख समाप्त । श्री गुणसोमाग्य सूरि लिखित ।

इसी के साथ पडित जयवत का लोचन परवेश पतग गीत भी है । प्रति प्राचीन है ।

७४०४. सीमधर स्वामी स्तवन— × । पत्रस० ४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७४०५. सुन्दर स्तोत्र— × । पत्र स० १० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६५२ वर्षे श्रावण सुदी ११ रविवारे विक्रमपुर मध्ये लिपिकृत । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

७४०६. सुप्रभातिक स्तोत्र— × । पत्र स० २ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७४०७. सुप्रभातिक स्तोत्र— × । पत्र सं० १ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७४०८. सुभद्रा सज्झाय— × । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७४०९. सोहं स्तोत्र— × । पत्रसं० १ । आ० १०½×६¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७४१०. स्तवन—गुणसूरि । पत्रसं० १ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तुति । र० काल सं० १६५२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—भयवतीपुर के आनन्दनगर में ग्रंथ रचना हुई।

७४११. स्तवन— × । पत्र सं० २ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२/१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७४१२. स्तवन —आणंद । पत्र सं० ३-१० । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—इसके अतिरिक्त नदिवेण गौतम स्वामी आदि के द्वारा रचित स्तवन भी है।

७४१३. स्तवन पाठ— × । पत्रस० ८ । आ० ९×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय —स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

७४१४. स्तवन संग्रह— × । पत्र स० ८ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा हिन्दी-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७०-१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७४१५. स्तोत्र पार्श्व (थंत्रण) — × । पत्रसं० २ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७४१६ स्तुति पंचाशिका—पाण्डे सिंहराज । पत्र स० २-८ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १७७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४१७. स्तुति संग्रह – × । पत्रस० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४१८. स्तुति सग्रह— × । पत्र स० २-६६ । भाषा-सस्कृत । विषय-सग्रह । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४१९. स्तोत्र— × । पत्रस० ६ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४२०. स्तोत्र— × । पत्रस० १६ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

७४२१. स्तोत्र चतुष्टय टीका—आशाधर । पत्र स० ३३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष— कृतिरियं वादीन्द्र विशालकीर्ति भट्टारक प्रिय सून यति विद्यानंदस्य ।

७४२२. प्रति सं० २ । पत्रसं० ३१ । आ० १२×५ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१८/४३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याशाधर कृत स्तोत्र टीका समाप्ता ।

कृतिरिय वादीन्द्र विशालकीर्ति भट्टारक प्रियशिष्य यति विद्यानदस्य यद्वमी निर्वेदस्योवृषः । बोधेन स्फुरता यस्यानुग्रहतो इत्यादि स्तोत्र चतुष्टय टीका समाप्ता ।

७४२३. स्तोत्र त्रयी — × । पत्रसं० १० । आ० १०½×५ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० ३७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सिद्धिप्रिय, एकीभाव एव कल्याण मन्दिर स्तोत्र है ।

७४२४ स्तोत्र पाठ— × । पत्र सं० ८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१३-११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष— उपसर्गहरस्तोत्र, भयहर स्तोत्र, अजितनाथ स्तवन, लघु शाति आदि पाठो का सग्रह है ।

७४२५. स्तोत्रय टीका— × । पत्रसं० २५ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—निम्न स्तोत्र टीका सहित है ।

१. भक्तामर स्तोत्र २. कल्याण मदिर स्तोत्र तथा ३. एकीभाव स्तोत्र ।

७४२६. स्तोत्र संग्रह— × । पत्रसं० ८८ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १६०५ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७२५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

भक्तामर, कल्याणमदिर, भूपालचौबीसी, देवागम स्तोत्र, देवपूजा, सहस्रनाम, तथा पंच मङ्गल (हिन्दी) ।

७४२७. स्तोत्र संग्रह— × । पत्रसं० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—भक्तामर एव सिद्धिप्रिय स्तोत्र सग्रह हैं । सामान्य टिप्पण भी दिया हुआ है ।

७४२८. स्तोत्र संग्रह—× । पत्रस० १० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—निम्न स्तोत्रो का संग्रह है ।

एकीभाव	वादिराज	संस्कृत
विषापहार	धनंजय	,,
भूपालस्तोत्र	भूपाल	,,

७४२९. स्तोत्र संग्रह— × । पत्र सं० ४ । ग्रा० १०×४½ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ११९९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पार्श्वनाथ एवं महावीर स्तोत्र है ।

७४३०. स्तोत्र संग्रह— × । पत्रस० ४७ । ग्रा० १०½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—भक्तामर, कल्याण मदिर, तत्वार्थ सूत्र एव ऋषिमडल स्तोत्र हैं ।

७४३१. स्तोत्र सग्रह— × । पत्र स० ४ । ग्रा० ९½×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष -- निम्न पाठो का सग्रह है ।

(१) नवरत्न कवित्त (२) चतुर्विंशति स्तुति (३) तीर्थंकरो के माता पिता के नाम (४) भज गोविद स्तोत्र (५) शारदा स्तोत्र ।

७४३२. स्तोत्र संग्रह— × । पत्र सं० ४१ । ग्रा० ८×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राज-महल (टोंक)

विशेष - निम्न स्तोत्रों का सग्रह है—

सहस्रनाम स्तोत्र	जिनसेनाचार्य	सस्कृत
कल्याणमदिर ,,	कुमुदचन्द्र	,,
भक्तामर ,,	मानतुङ्गाचार्य	,,
एकीभाव ,,	वादिराज	,,

७४३३. स्तोत्र संग्रह— × । पत्र स० ७ । ग्रा० १०½ × ५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—एकीभाव भूधरदास कृत तथा परमज्योति बनारसीदास कृत है ।

७४३४. स्तोत्र संग्रह— × । पत्रस० ५ । ग्रा० १०¾ × ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष -चक्रेश्वरी एव क्षेत्रपाल पद्मावती स्तोत्र है ।

७४३५ स्तोत्र संग्रह— × । पत्र स० १५ (१६-३०) । ग्रा० ९½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ६९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७३३६. स्तोत्रसग्रह— × पत्रस० ३ । ग्रा० १०¾×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महालक्ष्मी, चक्रेश्वरी एवं ज्वालामालिनी स्तोत्र ।

७४३७. **स्तोत्रसंग्रह**— × । पत्र सं० ७ । आ० १०½ × ४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ज्वाला मालिनी, जिनपंजर एवं पचागुली स्तोत्र है ।

७४३८. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्रसं० १६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१. भूपाल चौबीसी	भूपाल कवि	पत्रसं० ६
२. विषापहार स्तोत्र	धनजय	" ६-११
३. भावना बत्तीसी	अमितगति	"११-१६

७४३९. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्रसं० ३ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—लघु सामायिक, परमानन्द स्तोत्र एवं गायत्री विधान है ।

७४४०. **स्तोत्रसंग्रह**— × । पत्रसं० ८-४० । आ० ५½ × ५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१७-११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—जैन सकार वर्णन भी है ।

७४४१. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्रसं० १७ । आ० ५¾ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ से ६६ तक-४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—तीन प्रतियां है । ऋषि मण्डल स्तोत्र, पद्मावती स्तोत्र, किरातवराही स्तोत्र, त्रैलोक्य मोहन कवच आदि स्तोत्र हैं ।

७४४२. **स्तोत्रसंग्रह**— × । पत्रसं० ८७ । आ० ६½ × ५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं० १७६२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

संवत् १७६२ मिती ज्येष्ठ सुदि चतुर्दशी लि० पंडित खेतसी उदयपुरमध्ये ।

७४४३. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र सं० २१ । आ० ५ × ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—परमानन्द, कल्याण मंदिर, एकीभाव एवं विषापहार स्तोत्र है ।

७४४४. स्तोत्र संग्रह— × । पत्र सं० २३ । आ० १० × ४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५२ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

सरस्वती स्तोत्र		संस्कृत
सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"
क्षेत्रपाल स्तोत्र		"
दशलक्षण स्तोत्र		"
महावीर समस्या स्तवन		"
वर्द्धमान स्तोत्र		"
पार्श्वनाथ स्तोत्र मत्र सहित		"
पार्श्वनाथ स्तोत्र		"
चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र		"
चन्द्रप्रभ स्तोत्र मंत्र सहित		"
बीजाक्षर ऋषि मडल स्तोत्र		"
ऋषि मडल स्तोत्र	गौतमस्वामी	"

७४४५. स्तोत्र संग्रह—× । पत्र स० ७ । आ० ११ × ६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचनाकाल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—निम्न स्तोत्रो का सग्रह है—

पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	सस्कृत
स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"
क्षेत्रपाल स्तोत्र	—	"
पार्श्वनाथ स्तोत्र	राजसेन	"
चन्द्रप्रभ स्तोत्र	—	"
लघु भक्तामर स्तोत्र	—	"

नमो जोति मुर्ति त्रिकाल त्रिसिधं ।
नमो नरविकार' नरागत्र गव ।।
नमो तो नराकार नर माग वाणी ।
नमो तो नराधार आधार जाणी ।।

७४४६. स्तोत्र संग्रह— × । पत्र स० १६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स'० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—कल्याण मदिर, विषापहार एव लक्ष्मी स्तोत्र अपूर्ण है ।

७४४७. स्तोत्र संग्रह— × । पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इञ्च । **भाषा**—प्राकृत-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—मुख्यत. निम्न स्तोत्रों का सग्रह है ।

भयहर स्तोत्र, अजितशाति स्तोत्र एव भक्तामर स्तोत्र आदि ।

७४४८. स्तोत्र संग्रह— × । पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—निम्न स्तोत्रो का सग्रह है ।

स्वयभू स्तोत्र	समन्तभद्र	सस्कृत
महावीर स्तोत्र	विद्यानदि	,
नेमि स्तोत्र	—	,,

७४४९. स्तोत्र संग्रह— × । पत्रस० ९ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलान (बूदी)

विशेष— निम्न स्तोत्रो का सग्रह है—

स्वयभू स्तोत्र, भूपालचतुर्विशति स्तोत्र, सिद्धिप्रिय स्तोत्र एव विषापहार स्तोत्र का स ग्रह है ।

७४५०. स्तोत्र संग्रह— × । पत्र स० २१ से ३९ । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—गुजराती मे अर्थ दिया हुआ है ।

७४५१. स्तोत्र संग्रह— × । पत्र स० १६ । **भाषा**—हिन्दी-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—

नवकार मत्र, जिनदर्शन, परमजोति, निर्वाण काण्ड भाषा, भक्तामर स्तोत्र एव लक्ष्मी स्तोत्र है ।

७४५२. स्तोत्र संग्रह— × । पत्र स० १४ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—एकीभाव, विषापहार, कल्याण मन्दिर एव भूपाल चौबीसी स्तोत्र है ।

७४५३. स्वयंभू स्तोत्र—समन्तभद्र । पत्र स० २५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी जयपुर ।

७४५४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४६ । आ० ६½×५ इञ्च । ले० काल स० १८१६ मगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रारम्भ मे सामायिक पाठ भी हैं।

७४५५. स्वयंभू स्तोत्र (स्वयंभू पञ्जिका)—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ११ । आ० १२½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७६२ । वेष्टन सं० ६३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—इसमे टीका भी दी हुई है । टीका का नाम स्वयम् पजिका है ।

वर्षन भागबीतेन्दु कृते दीपोत्सवे दिने ।
स्वयम्भूपंजिका लेखि लक्ष्मणारन्येन धीमता ।।

७४५६. स्वयंभू स्तोत्र टीका—प्रभाचन्द । पत्र सं० ६१ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विपय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८२० । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर, अजमेर ।

विशेष—ग्र थ का नाम क्रियाकलाप टीका भी है ।

७४५७. प्रति सं० २ । पत्रस० १५२ । आ० ११×४½ इंच । **ले०काल** स० १७७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७४५८. प्रति सं० ३ । पत्रस० ४६ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले०काल स० १७०२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष – अलवर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

७४५६. प्रति सं० ४ । पत्रस० ६६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल स० १६६५ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवाजी कामा ।

विशेष—रोहतक नगर मे आ० गुणचन्द ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

७४६०. स्वयंभू स्तोत्र भाषा – द्यानतराय । पत्रस० ४६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

७४६१. हीयाली—रिष । पत्र स० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—साध्वी श्री मागा सज्झाय भी ।

——:o——

विषय -- पूजा एवं विधान साहित्य

७४६२. अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ३ । आ० ६३/४×४३/४ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल सं० १७४५ भादवा सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—अकृत्रिम जिन चैत्यालयों की पूजा है ।

७४६३. अकृत्रिम चैत्यालय पूजा—चैनसुख । पत्रसं० ३६ । आ० १३ × ६१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । र० काल सं० १९३० । ले०काल स० १९६४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७४६४. अकृत्रिम चैत्यालय पूजा—मल्लिसागर । पत्र स० २० । आ० १०१/२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनसं० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

७४६५. अकृत्रिम चैत्यालय पूजा— × । पत्रसं० १७७ । आ० १२१/२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल स० १८६० । ले०काल स०१९११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७४६६. अकृत्रिम जिन चैत्यालय पूजा—लालजीत । पत्रसं० २२९ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल स० १८७० कार्तिक सुदी १२ । ले० काल स० १८८६ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

७४६७. प्रति स० २ । पत्रस० १२६ । आ० १०२×६३/४ इञ्च । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—लक्ष्मणदास बाकलीवाल खुमेरवाले ने महात्मा पन्नालाल जयपुर वाले से आगरा में प्रतिलिपि करवाई थी ।

७४६८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हूण्डावालो का डीग ।

विशेष—आगरा में प्रतिलिपि की गई थी ।

७४६९. प्रति सं० ४ । पत्र स० १५५ । आ० १३ × ७१/२ इञ्च । ले० काल स० १९२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

७४७०. प्रति स० ५ । पत्रस० १४७ । ले०काल स० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

अंतिम प्रशस्ति—

पूजा आरम्भ क्यो, काशी देश हर्ष भयो,
भेलूपुर ग्राम जैनजन को निवास है ।

अकीर्तम मन्दिर है रचा चारि सै अठावन ।
जेतिन को सुपाठ लालजीत यौ प्रकास है ।

७४७१. **प्रति सं० ६ ।** पत्र सं० १६७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४७२. **प्रतिसं० ७ ।** पत्रस० १७८ । आ० २२×६ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ५१-३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का डूगरपुर ।

७४७३. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० १६१ । आ० ११½×६¾ इञ्च । ले० काल सं० १६५१ सावन सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—श्रावक केदारमलजी न फतेहपुर मे सोनीराम भोजग से प्रतिलिपि कराई थी ।

७४७४. **अक्षयदशमी पूजा**— × । पत्र स० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मुक्तावली पूजा भी है ।

७४७५. **अढाई द्वीप पूजा**— × । पत्र स० १७६ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६१५ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५/३७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७४७६. **अढाई द्वीप पूजा—डालूराम ।** पत्रस० २-३० । आ० १५×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल स० १८८७ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल स०१६३१ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—ईश्वरी प्रशादशर्मा समशावादवालो ने प्रतिलिपि की थी ।

७४७७. **प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ११३ । आ० १२×६ इच । ले० काल स० १६३१ । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

७४७८. **प्रतिसं० ३ ।** पत्र सं० १११ । आ० १२¾×४½ इञ्च । ले० काल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—छोटे दीवानजी के मन्दिर की प्रति से रिषभचन्द बिन्दायक्या ने प्रतिलिपि की थी ।

७४७९. **अढाईद्वीप पूजा—भ० शुभचन्द्र ।** पत्रस० २६८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६२४ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७४८०. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ६७ । आ० ११½×७ इञ्च । ले० काल स० १८६० आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—१ से २८ तथा ६५ व ६६ पत्रो पर सुन्दर रगीन बेल्ने हैं ।

बखतलाल तेरापथी ने दौसा मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

७४८१. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ३७३ । ले०काल स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टनस० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल कामा ने प्रतिलिपि कराई थी।

७४८२. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २४३ । म्रा० १३½×७½ इञ्च । ले०काल स० १६११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७४८३. अढाईद्वीप पूजा लालजीत । पत्रस० १३७ । म्रा० १३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८७० भादों सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

७४८४. अढाईद्वीप पूजा— × । पत्र सं० ३६ । म्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—अढाई द्वीप पूजा के पहिले और भी पूजाए दी हैं ।

७४८५ प्रतिसं० २ । पत्र सख्या १४० । १२¾×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१/४६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

७४८६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २१५ । म्रा० १२½×७½ इञ्च । ले०काल स० १६०६ जेठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १४/३३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

७४८७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २४० । म्रा० २३×६½ इञ्च । ले०काल स० १८८८ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—रामचन्द्र ने नानगराम से किरौली नगर मे दीवान बुधसिंग जी के मन्दिर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

७४८८. प्रति सं० ५ । पत्र स० १०४ । म्रा० १०½×७ इञ्च । ले०काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

७४८९. प्रति स० ६ । पत्रस० १५४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर हण्डावालो का डीग ।

७४९०. अनतचतुर्दशी पूजा—**श्री भूषणयति** । पत्र स० २४ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

७४९१. अनन्तचतुर्दशी पूजा—शान्तिदास । पत्रस० ११ । म्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७६७ वैशाख सुदी ५ । वेष्टन स० ६१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—नरायण नगर मे भ० जगत्कीर्त्ति के शिष्य बुध दोदराज ने अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी ।

७४९२. अनन्त चतुर्दशी पूजा— × । पत्रस० १४ । म्रा० १०×६ इञ्च । **भाषा-संस्कृत** । **विषय**-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर** नागदी बूंदी ।

७४९३. अनन्तचतुर्दशी पूजा— × । पत्र सं० १८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७४९४. अनन्ताचतुर्दशी व्रत पूजा— × । पत्र स० २७ । आ० ११×५ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४९५. अनन्तचतुर्दशी व्रत पूजा—विश्वभूषण । पत्रसं० १४ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

७४९६ अनत जिनपूजा—पं० जिनदास । पत्रसं० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । लें०काल स० १८२३ सावरण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोक)

७४९७. अनन्तनाथ पूजा—श्रीभूषण । पत्रसं० १३ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८२४ मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४९८. प्रतिसं० २ । पत्रस० १६ । ले० काल स० १८७९ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ९५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

७४९९. प्रति स० ३ । पत्रस० १६ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०काल स० १८७९ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५००. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १-२२ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

७५०१. अनन्तनाथ पूजा—रामचन्द्र । पत्र स० ५ । आ० ६$\frac{1}{2}$×८$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९९१ । पूर्ण । वेष्टन स० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

७५०२. अनन्तनाथ पूजा— × । पत्रस० २४ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १००७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५०३. अनन्तनाथ पूजा— × । पत्र स० १३ । आ० १३ × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स० १८५३ भादवा बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७५०४. अनन्तनाथ पूजा—× । पत्र स० १८ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी (बूंदी) ।

७५०५. अनन्तनाथ पूजा × । पत्रस० २७ । आ० ९×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

७५०६. अनन्तनाथ पूजा—× । पत्र स० ३१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९२५ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, (बूंदी)

विशेष-नागदी के नेमीश्वरजी के मन्दिर मे गुरुजी साहब शिवलालजी की प्रेरणा से ब्राह्मण गिरधारी ने प्रतिलिपि की थी ।

७५०७. अनन्तनाथ पूजा—× । पत्र स० ३३ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९०९ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६/३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७५०८. अनन्तनाथ पूजा मडल विधान—गुणचन्द्राचार्य । पत्रसं० २२ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्टन स० २५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, (बूंदी)

७५०९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २९ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्टनस० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी

७५१०. प्रति सं० ३ । पत्रस० ५९ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७५११ प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २ से २७ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल स० १९२१ । पूर्ण । वेष्टन स० २४/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

७५१२. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ४१ । आ० ११×५ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी (बूंदी)

७५१३. प्रति सं० ६ । पत्र संख्या २६ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० १८७६ पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७५१४. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ४२ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९२० । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—श्री शाकमागपुर मे रचना हुई थी । नेमीपुर चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७५१५. अनन्त पूजा विधान । पत्र सं० ३ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५८/२६२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)

७५१६. अनन्त व्रत कथा पूजा—ललितकीर्त्ति । पत्रस० ८ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९२२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)

७५१७. **अनन्तव्रत पूजा – पाण्डे धर्मदास** । पत्रसं० २७ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५१८. **अनन्तव्रत पूजा—सेवाराम साह** । पत्रसं० ३ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९४७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७५१९. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७५२०. **अनन्तव्रत पूजा**— × । पत्रसं० १४ । आ० ११ ×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय – पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५२१. **अनन्तव्रत पूजा** — × । पत्र सं० ७ । आ० ५½ × ४½ इञ्च । भाषा — हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५२२. **अनन्तव्रत पूजा**—× । पत्र सं० १४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८० सावण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५२३. **अनन्तव्रत पूजा**—× । पत्रसं० २० । आ. १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले.काल सं० १९६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

७५२४. **अनन्तव्रत पूजा**— × । पत्रसं० २३ । आ० ६½ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९०८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—१४ पूजायें है । जयमाल हिन्दी मे है—कही २ अष्टक भी हिन्दी मे है ।

७५२५. **अनन्त व्रत पूजा** — × । पत्रसं० १८ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

७५२६. **अनन्तव्रत पूजा** - × । पत्र सं० १३ । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विपय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

७५२७. **अनन्तव्रत पूजा**—× । पत्रसं० १७ । आ० १५×४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो डूगरपुर ।

७५२८. **अनन्तव्रत पूजा**—× । पत्रसं० १२ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८८१ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजस्थान (टोंक)

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

७५२९. अनन्तव्रत पूजा—× । पत्र स० ६ । आ० ६×६ इञ्च । **भाषा**—सस्कृत । **विषय**—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६६ सावण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४-१०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७५३० अनन्तव्रत पूजा— × । पत्रस० १-२१ । आ० ७$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय – पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४८-२८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

७५३१. **अनन्तव्रत पूजा उद्यापन**—**सकलकीर्त्ति** । पत्र स० १८ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८८६ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७५३२. **प्रति सं० २** । पत्र स० ४१ । ले०काल स० १६२६ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७५३३. **अनन्तव्रत पूजा विधान भाषा**—× । पत्रसं० ३२ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

७५३४. **अनन्तव्रत विधान**—**शान्तिदास**—× । पत्रस० २४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४-२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—शिवबक्स ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

७५३५. अनन्तव्रतोद्यापन—**नारायण** । पत्र स० ४० । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७५३६. अनन्तव्रतोद्यापन—× । पत्रस० २ से ३२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगानी मदिर करौली ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

७५३७. अनन्तव्रतोद्यापन पूजा—× । पत्र स० ११ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी

७५३८. अभिषेक पाठ—× । पत्र स० ४ । आ० ८$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । **भाषा**—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७५३९. अभिषेक पाठ— × । पत्रसं० ७ । आ० १०½ × ५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । लेे० काल सं० १६०९ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी (बूंदी) ।

विशेष – घृताभिषेक पाठ है ।

प्रशस्ति—सवत् १६०९ वर्षे मार्ग सुदि नवमी वृहस्पतिवासरे उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे घृत गुण आरम पठनार्थं लिखितं प० ज्योति श्री महेस गोपा सुत ।

७५४०. अभिषेक पाठ— × । पत्र सं० ४७ । आ० १० × ८ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

७५४१. अभिषेक पूजा— × । पत्र स० ३ । आ० १० × ५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

७५४२. अभिषेक पूजा—विनोदीलाल । पत्रस० ५ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७५४३. अभिषेक विधि × । पत्रस० ४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले० काल । वेष्टन स० ५८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७५४४. अष्टद्रव्य महा-अर्घ— × । पत्रस० १ । आ० ८ × ६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

७५४५. अष्टाह्निका पूजा—सकलकीर्त्ति । पत्र स० १६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२/५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७५४६. अष्टाह्निका व्रतोद्यापन-शोभाचन्द । पत्र सं २० । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८१७ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७५४७. अष्टाह्निका पूजा— × । पत्रस० २० । आ० ८¾ × ६¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय पूजा । र०काल स० १८७६ कार्तिक बुदी ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

७५४८. अष्टाह्निका पूजा— × । पत्रस० १५ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०कालं × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५४६. अष्टाह्निका पूजा— × । पत्रसं० १३ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३८३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५५०. अष्टाह्निका पूजा— × । पत्र सं० १६ । आ० १०३/४ × ४१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६२० । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७५५१. अष्टाह्निका पूजा— × । पत्र सं० ३ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३७/३३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७५५२. अष्टाह्निका पूजा उद्यापन—शुभचन्द्र । पत्रसं० १२ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

७५५३. अष्टाह्निकापूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्रसं० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

७५५४ प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५५५. अष्टाह्निका पूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८५८ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५५६. अष्टाह्निका पूजा—द्यानतराय । पत्रसं० १६ । भाषा—हिन्दी । विषय —पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५५७ अष्टाह्निका पूजा— × । पत्र सं० १४३ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—२ रु० १५ आना लगा था ।

७५५८. अष्टाह्निका मंडल पूजा— × । पत्र सं० ६ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिरदौसा ।

७५५६. अष्टाह्निका व्रतोद्यापन पूजा—पं० नेमिचचंद्र । पत्रसं० ३५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)

७५६०. अष्टाह्निका पूजा—× । पत्रस० २७ । आ० ८३/४×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । **विषय**—पूजा । र०काल × । **ले०काल सं० १८८६** । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

७५६१. अष्टाह्निका पूजा- × । पत्र स० १५ । आ० १३×७ इञ्च । र०काल स० १८७६ । **ले० काल स०** १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक)

७५६२. अष्टाह्निका पूजा— × । पत्रस० २२ । आ० १०१/२×६१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

७५६३ अष्ट प्रकारी पूजा—× । पत्र सं० ४ । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५६४. अष्टप्रकारी पूजा जयमाल—× । पत्रस० ११ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी **पद्य** । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० **१८६४** । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७५६५. असज्भाय विधि । पत्र स० २ । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** ६७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७५६६. आकार शुद्धि विधान - देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्रस० ६ । आ० ११३/४ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६१-१४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७५६७. आठ प्रकार पूजा कथानक—× । पत्र स० ८५ । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७५६८. आदित्यजिन पूजा—केशवसेन । पत्रस० ८ । आ० **११**×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**—पूजा । र०काल × । **ले०काल** स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७५६९. आदित्य जिनपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्रसं० १७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-**संस्कृत** । विषय पूजा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम आदित्यवार व्रत विधान भी है ।

७५७०. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । आ० १०×४१/२ इञ्च । ले०काल स० १६१६ श्रावण **सुदी** ६ पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—मगलचन्द श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

७५७१. आदित्यवार व्रतोद्यापन पूजा—जयसागर । पत्रस० १० । भाषा—संस्कृत । **विषय**—पूजा । र०काल × । **ले०काल** स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० **जैन पंचायती** मन्दिर भरतपुर ।

७५७२. **आदित्यव्रत पूजा** — × । पत्र सं० १२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८३६ जेठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पं० आलमचन्द ने लिखा था ।

७५७३. **आदित्यव्रत पूजा** — × । पत्रस० ४ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा —संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५७४. **इन्द्रध्वज पूजा—भ० विश्वभूषण** । पत्रस० १११ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर उदयपुर ।

७५७५. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ११८ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । ले० काल सं० १८८३ फागुण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

७५७६. **प्रति सं० ३** । पत्रस० ११२ । आ० ११×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६८५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

७५७७. **इन्द्रध्वज पूजा** – × । पत्र स० ६० । आ० १२×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—ग्रंथ का लागत मूल्य १३।-) है ।

७५७८. **इकवीस विधि पूजा**— × पत्र स० १३ । भाषा—हिन्दी गुजराती । **विषय**—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५७६. **ऋषिमंडल पूजा—शुभचन्द** । पत्र सं० १८ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८१६ जेठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

७५८०. **ऋषि मंडल पूजा—विद्याभूषण** । पत्रस० २० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५८१. **ऋषि मंडल पूजा—गुणनन्दि** । पत्रसं० २१ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६११ । पूर्ण । वेष्टन स० २८२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—बूंदी मे नेमिनाथ चैत्यालय मे पं० रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

७५८२. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० २-२४ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७५८३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०। आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। वेष्टन सं० ४३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७५८४. ऋषिमंडल पूजा भाषा—दौलत ग्रोसेरी। पत्र सं० १२। आ० १२$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल सं० १६००। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७५८५. प्रति सं० २। पत्रस० १५। आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

७५८६. ऋषिमंडल पूजा—×। पत्र स० ४। आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूंदी।

७५८७. ऋषिमंडल पूजा—×। पत्र स० ५। भाषा–संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७/३६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—६ प्रतियां और है जिनके वेष्टनसं० ३८/३६७ से ४३/३७२ तक है।

७५८८. ऋषिमंडल पूजा—×। पत्र स० १७। आ० ११×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६२२। पूर्ण। वेष्टन स० १५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

७५८९. ऋषिमंडल पूजा—×। पत्रस० २। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७५९०. ऋषिमंडल पूजा भाषा—×। पत्रस० १३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १८६४ फागुण बुदी ४। पूर्ण। वेष्टनस० १२३२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७५९१. ऋषिमंडल यत्र पूजा—×। पत्रस० १४। आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

७५९२. ऋषिमंडल स्तोत्र पूजा—×। पत्रस० १७। आ० ११×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ४८६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—प्रतापगढ मे प० रामलाल ने प्रतिलिपि की थी।

७५९३. अंकुरारोपण विधि—आशाधर। पत्रस० ६। आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—प्रतिष्ठा विधान। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३८३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७५९४. प्रति सं० २। पत्रस० ६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—प्रतिष्ठा विधान। र०काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० २६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

७५९५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६ । आ० ८ × ६½ इंच । र०काल × । ले० काल सं० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७५९६. अंकुरारोपण विधि—इन्द्रनन्दि । पत्रस० १५६ । आ० १२ × ६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल स० १६४० वैशाख शुक्ला ४ । **पूर्ण** । वेष्टन स० २६७-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

७५९७. कमल चन्द्रायण व्रतोद्यापन— × । पत्र स० १० । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२३— × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७५९८. कर्मचूर उद्यापन — × । पत्रस० ६ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । **ले०काल स० १८८४** । **पूर्ण** । **वेष्टन स० ११३** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक)

७५९९ कर्मदहन उद्यापन—विश्वभूषण । पत्र स० २६ । आ० १०¾ × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७६००. **कर्मदहन पूजा—टेकचंद** । पत्रस० १७ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

७६०१. प्रतिसं० २ । पत्र स० १३ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

७६०२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १८ । आ० १० × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी. बूंदी ।

७६०३. प्रति सं० ४ । पत्रस० २३ । आ० ६ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३-१०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)

७६०४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५७ । आ० १०½ × ४ इञ्च ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०५. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २२ । ले०काल स० १६६२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०६. प्रति सं० ७ । पत्रस० १६ । आ० १२ × ६ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

७६०७. प्रति सं० ८ । पत्रस० ३० । आ० ६ × ७ इञ्च । ले०काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

७६०८. प्रति सं० ६ । पत्रसं० २५ । आ० ६ × ७ इञ्च । ले०काल स० १८८२ श्रावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

विशेष—कमलाल पहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी ।

७६०९. **प्रतिसं० १०** । पत्रसं० २१ । आ० १० × ४½ इंच । ले०काल स० १९२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यो का नैणवा ।

७६१०. **प्रतिसं० ११** । पत्रस० ३० । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १९५५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७६११. **प्रतिसं० १२** । पत्रस० ४१ । आ० १२¾ × ८¾ इञ्च । ले० काल स० १९५९ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७६१२. **प्रति सं० १३** । पत्रस० ६६ । ले०काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सदासुख रिषभदास द्वारा प्रतिलिपि कराई गई थी ।

७६१३. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० २२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६१४. **कर्मदहन पूजा—शुभचन्द्र** । पत्र स० १८ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७६१५. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १८ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—हरविशदास लुहाडिया ने सिकन्दरा मे प्रतिलिपि की थी ।

७६१६. **प्रति सं० ३** । पत्र स० १० । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७६१७. **प्रति सं० ४** । पत्रस० १२ । आ० ११×५ इंच । ले०काल स० १७६० वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

विशेष—आ० ज्ञानकीर्ति ने नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

७६१८. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० १७ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६७३ । पूर्ण । वेष्टन स० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १६७३ वर्षे आसोज सुदी ११ इ सागवाडा नगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे मडलाचार्य श्री रत्नकीर्ति तत्पट्टे मडलाचार्य श्री यशकीर्ति तत्पट्टे भ० महाचन्द्रा त० भ० भ० श्री जिनचन्द्र भ० सकलचन्द्रान्वये भ० श्री रत्नचन्द्र विराजमान हुबड ज्ञातीय सलेश्वर गोत्रे सा० साणा भार्या सजाणदे तत्पुत्रौ सा० काला भार्या कदु सा० अरथी भार्या इन्द्री तत्पुत्र बलभदास स्वस्वज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ ब० श्री ठाकरा कर्मदहन पूजा लिखाप्यने दत्त ।

७६१९. **प्रति स० ६** । पत्र स० २२ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १९१९ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

७६२०. प्रति सं० ७ । पत्र स० १७ । ले०काल स० १६६५ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६-३७८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६२१ प्रति सं० ८ । पत्र सं० १७ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२२. प्रति सं० ६ । पत्रस० १५ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२३. प्रति सं० १० । पत्रस० १६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १७३१ × । पूर्ण । वेष्टन स० २७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—भाडोल नगरे लिखापित ललितकीर्ति आचार्य ।

७६२४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२५. कर्म दहन पूजा— × । पत्रस० १२ । आ० ११¾ × ५¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८० सावण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६२६. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७६२७. प्रति सं० ३ । पत्र स० १२ । आ० १२ × ५¾ इञ्च । ले०काल सं० १८६२ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२० । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६२८. प्रति सं० ४ । पत्रस० २३ । आ० १०½ × ६¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५३८ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६२९. प्रति सं० ५ । पत्र स० २३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२२५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मूल्य ४॥ – । लिखा है ।

७६३० प्रति सं० ६ । पत्रस० १२ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

७६३१. प्रति सं० ७ । पत्रस० १८ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७६३२. प्रति सं० ८ । पत्रसं० २२६ से २७० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—यशोनन्दि की पचपरमेष्ठी पूजा भी आगे दी गई है ।

७६३३. प्रति सं० ९ । पत्रसं० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६३४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८७/३४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६३५. प्रति सं० १० । पत्र स० १७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८६/३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् ,५८२ वर्षे आसो वदि ५ भूमे गुर्जरदेशे बीजापुर शुभस्थाने श्री शांतिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नदिसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिस्तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्त्ति तदाम्नाये भ० श्री ज्ञानभूषणस्तत्पट्टे भ०श्री विजयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभ चन्द्रदेवास्तदाम्नाये चन्द्रावती नगरे नागद्रहा ज्ञातीय साह धाना भार्या बाछु सुत पडित राजा पठनार्थं ।

७६३६. प्रतिसं० १२ । पत्रस० १७ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०काल स० १८१६ आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—महादास अग्रवाल ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

७६३७. प्रति सं० १३ । पत्रस० २७ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इन्च । ले०काल स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

७६३८. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १७ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७६३९ प्रतिसं० १५ । पत्र स० १७ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७६४०. प्रतिसं० १६ । पत्र स० १६ । आ० ९×६ इन्च । **ले०काल** १९५० । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नैणवा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७६४१. कर्मदहन पूजा विधान— × । पत्रस० ३० । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९३३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८९ ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

७६४२. प्रतिसं० २ । पत्र स० २७ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९०–३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

७६४३. कर्म निर्जरणी चतुर्दशी विधान— × । पत्र स० १०४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६२८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—सवत् १६२८ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ५ शनौ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० सकलकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्त्तिदेवा स्तत्पट्टे श्री विजयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रस्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये गुरु श्री अभयचन्द्रस्त-शिष्य ब्र० श्री देवदास पठनार्थं पोमीना वास्तव्य हुबडज्ञातीय श्रे० बाघा भार्या वनादे । तयो सुत श्रे० गोविद भार्या गुरादे । भ्राता गोपाल भार्या गगादे एतेषा मध्ये श्री गुरादे ....

७६४४ कलशविधि— × । पत्र सं० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७७ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७६४५. कलशारोहण विधान—×। पत्रसं० १२ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय विधान । र० काल × । ले०काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—प० रतनलाल नेमीचन्द की पुस्तक है ।

७६४६. कलशारोहण विधि—×। पत्रस० १४ । आ०८×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८६–१४६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूगरपुर ।

७६४७. कल्याण मन्दिर पूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्रस० ६ । आ० ११½ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—प० सदासुख ने जम्बू स्वामी चैत्यालय मे पूजा की थी ।

७६४८. कल्याण मदिर पूजा—× । पत्रस० १२ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा र० काल × । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूगरपुर ।

७६४९. कलिकुण्ड पूजा—× । पत्रस० ३ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

७६५०. कलिकुण्ड पूजा—× । पत्र सं० ६ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—पद्मावती पूजा भी दी हुई है ।

७६५१. कलिकुण्ड पूजा—× । पत्रस० ३ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७६५२. कलिकुण्ड पूजा—× । पत्रस० २ । आ० १४ × ५ इञ्च । भाषा- सस्कृत । विषय-पूजा र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४–५०। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूगरपुर ।

७६५३ कांजी व्रतोद्यापन—रत्नकीर्ति । पत्र सं० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल । ले०काल स० १८६८ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पं० चिदानन्द ने लिखा था ।

७६५४. कजिकाव्रतोद्यापन—मुनि ललितकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १७६२ अषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० भ० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६५५. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५ । आ० ११¾×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—महाराज जगतसिह के शासन काल मे सवाईमाधोपुर मे अमरचद कोटेवाले ने लिखा था ।

७६५६. कुण्डसिद्धि—× । पत्र स० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

विशेष—मडप कुण्ड सिद्धि दी गयी है ।

७६५७. कोकिला व्रतोद्यापन— × । पत्रस० १२ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७०४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गुटका नं. ६ मे है ।

७६५८. गणधरवलय पूजा—सकलकीर्ति । पत्र स० ४ । भाषा सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २-३१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७६५९. प्रति स० २ । पत्रस० ४ । ले०काल स० १६७३ अषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३-३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६७३ वर्षे आषाढ बुदी ६ गुरौ श्री कोटणुमस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये आचार्य श्री जय-कीर्तिना स्वज्ञानवरणी कर्मक्षयार्थं स्वहस्ताभ्या लिखितेय पूजा । श्री हरखाप्रसादत् । ब्र० श्री स्तवराजस्येद ।

७६६०. प्रति स० ३ । पत्रस० ६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७६६१. प्रति स० ४ । पत्रस० १२ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

७६६२. गणधरवलय पूजा—× । पत्र स० ५ । आ० १० × ४½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७६६३. गणधरवलय पूजा × । पत्रस० ६ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १/३२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६६४. गणधरवलय पूजा विधान— × । पत्रस० १० । ग्रा० १२×६ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय- पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८७ श्रावण बुदी ५ । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

७६६५. गिरनार पूजा—हजारीमल । पत्र सं० ४३ । ग्रा० ११½×८ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८८ । ग्रा० १०×६½ इन्च । ले० काल स० १६३७ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—हजारीमल के पिता का नाम हरिकिशन था । वे लश्कर के रहने वाले थे । वहा तेरहपंथ सैली थी । दौलतराम की सहाय से उन्हे ज्ञान प्राप्त हुग्रा था । वे वहा से सायपुर ग्राकर रहने लगे ये गोयल गोत्रीय ग्रग्रवाल थे ।

७६६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६६८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४२ । ग्रा० १०½×७½ इन्च । ले० काल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

७६६९. गुरावली पूजा—शुभचन्द्र । पत्रस० ३ । ग्रा० १० × ४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६७०. गुरावली समुच्चय पूजा—× । पत्र सं० २ । ग्रा० १२ × ५½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

७६७१. गुर्वावली (चौसठ ऋद्धि) पूजा—स्वरूपचन्द विलाला । पत्रसं० ३० । ग्रा० ६½ ×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १६१० । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनसं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—ग्रन्तिम पत्र नही है ।

७६७२. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४५ । ग्रा० १०×६½ इन्च । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

७६७३. गुरु जयमाल—ब्र० जिनदास । पत्रसं० ४ । ग्रा० १०×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६७-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष हिन्दी गद्य मे ग्रर्थ भी दिया है ।

७६७४. गोरस विधि— × । पत्र स० २ । ग्रा० १०¾×५ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

७६७५. गृहशांति विधि—वर्द्धमान सूरि । पत्रसं० १२ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६७६. क्षणवति क्षेत्रपाल पूजा—विश्वसेन । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६१ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

७६७७. क्षेत्रपाल पूजा— × । पत्रसं० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८५१ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७६७८. प्रति सं० २ । पत्रस० ५ । आ० १०×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७६७९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल स० १६८४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४४-१३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७६८०. प्रति सं० ४ । पत्रसं० २ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७६८१. चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा—विद्यानंदि । पत्रसं० १२ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रारंभ—

सकलभुवनपूज्य वर्द्धमानजिनेन्द्र ।
सुरपतिकृतसेव त प्रणम्यादरेण ।।
विमलव्रतचतुर्दश्या शुभोद्योतन च ।
भविकजनसुखार्थ पचमस्या. प्रवक्ष्ये ।।१।।

अन्तिम—

शास्त्राब्धे पारगामी परममतिमान मडलाचार्यमुख्य: ।
श्रीविद्यनन्दीनामानिखिल गुणनिधि: पूर्णमूर्तिप्रसिद्ध. ।।
तद्दिष्ट्या संप्रधारी विबुधमरो हर्ष मदानदत्रो ।
साक्षोर्स राम नामा विधिरमुमकरोत् पूजनाया विबे ।
श्रीजयसिंहभूपस्य मत्री मुख्यो गुणी सताम् ।
श्रावकस्ताराचद्राख्यस्तेनेद कृत समुद्धतं ।।२।।
तर वसर समुद्दिश्य पूर्वशास्त्रानुवृत्ति ।
व्रतोद्योतनमेतेन कारितं पुण्यहेतवे ।।३।।

७६८२. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७६८३. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १८०० भादवा बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८४. चतुर्विशांति जिन पूजा—× । पत्र स० ११५ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८५. प्रतिसं० २ । पत्र स० २८ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८६. चतुर्विशति जिन शासन देवी पूजा— × । पत्रसं० ३–६ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८२/३७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवन थ मन्दिर उदयपुर ।

७६८७. चंदनषष्ठीव्रत पूजा—विजयकीर्त्ति । पत्र सं० ४ । आ० १२×४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बू दी ।

७६८८ चन्दनषष्ठीपूजा—पं० चोखचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६८९. चन्दनषष्टीव्रत पूजा— × । पत्र सं० ८ । आ० १२½×६ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

७६९०. चमत्कार पूजा—राजकुमार । पत्रसं० ५ । आ० १२¾ × ५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—चमत्कार क्षेत्र का परिचय भी आगे के दो पत्रों मे दिया गया है ।

७६९१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३ । आ० १२ × ६ इञ्च । **भाषा–संस्कृत** । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७६९२. चमत्कार पूजा-- × । पत्रसं० २ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

७६९३. चारित्र शुद्धि पूजा—श्रीभूषण । पत्र सं० ६४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी

७६९४. प्रति सं० २ । पत्रसं० ११४ । ले०काल सं० १८१६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दक्षिण स्थित देवगिरि में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे ग्रन्थ रचना की गई थी। पाछे लालचन्द ने लिपि कराकर भरतपुर के मन्दिर मे रखी गयी थी।

७६६५. चारित्र शुद्धि विधान—भ०शुभचन्द्र। पत्रस० ५०। आ० ५३/४ × ५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १६०३। पूर्ण। वेष्टन स० ८२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अजमेर भण्डार।

विशेष—गुटका में सग्रहीत है।

७६६६. प्रति सं० २। पत्रस० ३२। आ० ६३/४ × ४१/४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४२५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७६६७. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा—शुभचन्द्र। पत्रस० २-१४। आ० ११ × ५ इञ्च। **भाषा**-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

७६६८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। आ० १० × ५ इञ्च। ले० काल स० १६०८। पूर्ण। वेष्टन स० ५०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

प्रशस्ति—संवत् १६०८ वर्षे चैत्रमासे कृष्णपक्षे ५ दिने वाग्वरदेशे सिरपुरवास्तव्ये श्री आदिनाथ चैत्यालये लिखित श्री मूलसघे भ० विजयकीर्तिस्ततपट्टे भ० श्री शुभचद्रदेवा तत् शिष्य प० सूरदासेन लिखापित पठनार्थ आचार्य मेरुकीर्ति।

७६६९. प्रति सं० ३। पत्रस० ११। आ० १० × ५१/२ इञ्च। ले० काल स० १८९१ सावन सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

७७००. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा — ×। पत्र स० ९। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय- पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२०५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७७०१. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा— ×। पत्रस० ११। आ० १० × ४१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७७०२. प्रति सं० २। पत्र स० २०। आ० ८३/४ × ४१/२ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगानी मदिर करौली।

अन्तिम पत्र नही है।

७७०३. चतुर्विंशति पूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्रस० ३-३६। आ० १० × ५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल १६६०। अपूर्ण। वेष्टन स० ३०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६० वर्षे आषाढ सुदी ४ गुरुवारे श्री मूलसघे भट्टारक श्री वादिभूषण गुरुपदेशात् तत् शिष्य ब्र० श्री वर्द्धमानकेन लिखापित कर्मक्षयार्थं।

७७०४. प्रति सं० २ । पत्र स० ५८ । ले० काल सं० १६४० कार्तिक सुदी ३ पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

७७०५. चतुर्विशति जिन पूजा—×। पत्रस० ५-५८ । आ० ६×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा । र० काल × । ले० कालस० १८६७ । अपूर्ण । **वेष्टन सं०** १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७७०६. चतुर्विशति तीर्थंकर पूजा— × । पत्रस० ४७ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय— पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६६ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल(टोंक)

७७०७. प्रति सं० २। पत्रस० ४६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० २७३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७७०८. चतुर्विशति जिन पूजा — ×। पत्रस० ५६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय— पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६३४ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

७७०९. चतुर्विशति तीर्थंकर पूजा— × । पत्रसं० ६८ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

७७१० चतुर्विशति जिन पूजा × । पत्र स० ४१ । आ० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत । पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—४१ से आगे पत्र नही है ।

७७११. प्रति सं० २ । पत्रस० ४४ । आ० १० × ५ इञ्च । **ले०काल स०** १६५७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७७१२. चतुर्विशति तीर्थंकर पूजा—×। पत्रस० १३७ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा- सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

७७१३. चतुर्विशति जिन पूजा— × । पत्रस० ५० । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

७७१४. चतुर्विशति पंच कल्याणक समुच्चयोद्यापन विधि—ब्र० गोपाल । पत्रस० १३ । आ० ११×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इति ब्रह्म भीमाग्रहात्ब्रह्म गोपाल कृत चतुर्णिति पच कल्याणक समुच्चयो द्यापन विधि ।

७७१५. चतुर्दशी प्रति मासोपवास पूजा— × । पत्र स० १८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

७७१६. **चौबीस तीर्थंकराष्टक**—×। पत्रसं० २०। आ० ६ × ४ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी।

७७१७. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—बख्तावरलाल**। पत्र सं० ८६। आ० १२½ × ७ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स० १८६२ फागुण बुदी ७। ले० काल स० १९२३ कार्तिक सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० १०७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मंदिर बयाना।

७७१८. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ६७। आ० ११×५½ इञ्च। ले०काल १९०३। पूर्ण। वेष्टन सं० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

७७१९. **प्रति सं० ३**। पत्र स० ५७। ले० काल स० १६५६। पूर्ण। वेष्टन स० ८५। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

विशेष—प्रतिलिपि किशोरीलाल भरतपुर वाले ने कराई थी। तुलसीराम जलालपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

७७२०. **प्रति सं० ४**। पत्र स० ६०। आ० ८½×६½ इच। ले०काल स० १९५७ वैशाख बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १६६। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७७२१. **चौबीस महाराज पूजन—कुन्नोलाल**। पत्रस० ४७। भाषा-हिन्दी। विषय पूजा। र०काल स० १८२७। ले०काल स० १९१५। अपूर्ण। वेष्टनस० २६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

७७२२. **प्रतिसं० २**। पत्रस० १०२। आ० ११ × ५ इन्च। ले०काल स० १९३०। पूर्ण। वेष्टन स० १२३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष—प्रति नवीन है।

७७२३. **प्रतिसं० ३**। पत्र स० ४६। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

७७२४. **प्रतिसं० ४**। पत्र स० ६५। आ० १०×६½ इन्च। ले०काल स० १९३५। पूर्ण। वेष्टन स० ७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—चुन्नीलाल करौली के रहने वाले थे। पूजा करौली मे मदनगोपाल जी के शासन काल मे रची गई थी। प्रतिलिपि कोट मे हुई थी।

७७२५. **प्रतिसं० ५**। पत्र स० ९२। ले०काल स० १९१७। पूर्ण। वेष्टन स० १८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

७७२६. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—जवाहरलाल**। पत्र० स० ४८। आ० १३×८ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स० १९६२। ले० काल स० १९६२। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

७७२७. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—देवीदास** × । पत्र सं० ४३ से ६३ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १८२१ सावन सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६-२४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिह (टोक)

अन्तिम—

समत अष्टादस धरो जा उपर इकईस ।
सावन सुदि परिवा सु रविवासर धरा उगीस ।।
बासव धरा उगीस सगाम नाम मृदु गौडौ ।
जैनी जन वस वास औंडछे सोपुर ठोडौ ।।
सांवथ सिंघ सु राज आज परजासत्रथ बनु ।
जह निर्ग्म करि रची देव पूजा धरि सवतु ।।१।।
गोलारारे जानियो बंस खरो वाहीत ।
सोनविपार सु बैंक तम् पुनि कासिल्ल सुगोत ।
पुनि कामल्ल सुगोत सीक-सीक हारा केरो ।।
देस भदावर माँहि जो सु बरण्यौ तिन्हि केरौ ।
केलि गामके वसनहार मनोरु सुभारे ।।
कवि देवी सुपुत्र दुगुडै गोलारारे ।
सेवत श्री निरगथ गुर अरू श्री अरिहंत देव ।।
पढत सुनत सिद्धान्त श्रुत सदा सकल स्वमेव ।
तुक अक्षर घट बड कहू अरू अनर्थ सुहोइ ।
अल्प कवि पर कर छिमा धर लीजै बुधि सोइ ।।

इति वर्तमान चौबीसी जिनपूजा देवीदास कृत समाप्त ।।

७७२८. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—मनरंगलाल** । पत्र स० ४२ । आ० १२½ × ८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल स० १८८७ मगसिर सुदी १० । ले०काल स० १९९४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२४ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७७२९. **प्रति सं० २** । पत्रस० ५० । आ० १२ × ८ इञ्च । ले०काल सं० १९९५ । पूर्ण । वेष्टन सं०५२५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

७७३०. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १९०८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

७७३१. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—रामचन्द्र** । पत्रस० ८१ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८७३ चैत सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—नेरोजपुर के जयकृष्ण ने लिखवाया था । इसकी दो प्रतियां और हैं ।

७७३२. **प्रति सं० २** । पत्र स० ३२ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७७३३. प्रति सं० ३ । पत्रस० ७५ । ग्रा० १०×४½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७७३४. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ५४ । ग्रा० १०½×६½ इन्च । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७७३५. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ६६ । ग्रा० ११×५½ इन्च । ले०काल स० १८१६ मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—महादास ने प्रतिलिपि की थी ।

७७३६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७३७. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ११६ । ले०काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सं० १९६५ मे लिखाकर इस ग्रंथ को चढाया था ।

७७३८. चौबीस महारज पूजन—हीरालाल । पत्रसं० ३५ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ८१** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७३९. चौबस तीर्थंकर पूजा—रामचन्द्र । पत्रस० ७७ । ग्रा० ११×७ इन्च । भाषा-विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन हिन्दी । पचायती मन्दिर नागदी बूंदी ।

७७४०. प्रति स० २ । पत्रस० ६२ । ग्रा० १२½×६½ इन्च । ले० काल सं० १९५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर कामा

७७४१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५१ । ग्रा० ११×६½ इन्च । **ले०काल सं०** १९११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी ।

७७४२ प्रतिसं० ४ । पत्र स० ७३ । ग्रा० १०×७ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७७४३. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० १३३ । ग्रा० ११×६½ इन्च । ले०काल स० १८२८ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

७७४४. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १०-९० । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

७७४५. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ८७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

७७४६. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ८० । ग्रा० ९×६½ इन्च । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—प्रारम्भ का पत्र नहीं है ।

७७४७. प्रति सं० ६। पत्रसं० १२०। आ० ७½×६½ इञ्च। ले०काल स० १६१३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६०। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—डीग मे प्रतिलिपि हुई थी।

७७४८. प्रति सं० १०। पत्रस० ८६। आ० ८¾×७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष - गुटका जैसा आकार है।

७७४९. प्रति सं० ११। पत्रस० ४१। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष– गुटकाकार है।

७७५०. प्रति सं० १२। पत्र स० ४४। आ० १०×६½ इञ्च। ले० काल स० १६०४। पूर्ण। वेष्टन स० १५२। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मदिर।

विशेष —चार प्रतियां और है।

७७५१. प्रति सं० १३। पत्रसं० ८४। आ० १३ × ७ इञ्च। ले०काल सं० १६४६। पूर्ण। वेष्टनसं० ४५। प्राप्ति स्थान - दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा।

७७५२. प्रति सं० १४। पत्र सं० ६१। ले० काल स० १८६६। पूर्ण। वेष्टन सं० ४६। प्राप्ति स्थान – दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—ब्राह्मण भैरूराम उणियारा वाले ने चतुर्भुजजी के मन्दिर के सामनेवाले मकान में प्रतिलिपि की थी। साहजी अमोदरामजी अग्रवाल कासल गोत्रीय ने प्रतिलिपि करायी थी।

७७५३. प्रति सं० १५। पत्रस० १४६। आ० ८¾×६ इंच। ले०काल स० १८२५। पूर्ण। वेष्टन स० ४। प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—साहमल्ल के पुत्र कुंवर मशाराम नगर निवासी ने कामवन मे प्रतिलिपि कराई थी।

७७५४. प्रति सं० १६। पत्रस० १०३। आ० ८½ × ५¾ इञ्च। ले०काल स० १८८४ सावन बुदी १२। पूर्ण। वेष्टनस० ६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

७७५५. प्रति सं० १७। पत्रस० ४७। आ० १०×६ इच। ले०काल स० १६२४। पूर्ण। वेष्टन स० १८। प्राप्ति स्थान –दि० जैन अग्रवाल मदिर नैणवा

७७५६. प्रति सं० १८। पत्र स० १२। आ० १०×६½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २४। प्राप्ति स्थान –दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

७७५७. प्रति सं० १९। पत्र स० १५३। आ० ७×५½ इञ्च। ले० काल स० १८२५। पूर्ण। वेष्टन स० १८७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

७७५८. प्रति स० २०। पत्र स० १०४। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल स० १६०५। पूर्ण। वेष्टन स० ३६८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष —इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

७७५९. प्रति सं० २१। पत्र सं० ७१। ले० काल स० १८६६। पूर्ण। वेष्टन स० ३६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष— देवेन्द्र विमल ने कुन्दनपुर में प्रतिलिपि कराई थी।

७७६०. प्रति सं० २२। पत्रस० ८८। आ० ६×७ इन्च। ले० काल सं० १६७१। पूर्ण। वेष्टन सं० २५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७७६१. प्रतिसं० २३। पत्रस० ५६। आ० १३×६$\frac{3}{4}$ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १४७/८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दगढ (कोटा)

७७६२. प्रतिसं० २४। पत्र सं० ६१। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च। ले०काल सं० १६६०। पूर्ण। वेष्टन सं० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—२ प्रतिया और हैं जिनकी पत्र स० क्रमशः ६० और ६१ है।

७७६३. प्रतिसं० २५।। पत्र सं० ७८। आ० ६×६ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

७७६४. प्रतिसं० २६। पत्र सं० ५४। आ० ६$\frac{1}{2}$× ६$\frac{1}{2}$ इन्च। ले०काल सं० १६१२ मगसिर बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा।

विशेष—लोचनपुर नैणवा मे प्रतिलिपि की गयी थी।

७७६५. प्रतिसं० २७। पत्र स० ५०। आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इन्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ५६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा।

७७६६. प्रतिसं० २८। पत्र स० ७६। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बघेर वालो का आवा (उणियारा)।

७७६७. प्रतिसं० २९। पत्र स० ८६। ले०काल स० १६०१। पूर्ण। वेष्टन सं० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का आवा।

विशेष—आवा मे फतेसिह जी के शासन काल मे मोतीराम के पुत्र राघेलाल तत्पुत्र कान्हा नोरखंड्या बघेरवाल ने प्रतिलिपि की थी।

७७६८. प्रतिसं० ३०। पत्र स० ६५। आ०—१०×५ इन्च। ले०काल-स० १८६४। पूर्ण। वेष्टन सं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर खण्डेलवालो का आवां (उणियारा)

७७६९. प्रतिसं० ३१। पत्र स० ६०। आ० ६×६$\frac{3}{4}$ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं—०१४५। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

७७७०. प्रति सं० ३२। पत्रसं० ७१। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च। ले० काल सं०-१६२६ कार्तिक सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

७७७१. प्रति सं० ३३। पत्र स० ८०। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इन्च। ले० काल सं०-१६५३। पूर्ण। वेष्टन स० २५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

७७७२. प्रतिसं० ३४। पत्रस० ७३। आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च। ले०काल सं० १६६८। पूर्ण। वेष्टनसं० २५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

७७७३. प्रतिसं० ३५। पत्रस० ७५। आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इन्च। ले० काल सं० ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

७७७४. प्रतिसं० ३५ । पत्र सं० ७६ । आ० ६ × ७ इन्च । ले०काल सं. १८२१ आसोज सुदी १ अपूर्ण वेष्टन सं०—१५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टौंक ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

७७७५. प्रतिसं० ३६ । पत्रसं० ५२ । आ० १२ × ६ इन्च । ले०काल सं० १६०७ अषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६/११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टौंक)

७७७६. प्रतिसं० ३७ । पत्र स० ४६ । आ० ११½ × ७ इन्च । ले० काल सं० १६०५ मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५-५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—वैष्णव रामप्रसाद ने तक्षकपुर में प्रतिलिपि की थी ।

७७७७. प्रतिसं० ३८ । । पत्रसं० ४६ । आ० १२½ × ६ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०—२८/१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७७७८. प्रति सं० ३९ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७७७९. प्रति सं० ४० । पत्रसं० ७० । आ० १२ × ६ इन्च । ले० काल सं० १८७८ ।पूर्ण । वेष्टन स०— १८/५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर भादवा (राज०)

७७८०. प्रति सं० ४१ । पत्र स० ६८ । आ० ११ × ५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७-५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०) ।

७७८१. प्रति सं० ४२ । पत्रस० ८१ । आ० १२ × ५½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३३-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

७७८२. प्रति सं० ४३ । पत्र स० ६८ । आ० ६ × ६ इन्च । ले०काल सं० १८८२ चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—पत्र ६३ वें से आगे अन्य पूजाएं भी हैं ।

७७८३. प्रतिसं० ४४ । पत्रस० ६१ । आ० ८½ × ५½ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

७७८४. प्रतिसं० ४५ । पत्र स० १०६ । आ० १२ × ५ इन्च । ले० काल सं० १८६० आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—पत्र स० ६० से १०६ तक चौबीस तीर्थंकरों की विनती है ।

७७८५. प्रतिसं० ४६ । पत्रसं० ५६ । आ० ६ × ६ इंच । ले० काल स० १६१४ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१-७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

७७८६. प्रतिसं० ४७ । पत्रसं० ६१ । आ० ११ × ५ इन्च । ले०काल सं० १८५१ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७७८७. प्रतिसं० ४८ । पत्र स० ७५ । आ० ८½ × ६ इन्च । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—स्योबक्स ने प्रतिलिपि की थी।

७७८८. प्रति सं० ४६। पत्र स० ८५। आ० १०$\frac{3}{4}$ × ६ इञ्च। ले०काल सं० १९०८ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—एक प्रति और अपूर्ण है।

७७८९. चौबीस तीर्थंकर पूजा—श्रीलाल पाटनी। पत्रस० ५७। आ० १०$\frac{3}{4}$ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। र०काल स० १९७८। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

७७९०. चौबीस तीर्थंकर पूजा वृन्दावन। पत्रस० ८२। आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल स० १८४७। ले०काल १९२९ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ११५४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७७९१. प्रति सं० २। पत्रस० ६६। आ० ११$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १८५५। पूर्ण। वेष्टनसं० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर।

७७९२. प्रति सं० ३। पत्र स० ८४। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४५/१०५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

७७९३. प्रति स० ४। पत्र स० १०१। आ० १२ × ५ इञ्च।। ले० काल स० १९३०। पूर्ण। वेष्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा।

७७९४. प्रति सं० ५। पत्र स० ७४। आ० ९ × ६ इञ्च। ले०काल स० १९०७ वैशाख सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० २२। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

७७९५. प्रति सं० ६। पत्र स० ६४। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

विशेष—अन्तिम पत्र नही है।

७७९६. प्रति सं० ७। पत्र स० १८१। ले० काल स० १८९५। पूर्ण। वेष्टन स० १३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—इसकी ४ प्रतिया और है।

७७९७. प्रति सं० ८। पत्रस० ८५। आ० १० × ५ इञ्च। ले०काल स० १९१३ चैत बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७७९८. प्रति सं० ९। पत्रस० ४७। आ० १२ × ८ इञ्च। ले०काल स० १९८३ प्र० चैत्र सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनसं० १७५। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७७९९. प्रति सं० १०। पत्रस० १०८। आ० १२$\frac{3}{4}$ × ८ इञ्च। ले०काल स० १९२९। पूर्ण। वेष्टन स० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—एक प्रति और है।

७८००. प्रति सं० ११। पत्र स० ७७। आ० १२ × ६ इञ्च। ले०काल स० १९१२। पूर्ण। वेष्टन स० ८-५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष—इसकी दो प्रतिया और हैं।

प्रशस्ति—सवत् १६१२ माह सुदी १३ लिखापित मवौराय जंचन्द गैबीलाल श्री डूंगरपरना नाखि श्री शागमपुर मे हस्ने नौगमी श्र पुनमचन्द तथा गादि पूनमचन्द लिखितं समादि आगमेरचन्द।

७८०१. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १०६ । आ० १०×५ इन्च । ले०काल सं० १६२१ । पूर्ण। वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी।

७८०२. प्रति सं० १३ । पत्रस० ५३ । आ० १०×६½ इन्च । ले० काल सं० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—नैणवा मे प्रतिलिपि हुई थी । साह पन्नालाल वैद बूंदीवाले ने अभिनदनजी के मन्दिर मे ग्रथ चढाया था।

७८०३. प्रति सं० १४ । पत्रसं० ६२ । आ० १३×७½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७८०४. प्रति सं० १५ । पत्र स० ६१ । आ० १३×८ इन्च । ले० काल सं० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७८०५. प्रति स० १६ । पत्रस० ३७ । आ० १२½×७½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टन सं०** ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—मल्लिनाथ तीर्थंकर की पूजा तक है। एक प्रति और है।

७८०६. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ६२ । आ० १०×७ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष दो प्रतिया और है।

७८०७. प्रति सं० १८ । पत्रस० १०१ । आ० ११×६ इन्च । ले० काल स० १६१५ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ३६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

७८०८. प्रति सं० १९ । पत्रस० ५४ । आ० १०½×६½ इन्च । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का आवा (उणियारा)

७८०९. प्रति सं २० । **पत्रस० ५२** । **ले०काल** × । अपूर्ण । **वेष्टन स० ५५** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

विशेष—महावीर स्वामी की जयमाल नही है।

७८१०. प्रति सं० २१ । पत्र स० ५६ । आ० ११×६ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

७८११. प्रति सं० २२ । पत्रसं० १०१ । आ० १३×५½ इंच । ले० काल स० १६६४ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बडा बीसपंथी दौसा।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

७८१२. प्रति सं० २३ । पत्रस० ४० । आ० १२½×८ इन्च । ले० काल स० १६०० । पूर्ण । वेष्टन ३३/५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

७८१३. **प्रति सं० २४** । पत्र सं० ५६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७८१४. **प्रति सं० २५** । पत्रसं० ५७ । आ० ११½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १८८१ सावन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५/३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

७८१५. **प्रतिसं० २६** । पत्रस० ४६ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल सं० १९११ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६/३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७८१६. **प्रति सं० २७** । पत्र स० ६८ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल सं० १९६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—कीमत ३) रुपया बघेरवालों का मन्दिर स० १९६४ ।

७८१७. **प्रति सं० २८** । पत्रसं० ७१ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल स० १९३३ काती सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७८१८. **प्रतिसं० २९** । पत्रसं० ४४ । आ० १३½×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

७८१९. **प्रति सं० ३०** । पत्रस० ५८ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल स० १८९७ । वेष्टनस० ६/३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायत मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष—श्री हजारीलाल कटारा ने दशलक्षण व्रतोद्यापन के उपलक्ष मे स० १९४३ भादवा सुदी १४ को दूनी के मंदिर में चढ़ाया था ।

७८२०. **प्रतिसं० ३१** । पत्र सं० ७७ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

७८२१. **प्रतिसं० ३२**। पत्रस० ५९ । आ० १०½×६½ इञ्च । ले०काल स० १९२१ फागुन बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टनस० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—५५ से ५८ तक पत्र नही है ।

७८२२. **चोबीसतीर्थंकर पूजा—सेवग** । पत्रस० ७१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १७७५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७८२३. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ४९ । आ० ९½×६ इञ्च । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८/७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडिया का डूंगरपुर ।

७८२४. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—सेवाराम** । पत्रस० ४५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल स० १८५४ मगसिर बुदी ६ । ले०काल स० १८५४ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—

तिनप्रभु को सेवगजु हो बखतराम इहनाम ।
साहगोत्र श्रावकसुधी गुण मंडित कवि राम ।।
तिन मिथ्यात खडन रच्यो लखि जिनमत के ग्रंथ ।
बुध विलास दूजो रच्यो मुक्ति पुरी के पथ ।
तिन को लघु सुत जानियो सेवागराम सुनाम ।
लखि पूजन के ग्रंथ बहु रच्यो ग्रंथ अभिराम ।
ज्येष्ठ भ्रात मेरो कवि जीवनराम सुजानि ।
प्रभु की स्तुति के पद रचे महाभक्तिवर आनि ।
तामैं नाम घरयो जु है जगजीवन गुण खानि ।
तिन की पाय सहाय को कियो ग्रंथ यह जानि ।।

एक प्रति और है ।

७८२५. प्रति सं० २ । पत्र स० ६२ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७८२६. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६५ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १९१७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७८२७ प्रतिसं० ४ । पत्रस० ११ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८८४ कार्त्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०-८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—हुकमचन्द विलाला निवाई वालो ने प्रतिलिपि की थी ।

७८२८ प्रतिसं० ५ । पत्रस० ४२ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १८६२ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष - चिमनराम तेरापथी ने प्रतिलिपि की थी ।

७८२९. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ५६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९०१ । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७८३०. प्रति स० ७ । पत्रस० ६० । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १९२८ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ६८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—१० दिल ख ने राजमहल मे प्रतिलिपि की थी । तेलो मेल्या श्री शिवचन्द जी चैत बुदी ७ स० १९२२ के चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे चढाया था ।

७८३१ प्रतिसं० ८ । पत्र स० ५२ । आ० ११ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । **ले०काल** स० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—बूंदी में प्रतिलिपि हुई थी।

७८३२. प्रतिसं० ९ । पत्र स० ५३। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९२२ । पूर्ण । **वेष्टन स० १५९** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७८३३. प्रतिसं० १० । पत्रसं० ६४ । आ० १०३/४×५ इंच । ले० काल सं० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

७८३४. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ५२ । आ० ११×५१/२ इञ्च । ले०काल स० १८५६ आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस०२५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७८३५. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ४३ । आ० १०१/२×७ इञ्च । ले० काल स० १८२६ माह सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

७८३६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ४३ । आ० ११×७१ इञ्च । ले० काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

७८३७. प्रतिसं० १४ । पत्र स० ६-५५ । आ० १२×५१/२ इच । ले०काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७८३८. प्रति सं० १५ । पत्र स० ३७ । आ० १०×६१/२ इञ्च । ले० काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

७८३९. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ५६ । आ० १११/२×५१/२ इञ्च । ले०काल स० १८६३ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३-८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७८४०. प्रति सं० १७ । पत्र स० ८४ । आ० ८१/२×६१/२ इञ्च । ले०काल स० १६०३ माह सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—सोगाणी मंदिर करौली ।

७८४१. चौबीस तीर्थंकर पूजा—हीरालाल । पत्रस० ८३ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६२६ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल पचायती मंदिर अलवर ।

७८४२. चौबीस तीर्थंकरों के पंच कल्याणक—× । पत्र स० १६ । आ० ८×४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—जैन मन्दिर बैर ।

७८४३. चौबीस तीर्थंकर पंच कल्याणक—× । पत्र स० १३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७८४४. चतुर्विंशति तीर्थंकर पंचकल्याणक पूजा—जयकीर्त्ति । पत्रस० १२ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम—

देवपल्ली स्थितेनापि सूरिणा जयकीर्तिना ।
जिनकल्याणकानां च, पूजेयं विहिता शुभा ।
भट्टारक श्री पद्मनंदि तत् शिष्य ब्रह्म रूपसी निमित ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

७८४५. चौसठ ऋद्धि पूजा—स्वरूपचन्द्र। पत्रसं० २८। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल सं० १९१०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

७८४६. प्रति सं० २। पत्रसं० ३३। आ० १०×७½ इञ्च। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन सं० १९०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

७८४७. प्रति सं० ३। पत्र सं० २४। आ० ११½×६ इञ्च। ले० काल सं० १९३६। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

७८४८. प्रतिसं० ४। पत्रसं० २५। आ० ११×७ इञ्च। ले० काल सं० १९५७। पूर्ण। वेष्टनसं० १७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष पुस्तक साह धन्नालालजी चिरजीलाल जी नैणवा वालो ने लिखा कर नैणवा सुद्धग्राम के मन्दिर भेट किया। महनताना २) हीगलू २=)

७८४९. प्रतिसं० ५ पत्र सं० ५०। आ० ८×६½ इञ्च। ले०काल सं० १९२३। पूर्ण। जीर्ण वेष्टन सं० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

७८५० प्रतिसं० ६। पत्रसं० ३०। आ० १३×८इञ्च। ले०काल सं० १९६४। पूर्ण। **वेष्टनसं०** १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीस पथी दौसा।

७८५१. प्रतिसं० ७। पत्र सं० ४७। आ० ९×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १२६ ×। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा।

७८५१. प्रतिसं० ८। पत्रसं० २०। आ० १३ × ८½ इच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

७८५२. प्रति स० ९। पत्रसं० ३५। आ० ११× ५ इञ्च। ले० काल सं० १९६३। पूर्ण। वेष्टन स० ३९ २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

विशेष—प० पन्नालाल के शिष्य सुन्दरलाल ने बमुवा मे प्रतिलिपि की थी।

७८५३ प्रतिसं० १०। पत्रसं० २०। आ० १४ × ६½ इञ्च। ले०काल सं० १९५६। पूर्ण। वेष्टनसं० १०८ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी।

७८५४. प्रतिसं० ११। पत्रसं० ९८। ले०काल सं० १९८०। पूर्ण। वेष्टनसं० ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

७८५५. प्रतिसं० १२। पत्रसं० ३४। आ० १२½×७½ इञ्च। ले० काल स० १९६१। पूर्ण। वेष्टनसं० ५५४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

७८५६. प्रति स० १३। पत्रसं० २९। आ० १३×८½ इञ्च। ले०काल सं० १९८९। पूर्ण। **वेष्टनसं०** ५६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

७८५७. प्रति सं० १४। पत्र सं० ४३। आ० ९¾×६½ इञ्च। ले० काल स० **१९७२ सावन सुदी १५।** पूर्ण। वेष्टन स० ३१६। **प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूंदी।**

विशेष—मडल का चित्र भी है।

७८५८. प्रति सं० १५। पत्रसं० ५८। आ० १०३/४×४३/४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

७८५९. प्रतिसं० १६। पत्र सं० २६। आ० १३×५१/२ इञ्च। ले० काल सं० १९७४। पूर्ण। वेष्टन स० ८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

विशेष—एक प्रति और है जिसमें २४ पत्र हैं।

७८६०. प्रतिसं० १७। पत्र सं० ३६। ले०काल सं० १८४०। पूर्ण। वेष्टन सं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हूण्डावालों डीग

७८६१. प्रतिसं० १८। पत्र स० २५। आ० १२×८ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

७८६२. प्रतिसं० १९। पत्र स० ५९। आ० १०×७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४९। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

७८६३. प्रतिसं० २०। पत्रस० ३९। आ० १११/२ ×७ इञ्च। ले० काल स० १९७० आसोज बुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

विशेष—हीरालाल के पुत्र मूलचंद सौगाणी ने मन्दिर मंडी मालपुरा मे लिखा था।

७८६४. प्रति सं० २१। पत्रस० ४६। आ० ११×६ इञ्च। ले०काल स० १९३६ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

७८६५. प्रतिसं० २२। पत्र सं० ५-४१। आ० ८३/४ ×६ इञ्च। ले० काल सं० १९३४ माह सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन स० १८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७८६६. जम्बूद्वीप अकृत्रिम चैत्यालय पूजा— जिनदास। पत्रस० ३। आ० १२×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल स० १५२४ माघ सुदी ५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—रचना सम्बन्धी श्लोक

आद्रे ब्धाचारा द्रव्येके वर्तमानजिनेशिना।
फाल्गुणे शुक्लपचम्या पूजेय प० रचितामया॥

७८६७. प्रति सं० २। पत्र स० ४२। आ० १२×६३/४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर।

विशेष—लक्ष्मीसागर के शिष्य प० जिनदास ने पूजा रचना की थी।

७८६८. जम्बूद्वीप पूजा—पं० जिनदास। पत्रसं० ३२। **भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा।** र०काल ×। ले० काल स० १८१६ माघ बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० २२। **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—पं० जिनदास लक्ष्मीसागर के शिष्य थे।

७८६९. जम्बूस्वामी पूजा— × । पत्रसं० २७ । आ० १२×७ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वेष्टनसं० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर दौसा ।

७८७०. जम्बूस्वामी पूजा जयमाल । पत्र सं० १० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

७८७१. जपविधि —×। पत्रसं० ६ । आ० ११×५½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले०काल सं० १८२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—पूज्य श्री जुनिगाढि का बागड पट्टे सागवाडान्वये का श्री १०८ राजेन्द्रभूषणजी लिपि कृतम् सं० १८२१ सागवाडा नगरे

७८७२. जलयात्रा पूजा विधान—× । पत्रसं० २ । आ० १०½×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४८ । **प्राप्ति स्थान**– भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७८७३. जलयात्रा विधान—× । पत्र सं० ३ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७८७४. जलयात्रा विधि—× । पत्रसं० २ । आ० १०×६ इन्च । **भाषा**-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७८७५. जलहर तेला उद्यापन—× । पत्र सं० ११ । आ० ७ × ४½इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७८७६. जलहोम विधान—× । पत्र सं० ५ । आ० १०×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल सं०१६३८ । पूर्ण । वेष्टन सं०३४५-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—सलूंबर मे लिखा गया था ।

७८७७. जलहोम विधान—× । पत्र सं० ४ । आ० ११×७ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२७-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७८७८. जलहोमविधि—× । पत्र सं० ५ । आ० ८×७ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल सं० १६४० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७८७९. जिनगुण संपत्ति व्रतोद्यापन पूजा × । पत्रस० ६ । ग्रा० १२×६ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७८८०. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८ । ग्रा० १०½×५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७८८१. प्रति सं० ३ । पत्रस० सं० ५ । ग्रा० १०×५ इन्च । ले०काल स० १८६० भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूंदी ।

७८८२. प्रति सं० ४ । पत्रस० ७ । ग्रा० १० × ५इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३-४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडोरायसिंह (टोंक)

७८८३. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ६ । ग्रा० ११×५ इन्च । **ले०काल** × । ग्रपूर्ण ।वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

विशेष —केवल प्रथम पत्र नही है ।

७८८४. जिन पूजा विधि—जिनसेनाचार्य । पत्रस० ११ । ग्रा० ११×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८५ कार्तिक सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१-२७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—लिखापित भ. देवेन्द्र कीर्ति लिपि कृत महात्मा शभुराम ।

७८८५. जिन महाभिषेक विधि आशाधर । पत्र स० २४ । ग्रा० १०×४ इन्च । भाषा संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १८३७ मगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—सूरत मध्ये लिखापित ग्राचार्य नग्न श्री नरेन्द्रकीर्ति ।

७८८६. जिन यज्ञकल्प— आशाधर । पत्रस० १३५ । ग्रा० १२×५½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय विधान । र०काल स० १२८५ । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—मावगढ मे प्रतिलिपि हुई थी । प्रति प्राचीन एव संस्कृत मे ऊपर नीचे संक्षिप्त टीका है ।

७८८७. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६८ । ग्रा० १३×६ इन्च । ले०काल स० १८५९ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टौंक) ।

७८८८. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६७ । ले० काल १५१९ श्रावण वदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर (बडा) डीग ।

७८८९. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १४७ । ग्रा० १२×५¾ इन्च । **ले०काल स० १७४७** । माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी ।

विशेष—कहीं संस्कृत टीका तथा शब्दो के ग्रर्थ भी दिये हुए हैं ।

७८९०. जिन सहस्रनाम पुजा—सुमति सागर । पत्रसं० २८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८१२ माघ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७८९१. जिनसंहिता—भ० एकसन्धि । पत्र सं० २१६ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७८९२. जैन विवाह पद्धति—जिनसेनाचार्य । पत्रसं० ४६ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १९५२ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । टीका काल सं० १९३३ ज्येष्ठ बुदी ३ ।

७८९३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३५ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ तथा टीका सहित है ।

७८९४. प्रति स० ३ । पत्रस० २८ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल सं० १९३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—बीच में सस्कृत श्लोक हैं तथा ऊपर नीचे हिन्दी टीका है ।

७८९५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २८ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल सं० १९९३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

७८९६ प्रतिसं० ५ । पत्रस० २६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १९६८ । पूर्ण । वेष्टन स० २१-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—पडित फतेहलाल विरचित हिन्दी भाषा मे अर्थ भी दिया हुआ है ।

७८९७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४९ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल स० १९३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०९/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७८९८. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ४४ । आ० ११½×८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७८९९. जैन विवाह विधि—× । पत्रसं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७९००. जेष्ठ जिनवर व्रतोद्यापन—× । पत्रस० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । *विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७४ ।* ***प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।*

७९०१. तपोग्रहण विधि—× । पत्रसं० १ । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०२. **तीन चौबीसी पूजा**— × । पत्रस० ८ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६०३. **तीन चौबीसी पूजा**— × । पत्रस० ७ । ग्रा० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७६०४. **तीन चौबीसी पूजा—त्रिभुवनचन्द** । पत्र स० ६ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८०१ ग्रषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा

७६०५. **तीन चौबीसी पूजा—वृन्दावन** । पत्रसं० १४२ । ग्रा० १० × ७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८७० । पूर्ण । वेष्टनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

७६०६. **प्रति सं० २** । पत्रस० ८८ । ले० काल सं० १६४२ । पूर्ण । वेष्टनस० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७६०७. **तीन लोक पूजा—टेकचंद** । पत्रसं० २८२ । ग्रा० १२½ × ६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० १८२८ ग्रषाढ बुदी ४ । ले० काल सं० १६५६ फाल्गुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—प० नीमलाल जी ने बूंदी में प्रतिलिपि कराई थी ।

७६०८. **प्रति सं० २** । पत्र स० ३२५ । ग्रा० १४ × ८ । इञ्च । ले० काल सं० १६७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर चोधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—चौधरी मांगीलाल वकील ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

७६०९. **प्रति सं० ३** । पत्रस० ३७५ । ग्रा० १६ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १६६७ माह बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—पं० लक्ष्मीचन्द नैणवा वाले का ग्रंथ है । स० १६६८ में उद्यापनार्थ चढाया पन्नालाल चम स्थान (?) बेटा जइचन्द का ।

७६१०. **प्रति सं० ४** । पत्रस० ३४४ । ग्रा० १२½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १६३८ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

७६११. **प्रति सं० ५** । पत्र स० ५०५ ले० काल स० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

७६१२. **प्रति स० ६** । पत्रस० ३०८ । ग्रा० १३ × ७½ इञ्च । ले० काल सं० १६३४ चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

७६१३. **तीन लोक पूजा—नेमाचन्द पाटनी** । पत्रसं० ६५० । ग्रा० १३½ × ८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६७६ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

विशेष—धन्नालाल सोनी के पुत्र मूलचन्द सोनी ने आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि करवाकर भेंट की थी।

७६१४. तीस चौबीसी पूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ७४ । आ० १०×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३७८ । **प्राप्ति स्थान—भ०** दि० जैन मंदिर अजमेर ।

७६१५. प्रति सं० २ । पत्रस० ६१ । आ० १०×४½ इंच । ले०काल स० १७२८ बैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रन्था-ग्रन्थ सं० १५०० ।

७६१६. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनस० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सुखरामजी वसक वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

लिखत दयाचन्द वासी किशनकोट का बेटा फतेहचन्द छाबडा के पुत्र सात केसरीसिह के कारण पाय हम भरतपुर मे रहे ।

७६१७ प्रति सं० ४ । पत्रसं० ३६ । ले० काल सं० १७६६ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति का जार्णोद्धार हुआ है ।

७६१८. प्रति सं० ५ । पत्रस० ६१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६१६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३-४५ । आ० १०½×५ इन्च । ले०काल स० १६४४ । अपूर्ण । वेष्टनस० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स वत् १६ आषाढादि ४४ वर्षे आश्वन सुदी ७ गुरौ श्री विद्यापुरे शुभस्थाने ब्र० तेजपाल ब्र० पदमा पंडित माडण चातुर्मासिक स्थिति चतुर्विंशतिका पूजा लिखापिता । ब्र० तेजपाल पठनार्थ मुनि धर्मदत्त लिखितं किवद गीक गच्छे ।

७६२०. प्रति सं० ७ । पत्रस० २-४७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७६।२६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

७६२१. प्रतिसं० ८ । पत्र स० १०७ । आ० ८×८ इञ्च । ले० काल स १८४५ भादों सुदी ११ । पूर्ण । वष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

विशेष—गुटका साइज है । लालजी मल ने दीर्घपुर में लिखा था ।

७६२२. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६० । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७६२३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ७२ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७९२४. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ४२ । ग्रा० ११½ × ½ इञ्च । ले०काल स० १७८० चैत्र बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष– मालपुरा नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प० **योदराज** के पठनार्थ लिखा गया था ।

७९२५. तीसचौबीसीपूजा—पं० साधारण । पत्रस० ३५ । ग्रा० १२½ × ७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल सं० × । **ले०काल** स० १८५२ ग्रासोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

७९२६. तीस चौबीसी पाठ—रामचन्द्र । पत्रस० ७६ । ग्रा० १२½ × ७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १८८३ चैत वदी ५ । ले०काल स० १९०८ सावन वदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—ईश्वरीप्रसाद शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

७९२७. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६५ । ग्रा० १४½ × ८½ इञ्च । ले०काल सं० १९२६ भादव सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ११९ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—लाला कल्याणचन्द ने मिश्र श्री प्रसाद श्यामलाल से प्रतिलिपि कराई थी ।

७९२८. तीस चौबीसी पूजा—वृन्दावन । पत्र स० १२७ । ग्रा० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल—× । **ले०काल स०** १९२६ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ९०-२१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टोंक ।

विशेष—१०४ का पत्र नही है ।

७९२९. प्रतिसं० २ । पत्रस० २९६ । ग्रा० १० × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८९५ । पौष बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—गुटका साइज में है ।

७९३०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ११० । ग्रा० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १९१० ग्रासौज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस०४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७९३१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १०८ । ग्रा० ११×६ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण वेष्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ टोडारायसिह टोंक ।

७९३२. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १०९ । ग्रा० १० × ७ इञ्च । ले० काल स० १९५८ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

७९३३. प्रतिसं० । ६ । पत्र स० १०७ । ग्रा० ९½ × ६½ इंच । **ले०काल** म० १८८९ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २७, १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—प्रतापगढ मे पंडित रामपाल ने लिखा था ।

७९३४. तीस चौबीसी पूजा—× । पत्रस० । ग्रा० १६½ × ६½इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८५ कार्तिक बुदी १० पूर्ण । **वेष्टनसं०** १३९७ । **प्राप्ति स्थान**-अजमेर भण्डार ।

७६३५. तीस चौबीसी पूजा—× । पत्र सं० ६ । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टन स० ३७७ २६८ । प्राप्ति स्था—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

७६३६. तेरह द्वीप पूजा—लालजीत । पत्र स० १६८ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा-विषय—पूजा । र० काल स० १८७० । ले० काल स० १८६७। पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—कृष्णगढ मध्ये लिखिपित ।

७६३७. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११५ । आ० १४×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १८७० । ले०काल स० १६१६ । बैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

७६३८. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २१७ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल स० १६६० । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरह पंथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—भट्ट रामचन्द्र ने नैणवा मे प्रतिलिपि की थी । आनीलाल जी के पुत्र सावलरामजी भाई मोदान जी चि० फूलचन्द श्रावक नैणवा वाले ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

७६३९ प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १७५ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १६०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, बूंदी ।

७६४०. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २०२ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल स १६०६ पूर्ण । वेष्टनस० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर भादवा राजस्थान ।

विशेष—मारोठ मे भूधाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

७६४१ प्रति सं० ६ । पत्र स० २०६ । आ० १०×८ इञ्च । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, बूंदी ।

७६४२ प्रति स० ७ । पत्र स० १६३ । ले०काल १६६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

७६४३ प्रति सं० । ८ । । पत्रस० १६६ । आ० १३×७½ इञ्च । ले० काल सं० १६०७ । पौष सुदी । पूर्ण । वेष्टनस० २५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

७६४४. प्रति सं० ९ । पत्रस० १४० । आ० १३½×८¾ इञ्च । ले० काल स० १६२३ । आसौज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

७६४५ तेरह द्वीप पूजा स्वरूपचन्द । पत्रस० ११७ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०४, ६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

७६४६. तेरह द्वीप विधान—× । । पत्र सं० ५५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी, (बूंदी) ।

७६४७. तेरह द्वीप पूजा विधान—× । पत्रस० १३६ । ग्रा० १२$\frac{3}{4}$×८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६६१ मादवा वदी १ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—परशादीलाल पद्मावती पुरवाल ने सिकन्द्रा (आगरे) मे प्रतिलिपि की थी ।

७६४८. त्रिकाल चौबीसी पूजा—× । पत्रस० ११ । ग्रा० ११$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

७६४९. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा—त्रिभुवनचन्द्र । पत्रस० १४ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

७६५०. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा—× । पत्र सं० ११ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६/१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

७६५१. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा—× । पत्रसं० १६ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६/१७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—तक्षकपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

७६५२. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा—× । पत्र स० २२ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष—मक्तामर स्तोत्र तथा कल्याण मन्दिर पूजा भी है ।

७६५३. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा—× । पत्रसं० १३ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

७६५४. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ५६ । ग्रा० १३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मदिर करौली ।

७६५५. त्रिकाल चौबीसी पूजा—× । पत्रस० १० । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

७६५६. त्रिपंचाशत् क्रियाव्रतोद्यापन—× । पत्र स० ४ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९५७. त्रिपंचाशत क्रियाव्रतोद्यापन— × । पत्र सं० ६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

७९५८. त्रिपंचाशत् क्रियाव्रतोद्यापन— × । पत्र सं० ४ । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

७९५९. त्रिपंचाशत् क्रियाव्रतोद्यापन × । पत्र सं० ६ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७९६०. त्रिपंचासत् क्रियाव्रतोद्यापन— × । पत्रसं० ५ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७९६१. त्रिलोक विधान पूजा—टेकचन्द । पत्रसं० ३०३ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८२८ । ले०काल सं० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

७९६२. त्रिलोकसार पूजा—नेमीचन्द । पत्रसं० ६६१ । आ० १४×८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६८४ चैत सुदी १३ । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

७९६३. त्रिलोकसार पूजा—महाचन्द्र । पत्र सं० १६६ । आ० १०½×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १६१५ कार्तिक बुदी ८ । ले० काल सं० १६२४ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष -प० महाचन्द्र सीकर के रहने वाले थे । समेद शिखर की यात्रा से लौटते समय प्रतापगढ मे ठहरे तथा वही ग्रन्थ रचना की थी ।

७९६४. प्रतिसं० २ । पत्र स० १७२ । आ० १०½×७ इञ्च । ले० काल स० १६२४ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—भट्टारक भानुकीर्ति के परम्परा मे से प० महाचन्द थे ।

७९६५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १६६ । आ० १०½×६½ इंच । ले० काल स० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७९६६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १८१ । आ० १३×८½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७९६७. त्रिलोक पूजा—शुभचन्द । पत्र सं० १६६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६४२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी ।

७९६८. प्रतिसं० २ । पत्र स० १३१ । आ० १२½×५ इञ्च । ले०काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर वैर ।

७९६९. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १४७ । आ० १२×७½ इञ्च । ले०काल सं० १९१२ । पूर्ण । वेष्टनस० २०० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

७९७०. प्रति सं० ४ । पत्रस० १२६ । ले०काल सं० १९६३ । पूर्ण । वेष्टन स०२०१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७९७१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७९७२. त्रिलोकसार पूजा—सुमतिसागर । पत्र स० ८२ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२०-४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—उदैचन्द ने स्योजीराम बीजावर्गीय खू टेटा से द्रव्यपुर (मालपुरा) मे प्रतिलिपि कराई थी ।

७९७३. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०१ । ले०काल स० १८९४ । पूर्ण । वेश्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—गुटका साइज है ।

७९७४. त्रिलोकसार पूजा—× । पत्रस० १० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २४३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

विशेष—नित्य पूजा स ग्रह भी है ।

७९७५. त्रिलोकसार पूजा—× । पत्रस० ८ । आ० १२×६½ इच । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७३-७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष — जयमाला हिन्दी में है ।

७९७६. त्रिलोकसार पूजा - × । पत्र स० २२२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११०-७८ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७९७७ त्रिलोकसार पूजा -- × । पत्रस० १०२ । आ० १३½×६¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल स० १९२१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७९७८. त्रिलोकसार पूजा— × । पत्रस० १०३ । आ० ९ ×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर दूनी (टोंक)

७९७९. त्रिलोकसार पूजा— × । पत्रसं० १३१ । आ० ८×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० १९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पचायती मदिर अलवर।

७९८०. त्रैलोक्यसार पूजा— × । पत्र स० ७९ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय— पूजा र० काल × । ले० काल सं० १८८७ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९८१. प्रतिसं० २ । पत्र स० १३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—ऊपर वाली प्रति की नकल है ।

७९८२ त्रैलोक्यसार पूजा—× । पत्र स० ८१ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८८७ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९८३. त्रेपन क्रिया उद्यापन । पत्रसं० ५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७९८४. त्रेपन क्रिया व्रतोद्यापन— × । पत्र स० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७९८५. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५२ । **प्राप्ति थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७९८६. त्रेपनक्रियाव्रत पूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले० काल स० १७६० वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

विशेष—आचार्य ज्ञानकीर्ति ने अपने शिष्य भानुकेशो सहित वासी नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

७९८७. त्रिशच्चतुर्विंशति पूजा—शुभचन्द्र । पत्रसं० ७८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९८८. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० ४२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि०जैन मन्दिर अजमेर ।

७९८९. दश दिक्पालार्चन विधी—× । पत्रसं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४२-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

७९९०. दशलक्षण उद्यापन पूजा— × । पत्रसं० ४१ । आ० ७३/४ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९९१. दशलक्षण व्रापन पूजा—× । पत्रस० १५ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९९२. दशलक्षण उद्यापन पूजा— × । पत्रस० १-५ । आ० १२×५१/२ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७९९३. दशलक्षण उद्यापन पूजा— × । पत्र स० ४५ । आ० १११/२×५१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सवत् १९३३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८-७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

७९९४. दशलक्षण उद्यापन पूजा— × । पत्रसं० २० । आ० १०१/२×५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

७९९५. दशलक्षण जयमाल —× । पत्र स० १४ । आ० ११×४१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१-७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७९९६. दशलक्षण जयमाल —× । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन स० १९८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

७९९७. दशलक्षण जयमाल पूजा—भाव शर्मा । पत्रस० १२ । आ० १० ×४३/४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७९९८. प्रति सं० २ । पत्र स० ९ । आ० १०१/२ × ५ इञ्च । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सग्रामपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७९९९. प्रति सं० ३ । पत्रस० ९ । आ० १०१/२×५१/२ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८०००. प्रतिस० ४ । पत्रस० ६ । आ० ११×४१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८००१. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ९ । आ० ११×४३/४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

८००२. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १० । ले० काल स० १७५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ (क) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर डीग ।

विशेष—नूतपुर में विमलनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी। गाथाओं पर संस्कृत टीका दी हुई है।

८००३. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २२ । आ० १२×६½ इन्च । ले०काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८००४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । आ० १०½×५ इन्च । ले० काल सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—सवाई प्रतापसिंह जी के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी।

८००५. दशलक्षण जयमाल × । पत्रसं० ६ । आ० १२×४½ इन्च । भाषा प्राकृत । **विषय** पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १७२१ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७२१ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे द्वितीया दिवसे श्रीमत् परमपूज्य श्री श्री १०८ श्री भूषण जी तत्पट्टे मडलाचार्य श्री ५ धर्मचन्द्र जी तदाम्नाये लिखित पाण्डे उधा राजगढ मध्ये ।

८००६. दशलक्षण जयमाल × । पत्र सं० १६ । आ० ८½×८½ इन्च । भाषा प्राकृत विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८००७. दशलक्षण जयमाल × । पत्रसं० १३ । आ० १२½×५½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय पूजा । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८००८. दशलक्षण जयमाल × । पत्रस० २० । आ० ६½×४½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—रत्नत्रय जयमाल भी है। हिन्दी अर्थ सहित है।

८००९. दशलक्षण जयमाल × । पत्र सं० ५ । भाषा प्राकृत । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मदिर बसवा ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

८०१०. दशलक्षण जयमाल × । पत्र स० ८ । आ० १२×५ इन्च । भाषा प्राकृत । विषय धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक) ।

विशेष—गाथाओं के ऊपर हिन्दी मे छाया दी हुई है ।

८०११. दशलक्षण जयमाल × । पत्रस० ८ । आ० ६½×५½ इन्च । भाषा प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ श्रावण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—खुशालचन्द ने कोटा में लिखा था ।

८०१२. **दशलक्षण जयमाल—रइधू** । पत्र सं० ४ से ११ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३-२२५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८०१३. **प्रति सं० २** । पत्रसं० ८ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४-६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८०१४. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

८०१५. **प्रति सं० ४** । पत्र स० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे मुनि कल्याण जी ने प्रतिलिपि लिखी थी ।

८०१६. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० १४ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल × । । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

८०१७. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—सस्कृत टव्वा टीका सहित है ।

८०१८. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ११ । आ० १०×४½ इञ्च । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष— हिन्दी टीका सहित है । अन्तिम पत्र नही है ।

८०१९. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ८ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १८५२ प्रथम भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

८०२०. **प्रतिसं० ९** । पत्र सं० १० । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल स० १७८८ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प्रति हिन्दी छाया सहित है । तूगा मे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे पं० मोहनदास के पठनार्थ लिखी थी ।

८०२१. **प्रतिसं० १०** । पत्रस० ८ । आ१०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८०० काती सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—सीसवालि नग्र मध्ये लिखित ।

८०२२. **प्रति सं० ११** । पत्रस० ५ । आ० ६½×५ इञ्च । ले०काल × । **वेष्टनसं० २११** । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

८०२३. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

८०२४. **प्रति सं० १३** । पत्र सं० १० । ले०काल सं० १६०४ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ ।

विशेष—बतुआ मे चन्द्रपभ चैत्यालय मे प्रतिलिहि हुई ।

८०२५. **प्रति सं० १४** । पत्रसं० १८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ (अ) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०२६. **प्रति सं० १५** । पत्रसं० १८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ (ब) । **प्राप्ति स्थान** उपरोक्त मन्दिर ।

८०२७. **प्रति सं० १६** । पत्रसं० १७ । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० । ७३ (स) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०२८. **दशलक्षण जयमाल**—पत्र सं० २० । आ० १२×५½ इच । भाषा—प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले०काल स० १८८४ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०२९. **दशलक्षण जयमाल**—× । पत्रसं० ३५ । आ० १३ × ५¾ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सस्कृत टव्वा-टीका सहित है ।

८०३०. **दशलक्षण जयमाल**—× । पत्र सं० २६ । आ० ११½×५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०३१. **दशलक्षण जयमाल**—× । पत्र सं० २८ । भाषा हिन्दी । विषय पूजा । र० काल—× । ले० काल स० १६६५ पूर्ण । वेष्टन स० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०३२. **दशलक्षण पूजा जयमाल**—× । पत्रसं० १४ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८०३३. **प्रति सं० २** । पत्र स० ३७ । आ० १०×६¾ इञ्च । ले०काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—ब्राह्मण गूजर गौड कृष्णचन्द्र ने बूंदी मे लिखा था ।

८०३४. **दशलक्षण धर्मोद्यापन**—× । पत्र सं० १२ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०३५. दशलक्षण उद्यापन विधि—× । पत्र स० २५ । आ० ६¾×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८०३६. दशलक्षण पूजा—द्यानतराय । पत्र स० ७ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

८०३७. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ५ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

८०३८. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ५ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—दूसरे पत्र से भक्तामर भाषा हेमराज कृत पूर्ण है ।

८०३९. दशलक्षन पूजा विधान—टेकचन्द । पत्रस० ४२ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

८०४०. दशलक्षण मंडल पूजा—डालूराम । पत्रस० ३५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १८२१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १००/६२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा राज० ।

८०४१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३० । आ० १२½×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

८०४२. दशलक्षण विधान पूजा—× । पत्रस० २६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८०४३. दशलक्षण विधान पूजा × । पत्र स० २५ । आ० ११× ८ इञ्च । भाषा हिन्दी । **विषय-पूजा** । र०काल × । ले०काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० ८२/६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.) ।

विशेष—मारोठ नगर मे प्रतिलिपि की गई ।

८०४४. दशलक्षण व्रत पूजा—× । पत्रस० २१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विषय**—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०४५. दशलक्षण व्रत पूजा × । पत्र स० १६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । **विषय**—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०४६. दशलक्षण पूजा—विश्व भूषण । पत्र स० ३० । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स०-१७०४ । ले० काल सं०-१८१७ मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर बयाना ।

विशेष– चूरामन बयाना वाले ने करोली में ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई थी।

८०४७. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० १९ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०१२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर।

८०४८. **दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—सुमतिसागर** । पत्र स० १८ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टन सं० ३७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८०४९. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० १४ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६९-७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटाड्यों का डूगरपुर।

८०५०. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ९ । ग्रा० १५×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४४ पूर्ण । वेष्टन सं० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटड्यो का डूंगरपुर।

८०५१. **प्रति सं० ४** । पत्रस० १८ । ग्रा० १०×६ इंच । ले०काल सं० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८०५२. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० २० । ग्रा० १४×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—सवाई माधोपुर मे झालरापाटन के जैनी ने प्रतिलिपि कराई थी।

८०५३ **प्रति सं० ६** । पत्र स० २१ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$× ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी (बूंदी)

८०५४. **प्रति सं० ७** । पत्र स० १७ । ग्रा० १३×५ इञ्च । ले०काल सं० १९३३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८०५५. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १४ । ग्रा० १०×६ इञ्च । ले०काल सं० १८६७ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूदी।

विशेष—सुमति सागर श्री ग्रभयनन्दि के शिष्य थे।

८०५६. **प्रतिसं० ९** । पत्रस० २८ । ग्रा० १२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर राजमल (टोंक)

विशेष—गुलाबचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

८०५७. **प्रतिसं० १०** । पत्रस० २८ । ले०काल सं० १७९६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर।

८०५८. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० २४ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १९५२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर ग्रलवर।

८०५९. **प्रतिसं० १२** । पत्रस० १२ । ग्रा० १२×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—ग्रागे षोडश कारण उद्यापन है पर ग्रपूर्ण है।

८०६०. प्रति सं० १३ । पत्रस० ११ । आ० १०×५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति—

श्री अभयनन्दि गुरु शील सुसागर ।
सुमति सागर जिन धर्म धुरा ।।७।।

८०६१. दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—सुधीसागर । पत्र स० २५ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

८०६२. दशलक्षण व्रतोद्यापन.— × । पत्रसं० १५ । आ० ११½×५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८० आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १३५१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०६३. प्रतिसं० २ । पत्रस० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३५२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

८०६४. दश लक्षण व्रतोद्यापन— × । पत्र स० १२ । आ० ११¾×६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—लिखित ब्राह्मण फौजूराम ।

८०६५. दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—भ० ज्ञानभूषण । पत्रस० ३७ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८१६ सावन सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर के पचो ने करौली में प्रतिलिपि कराई थी ।

८०६६. दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—रइधू । पत्रस० २६ । आ० ८½×६½ इन्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—६ प्रतिया और है ।

८०६७. दशलक्षण व्रतोद्यापन— × । पत्रस० ३० । आ० १०½×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६४६ । अपूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

८०६८. दश लक्षण व्रतोद्यापन— × । पत्रस० २५ । आ० १०×६ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८५० भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

८०६९. दशलक्षण व्रतोद्यापन — × । पत्रस० ४६ । आ० १०×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

८०७०. दशलक्षण व्रतोद्यापन— × । पत्रसं० ३० । ग्रा० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र०काल × । **ले०काल स० १६५०** । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—लिखी माली कवरलाल ने लिखाई घासीराम । चि० भवरीलाल मारवाडा ने अग्रवालों के मन्दिर मे चढाई थी ।

८०७१. दशलक्षण व्रतोद्यापन— × । पत्रसं० १६ । ग्रा० १०×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

८०७२. दशलक्षण पूजा उद्यापन— × । पत्रसं० २१ । ग्रा० ८×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८४४ सावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष – ग्राचार्य विजयकीर्तिजी तत् शिष्य सदासुख लिपिकृत ।

८०७३. दशलक्षण पूजा उद्यापन— × । पत्र स० २३ । ग्रा० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३३/३१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—मिति चैत्र सुदी २ भृगुवासरे वृन्दावती नगरे सुपार्श्वचैत्यालये लिखतं स्वहस्तेन लखित शिवविमल पठनार्थं स० १८१७ ।

८०७४. दशलक्षण पूजा उद्यापन— × । पत्रस० ५ । ग्रा० ८½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय— पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

८०७५. दशलक्षण पूजा— × । पत्रस० ६ । ग्रा० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८०७६. दशलक्षण पूजा— × । पत्रस० ११ । ग्रा० १०¾×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८५० श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८०७७. दश लक्षण पूजा – × । पत्र सं० १६ । ग्रा० १०×५¾ इञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

८०७८. दशलक्षण पूजा— × । पत्रस० ६ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । भाषा - प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

८०७९. दशलक्षण पूजा—× । पत्रसं० २८ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८०८०. दशलक्षण पूजा—× । पत्रसं० ५६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—दो रुपये तेरह आना में खरीदा गया था ।

८०८१. दश लक्षण पूजा — × । पत्र स० ४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर दौसा ।

८०८२. दशलक्षण पूजा—× । पत्र सं० ५५ । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०८३. दशलक्षण पूजा— × । पत्र सं० ६७ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८०८४. दश लक्षणीक अंग— × । पत्र स० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८०८५. द्वादश पूजा विधान— × । पत्र सं० ८ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—८ से आगे पत्र नही हैं ।

८०८६. द्वादश व्रत पूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्रस० १४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

८०८७ द्वादश व्रत पूजा—भोजदेव । पत्रस० १८ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८०८८. द्वादश व्रतोद्यापन—× । पत्र स० १६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८५९ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६-१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष –टोडारायसिंह मे लिखा गया था ।

८०८९. द्वादशांग पूजा— × । पत्र सं० ७ । आ० ८×६½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८०९०. दीपावलि महिमा—जिनप्रभसूरि पत्र सं० २१ । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०९१. दीक्षापटल— × । पत्र सं० ७ । आ० ९×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल स० १९२७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०९२ दीक्षाविधि— × । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८०९३. दीक्षाविधि— × । पत्रसं० १४ । आ० १०×५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल स० १५३४ ज्येष्ठ सुदी । पूर्ण । वे० स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

८०९४. दुखहरण उद्यापन—यशःकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १०×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८०९५. देवपूजा— × । पत्रसं० ४ । आ० ८×५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८०९६. देवपूजा— × । पत्र स० १५ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

८०९७ देवपूजा— × । पत्रस० ३३ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

८०९८. देवपूजा—पत्रस० ११ । आ० ९ × ६ इन्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७९-१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित पूजा है ।

८०९९. देवपूजा भाषा—पं० जयचन्द छाबड़ा । पत्रसं० २५ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९१९ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

८१००. देवपूजा भाषा-देवीदास । पत्र सं० २३ । आ० १२¾×६¾ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—पत्र २१ से दशलक्षण जयमाल है (अपूर्ण)।

८१०१. **देवशास्त्र गुरु पूजा—द्यानतराय**। पत्रसं० ६। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ११५३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८१०२. **देवगुरुशास्त्र पूजा जयमाल भाषा**—×। पत्रस० ३०। आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १६.०। पूर्ण। वेष्टन स० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

८१०३. **देवसिद्ध पूजा**—×। पत्र स० १५। आ० १२ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

८१०४. **धर्मचक्र पूजा—खड्गसेन**। पत्रस० ३१। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल स० १८२३ फागुन बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—प० भागचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

८१०५. **धर्मचक्र पूजा—यशोनन्दि**। पत्रस० ४३। आ० ६×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल स०—१८१६ माघ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर।

विशेष—मिट्ठूराम अग्रवाल ने यह ग्र थ महादास के लिये लिखाया था।

८१०६ **धर्मचक्र पूजा**—×। पत्रस० २। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इच। भाषा-सस्कृत। विषय पूजा। र०काल ×। ले० काल स०—१८१८। पूर्ण। वेष्टन स० ३७१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८१०७. **धर्मस्तम - वर्द्धमानसूरि**। पत्र स० ३७। भाषा—सस्कृत। विषय ×। र०काल ×। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—इत्याचार्य श्री वर्द्धमानसूरिकृते आचारदिनकरे उभयधर्मस्तभे बलिदान कीर्तिनो नाम षट्त्रिंशत्तमो उद्देश।

८१०८. **धातकीखड द्वीप पूजा**—×। पत्र स० २०। आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत विषय—पजा। र० काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० ६३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८१०६. **ध्वजारोपणविधि**—×। पत्रस० ७। आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल स० १६५८। पूर्ण। वेष्टन स० १५३७। **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

८११० **ध्वजारोपणविधि**—×। पत्रसं० १२। आ० १२ × ५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३००-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८१११. ध्वजारोपणविधि—× । पत्रसं० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । **विषय**-विधान । र०**काल** × । ले०**काल** × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २८० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८११२. ध्वजारोपणविधि— × । पत्रसं० १८ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**—विधान । र०काल × । ले०काल सं० १९४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—लखमीचन्द सागलपुर नग्र वालो ने प्रतिलिपि कराई थी ।

८११३. ध्वजारोपणविधि— × । पत्र सं० ३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८११४. नवकार पूजा— × । पत्र सं० २२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८९१ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी

विशेष— अनादि मंत्र पूजा भी है ।

८११५. नवकार पंतीसी पूजा— × । पत्रसं० २ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ×। ले०काल सं० १८१७ माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लिखित चिमन सागरेण । णमोकार मंत्र मे पैंतीस अक्षर है और उसी आधार पर रचना की गयी है

८११६. नवकार पैंतीसी पूजा— × । पत्रसं० २१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३५५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८११७. नवकार पैंतीसी व्रतोद्यापन पूजा—**सुमतिसागर** । पत्र सं० १५ । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८१६आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

८११८. नवग्रह पूजा— × । पत्रसं० ५ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—रवि सोम एव राहु केतु आदि नवग्रहो के अनिष्ट निवारण हेतु नो तीर्थंकरो की पूजाए है ।

८११९. नवग्रह पूजा— × । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८१२०. **नवग्रह पूजा**— × । पत्रसं० ५ । ग्रा० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८० सावण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८१२१. **नवग्रह पूजा**— × । पत्र सं० ४ । ग्रा० १०½×४ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८१२२. **नवग्रह पूजा** । पत्र सं० ७ । ग्रा० १०×४¾ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८९२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५७/५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

८१२३. **नवग्रह पूजा** । पत्र सं १५ । ग्रा० १०½×४¾ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८८६ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६०/५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

८१२४. **नवग्रह पूजा**—× । पत्र सं० ७ । ग्रा० ८×६½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय —पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३११-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—पद्मावती जाप्य भी है ।

८१२५. **नवग्रह पूजा**—× । पत्रसं० ९ । ग्रा० ११×७ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बूंदी ।

८१२६. **नवग्रह पूजा**—× । पत्रसं० ३ । ग्रा० ९×३ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २९४-३८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८१२७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २९५/३८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८१२८. **नवग्रह पूजा**—× । पत्रसं० ५ । ग्रा० १२×५½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९९ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

८१२९. **नवग्रह पूजा** —× । पत्रसं० १३ । ग्रा० १२ × ६ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

विशेष—शांतिक विधान भी दिया हुआ है ।

८१३०. **नवग्रह पूजा**—× । पत्र सं० २३ । ग्रा० १०×६ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

८१३१. नवग्रह पूजा—× । पत्रसं० ७ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ (अ) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

८१३२. नवग्रह पूजा—मनसुखलाल । पत्रसं० १६ । आ० ८½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

८१३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

८१३४. नवग्रह पूजा—× । पत्र सं० १७ । आ० १०× ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८३४ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८१३५. नवग्रह पूजा—× । पत्रसं० ८ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८१३६. नवग्रह पूजा— × । पत्रसं० २८ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६७६ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—गुटका साइज मे है ।

८१३७ नवग्रह पूजा— × । पत्रसं० १० । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८६ र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

८१३८. नवग्रह अरिष्ट निवारण पूजा—× । पत्र सं० ४१ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

विशेष—निम्न पूजाओं का और संग्रह है —

नंदीश्वर पूजा, पार्श्वनाथ पूजा, रत्नत्रय पूजा ।
(संस्कृत) सिद्धचक्र पूजा, शीतलनाथ पूजा ।
सुगन्ध दशमी पूजा, रत्नत्रय पूजा ।

८१३९. नवग्रह पूजा विधान—× । पत्रसं० १० । आ० ६¾×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६११ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३१२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८१४०. नवग्रह विधान—× । पत्र सं०२० । आ० ८½×६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८१४१. न्हवरण विधि—आशाधर । पत्र स० ३० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१२-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८१४२. न्हावरण पाठ भाषा—बुध मोहन । पत्रसं० ४ । आ. १०×४½ इच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले.काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्री जिनेन्द्र अभिषेक पाठ सस्कृत भाषा
सकलकीर्ति मुनि शिष्य रच्यो धरि जिनमत आसा ।
ताको अर्थ विचारि धारि मन में हुलसायो ।
बुध मोहन जिन न्हवन देसभाषा मे गायो ।

इति भाषा न्हावरण पाठ सपूर्ण ।

८१४३. नाम निर्णय विधान—× । पत्र स० ११ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दश बोल और दिये है ।

८१४४. नित्य पूजा—× । पत्रस० २० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

८१४५. नित्य पूजा—× । पत्रस० ६२ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६५४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

८१४६. नित्य पूजा – × । पत्र स० २० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

८१४७. नित्य पूजा× । पत्रस० १२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

८१४८. नित्य पूजा—× । पत्रस० २ से १२ । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन तेरहपथी मंदिर बसवा ।

८१४९. नित्य पूजा—× । पत्र स० ५० । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बूंदी ।

८१५०. नित्य पूजा—× । पत्र स० ३३ । आ० ६×६ इच भाषा—हिन्दी-संस्कृत । विषय— पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८१५१ नित्यपूजा पाठ—ग्राशाधर। पत्र सं० २०। ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५१०। **प्राप्ति-स्थान—**दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष—मूल रचना मे ग्राशाधर का नाम नही है पर लेखक ने ग्राशाधर विरचित पूजा ग्रंथ ऐसा उल्लेख किया है।

८१५२. नित्य पूजा पाठ—×। पत्र स० ६-२५। ग्रा० ६×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत, हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० २४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक)।

८१५३. नित्य पूजा पाठ संग्रह—×। पत्रस० २२। ग्रा० ६$\frac{3}{4}$×८$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

८१५४. नित्य पूजा भाषा—पं० सदासुख कासलीवाल-पत्र सं० ३१। ग्रा० १३$\frac{1}{2}$×८$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-पूजा। र०काल स० १६२१ माह सुदी २। ले०काल स० १६८६ कार्तिक बुदी ८।। पूर्ण। वेष्टन स० ४६१। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८१५५. प्रतिसं० २। पत्रस० ३६। ग्रा० ११×७ इञ्च। ले० काल स० १६४१। पूर्ण। वेष्टनस० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर, बूंदी।

विशेष—नयनापुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

८१५६. प्रति स० ३। पत्रस० ३६। ग्रा० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल सं० १६२८ भादवा बुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

८१५७. प्रतिसं० ४। पत्रस० ५०। ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। ले०काल स० १६४०। पूर्ण। वेष्टनस० ७४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

८१५८. प्रति स० ५। पत्रस० ५६। ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×८ इञ्च। ले० काल स० १६३६ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० ३६/८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दौसा।

८१५९. प्रतिसं० ६। पत्रस० ३४। ग्रा० १२$\frac{1}{2}$×८ इञ्च। ले०काल स०१६४६। पूर्ण। वेष्टनस० ११४/६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

८१६०. नित्य पूजा भाषा—×। पत्रस० १५। ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस०४७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दौसा।

८१६१. नित्य पूजा पाठ संग्रह— ×। पत्रस० ६०। ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी, संस्कृत। विषय—पूजा पाठ। र०काल ×। ले०काल स० १६६७। पूर्ण। वेष्टनस० १३८-५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

८१६२. नित्य पूजा वचनिका—जयचन्द छाबडा। पत्रस० ५२। ग्रा० ८$\frac{1}{2}$×७$\frac{3}{4}$ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी गद्य। **विषय**—पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १९३५। पूर्ण। **वेष्टनसं० १३८।** **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर।

८१६३. नित्य पूजा संग्रह — ×। पत्र सं० ७५। ग्रा० ६×१२$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर।

८१६४. नित्य नियम पूजा— ×। पत्र सं० १४। ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। हिन्दी। विषय पूजा। र०काल। ले० काल ×। स० १९४२ पौष बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर चौगान बूंदी।

विशेष—श्री कृष्णलाल भट्ट ने लोचनपुर में लिखा था।

८१६५. नित्य नियम पूजा—×। पत्रस० १४। ग्रा० १२ × ७ इञ्च। भाषा—हिन्दी-संस्कृत। विषय - पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

विशेष—प्रतिदिन करने योग्य पूजाओं का संग्रह है।

८१६६. नित्य नियम पूजा—×। पत्र स० ४३। ग्रा० १२×८ इञ्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—४३ से आगे पत्र नही है।

८१६७ नित्य नियम पूजा— ×। पत्रस० १९। ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा हिन्दी-सस्कृत। विषय पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

८१६८. नित्य नियम पूजा— ×। पत्रस० ५०। ग्रा० १२ × ८ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९५३। पूर्ण। वेष्टन स० २३६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—व्रतो की पूजाएं भी है।

८१६९. नित्य नियम पूजा-×। पत्र स० ४८। ग्रा० ११×५$\frac{1}{2}$ इच। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल ×।। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

८१७०. नित्य नियम पूजा—×। पत्र स० १०। ग्रा० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८१७१. नित्य नियम पूजा-×। पत्र सं० २४। भाषा—सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

८१७२. नित्य नियम पूजा—×। पत्र सं० २२। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८२२। पूर्ण। वेष्टन सं ३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी।

८१७३. नित्य नैमित्तिक पूजा—×। पत्रसं० १०६। आ० ७×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। हिन्दी। विषय-पूजा। ले०काल सं० १६६८। पूर्ण। वेष्टन सं० २६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान, (बूंदी)।

विशेष—बजरगलाल ने बूंदी मे लिखा था।

८१७४. निर्दोष सप्तमी व्रत पूजा—ब्र० जिनदास। पत्रसं० २१। आ०१०½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २६०। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

८१७५. निर्दोष सप्तमी व्रतोद्यापन—×। पत्रस० १६। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल सं०१७४६। पूर्ण। वेष्टनसं० ४३५/३५४। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन स भवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८१७६. निर्वाण कांड गाथा व पूजा—उदयकीर्ति—पत्र सं० ४। आ० ८×३¾ इञ्च। भाषा-प्राकृत, सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल स० १६२३। पूर्ण। वेष्टन सं० १८६। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

८१७७. निर्वाणकाण्ड पूजा - ×। पत्रस० ८। आ० १२¹×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स० १८७१ भादवा बुदी ७। ले० काल। पूर्ण। वेष्टनसं० ५१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—अ त मे भैय्या भगवती दास कृत निवार्ण काण्ड भाषा भी है। इस भण्डार में ३ प्रतियां और भी हैं।

८१७८ निर्वाण कल्याण पूजा—×। पत्रसं० १५। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १३५३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणककी पूजा है।

८१७९. निर्वाण क्षेत्र पूजा—×। पत्र स० १२। आ० ६½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स० १८७१ भादो सुदी १। ले०काल स० १८८६ जेठ बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली।

विशेष—मानिगराम अग्रवाल से देवीदास श्रीमाल ने करौली मे लिखवाई थी।

८१८०. निर्वाण क्षेत्र पूजा—×। पत्र स० १७। आ० ७¾×५½ इच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—पूजा र०काल ×। ले० काल स० १८८५ चैत बदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० ३६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सौगानी मन्दिर करौली।

विशेष—लल्लूराम अजमेरा ने अलवर में प्रतिलिपि की थी।

८१८१. निर्वाण क्षेत्र पूजा— × । पत्रस० १२ । ग्रा० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८७१ । ले०काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्टनस० १२६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर बडा बीस पथी दौसा ।

८१८२. निर्वाण क्षेत्र पूजा— × । पत्रस० ६ । ग्रा० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । **विषय**-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६२ ग्राषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति— स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा राज० ।

८१८३. निर्वाण क्षेत्र पूजा— × । पत्रस० ११ । ग्रा० ११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८७१ । ले०काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८१८४ निर्वाण क्षेत्र पूजा × । पत्र स० १६ । ग्रा० १३×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८७१ भादवा सुदी ७ । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८१८५. निर्वाण क्षेत्र मंडल पूजा— × । पत्रस० ४४ । ग्रा० १२ × ४½ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल स० १६१६ कार्त्तिक बुदी १३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

८१८६. निर्वाण क्षेत्र मण्डल पूजा— × । पत्र सं० २२ । ग्रा० ११½ × ५½ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८१८७. निर्वाण मंगल विधान—जगराम । पत्रस० २६ । ग्रा० १३×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १८४६ । ले० काल स० १८७१ पूर्ण । वेष्टनस० ११४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८१८८. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३६ । ग्रा० ११½×६ इञ्च । ले० काल स० १८८६ भादो सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—पत्र ३४ से ग्रागे **श्रीजिन** स्तवन है ।

८१८९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २२ । ग्रा० ६½×६इ च । ले०काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

८१९०. नन्दि मंगल विधान— × । पत्रस० ८ । ग्रा० १०×६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६८-११७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८१९१. नदीश्वर जयमाल—× । पत्रसं० ८ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

८१९२. नंदीश्वर जयमाल— × । पत्रसं० ७ । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति संस्कृत टीका सहित है। अष्टाह्निका पर्व की पूजा भी है।

८१९३. नंदीश्वर द्वीप पूजा— × । पत्रसं० १६ । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल स० १८७६ कार्तिक बुदी ५ । ले० काल स० १९४१ । पूर्ण । वेष्टनस० ७/३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८१९४. नंदीश्वर द्वीप पूजा— × । पत्रस० ७३ । आ०— × । भाषा— । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

८१९५. नंदीश्वर द्वीप पूजा— × । पत्रस० ११ । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स०१८६० । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

८१९६. नंदीश्वर द्वीप पूजा— × । पत्र स० ५२ । आ० ७$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०/७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

८१९७. नंदीश्वर द्वीप पूजा— × । पत्र स० १५ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल स० १८६६ । ले०काल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—वीर नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

८१९८. नंदीश्वर द्वीप पूजा उद्यापन— × । पत्र स० १० । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७३० । पूर्ण । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८१९९ नंदीश्वर पंक्ति पूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्रस० ५-२२ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २८०, ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

८२००. नन्दीश्वर पंक्ति पूजा— × । पत्रस० ६ । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८२०१. —नंदीश्वर पंक्ति पूजा— × । पत्र स० ८ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२०२. नंदीश्वर पंक्ति पूजा— × । पत्रसं० ११ । आ० १० × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९०१ आसोज बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

८२०३. नंदीश्वर पंक्ति पूजा—× । पत्र स० १३ आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८२०४. नदीश्वर पंक्ति पूजा— × । पत्रस० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२०५. नंदीश्वर व्रतोद्यापन— × । पत्रस० ४ । आ० १५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८२०६. नदीश्वर द्वीप पूजा— × । पत्रस० १० । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल स०१९०५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८२०७. नंदीश्वर पूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल स० १८८५ सावन सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२०८. प्रति सं० २ । पत्रस० ४१ । आ० १२½×६½ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान** –भ० दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

८२०९. प्रति सं० ३ । पत्रस० ५७ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल स० १९०४ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

८२१०. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४३ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

८२११. नंदीश्वर पूजा—डालूराम । पत्र स० १८ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—पुजा । र०काल स० १८७६ । ले०काल स० १९४१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१२. प्रति सं० २ । पत्रस०१४ । आ० १२½×८ इञ्च । ले०काल स० १९३४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१३. प्रति सं० ३ । पत्र स० २ । आ० १२½×८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—धानतराय कृत है ।

८२१४. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १५ । आ० १२×७½ इञ्च । ले०काल स० १९१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१५. प्रति सं० ५ । पत्रस० १४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१६. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० २४ । आ० १०×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल सं० १९६२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—आमेट के ब्राह्मण किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

८२१७. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० १६ । आ० १२$\frac{3}{4}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं० १९८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७-८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८२१८. नंदीश्वर पूजा—रत्ननंदि । पत्र सं० १६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

८२१९. नंदीश्वर पूजा— × । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२२०. नंदीश्वर पूजा— × । पत्र स० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विषय- पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८७७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२२१. नंदीश्वर पूजा— × । पत्रस० २ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

८२२२. नंदीश्वर पूजा—× । पत्रस० ७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८२१ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—मुरोज नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । पं० आलमदास ने जिनदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८२२३. नंदीश्वर पूजा— × । पत्रस० १ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८२२४ नंदीश्वर पूजा— × । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६-१०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८२२५. नंदीश्वर पूजा— × । पत्रसं० ६० । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८२२६. नंदीश्वर पूजा (बड़ी)— × । पत्र स० ६७ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८२२७. नंदीश्वर पूजा विधान— × । पत्र सं० ४५ । आ० ११½ × ८ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९३५ सावण बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—इस पर वेष्टन संख्या नही है ।

८२२८. नंदीश्वर द्वीप उद्यापन पूजा— × । पत्र सं० १७ । आ० ८ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८५७ चैत बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—प० शिवजीराम की पुस्तक है तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

८२२९. नन्दीश्वर द्वीप पूजा—पं० जिनेश्वरदास । पत्रस० ६७ । आ० १३ × ८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४८/१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

८२३०. नंदीश्वर द्वीप पूजा—लाल । । पत्रस० ११ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

८२३१. नन्दीश्वर द्वीप पूजा—विरधीचन्द । पत्रसं० ४४ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १९०३ । ले०काल स० १९०४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—विरधीचन्द मारोठ नगर के रहने वाले थे ।

८२३२. नन्दीश्वर द्वीप पूजा— × । पत्रस० ३३ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दौलतराम कृत छहढाला तथा नित्य पूजा भी है ।

८२३३. नैमित्तिक पूजा सग्रह— × । पत्रस० ५२ । आ० ११¾ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

विशेष - निम्न पूजाओ क सग्रह है -

दश लक्षण पूजा, मुक्त सपति पूजा, पचमी व्रत पूजा, मेघमाला व्रतोद्यापन पूजा, कर्मचूर व्रतोद्यापन पूजा एव अनन्त व्रत पूजा ।

८२३४. नैमित्तक पूजा संग्रह— × । पत्र स० ६१ । आ० १२½ × ६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दश लक्षण, रत्नत्रय एव सोलह कारण आदि पूजाये हैं ।

८२३५. पंक्ति माला— × । पत्रस० ८६ । भाषा-हिन्दी । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल स० १७८६ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—बीच २ के पत्र नहीं हैं। संख्या दं. हुई है।

८२३६. पंच कल्याणक उद्यापन—गूजरमल ठग । पत्र स० ७४ । आ० ७×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा।

८२३७. पंच कल्याणक उद्यापन—×। पत्रस० ३१। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल×। ले० काल स० १६४०। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा।

८२३८. पंच कल्याणक पूजा—टेकचंद। पत्र सं० ३३। आ० १२½×५½इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १६८५। पूर्ण। वेष्टनसं० ६००। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८२३९. प्रतिसं० २। पत्र स० २२। ले० काल स० १६२२। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

८२४०. प्रतिसं० ३। पत्र स० १६। आ० ११×७ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८२४१. पंच कल्याणक पूजा—प्रभाचन्द। पत्रस० १३। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १६३८। पूर्ण। वेष्टनस० १७-१२। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

विशेष—लिखित नग्र सलूंवरमध्ये। लिखापित पंडित जी श्रीलाल चिरजीव। शुभ सवत् १६३८ वर्षे शाके १८०३ प्र० मास पौष बुदी १२।

८२४२. पंच कल्याणक पूजा—पं० बुधजन। पत्रस० ३४। आ० १०×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १६३३ असाढ सुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० ६०-३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा बीसपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—शिवबक्स ने प्रतिलिपि की थी।

८२४३. पंच कल्याणक पूजा—रामचन्द्र। पत्रसं० १६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १८२२ ज्येष्ठ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० १४४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—कुंभेर नगर मे प्रतिलिपि हुई थी। चौबीस तीर्थंकरो के पच कल्याणक का वर्णन है।

८२४४. पंच कल्याणक—वादिभूषण (भुवनकीर्ति के शिष्य)। पत्र स० १६। आ० १०½×४½ इंच। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १७१३। पूर्ण। वेष्टनसं० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

८२४५. पंच कल्याणक पूजा—सुधा सागर। पत्रसं० १५। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८२४६. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १६ । म्रा० ७$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—प्रथम ५ पत्रो में म्राशाधर कृत पंच कल्याणक माला दी हुई है ।

८२४७. **प्रति सं० ३** । पत्रस० २४ । म्रा० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इन्च । ले०काल सं० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष - सदासुख ने कोटा के लाडपुरा मे प्रतिलिपि की थी ।

लोकाकास प्रहोत्तमे सुजिनयो जात: प्रदीपस्सदा ।
सद्रत्नत्रय रत्नदर्शनपर: पापे धनी नाशक: ।
श्रीमच्छी श्रवणोत्तमस्यतनुज: प्राग्वाट वशोभवो ।
हृमाल्वाय नत. प्रयच्छतु सताग्र श्री सुधासागर ।

८२४८. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० २१ । म्रा० ६'×६ इन्च । ले०काल स० १६०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—गुजराती ब्राह्मण हीरालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

८२४९. **प्रति स ं० ५** । पत्र स० १२ । ले०काल स० १६०२ । पूर्ण । वेप्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

८२५०. **प्रति स० ६** । पत्रस० २१ । ले०काल सं० १६२० । पूर्ण । वेष्टनस० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मंदिर बसवा ।

८२५१. **प्रति सं० ७** । पत्रस० २१ । म्रा० १०$\frac{1}{2}$×५ इन्च । ले० काल स० १७८····पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७३ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

८२५२. **पंच कल्याणक पूजा**—सुमति सागर । पत्र स० १५ । म्रा० ११×६$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । ०काल × । ले० काल स० १८१७ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—महाराष्ट्र प्रदश म वल्लभपुर म नमीश्वर चैत्यालय मे ग्रन्थ रचना हुई थी । लालचन्द पांडे ने करौली मे भूरामल के लिये प्रतिलिपि की थी ।

८२५३. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १४ । म्रा० १३$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन सं० ५०-४४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

८२५४. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८२५५. **पंच कल्याण पूजा चन्द्रकीर्त्ति** । पत्रस० २६ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८२५६. **पंच कल्याणक पूजा**—× । पत्रस० १६ । म्रा० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर म्रादिनाथ बू दी ।

८२५७. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्र सं० २४ । आ० १०×५ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८२५८. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्रसं० १७ । आ० ११½×५ इन्च । भाषा —संस्कृत । विषय- पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८२५९. पंच कल्याणक पूजा— × । पत्र स० १८ । आ० १०½×५¾ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

८२६०. पंच कल्याणक पूजा— × । पत्र सं० १५ । आ० १०×७½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२६१. पंच कल्याणक पूजा— × । पत्रस० २५ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८०१ आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८२६२. पंच कल्याणक पूजा— × । पत्र स० १४ । आ० ६¾×६ इन्च । भाषा संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८१७ बैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २७८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

८२६३. पंच कल्याणक विधान—भट्टारक सुरेन्द्र कीर्ति × । पत्रसं० ४६ । आ०९×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३४ । **प्राप्ति-स्थान** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८२६४. पंच कल्याणक पूजा— × । पत्रसं० १८ । आ० ११×७½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२६५. पंच कल्याण पूजा— × । पत्रस० १३ । आ० १०×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन सं० ३७३ । **प्राप्ति स्थान** भ०दि० जैन मदिर अजमेर ।

८२६६. पंच कल्याणक पूजा— × । पत्र सं० २० । आ० १०½×५¾ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

८२६७. पंच कल्याणक पूजा— × । पत्रसं० ३७ । आ० १०×६ इन्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९०७ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

८२६८. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्रसं० ११ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । **विषय**-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८२६९. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्र० सं० १३ । आ० ७½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—तप कल्याणक तक ही पूजा है । आगे लिखना बन्द कर दिया गया है ।

८२७० पंच कल्याणक पूजा—× । पत्रसं० २१ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९४४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६३/३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८२७१ पंच कल्याणक पूजा—× । पत्र सं० २२ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९०५ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—दो प्रतिया और है ।

८२७२ पंच कल्याणक पूजा—× । पत्र सं० ९ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा हिन्दी । **विषय**—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९८२ । पूर्ण । वेष्टन स० ९२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२७३. पंच कल्याणक पूजा जयमाल—× । पत्रसं० १० । आ० १०×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८२७४. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्रस० १५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८३९ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ९९-६०** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८२७५. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्रस० ३५ । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है ।

८२७६. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्रस० ३४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । **विषय**-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९८४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४३/१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८२७७. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्र स० २७ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । **विषय**—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९०७ । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८२७८. पंच कल्याणक पूजा—×। पत्रसं० १७। आ० ६३/४×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी, पद्य। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

८२७९. प्रति सं० २। पत्र सं० ५८। आ० १२×७ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण वेष्टन सं० १४४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

८२८० पंच कल्याणक विधान—हरीकिशन—×। पत्रसं० २१। आ० १४×७ इञ्च। भाषा हिन्दी-गद्य। विषय-पूजा। र०काल स० १८८० अषाढ सुदी १५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

८२८१. पंच कल्याण व्रत टिप्पण—×। पत्र स० ४। आ०—×। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा विधान। र०काल—×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

८२८२. पंचज्ञान पूजा—पत्र स० ५। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

८२८३. पंचगुरु गुणमाला पूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० १६। आ० ११×४१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

८२८४. पंच परमेष्ठी पूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति। पत्रसं० ७। आ० ९×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९३८। पूर्ण। वेष्टन स० ५१९। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

८२८५ पंच परमेष्ठी पूजा—यशोनन्दि। पत्र सं० ३२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १८५२। पूर्ण। वेष्टनस० ३५९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८२८६. प्रति सं० २। पत्र स० ३५। आ० १२१/२×५१/२ इञ्च। ले०काल स० १८८७ आषाढ बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)।

विशेष—प० शिवलाल के पठनार्थ रामनाथ भट्ट ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

८२८७. प्रतिसं० ३। पत्र स० ३१। आ० १३×५१/२ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

८२८८ प्रतिसं० ४। पत्रसं० ३६। आ० ९×७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मंदिर अलवर।

८२८९. प्रतिसं० ५। पत्रस० ४०। आ० ११×६१/२ इञ्च। ले०काल सं० १८१७ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—उदयराम के पुत्र रूरो ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बयाना में करायी थी।

८२६०. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८५६ जेठ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

८२६१. प्रति सं० ७ । पत्रसं० २५ । आ० ११$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८२६२ प्रतिसं० ८ । पत्र सं० ३८ । आ० १०$\frac{3}{4}$×६ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर करोली ।

८२६३. प्रतिसं० ९ । पत्र सं० २८ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल स० १८३५ जेठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

८२६४. प्रतिसं० १० । पत्र सं० २७ । आ० ११×५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लश्कर,जयपुर ।

८२६५. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ३७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इन्च । ले० काल स० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८२६६. प्रतिसं० १२ । पत्र स० २७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२६७. पंच परमेष्ठी पूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्रस० २४ । आ० ५$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

अंतिम प्रशस्ति—

श्री मूल संघे जननदसघ ।
तया भवछी विजादिकीर्त्ति ।
ततपट्टधारी शुभचन्द्रदेव ।
कल्यानमात्मा कृताप्तपूजा । १२ ।

विशेष—श्री लालचन्द्र ने लिखा था ।

८२६८. पंच परमेष्ठी पूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ७ । आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२८/६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८२६९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३३ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

८३००. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इन्च । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर में नगराज जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

८३०१. प्रति स० ४ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७८/३०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८३०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । आ० ११×४ इन्च । ले०कालसं०—१८५५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६-३१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८३०३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

८३०४. प्रतिसं० ७। पत्र सं० ३४। आ० ९$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

८३०५. प्रतिसं० ८। पत्रसं० १५। आ० १२×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। लेoकाल सं०-१९३५ फागुण सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजी (बूंदी)।

विशेष—ईसरदावासी हीरालाल भांवसा ने लिखवाया था।

८३०६. पञ्च परमेष्ठी पूजा—डालूराम। पत्रस० ४०। आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल स० १८९२ मंगसिर बुदी ६। लेoकाल सं० १९४८ कार्तिक बुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर टोडारायसिंह (टोंक)।

८३०७. प्रतिसं० २। पत्रस० ३९। आ० ९×६ इञ्च। लेoकाल स० १८८१ आसोज बुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मंदिर मालपुरा (टोंक)।

८३०८. प्रतिसं० ३। पत्रस० ३०। आ० १२$\frac{3}{4}$×८ इञ्च। लेoकाल स० १९९१ आषाढ़ सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ४८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८३०९. प्रतिसं० ४। पत्र स० २२। आ० १४×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। लेoकाल सं० १९९१। पूर्ण। वेष्टन स० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा।

८३१०. प्रति सं० ५। पत्रस० ४७। आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। लेoकाल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २५४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा)।

८३११ प्रतिसं० ६। पत्र सं० ४१। आ० ८$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। लेoकाल स० १८७९ श्रावण बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)।

विशेष—मादवा मे प्रतिलिपि हुई थी।

८३१२. पंच मंगल पूजा ×। पत्र सं० ३४। आ० ११×११$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। लेoकाल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २८४-१११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८३१३. पंच परमेष्ठी पूजा—बुधजन। पत्र सं० १९। आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

८३१४. पंच परमेष्ठी पूजा—×। पत्र सं० १३। आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल सं०—१८९९। पूर्ण। वेष्टनसं० ३८५-१४४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८३१५. पंच परमेष्ठी पूजा ×। पत्रस० १८। आ० ११×५ इञ्च। विषय-पूजा। भाषा—संस्कृत। र० काल ×। लेoकाल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३९५-१४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८३१६. पंच परमेष्ठी पूजा × । पत्रसं० ४० । भाषा-संस्कृत । र०काल × । ले० काल सं० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—कुंभावती नगरी मे प्रतिलिपि की गई थी ।

८३१७. पंच परमेष्ठी पूजा × । पत्रस० २५ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । ले०काल—१८५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३१८ पंचपरमेष्ठी पूजा × । पत्रस० २-५ आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६६५ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३५६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

नागराज लिखत । सवत् १६६५ वर्षे आषाढ़ मासे कृष्णपक्षे पचमीदिने गुरवासरे लिखत ।

८३१९. पंचपरमेष्ठी पूजा × । पत्र स० ४ । आ० १५×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

८३२० पंच परमेष्ठी पूजा × । पत्र स० २ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६-३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८३२१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६-३०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आचार्य सोमकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

८३२२. पंच परमेष्ठी पूजा × । पत्र स० ६६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—देवेन्द्र विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

८३२३. पंच परमेष्ठी पूजा । पत्रस० ३६ आ० ८$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

८३२४. पंच परमेष्ठी पूजा × । पत्रस० ३६ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

८३२५. पंच परमेष्ठी पूजा—× । पत्र स० ३५ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८७४ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२६. पंच परमेष्ठी पूजा × । पत्रस० ३६ । आ० ६×४$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल स० १८६८ मगसिर सुदी ८ । ले०काल सं०—१८८६ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२७ पंच परमेष्ठी पूजा × । पत्रसं० २८ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२८. पंच परमेष्ठी पूजा × । पत्र सं० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२९. पंच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रसं० १३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३१/८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

८३३०. पंच परमेष्ठी पूजा— × । पत्रसं० ३३ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपंथी मदिर दौसा ।

विशेष—प्रति चूहों ने खा रखी है ।

८३३१. पंच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रसं० ४२ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन बड़ा बीसपंथी मन्दिर दौसा ।

८३३२. पंच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रसं० ३७ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

८३३३ प्रतिसं० २ । पत्र स० ४२ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

८३३४. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ४४ । आ० ८½×६¾ इञ्च । ले०काल सं० १९५६ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८३३५. पंच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रसं० ५० । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८३३६. पंच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रसं० ३६ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८६२ । ले०काल स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन खंडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि की गई थी । एक प्रति और है जिसकी पत्र सं० २४ है ।

८३३७. पंच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रसं० ५२ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८६२ मार्गशीर्ष बुदी ८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

८३३८. पंच परमेष्ठी नमस्कार पूजा— × । पत्र सं० ७ । आ० ६३/४ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८३३९. पंचबालयती तीर्थंकर पूजा— × । पत्र सं० १० । आ० ८ × ४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८३४०. पंचमास चतुर्दशी व्रत पूजा— × । पत्र सं० ८ । आ० ६३/४ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

८३४१. पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११३/४ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८३४२. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६ । आ० ६३/४ × ४१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८३४३. पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन— × । पत्रसं० ५ । आ० १०३/४ × ५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० -१८, ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

८३४४. पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन— × । पत्रसं० ८ । आ० १०१/२ × ६१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

८३४५. पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन विधि— × पत्रसं० ४७ । आ० १० × ४१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × ले० काल सं० १८८६ सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—बृजलाल गोकलचन्द वैद्य ने पंचायती मन्दिर के लिए बालमुकुन्द से प्रतिलिपि करवाई थी ।

८३४६. पंचमी विधान— । पत्रसं० १३ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८३४७. पंचमी व्रत पूजा कल्याण सागर । पत्रसं० ६ । आ० १०१/२ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

अन्तिम पाठ—

तीर्थंकरा सकलल कहितकरास्ते ।

देवेन्द्र वृंदमहिता सहिता गुणौघै ।

वृंदावती नभशतां वशता शिवानी
कुर्वंतु शुद्ध वनितासुत विसजानि ॥१॥
जगति विदति कीर्ते रामकीर्तेषु शिष्यौ
जिनपतिपदभक्तौ हर्षनामा सुघरि ।
रचित उदयमुतेन कल्याण भूम्ने
विधिरूप भवनी सा मौक्ष सोख्य ददातु ॥२॥

८३४८. पंचमी व्रत पूजा—× । पत्रस० ३ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८३४९. पंचमी व्रतो पूजा—× । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन सं० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक)

८३५०. पंचमी व्रत पूजा—× । पत्रसं० ५ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी बूंदी ।

विशेष—महाराज श्री जगतसिंह विजयराज्ये कोटा वासी अमरचन्द्र ने सवाई माधोपुर में लिखा था ।

८३५१. पंचमी व्रत पूजा—× । पत्रस० ७ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८३५२ पचमी व्रत पूजा—× । पत्रस० ७ । ग्रा० ११½×५½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८३५३ पंचमी व्रत पूजा—× । पत्र स० ६ । ग्रा० १२½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८२५ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष चाटसू मे डूंगरसी कासलीवाल वासी फागी ने प्रतिलिपि की थी ।

८३५४. पंचमी व्रतोद्यापन – हर्ष कल्याण । पत्रस० ८ । ग्रा० १२½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पुजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

८३५५. पंचमी व्रतोद्यापन—× । पत्र सं० ८ । ग्रा० ११×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पुजा । र० काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३५६. पंचमी व्रतोद्यापन—× । पत्रस० ५ । आ० १०३/४×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय पूजा र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ७३७ । प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—महात्मा रिखलाल किशनगढ वाले ने अजमेर में प्रतिलिपि की थी ।

८३५७ पंचमी व्रतोद्यापन—× । पत्रस० ६ । आ० ८×४१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-**पूजा** । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर **राजमहल** (टोंक)

८३५८. पचमी व्रतोद्यापन—× । पत्रस० ७ । आ० १०१/२×५१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विषय** पूजा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टनस० १७/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी **मन्दिर करौली** ।

८३५९. पंचमी व्रतोद्यापन— × । पत्र स० १० । आ० ६×४१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विषय** पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती **मदिर करौली** ।

८३६०. पंचमी व्रतोद्यापन पूजा—**नरेन्द्रसेन** । पत्रस० ११ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक) ।

विशेष—ज्वाला मालिनी स्तोत्र, पूजा एवं आरती है । ज्वालामालिनी चन्द्रप्रभ की देवी है । पूजा तथा आरती नरसेन कृत भी है जिनका नाम मनुजेन्द्र सेन भी है ।

८३६१. पंचमी व्रतोद्यापन पूजा—**हर्षकीर्ति** । पत्रस० ७ । आ० ६१/२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८०८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

८३६२ प्रतिसं० २ । पत्र स० ६ । र० काल × । ले० काल स० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३६३. पंचमी व्रतोद्यापन विधि— × । पत्र स० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—**संस्कृत** । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८७४ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—एक प्रति और है ।

८३६४. पंचमेरु पूजा—**शुभचन्द्र** । पत्रस० १४ । आ० १२१/२×७१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत । **विषय**-पूजा । र० काल × ले० काल स० १६१४ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । **वेष्टनस० १३६ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष नधीणापुरा वासी बसतलाल ने लिखी थी ।

८३६५. पंचमेरू पूजा—**पं० गंगादास** । पत्र स० १३ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा—**संस्कृत** । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० **जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी** ।

८३६६. पंचमेरु पूजा—म० रत्नचंद । पत्र स० ५ । आ० १२×५' इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८६० पौष सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष – सवाई माधोपुर में जगतसिंह के राज्य मे लिखा गया था ।

८३६७. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ५ । आ० ११½×६½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८३६८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५ । आ० १२×५ इन्च । ले०काल सं० १८३८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८३६९. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ६ । ले०काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—दोनो ओर के पुठ्ठे सचित्र हैं ।

८३७०. पंचमेरु पूजा-× । पत्रस० २ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३७१. पंचमेरु पूजा-× । पत्र स० २–६ । आ० ८×४ इन्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर दूनी (टोंक) ।

८३७२. पंचमेरु पूजा– टेकचन्द । पत्रस० ७ । आ० ११½×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

८३७३ पंचमेरु पूजा—डालूराम । पत्र स० २४ । आ० ११×६ इन्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय–पूजा । र०काल स० १८७६ । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६-८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८३७४ पंचमेरु पूजा—द्यानतराय । पत्रस० ३ । आ० ७½×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय -पूजा । र०काल × । ले० काल १९४२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८३७५. पंचमेरु पूजा—भूधरदास । पत्रस० २-५ । आ० ८½×४ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२ १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर दूनी (टोंक) ।

८३७६. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३७७. पंचमेरु पूजा—सुखानंद । पत्र स० १६ । आ० १०½×७ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९३२ कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—श्री रमिकलाल जी ग्ररूपगढ वाले ने स्यौबक्स से प्रतिलिपि करवायी।

८३७८. पंचमेरु पूजा—× । पत्र स० ३६ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल १८७७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

८३७९. पंचमेरु पूजा—× । पत्रसं० ३३ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९७१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

विशेष—मोनीलाल मौंसा जयपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

८३८०. पञ्चमेरु पूजा—× । पत्रस० ३९ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८३८१. पञ्चमेरु पूजा विधान—× । पत्र स० ४४ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-मस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

८३८२. पञ्चमेरु पूजा विधान—टेकचन्द । पत्रस० ५६ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९५४ । पूर्ण । वेष्टनस० ५७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८३८३. पंचमेरु मंडल विधान—× । पत्रसं० ४५ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

८३८४. पंचमेरु तथा नन्दीश्वर द्वीपा पूजा—थानमल । पत्र स० ११ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८३८५. पञ्चामृताभिषेक—× । पत्रस० ६ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८७० । पूर्ण । वेष्टन सं० ९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)।

विशेष—प० शिवजीराम ने महेश्वर मे प्रतिलिपि की थी।

८३८६. पद्मावती देव कल्प मंडल पूजा-इन्द्रनन्दि । पत्रसं० १६ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

८३८७. पद्मावती पटल—× । पत्रसं० ३२ । ग्रा० ७$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—गुटका आकार मे है।

८३८८. पद्मावती पूजा—टीपरा। पत्र सं० ३७। आ० ६×५½ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १७४६। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१०-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

८३८९. पद्मावती पूजा—×। पत्रसं० २। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १८६७। पूर्ण। वेष्टनसं० १५२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

८३९० पद्मावती पूजा—×। पत्र सं० २६। आ० ८¾×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३७३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

८३९१. पद्मावती पूजा—×। पत्रस० २२। आ० ६¾×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०६३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८३९२. पद्मावती पूजा—×। पत्रस० २२। आ० ८½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—जैनेतर पूजा है।

८३९३. पद्मावती पूजा—×। पत्रस० १४। आ० १३½×८½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १६५८। पूर्ण। वेष्टन स० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

८३९४. पद्मावती पूजा—×। पत्रसं० २६। आ० ७½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—बांछागीत (हिन्दी) और है।

८३९५. पद्मावती पूजा विधान—×। पत्रसं० २२। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८३९६. पद्मावती पूजा स्तोत्र—×। पत्र स० ६। आ० १०½×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८३९७. पद्मावती मंडल पूजा—× पत्रसं० १३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत, विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३६७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८३९८. पद्मावती व्रत उद्यापन—× । पत्रसं० ७४-९५ । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४१३-१५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८३९९. पल्य विचार— × । पत्र सं० १ । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४००. पल्य विधान—× । पत्र स० ९ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८४०१. पल्य विधान—× । पत्र स० ६ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४०२. पल्य विधान पूजा—विद्याभूषण । पत्रस० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

८४०३. पल्यविधान पूजा—× । पत्रस० ७ । आ० ११$\frac{3}{4}$×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन स० १३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८४०४. पल्य विधान पूजा— × । पत्रस० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४०५. पल्य विधान पूजा—× । पत्रस० ८ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८६० आश्विन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १५५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

८४०६. पल्य विधान पूजा—भ० रत्ननंदि । पत्रस० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८५० । पूर्ण । वेष्टनस० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४०७. प्रति स० २ । पत्र स० १५ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९८, ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८४०८. प्रति सं० ३ । पत्रस० ११ । आ० ११×४ इंच । ले०काल स० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७६, ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—स० १६२७ वर्षे भादवा बुदि सातमिदिनो सागवाडा शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये सातिम बृहस्पतिवारे श्री मूल सघे आचार्य श्री यशकीर्ति आचार्य श्री गुणचन्द्र ब्र० पूजा स्वहस्तेन लिखित ।

८४०९. प्रतिसं० ४। पत्रसं० ७ । आ० ९×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल स० १८५९ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण। वेष्टन स० ५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

८४१०. प्रतिसं० ५। पत्रसं० ११ । आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल सं० १६४० श्रावण सुदी ११ । पूर्ण। वेष्टन स० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—मालपुरा मे आचार्य श्री गुणचन्द्र ने पं० जयचद से लिखया था।

८४११. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ११ । आ० १०×४ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० २२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

८४१२. पल्य विधान—शुभचन्द्र। पत्र स० ५ । आ० १०¾×४¾ इंच। भाषा सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल × । पूर्ण। वेस्टन सं० ४६०। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८४१३. प्रतिसं० २ । पत्र स० ७ । आ० ११×५ इञ्च। ले० काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण। वेष्टन स० ६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष पडित जीव धर ने प्रतिलिपि की थी।

८४१४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ८ । आ० १०½×४½ इच। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन स० ३५५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

८४१५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ७ । आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ६२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८४१६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ११ । आ० १०×५½ इञ्च। ले० काल स० १६५९ । पूर्ण। वेष्टन स० २०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रत्येक पत्र मे ११ पक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ४२ अक्षर हैं। उद्यापन विधि भी दी हुई है।

८४१७. प्रति सं० ६ । पत्र स० १० । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० २७४ । प्राप्ति-स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

८४१८. प्रति सं० ७ । पत्रसं० ६ । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० २७७ ३४४ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—गुरु श्री अभयचन्द्र शिष्य शुभ भवतु। दवे महाराबजी लिखित।

८४१९. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० ६ । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण। वेष्टनसं० २७८/३४५ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रथम पत्र पर एक चित्र है। जिसमे दो स्त्रियां एव एक पुरुष खडा है। आगे वाली स्त्री के हाथ में एक कमल है। मेवाडी पगडी लगाये पुरुष सामने खडा है। वह भी एक हाथ को ऊंचे उठाये हुए है। ओढनियो के छोर लबे तीखे निकले हुए हैं।

८४२१. पल्य विधान व्रतोद्यापन एवं कथा—श्रुतसागर। पत्र स० १८८ । ग्रा० ८३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा एवं कथा । र० काल × । ले० काल सवत् १८८० । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)।

८४२१. पल्य व्रत पूजा—× । पत्रसं० २ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर भण्डार ।

८४२२. पञ्चपरवी पूजा—वेणु ब्रह्मचारी। पत्र स० ७ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रारम्भ में ज्ञान बत्तीसी ग्रादि हैं ।

दोज पचमी ग्रष्टमी एकादशी तथा चतुर्दशी इन पांच पर्वों की पूजा है ।

८४२३. पार्श्वनाथ पूजा—देवेन्द्रकीर्ति। पत्र स० १५ । ग्रा० ८×६३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६२८ । पूर्ण । वेष्टन स०११४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष—ग्रमरावती में प्रतिलिपि हुई थी ।

८४२४. पार्श्वनाथ पूजा—वृदांवन। पत्रसं० ३ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

८४२५. प्रति सं० २। पत्र स० ४ । ग्रा० ८३/४×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

८४२६ पिंडविशुद्धि प्रकरण—× । पत्रस० ५ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय विधान । र०काल × । ले०काल × ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ५०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

८४२७. पिण्डविशुद्धि प्रकरण—×। पत्रस० ८ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६०१ ग्रषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प० सप्तिकलश ने महिमनगर मे प्रतिलिपि की थी ।

८४२८. पुण्याहवाचन—ग्राशाधर। पत्र स० ७ । ग्रा० ६३/४×७ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८४२९. पुण्याहवाचन—× । पत्रस० ६ । ग्रा० १०×६ इञ्च । **भाषा**—संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४७-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८४३०. पुण्याहवाचन—× । पत्रस० ८ । ग्रा० १२½×६ इंच । भाषा-सस्कृत ।विषय—विधान । र०काल × । लेकाल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४३१. पुण्याहवाचन—×। पत्रस० ८ । ग्रा० ८½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल सं० १८६४ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० × । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८४३२. पुण्याह वाचन— ×। पत्रस० ७ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प० केशरीसिंह ने शिष्य ने प० देवालाल के लिए प्रतिलिपि की थी।

८४३३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १७७३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८४३४. पुण्याहवाचन—× । पत्र स० २८ । ग्रा० ६½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६५ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८४३५. पुरंदर व्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्रसं० २ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल स० १८२७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोंक)

विशेष—नमीचदजी के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

८४३६ पुरन्दर व्रतोद्यापन—× । पत्रस० ३ । ग्रा० १०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६१३ । पूर्ण । वेष्टनस० १८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८४३७ पुण्यमाला प्रकरण—× । पत्रस० २२ । ग्रा० १२×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४२१/२५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—केशवराज की पुस्तक है । प्रति प्राचीन है ।

८४३८ पुष्पांजलि जयमाल—×। पत्रस० ७ । ग्रा० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८४३९. पुष्पाञ्जलि पूजा—द्यानतराय । पत्र सं० ७ । ग्रा० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८४४०. **पुष्पाञ्जलि पूजा—भ० महीचन्द** । पत्र स० ५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८४४१. **पुष्पाञ्जलि पूजा—भ० रत्नचन्द्र** । पत्रस० १७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८५८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पट्टण सहर मध्ये लिपिकृतं ।

८४४२. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

८४४३. **पुष्पाञ्जलि पूजा**— × । पत्र स० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । **विषय** पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८४४४. **पुष्पाञ्जलि पूजा**— × । पत्रसं० ६ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

८४४५. **पुष्पाञ्जलि व्रतोद्यापन—गंगादास** । पत्रस० ५ । आ० १२×७ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८४४६. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ६ । आ० १०½×५ **इञ्च** । **ले०काल** सं० १७५३ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—इति भट्टारक श्री धर्मचन्द्र शिष्य प० गगादास कृत श्री पुष्पाजलि व्रतोद्यापन सपूर्णं ।

सवत् १७५३ वर्षे शाके १६१८ प्रवर्तमाने आश्विन मासे कृष्णपक्षे दशमी तिथौ शनिवासरे लिखिता प्रतिरिय । सघवी हसराज मथुरादास पठनार्थ । श्री अमदाबाद मध्ये लिखितं । प० कुशल सागर गणि ।

८४४७. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १३ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल स० १८७६ चैत बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ मालपुरा (टोक)

८४४८. **प्रति सं० ४** । पत्रस० १० । आ० ६×४ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८४४९. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १६ । आ० ८×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन स०** ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

८४५०. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० ५ । आ० १२×५½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८४५१. पुष्पांजलि व्रतोद्यापन टीका—× । पत्रसं० ४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६६१ सावन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४५२. पूजाष्टक—ज्ञानभूषण । पत्रसं० ५४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १५२८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४४८/३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पुष्पिका—

इति भट्टारक श्री भुवनकीर्ति शिष्य मुनि ज्ञानभूषण विरचितायां स्वकृताष्टक दशक टीकायां विद्वज्जन वल्लभा संज्ञायां नदीश्वर द्वीप जिनालयार्चनवर्णणीय नामा दशमोधिकारः ।

प्रशस्ति -

श्रीमद् विक्रमभूपराज्य समयातीते । सवत् १५२८ वसुद्वीन्द्रिय क्षोणी संमितहायने गिरिपुरे नाभेय-चैत्यालये । अरित श्री भुवनादिकीर्ति मुनियस्तस्यांगिर । सेवितास्थो ज्ञानेविभूसणामुनिना टीका शुभेय कृता ।

८४५३. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३० । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४४६/२८६ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है एव अन्तिम पत्र नहीं है ।

८४५४. पूजाष्टक—हरखचन्द । पत्रस० ३ । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८४५५. पूजाष्टक · × । पत्र स० ४ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष— आदिनाथ पूजाष्टक, ऋषभदेव पूजा तथा भूधरदास कृत गुरु वीनती है ।

८४५६. पूजा पाठ—× । पत्र स० ४ । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४ ४५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैनसभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८४५७. पूजापाठ संग्रह × । पत्रस० १४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४५८. पूजापाठ संग्रह—× । पत्रसं० ७० । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—दशलक्षण पूजा तथा षोडषकारण पूजा भी हैं ।

८४५९. पूजापाठ संग्रह—× । पत्र सं० ५३ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२/८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०) ।

८४६०. पूजापाठ संग्रह— × । पत्रसं० २१६ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मंदिर नैणवा ।

विशेष—सामान्य नित्य नैमित्तिक पूजाओं एवं चौबीसी तीर्थंकर पूजाओं का संग्रह है ।

८४६१. पूजापाठ संग्रह । पत्रसं० २-५० । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा एवं स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष - नवग्रह स्तोत्र एवं अन्य पाठ है ।

८४६२. पूजापाठ संग्रह— × । पत्र सं० ७० । आ० ६½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६०-१४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—विभिन्न पूजाएं एवं स्तोत्र है ।

८४६३. पूजापाठ संग्रह— × । पत्रसं० ३७ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २३२-९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—जिन सहस्रनाम (जिनसेन) सरस्वती पूजा (ब्र० जिनदास) एवं सामान्य पूजाओं का संग्रह है ।

८४६४. पूजापाठ संग्रह— × । पत्रसं० १८ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले० काल सं० १९६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८४६५. पूजापाठ संग्रह— × । पत्रसं० ४८ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७-५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—२७ पूजा पाठों का संग्रह है ।

८४६६. पूजापाठ संग्रह— × । पत्र सं० १०६ । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३०-१२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका तथा मंत्र ऋद्धि आदि सहित हैं ।

८४६७. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्र सं० १३२ । आ० ८½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२६-१२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—विभिन्न प्रकार के स्तोत्रों एवं पूजा पाठो का संग्रह है ।

८४६८. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० १६ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० २०७-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८४६९. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्र स० ७० । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३०-१६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८४७०. पूजा पाठ संग्रह । पत्रसं० ५६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३६-१६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८४७१. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्र सं० १११ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५११ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८४७२. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रस० २३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह । र० काल × । ले०काल स० १९१५ फाल्गुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

८४७३. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रस० ५६ । आ० १३½×८½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९६७ पौष बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ११३ । प्राप्ति स्थान— जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष – भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा लिखाया गया है ।

८४७४. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्र स० ६० । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो का संग्रह है ।

८४७५. पूजा पाठ सग्रह— × । पत्रस० ६२ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

८४७६. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रस० ६ से ४८ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष —गुटका साइज है ।

८४७७. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रस० ३५ । आ० १३×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—निमित्त नैमित्तिक पुजाओं का संग्रह है ।

८४७८. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रसं० ५२ । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४७९. पूजा पाठ संग्रह—×। पत्र सं० १७२ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

८४८०. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रसं० ७२ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४८१. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्र स० १०६ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४८२. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्र सं० १०७ । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-संग्रह । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४८३. पूजा संग्रह— × । पत्रस० १४२ । ग्रा० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पुजा पाठ । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८४८४. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रसं० ६३ । ग्रा० ६½×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-पुजा । ले०काल सं० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बरसली कोटा ।

विशेष—दुलीचन्द के पठन थं बूदी नगर में लिखा गया है ।

८४८५. पूजा पाठ संग्रह × । पत्रसं० १५४ । ग्रा० ८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सामन्य पाठो का सग्रह है ।

८४८६. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्र स० ६५ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पुजा पाठ । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति जीर्ण है

८४८७. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रम० २२६ । ग्रा० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोट)

८४८८. पूजा संग्रह— × । पत्र स० ६ । ग्रा० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष—गुर्वावलि पूजा एव क्षेत्रपाल पूजा है ।

८४८९. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रसं० १०४ । ग्रा० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

८४६०. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्र सं०४६ । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

८४६१. पूजापाठ संग्रह—× । पत्रसं० ११ । आ०- × । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-संग्रह । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

८४६२. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्र सं० ३ से २०३ । आ० ७$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । विषय-पूजा पाठ। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४३-२८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

८४६३. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्र सं० १४६ । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । विषय—संग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १३० (ब) र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—निम्न पाठ है—

१. महाशान्तिक विधि—× । संस्कृत । ले०काल सं० १५२३ वैशाख बुदी ६ । पत्रसं० १-८१ नेनवा पत्तने सुरत्राण अलाउद्दीन राज्य प्रवर्तमाने ।

२. गणधर वलय पूजा–× । पूर्ण । ले०काल सं० १५२३ पत्रसं० ८२–१४० । ६८ से ११२ तक पत्र खाली है ।

३. माला रोहण— × ।	संस्कृत ।	पत्र १४१-१४३
४. कलकुण्ड पूजा— × ।	,, ।	पत्र १४४-१४५
५. अष्टाह्निका पूजा-× ।	,, ।	पत्र १४६–१४७

८४६४. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० २४४ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । विषय संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८४६५. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्र सं० ७२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय—पूजापाठ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

८४६६. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० ५-६६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह । र०काल—× । ले०काल सं० १६५१ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

८४६७. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्र सं० ६०-१८१ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८४६८. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० १२७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६५८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नैणवा में प्रतिलिपि की गयी थी ।

८४९९. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० २१६ । ग्रा० ५३/४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय—पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

८५००. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्र सं० १२८ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान** · दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

८५०१. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रस० १३० । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

८५०२. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्र स० १३६ । ग्रा० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

८५०३. पूजा पाठ संग्रह – × । पत्रस० ४० । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी · विषय-सग्रह । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

८५०४. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रस० ७० । ग्रा० ६×५१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा

विशेष—सामान्य पूजा एव पाठो का सग्रह है ।

८५०५. पूजा पाठ सग्रह– × । पत्र स० ६१ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय– पूजा एव स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १६११ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

८५०६. पूजा पाठ संग्रह—× पत्रस० ६१ । ग्रा० १०×५१/२ इञ्च । भाषा हिन्दी-सस्कृत । विषय–पूजा पाठो का संग्रह । र० काल × । ले०काल स० १८७ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

८५०७. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रस० १८७ । ग्रा० ६×४१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय–पूजा पाठो का सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

८५०८. पूजा पाठ संग्रह—× पत्र स० १४४ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोट्या का नैणवा ।

८५०९. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्र स० २-२-४ । ग्रा० १८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय सग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का सग्रह है ।

८५१०. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० ८४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-संग्रह । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—पंच स्तोत्र, पूजा, तत्वार्थ सूत्र, पंच मंगल आदि पाठों का सग्रह है ।

८५११. पूजापाठ संग्रह—× । पत्रसं० ५१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पाठ संग्रह । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

८५१२. पूजापाठ संग्रह—× । पत्रसं० ३४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र आदि का सग्रह । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

८५१३. पूजापाठ संग्रह—× । पत्रसं० २-३२ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८५१४. पूजापाठ संग्रह—× । पत्र स० ७० । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—बूंदी मे प्रतिलिपि हुई थी । निम्न पाठ एव पूजाये है—

मगलपाठ, सिद्धपूजा, सोलहकारण पूजा, भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र सहस्रनाम एव स्वयभू स्तोत्र ।

८५१५. पूजापाठ संग्रह—× । पत्रसं० २७८ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनस० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८५१६. पूजापाठ सग्रह—× । पत्र स० ८० । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा सस्कृत-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा तथा स्तोत्र है ।

८५१७ पूजापाठ संग्रह—× । पत्रस० ५६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष – नित्य पूजापाठ एव तत्त्वार्थ सूत्र है ।

८५१८. पूजापाठ सग्रह—× । पत्र स० ४७ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १८५७ जेठ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह हैं ।

८५१९. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० ६-६६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है।

८५२०. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रस० ५१ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—२५ पूजा पाठो का संग्रह हैं।

८५२१. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रस० ६६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १६१८ जेठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—शिवजीलाल जी ने लिखवाया था ।

८५२२. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रस० ११० । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष--पूजा एव स्तोत्र आदि पाठो का सग्रह है ।

८५२३. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रस० ३५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टनस० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

८५२४. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रस० १ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय पूजा । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का एक एक का अलग अलग सग्रह है । गुटका आकार मे ८ पुस्तके है-
चन्द्रप्रभ पूजा, निर्वाणक्षेत्र पूजा, गुरु पूजा, भक्तामर स्तोत्र, चतुर्विशति पूजा, (रामचन्द्र) नित्य नियम पूजा एव भक्तामर स्तोत्र ।

८५२५. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्र स० ११६ । आ० ६ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय सग्रह । ले० काल स० १८७८ बैसाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

१.	पच मगल	—	रूपचन्द ।	पत्र १-१६ तक
२.	साधु वन्दना	—	बनारसीदास ।	
३.	परम ज्योति	—	,,	
४.	विषापहार	—	अचलकीर्ति	
५.	भक्तामर स्तोत्र	—	मानतु ग	
६.	ऋषि मडल स्तोत्र	—	×	
७.	रामचन्द्र स्तोत्र	—	×	पत्र स० १६ । सस्कृत
८.	चौसठ योगिनी स्तोत्र	—	×	सस्कृत २०
९.	क्षेत्रपाल पूजा	—	शान्तिदास ।	,, २१
१०.	क्षेत्रपाल स्तोत्र	—	× ।	,, २२

११. न्हवरण — × । संस्कृत । २३
१२. क्षेत्रपाल — मुनि शुभचन्द्र । हिन्दी पद्य । २४

क्षेत्रपाल की बिनती लिख्यते :—

जैन को उद्योत भैरु समकति धारी ।
सांति मूरति भव्य जन सुखकारी ।। जैन० ।। टेर
घुघरियालो केस सिंदूर तेल छवि को ।
मोतिया की माला भावी उग्यो भानु रवि को ।।१।।

सिर पर मुकट कुण्डल काना सोहती ।
कठी सोहे घुगघुगी हीय हार मोहती ।।२।।

मुख सोहे दाता नै तंबोल मुख चुवतौ ।
नैरणा रेखा काजल की तिलक सिर सोहतो ।।३।।

बाजूबध भौ रख्या प्रौच्यानै पौंचि लाल की ।
नवग्रह आंगुल्या नै पकड्या डोरि स्वान की ।।४।।

कटि परि घूघरा तन्यौं लाल पाट कौ ।
जग घनघोर वाले रमे झमि थाट कौ ।।५।।

पहरि कडि मेखला पग तलि पावडी ।
चटक मटक वाजै खु टया मोहै भावडा ।।६।।

छडी लिया हाथ में देहुरा के वारणै ।
पूजा करै नरव रखवाली कै कारणै ।।७।।
नृत्य करै देहुरा कै वारैणकज लाप कै ।
तान तौडै प्रभु आनै जिन गुरण बगाय कै ।।८।।
पहली क्षेत्रपाल पूजै तैल कावी वाकुला ।
गुगल तिलोट गुल आठौ द्रव्य मोकला ।।९।।
रोग सोग लाप धाड़ि मरी कौं भगाय दे ।
वालकां की रक्षा करै अन धन पूत दे ।।१०।।
गीत पहली गाय जौ रझाय क्षेत्रपाल कौ ।
मुनि सुभचन्द गायो गीत भैरुलाल कौ ।।११।।

१३. चतुर्विंशति पूजाष्टक — × । संस्कृत । पत्र सं० २५
१४. वंदेतान जयमाल — माघनदी । संस्कृत । पत्र सं० २६
१५. मुनिश्वरों की जयमाल — ब्र० जिरणदास । हिन्दी । पत्र स० ३२
१६. दश लक्षरण पूजा — × । संस्कृत ।
१७. सोलहकाररण पूजा — × । ,,
१८. सिद्ध पूजा — × । ,
१९. पद — बनारसीदास । हिन्दी । पत्र सं० ३७

श्री चिंतामणि स्वामी सांचा साहिब मेरा ।
सोक हरै तिहुं लोक का उठ लीजत नाम सवेरा ।।

२०. रत्नत्रय विधान -- × । संस्कृत पत्र सं० ४१
२१. लक्ष्मी स्तोत्र — पद्मप्रभदेव । ,, ,, ४३
२२. पूजाष्टक — लोहट । हिन्दी ,, ४६
२३. पचमेरु पूजा — भूधरदास । ,, ,, ५०
२४. सरस्वती पूजा — ज्ञान भूषण । ,, ,, ५५

विशेष—पं० शिवलाल ने वैसाख सुदी ६ रविवार स० १८७८ मे मालपुरा नगर में भौसों के बास के मन्दिर मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२५. तत्वार्थसूत्र — उमार स्वामी । सस्कृत । ,, ७३
२६. सहस्रनाम — आशाधर । ,, । ,, ७३
२७. विनती — रूपचन्द । ,, । ,, ७४

जय जय जिन देवन के देवा,
सुरनर सकल करै तुम सेवा ।

२८. पद — रूपचन्द । हिन्दी । ,, ७५

अब मैं जिनवर दरसण पायो ।

२९. विनती — कनककीर्त्ति ,, । ,, ७५

बदौ श्री जिनराय मन वच काय करेजी ।

३०, विनती — रायचन्द । हिन्दो । ,,

आज दिवस धनि लेखै लेख्या,
श्री जिनराज भला मुख पेख्या ।

३१. विनती — ब्र० जिनदास । हिन्दी । ,, ७६

प्रारम्भ—स्वामी तू आदि जिरणद करौ विनती आप तणी ।
अन्त – श्री सकलकीरति गुरु वदि जिनवर वीनती ।
ते भणौ ए ब्रह्म भणौ जिनदास मुक्ति वहांगण ते वरै ।।

३२. निर्वाण काण्डभाषा — भैया भगवतीदास । हिन्दी । पत्र सं० ७९

विशेष—प० शिवलाल जती वाकलीवाल शिष्य आचार्य माणिकचन्द ने मालपुरा में भौंसे के वास के मन्दिर मे सवाई जयसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि की थी ।

३३ आरती — द्यानतराय । हिन्दी । पत्र सं० ७९
३४. पचमबधावा — × । ,, । ,, ८०

पञ्च बधावा म्हा के जीव अति भाया तो ।
भवं हो अरिहंत सिद्ध जी की भावना जी ।।

३५. विनती — कुमुदचन्द्र । हिन्दी । पत्र सं० ८१

प्रारम्भ—दुनियां भामर भोल बिलूधी ।
भगवत भगति नहीं सूधी ।।

अन्तिम—नहीं एक की हुई घणा की भरतारी,
नारी कहत कुमदचन्द कौण संगि जलसी घण पुरिषा नारी ॥

३६.	पचमगति वेलि	— हर्षकीर्ति ।	हिन्दी । पत्र सं० ८३ र० काल स० १६६३
३७.	नींदडली	— किशोर ।	हिन्दी । पत्र सं० ८६
३८.	विनती	— भूधरदास ।	,, ,, ८७
	हमारी करुणा लै जिनराज हमारी ।		
३९.	भक्तामर भाषा	— हेमराज	हिन्दी । पत्र सं० ८८
४०.	वीनती	— रामदास	,, ,, ९१
४१.	बानती	— अजैराज	,, ,, ९५
४२.	जोगीरासा	— जिणदास	,, ,, ९६
४३.	पद	— अजैराज, बनारसीदास, एव मनरथ	,, ,,
४४.	लूहरी	— सुन्दर ।	,, ,, ९९
	सहेल्यो हे यो ससार असार ।		
४५.	रविवार कथा	— भाऊ ।	,, ,, १०९
४६.	शनिश्चरदेव की कथा	— × ।	हिन्दी गद्य । पत्र सं० ११२
४७	पार्श्वनाथाष्टक	— विश्वभूषण ।	सस्कृत । ,, ११३

४८. खण्डेलवालो के गोत्र । ८४ ।

४९. बघेर वालो के गोत्र —५२

५०. अग्रवालो के गोत्र—१८

८५२६. पूजापाठ संग्रह—× । पत्र सं० ९० । आ० १२× ५ इन्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा । ले० काल १९४३ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बघेरवालों का आवा (उणियारा)

विशेष—निमित्त नैमित्तिक पूजा पाठों का सग्रह है । लोचनपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८५२७. पूजापाठ सग्रह—× । पत्रस० ६३ । आ० ९×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । **विषय**-पजा पाठ । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनस० ८६/९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—पच मगल, देवपूजा वृहद् एवं सिद्ध पूजा आदि का सग्रह है ।

८५२८. पूजापाठ संग्रह—× । पत्र सं० ५१ । आ० १२×८ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

८५२९. पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० ३-४१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८५३०. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र सं० ८८ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

८५३१. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रस० ७६ । ग्रा० १२ × ८ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

८५३२. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रस० १०५ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८५३३. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रसं० ४३ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—नित्य उपयोग मे ग्राने वाले पूजा पाठो संग्रह है ।

८५३४. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र स० १३३४ । ग्रा० १२ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर लश्कर. जयपुर ।

विशेष—इसमे कुल १५२ पूजा एवं गाठो सग्रह है । प्रारम्भ में सूची दी हुई है । कही २ बीच मे से कुछ पाठ बाहर निकले हुए है । नित्य नैमित्तिक पूजाग्रो के ग्रतिरिक्त व्रत पूजा, व्रतोद्यापन, पच स्तोत्र, व्रत कथा ग्रादि का संग्रह है । काष्ठासघ के भी निम्न पाठ है —

ग्रनन्त पूजा : श्री भूषण काष्ठा सघीकृत, प्रतिष्ठाकल्प काष्ठा सघ का, प्रतिष्ठा तिलक काष्ठा सघका, सकलीकरण विधि काष्ठा सघ की, ध्वजा रोपण काष्ठा सघ, होम विधान काष्ठा सघ का, वृहद् ध्वजा पोपग काष्ठा सघ का ।

उमा स्वामी कृत पूजा प्रकरण भी दिया है । पत्रस० ३१२ पर १ पत्र है जिसमे पूजा किम ग्रोर मुंह करके ग्रौर कैसे करना चाहिए इस पर प्रकाश डाला गया है । यह ग्रंथ लकडी की रंगीन पेटी मे विराजमान है ।

लकडी के सुन्दर दर्शनीय पुट्ठे, जिनमे सुन्दर वेल बूंटे तथो पार्श्वनाथ व सरस्वती चित्र है इसी सदूक में है । ग्रंथ के लगे हुए सहित ५ पुट्ठे हैं । २ कागज के सचित्र पुट्ठे भी दर्शनीय है ।

८५३५. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्रस० २७ । ग्रा० ६ × ६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाग्रो का सग्रह है ।

८५३६. **पूजा पाठ सग्रह**—× । पत्र स० ४४ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पजा पाठ । र० काल × । ले० काल स० १६११ । वेष्टन सं० ६०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८५३७. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रस० २-४६ । आ० ५½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** ३७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

८५३८. पूजा पाठ तथा कथा संग्रह—×। पत्र स० २६६ । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष – विविध कथाये पूजा एव स्तोत्र आदि है ।

८५३९. पूजा पाठ विधान— × । पत्रस० १६ । भाषा-संस्कृत । **विषय**-पूजा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८३, ३७५ । **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

८५४०. पूजा प्रकरण -- × । पत्रस० १३ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८६ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

विशेष—गुरुजी गुमानीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८५४१. पूज्य पूजक वर्णन— × । पत्रस० ६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा- हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टनस० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८५४२. पूजा विधान—पं० आशाधर । पत्रस० २५ । भाषा-सस्कृत । विषय – पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९/३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

८५४३. प्रति सं० २ । पत्र स० ६५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८५४४. पूजा विधान—× । पत्रस० ६ । आ० ९½ × ६ इच । भाषा–हिन्दी गद्य । **विषय**–विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष- षट कर्मोपदेश रत्नमाला मे से है ।

८५४५. पूजाविधान—× । पत्रस० ५६ । आ. ८¾ × ६ इच । भाषा–सस्कृत । विषय- विधान । र०काल × । ले.काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८५४६. पूजासार—× । पत्रस० ८१ । आ० १२½ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । **ले०काल** स० १९६३ बैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

८५४७ पूजासार— × । पत्र स० ९० । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । । विषय–पूजा । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूंदी ।

८५४८. पूजासार समुच्चय—× । पत्र सं० ६३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६०७ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८५४६. पूजासारसमुच्चय—× । पत्र सं० १०१ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८६१ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष— मथुरा में प्रतिलिपि हुई थी । संग्रह ग्रंथ है ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री विद्याविद्यानुवादोपासकाध्ययन जिनसंहिता चरणानुयोगाकाय पूजासार समुच्चय समाप्तम् ।

८५५०. पूजा संग्रह—द्यानतराय । पत्रस० १४ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—निम्न पूजाओ का सग्रह है—
दशलक्षण व्रत पूजा, अनन्त व्रत पूजा, रत्नत्रय व्रत पूजा, सोलहकारण पूजा ।

८५५१. पूजा संग्रह—द्यानतराय । पत्र स० ११ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८५५२. पूजा सग्रह—× । पत्रस० १८ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८० सावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८५५३. पूजा संग्रह—× । पत्रस० ३६ । आ० ६½×८½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६४७ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पडित महीपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

८५५४. पूजा सग्रह— × । पत्र स० १० । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सोलह कारण, पच मेरु, अष्टाह्निका आदि पूजाओ का सग्रह है ।

८५८५ पूजा संग्रह— × । पत्र स० १५ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६६१ । पूर्ण । वेष्टनस० ५५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—निम्न पूजाओं का सग्रह है—

अनन्त व्रत पूजा	सेवाराम	हिन्दी

दशलक्षण पूजा	द्यानतराय	,,
पंचमेरु पूजा	भूधरदास	,,
रत्नत्रय पूजा	द्यानतराय	,,
अष्टाह्निका पूजा	द्यानतराय	,,
शांतिपाठ	—	,,

८५५६. पूजा संग्रह—× । पत्रसं० १० । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९५३ । पूर्ण । वे० सं० ६५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८५५७. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६ । आ० ४½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८५५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । आ० १०½×७ इञ्च । ले० काल सं० १९६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष – द्यानतराय कृत दशलक्षण पूजा तथा भूधरदास कृत पञ्च मेरू पूजा है ।

८५५९ पूजा संग्रह—× । पत्र सं० ३६-६३ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओ का संग्रह है ।

८५६०. पूजा संग्रह—शांतिदास । पत्रसं० २-७ । आ० ६×४½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल ।अपूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—अजितनाथ, सभवनाथ की पूजाए पूर्ण एव वृषभनाथ एव अभिनन्दननाथ की पूजायें अपूर्ण हैं ।

८५६१. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० ३४-१४६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

८५६२ पूजा संग्रह—× । पत्र सं० १४३ । आ० ७½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९२० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजाओं का संग्रह है ।

८५६३. पूजा संग्रह— × । पत्रस० ५६ । आ० ११½×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

८५६४. पूजा संग्रह—× । पत्र स० ५५ । ग्रा० १२×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—वृन्दावन कृत चौबीसी तीर्थंकर पूजा एव सम्मेद शिखर पूजा का सग्रह है ।

८५६५. पूजा संग्रह—× । पत्र स० २७ । ग्रा० ११×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानाजी कामा ।

८५६६. पूजा संग्रह— × । पत्र सं २७६ । ग्रा० १२×७ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष—नैमित्तिक पूजाग्रो का सग्रह है ।

८५६७. पूजा सग्रह— × । पत्र स० १२६ । ग्रा० १३×५ इन्च । भाषा—हिन्दी-पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पूजाग्रो का सग्रह है । जो विभिन्न वेष्ठनो मे बधे है ।

सुगन्ध दशमी पूजा, रत्नत्रयव्रत पूजा, सम्मेदशिखर पूजा, (२ प्रति) चौसठ ऋद्धि पूजा (२ प्रति) चौबीसतीर्थंकर पूजा–रामचन्द्र पत्र स० १४४ । निर्वाण क्षेत्र पूजा (३ प्रति) ग्रनन्तव्रत पूजा (८ प्रति) सिद्धचक्र पूजा ।

८५६८. पूजा सग्रह— × । पत्रस० × । ग्रा० ११½×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खं० पंचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पूजाग्रो का सग्रह है ।

श्रुतस्कध पूजा	सस्कृत	पत्र १३
पचकल्याणक पूजा	,	२२
,,	,,	२२
ऋषि मडल पूजा	,,	२५
रत्नत्रय उद्यापन	,,	१४
पूजा सार	,,	८३
कर्मध्वज पूजा	,,	१६-१७

८५६९. पूजा संग्रह— × । पत्रस० ७१ । ग्रा० ७½×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष—निम्न पूजाग्रो का सग्रह है ।

पच कल्याणक पूजा	सस्कृत	पत्र १३
रोहिणी व्रतोद्यापन पूजा	,,	१३

सार्द्ध द्वय द्वीप पूजा	,,	१५
सुगंध दशमी	,,	१५
रत्नत्रय व्रत पूजा	,,	१५

८५७०. पूजा संग्रह—×। पत्र सं० १४० । ग्रा० ८½ × ६½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत। **विषय**—पूजा र०काल × । ले० काल सं० १९६७ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १८० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन ख० पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि हुई थी ।

८५७१. प्रति सं० २ । पत्र स० १८० । ले०काल स० १९५३ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८५७२. पूजा संग्रह—× । पत्रस० ४२ । ग्रा० ९½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८९५ अगहन सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

८५७३. पूजा सग्रह—× । पत्रस० १७ । ग्रा० ६ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

८५७४. पूजा संग्रह—× । पत्र स० ८० । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदा (बूंदी) ।

विशेष—शातिपाठ, पार्श्वजिन पूजा, अनतव्रत पूजा, शांतिनाथ पूजा, पञ्चमेरु पूजा, क्षेत्रपाल पूजा एव चमत्कार की पूजा है ।

८५७५ पूजा सग्रह—× । पत्र सं० ४१ । ग्रा० ११×४½ इञ्च । भाषा- सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८५७६. पूजा संग्रह - × । पत्रस० २२ । ग्रा० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्रीमहावीर बूंदी ।

८५७७. पूजा सग्रह—× । पत्रस० ८ । ग्रा० १३×६ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८६० पौष सुदी १ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ (बूंदी) ।

विशेष—अक्षयनिधि पूजा सौख्य पूजा, णमो पैंतीसी पूजा है ।

८५७८. पूजा संग्रह—×। पत्र सं० ४७-१४८ । ग्रा० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ (बूंदी) ।

विशेष—तीस चौबीसी पूजा शुभचन्द्र एवं षोडषकारण पूजा सुमति सागर की है।

८५७६. पूजा संग्रह—× । पत्रसं० २४ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा ।

विशेष—नैणवा मे प्रतिलिपि की गयी थी । दशलक्षण पूजा, रत्नत्रय पूजा आदि का संग्रह है।

८५८० पूजा संग्रह—× । पत्र स० १७६ । आ० ६×४ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा ।

८५८१. पूजा संग्रह—× । पत्रस० ११-२२७ । आ० १३×७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

८५८२. पूजा सग्रह—× । पत्रसं० १०० । आ० ११¾×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—विविध पूजाओ का सग्रह है ।

८५८३. पूजा संग्रह—× । पत्र स० ५६ । आ० ५×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । **ले०काल** स० १८५४ वैसाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—उदैसागर के पठनार्थ चिम्मनलाल ने प्रतिलिपि की थी । पचपरमष्ठी पूजा यशोनदि कृत भी है।

८५८४. पूजा सग्रह—× । पत्र स० १८ । आ० १३×७¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९४२ आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—चुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

८५८५. पूजा सग्रह—× । पत्र स० ३-५७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—नित्य नैमितिक पूजाएं हैं ।

८५८५. पूजा संग्रह—× । पत्रस० ७६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०(ब) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—निम्न पूजाओ का सग्रह है ।

रत्नत्रय पूजा, दशलक्षण पूजा, पंचमेरु पूजा, पचपरमेष्ठी पूजा ।

८५८७. पूजा संग्रह—× । पत्रस० ३५ । आ० १०×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पुजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है ।

८५८८. पूजा संग्रह × । पत्र स० ६० । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वेष्टनसं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाएं तथा भाद्रपद पूजा सग्रह है । रगलाल जी गदिया साहपुरा वालों ने जयपुर में प्रतिलिपि करा कर उदयपुर मे नाल के मदिर चढाया था ।

८५८९. पूजा संग्रह—× । पत्रसं० ८२ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

८५९० पूजा संग्रह—× । पत्रस० ७० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

८५९१. पूजा सग्रह—× । पत्र स० ११ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

८५९२. पूजा संग्रह—× । पत्र स० १६ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८५९३. पूजा सग्रह—× । पत्र स० ७५ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—छह पूजाओ का सग्रह है ।

८५९४. पूजा संग्रह—× । पत्र स० ३४ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ।

८५९५. पूजा सग्रह—× । पत्रस० ४८ । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८५९६. पूजा संग्रह—× । पत्र स० ५३-१०३ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा ।र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८८९७ पूजा संग्रह—× । पत्रस० ४० । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—नित्य नैमितक पूजाए है ।

८५९८. पूजा संग्रह—× । पत्र सं० १६७ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८५९९. पूजा संग्रह— × । पत्रस० ५ से ३५ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८६००. पूजा संग्रह— × । पत्र सं० ७० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८६०१. पूजा सग्रह— × । पत्रस० १४ । आ० ११×५ इन्च । भाषा सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८६०२. पूजा संग्रह— × । पत्रस० १७८ । आ० ६×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८३३ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—अन्त मे नवसौकथा की चउपई सोमगणि कृत है जिसकी रचना काल स० १७२० है। तथा कर्मबुद्धि की चौपई है ।

मालव देश के सुसनेर नगर के जिन चैत्यालय मे आलमचन्द्र द्वारा लिखा गया था ।

८६०३. पूजा सग्रह — × । पत्रस० ६८ । आ० ७×५ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—निम्नलिखित पूजाए है—

अनतव्रत पूजा, अक्षयदशमी पूजा, कलिकुण्ड पूजा, शान्ति पाठ (आशाधर), मुक्तावलि पूजा, जलयात्रा पूजा, पचमेरु पूजा तथा कर्मदहन पूजा ।

८६०४ पूजा संग्रह – × । पत्रस० १५६ । आ० ६ × ५ इन्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल० स १६६१ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—४० पूजाओ का सग्रह है। चिन्तामणि पार्श्वनाथ–शुभचन्द्र, गुरुपूजा–रत्नचन्द तथा सिद्ध भक्ति विधान-आशाधर कृत विशेषत उल्लेखनीय है ।

८६०५. पूजा संग्रह— × । पत्रस० ७-७४ । आ० १०×६ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय — पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है

८६०५. पूजासग्रह— × । पत्र स० ७० । आ० १०×४ इन्च । भाषा—हिन्दी । **विषय–पजा** । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो का सग्रह है ।

८६०७. **पूजा संग्रह**—× । पत्रसं० ६८ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी-संस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—विभिन्न प्रकार की ३८ पूजाओं एवं पाठों का सग्रह है ।

८६०८. **पूजा सग्रह**—× । पत्रसं० ६३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—मुख्यतः निम्न पूजाओ का सग्रह है—

रत्नत्रय पूजा,	(प्राकृत)
कर्मदहन पूजा,	(,,) (अपूर्ण)

८६०९. **पूजा संग्रह**—× । पत्र स० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३७-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष—पचमेरु द्यानत एव नदीश्वर जयमाल भैया भगवतीदास कृत है ।

८६१०. **प्रतिमा स्थापना**—× । पत्र स० २१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-विधि । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५१० । **प्राप्ति-स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष—श्री ग्राम श्री थालेदा नगरमध्ये लिखित पन्डित सुखराम ।

८६११. **प्रतिष्ठा कल्प—अकलंक देव**—× । पत्र स० १५२ । आ० १३½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

प्रारभ—

वदित्वा च गणाधीरा श्रुत स्कध च ।
ऐद युगि नानाचार्य नयि भक्त्या नमाम्यहं ।।१।।
अथ श्री नेमिचन्द्राय प्रतिष्ठा शास्त्र मार्गतः
प्रतिष्ठायास्तदा श्रुत राजानां स्वय भगिना ।।२।।
इन्द्र प्रतिष्ठा ।

८६१२. **प्रतिष्ठा तिलक—आ० नरेन्द्रसेन** । पत्रस० २७ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१-१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—मुनि महाराज श्री १०८ भट्टारक जी श्री मुनीन्द्रकीर्त्ति जी की पुस्तक । लिखित ज्ञाती हूबड मूलसंघी रूघडा वसु कस्तूरचद तत् पुत्र चोकचन्द ।

८६१३. **प्रतिष्ठा पद्धति**—× । पत्रस० ३६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १८२४ कातिक सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

८६१४. प्रतिष्ठा पाठ—आशाधर । पत्रसं० १६ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**-पूजा । र०काल × । **ले०काल** स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८६ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६१५. प्रतिसं० २ । पत्रस० २३ । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष—मडल विधान दिया है ।

संवत् १८६५ के बैशाख बुदी ६ दिने सोमवासरे श्री दक्षिण देशे श्री गिरवी ग्रामे चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० यश कीर्ति देवा त० प० भ० सुरेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे गुरु भ्राता पं० खुशालचन्द लिखित ।

८६१६. प्रति स० ३ । पत्रस० २० । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं**० ३४/३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८६१७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ६२-१६५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३५/३६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८६१८. प्रति सं० ५ । पत्रस० १३ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस**० ३०/१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८६१९. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ७७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बड़ा पचायती मन्दिर डीग ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

८६२०. प्रतिष्ठा पाठ—प्रभाकरसेन । पत्र स० ४२-८५ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

८६२१. प्रतिष्ठा पाठ— × । पत्रसं० २७ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १६१३ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ८६-६४** । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—शान्तिसागर ब्रह्मचारी की पुस्तक से विद्वुष नेमिचन्द्र ने स्वय लिखा था ।

८६२२. प्रतिष्ठा पाठ—× । पत्रस० १३३ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—प्रारम्भ एव बीच के कितने ही पत्र नही है ।

८६२३. प्रतिष्ठा पाठ टीका (जिनयज्ञ कल्प टीका)—परशुराम । पत्रस० १२६ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टनसं० ३५/२** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—१२ पंक्ति और २४ अक्षर हैं ।

८६२४. प्रतिष्ठा पाठ वचनिका—× । पत्रसं० ११६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—विधान। र०काल × । ले०काल सं० १६६६ वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—नटवरलाल शर्मा ने श्रीमान् माहाराजाधिराज श्री माधवसिंह के राज्य मे सवाई जयपुर नगर में प्रतिलिपि की थी ।

८६२५. प्रतिष्ठा मंत्र संग्रह—× । पत्र सं० १० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० ३१४-११७ । प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपूर ।

विशेष—प्रतिष्ठा मे ताम आने वाले मंत्रों के विधान सचित्र दिये हुये हैं ।

८६२६. प्रतिष्ठा मंत्र संग्रह—× । पत्रस० ८७ । आ० ११×६ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१५-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—पहिले विभिन्न व्रतोद्यापनों के चित्र, तीर्थंकर परिचय, गुणस्थान चर्चा एवं त्रिलोक वर्णन है इसके बाद मत्र हैं ।

८६२७. प्रतिष्ठा यंत्र— × । पत्रसं० ८ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—४५ यत्रो का सग्रह है ।

८६२८. प्रतिष्ठाविधि—आशाधर । पत्र स० ७ । आ० १२×४½ इच भाषा-सस्कृत । विषय-विधिविधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८६२९. प्रतिष्ठाविधि—× । पत्र सं० २ । भाषा-हिन्दी । विषय—प्रतिष्ठा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८६३०. प्रतिष्ठासार संग्रह—आ० वसुनंदि । पत्र स० २६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल सं० १६३१ । पूर्ण । वेष्टनस० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष —मंडलाचार्य धर्मचन्द्र के शिष्य आचार्य श्री नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

८६३१. प्रतिसं० २ । पत्रस० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६७; । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

संवत् १६७१ वर्षे श्री मूलसंघे भट्टारक श्री गुणसेन देवा: आर्यिका बाई गौत्तम श्री तस्य शिष्य पण्डित श्री रामाजी जसवन्त बघेरवाल ज्ञानमुक्तमंडण चमरीया गोत्रौ ।

८६३२. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० सं० १२ से २२ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६३३. प्रति सं० ४ । पत्रस० १८-२५ । आ० ६३/४ × ४१/४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११५ (क० स०) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रथम १७ पत्र नही है ।

८६३४. प्रति सं० ५ । पत्रस० २७ । आ० १२ × ५३/४ इञ्च । ले०काल स० १८६१ ज्येष्ठ बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६३५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३० । आ० ११ × ६१/२ इञ्च । ले०काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष— प० रतनलाल जी ने बूंदी मे प्रतिलिपि की थी ।

८६३६. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३३ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८६३७. प्रति सं० ८ । पत्र स० २४ । आ० १२ × ६१/२ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०४-११७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८६३८. प्रति सं० ९ । पत्रस० ३६ । ले०काल स० १८७७ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । **वेष्टन स०** २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग

८६३९. प्रतिष्ठासारोद्वार (जिनयज्ञ कल्प)—आशाधर । पत्रस० ३-१२१ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८६४०. प्रोषध लेने का विधान— × । पत्र स० २ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल स० १८४७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५-१६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८६४१. ब्रह्मपूजा— × । पत्रस० ७ । आ० ५१/२ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६४२. बारहसौ चौतीस व्रत पूजा—शुभचन्द्र । पत्र स० ७१ । आ० १२ × ५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६४३. बारहसौ चौतीस व्रत पूजा—श्रीभूषण । पत्रस० ७६ । आ० १२ × ५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८५३ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

विशेष—सवाई जयनगर के आदिनाथ चैत्यालय मे सवाई राम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

८६४४. बिम्ब प्रतिष्ठा मंडल— × । पत्रसं० १ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०८/११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर । कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—मडल का चित्र है ।

८६४५. बीस तीर्थंकर जयमाल—हर्षकीर्ति । पत्र स० २ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल १८५१ । पूर्ण । वेष्टनस० ६३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६४६. बीस तीर्थंकर पूजा—जौहरीलाल । पत्रसं० ४५ । ग्रा० १३३/४ × ८३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १९४६ सावन सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६४७. बीस तीर्थंकर पूजा—थानजी ग्रजमेरा । पत्रसं० ७३ । ग्रा० १२१/२ × ७१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९३४ ग्रासोज सुदी ६ । ले० काल स० १९४४ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

विशेष—ग्रन्तिम पृष्ठ पर पद भी है ।

८६४८. बीस तीर्थंकर पूजा—× । पत्रसं० ४ । ग्रा०६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर (जयपुर) ।

८६४९. बीस तीर्थंकर पूजा—× । पत्रस० ५७ । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९४२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

८६५०. बीस विदेह क्षेत्रपूजा—चुन्नीलाल । पत्रस० ३६ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

८६५१. बीस विदेह क्षेत्र पूजा—शिखरचंद । पत्र स० ४१ । ग्रा० ६१/४×८१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स १९२८ जेठ सुदी १ । ले० काल स० १९२९ वैसाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मंदिर करौली ।

८६५२. बीस विरहमान पूजा—× । पत्रस० ४ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९३८ फाल्गुन बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—विदेहक्षेत्र बीस तीर्थंकरो की पूजा है ।

८६५३ भक्तामर स्तोत्र पूजा—नंदराम । पत्रस० २८ । ग्रा० १३१/२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १९०४ वैसाख सुदी १० । ले०काल सं० १९०४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—श्योजीराम बयाना वाले से बक्सीराम ने प्रतिलिपि कराई थी ।

८६५४. भक्तामर स्तोत्र पूजा—सोमसेन । पत्र स० १३ । ग्रा० १०×५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

८६५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ग्रा० ६१/२×४१/२ इञ्च । ले०काल सं० १९२८ फाल्गुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

८६५६. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १४ । ग्रा० ११×४½ इञ्च । ले०कालसं० १७५१ चैत बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूंदी ।

विशेष—करवर नगर में पं० मायाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

८६५७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १० । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १६०४ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८६५८. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० १२ । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले०काल + । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

८६५९. भक्तामर स्तोत्र पूजा—× । पत्रस०१२ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

८६६०. भक्तामर स्तोत्र पूजा—× । पत्र सं० १६ । ग्रा० ६½×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

८६६१. भक्तामर स्तोत्र पूजा—× । पत्रसं० १० । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८२७ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८६६२. भक्तामर स्तोत्र पूजा—× । पत्र स० ८ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८८० पौष बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर । भण्डार ।

विशेष—ग्रजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८६६३. भक्तामर स्तोत्र उद्यापन पूजा—केशवसेन । पत्रस० १७ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३-२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)

विशेष—मथुरा निवासी चपालाल जी टोग्या की धर्म पत्नी सेराकवरी ने भक्तामर व्रतोद्यापन में चढाया था ।

८६६४. भक्तामर स्तोत्र पूजा—× । पत्रसं० ११ । ग्रा० १०×४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८४० । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८६६५. भुवनकीर्ति पूजा—× । पत्रसं० २ । ग्रा० १३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० १६११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष भट्टारक भुवनकीर्ति की पूजा है ।

८६६६. **महाभिषेक विधि**— × । पत्रसं० ३३ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८६६७. **महाभिषेक विधि**— × । पत्रसं० २-२३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–विधि विधान । र०काल × । ले०काल सं० १६३५ पौष बुदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३१५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

विशेष—सारमंगपुर में प्रतिलिपि हुई थी । सं० १६४५ में मंडलाचार्य गुणचन्द्र तत् शिष्य ब्र० जेसा ब्र० स्याणा ने कर्मक्षयार्थ पं० माणक के लिये की थी ।

८६६८. **महावीर पूजा—वृन्दावन** । पत्र सं० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा बीसपथी मंदिर दौसा ।

८६६९. **महाशांतिक विधि**— × । पत्रसं० ६५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८६७०. **मासान्त चतुर्दशी व्रतोद्यापन**— × । पत्र सं० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

८६७१. **मासांत चतुर्दशी व्रतोद्यापन**— × । पत्रसं० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८७२ बैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २०/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

८६७२. **मासांत चतुर्दशी व्रतोद्यापन**— × । पत्रसं० ११ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८६७३. **मांगीतुंगी पूजा—विश्वभूषण** । पत्र सं० ११ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल सं० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६७४. **मुक्तावली व्रत पूजा**— × । पत्रसं० २ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४-६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—भट्टारक सकलकीर्ति कृत मुक्तावली गीत हिन्दी मे और है ।

८६७५. **मुक्तावली व्रत पूजा**— × । पत्रसं० १६ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

८६७६. **मुक्तावलि व्रतोद्यापन**—× । पत्र स० १२ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८६७७. **मुक्तावलि व्रतोद्यापन**—× । पत्रस० १४ । आ × । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८८६ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १०-३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—गुमानीराम ने देवगोद वास्तव्य मे प्रतिलिपि की थी ।

८६७८. **मुक्तावलि व्रतोद्यापन**—× । पत्रस० १४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८०-१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—प० शिवजीराम के शिष्य सदासुख के पठनार्थ लिखी गई थी ।

८६७९. **मेघमाला व्रतोद्यापन पूजा**—× । पत्रसं० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनस० ३५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

८६८०. **मेघमालिका व्रतोद्यापन**—× । पत्र स० ६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८६८१. **मेघमाला व्रत पूजा**—× । पत्रस० ३१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८६८२. **मेघमाला व्रत पूजा** × । पत्रस० ४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०-१२ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८६८३. **याग मंडल पूजा**—× । पत्रस० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४६ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८६८४. **याग मडल विधान—प० धर्मदेव** । पत्र स० ४० । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२०-१२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८६८५. **याग मण्डल विधान**—× । पत्र स० २५-५३ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८६८६. **योगीन्द्र पूजा**—× । पत्रस० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६८७. **रत्नत्रय उद्यापन—केशवसेन**। पत्र सं० १२। ग्रा० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र० काल ×। ले०काल सं० १८१७ ज्येष्ठ बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—पं० आलमचन्द के शिष्य जिनदास ने लिखा था।

८६८८. **रत्नत्रय उद्यापन पूजा**—×। पत्रसं० ६। ग्रा० ११½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १८८० सावण बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० १३६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६८९. **रत्नत्रय उद्यापन पूजा**—×। पत्र सं० ३६। ग्रा० १०×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १९४९ ग्रासाढ बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैंणवा।

विशेष—नैणवा में धन्नालाल जी छोगालालजी धानोत्या ग्रावा वालों ने प्रतिलिपि कराई थी।

८६९०. **रत्नत्रय उद्यापन विधान**—×। पत्रसं० ३२। ग्रा० ११×७ इच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

८६९१. **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्र स० १४। ग्रा० ११×५½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय पूजा। र०काल ×। ले० काल १८८५। पूर्ण। वेष्टन स० १६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर।

८६९२. **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्रस० १८। ग्रा० ९½×४½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा र०काल ×। ले०काल स० १८७२ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन सं० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—खुशालचन्द ने बयाना मे प्रतिलिपि की थी। श्लोको के ऊपर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है।

८६९३. **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्रस० ४। ग्रा० १०½×५½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १८०५। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष·प्रति टब्बा टीका सहित है।

८६९४. **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्र सं० ८। ग्रा० ८×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६७७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

८६९५. **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्रसं० ४। ग्रा० १०½×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८६९६. **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्रसं० ६। ग्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १८०५। पूर्ण। वेष्टनसं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

८६६७. रत्नत्रय जयमाल—× । पत्रसं० ५ । भाषा प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर उदयपुर ।

८६६८. रत्नत्रय जयमाल — × । पत्रसं० ११ । आ० ८$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९६३ आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मागीलाल बडजात्या कुचामण वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

८६६९. रत्नत्रय जयमाल भाषा—नथमल । पत्र सं० १० । आ० १२×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९२५ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८७००. रत्नत्रय पूजा—भ० पद्मनन्दि । पत्रसं० १६ । आ० ११×४ इञ्च ।भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

८७०१. रत्नत्रय पूजा— × । पत्रसं० १४ । आ० ११×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७०२. रत्नत्रय पूजा—× । पत्र सं० १२ । आ० १२$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७०३. रत्नत्रय पूजा—× । पत्र स० १५ । आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

८७०४. रत्नत्रय पूजा — × । पत्रस० ५ । आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८-११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

८७०५. रत्नत्रय पुजा - × । पत्रसं० २२ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन म० ५२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर में लिखा गया था ।

८७०६. रत्नत्रयपूजा—×। पत्रसं० १६ । आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८७०७. रत्नत्रय पूजा—×। पत्रसं० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८७०८. रत्नत्रय पूजा—× । पत्रसं० ६ । आ० १०½×५½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६/३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सौगाणी मंदिर करौली ।

८७०९. रत्नत्रय पूजा—× । पत्रस० २६ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मंदिर डीग ।

विशेष—दोहा शतक-रूपचन्द कृत तथा विवेक जखडी-जिनदास कृत हिन्दी मे और है ।

८७१०. रत्नत्रय पूजा—× । पत्र स० ४-२५ । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६०/३१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

८७११. रत्नत्रय पूजा—× । पत्र सं० २३ । आ० १२½×४½ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन स० १४७९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८७१२. रत्नत्रय पूजा—× । पत्रस० १६ । आ० १२×७ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८७१३. रत्नत्रय पूजा जयमाल—× । पत्रसं० १७ । भाषा-अपभ्रंश विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल १७९९ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

८७१४. रत्नत्रय पूजा—टेकचन्द । पत्र स० २६ । आ० १४×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९२९ फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन तेरह पंथी मन्दिर नैणवा ।

८७१५. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३५ । आ० १३½×५½ इन्च । ले० काल स० १९७२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

८७१६. रत्नत्रय पूजा—द्यानतराय । पत्र स० ८ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपन्थी मालपुरा (टोंक) ।

८७१७. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६ । आ० १०×४½ इन्च । ले० काल सं० १९९१ । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७१८. रत्नत्रय पूजा भाषा—× । पत्रस० १२ । आ० ११½×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९४९ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८७१९. रत्नत्रय पूजा—× । पत्रस० ४६ । आ० ६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९४० । पूर्ण । वेष्टनसं० १० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

८७२०. रत्नत्रय पूजा—× । पत्र सं० २० । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९०७ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

८७२१. रत्नत्रय पूजा—× । पत्रस० ३० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं०** ६३/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८७२२. रत्नत्रय पूजा—× । पत्र स० ३६ । आ० ११×८ इञ्च । भासा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९३२ मांग सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८७२३. रत्नत्रय पूजा—× । पत्रस० १९ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८७२४. रत्नत्रय पूजा—× । पत्र स० २३ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८७२५. रत्नत्रय पूजा विधान—× । पत्र स० १६ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७२६. रत्नत्रय पूजा विधान—पत्र स० १९ । आ० ८¾×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

८७२७. रत्नत्रय मंडल विधान—× । पत्र सं० ३९ । आ० १५×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९५० चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—फूलचन्द सौगाणी ने प्रतिलिपि की थी ।

८७२८. रत्नत्रय मंडल विधान—× । पत्रसं० १० । आ०८½×७½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७२९. रत्नत्रय विधान (वृहद)—× । पत्र सं० ९ । आ० १०½×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७३०. रत्नत्रय विधान—× । पत्र सं० २४ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९३० पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष -- स्योबक्स श्रावक ने फतेहपुर मे लिपि कराई थी ।

८७३१. रत्नत्रय विधान—× । पत्रसं० ११ । श्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६३ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

८७३२. रत्नत्रय विधान—× । पत्र० सं० ४५ । श्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३/६४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८७३३. रत्नत्रय विधान— × । पत्रस० १ । श्रा० १३×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३६/३८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८७३४. रत्नत्रय विधान—× । पत्रसं० ३६ । श्रा० १०×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६४३ । पूर्ण । **वेष्टनसं० २१५ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८७३५. रत्नत्रय विधान—× । पत्रसं० ४७ । श्रा० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं० २६ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूंदी ।

८७३६. रत्नत्रय विधान—× । पत्रस० ३ । श्रा० १३×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६/१८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह ।

८७३७. रत्नत्रय व्रतोद्यापन—× । पत्रस० १२ । श्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८७३८. रत्नत्रय व्रतोद्यापन—× । पत्रसं० १५ । श्रा० १२×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८५६ भादों सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २६/१५ । **प्राप्ति-स्थान**-दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक) ।

८७३९. रविव्रत पूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ६ । श्रा० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८५० । पूर्ण । वेष्टन स० ३८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

८७४०. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । श्रा० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८७४१. रविव्रत पूजा—× । पत्रस० १० । श्रा० १०×४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

८७४२. रविव्रत पूजा एवं कथा—मनोहरदास। पत्रसं० २०। आ० ५१/२×४१/२ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय पूजा एव कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

८७४३. रविव्रतोद्यापन पूजा—रत्नभूषण। पत्रसं० ८। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८७४४. प्रति सं० २। पत्र स० १३। आ० १०१/२×६३/४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५४/६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर।

८७४५. रविव्रतोद्यापन पूजा—केशवसेन। पत्र सं० ६। आ० १२×५३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती करौली।

८७४६. रेवा नदी पूजा—विश्वभूषण। पत्रसं० ६। आ० ११×५१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७८। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—रेवा नदी के तट पर स्थित सिद्धवरकूट तीर्थ की पूजा है—

८७४७. रोहिणी व्रत पूजा—×। पत्र स० ६। आ० ११३/४×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३४५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

८७४८. रोहिणी व्रत पूजा—×। पत्र सं० ४। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३८५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८७४९. रोहिणी व्रत पूजा। पत्र सं० २१। आ० ६×५१/२ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय – पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

विशेष—मूल पूजा सकलकीर्ति कृत है।

८७५०. रोहिणी व्रत मंडल विधान—×। पत्रसं० ३०। आ० ८१/२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत हिन्दी। —विषय पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८७५१. रोहिणी व्रतोद्यापन—वादिचन्द्र। पत्रसं० २१। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय पूजा। र० काल ×। ले०काल सं० १७१३ मंगसिर सुदी ५।। पूर्ण। वेष्टनसं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

८७५२. रोहिणी व्रतोद्यापन—× । पत्रसं० १६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८७५३. रोहिणी व्रतोद्यापन— × । पत्रसं० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–पूजा । र०काल ×। ले०काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

८७५४. रोहिणी व्रतोद्यापन पूजा— × । पत्र सं० २० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक)

८७५५. रोहिणी व्रतोद्यापन—केशवसेन— × । पत्रस० १७ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८७५६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

८७५७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १० । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८७५८. प्रति स० ४ । पत्रस० १६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

८७५९. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ४ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८७६०. लघु पंच कल्याणक पूजा—हरिमान । पत्रसं० १७ । आ० १३×७¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १६२६ । ले०काल सं० १६२८ मार्गशीर्ष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—भीकालाल छाबड़ा की बहिन मूलोबाई ने पंचायती मन्दिर करौली मे सं० १६८१ में चढाई थी ।

८७६१ लघुशांति पाठ—सूरि मानदेव । पत्रसं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष – प्रारम्भ मे पार्श्वनाथ स्तवन दिया हुआ है, जिसे घण्टाकर्ण भी कहते हैं ।

८७६२. लघुशान्ति पाठ— × । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा)

८७६३. लघुशान्तिक पूजा—पद्मनन्दि । पत्रस० ३८ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनस० ३६** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यों का नैणवा ।

८७६४. लघुशान्तिक विधि—× । पत्र स० १७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १५४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति—

सवत् १५४८ वर्षे चैत्र बुदी १० गुरु दिने श्री मूलसघे नद्याम्नाये स० गच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भ० पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य म० रत्नकीर्तिदेवास्तत् शिष्य ब्रह्म मोट्टराज ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं लिखापित ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयो ऽभयदानतः ।
अभयदानात् सुखी नित्यनिर्व्याधी भैषज भवेत्

८७६५. लघु सिद्धचक्र पूजा—भ० शुभचन्द्र । **पत्रसं०** ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टनस० २४५** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८७६६. लघुस्नपन विधि—× । पत्रस० ५ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८७६७. लब्धिविधनोद्यापन पूजा—× । पत्रस० ११ । आ०११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० ४४/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

८७६८. लब्धिविधान—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्रस० १० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । **ले०काल** स० १८८८ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

८७६९. लब्धिविधान—× । पत्र स० ४ ११ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वष्टनस० ६५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७७०. लब्धिविधान उद्यापन — । पत्र स० । आ० ६½×४½ इञ्च । **भाषा-सस्कृत** । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन स० ५३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

८७७१. लब्धिविधान उदद्यापन पाठ । पत्रस० १२ । आ० ६½×६ इञ्च । **भाषा-संस्कृत** । विषय-पूजा एव विधान । र०काल । ले० काल स० १६०५ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । **वेष्टन सं० १६६** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

८७७२ लब्धि विधान पूजा—हर्षकीर्ति । पत्रसं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

८७७३. लब्धिविधान पूजा—× । । पत्रसं० १३ । आ० ९½×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । **ले०काल** सं० १८८६ भादवा बुदी १० । पूर्ण । **वेष्टन** सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर बयाना ।

८७७४. लब्धि विधानोध्यापन पाठ—× । पत्रसं० ७ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन** सं० १६/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगानी मंदिर करौली ।

८७७५. वर्तमान चौबीसी पूजा—चुन्नीलाल । पत्रसं० ७१ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

८७७६. वर्तमान चौबीसी पूजा—× । पत्र सं० १११ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९१७ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

८७७७. वर्धमान पूजा—सेवकराम । पत्र सं० २ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल १९४६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

८७७८. वसुधारा—× पत्रसं० ३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल सं० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८९-१२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८७७९. वास्तुपूजा विधान—× । पत्र सं० ८/११ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४३७, ३८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

८७८०. वास्तुपूजा विधि—× । पत्रसं० ६ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९४४ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१३ । **प्राप्त स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७८१. वास्तु पूजा विधि—× । पत्र सं० ७ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-विधान । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २९९/११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८७८२. वास्तु विधान—× । पत्रसं० ६ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२७/३९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

८७८३. विदेहक्षेत्र पूजा—× । पत्रस० ३८ । म्रा० ११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खडेलवाल उदयपुर ।

८७८४. विद्यमान बीस विरहमान पूजा—जौहरीलाल । पत्रसं० ८ । म्रा० ७½×५½ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८७८५. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा—अमरचन्द । पत्रसं० २८ । म्रा० ११×५½ इञ्च । **भाषा**-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९२५ फाल्गुण सुदी ९ । ले० काल स० १९२५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८७८६. प्रतिसं० २ । । पत्रस० २९ । ले०काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८७८७. विमानपंक्ति पूजा—× । पत्रस० ४ । म्रा० ११×४ इच । भाषा—संस्कृत । **विषय**-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३८/३३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

८७८८. विमानपंक्ति पूजा – × । पत्रस० ९ । म्रा० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९३८ । पूर्ण । **वेष्टन** स० ३०९/११७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८७८९. विमानपंक्ति पूजा—× । पत्रस० ७ । म्रा० १०¾×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० (अ) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७९०. विमान पंक्ति व्रतोद्यापन—आचार्य सकलभूषण । पत्रसं० ६ । म्रा० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन** सं० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७९१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६ । म्रा० ११×५ इञ्च । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आचार्य नरेन्द्र कीर्ति के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

८७९२. विमान शुद्धि पूजा—× । पत्रस० ५१ । म्रा० १०½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूदी) ।

विशेष – सरोले ग्राम मे लिखा गया था ।

८७९३. विमान शुद्धि शांतिक विधान—चन्द्रकीर्ति । पत्रसं० १४ । म्रा० ८×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०३/११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८७९४. विवाह पटल—× । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

८७९५. विवाह पटल—× । पत्र सं० २७ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १७८७ द्वि० भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है

८७९६. विवाह पटल—× । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय विधान । र०काल × । ले० काल स० १६६६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८७९७. विवाह पटल—× । पत्रसं० ६ । आ० १०×४½इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—श्री हरिदुर्ग मध्ये लिपिकृतं ।

८७९८. विवाह पद्धति—× । पत्र स० १६ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल सं० १८५७ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८७९९. विवाह विधि—× । पत्रसं० २७ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २२१/६६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

८८००. प्रतिसं० २ । पत्रस० १-११ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२२/६६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८८०१. वेदी एवं अष्टपताका स्थापन नवग्रह पूजा—× । पत्र सं० ६ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२-११७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८८०२. व्रत निर्णय – × । पत्रस० ४० । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल सं० १६५२। पूर्ण । वेष्टनसं० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८८०३. व्रत पूजा सग्रह— × । पत्र सं० २०६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८०६ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८८०४. व्रत विधान—× । पत्र सं० १६ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—व्रतों का ब्योरा है।

८८०५. व्रत विधान—× । पत्र सं० ४-१५ । आ० १०×४$\frac{3}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**-विधान । र०काल × । ले०काल सं० १८६२ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७५६ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—पं० केसरीसिंह ने जयपुर में प्रतिलिपि कराई थी।

८८०६. व्रत विधान—× । पत्र सं० १८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । **विषय**-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८८०७. व्रत विधान—× । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । र० काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

८८०८. व्रत विधान पूजा—अमरचन्द । पत्रसं० ४२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा हिन्दी । **विषय**—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—प्रारम्भ का पाठ—

बन्दौ श्री जिनराय पद, ग्यान बुद्धि दातार।
व्रत पूजा भाषा कहो, यथा सुश्रुत अनुसार।

× × ×

अन्तिम पाठ—

तीन लोक माहि सार मध्य लोक को विचार।
ताके मध्य दीपोदधि असख प्रमानजी।
सब द्वीप मध्य लसै जबू नामा दीप यह
ताकी दिशा दस तामै भरत परवान जी।
तामै देस मेवात है बसत सुबुद्धी लोग
नगर पिरोजपुर झिरकी महान जी।
जामे चैत्य तीन बने पूजत है लोग घने
बसत श्रावग वहा बड़े पुन्यवान जी ॥१॥
मूलसघी संघलसै सरस्वतीगच्छ जिसे
गणसी बलात्कार कुन्दकुन्द आनजी।
ऐसो कुलमाना है वश मे खडेलवाल
गोत की लुहाडया रुच करौ जिनवानी जी।
किसन हीरालाल सुत अमरचन्द नित
बाल के ख्याल व्रत छद यो बखान जी।
यामे भूल-चूक होय साध लीज्यो प्राग्य लोग
मेरो दोष खिमा करो खिमा बडो गुण या उर आनो जी ॥२॥

८८०९. व्रतसार — × । पत्रसं० ६ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्रत विधान । र०काल × । ले० काल सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८८१०. **व्रतोद्यापन संग्रह** — × । वेष्टन स० ३३-१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

विशेष — निम्न सग्रह है —

१. जिनगुण सम्पत्ति व्रतोद्यापन	सुमति सागर ।	संस्कृत
२. कर्मदहन पूजा	विद्याभूषण ।	
३. षोडशकारण व्रतोद्यापन	मुनि ज्ञान सागर ।	,,
४. भक्तामर स्तोत्र मंडल स्तवन	× ।	,,
५. श्रुत स्कध पूजा	वीरदास ।	,,
६. पञ्च परमेष्टि पूजा विधान	यशोनन्दि ।	,,
७, रत्नत्रयोद्यापन पूजा	भ० केशवसेन ।	
८. पञ्चमी व्रतोद्यापन पूजा	×	,
९. कजिका व्रतोद्यापन	यश:कीर्ति ।	,,
१०. रोहिणी व्रतोद्यापन	×	,,
११. दशलक्षण व्रतोद्यापन	×	,,
१२. पल्य विधान पूजा	अभयनन्दि ।	,,
१३. पुष्पाञ्जिली व्रतोद्यापन	×	,,
१४, नवनिधान चतुर्दश रत्न पूजा	लक्ष्मीसेन ।	,,
१५. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	विद्याभूषण ।	,,
१६. पच कल्याणक पूजा	×	,,
१७. सप्त परमस्थान पूजा	×	,,
१८. अष्टाह्निका व्रत पूजा	ब्रह्म सागर ।	,,
१९. अष्ट कर्मचूर्ण उद्यापन पूजा	×	,,
२०. कवल चन्द्रायण पूजा	जिनसागर	,,
२१. सूर्यव्रतोद्यापन पूजा	ब्र० ज्ञानसागर	,,
२२ हवन विधि	×	,,
२३. बारहसौ चौबीसी व्रतोद्यापन	×	,,
२४. तीस चौबीसी व्रतोद्यापन	भ० विद्याभूषण ।	,
२५. अनन्त चतुर्दशी पूजा	भ० विश्वभूषण ।	,,
२६. त्रिपचाशत क्रियोद्यापन	×	,,

८८११. **व्रतोद्यापन पूजा संग्रह** — × । पत्र सं० १२-६६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल १८२१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

रत्ननन्दि कृत पल्य विधानोद्यापन, नंदीश्वरव्रतोद्यापन, सप्तमी उद्यापन, त्रेपनक्रिया उद्यापन जिनगुण सम्पत्ति व्रतोद्यापन, बारह व्रतोद्यापन, षोडशकारण उद्यापन, चारित्र व्रतोद्यापन का संग्रह है।

८८१२. व्रतों का ब्योरा—× । पत्रसं० १२ । आ० ७×५ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

८८१३. बृहद् गुरावली पूजा—स्वरूपचन्द । पत्रस० ८२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय पूजा । र०काल सं० १६१० सावन सुदी ७ । ले०काल सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—जीवनलाल गिरधारीलाल के तृतीय पुत्र किशनलाल ने नगर करौली में नेमिनाथाय चैत्यालय मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

८८१४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २८ । आ० १५×५ इन्च । ले०काल स० १९१० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८८१५. बृहत् पुण्याह वाचन— × । पत्रसं० ५ । आ० १२×४$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-विधि विधान । ले०काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

८८१६. बृहद् पूजा संग्रह—× । पत्रसं० २१६ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-सस्कृत-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८२१ फागुन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—नैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है ।

८८१७. बृहद् पंच कल्याणक पूजा विधान—× । पत्रस० २२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८८१८. बृहत् शांति पूजा—× । पत्रस० १२ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८१९. बृहद् शान्ति विधान—धर्मदेव । पत्रस० ३६ । आ० ११×५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १८८२ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—बगरू ग्राम के आदिनाथ चैत्यालय मे ठाकुर बाघसिंह के राज्य में झांझूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८८२०. बृहद् शान्ति विधान—× । पत्र स० ५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

८८२१. **बृहद् शान्ति विधान**— × । पत्रसं० ३ । आ० ११$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८८२२. **बृहद् शान्ति विधि एवं पूजा संग्रह**— × । पत्र सं० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

८८२३. **बृहद् षोडशकारण पूजा**— × । पत्रसं० ४५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

८८२४. **बृहद् षोडशकारण पूजा**–× । पत्रसं० १५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८१८ सावण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८२५. **बृहद् सम्मेद शिखर महात्म्य**—**मनसुखसागर** । पत्रसं० १३७ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९३० माघ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८२६. **बृहद् सिद्धचक्र पूजा – भ० भानुकीर्ति** । पत्रसं० १४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—**प्रशस्ति**—अच्छी है ।

जयपुर नगर मे लश्कर के मन्दिर मे प० केशरीसिह जी के शिष्य झांडूराम देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

८८२७. **शत्रुंजय उद्धार**—**नयनसुन्दर** । पत्रसं० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८१५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १९१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८८२८. **शास्त्र पूजा**— × । पत्रसं० ५३-६३ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८-५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८८२९. **शास्त्र पूजा**— × । पत्र सं० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८८३०. **शांतिकाभिषेक**— × । पत्र सं० १४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८८३१. शांतिकाभिषेक—×। पत्रसं० ३६ । आ० १४×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १९२८ कार्तिक बुदी ५ ।पूर्ण । वेष्टनसं० ३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैणवा ।

विशेष—नैणवा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८८३२. शान्ति पाठ—पं० धर्मदेव। पत्र स० २१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल× । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० ३६० । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८८३३. शान्ति पाठ—×। पत्रस० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन शास्त्र भण्डार मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८८३४. शांतिक पूजा विधान—× । पत्र सं० ५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी ।

८८३५. शांतिक विधान—धर्मदेव। पत्रस० ४७ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान। र०काल × । ले०काल स० १८५९ चैत्र वदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ११७७ । प्राप्ति-स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८३६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३७। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले०काल स० १८६४ माह बुदी ६ । पूर्ण । वष्टन स० २५-११ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—टोडारायसिंह मे प० श्री वृन्दावन के प्रशिष्य एवं सीताराम के शिष्य स्योजीराम ने प्रतिलिपि की थी।

८८३७. शान्तिक विधि— × । पत्रसं० २ । भाषा-सस्कृत । विषय विधि। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० × । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर।

८८३८. शांतिचक्र पूजा—× । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० १५९८। प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८८३९. शान्तिचक्र पूजा—× । पत्र स० ७ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १९२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

८८४०. शांतिचक्र पूजा × । पत्रस० ४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

८८४१. शांतिचक्र पूजा—×। पत्र सं० ४। आ० ६$\frac{3}{4}$×८$\frac{1}{4}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल स० १८५९ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४-८१ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—राजमहल नगर में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में सुखेन पंडित ने प्रतिलिपि की थी।

८८४२. शांतिचक्र पूजा—× । पत्रस० ३। आ० १०×५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

८८४३. शांतिचक्र विधि—×। पत्रसं० ४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

८८४४. शांतिचन्द्र मंडल पूजा—×। पत्रसं० ४। आ० ११×५½ इञ्च : भाषा-संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल ×। ले०काल सं० १६४८। पूर्ण। वेष्टन सं० ५०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८८४५. शांतिचक्र मंडल विधान—×। पत्रसं० ५। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १८६४। पूर्ण। वेष्टनस० १५८, ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)।

८८४६. प्रतिसं० २। पत्रस० ४। ले०काल सं० १८०८ असाढ बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० १५६/५७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

८८४७. शान्तिनाथ पूजा—×। पत्रसं० १३। आ० ७×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १७०/७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८८४८. शांतिनाथ (वृहद्) पूजा—ब्र० शांतिदास। पत्र सं० १६। आ० १२×८ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-पुजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३६२-१४८। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

८८४९. शान्तिमंत्र—×। पत्रसं० ४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल सं० १९३८। पूर्ण। वेष्टनसं० ३४१/१३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

८८५०. शांति होम विधान—आशाधर। पत्र स० ४। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधि विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०३। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

८८५१. प्रतिसं० २। पत्रसं० ५। आ० ११×६½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

८८५२. शीतलनाथ पूजा विधान—×। पत्रसं० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १३८०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८८५३. **शुक्लपंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० ११ । आ० १२×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३६/३५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भट्टारक वादिभूषण के शिष्य ब्र० बेला के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी प्रति प्राचीन है ।

८८५४. **शुक्लपंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्रस० १० । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, (बूंदी) ।

८८५५. **शुक्लपंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० ६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । लेखन काल सं० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८८५६. **शुक्लपंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्र स० ७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८/८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८८५७. **शुक्लपंचमी व्रतोद्यापन**—× । पत्र सं० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८८५८. **श्राद्ध विधि—रत्नशेखर सूरि** । पत्रस० १६८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल सं०१५०६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५-२०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८८५९. **श्रावक व्रत विधान—अभ्रदेव** । पत्रस० १५ । आ० १०¾×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १७६५ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८६०. **श्रुत पूजा**—× । पत्रस० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८६१. **श्रुत पूजा**—× । पत्रस० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८६२. **श्रुत पूजा**—× । पत्र स० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८८६३. **श्रुत पूजा**—× । पत्रस० ४ । आ० १०¾×५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८८६४. **श्रुतस्कंध पूजा—ज्ञानभूषण** । पत्रसं० ६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८९१ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

८८६५. श्रुतस्कंध पूजा—त्रिभुवनकीर्ति। पत्रसं० ३। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४/३१८। प्राप्ति स्थान— दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८८६६. प्रति सं० २। पत्रसं० ३। ले०काल सं० ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५/३१६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८८६७. श्रुतस्कन्ध पूजा—भ० श्रीभूषण। पत्र सं० १६। श्रा० १५×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १७३१। पूर्ण। वेष्टन सं० ५१४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष—बहारादुरमध्ये पं० भोमजी लिखितं।

८८६८. श्रुतस्कन्ध पूजा—वर्द्धमान देव। पत्रसं० ७। श्रा० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८८६९. श्रुतस्कन्ध पूजा—×। पत्रसं० ६। श्रा० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल × ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी।

८८७०. श्रुतस्कन्ध पूजा—×। पत्र सं० ४। श्रा० ६$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{4}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष—एक प्रति और है।

८८७१. श्रुतस्कंध पूजा—×। पत्र स० ५। श्रा० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३४। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

८८७२. श्रुतस्कंध पूजा—×। पत्रसं० ३। श्रा० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० २७-६०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

विशेष—प० शिवजीराम ने अपने शिष्य चैनसुख नेमीचन्द के पढने के लिए टोडा में प्रतिलिपि की थी।

८८७३. श्रुतस्कंध पूजा—×। पत्रसं० ८। श्रा० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३५६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८८७४. श्रुतस्कंध पूजा—×। पत्रसं० १०। श्रा० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

८८७५. श्रुत स्कंध पूजा विधान—बालचन्द । पत्रस० ३५ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १९४५ ज्येष्ठ बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० १२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८८७६. श्रुत स्कंध मंडल विधान—हजारीमल्ल—× । पत्रस० २७ । आ० १३×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—हजारीमल्ल साहिपुरा के रहने वाले थे ।

८८७७. श्रुत स्कंध मण्डल विधान—× । पत्रस० १ । आ० २३×११$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

विशेष—मण्डल का नक्शा दिया हुआ है ।

८८७८. षोडशकारण जयमाल—× । पत्रस० १४ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल १७८७ श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८७९. षोडशकारण जयमाल—× । पत्रस० १७ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—ऋषि रामकृष्ण ने भरतपुर में प्रतिलिपि लिखी थी ।

८८८०. षोडशकारण जयमाल—× । पत्रस० ९ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७८२ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८८१. षोडशकारण जयमाल—× । पत्रसं० ४१ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९४० भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर

विशेष—गौरीलाल बाकलीवाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । टब्वा टीका सहित है ।

८८८२. षोडशकारण जयमाल—× । पत्रसं० १० । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सस्कृत मे टीका है ।

८८८३. षोडशकारण जयमाल—× । पत्र स० १२ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १७१५ माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

८८८४. षोडषकारण जयमाल—रइधू । पत्रस० १२ । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा र०काल × । ले०काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—गुमानीराम ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी।

८८८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । आ० ११×५½ इञ्च ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४/२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में शब्दार्थ दिये है ।

८८८६. षोडशकारण जयमाल वृत्ति— पं० शिवजीवरुन (शिवजीलाल)। पत्रसं० २९ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा-प्राकृत संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८८८७ षोडशकारण पूजा—× । पत्र सं० २४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८८८८. षोडशकारण पूजा— × । पत्र स० १२ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

८८८९. षोडशकारण पूजा मंडल विधान—टेकचन्द— × । पत्रस० ४१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८८९०. प्रति सं० २ । पत्रसं० ५३ । आ० ९½×६½ इञ्च । ले०काल स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

८८९१. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५२ । ले०काल स० १९७३ । पूर्ण । वष्टन सं० ३९३-१४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

८८९२. षोडशकारण व्रतोद्यापन—ज्ञानसागर—× । पत्रस० २३ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८८९३. षोडशकारण व्रतोद्यापन पूजा—सुमति सागर । पत्रस० ३२ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × ले० काल स० १८१७ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

अवन्ति नाम सुदेशमध्ये विशालशालेन विभ्राति भूतले ।
सुशान्तिनाथस्तु जयोस्तु नित्यं, मुञ्जेनकेया परदेव तत्र ।।१।।
श्रीसघमूले विपुलेयदूरे ब्रह्मी प्रगद्दे बलशालिने गणे ।
तत्रास्ति यो गोतम नाम षेया त्वये प्रशांतो जिनचन्द्र सूरि ।।२।।
श्रीपद्मनन्दिर्भवतापहारी देवेन्द्रकीर्तिर्मुवनैककीर्ति ।
विद्यादिनंदिवरमल्लिभूषः लक्ष्म्यादिचन्द्रो भयचन्द्रदेव ।।३।।

तत्पट्टे ऽभयनन्दिसो रत्नकीर्ति गुणाग्रणी ।
जीयाद् भट्टारको लोको रत्नकीर्ति जगोत्तम ।।४।।
सुमति सागरदेव चक्रे पूजा मघापहां ।
खंडेलवालान्वये यः प्रह्लादो ह्लादवान्सुधी ।।५।।
कर्त्तापरोषपूजाया मूलसंघविदाग्रणी ।
सुमतिसागरदेव श्रद्धाषोडशकारणे ।।६।।
इति षोडशकारण व्रतोद्यापनपाठः ।
पंचाशदधिकैः श्लोकैः षट्शतं प्रमितं महत् ।
तीर्थंकृत्परपूजाया सुमतिसागरोदितः ।।७।।

८८९४. प्रति सं० २ । पत्रसं० २७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

८८९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८६७ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१-१०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—अभयचन्द्र के शिष्य सुमतिसागर ने पूजा बनाई । अभयचन्द्र की पूरी प्रशस्ति दे रखी है । टोडा मे श्याम चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । नाथूरामजी लुहाडिया ने नासिरदा मे मन्दिर चढाया था।

८८९६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८८९७. षोडशकारण व्रतोद्यापन । पत्र स० २१ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८८९८. सकलीकरण विधान—× । पत्रसं० ३ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर

८८९९. सकलीकरण—× । पत्रसं० २ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८९००. सकलीकरण—× । पत्रसं० ३ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८९०१. सकलीकरण—× । पत्रस० ४ । आ०-१०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन आदिनाथ मन्दिर बूंदी ।

८९०२. सकलीकरण विधान × । पत्र स० ३ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

८९०३. सकलीकरण विधान—× । पत्र सं० २ । आ० १०½×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

८९०४. सकलीकरण विधि—× । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन नेमिनाथ मंदिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

८९०५. सकलीकरण विधि—× । पत्रसं० ३ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । । ले०काल सं० १९८४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४८-१३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

८९०६. सकलीकरण विधि—× । पत्र सं० ३४ । भाषा—सस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—ग्रन्त में शान्तिक पूजा भी है ।

८९०७. सकलीकरण विधि—× । पत्र सं० ४ । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय -विधान । र०काल × । ले०काल सं० १९११ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूंदी) ।

८९०८. सकलीकरण विधि—× । पत्रस० ३ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूंदी) ।

८९०९. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूंदी) ।

८९१०. सत्तर भेदी पूजा —× । पत्रसं० २ । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल—× । ले० काल स० १८०० । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८९११. सप्तर्षि पूजा—विश्वभूषण । पत्रसं० ४९ । आ० १०¾×¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८९१२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १४ । ले०काल सं० १८५२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

८९१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर भरतपुर ।

८९१४. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ३ से ९ तक । ले०काल सं० १८५२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

८९१५. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर भरतपुर ।

८६१६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर भरतपुर ।

८६१७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२ । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

८६१८. प्रतिसं० ८ । पत्र स० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

८६१६. सप्तर्षि पूजा—× । पत्रसं० ३ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६२०. सप्तर्षि पूजा—× । पत्र स० ११ । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा - संस्कृत । **विषय**—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६३६ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—ख० पचायती मन्दिर उदयपुर ।

८६२१. सप्तर्षि पूजा—× । पत्रसं० ६ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल—× । ले०काल स० १७६८ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १६१/५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—सवत् १७६८ भट्टारक श्री १०८ जगत् कीर्ति शिष्येण दोदराजेन लिखित ।

८६२२. सप्तर्षि पूजा—मनरंगलाल । पत्र स० ३ । आ० १२×८ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बू दी) ।

८६२३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । आ० ६$\frac{3}{4}$×७$\frac{1}{2}$ इ च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०-११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

८६२४. सप्तर्षि पूजा—स्वरूपचन्द । पत्र स० ११ । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल स० १६०६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—खं० पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—एक अन्य प्रति १२ पत्रों की और है ।

८६२५. सप्तपरमस्थान पूजा—गंगादास । पत्रस० १ । आ० १२×६ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६० र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिह (टोक) ।

८६२६. सप्तपरमस्थान पूजा — × । पत्र स० ४ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६२७. समवसरण पूजा—पन्नालाल । पत्रस० ७४ । आ० १२×८ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १६२१ आसोज बुदी ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—८४५ पद्य हैं।

८९२८. **प्रतिसं० २**। पत्रस० ८८। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल सं० १९३३ वैशाख बुदी ४। पूर्ण। वेष्टनसं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

८९२९. **प्रतिसं० ३**। पत्रस० १४०। आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। **ले०काल** स० १९२९ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—प० लाभचन्द ने मथुरा मे घाटी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की।

८९३०. **प्रतिसं० ४**। पत्रस० १४३। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले०काल सं० १९२६ आषाढ बुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

८९३१. **प्रतिसं० ५**। पत्रसं० ६६। आ० ११$\frac{1}{2}$×८ इञ्च। ले०काल सं० १९८३। पूर्ण। वेष्टनसं० ५४०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८९३२. **समवसरण पूजा—रूपचन्द**। पत्रसं० ९७। आ० १३ × ६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १८८४ सावन सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ३५/१७ **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)।

८९३३ **प्रति सं० २**। पत्रस० १६४। आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८९३४. **समवशरण पूजा—विनोदीलाल लालचन्द**। पत्रस० ४९। आ० १३$\frac{3}{4}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स० १८३४ माह बुदी ८। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०२६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

८९३५. **प्रतिसं० २**। पत्र स० ९२। आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३९९। **प्राप्ति स्थान**– भ० दि० जैनमन्दिर अजमेर।

विशेष—और भी पाठ सग्रह हैं।

८९३६. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ५४। आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। ले० काल स० १९९८। चैत सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० १२६७। **प्राप्ति स्थान** - भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

८९३७. **प्रति सं० ४**। पत्र स० १३२। आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इंच। ले०काल सं० १९२३। पूर्ण। वेष्टन स० ६१। **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष— और भी पाठों का सग्रह है।

८९३८. **प्रति सं० ५**।। पत्र सं० ११६। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल सं० १८८९ भादवा बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० १०३/७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा।

विशेष—देवली ग्राम के उदैराम ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

८९३९. **प्रति सं० ६**। पत्रसं० ३४। ले०काल स० १८८२ पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

८९४०. **प्रतिसं० ७**। पत्रसं० ९९। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

८६४१. **प्रति सं ८** । पत्रसं० ४१ । आ० १३½×८ इञ्च । ले०काल सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

विशेष—स्यौलाल श्रीमाल के पुत्र गेंदालाल सुगनचन्द ने लिखवा कर करौली के नेमिनाथ चैत्यालय में चढाया था ।

८६४२. **प्रति सं० ६** । पत्रसं० १४२ । आ० ८½×६½ इञ्च । ले०काल सं० १६५० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

विशेष—छाजूलाल जी छावडा ने मालपुरा मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

८६४३. **प्रतिसं० १०** । पत्र सं० १४२ । आ० ४½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर चौधयिान मालपुरा (टोंक)

विशेष—लालजी कनहरदास पद्मावती पुरवाल सकूरावाद निवासी के बड़े लड़के थे ।

८६४४. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० १०४ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

८६४५. **प्रतिसं० १२** । पत्र सं० ३४ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—लालजीन भी नाम है ।

८६४६. **प्रतिसं० १३** । पत्रस० ११५ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उयदपुर ।

८६४७. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० ७८ । ले० काल सं० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—लिखित गुरु उमेदचन्द लोकागच्छ का अजमेर मध्ये सुखलालजी हरभगतजी अजमेर के हस्ते लिखाई थी ।

८६४८. **प्रतिसं० १५** पत्रस० ७१ । आ० १४×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

८६४९. **प्रति सं० १६** । पत्रस० ८८ । आ० ९½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८४५ मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८६५०. **प्रतिसं० १७** । पत्रस० ५२ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

८६५१. **प्रतिसं० १८** । पत्रस० ४३ । आ० १४ × ७ इञ्च । ले०काल सं० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८६-११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

८६५२. **प्रति सं० १९** । पत्रसं० १२३ । आ० ६½×६ इञ्च । ले०काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर वैर ।

८६५३. **प्रतिसं० २०** । पत्रस० ८६ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल सं० १६४३ श्रावण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—भाई चन्दहंस जैसवाल लाइखेडा (आगरा) ने कलकत्ता अगरतल्ला में प्रतिलिपि की थी।

८६५४. प्रति सं० २१। पत्रसं० ५४। आ० १३×८ इञ्च। ले० काल सं० १९१६ सावन बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन सं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

८६५५. प्रति सं० २२। पत्रसं० ७१। आ० १०½×७½ इंच। ले०काल सं० १९२९। पूर्ण। वेष्टन सं० १९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—४२ पत्र की नित्य पूजा और है।

८६५६. समवसरण पूजा भाषा—×। पत्रसं० ९७। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १९४८ पौष बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन सं० ३०/५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

८६५७. समवसरण पूजा—×। पत्र सं० २७। आ० १३×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

८६५८. समवसरण पूजा—×। पत्रसं० ३६। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल। पूर्ण। वेष्टन स० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

८६५९. समवशरण पूजा—×। पत्रस० १७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८६६०. समवसरण पूजा—×। पत्र स० १७०। आ० ९½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १९२३। पूर्ण। वेष्टन सं० ३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—बूंदी मे लिखा गया था।

८६६१. समवसरण पूजा—×। पत्रस० ३३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८६६२. समवसरण पूजा—×। पत्रसं० ९१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

८६६३. समवसरण विधान—पं० हीरानन्द—×। पत्र सं० २४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र० काल सं० १७०१। ले० काल स० १७४१ पौष सुदी ४। पूर्ण। वेष्टनसं० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—बनहटै नगर में जोशी सांवलराम ने प्रतिलिपि की थी।

८६६४. समवसरण पूजा—×। पत्रस० ३४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १९३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

८६६५. समवसरण पूजा—×। पत्र सं० १००। ग्रा० १२×८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १६७२। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—और भी पाठ है।

८६६६. समवसरण की ग्रावुरी—×। पत्रसं० ४। ग्रा० १०½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

८६६७. समवसरण चौबीसी पाठ—थानसिंह ठोल्या। पत्र स० २६। ग्रा० १०½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल स० १८४० ज्येष्ठ सुदी २। ले०काल स० १८४६ माघ बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली।

विशेष—करौली में रचना हुई। सेवाराम जती ने प्रतिलिपि की थी।

८६६८. समवसरण मंगल चौबीसी पाठ—×। पत्र सं० ५१। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल स० १८४८ जेठ बुदी २। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६१। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—इसके कर्त्ता करौली निवासी थे लेकिन कही नाम देखने मे नही आया। छद स० ४०५ है।

श्रावक के उपदेश सौ सतसगति परमाया।
थान करौरी मे भाषा छंद बनाया॥

८६६९. समवसरण रचना—×। पत्र स० ५१। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-पूजा एव वर्णन। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—समवसरण के अतिरिक्त नर्क स्वर्ग मोक्ष सभी का वर्णन है।

८६७० समवश्रुत पूजा—शुभचन्द्र। पत्र स० ३६। ग्रा० १२×५½ इञ्च। भाषा-सास्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

८६७१. समवश्रुत पूजा—×। पत्र स० ४२। ग्रा० ८½×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २२६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६७२. सम्मेदशिखर पूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति। पत्रस० ५। ग्रा० ११½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २७६। **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८६७३. सम्मेदशिखर पूजा—×। पत्र स० १७। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा।

८६७४. सम्मेदशिखर पुजा—गंगादास। पत्र स० १२। ग्रा० ७½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १४६-६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

८९७५. प्रतिसं० २। पत्र स० १७। आ० ९$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इन्च। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वेष्टन स० ६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली।

८९७६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। आ० १०$\frac{3}{4}$×७ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५२/१९५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

८९७७. प्रति सं० ४। पत्रसं० २५। आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। ले०काल सं० १८८५ फाल्गुन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली।

८९७८. **सम्मेदशिखर पूजा—सेवकराम**। पत्रस० २३। आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल सं० १९११ माघ बुदी ५। ले०काल स० १९११। पूर्ण। वेष्टन सं० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—नाई के मन्दिर मे सुखलाल की प्रतिलिपि की थी।

८९७९. **सम्मेदशिखर पूजा—संतदास**। पत्र स० ३। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५७९। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८९८०. **सम्मेदशिखर पूजा—हजारीमल्ल**। पत्रसं० २४। आ० १२×५ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९३२। पूर्ण। वेष्टन सं० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

विशेष—मथुरादास ने साहपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

सहसमल्ल विनती करे हे किरपानिधि देव।
आवागमन मिटाइये अरजी यह सुन लेव ॥

८९८१. **सम्मेदशिखर पूजा—ज्ञानचन्द्र**। पत्र स० १४। आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल सं० १९६६ चैत सुदी २। ले० काल स० १९८६। पूर्ण। वेष्टन सं० १५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

प्रारम्भ—शिखर समेद से बीस जिनेश्वर सिद्ध भये।
और मुनीश्वर बहुत तहा ते शिव गये ॥
बंदू मन वच काय नमू शिर नायके।
तिष्ठे श्री महाराज सबें इत आयके ॥

अन्तिम—उन्नीसो छासठ के माही।
सवत विक्रम राज कराही ॥
चैत सुदी दोयज दिन जान।
देश पंजाब लाहोर शुभ स्थान ॥
पूजा शिखर रची हरषाय।
नमें ज्ञानचन्द्र शीश नमाय ॥

इसके अतिरिक्त निर्वाण क्षेत्र पूजा ज्ञानचन्द्र कृत और है जिसका र०काल एवं लेखन काल भी वही है।

विशेष—बूंदी नगर वासी गैंदीलाल के पुत्र संतलाल छाबड़ा ने प्रतिलिपि करके ईश्वरीसिंह के शासनकाल मे भेंट की थी।

८९८२. सम्मेदशिखर पूजा—जवाहरलाल। पत्रसं० २७ । आ० ९$\frac{3}{4}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल स० १८९१ वैशाख सुदी । **ले०काल** सं० १९५६। पूर्ण। **वेष्टन** स० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—कवि छत्रपुर के रहने वाले थे। मुक्तागिरि की यात्रा कूं गये और अमरावती में यह ग्रन्थ रचना करी।

अमरावती नगरी विषै पूजा समकित कीन।

छिमाजी सब जन तुम करो मोहि दोस मत दीन ।।

पं० भगवानदास हरलाल वाले ने नन्द ग्राम मे प्रतिलिपि की थी। पुस्तक पं० रतनलाल नेमीचन्द की है।

८९८३. प्रतिसं० ३। पत्रसं० २३। आ० ११×६ इञ्च। **ले०काल** स० १९५६। पूर्ण। **वेष्टनसं०** २०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी, बूंदी।

विशेष—२-३ प्रतियों का मिश्रण है।

८९८४. प्रतिसं० ४। पत्र स० १४। आ० ११$\frac{3}{4}$×६ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० २८६/१११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

८९८५. प्रति स० ५। पत्र स० १८। आ० ११×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले० काल स० १९५४ वैशाख बुदी १०। पूर्ण। वेप्टन स० ५८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८९८६. प्रति सं० ६। पत्र सं० १५ । आ० १०×६ इञ्च। **ले०कालस०**–१९४३ आषाढ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

८९८७. प्रतिसं० ७। पत्र स० २२। ले० काल स० १९१४। पूर्ण। वेष्टन सं० ८९/२९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

८९८८. प्रति सं० ८। पत्रसं० १७। ले० काल × । पूर्ण। **वेष्टनस०** ३५४-२९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मदिर उदयपुर।

८९८९. प्रतिसं० ९। पत्र स० १२। आ० १२$\frac{1}{2}$×७ इञ्च। **ले०काल** × । पूर्ण। वेष्टन स० १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

८९९०. प्रतिसं० १०। पत्र सं० १७। आ० ११×६ इञ्च। ले० काल स० १९२६। पूर्ण। वेष्टन सं० ७/४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)।

विशेष—अमरावती मे रचना हुई। मुन्नालाल कटारा ने हजारीलाल शंकरलाल के पठनार्थ व्यास रामवक्स से दूनी में प्रतिलिपि करवाई थी। सवत् १९४३ में हजारीलाल कटारा ने अनन्तव्रत के उपलक्ष मे दूनी के मन्दिर में चढ़ाई।

८९९१. प्रतिसं० ११। पत्र सं० १२। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल सं० १८९१। पूर्ण। **वेष्टन सं०** १०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)।

८९९२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६ । ग्रा० १०×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर नैरावा ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह ग्रौर है—

नवग्रह स्तोत्र, पार्श्वनाथ स्तोत्र, भूपाल चतुर्विंशतिका स्तोत्र ।

८९९३. प्रति सं० १३ । पत्रसं० १६ । ग्रा० १०½×७ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक) ।

८९९४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ७ । ले०काल सं० १९२६ ग्राषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—लालजी लुहाडिया भरतपुर वाले ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

८९९५. सम्मेद शिखर पूजा—भागीरथ । पत्र स० २८ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८३७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

८९९६. सम्मेद शिखर पूजा—द्यानतराय— × । पत्रस० १८ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा० हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । र०काल स० १८३५ । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैरावा ।

८९९७. सम्मेद शिखर पूजा—बुधजन । पत्रस० १६ । ग्रा० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८९९८. सम्मेद शिखर पूजा—रामपाल । पत्र स० ११ । ग्रा० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५७-१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

ग्रन्तिम—मूलसंघ मनुहार भट्टारक गुणचन्द्र जी ।
तस पट सोहे सार हेमचन्द्र गछपती सही ।।
सकलकीर्ति ग्राचारज जी जानौ ।
तिन के शिष्य कहे मन ग्रानो ।
रामपाल पंडित मन ल्यावे ।
प्रभु जी के गुण बहुविध गावे ।।
सहर प्रतापगढ़ जानो रे भाई ।
घोडा टेकचन्द तिहा रहाई ।।
सम्मेद शिखर की यात्रा ग्रावे ।
ता दिन ये पूजा रचावे ।।
संमत ग्रठारासै साल में ग्रौर छियासी लाय ।
फागुण दुज शुभ जानिये रामपाल गुण गाय ।
लिखितं पं० रामपाल स्वहस्तेण ।

जुगादीके सुगेह मे पडित बरवान जी ।।
रतनचन्द ताको नाम बुद्धि को निधान जी ।।
ताको मित्र रामपाल हाथ जोर कहत है ।
हेस्याण मोकू दीजिये जिनेन्द्र नाम लेत है ।

८९९९. सम्मेद शिखर पूजा—लालचन्द । पत्रसं० ८३ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८४२ फागुण सुदी ५ । ले० काल स० १८४५ बैशाख बुदी ऽ ऽ । **पूर्ण** । वेष्टन स०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा ।

विशेष—लालचन्द भ० जगत्कीर्ति के शिष्य थे ।

ग्रन्तिम—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

काष्टासघ ग्रौर माथुरगच्छ पोकरगण कहो शुभगच्छ ।
लोहाचार्य ग्रामनाय जो कही हिसार पद मनोक्षा सही ।।३२।।
भट्टारक सत्कीर्ति जानि, भव्य पयोज प्रकाशन भान ।
तासु पट्ट महीन्द्रकीर्ति लयो विद्यागुण भडार जु भयो ।
देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्ट बखान, शील शिरोमणि क्रियावान ।
तिनके पट्ट परम गुणवान, जगत्कीर्ति भट्टारक जान ।

× × × × × ×

शिष्य लालचन्द सुत्री भाषा रची बनाय ।
एकचित्त सुनै पढै भव्य शिवकूं जाय ।।३५।।
सवत् ग्रठारासै भयो ब्यालिस ऊपर जान ।
पाचै फागुण शुक्लकु पूरण ग्रथ बखान ।।३६।।
रेवाडी सहर मनोज्ञ बसै श्रावक भव्य सब ।
ग्रादित्य ऐश्वर्य योग तेतीस पट्ट पूरण भयो ।

इति श्री सम्मेदशिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारे भट्टारक जगत्कीर्ति तत् शिष्य लालचन्द विरचित भद्रकूट वर्णनो नाम एक विशति तम: सर्ग. ।

९०००. प्रति सं० २ । पत्रस० ६० । ग्रा० १२½×६½ इञ्च । ले०काल स० १९१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

९००१. प्रति सं० । ३ पत्रस० ३१ । ग्रा० ६½ × ८½ इञ्च । ले०काल स० १९७० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ ।दि० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा ।

९००२. प्रति सं० ४ । पत्रस० २६ । ले०काल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

९००३. प्रति सं० ५ । पत्रस० ४ । ग्रा० १३×४½ इञ्च । ले०काल सं० १९०६ ग्राषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरफतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—जगतकीर्ति के प्रशिष्य ललितकीर्ति के शिष्य राजेन्द्रकीर्त्ति के लघु भ्राता के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी । जगह २ प्रति संशोधित की हुई है ।

६००४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल स० १८५४ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—रेवाड़ी मे ग्रंथ रचना हुई । देवी सहाय नारनौल वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

६००५. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ४४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । ले०काल स० १६१५ पौष सुदी । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी ।

विशेष—

अन्तिम प्रशस्ति—इति श्री सम्मेदशिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीत्ति तत् शिष्य लालचन्द विरचिते सुवर्णभद्रकूटवर्णनोनाम विशंतिका संपूर्ण । जीवनराम ने फतेहपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६००६. प्रतिसं० ८ ।पत्रस० ५० । आ० ६×५ इन्च । **ले०काल** × । **पूर्ण** । **वेष्टनसं०** २२०/११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६००७. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ६६ । आ० ६×७ इन्च । **ले०काल** स० १८८६ । अपूर्ण । वेष्टन स० । ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवानजी कामा ।

६००८. सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा—मोतीराम । पत्रसं० ४२ । भाषा-हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८४१ भादो सुदी ६ ।ले०काल स० १८४८ वैसाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६००९. प्रति सं० २ । पत्रस० ७२ । ले०काल स० १६२०। पूर्ण । **वेष्टनस०** ५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०१०. सम्मेद शिखर पूजा— × । पत्रस० ७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७६३ । **पूर्ण** । **वेष्टनस०** ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६०११. सम्मेद शिखर पूजा— × । पत्र स० १२ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६४४ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५५ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

६०१२. सम्मेद शिखर पूजा— × । पत्रस० ३० । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । **भाषा—**हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०१३. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्र स० ८ । आ० ८×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६४६ आसोज बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०१४. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्र स० १७ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १८६१ । ले० काल सं० १६०० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

९०१५. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्र सं० १८ । प्रा० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६–५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

९०१६. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्रसं० १८ । प्रा० ७½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टौंक) ।

९०१७. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्र सं० १६ । प्रा० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६४२ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१–१२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टौंक) ।

९०१८. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्र सं० १८ । प्रा० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

९०१९. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्र स० ६४ । प्रा० १०½×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४-६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर मादवा (राज०) ।

९०२०. सम्मेद शिखर पूजा—× । पत्रसं० ४३ । प्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी, पद्य । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल स०× । पूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

९०२१. सम्मेद शिखिर पूजा—× । पत्रसं० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १८७७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

९०२२. सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा—मनशुखसागर । पत्र स० १०० । प्रा० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी, पद्य । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६८ । जेठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १००-८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—ज्ञानचन्द छाबडा ने प्रतिलिपि की थी ।

९०२३. सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा—मनसुखसागर । पत्रस० ६३ । प्रा० १०½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय –पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्रीमहावीर बूंदी ।

९०२४. सम्मेद शिखर महात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्रसं० ७६ । प्रा० ११½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पजा एवं कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८५१ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९०२५. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १०६ । प्रा० १२½×६ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६-४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

९०२६. सम्मेद शिखरमहात्म्य— × । पत्रसं० २१ । आ० ८×६ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा) ।

९०२७. सम्मेदाचल पूजा उद्यापन— × । पत्र सं० ८ । आ० १३½×६½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

९०२८. सम्यक्त्व चितामणि— × । पत्र सं० १२२६ । आ० १२×६ इन्च । भाषा–संस्कृत । विपय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

९०२९. सरस्वती पूजा— × । पत्र स० ७ । आ० ११×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

९०३०. सरस्वती पूजा—संघी पन्नालाल । पत्र स० ११ । आ० १३½×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल स० १९२१ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल सं० १९८५ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४९० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष — रिपभचन्द बिन्दायक्या ने लश्कर के मन्दिर के लिये जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

९०३१. सर्वजिनालय पूजा (कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालय पूजा)—माधोलाल जैसवाल । पत्र स० १६ । आ० ८×७ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

९०३२. सहस्रगुण पूजा—भ० धर्मकीर्ति । पत्रस० ६१ । आ० १२½×७½ इन्च । भाषा–सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८७६ मागसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

इति भट्टारक श्री ललितकीर्तिस्तत्शिष्य भट्टारक श्री धर्मकीर्तिविरचित श्री सहस्रगुण पूजा सपूर्ण । लिख्यतं महात्मा राधाकृष्ण सवाई जयपुर मध्ये वासी कृष्णगढ का । मिति मगसिर बुदी ३ शुक्रवार स० १८७६ ।

९०३३. प्रति सं० २ । पत्र स० ७२ । आ० ११½×७½ इन्च । ले०काल सं १९३१ बैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

९०३४. सहस्रगुणित पूजा— × । पत्रस० ६१ । आ० ११½×६इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८६ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३४२ । प्राप्ति-स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९०३५. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ४६ । ले०काल सं० १८८६ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४३ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

९०३६. सहस्रगुणित पूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० १२७। ग्रा० ५½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १७५१ ज्येष्ठ बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—ग्रा० कल्याणकीर्ति के शिष्य पं० कबीरदास के पठनार्थ गुटका लिखा गया था।

९०३७. प्रतिसं० २। पत्र सं० ५२। **ले०काल स०** १६६८। पूर्ण वेष्टन सं० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग।

विशेष—मानसिंह जी के शासन काल में ग्रामेर मे प्रतिलिपि हुई थी। बाई किसना ने कजिका व्रतोद्यापन में चढाई थी।

९०३८. सहस्रगुणित पूजा— ×। पत्रस० ११-७२। ग्रा० १०×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

९०३९. सहस्रगुणी पूजा—खड्गसेन। पत्र सं० ६७। ग्रा० १२×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १७२८। पूर्ण। वेष्टन स० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी दी हुई है।

९०४०. सहस्रनाम पूजा—धर्मचन्द्रमुनि— ×। पत्र स० ५०। ग्रा० १२×६½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। लेo काल स० १८६१ चैत सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

विशेष—सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

९०४१. सहस्रनाम पूजा—धर्मभूषण। पत्रस० ८५। ग्रा० ११×६ भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

९०४२. सहस्रनाम पूजा—चैनसुख। पत्र स० ३६। ग्रा० १३×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९६३। पूर्ण। वेष्टनस० ५५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

९०४३ सार्द्धद्वयद्वीप पूजा—विष्णुभूषण। पत्र स० ११६। ग्रा० १२×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९६१। पूर्ण। वेष्टनस० ५७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

९०४४. सार्द्धद्वयद्वीप पूजा—शुभचन्द्र। पत्र स० १३०। ग्रा० १०×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १८६८ सावन सुदी १। **पूर्ण। वेष्टनसं० ५४। प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

९०४५. प्रति सं० २। पत्रसं० ९३। ग्रा० १०×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

९०४६. प्रतिसं० ३। पत्रस० ३००। ग्रा० ९½×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बगसली कोटा।

६०४७. **प्रतिसं० ४।** पत्र स० १२४। ले०काल सं० १८२६ आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—आशाराम ने भरतपुर में लिखा था।

६०४८. **प्रतिसं० ५।** पत्र सं० ६६ । ले० काल स० १८६४ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

६०४६. **प्रतिसं० ६** । पत्रसं० २५६ । ले०काल सं० १६६३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

६०५०. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० १०८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १८७० । पूर्ण । वेप्टन सं० ११ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बैर ।

६०५१. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० १४४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग ।

६०५२. **सार्द्ध द्वयद्वीप पूजा—सुधा सागर** । पत्रस० ६८ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८५५ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ५६** । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

६०५३. **सार्द्ध द्वयद्वीप पूजा**—× । पत्रस० २०१ । भाषा-सस्कृत । विषय-पजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०५४. **सार्द्ध द्वय द्वीप पूजा**—× । पत्रसं० ८८ । आ० १२$\frac{3}{4}$×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । **वेष्टनसं० १११** । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष— अथ सवत्सेरस्मिन नृपति विक्रमादित्य गताब्द संवत् १८६५ मिती फाल्गुण बुदी ६ वार आदित्यवार । श्री काष्टासघे मायुरान्वयं पुष्करगणे हिसारपट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवात्पट्टे भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री सहसकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचन्ददेवा तत्पट्टे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक जगतकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक ललितकीर्ति वर्तमाने पिढि निमत । अग्रवालज्ञाते शहर वासी धर्ममूरति धम्मवितार सुश्रावक पुन्यप्रभावक धर्म्मज्ञः लाला दुनीचन्द तत्पुत्र लाला गजूमल तत्पुत्र लाला पुसामल तत्पुत्र गगादास तत्लघु बहालसिंह तेनेद अढाईद्वीप पूजा लिखायित्वा दत्तं तेन ज्ञानावर्णी कर्म्मक्षं निमित्तार्थ शास्त्र स्थापितु ।

प० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी तथा उनके शिष्य सुखराम ने धर्मपुरा के पार्श्वनाथ चैत्याले स्थापितु ।

६०५५. **सार्द्ध द्वय द्वीप**—× । पत्र स०१०२ । आ० १०$\frac{3}{4}$×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—स० १६२६ या १६६१ की प्रति से प्रतिलिपि की गई है । पं० आशाराम ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६०५६. सार्द्धद्वय द्वीप पूजा — × । पत्र सं० १६६ । आ० १३×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मंदिर अलवर ।

६०५७. प्रति सं० २ । पत्रसं० १२३ । आ० १०¾×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६०५८. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ३१५ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६०५६. प्रति सं० ४ । पत्रस० ६३ । आ० ११¾×६¾ इञ्च । ले०काल स० १८७६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६०६०. सिद्धकूट पूजा—× । पत्रसं० १० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुजा । र०काल × । ले० काल स० १८८७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक) ।

६०६१. सिद्धक्षेत्र पूजा—दौलतराम । पत्रस० ८५ । आ० १०½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८६४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—अन्तिम पद—

सवतसर दस आठ सत नव्वेचार सुग्रोर ।
अमुनीसुतदोयज भलो रविवार सिर मोर ।।४४ ।।
तादिन पूजा पाठ करि पढ़ै सुनै जे जेव ।
ते पावै सुख स्वासतें निजआतम रस पीव ।।४५।।
सोभानन्द सुनन्द हो नदन सोहनलाल ।
ताको नंद सुनन्द है दौलतराम विसाल ।।४६।।

६०६२. सिद्धक्षेत्र पूजा—प्रकाशचन्द । पत्रस० ४७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६१६ । ले०काल स० १६४५ । । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

६०६३. सिद्धक्षेत्र पूजा—× । पत्रस० १८ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३६ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा ।

६०६४. सिद्धक्षेत्र पूजा—× । पत्रस० १६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुजा । र० काल × । ले०काल सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल नैणवा ।

६०६५. प्रति सं० २ । पत्रसं० १८ । ले०काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—लोचनपुर (नैणवा) में प्रतिलिपि हुई थी।

९०६६. सिद्धक्षेत्र पूजा—× । पत्रसं० १८ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

९०६७. सिद्धक्षेत्र पूजा—× । पत्र सं० ६ । आ० ११×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

९०६८. सिद्धक्षेत्र मण्डल पूजा—स्वरूपचन्द । पत्रस० १६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९१६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

९०६९. सिद्धचक्र पूजा—पं० आशाधर । पत्रस० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

९०७०. सिद्धचक्र पूजा—धर्मकीर्ति । पत्र स० १३६ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

९०७१. सिद्धचक्र पूजा—ललितकीर्ति । पत्रसं० ६६ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

९०७२. सिद्धचक्र पूजा—भ. शुभचन्द्र । पत्रस० ७० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८२४ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगानी मन्दिर करौली ।

विशेष—पत्र अलग अलग हैं ।

९०७३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६८ । आ० ६¾×६ इञ्च । ले०काल स० १९२६ शाके । पूर्ण । वेष्टनसं० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

९०७४. प्रति स० ३ । पत्र सं० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

९०७५. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ८ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १५८३ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

९०७६. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० २३ । आ० १२¾×८¾ इञ्च । ले०काल स० १९८५ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

९०७७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—समयरससमग्रं पूर्णभाव विभावं,

जनितसुशिवसारं य. स्मरेत् सिद्धचक्र ।।
अखिल नर सुपूज्य सोमचन्द्रादि सेव्य ।
भजति .... ।।

९०७८. **सिद्धचक्र पूजा—संतलाल** । पत्रस० १३१ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १९९१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजी बूंदी ।

विशेष—इन्दौर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

९०७९. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १०५ । आ० १२½×७¾ इञ्च । ले०काल स० १९८६ आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—अजमेर वालो के चौबारा मे जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

९०८०. **प्रति सं० ३** । पत्रस० १-१०३ । आ० १३×८ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १५७ र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

९०८१. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० १४३ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल स० १९८७ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८ र० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक) ।

९०८२. **प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २५१ । आ० ८×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

९०८३. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० १५३ । आ० १३×८½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पत्र स० १२४ मे आगे २९ पृष्ठो मे पचमेरु एव नंदीश्वर पूजा दी गयी है ।

९०८४. **सिद्धचक्र पूजा**—× । पत्र स० ९१ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९८१ । पूर्ण । वेष्टन स० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ख० पचायती मन्दिर अलवर ।

९०८५. **सिद्ध पूजा**— × । पत्र स० ४ । आ० १०¾×६¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९०८६. **सिद्ध पूजा**— × । पत्र स० ७ । आ० ११¾×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

९०८७. **सिद्ध पूजा**—× । पत्रस० २ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३८१/३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

९०८८. **सिद्ध पूजा भाषा**—× । पत्रस० ५ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

६०८९. सिद्ध भूमिका उद्यापन—बुधजन। पत्रसं० ४। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल स० १८०६। ले०काल सं० १८६३। पूर्ण। वेष्टन स० ५२७। प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर।

६०९०. सुगन्ध दशमी पूजा—×। पत्रसं० ८। आ० ६×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ६४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)।

६०९१. सुगन्ध दशमी व्रतोद्यापन—×। पत्र सं० १०। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६०९२. प्रतिसं० २। पत्रस० १०। आ० ८×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६०९३ सूतक निर्णय—सोमसेन। पत्र स० १६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६०९४. सूतक दर्शन—×। पत्रस० १। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६०९५. सोनागिरि पूजा—×। पत्रस० ८। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६०९६. सोनागिरि पूजा—×। पत्रस० ८। आ० ६¾×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ९२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

६०९७. सोनागिरि पूजा—×। पत्र स० ५। आ. ६×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स० १८८० फागुण बुदी १३। ले० काल स० १९५६। पूर्ण। वेष्टन स० ५६८। प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६०९८. सोलहकारण उद्यापन—सुमतिसागर। पत्रस० १६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १८६७। पूर्ण। वेष्टन स० २५। प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)।

विशेष—नाथूराम साह ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६०९९. सोलहकारण उद्यापन—अभयनन्दि। पत्र स० २७। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल सं० १८१७ बैशाख बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—सरोज नगर मे सुपार्श्व चैत्यालय में पं० आलमचन्द के शिष्य जिनदास ने लिखा।

६१००. सोलहकारण उद्यापन—× । पत्र सं २० । श्रा० ६$\frac{3}{4}$×६ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६१०१. सोलह कारण जयमाल—**भ० देवेन्द्रकीर्ति** । पत्र स० २३ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल १६४३ । ले० काल १८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६१०२. सोलहकारण जयमाल—× । पत्रसं० १६ । श्रा० १०×५ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६१०३. सोलहकारण जयमाल—× । पत्र स० १० । श्रा० १०$\frac{1}{2}$×४ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १७५४ ।पूर्ण । वेष्टन स० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी

प्रारम्भ—

सोलहकारण पडयमि गुणगण सायरह ।
पणविणि तित्थकरं असुह दुवयकर ॥

६१०४. सोलहकारण जयमाल—**रइधू** । पत्र स० ७ । श्रा० १३×६ इन्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५६ × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा बीसपथी मन्दिर दौसा ।

६१०५. सोलहकारण जयमाल—× । पत्र स० २२ । श्रा० ६$\frac{3}{4}$×६ इन्च । भाषा—प्राकृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

६१०६. सोलहकारण जयमाल—× । पत्र सं० २८ । श्रा० १३×६ इन्च । भाषा-प्राकृत ।विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती करौली ।

विशेष—रत्नकरंड एव अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल भी है ।

६१०७. सोलहकारण पूजा—× । पत्र स० ११ । श्रा० १२×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मंदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

६१०८ सोलहकारण पूजा—× । पत्र स० ४२ । श्रा० १२×७$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९३६ आसोज बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—हीरालाल बडजात्या ने टोंक मे लिखवाया था ।

६१०९. सोलहकारण पूजा विधान—टेकचन्द। पत्रसं० ६। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा विधान। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५६१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

६११०. प्रतिसं० २। पत्र सं० ५१। आ० १०×५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैणवा।

विशेष—भट्ट शिवलाल ने प्रतिलिपि की थी।

६१११. प्रति सं० ३। पत्रसं० ७५। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

६११२. प्रतिसं० ४। पत्रसं० ४६। आ०१२½×६¾ इञ्च। ले०काल सं० १९९७ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १३८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

६११३. सोलहकारण पूजा—×। पत्रसं० २७। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २३५/३२५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६११४. सोलहकारण पूजा—×। पत्रसं० २-१७। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६११५. सोलहकारण मण्डल पूजा—×। पत्रसं० ४०। आ० ११×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल×। ले०काल सं० १९११ ज्येष्ठ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० ४/६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—मारोठ मे फू थाराम ने लिखवाया था।

६११६. सोलहकारण मण्डल विधान—×। पत्रसं० ८०। आ० ११¾×५¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल सं० १९५४ सावण बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० १३९४। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६११७. सोलहकारण व्रतोद्यापन पूजा—×। पत्रसं० १८। आ० ११×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

६११८. सोलहकारण व्रतोद्यापन पूजा—×। पत्रसं० ३२। आ० १०×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७८ ७८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

६११९. सोलहकारण व्रत पूजा विधान—×। पत्रसं० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ६९-१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन बड़ा बीसपंथी मन्दिर दौसा।

६१२०. सौख्य काव्य व्रतोद्यापन विधि- ×। पत्रसं० ६। ग्रा० १०½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। **विषय-पूजा**। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ६११। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

६१२१. संथारा पोरस विधि—×। पत्र सं० १। ग्रा० १०×४½ इन्च। भाषा-प्राकृत। विषय—विधान। ले० काल १६४३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी।

विशेष—पठनार्थ विरागी रूपाजी।

६१२२. संथारा विधि—×। पत्र सं० १२। ग्रा० १०×४½इन्च। भाषा-प्राकृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—टब्बा टीका सहित है।

६१२३. स्तोत्र पूजा—×। पत्रसं० १ से ५। भाषा-संस्कृत। **विषय**-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६१२४. स्तोत्र पूजा—×। पत्र सं० ६। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६१२५. स्नपन विधि—×। पत्र सं० ५। भाषा—संस्कृत। विषय-विधि। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग।

६१२६. स्नपन विधि बृहद्—×। पत्रसं० १५। भाषा-संस्कृत। विषय—विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १५५७ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन सं० २३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६१२७. होम एवं प्रतिष्ठा सामग्री सूची—×। पत्रसं० २०। ग्रा० १२×५½ इंच। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३०७-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

६१२८. होम विधान—आशाधर। पत्रसं० ३। ग्रा० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा विधान। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३८१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६१२९. प्रति सं० २। पत्रसं० ३। ग्रा० १२×४½ इञ्च। ले० काल सं० १६४० चैत सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० २५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—पंडित देवालाल ने चाटसू मे प्रतिलिपि की थी।

६१३०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ग्रा० १२×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३२१-१२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

६१३१. होम विधान—×। पत्रसं० १०। ग्रा० १०½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६१३२. होम विधान—×। पत्र सं० ६। श्रा० ८$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११७५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६१३३. होम विधान—×। पत्र सं० २३। श्रा० १२×७ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

६१३४. होम विधान—×। पत्रसं० २-८। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ४३६/३८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६१३५. होम विधि—×। पत्रसं० ८। श्रा० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले०काल। पूर्ण। वेष्टन सं० ६२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर।

६१३६. होम विधि—×। पत्रसं० ६३। श्रा० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल सं० १६६०। पूर्ण। वेष्टन सं० १७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

—. ❀ .—

गुटका -- संग्रह

(भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर)

६१३७. **गुटका सं० १** । पत्रसं० ७० । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८३४ माह सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—विभिन्न पाठो का संग्रह है । मुख्यतः खण्डेलवालों की उत्पत्ति, ८४ गोत्र तथा निम्न रास हैं ।

भविष्यदत्त रास	—	ब्र० रायमल्ल
सुदर्शन रास	—	"
श्रीपाल रास	—	"

६१३८. **गुटका सं० २** । पत्रसं० १३१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२ ।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है । गुटका प्राचीन है ।

६१३९. **गुटका सं० ३** । पत्रसं० १६८ । आ० ८×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ ।

विशेष—ब्रह्म रायमल्ल कृत विभिन्न रासाओ का संग्रह है ।

६१४०. **गुटका सं० ४** । पत्र स० ११५ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२७ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६१४१. **गुटका सं० ५** । पत्र सं० ७६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १९७३ चेत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४१ ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

६१४२. **गुटका सं० ६** । पत्रस० ५८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४२ ।

विशेष—विविध पूजाओ का सग्रह है ।

६१४३. **गुटका ७** । पत्रसं० १२८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८०७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६३ ।

विशेष—

मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

नाम ग्रंथ	नाम	भाषा
१—मधु मालती कथा—	चतुर्भुज—	हिन्दी

ले० काल सं० १८०७ ।

पद्य सं० ८८३ ।

२—दिल्ली के बादशाहों के नाम—× ।

६१४४. गुटका सं० ८ । पत्रसं० १६० । आ० ६½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४ ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६१४५. गुटका सं० ९ । पत्र सं० २७५ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६६७ मंगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६५ ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

नाम ग्रंथ	ग्रंथ कर्त्ता
समयसार	बनारसीदास
सूक्ति मुक्तावली	,,
कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा	,,
जकडी	दरिगह
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास
कर्मछत्तीसी	,,
अध्यात्मबत्तीसी	,,
दोहरा	आलूकवि
द्वादशानुप्रेक्षा	—

६१४६. गुटका सं० १० । पत्रसं० २०२ । आ० ६ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०२ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

हर्षचन्द्र आदि कवियो के पदों का संग्रह है । पद संग्रह की दृष्टि से गुटका महत्वपूर्ण है ।

६१४७. गुटका सं० ११ । पत्रसं० ४६ । आ० ५ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले० काल स० १८७६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५०३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं अन्य पाठो का संग्रह है ।

६१४८. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १०८ । आ० ८½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५०४ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा आदि है ।

६१४९. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ११८ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

समयसार — बनारसीदास

महावीरस्तवन — समयसुन्दर

(वीर सुनो मेरी बीनती कर जोड़ि है कहो

मननी बात बालकनी परिविनऊं)

६१५०. गुटका सं० १४ । पत्रसं० ८८ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५०८ ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । पूजा पाठ संग्रह है ।

६१५१. गुटका सं० १५ । पत्रस० २०० । आ० ६½×६½इंच । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । **ले०काल** स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५१ ।

विशेष—स्तोत्र एवं सामान्य पाठों के अतिरिक्त क्षमा बत्तीसी, (समय सुन्दर), जीव विचार टव्वार्थ सहित, विचारपर्डात्रिशिका टव्वार्थ, पद संग्रह (भव सागर) सीमधर स्तवन (कवि कमल विजय), धर्मनाथ स्तवन, (आणदघन) ।

गुटका श्वेताबरीय पाठो का है ।

६१५२. गुटका स० १६ । पत्रस० १६८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **ले०काल** × । **पूर्ण** । वेष्टन स० ५५३ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है । गुटका जीर्ण है ।

६१५३. गुटका सं० १७ × । पत्र स० ३३ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १७७४ चैत सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५४ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

१—शत्रु जय रास — समयसुन्दर

२—मडोवर पार्श्वनाथ स्तवन — सुमति हेम

३—ऋषभदेवस्तवन —

६१५४. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७३ । आ० ५¾×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल सं० १५७५ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स ५५५ ।

विशेष—विभिन्न ग्र थों मे से पाठ है सामान्य पाठो का संग्रह है ।

६१५५. गुटका सं० १९ । पत्रस० १४४ । आ० ६½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल सं० १८०७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

भक्तामर, एकीभाव, सूक्तिमुक्तावली, नीतिशतक (भर्तृहरि) शृगारशतक (भर्तृहरि) कविप्रिया (केशवदास) ।

६१५६. गुटका सं० २० । पत्र स० ६७ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५८ ।

विशेष—सामायिक आदि सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६१५७. गुटका स० २० । पत्र स० १४० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८५८ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५६ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

भविष्य दत्त कथा — ब्र० रायमल्ल

श्रीपाल रास — ,

सुदर्शन रास	ब्रह्मराय मल्ल	
निर्दोष सप्तमी कथा	,,	
प्रद्युम्न रास	रायमल्ल	
नेमीश्वर रास	,,	
हनुमत चौपई	,,	
शालिभद्र चौपई	जिनराज सूरि	
शीलपच्चीसी	—	
स्थूलभद्र को नव रस	—	
अकलंकनिकलंक चौपई	भ० विजयकीर्ति	र० काल स० १८२४

६१५८. गुटका सं० २१ । पत्रसं० ७० । आ० ५ × ४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । ले०काल स०–१७८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६० ।

विशेष—चौरासी बोल—हेमराज के तथा पूजा–पाठ संग्रह है ।

६१५९. गुटका सं० २२ । पत्र स० १५६ । आ० ५½ × ३½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल– × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६१ ।

विशेष—पदो का सग्रह है ।

६१६०. गुटका सं० २३ । पत्रस० ८ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स०—१८८६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६२ ।

विशेष—नेमिनाथ के नवमगल एव पाठ आदि है ।

६१६१. गुटका स० २४ । पत्रस० ४८ । आ० ७½ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दो सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६३ ।

विशेष—आयुर्वेदिक पाठो का सग्रह है । इसके अतिरिक्त २४ पत्र मे काल ज्ञान सटीक है । हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

६१६२. गुटका सं० २५ । पत्रस० ६२ । आ० ५½ × ४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६४ ।

विशेष—गोम्मटसार में से चर्चाओं का सग्रह है तथा पद्मावती पूजा भी दी हुई है ।

६१६३. गुटका सं० २६ । पत्रस० २४२ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । ले०काल स० १७१६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र एवं पूजाओ के अतिरिक्त भाउ कृत रविव्रत कथा, ब्र० रायमल्ल कृत नेमिनाथ रास एवं शालिभद्र चौपई आदि का सग्रह है ।

६१६४. गुटका स० २७ । पत्र सं० ८४ । आ० ३ × ३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल स० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६६ ।

विशेष—स्तोत्र आदि का सग्रह है तथा अंत मे कुछ मन्त्रो का भी संग्रह है ।

६१६५. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २६५ । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६७ ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह हैं—

	पत्र
इन्द्रजालविद्या	१—४२ प्रारम्भ में
चक्रकेवली	१—२०
शकुनावली	२१-४६
सक्रांति विचार-	
असोदू का शकुन	७६ पत्र तक
कोक शास्त्र	६८ पत्र तक
संवत्सर फल	
सामुद्रिक शास्त्र	१४६ तक
ससार वचनिका	१५० तक
रमल शास्त्र	१७३ तक

आगे जन्म कुण्डली आदि भी हैं ।

गुटका महत्वपूर्ण है ।

६१६६. गुटका सं० २९ । पत्रसं० ३७१ । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७२८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६८ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का संग्रह है ।

नाम ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	रचना सं०	पत्रसं०	**विशेष**
पार्श्वनाथरास	कपूरचन्द	हिन्दी	१६६७	३८-५६	—
नेमीसुर का रास	पुण्यरत्न	,,	—	६०-६४	६४ पद्य
जैनरास	—	,,	—	६५-८०	—
प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	,,	—	८१-१०१	—
त्रैलोक्य स्वरूप चौपई	सुमतिकीर्ति	,,	१६२७	१०१-११६	—
शील बत्तीसी	अकूमल	,,	—	—	पत्र स० नही लगी है
भविष्यदत्त कथा	ब्र० रायमल्ल	,,	—	११७-७३	—
नद बत्तीसी	विमल कीर्ति	,,	१७०६	१७४-१८१	—
निर्दोष सप्तमी कथा	ब्र० रायमल्ल	,,	—	१८१-८५	—
यशोधर चउपई	—	,,	—	१६५-२०६	—
		लिपिकाल	सं० १७२८	जीवनपुर मध्ये लिपिकृतं ।	
आदित्यवार कथा	भाउ कवि	,,	—	२२०-२२६	—

सीतासतु	भगोतीदास	हिन्दी पद्य	१६८४	२३०-२७० आषाढ सुदी ३	
ज्येष्ठ जिनवर कथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	१६२५	२७१-७४ सांभर में रचना की गयी थी	—
चन्दनमलयागिरि कथा	चन्द्रसेन	,,	—	२७५-८५	—
मृगीसंवाद	देवराज	,,	१६६३	२८६-३०१ चैत सुदी ९ रविवार	—
वसुधरि चरित्र	श्री भूषण	,,	१७०६	३०२-३२१	—
हनुमंत कथा	ब्र० रायमल्ल	,,	—	३२२-५५	—
पाशाकेवली	—	,,	—	३५६-६०	—
मालीरास	जिनदास	,,	—	३६१-६४	—
गौतम पृच्छा	—	,	—	३६५-३७१	—

सीता सतु—भगोतीदास

आदि भाग—

ऊँकार नमो धरि भाऊ, सुगति वरंगणि वर जगराऊ ।
सारद पद पकज सिर नाऊ जिह प्रसादि रिधिसिधि निधि पाऊ ।।

गुरु मुनि महिंदसेन भट्टारक, भव संसार जलधि जल तारक ।
तासु चरण नमि होत अनदो, बढइ बुधि जिम दुनिया चदो ।।

मध्य भाग—

सोरठा—

सीय न हुइ भय भीय करे रूपि रावण घणे ।
हरि करि सरहु विसाय भूत प्रेत वेताल निसि । ५६।।

चौपई—

खग्गु उपसर्गु करइ आभा, सो सुमरइ चिति लछिमनरामा ।
गइय रैनि रवि उग्यौ दिनेसू, हुइ निरास घरि गयो खगेसू ।।५० ।।

वालु पीडत तेल न लहिये, फणि मस्तकिमणि जिवतन गहिये ।
सतिय पयोहर को करि छावइ वहनि परसि तनि को जगि जीवइ ।।५८।।

अन्तिम—

बलि बिक्रम नृप करन सम सुखर सुभा सुजाण ।
अकबर नंदण अति वली सयल जगति तिस आण ।।६६।।

सोरठा—

देस कोसु गज बाजि जासु नमहि नृप छत्रपति ।
जहांगीर इक राजि सीता सतु मइ मनि कीया । ६७।।

गुरु गुण चंदुरिसिंदु बखानिए ।
सकल चन्दु तिहु पट्टि जगतमहि जानिए ।

तासु पट्टि जस धामु खिमागुण मंडणो ।
परु हा गुरु मुणि महिंद मेंण मैंणद्रुम खडणौ ॥६८॥

अडिल्ल—

गुरु मुनि महिंदसेंण भगौती, रिसि पद पकज रंग भगौती ।
कृष्णदास वनि तनुज भगौती, तुरिय गह्यौ व्रतु मनुज भगौती ॥६७॥
नगरि बूडिये वासि भगौती, जन्म भूमि चिरु ग्रासि भगौती ।
अग्रवाल कुल वस लगि, पडितपदि निरखी भमि भगौती ॥ ७०॥

चौपई—

जम्गनिपुर पुरपति अति राजइ, गाइ पौरि नित नौबति बाजइ ।
बसहिं महाजन धन धनवत, नागरि नारि पवर मतिवत ॥७१॥
मोतीहटि जिनभवनु विराजइ, पडिमा पास निरखि अघु भाजइ ।
श्रावक सगुन सुजान दयाल, पट् जिय जानि करहिं प्रतिपाल ॥७२॥
विनय विवेक देहिं रिसि दानु, पडित गुना करहिं सनमानु ।
करि करुणा निरधन धनु देही, अति प्रवीण जगमाहि जसु लेही ॥७३॥
जिह जिनहर चौ सघ निवासू, तह कवि भगत भगौतीदासू ।
सीता सतु तिनि कह्यौ बखानी, छद भेद पद सार न जानी ॥७४॥

दोहरा—

पढहिं पढावहिं मुनि मनहिं, लिखहिं लिखावहिं गोह ।
सुर नर नृप खग पदु लहइ, मुकति वरहिं हरि मोहु ॥७५॥

सोरठ—

बरसौ पावस मेहु बाजहु तूर अनद के ।
दपति करण सनेहु घर घर मगल गाइयो ॥७६॥
फुनि हा नवसतसइ वसु चारिसु सावत जानिये ।
साढि सुकल ससि तीज दिवस मनि आनिए ।
मिथुन रासि रवि जोइ चन्दु दूजा गन्यौ ।
परु हा कविस भगौतीदासि ग्रासि सीय सतु भन्यौ ॥६७७॥

इति श्री पद्म पुराणे सीता सतु सपूर्ण समापता ।
सवत् १७३० का दुतीक भाद्रपद मासे कृष्ण ।
पक्ष्ये एकादश्या गुरुवासारे लिप्यकृत महात्मा ।
जसा मुन कलला जोबनेर मध्ये ॥

मृगी संवाद—(वेष्टन सं० ५६८)

अथ मृगी सवाद लिख्यते—

दूहा—

सकल देव सारद नमौ प्रणामु गौतम पाइ ।
राम भणौ रलिया मणौ, सहि गुरु तणौ पसाइ ॥१॥

जबू द्वीप सुहावणौ, महिधर मेर उतंग ।
जहिये दक्षिण दिसा भली भरथ क्षेत्र सुचग ।।२।।
नगर निरोपम तिहां बसै कललीपुर विख्यात ।
देखी राजा नट नृपण, किती कहू अवदात ।।३।।

मध्य भाग—

कोई नर एक जिमावै जाति, सहु कोई बसै एकणि पांति ।
परूसण हारी भ्यौरा करै, तिहकै पायि सूर्य थर हरै ।।११३।।
साचा माणस नै देई आल, माथै मारै नान्हा बाल ।
सासू सूसरा नै जो दमै, सा नारी बागुलि होइ भमै ।।११४।।
घरि आवै चो निरधन पणौ, चित्तन वो लवै स्वामी तणौ ।
सुखै हर्ष दूखै सताप, रहुनि लागै तिह नो पाप ।।११५।।

अन्तिम पाठ—

इहा थे मरि कहा जाइसी, त्यौ भाजै सन्देह ।
केवली भाषा सभली, इहां थे मरि सब एह ।।२४७।।
जप तप सजम आदरौ टाल्यौ भैयै दुख ।
मुक्ति मनोरथ पामिसी, लक्ष्मी बहुला सुख ।।२४८।।
सवत सोलसै तेसढै चैत्रसुदि रविवार ।
नवमी दिन भला भावस्यौ रास रच्यौ सुविचार ।।२४९।।
बीजागच्छ मांडण पवर पास सूर देवराज ।
श्री घननदन दिन दिने, देइ आसीस सुकाज ।।२५०।।
इति मृगी सवाद कथा समाप्त ।।

सवत् १७२३ का वर्षे मिति वदि ५ शुक्रवार लिखितं पाडे वीरू कालाडेहरामध्ये ।

वसुधरि चरित्र (वेष्टन स० ५६८)

आदि भाग—

ऊंनमो वीतरागाय नम·

दोहडा—

सारद सामणि पय नमौ गणपति लागौ पाय ।
कहिसि कथा रलियावणी, गोतम तणा पसाय ।।१।।
जबूदीप सुहावणौ, लख जोजन विसतार ।
मध्य सुदरसण मेर है, दिखण दिसा सुखसार ।।२।।
भरतक्षेत्र जन भर तहां दिखण देस सुविसाल ।
वन वापी जिन भवन अति, नदी तीर सुभताल ।।३।।
कुसम नगर अति सोमतो कोट उतंग आवास ।
बाग वाप बहु बावडी तहां भोगी लील विलास ।।४।।

मध्य भाग—

अति आणद हूवो तिणवार, आणद दोऊ वीर आपार ।
आय पहुता तव तर वारि, गावै गीत सुभग नर नारि ।
बाजै बाजा बहु अतिसार, अ गि उवटणा करै कुमारि ।
जल सनानि जवादि अवीर, अरक उद्योत तिसो वसु धीर ।।
भोजन भगति भई सुमराइ, विजन वृद वहुत बणाय ।
मोदक मेवा मिठाइ पकवान, जीमै बाला वृद्ध जवान ।।
सीतल जल सुवास सवाद, पीवत तृषा अोर जाय विषाद ।।
त्रिपत्या इन्द्री तत्पर वैण, नर नारी स्नेह रस नैण ।।

अन्तिम भाग—

बाग वाप नदि ताल सुभ, शुभ श्रावग धर्म चेत ।
पोसो सामायक सदा, देव पूज गुह हेत ।
अक्षर मात न जाणही हासि तजो कविराव ।
सुणी कथा तैसी रची, लील कतूहल भाव ।
सतरासै निडोतराय कातिग सुभ गुरुवार ।
सेत सत्तमी कथा रची पढत सुणत सुखसार ।
एकसउ तरेपन दोहडा सोरठ ग्यारह सार ।
इक्यासी अर एक सत सुध चउपई सुढार ।
इति सुवरि चरित्र समाप्त ।

६१६७. गुटका सं० ३०. । पत्र स० ३६६ । आ० ६½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६६ ।

विशेष—निम्न पूजाओं का सग्रह है—

त्रेपन क्रिया पूजा
कर्मदहन पूजा
धर्म चक्र पूजा
बृहद् षोडशकारण पूजा
दशलक्षण पूजा
पद्मावती पूजा आदि

६१६८. गुटका सं० ३१ । पत्रस० ४२० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा- हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७० ।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र कथा आदि का संग्रह है ।

६१६९. गुटका सं० ३२ । पत्रस० १२५ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७१ ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

पारसनाथ की सहेलो—ब्रह्म नाथू

नेमिनाथ का बारहमासा—हर्षकीर्ति

देवेन्द्रकीर्ति जखडी —

६१७०. गुटका सं० ३३ । पत्रसं० ३७ । ग्रा० ५×४ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७२ ।

विशेष—चौबीसठाणा चर्चा ग्रादि का संग्रह है ।

६१७१. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ११८ । ग्रा० १५×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६३ ।

विशेष—

यादवरास	पुण्यरत्न	भाषा हिन्दी	पत्र ६–१३
दानशील तप भावना	समयसुन्दर	,,	१०१

इनके ग्रतिरिक्त ग्रन्य स्तोत्र एव पदों ग्रादि का सग्रह है।

६१७२ गुटका स० ३५ । पत्र सं० १८४ । ग्रा० ६×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७४ ।

विशेष—

बावनी	छीहल	हिन्दी	रचना स० १५८४	५३ पद्य
स्वप्नशुभाशुभ विचार	—	,,	—	पत्र ४६-५०
चतुर्विंशति जिनस्तुति	—	,,	—	५०-६५
बावनी	बनारसीदास	,,	—	१७२-११८

छीहल की बावनी का ग्रन्तिम पद्य:—

चौरासी ग्रागले सोज पनरह संवत्सर ।
शुक्लपक्ष ग्रष्टमी मास कातिग गुरु मासर ।
हिरदै उपनी बुधे नाम श्रीगुरु कौ लीन्हौ ।
सारद तरणो पसाइ कवित संपूरण कीन्हौ ।
तहा लगि वस नाथ सुतन ग्रग्रवाल पुर प्रगट रवि ।
बावनी वसुधा विस्तरी कर ककरण छीहल कवि ।।

६१७३. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ४२ । ग्रा० ६×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७५ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा का संग्रह है ।

६१७४. गुटका सं० ३७ । पत्रसं० ५७ । ग्रा० ८½×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल सं १७४८ पूर्ण । वेष्टनसं० ६७६ ।

विशेष—ग्रबजद केवली पाशा है ।

६१७५. गुटका सं० ३८ । पत्रसं० १२ । ग्रा० ११×६ इन्च । भाषा-हिन्दी- । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० ५७७ ।

विशेष—१५६ पद्य हैं। बीच-बीच मे चित्रों के लिये स्थान छोड रखा हैं मधुमालती कथा है।

६१७६. गुटका सं० ३६। पत्र सं० ३०६। ग्रा० ६×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी-संस्कृत। ले०काल १८३० श्रावण सुदी। पूर्ण। वेष्टन स० ५७८।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है। बीच के बहुत से पत्र खाली है।

६१७७. गुटका सं० ४०। पत्रसं० २६४। ग्रा० ५×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ५७६।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

६१७८. गुटका सं० ४१। पत्रस० १० से २६४। ग्रा० ७½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १७६५ चैत सुदी १०। अपूर्ण। वेष्टन स० ५८०।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रहहै—

धर्म परीक्षा	हिन्दी	मनोहर सोनी
ज्ञानचिन्तामणि	,,	मनोहरदास
चौबीस तीर्थंकर परिचय	,,	—
पंचाख्यान भाषा	,,	—
(मित्र लाभ एव सुहृद् भेद)	,,	—
प्रति सटीक है।		—

६१७९. गुटका सं० ४२। पत्रसं० ३११। ग्रा० ८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५८१।

विशेष—गुटके में पूजाएं स्तोत्र, एवं पद्य ग्रादि का सग्रह है।

६१८०. गुटका सं० ४३। पत्रसं० १५०। ग्रा० ६×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५८२।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

सम्यक्त्वकौमुदी, वृषभजिनस्तोत्र, प्रश्नोत्तररत्नमाला(शकराचार्य), षोडशनियम एव अन्य पाठ है। कुछ पाठ जैनतर ग्रथो मे मे भी है।

६१८१. गुटका स० ४४। पत्रसं० १७८। ग्रा० ५×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५८३।

विशेष—पद स्तोत्र एव पूजा पाठ ग्रादि का सग्रह है।

६१८२. गुटका सं० ४५। पत्र स० ६८। ग्रा० ६½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल स० १६४१। पूर्ण। वेष्टन स० ५८४।

विशेष—यत्रों एव मत्रों का संग्रह है। मुख्य मत्र शत्रूचाटन, सतानोपचार, गर्भबन्धन मत्र, वशीकरण, शत्रुकीलन, सर्पमत्र, बालक के पेटवध, ग्राम्वो की वशीकरण मत्र, शाकिनी यंत्र, शल्यकोपचार ग्रादि मत्र दिये हुये है।

६१८३. गुटका सं० ४६। पत्रस० २६०। ग्रा० ७×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५८५।

विशेष— पूजा एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६१८४. गुटका सं० ४७ । पत्रसं० ४२ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८६ ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा, अमरकोश एव आयुर्वेदिक नुस्खे आदि का सग्रह है ।

६१८५. गुटका सं० ४८ । पत्रसं० ३६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८७ ।

विशेष—नंददास की मानमजरी है ।

६१८६. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ५० । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८८ ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है ।

नीतिशतक	हिन्दी	सवाई प्रतापसिंह
शृंगार मजरी	,,	सवाई प्रतापसिंह

६१८७. गुटका सं० ५० । पत्रस० १४२ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८९ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र हिन्दी टीका सहित है । राजस्थानी भाषा है ।

६१८८. गुटका स० ५१ । पत्रस० ६८ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५९० ।

विशेष — पूजा एवं स्तोत्र सग्रह है ।

६१८९. गुटका स० ५२ । पत्रस० ११० आ० ५×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५९१ ।

विशेष —पूजा पाठ सग्रह है । गुटका जीर्ण है ।

६१९०. गुटका सं० ५३ । पत्र स० ६२ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८२० भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५९२ ।

निम्न प्रकार संग्रह है—

ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	भाषा	पद्य स०	विशेष
आराधाना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	५४	—
पोसह रास	ज्ञानभूषण	,,	—	—
मिथ्यादुक्कड़	ब्र० जिणदास	,,	२४	—
धर्मतरु गीत	पं० जिनदास	,,	—	—
जोगीरास	जिणदास	,,	४१	—
द्वादशानुप्रेक्षा	प० जिनदास	,,	१२	—
,,	ईसर	,,	१२	—
पाणीगालण रास	ज्ञानभूषण	,,	३३	—
सीखामण रास	—	,,	१३	—

चहुंगति चुपई	—	हिन्दी	५२	—
नेमिनाथरास	अभयचन्द	,,	११७	—
संबोधन सत्तावणी भावना	वीरचन्द	,,	६७	—
दोहाबावनी	पं० जिणदास	,,	—	—
जिनवर स्वामी विनती	सुमतिकीर्ति	,,	२३	—
गुणठाणागीत	ब्रह्मवर्द्ध न	,,	१७	—
सिद्धचक्रगीत	अभयचन्द्र	,,	—	—
परमात्म प्रकाश	योगीन्दु	अपभ्रंश	१०१	—
ज्येष्ठ जिनवरनी विनती	ब्र० जिनदास	,,	१४	—
त्रेपन क्रियागीत	शुभचन्द्र	,,	७	—
मुक्तावलीगीत	—	,,	१२	—
आलोचना गीत	शुभचन्द्र	,,	२३	—
आचार्य रत्नकीर्ति वेलि	—	,,	—	—
पद सग्रह	—	,,	विभिन्न कवियो के पद	

६१६१. गुटका सं० ५४ । पत्रस० ६२ । आ० ६×५½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६३ ।

निम्न संग्रह है—

ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	भाषा	पद्य सं०	विशेष
गुर्वावलि	—	हिन्दी	४४	—
श्रेणिक पृच्छा	भ० गुणकीर्ति	,,	७२	—
चिंतामणि पार्श्वनाथ विनती	प्रभाचन्द्र	,,	१२	—
भावना विनती	ब्र० जिनदास	,,	—	—
गुणवेलि	भ० धर्मदास	,,	२८	—
जिनाष्टक	—	,,	७२	—
ऋषिमडल स्तोत्र	—	सस्कृत	—	—
रोहिणीव्रत कथा	ब्र० ज्ञानसागर	हिन्दी	—	—

६१६२. गुटका सं० ५५ । पत्रस० ७० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । ले०काल स० १६५५ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६४ ।

विशेष—सवैया बावनी एव सुभाषित ग्रन्थ का सग्रह है ।

६१६३. गुटका सं० ५६ । पत्र स० ११५ । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६५ ।

विशेष—स्तोत्र, जोगीरासा, नाममाला आदि का सग्रह है ।

६१६४. गुटका सं० ५७ । पत्र स० १२५ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६६ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

नेमिनाथ रास	मुनि रत्न कीर्ति	हिन्दी
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत
कल्याण मन्दिर	कुमुदचन्द	,,
एकीभाव	वादिराज	,,
विषायहार	धनंजय	,,
नेमिनाथ वेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी
आदिनाथ विनती	सुमतिकीर्ति	,,
मनकरहा जयमाल	—	,,

६१६५. गुटका सं० ५८ । पत्रसं० २०३ । आ० ८३/४×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

कालावलि	—	—	—
चन्द्रगुप्त के स्वप्न	ब्र० राममल्ल	हिन्दी	—
चौबीस ठाणा	—		—
छियालीस ठाणा	—	,,	—
कर्मों की प्रकृतिया	—	,,	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	—
पचस्तोत्र	—	,,	—
प्रद्युम्न रास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	ले० काल स १७०४
सुदर्शन रास	,,	,,	र० काल स० १६३७

६१६६. गुटका सं० ५६ । पत्र स० ११४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १६५७ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५६८ ।

निम्न प्रकार संग्रह है—

संक्षेप पट्टावलि	—	
मूत्र परीक्षा	—	ले० काल सं० १८२६
काल ज्ञान	—	—
उपसर्गहर स्तोत्र	—	—
भक्तामर स्तोत्र	आ० मानतुंग	—
आयुर्वेद के नुस्खे	—	—

६१६७. गुटका सं० ६० । पत्रसं० १५२ । आ० ६×५१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६६ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा एवं अन्य पाठों का संग्रह है ।

६१६८. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० १४० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले० काल सं० १८६० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०० ।

विशेष—आयुर्वेद शास्त्र भाषा है। ग्रन्थ अच्छा है।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री दुजुलपुराणे बैद्य शास्त्र भाषा हकीम फारसी संस्कृत ममुत विरचते चुरन समापिता।

६१६६. गुटका सं० ६२। पत्रसं० ३५। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र०काल ×। ले०काल स० १६३६। पूर्ण। वेष्टनसं० ७५१।

विशेष—पं० खुशालचन्द काला द्वारा रचित व्रत कथा कोष मे से दशलक्षण, शिखरजी की पूजा, कथा एवं सुगन्ध दशमी कथा है।

६२००. गुटका सं० ६३। पत्रसं० १७५। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ७५२।

निम्नपाठों का संग्रह है—

धर्मबुद्धि पाप बुद्धि चौपई	जिनहर्ष	हिन्दी	र० काल स० १७४२
शालिभद्र चौपई	जिनराज सूरी	,,	१६७८
चन्द्रलेहा चौपई	रामबल्लभ	,,	१७२८ आसौज सुदि १०
हसराज गच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	,,	ले० काल स० १८६२।

भुवनकीर्ति के शिष्य पं० गगाराम ने प्रतिलिपि की थी।

कानडरे कठियारा।	—	,,	१७४७
मृगी सवाद चौपई	—	,,	अपूर्ण

६२०१. गुटका सं० ६४। पत्रस० १५६। आ० ७×५½ इञ्च भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७५३।

विशेष—पूजा स्तोत्र एव पदों आदि का सग्रह है

६२०२. गुटका सं० ६५। पत्रसं० १६। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले०काल ×। पर्ण वेष्टन स० ७५५।

विशेष—व्याउला शावद समूह सग्रह है। धातु एव शब्द लिखे गये है।

६२०३. गुटका सं० ६६। पत्र स० ८४। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १८४४। पूर्ण। वेष्टन स० ७५६।

विशेष—बखतराम साह द्वारा रचित मिथ्यात्व खडन नाटक है।

६२०४. गुटका स० ६७। पत्रस० १४२। आ० ८½×५½ इच। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७५७।

विशेष—आयुर्वेदिक नुस्खो की महत्वपूर्ण सामग्री है।

६२०५. गुटका सं० ६८। पत्र स० १६५। आ० ६½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल सं० १६४१। पूर्ण। वेष्टन स० ७५८।

विशेष—अनुभूति स्वरूपाचार्य की सारस्वत प्रक्रिया है।

प्रशस्ति— निम्न प्रकार है—

संवत् १६४१ वर्षे मादवा सुदी १३ सोमवासरे घनिष्ठानक्षत्रे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे तदाम्नाये भ० पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द देवा द्वितीय शिष्य रत्नकीर्तिदेवा तत्पट्टे मण्डलाचार्य श्री भुवनकीर्तिदेवा तत् शिष्य श्री जयकीर्तिदेवा सारस्वत प्रक्रिया लिखापितं । लिखत डालूझाझरी छाजूका ।

६२०६. गुटका सं० ६९ । पत्रस० ६६ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५९ ।

विशेष—निम्न प्रकार सग्रह है । कल्याण मन्दिर भाषा, नेमजी की विनती एव कानड कठियारानी चौपई आदि का संग्रह है ।

६२०७. गुटका स० ७० । पत्रसं० २७ । आ० ७ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६० ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुस्खो का सग्रह है ।

६२०८. गुटका सं० ७१ । पत्रस० ३२२ । आ० ५½ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६१ ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, स्तोत्र पद्मावती स्तोत्र, कथाये, मुक्तावलीरास (सकलकीर्ति) सोलहकारण रास (सकलकीर्ति) धर्मपरीक्षा, गौतमपृच्छा आदि का सग्रह है ।

६२०९. गुटका स० ७२ । पत्र सं० ६८ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प्राकृत । ले०काल स० १८५३ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६२ ।

विशेष—सामायिक पाठ एव आप्तमीमासा (मूल) आदि का सग्रह है ।

६२१०. गुटका सं० ७३ । पत्रस० ५० । आ० ५ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७६३ ।

विशेष—व्रत विधान, एव त्रिपचाशतक्रिया व्रतोद्यापन तथा क्षेत्रपाल विनती है ।

६२११ गुटका स० ७४ । पत्रस० ३० । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६८ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७६४ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

शत्रुंजय मडल, आदिनाथ स्तवन (पासचन्द सूरि) है ।

६२१२. गुटका सं० ७५ पत्रसं० २९ । आ० ५ × ३ इञ्च । भाष—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६५ ।

विशेष—सुभाषित पद्यों का संग्रह है । पद्य सं० १९६ है ।

६२१३. गुटका सं० ७६ । पत्रस० ५१ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६६ ।

विशेष—निम्न पद्यों का संग्रह है—

नेमिनाथ स्तवन	रूपचन्द	हिन्दी
विनती	रामचन्द्र	"

आत्मसंबोध	—	हिन्दी
राजुलय पच्चीसी	—	,,
विनती	बालचन्द	,,
उपदेशमाला	—	,,
राजुलकी सज्झाय	—	,,

६२१४. गुटका सं० ७७ । पत्रसं० १०३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो आदि का सग्रह है ।

६२१५. गुटका सं० ७८ । पत्रसं० १७० । आ० ५½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६९ ।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का संग्रह है देवसिद्ध पूजा, सोलहकारण पूजा, कलिकुंड पूजा, चिन्तामरिण पूजा, नन्दीश्वर पूजा, गुरावली पूजा, जिनसहस्र नाम (जिनसेनाचार्य) एव अन्य पूजाए ।

६२१६. गुटका सं० ७९ । पत्रसं० १६२ । आ० ३½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७१ ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है—

स्तभनक पार्श्वनाथ नमस्कार	सस्कृत	अभयदेव सूरि
अजितशांति स्तवन	,,	नन्दिषेरा
अजित शाति स्तवन	,,	—
भयहर स्तोत्र	,,	—
आदिसप्त स्मरण	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र	सस्कृत	मानतुगाचार्य
गौत्तम स्वामी रास	हिन्दी	र०काल स० १४१२
नेमिनाथ रास	,,	—
नेमीश्वर फाग	,,	—

(श्वेताबरीय पाठों का सग्रह है)

६२१७. गुटका सं० ८० । पत्रसं० १४२ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । पूर्ण । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७२ ।

विशेष—महाकवि धनपाल की भविसय कहा सग्रहीत है इसकी लिपि स० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ५ को हुई थी ।

मेदनीपुर शुभस्थानो मडलाचार्य धर्मकीर्ति देवाम्नाये खन्डेलवालान्वये पाटनी गोत्रे आर्यका श्री शीलश्री का पठनार्थ ।

६२१८. गुटका सं० । पत्रसं० ८-१०२ । आ० ६½×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० स० ७७३ ।

विशेष—हिन्दी के सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६२१६ गुटका सं० ८२ । पत्रसं० १२४ ग्रा० ८½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७४ ।

विशेष—पं० दीपचन्द रचित ग्रात्मवलोकन ग्रंथ है ।

६२२०. गुटका सं० ८३ । पत्रसं० २४५ । ग्रा० ८×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं०१६५० चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७५ ।

विशेष – निम्न पाठों का सग्रह है—

जिनसहस्रनाम	संस्कृत	ग्राशाधर
पच स्तोत्र	,,	—
रत्नकण्ड श्रवकाचार	,,	समन्तभद्र
तत्वार्थसूत्र	,,	उमास्वामी
जीवसमास	हिन्दी	—
गुणस्थान चर्चा	,,	—
चौबीस ठाणा चर्चा	,,	—
भट्टारक पट्टावली	,,	—
खण्डेलवाल श्रावक उत्पत्ति वर्णन	,,	—
व्रतो का ब्योरा	,,	—
पट्टावली	,,	—

६२२१. गुटका स० ८४ । पत्रस० ८६ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल× । पर्ण । वेष्टनस० ७७६ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६२२२. गुटका सं० ८५ । पत्रस० ४६ । ग्रा० ६½×५ इञ्च । भाषा–पुरानी हिन्दी । ले०काल स० १५८० चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह—

उपदेशमाला	धर्मदासगरिण
शीलोपदेश माला	जर्यासह मुनि
संबोह सत्तरि	जयशेखर
सबोध रसायरण	नयचन्द सूरि

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

सवत् १५८० वर्षे चैत्र बुदी ६ तिथौ वा० श्रीसागर शिष्य मु० रत्नसागर लिखतं श्री ब्राह्मणे स्थानतः श्री हीरु कृते एषा पुस्तिका कृता ।

६२२३. गुटका स० ८६ । पत्रस० ७८ । ग्रा० ६½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८१७ द्व० सावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७८ ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रहहै—

ग्रायुर्वेदिक नुस्खे	—	हिन्दी	पत्र ११२-

जिनपंजर स्तोत्र	कमलप्रभ सूरि	संस्कृत	१३
शांतिनाथ स्तोत्र	—	,,	१४-१५
वर्द्धमान स्तोत्र	—	,,	१५
पार्श्वनाथ स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	,,	१६-१७
चौबीस तीर्थंकर स्तवन	—	हिन्दी	१८२४
आदित्यवार कथा	—	,,	२५-४१
पार्श्वनाथ चिन्तामणि रास	—	,,	४५-४८
उपदेश पच्चीसी	रामदास	,,	४९-५३
राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल	,,	५४-६२
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	,,	६२-७०

६२२४. **गुटका सं० ८७** । पत्रस० ५४ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले०काल स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७९ ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठो का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	सस्कृत
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी
आदित्यवार कथा	मु० सकलकीर्ति	हिन्दी (र०काल स १७४४)
कृपणपच्चीसी	विनोदीलाल	हिन्दी

विशेष—आदित्यवार कथा आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

अथ आदित्यवार व्रत की कथा लिखते—
प्रथम सुमरि जिनवर चौबीस, चौदहसै त्रेपन जेमुनीस ।
सुमरो सारद भक्ति अनन्त, गुरु देवेन्द्रकीर्ति महंत ।
मेरे मन इक उपज्यो भाउ, रविव्रत कथा कहन को चाउ ।
मै तुकहीन जु अक्षर करौ तुम गुनीवर कवि नीकै धरौ ।
×   ×   ×

अन्तिम पाठ—

हा जू संवत् विक्रमराइ भने सत्रहसै मानौ ।
ता ऊपर चवालीस जेठ सुदी दशमी जानौ ।
वारु जु मगलवार हस्तुन छितु जु परीयौ ।
तब यह रविव्रत कथा मुनेन्द्र रचना सुभ करीयौ ।
बारबार हौ कहा कहौ रविव्रत फल जु अनन्त ।
धरनेद्रं प्रभु दया करी दीनी लछि अनन्त ॥१०६॥
गर्ग गोत अग्रवाल तिहु नगरी के जो वासी ।
साहुमल को पूतु माहु भाऊ बुधि जुभासी ।

तिन जु करी रविव्रत कथा भली तुकं जु मिलाई ।
तिनिकं बुधि मैं कीजियौ सोवे पूरे गुनवंत ।
कहत मुनिराइजू, सकलकीर्ति उपदेश सुनौ चतुर सुजानजू ।।१०७।।

इति श्री आदित्यवार व्रत की कथा सपूर्ण समाप्त । लिखितं हरिकृष्णदास पठनार्थ लाला हीरामनि ज्येष्ठ बुदी ६ सं० १८३४ का ।

६२२५. गुटका स० ८८ । पत्रस० ४६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८० ।

विशेष—प्रस्ताविक दोहा, तीर्थंकर स्तुति, भट्टारक विजयकीर्ति के शिष्यों का ब्योरा, भट्टारक पट्टावली एवं पद सग्रह आदि है ।

६२२६. गुटका सं० ८६ । पत्र स० ४-२६ । आ० ८×६ इञ्च ।भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७८१ ।

विशेष—शृंगार रस के ३६ से ३७६ तक पद्य है ।

६२२७. गुटका सं० ६० । पत्र स० ६० । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७८२ ।

विशेष—सोलहकारण भावना, षट्द्रव्य विवरण, पट्लेखा गाथा, नरक विवरण, त्रैलोक्य वर्णन, रामाष्टक, नेमिनाथ जयमाल, नदीश्वर जयमाल, नवपदार्थ वर्णन, नीतिसार (समय भूषण), नदिताढ्य छद त्रिभगी, प्रायश्चित पाठ आदि पाठो का सग्रह है ।

६२२८. गुटका सं० ६१ । पत्रस० ७६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८४ ।

विशेष—ब्र० रायमल्ल की हनुमत कथा है ।

६२२६. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १०७ । आ० $७\frac{१}{२}$×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७८५ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का सग्रह है ।

६२३०. गुटका सं० ६३ । पत्रस० ८५ । आ० ८×$५\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८६ ।

विशेष—अनेक कवियो के पदों का सग्रह हैं ।

६२३१. गुटका सं० ६४ । पत्रस० १३० । आ० $५\frac{१}{२}$×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८७ ।

विशेष—सस्कृत एव हिन्दी मे सुभाषित पद्यो का सग्रह है ।

६२३१. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० २-३४ । आ० $५\frac{१}{२}$×५ इंच । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८८ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खों का संग्रह है ।

६२३३. गुटका सं० ६६ । पत्र स० १२६ । आ० ६×$४\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७५० आसोज सुदी १ । । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८६ ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है :—

पंचसंधि (प्रक्रिया कौमुदी) समयसुन्दर के पद एवं दानशीलतपभावना नेमिनाथ बारहमासा, ज्ञानपच्चीसी (बनारसीदास) क्षमाछत्तीसी (समयसुन्दर) एवं विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है गुटका संग्रह की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

६२३४. गुटका सं० ९७। पत्र सं० ३१२। आ० ६$\frac{3}{4}$×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी-संस्कृत। **ले०काल** सं० १७०२ माह बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ७९०।

विशेष—जोबनेर में प्रतिलिपि की गई थी। निम्न रचनाओं का संग्रह है।

पचस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, गुणस्थानचर्चा जोगीरासा, बड़ा कल्याणक, आराधनासार, चूनड़ीरास (विनयचन्द्र), चौबीसठाणा, कर्मप्रकृति (नेमिचन्द्र) एव पूजाओं का संग्रह है।

६२३५. गुटका सं० ९८। पत्रसं० २२९। आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७९२।

विशेष—ब्र० रायमल्ल की हनुमत कथा है।

६२३६. गुटका सं० ९९। पत्रसं० १८०। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। **ले०काल** स० १६४२ फाल्गुण सुदी १ पूर्ण। वेष्टन स० ७९३।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

प्रतिक्रमण	—	पत्र सं० १-८१
गुर्वावली	—	पत्र सं० ८२-८५
आराधनासार	—	—
मेघकुमारगीत (पूनो)	—	—

इत्यादि पाठो का संग्रह है।

६२३७. गुटका सं० १००। पत्रस० १८५। आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल स० १५७६ माघ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ७९४।

विशेष—भयरोठा ग्राम में लिखा गया था। निम्न पाठों का संग्रह है—

स्थूलभद्र फागु प्रबन्ध	—	प्राकृत	२७ गाथा
उपदेश रत्नमाला	—	,,	२५ ,,
द्वादशानुप्रेक्षा	—	,,	४५ ,,
परमात्मप्रकाश	योगीन्दु	अपभ्रंश	३४२ पद्य
			(ले० काल स० १५६१ आषाढ बुदी १)
प्रायश्चितविधि	—	संस्कृत	—
दशलक्षण पूजा	—	अपभ्रंश	—
सुभाषित	सकलकीर्ति	संस्कृत	३९० पद्य
द्वादशानुप्रेक्षा	जिनदास	हिन्दी	—

६२३८. गुटका सं० १०१। पत्रस० ३१६। आ० १२×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७९५।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्रों के अतिरिक्त निम्न महत्वपूर्ण सामग्री और है—

अष्टाह्निका कथा	विश्वभूषण	
अष्टाह्निका रास	विनयकीर्ति	
अनन्तचतुर्दशी कथा	भैरू	र० काल सं० १७८७
चौरासीजाति की जयमाला	ब्र० गुलाल	
दशलक्षण कथा	ओसेरीलाल	र० काल सं० १७८८
आदित्यवार कथा	—	
पुष्पाञ्जलि कथा	आचार्य गुणकीर्तिका शिष्य सेवक	—
सुदर्शन सेठ कथा	नन्द	र० काल १६६३
मृगांकलेखा चउपई	भानुचन्द	र० काल सं० १८२५
सम्यक्त्व कौमुदी	—	—
चौरासी जाति की जयमाल	ब्र० गुलाल	

आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

दोहा—जैन धर्म त्रेपन क्रिया दयाधर्म संयुक्त ।
इक्ष्वाक के कुल वंस मैं तीन ज्ञान उतपत्त ।।
भया महोछव नेम को जूनागढ गिरिनार ।
जात चौरासी जैनमत जुरे छोहनी चार ।।

अन्तिम पाठ—

प्रगटे लछमी सोई धर्म लगै ।
करि जग्य विधान पुराण अरु दान निमित्त धनै खरचै अरु वढै ।
सुभ देहरे जंत्र सुबिंब प्रतिष्ठा सुभ मंत्र जत्र सुमत्र रवजै ।।
अथवा कोई कारण मगल चारण विवाह कुटंब अनत पगै ।
कहि ब्रह्म गुलाल गडै लसो सौ प्रगटै लक्ष्मी सोई धर्म लगै ।।
इति श्री चौरासी जाति की जयमाल सम्पूर्ण ।

६२३६. **गुटका सं० १०२** । पत्रसं० ५४ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७६६ ।

विशेष—महापुराण चउपई (गंगादास) एव अन्य पाठों का संग्रह है ।

६२४०. **गुटका सं० १०३** । पत्र सं० ३६ से ८४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६७ ।

विशेष—दारुण सप्तक एव महापुराण में से अभिकार कल्प है ।

६२४१. **गुटका सं० १०४** । पत्रसं० २२८ ।आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-प्राकृत—सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६८ ।

विशेष — मुख्यतः निम्न पाठों का सग्रह है ।

भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी
वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	"

६२४२. गुटका सं० १०५ । पत्रस० ३६ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८४४ सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

कृपणजगावण (ब्र० गुलाल) सामयिक पाठ तथा जोगारास आदि ।

६२४३. गुटका सं० १०६ । पत्रस० १४६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८०० ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

मधुमालती कथा	चतुर्भुजदास	हिन्दी पद्य स० ६१६
ध्रमंपालरी बात		ले०काल शक स० १८३६
बीरविलास	नथमल	हिन्दी
सावित्री कथा	—	हिन्दी गद्य
		ले०काल शक स० १८४५

६२४४. गुटका सं० १०७ । पत्र सं० २० से ३६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८०१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

वैद्यमनोत्सव कथा, मृगकपोत कथा एव चन्दनमलयागिरि कथा ।

६२४५. गुटका सं० १०८ । पत्र स० १४-१२८ । आ० ५×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०२ ।

विशेष—सामान्य पाठों के अतिरिक्त निम्न पाठो का सग्रह है—

परमात्म प्रकाश	योगीन्दु	
सप्ततत्वगीत	—	
चउदह गुणगीत	—	
बाहुबलि गीत	कल्याणकीर्ति	
नेमिनाथ बेलि	ठक्कुरसी	
पंचेन्द्रीबेलि	ठक्कुरसी	
पद	ठक्कुरसी	
दप	बूचा	
बमणां गीत	—	
धर्मकीर्ति गीत	—	
भुवनकीर्ति गीत	—	
विशालकीर्ति गीत	चेल्ह	
जसकीर्ति गीत	—	र०काल (सं० १६६०)

नेमीश्वर राजुल गीत	रत्नकीर्ति	—
जयकीर्ति गीत	—	—

६२४६. **गुटका सं० १०६** । पत्रसं० ११८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७५४ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०३ ।

विशेष—रविव्रत कथा (भाउ) पंचेन्द्रीवेलि, एव कक्का बत्तीसी आदि पाठों का संग्रह है ।

६२४७. **गुटका सं० ११०** । पत्रसं० ४० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०४ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६२४८. **गुटका सं० १११** । पत्रसं० १५२ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०५ ।

विशेष—पूजाएं, स्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, कर्मप्रकृति विधान (हिन्दी) आदि पाठों का संग्रह है ।

६२४९. **गुटका सं० ११२** । पत्र सं० ६० । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८०६ ।

विशेष—गुटका जीर्ण है । आयुर्वेदिके नुस्खों का संग्रह है ।

६२५०. **गुटका सं० ११३** । पत्र सं० ७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८०७ ।

विशेष—धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई एव ज्योतिससार भाषा का सग्रह है ।

६२५१. **गुटका स० ११४** । पत्रस० ६३ । आ० ८×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७६७ पौष सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ८०८ ।

विशेष—भूधरदास कृत पार्श्वपुराण है ।

६२५२. **गुटका सं० ११५** । पत्र सं० ६४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०६ ।

विशेष—सामान्य चर्चाओ के अतिरिक्त २५ आर्यदेशो के नाम एव अन्य स्फुट पाठ हैं ।

६२५३. **गुटका स० ११६** । पत्रस० १७४ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८१० ।

विशेष—बनारसीविलास, समयसार नाटक, सामायिकपाठ भाषा तथा भक्तामर स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६२५४. **गुटका सं० ११७** । पत्रस० १३८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८१२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८११ ।

विषय—बनारसीदास कृत समयसार नाटक तथा अन्य पाठ विकृत लिपि में हैं ।

६२५५. **गुटका सं० ११८** । पत्रसं० ५५० । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१२ ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

सहस्रगुणित पूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत
सोलहकारण पूजा	—	"
दशलक्षण धर्म पूजा	—	"
कलिकुण्ड पूजा	—	"
कर्मदहन पूजा	शुभचन्द्र	"
धर्मचक्र पूजा	—	"
तीस चौबीसी पूजा	शुभचन्द्र	"

इनके अतिरिक्त प्रतिष्ठा सम्बन्धी सामग्री भी हैं।

६२५६. **गुटका सं० ११६** । पत्र सं० १४६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८१३ ।

विशेष—सामान्य पूजा स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

६२५७. **गुटका सं० १२०** । पत्रसं० ४१ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१४ ।

विशेष — दर्शन पाठ, कल्याण मन्दिर स्तोत्र एवं समाधान जिन वर्णन आदि पाठों का संग्रह है ।

६२५८. **गुटका सं० १२१** । पत्रसं० २४ । आ० ५½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१५ ।

विशेष—कष्टावलि, गतवस्तु ज्ञान, छींकविचार, कालगरण एवं तिथि मंत्र आदि है ।

६२५९. **गुटका सं० १२२** । पत्र सं० ८६ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१६ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है।

६२६०. **गुटका सं० १२३** । पत्रसं० १६२ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६७ ज्येष्ठ बुदी १३ पूर्ण । वेष्टन सं० ८१७ ।

विशेष—नाटक समयसार (बनारसीदास) तत्वार्थ सूत्र, श्रीपाल स्तुति आदि का संग्रह है ।

६२६१. **गुटका सं० १२४** । पत्र स० १५७ । आ० ६×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८१८ ।

विशेष—गुटके में स्तोत्र, अक्षरमाला, तत्वार्थसूत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

६२६२. **गुटका सं० १२५** । पत्रस० १२६ । आ० ७½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२० ।

विशेष—जिनसहस्रनाम (आशाधर) एवं अंकुरारोपण, सकलीकरण विधान तथा अन्य पाठों का संग्रह है ।

६२६३. **गुटका सं० १२६** । पत्र सं० १५३ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२१ ।

विशेष—सामयिक पाठ, तत्वार्थसूत्र, समयसार गाथा, आराधनासार एवं समन्तभद्रस्तुति का संग्रह है ।

६२६४. गुटका सं० १२७ । पत्रसं० १४६ । ग्रा० ६ × इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२२ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६२६५. गुटका सं० १२८ । पत्रसं० ४२ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८२३ ।

विशेष—सुन्दरदास कृत सुन्दर शृंगार है ।

६२६६. गुटका सं० १२६ । पत्र सं० ६-६२ । ग्रा० ५$\frac{3}{4}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८२४ ।

विशेष—रत्नावली टीका एवं शुकदेव दीक्षित वार्ता (अपूर्ण) है ।

६२६७. गुटका सं० १३० । पत्रसं० ६० । ग्रा० ६×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२६ ।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है ।

६२६८. गुटका सं० १३१ । पत्र सं० २५ । ग्रा० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८२७ ।

विशेष—हंसराज बच्छराज चौपई है ।

६२६९. गुटका सं० १३२ । पत्र स० ६६ । ग्रा० ६×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२८ ।

विशेष—नेमिकुमार वेलि, सामायिक पाठ, भक्तिपाठ एवं गुर्वावलि आदि पाठों का संग्रह है ।

६२७०. गुटका सं० १३३ । पत्रसं० ८६ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

कोकसार, रसराज (मतीराम) एव फुटकर पद्य, दृष्टात शतक, इश्क चिमन (महाराज कुंवर सावत सिंह) आदि रचनाओं का संग्रह है ।

६२७१. गुटका सं० १३४ । पत्रसं० १६८ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३३ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

मंत्र तंत्र, आदित्यवार कथा, जैनबद्री की पत्री, चौदस कथा (टीकम) ।

६२७२. गुटका सं० १३५ । पत्रसं० २२८ । ग्रा० ५×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

६२७३. गुटका सं० १३६ । पत्रसं० १०० । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६२७४. गुटका सं० १३७ । पत्र सं० ६४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा- हिन्दी । ले० काल सं० १८१० बैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३७ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

श्रीपालरास—ब्र० रायमल्ल

प्रद्युम्नरास—ब्र० रायमल्ल

६२७५. गुटका सं० १३८ । पत्र सं० १६५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३८ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

इश्वरी छन्द	कवि हेम
स्थूलभद्र सज्झाय	—
पंचसहली गीत	छीहल
वलभद्र गीत	अभयचन्द्र सूरि
भ्रमर सुन्दरी विधि	—
चेतना गीत	समयसुन्दर
सामुद्रिक शास्त्र भाषा	—

इसके अतिरिक्त ज्योतिष संबंधी साहित्य भी है ।

६२७६. गुटका सं० १३९ । पत्रस० ४९८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पूजा संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३९ ।

विशेष—सामान्य नित्य पूजाओं के अतिरिक्त धर्मचक्र पूजा, वृहद सिद्धचक्र पूजा, सहस्रनाम पूजा, तीस चौवीसी पूजा, वृहद् पचकल्याणक पूजा, कर्मदहन पूजा, गणधरवलय पूजा, दशलक्षण पूजा, तीन चौबीसी पूजा आदि का संग्रह है ।

६२७७. गुटका सं० १४० । पत्रस० ८४ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४० ।

विशेष —विभिन्न प्रकार के मत्र एवं यंत्रो का संग्रह है ।

६२७८. गुटका सं० १४१ । पत्रस० १७६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

प्रद्युम्नरासो	ब्र० रायमल्ल
ज्येष्ठ जिनवर कथा	,,
निर्दोष सप्तमी व्रत कथा	,,
पद संग्रह	—

६२७९. गुटका सं० १४२ । पत्रस० ३४ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७३६ । पूर्ण । वेष्टनस० ८४२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नेमिनाथ रास	ब्र० रायमल्ल

पद हेमकीर्ति

बैरी बिसहर सारिखौ ।

६२८०. गुटका सं० १४३ । पत्रसं० ८६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४३ ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

६२८१. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० २३ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४५ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६२८२. गुटका स० १४५ । पत्र सं० ३८ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४६ ।

विशेष—गुण स्थानचर्चा है ।

६२८३. गुटका सं० १४६ । पत्रस० २४० । आ० ६½×५ इंच । भाषा-संस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

कल्याणमन्दिर स्तोत्र, पच स्तोत्र, सज्जन चित्तवल्लभ, सामयिक पाठ, तत्वार्थसूत्र, वृहत् स्वय-भू स्तोत्र, आराधनासार एव पट्टावलि ।

६२८४. गुटका स० १४७ । पत्र स० ७२ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८४८ ।

विशेष—सामान्य ज्योतिष के पाठो का संग्रह है ।

६२८५. गुटका सं० १४८ । पत्र सं० १०८ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेश्टन स० ८४९ ।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है ।

६२८६. गुटका सं० १४९ । पत्र स० ३१ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।वेष्टन स० ८५० ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, पद्मावती पूजा, एव कविप्रिया का एक भाग है ।

६२८७. गुटका सं० १५० । पत्रस० ६ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १९२० माघ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५१ ।

विशेष—लुकमान हकीम की नसीहतें हैं ।

६२८८. गुटका सं० १५१ । पत्रसं० १५ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५२ ।

विशेष—सोलह कारण पूजा एवं रत्नत्रय पूजाओं का संग्रह है ।

६२८६. गुटका सं० १५२ । पत्र सं० ६० । आ० $४\frac{१}{२} \times ३\frac{१}{२}$ इन्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५३ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

युगादिदेव स्तोत्र जिनदर्शन सप्तव्यसन चौपई एवं हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६२६०. गुटका सं० १५३ । पत्र सं० २६ । आ० $५\frac{१}{२} \times ५$ इन्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५५ ।

विशेष—देवगुरुओं के स्वरूप का निर्णय है ।

६२६१. गुटका सं० १५४ । पत्रसं० ५४ । आ० $५ \times ३\frac{१}{२}$ इन्च । भाषा- हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५४ ।

निम्न प्रकार सग्रह है—

अष्टकर्मप्रकृति वर्णन पचपरमेष्ठी पद एवं तत्वार्थसूत्र है ।

६२६२. गुटका सं० १५५ । पत्रसं० १६० । आ० ८×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १६४२ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ८५६ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का संग्रह है ।

भविष्यदत्त रास	हिन्दी	ब्र० रायमल्ल
प्रद्युम्न रास	,,	ब्र० रायमल्ल
आदित्यवार कथा	,,	भाऊ
श्रीपाल रासो	,,	ब्र० रायमल्ल
सुदर्शन रास	,,	,,

वामली मध्ये लिखित ब्र० हीरा

६२६३. गुटका सं० १५६ । पत्रस० १६० । आ० ५×४ इन्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५७ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६२६४. गुटका सं० १५७ । पत्रस० ८६ । आ० $६ \times ५\frac{१}{२}$ इन्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५८ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पद्मावती स्तोत्र टीका मत्र सहित कर्म प्रकृति ब्योरा तथा घण्टाकर्ण कल्प, अष्टप्रकारी देवपूजा है ।

६२६५. गुटका सं० १५८ । पत्रस० १८६ । आ० ८×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५६ ।

विशेष—भैया भगवतीदास के ब्रह्मविलास का संग्रह है ।

६२६६. गुटका सं० १५६ । पत्रस० १६६ । आ० $७\frac{१}{२} \times ६$ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७६७ पोष बुदी बुधवार । पूर्ण । वेष्टनसं० ८६० ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र भाषा टीका एवं ब्र० रायमल्ल कृत नेमीश्वर रास है।

६२६७. गुटका सं० १६०। पत्रसं० २३४। आ० ७×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल सं० १७२५ माघ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ८६१।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

सर्वार्थसिद्धि	—	पूज्यपाद
आलापपद्धति	—	देवसेन

६२६८. गुटका सं० १६१। पत्र स० ६६। आ० ५×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८६२।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

नीति शास्त्र	संस्कृत	चाणक्य
तेरहकाठिया	हिन्दी	बनारसीदास
इष्टछत्तीसी	,,	बुधजन
अध्यात्म बत्तीसी	,,	बनारसीदास
तत्वार्थ सूत्र	,,	उमास्वामी

६२६६. गुटका सं० १६२। पत्र स० ६४, आ० ४×४ इञ्च। भाषा-मस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६४।

विशेष—सामान्य पाठ, भक्तामर स्तोत्र मत्र सहित एवं मत्र शास्त्र का सग्रह है।

६३००. गुटका सं० १६३। पत्रसं० १८६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८६३।

विशेष—ब्रह्मविलास एव बनारसी विलास के पाठो का संग्रह है। इसके अतिरिक्त रत्नचूडरास (र०काल स० १५०१) एव सुआ बहत्तरी भी हैं।

रत्नचूडरास—पद्य स० ३१२

आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ दोहा—

सरस्वति देवि पाय नमी, मांगु चित पसाव।
रतनचूड गुण वर्णउं दान विवइ जसु नाम ॥१॥
जबूद्वीप माहि अछइ, भरत क्षेत्र अतिचंग।
तामली नयरी तिहां, राजा अजित नरिंद ॥२॥
तिण नयरी जे जिन वसइ, वरण अठारह लोक।
भोग पुरंदर भोगवइ, सुख संपति सुरलोक ॥३॥

चौपई—

सरोवर वाडि करी आराम, तिहां पाथ विकरतु अभिराम।
विवध वृष छद तिहि बन मांहि बसनइ वास बसइ परवाहि ॥४॥

पोह मिदर पोलि पगार, हार श्रोण नवि लाभइ पार ।
चित्तह रमण हर तोरणमाल, लकानी परिफाक फमाल ।।५।।

चउरासी चउहटा अतिचग, नव नव उछा नव नवरग ।
कोटिघज दीसइ अति घणा, लाखेसरी नीन राही का मणा ।।६।।

मांडइ दोसी भविका पट्ट, भराया दीसइ सोनी दट्ट ।
माणिक चउक जब वहूरी रह्या, हीरइ माणिक मोती सह्या ।।७।।

सुद दीया फोफलीया सोनार, नाई तेली न लहु पार ।
तबोली मरदठ घविटि, एक माडइनी सत फडहट्टा ।।८।।

मध्य भाग—

हाथ घलाविउमाली पाहि वल तउ कहि काइ छइ माहि ।
माहाराज मीभलिज्यो तम्हे, कुमर कहइ असरामण अम्हे ।।२८२।।

माली प्रीछवीउते तलइ, सूत्रधार आविउ ते तलइ ।
कुमर कहिय अम्हे मालिउमु गामि, कली पाइ थाउ भाइ कामि ।।२८३।।

अन्तिम भाग—

नगर माहि न्याय घेरज हुउ, खोटा लोक ते साचु थयउ ।
करी सजाइ घाले वाभणी, हुई वाहण तणी पुराणी ।
यम घटा मोकला वीकरी, बालउ कुमर सवाहणज भरी ।
चाल्या वाहण वायतइ भाणि, खेम कुसल पहुता निर्वाणि ।
वाहण वस्तु उतारी घणी, छाबीसकोडि हिव द्रव्यह तणी ।
हीर वीर घन सोवन वहु, साघ्य लखिउ रण घटा वहु ।
रण घटा नइ सुहग मजरी, आगइ परणवइ रत्न सुन्दरी ।
नव नव उछव नव नव रग, भोग भोग वइ अनिह सुचग ।
तिण नगरी आव्या केवली, तिहा वादु सघ सर्वं मिली ।

मणिचूड तिहां पूछइ सिउं, कहउ बेटा नउ करम हुई किमउ ।
रतनचूड नउ सघलउ विचार, पात्र दान दीघउ तिणिवार ।
दान प्रभावइ एव जि रिधि, दान प्रभावइ पामीइय सर्वसिधि ।।३०७।।
दानसील तप भावन सार, दान तणउ उत्तम विस्तार ।

दानइ जस कीरति विस्तरइ, दान दीयता दुरत भरइ ।।३०८।।
पनरइ एकोत्तरइ नीयनु संबघ, रत्नचूड नउ ए सबघ ।
बहुल बीज, भाइ वहू रनी, कवित नीयनु मगुरेवती ।।३०९।।
बड तप गच्छ रत्न सूरिद उदभत कला अभिनउचंद ।
ताम सेवइक इम उचरइ, षट् प द चरण कमल अणमरइ ।।३१०।।

सर्वसुख हुइ दूणाइ भणाइ, नर नारी जेई हूणाइ।
तेह घरि लखमी सदाइ मयइ, चद सूरज जा निर्मल तपइ ॥३११॥

ए मंगल एहज कल्याण, भणउ भणावहु जां ससि भाण।
रत्नचूडनउ चारित्रसार, श्री सघनइ करउ जय जयकार ॥३१२॥

इति श्री रत्न चूडरास समाप्त।

मिति वैशाख वदि ४ संवत् १८१७ का। वीर मध्ये पठनार्थ चिरंजीवि पडित सवाईराम ॥

सुवा बहत्तरी (वेष्टन सं० ८६३)

सुवा बहत्तरी की कथा लिख्यते—

करि प्रणाम श्री सारदा, आपणी बुद्धि परमाण।
सुक सप्तिक वार्तिक करी, नाई तै देवीदान ॥१॥

बीकानेर सुहावनौ सुख संपति की ठोर।
हिंदुथानि हिन्दु धरम, ऐसो सहर न और ॥२॥

तिहा तपै राजा करण, जगल को पतिसाह।
ताकै कुंवर अनूपसिह; दाता सूर सुबाह ॥३॥

तिन मोको आज्ञा दई सुयमन्न होइ कै एहु।
सस्कृत हुती वार्तिक सुक सप्तति करि देहु ॥४॥

अथ कथा प्रारम्भ—

एक मेदुपुर नाम नगर। ते थि हरदत्त वाणियौ बसै। ते पैरे घरि मदन सुन्दरी स्त्री अरु मदन बेटो। ती पैरे सोमदत्त साहरी बेटी प्रभावती नाम। सोमदत्त आपकी स्त्री प्रभावती सेती लागो रहै। माता पितारो कहियो न करै। ताउ राउ वै मदन नू देणन ताई हरिदत्त एक सुवो एक सारिका मंगाई। सो पुष्पा गधर्व रो जीव धणीरा सराय हुती सुवो। हुवो अर मालती गधर्वणी रो जीव धणीरा सराय हुंती सारिका हुई। सो जुदं जुदं पिजरं रहै। एक दिन मदन रो आर देखि शुक अरु सरिका मदन आगै बात कहै छे ॥

दोहा—

जो दुख मात पिता तवौ अश्रु बात जो होइ।
तिय पाप करता हरि देह सपडानि होइ ॥१॥

बात भवन पूछियौ—

वार्ता अपूर्ण है—१२ वीं बात तक पूर्ण है १३ वीं बात बहोडि तेरमैं दिन प्रभावती शृंगार करि रात्रि समै सुवानुं पूछीयो थे कहो तो जावो, सुवं कह्यो।

दोहा—

जो भावै प्रभावती सो मोनु न सहाय।
परिणमारग जाता देयिका ज्यो होय बुद्धि सुहाय।
करि हैं सो तु जायकरि ग्रथिरज बुद्धि बिचारि।
ब्राह्मण ग्रागे दभिका जिस हो कीये प्रकास ।।२४।।

वार्ता—

तहरः प्रभावती बोली मारग बहता दभिका किसी बुद्धि उपाई ग्रह ब्राह्मण ग्रागै किसु प्रकार कीयो वा कहै। ग्रभिलाषा नाम माय, ते थिति लोचन नाम ब्राह्मण। गावरो पटैल। तिणरै दभिका नाम स्त्री। निणरै कामरी ग्रभिलाषा। परिण वै हरै माटी। हुविहुंतो कोई मथै नही। एक दिन दभिका। घडो ले पाणी नै गई हुती। पाणि भरि ले ग्रावता एक बटाउ जुवान सरूपदीठो बैहनु क्रीडा रै ताई ग्राखिरी सैन दे बुलायो। ग्रर पूछियो तू कौण छै। वैह कही हूं भाट छो। ग्रागै मांगण नै जावौ छौ। दभिका कह्यो ग्राजि राति माहरै ही रहज्यो।

६३०१. गुटका सं० १६४। पत्रस० ६२। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल स० १६८६ पौष सुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ८६५।

विशेष—निम्न रचनाम्रों का संग्रह है।

बुद्धिप्रकाश	—	कवि घेल्ह
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	ब्र० रायमल्ल
द्वादशानुप्रेक्षा	—	ब्र० जिनदास
लेश्या वर्णन	—	—
'रेमन' गीत	—	छीहल
ज्येष्ठ जिनवर व्रत कथा	—	ब्र० रायमल्ल
मेघकुमार गीत	—	पूनो
मनकरहा जयमाल	—	—

बुद्धिप्रकाश कवि घेल्ह पत्र सं० १६–२६ तक

भूखो पथ न जायह सीहालो जीवा पंथी न जाह उन्हालो।
सावणी भादवौ गाय न आजे ग्रासोजा मौ भौयन सोजो ।।१६।।।
ग्रणरचीतो किम नौहि खाजे, ग्रगर पिछाण्या की साथी न आजे।
जाय दिसावरि राती न सोजे, चालतपथी रोस न कीजे ।।१७।।
ग्रवधरि न्हाय उतरी जे घाटै कन्या न बेची गरथकै सांटै ।।
पाहुणैं आया ग्रादर दीजे, आपण साकू भगति करीजे

दानदेय लखमी फल लीजे, जुनो ढोर ने कपड लीजे ॥१८॥

पढु न होय की सिहो बैचालै वचन घालि तुस जो रालै ।
वणिज न कीजे आस पराय, आरभज्यो काम त्यो नीरवहि ॥१६॥

नित प्रतिदान सदाही दीजे, दुणा ऊपरि ब्याज न लीजै ।
धरिही ण राखी हीण कुल नारि, मुक्त उपाय संतोषास्तरी ॥२०॥

विणसे घीयउ हसि हसीखाय, वीणसौ बहु ज परिघरि जाय ।
वीणसौ पुत पछोकडी छाडी, बीणसौ गय गवाडो मीडो ॥२१॥

बीणसौ बिण असुवार घोडो, बीणसौ सेवग आहर थोडो ।
बीणसौ राजु मत्री नो थोडो, अचगीलट न बोलसिकुडो ॥२२॥

बुद्धि होइ करि सो नर जीवो, मधीमा कं धरि पाणी न पीव ।
हरिपन कीजे जेबुठडौ पाणी, अणनीयनै मुकाल न जाणी ॥२३॥

मत्र न कीजे हीयडौ कुडौ मीन बीण नारी ण पहराय चूडौ ।
ऐसी सीख सुणीरौ पुन्या, लाज न कीजे मागत कन्या ॥२४॥

ब्राह्मण होय सवेद भणावौ, श्रावग होय सम्रण ष्ट ध्यानीदौ ।
वाण्या होय सबीणज करावो, कायथ होय, सतेखो भणावौ ॥२५॥

कुल मारगौ जुग छोडौ करमा, सगलीसीख सुणेजे घरमा ।
बुधी प्रगास पढीर विचारौ, वीरो न आवौ कदहि सहसारौ ॥२६॥

ऐसी सीख सुणें सहुकोय, कहता सुणतापुनी जु होय ।
कहौ देल्ह परषोत्तम पुत्ता, करौ राज परिवार संजूता ॥७२॥

सवत् १६८६ मिती पोष सुदी १० बुधीप्रगास समाप्त । लिखित पंडित रुडा, लिखामत पंडित सिधजी ।

६३०२. गुटका सं० १६५ । पत्रसं० १३८ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६६ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

तत्वार्थ सूत्र	—	उमास्वामी
रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा	—	सदासुख कासलीवाल

६३०३. गुटका सं० १६६ । पत्रसं० १४-११० । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६८७ ज्येष्ठ बुदी अमावस । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८६७ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

आदित्यवार कथा	—	भाऊकवि

अनुप्रेक्षा	—	योगदेव
आदिनाथ स्तवन	—	सुमतिकीर्ति
जिनवर व्रत कथा	—	ब्र० रायमल्ल

गुटका जोबनेर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं० केसो के पठनार्थ लिखा गया था।

६३०४. गुटका सं० १६७। पत्रसं० १३५। आ० ५$\frac{1}{2}$×५ इन्च। भाषा–हिन्दी-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८६६।

विशेष—सामायिक पाठ, भक्तामर स्तोत्र, जोगीरास तथा भक्ति पाठ आदि रचनाओं का सग्रह है।

६३०५. गुटका सं० १६८। पत्रसं० ६५। आ० ६×३ इन्च। भाषा–हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७०।

विशेष – नित्य पूजा पाठएव मंगल आदि पाठों का संग्रह है।

६३०६. गुटका सं० १६६। पत्र सं० १००। आ० ५×४ इन्च। भाषा–संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८७१।

विशेष—आयुर्वेद एव मत्रशास्त्र सम्बन्धी सामग्री है।

६३०७. गुटका सं० १७०। पत्रस० १३८। आ० ७×५ इन्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८७२।

विशेष—सामान्य पूजाएं स्तोत्र एव पाठों का संग्रह है।

६३०८. गुटका सं० १७१। पत्रसं० १८६। आ० ८$\frac{1}{2}$×६इन्च। भाषा हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८७३।

विशेष—सामन्य पूजा पाठ, आयुर्वेदिक नुस्खे, काल ज्ञान एव मंत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य है।

६३०९. गुटका स० १७२। पत्रसं० ६८। आ० ८$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल स० १७१८ पौष बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ८७४।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

शालिभद्र चोपई	हिन्दी	जिनराजसूरि
राजुलपच्चीसी	,,	विनोदीलाल
पंचमंगल पाठ	,,	रूपचन्द

६३१०. गुटका सं० १७३ ।पत्रस० ११४ । आ० ३$\frac{1}{2}$ × ३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७५ ।

विशेष—स्तोत्र एवं मंत्रशास्त्र का साहित्य है ।

६३११. गुटका सं० १७४ । पत्रसं० ३३ । आ० ६×३$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७६ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एव पूजा पाठ संग्रह है ।

६३१२. गुटका सं० १७५ । पत्र स० ११० । आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७७ ।

विशेष—त्रेपन क्रिया (हेमचन्द्र हिन्दी पद्य) पद, भक्तिपाठ, चतुर्विंशति स्तोत्र (समंतभद्र) भक्तामर स्तोत्र (मानतुंगाचार्य) आदि का सग्रह है ।

६३१३. गुटका स० १७६ । पत्रसं० २१८ । आ० ५$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८७८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

६३१४. गटका सं० १७७ । पत्रस० २७२ । आ० ५×६ इंच । भाषा–हिन्दी । ले०काल–सं० १८२७ काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८७९ ।

विशेष—अजमेर के शिवजीदास के पठनार्थ किशनगढ मे प्रतिलिपि की गई थी । कर्णामृत पुराण (भट्टारक विजयकीर्ति) तथा दानशीलतप भावना (अपूर्ण) है ।

६३१५. गुटका स० १७८ ।पत्रसं० ६८ । आ० ४$\frac{1}{2}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । ले० काल स० १८८० श्रावण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८० ।

विशेष—पूजा स्तोत्र, चर्चाए, चौबीस दडक, नवमगल आदि पाठों का सग्रह है । अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६३१६. गुटका सं० १७९ । पत्र स० ६० । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८१ ।

विशेष—पल्य विधि, त्रेपनक्रियापूजा, पल्यव्रत विधान, त्रिकाल चौबीसी पूजा आदि का संग्रह है ।

६३१७. गुटका स० १८० ।पत्रसं० ४० । आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८८३ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६३१८. गुटका सं० १८१ । पत्रसं० २६ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८७३ माह सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८ ८५।

विशेष—सामुद्रिक भाषा शास्त्र है।

६३१६. गुटका सं० १८२। पत्रसं० ७०। आ० ५×४½ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल-×। पूर्ण। वेष्टन स० ८८७।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र मंत्र सहित, एवं अनेकार्थ मंजरी का संग्रह है।

६३२०. गुटका सं० १८३। पत्रसं० ४०-२४४। आ० ६×३ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८८६।

विशेष—सूक्ति मुक्तावली, पदसग्रह तथा मंत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य है।

६३२१. गुटका सं० १८४। पत्रस० ६। आ० ७×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं०—१७८४ मंगसर सुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० ८६१।

विशेष—बीज उजावलीरी थुई है।

६३२२. गुटका सं० १८५। पत्रस० १६६। आ० ८×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८६३।

विशेष—नित्य प्रति काम मे आने वाली पूजाए एवं पद हैं।

६३२३. गुटका सं० १८६। पत्रसं० २००। आ० ६×५½ इन्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी ले०काल सं० १८५१ भादवा बुदी ८। पूर्ण। वेष्टनस० ८६४।

विशेष—

धर्मोपदेशामृत	—	पद्मनंदि
पद्मनंदि पचविंशति	—	पद्मनंदि
नेमिपुराण	—	—
सुदर्शनरास		ब्र० रायमल्ल ले०काल सं० १६३५ सावण सुदी १३।

लिखापि साह सातू खण्डेलवाल।

६३२४. गुटका स० १८७। पत्रस० ६२। आ० ६×५½ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८६५।

विशेष—खुशालचन्द, द्यानतराय, आदि कवियों के पद, तथा धर्म पाप सवाद, चरखा चौपई आदि का सग्रह है।

६३२५. गुटका सं० १८८। पत्रसं० २६८। आ० ४×४½ इन्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८६६।

विशेष—सामान्य पूजाओं के अतिरिक्त वृन्दावनदास कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा आदि का संग्रह है।

६३२६. गुटका सं० १८९। पत्रस० ६४। आ० ५½×४½ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८६७।

विशेष—मंत्रतंत्र एव आयुर्वेद के नुस्खों का संग्रह है ।

६३२७ गुटका सं० १६० । पत्र सं० २५० । आ० ५ × इञ्च । भाषा–प्राकृत-संस्कृत । ले०काल सं० १६५० फागुण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

आराधनासार	प्राकृत	देवसेन
संबोध पंचासिका	—	—
दशरथ की जयमाल	—	—
सामायिक पाठ	संस्कृत	—
तत्वार्थसूत्र	,,	उमास्वामी
पच स्तोत्र	,,	—

६३२८. गुटका सं० १६१ । पत्र स० २२७ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो, आयुर्वेद एव ज्योतिष आदि के ग्रंथो का सग्रह है ।

६३२९. गुटका सं० १६२ । पत्रसं० २२८ । आ० ६×३½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०० ।

विशेष—तीस चतुर्विशति पूजा त्रिकालचतुर्विशति पूजा आदि का संग्रह हैं ।

६३३०. गुटका सं० १६३ । पत्रसं० ८२ । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल स० १६६० बैशाख सुदी । १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६०१ ।

विशेष—गुरावलि, चितामणि स्तवन, प्रतिक्रमण, सुभाषित पद्य, गुरुओं की विनती, भ० धर्मचन्द्र का सवैया आदि का सग्रह है ।

६३३१. गुटका स० १६४ । पत्र सं० ३२४ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले० काल सं० १८८० माघ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०२ ।

विशेष—पार्श्वनाथ स्तवन, सम्यक्त्व कौमुदी कथा, प्रश्नोत्तर माला, हनुमत कवच एव वृन्दावन कवि कृत सतसई, सुभाषित ग्रंथ आदि पाठों का संग्रह है ।

६३३२. गुटका सं० १६५ । पत्र स० १८८ । आ० ५½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० सं० ६०३ ।

विशेष—जिनसहस्रनाम, प्रस्ताविक श्लोक, भक्तामर स्तोत्र एवं बडा कल्याण आदि पाठों का संग्रह है ।

६३३३. गुटका सं० १६६ । पत्रसं० ७० । आ० ५×४ इंच । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०४ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

९३३४. गुटका सं० १९७। पत्र सं० ९६। आ० ९×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल सं० १८३६ भादवा बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० ६०६।

विशेष—जैनरासो, सुदर्शन रास (ब्रह्म रायमल्ल) शीलरास (विजयदेव सूरि) एभ भविष्यदत्त चौपई आदि का सग्रह है।

९३३५. गुटका सं० १९८। पत्र सं० ९६। आ० ५×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी-सस्कृत। ले०काल सं० १८६३ आसोज सुदी १। पूर्ण। वेष्टनसं० ६०७।

विशेष—नित्य प्रति काम मे आने वाले स्तोत्र एव पाठो का सग्रह है।

९३३६. गुटका सं० १९९। पत्रस० १६–१३६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी–सस्कृत। ले० काल सं० १८६३ आसोज सुदी१। पूर्ण। वेष्टनसं० ६०९।

विशेष—आलोचना पाठ, सामायिक पाठ, तत्वार्थ सूत्र आदि पाठो का सग्रह है।

९३३७. गुटका सं० २००। पत्रसं० ५०। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ६१०।

विशेष—विभिन्न महीनों मे आने वाले एकादशी महात्म्य का वर्णन है।

९३३८. गुटका सं० २०१। पत्र स० ८४। आ० ६½×५½इञ्च। भाषा–संस्कृत। ले० काल स १८८७ आषाढ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ६११।

विशेष—जिनसहस्रनाम (आशाधर) एवं तत्वार्थ सूत्र (उमास्वामी) आदि पाठो का सग्रह है।

९३३९. गुटका सं० २०२। पत्रस० ३०–७०। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी–सस्कृत। ले०काल स० १८२३ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० ६१२।

विशेष—निम्न रचनाओ का संग्रह है —

सबोध दोहा	हिन्दी	सुप्रभाचार्य
संबोध पचासिका	,,	गौतमस्वामी
गिरनारी गीत	,,	विद्यानदि
लाहागीत	,,	—
वास्तुकर्म गीत	,,	—
शांति गीत	,,	—
सम्यक्त्व गीत	,,	—
अभिनन्दन गीत	,,	—
अष्टापद गीत	,,	—
नेमीश्वर गीत	,,	—
चन्द्रप्रभ गीत	,,	—
सप्तऋषि गीत	,,	विद्यानन्दि
नववाड़ी विनती	,,	—

६३४०. गुटका सं० २०३ । पत्रसं० ३०-१५२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१३ ।

विशेष—पञ्चस्तोत्र एवं आदित्यवार कथा है ।

६३४१. गुटका सं० २०४ । पत्र सं० ५२ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८०१ आषाढ़ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१५ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र एवं वचनिका सहित है ।

६३४२. गुटका सं० २०५ । पत्रसं० ६० । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१६ ।

विशेष—फुटकर श्लोक, जिनसहस्रनाम (आशाधर) मांगीतुंगी चौपई, देवपूजा, राजुलपच्चीसी, बारहमासा आदि का संग्रह है ।

६३४३. गुटका सं० २०६ । पत्रसं० २६ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१७ ।

विशेष—नित्य प्रति काम आने वाले पाठों का संग्रह है ।

६३४४. गुटका सं० २०७ । पत्रसं० २५ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१८ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र एवं एकीभाव स्तोत्र अर्थ सहित है ।

६३४५. गुटका सं० २०८ । पत्रसं० २३४ । आ० ५×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१६ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६३४६ गुटका सं० २०६ । पत्र सं० २०८ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १७६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२० ।

विशेष —सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६३४७. गुटका सं० २१० । पत्रसं० ७६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८०६ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६२१ ।

विशेष —भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मंदिर भाषा एवं तत्वार्थ सूत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

६३४८. गुटका सं० २११ । पत्र सं० १०० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३३ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है । मुनीश्वर जयमाल (जिनदास) प्रतिक्रमण, तत्वार्थ सूत्र, पट्टावलि, मूठमंत्र, भक्तिपाठ भट्टारक पट्टावलि एवं मंत्र शास्त्र ।

६३४६. गुटका सं० २१२ । पत्र सं० १५० । आ० ५×६½ इंच । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२४ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६३५०. गुटका सं० २१३ । पत्रसं० १२४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८२३ भादवा बुदी । पूर्ण । **वेष्टनसं० ६२५** ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

नेमीश्वर रास	—	ब्र० रायमल्ल
कृष्णजी का बारहमासा	—	जीवणराम
छनाल पच्चीसी	—	—

६३५१. गुटका सं० २१४ । पत्र सं० ८२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ६२६ ।

विशेष—सोलहकारण जयमाल, गणधरवलय पूजा जिनसहस्रनाम (आशाधर) एवं स्वस्त्ययन पाठ आदि का संग्रह है ।

६३५२. गुटका सं० २१५ । पत्रसं० ६० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८११ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२७ ।

विशेष—अठारह नाता का चौढाल्या (लोहट), चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न, नेमिराजमति गीत, कुमति सज्झाय एवं साधु बन्दना आदि पाठों का संग्रह है

६३५३. गुटका सं० २१६ । पत्र सं० १६० । आ० ८×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७८२ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२८ ।

विशेष—नासिकेत पुराण, (१८ अध्याय तक) एवं सीता चरित्र (कवि बालक अपूर्ण) आदि रचनाओ का संग्रह है ।

६३५४. गुटका सं० २१७ । पत्रसं० १५० । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १७७७ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२६ ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र भाषा	संस्कृत-हिन्दी	हेमराज
कल्याण मंदिर स्तोत्र भाषा	,,	बनारसीदास
एकीभाव स्तोत्र भाषा	,,	—

६३५५. गुटका सं० २१८ । पत्रसं० २८२ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७८६ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३० ।

विशेष—निम्न रचनाओ का संग्रह है ।

मांगीतुंगी स्तवन	हिन्दी	हिन्दी पत्र ३०-३५	
कुमति कं. विनती	,,	,,	—
ननद भौजाई का झगडा	,,	,,	—
अक्षर बत्तीसी	,,	,,	—
ज्ञान पच्चीसी	,,	,,	—

परमज्योति	—	हिन्दी
निर्दोष सप्तमी कथा	—	,,
जिनाष्टक	—	,,
गीत	विनोदीलाल	,,
आदिनाथ स्तवन	नेमचन्द (जगत्कीर्ति के शिष्य)	,,
कठियारा कानडदे चउपई	मानसागर	,,
नवकार रास	—	,,
अठारह नाता	लोहट	हिन्दी
धर्मरासो	जोगीदास	,,
त्रेपन क्रियाकोश	—	,,
कक्का बत्तीसी	—	,,
ग्यारह प्रतिमा वर्णन	—	,,
पद संग्रह	विभिन्न कवियों के	,,
सप्तव्यसन गीत	—	,,
पार्श्वनाथ का महेला	—	,,

६३५६. गुटका सं० २१६ । पत्रसं० १७४ । आ० ५½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १७८० आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३१ ।

विशेष—आयुर्वेद एवं मंत्र शास्त्र से सम्बन्धित साहित्य का अच्छा संग्रह है ।

६३५७. गुटका सं० २२० । पत्रसं० १५० । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३३ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

सारसमुच्चय ग्रंथ	—	संस्कृत
सुकुमाल सज्झाय	शान्तिहर्ष (शि० जिनहर्ष)	र०काल १७४१
बोधसत्तरी	—	हिन्दी
ज्ञान गीता स्तोत्र	—	—
णमोकार रास	—	—
चन्द्राकी	दिनकर	—

६३५८. गुटका सं० २२१ । पत्रसं० ६६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३४ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, ज्ञानचिन्तामणि एवं अन्य पाठों का संग्रह है ।

६३५६. गुटका सं० २२३ । पत्रसं० २१३ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६२२ असाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३५ ।

विशेष—ज्योतिष साहित्य एवं सं० १५८२ से सं० १७०० तक का संवत्सर फल दिया हुआ है ।

६३६०. गुटका सं २२३ । पत्र स० ७२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३६ ।

विशेष—शकुनावली लघुस्वयभू स्तोत्र, षष्टिसवत्सरी आदि पाठो का सग्रह है ।

६३६१. गुटका सं० २२४ । पत्रस० ६० । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल स० १७६५ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३७ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

तीस चौबीसी	श्यामकवि	हिन्दी	र०काल स १७४६ चैत सुदी ५
विनती	गोपालदास	,,	—

इसके अतिरिक्त अन्य पाठो का भी सग्रह है ।

६३६२. गुटका सं० २२५ । पत्र स० १७५ । आ० ६½×५½ इ च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १६१५ माघ सुदी १। पूर्ण । वेष्टन स० ६३८ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह हैं ।

भक्तिपाठ	—	सस्कृत
चतुर्विशति तीर्थंकर जयमाल	—	हिन्दी
चतुर्दश गुणस्थान बेलि	ब्र० जीवधर	हिन्दी
चेतन गीत	जिनदास	,,
लाभालाभ मन सकल्प	महादेवी	सस्कृत
सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनदि	,,
परमार्थ गीत	रूपचन्द	हिन्दी
परमार्थ दोहाशतक	रूपचन्द	,,

६३६३. गुटका स० २२६ । पत्रस० ६७ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८२४ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६३६ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, विषापहार, पचमगल, तत्वार्थ सूत्र आदि का संग्रह है ।

६३६४. गुटका सं० २८ । पत्र सं० ४६से ७६ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४० ।

विशेष—दशलक्षण पूजा, अनंत व्रत पूजा, एवं भक्तामर स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६३६५. गुटका सं० २२८ । पत्रसं० ३८ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४१ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

कर्मप्रकृति भाषा	बनारसीदास	हिन्दी
मृगीसवाद	देवराज र० सं० १६६३	,,

६३६६. गुटका सं० २२६ । पत्रसं० १८६ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल सं० १६८० सावण बुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६४२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

आराधना सार	देवसेन	प्राकृत
परमात्म प्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश
द्वादशानुप्रेक्षा	—	अपभ्रंश
आलाप पद्धति	देवसेन	संस्कृत
अष्टपाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत

६३६७. गटका सं० २३० । पत्र सं० ६८ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४३ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे है ।

६३६८. गुटका सं० २३१ । पत्रसं० ७० । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १६३८ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४४ ।

विशेष—बृहद् सम्मेद शिखर पूजा महात्म्य का संग्रह है ।

६३६९. गुटका सं० २३२ । पत्रसं० ४१५ । आ० ४½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४५ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

नाम ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	पत्रसं०	विशेष
नेमीश्वर रास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	१-४६	र० सं० १६४४ फागुण सुदी ४
चेतनपुद्गल धमाल	बल्ह	,,	५०-७०	पद्य सं० १३०
शील महिमा	सकल भूषण	,,	७०-७३	पद्य सं० १६
बीरचन्द दूहा	लक्ष्मीचन्द	,,	७४-८६	पद्य सं० ६६
पद	हर्षगणि	,,	८७	पद्य सं० ७
नेमीश्वर राजमति चातुर्मास	सिंहनंदि	,,	६६	पद्य सं० ४ ले०काल सं० १६५५

बलिभद्र गीत	सुमतिकीर्ति	हिन्दी	६१	—
मेघकुमार गीत	पूनो	,,	६८	—
नेमिराजमति बलि	ठकुरसी	,,	११३	२१
कृपण षट् पद	,,	,,	१२०	—
पद	,,	,,	१२६	—
पद	साहण	,,	१२६	—
पद	बूचा	,,	१३०-३३	—
पचेन्द्रीवेलि	ठकुरसी	,,	१४०	—
योगीचर्या	—	,	१४४	—
गीत	बूचा	,,	१५७	—
भ० धर्मकीर्ति भुवन कीर्ति गीत	—	,,	१६१	—
मदनजुद्ध	बूचा कवि	,,	१८४	पद्य स० १५८
			(र० सं० १५८६ ले०काल सं० १६११)	
विवेक जकडी	जिणदास	,,	—	—
मुक्ति गीत	—	,,	—	—
पोषहरास	ज्ञानभूषण	,,	३४४	—
शीलरास	विजयदेव सूरि	,,	३६५	६६
नेमिनाथरास	ब्रह्म रतन	,,	३७३	
पद	बूचा	,,	३८२	—
आदिनाथविनती	ज्ञानभूषण	,,	३६५	—
नेमीश्वर रास	भाऊ कवि	,,	४१५	—
चतुर्गतिवेलि	हर्षकीर्ति	,,	—	—

६३७०. गुटका सं० २३३ । पत्रसं० ५८ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८६६ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४६ ।

विशेष—पूजाओ एव पदों का सग्रह है ।

६३७१. गुटका सं० २३४ । पत्र सं० ४०३ । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

सीतासतु	भगवतीदास	हिन्दी	पत्रसं०
शीलबत्तीसी	—	,,	१-५३
राजमतिगीत	—	,,	५४-५८
बावनी छप्पई	—	,,	—

छहढाल	—	हिन्दी	—
पद एवं गीत	भगवतीदास	,,	७० तक
पद एवं राजमति सतु	—	,,	—
आदित्यवार कथा	—	,,	—
दयारास	गुलाबचंद	,,	—
चूनडीरास	भगवतीदास	,,	—
रविव्रत कथा	—	,,	—
खीचडरास	—	,,	—
रोहिरणरास	—	,,	—
जोगरण रास	—	,,	—
मनकरहारास	—	,,	—
वीर जिरणद	—	,,	—
दशलक्षरण पद	—	,,	—
राजावलि	—	,,	—
विभिन्न पद एवं गीत	—	,,	१७३ पत्र तक
बरणजारा गीत	—	,,	—
राजमति नेमीश्वरढाल	—	,,	—
समयसार नाटक	बनारसीदास	,,	—
चतुर बरणजारा गीत	भगवतीदास	,,	—
अर्गलपुरजिन बदना	—	,,	—
जलगालन विधि	ब्र० गुलाल	,,	—
गुलाल मथुराबाद पच्चीसी	—	,,	—
बनारसी विलास के पाठों का संग्रह	बनारसीदास	,,	—

६३७२. गुटका सं० २६५ । पत्र सं० ८२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७५८/१७६० । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नेमीश्वर के पंचकल्याणक गीत, सज्झाय, बुद्धिरासो, आषाढभूति धमालि, धर्मरासो आदि अनेक पाठों का संग्रह है ।

६३७३. गुटका सं० २३६ । पत्रसं० २४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४७५ ।

विशेष—निम्न पूजा पाठों का संग्रह है—

पद्मावती स्तोत्र, पद्मावती पूजा, पद्मावती सहस्रनाम, पार्श्वनाथ पूजा, पद्मावती आरती, पद्मावती गायत्री आदि पाठों का संग्रह है ।

६३७४. गुटका सं० २३७ । पत्र सं० १०० । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८५५ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८५ ।

विशेष—ज्योतिष संबंधी पाठो का संग्रह है ।

६३७५. गुटका सं० २३८ । पत्रसं० १२० । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १८४० फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४८६ ।

विशेष—नाटक समयसार एवं त्रिलोकेन्दु कीर्ति कृत सामायिक भाषा टीका हैं ।

६३७६. गुटका सं० २३९ ।पत्रसं० १२६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८८४ फागुण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८७ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है ।

नाम ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	**विशेष**
व्रत विधान रासो	दौलत राम पाटनी	हिन्दी	र० सं० १७६७
प्रायश्चित ग्रंथ	अकलंक स्वामी	संस्कृत	—
ज्ञान पच्चीसी	—	हिन्दी	—
नारी पच्चीसी	—	,,	—
वसुधारा महाविद्या	—	संस्कृत	—
मिथ्यात्व भंजन रास	—	हिन्दी	—
पंचनमस्कार स्तोत्र	उमास्वामी	संस्कृत	—

६३७७. गुटका सं० २४० । पत्रसं० १४४ । आ० ८½×६ इंच । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८८ ।

विशेष—पद संग्रह है ।

६३७८. गुटका सं० २४१ । पत्र सं० १०६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र०काल× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं १४९० ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

६३७९. गुटका सं० २४२ । पत्र सं० ६८ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा--संस्कृत । र०काल × । ले० काल सं० १७२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९१ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६३८०. गुटका सं० २४३ । पत्रसं० ३०८ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । र०काल × । ले० काल सं० १६९२ फागुण बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९२ ।

विशेष—सागवाडा नगर में प्रतिलिपि की गयी थी । पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६३८१. गुटका सं० २४४ । पत्रसं० १७० । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४९३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६३८२. गुटका सं० २४५ । पत्रसं० ७० । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले० काल सं० १८६४ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६४ ।

विशेष - भरतपुरवासी पं० हेमराज कृत पदों का संग्रह है ।

६३८३. गुटका सं० २४६ । पत्रस० ६७ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६५ ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है ।

६३८४. गुटका सं० २४७ । पत्रसं० ५० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४६६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६३८५. प्रतिसं० २४८ । पत्र स० १३४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६३५ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६७ ।

विशेष—भट्टारक सकलकीर्ति, ब्रह्मजिनदास, ज्ञानभूषण सुमतिकीर्ति आदि के पदो का सग्रह है ।

६३८६. प्रतिसं० २४६ । पत्रसं० ११७ । आ० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८१८ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६८ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६३८७. गुटका २५० । पत्रस० ४१ । आ० ६×६ इञ्च । विषय-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४६६ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र सग्रह है ।

६३८८. गुटका सं० २५१ । पत्रसं० १३८ । आ० १०¾×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७६३ । फागुण सुदी १३ पूर्ण । वेष्टन स० । १५०१ ।

विशेष—स्तवन तथा पूजा पाठ सग्रह है ।

६३८९. गुटका स० २५२ । पत्रसं० १२७ । आ० ४½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५०२ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का सग्रह है ।

अष्टाह्निका पूजा—

अवन्ति कुमार रास—(जिनहर्ष) र० सं० १७४१ आषाढ सुदी ८ ।

६३९०. प्रति सं० २५३ । पत्रसं० ६८ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५०३ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६३६१. गुटका सं० २५४ । पत्रसं० २०२ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५०५ ।

विशेष—ज्योतिष शास्त्र सबंधी सामग्री है ।

६३६२. गुटका सं० २५५ । पत्र सं० २०० । ग्रा० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६५३ कार्तिक सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन स० १५०६ ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है ।

वीरनाथस्तवन, चउसरणपयम, गजसुकुमालचरित्र, बावनी, रतनचूडरास, माधवानल चौपई आदि पाठों का संग्रह है ।

६३६३. गुटका सं० २५६ । पत्रस० ३६ । ग्रा० ८½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५०७ ।

विशेष—मत्रतत्र एवं रमल आदि का संग्रह है ।

६३६४. गुटका सं० २५७ । पत्रस० ५७ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५०८ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६३६५. गुटका सं० २५८ । पत्रस० ७२ । ग्रा० ४½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५०९ ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है ।

६३६६. गुटका सं० २५९ । पत्र स० १७४ । ग्रा० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१० ।

विशेष—हिन्दी के सामान्य पाठों का संग्रह ।

६३६७. गुटका सं० २६० । पत्र सं० ६२ । ग्रा० ७×५ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल-सं० १८३८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५११ ।

विशेष—वंश मनोत्सव के पाठों का संग्रह है ।

६३६८. गुटका स० २६१ । पत्रसं० १०० । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१२ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एव रत्नत्रय पूजा है ।

६३९९. गुटका सं० २६२ । पत्रसं० २४ । ग्रा० ८×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५१३ ।

विशेष—आचार्य केशव विरचित षोडषकारण व्रतोद्यापनपूजा जयमाल है ।

६४००. गुटका सं० २६३ । पत्र सं० ७३ । ग्रा० ८½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न, धर्मनाथ रो स्तवन (गुणसागर) उपदेश पच्चीसी, (रामदास) शालिभद्र धन्ना चउपई (गुणसागर)।

६४०१. गुटका सं० २६४। पत्र स० १०७। आ० ६×६ इञ्च। **भाषा**–हिन्दी,। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५१५।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एव अन्य पाठों का संग्रह है।

६४०२. गुटका सं०२६५। पत्रसं० १३४। आ० ७×५ इञ्च। **भाषा**—हिन्दी। **ले०काल** स० १८८० पौष सुदी ५। पूर्ण। **वेष्टन सं०** १५१६।

विशेष—मुख्यतः रसालुकंवर की वार्ता है।

६४०३. गुटका सं० २६६। पत्र स० १३०। आ० ६½×४½ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५१७।

विशेष—विभिन्न कवियों के हिन्दी पदों सग्रह है।

६४०४. गुटका सं० २६७। पत्र स० १२७। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५१८।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है।

६४०५. गुटका सं० २६८। पत्र स० १२३। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५१६।

विशेष—शालिभद्र चौपई के अतिरिक्त विभिन्न कवियो के हिन्दी पदो का सग्रह है।

६४०६. गुटका सं० २६९। पत्र स १४४। आ० ६½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५२०।

विशेष—विभिन्न कवियों के हिन्दी पदो का संग्रह है।

६४०७. गुटका सं० २७०। पत्रसं० २८२। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। **ले०काल** सं० १६६०। पूर्ण। वेष्टन सं० १५२२।

विशेष—पूजाएं एवं ब्रह्म रायमल्ल कृत नेमि निर्वाण है।

६४०८. गुटका सं० २७१। पत्र स० १४०। आ० ८×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५२३।

विशेष—सामान्य पाठ एव आयुर्वेदिक नुस्खे हैं।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी–बूंदी।

६४०९. गुटका स० १। पत्रस० ११५। आ० ५×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६३।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६४१०. **गुटका सं० २**। पत्रसं० २१६। ग्रा० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १६४।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं अन्य पाठों का संग्रह है।

६४११. **गुटका सं० ३**। पत्रसं० २१२। ग्रा० ८×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६२।

विशेष—गुणस्थान चर्चा आदि का सग्रह है।

६४१२. **गुटका सं० ४**। पत्र स० ३४। ग्रा० ६×४ इञ्च। भाषा- हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८७।

विशेष—ग्रायुर्वेद के नुस्खे हैं।

६४१३. **गुटका सं० ५**। पत्र सं० ११८। ग्रा० ८×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८८।

विशेष—पूजा पाठो का संग्रह है।

६४१४. **गुटका सं० ६**। पत्रस० ४०। ग्रा० १०×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत, हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १८६।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

६४१५. **गुटका सं० ७**। पत्रस० ७८। ग्रा० ५×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १८५।

विशेष—पूजा पाठ एव पद सग्रह है।

६४१६. **गुटका सं० ८**। पत्रस० ४८। ग्रा० ५½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८२।

विशेष—गुटका दादू पथियों का है। दादूदयाल कृत सुमिरण एव विनती को अ ग है।

६४१७. **गुटका सं० ९**। पत्रस० ७८। ग्रा० ५½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १७५।

विशेष—सुभाषित सग्रह है।

६४१८. **गुटका सं० १०**। पत्रस० १५०। ग्रा० ८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १७६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है।

६४१९. **गुटका सं० ११**। पत्रसं० ९२। ग्रा० ८×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल सं० १५४१ फाल्गुण बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० १७७।

१. सम्यग्दर्शन पूजा	सस्कृत	बुधसेन।
२. सम्यक चारित्र पूजा	,,	नरेन्द्रसेन।
३. शातिक विधि	,,	धर्मदेव।

६४२०. **गुटका सं० १२**। पत्रसं० ११८। आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १७८।

६४२१. **गुटका सं० १३**। पत्रसं० १२६। आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७९।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

१. संतोष जयतिलक	बूचराज	हिन्दी
२. चेतन पुद्गल धमालि	बूचराज	"

६४२२. **गुटका सं० १४**। पत्रसं० ६२। आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७४।

विशेष—आदित्यवार कथा एवं पूजा संग्रह है।

६४२३. **गुटका सं० १५**। पत्र सं० २५२। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १७३।

१. भुवनदीपक भाषा टीका सहित	पद्मनन्दि सूरि।	संस्कृत
	ले०काल स० १७६०	हिन्दी
२ त्रैलोक्य सार	सुमतिकीर्ति	संस्कृत।
४ शीघ्रबोध	काशीनाथ	"
४. समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी पद्य

६४२४. **गुटका सं० १६**। पत्र सं० ४-५७। आ० १०$\frac{1}{2}$×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १६४।

विशेष—नित्य पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है।

६४२५. **गुटका सं० १७**। पत्रसं० २०८। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ९६।

विशेष—समयसार नाटक एवं भक्तामर स्तोत्र, एकीभाव स्तोत्र आदि भाषा में है।

६४२६. **गुटका सं० १८**। पत्रसं० ८-३०४। आ० ६×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ९५।

विशेष—पूजा स्तोत्र आदि है इसके अतिरिक्त विमलकीर्ति कृत आराधाना सार है—जिसका आदि अन्त भाग निम्न है।

प्रारम्भ—

श्री जिनवर वाणि नमिवि
गुरु निर्ग्रंथ पाय प्रणमेवि।
कहूं आराधना सुविचार
संखे पइ सारोधार ॥१॥

हो क्षपक वयण अवधारि ।
हवेइं चात्यु तुं भवपार ।
हास्युं मट कहूं तत्त भेय
धुरि समकित पालिन एह ।।

अन्तिम—

सन्यास तणा फल जोइ ।
हो सारगिरपि सुख होइ ।
वली श्रावकनु कुल पामी
लहर निरवाण मुगतइगामी ।।
जे भड सुणइ नरनारी,
ते जोइ भवनइ पारि ।
श्री विमल कीरति कहृय विचार ।
श्री आराधना प्रतिबोध सार ।।

६४२७. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ३८ । ग्रा० १३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एवं अन्य स्फुट चर्चाएं हैं ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६४२८. गुटका सं० १ । पत्रसं० ४५ । ग्रा० १०½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६४२६. गुटका सं० २ । पत्रस० १५५ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ ।

विशेष—निम्न पाठ है:—गुणस्थान चर्चा, मार्गणा चर्चा एव नरक वर्णन

६४३०. गुटका सं० ३ । पत्र स० ४०८ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ ।

विशेष—पूजाओं का सग्रह है ।

६४३१. गुटका सं० ४ । पत्र स० २१२ । ग्रा० १०½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १६५७ । अपूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ एव छहढाला, ध्यान बत्तीसी एव सिंदूर प्रकरण है ।

६४३२. गुटका सं० ५ । पत्रस० १४१ । ग्रा० १३½×८½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा तथा पाठों का सग्रह है ।

९४३३. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ४४ । ग्रा० १०½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८ ।

विशेष—निम्न लिखित पाठ है—

१. ग्ररिष्टाध्याय (२) प्रायश्चित भाषा (३) सामायिक पाठ (४) शांति पाठ एवं (५) समतभद्र कृत वृहद् स्वयंभू स्तोत्र ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी बूंदी ।

९४३४. गुटका सं० १ पत्रसं० ३८ । ग्रा० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ ।

विशेष—निम्न पाठ है—चर्चाशतक कलयुग बत्तीसी ग्रादि है ।

९४३५. गुटका सं० २ । पत्रसं० ५६ । ग्रा० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । ले०काल स० १७८० फागुण वदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. विहारी सतसई	—	पत्र १-५४ पद्य सं० ६७६
२. रसिक प्रिया	—	,, ५५-५६

९४३६. गुटका सं० ३ । पत्र स० ६४ । ग्रा० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३ ।

विशेष—पद एव विनती संग्रह है

९४३७. गुटका सं० ४ । पत्र स० ७२ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ७१ ।

विशेष—धातु पाठ एवं चौबीसी ठाणा चर्चा है ।

९४३८. गुटका स० ५ । पत्र स० ६० । ग्रा० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र सग्रह है ।

९४३९. गुटका स० ६ । पत्रस० ११६ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ ।

९४४०. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ४७४ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह हैं ।

९४४१. गुटका सं० ८ । पत्रसं० २७२ । ग्रा० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ ।

विशेष—त्रैलोक्येश्वर जयमाल, सोलहकारण जयमाल, दशलक्षण जयमाल, पुरपरयण जयमाल ग्रादि पाठों का सग्रह है ।

९४४२. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ४० । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ ।

विशेष—कल्याण मन्दिर भाषा एवं तत्वार्थ सूत्र का संग्रह है ।

. **६४४३. गुटका सं० १०** । पत्रसं० ३१८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ ।

विशेष— पूजा पाठ स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

६४४४. गुटका सं० ११ । पत्रस० ५५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८ ।

६४४५. गुटका सं० १२ । पत्रसं० २६-२१७ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । **ले०काल** । अपूर्ण । **वेष्टनसं०** २१ ।

विशेष—पूजायें स्तोत्र एव सामान्य पाठो का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६४४६. गुटका सं० १ । पत्रसं० ३५३ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-प्राकृत । ले० काल स० १७१८ ।पूर्ण । **वेष्टनसं०** ३६६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. ज्ञानसार	पद्मनन्दि	प्राकृत
२. चारित्रसार	×	,,
३. द्वादसी गाथा	×	,,
४. मृत्युमहोत्सव	×	सस्कृत
५. नयचक्र	देवसेन	,,
६. अष्टपाहुड	कुन्दकुन्द	प्राकृत
७. त्रैलोक्यसार	नेमिचन्द	,,
८. श्रुतस्कध	हेमचन्द	,,
९. योगसार	योगीन्द्र	अपभ्रंश
१०. परमात्म प्रकाश	,,	,,
११. स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्त्तिकेय	प्राकृत
१२. भक्तिपाठ	×	प्राकृत
१३. बृहद् स्वयंभू स्तोत्र	समंतभद्र	सस्कृत
१४. संबोध पचासिका	×	प्राकृत
१५. समयसार पीठिका	×	संस्कृत
१६. यतिभावनाष्टक	×	,,
१७. वीतराग स्तवन	पद्मनन्दि	,,
१८. सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनन्दि	,,
१९. भावना चौबीसी	पद्मनन्दि	,,
२०. परमात्मराज स्तवन	×	,,
२१. श्रावकाचार	प्रभाचन्द	,,
२२. दशलाक्षणिक कथा	नरेन्द्र	,,

२३. अक्षयनिधि दशमी कथा	×	संस्कृत
२४. रत्नत्रय कथा	ललितकीर्ति	,,
२५. सुभाषितार्णव	सकलकीर्त्ति	,,
२६. अनन्तनाथ कथा	×	,,
२७. पाशाकेवली	×	,,
२८. भाषाष्टक	×	,,

इसके अतिरिक्त अन्य पाठ भी है।

६४४७. गुटका सं० २ । पत्र स० १७२ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६७ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखो का सग्रह है।

६४४८. गुटका स० ३ । पत्रस० ३४६ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-प्राकृत-हिन्दी । ले० काल स० १७१२ पौष बुदी ५ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ३६८** ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१-समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी पद्य
२-बनारसी विलास	,,	,,

लेoकाल १७१२ पौष वदी ५ । लाहौर मध्ये लिखापितं ।

३-चौबीसठाणा चर्चा	—	,,
४-सामायिक पाठ	—	सस्कृत
५-तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	संस्कृत
६-रयणसार	—	प्राकृत
७-परमानद स्तोत्र	—	सस्कृत
८-आगन्दा	महानद	हिन्दी ४२ पद्य हैं।

आराधना सार, सामायिक पाठ, अष्टपाहुड, भक्तामर स्तोत्र आदि का सग्रह और है।

६४४६ गुटका सं० ४ । पत्रस० ४० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४ ।

विशेष—लिपि विकृत है । विभिन्न पदों का सग्रह है।

६४५०. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ७८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३६२ ।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है।

६४५१. गुटका सं० ६ । पत्र स० २० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२३ ।

विशेष—कोकशास्त्र के कुछ अंश हैं।

६४५२. गुटका सं० ७ । पत्रस० ५६ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२४ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

६४५३. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ६-६४ । ग्रा० ५×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२५ ।

विशेष—श्वे० कवियों के हिन्दी पदो का सग्रह है ।

६४५४. गुटका सं० ६ । पत्रस० ६० । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दो पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६ ।

विशेष—स्तोत्र पाठ एवं रविव्रत कथा, कक्का बत्तीसी, पचेन्द्रिय वेलि ग्रादि पाठो का सग्रह है ।

६४५५. गुटका सं० १० । पत्रसं० ५२ । ग्रा० ८½×६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२७ ।

विशेष—पूजास्तोत्र ग्रादि का सग्रह है ।

६४५६. गुटका सं० ११ । पत्रसं० १७६ । ग्रा० ५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, सामायिक पाठ स्तोत्र, जेष्ठ जिनवर पूजा, तीस चौबीसी नाम ग्रादि पाठो का सग्रह है ।

६४५७. गुटका सं० १२ । पत्र स० १६१ । ग्रा० ४½×४½ इच । भाषा—सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६ ।

विशेष—सामायिक पाठ, पञ्च स्तोत्र, लक्ष्मी स्तोत्र ग्रादि का सग्रह है ।

६४५८. गुटका सं० १३ । पत्रस० १५३ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३० ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र, प्रतिष्ठापाठ सम्बन्धी पाठो का संग्रह है ।

६४५९. गुटका सं० १४ । पत्रस० १४१ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३१ ।

विशेष—सहस्रनाम, सकलीकरण, गधकुटी, इन्द्रलक्षण, लघुस्नपन, रत्नत्रयपूजा, सिद्धचक्र पूजा । अष्टक-पद्मनन्दीकृत, अष्टक सिद्धचक्र पूजा–पद्मनन्दी कृत, जलयात्रा पूजा एव अन्य पाठ हैं ।

अन्त में सिद्धचक्र यंत्र, सम्यग्दर्शन यत्र, सम्यग्ज्ञान यंत्र, पचपरमेष्ठि यत्र, सम्यक् चारित्र यंत्र, दशलक्षण यत्र, लघु शान्ति यंत्र ग्रादि यंत्र दिये हये हैं ।

६४६०. गुटका सं० १५ । पत्रस० ११४ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३२ ।

विशेष—रसिक प्रिया-इन्द्रजीत, योगमत-अमृत प्रभव का संग्रह है ।

९३६१. गुटका सं० १६। पत्र सं० ११४। आ० ६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३३३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

९४६२. गुटका सं० १७। पत्र सं० ८। आ० ९×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १८९।

विशेष—दर्शन स्तोत्र, कल्याण मन्दिर स्तोत्र तथा द्रव्य संग्रह है।

९४६३. गुटका सं० १८। पत्रसं० २१। आ० १२×६½ इच। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १६०।

विशेष—पूजा एवं यज्ञ विधान आदि का वर्णन है।

९४६४. गुटका सं० १९। पत्रस० १८९। आ० ७×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३६।

विशेष—पूजा एवं प्रतिष्ठादि सम्बन्धी पाठ है।

९४६५. गुटका सं० २०। पत्रस० २८९। आ० ६½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

९४६६. गुटका सं० २१। पत्रसं० ७२। आ० ६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३४।

विशेष—पूजा पाठ आदि का संग्रह है

९४६७. गुटका सं० २२। पत्र सं० ८-७०। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २८।

९४६८. गुटका सं० २३। पत्रसं० ४८। आ० १०½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ८।

विशेष—चौबीसी दण्डक, गुणस्थान चर्चा आदि का संग्रह हैं।

प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

९४६९. गुटका सं० १। पत्रसं० २-१९५। आ० ६×६½ इञ्च। भाषा—संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३४।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह हैं।

(१) प्रतिक्रमण (२) भक्तामर स्तोत्र (३) शांति स्तोत्र (४) गौतम रासा (५) पुन्य मालिका (६) शत्रु जयरास (समयसुन्दर) (७) सूत्र विधि (८) मंगलपाठ (९) कृष्ण शुकल पक्ष सज्झाय (१०) अनाथी ऋषि सज्झाय (११) नवकार रास (१२) बुद्धिरास (१३) नवरस स्तुति स्थूलभद्रकृत।

६४७०. गुटका सं० २ । पत्र सं० १०७ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का सग्रह है । पत्र फट रहे हैं ।

६४७१. गुटका सं ३ । पत्रसं० ४१ । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत- हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०३३१ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६४७२. गुटका सं० ४ । पत्रस० १८ । आ० ६¾×८¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३३० ।

विशेष—धर्म पच्चीसी, कर्म प्रकृति. बारह भावना एवं परीषह आदि का वर्णन है ।

६४७३. गुटका सं० ५ । पत्रस० ३४१ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल स० १८३३ बैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६५ ।

विशेष—जयपुर में पं० दोदराज के शिष्य दयाचन्द ने लिखा था । निम्न पाठ हैं—

(१) त्रिकाल चौबीसी विधान
(२) सौख्य पूजा ।
(३) जिनमहस्रनाम-आशाधर
(४) वृहद् दशलक्षण पूजा—केशवसेन ।
(५) षोडश कारण व्रतोद्यापन
(६) भविष्यदत्त कथा-ब्रह्म रायमल्ल,
(७) नदीश्वर पक्ति पूजा ।
(८) द्वादश व्रत मडल पूजा ।
(९) ऋषिमडल पूजा-गुणनन्दि ।

६४७४. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ६४ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १९४४ श्रावण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० २६४ ।

विशेष—पारसदास कृत पद सग्रह है, तीम पूजा तथा अन्य पूजाये है ।

६४७५. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६३ ।

विशेष—जेष्ठ जिनवर पूजा एव जिनसेनाचार्य कृत सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६४७६. गुटका सं० ८ । पत्रस० १८० । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६४७७. गुटका सं० ९ । पत्र स० १९८-३०१ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २९१ ।

विशेष—स्तोत्र पाठ पूजा आदि का सग्रह है ।

६४७८. गुटका सं० १० । पत्रस० १७१ । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १७१७ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८९ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

९४७९. गुटका सं० ११ । पत्रस० १९४ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८६६ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८८ ।

विशेष— रामविनोद भाषा योग शतक भाषा आदि का सग्रह है।

९४८०. गुटका सं० १२ । पत्रस० १०६ । आ० ८×६ इ च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १९६८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८६ ।

विशेष—गुटके का नाम सिद्धान्तसार है । आचार शास्त्र पर विभिन्न प्रकार से विवेचन करके दश धर्म का विस्तृत वर्णन किया गया है।

९४८१. गुटका सं० १३ । पत्र स० ५-३२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८५ ।

विशेष—लघु एवं वृहद् चाणक्य नीति शास्त्र हिन्दी टीका सहित है।

९४८२. गुटका सं० १४ । पत्र स० ५७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८४ ।

विशेष—अकुरारोपण विधि, विमान शुद्धि पूजा तथा लघु शान्तिक पूजा है।

९४८३. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ५० । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २४५ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा सग्रह है।

९४८४. गुटका सं० १६ । पत्र स० १४५ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४४ ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है—

१-एकीभाव स्तोत्र २-विषापहार ३-तत्वार्थ सूत्र ४-छहढाला ५-भक्तामर स्तोत्र टीका ६-मृत्यु महोत्सव ७-मोक्ष मार्ग बत्तीसी दौलत कृत ८-सुपथ कुपथ पच्चीसी ९-नरक दोहा १०-सहस्रनाम ।

९४८५. गुटका सं० १७ । पत्रस० ८० । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ व तत्वार्थ सूत्र आदि हैं।

९४८६. गुटका सं० १८ । पत्र स० २३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल स० १९२३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१५ ।

विशेष—

१. सहस्रनाम भाषा—बनारसीदास

२. द्वादशी कथा —ब्र० ज्ञानसागर

९४८७. गुटका सं० १९ । पत्र स० ८०। आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७४ ।

विशेष—परमातम प्रकास, पंच मगल, राजुल पच्चीसी, दशलक्षण उद्यापन पाठ (श्रुतसागर) एवं तीर्थंकर पूजा का संग्रह है ।

९४८८. गुटका सं० २० । पत्र सं० ३१२ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ ।

विशेष—पंचस्तोत्र तथा पूजाओ का सग्रह है ।

९४८९. गुटका सं० २१ । पत्रसं० ११० । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले०काल स० १९५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ ।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा

९४९०. गुटका स० १ । पत्रसं० १०१ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ ।

विशेष—मुख्यत. निम्न पाठों का सग्रह है—

अरिष्टाध्याय	प्राकृत	—
आचार शास्त्र	,,	—
त्रिलोकसार	,,	आ० नेमिचन्द्र

९४९१. गुटका सं० २ । पत्र स० ११७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १७ ।

विशेष—पूजाओ एव स्तोत्रों का सग्रह है ।

९४९२. गुटका सं० । पत्रसं० २-८५ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १८ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

९४९३. गुटका सं० ३ । पत्र स० १४८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टनस० १६ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठों का सग्रह है—

श्रीपाल चरित्र भाषा	—	हिन्दी	—
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	—
भविष्यदत्त चौपई	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—

६४६४. गुटका सं० ४। पत्र सं० १६८। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० १६।

६४६५. गुटका स० ५। पत्र सं० १४६। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २०।

विशेष—आयुर्वेद, मंत्र शास्त्र आदि पाठो का संग्रह है।

६४६६. गुटका सं० ६। पत्रसं० १७६। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ६२।

विशेष—आयुर्वेदिक नुस्खों का अच्छा संग्रह है।

६४६७. गुटका सं० ७। पत्रसं० १३६। आ० ६×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ६५।

विशेष—पूजा पाठ तथा स्तोत्रों एवं पदों का सग्रह है।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक)।

६४६८. गुटका स० १। पत्र सं० १८८। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०६।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का सग्रह है।

६४६६. गुटका स० २। पत्रस० ७२। आ० ८×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १२६।

विशेष—प्रति जीर्ण है तथा लिपि विकृत है। मुख्य निम्न पाठ हैं।

१-ध्रुचरित	परमानन्द	पत्र १-५।	र०काल १८०३ माह सुदी ६।
२-सिंहनाभ चरित्र		५-६।	१७ पद्य हैं।
३-जंबुक नामो		६-७।	७ पद्य हैं।
४-सुभाषित संग्रह		७-१५।	३५ पद्य हैं।
५-सुभाषित सग्रह		१६-२८।	१२५ पद्य हैं।
६-सिंहासन बत्तीसी		२६-७२।	—

६५००. गुटका सं० ३। पत्रसं० २०४। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल पूर्ण। वेष्टनस० १३०।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है। कहीं २ हिन्दी के पद भी हैं।

६५०१. गुटका सं० ४। पत्र सं० ५५। आ. ७×५ इंच। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १३२।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६५०२. गुटका सं० ५ । पत्रसं० ७-२६ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३२ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र सहस्रनाम स्तोत्र, आदि पाठों का संग्रह है ।

६५०३. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ११५ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३४ ।

विशेष— पूजा पाठ संग्रह हैं ।

६५०४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ६८ से १२५ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३५ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह हैं ।

६५०५. गुटका सं० ८ । पत्रस० १६२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ ।

विशेष— लिपि विकृत हैं । पूजा पाठ सग्रह हैं ।

६५०६. गुटका सं० ९ । पत्रसं० ७१ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३७ ।

विशेष—सामान्य पाठ हैं । पट्टी पहाडे भी हैं ।

६५०७. गुटका स० १० । पत्रस० ६६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६५०८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३९

६५०९. गुटका सं० १२ । पत्र स० ६८ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४० ।

विशेष— निम्न पूजा पाठों का संग्रह है—

(१) भक्तामर स्तोत्र (२) अकृत्रिम चैत्यालय पूजा (३) स्वयभू स्तोत्र (४) बीस तीर्थंकर पूजा (५) तीस चोबीसी पूजा एवं (६) सिद्ध पूजा (द्यानतराय कृत) ।

६५१०. गुटका सं० १३ । पत्रसं० १४५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८०१ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४१ ।

विशेष—साहिपुरा में उम्मेदसिंह के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी ।

(१) सुन्दर शृंगार	सुन्दरदास	पत्र १-५७ ।	हिन्दी
(२) विहारी सतसई	विहारीदास	५८-१२४ ।	हिन्दी
(३) कलियुग चरित्र	वाण	१२५-२९ ।	"
		र०काल स० १६७४	

प्रारम्भ

पहलू शुमरि गुर गणपति को **महामाय** के पाय ।।
जाके शुमिरत ही सबै । पाप दूरि है जाय ।।
सवत् सोलासै चोहोत्तरिया चैत दांद उणियारै
श्री यश भयो खानखाना, को तब कविता अनुसारि ।।
शब समुझै शब के मनमानै शब को लगै सुहाई ।
मैं कवि बान नाम तै जानी आखर की शरशाई ।।
बामन जाति मथरिया पाठक बान नाम जग जानै ।
रांव कियो राजाधिराज यौं महासिंघ मनमानै ।।
कलि चरित्र जव आखिन देख्यो कलि चरित्र तब कीनो
कहे शुवे ने पाप न परसौं अभैदान कलि दीनो ।।

(४) कलि व्यवहार पच्चीसी	नन्दराम	पत्र १३०-१३४ २५ पद्य हैं	हिन्दी
(५) पंचेन्द्रिका ब्यौरा	—	पत्र १३४-३७	।।
(६) राम कथा	रामानन्द	१३७-१५०	।।
(७) पद्मिनी बखाण	—	१४३ तक	।।
(८) कवित्त	बुधराय बूंदी ।	१४५ तक	।।

६५११. **गुटका सं० १४** । पत्रस० १३६ । आ० ५×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ ।

विशेष निम्न पाठ है—

१ सवैया	कुमुदचन्द	पद्य स० ४
२. सोलह स्वप्न छप्पय	विद्यासागर	।। ६
३. जिन जन्म महोत्सव षट् पद	।।	।। १२
४. सप्तव्यसन	।।	।। ७
५. दर्शनाष्टकसवैया	।।	।। ११
६. विषापहार छप्पय	।।	।। ४०
७. भूपाल स्तोत्र छप्पय	।।	।। २७
८. बीस विरहमान सवैया	।।	।। २१
९. नेमिराजमती का रेखता	विनोदीलाल	।। ११
१०. झूलना	तानुसाह	४२ पद्य हैं
११. प्रस्ताविक सवैया	×	२७
१२. छप्पय	×	४ पद्य हैं
१३. राजुल बारह मासा	गंगकवि	१३ पद्य हैं
१४. महाराष्ट्र भाषा द्वादश मासा	चिमना	१३ पद्य हैं
१५. राजुल बारह मासा	विनोदीलाल	२६ पद्य हैं

प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर-आवां

६५१२. गुटका सं० १ । पत्र सं० ७८ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

६५१३. गुटका सं० २ । पत्र सं० ६० । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन बघेरवाल मन्दिर-आवां

६५१४. गुटका सं० १ । पत्र सं० १५६ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६५१५. गुटका सं० २ । पत्रस० १७८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है । बीच के कई पत्र खाली है ।

६५१६. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ७४ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६५१७. गुटका सं० ४ । पत्रस० ८८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा सग्रह । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८ ।

प्राप्त स्थान—दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टोंक)

६५१८. गुटका सं० १ । पत्रस० ७६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १७४ ।

विशेष—आयुर्वेद, ज्योतिष स्तोत्र आदि का सग्रह है । स्वप्न फल भी दिया हुआ है ।

६५१९. गुटका सं० २ । पत्र सं ११ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६५२०. गुटका सं० ३ । पत्र स० ७५ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा गुटकाकार मे है । पत्र एक दूसरे के चिपके हुए है ।

६५२१. गुटका स० ४ । पत्रसं० ८५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७७ ।

६५२२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ५६-१२२ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, सामायिक पाठ आदि ।

६५२३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २८ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

पञ्चस्तोत्र	—	संस्कृत
सहस्रनाम स्तोत्र	आशाधर	,,
तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	,,
विषापहार स्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी
चौबीस ठाणा गाथा	—	प्राकृत
शिखर विलास	केशरीसिह	हिन्दी
पचमगल	रूपचन्द	,
पूजा संग्रह	—	,,
बाईस परीषद वर्णन	—	हिन्दी
नेमिनाथ स्तोत्र	—	संस्कृत
भैरव स्तोत्र	शोभाचन्द	हिन्दी

६५२४. गुटका सं० ७ । पत्र स० ३-६४ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८० ।

विशेष—मुख्यत. निम्न पाठो का संग्रह है—

चौबीसतीर्थंकर स्तुति	देवाब्रह्म	हिन्दी
अठारह नाता कथा	—	,,
पद संग्रह	—	,,
खण्डेलवालों की उत्पत्ति	—	,,
चौरासी गोत्र वर्णन	—	,,
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्र० रायमल्ल	,,

६५२५. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १२ । आ० ६×१½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८१ ।

विशेष—त्रेसठ शलाका पुरुष वर्णन है ।

६५२६. गुटका सं० ९ । पत्र सं० २५६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८२ ।

विशेष—मुख्यत' निम्न पाठों का संग्रह है—

शत अष्टोत्तरी कवित्त	भैया भगवतीदास	हिन्दी
द्रव्य संग्रह भाषा	,,	,,
चेतक कर्म चरित्र	,,	,,
अक्षर बत्तीसी	,,	,,
ब्रह्म विलास के अन्य पाठ	,,	,,

वैद्य मनोत्सव	नयनसुख	हिन्दी
पूजा एव स्तोत्र	—	संस्कृत हिन्दी
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	संस्कृत
आयुर्वेद के नुस्खे	—	हिन्दी

६५२७. गुटका सं० १०। पत्र सं० ६५। आ० ५×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८३।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है। तत्वार्थ सूत्र, भक्तामर स्तोत्र आदि भी दिये हुए हैं।

६५२८. गुटका सं० ११। पत्र स० १४२। आ० ६×४ इञ्च। **भाषा**-हिन्दी सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८४।

विशेष—गुटके में ३८ पाठो का सग्रह है जिनमे स्तोत्र पूजाएं तत्वार्थसूत्र आदि सभी सग्रहीत हैं।

६५२९. गुटका सं० १२। पत्र स० २४-७२। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। **ले०काल** ×। अपूर्ण वेष्टन सं० १८५।

विशेष—पाशा केवली एव प्रस्ताविक श्लोक आदि का सग्रह है।

६५३०. गुटका सं० १३। पत्रसं० ६-१२ ६३ से १००। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १८६।

विशेष—आयुर्वेद नुस्खों का सग्रह है।

६५३१. गुटका सं० १४। पत्र स० २-६०। आ० ६×५ इञ्च। **भाषा**-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १८७।

विशेष—पत्रस० २-३० तक पचपरमेष्ठी पूजा तथा आयुर्वेदिक नुस्खे दिये हुए है।

६५३२. गुटका सं० १५। पत्र स० १६१। आ० ६×६ इच। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८८।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पच स्तोत्र	—	सस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	,,
इष्टोपदेश भाषा	—	हिन्दी
सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	सस्कृत
आलाप पद्धति	देवसेन	संस्कृत
अक्षर बावनी	कबीरदास	हिन्दी

अक्षर बावनी का आदि भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

बावन अक्षर लोक त्रयी सब कुछ इनही माहि।
और क्षरैगे छए छिए सो अक्षर इनमे नाहि॥१॥

जो कछु अक्षर बोलत आवा, जह अबोल तहं मन न लगावा ।
बोल अबोल मध्य है सोई, जस वो है तस लखे न कोई ।।२।।
तुरक नरीकम जोइ कै, हिन्दू वेद पुराण ।
मन समझाया कारणै कथी में कछू येक ज्ञान ।।३।।
ऊंकार आदि मे जाना, लिखकै मेरे ताहि न माना ।
ऊंकार जस है सोई, तसि लखि मेटना न होई ।।४।।
कका किरण कवल मे आवा, ससि बिकास तहा संपुर नावा ।
अरजै तहा कुसुम रस पावा जकहु कह्यो नहि कासिम भावा ।।५।।

मध्य भाग

ममा मन स्यो काम है मम मनै सिधि होइ ।
मन ही मनस्यौं कही कवीर मनस्यो मिल्या न कोई ।।३६।।

अन्तिम भाग—

बावन अक्षर तेरि आनि एकै अक्षर सक्या न जानि ।।
" सबद कबीरा कहै बूझौ जाइ कहां मन रहै ।।४१।।

इति बावनि ग्यान संपूर्ण ।

६५३३. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ३-६३ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८८८ । अपूर्ण । वेष्टन स० २२८ ।

विशेष—साधारण पूजा पाठ सग्रह एव देवाब्रह्म कृत सास बहू का झगडा है ।

६५३४. गुटका सं० १७ । पत्रस० १४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६५३५. गुटका सं० १८ । पत्रसं० ५६ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

सप्तर्षि पूजा	श्री भूषण	सस्कृत
अनन्त व्रत पूजा	शुभचन्द्र	,,
गणधर वलय पूजा	—	,
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	,

६५३६. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ८६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३१ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं एवं पाठों का सग्रह है ।

६५३७. गुटका सं० २० । पत्रसं० ४४ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २३२ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठों का संग्रह है—

चतुर्विंशति जिन-षट्पद बंध स्तोत्र	धर्मकीर्ति	हिन्दी
पद्मनंदिस्तुति	—	संस्कृत

६५३८. गुटका सं० २१ । पत्रसं० ३० । ग्रा० ५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २३४ ।

विशेष—ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी बातो का विवरण है । भडली विचार भी दिया है ।

६५३९. गुटका सं० २२ । पत्रसं० २६ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३५ ।

विशेष—दोहाशतक परमात्म प्रकाश (योगीन्दुदेव) द्रव्य संग्रह भाषा तथा अन्य पाठों का संग्रह है ।

६५४०. गुटका सं० २३ । पत्रसं० १५ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा हिन्दी–संस्कृत । ले०काल स० १८६० वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३६ ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है ।

६५४१. गुटका सं० २४ । पत्रसं० ८७ । ग्रा० ८×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५४ ।

६५४२. गुटका सं० २५ । पत्रसं० १६० । ग्रा० १४×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५५ ।

विशेष—६६ पाठो का सग्रह है जिसमे पूजाऐं स्तोत्र नित्यपाठ आदि सभी हैं ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारायसिंह ।

६५४३ गुटका सं० १ । पत्रस० ११३ । ग्रा० ७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले०काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२ र ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६५४४. गुटका सं० २ । पत्रसं० १३ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२३ र ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एव हिन्दी पद संग्रह है ।

६५४५ गुटका सं० ३ । पत्रसं० । ग्रा० ७½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२४ र ।

६५४६. गुटका सं० ४ । पत्रस० ४४-१५० । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२५ ।

विशेष—पूजआदि सतोत्र है ।

६५४७. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १४६ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२६ र।

विशेष—पूजा स्तोत्र सग्रह है ।

६५४८. गुटका सं० ६ । पत्रसं० १२७ । ग्रा० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वेष्टनसं० १२७ र ।

६५४९. गुटका सं० ७ । पत्रसं० १७५ । ग्रा० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२८ र ।

६५५०. गुटका सं० ८ । पत्रसं० ८-७५ । ग्रा० ७×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२९ र ।

विशेष—७२ पद्य से ६६४ पद्य तक वृंद सतसई है ।

६५५१. गुटका सं० ९ । पत्रसं० ११७ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३० र ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है ।

६५५२. गुटका सं० १० । पत्रसं० ८-६१ । ग्रा० ४$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १९० ।

विशेष—हिन्दी मे पद सग्रह भी है ।

६५५३. गुटका सं० ११ । पत्रसं० २६ । ग्रा० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।पद्य ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८१६ ।

६५५४. गुटका सं० १२ । पत्रसं० ८-६१ । ग्रा४$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६१ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, पद्मावती पूजा वगैरह का सग्रह है ।

६५५५. गुटका सं० १३ । पत्रसं० ३३-१५१ । ग्रा० ४$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६४ × ।

१. पुरुष जातक	—	३३ से ३८
२. नारिपत्रिका	—	३९ से ४१
३. भुवन दीपक	—	४२ से ६१
४. जयपराजय	—	६२ से ६६
५. षट पचाशिका	—	६७ से ७३
६. साठि सवत्सरी	—	७४ से १२३
७. कूपचक्र	—	१२४ से १३४

१४१ मे १४६ तक पत्र नहीं है ।

६५५६. गुटका सं० १४ । पत्रसं० १०-५२ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०५ ।

विशेष—पूजा तथा स्तोत्र संग्रह है ।

६५५८. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ११२ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, भक्तामर स्तोत्र एवं पूजा पाठ का संग्रह है ।

६५५९. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ८८ । आ० ५$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १५६५ माह सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०७ ।

१-तीस चौबीसी पूजा—१-६८

२-त्रिकाल चौबीसी पूजा—६८-८८ तक

६५६०. गुटका सं० १७ । पत्र सं० १० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १८६२ । पूर्ण । वेष्टन सं० २०८ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है ।

६५६१. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ११४ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०९ ।

विशेष—पत्र १-२१ तक पूजा पाठ तथा पत्र २२-११४ तक कथायें हैं ।

६५६२. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ४८ । आ० ७×५ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१० ।

६५६३. गुटका सं० २० । पत्रसं० १०७ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २११ ।

६५६४. गुटका सं० २१ । पत्रसं० १६-८८ । आ० ७×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१२ ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

६५६५. गुटका सं० २२ । पत्रसं० १४-१४८ । आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २१३ ।

	पत्र संख्या	
१—पूजा पाठ स्तोत्र	१-११२	हिन्दी संस्कृत
१—शील बत्तीसी-अकमल	११२-१२१	हिन्दी
ले०काल सं० १६३६ पौष सुदी १४ ।		
३—हमनस्था की कथा—	१२४-१३५	हिन्दी

६५६६. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह

६५६७. गुटका सं० १ । पत्र स० ५० । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ ।

विशेष—नित्मनैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है ।

६५६८. गुटका सं० २ । पत्रसं० २२१ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १० ।

१-देव पूजा × । २-शास्त्र पूजा—भूधरदास । ३-शास्त्र पूजा-द्यानतराय । ४-सोलह कारण पूजा × । ५-सोलह कारण पूजा (प्राकृत) । ६-दशलक्षण पूजा-द्यानतराय । ७-रत्नत्रय पूजा—द्यानतराय । ८-पचमेरू पूजा—द्यानतराय । ९-सिद्ध क्षेत्र पूजा । १०-तत्वार्थ सूत्र । ११-स्तोत्र । १२-जोगीरासा-जिनदास । १३-परमार्थ जकडी । १४ अध्यात्म पैडी-बनारसीदास । १५-परमार्थ दोहाशतक-रूपचद । १६-बारह अनुप्रेक्षा-डालूराम । १७-चर्चाशतक-द्यानतराय । १८-जैन शतक-भूधरदास । १९—उपदेश तक—द्यानतराय । २०-पच परमेष्ठी गुण वर्णन-डालूराम र०काल १८६५ । २१-ज्ञान चिन्तामणि—मनोहरदास (र०काल १७२८ माह सुदी ७) २२-पद सग्रह । २३-जखडिया सग्रह । २४—स्तोत्र । २५-मृत्यु महोत्सव । २६-चौसठठाणा चर्चा आदि का संग्रह है ।

६५६९ गुटका सं० ३ । पत्र सं० २३२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११ ।

१—चर्चा समाधान—भूधर मिश्र ।

२—भक्तामर स्तोत्र—मानतु गाचार्य ।

३—कल्याण मन्दिर स्तोत्र ।

६५७०. गुटका स० ४ । पत्रस० १८८ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी-संस्कृत । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६५७१ गुटका स० ५ । पत्रस० × । आ० ५½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१ ।

विशेष—पद सग्रह एवं धनञ्जय कृत नाममाला है ।

६५७२. गुटका स० ६ । पत्र स० ६४ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले० काल सं० १८९६ सावण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० २२ ।

१—सभाविलास—× । २७३ पद्य है ।

विशेष—चि० लखमीचन्द के पठनार्थ व्यास रामबक्स ने रावजी जीवण सिंह डिगावत के राज्य में डूणी ग्राम मे लिखा था । ले०काल स० १८९६ सावण बुदी १० ।

२—दोहे—तुलसीदास । ६८ दोहे हैं ।

३—कुण्डलियां—गिरधरराय । ४१ कुण्डलियां हैं ।

४—विभिन्न छन्द— × । जिसमें बरवै छंद-४०, अडिल्ल छंद-२०, पहेलिया-४० एवं मुकुरी छंद २६ हैं।

५—हिय हुलास ग्रंथ— × । ७१ छद हैं।

६५७३. गुटका सं० ७। पत्रस० ८। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०।

विशेष—पद्मावती मत्र, खण्डेलवाल जाति की उत्पत्ति तथा वशावली, तीर्थंकारो के माता पिता के नाम, तीर्थंकर की माता तथा चन्द्रगुप्त के स्वप्न है।

६५७४. गुटका सं० ८। पत्रसं० २६४। आ० ८×७½ इञ्च। भाषा हिन्दी-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३।

विशेष—चोबीस ठाणा चर्चा एव स्तोत्र पाठ पूजा आदि हैं।

६५७५. गुटका सं० ९। पत्रसं० ६४। आ० ८×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वेष्टन स० ७४।

१-आदित्यवार कथा—भाऊ कवि

२-चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न

३ पद सग्रह—देवाब्रह्म

४ खण्डेलवालों के ८४ गोत्र

५-सास बहू का झगडा—देवाब्रह्म

६५७६. गुटका सं० १०। पत्र स० ६१-११६। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले०काल स० १६४६ माघ सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७८।

विशेष—बनारसी विलास है।

६५७७ गुटका सं० ११। पत्र स० ४४। आ० ७×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७९।

विशेष—पद सग्रह है।

६५७८. गुटका सं० १२। पत्रस० ३२। आ० ५×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ८०।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एव कल्याण मदिर स्तोत्र हिन्दी में है।

६५७९. गुटका सं० १३। पत्रसं० १६-४९। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा हिन्दी पद्य। ले०काल स० ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ८१।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६५८०. गुटका सं० १। पत्रसं० २५०। आ० ७½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ३७६।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है तथा बहुत से पत्र नही हैं। मुख्यतः पूजा पाठो का संग्रह है।

६५८१. गुटका सं० २ । पत्रसं० २०८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७७ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एवं अन्य चर्चाओं का सग्रह है ।

६५८२. गुटका सं० ३ । पत्रस० ४-१३८ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा– हिन्दी । र० काल सं० १६७८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७८ ।

विशेष—मतिसागर कृत शालिभद्र चोपई है जिसका रचना काल सं० १६७८ है ।

६५८३. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २८ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७९ ।

विशेष—धनपतराय का चर्चा शतक है ।

६५८४. गुटका सं० ५ । पत्रस० ११५ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८० ।

विशेष— निम्न पाठों का संग्रह है ।

समवशरण पूजा	रूपचन्द	हिन्दी
समवशरण रचना	—	,,

६५८५. गुटका सं० ६ । पत्र स० १७५ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०कालस० १७८२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८१ ।

विशेष—पूजा पाठो के अतिरिक्त मुख्यत: निम्न पाठो का सग्रह है—

जैन रासो	—	हिन्दी
सुदर्शन रास	ब्रह्म रायमल्ल	,,
जोगीरासो	जिनदास	,,

६५८६. गुटका सं० ७ । पत्रसं० १५० । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८२ ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

रामविनोद एवं अन्य आयुर्वेद नुस्खों का संग्रह है ।

६५८७. गुटका सं० ८ । पत्रसं० ७२ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । ले०काल सं० १७९३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८३ ।

विशेष —मुख्यतः निम्न रचनाओं का संग्रह है—

श्रीपाल रास	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—
पंचगति की बेलि	हर्षकीति	,,	(ले०काल सं० १७९३)
एकीभाव स्तोत्र भाषा	हीरानन्द	,,	(ले०काल सं० १७९४)
आषाढभूति मुनि का चोढाल्या	कनकसोम	,,	(र० काल सं० १६३८ । ले०काल सं० १७९६)

६५८८. गुटका सं० ६ । पत्रसं० १६० । आ० ८१/२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७१० आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८४ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का सग्रह है—

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी
	(ले०काल स० १७१०)	
इतिहाससार समुच्चय	लालदास	"
	(ले०काल स० १७०८ अषाढ सुदी १५)	

६५८९. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४-५४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८५ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६५९०. गुटका सं० ११ । पत्रस० ६८ । आ० ६१/२×६१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३८६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६५९१. गुटका सं० १२ । पत्रस० १७ । आ० ५१/२×७१/२ इञ्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८७ ।

विशेष—प्रतिक्रमण पाठ है ।

६५९२. गुटका सं० १३ । पत्रस० ५-२४८ । आ० ५१/२×४१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८८ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एव आदित्यवार कथा आदि का संग्रह है ।

६५९३ गुटका सं० १४ । पत्रस० १२८ । आ० ८१/२×५१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले०काल स० १७५३ आसोज बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३८९ ।

विशेष—मुख्य पाठो का सग्रह निम्न प्रकार से है—

नेमिनाथ स्तवन	—	हिन्दी	१५ पद्य
		(र०काल सं० १७२४)	
सुभद्र कथा	सिंघो	हिन्दी	२३ पद्य
अतिचार वर्णन	—	"	—
ग्रन्थ विवेक चितवणी	सुन्दरदास	"	५६ पद्य

अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

सकल सिरोमनि है नर देही
नारायन को निज घर येहो
जामहि पइये देव मुरारी
भइया मनुषउ बूझ तुम्हारी ॥५५॥

चेतसि कैसो चेतहु माई
जिनि उहका कै राम दुहाई
सुन्दरदास कहै जु पुकारी
भइया मनुष जु बूझ तुम्हारी ॥५६॥

विवेक चितामणि	सुन्दरदास	हिन्दी
आत्मशिष्यावणि	मोहनदास	,,
शीलबावनी	मालकवि	,,
कृष्ण बलिभद्र सिज्झाय	—	,,
शीलनाराम	विजयदेव सूरि	,,

इनके अतिरिक्त अन्य पाठो का संग्रह भी है।

६५६४. गुटका सं० १५ । पत्रसं० ३०६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६० ।

विशेष—मुख्यत. निम्न रचनाओ का संग्रह है—

प्रद्युम्न चरित	कवि सधारू	हिन्दी	अपूर्ण

विशेष—६८५ पद्य हैं। प्रारम्भ के ६ पत्र नही हैं।

कर्म विपाक	बनारसीदास	,,	—
हनुमत कथा	ब्र० रायमल्ल	,,	—
जम्बू स्वामी कथा	पाडे जिनदास	,,	—
श्रीपाल रास	ब्र० रायमल्ल	,,	—

६५६५. गुटका सं० १६ । पत्रसं० १७६ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६१ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६५६६. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७४ । आ० ७½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६२ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

६५६७. गुटका सं० १८ । पत्रसं० १२० । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६३ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

६५६८. गुटका सं० १६ । पत्रसं० १०१ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का संग्रह है—

भाषा भूषण टीका	नारायणदास	हिन्दी
		(र०काल सं० १८०७)
अलंकार सवैया	कुवखाजी	—
		(नरवर में लिखा गया)

६५९९. गुटका सं० २० । पत्रस० ८१। ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९५ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

९६००. गुटका सं० २१ । पत्रस० ३२१ । ग्रा० ५ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३९६ ।

विशेष—निम्न रचनाग्रों का सग्रह है—

श्रीपालरास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	पद्य (१८१ से २५०)

ग्रन्य पाठों का भी सग्रह है ।

९६०१. गुटका सं० २२ । पत्रस० १९० । ग्रा० ५×५ इ च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनसं० ३९७ ।

विशेष—निम्न रचनाग्रो का सग्रह है—

हितोपदेश दोहा	हेमराज	हिन्दी (र० काल सं० १७२५)	—

इसके ग्रतिरिक्त स्तोत्र एव पूजा पाठ संग्रह है ।

९६०२. गुटका स० २३ । पत्र सं० ७४ । ग्रा० ७½ × ६½ इंच । माषा—सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३९८ ।

विशेष—शब्दरूप समास एव कृदन्त के उदाहरण दिये गये हैं ।

९६०३. गुटका स० २४ । पत्रस० ९८ । ग्रा० ७×५ इञ्च । माषा-सस्कृत । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन म० ३९९ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

९६०४. गुटका सं० २५ । पत्रस० ७० । ग्रा० ९ × ७ इ च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०० ।

विशेष—मुख्यत· निम्न ग्रायुर्वेदिक ग्रन्थो का सग्रह है —

राम विनोद	प० पद्मरग (शिष्य रामचन्द्र)	हिन्दी	—
योगचितामरिण	हर्षकीर्ति	संस्कृत	—

ग्रन्य ग्रायुर्वेदिक रचनाएं भी हैं ।

९६०५. गुटका सं० २६ । पत्रस० १२६ । ग्रा० ५½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०१ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का सग्रह है ।

९६०६. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ९० । ग्रा० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०२ ।

विशेष—निम्न रचनाग्रों का संग्रह है—

सवैया	हिन्दी	

रणकपुर आदिनाथ स्तवन	—	हिन्दी
रतनसिहजीरी बात	—	,,

६६०७. गुटका सं० २८ । पत्रसं० ६६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल ×। अपूर्ण । वेष्टनसं० ४०३ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों एवं पाठों का संग्रह है ।

६६०८. गुटका सं० २६ । पत्रसं० २६ । आ० ७½×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०४ ।

विशेष—सामन्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६६०९. गुटका स० ३० । पत्रस० ६४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०५ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

वसुधारा स्तोत्र	—	संस्कृत
वृद्ध सप्तति यत्र	—	,,
महालक्ष्मी स्तोत्र	—	,,

६६१०. गटका स० ३१ । पत्रस० ३४ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०६ ।

विशेष—स्वामी वाचन पाठ है ।

६६११. गुटका सं० ३२ । पत्रस० ६३ । आ० ४½×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल स० १८३६ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०७ ।

विशेष—विष्णुसहस्रनाम एवं आदित्यहृदय स्तोत्र हैं ।

६६१२. गुटका सं० ३३ । पत्रस० १७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६६१३. गुटका सं० ३४ । पत्रस० १५ । आ० ४½×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४०६ ।

विशेष—पदो का संग्रह है ।

६६१४. गुटका सं० ३५ । पत्रसं० ८८ । आ० ५×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

पंचपरमेष्ठी गुण	—	संस्कृत
गुणमाला	—	हिन्दी (पद्य स० ६५ हैं)
आदित्यहृदय स्तोत्र	—	संस्कृत
निर्वाण कांड	भगवतीदास	हिन्दी

६६१५. **गुटका सं० ३६** । पत्रसं० ४२ । आ० ४½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ४११ ।

विशेष—ऋषिमंडल स्तोत्र एवं पद संग्रह है ।

६६१६. **गुटका स० ३७** । पत्रसं० ३४ । आ० ५½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१२ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं पदों का संग्रह है—

६६१७. **गुटका सं० ३८** । पत्रस० २५ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा- हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४१३ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रहहै—

ब्याहलो	—	हिन्दी
	(१२५ पद्य है । र०काल स० १८४३)	
बारहमासा वर्णन	क्षेमकरण	"

प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

६६१८. **गुटका स० ३१** । पत्रस० ११६ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टनस० ५६ ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है ।

१. तत्वार्थ सूत्र	सस्कृत	उमास्वामी
२. जिनसहस्रनाम	"	आशाधर
३. आदित्यवार कथा	हिन्दी	भाऊ
४. पंचमगति वेलि	"	हर्षकीर्ति

इनके अतिरिक्त सामान्य पूजा पाठ है ।

६६१९. **गुटका सं० २** । पत्रसं० ६४ । आ० × इञ्च । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६६२०. **गुटका सं० ३** । पत्रसं० १२० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ ।

विशेष—सैद्धांतिक चर्चाओं का सग्रह है ।

६६२१. **गुटका सं० ४** । पत्र स० १५६ । आ० ६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. बनारसी विलास के १७ पाठ (बनारसीदास)

२. समयसार नाटक (बनारसीदास)

विशेष—जीवनराम ने विदरखां मे प्रतिलिपि की थी ।

९६२२. **गुटका सं० ५** । पत्र सं० १६० । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल १६७४ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	पत्र १–३१
२. चौबीसठाणा चर्चा	×	पत्र ३२-१३१
३. सामायिक पाठ	×	पत्र १३२-१८३

विशेष—साह श्री जिनदास के पठनार्थ नारायणदास ने लिखा था ।

९६२३. **गुटका सं० ६** । पत्र स० ५५-१८१ । आ० ५$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १७५८ कार्तिक सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० २४ ।

विशेष—निम्न पाठ है ।

१. सुदर्शनरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी		पत्र ५६ से ९५ तक
२. दर्शनाष्टक	—	संस्कृत		९५-९६
३ वैराग्य गीत	×	हिन्दी		९७-९८
४. विनती	×	,,		९९
५ फाग की लहुरि	×	,,		१००
६ श्रीपाल स्तुति	×	,,		१०१-१०३
७. जीवगति वर्णन	×	,,		१०४-१०५
८. जिनगीत	हर्षकीर्त्ति	,,		१०६-२०७
९ टडाणा गीत	×	,,		१०८-१०९
१०. ऋषभनाथ विनती	×	,,		११०-१११
११. जीवढाल रास	समयसुन्दर	,,		११२-११४
१२. पद	रूपचन्द	हिन्दी		पत्र ११५
	अनन्त चित्त छांड़दे रे भगवन्त चरणा चित्त लाई			
१३. नाममाला	धनञ्जय संस्कृत			११६-१६०
१४. कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा	—	बनारसीदास		हिन्दी १६१-१६७
१५. विवेक जकडी	—	जिनदास		१६८-१६९
१६. पार्श्वनाथ कथा	×	,,	अपूर्ण	१८०-१८१

९६२४. **गुटका सं० ७** । पत्रसं० १२८ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५ ।

विशेष—पूजा पाठों का सग्रह है ।

९६२५. **गुटका सं० ८** । पत्रसं० ३२४ । आ० ८×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १७४६ चैत बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. भविष्यदत्त रास ब्रह्मरायमल्ल हिन्दी
र०काल सं० १६३३ । ले०काल स० १७६५
२. प्रबोधबावनी जिनदास हिन्दी । ले०काल सं १७४६

अन्तिम पुष्पिका—इति प्रबोध दूहा बावनी साधु जिनदास कृत समाप्त । ५३ दोहे हैं ।
३. श्रीपाल रासो ब्र० रायमल्ल । हिन्दी
४. विभिन्न पूजा एव पाठो का सग्रह है ।

६६२६. गुटका सं० ६ । पत्रस० ८६ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७ ।

विशेष—विभिन्न कवियो के पदों का सग्रह है । द्यानतराय के पद अधिक हैं ।

६६२७. गुटका सं० १० । पत्रसं० ४८ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चोधरियों का मालपुरा (टोंक)

६६२८. गुटका सं० १ । पत्र स० १८८ । आ० ५८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल स० १७६८ भादवा सुदी २ । । पूर्ण । वेष्टन स० १६ ।

विशेष—निम्न पाठ है —

१. सवैया	विनोदीलाल	हिन्दी ।
२. भक्तामर भाषा	हेमराज	,,
३. निर्वाण काण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	,,
४. फुटकर दोहे	×	,,
५. राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	,,
६. यंत्र सग्रह	—	बत्तीसयंत्र हैं ।
७. कछवाहा राज वंशावलि	×	,,

विशेष—११५ राजाओ के नाम हैं माधोसिंह तक सं० १६३७ ।

८. औषधियों के नुस्खे	—	
६. चौरासी गोत्र वर्णन	—	
१०. ढोलमारू की बात	×	हिन्दी अपूर्ण । ५२३ पद्य तक

६६२६. गुटका सं० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ ।

विशेष—विविध जैनेतर कवियों के पद हैं ।

९६३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६७ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६ ।

विशेष—हितोपदेश की कथाये हैं ।

९६३१. गुटका सं० ४ । पत्र स० ४–६६ । आ० ७½ × ४½ इंच । भाषा–सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७ ।

विशेष—सामान्य पूजाओं का संग्रह है ।

९६३२. गुटका सं० ५ । पत्र स० ६–६४ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८ ।

विशेष—नित्य पूजाओं का संग्रह है ।

९६३३. गुटका सं० ६ । पत्रस० १७२ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ ।

विशेष—विविध पूजापाठो का संग्रह है ।

९६३४. गुटका सं० ७ । पत्रसं० ७४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

९६३५. गुटका स० ८ । पत्रस० २२ । आ० ७ × ४ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ ।

विशेष—नित्य पूजा संग्रह हैं ।

९६३६. गुटका स० ९ । पत्रस० ६६ । आ० ६ × ६ इंच । भाषा–सस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे तथा पूजा पाठ संग्रह है ।

९६३७. गुटका सं० १० । पत्रसं० ६२ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

९६३८. गुटका सं० ११ । पत्रसं० ३ से २६० । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५० ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है । इसके अतिरिक्त अन्य सामान्य पाठ हैं ।

१-संबोध पचासिका—मुनि धर्मचन्द्र ।

यह संबोध पंचासिका, देखे गाहा छद ।
भाषा बंध दूहा रच्या, गछपति मुनि धर्मचद ॥५१॥

२-धर्मचन्द्र की लहर (चतुर्विशति स्तवन) ।

३-पार्श्वनाथ रास-ब्र० कपूरचंद । र०काल सं० १६६७ वैशाख सुदी ५ ।

मूलसंघ सरस्वती गच्छ गछपति नेमीचन्द ।
उनके पाट जशकीर्ति, उनके पाठ गुणचन्द ॥
तासु सिषि तसु पडित कपूरजी चंद ।
कीनो रास चिति धरिवि आनन्द ॥

रत्नबाई की शिष्या श्राविका पार्वती गंगवाल ने सं० १७२२ जेठ बदी ५ को प्रतिलिपि कराई थी ।

४-पंच सहेली---छीहल	हिन्दी
५-विवेक चौपई—ब्रह्म गुलाल	,,
६-सुदर्शन रास—ब्र० रायमल्ल	,,

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

६६३९. गुटका सं० १ । पत्रसं० १४१ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०काल स० १८१४ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ ।

विशेष—मुख्यत. निम्न पाठो का सग्रह है—

जिन सहस्रनाम	—	सस्कृत	—
शान्तिचक्र पूजा	—	,,	—
रविवार व्रत कथा	—	हिन्दी	—
वार्ता	बुलाकीदास	,,	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत	—
कल्याण मंदिर स्तोत्र	कुमुदचद्र	,,	—
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	,,	—
विषापहार स्तोत्र	धनजय	,,	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	,,	—
दशलक्षण पूजा		,,	—

रत्नत्रय पूजा तथा समयसार नाटक बनारसीदास

प० जीवराज ने आवा नगर मे स्वयभूराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

६६४०. गुटका सं० २ । पत्रस० १४१ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७० ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा है ।

६६४१. गुटका सं० ३ । पत्रस० २१३ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ ।

विशेष—विविध स्तोत्र एव पाठों का सग्रह है ।

६६४२. गुटका सं० ४ । पत्रसं० १३० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । वेष्टन स० ७५ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं गुण स्थान चर्चा आदि का संग्रह है ।

६६४३. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १४४ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ ।

६६४४. गुटका सं० ६ । पत्रस० १६७ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८० ।

६६४५. गुटका स० ७ । पत्रस० ४२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है ।

१–यशोधर रास जिनदास हिन्दी —

(र०काल सं० १६७६)

सवत् सोलासौ परमाण वरष उगुन्यासी ऊपर जाण ।
किसन पक्ष कार्ती भलो तिथि पचमी सहित गुरवार ॥

कवि रणथभ गढ (रणथभौर) के निकट शेरपुर का रहने वाला था ।

२–पूजा पाठ सग्रह सस्कृत–हिन्दी

६६४६. गुटका सं० ८ । पत्रस० ४७ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ ।

६६४७. गुटका सं० ९ । पत्रस० १२८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ९९ ।

६६४८. गुटका सं० १० । पत्र स० १५० । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ ।

६६४९. गुटका सं० ११ । पत्रस० १०-२४७ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल स० १५८५ । अपूर्ण । वेष्टन स० १०५ ।

विशेष—गुटका प्राचीन है तथा उसमे निम्न पाठो का सग्रह है—

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	
१-चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	अपूर्ण
२-बारह अनुप्रेक्षा	—	,,	पूर्ण
३-विवेक जकडी	जिणदास	,,	,,
४-धर्मतरू गीत (मालीरास)	,,	,,	,,
५-कर्म हिंडोलना	हर्षकीर्ति	,,	,,
पद-(तज मिथ्या पंथ दुख कारण)	—	,,	,,

पद-(साधो मन हस्ती मद मातो)	—	,,	,,
पद	हर्षकीर्ति	,,	,,

(हूं तो काई बोलू रै बोलु भव दुख बोलती न आवै)

६ पोथी के विषय की सूची। इसके ऊपरी भाग पर लिखा है—

पोथी को टीकं लिख्यते वैसाख दुतीक सुदी १५ संवत् १६४४ गढ रणथंवर मध्ये ॥

		पत्र	पद्य
१. आराधना प्रतिबोध सार	विमलकीर्ति	१-६	५५
२. मिछादोकड	—	६-८	२८
३. उन्तीस भावना	—	८-१०	२६
४. ईश्वर शिक्षा	—	१०-१३	२९
५. जम्बूस्वामी जकड़ी	साधुकीर्ति	१३-१७	३६
६. जलगालन रास	ज्ञान भूषण	१०-२०	३२
७. पोसहपारवानीविधि तथा रास	—	२०-२७	
८. अनादि स्तोत्र	—	२७-२९	२२ (संस्कृत)
९. परमानद स्तोत्र	—	२९-३१	२५
१०. सीखामणि रास	सकलकीर्ति	३१-३५	
११. देव परीषह चौपई	उदयप्रभ सूरि	६५-३७	२१
१२. बलिभद्र कृष्ण माया गीत	—	३७-३८	—
१३. बलिभद्र भावना	—	३८-४३	४४
१४. रिषभनाथ धूल	सोमकीर्ति	४३-४५	४
१५. जीववैराग्यगीत	—	४५	७
१६. मत्र सग्रह	—	४६-४७	संस्कृत
१७. नेमिनाथ थुति	—	४८	हिन्दी पद्य (र०काल १५८०)
१८. नेमिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	४९-५२	
१९. ,,	—	५२-५३	
२०. योगीवाणी	यशःकीर्ति	५३	७ पद्य
२१. पद (मन गीत)	—	५४	
२१. (क) मल्लिगीत	सोमकीर्ति	५४-५५	४
२२. मल्लिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	५५-५६	९
२३. जखडी	—	५६-५७	४

			पद्य संख्या
२४. कायाक्षेत्र गीत	धनपाल	५७–५८	६
२५. नेमिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	५८–६३	६६
२६. चौबीस तीर्थंकर भावना	यश.कीर्ति	६३–६५	२५
२७. राममीतारास	ब्र० जिणदास	६५–६१	
२८. सकौसलरास	सांसु	६१–१०६	
२९. जिनसेन बोल	जिनसेन	१०६	४
३०. गीत	—	१०७	५
३१. शत्रुंजयगीत	—	१०७–१०८	१४
३२. पार्श्वनाथ स्तवन	मुनि लावण्य समय	१०८–११२	३५

(इति श्री पार्श्वनाथ स्तवन पंडित नरवद पठनार्थं)

३३ पचेन्द्रिय गीत	जिनसेन	११२	७
३४. मेघकुमार रास	कवि कनक	११३-११६	४८
३५. बलिभद्र चौपइ	ब्र० यशोधर	११६-१३२	१८७

(र० काल स १५८५)

सवत पनर पचासीइ स्कध नयर मभारि ।

भवणि अजित जिनवर तणि ए गुण गाथा सार ॥१८८॥

३६. बुधिरास	—	१३२–३६	४८ पद्य
३७. पद	ब्र० यशोधर	१३६	४

(प्रीतडी रे पाली राजिल इम कहिरे)

३८. पद	—	१३६–३७	

चेतु लोई २ थिर २ कहु कोइ

३९. पद	—	१३७	५

(आदि अनादि एक परमेश्वर सयल जीव साधारण)

४०. त्रेपनक्रिया गीत	सोमकीर्ति	१३७	५
४१. रत्नत्रयगीत	—	१३८	१३
४२. देहस्तगीत	—	१४०–४१	४
४३. पर रमणी गीत	खीमराज	१३९	४
४४. ,,	—	१३९	६
४५. वैराग्य गीत	ब्र० यशोधर	१४१	६
४६. आसपाल छद	—	१४१–१५१	
४७. व्यसन गीत	—	१५१	
४८. मंगल कलश चौपई	—	१५१–६१	४९

"इति मंगलचुपाई समात्या ब्रह्म यशोधर लिखितं ।

४६. पद नेमिनाथ	ब्र० यशोधर	१६३	८
(अंगि हो अनोयम वेगरेकरी उग्रसेन घरि जाइ राजुल वरी)			
५०. नेमिनाथ बारह मासा	—	१६३–१६४	१२ पद्य
५१. षट्लेश्या श्लोक	—	१६४–६५	११ संस्कृत
५२. जीरावली स्तवन	—	१६५–६६	११
५३. अराधनासार	सकलकीर्ति	१६६–१६८	२४ पद्य
५४. वासपूज्य गीत	ब्र० यशोधर	१६८	१२
५५. आदिनाथ गीत	—	१६८–६६	३
५६. आदि दिगबर गीत	—	१६६	३
५७. गीत	यश:कीर्ति	१६६	३
(मयरण मोह माया मदिमातु)			
५८. गीत	यश:कीर्ति	१७०	६
तडकि लागि जिस नेह त्रूटि, अंजलि उदक जिम आऊषु फूटि ।			
५६. गीत	ब्र० यशोधर	१७०	७
(वागवाणीवर मांगु माता दि मुझ अविरल वाणी रे)			
६०. गीत	ब्र० यशोधर	१७१	४
(गढ रूडू जस तलहटी रे लाई गिरि सवा माहि सार)			
६१. मेघकुमार रास	पून्यू	१७१-७३	२१
६२. स्थूलभद्र गीत	लावण्यसमय	१७३-१७७	२१
६३. मुष्यय दोहा	—	१७७-१८२	७८ प्राकृत गाथा
६४. उपदेश श्लोक	—	१८३	५ सं० श्लोक
६५. नेमिनाथ राजिमति बेलि	सिंघदास	१८३–८५	१७ हिन्दी पद्य
६६. नेमिनाथ गीत	—	१८६	हिन्दी पद्य
६७. नेमिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	१८६	५
(यान लेई नेमि तो राणी आउ पसू छोडि गढ गिरनार)			
६८. प्रतिवोध गीत	—	१८६	हिन्दी पद्य
(चेतरे प्राणी सुरण जिनवाणी)			
६६. गीत (पार्श्वनाथ)	ब्र० यशोधर	१८७	,,
७० गीत (नेमिनाथ)	—	१८७	,,
(समुद्र विजय सुत यादव राजा तोरणि आया करी दिवाजा)			
७१. चेतना गीत	समयसुन्दर	१८७	,,
७२. अठारह नाते की कथा	—	१८८	प्राकृत

विशेष—हिन्दी में अनुवाद भी दिया है।

७३. कुबेरदत्त गीत	—	१८८–६०	४
(अठारह नाता रास)			

७४. गीत	ब्र० यशोधर	१६१	हिन्दी पद्य
(तोरणि आवी वेग वल्युरे पशूडा पारिध पेखीरे)			
७५. अजितनाथ गीत	ब्र० यशोधर	१६१	,,
७६. गीत	—	१६१-६२	,,
(प्रणमूं नेमि कुमार जिणि संयम धरउ)			
७६. नेमिगीत	ब्र० यशोधर	१६२	हिन्दी पद्य
(पसूडा तोरगि परिहरी)			
७७ नेमिगीत	,,	१६२-६३	,,
नेमि निरंजन निरोपम तोरणि पसूडा निहाली रे)			
७८. पार्श्वगीत	,,	१६३	,,
(मूरति मोहण वेल मणीजि अवर उपमा कहु कुण दीजि)			
७६. नेमि गीत	,,	१६३	,,
(पसूडा कारणि परहरयु रे राजिल सरसु राज)			
८० नेमिगीत	—	१६३	,,
(गुख चढीरे निहालि निरोपमउ आवतु नेमिकुार)			
८१ जैन वणजारा रास	—	१६३-६६	,,
८२. बावनी	मतिशेखर	१६६-२०१	५३
८३. सिद्ध धुल	रत्नकीर्ति	२०१-२०३	,,
८४. राजुल नेमि अबोला	लावण्यसमय	२०३-५	१५
८५. यशोधर रास	सोमकीर्ति	२०५-३४	—
		(ले०काल सं० १५८५)	

विशेष—इति यशोधर रास समाप्त । संवत् १५८५ वर्षे सुदि १२ खो ।

८६. कमकमल जयमाल	—	२३४-३५	—
(निर्वाण काण्ड भाषा है)			
८७. शत्रुंजय चित्र प्रवाड	—	२३६-३८	३५
८८. मनोरथ माला	—	२३६	—
८६. सातबीसन गीत	कल्याण मुनि	२३६-४०	१०
६०. पंचेन्द्री बेलि	—	२४०-४२	—
६१. संसार सासरयो गीत	—	२४२-४३	—
६२. रावलियो गीत	सिहनन्दि	२४३-४४	—
६३. चेतन गीत	नंदनदास	२४४-४५	—
६४. चेतन गीत	जिनदास	२४५	—
६५. जोगीरासा	—	२४५-४७	६८

(केवल २८ पद्य तक है) अपूर्ण

६६५०. गुटका सं० १२ । पत्रसं० २४७ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

६६५१. गुटका सं० १ । पत्रसं० ५१ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ५८ ।

६६५२. गुटका सं० २ । पत्रस० ६५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ ।

६६५३. गुटका सं० ३ । पत्रस० १३ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ५६ ।

६६५४. गुटका सं० ४ । पत्रस० ३० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ ।

विशेष—भानु कवि कृत आदियत्वार कथा है ।

६६५५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २३ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ ।

६६५६. गुटका सं० ६ । पत्रस० १८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ५० ।

६६५७. गुटका सं० ७ । पत्र स० २४० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ ।

विशेष—चौबीसी ठाणा चर्चा है ।

६६५८. गुटका सं० ८ । पत्र स० २७ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ ।

६६५९. गुटका सं० ९ । पत्रसं० ३५ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ ।

६६६०. गुटका सं० १० । पत्रस० ६४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ४१ ।

६६६१. गुटका सं० ११ । पत्रस० २६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० ।

विशेष—स्तुतियों का संग्रह है ।

६६६२. गुटका सं० १२ । पत्रस० ६१ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दीपद्य । ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टन स० ३१ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६६६३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६-१२४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है ।

६६६४. गुटका १४ । पत्रसं० २२५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत,-सास्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है:—

१. जयतिहुअण स्तोत्र	मुनि अभयदेव	प्राकृत । अपूर्ण ।
२. नव तत्व समाप्त	×	प्राकृत
३. श्रावक अतिचार	×	"
४. आदिनाथ जन्माभिषेक	×	,
५. कुसुमाञ्जलि	×	"
६. महावीर कलश	×	"
७ लूण पानी विधि	×	"
८. शोभन स्तुति	×	संस्कृत
६ गणधर वाद	श्री विजयदास मुनि	हिन्दी
१०. जम्बू स्वामी चौपई	कमलविजय	"
११. ढोलामारूणी	वाचक कुसललाभ	"

र०काल स० १६७७ । ले० काल स १७११ चैत सुदी २ ।

प्रारंभ—

दिविस रमति २ सुमति दातार कासमीर कमलासनी ।
ब्रह्म पुत्रिका वाण सोहइ मोहण तरु अरि मजरी ।
मुख मयक त्रिहुभुवन मोहइ पय पकज प्रणमी करी ।
भणी मन आणद सरस चरित शृंगार रस, मन पमणिय परमाणद

अन्तिम—

सवत् सोलह सत्तोत्तरइ भादवा त्रीज दिवस मन खरइ ।
जोडी जेसलमेरु मज्झारि वाच्या मुख पामइ संसारी ।
समलि गहगहइ वाचक कुसल लाभ इम कहइ
रिधि वृधि सुख सपति सदा सभलता पामइ सवदा ।।७०६ ।।

६६६५. गुटका स० १५ । पत्रस० ३५ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । ले०काल × । जीर्ण शीर्ण । पूर्ण । वेष्टनस० ३४ ।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है ।

६६६६. गुटका सं० १६ । पत्र स० ३० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

६६६७. गुटका सं० १७ । पत्रसं० १०१ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६६६८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० १५८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल स० १७७६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७ ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है ।

६६६९. गुटका सं० १९ । पत्र सं० २० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८ ।

६६७०. गुटका सं० २० । पत्रसं० ७८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । ले०काल-स० १८३३ ।पूर्ण । वेष्टनसं० ३९ ।

विशेष—अक्षर घसीट है पढने में कम आते है । पद, पूजा एवं कथाओ का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)

६६७१. गुटका सं० १ । पत्र स० २८ । आ० १२×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३-७४ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न रचनाओं का संग्रह है—

पंच स्तोत्र भाषा	—	हिन्दी	—
बारहखडी	सूरत	,,	—
ज्ञान चिंतामणि	—	,,	—

(र०काल सं० १७२८ माघ सुदी)

सवत सतरासै अठाईस सार, माह सुदी सप्तमी शुक्रवार ।।
नगर बुहारन पुर पाखान देस माही, ममारखपुर सेवग गुण गाई ।।

६६७२. गुटका सं० २ । पत्र सं० ११ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पदो का सग्रह है—

पार्श्वनाथ की निसाणी, कल्याण मन्दिर भाषा, विषापहार, वृषभदेव का छद ।

६६७३. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १४८ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२६ भादवा बुदी १० ।पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ ।

विशेष—साधारण पाठो के अतिरिक्त निम्न रचनाएं और हैं—

धर्मपरीक्षा	मनोहरलाल	हिन्दी
		(र० काल सं १७०० । ले०काल स० १८१४)
पार्श्वपुराण	भूधरदास	हिन्दी

सहदेव कर्ण ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

९६७४. गुटका सं० ४ । पत्रसं० ६४ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ ।

विशेष—सेवाराम कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा एव व्रत कथा कोष में से एक कथा का सग्रह है ।

९६७५. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १३६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

पद्मावती पूजाष्टक, बनारसी विलास तथा भैरव पद्मावती कवच (मल्लिषेण) आदि का संग्रह है ।

९६७६. गुटका सं० ६ । पत्रसं० २२९ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१/७७ ।

विशेष—नित्य नैमित्तक पाठो का सग्रह है ।

९६७७. गुटका सं० ७ । पत्र स० ११२ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन सं० १४२/८० ।

विशेष—पूजा पाठ एव स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

९६७८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १८५ । आ० ४½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ ।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त सेठ शालिभद्र रास एव सेठ सुदर्शनरास (ब्र० रायमल्ल) और हैं ।

शालिभद्र रास   फकीर   र०काल सं० १७४३

प्रारम्भ—

सकल सिरोमणी जीनवर सार, पार न पावै ते अगम अपार ।
तीन तिरलोक बदै सदा सुर फुनी इंद नर पूजत ईस ।
नाथ ते वस मे ऊपनो अहो श्री वरधमान सामी नमु सीस ।।
सालिभद्र गुण वरनउ ।।१।।

अन्तिम—

अहो बस बघेरवारै खडीय्या गोत
वंस वेणा दुहाजी हौत ।
तास ते सुत फकीर में साली ते भेद को मंडियो राप्त
मन मणेहु चीते उपनी अहौ देखी चारित्र कं.घोजी परगास ।।२२०।।

अहो सवत सतरासं वरस तीयाल (१७४३)
मास वैसाख पूणिम प्रतिपाल ।
जीम नीरवतर सब भल्या मिल्या गुढा मभी
पूरणवास रावने अनरध राजई ।
अहौ सास्त्री मन की पूगजी अरु सालिभद्र गुण वरणउ ।।२२१।।

सेठ सुदर्शन रास—

धौलपुर नगर में रचा गया था।

धौलपुर सहर देवरो बणो
वानै देवपुर सोभैजी इन्द समाने
सोव छतीस लीलाकर भवी महाजनं वस धनवन्त।
देव गुरु सासत्र सेवा कर भ्रो हो करैजी पूजन ते भ्ररहंत जी ॥१६८॥

६६७६. गुटका सं० ६। पत्रस० २५८। भ्रा० ६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी-सस्कृत। ले०काल स० १७७६ वैशाख सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन सं० २६३।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी
समयसार कलशा	भ्रमृतचन्द्र सूरि	सस्कृत

६६८०. गुटका सं० १०। पत्रसं० २६०। भ्रा० ६×६ इञ्च। भाषा–सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २६४।

विशेष—मुख्यतः पूजाभ्रो का संग्रह है।

६६८१. गुटका सं० ११। पत्र स० १००। भ्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २६५।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६६८२. गुटका सं० १२। पत्रसं० २६७। भ्रा० ६×६½ इञ्च। भाषा हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २५६।

विशेष—मुख्यत. निम्न पाठों का संग्रह है।

चतुर्दशी कथा	टीकम	हिन्दी
ज्येष्ठ जिनवर व्रत कथा	ब्र० रायमल्ल	,,
त्रेपन क्रिया रास	हर्षकीर्ति	,, र०काल १६८४
धर्मरासो	—	,,
भविष्यदत्त चौपई	ब्र० रायमल्ल	,,

६६८३. गुटका सं० १३। पत्रस० ३२५। भ्रा० ६×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २६७।

विशेष—कथा स्तोत्र एवं पूजा पाठ के भ्रतिरिक्त गुणठाणा गीत भ्रौर है।

गुणठाणा गीत–बूह्म वर्द्धन	**हिन्दी** **र०काल १६ वीं शताब्दी**

प्रारम्भ

गोयम गणहर गिरुग्रा मनि धरि गुणठाणा गुण गाऊं ।
गुण गाऊं रगिमरी रंगि भरीय गाऊं ।
पुण्य पाऊ भेद गुणठाणा तणा ।
मिथात पहिलाहि गुणह ठाणी वसइ जीव ग्रनतुगुणा ।
मिथ्यात पंच प्रकार पूरयां काल ग्रनंतु निहारई ।
मति हीन च्युहुगति भ्रमि भूला नलो धर्मते भणि लहइ

ग्रन्तिम—

परम चिदानन्द संपद पद धरा ।
ग्रनन्त गुणा कर शंकर शिवकरा ।
शिवकराए श्री सिद्ध सुन्दर गाउ गुण गणठाणरा
जिम मोक्ष सारूय मुखि साधु केवल णाण प्रमाणरा
सुभचन्द सूरि पद कमल प्रणवइं मधुप व्रत मनोहर घर
भणइति श्री वर्द्धन ब्रह्म एह वाणि भवियण सुख करई ।।१७।।
इति गुण ठाणा गीत

६६८४. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ६० । ग्रा० ६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

सेवाराम बघेरवाल ने इन्दरगढ मे प्रतिलिपि की थी ।

६६८५. गुटका सं० १५ । पत्र सं० २८५ । ग्रा० ६½×६½ इच । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

गुटका लिखवाने में १४।=।। व्यय हुग्रा था ।

६६८६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १०८ । ग्रा० ६½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७० ।

विशेष—श्वेताम्बर कवियों के पद एवं पाठ संग्रह है ।

६६८७. गुटका सं० १७ । पत्रसं० ४२ । ग्रा० ४½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७१ ।

विशेष—ढोलामारूवाणी की बात है । पद्य सं० ५०४ है ।

६६८८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० १६८ । ग्रा० ६½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७२ ।

विशेष—गणित छंद शास्त्र है गणित शास्त्र पर ग्रच्छा ग्रंथ है ।

६६८९. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ६१ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७३ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्रों एवं पाठों का संग्रह है ।

६६६०. गुटका सं० २० । पत्रसं० ६३ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४८ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७४ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का सग्रह है, सामायिक पाठ भाषा-जयचन्द छाबडा हिन्दी २ चौबीस ठाणा चर्चा ।

६६६१. गुटका सं० २१ । पत्रसं० २४ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७५ ।

विशेष—ऋषि मडल पूजा, पद्मावती स्तोत्र एव अन्य पूजा पाठ सग्रह है ।

सेवाराम बघेरवाल ने मीणारणा मध्ये चरमनदी तटे लिखित ।

६६६२. गुटका सं० २२ । पत्रसं० ११० । ग्रा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है तथा गुटका फटा हुआ एव जीर्ण है ।

६६६३. गुटका सं० २३ । पत्रसं० ७६ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७७ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६६६४. गटका स० २४ । पत्र स० १३१ । ग्रा० ६½×६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १८५८ ग्रासोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २७८ ।

विशेष—पूजा पाठ एव स्तोत्र ग्रादि का सग्रह है ।

६६६५. गुटका सं० २५ । पत्रसं० ३१७ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६१२ । पूर्ण । वेष्टनस० २७६ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठो का सग्रह है—

गीता तत्वसार	—	हिन्दी पद्य सं० १६० (ले०काल स० १६१२)
सेवाराम बघेरवाल ने प्रतिलिपि की थी ।		
भक्तिनिधि	—	हिन्दी पद्य स० ५४१
वेदविवेक एव	—	"
मोम का उपदेश	—	"

ले०काल स० १६१३ मगसिर सुदी १२ ।

६६६६. गुटका सं० २६ । पत्रसं० ६१ । ग्रा० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन स० २८० ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा मंत्र सहित है ।

६६६७. गुटका सं० २७ । पत्रसं० ७० । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८३४ फागुण बुदी ५ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा मंत्र सहित है ।

६६६८. गुटका सं० २८। पत्रसं० १३८। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल सं० १७६४ सावण सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० २८२।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत
तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,
भूपाल चतुर्विंशतिका	भूपाल	,,
लघु सहस्रनाम	—	—

कुल १३८ पत्र है जिनमे ग्रागे के ग्राधे ग्रर्थात् ६६ खाली हैं।

६६६६. गुटका सं० २६। पत्रसं० ७६। ग्रा० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८३।

विशेष – नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का और संग्रह है—

रत्नत्रय पूजा	—	हिन्दी
योगीन्द्र पूजा	—	,,
क्षेत्रपाल पूजा	—	,,

६७००. गुटका सं० ३०। पत्रस० १६४। ग्रा० ८×६½ इञ्च। भाषा-प्राकृत-हिन्दी। ले०काल स० १६१६। पूर्ण। वेष्टन स० २८४।

विशेष – निम्न रचनाओ का सग्रह है—

सुगुरु शतक — जिनदास गोधा — हिन्दी पद्य पत्र ८

र०काल सं० १८५२। (ले०काल स० १६१६)

करावता नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

ढाल गणसार	—	,,	१६
सामायिक पाठ	—	प्राकृत	३१
सामायिक पाठ भाषा	श्याम	हिन्दी	५५

सो सामायिक साधसी लहसी ग्रविचल थान।
करी चौपई भावमुं जैसराज सुत स्याम॥
(र०काल स० १७४६ पौष सुदी १०)

विषापहार स्तोत्र	धनजय	संस्कृत	१०७
सामायिक वचनिका	जयचन्द छाबड़ा	हिन्दी (ग०)	
जैनबद्री यात्रा वर्णन	सुरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	

मदिर चैत्यालय ग्रादि का जहां जहां यात्रा गये वर्णन मिलता है। ग्रामेर घाट ग्रादि का भी वर्णन किया हुग्रा है।

चंपक पंचासिका — जिनदास — हिन्दी (पद्य)-

जैनेतर साधुओं की पोल खोली गई है।

हुक्कानिषेध — भूधर — हिन्दी

६७०१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १०-७०। आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८५ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६७०२. गुटका सं० ३२ । पत्र स० १६० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी, ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

षड्दर्शन पाखड　—　हिन्दी　—

जैन दर्शन व १६ पाखंड—

मूलसघी काष्टासंघी निग्रंथ आल

अजिका व्रतना अव्रती श्वेताबर

द्रवडिग भावलिगी विपर्यय आचार्य

भट्टारक स्वयभू मिश्री साध्य

बारहमास पूर्णमासी फल　—　हिन्दी　—

साठ सवत्सरी　—　,,　—

सवत् १७०१ से लेकर १७६६ तक का फल है । हसराज वच्छराज चौपई जिनोदय सूरि-हिन्दी—

(र०काल स० १६८०)

कविप्रिया　केशव　—　हिन्दी　—

६०७३. गुटका सं० ३३ । पत्रस० १४२ । आ० ५×३ इञ्च । भाषा—सस्कृत ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८७ ।

विशेष—राम स्तोत्र एव जगन्नाथाष्टक आदि का सग्रह है ।

६०७४. गुटका सं० ३४ । पत्रस० ७६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८८ ।

विशेष—भाऊ कवि कृत रविवार कथा का संग्रह है ।

६७०५. गुटका सं० ३५ । पत्र स० ८५ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन स० २८६ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

बाईस परीषह　—　हिन्दी

भक्तामर स्तोत्र पूजा　—　,,

देव पूजा　—　,,

कक्का बीनती　—　,,

पार्श्वनाथ मगल　—　,,

(ले०काल स० १८२४)

विनती पाठ सग्रह　—　हिन्दी

चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति —　,,

प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा

६७०६. गुटका सं० १ । पत्रसं० १७ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २४७ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र ग्रादि हैं ।

६७०७. गुटका सं० २ । पत्रसं० ११-६७ । ग्रा० ८×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र ग्रादि सामान्य पाठ एवं पूजाग्रों का संग्रह है । सुरेन्द्रकीर्ति विरचित ग्रनन्तव्रत समुच्चय पूजा भी है ।

६७०८. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १०४ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५२ ।

विशेष—वेगराज कृत रचनाग्रों का सग्रह है ।

१. चूनडी	—	वेगराज ।
२. ज्ञान चूनडी		,,
३. पद सग्रह		,,
४. नेम व्याह पच्चीसी		,,
५. बारहखडी		,,
६. सारद लक्ष्मी सवाद		,,

६७०९. गुटका सं० ४ । पत्र स० ११-१६ तथा १ । ग्रा० ८×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १७२२ । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ३५६ ।

१. कवि प्रिया	—	केशवदास
२. बिहारी सतसई	—	बिहारीलाल
३. मधुमालती	—	
४. सदयवच्छयासावलिंग	—	। ग्रपूर्ण ।

६७१०. गुटका सं० ५ । पत्रस० ७-१८५ । ग्रा० ६×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८०६ । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० ३५८ ।

विशेष—निम्न पाठ मुख्य हैं ।

१. श्रावकाचार चउपई—पासचन्द्र सूरि । ले०काल सं० १८०६ ।
२. साधुवंदना—× । ८८ पद्य हैं ।
३. चउवीसा—जिनराजसूरि ।
४. गोडी पार्श्वनाथ स्तवन—× ।
५. पद संग्रह—× ।

विशेष—गुटका नागौर में कर्मचन्द्र बाडिया के पठनार्थ लिखा गया था ।

६७११. गुटका सं० ६ । पत्र स० ५-२२ १-८० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १७६१ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५७ ।

१. तत्वार्थ सूत्र—उमास्वामी । भाषा-संस्कृत ।
२. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंग । ले० काल १७६४ ।
३. पद्मावती राणी रास— × । हिन्दी ।
४. गौतम स्वामी सज्झाय— × । ,,
५. स्तवन — × । ,,
६. चित्तोड बसने का समय (सवत् १०१)
७. दान शील तप भावना— × । हिन्दी । ले० काल १७६१ ।
८. सज्झाय— × । हिन्दी ।
९. पदमध्या की वीहालो— × । हिन्दी ले० काल १७६३ ।
१०. ढोलामारू चौपई—कुशललाभ । हिन्दी ।

६७१२. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ४० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६५ ।

विशेष—ज्योतिष सबंधी साहित्य है ।

६७१३. गुटका स० ८ । पत्रस० १०० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा--हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६६ ।

मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. विहारी सतसई	—	विहारीलाल । पद्य स० ७०६
२. नवरत्न कवित्त	—	× ।
३ परमार्थ दोहा	—	रूपचन्द ।
४. योगसार	—	योगीन्द्र देव

६७१४. गुटका सं० ९ । पत्रस० १२६ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६७ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्रो का सग्रह है ।

६७१५. गुटका स० १० । पत्रस० ६० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७० ।

विशेष—पूजा सग्रह के अतिरिक्त गुलाल पच्चीमी तथा भाऊ कृत रविव्रत कथा है । लिपिकार वेनराग है ।

६७१६. गुटका सं० ११ । पत्र स० २१६ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत हिन्दी । ले०काल स० १६३५ फागुन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७६ ।

प्रशस्ति—श्री मूलसंघे भट्टारक श्री धर्मकीर्ति तत्पट्टे भ० शीलभूषण तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तदाम्नाये खंडेलवालान्वये प्रधान श्री दुर्गाराम द्वितीय भ्राता कपूरचन्द तद्भार्या हरिसिंहदे तत्पुत्र श्री लोदी तेनेदं पुस्तक लिखाप्य दत्तं श्री ब्रह्म श्री बुद्धसेनाय ।

पूजा एव स्तोत्र संग्रह है। मुख्यतः पंडितवर सिंघारमज पं० रूपचन्दकृत दशलाक्षणिक पूजा तथा भाउ कृत रविव्रत हैं।

६७१७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १०० । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७७ ।

विशेष—बनारसीदास, भूधरदास, मोहनदास आदि कवियो के पाठो का संग्रह है।

६७१८. गुटका सं० १३ । पत्रसं० १४० । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७३४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७६ ।

१. गौतमरास—विनयमल । र०काल १४१२ ।

२. अजितनाथ शान्ति स्तवन-मेरुनंदन ।

३. मारावाहवनि सज्झाय—× ।

४. आषाढ भूत धमाल—× । र०काल सं० १६३८ ।

५. दान शील तप भावना—समयसुन्दर

६७१९. गुटका सं० १४ । पत्रसं० १५८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८५ ।

विशेष—अन्य पूजाओ के अतिरिक्त चौबीस तीर्थंकर पूजा भी दी हुई है।

६७२०. गुटका सं० १५ । पत्रसं० ६४ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८४ ।

विशेष – मत्र तत्र सग्रह है।

६७२१. गुटका स० १६ । पत्रसं० ११८ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७७१ द्वि० आसाढ बुदी १ । पूर्ण वेष्टन स० ३८३ ।

१. स्वामी कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा — कार्त्तिकेय ।
हिन्दी टीका सहित

२. प्रीतिकर चरित्र — जोधराज

६७२२. गुटका सं० १७ । पत्रसं० ४६ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८२ ।

विशेष—विभिन्न पाठों का संग्रह है।

६७२३. गुटका सं० १८ । पत्रसं० ५० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८६ ।

१. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंग ।

२. दशलक्षणोद्यापन—× ।

६७२४. गुटका सं० १९ । पत्रसं० ५९६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८१९ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८७ ।

१. पार्श्वपुराण—भूधरदास । पत्रसं० १–१८८

२. सीता चरित्र—कविबालक । ,, १८९–३४८

३. धर्मसार—× । ,, १–६० तक ।

प्राप्ति स्थान—खण्डेलवाल दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर

६७२५. गुटका सं० १ । पत्रसं० १३८ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० × । पूर्ण वेष्टन स० २०२ ।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार एव नेमिचन्द्रिका का संग्रह है ।

६७२६. गुटका सं० २ । पत्रस० १०२ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ ।

विशेष—पूजाओ का संग्रह है ।

६७२८. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ११३ । आ० ७$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २०४ ।

विशेष—गोम्मटसार, त्रिलोकसार, क्षपणासार आदि सिद्धात ग्रंथों में से चर्चाएं हैं ।

६७२६. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ८० । आ० ८$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८८२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५ ।

विशेष—स्तोत्र एव पूजा संग्रह है ।

६७३०. गुटका सं० ५ । पत्र स० १४० । आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ ।

विशेष—स्फुट चर्चाओ का संग्रह है ।

६७३१. गुटका सं० ६ । पत्रस० ८१ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ ।

विशेष—निम्न पाठो का मुख्यतः संग्रह है—

१. दर्शन पाठ व पूजाएं आदि
२. धर्मबावनी-वषाराम दीवान । र०काल स १८८४ । पूर्ण । वषाराम वृन्दावन के रहने वाले थे ।

६७३२. गुटका सं० ७ । पत्र स० २८ । आ० ७×५ इंच । भाषा हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन म० १०८ ।

विशेष—विभिन्न पदों का संग्रह है ।

६७३३. गुटका सं० ८ । पत्रसं० ७८ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र संग्रह है ।

६७३४. गुटका सं० ६ । पत्रस० २३७ । आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १७३४ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११० ।

विशेष—समयसार तथा बनारसी विलास का संग्रह है ।

नोट—३७ छोटे बड़े गुटके और है तथा इनमें पूजा स्तोत्र एवं कथाओं का भी संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान–दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर

६७३५. गुटका सं० १ । पत्रस० ८५ । आ० ११ × ६ इंच भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ ।

विशेष—हिन्दी कवियो की विभिन्न रचनाओं का संग्रह है । मुख्य पाठ है.—

१. ध्यान बत्तीसी । (२) नेमीश्वर की लहरी ।
३. मगलहरीनिह । (४) मोक्ष पैड़ी—बनारसीदास
५. पंचम गति बेलि । (६) जैन शतक—भूधरदास
७. आदित्यवार कथा–भाऊ ।

६७३६ गुटका सं० २ । पत्र स० ३७ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६० ।

विशेष—नित्य नियम पूजा तथा रविव्रत कथा है ।

६७३७. गुटका सं० ३ । पत्रस० १४६ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठ है—

१. यशोधर चौपई	—	
२. जम्बूस्वामी चौपई	पाण्डे जिनराम	
४. पुरदर चौपई	—	
४. बकचूल की कथा	—	पद्य ५७२ (अपूर्ण)

६७३८. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ४३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ ।

विशेष—समयसार कलशा की हिन्दी टीका पाण्डे राजमल कृत है ।

६७३९. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १५८ । आ० ६ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६३ ।

१ अनित्य पचासिका	—	
२. समयसार नाटक	बनारसीदास	अपूर्ण
३. द्रव्य संग्रह भाषा	पर्वत धर्मार्थी	
४. नाममाला	—	

६७४०. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २२२ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले० काल स० १८०४ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ ।

१. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	
२. पूजा संग्रह	×	२५ पूजायें हैं ।
३. आदित्यवार कथा	भाऊ	

६७४१. गुटका सं० ७ । पत्रसं० १४० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८६२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ ।

विशेष—जैन शतक (भूधरदास),पार्श्वनाथ स्तोत्र, पच स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

६७४२. गुटका सं० ८ । पत्रसं० २५ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनस० १६६ ।

विशेष—इसके अधिकाश पत्र खाली है द्रव्य सग्रह गाथा एव जैन शतक टीका है ।

६७४३. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ७३ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६१६ माहबुदी७। पूर्ण । वेष्टनसं० १६७ ।

विशेष—निम्न पाठ है ।

१. पूजा संग्रह । (२) पच मंगल-रूपचन्द ।

२. बारहखड़ी सूरत । (४) नेमिनाथ नवमगल—लालचन्द

र०काल स० १७६४ ।

४. नेमिनाथ का बारहमासा—विनोदीलाल ।

६७४४. गुटका सं० १० । पत्र स० २३७ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० १६८ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. प्रीत्यकर चोपई नेमिचन्द्र

२. राजाचन्द की कथा ,,

३. हरिवंश पुराण र०काल स० १७६६ आसोज सुदी १०

६७४५. गुटका सं० ११ । पत्रस० ८६ । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ ।

विशेष—सामान्य पूजाओ का संग्रह है । ४३ से आगे पत्र खाली हैं ।

६७४६. गुटका सं० १२ । पत्र स० ६४ । आ० ६×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७० ।

१ आदित्यवार कथा — अपूर्ण

२. शनिश्चर कथा —

३, विष्णु पजर स्तोत्र —

६७४७. गुटका स० १३ । पत्रसं० १२८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७१ ।

६७४८. गुटका स० १४ । पत्रसं० ११६ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७२ ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ (हिन्दी) । सवत् १८६१ (जयपुर) तक की प्रतिष्ठाओं का वर्णन तथा श्रावक की चौरासी क्रिया आदि अन्य पाठ भी हैं ।

६७४९. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ६६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७३ ।

विशेष—भक्तामर सटीक (अपूर्ण) । महापुराण संक्षिप्त-गगाराम । विवेक छत्तीसी तथा चैत्य बंदना ।

६७५०. गुटका सं० १६ । पत्र स० ५० । आ० ४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७४ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम, परमानन्द स्तोत्र, स्वयभूस्तोत्र एव समाधिमरण आदि का सग्रह है ।

६७५१. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ३४ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ ।

विशेष—सम्मेदाचल पूजा गगाराम कृत, गिरनार पूजा तथा मागीतु गी पूजा आदि का सग्रह है ।

६७५२. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ११५ । आ० ७½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ ।

विशेष—गोम्मटसार, क्षपणासार, लब्धिसार में से प० टोडरमल एव रायमल्ल जी कृत चर्चाओ का सग्रह है ।

६७५३. गुटका सं० १९ । पत्रसं० ८६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७७ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा सग्रह है ।

६७५४. गुटका सं० २० । पत्र स० २० । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८६५ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७८ ।

विशेष—इष्ट पिचावनी रघुनाथ कृत तथा ब्रह्म महिमा आदि कवित्त है ।

६७५५. गुटका सं० २१ । पत्र स० ६६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७९ ।

विशेष—नित्यनियम पूजा संग्रह, सूरत की बारह खडी, बारहभावना आदि का सग्रह है ।

६७५६. गुटका सं० २२ । पत्र स० २४८ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ हैं—

१. उपदेश शतक	द्यानतराय ।	र०काल सं० १७५८
२. संबोध अक्षर बावनी	,,	
३. धर्मपच्चीसी	,,	
४. तत्वसार	,,	
५. दर्शन शतक	,,	
६. ज्ञान दशक	,,	
७. मोक्ष पच्चीसी	,,	

८. कविधर्मसिंह संवाद　　　　द्यानतराय

९. दशस्थान चौबीसी　　　　,,

विशेषतः द्यानतराय कृत धर्मविलास में से पाठ है ।

९७५७. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ६० । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ ।

विशेष—सामान्य पूजाओं का संग्रह है ।

९७५८ गुटका सं० २४ । पत्रसं० २८ । आ० ८½ × ६½ इश्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ ।

विशेष—आदित्यवार कथा, भक्तामर स्तोत्र एव तत्वार्थ सूत्र का संग्रह है ।

९७५९. गुटका स० २५ । पत्रसं० ४४ । आ० १०½ × ५½ इश्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८३ ।

१. तत्वार्थ सूत्र भाषा पद्य　　　　छोटीलाल ।

२. देव सिद्ध पूजा　　　　×

९७६०. गुटका सं० २६ । पत्रस० ७४ । आ० ८½ × ६½ इश्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १८४ ।

विशेष—बनारसी विलास में से पाठो का सग्रह है । जैन शतक भूधरदास कृत भी है । इसके अतिरिक्त सामान्य पाठो एव पूजाओं का सग्रह है ।

९७६१. गुटका सं० २७ । पत्र स० १०५ । आ० ८ × ६ इंच । भाषा हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १५८ ।

विशेष— भक्तामर स्तोत्र भाषा, बाईस परीषह एव कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा आदि का संग्रह है ।

९७६२. गुटका सं० २८ । पत्रस० १३३ । आ० ११ × ७½ इश्च । भाषा सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन दीवानजी मंदिर भरतपुर ।

९७६२. गुटका सं० १ । पत्र स० २८ । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । दशा सामान्य । वेष्टन स० १ ।

९७६३. गुटका सं० २ । पत्र स० ३० । साइज × । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २ ।

विशेष—प्रथम गुटके मे आये हुये पाठो के अतिरिक्त पार्श्वनाथ स्तोत्र, घंटाकर्ण मंत्र तथा ऋषिमंडल स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

६७६४. **गुटका सं० ३** । पत्रसं० २६१ से ३२३ तक । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३ ।

विशेष—स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र आदि हैं ।

६७६५. **गुटका सं० ४** । पत्र स० १५ । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ ।

विशेष—देवपूजा तथा सिद्ध पूजा है ।

६७६६. **गुटका सं० ५** । पत्रसं० ६७ । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५ ।

विशेष—गुटका खुले पत्रो मे है तथा स्तोत्र तथा पूजाओ का सग्रह है ।

६७६७. **गुटका सं० ६** । पत्रसं० १६७ । भाषा--हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ ।

६७६८. **गुटका स० ७** । पत्र स० २४२ । भाषा हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ ।

विशेष—गुटके मे विषय-सूची प्रारम्भ मे दी गई है तथा पूजा पाठ आदि का संग्रह है ।

६७६९. **गुटका सं० ८** । पत्र स० ६४ । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ ।

६७७०. **गुटका सं० ९** । पत्र स० १०६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ ।

६७७१. **गुटका सं० १०** । पत्रसं० १३५ । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ ।

६७७२. **गुटका सं० ११** । पत्र सं० १७३ । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८२४ भादों सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९ ।

विशेष— निम्न पाठों का संग्रह है ।

(१) पद संग्रह (जगराम गोदीका)
(२) समवशरण मगल (नथमल रचना सं० १८२१ लेखन सं० १८२३)
(३) जैन बद्री की चिट्ठी (नथमल)
(४) फुटकर दोहा (नथमल)
(५) नेमीनाथजी का काहला (नथमल)
(६) पद संग्रह (नथमल)
(७) भूधर विलास (भूधरदासजी)
(८) बनारसी विलास (बनारसीदासजी) । आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

६७७३. गुटका सं० १२ । पत्रसं० ५८। भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४० ।

विशेष—(१) सभाभूषण ग्रंथ—(गंगाराम) पद्य संख्या ६४ । रचना काल-१७४४ ।
(२) पद सग्रह-(हेतराम) विभिन्न राग रागनियों के पदों का सग्रह है ।

६७७४. गुटका सं० १३ । पत्रसं० १६० । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १७७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

६७७५. गुटका सं० १४ । पत्रस० ७६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ ।

विशेष—(१) चौवीस ठाणा चर्चा ।
(२) चौबीस तीर्थंकरो के ६२ ठाणा चर्चा ।

६७७६. गुटका सं० १५ । पत्रस० ११८ । भाषा-हिन्दी । र०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५० ।

विशेष—इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की गई थी । समयसार (बनारसीदासजी) भी है ।

६७७७. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ५२ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७ ।

६७७८. गुटका सं० १७ । पत्रसं० १६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८ ।

विशेष—शनिश्चर की कथा दी हुई है ।

६७७९. गुटका सं० १८ । पत्रस० ८५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१ ।

विशेष—बुधजन सतसई, पद व वचन बत्तीसी है ।

६७८०. गुटका सं० १९ । पत्रसं० १६३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५ ।

विशेष—पूजा पाठ व कथा-सग्रह है ।

६७८१. गुटका सं० २० । पत्रसं० ८० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । × । ले०काल । × । पूर्ण । वेष्टनसं० २५ ।

विशेष—पूजा पाठ आदि सग्रह है ।

६७८२. गुटका सं० २१ । पत्रसं० ८२ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ ।

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा वचनिका है ।

६७८३. गुटका सं० २२ । पत्र स० १०१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७ ।

विशेष—चर्चा वगैरह हैं ।

६७८४. गुटका सं० २३। पत्रसं० २७०। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २८।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि है।

६७८५. गुटका सं० २४। पत्रस० ४७। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २६।

विशेष—अक्षर बावनी, ज्ञान पच्चीसी, वैराग्य पच्चीसी, सामायिक पाठ, मृत्यु महोत्सव आदि के पाठ हैं।

६७८६. गुटका सं० २५। पत्रसं० ४३। भाषा–हिन्दी। विषय-संग्रह। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३१।

विशेष—चेतन कर्म चरित्र है।

६७८७. गुटका स० २६। पत्रस० २ से २६६। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३२।

विशेष— भूधरदास, जिनदास, नवलराम, जगतराम आदि कवियों के पदों का सग्रह है।

६७८८. गुटका सं० २७। पत्र सं० ६७ से २२३। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३४।

विशेष—पद, स्तोत्र, पूजादि का सग्रह है।

६७८९. गुटका स० २८। पत्र स० १०३। भाषा–प्राकृत। ले०काल सं० १६०१। पूर्ण। वेष्टन स० ३५।

विशेष—परमात्म प्रकाम, परमानन्द स्तोत्र, बावनाक्षर, केवली, लेश्या आदि पाठों का सग्रह है।

६७९०. गुटका स० २९। पत्र स० २२७। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १६३०। पूर्ण। वेष्टनसं० ४६।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ है।

६७९१. गुटका सं० ३०। पत्र स० ३७५। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ४७।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ, पंचस्तोत्र एव जैन शतक आदि हैं।

६७९२. गुटका सं० ३१। पत्रसं० ७२। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५०।
विशेष—देव पूजा भाषा-टीका जयचन्द जी कृत है।

६७९३. गुटका सं० ३२। पत्रस० ३२। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५१
विशेष—देव पूजा तथा भक्तामर स्तोत्र है।

६७९४. गुटका सं० ३३। पत्र सं० २६। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५२।

विशेष—पूजन संग्रह है।

९७९५. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० २ से ३६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ ।

विशेष—नित्य पूजा संग्रह है ।

९७९६. गुटका सं० ३५ । पत्रस० ४८-१३५ । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम एव पूजा पाठ है —

९७९७. गुटका सं० ३६ । पत्रसं० ७१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम स्तोत्र-प्राशाधर, षोडष कारण पूजा, पचमेरु पूजाएं हैं ।

९७९८. गुटका सं० ३७ । पत्र स० १४३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५ ।

विशेष—पचमगल-रूपचन्द । सिद्ध पूजा अष्टाह्निका पूजा, दशलक्षण पूजा, स्वयभू स्तोत्र, नवमंगल नेमिनाथ, श्रीमधर जी की जखडी—हरष कीर्त्ति । परम ज्योति, भक्तामर स्तोत्र आदि हैं ।

९७९९. गुटका सं० ३८ । पत्रस० २४० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ, सम्मेदाचल पूजा, चौबीस महाराज पूजा, पंच मंगल, व्रत कथा व पूजाएं हैं ।

९८००. गुटका स० ३९ । पत्र स० २२३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५७ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, मगल, पूजा, पंच परमेष्ठी पूजा, रत्नत्रय पूजा, आदित्यवार कथा, राजुल पच्चीसी आदि पाठ है ।

पद—१-मक्सी पारसनाथ—भागचन्द ।
२-प्रभु दर्शन का मेला है—बलिभद्र ।
३-मै कैसी करु साजन मेरा प्रिया जाना गढ़ गिरनार—इन्द्रचन्द्र ।
४-सेवक कू जान कै—लाल ।
५-जिया परलोक सुधारो—किशनचन्द्र ।
६-आगे कहा करसी भैया जब आजासी काल रे—बुधजन ।

९८०१. गुटका सं० ४० । **विशेष**—सभा शृंगार है ।

अन्तिम पाठ—

भाषा करी नाम सभाभूषन गिरंथ कहू लीजिए ।
यामें रागरागिनी की जात सबै ....यहु ते तान
ताल ग्राम सुरगुनी सुनि रीझिऐ ।
गगाराम विनय करत कवि कांन सुनि बरनत
भूले तो सुधारि कीजिए ।

दोहा

सत्रह सत संवत् सरस चतुर अधिक चालीस ।
कातिक सुदि तिथि अष्टमी वार सरस रजनीस ।।६२।।
सांगानेर सुथान में रामसिंह नृपराज ।
तहा कविजन बचपन मे राजति सभा समाज ।।६३।।
गगाराम तह सरस कार्य कीनौ बुधि प्रकास ।
श्री भगवंत प्रसाद तें इह सुभ सभा विलास ।।६४।।

इति सभा सृंगार ग्रंथ सपूरन ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६८०२. गुटका सं० १ । पत्र सं० १३–१४३ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३४ ।

विशेष—पदों का सग्रह है । मुख्यतः जग्गाराम के पद हैं । अंत में हरचंद संघी कृत चौबीस महाराज की वीनती है ।

आतम बिन सुख और कहा रे ।
कोटि उपाय करो किन कोउ, विन ग्यानी नहीं जात लहारे ।
भव विरकत जोगी सुर हैगे, जिहि ये थिरवि चिराचिर हारे ।
वरनन करि कहौ कैसे कहिऐ, जिसका रूप अनूपम हारे ।
जिहि दे पाये विन ससारी, जग अन्दर विचि जात बहारे ।
जिहि दे वल करि कै पाडव नै घोर तपस्या सकल सहारे ।
जिहि दे भाव अरथ उर कीना, जो पर सेती नांहि फस्यारे ।
कहे दीप नर तेही धन्य है जिस दानौउ सदा रूप चहारे ।।आतम।।

६८०३. गुटका सं० २ । पत्रस० ४३ । भाषा-प्राकृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०६ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं ।

१. द्रव्य-संग्रह—हिन्दी टीका सहित
    टीकाकार वशीधर है ।

२. तपोद्योतक सत्तावनी, द्वादशानुप्रेक्षा,
    पंच मंगल ।

६८०४. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ७६ । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २८४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक ५२ पूजाओं का संग्रह है । इनमें नवसेना विधान, दस दान, मतमंतार वर्णनाष्टक आदि भी हैं ।

६८०५. गुटका सं० ४ । पत्रसं० १६० । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७४ ।

विशेष—७५ पाठो का संग्रह है जिनमे अधिक स्तोत्र सग्रह हैं । कुछ विनती तथा साधारण कथाऐं हैं । कुछ उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. कलियुग कथा—रचयिता, पाण्डे केशव, ज्ञान भूषण के उपदेश से । भाषा हिन्दी पद्य ।

२. कर्म हिंडोलना—रचयिता—हर्षकीर्ति । भाषा-हिन्दी पद्य ।

पद—

साधो छाडों कुमति अकेली, जाके मिथ्या सग सहेली ।
माधो लीज्यो सुमति अकेली, जाके समता सग सहेली ।

वह सात नरक ... .. यह अभयदायक ॥१॥
यह आगे कोध यह दरसन निरमल जिन भाषित धर्म बखाने ॥२॥

यह सुमति तनो व्यवहार चित चेतो ज्ञान सभारू ।
यह कवल कीरति गति गावै भवि जीवन के मन भावै ।

पत्र १४७ मालीरासा --

भव तरु सीच हो मालिया, निह चरु चारु सुहान ।
चिहुँ डार्वी फल जव जवर, ते फल रावय काल रे ।
प्रानी न काहे न चेत रे ॥१॥

काल कहै मुनि मालिया, सीच जु माया गवार ।
देखत ही को होडा होड है, भीतर नही कुछ सार रे । ६॥

× × × × ×

काया कारी हो कन करै बीज सुदेशन नोप ।
सील सुकरना मालिया, धरम अकुरो होय रे प्राणी ।
गहि वैराग कुदाल की, खोदि सुचारत कूप ।
भाव रहट वृत बोलि छट कार्ध श्रुत जुवरे ॥१७॥

× × × ×

धरम महा तरु विरघ तो, बहु बिस्तार करेय ।
अविनासी सुख कारने, मोख महाफल देव रे ।
कहै जिनदास सुरालियो हसल बीज सुभाल ।
मन वांछित फल लागसी, किस ही भव भव कालरे ॥२६॥

पत्र १६३ से १८१ तक पन्नी से काट कर ले जाये गये हैं ।

निम्न पाठ नहीं हैं—

ऋषभदेव जी की स्तुति, बहत्तरि सीख, अष्ट गंध की विधि यत्र, नामावली, मुहूर्त्त, सरोधा, बिल्ली की जन्म पत्रिका।

यह पुस्तक स० १९३१ मे बख्तीराम रामप्रसाद कासलीवाल वैर वाले ने भरतपुर के मंदिर में चढाई।

९८०६. गुटका सं० ५। पत्रस० २०२। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल स० १८८२। पूर्ण। वेष्टन स० २६७।

विशेष – नित्य पूजा पाठ हैं। पत्र १०३ से १९९ तक बहुत मोटे अक्षर हैं। षोडष कारण तथा दशलक्षण जयमाल हैं। प्राकृत गाथाओं के नीचे संस्कृत अर्थ है। ३५ पाठों का संग्रह है।

९८०७. गुटका सं० ६। पत्र स० ७५९। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७२।

विशेष—१२० पाठों का संग्रह है। अक्षर सुन्दर तथा काफी मोटे हैं। प्रारम्भ में पूजा प्राकृत तथा विनोदी लाल कृत मंगल पाठ है। प्रारम्भ में विषय सूचना भी दी हुई है। नित्य नैमित्तिक पाठों के अतिरिक्त निम्न पाठ और है—

भजन—जगतराम, नवलजी, जोधराज, द्यानतराय जी आदि के पद तथा टोडरमल कृत दर्शन तथा शिक्षा छन्द।

९९०८ गुटका स० ७। पत्रस० ६९। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २६५।

विशेष—निम्न संग्रह है—

पार्श्वनाथ स्तोत्र, सिद्ध पूजा, भक्तामर स्तोत्र, संस्कृत तथा भाषा, कल्याण मन्दिर स्तोत्र, भाषा द्वादशानुप्रेक्षा, त्रिलोकसार भाषा-रचना सुमति कीर्ति, र०काल १६२७।

छहढाला—द्यानतराय। र०काल १७५९।

समाधिमरण

९८०९. गुटका सं० ८। पत्रस० ३१६। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं० १८८५। पूर्ण। वेष्टनसं० २६६।

विशेष—४९ पाठों का संग्रह है। सब नित्य पाठ ही है। जोधराज जी कासलीवाल कामा वालों ने लिखाई। अक्षर बहुत मोटे है एक पत्र पर आठ लाइन है तथा प्रत्येक लाइन मे १३ अक्षर हैं। एक टोडर मल कृत दर्शन भी है जो गद्य मे है।

९८१०. गुटका सं० ९। पत्रसं० १७०। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं० १७८५। पूर्ण। वेष्टनसं० २६३।

विशेष—निम्न संग्रह है—

(१) तत्वार्थ सूत्र टीका—पत्र १०२ तक। रचयिता—अज्ञात।

(२) अनित्य पच्चीसी—भगवतीदास

(३) ब्रह्मविलास—भगवतीदास—पत्रसं० ६९। र०काल सं० १७५५।

९८११. गुटका सं० १० । पत्रसं० १४६ । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २६४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है । मोक्ष शास्त्र के प्रारम्भ में भगवान का एक सुन्दर चित्र है । चित्र में एक ओर गोडी डाले हाथ जोडे मुनि तथा दूसरी ओर इन्द्र हैं ।

९८१२. गुटका सं० ११ । पत्रसं० १०८ । भाषा–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २१५ ।

विशेष—भरतपुर मे लिखा गया था । पद्मावती स्तोत्र, चतुःषष्टि योगिनी स्तोत्र, लक्ष्मी स्तोत्र, परमानन्द स्तोत्र, णमोकार महिमा, यमक बध स्तोत्र, कष्ट नाशक स्तोत्र, आदित्यहृदय स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

९८१३. गुटका सं० १२ । पत्रस० ४२३ । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८०० । पूर्ण । वेष्टनसं० १७८ ।

विशेष—

(१) पद्म पुराण—खुशाल चन्द । पत्रस० १३६ । र०काल १७८३ । पूर्ण ।

(२) हरिवश पुराण—खुशालचन्द । पत्रसं० १०१ ।

(३) उत्तरपुराण—खुशालचन्द । पत्रस० १८३ । र०काल स० १७९९ ।

९८१४. गुटका सं० १३ । पत्र स० ३४६ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ ।

विशेष—गुटके मे निम्न पाठ हैं ।

१. ब्रह्मविलास	भगवतीदास ।	पत्र स० १३३ ले०काल स० १७९३ चैत्र शुक्ला १० ।
२. पद ४	—	पत्र सं० १३४ से १३६
३. बनारसी विलास	बनारसीदास ।	पत्र स० १४१–२०६ तक । ले०काल स० १८१८ कार्तिक सुदी ६ ।
४. समयसार नाटक	बनारसीदास ।	पत्र स० १ से १२७ तक
५. पद सग्रह	—	पत्र सं० १ से १७ तक मुख्य रूप मे हर्षचन्द के पद हैं ।

पद सुन्दर है—

निजनन्दन हुलरावै, वामादेवी निजनन्दन हुलरावै ।
चिरजीवो त्रिभुवन के नायक कहि कहि कठ लगावै ।।१।।

नील कमल दल अगमनोहर मुखदुतिचन्द कुरावै
उन्नतभाल विसाल विलोचन देखत ही बनि आवै ।।२।।

मस्तक मुकुट कान युग कुण्डल तिलक ललाट बनावै ।
उज्जल उर मुकताफल माला, उडगन मोहि तिहुरावै ।।३।।

सुन्दर सहस ग्रट्ठोत्तर लक्षन ग्रंग गुन सुभग सुहावै ।
मुख मृदुहास दतदुति उज्जल ग्रानन्द ग्रधिक बढावै ।।४।।
जाकी कीरत तीन लोक मैं सुरनर मुनि जन गावै ।
सो मन हरषचन्द वामा दै, ले ले गोद खिलावै ।।५।।

ग्रन्य पाठ संग्रह है—पत्र स० ३५

६८१६. गुटका सं० १४ । पत्रसं० १३५ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १८०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० ।

विशेष—जगतराम कृत १६५ पदो का सग्रह है । ६१ पत्र तक पद हैं । इसके बाद सिद्ध चक्र पूजा है ।

६८१७. गुटका सं० १५ । पत्रसं० २४६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ ।

विशेष—पूजा भजन तथा पद ग्रादि का सुन्दर संग्रह है ।

६८१८. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३४३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६ ।

६८१९. गुटका स० १७ । पत्रसं० २६५ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०. ।

विशेष—पूजाग्रो तथा कथाग्रो ग्रादि का सग्रह है ।

६८२०. गुटका सं० १८ । पत्रस० ४० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६८२१. गुटका सं० १९ । पत्रसं० ३१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६८२२. गुटका सं० २० । पत्रसं० ५६ । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०३ ।

विशेष—हरिसिंह के पद हैं ।

६८२३. गुटका सं० २१ । पत्रसं० ३६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०५ ।

विशेष—समाधि मरण तथा जिन शतक ग्रादि हैं ।

६८२४. गुटका सं० २२ । पत्रस० २०० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०६ ।

विशेष—बुधजन, हेतराम, भूधरदास, भागचन्द, विनोदीलाल, जगतराम ग्रादि के पदों का सग्रह है ।

६८२५. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ६ से १६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० ३६७ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

१. कलियुग की कथा	हिन्दी	केशव पाण्डे
२. बारहखडी, ग्रठारह नाते की कथा	हिन्दी	कमलकीर्ति

३. रामदास पच्चीसी	—	रामदास
४. मेघकुमार सिज्झाय	—	पूनो
५. कवित्त जन्म कल्याणक महोत्सव इसमें २६ पद्य हैं।	—	हरिचन्द
६. सूम सूमनी की कथा, परमार्थ जकडी	—	रामकृष्ण

६८२६. गुटका सं० २४ । पत्रस० ३० से २०६ । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६८।

विशेष—मुख्य पाठ ये है।

पंचेद्रिय वेलि	ठक्कुरसी ।	भाषा-हिन्दी ।
	रचना काल	स० १५८५ । ले०काल × । अपूर्ण ।
प्रतिक्रमण × ।	प्राकृत ।	रचना काल × । ले०काल × । पूर्ण ।
मनोरथ माला	मनोरथ ।	भाषा-प्राकृत । रचना काल × । पूर्ण ।
द्रव्य सग्रह	नेमिचन्द्राचार्य ।	भाषा-प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण ।

६८२७. गुटका सं० २५ । पत्र स० ५४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ ।

विशेष—राजुल पच्चीसी विनोदीलाल, नेमिनाथ राजमति का रेखता—विनोदीलाल

६८२८. गुटका सं० २६ । पत्रस० ८३ । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ है।

६८२९. गुटका सं० २७ । पत्रस० ४० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०१ ।

विशेष—सेढूराम कृत पद हैं ।

६८३०. गुटका सं २८ । पत्र सं० ६७ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०२ ।

विशेष—नित्य पाठ तथा स्तोत्र सग्रह है । गुजरमल पुत्र मेघराज मोजमाबाद वाले की पुस्तक है ।

६८३१. गुटका सं० २६ । पत्र स० ५० । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५६ ।

विशेष—सामान्य पाठ हैं ।

६८३२. गुटका सं० ३० । पत्रसं० ४८ । भाषा—हिन्दी-संस्कृत, । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र एव पूजा संग्रह है ।

६८३३. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १० से ४० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५२ ।

विशेष—स्तोत्र सग्रह है ।

६८३४. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६४ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६८३५. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ४६से१४३ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टनसं० ३४६ ।

विशेष—धार्मिक चर्चाएं हैं ।

६८३६. गुटका स० ३४ । पत्रस० ४० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५० ।

विशेष—नवमंगल (विनोदीलाल) पद्मावती स्तोत्र (सस्कृत) चक्रेश्वरी स्तोत्र (संस्कृत)

६८३७. गुटका स० ३५ । पत्र स० २३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १९६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८५ ।

विषय—बनारसीदास कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६८३८. गुटका सं० ३६ । पत्रस० २० । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ ।

६८३९. गुटका सं० ३७ । पत्रस० १६ से । १२० । भाषा-हिन्दी । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन सं० ३४८ ।

विशेष—श्वेताम्बरीय पूजाओं का संग्रह है । १०८ पत्र मे पचमतपवृद्धि स्तवन (समय-सुन्दर) वृद्धि गोतम रास है ।

६८४०. गटका सं० ३८ । पत्रस० १६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनसं० ३४२ ।

विशेष—दशलक्षण पूजा तथा स्वयम्भू स्तोत्र भाषा है ।

६८४१. गुटका सं० ३९ । पत्रसं० २५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ३४३ ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

६८४२. गुटका सं० ४० । पत्रसं० ४८ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × पूर्ण । वेष्टनसं० ३४४ ।

६८४३. गुटका सं० ४१ । पत्रसं० १६ से ७० तक । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३३६ ।

९८४४. **गुटका सं० ४२** । पत्र सं० ७४ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४० ।

विशेष—५ पूजाओं का सग्रह है ।

९८४५. **गुटका सं० ४३** । पत्रसं० ४७ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४१ ।

विशेष—धार्मिक चर्चाएं हैं ।

९८४६. **गुटका सं० ४४** । पत्रस० ७ से ५७ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३३५ ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत सोलह स्वप्न किसनसिंह कृत अच्छादना पच्चीसी तथा सूरत की बारहखड़ी है ।

९८४७. **गुटका सं० ४५** । पत्रस० ७२ । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८०९ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६ ।

विशेष—सामान्य पाठ है ।

९८४७. **गुटका सं० ४६** । पत्र सं० १८८ । भाषा हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७२ ।

विशेष—पूजा पाठ एव पद संग्रह है ।

९८४८. **गुटका सं० ४७** । पत्र सं० २०४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७३ ।

विशेष—छोटे २ भजन हैं ।

९८४९. **गुटका सं० ४८** । पत्र सं० ३३ से ६० । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६२ ।

९८५०. **गुटका सं० ४९** । पत्रस० २० । भाषा-प्राकृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६३१ ।

९८५१. **गुटका सं० ५०** । पत्र स० ६५ । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५२१ ।

विशेष—विनोदीलाल कृत पद तथा नित्य पूजा पाठ हैं ।

९८५२. **गुटका सं० ५१** । पत्र स० ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल सं० १९४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२५ ।

विशेष—सामान्य पाठ हैं ।

९८५३. **गुटका सं० ५२** । पत्र स० ५ से २२१ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५०१ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठो का सग्रह है । उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार हैं ।

चतुर्विंशति देवपूजा—सस्कृत

जोगीरास—जिनदास कृत

सज्जनचित्तवल्लभ—
श्रुतस्कंध—भ० हेमचन्द्र ।
नवग्रह पूजा—संस्कृत
ऋषि मंडल, रत्न त्रय पूजा—
चिन्तामणि जयमाल—राइमल
माला—इसमें बहुत से देशों के तथा नगरो के नाम गिनाये गये है ।

६८५४. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० १६-६३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६६ ।

विशेष—पूजा संग्रह—दशलक्षण जयमाल आदि है ।

६८५५. गुटका सं० ५४ । पत्र स० ५० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६७ ।

६८५६. गुटका सं० ५५ । पत्रसं० ४१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६८ ।

विशेष—नित्य पूजा, स्तोत्रादि भी हैं ।

६८५७. गुटका सं० ५६ । पत्र स० २५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६८७ ।

६८५८. गुटका सं० ५७ । पत्रसं० १८० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६३ ।

विशेष—नित्यपूजा पाठ स्तोत्र आदि संग्रह है ।

६८५९. गुटका सं० ५८ । पत्रस० १७-११३ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८२४ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६४ ।

विशेष—पूजाओ का संग्रह है ।

६८६०. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० १-२४ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६५ ।

विशेष—पूजा पाठ आदि का संग्रह है । लालचन्द के मंगल आदि भी हैं ।

६८६१. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ४४ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १५५६ । भादवा सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६१ ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—नित्य पूजा, चारित्र पूजा—नरेन्द्रसेन ।

६७६२. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ६६ से १६३ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८२

६८६३. गुटका सं० ६२ । पत्रसं० ३४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८८१ माघ बदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८५ ।

६८६४. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १७-६५ । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८६ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा स्तोत्र आदि है ।

६८६५. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ५८ । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७३ ।

६८६६. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ४४ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४८० ।

विशेष—कर्म प्रकृति, चतुर्विंशति तीर्थंकर वासीठस्थान, बावन ठाणा की चौपई, परमशतक (भगवतीदास) मान बत्तीसी (भगवतीदास) का संग्रह है ।

६८६७ गुटका सं० ६६ । पत्रसं० २६१ । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १५६३ मगसिर बदी २ पूर्ण । वेष्टनसं० ४७१ ।

विशेष—सुभाषितवलि, सारसमुच्चय, सिघ की पापडी, योगसार, द्वादशानुप्रेक्षा, चौबीस ठाणा, कर्मप्रकृति, भाव संग्रह (श्रुतमुनि) सुभाषित शतक, गुणस्थान चर्चा, अध्यात्म बावनी आदि का संग्रह है ।

६८६८ गुटका सं० ६७ । पत्रसं० । २६८ । भाषा-प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७२ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६८६९. गुटका सं० ६८ । पत्रसं० ९८ । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६५ ।

विशेष—सामायिक पाठ, पूजा पाठ, स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६८७०. गुटका सं० ६९ । पत्रसं० ३८। भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५९ ।

६८७१. गुटका सं० ७० । पत्रसं० ३६० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४६२ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं पद संग्रह है ।

६८७२. गुटका सं० ७१ । पत्रसं० १६४ । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६४ ।

विशेष—षडभक्ति, भावना बत्तीसी, आराधना । गीतडी आदि पाठों का संग्रह है ।

६८७३. गुटका सं० ७२ । पत्र सं०३४० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५६ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
घंटाकर्ण मंत्र	—	संस्कृत	(पत्र ७)
देवपूजा ब्रह्मजिनदास	—	,,	
शास्त्र पूजा ,, ,,	—	,,	

जिनशतक	भूधरदास	हिन्दी	
अठारह नाता का चौढाल्या		,,	
अक्षर बावनी	दौलतराम	,,	
वैराग्य उपजावन अंग	चरनदास	,,	१०७
दानशील तप भावना	समयसुन्दर	,,	
भैरवपूजा	—	,,	
लोहरी दीतवार कथा	भानुकीर्ति रचना १६७२	,,	
भडली वचन	ले०काल १८२८	,,	
निपट के कवित्व	—	,,	
ज्ञानस्वरोदय	चरनदास	,,	
सबद	—	,,	
पद व स्तुति संग्रह	—	,,	
सामुद्रिक	र०काल सं० १६७८	,,	पद्य २८७
आदित्यवार कथा	भाउ कवि	,,	
जीवको सिज्झाय	—	,,	
पद व भजन संग्रह	—	,,	

६८७४. गुटका सं० ७३ । पत्रसं० ७२ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५० ।

विशेष—भक्तामर ऋद्धि स्तोत्र मंत्र सहित, सूरत की बारहखडी, पूजा संग्रह, भरतबाहुबलि रास (२८ पद्य) आदि पाठ हैं ।

६८७५. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ३७ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५२ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६८७६. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १०१ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४०८ ।

६८७७. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१६ ।

विशेष—ज्ञान चिन्तामणि 'मनोहरदास' जैन बारहखड़ी, 'सूरत' लघु बारहखड़ी 'कनक कीर्ति' । वैराग्य पच्चीसी, धर्मपच्चीसी, कलियुग कथा, जैन शतक, राजुल पच्चीसी, बहत्तर सीख आदि हैं ।

६८७८. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १५० । भाषा- × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६८७६. गुटका सं० ७८ । पत्रसं० ७० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०१ ।

विशेष—चौरासी गोत्र आदि का वर्णन हैं ।

६८८०. गुटका सं० ७६ । पत्रसं० १५६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६६ ।

६८८१. गुटका सं० ८० । पत्र स० ७० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६७ ।

विशेष—साधारण पाठ एव पूजाएं हैं ।

६८८२. गुटका सं० ८१ । पत्रस० १५० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६६ ।

६८८३. गुटका सं० ८२ । पत्रस० ६६ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८६ ।

विशेष—स्तोत्र व पूजा पाठ सग्रह है ।

६८८४. गुटका स० ८३ । पत्रस० ७७ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६० ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

६८८५. गुटका सं० ८४ । पत्रसं० ८७ । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६१ ।

विशेष—पत्र ६२ नक जैन शतक (भूधरदास) तथा ६३-८७ तक बलभद्र कृत नखसिखवर्णन दिया हुआ है ।

६८८६. गुटका सं० ८५ । पत्रसं० २२६ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८६ ।

विशेष – पूजा सग्रह है ।

६८८७. गुटका सं० ८६ । पत्रस० ४६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८७ ।

६८८८. गुटका सं० ८७ । पत्रस० ११४ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८८ ।

विशेष—पद, स्तोत्र एव पूजाओं का संग्रह है ।

६८८६. गुटका सं० ८८ । पत्रसं० २७० । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८३ ।

विशेष—पाठों का अच्छा संग्रह है ।

६६००. गुटका सं० ८६ । पत्रसं० १५५ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १६२१ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८४ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६८६१. गुटका सं० ६० । पत्रसं० १८२ । भाषा हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८५ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६८६२. गुटका सं० ६१ । पत्रस० १८० । भाषा-हिन्दी । **ले०काल** सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७८० ।

विशेष—चतुर्विंशति जिन स्तुति,

जिनवर सात बोल स्तवन-जसकीर्ति ।
उपधान विधि स्तवन-साधुकीर्ति ।
सिज्झाय-जिनरंग ।
नणद भोजाई गीत-आनन्द वर्द्धन ।
दिगम्बरी देव पूजा-पोमह पांडे ।
कम्मण विधि-रतनसूरि ।
समीणा पार्श्वनाथ स्तोत्र, भानुकीर्ति स्थूलभद्र रासो उदय रतन ।
कलावती सती सिज्झाय तथा मेरू संवाद ।

६८६३. गुटका सं० ६२ । पत्र स० १४२ । भाषा-हिन्दी : ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७८ ।

विशेष—पद संग्रह सिज्झाय, अर्बुदाचल तीर्थ स्तवन, संवत् १८२६ पौष बुदी ११ से १८३१ माघ बुदी ६ तक की यात्रा का ब्यौरा, गौडी पार्श्वनाथ स्तवन, सिद्धाचल स्तवन ।

६८६४ गुटका सं० ६३ । पत्र स० २ से १६। भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७७६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६८६५. गुटका सं० ६४ । पत्र स० २० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७७६ ।

विशेष— ज्ञानकल्याण स्तवन तथा चर्चा है ।

६८६६. गुटका सं० ६५ । पत्र स० ८४ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।पूर्ण । वेष्टन सं०

विशेष—दानशील तप भावना आदि पाठों का संग्रह है । समयसुन्दर । सिद्धाचल स्तवन, आनन्द रास, गौतम स्वामी रास, विजयभद्र पार्श्वनाथ स्तवन-विजय वाचक । कल्याण मन्दिर भाषा-बनारसीदास । क्षमा छत्तीसी-समय सुन्दर ।

६८६७. गुटका सं० ६६ । पत्रसं० २३६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७४ ।

विशेष—छोटे २ पदों का संग्रह है ।

६८६८. गुटका सं० ६७ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७७५ ।
विशेष—पूजा पाठ आदि हैं ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर (बयाना)

६८६६. गुटका सं० १। पत्रस० ३१२। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १५०।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१. भक्तामर स्तोत्र	—	संस्कृत हिन्दी	

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२, पद	लक्ष्मणदास	हिन्दी	४ अतरे
	राजमति सुनु हो रानी		
पद	घनश्याम	,,	३ अतरे
	जषरथ दूर गयो जब चेती	,,	—
अठारह नाते का चौढाल्या	लोहट	,,	—
तीस चौबीसी के नाम	—	,,	६६-६० पत्र
तथा चौपई	—	,,	र०काल स० १७४६ ले०काल स० १८०६

विशेष—

अन्तिम—पद्य निम्न प्रकार है—

नाम चौपई ग्रंथ में रच्यो नाम दास विम्याम।
जैसराज सुत ठोलिया जोबिनपुर सुभथान।
सत्तरामै उनचास मे पूरण ग्रंथ सुभाय।
चैत्र उजासनी पचमी बिर्जेसिह नृपराय।
एक बार जो सरदहै अथवा करसी पाठ।
नरक नीच गति कै विषै रोपै कीली गाढ।

इति श्री तीस चौपई नाम ग्रंथ समाप्ता। रूपचन्दजी बिजैरामजी विनायक्या कासली के ने प्रतिलिपि की थी।

नेमजी की होरी	ब्र० नाथु	हिन्दी	७६
पांवापुर गीत	अखैराम	,,	७६
सालिभद्र चौपई	जिनराजसूरि	,,	१०८

र०काल सं० १६७८ आसोज सुदी ६ ले०काल सं० १८०३ भादवा बुदी ११।

जयपुर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी। बिजैराम कासली के ने प्रतिलिपि की थी।

मेघकुमार गीत	पूनो	हिन्दी	१०२
नन्दू की सप्तमी कथा	—	,,	१०३
आदित्यवार	भाऊ	,,	११६

धन्ना चउपई	—	,,	१२५
नित्य पूजा पाठ	—	,,	—
नेमिश्वर रास	ब्र० रायमल्ल	,,	१७५
धन्ना सज्झाय	त्रिलोकप्रसाद	हिन्दी ले०काल स० १८०१	१८२
मृगीसवाद	—	,, र०काल स० १६६३	

संवत सोलसै त्रेसठे चैत्र सुदि रविवार।
नवमी दिन काला भावस्यौ रास रच्यौ सुविचार।
विजागच्छ माडणपुर वाम सूरदेव राज।
श्री घननदन दिने हुई सुसीस सुकाज।

इति मृगी सवाद संपूर्ण।

चौरासी जाति की उत्पत्ति	—	हिन्दी	२०१
श्रीपाल रास	ब्र० रायमल्ल	,,	२३२
पच मगल	रूपचन्द	,,	२३४
जन्म कुण्डली	—		

१. साह रूपचन्द के पौत्र तथा टेकचन्द के पुत्र की स० १८२५ का
२. साह टेकचन्द की पुत्री (मानबाई) की स० १८२६ की।

प्रद्युम्न रासो	ब्र० रायमल्ल	,,	२८३

र०काल स० १६२८ ले०काल स० १८०७

प० रूडमल ने प्रतिलिपि की थी।

भविष्यदत्त कथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	३१२ अपूर्ण

६६००. गुटका स० २। पत्रस० १६६। आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इंच। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १४८।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का सग्रह है।

६६०१. गुटका सं० ३। पत्रसं० ८०। आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इन्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण-जीर्ण। वेष्टन सं० १४६।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

६६०२. गुटका सं० ४। पत्रस० ७३। आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४७।

विशेष—निम्न पूजाओं का सग्रह है—

वृहत् सिद्ध पूजा	शुभचन्द	सस्कृत	१–४६
अष्टाह्निका पूजा	—	,,	५०-७३

९९०३. गुटका सं० ५ । पत्रसं० ३६ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १४५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

स्तुति अर्हंत देव	बृन्दावन	हिन्दी	पत्र १-१६
मंगलाष्टक	,	,,	१७-१६
स्तवन	,,	,,	१६-२५
मरहठी	,,	,,	२६-२९
जम्बूस्वामी पूजा	,,	,,	३०-३६

९९०४. गुटका सं० ६ । पत्रस० २८ । आ० ५½×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३ ।

विशेष—जैन गायत्री विधान दिया हुआ है ।

९९०५. गुटका स० ७ । पत्र स० ८४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४० ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

९९०६. गुटका सं० ८ । पत्रस० २४ । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

९९०७. गुटका सं० ९ । पत्र स० ९३ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १४० ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं अन्य पाठो का संग्रह है ।

९९०८. गुटका सं० १० । पत्रस० ७-१४० । आ० ४¾×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३७ ।

विशेष—नित्य पूजाओं का संग्रह है ।

९९०९. गुटका सं० ११ । पत्र स० ८१ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है—

कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
जिनसहस्रनाम स्तोत्र	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	,,	—

९९१०. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ३० । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है--

जम्बूस्वामी पूजा	जगतराम	हिन्दी	१-१३

चमत्कारजी पूजा	—	हिन्दी	१३-१६
रोटतीज व्रत कथा	चुन्नीलाल बैनाडा	,,	१८-२६

र० काल सं० १६०६

विशेष—कवि करौली के रहने वाले थे।

६६११. गुटका सं० १३ । पत्रसं० ८१ । श्रा० ८¾×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १३४ ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

चौबीस महाराज पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी	१-७३
पचमेरु पूजा	—	—	७३-८१

६६१२. गुटका सं० १४ । पत्रसं० १०१-१६६ । श्रा० ६¾×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १३५ ।

विशेष—पूजाओं का सग्रह है

६६१३. गुटका सं० १५ । पत्रसं० ४८ । श्रा० ७×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १८५१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

पच नवकार	—	प्राकृत	१
भक्तामर स्तोत्र मत्र सहित	—	संस्कृत	२-११
ऋषि मडल स्तोत्र	—	,,	१२-१७
श्रीपाल को दर्शन	—	हिन्दी	१७-२०
नवलादेव जी	—	,,	२०-२२
महा सरस्वती स्तोत्र	—	संस्कृत	२२-२४
पद्मावती स्तोत्र	—	,,	२४-२६
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,	३०-३६
चिंतामणि स्तोत्र	—	संस्कृत	३७
नेमि राजुल के बारह मासा	—	हिन्दी	४२-४६
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	संस्कृत	४७
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	,,	४७
स्तवन	गुणसूरि	हिन्दी	४८

ले०काल सं० १८५१

६६१४. गुटका सं० १६ । पत्रसं० २६ । श्रा० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १३२ ।

विशेष—देवाब्रह्म के पदों का संग्रह है।

६६१५. गुटका सं० १७ । पत्रसं० ३२ । ग्रा० ७½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३१ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठों का संग्रह है—

१. भक्तिमाल पद	बलदेव पाटनी	हिन्दी	चौबीस तीर्थंकरों का स्तवन है ।
२. पद	,,	—	—

पदों की संख्या १८ है ।

६६१६. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ६६ । ग्रा० ५ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८२३ द्वितीय चैत बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३० ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र की चतुर्थ ग्रध्याय तक हिन्दी टीका है ।

६६१७. गुटका सं० १९ । पत्र सं० १२७ । ग्रा० ६½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० १२९ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र तथा सामान्य पाठो का सग्रह है । बीच के तथा प्रारम्भ के कुछ पत्र नही हैं ।

६६१८. गुटका सं० २० । पत्रसं० ३७४ । ग्रा० ६ × ३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

तत्वार्थ सूत्र के प्रथम सूत्र की टीका	कनककीर्ति	हिन्दी
सामायिक पाठ टीका	सदासुखजी	,,

६६१९. गुटका सं० २१ । पत्र स० ३६ । ग्रा० ८½ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १२७ ।

विशेष—स्वामी हरिदास के पदो का संग्रह है । पत्र २३ तक हरिदास के १२६ पदो का सग्रह है । २३ वें पत्र से २९ वें पत्र तक विट्ठलदास के ३८ पदो का संग्रह है । २९ पत्र से ३६ पत्र तक विहारीदास का पद रहस्य लिखा हुआ है ।

६६२०. गुटका सं० २२ । पत्र स० ११४ । ग्रा० ६½ × ६ इंच । भाषा-सस्कृत-प्राकृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२६ ।

विशेष—मुख्यत. निम्न पाठों का सग्रह है ।

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष पद्य
प्रतिक्रमण	—	प्राकृत	१-४
पद	महमद	हिन्दी	५

प्रारम्भ—

भूल्यो मन भमरारे काइ मर्म दिवसनि राति ।
मायानी बांध्यो प्राणीयो भर्म भ्रमलजाय ॥१॥

अन्तिम—

महमद कहै वस्त्र बहरीयो जो कोई आवै रे साथ ।
आपनो लोभनी वाहिते लेखो साहिब हाथ ।।७०।। भूल्यो

कल्याण मंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	सस्कृत
भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य,	,,
कलियुग की कथा	—	हिन्दी
आरती	दीपचद	,,
चौबीस तीर्थंकर आरती	मोतीराम	,,
वैराग्य षोडश	द्यानतराय	,,
चौबीस तीर्थंकर स्तुति	—	,,
उदर गीत	छीहल	,,
आदिनाथ स्तुति	अचलकीर्ति	,,
अनुप्रेक्षा	अवधू	,,
नेमिराजुल गीत	गुणचन्द्र	,,

प्रारम्भ के ७ पद्य नही हैं । ८ वा पद्य निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

मंजन साला हरि गये खेलत संग जिन राय रे ।
करजु गह्यो प्रभु नेम को हरि करि अंगुलि लपटाइ हो ।।
देव तहा जप जप करै बाजै दुदुभिनाद रे ।
पुष्प वृष्टितहा अति भई विलख भई कर बाहुरे ।।

× × ×

अन्तिम—

पुर सुलताण सुहावणी जहा बसै सरावग लोगजी ।
पुर परियन आनन्द स्यौ कर है विविधरस भोगी जी ।।७१।।
काष्टा संघ सुहावणा मथुरा गच्छ अनूपरे ।
शीलचन्द्र मुनि जानिये सब जतियन सिर भूपजी ।।७२।।
तासु पट जस कीर्ति मुनि काष्टा संघ सिंगार रे ।
तासु सिस गुणचंद मुनि विद्या गुणह भंडारू रे ।।७३।।
मन वच काया भावस्यों पढहि सुनहि नर नारि रे ।
रिद्धि सिद्धि सुख संपदा तिन चरणन पर वारि रे ।।७४।।

इस से आगे के पद नहीं हैं ।

द्वादशानुप्रेक्षा	सूरत	हिन्दी	—

अन्तिम—

हंसा दुर्ल्लभी हो मुकति सरोवर तीर।
इन्द्रिय बाहियाउहो पीवत विषयहं नीर॥
अति विषयनीर पियास लागी विरह वेदन व्याकुले।
बारह प्रेक्षा सुरति छांडी एम भूलो बावले।
अब होउ एतनु कहऊ तेतउ बुद्ध बंसइ अम्मणु।
संज्ञा समरणउ आय सरनउ परम रयनत्तय गुणु ॥१२॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा समापिता।

आदिनाथ स्तुति	विनोदीलाल	हिन्दी
खिचरी	कमलकीर्ति	,,

प्रारम्भ—

सजम की प्रभु सेज मगाऊ स्याद्वाद को गेंदुवा।
पानी हो जिन पानी मंगऊ चरचा चौविध संघकी।
आरज जाय अजवाइन लाइ, पीपर कोमन जावरी।
धनिया हो जिन पद को लाइ मूढ महामद छाडिये।
धीरज को प्रभु जीरो लाई सब विसयारसु चेक्षणा।
मुकल ध्यान की मूठ मगाऊं कर्मकाड ईंधनु पणे।

× × ×

अन्तिम —

श्री आदिनाथ जिनराज............श्रावग हो तहां चतुर सुजान।
धर्म ध्यान गुण आगरो कीजे.............परमारथि जानि।
यह विनती जिनराज की चहुँ संघ के ....कल्याण।
श्री कमल कीर्ति मुनिहर कही............ ।

इति खिचरी समाप्ता

सोलहसती की सिज्झाय	प्रेमचंद	हिन्दी	
क्षेत्रपाल गीत	सोभाचद	,,	
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	,,	ले०काल सं० १८२८ वैशाख बुदी ६

विशेष—जतीमान सागर ने जती सेवाराम के पठनार्थ पिगोरा मे प्रतिलिपि की थी। श्री महावीर जी के प्रसाद से।

गणपति स्तोत्र	—	संस्कृत
बारहखडी	सुदामा	हिन्दी
वीर परिवार	—	,,
स्थूल भद्र सिज्झाय	गुणवर्द्धन सूरि	,,
धमाजी की वीनती	—	,,

शत्रुंजय स्तवन	समयसुन्दर	हिन्दी
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	संस्कृत
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंग	,,
लक्ष्मी स्तोत्र	—	,,
चौसठ योगिनी स्तोत्र	—	,,
वृषभदेव वंदना	आनंद	हिन्दी
ऋषि मंडल स्तोत्र	—	संस्कृत
पोसह कारण गाथा	—	,,
गौतम पृच्छा	—	,,
जिनाष्टक	—	,,

९९२१. गुटका सं० २३। पत्रसं० ४८। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ९२।

विशेष—पूजाओं तथा अन्य सामान्य पाठों का संग्रह है।

९९२२. गुटका सं० २४। पत्रसं० ७९। आ० ७×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ९१।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

१ बाहुबलिछंद कुमुदचन्द हिन्दी र०काल सं० १४६७

विशेष—कुल २११ पद्य है रचना का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

आदि का पाठ (पत्र १३)

प्रथमविपद आदीश्वर केरा, जेह नामे छूटे भव फेरा।
ब्रह्म सुता समरू मति दाता, गुण गण मंडित जगविदत्ता ॥२॥
भरत महीपति कृत मही रक्षण, बाहूबलि बलवंत विचक्षण।
तेह भनो करसुं नवछंद, साभलता भणता आनंद ॥३॥
देह मनोहर कौशल मोहै, निरषता सुरनर मन मोहे।
तेह माहि राजे अति सुन्दर, साकेता नगरी तव मंदिर।
× × ×

मध्य पाठ—

विकसति कमल अमल दलपती,
कोमल कमल समुज्जल कती।
बनवाडी श्री राम सुरंगी अंब कदंबा ऊंवर तुंगा ॥४२॥
करणा केतकी कमरख केली, नव नारंगी नागर बेली।
अगर नगर तरु तुंदुक ताला, सरल सुपारी तरल तमाला ॥४३॥
बदनि वकुल बादाम बिजोरी, जाई जुई, जबू जंभीरी।
चंदन चंपक चारु चारोली, वर वासंति वर सोली ॥४४॥

ग्रन्तिम पाठ—

संवत् चौदस मे सडसठो, ज्येष्ठ शुल्क पचमी तिथि छट्टे ।
कवीवर वारे घोघा नयरे, ग्रति उतग मनोहर शुभ घरे ॥२०७॥
ग्रष्टम जिनवर ने प्रासादे सांभलियो जिनगाना सुखारे ।
रत्नकीर्ति पदवी गुण पूरे, रचियो छंद कुमुद शशी सूरे ॥२०८॥
सोमलता भनतां ग्रानद, भव ग्रातप नामे सुख कंद ।
दुख दरिद्र बहु पीडा नासे, रोग शोक नहि ग्रावै पासै ॥२०९॥
शाकिनी डाकिनी करे चकचूर भूत प्रेत जावे सहू पूरं ।
रोग मगदर नविपासे, सुख सपति भविजन परकासे ॥२१०॥

कलस—

उत्कट विकट कठोर रोग गिरि भंजन सत्यवि ।
विहित कोह सदोह मोहतम ग्रोघ हरण रवि ।
विहित रूप रति भूप चारु गुण कूप विनुत कवि ।
धनुष पाच सै पचीस वरत सहुँय तनू छवी ॥
ससार सारि त्याग गतं विवुद्ध वृंद वदित चरणं ।
कहे कुमुदचन्द्र भुजबल जयो सकल संघ मंगल करण ॥२११॥

इति बाहुबलि छंद संपूर्ण ।

२. नेमिनाथ को छद हेमचन्द्र हिन्दी --
(श्री भूषण के शिष्य)

विशेष—यह रचना २०५ पद्यों की है ।

रचना का ग्रादि ग्र त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ —

विदेहं विमलं वेष स्तभ तीर्थस्य नायक ।
गीराघ गौतमं वीर छद प्रारम सिद्धये ॥१॥

छंद बाल—

प्रथम नमोहं जिन मुखजेह वज वज नादे सकल विदेहं ।
वदन सुचदे निर्मल कदे त्रिभुवन वदे भगत सुछदे ॥२॥
झलकनि झलके झगमग गल्ले, चतुर सुजाय गणगण चल्ले ।
कमडल पोथी कमल सुहस्ती मधुर वचेना शुभ बाचती ॥३॥

मध्य भाग—

राय मनोहर धारिनी नारी पतिवरतानो व्रत धर नारी ।
समरीराय निज चित्त मझारी, इम ग्रनुभवता सुख संसारी ॥९८॥
गुंथी विनत्त पेस पवारी, सोम मुखी सोमांति गोरी ।
नेत्र जीति चकित चकोरी, साहन की गज गमन बिहारी ॥९९॥

मल पति हीडे जोबन भारी, पेव पवति विषय विकारी ।
जाने विधि कामनि सिनगारी, संगी भगति कला अधिकारी ॥१००॥

× × ×

अन्तिम पाठ—

काष्टा संघ विख्यात धर्म दिगंबर धारक ।
तस नंदी तटगच्छ गरग विद्या भवितारक ।
गुरु गोयम कुल गोत्र, रामसेन गछ नायक ।
नरसिंघ पुरादि प्रसिद्ध द्वादश न्याति विधायक ।
तद अनुक्रमे भागु भन्या गछ नायक श्री कार ।
श्री भषगा सिष्य कहे हेमचन्द विस्तार ॥२०५॥

× × ×

३-राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	हिन्दी	—
४-नेमिनाथ रेखता	क्षेम	"	—
५-राजुल का बारहमासा	विनोदीलाल	"	—
६-बलिभद्र वीनती	मुनिचन्द्र सूरि	"	—
७ बारह खडी	—	"	—
८-अनित्य पचासिका	त्रिभुवनचन्द	"	—
९-जैन शतक	भूधरदास	"	—

९९२३. गुटका सं० २५ । पत्रसं० १३५ । आ० ५½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९९ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

९९२४. गुटका सं० २६ । पत्रसं० ११४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

९९२५. गुटका सं० २७ । पत्रसं० २१-१२१ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८७ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे है ।

९९२६. गुटका सं० २८ । पत्र सं० ३६-३२० । आ० ६×७ इञ्च । भाषा--हिन्दी । विषय-संग्रह । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८५ ।

विशेष—पूजा तथा स्तोत्र संग्रह है अमर कोष एवं आदित्य कथा संग्रह आदि है ।

९९२७. गुटका सं० २९ । पत्र सं० ३-२८६ । आ० ६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०

विशेष—वृन्दावन कृत चौबीसी पूजा है । तथा सुखसागर कृत अष्टाह्निका रासो भी है ।

९९२८. गुटका सं० ३०। पत्र सं० ७८८। ग्रा० ८½×७ इञ्च। भाषा--संस्कृत-हिन्दी। विषय-संग्रह। र०काल ×। ले० काल सं० १८९३ माघ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन सं० ८४।

निम्न पाठो का संग्रह है:—

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
पद्मनंदि पच्चीसी भाषा	जगतराम	हिन्दी, संस्कृत	र०काल सं० १७२२ फागुण सुदी १०
ब्रह्म विलास	भगवतीदास	हिन्दी	—
समयसार नाटक	बनारसीदास	,,	र०काल सं० १६९३
स्तोत्रत्रय भाषा	—	,,	—
तत्वसार	द्यानतराय	,,	—
चौबीस दण्डक आदि पाठ	—	,,	—
चेतन चरित्र	भैया भगवतीदास	,,	—
श्रावक प्रति कमण	—	प्राकृत	—
सामायिक पाठ	—	हिन्दी	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	—
सामायिक पाठ भाषा	जयचन्द	हिन्दी	—
चरचा शतक	द्यानतराय	हिन्दी	—
त्रिलोक वर्णन	—	हिन्दी	—
आचार्यादि के गुण वर्णन	—	,,	—
पट्टावली	—	,,	सं० १२४८ तक है।

आगे लिखा है कि १२४८ तक तो शुद्ध आम्नाय रही। लेकिन स० १३१६ के साल भट्टारक प्रभाचन्द्र जी नैं फीरोजसाह पातिसाह के जोग थकी वस्त्रांगीकार करया इन्द्र प्रस्थ मध्ये।

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन	—	,,	—
चर्चा संग्रह	—		—
सिद्धांतसार दीपक	नथमल	,,	—
पंच इन्द्री चौपई	भूधरदास	,,	—
चर्चा समाधान	भूधरदास	,,	—

गुटके के अन्त मे निम्न पाठ लिखा हुआ है—

चादण ग्राम सुजाण महावीर मन्दिर जहा।
नन्दराम अस्थान ऊंठा पाठ बैठे पढ़ै ॥६॥
सुनयन मैं जुमाई जैसिंह बहालसिंह
हरपरसाद अमिचन्द अदि आनियौ।
रोसनचन्द गंगादास आसानन्द मलचन्द
सज्जन अनेक तिहां पढ़ै सरधानियौ।

ता भाइयों की कृपा सेती लिख्यो रामसनी पाठ
नन्दलाल के पढन कूं सुनो जू ज्ञानियौ ।।
यामें भूलचूक होइ ताहि सोध सुध कीजो
मोहि अल्प बुधजान छिमा उर आनियौ ।।२।।

चौपई—
संवत् ठारासै भाणवै जान, माघ शुक्ल पूर्णमासी बखान ।
सोमवार दिन हैगो श्रेष्ठ, पूरण पाठ लिख्यो अति श्रेष्ठ ।

६६२६. गुटका सं० ३१ । पत्र स० ३७० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
द्रव्य संग्रह भाषा	---	हिन्दी	—
नक्षत्र एवं वार विचार	—	—	—

विशेष—विभिन्न नक्षत्रों मे होने वाले फलो का वर्णन है ।

पंच स्तोत्र एवं			
तत्वार्थ सूत्र तथा पच	—	संस्कृत	—
मगल पाठ		हिन्दी	
अनन्त व्रत कथा	मुनि ज्ञानसागर	संस्कृत	—
जिनसहस्रनाम ।	जिनसेनाचार्य	,,	—
आदित्यवार कथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	—
लघु आदित्यवार कथा	मनोहरदास	,,	३५ पद्य
पूजा सग्रह	—	,,	—
जैन शतक	भूधरदास	हिन्दी	—
पूजा संग्रह	—	,,	—
शील कथा	भारामल्ल	हिन्दी	—
निशि भोजन कथा	—	,,	—
अठारह नाता	अचलकीर्ति	,,	—
जैन विलास	भूधरदास		
पद संग्रह	बनारसीदास, जगराम कनककीर्ति, हर्षचन्द्र, नवलराम, देवाब्रह्म, विनोदीलाल, द्यानतराय,		
चौबीस महाराज पूजा,	वृन्दावन	हिन्दी	—

९९३०. गुटका सं० ३२ । पत्रसं० २३१ । ग्रा० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ८२ ।

विशेष—पूजाओं का सग्रह है।

९९३१. गुटका सं० ३३ । पत्रस० ७–२९५ । ग्रा० १०×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ ।

विशेष—मुख्य पाठो का संग्रह निम्न प्रकार है ।

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द	संस्कृत	—
शास्त्र पूजा	द्यानतराय	हिन्दी	—
ग्रादित्यवार कथा	—	,,	—
नवमंगल	लालचन्द	,,	—
ग्रनन्त व्रत कथा	मुनि ज्ञानसागर	,,	—
भक्तामर तथा ग्रन्य स्तोत्र	—	सस्कृत	—
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	,,	—
पूजा सग्रह	—	सस्कृत, हिन्दी	—
ग्रादित्यवार कथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	र० काल स० १७४८
जैन शतक	भूधरदास	,,	र० काल स० १७८१
चौबीस महाराज पूजा	वृन्दावन	,,	

९९३२. गुटका सं० ३४ । पत्रसं० २९३ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा हिन्दी–सस्कृत । ले० काल स० १९१२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठो का संग्रह है—

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत	—
भक्तामर भाषा	हेमराज	हिन्दी	—
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	सस्कृत	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,	—
पूजा संग्रह	—	,,	

नित्य पूजा, षोडश कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, पंचमेरू, नंदीश्वर द्वीप एवं चोबीस तीर्थंकर पूजा रामचन्द्र कृत हैं ।

ग्रादित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	,,

पंचमंगल	रूपचन्द	हिन्दी	,,
नेमिनाथ के नवमंगल	विनोदीलाल	,,	र० काल सं० १७०४
सामायिक पाठ	—	संस्कृत	—
व्रत कथाएं	खुशालचन्द	हिन्दी	—
जिन सहस्रनाम	—	संस्कृत	—

६६३३. गुटका सं० ३५। पत्रसं० २८०। आ० १२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १७६५ चैत बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

पाण्डव पुराण	बुलाकीदास	हिन्दी	र० काल स० १७८४
सीता चरित्र	कविबालक (रामचन्द्र)	,,	१७१३

६६३४. गुटका सं० ३६। पत्र स० ६८। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

सूरत की बारहखडी	सूरत	हिन्दी	पत्र १-१३
आदित्यवार कथा	भाऊ	,,	१३-१६
पद	भूधरदास, जगतराम	,,	१६-१७
चौबीस महाराज पूजा	वृन्दावन	,,	१७६८

प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना

६६३५. गुटका सं० १। पत्रसं० १६६। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १५१।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

बारहखड़ी	सूरत	हिन्दी	१२
नवमंगल	—	,,	३२
रविव्रत कथा	भाऊ	,,	१७
बाईस परीषह वर्णन	—	,,	—
लावणी	जिनदास	,,	१३५
पद	—	,,	—
	लाभ नहिं लीया जिनन्द भजिकै		१३६
,,	,,	,,	
	अब अजब रसीलो नेम	,,	
लावणी	रूडागुरुजी	,,	१४०
		र०काल १८७४	
पद	खान मुहम्मद	,,	१४५

सोरठा करखा—

तोसौं कौन करिबो करं काम भवधर हरं ।
करत बीनती बलभद्र राजा ।
करत टकार हुंकार बर बक्यो
तीन लोक भय चक्रत जाग्या ।
बाई कर अंगुली कृष्ण हिण्डोलियो
नेमनरनाथ राजाधिराजा ॥२॥ तोसौ
स्वामी नम्र पुखवर भरयो मान दुर्जन गरया
कप करि नारि बाल उछग लाया ।
हिरन रोझ सारंग हरिवास भडकत
फिरं स्यघ गजराज बहु दुक्ख पाया ॥३॥
सतनौ दततो अजरतो अमरतो
सुद्धतो बुद्धतो ज्ञानवता ।
माई सिवादेवी के उदर उपनियो
चित्त चिन्तामनी रतनवना ॥४॥ तोसो
स्वामी जिन नाग मिज्यादली नेम जिन
अति बली बाई कर अंगुली धनुष साजा ।
ब्रह्म ब्रह्मापुरी इन्द्र आमन टरी
कपियो सेष जब सख बाजा ॥५॥ तोसो
छपन कोटि जादौ तुम मुकुट मनि
तीन लोक तेरी करत सेवा
खानमहमुद करत है बीनती
राखिले शरण देवाधिदेवा ॥६॥
तोसौ कौन करबो करं काम भय धर हरं
करत बीनती बलभद्र राजा ॥७॥

इसके अतिरिक्त जगतराम, भूधरदास, द्यानतराय, सुखानन्द आदि के पदो का सग्रह है । भूधरदास का जैन शतक भी है ।

६६३६. गुटका सं० २ । पत्र स० २७४ । आ० ६×५¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १८५० भादवा बुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन स० १५० ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

शार्ङ्गधर टीका	हिन्दी	**ले० काल सं० १८५० भादवा सुदी ६ । अपूर्ण ।**

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । बैर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

अब्जद प्रश्नावली	—	हिन्दी	पूर्ण

अजीर्ण मंजरी	वैद्य पद्मनाभ	हिन्दी	,,
			ले० काल सं० १८५१
वैद्य वल्लभ	लोलिम्बराज	संस्कृत	,,
			ले० काल स० १८५०

९९३७. गुटका सं० ३ । पत्र स० १३३ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४९ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

चौबीस महाराज पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी पद्य	पत्र स १७
शास्त्र पूजा	ब्र० जिनदास	,,	२३
गुरु पूजा	,,	,,	२३
बीस तीर्थंकर जखडी	हर्षकीर्ति	,,	२८
पचमेरु पूजा	सुखानन्द	,,	४६
त्रेपन क्रिया कोष	ब्र० गुलाल	,,	११८
		र० काल स० १६६५ कार्तिक सुदी ३	
बारहखडी	सूरत	हिन्दी	
शनिश्चर की कथा	—	हिन्दी गद्य	१३१
कलियुग की कथा	पांडे केशव	,, पद्य	१३१

विशेष—पाडे केशवदास ने ज्ञान भूषण की प्रेरणा से रचना की थी।

ओंकार की चौपई	भैया भगवतीदास	हिन्दी पद्य	१४०
आदिनाथ स्तुति	विनोदी लाल	,,	१४१
राजुल बारहमासा	,,	,,	,,
राजुल पच्चीसी	,,	,,	,,
रेखता	,,	,,	,,
रविव्रत कथा	सुरेन्द्र कीर्ति	,,	१७७
		र० काल स० १७४४	

९९३८. गुटका स० ४ । पत्रस० ५० । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १११ ।

विशेष—पच मगल रूपचन्द के एव तत्वार्थ सूत्र आदि पाठ है।

९९३९. गुटका स० ५ । पत्रस० १०-६५ । आ० ५½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पद संग्रह	नवल, जगनराम	हिन्दी (पद्य)	पत्र १०-१४
जैन पच्चीसी	नवल	,,	१६

बारह भावना	नवल	,,	१८
आदित्यवार कथा	सुरेन्द्र कीर्ति	,,	३३
			र० काल सं० १७४४
बारहखडी	सूरत	,,	४०
राजुल पच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	,,	४५
अक्षर बावनी	द्यानतराय	,,	४८
			(र० काल सं० १७५८)
नवमगल	विनोदीलाल	,,	५६
पद	देवा ब्रह्म	,,	६०
धर्म पच्चीसी	बनारसीदास	,,	६२
अठारह नाते की कथा	अचलकीर्ति	,,	६२
विनती	अखैमल	,,	६५

कौन जाने कल की खबर नही इह जग मे पल की ।
यह देह तेरी भसम होयसी चंदन चरची ।।
सतगुरु तै सीखन मानी विनती अखैमल की

इनके अतिरिक्त देवा ब्रह्म, विनोदीलाल, भूधरदास आदि के पदो का सग्रह है ।

६६४०. गुटका सं० ६ । पत्रस० ११२ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,
पच मगल	रूपचन्द	हिन्दी
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	सस्कृत
पद	माणक, रत्नकीर्ति	हिन्दी
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्म प्रभ	सस्कृत
विनती	वृन्द	हिन्दी
चितामणि स्तोत्र	—	,,
ध्यान वर्णन	—	,,
बावनी	हरमुख	,, पद्य

६६४१. गुटका सं० ७ । पत्रसं० २२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ ।

विशेष—नित्य पाठ संग्रह है ।

६६४२. गुटका सं० ८ । पत्रसं० ५२ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ६७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

अठारह नाते की कथा	अचलकीर्ति	हिन्दी
आदित्यवार कथा	—	,,

इसके अतिरिक्त नित्य पूजा पाठ भी है ।

६६४३. गुटका सं० ६ । पत्रसं० १०८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है—

जैन शतक	भूधरदास	हिन्दी	र०काल सं० १७८१
शील महात्म्य	वृन्द	,,	—

नित्य पूजा पाठ एवं नवल, बुधजन, भूधरदास आदि के पदो का सग्रह है ।

६६४४. गुटका सं० १० । पत्र स० ४२ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है ।

६६४५. गुटका स० ११ । पत्रस० ६५ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ ।

६६४६. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ८ से ८८ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३ ।

विशेष - मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

आदित्यवार कथा	विनोदीलाल	हिन्दी (पद्य)
जखडी बीस विरहमान	हर्षकीर्ति	,,

विशेष—इनके अतिरिक्त नित्य नैमित्तिक पूजाएं भी है ।

६६४७. गुटका सं० १३ । पत्र सं० १०४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ८८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पाठ सग्रह एव जवाहरलाल कृत सम्मेद शिखर पूजा है ।

६६४८. गुटका सं० १४ । पत्रसं० ३०० । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८५ ।

विशेष—बीच के पत्रस० ७१-२२३ तक के नही है । मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है ।

बारहखडी	सूरत	हिन्दी	
राजुल बारहमासा	विनोदीलाल	,,	पूर्ण

सामायिक पाठ भाषा	—	—	२०८-२३३
तत्वसार भाषा	द्यानतराय	हिन्दी	५-१५
पंच मंगल	आशाधर	—	१५
सज्जन चित्त वल्लभ	मल्लिषेण	संस्कृत	१६-२८
		हिन्दी अर्थ सहित है।	
व्रतसार	—	,,	२८-३०
लघुसामायिक	किशनदास	—	३१-३४

६६५७. गुटका सं० २३। पत्रस० ११५। आ० ७×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४०।

विशेष—निम्न पदों का संग्रह है—

स्वयंभू स्तोत्र	सस्कृत	समन्तभद्र
अष्ट पाहुड भाषा	हिन्दी	—

६६५८. गुटका सं० २४। पत्रसं० ३३-१४७। आ० ५$\frac{1}{2}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सरकृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३५।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६६५९. गुटका सं० २५। पत्र स० ८६। आ० ५$\frac{1}{2}$×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६६६०. गुटका सं० २६। पत्र सं० ८५। आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले० काल सं० १८८.... ×। पूर्ण। वेष्टन स० २५।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है—

एकीभाव स्तोत्र	सस्कृत	वादिराज
देवसिद्ध पूजा	,,	—
आत्म प्रबोध	,,	—

६६६१. गुटका सं० २७। पत्रसं० ६५। आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २४।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	सस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	संस्कृत
जिनसहस्रनाम स्तोत्र	जिनसेनाचार्य	,,
अमरकोश	अमरसिंह	

९९९२. गुटका सं० २८ । पत्रसं० २० । आ० ६ × ३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२ ।

विशेष—मूलाचार आदि ग्रन्थों में से गाथाओं का संग्रह है ।

९९९३. गुटका सं० २९ । पत्रसं० १४० । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१-३०
संबोध पंचासिका	बुधजन	,,	१००-१०७

इसके अतिरिक्त पूजाओं, भक्तामर एवं कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्र पाठो का सग्रह है ।

९९९४. गुटका सं० ३० । पत्रसं० ३८ । आ० ४½ × ३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १९ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	सस्कृत	—
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द	,,	—
दर्शन	—	,,	—
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	,,	—

९९९५. गुटका सं० ३१ । पत्रसं० ७३ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २० ।

विशेष गुटका जीर्ण है । सामान्य पाठों का संग्रह है ।

९९९६. गुटका सं० ३२ । पत्रसं० ८२ । आ० ७½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १९१० । पूर्ण । वेष्टनसं० १३ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है –

चेतनगारी	विनोदीलाल	हिन्दी	पत्र १-२
शिक्षा	मनोहरदास	,,	२-३
नेमिनाथ का बारहमासा	विनोदीलाल	,,	३-५
राजुल गीत	—	,,	५-७
शातिनाथ स्तवन	—	,, (र० काल सं० १७४७)	७-८
भविष्यदत्त रास	ब्र० रायमल्ल	,, र० काल सं० १६३३	९-८२

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बैर (बयाना)

६६६७. गुटका सं० १ । पत्रसं० १६४ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७२० । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न-ब्र० रायमल्ल । हिन्दी । ले०काल सं० १७२० । आनन्दराम ने प्रतिलिपि की थी एवं कुशला गोदीका ने प्रतिलिपि कराई थी ।

श्रीपाल स्तुति	—	हिन्दी	—
रविवार कथा	भाऊ	,,	१७२०
जकड़ी	रूपचन्द	,,	—
बारह अनुप्रेक्षा	—	,,	१७२५
निमित्त उपादान	बनारसीदास	,,	
बीस तीर्थंकर जकडी	—	,,	—
चन्द्रप्रभ जकडी	खुशाल	,,	—
पद	बनारसीदास	,,	—

जाको मुख दरस तैं भगत को नैनन को
थिरता बनि बढी चचलता विनसी
मुद्रा देखि केवली की मुद्रा याद आवे
जेह जाके आगें इन्द्र की विभूति दीसी त्रणसी ।
जाको जस जपत प्रकास जग्यो हिरदानै
सोही सूघमती होई हुती सो मलिनसी ।
कहत बनारसी महिमा प्रगट जाकी
सोहै जिनकी सवीह विद्यमान जिनसी ।।

इनके अतिरिक्त नित्य पूजा पाठ और है ।

६६६८. गुटका सं० २ । पत्रस० १०१ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५ ।

६६६९. गुटका स० ३ । पद । दरगाह कवि । वेष्टन स० ३६ ।

६६७०. गुटका सं० ४ । पत्र स० २०२ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का सग्रह है—

षोडषकारण पूजा	सुमतिसागर	संस्कृत	पत्र १८-२८
सूर्यव्रतोद्यापन	ब्र० जयसागर	,,	२९-३७
ऋषिमंडल पूजा	--	,,	३७-५५

त्रिशंच्चतुर्विंशति पूजा	शुभचन्द्र	,,	५५-१०४
णमोकार पैंतीसी	सुमति सागर	,,	५५-११६
रत्नत्रय व्रतोद्यापन	धर्मभूषण	,,	१२०-१३२
श्रुत स्कंध पूजा	—	,,	१३२-१३५
भक्तामर स्तोत्र पूजा	—	,,	१३५-१४६
गणधर वलय पूजा	शुभचन्द्र	,,	१४१-१४६
पंच परमेष्ठी पूजा	यशोनंदी	संस्कृत	१५०-१८५
पंच कल्याणक पूजा	—	,,	१८६-२०२

६६७१. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १७६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१ ।

६६७२. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १६५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३५ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र पाठो का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा (भरतपुर)

६६७३. गुटका सं० १ । पत्रसं० १२० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है ।

आदित्यवार कथा, तेरह काठिया, पच्चीसी ।

६६७४. गुटका सं० २ । पत्र सं० १७० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है ।

६६७५. गुटका सं० ३ । पत्र सं० १०८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० ।

विशेष—स्फुट पाठो का संग्रह है ।

६६७६. गुटका ४ । पत्रसं० १०८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १११ ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६६७७. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ७७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०८ ।

विशेष—गुणस्थान पीठिका दी हुई है ।

६६७८. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २१० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ ।

विशेष—स्फुट पूजा पाठों का संग्रह है ।

६६७६. **गुटका सं० ७** । पत्रस० २१० । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है ।

सम्मेदशिखर पूजा	जवाहरलाल	हिन्दी
चौबीसी नाम	—	,,
आदित्यवार कथा	भाऊ	,,
नित्य पाठ संग्रह	—	,,

६६८०. **गुटका सं० ८** । पत्रसं० ८७ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

नित्य पाठ सग्रह, आदित्यवार कथा (भाऊ) परमज्योति स्तोत्र आदि ।

६६८१. **गुटका स० ६** । पत्र स० १६ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८५ ।

विशेष —पूजा पाठ सग्रह है ।

६६८२. **गुटका स० १०** । पत्र स० १८० । आ० ७½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ ।

विशेष —मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

१. तत्वार्थ सूत्र हिन्दी टीका सहित ।

२ ज्ञानानन्द श्रावकाचार ।

३. निर्वाण काण्ड आदि ।

६६८३. **गुटका स० ११** । पत्र स० ६-१६ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७२ ।

विशेष —पूजा पाठ सग्रह है ।

६६८४. **गुटका सं० १२** । पत्रस० १३२ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३ ।

विशेष —नित्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६६८५. **गुटका स० १३** । पत्र स० ६० । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल स० १६८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ ।

विशेष - नित्य पूजा पाठ, तत्वार्थसूत्र, भक्तामर स्तोत्र, आदि का सग्रह है । सूरत की बारहखडी भी है ।

६६८६. **गुटका स० १४** । पत्र स० ६-१६ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७० ।

विशेष - बारहमासा वर्णन है ।

६६८७. गुटका सं० १५ । पत्रसं० १०० । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा- । । ले०काल सं० १६०३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५१ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठों का सग्रह है—

लघु चाणक्य नीतिशास्त्र भाषा	कार्श.राम	हिन्दी	विशेष
			र काल स० १७७४
कृष्ण रुक्मिणी विवाह	—	"	२२० पद्य
दानलीला	—	"	१६ पद्य

६६८८. गुटका सं० १६ । पत्रस० २०८ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६ ।

विशेष—स्फुट पाठों का संग्रह है ।

६६८९. गुटका सं० १७ । पत्रस० ३५३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २० ।

विशेष—पत्र २८ तक सस्कृत मे रचनाएं हैं । फिर ३२५ पत्र तक सिद्धातसार दीपक भाषा है । वह अपूर्ण है ।

६६९०. गुटका सं० १८ । पत्रसं० २८० । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४ ।

विशेष—विविध पूजाएं है ।

६६९१. गुटका सं० १९ । पत्रसं० १६५ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११ ।

विशेष—३४ पूजा पाठो का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा (भरतपुर)

६६९२. गुटका सं० १ । पत्रस० १६० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४४ ।

विशेष—पूजाओ का संग्रह है ।

६६९३. गुटका सं० २ । पत्र सं० १५५ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५६ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह तथा तत्वार्थ सूत्र आदि हैं ।

६६९४. गुटका सं० ३ । पत्रस० १५५ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३४६ ।

विशेष—नित्य काम आने वाले पाठों का संग्रह है ।

६६९५. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १२३-१८५ पुनः १-५६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३४२ ।

विशेष—पूजा तथा अन्य पाठों का सग्रह है ।

९९९६. गुटका सं० ५ । पत्र स० ४०२ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४३ ।

विशेष—विविध पाठो स्तोत्रों तथा पूजाओं का संग्रह है ।

९९९७. गुटका सं० ६ । पत्रसं० २३५ । ग्रा० ६ × ६ इञ्च । भाषा--हिन्दी । ले०काल सं० १७५६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३६ ।

विशेष—फुटकर पद्य हैं । भविष्यदत्तरास तथा पंचकल्याणक पाठ भी हैं । बीच मे कई पत्र नहीं हैं ।

९९९८. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ५३-१६२ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३४० ।

विशेष—भविष्यदत्त रास तथा श्रीपाल रास है । प्रति जीर्ण है ।

९९९९. गुटका सं० ८ । पत्र स० १४१ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल स० १६४३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३८ ।

विशेष—हिन्दी के विविध पाठो का संग्रह है ।

आलोचना जयमाल	ब्र० जिनदास	हिन्दी
नेमीश्वर रास	—	,,

१००००. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ३८५ । ग्रा० ८½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३३१ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का सग्रह है—

पद	गुणचन्द्र	हिन्दी	—
बारहव्रत	यशःकीर्ति	,,	—
सामुद्रिकशास्त्र	—	सस्कृत	—
गुरु शिष्य प्रश्नोत्तर	—	,,	—
मदन जुज्झ	बूचराज	हिन्दी	रचना काल स० १५८९
जिन सहस्रनाम	जिनसेन	सस्कृत	—
पूजा संग्रह	—	,,	—
गणधर वलय पूजा	—	,,	—
ज्वालामालिनी स्तोत्र	—	,,	—
आराधनासार	देवसेन	,,	—
रविव्रत कथा	भाऊ	हिन्दी	—
श्रावकाचार	—	,,	—
धर्मचक्रपूजा	—	सस्कृत	—
तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	,,	—
ऋषि मडल स्तोत्र	—	,,	—

चेतनपुद्गल धमाल	बूचराज	हिन्दी	—
पद	वल्ह (बूचराज)	,,	—
पद (राजमति)	बूचराज	,,	—
पूजा	—	,,	—
चूनडी	—	,,	—
सखियारास	कोल्हा	,,	—
नेमीश्वररास	ब्रह्मदीप	,,	—

विशेष—रचनाकार संबंधी पद्य निम्न प्रकार है—

रणथमोर की तलहटी जी रणपुर सावय वासु ।
नेमिनाथु को देहुरौजी बंभ दीप रचि रासु ।
यह ससारु असारु किव होसं भवपारु ।। हो स्वामी ।।२५।।

अवधू परीक्षा (अध्रुवानुप्रेक्षा)	—	हिन्दी	—
रोस की पाथडी	—	,,	—
जय जय स्वामी पाथडी	पल्हणु	,,	—
पंडित गुण प्रकाश	नल्ह	,,	—
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्र० रायमल्ल	,,	—
मनकरहारास	ब्र० दीप	,,	—

विशेष—ब्रह्मदीप टोडा भीमसेन के रहने वाले थे ।

खटोला	ब्र० धर्मदास	हिन्दी	—
हिंदोला	भैरवदास	,,	—
पंचेन्द्रियबेलि	ठकुरसी	,,	—
सुगधदशमीव्रत कथा	मलयकीर्ति	,,	—
कथा सग्रह	जसकीर्ति	,,	—
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	अपभ्रंश	—
पाशोकेवली	—	,	—
धन्यकुमार चरित्र	रइधू	अपभ्रंश	—

१०००१. गुटका सं० १० । पत्र स० १०३ । आ० $6\frac{3}{4} \times 6\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पूजाओं का सग्रह है—

गणधरवलय पूजा, तीस चौबीसी पूजा,
धरणेन्द्र पद्मावती पूजा, योगीन्द्र पूजा,
सप्त ऋषि पूजा, जलयात्रा, व हवन विधि आदि हैं ।

१०००२. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२८ ।

विशेष—द्यानतराय, भूधरदास, जगतराम आदि के पद हैं ।

१०००३. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ४-८३ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२६ ।

विशेष—हर्षकीर्ति, मनराम, द्यानत आदि की पूजायें तथा जिनपञ्जर स्तोत्र आदि पाठों का सग्रह है ।

१०००४. गुटका सं० १३ । पत्रसं० २२६ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३०६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह, भूपाल स्तोत्र, पच परमेष्ठी पूजा, पच कल्याणक पाठ (रूपचन्द कृत) भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र आदि का संग्रह है ।

१०००५. गुटका सं० १४ । पत्र स० ११६ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० २८८ ।

१०००६. गुटकासं० १५ । पत्रसं० ४२ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन सं० २८५ ।

विशेष—स्तोत्र एव पद सग्रह है ।

१०००७. गुटका सं० १६ । पत्र स० २१-२८६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।वेष्टन स० २८६ ।

विशेष—गुटका जीर्ण है । पूजाओ का सग्रह है ।

१०००८. गुटका सं० १७ । पत्र स० २७३ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा - हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २८७ ।

विशेष—बीच के अधिकाश पत्र नही है । हिन्दी पाठो का सग्रह है ।

१०००९. गुटका सं० १८ । पत्र स० ३६ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल स० १७८३ ।पूर्ण । वेष्टन सं० २८३ ।

विशेष—आदित्यवार कथा (भाऊ कवि) तथा राजुलपच्चीसी (लाल विनोदी) एव पूजा पाठ सग्रह है ।

१००१०. गुटका सं० १९ । पत्र स० ६६ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १७५३ पौष बुदी ६ । अपूर्ण वेष्टनसं० २८४ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मन्दिर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र हिन्दी टीका आदि का सग्रह है ।

१००११. गुटका सं० २० । पत्रस० १२५ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७५८ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७७ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

नेमिनाथ रास — ले०काल स० १७५८
चंदन मलयागिरि कथा — ले०काल स० १७५८

गुटका पढने में नहीं आता । अक्षर मिट से गये है ।

१००१२. गुटका स ० २१ । पत्रसं० १२५ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २७६ ।

विशेष—पदों का अच्छा संग्रह है । इसके अतिरिक्त हनुमत रास, श्रीपाल रास आदि पाठ भी हैं ।

१००१३. गुटका सं० २२ । पत्रसं० २४४ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६१ ।

विशेष—विविध पाठों व पूजाओं का सग्रह है ।

१००१४. गुटका सं० २३ । पत्रसं० ३५४ । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५८ ।

विशेष—सैद्धातिक चर्चाएं हैं ।

१००१५. गुटका सं० २४ । पत्रस० ३७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी । ले०काल स० १७६४ । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है । एकीभाव स्तोत्र एव कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा ।

१००१६. गुटका सं० २५ । पत्रस० ४४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०२ ।

१००१७. गुटका सं० २६ । पत्रसं० ७० । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७१ ।

विशेष—स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर हुण्डावालों का डीग (भरतपुर)

१००१८. गुटका सं० १ । पत्रस० ३० । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २३ । पूजा पाठ है ।

१००१९. गुटका सं० २ । पत्रसं० १३३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २७ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

१००२०. गुटका स० ३ । पत्रसं० ७७ । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र एव पूजा आदि हैं ।

१००२१. गुटका सं० ४ । पत्रस० २४ । भाषा–हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २९ ।

विशेष—पूजा सग्रह है ।

१००२२. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १८९ से २१३ । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० स० ३१ ।

विशेष—अध्यात्म बत्तीसी, अक्षर बावनी आदि हैं ।

१००२३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १८२ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन-सं० ३५ ।

विशेष—सम्बोध अक्षर बावनी, धर्म पच्चीसी तथा धर्मविलास द्यानतराय कृत हैं एवं तत्वसार भाषा है ।

१००२४. गुटका सं० ७ । पत्रसं० ४० से १०३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७ ।

विशेष—पूजा सग्रह है ।

१००२५. गुटका सं० ८ । पत्रसं० २से ११४ ।भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८ ।

विशेष—बख्तराम, जगराम आदि के पदो का सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग

१००२६. गुटका सं० १ । पत्रस० १०३ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

१००२७. गुटका सं० २ । पत्रस० २६१ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० ।

विशेष—पूजा पाठ है ।

१००२८. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १८० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २६ ।

विशेष—प्रति जीर्ण है, नाममाला, पूजा पाठ आदि का सग्रह है ।

१००२९. गुटका सं० ४ । पत्रस० ११६ ।भाषा-हिन्दी । ले० काल× । अपूर्ण । वेष्टनसं० २७ ।

विशेष—धर्म विलास मे से पद लिखे हुए हैं ।

१००३०. गुटका स० ५ । पत्रस० ६० । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम, प्रतिष्ठा सारोद्धार आदि के पाठ है ।

१००३१. गुटका सं० ६ । पत्र स० २४७ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १४ ।

विशेष—बनारसी विलास, समयसार नाटक तथा पूजा पाठ आदि का सग्रह है ।

१००३२. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १२० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५ ।

विशेष—पूजा पाठ हैं ।

१००३३. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १७४ । भाषा-अपभ्रंश-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २५ ।

विशेष—कथा तथा पूजा पाठ संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान, पुरानी डीग

१००३४. गुटका स० १ । पत्रस० ७२ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन स० १७ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा तथा भक्तामर स्तोत्र मंत्र सहित है ।

१००३५. गुटका सं० २ । पत्रसं० १६६ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७५७ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ ।

विशेष—श्रीपाल चरित्र भाषा (परिमल्ल) त्रेपन क्रिया, त्रिलोकसार आदि रचनाएं है ।

१००३६. गुटका सं० ३ । पत्रस० २५ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।वेष्टन सं० ४४ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र एव सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

१००३७. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ३६ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स ० ४६ ।

विशेष—पूजाओं का सग्रह है ।

१००३८. गुटका सं० ५ । पत्रस० ४२ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८५८ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८ ।

विशेष—लूहरी	रामदास
विनती	,,
पद सग्रह	—

१००३९. गुटका सं० ६ । पत्रसं० २४५ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ ।

विशेष—समयसार नाटक, बनारसी विलास तथा मोह विवेक युद्ध आदि पाठ हैं ।

१००४०. गुटका सं० ७ । पत्रसं० १३४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ ।

विशेष—जगतराम के पदों का सग्रह है । अन्त में भक्तामर स्तोत्र भाषा तथा पच मंगल पाठ हैं ।

१००४१. गुटका सं० ८ । पत्रस० ६० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १६०० ।अपूर्ण । वेष्टनसं० ५२ ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पद्य है ।

१००४२. गुटका सं० ६ ।पत्रसं० ४४ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५३ ।

विशेष—भर्तृहरि शतक तथा अन्य पाठ हैं लेकिन अपूर्ण है । २२ से आगे के पत्र नहीं हैं । आगे शृंगार मजरी सवाई प्रतापसिंह देव विरचित है जिससे कुल १०१ पद्य हैं तथा पूर्ण है ।

१००४३. गुटका सं० १० । पत्रसं० ६० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ ।

विशेष—गुटका नवीन है । हिन्दी पदो का सग्रह है ।

१००४४. गुटका सं० ११ । पत्रस० २२-५४ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ५५ ।

विशेष—जैन शतक एव भक्तामर स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

१००४५. गुटका सं० १२ । पत्र स० ६-५४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६ ।

विशेष—लक्ष्मी स्तोत्र, ऋषिमडल, जिनपजर आदि स्तोत्रों का सग्रह है ।

१००४६. गुटका सं० १३ । पत्र स० ६५ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ ।

विशेष—चेतन कर्म चरित्र (भगवतीदास) पद-जिनलाभ सूरि, दादाजी स्तवन, पार्श्वनाथ स्तवन आदि विभिन्न कवियो के पाठ हैं ।

१००४७. गुटका सं० १४ । पत्रस० २३२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ ।

विशेष—षोडश कारण, तीन चौबीसी, षोडश कारण मडल पूजा, दशलक्षण पूजा-सहस्रनाम आदि का संग्रह है ।

१००४८. गुटका सं० १५ । पत्रस० ५१ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ ।

विशेष—हिन्दी के विविध पाठो का सग्रह है ।

१००४९. गुटका सं० १६ । पत्रस० ६० । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६० ।

विशेष—पच स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, सिद्ध पूजा, षोडशकारण तथा दशलक्षण पूजा का सग्रह है ।

१००५०. गुटका सं० १७ । पत्रस० ४४ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा--हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ ।

विशेष—सामान्य हिन्दी पदो का संग्रह है ।

१००५१. गुटका सं० १८ । पत्र स० १४४ । आ० ८×५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ ।

विशेष—पूजा सग्रह, रामाष्टक, बारहमासा, नेमिनाथ का ब्याहला, संवत्सर फल, पाशा केवली पाठों का सग्रह है ।

१००५२. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ४६ । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ ।

१. प्राणायाम विधि	×	६५ पद्य
२. पदस्थ ध्यान लक्षण	×	७४ पद्य
३. बारह भावना	—	
४. दोहा पाहुड	योगीन्द्रदेव	

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । सेवाराम पाटनी ने कुम्हेर में प्रतिलिपि की थी ।

१००५३. गुटका स० २० । पत्रसं० २० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत—हिन्दी । ले०काल सं० १८८३ पौष सुदी ११ । । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ ।

विशेष—मुख्यत. निम्न पाठों का सग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतुगाचार्य	सस्कृत
जम्बूस्वामी पूजा	—	हिन्दी
प्राणीडा गीत	—	,,
मगल प्रभाती	विनोदीलाल	,,

१००५४. गुटका सं० २१ । पत्रस० ८४ । आ० ६×४½ इच भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७६७ पूर्ण । वेष्टन स० ६८ ।

विशेष—मुख्यत निम्न प्रकार सग्रह है—

फुटकर सवैया	—	हिन्दी
सिद्धात गुण चौबीसी	कल्याणदास	,,
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	,,
बारहखडी	—	,,
कालीकवच	—	,,
विनती नेमिकुमार	भूधरदास	,,
पद नेमिकुमार	डूगरसीदास	,,

१००५५. गुटका सं० २२ । पत्र स० ७६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७७ ।

विशेष—पूजा पाठ, जिनदास कृत जोगीरास, विषापहार स्तोत्र, भानुकीर्ति कृत रविव्रत कथा (र०काल स० १६८७) क्षेत्रपाल पूजा सस्कृत एव सुमति कुमति की जखडी विनोदीलाल की है ।

१००५६. गुटका सं० २३ । पत्रस० २५१ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ ।

विशेष—करीब ७८ पाठो का संग्रह है । प्रारम्भ मे ७२ सीखे दी हुई हैं । मुख्य पाठ निम्न हैं—

१. अठारह नाता—कमलकीर्ति । (२) घटाकरण मंत्र । (३) मगलाचरण-हीरानन्द । (४) गोरख चक्कर । (५) रोटतीज कथा (६) चेतनगारी (७) सास-बहु का झगडा—देवाब्रह्म । (८) सूरत की बारहखडी आदि ।

१००५७. गुटका सं० ४ । पत्रसं० १० । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८८७ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा तत्वार्थ सूत्र हिन्दी अर्थ (अपूर्ण) सहित है ।

पं० जयचन्द जी छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी ।

१००५८. गुटका सं० २५ । पत्रसं० १७० । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७८५ द्वि० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. त्रेपन क्रिया कोश-किशनसिंह । ले०काल स० १७८५ । पूर्ण । १६२ पत्र तक ।

२. ८४ आसादन दोष-हिन्दी ।

१००५९. गुटका सं० २६ । पत्र स० ९२ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८९ ।

१. रत्नकरण्ड श्रावचार भाषा	×	पत्र १५ तक । र०काल सं० १७७० फागुण बुदी २ ।
२. समाधि तत्र भाषा	×	पत्र २८ तक । र०काल स० १७७० चैत्र बुदी ८ ११२ पद्य है ।
३. रमणसार भाषा	×	पत्र ३५ तक । र०काल सं० १७६८
४. उपदेश रत्नमाला	×	पत्र ४३ तक । र०काल स० १७०२ चैत सुदी १४
५. दर्शनसार	×	पत्र ४६ तक । र०काल स० १७७२
६. दर्शन शुद्धि प्रकाश	×	पत्र ४९ तक ।
७. अष्टकर्म बध विधान	×	प ५९ तक ।
८. विवेक चौबीमी	×	पत्र ६२ तक । र०काल स० १७६६ ।
९. पच नमस्कार स्तोत्र भाषा	×	पत्र ६३ तक ।
१०. दर्शन स्तोत्र भाषा	रामचन्द्र	
११. सुमतवादी जयाष्टक	—	६६
१२. चौरासी आसादना	×	६७
१३. बत्तीस दोष सामायिक	×	,,
१४, जिन पूजा प्रतिक्रमण	×	,,
१५. पूजा लक्षण	×	,,
१६. कषायजय भावना	×	६७-७२ तक
१७. वैराग्य बारहमासा प्रश्नोत्तर चौपई	×	७५ ,,
१८. जयमाल	×	७९ ,,
१९. परमार्थ विंशतिका	×	८१
२०. कलिकाल पंचासिका	×	८३
२१. फुटकर वचनिका एवं कवित्त	×	९२

१००६०. गुटका सं० २७ । पत्रसं० १०६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

१००६१. गुटका सं० २८ । पत्रसं० ६२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, पूजा पाठ सग्रह, लक्ष्मी स्तोत्र एव पदों का संग्रह है ।

१००६२. गुटका सं० २६ । पत्रसं० ७० । आ० ७×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६० । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ ।

विशेष—संद्धांतिक चर्चा, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य बंदना, बारह भावना, त्रेपन भात्र एवं औषधियों के नुसखे है ।

१००६३. गुटका सं० ३० । पत्र स० २३२ । आ० ७$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

चतुर्विशति पूजा, भक्तामर, सहस्रनाम, राजुल पच्चीसी, ज्ञान पच्चीसी, पार्श्वनाथ पूजा, अनत व्रत कथा, सूवा वत्तीसी, ज्ञान पच्चीसी एवं पद (हरचन्द) हैं ।

१००६४. गुटका सं० ३१ । पत्रस० ३८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ ।

विशेष—

१. रविव्रत कथा सुरेन्द्र कीर्ति र०काल सं० १७०४ ।
२. पद ब्रह्म कपूर प्रभुजी थांकी मूरत मनडो मोहियो ।

१००६५. गुटका सं० ३२ । पत्र स० ३२१ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

१. तत्वार्थ सूत्र उमास्वामी । सस्कृत ।
२. भक्तामर स्तोत्र मानतुंग । ,,
३. भक्तामर पूजा विश्वभूषण । ,,

श्रीकाष्ठसंघे मुनि राम सेनो
नदी तटाख्यो गुरु विश्वसेन ।
तत्पट्टधारी जनसौख्यकारी
विद्याविभूषो मुनिराय वभूव ।
तत्पादपद्मार्चनशुद्धभानुः
श्रीभूषणे वादिगजेन्द्रसिंह ।
भट्टारकाधीश्वर सेव्यमाने
दिल्लीश्वरैर्णापितराजमान्यः ॥

तस्यास्ति शिष्यो व्रतमारधार

ज्ञानाब्धि नाम्रा जिनसेवको य ।

तेनै नदधेय प्रपूर्वपूजा भक्तामरस्यात्मज विशुद्ध अँबैः ।।

इति भक्तामरस्तोत्रस्य पूजा पुन्य प्रर्वाद्धनी ।

१००६६. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ३५६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८३७ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०० ।

विशेष—निम्न सग्रह है—

व्रत विवरण । प्रतिक्रमण । दश भक्ति । तत्वार्थसूत्र । वृहद् प्रतिक्रमण । पंच स्तोत्र । गर्भ-षडार स्तोत्र-देवनन्दि । स्वनावली-वीरसेन । जिनसहस्रनाम-जिनसेन । रविव्रत कथा-भाऊ ।

१००६७. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० २०० । आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ ।

विशेष—६० पाठो एव पदों का संग्रह है । प्रारम्भ के ४ पत्र तक पाठों की सूची है ।

मुख्य पाठ ये हैं—चेतन जखडी बाई मेघश्री जखडी-कविदास । रोगापहार स्तोत्र मनराम । अखडी साहण लूबरी वर्णन ।

कक्का-मनरामा जन्म-पत्रिका खुशालचन्द की पत्र १५७ स्वति श्री गणेश कुल देव्या प्रसादात् ।

जननि जन्म सौख्याना वर्द्धनी कुलसपदा ।

पदवी पूर्वपुन्याना लिख्यते जन्म पत्रिका ।।

अथ शुभ सवत्सरेस्मिन श्री नृपति विक्रमादित्य राज्ये सवत् १७५६ वर्षे शाके १६२१ प्रवर्तमाने महामांगल्यप्रदुक्तमासोत्तममासे पौषमासे शुभ शुक्लपक्षे सूर्य उत्तरायणे हेमऋतौ पुण्यस्तिथौ एकादशी शुक्रवारे घटी ४० भरणीनक्षत्रे घटी……………उमामादेश सवादे आदौ विशोत्तरी श्री भ्रगु दशा मध्ये जन्म गौरी जात के अष्टोत्तरी श्री शुक्र दसामध्ये जन्म सनि सध्या सनि पाचके, माता पिता आनन्दकारी आत्मा दोष विवर्जित सघने अर्क गतास दिन २२ । भोग्यास दिन दिन प्रमाण घटी २६ । रात्रिप्रमाण घटी २४ । अहो रात्रि प्रमाण घटी ६० । सागानेरि वास्तव्य साह जी श्री रामचन्द बैनाडा गोत्रे तत्पुत्र चिरंजीव दयाराम ग्रहे भार्या, पुत्र जन्म माम ८ वर्ष ८ मास १२ वर्ष १२ वर्ष ६ वर्ष ६ वर्ष १३ शुभं भवत् । कष्टजयधर्म करण । काता नवग्रहा वस्त्र स्वर देवहीणी । दालिद्र दुख दाहंड मलई प्रपीपिते सकल लोक विशद्धि वर्द्धी केमद गूणा पार्यव बस लोपी ।।१।।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली

१००६८ गुटका सं० १ । पत्रस० १४८ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८१४ । भादो सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २५ ।

विशेष—नित्य एवं नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

१००६६. गुटका सं० २ । पत्रस० १२४ । आ० १०×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र, पाठ एवं पदो का संग्रह है ।

१००७०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ७८ । आ० ४३/४×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ ।

विशेष—पद विनती आदि हैं ।

१००७१. गुटका सं० ४ । पत्रसं० ७४ । आ० ४१/२×३१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८२ ।

विशेष—जिनसेन कृत सहस्रनाम तथा रूपचंद कृत पंच मगल पाठ हैं ।

१००७२. गुटका स० ५ । पत्र सं० ६४ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ ।

विशेष—सामान्य पूजा स्तोत्र एवं पाठ हैं ।

१००७३. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ६३ । आ० ५×४३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८४२ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

(१) सूरसगाई—सूरदास । पद्य स० ५

(२) बारहमासा—मुरलीदास । १२

अगहन अगम अपार सखी री
या दुख मैं कासों कहूँ ।
एक एक जीय मे एसी आवत है
जाय यमुना मैं बँहु ॥
बहू यमुना जरु पावक
सीस करवत सारि हो ।
पथ निहारत ए दिन वीते
कौ लगि पंथ निहारि हों ॥
निहार पंथ अनाथ मे भई
या दुख मैं कासो कहूँ ।
भनत मुरली दास जाय
यमुना में बहु ॥६॥

अन्तिम—

भनत गिरवर सुन हो देवा
गति मुकति कैसे पाइये ।
कोटि तीरथ किये को
फल बारामासा गाइये ॥

(३) चौवनी लीला—× ।

(४) कवित्त—नागरीदास । पत्रसं० १२० ।

(५) पचायघ्याई—नददास । पत्रसं० १२७ ।

इति श्री भागवतपुराणे दशमस्कंध राज क्रीडा वर्णन मो नाम पञ्चाध्याय प्रथम अध्याय पूर्ण । इसके बाद ८६ पद्य और हैं ।

अघ हरनी मन हरनी सुन्दर प्रेम बीसतानी ।
नददास कै कंठ वसो सदा मगल करनी ।

सवत् १८४२ वर्षे पोथी दरवार री पोथी थी उतारी ।

१००७४. गुटका सं० ७ । पत्रसं० २२४ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले०काल स० १७६६ चैत सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६ ।

विशेष—धर्मविलास का संग्रह है ।

१००७५. गुटका सं० ८ । पत्रसं० ४४४ । आ० ६×१३ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल सं० १८६० ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४८ ।

विशेष —नित्य नैमित्तिक एव मडल विधान आदि का सग्रह है ।

१००७६. गुटका सं० ६ । पत्रस० ११७ । आ० ६½×६¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८४८ भादों वदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सौगाणियों का करौली

१००७७. गुटका सं० १ । पत्रसं० ३६ । आ० ६¾×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७३ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र आदि हैं ।

१००७८. गुटका सं० २ । पत्रस० १२-१२८ । आ० ६¾×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४ ।

विशेष—सामान्य पूजाओं का संग्रह है ।

१००७६. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १० से ६२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७५ ।

१००८०. गुटका सं० ४ । पत्रस० २४ से ११५ । आ० ६×६¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत-प्राकृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७६ ।

विशेष—निमित्त एव नौमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

१००८१. गुटका सं० ५ । पत्रसं० ६ से ४५ । आ० ४½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७७ ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—
इति सदैवछसावलिगा की बात संपूरण ।

१००८२. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ३ से १२१ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७८ ।

विशेष—पूजाओ के अतिरिक्त लघु रविव्रत कथा, राजुल पच्चीसी, नव मंगल और रविव्रत कथा (अपूर्ण) है ।

१००८३. गुटका सं० ७ । पत्र स० ११ से ८० । आ० ६¾×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०-काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७६ ।

विशेष—पूजा एव पाठों का संग्रह है ।

१००८४. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ६८ से ३०६ । आ० ६¾×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टन स० ८० ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ हैं ।

१००८५. गुटका सं० ९ । पत्रसं० ४७ से १४१ । आ० ६¾×४¾ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८१ ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एव बिनतियों का संग्रह है ।

१००८६. गुटका सं० १० । पत्रसं० २२ से १५५ । आ० ६½×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी ले०काल स० १८४० चैत्र बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८२ ।

१००८७. गुटका सं० ११ । पत्र स० ४-७७ । आ० ८¾×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत-प्राकृत । ले० काल ×। अपूर्ण । वेष्टन स० ८३ ।

१००८८. गुटका सं० १२ । पत्रस० ४१ । आ० ८×६¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८४ ।

१००८९. गुटका सं० १३ । पत्रसं० ५१ । आ० ८×६¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १७८५ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. मोक्ष शास्त्र	उमास्वामी	संस्कृत	ले०काल स० १७८५
२. रविवार कथा	×	हिन्दी	
३. जम्बूस्वामी कथा	पाण्डे जिनदास	"	र०काल सं० १६४२ भादवा बुदी ५ । ले०काल सं० १८२८ ।

१००९०. गुटका सं० १४ । पत्रस० २ से ३६८ । आ० ८×६¾ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८७ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा

१००९१. गुटका सं० १ । पत्रसं० × । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनसं० ७३ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

पद	दीपचन्द	हिन्दी

अब मोरी प्रभु सू प्रीति लगी

अनेक कवियों के पदो का सग्रह है। रचना सुन्दर एव उत्तम है।

१००६२. गुटका सं० २ । पत्र सं० × । भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ७२।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

मेघकुमार गीत	समयसुन्दर	हिन्दी
धन्ना ऋषि सिज्झाय	हर्षकीर्ति	,,
सुमति कुमति सवाद	विनोदीलाल	,,
पाचो गति की बेलि	हर्षकीर्ति	,,
	(र० काल स० १६८३)	
माली रासो	जिनदास	,,

१००६३ गुटका सं० ३ । पत्रस० २४२ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं० ३।

विशेष—पूजा पाठो का सग्रह है । राजुल पच्चीसी तथा राजुल नेमजी का बारहमासा भी दिया है।

१००६४. गुटका सं० ४ । पत्रस० ३०। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन स० ७४।

विशेष—बनारसी विलास मे से कुछ संग्रह दिया हुआ है।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा

१००६५. गुटका सं० १ । पत्रस० १५०। आ० ८½ × ६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १३०।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो का सग्रह। गुटका भीगा होने से अक्षर मिट गये है इसलिए अच्छी तरह से पढने मे नही आसकता है।

१००६६. गुटका सं० २ । आ० ६½ × ५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन स० १३१।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा

१००६७. गुटका सं० १ । पत्र सं० १८४। आ० १२ × ७½ भाषा-हिन्दी-प्राकृत। ले० काल स० १६६६ फागुण बुदी ८ । पूर्ण। वेष्टनसं० १३६।

विशेष—निम्न पाठो सग्रह है—

ज्ञान पच्चीसी, पचमगल, द्रव्य सग्रह, त्रेपन क्रिया, द्वादर्स. गाथा, पात्रभेद, षट् पाहुड गाथा, उत्पत्ति महादेव नारायण (हिन्दी) श्रुत ज्ञान के भेद, छियालीसठाणा, षट् द्रव्यभेद, समयसार, दर्शनसार सुभाषितावलि, कर्मप्रकृति, गोम्मटसार गाथा।

१००६८. गुटका सं० १३। पत्रसं० २४६। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १४०।

विशेष—पूजाओं के संग्रह के अतिरिक्त तत्वार्थसूत्र परमात्म प्रकाश, इष्ट छत्तीसी, शीलरास परमानन्द स्तोत्र, जोगीरासो, सज्जनचित्तवल्लभ तथा सुप्पय दोहा, आदि का सग्रह है। दो गुटकों को एक मे भी रखा है।

१००६६. गुटका सं० १४। पत्रसं० ३ से १०८। आ० ८×६¾ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ८६।

विशेष—पंच कल्याणक पूजा एवं सामायिक पाठ हैं।

१०१००. गुटका सं० ४। पत्रसं० २२५। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३८।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है। गुटका जीर्ण है।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१०१०१. गुटका सं० १। पत्रसं० १५६। आ० ७½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १७५६ पोष बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १३२।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है—

समयसार	बनारसीदास	हिन्दी
सुदामा चरित्र	—	"
सज्ञा प्रक्रिया	—	सस्कृत।

१०१०२. गुटका सं० २। पत्रसं० २४८। आ० ७×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३०।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है—

समाधितन्त्र भाषा	—	पर्वत धर्मार्थी
द्रव्य संग्रह भाषा	—	(ले०काल सं० १७०० आषाढ सुदी १५।

जोबनेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१०१०३. गुटका सं० ३। पत्रस० ×। वेष्टनस० १३१।

विषय—भीग जाने के कारण सभी अक्षर धुल गये हैं।

१०१०४. गुटका स० ४। भाषा-हिन्दी-। ले० काल ×। पूर्ण। **वेष्टनसं० १३३।**

विशेष— फुटकर पद्यों मे धर्मदास कृत धर्मोपदेश श्रावकाचार है।

१०१०५. गुटका सं० ५। पत्रस० ६४। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर
(अवशिष्ट)

१०१०६. गुटका सं० १ । पत्रसं० १८८ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

१०१०७. गुटका सं० २ । पत्रस० ६५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०४ ।

१०१०८. गुटका सं० ३ । पत्रस० १३४ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १६५० भादवा सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नही है ।

१०१०९. गुटका सं० ४ । पत्रस० १४८ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ ।

१०११०. गुटका सं० ५ । पत्र स० ६३-८४ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १९४ ।

१०१११. गुटका स० ६ । पत्रस० ३४ । भाषा-संस्कृत । ले०काल स० १९५२ । पूर्ण । वेष्टन स० १९५ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ है ।

१०११२. गुटका स० ७ । पत्र स० ८० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १९२१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २०० ।

विशेष—सूतर्क वर्णन, मृत्यु महोत्सव, गुणस्थान वर्णन, व्रतो का वर्णन, अर्थप्रकाशिका से लिया गया है । आदित्यवार की कथा भी है ।

१०११३. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १४१ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २११ ।

विशेष—सम्यक्त्व के ६७ भेद, निर्वाण काण्ड, भक्तामर स्तोत्र सटीक (हर्षकीर्ति) नवमंगल, राजुल पच्चीसी (विनोदीलाल) सूरत की अठारह नाता, मोक्ष पैडी, पद संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

१०११४. गुटका सं० १ । पत्रसं० ७३ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

१. पच बधावा (हर्षकीर्ति) भाषा हिन्दी
२. आदनाथ मगल (रूपचन्द) ,,
३. खण्डेलवाल जाति उत्पत्ति ,,
४. सरस्वती पूजा ,,
५. कक्का मनराम ,,
६. पद भूलो मन भ्रमरा भाई

१०११५. गुटका सं० २ । पत्रसं० ८-१०३ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है—

१. जिनस्तवन—गुणसागर	हिन्दी
२. बड़ा कक्का ।	"
३. बारहमासा—खेतसी ।	"
४. राजुल पच्चीसी—विनोदीलाल-लालचन्द ।	"
५. विनती—दीपचन्द ।	"
६. पद—हर्षकीर्ति	"
७. शीलरथ—शुभचन्द (१५ पद्य) ।	"
८. बटोई गीत ।	"
९. पद-रूपचन्द ।	"
१०. विनती—कनककीर्ति ।	"
११. भक्तामर स्तोत्र ।	संस्कृत
१२. छोटा मंगल—रूपचन्द ।	हिन्दी
१३. नेमिनाथ की लहुरि	"
१४. पद—सुन्दर ।	"
१५. करम घटा—कनककीर्ति ।	"
१६. पद-जीवां ते तो नर भव वादि गमायो—कनककीर्ति ।	"
१७. सबोध पंचासिका—द्यानतराय ।	"
१८. आरती संग्रह ।	"
१९. पद—भूधर, द्यानतराय, भागचन्द ।	"

२०. पद—मति चेतन खेलो फागुण हो ।
अहो तुम चेतन-जगजीवन ।
जिनराज वरण मन ……………। भूधर ।

२१. चौबीस तीर्थंकर जैमाल—विनोदीलाल ।	हिन्दी

२२. निर्वाण काण्ड (भैय्या भगवतीदास)

२३. बारह-अनुप्रेक्षा ।

२४. बारह-भावना ।

२५. प्राणीडा गीत ।

२६ सं० १८७३ की सीताराम जी की, सं० १७६४ की फतेराम की, सं० १८०३ की बाई खुशमाला की—आदि—जन्म-पत्रियां भी हैं ।

मुनि मायाराम ने दोसा में चि० दीपचन्द की पुस्तक से प्रति की थी ।

१०११६. गुटका सं० ३ । पत्र सं० १५० । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० २२३ ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

१. पद—मनराम　　　　हिन्दी

२. भक्तामर भाषा—हेमराज　　　　"

३. नाटक समयसार—बनारसीदास　　　　"

४. नेमीश्वर रास—ब्र० रायमल्ल सं० १६१५　　　　"

५. श्रीपाल स्तुति　　　　"

६. चिंतामणि पार्श्वनाथ

७. पंचमगति वेलि—हर्षकीर्ति

१०११७. गुटका सं० ४ । पत्रस० १४१ । आ० ७×९ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

१ सीता चरित्र—रामचन्द्र । पत्रस० ११६ तक हिन्दी पद्य । र०काल स० १७१३ । ले०काल स० १८४१ ।

मोतीराम अजमेरा मौजाद के ने सवाई जयपुर में महाराज प्रतापसिंह के शासन मे लिखा था ।

२. जम्बू स्वामी कथा—पाण्डे जिनदास । र०काल सं० १६४२ । ले०काल स० १८४५ । सं० १९९६ मे लश्कर के मन्दिर में चढ़ाया था ।

१०११८. गुटका सं० ५ । पत्र स० २९७ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. जिन सहस्रनाम भाषा

२. सिन्दूर प्रकरण

३. नाटक समयसार—भाषा—हिन्दी ।

४. स्फुट दोहा—भाषा हिन्दी ।　　　　७१ दोहे

१०११९. गुटका सं० ६ । पत्र स० ५२ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२६ ।

विशेष—पट्टी पहाड़े तथा सीधावर्ण समाना आदि पाठो का संग्रह है ।

१०१२०. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १६१ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २२७ ।

विशेष—मुख्यत:निम्न पाठो का संग्रह है

पट्टावली—बलात्कार गण गुर्वावली है ।

पडिकम्मण, सामयिक, भक्ति पाठ, पञ्च स्तोत्र, बन्देतान जयमाल, यशोधर रास—जिणदास, आकाश पंचमी कथा-ब्रह्म जिनदास, अठाईस मूल गुण रास—जिणदास, पाणी गालण रास-ब्र० जिनदास।

प्रति प्राचीन है।

१०१२१. गुटका सं० ८। पत्र स० २७। आ० ८½×१½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल अपूर्ण। वेष्टन सं० २२८।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

१०१२२. गुटका सं० ९। पत्रसं० १४६। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २२९।

विशेष—विशेषत: पूजा पाठो का सग्रह है।

पद—जिन बादल चढ़ि आयो,

भया अपराध क्या किया—विजय कीर्ति

समझि नर जीवन थोरो—रूपचन्द। जगतराम आदि के पद भी हैं।

पूजा सग्रह, सात तत्व, ११ प्रतिमा विचार—त्रिलोक चन्द्र—हिन्दी (पद्य)

पार्श्वपुराण—भूधरदास।

१०१२३. गुटका सं० १०। पत्र स० ३४९। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १६९८। अपूर्ण। वेष्टन स० २३०।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

पडिकोणा, श्रुत स्कन्ध—ब्रह्म हेम, भक्ति पाठ सग्रह, पट्टावलि, (मूल सघ) पडित जयमाल, जसोधर जयमाल, सुदंसण की जयमाल, फुटकर जयमाल।

१०१२४. गुटका सं० ११। पत्रस० १४३। आ० ५½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७७७।

विशेष—मुख्यत: निम्न कवियों के पदों का संग्रह है—

किशन गुलाब, हरखचन्द, जगतराम, राज, नवल जोधा, प्रभाती लालचन्द विनोदी लाल, रूपचन्द, सुरेन्द्रकीर्ति, नित्य पूजन, मंगल, जगतराम। नित्य पूजन भी है।

सम्मेदशिखर पच्चीसी—खेमकरण—र० काल स० १८३६

रविवार कथा—भाऊ कवि

भक्तामर भाषा—हेमराज

सभी पद अनेक राग रागिनियो में है।

१०१२५. गुटका सं० १२। पत्र सं० ९९। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७७८।

विशेष—नित्य पाठ एव स्तोत्रों के अतिरिक्त कुछ मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

स्तवन—ज्ञानभूषण

पद—भानुकीर्ति

पद—पं० नाथू	हिन्दी
पद—मनोहर	"
पद— जिनहरष	"
पद—विमलप्रभ	"
बारहमासा की विनती—पांडे राज भुवन भूषण—	"
पद—चन्द्रकीर्ति	"
आरती संग्रह	"

१०१२६. गुटका सं० १३ । पत्रसं० ६६ । आ० ८½ × २½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७६ । गुटका प्राचीन है ।

विशेष—मुनीश्वर जयमाल—ब्र० जिणदास	हिन्दी
नन्दीश्वर जयमाल—सुमतिसागर	हिन्दी
चतुर्विशति तीर्थंकर जयमाल	हिन्दी
गुरु स्तवन—नरेन्द्र कीर्ति	—
सामयिक पाठ	संस्कृत
सहस्रनाम—आशाधर	संस्कृत
नित्य नैमित्तिक पूजा	संस्कृत
रत्नत्रय विधि पूजा	

१०१२७. गुटका सं० १४ । पत्रसं० २६ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८० ।

विशेष—निम्न सग्रह है—

पार्श्वनाथ स्तोत्र
आदित्यवार कथा (अपभ्रंश)
मानबावनी—मनोहर (इसका नाम संबोधन बावनी भी है)
सवैया बावनी --मन्ना साह
बावनी—डूंगरसी

१०१२८. गुटका सं० १५ । पत्र सं० १८४ । आ० ६ × ५½ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७८१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

सामायिक पाठ
भक्ति पाठ
तत्वार्थ सूत्र—आदि का संग्रह है ।

१०१२६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १७० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

मदन जुज्ज—बूचराज—र०काल १५८६ ।	हिन्दी
मान बावनी—मनोहर	,,
हनुमान कथा—ब्र० रायमल्ल र०काल १६१६ ।	,,
टडाना गीत	,,
दशलक्षण जयमाल	,,
देवपूजा, गुरु पूजा—शास्त्र पूजा	,,
सिद्ध पूजा	,,
सोलह कारण पूजा	,,
कलिकुंड पूजा	,,
चिंतामणि पूजा जयमाल	,,
नेमीश्वर पूजा	,,
शांतिचक्र पूजा	,,
गणधर वलय पूजा	,,
सरस्वती पूजा	,,
शास्त्र पूजा	,,
गुरु पूजा	,,

१०१३०. गुटका सं० १७ । पत्र स० ४२ । आ० ६½×४½ इञ्च । वेष्टन स० ७८३ ।

विशेष – मानमजरी-नन्ददास । ले०काल सं० १८१६ द: जीवनराज पांड्या का ।

इसके आगे औषधियों के नुस्खे तथा बनारसीदास कृत सिन्दूर प्रकरण है ।

१०१३१. गुटका सं० १८ । पत्रसं० १०२ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । वेष्टन सं० ७८४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

१०१३२. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १६-६६ । आ० ६×४½ इञ्च । वेष्टनसं० ७८५ ।

राजुल पच्चीसी	—	लालचन्द
पंच मंगल	—	रूपचन्द

पूजा एवं स्तोत्र

१०१३३. गुटका सं० २० । पत्र सं० ४-६७ । भाषा-हिन्दी-संग्रह । **वेष्टनसं० ७८६** ।

बधाई—

विशेष—पद-सर्वसुख हरीकिशन, सेवग, जगजीवन, रामचन्द नवल, नेमकीर्ति, द्यानत, ।कर्म-चरित, १३ पद्य हैं ।

१०१३४. गुटका सं० २१। पत्रस० १२६। ग्रा० ५×६ ५ञ्च । भाषा-हिन्दी-सग्रह। वेष्ठनस० ७८७।

विशेष—नित्य पाठ सग्रह एव विनती ग्रादि है—

कल्याण मन्दिर भाषा
नेमजी की विनती

१०१३५. गुटका स० २२। पत्र स० ६६। ग्रा० ६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। वेष्टन सं० ७८८।

कोकशास्त्र — ग्रानन्द — ग्रपूर्ण

१०१३६. गुटका सं० २३। पत्र स० १६। ग्रा० ६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। वेष्टन स० ७८६।

विशेष—पूजा सग्रह है।

१०१३७. गुटका सं० २४। पत्रस० ७४। ग्रा० ६×५ इञ्च। वेष्टनसं० ७६०।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रहहै—

१. रविवार कथा
२. जोगीरासा — जिणदास
३. ज्ञान जकडी — जिनदास
४. उपदेश वेलि — प० गोविन्द

पडित गोय्यद प्रचल महोछव उपदेशी वेलीसार।
ग्राधर्म रुचि ब्रह्म हेतु भणी कीधी जासि ने भवपार ।।

५. जिन गेह पूजा जयमाल ६ बाहुबलि वेलि — शान्तिदास
७. पद ब्रह्म राजपाल
८. तीर्थकर माता-पिता नाम वर्णन हेमलु ३० पद, र०काल स० १५४८

६. कवि परिचय—

हू मतिहीन ग्रयानो प्रक्षिरु कानो जोडि।
जो यह पढइ पढावइ भविजन लावइ खोडि ।।
कविता सुर कह्यो नारी कवीगुरु पुनु।
कानो मानु न जानो पद्रहमय ग्रडताला।
वरसा सुगति सुबाला गीतु नो ग्रसराला ।।
वस्त डारनी रूमप सोखा भलिहइ गाऊ।
गोल पूर्व महाजनु हेमलु हइ तमु नाउ ।।
तिसकी माता देल्हा पिता नाउ जिनदास।
जो यह काबि पढ स्यो कछु पुन्य को ग्राणु ।।

१०. मुक्तावली गीत ११. ग्राराधना प्रतिबोध सार दिगम्बर १२. राम सीता गीत-ब्रह्म श्री वर्द्धन
१३. द्वादशानु प्रेक्षा-ग्रवधू १४. सरस्वती स्तुति-ज्ञानभूषण-हिन्दी

१५ कलिकुंड पूजा			
१६. मांगीतुंगी गीत	अभयचन्द सूरि	हिन्दी	४५ पद्य
१७. जम्बू कुमार गीत	—		४५ पद्य
१८ रोहिणी गीत	श्रुतसागर	हिन्दी	

१०१३५. गुटका सं० २५। पत्र सं० ४-६८। आ० ६×६½ इञ्च। वेष्टन स० ७६१।

१. शतक संवत्सरी—

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नही है। स० १७०० से १७९९ तक १०० वर्ष का वर्षफल दिया गया है।

महात्मा भवानीदास ने लवाण मे प्रतिलिपि की। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—स० १७८५ वर्षे शाके १६४० प्रवर्तमाने मिति असाढ सुदी ९ वार गुरुवासरे सपूर्ण दिल्ली तखतपति साह श्री महैमदसाहि। आंबेर नगर महाराजा श्री सवाई जयसिहजी लवाण ग्रामे महाराजाधिराज श्री बाका बहादुर श्री रुणंदरामजी राज वर्त्तव्य।

२. चितोड़ की गजल— कवि खेतान हिन्दी र०काल स १७४८

प्रारम्भ के चार पत्र नही हैं।

> खरतर जती कवि खेताक अखै भांजस एताक।
> सवत् सतरासै अडताल, श्रावण मगसिर माल ।।
> वदि पाख बारमी ते रीक कीन्ही गजल पढियो ठीक।

कवि ने ५६ पद्यो मे चित्तौडगढ का वर्णन किया है। प्रारंभ के ३७ पद्य नही है।

रचनाएं ऐतिहासिक है।

३. शकर स्तोत्र	शकराचार्य	सस्कृत	
४. कर्म विपाक	सूर्यार्णव	अपूर्ण	अन्तिम २५ पत्र सस्कृत में हैं।

१०१३६. गुटका सं० २६। पत्रसं० ४१-१२८। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। वेष्टन स० ७९२।

१, मनोरथ माला	—	साह अचल
२. जिन धमाल..................		
३. धर्म रासा		
४. संबोध पचासिका	प्राकृत	
५. साधु गीत	—	मनोहर
६. अकडी	—	रूपचन्द
७. पद	ब्रह्मदीप, देवसुन्दर, कबीरदास, बील्हो,	
८, धर्मतत्व सवैया	—	सुन्दर
९. षट्लेश्या वर्णन		(संस्कृत)
१०. ढाढ़सी गाथा	११	बीस विरहमान गाथा

१०१४०. गुटका सं० २७ । पत्रसं० २-२३ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७९३ ।

विशेष—गुटका प्राचीन है । भोज चरित्र है पर लेखक का नाम नहीं है) इसमें रतनसेन और पद्मावती की भी कथा है ।

१०१४१. गुटका सं० २८ । पत्रसं० ४-२४४ । आ० ६½× ५इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७९४ ।

विशेष—मुख्यतः नित्य नैमित्तिक पाठ पूजा का संग्रह है । पत्र खुले हुए हैं ।

१०१४२. गुटका सं० २९ । पत्रसं० १५-११८ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७९५ ।

विशेष—भूधरदास, द्यानतराय व बुधजन आदि कवियों के पदों का संग्रह है ।

१०१४३. गुटका सं० ३० । पत्र सं० ६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७९६ ।

विशेष—लक्ष्मी स्तोत्र, शान्ति स्तोत्र आदि । देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य प० नोनदराम ने किशनपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

१०१४४. गुटका सं० ३१ । पत्रसं० १६ । आ० ३½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । पूर्ण । वेष्टन स० ७९७ ।

विशेष—नित्य पाठ करने योग्य स्तोत्र पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

१०१४५. गुटका सं० ३२ । पत्रस० ७८ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा--हिन्दी-संस्कृत । पूर्ण । वेष्टन स० ७९८ ।

विशेष—इसमे कछुवाहा राजाओ की वशावली है महाराजा ईसरीसिह जी तक १८७ पीढी गिनाई है । आगे वशावली की पूरी विगत भी दी है ।

१०१४६. गुटका सं० ३३ । पत्रस० ३१ । आ० ८×६½ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण । वेष्टन स० ७९९ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठो का सग्रह है ।

१०१४७. गुटका सं० ३४ । पत्र स० ४८ । आ० ४½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण । वेष्टन स० ८०० ।

विशेष—औषधियो के नुस्खे है तथा कुछ पद भी हैं ।

१०१४८. गुटका सं० ३५ । पत्रस० ७० । आ० ५½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण । वेष्टनस० ८०१ ।

विशेष—पद स्तोत्र एव अन्य पाठों का सग्रह हैं । गणेश स्तोत्र (१७९५ का लिपिकाल)

१०१४९. गुटका स० ३६ । पत्रस० ३०-६२ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । पूर्ण । वेष्टनसं० ८०२ ।

१. मुनीश्वरों की जयमाल			
२. पंचम गति वेलि	हिन्दी	हर्षकीर्ति	र० काल सं० १६८३
३. पद संग्रह	"	—	—

१०१५०. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ८२ । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०३ ।

१. पद संग्रह २ पूजा पाठ संग्रह

३. शनिश्चर की कथा-विक्रम ले०काल १८१६

४. सूर्य स्तुति-हिन्दी । ५१ पद्य । ले०काल १८१६

विशेष—हीरानन्द सौगाणी ने प्रतिलिपि की थी ।

५. नवकार मंत्र—लालचन्द—ले०काल १८१७

६. सुरज जी की रसोई ७ चौपई ८ कवित्त

९. सज्झाय १० पद

१०१५१. गुटका सं० ३८ । पत्रसं० ४१–८६ । आ० ६½×४½ इन्च । भाषा–हिन्दी । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०४ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

१०१५२. गुटका सं० ३९ । पत्रसं० २८ । आ० ८½×६½ इन्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । पूर्ण । वेष्टन सं० ८०५ ।

विशेष—बाल सहेली शुक्रवार की तरफ से चढाई गई नित्य नियम पूजा की प्रति सं० १९७८

१०१५३. गुटका सं ४० । चतुर्विंशतिपूजा—जिनेश्वरदास । पत्रसं० ८७ । आ० ९×७ इन्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १९५६ । पूर्ण । लिपिकाल १९९१ ।वेष्टन सं० ८०६ ।

विशेष—(जिनेश्वरदास सुजानगढ के थे ।)

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

१०१५४. गुटका सं० १ । पत्रसं० ८८ । आ० ६½×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

१. पद संग्रह	×	पत्र १–४
२. विनती (अहो जगत गुरु)	भूधरदास	पत्र ४–५
३. पद संग्रह	—	पत्र ५–१०
४. सहेल्यो पद	सुन्दरदास	पत्र १०–११
५. पद संग्रह	—	पत्र १२–६२
६. स्वप्न बत्तीसी	भगौतीदास	पत्र ६२–६५

विशेष—३४ पद्य हैं ।

७. पद संग्रह	—	पत्र ६६–८८

विशेष—विभिन्न कवियों के पद हैं । पदों का अच्छा संग्रह है । पदों के साथ राग रागिनियों का नाम भी दिया है ।

१०१५५. गुटका सं० २। पत्रसं० ११२। आ० ५$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. जैन शतक	भूधरदास		पत्र १–२७। र०काल सं० १७८१
२. कवित्व छप्पय	×	हिन्दी	पत्र २८–३७
३. विषापहार स्तोत्र	अचलकीर्ति	,,	पत्र ३८–४२
४. पूजा पाठ	—	,,	४२–५२
५. कमलामती का सिज्झाय	—	,,	५२–५६
		३२ पद्य हैं। कथा है।	
६. चौबीस दंडक	दौलतराम	हिन्दी	५७–६३
७. सिखरजी की चौपई	केशरीसिंह	हिन्दी	६४–६६
		४५ पद्य हैं।	
८. एकसौ अष्टोत्तर नाम	—	हिन्दी	७०–७१
९. स्तुति द्यानतराय	—	हिन्दी	७२–७३
१०. पार्श्वनाथ स्तोत्र	द्यानतराय	हिन्दी	७३–७४
११. नेमिनाथ के १० भव	×	,,	७५–७७
१२. रिषभदेव जी लावणी	दीपविजय	,,	७७–८३

६२ पद्य है। र०काल सं० १८७४ फागुन सुदी १३।

विशेष—उदयपुर के भीवसिंह के शासन काल मे लिखा था।

१३. पद सग्रह	×	हिन्दी	पत्र ८४–९०
१४. सवैय्या	मनोहर	,,	९१–९६
१५. प्रतिमा बहोत्तरी	द्यानतराय	हिन्दी	९६–१०५
१६. नेमिनाथ का बारहमासा	विनोदीलाल	,,	१०६–११२

१०१५७. गुटका सं० ३। पत्रस० १८३। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ।

१. पच मगल–	रूपचन्द	हिन्दी	पत्र १–१४
२. बीस विरहमान पूजा	—	,,	पत्र १४–२१
३. राजुल पच्चीसी	—	,,	पत्र २२–३१
४. आकाश पचमी कथा	ब्र० ज्ञान सागर	,,	पत्र ३१–४३
५. नेमिनाथ बारहमासा	विनोदीलाल	,,	पत्र ४४–५२
६. आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	,,	पत्र ५३–७६
७. निर्वाण पूजा	—	,,	पत्र ७६–८०
८. निर्वाण काण्ड	—	,,	पत्र ८०–८३
९. देव पूजा विधान	—	,,	पत्र ८३–१०८
१०. पद सग्रह	—	,,	पत्र १०९–१८३

विशेष—विभिन्न कवियों के पद है। लिपि विकृत है इसलिये अपाठ्य है।

१०१५८. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १२२८ । आ० ५½×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १९१७ जेठ बुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—इसमें ज्योतिष, आयुर्वेदिक एवं मंत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य का उत्तम संग्रह है । लिपि बारीक है लेकिन स्पष्ट एवं सुपाठ्य है ।

पं० जीवनराम ने फतेहपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१. नाडी परीक्षा—× । संस्कृत । पत्र १ अपूर्ण
२. गृह प्रवेश प्रकरण—× । हिन्दी । पत्र २ अपूर्ण
३. आयुर्वेदिक नुसखे—× । हिन्दी । पत्र ३-५
४. नेत्र रोग की दवा—× । हिन्दी । पत्र ६-८
५. सारणी सं० ६५-६९ की—× । हिन्दी । ८-१२
६. हक्कर्म कला--× । सस्कृत । १३-१४
७. सारणी स० १७८२ से १८१२ तक संस्कृत । १४-२१
८ निषेक—× । संस्कृत । २२-२४
९. निषेकोदाहरण—× । हिन्दी गद्य । २५-३४
१०. मास प्रवेश सारणी, पत्र ३५-५२ ।
११. ग्रहण वर्णन शक सवत् १७६२ से १८२१ तक पत्र ५९-६२ ।
१२. १८ प्रकार की लिपियों

के नाम.......... हस लिपि, भूतलिपि, यक्षलिपि, राक्षस लिपि, उड्डी लिपि, पावनी लिपि, मालवी लिपि, नागरी लिपि, लाटी लिपि, पारसी लिपि, अनिमित्त लिपि, चाणदी, मौलवी, देशाविशेष ।

इनके अतिरिक्त—लाटी, चोटी, माहली, कानडी, गुर्जरी, सोरठी, मरहठी, कांकणी, खुरासणी, मागधी, सिंहली, हाडी, कीरी, हम्मीरी, परतीस, मसी, मालवी, महापोवी और नाम गिनाये हैं ।

१३. पुरुष की ७२ कलाये, स्त्री की ६४ कला,
वृत्तादि भेद (हिन्दी) नुसखे—६४ पत्र तक
१४. सारिणी स० १८७५ शक सवत् १७४० से १९२५ तक १६५ तक
१५. आयुर्वेदिक नुसखे—हिन्दी-पत्र १६६-२०६ तक एव अनेकों प्रकार की विधिया ।
१६. ,, विभिन्न ग्रंथों से पत्र २०७-२४७ हिन्दी में ।
१७. ग्रहसिद्ध श्लोक—महादेव । सस्कृत । २४८-२४९
१८. उपकरणानि एवं घटिका वर्णन—अंकों में । २५०-३५५
१९. गोरखनाथ का जोग—× । हिन्दी । ३५६-३७७
२०. दिनमानकरण—× । हिन्दी । ३७८-३८२
२१. दिनमान एवं लग्न आदि फल अंकों में । ३८३-४२९
२२. लग्न फल आदि—× । संस्कृत । ४३०-५८२
२३. ज्योतिष सार संग्रह—× । संस्कृत । ५८२-६१८

२४. गिरधरानन्द—× । संस्कृत । पत्र ६११-६७६

ले०काल सं० १८६५ मंगसिर बुदी १२ ।

विशेष—पं० जीवणराम ने चूरू में प्रतिलिपि की थी ।

२५. तिथिसारणी—लक्ष्मीचंद । संस्कृत । ६८०-६६६

र०काल सं० १७६० ।

विशेष—ये जयचंद सूरि के शिष्य थे ।

२६. कामधेनु सारणी—अंकों में । ६६७-७१६

२७. सारोद्धार—हर्षकीर्ति सूरि । संस्कृत । ७१७-७८८

२८. पल्ली विचार—× । संस्कृत । ७८६-७६०

२९. आणन्द मणिका कल्प—मानतुंग । संस्कृत । ७६१-७६५

विशेष—अन्तिमपुष्पिका—श्वेताम्बराचार्य श्री मानतुंग कृते श्री मानतुंग नंदाभिधानो पर ब्रह्मसागरे उत्पन्न मणिसकेतस्थान लक्षणोनामत्वमानंद मणिका कल्प समाप्तः ।

३०. केशवी पद्धति भाषा उदाहरण—× । संस्कृत । पत्र ७६६-८३७

३१. योगिनी दशाफल—× । संस्कृत । पत्र ८३८-८६६

३२. षड् वर्गफल—× । सस्कृत । पत्र ८६७-६०३

३३. मुष्टिका ज्ञान—× । सस्कृत । ६०४

३४. आषाढी पूर्णिमाफल—श्री अनूपाचार्य संस्कृत ६०५

३५. वस्तुज्ञान—× । संस्कृत । ६०६-६०६

३६. रमल चिंतामणि—× । सस्कृत । ६१०-६६६

३७. शीघ्रफल—अंकों में । ६६७-६६५

३८. शूलमत्र, मेघस्तंभन गर्भबंधन, वशीकरण मत्र आदि—× । सस्कृत । पत्र ६६६-६६७ यत्र भी दिया हुआ है ।

३९. ताजिक नीलकठोक्त षोडश योग—× । सस्कृत । पत्र ६६८-१००५ । ले०काल सं० १८६६ माघ बुदी ७

विशेष—पं० जीवणराम ने चूरू में लिखा था ।

४०. अरिष्टाध्याय—× । संस्कृत । पत्र १००६-१००८
(हिल्लाज जातके वर्ष मध्ये)

४१. दुर्गभग योग—× । संस्कृत । १००८-१०१० ।

४२. घोरकालानतचक्र— । सस्कृत । १०१०-१०११

४३. तिथि, चक्र तिथि, सौरभ, योगसोरभ, वाटिका, वाल्लि, गृहफल, शीघ्रफल-अंकों में ।

१०१२ से १०४३

४४. आयुर्वेदिक नुसखे—× । हिन्दी । १०४४-१०५७

४५. विजययत्र परिकर—× । सस्कृत । १०५८-१०६१

४६. विजय यत्र प्रतिष्ठा विधि सस्कृत १०५८-१०६१

४७. पन्द्रह अंक यत्र—सस्कृत । १०६५-६६

४८. पन्द्रह अंक विधि एवं यंत्र साधन—संस्कृत-हिन्दी । १०६६-६९

४६. सुभाषित—। हिन्दी । १०७०-१०८८

५०. सूतक श्लोक—। संस्कृत । १०८८-८६

५१. प्रात संध्या—। संस्कृत । १०६४-९६

५२. व्रतस्वरूप-भट्टारक सोमसेन । सस्कृत । १०६०-६३

५३. अरिष्टाध्याय-धनपति । संस्कृत । १०६७-११०८

५४. कर्म चिंताध्याय—। संस्कृत । ११०६-११५

५५. ग्रहराशिफल (जातका भरणे)—× । संस्कृत । १११६-३६

५६. शुद्ध कोष्टक—× । सस्कृत । ११३७-११४८

५७. टिप्पण—× । हिन्दी । ११४६-११५३

५८ आयुर्वेदिक नुसखे—× ।

५६. चन्द्रग्रहण कारक
मारक क्रिया—× । हिन्दी । ११७०-११७३

६० आयुर्वेदिक नुसखे—× । हिन्दी । ११८४-११८६

६१. गणपति नाममाला—× । संस्कृत । ११६०-१२०४

६२. रत्न दीपिका—चडेश्वर । सस्कृत । १२०५-१२११
लें०काल सं० १६१७ ।

विशेष—फटेहपुर मे लिखा गया ।

६३. मद्दुग परीक्षा—× । सस्कृत । १२१२-१२१४

६४, सारगी—× । संस्कृत । १२१५-१२२८

१०१५६. गुटका सं० ५ । पत्रसं० १७५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण ।

१. पूजा सग्रह—× । हिन्दी ।

२. तत्वार्थसूत्र—उमास्वामी । संस्कृत ।

३, पार्श्वनाथ जयमाल—× । हिन्दी ।

४. पांडे की जयमाल—नल्ह । हिन्दी ।

५. पुण्य की जयमाल—× । हिन्दी ।

६. भरत की जयमाल—× । हिन्दी।

७. न्हवण एवं पूजा व स्तोत्र—× । हिन्दी-संस्कृत ।

८. अनन्त चौदश कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी-संस्कृत

६, भक्तामर स्तोत्र – मानतुंग । संस्कृत

१०. नेमिनाथ बारहमासा—× । हिन्दी

११. सिज्झाय—मान कवि हिन्दी ।

१२. पार्श्वनाथ के छंद—× । हिन्दी । ४७ पद्य हैं ।

१३. पद एव विनती संग्रह— × । हिन्दी ।

१४. बारहमासा— × । हिन्दी ।

१५. क्षमा छत्तीसी—समयसुन्दर । हिन्दी ।

१६. उपदेश बत्तीसी—राज कवि । हिन्दी ।

१७. राजमती चूनरी—हेमराज । हिन्दी ।

१८. सवैया—धर्मसिह । हिन्दी ।

१९. बारहखड़ी—दत्तलाल । ,,

२०. निर्दोष सप्तसी कथा—रायमल्ल ।

लेoकाल संo १८३२ फाल्गुरण सुदी १२ ।

विशेष—चुरू मे हरीसिंह के राज्य मे बखतमल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१६०. गुटका सं० ६ । पत्रस० १३० । ग्रा० १२×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेoकाल स० १९२६ पौष बुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—पडित महीचन्द के प्रशिष्य प० माणिकचन्द के पठनार्थ लिखा गया था । सामान्य पाठों का सग्रह है ।

आदित्यवार की छोटी कथा भानुकीर्ति कृत है जिसमे १२४ पद्य है—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है-

रस भुनि सोरह संत यदा कथा रची दिनकर की ।
तदा यह व्रत कर वे सुख लहै, भानुकीरत मुनि अर्स कहै ।।१२४।।

१०१६१. गुटका स० ७ । पत्र स० १-६ + १-७९ + १५ + १८ + ९ × ८९ + ५५ + २४ × २ १ + १ + ५ + २ + २ + २ + ३ + ३ + ४ + २ + २×४ = १२६ ।

ले० काल स० १८५७ । पूर्ण ।

१. भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	पत्र १-६
२. तीन चौबीसी पूजा	शुभचन्द्र	,,	१-७९
		लेoकाल सं० १८५७ भादवा बुदी ५ ।	
३. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	×	संस्कृत	१-१५
४. कर्मदहन पूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत	१-१८
५. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	,,	१-९
६. सहस्रनाम पूजा	धर्मभूषण	,,	१-८९
७. सिद्धचक्र पूजा	देवेन्द्रकीर्ति	,,	१-५५
८. भक्तामर सिद्ध पूजा	ज्ञानसागर	,,	१-१३
९. पचकल्याणक पूजा	×	संस्कृत	१-२४
१०. विश विद्यमान तीर्थंकर पूजा	×	,,	१-२
११. अष्टाह्निका पूजा	×	संस्कृत	१
१२. पचमेरू की आरती	द्यानतराय	हिन्दी	१
१३. अष्टाह्निका पूजा	×	संस्कृत	१-५

१४. गुरु पूजा	हेमराज	हिन्दी	१ २
१५. धारा विधान	×	,,	१–२
१६. अठाई का रासा	विनयकीर्ति	,,	१–३
१७. रत्नत्रय कथा	ज्ञानसागर	,,	१–३
१८. दशलक्षण व्रत कथा	—	,,	१–४
१९. सोलहकारण रास	सकलकीर्ति	,,	१–२
२०. पखवाडा	जती तुलसी	हिन्दी	१–२
२१. सम्मेद शिखर पूजा	×	संस्कृत	१–४

१०१६२. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ३८ । आ० ६ × ६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल सं० १९६१ पौष बुदी ३ । पूर्ण ।

विशेष—भारामल्ल कृत दान कथा है ।

१०१६३. गुटका सं० ९ । पत्रसं० ४२ । आ० ८ × ६⅛ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन × ।

विशेष—आचार्य जिनसेन कृत जैन विवाह विधि की हिन्दी भाषा है । भाषाकर्त्ता-पं० फतेहलाल । श्रावक पन्नालाल ने लिखवाया था ।

१०१६४ गुटका सं० १० । पत्रसं० ४६ । आ० ७ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि यंत्र सहित है । यन्त्रों के चित्र दिये हुये हैं । परशादीलाल बनिया (सिकन्दरा) आगरे वाले ने लिखा था ।

१०१६५. गुटका सं० ११ । पत्रसं० ११६ । आ० ६ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९१७ प्रथम आसोज सुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है । नारायण जालडावासी ने लश्कर में लिखा था ।

१०१६६. गुटका सं० १२ । पत्रसं० ७५ । आ० ६ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

१, छहढाला वचनिका — हिन्दी ग० पत्र १–१४

विशेष—द्यानतराय कृत अक्षर बावनी की गद्य भाषा है ।

२. ,, × ,, पत्र १५–३०

विशेष—बुधजन कृत छहढाला की गद्य टीका है ।

३. दर्शन कथा	भारामल्ल	हिन्दी पद्य	१ ४४
४. दर्शन स्तोत्र	×	संस्कृत	४५

१०१६७. गुटका सं० १३ । पत्रसं० ४५ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १९६५ । पूर्ण ।

विशेष—भारामल्ल कृत शील कथा है। परसादीलाल ने नगले सिकन्दरा (आगरे) में लिखा था ।

१०१६८. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ११७ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १९२० पौष बुदी ३ । पूर्ण ।

विशेष—पंडित रूपचन्द कृत समवसरण पूजा है ।

१०१६९. गुटका सं० १५ । पत्रसं० १२८ । आ० ९×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल सं० १९९६ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । पीताम्बरदास पुत्र मोहनलाल ने लिखा था ।

१०१७०. गुटका सं० १६ । पत्रसं० ८१ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, सहस्रनाम एवं पूजाओं का संग्रह है ।

१०१७१. गुटका सं० १७ । पत्रसं० २७ । आ० ७½×½६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह हैं ।

१. कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	१-३
२. भक्तामर भाषा	हेमराज	हिन्दी	३-८
३. एकीभाव स्तोत्र	×	संस्कृत	८-१२ अपूर्ण
४. सामायिक पाठ	×	,,	१२-२६
५. सरस्वती मन्त्र	—	संस्कृत	२६
पद्मावती स्तोत्र	बीज मन्त्र सहित	,,	२७

१०१७२. गुटका सं० १८ । पत्रसं० ८० । आ० ७½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १९९६ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

१०१७३. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ७३ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८८१ । पूर्ण ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. समोसरण पूजा लालजीलाल हिन्दी

र०काल सं० १८३४

विशेष—छोटेराम ने लिखा था ।

२. चौबीस जिन पूजा देवीदास हिन्दी

इनके अतिरिक्त सामान्य पूजायें और हैं ।

१०१७४. गुटका सं० २० । पत्र सं० ३१ । आ० ५$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८१६ माह सुदी १२ । पूर्ण ।

विशेष—चरणदास विरचित स्वरोदय है ।

१०१७५. गुटका सं० २१ । पत्रसं० १२० । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-पूजा पाठ । ले०काल सं० १९८१ भादवा सुदी ४ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एव विभिन्न पाठो का संग्रह है ।

१०१७६. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १६ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १९४० पौष बुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—उमास्वामी कृत तत्वार्थ सूत्र है । लालाराम श्रावक ने लिखा था ।

१०१७७. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ३९ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । ले०काल सं० १९६२ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र एवं जिनसहस्रनाम जिनसेनाचार्य कृत है । परशादीलाल ने सिकन्दरा (आगरा) में प्रतिलिपि की थी ।

१०१७८. गुटका सं० २४ । पत्रसं० ६ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है ।

१०१७९. गुटका सं० २५ । पत्र स० ३-१३४ । आ ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १९१३ । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, दशलक्षरण पूजा, एवं देव शास्त्र गुरु की पूजा हिन्दी टीका सहित है । तत्वार्थ सूत्र अपूर्ण है ।

१०१८०. गुटका सं० २६ । पत्र सं० १३३ । आ० ७×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी–संस्कृत । ले०काल सं० १९८१ भादवा सुदी ८ पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह हैं ।

१०१८१. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ९५ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८७ जेठ शुक्ला १५ । पूर्ण ।

विशेष—मनसुख सागर विरचित यशोधर चरित है । मूलकर्त्ता वासवसेन हैं ।

७ ८ ८ १
मुनि वसु वसु शसि समय गत विक्रम राज महान् ।
जेष्ट शुकल ए भंत तिथ, पूरण मासी ज्ञान ।।
चित शुघ सागर सुगुरु दीनों रह उपदेश ।
लिखो पढो चित दे सुनो वाढे धर्म विशेष ।।

१०१८२. गुटका सं० २८ । पत्रसं० १८६ । मा० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत
२, तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,
३. जिनसहस्रनाम	जिनसेन	,
४. भैरवाष्टक	—	,,
५. ऋषि मडल स्तोत्र	×	,,
६. पार्श्वनाथ स्तोत्र	×	,,
७ कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी पद्य
८. भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	,,
६. भूपाल चौबीसी भाषा	जगजीवन	,,
१०. विषापहार भाषा	अचलकीर्ति	,,
११. एकीभाव स्तोत्र	भधरदास	,,

१०१८३. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ५० । मा० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

१००८४. गुटका सं० ३०। पत्र सं० ४२ । मा० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६६६ श्रावण शुक्ला १२ । पूर्ण ।

विशेष—भारामल्ल कृत दर्शन कथा है ।

१०१८५. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६३ । मा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल स० १६५३ श्रावण बुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

१००८६. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० १७७ । मा० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एव कथाओं का संग्रह है ।

१०१८७. गुटका सं० ३४ । पत्रसं० ३३ । मा० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १६६६ । पूर्ण ।

विशेष—चर्चाओं का सग्रह है ।

१०१८८. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १३७ । मा० ६½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल स० १७६५ कातिक सुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—उल्लेखनीय पाठ—

१. क्षेत्रपाल पूजा—बुधटोटर। हिन्दी । १-३

२. रोहिणी व्रत कथा-वंशीदास । ,, । ६-१४ ।ले० काल सं० १७६५ ।

विशेष—आचार्य कीर्तिसूरि ने प्रतिलिपि की ।

३. तत्वार्थ सूत्र बाल बोध टीका सहित—× । हिन्दी संस्कृत । २६-६७

४. सहस्रनाम—आशाधर । संस्कृत । ६८-८२

५. देवसिद्ध पूजा × । ,, ८३-११२

६. त्रेपन क्रिया व्रतोद्यापन—विक्रमदेव । संस्कृत ११२-२२

७. पंचमेरु पूजा—महीचन्द । संस्कृत । १२५-१३३

८. रत्नत्रय पूजा × । संस्कृत । १४५-१६६

विशेष—कासम बाजार में प्रतिलिपि हुई ।

१०१८६. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ३२८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

१. नेमिनाथ नव मगल × । हिन्दी

२. रत्नत्रय व्रत कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी

३. षोडश कारण कथा – भैरुदास । ,, र० काल १७६१ । ७४ पद्य हैं ।

४. दशलक्षण कथा—ज्ञानसागर । ,,

५. दशलक्षण रास—विनयकीर्ति । ,, । ३३ पद्य हैं ।

६. पुष्पांजलि व्रत कथा—सेवक । हिन्दी । पत्रसं० ५२-६४

७. अष्टाह्निका कथा-विश्वभूषण । ,, ६४-७८

८. ,, रास—विनयकीर्ति । ,, ७६-८४

६. आकाशपंचमी कथा-धासीदास ,, ८५-१०१ र० काल स० १७६२ आसोज बुदी १२ ।

१० निर्दोष सप्तमी कथा × । ,, १०१-११० । ४२ पद्य है ।

११. निशल्याष्टमी कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी । ११०-१२० । ६४ पद्य है ।

१२. दशमी कथा—ज्ञानसागर । ,, । १२१-१२६ ।

१३. श्रावण द्वादशी कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी । १२६-१३२ ।

१४. अनन्त चतुर्दशी कथा—भैरूदास । ,, १३२-१४१ ।
र० काल सं० १७२७ आसोज सुदी १० ।

विशेष—कवि लालपुर के रहने वाले थे ।

१५. रोहिणी व्रत कथा—हेमराज । हिन्दी । १४१-१५४
र० काल स० १७४२ पौष सुदी १३ ।

१६. रसीव्रत कथा—भ० विश्वभूषण । हिन्दी । १५४-५७ ।

१७. दुधारस कथा—विनयकीर्ति ,, १५७-१५६

१८. ज्येष्ठ जिनवर व्रत कथा—खुशालचन्द । हिन्दी । १५६-१७१ ।

१६. बारहमासा—पांडेजीवन । हिन्दी । २८०-१६० ।
२०. पद संग्रह × । ,, १६१-२१५ ।
२१. शील चूनडी—मुनि गुणचन्द । हिन्दी । २१६-२२५ ।
२२. ज्ञान चूनडी—भगवतीदास ,, २२६-२३० ।
२३. नेमिचन्द्रिका × । ,, २३१-२७८ ।
र०काल सं० १८८० ।
२४ रविव्रत कथा × । ,, २७६-३०८ ।

१०१६०. गुटका सं० ३७ । पत्रसं० ५६ । आ० ६×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित एवं हिन्दी अर्थ सहित है। कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा भी है।

१०१६१. गुटका सं० ३८ । पत्रसं० २४ । आ० ६½×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल पूर्ण ।

विशेष—वृत बध पद्धति है ।

१०१६२. गुटका सं० ३६ । पत्रसं० ३१६ । आ० ४½×४ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८६१ बैशाख सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—नवाबगंज में गोपालचन्द वृन्दावन के पोते सोहनलाल के लडके ने प्रतिलिपि की थी ।

५५ स्तोत्रों का संग्रह है। जिल्द लकड़ी के फ्रेम पर है जिसमें लोहे के बकसुए तथा खटके का ताला है। पुट्ठों में दोनों ओर ही अन्दर की तरफ कांच में जड़े हुए नेमिनाथ एवं पद्मप्रभ के पद्मासन चित्र है। चित्र श्वेताम्बर आम्नाय के हैं। प्रारम्भ के ८ पत्रो मे दोनो ओर मिलाकर ४६ बेलबूटों के सुन्दर चित्र हैं। चित्र भिन्न प्रकार के हैं। इसी तरह अन्तिम पत्रों पर भी पेड़पौधों आदि के १६ सुन्दर चित्र हैं।

१. ऋषिमंडल स्तोत्र—गोतमस्वामी । संस्कृत । पत्र ६ तक
२. पद्मावती स्तोत्र—× । संस्कृत । १८ तक
३. नवकार स्तोत्र—× । ,, २० तक
४. अकलंकाष्टक स्तोत्र—× । ,, २३ तक
५. पद्मावती पटल—× । संस्कृत । २७ तक
६. लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मप्रभदेव , २८ तक
७ पार्श्वनाथ स्तोत्र—राजसेन ,, ३१ तक

मदन मद हर श्री वीरसेनस्य शिष्यं,
सुभग वचन पूरं राजसेन प्रणीतं ।
जयति पठिति नित्यं पार्श्वनाथाष्टकाय,
स भवत सिव सौख्यं मुक्ति श्री शांति बीम ।।
विगत व्रजन यूथं नौम्यहं पार्श्वनाथं ।।

८. भैरव स्तोत्र— × । संस्कृत । ३२ तक । ६ पद्य हैं।
९. वर्द्धमान स्तोत्र— × । हिन्दी । ३४ तक । ८ पद्य हैं।
१०. हनुमत्कवच— × । संस्कृत । ३८ तक ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री सदर्शन सहितायां रामचन्द्र मनोहर सीताया पंचमुखी हनुमत्कवच संपूर्ण ।

११. ज्वालामालिनी स्तोत्र— × । संस्कृत । ४२ तक ।
१२. वीतराग स्तोत्र — पद्मनंदि ,, ४४ तक ।

विशेष—९ पद्य हैं।

१३. सूर्याष्टक स्तोत्र— × । संस्कृत । ४४ पर
१४ परमानन्द स्तोत्र— × । संस्कृत । ४७ तक । २३ पद्य हैं ।
१५. शांतिनाथ स्तोत्र— × । ,, ४९ तक । ९ पद्य हैं।
१६. पार्श्वनाथ स्तोत्र— × । ,, ५३ तक । ३३ ,,
१७. शांतिनाथ स्तोत्र— × । ,, ५५ तक । १८ ,,
१८. पद्मावती दण्डक— × । ,, ५९ तक । ९ ,,
१९ पद्मावती कवच— × । ,, ६१ तक ।
२०. आदिनाथ स्तोत्र— × । हिन्दी ६२ तक ६ पद्य हैं।

प्रारम्भ— ससारसमुद्रं महाकालरूप,
नही वार पारं विकारं विरूपं ।
जरा जाय रोमावली भाव रूप ।
तव नोहि सरणं नमो आदिनाथ ॥

२१. उपसर्गहर स्तोत्र— × । प्राकृत । पत्र ६४ तक ।
२२. चौसठ योगिनी स्तोत्र— × । सस्कृत । ६५
२३. नेमिनाथ स्तोत्र—पं० शालि । ,, । ६७
२४. सरस्वती स्तोत्र — × । हिन्दी । ६९ तक । ९ पद्य हैं।
२५. चिन्तामणि स्तोत्र— × । सस्कृत । ७० तक ।
२६. शांतिनाथ स्तोत्र— × । संस्कृत । पत्र ७१ तक ।
२७. सरस्वती स्तोत्र— × । ,, ७४ तक । १९ पद्य हैं।

विशेष—१६ नामों का उल्लेख है।

२८. सरस्वती स्तोत्र (दूसरा) — × । संस्कृत । ७६ तक । १५ ॥
२९. सरस्वती दिग्विजय स्तोत्र- संस्कृत । ७८ । १३ ॥
३०. निर्वाण काण्ड गाथा— × । प्राकृत । ८२ तक ।
३१. चौबीस तीर्थंकर स्तोत्र- × । संस्कृत । ८३ तक ।

विशेष—अन्तिम

सकल गुण निधानं यंत्रमेनं विसुद्धं
हृदय कमल कोसं धामता धेय रूप ।
जयति तिलक गुरो शूर राजस्य शिष्य
बदत सुख निधानं मोक्ष लक्ष्मी निवास ।।

३२ रावलादेव स्तोत्र—× । हिन्दी । ८४ तक ।

श्री रावलादेव करु जुहारा, स्वामी करु सेवक निज सारा ।
तूं विश्व चिन्तामणि एक देवा, करैं सदा चौसठ इन्द्रसेवा ।।१।।
सेवा करैं लक्षण नाग राजा, सारैं सदा सेवक ना कोई काजा ।
पीडा तणा दुखना मूल तोड़ैं, घटी घटी सकट ली विछोड़ैं ।।२।।
जे ताहरो नाव जगत जाणैं, वलि वलि महिमा ते बखाणैं ।
जो बूडता पोहण माझ ध्यावैं, ते ऊनरी सकट पारी जावैं ।।३।।
जे दुष्टस्यों को तरीपात वाजैं, जे वितरा वितरी दोष दाझैं।
जे प्रेत पीस प्रभु तुझ ध्यावैं । जे ऊनरि सकट पारि नावे ।।४।।
जे काल किकाल ये सांच लीजैं,
जे भूत वैताल पैमाल कीजैं ।
जे डाकणी दुष्ट पडिलाज ध्यावैं,
ते ऊनरि सकट पार जावैं ।।५।।
जे नाग विषं विषझाल मूकैं,
तिण विषं भूमिया झाड सूकैं ।
ते तिणैं डस्या प्रभु तुझ ध्यावैं ,
ते ऊनरि सकट पार जावैं ।।६।।
जे द्रव्य हीणा मुख दीन मासैं,
जे देह खीणा दिनरात खासैं ।
जे अग्नि माझ पडियाज ध्यावैं,
ते ऊनरि सकट पार जावैं ।।७ ।
जे चक्षु पीडा मुख बब फाडैं,
जे रोग रुध्या निज देह ताडैं ।
जे वेदनी कष्टनी कष्ट पडियाज ध्यावैं,
ते ऊनरि सकट पार जावै ।।८।।
जे राज विग्रह पडियात थटैं,
फिरी फिरी पार का देह कूटैं ।
ते लोह वध्या प्रभु तुझ ध्यावै,
ते ऊतरि सकट पार जावै ।।६।।

श्री पाश्वासा हम एक पूरो,
दुःकर्मणा कष्ट समग्र चूरो ।

शुभ कर्मजा सपदा एक आपो,
कृपा करि सेवक मुझ थापो ॥१०॥

इति श्री रावल देव स्तोत्र सपूर्ण ।

३३-सर्वजिन नमस्कार—× । स० । पत्र ६० ।

(सर्व चैत्य वदना)

३४-नेमिनाथ स्तोत्र – × । संस्कृत । पत्र ६१ तक । २० पद्य हैं ।

३५-मुनिसुव्रतनाथ स्तोत्र—× । संस्कृत । ६३ तक ।

३६-नेमिनाथ स्तोत्र—× । सस्कृत । ६६ तक ।

३७-स्वप्नावली—देवनदि । संस्कृत । १०० तक ।

३८-कल्याण मन्दिर स्तोत्र—कुमुदचन्द । संस्कृत । १०० तक ।

३९-विषापहार स्तोत्र—धनजय । संस्कृत । १२१ ।

४०-भूपाल स्तोत्र—भूपालकवि । सस्कृत ।

४१-भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित—× । संस्कृत ।

४२-भगवती आराधना—× । संस्कृत । २८ पद्य हैं ।

४३-स्वयभू स्तोत्र (बडा) समतभद्र । सस्कृत ।

४४-स्वयभूस्तोत्र (लघु)—देवनन्दि । सस्कृत । पत्र १६० तक ।

४५-सामयिक पाठ—× । सस्कृत । पत्र २१७ तक ।

४६-प्रतिक्रमण—× । प्राकृत-सस्कृत । पत्र २४१ तक ।

४७-सहस्रनाम—जिनसेन । सस्कृत । पत्र २६३ तक ।

४८-तत्त्वार्थसूत्र—उमास्वामी । सस्कृत । पत्र २६३ तक ।

४९-श्री सुगुरु चिंतामणि देव—× । हिन्दी । पत्र २८७ ।

५०-चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र—पं० पदार्थ । संस्कृत । पत्र २९ ।

५१-पार्श्वनाथ स्तोत्र—पद्मन दि । संस्कृत । पत्र २९५ ।

५२-पार्श्वनाथ स्तोत्र—× । संस्कृत । २९७ तक ।

५३-ब्रह्मा के ६ लक्षण—× । संस्कृत । २९७ ।

५४-फुटकर श्लोक—× । संस्कृत । २९९ ।

५५-घटाकरण स्तोत्र व मंत्र—× । संस्कृत ।

५६-सिद्धि प्रिय स्तोत्र—देवनंदि । संस्कृत । ३१० ।

५८-लक्ष्मी स्तोत्र—× । संस्कृत । ३१६ ।

१०१९३. गुटका सं० ४० । पत्र स० १४१ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले० काल । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

१०१९४. गुटका सं० ४१ । पत्रस० २२७ । ग्रा० ५×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१-शालिभद्र चौपई—सुमति सागर । हिन्दी । पत्र २८-१४० ।

र०काल स० १६०८ । ले०काल सं० १९१६ चैत बुदी ६ ।

२-राजमती की चूनडी—हेमराज । हिन्दी । १५२-१७३ ।

प्रारम्भ—

श्री जिनवर पद पकजं, सदा नमो धर भाव हो ।
सोरीपुर सुरपति छनौ, ग्रति ही ग्रनुपम ढांम हो ।।

ग्रन्तिम—

काष्ठासंघ सुहावनौ, मथुरा नगर ग्रनुप हो ।
हेमचन्द मुनि जाणये, सब जतीयन सिर भूप जी ।।७६।।

तास पट जसकीर्ति मुनि, काष्ठ संघ सिंगार हो ।
तास शिष्य गुणचन्द्रमुनि, विद्या गुणह भंडार हो ।।७०।।

इहां वदराग हीयडौ धरौ, निसप्रह ग्रोर निरधारे ।
हेम भणं ले जांणीयो ते पावे भवचार हो ।।८।।

इति राजमति की चूनडी संपूर्णम् ।

३. नेमिनाथ का बारह मासा—पांडेजी पत । हिन्दी । पत्र २११-२२५ ।

१०१९५. गुटका सं० ४२ । पत्रसं० १८५ । ग्रा० ४½×३½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल× । पूर्ण ।

विशेष—पद एवं विनती सग्रह है । लिपि ग्रच्छी नहीं है ।

१०१९६ गुटका स० ४३ । पत्रस० ४० । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पार्श्वनाथ स्तोत्र, देवपूजा, बीस विरहमान पूजा, वासुपूज्य पूजा (रामचन्द्र) एवं विषापहार स्तोत्र ग्रादि का संग्रह है ।

१०१९७. गुटका सं० ४४ । पत्रसं० ६२-११७ । ग्रा० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । ग्रपूर्ण ।

१ नेमिनाथ का बारहमासा—पांडेजीवन । हिन्दी । ७४-९६

२, ,, ,, —विनोदीलाल । ,, । ९६-११२

३. पद संग्रह—× । हिन्दी । ११२-११७

१०१९८. गुटका सं० ४५ । पत्रस० ३३ । ग्रा० ८×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

देवसिद्ध पूजा, भक्तामर स्तोत्र, सहस्रनाम (जिनसेन कृत) है ।

१०१६६. गुटका सं० ४६ ।पत्रसं० २६ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा (हेमराज) बाईस परीषह, पद एवं विनती, दर्शनपच्चीसी (बुधजन) समाधिमरण (द्यानतराय), तेरह काठिया (बनारसीदास) सोलह सती (मेघराज), बारहमासा (दौलतराम) चेतनगारी (विनोदीलाल) का संग्रह है।

१०२००. गुटका सं० ४७ । पत्रसं० २४ । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—देवपूजा, निर्वाणकाण्ड, चौबीस दण्डक (दौलतराम) पाठ का संग्रह है ।

१०२०१. गुटका सं० ४८ । पत्रसं० ५६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १८६६ माघ शुक्ला १३ । पूर्ण ।

विशेष—

१. विमलनाथ पूजा, अनन्तनाथ पूजा (ब्रह्म शांतिदास कृत) एवं सरस्वती पूजा जयमाल हिन्दी (ब्रह्म जिनदास कृत) हैं ।

अज्ञानतिमिरहर, सज्ञान गुणाकरं

पढई गुणइ जे भावधरी ।

ब्रह्म जिनदास भाणह, विबुह पयासइ,

मन वंछित फल बुधि घन ॥१३॥

१०२०२. गुटका सं० ४९ । पत्रस० ३६ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १६३२ । पूर्ण ।

विशेष—भगवतीदास कृत चेतनकर्मचरित्र है।

१०२०३. गुटका सं० ५० । पत्रस० ५६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा--संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—देवपूजा, भक्तामर स्तोत्र, पद्मावतीसहस्रनाम धरणेन्द्र पूजा, पद्मावती पूजा, शातिपाठ एवं ऋषि मण्डल स्तोत्र का संग्रह है ।

१०२०४. गुटका सं० ५१ । पत्र स० २-१२४ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १६०२ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष – निम्न पाठों का संग्रह है।

१. श्रीपाल दरस— × । हिन्दी । पत्र १-२ ।

२. निर्वाण काण्ड गाथा— × । प्राकृत । ३-४ ।

३. विषापहार स्तोत्र—हिन्दी पद्य । ५-६ ।

विशेष—१२ से १८ तक पत्र नहीं है ।

४. सीता जी की बीनती— × । हिन्दी । १६-२० ।

५. कलियुग बत्तीसी— × । हिन्दी । २१-२४ ।

६. चौबीस भगवान के पद—हिन्दी । २५-५६ ।

७. नेमिनाथ विनती—धर्मचन्द्र । ६०-६४ ।

८. हितोपदेश के दोहे—× । हिन्दी । ६५-७२ ।

९. अठारह नाता वर्णन—कमलकीर्ति । हिन्दी । ७५-८० ।

१०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न—× । हिन्दी ८०-८२ ।

११. अरहतो के गुण वर्णन—× । हिन्दी । ८३-८४ ।

१२. नेमिनाथ राजमती संवाद—ब्रह्म ज्ञानसागर । हिन्दी । ८७-६४ ।

१३. पच मंगल – रूपचन्द । हिन्दी । ६४-१०४ ।

१४. विनती एव पद संग्रह—× । हिन्दी । १०५-१२४ ।

१०२०५. गुटका सं० ५२ । पत्रस० १२ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—चर्चाओं का संग्रह है ।

१०२०६ गुटका सं० ५३ । पत्रसं० १०१ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल स० १६७१ पौष शुक्ला १५ । पूर्ण ।

विशेष—चम्पाबाई दिल्ली निवासी के पदो का संग्रह है । जिसने अपनी बीमारी की हालत में भी पद रचना की थी और उसमे रोग की शांति हो गई थी । यह संग्रह चम्पाशतक के नाम से प्रकाशित हो चुका है ।

१०२०७. गुटका सं० ५४ । पत्रस० ६६ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

१०२०८. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० १८१ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १६३१ । पूर्ण ।

विशेष—२० पूजाओं का सग्रह है । बडी पचपरमेष्ठी पूजा भी है ।

१०२०९. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १६१ । आ० ५½×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल स० १६१४ श्रावण सुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, श्रावक प्रतिक्रमण, पंच स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

१०२१०. गुटका सं० ५७ । पत्रस० १८३ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १८६७ पौष सुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा-रामचन्द्र कृत हैं ।

१०२११. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ५४ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पद एवं स्तोत्र तथा सामान्य पाठो का संग्रह है ।

१०२१२. गुटका सं० ६० । पत्रसं० ५३-१५३ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल स० १६३७ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. पाशा केवली—× । संस्कृत । १-१७

२. पद संग्रह— × । हिन्दी । १८-४४

३. पांच परवी कथा — ब्रह्म विक्रम ४५-५३

४. चौबीसी तीर्थंकर पूजा—बख्तावरसिंह । १-१५३

१०२१३. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० १६८ । ग्रा० ५½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं अन्य पाठों का संग्रह है ।

१०२१४. गुटका सं० ६२ । पत्रसं० ६० । ग्रा० ५×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८६ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. शालिभद्र चौपई	मतिसागर	हिन्दी	१४४
२. पद	×	हिन्दी	४५-५५
३. गोरावादल कथा	जटमल	,,	५६-६०

र०काल स० १६८० फागुण सुदी १२ । पद्य सं० २२५

विशेष—जोगीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१०२१५. गुटका स० ६३ । पत्र सं० १३६ । ग्रा० ५½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

१०२१६. गुटका सं० ६४ । पत्र स० १०७ । ग्रा० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८७६ आसोज बुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है ।

१. आदित्यवार कथा	भाऊकवि	हिन्दी १-२२
२. मानगीत	×	हिन्दी २७-२६
३. बूढा चरित्र	जतीचन्द	,, ३०-४३

र०काल सवत् १८३६

विशेष—वृद्ध विवाह के विरोध मे है ।

४. शालिभद्र चौपई	मतिसागर	हिन्दी ४४-१०७

१०२१७. गुटका स० ६५ । पत्रस० १६५ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण !

विशेष—पूजायें, स्तोत्र एवं चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) का सग्रह है ।

प्रारम्भ में—पट्लेश्या, आदित्यवार व्रतोद्यापन का मंडल, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा का मडल, कल्याणमन्दिरस्तोत्र की रचना, विषापहार स्तोत्र की रचना, कर्म-दहन मंडल पूजा, एकीभाव रचना, नंदीश्वर द्वीप का मंडल आदि के चित्र है । चित्र सामान्य हैं ।

१०२१८. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ६ । ग्रा० ८½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—जलगालन विधि है ।

१०२१९. गुटका सं० ६७ । पत्रसं० १२ । आ० ८½×७ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १९६४ । पूर्ण ।

विशेष—दौलतराम कृत छहढाला है ।

१०२२०. गुटका सं० ६८ । पत्रसं० ५५ । आ० ८½×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—पद सग्रह है ।

१०२२१. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ४१ । आ० ५½×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं दौलतराम के पद हैं ।

१०२२२. गुटका सं० ७० । पत्रसं० १२ । आ० ८×६ इन्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—बिम्ब निर्माण विधि है ।

१०२२३. गुटका सं० ७१ । पत्रसं० ३५ । आ० ६×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं निर्वाण काण्ड आदि पाठ हैं ।

१०२२४. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० १२ । आ० ६×४ इन्च । भाषा--हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

१०२२५. गुटका सं० ७३ । पत्रस० १४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठ सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान – दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर

१०२२६. गुटका सं० १ । पत्रस० ५० । भाषा–हिन्दी । पूर्ण । वेष्टन स० १०० ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठों का संग्रह है—

जम्बूस्वामी वेलि	वीरचन्द	हिन्दी पद्य
जिनांतररास	,,	,,
चौबीस जिन चौपई	कमलकीर्ति	,,
बिनती	कुमुदचन्द्र	,,
वीर विलास	वीरचन्द	,,
		ले०काल स० (१६८६)
भ्रमर गीत	वीरचन्द	,,
		(र० काल सं० १६०४)
आदीश्वर विवाहलो	,,	हिन्दी पद्य
पागी गालनरो रास	ज्ञानभूषण	,,

रुक्मिणिहरण	रत्नभूषण	हिन्दी
द्वादश भावना	वादिचन्द्र	,,
गौतमस्वामी स्तोत्र	,,	,,
नेमिनाथ समवशरण	,,	,,
फुटकर पद	—	,,

१०२२७. गुटका सं० २ । पत्रसं० ११-७२ । ग्रा० ८½+४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८०६ । अपूर्ण । **वेष्टनसं० ६७** ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

त्रिभुवन वीनती	गगादास	हिन्दी प०
सत्ताण दूहा	वीरचन्द	,,
गिरनार वीनती	—	,,
चैत्यालय वदना	महीचन्द	,,
अष्टकर्म चौपई	रत्नभूषण	,,
		(र० काल सं० १६७७)

इस रचना मे ६२ पद्य हैं।

१०२२८. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ३७-१४६ । ग्रा० १०½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । **वेष्टनसं० ३०** ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का सग्रह है—

१. कक्का बत्तीसी	—	हिन्दी पद्य
		(र० काल स० १७२५)
२. जैनशतक	भूधरदास	,,
३. दृष्टांत पच्चीसी	भगवतीदास	,,
४. मधु बिन्दु चौपई	—	,,
		(र०काल स० १७४०)
५. अष्टोत्तरी शतक	भगवतीदास	,,
६. चौरासी बोल	—	,,
७. सूरत की बारहखडी	सूरत	,,
८. बाईस परीषह कथन	भगवतीदास	,,
९. धर्मपच्चीसी	भगवतीदास	हिन्दी
१०. ब्रह्म विलास	भगवतीदास	एव

बनारसी विलास (बनारसीदास) के अन्य पाठों का सग्रह है।

प्राप्ति स्थान— दि. जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर

१०२२९. गुटका सं० १ । पत्रसं० ६३ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । ले०काल सं० १७१८ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—षट् पाहुड की संस्कृत टीका सहित प्रति है ।

१०२३०. गुटका सं० २ । पत्र स० ४०-८२ । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १६७० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८८ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठो का सग्रह है—

लघु तत्वार्थ सूत्र	—	संस्कृत
दान तपशील भावना	ब्रह्म वामन	हिन्दी
गीत	मतिसागर	,,
ऋषिमंडल स्तवन	—	संस्कृत
सबोध पचासिका	—	,,

गुटका जीर्ण है ।

१०२३१. गुटका सं० ३ । पत्रसं० १८-२९८ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १६४३ आसोज बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ।

विशेष—गुटका बहुत ही महत्वपूर्ण है । इसमें हिन्दी एव संस्कृत की अनेक अज्ञात एव महत्वपूर्ण रचनाएं है । गुटके मे सग्रहीत मुख्य रचनाओं का विवरण निम्न प्रकार है—

स० नामग्रथ	ग्रथकार	पत्र सं० ५६	भाषा	विशेष
१. सीमधर स्तवन	—	९	हिन्दी	पद्य स० ३१
२. स्त्री लक्षण	—	११	,,	—
३. श्री रामचन्द्र स्तवन	—	११		पद्य स० १०
			घसालिखत	
४. बकचूल कथा	—	११–१३		पद्य सं० १०३
५. विषय सूची	—	१६–१७	,,	
६. चौवीसी तीर्थंकर स्तवन	विद्याभूषण	पत्र १७	हिन्दी	

विशेष—वृषभदेव श्री अजित सकल समव अभिनन्दन ।
सुमति पद्म सुपार्श्व श्रीचतुर चन्द प्रभ वंदन ।।

७ जिनमगल	—	१८	सस्कृत
८. मेवाडीना गौत्र	—		हिन्दी
३० गोत्रों का वर्णन है ।			
९. अठारह पुराणो की नामावली	—	,,	,,

विशेष—पुन. पत्र स १ से चालू हैं—

१०. गुरुराशि गत विचार	—	१	संस्कृत (ज्योतिष)

११. निरजनाष्टक	—	१	सस्कृत
१२. पल्यविधान कथा	—	३-४	,, (पद्य गद्य)

विशेष—संवत् १६....वर्षे आचार्य श्री विनयकीर्ति तत्शिष्य ब्र० श्री घन्ना लिखत ।

१३. विनती	ब्र०जिनदास	४	हिन्दी
१४. गुणठाणावेलि	जीवन्धर	४-६	,, पद्य

विशेष—जीवन्धर यशःकीर्ति के शिष्य थे ।

१५. जीवनी आलोचना	—	६	,,
१६. महाव्रतीनि चौमामानुदड	—	६	हिन्दी

विशेष—चतुर्मास में मुनियो के दोषपरिहार विघान है ।

१७. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	शुभचन्द्र	७-११ (ले०काल स० १६११)	संस्कृत

विशेष—चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

प्रशस्ति—सवत् १६११ वर्षे भिरि ग्रामे श्री काष्ठासघे श्री मुनिसुव्रतचैत्यालये आचार्य श्री विजय कीर्ति शिष्ये ब्र० घन्ना केन पठनार्थ ।

१८. नीतिसार	—	११-१३	सस्कृत
१९ सज्जन चित्तवल्लभ	—	१३-१४	,,
२०. साठिसवत्सरी	—	१४-२१	हिन्दी

(ऐतिहासिक विवरण है)

सवत् १६०६ से १६९९ तक की सवत्सरी दी गयी है ।

२१. सवत्सर ६० नाम	—	२१	,,
२२. वर्षनाम	—	२१	संस्कृत
२३. तीस चौबीसी नाम	—	२१-३४	हिन्दी
२४. सक्रातिफल	—	२६	सस्कृत

(श्री विनयकीर्ति ने घन्ना के पठनार्थ लिखा था)

२५. गुरु विरुदावली	विद्याभूषण	२६-२८	सस्कृत
२६. त्रेसठशलाका पुरुष भवावलि	—	२८-३०	हिन्दी
२७. भक्तामर स्तोत्र सटीक	—	३१-३६	संस्कृत
२८. दर्शनप्रतिमा का ब्यौरा	—	३८	हिन्दी
२९. छद संग्रह	गंगादास	३८-३९ (१७ छद हैं ।)	हिन्दी
३०. षट् कर्म छंद	—	३९	,,
३१. आदिनाथ स्तवन	—	३९	संस्कृत
३२. बलभद्र रास	ब्र० यशोधर	४०-४८	हिन्दी

विशेष—स्कंध नगर मे रचना की गयी थी।

३३- बीस तीर्थंकर स्तवन	ज्ञान भूषण	४३	संस्कृत
३४- दिगम्बरों के ४ भेद	—	४३	संस्कृत
३५- व्रतसार	—	४३	संस्कृत
३६. दश धर्म वर्णन	—	४३	,,
३७ श्रेणिक कथा	—	४४-४७	,,
३८- लब्धि विधान कथा	पं० अभ्रदेव	४७-४६	,,
३६. पुष्पांजलि कथा	—	४६-५१	,,
४० जिनरात्रि कथा	—	५१-५२	,,
४१. जिनमुखावलोकन कथा	सकलकीर्ति	५२-५३	,,
४२, एकावली कथा	—	५३-५४	,,
४३. शील कल्याणक व्रत कथा	—	५४-५५	,,
४४. नक्षत्रमाला व्रत कथा	—	५५	,,
४५. व्रत कथा	—	—	,,
६३. विधान करनेकी विधि	—	५५	संस्कृत
६४. अकृत्रिम चैत्यालय विनती	—	७३	संस्कृत
६५- आलोचना विधि	—	७३	,,
६६-७७ भक्तिपाठ संग्रह	—	७६ तक	,,
७८. स्वयंभू स्तोत्र	समतभद्र	८१	,,
७६. तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	८३	,,
८०. लघु तत्वार्थ सूत्र	—	८३	,,

विशेष—सं० १६१६ माह वदि ५ को धन्ना ने प्रतिलिपि की। ५ अध्याय हैं।

८१. प्रतिक्रमण (श्रावक)	—	८४	संस्कृत
८२. लघुआलोचना	—	,,	,,
८३. महाव्रती आलोचना	—	८६	,,
८४. सीखामण रास	—	८७	हिन्दी
८५. जीवन्धर रास	त्रिभुवनकीर्ति	८७-६३	,,

विशेष—र०काल सं० १६०६ है इसकी रचना कल्पवल्ली नगर मे हुई थी।

अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

श्री जीवंधर मुनि तप करी पुहतु शिव पद ठाम
त्रिभुवनकीरति इम वीनवि देयो तम गुण ग्राम ॥८१॥

८६. पाशाकेवली	गर्गमुनि	६३-६५	संस्कृत
८७ यति भावनाष्टक	—	६५	,,
८८, जीरावलि वीनती	—	,,	हिन्दी

क्र. / ग्रंथ	कर्त्ता	पत्र	भाषा / विवरण
८६. कर्मविपाक रास	ब्र० जिणदास	६६	हिन्दी
			(ले०काल सं० १६१६)
९०. नेमिनाथ रास	विद्याभूषण	१००-१०४	हिन्दी

विशेष—देवपल्ली स्थान में विनयकीर्ति के शिष्य धर्मा ने प्रतिलिपि की थी।

क्र. / ग्रंथ	कर्त्ता	पत्र	भाषा / विवरण
९१. श्रावकाचार	प्रतापकीर्ति	१०४-७	हिन्दी
			(र०काल स० १५७५ मगसिर बुदी २)
९२. यशोधर रास	सोमकीर्ति	१०७-१३	हिन्दी
९४. भविष्यदत्त रास	विद्याभूषण	११४-२०	,,
			(र०काल स० १६०० श्रावण सुदी ५)
९५. उपासकाध्ययन	प्रभाचन्द्र	—	संस्कृत
			ले०काल स० १६०० मगसर बुदी ६
९६. सामुद्रिक शास्त्र	—	१२०-१२४	संस्कृत
			ले०काल सं० १६१६ मंगसिर बुदी ११
९७. शालिहोत्र	—	१२४-२५	संस्कृत
९८. सुदर्शनरास	ब्र० जिनदास	१२५-२९	हिन्दी पद्य
			ले०काल सं० १६१६ मगसिर बुदी ४
९९. नागश्रीरास (रात्रि भोजन रास)	,,	१२९-३२	ले०काल स० १६१६ पौष सुदी ३
१००. श्रीपालरास	,,	१३२-३६	,,
१०१. महापुराण विनती	गंगादास	१३७-३९	,,
			ले०काल सं० १६१६ पौष बुदी
१०२, सुकौशल रास	गगुकवि	१३९-४१	,,
१०३. पल्य विचार वार्ता	—	१४१	,,
१०४ पोसानुरास	—	१४३	,,
१०५. चहुंगति चौपई	—	१४३	,,
१०६. पार्श्वनाथ गीत	मुनिलवण्य समय	१४३	,,

राग प्रवरस—

दीनानाथं त्रिजगनाथं दशगणधर रचि साथ।
देहनवहायं पारिश्वनाथं तु तारिभव पाथ रे।।

क्र. / ग्रंथ	कर्त्ता	पत्र	भाषा / विवरण
१०७. ग्यारहप्रतिमा बीनती	ब्र०जिणदास	१४३	हिन्दी
१०८. पानीगालन रास	—	१४४	,,
१०९. आदित्यव्रतरास	—	१४५	,
११०. माखण मूछ कथा	—	१४५-४६	,,
			९४ पद्य हैं
१११. गुणठाणा चौपई	वीरचन्द	१४६	,,

११२. रत्नत्रयगीत — १४६ हिन्दी

जीव रत्नत्रय मन मांहि धरीनि कहि मु चारित्र सार

११४. अंबिकासार ब्र० जिणदास १४८-४८ ,,

१५८ पद्य हैं।

११५. आराधना प्रतिबोध सार सकलकीर्ति १४८-४९ हिन्दी ५५ पद्य

११६. गुणतीसी सीवना — १४९ ,, ३२ पद्य

११७. मिछादोकण (मिथ्यादुकड) ब्र० जिणदास ,, हिन्दी पद्य

लेखन काल स० १६१६ माह सुदी १४

११८. सताण भावना वीरचन्द १५०-५१ हिन्दी ६७ प०

अंतिम पद्य निम्न प्रकार है—

सूरि श्री विद्यानंदि जय श्री मल्लिभूषण मुनिचन्द ।
तस पट महिमानिलु गुर श्रीचन्द लक्ष्मीचन्द ।
तेह कुल कमल दिव संपती जंयति जपि वीरचन्द ।
सुणता भणता ए भावना पामीइ परमानन्द ।।८७।।

११९. नेमिकुमार गीत (हमची नेमनाथ) मुनि लावण्य समय १५१ हिन्दी

र० काल सं० १५६४ ७८ प०

१२०. कलियुग चौपई — १५२ हिन्दी ७७ प०

१२१. कर्मविपाक चौपई — १५२-५३ ,, ६४ प०

१२२. वृहद् गुरावली — १५३ संस्कृत

१२३. ज्योतिष शास्त्र — १५४-५६ ,,

१२४. जम्बूस्वामी रास ब्र०जिणदास १५६-६६ हिन्दी

१००६ पद्य हैं।

१२५. चौबीस अतिशय विनती — १६६-६७ ,, २७ पद्य

१२६. गणधर विनती — १६७ हिन्दी २६ पद्य

१२७. लघु बाहुबलि वेलि शांतिदास १६७ ,,

विशेष—शांतिदास कल्याणकीर्ति के शिष्य थे।

अंतिम पद्य निम्न प्रकार है—

भरत नरेश्वर आवीया नाम्यु निजवर शीस जी ।
स्तवन करी इम जंपए हूँ किंकर तुं ईस जी ।
ईस तुमनि छांडीराज ममनि आपीउ ।
इम कही मन्दिर गया सुन्दर ज्ञान भुवने व्यापीउ ।
श्री कल्याणकीरति सोम मूरति चरण सेव मिनणि कइ ।
शांतिदास स्वामी बाहुबलि सरण राखु पुत्र तम्ह तणी ।

१२८. तीन चौबीसी पूजा	विद्याभूषण	१६८ ७१	संस्कृत
		लेकाल सं० १६१६ ज्येष्ठ बुदी १३	
१२६. पल्य विधान पूजा	"	१७१-७३	संस्कृत
१३०. ऋषिमंडल पूजा	—	१७३-७८	संस्कृत
		लेकाल सं० १६१७ आषाढ सुदी ११	
१३१. वृहद्कलिकुण्ड पूजा	—	१७८-७६	संस्कृत
१३२. कर्मदहन पूजा	शुभचन्द्र	१७६-८४	"
		लेकाल स० १६१७ आषाढ बुदी ७	
१३३ गणधरवलयपूजा	—	१८४-८५	"
१३४. सककलीरण विधान	—	१८५-८६	"
१३५. सहस्रनाम स्तोत्र	जिनसेनाचार्य	१८६-८८	"
		लेकाल सं० १६१७ आषाढ सुदी ११	
१३६. वृहद् स्नपन विधि	—	१८८-६४	संस्कृत
		लेकाल सं० १६१७ सावरण सुदी १०	

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

सवत् १६१७ वर्षे श्रावण सुदी १० गुरौ देवपल्या श्री पार्श्वनाथभुवने श्री काष्ठासघे भट्टारक श्री विद्याभूषण आचार्य श्री ५ विनयकीर्ति तच्छिष्य ब्रह्म धन्ना लिखत पठनार्थं ।

१३७. लघुस्नपन विधि	—	१६४-६६	"
१३८-४१ सामान्य पूजा पाठ	—	१६६-२००	"
१४२. सोलहकारणपाखडी	—	२००	"
१४३-१४७ नित्य नैमित्तिक पूजा	—	२००-५	"
		लेकाल स० १६१७	
१४८. रत्नत्रय विधान	नरेन्द्रसेन	२०५-६	संस्कृत

(बडा अर्घ्य खमावरणी विधि)

इति भट्टारक श्री नरेन्द्रसेन विरचिते रत्नत्रयविधि समाप्त । ब्र० धन्ना केन लिखित ।

१४६. जलयात्रा विधि	—	२०६	संस्कृत
		लेकाल स० १६१७ भादवा बुदी ११	

प्रशस्ति—स० १६१७ वर्षे भादवा बुदी ११ श्री काष्ठासंघे भ० श्री रामसेनान्वये । भट्टारक श्री विश्वसेन तत्पट्टे भट्टारक श्री विद्याभूषण आचार्य श्री विनयकीर्ति तच्छिष्य श्री धन्नाख्येन लिखतं । देवपल्यां श्री पार्श्वनाथ भुवने लिखित ।

१५०. जिनवर स्वामी वीनती	सुमतिकीर्ति	२०६-६	हिन्दी

श्रीमूलसंघ महत संत गुरु श्री लक्ष्मीचन्द ।
वीरचन्द विबुध वंशन्याय भूषण मुनिन्द ।
जिनवर वीनती जे भणि मनिधरी आणंद ।
भगति सुगति मुनिवर ते लहि जिटा परमानंद ।

सुमतिकीर्ति भवि भणि ये ध्यावो जिनवर देव।
संसार माहि नवतयु पाम्यु सिवपरु देव ॥२३॥

इति जिनवर स्वामी विनती समाप्त।

१५१- लक्ष्मी स्तोत्र सटीक	—	२०७-२०८	संस्कृत
१५२. कर्म की १४८ प्रकतियों का वर्णन	—	३०८-१०	हिन्दी
१५३ विनती पार्श्वनाथ	—	२१०-११	,,

पद्य सं० १४

जय जगगुरु देवाधिदेव तु त्रिभुवन तारण।
रोग शोक अपहरणधरि सवि संपद कारण।
रागादिक अंतरंग रिपु तेह निवारण।
तिहुं अण सल्य जे मयण मोह भड देवि भंजण।
चिन्तामणि श्रीयपास जिनवर प्रद्धनवर शृंगार।
मनह मनोरथ पूरणए वाछित फल दातार॥

१५४. विद्युत्प्रभ गीत	×	२११-१२	हिन्दी
१५५. बाईस परीषह वर्णन	—	२१२-१४	संस्कृत

ले०काल सं० १६३२ बैशाख सुदी १०

प्रहलादपुर मे ब्र० धन्ना ने अपने पठनार्थ लिखा था।

१५६. षट्काल भेद वर्णन	—	२१५	संस्कृत
१५७- दुर्गा विचार	—	२१६	,,
१५८. ज्योतिष विचार	—	२१६	,,

विशेष—इसमें वापस विचार, शकुन विचार, पल्ली विचार छीक विचार, स्वप्न विचार, अगफडक विचार, एवं वापस घट विचार आदि दिये हुए हैं।

१५९. अकलंकाष्ठक	—	२१६-१७	संस्कृत
१६०. परमानद स्तोत्र	—	२१७	,,
१६१. ज्ञानांकुश शास्त्र	—	२१७-१८	,,
१६२ श्रुत स्कध शास्त्र	—	२१८-१९	,,
१६३. सप्ततत्व वार्ता	—	२१९-२०	,,
१६४. सिद्धातसार	—	२२०-२२	,,

१६५-६८ कर्मों की १४८ प्रकृतियों का वर्णन
जैन सिद्धांत वर्णन चौबीसी ठाणा
चर्चा, तीर्थंकर आयु वर्णन

२२३-३४ हिन्दी

ले०काल सं० १६१८ आसोज सुदी १

१६९. सुकुमाल स्वामी रास	धर्मरुचि	२५१-६५	हिन्दी

अन्तिमभाग—

वस्तु—

रास मनोहर २ किधु मि सार ।
सुकुमालनु अति रुग्रडु सुणता दुखदालिद्र टालि अति ऊजल ।
भण्यो तह्यो भविजव्यु अनेक कथा इस वर्ण वीलोह जल ।
श्री अभयचन्द्र थुरु प्रणमीनि ब्रह्मधर्म रुचि मणिसार ।
मणि गुणिज सोभलि ते पामि सुख अपार ।

इति श्री सुकुमाल स्वामी रास समाप्त ।

१७०. श्री नेमिनाथ प्रबध	लावण्य समय मुनि	२६५-७०	हिन्दी
१७१. उत्पत्ति गीत	—	२७१	"
१७२- नरसगपुरा गोत्र छद	—	२७१	"
१७३ हनमत रास	ब्र० जिणदास	२७३—२८६	"

अन्तिम पाठ—

वस्तु—रास कहयु २ सार मनोहर महितयुग सार सहोजल ।
हनुमंत वीनु निर्मल अजल ।
भ्राति केडवा अतिघणी भवीयणसुणवासार अजल
श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीनि भवनकीरति भवसार ।
ब्रह्मजिणदास एणी परिभणी पढता पुण्य अपार ।।७२७।।

७२७ पद्य है ।

१७४. जिनराज वीनती	—	२८२	हिन्दी	
१७५. जीरावलदेव वीनती	—	"	"	
		लेoकाल स० १६३६		

सवत् १६२२ वर्षे दोमडी ग्रामे लिखित ।

१७६- नेमिनाथ स्तवन	—	२६१	"	३६ पद्य
१७७ होलीरास	ब्र० जिणदास	२६६	"	
		लेoकाल स० १६२५ चैत सुदी ५		
१७८. सम्यक्त्व रास	ब्र० जिणदास	२६६-२६७	"	
		लेoकाल स० १६२५ पौष सुदी २		
१७९. मुक्तावली गीत	सकलकीर्ति	२६७	हिन्दी	
		लेoकाल स० १६२६ पौष बुदी १३		
१८०. वृषभनाथ छंद	—	२६८	"	
		लेoकाल सं० १६४३ आसोज सुदी ३ ।		

१०२३२. गुटका० सं०४ । पत्रस० १३० । भाषा-हिन्दी । लेoकाल सं० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८६ ।

विशेष—निम्न दो रचनाओं का संग्रह है—

त्रेपनक्रिया विधि—दौलतराम । भाषा-हिन्दी । ।पूर्ण । र०काल स० १७६५ भादवा सुदी १२ । ले० काल सं० १८३३ ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १८३३ वर्षे मासोत्तमासे शुभज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे पांडिवा शुक्रवासरे श्री उदयपुर नगरे मध्ये लिखितं साह मनोहरदास तोलेशलालजी सुत श्री जिनधरमी दौलतराम जी सीष ग्रंथ करता जणारी आज्ञा थकी सरधा आनी तेरेपंथी देवधरम गुरु सरधा शास्त्र प्रमाणे वा ग्रंथ गुरु भक्ति कारक ।

२. श्रीपाल मुनीश्वर चरित	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी
		(ले०काल स० १८३४)

१०२३३ गुटका सं० ५ । पत्रस० १८० । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३८५ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न रचनाओ का संग्रह है—

कवित्त	मानकवि	हिन्दी
ऋषि मडल जाप्य	—	सस्कृत
देव पूजाष्टक	—	"

अन्य साधारण पाठ है ।

१०२३४. गुटका स० ६ । पत्रसं० १६६ । आ० ११×८ इन्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टन स० ३८४ ।

विशेष—निम्न प्रकर सग्रह है—

पूजा पाठ, पद, विनती एव तत्वार्थसूत्र आदि पाठो का सग्रह है ।

बीच बीच मे कई पत्र खाली हैं ।

१०२३५. गुटका सं० ७ । पत्रस० १८५ । आ० ७×४ इन्च । भाषा-सम्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८३ ।

मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

विशेष—सामायिक पाठ, भक्ति पाठ, आराधनासार, पट्टावलि, द्रव्य सग्रह, परमात्म प्रकाश, द्वादशानुप्रेक्षा एव पूजा पाठ सग्रह है ।

१०२३६. गुटका सं० ८ । पत्रस० १४० । आ० ६×४ इन्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८२ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

गुणस्थान चर्चा		प्राकृत
तत्वार्थसूत्र सार्थ	—	हिन्दी (गद्य)
भाव त्रिभंगी	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत
आश्रव त्रिभंगी	—	"
पंचास्तिकाय	—	हिन्दी

हिन्दी गद्य टीका सहितहै

१०२३७. गुटका सं० ६ । पत्रस० २१-१३१ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १७८१ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३८१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का सग्रह है ।

अनन्तनाथव्रत रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
भक्तामर स्तोत्र	आचार्य मानतुंग	सस्कृत
दान चौपई	समय सुन्दर वाचक	हिन्दी
पार्श्वनाथजी छद सबोध	—	,, (ले०काल १७८१)
बाहुबलिनी निषद्या	—	,, (ले०काल १७८१)
रविव्रत कथा	जयकीर्ति	,,
सोलहकारण कथा	ब्र० जिनदास	,,
पाणीगालन रास	ज्ञानभूषण	,,

१०२३८. गुटका सं० १० । पत्रस० ४६-६६ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । ले०काल स० १७८१ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३८० ।

विशेष - निम्न रचनाओं का सग्रह है—

हनुमत कथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	अपूर्ण
जम्बू स्वामी चौपई	पाडे जिनदास	,,	पूर्ण
मगी सवाद	—	,,	अपूर्ण

१०२३९. गुटका सं० ११ । पत्रस० ४२० । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८२० काती सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

अनन्तव्रत कथा	ब्र० जिनदास	हिन्दी	पत्रसं० ६
सोलहकारण रासा	,,	,,	१५
दशलक्षण व्रत कथा	,,	,,	२१
चारुदत्त प्रबंध रास	,,	,,	४५
गुरु जयमाला	,,	,,	५६
पुष्पांजलि पूजा	—	सस्कृत	७६
अनन्त व्रत पूजा	शातिदास	हिन्दी	
पुष्पांजलि रास	ब्र० जिनदास	,,	
महापुराण चौपई	गंगदास	,,	
अकृत्रिम चैत्यालय	लक्ष्मण	,,	

विनती

काष्ठासंघ विख्यात सूरी श्री भूषण शोभताए

चन्द्रकीर्ति सूरि राय तस्य शिष्य लक्ष्मण वीनती करूं ए ।।

लुंकामत निराकरण रास	वीरचन्द	हिन्दी (र०काल सं० १६२७ माघ सुदी ५)	
मायागीत	ब्र० नाराण (बिजयकीर्ति का शिष्य)	हिन्दी	१७७
त्रिलोकसार चौपई	सुमतिकीर्ति	,,	
होली भास	ब्र० जिनदास	,,	

विशेष—१४ पद्य हैं। उदयपुर नगर में प्रतिलिपि की थी।

सिन्दूर प्रकरण भाषा	बनारसीदास	हिन्दी (ले०काल स० १७८५)	

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७८५ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे प्रतिपदातिथौ सोमवासरे पूर्व भाद्रपदनक्षत्रे साका नामि गोत्रे मेवाडदेशे श्री उदयपुरनगरे महाराणा श्री संग्रामसिह जी विजयराज्ये श्री मूलसघे श्री संभवनाथ चैत्यालये म० श्री विजयकीर्ति जी आम्नाये श्री हूमड ज्ञातीय वृद्धि शाखायां सु श्रावक पुन्य प्रभाव श्री देवगुरु भक्ति कारक श्री जिनाज्ञाप्रतिपालक द्वादशव्रतधारक लिखापित वालेसा देवजी तत् सुत एक विंशति गुण विराजमान वाले सा श्री रतन जी पठनार्थं।

सुदर्शन रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी	पत्रस० २४३
रात्रि भोजनरास	,,	— (ले०काल स० १७८७)	२८५
दानकथा रास	—	— कथा लुब्धदत्त साहकी)	२६५
दानकथा रास	—	— साह धनपाल की दान कथा है।	
अकलक यति रास	ब्र० जयकीर्ति	हिन्दी (र०काल स० १६६७)	

कोटा नगर मे रचना की गई थी।

नामावलि छंद	ब्र० कामराज	हिन्दी	
नूर की शकुनावली	नूर	— आंख फडकने संबन्धी विचार	
बारह व्रत गीत	ब्र० जिनदास	हिन्दी	पत्रसं० ३५३
ग्यारह प्रतिमा रास	—	—	
मिथ्या दुकड जयमाल	—	—	
जीवडा गीत	—	—	
दर्शन बीनती	—	—	
भारथी राम जिणंद गीत	—	—	
बणजारा गीत	—	—	३६६

चेतन प्राणी गीत	—	—
काया जीव सुवाद गीत	ब्रह्मदेव	—

श्री मूल संघे गछपति रामकीर्ति भवतार ।
तस पट कमल दिनसपति पद्मनंदि गुणधीर ।
तेहणा चरण कमल नमी गंगदास ब्रह्म पसाये ।
काया जीव सुवादडो देवजी ब्रह्मगुण गाय ।

पोषह रास	ज्ञानभूषण	हिन्दी
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	,,
गोरखकवित्त	गोरखदास	,,
जिनदत्त कथा	रत्न भूषण	,,

संवत् १८२० मे उदयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१०२४०. गुटका सं० १२ । पत्र स० ११० । आ०७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७८ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठो का सग्रह है ।

क्षेत्रपाल पूजा	—	संस्कृत
ऋषिमडल पूजा	—	सस्कृत
मागी तुगीजी की यात्रा	अभयचन्द सूरि	हिन्दी

विशेष —इसमे ४२ पद्य है । अन्तिम पक्तिया निम्न प्रकार है—

भाव मे भवियण साभलोरे भण अभयचन्द सूरी रे ।
जाइ ने वलभद्र जुहारिजो पापु जाइ जिमि दूरि रे ।

योगीरासा	जिनदास	हिन्दी
कलिकुडपार्श्वनाथ स्तुति ।	—	,

१०२४१. गुटका स० १३ । पत्रस० ६० । आ० ५½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी सस्कृत । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३७७ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठो का सग्रह है ।

कलिकुड स्तवन, सोलहकारण पूजा दशलक्षण पूजा, अनन्तव्रत पूजा ।

अन्य पूजा पाठ सग्रह है ।

१०२४२. गुटका स० १४ । पत्रस० २०६ । आ० ६×५ इञ्च । भषा–हिन्दी । ले० काल— × । **पूर्ण** । वेष्टन सं० ३७६ ।

मुख्यत: निम्न पाठो का सग्रह है—

विरह के फुटकर दोहे	लालकवि	हिन्दी

नित्य पूजा हिन्दी

बुधरासा — ,, ले०काल सं० १७३७

प्रारम्भ का पाठ निम्न प्रकार है—

प्रणमीइ देव माय, पांचाइण कमसी ।
समरिए देव सहाय जैन सालग सामणी ।
प्रणमीइ गण हर गोम सामणी ।
दुरियणासे जेने नानि सद्गुरु वेसिणिरो कीजे ।

अन्त में—

सवत् १७३७ मंगसर सुदी ११ सैगडी किलाणजी खीमजी पठनार्थं ।

राजा यशोधर चरित्र— हिन्दी —

काया जीव संवाद गीत हिन्दी देवा ब्रह्म

अंतिम भाग निम्न प्रकार है—

गगदास ब्रह्म पसाये राणी काय जीव सुवादडो ।
देवजी ब्रह्म गुण गाय राणीला ।

इनि काया जीव सुवादजीव संपूर्ण ।

गढी आड का लाल जी कलाणजी स्वलिखिता ।
सवत् १७१२ वर्षे आषाढ बदी ११ गुरौ श्री उज्जेणी नगरे लिखता ।

यशोधररास हिन्दी ब्रह्म जिनदास

श्रेणिकरास ,, ,,

ले०काल सं० १७१३ माघ सुदी ५ ।

विशेष—ग्रहमदाबाद नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

जिनदत्तरास हिन्दी पद्य ।

१०२४३. गुटका सं० १५ । पत्र स० ११० । आ० ८×७ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १७३० । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७२ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है ।

अनन्तव्रत रास	,,	ब्र० जिनदास	हिन्दी	
जिनसहस्रनाम स्तोत्र	,,	आशाधर	सस्कृत	ले०काल सं० १७१६
प्रद्युम्न प्रबध	,,		हिन्दी	

१०२४४. गुटका स० १६ । पत्रसं० ३६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७३ ।

विशेष—नदीश्वर पूजा जयमाल आदि है ।

१०२४५. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८-८४ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३७४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

प्रतिक्रमण पाठ	—	संस्कृत
राजुल पच्चीसी	—	हिन्दी
सामायिक पाठ	—	हिन्दी

१०२४६. गुटका स० १८ । पत्रसं० ५६ । ग्रा० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७५ ।

विशेष—मनोहरदास सोनी कृत धर्म परीक्षा ।

१०२४७. गुटका सं० १९ । पत्रस० ३-५३ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३७: ।

विशेष—पूजा पाठ तथा विनती एव पदो का सग्रह है ।

१०२४८. गुटका सं० २० । पत्रस० ७५ । ग्रा० ८½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६८ ।

विशेष—मुख्यत· निम्न पाठों का सग्रह है ।

भक्तिपाठ	—	संस्कृत
वृहद् स्वयंभू स्तोत्र	—	,,
गुर्वावलि	—	,,
नेमिनाथ की विनती	—	हिन्दी

१०२४९. गुटका सं० २१ । पत्रस० २०७ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६९ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का सग्रह है ।

हनुमतरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
जम्बूस्वामीरास	,,	,,
पोषहरास	ज्ञानभूषण	,,
सबोध सनाणु दूहा	वीरचन्द	,,
नेमकुमार	वीरचन्द	,,
		ले०काल स० १६३८
सुदर्शनरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
धर्मपरीक्षारास	ब्र० जिनदास	,,
		ले०काल सं० १६४४
अजितनाथ रास	,,	हिन्दी

१०२५०. गुटका सं० २२ । पत्र सं० २२८ । ग्रा० ६½×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३६७ ।

विशेष—प्रारम्भ मे पूजा पाठ हैं । तत्पश्चात् जम्बूद्वीप पण्णत्ति दी हुई है । यह तेरह उद्देश तक है ।

१०२५१. गुटका सं० २३ । पत्र स० ६४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एव समाधि मरण का संग्रह है ।

१०२५२. गुटका सं० २४ । पत्रस० ८६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

आदित्यवार कथा	—	भाऊ	हिन्दी
विषापहार भाषा	—	अचलकीर्ति	,,
कल्याण मंदिर भाषा	—	बनारसीदास	,,
सर्वजिनालय पूजा	—	—	संस्कृत

१०२५३. गुटका स० २५ । पत्रसं० १५ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३६५ ।

विशेष—आचार शास्त्र सबधी ११८ गाथाए हैं ।

१०२५४. गुटका सं० २६ । पत्र स० २८-१२३ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८४ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

आदित्यवार कथा	—	भाऊ कवि	हिन्दी
श्रीपाल स्तुति	—	महाराम	ले०काल स० १८१०
भक्तामर भाषा	—	हेमराज	हिन्दी
विनती	—	कनककीर्ति	, ले०काल स० १८०८

१०२५५. गुटका सं० २७ । पत्रस० १० से १८० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८५ ।

१०२५६. गुटका सं० २८ । पत्र स० १४८ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

सामायिक पाठ सटीक………. हिन्दी गद्य । ले०काल स० १८२३

कर्म विपाक भाषा विचार— ढूढारी पद्य । पद्य स० २४०५ हैं ।

सम्यक्त्व कौमुदी—जोधराज गोदीका । हिन्दी गद्य । ले०काल स० १८३२

महाराजा हमीरसिंह के शासन काल मे उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई ।

१०२५७. गुटका सं० २९ । पत्र स० २६६ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८२३ अपूर्ण । वेष्टन स० २८७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नाटक समयसार — बनारसीदास र० काल स० १६९३। हिन्दी
पंचास्तिकाय भाषा — हीरानन्द ,,
भक्तामर भाषा — हेमराज ,,

१०२५८. गुटका ३० । पत्रस० १७६ । आ० १२×९ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८८ ।

रत्नत्रय पूजा — संस्कृत

विशेष—नरेन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

आदित्यवार कथा अर्जुन प्राकृत
कल्याणस्तोत्र वृत्ति विनयचन्द्र सस्कृत ×

१०२५९. गुटका सं० ३१ । पत्र स० ७० । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २८९ ।

१०२६०. गुटका सं० ३२ । पत्र स० ८६ । आ० १२×८इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल स० १७६० । पूर्ण । वेष्टन स० २९० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

सरस्वती स्तवन एवं पूजा—ज्ञानभूषण सस्कृत
मुनीश्वर जयमाल पाण्डे जिनदास हिन्दी
सम्यक्त्वकौमुदी जोधराजगोदिका ,,

१०२६१. गुटका सं० ३३ । पत्र स० ४० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी। **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० २९३ ।

१०२६२. गुटका स० ३४ । पत्र स० १०० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल अपूर्ण । वेष्टनस० २९४ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठो का सग्रह है—

पार्श्वनाथ जी की विनती मुनि जिनहर्ष हिन्दी
योगसार क्षेमचन्द्र ,, ले० काल स० १८२४
आत्मपटल — ,,
जिनसहस्रनाम जिनसेनाचार्य सस्कृत
परमात्मप्रकाश योगीन्द्र देव अपभ्रंश

१०२६३. गुटका सं० ३५ । पत्रसं० ९३ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १६८६ । पूर्ण । वेष्टनसं० २९६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

१०२६४. गुटका सं० ३६ । पत्रसं० ४३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टनसं० २९७ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं सामायिक पाठ ग्रादि का संग्रह है।

१०२६५. गुटका सं० ३७। पत्रसं० १०४। ग्रा० ४½×६½ इन्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २९८।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

१०२६६. गुटका सं० ३८। पत्रसं० १६। ग्रा० ५×४ इन्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २९९।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

१०२६७. गुटका सं० ३९। पत्रसं० ३-२३०। ग्रा० ५½×४ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले०काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टनसं० ३००।

विशेष—बनारसीदासकृत नाटक समयसार है।

१०२६८. गुटका सं० ४०। पत्रसं० ३००। ग्रा० ८½×७ इन्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल स० १६८६ बैशाख बुदी १४। वेष्टनसं० ३३१।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

परमात्म प्रकाश, द्रव्य सग्रह, योगसार, समयसार भाषा (राजमल्ल—ग्रागरा मे स० १६८६ में प्रतिलिपि हुई थी) एव गुणस्थान चर्चा ग्रादि है।

१०२६९. गुटका सं० ४१।

विशेष—

समयसार वृत्ति है। ग्रपूर्ण। वेष्टनसं० ३३२।

१०२७०. गुटका स० ४२। पत्रस० १४०। ग्रा० ४½×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टनस० ३३३।

विशेष—ग्रक्षर घसीट हैं।

१०२७१. गुटका सं० ४३। पत्रस० २५। ग्रा० ६×६ इन्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३४।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

१०२७२. गुटका सं० ४४। पत्रस० २२६। ग्रा० ८×६ इन्च। भाषा—हिन्दी। ले०काल सं १८३३। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३५।

विशेष—निम्न रचनाग्रों का सग्रह है—

समयसार नाटक—बनारसीदास हिन्दी
पोपहराम ज्ञानभूषण ,,

१०२७३. गुटका सं० ४५। पत्रसं० १२०। ग्रा० ५×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३६।

विशेष—बारहखड़ी ग्रादि पाठों का सग्रह है।

१०२७४. गुटका सं० ४६। पत्र सं० ४१। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ३३७।

विशेष—पद एव स्तोत्रों का सग्रह है।

१०२७५. गुटका सं० ४७। पत्रसं० १५५। ग्रा० ५½×३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३८।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

मधु विंदु चौपई	भगवतीदास	हिन्दी (पद्य)
	(र०काल सं० १७४०)	
सिद्ध चतुर्दशी	,,	,,
सम्यक्त्व पच्चीसी	,,	,,
	(ले०काल सं० १८२५)	
ब्रह्मविलास के अन्य पाठ	,,	,,

१०२७६. गुटका सं० ४८। पत्रसं० ३४५। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। ले०काल स० १८१२ बैशाख सुदी १०। पूर्ण। वेष्टनसं० ३३९।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

गुणस्थान एव लोक चर्चा, पचस्तिकाय टव्वा टीका।

तत्वज्ञान तरगणि—ज्ञानभूषण की भी दी हुई है।

उदयपुर नगरे राजाधिराज महाराजा श्रीराजसिहजी विजयते सवत् १८१२ का बैशाख सुदी १०।

१०२७७. गुटका सं० ४९। पत्र सं० ६० । ग्रा० ६×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३४०।

१०२७८. गुटका सं० ५०। पत्र स० ६३। ग्रा० १०×७ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३४१।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एवं सामायिक आदि पाठो का सग्रह है।

१०२७९. गुटका सं० ५१।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

कक्का बत्तीसी	—	हिन्दी	
बणजारो रासो	नागराज	,,	७ पद्य है
पचमगति बेलि	हर्षकीर्ति	,,	
पंचेन्द्रिय बेलि	धेल्ह	,,	

इनके अतिरिक्त पद, विनती एव छोटे मोटे पदो का सग्रह है—

१०२८०. गुटका सं० ५२। पत्रसं० १३४। ग्रा० १०×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३४३।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत

दशलक्षण पूजा	—	संस्कृत
क्षमावणी पूजा	नरेन्द्रसेन	—
पूजा पाठ संग्रह	—	—
वृहद चतुर्विंशति-तीर्थंकर पूजा	—	संस्कृत
चौरासीज्ञाति जयमाल	ब्र० जिनदास	हिन्दी
शील बत्तीसी	अकूमल	हिन्दी
चिंतामणि पार्श्वनाथ	विद्यासागर	,,
वृहद् पूजा	—	—
स्फुट पद	भानुकीर्ति एव महेन्द्रकीर्ति	,,

१०२८१. गुटका सं० ५३ । पत्रस० १५१ । आ० ११×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४४ ।

विशेष—विभिन्न ग्रन्थो के पाठो का संग्रह है ।

१०२८२. गुटका सं० ५४ । पत्र स० ८० । आ० ६×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३४५ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर

१०२८३. गुटका सं० १ । पत्रस० १०० । आ० १०×६ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५३ ।

१०२८४. गुटका सं० २ । पत्रस० × । वेष्टनस० ५५२ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

१. नेमि विवाहलो— × । हिन्दी । पद्य । र०काल स० १६६१ ।

२. चौबीस स्तवन— × । ,, ।

३. त्रेपनक्रिया विनती—ब्रह्मगुलाल । हिन्दी पद्य ।

४. महापुराण की चौपाई—गगदास । हिन्दी पद्य ।

५. चिन्तामणि जयमाल -- × । हिन्दी पद्य ।

१०२८५. गुटका स० ३ । पत्र स० ६२ । आ० ५½×४½ इन्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५१ ।

विशेष—कल्याणमन्दिर स्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र आदि स्तोत्र, मैनासुन्दरी सज्झाय एव पद संग्रह है ।

१०२८६. गुटका सं० ४ । पत्र स० ८० । आ० ४×४ इन्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६६ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खो का संग्रह है ।

१०२८७. गुटका सं० ५ । पत्रसं० ६४ । वेष्टनसं० ६८ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. प्रतिक्रमण सूत्र— × । भाषा—प्राकृत ।

२. स्तुति संग्रह— × । भाषा—हिन्दी ।

३ स्त्री सज्झाय— × । भाषा—हिन्दी ।

१०२८८. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ६३ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८५ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. बारहखड़ी— × । हिन्दी । पत्र १—७

२. बारहमासा— × । हिन्दी ।

३. अनित्य पचाशिका—त्रिभुवनचन्द । हिन्दी ।

४. जैनशतक— × । भूधरदास । हिन्दी ।

५. शनिश्चर देव कथा— × । ,, ।

१०२८९. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ४५ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८८४ ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

१. शिवकवच— × । संस्कृत ।

२. शिवछन्द— × । ,, ।

३. वसुधारा स्तोत्र— × । संस्कृत ।

४. नवग्रह स्तोत्र— × । । ,,

५. सूर्य सहस्रनाम— × । ,,

६. सूर्य कवच— × । ,,

१०२९०. गुटका सं० ८ । पत्रसं० १ । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८० ।

विशेष—नेमिनाथ के नव मंगल हैं ।

१०२९१. गुटका सं० ९ । पत्रसं० १६ । आ० ५½ × ४ इञ्च । भाषा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७९ ।

विशेष—संध्या पाठ आदि हैं ।

१०२९२. गुटका स० १० । पत्रसं० १६० । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७८ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ, स्तवन, चिन्तामणि स्तोत्र, कर्म प्रकृति, जीव समास आदि का वर्णन है ।

स्नेह परिक्रम—नरपति । हिन्दी ।

विशेष—नारी से मोह न करने का उपदेश दिया है ।

नेमीश्वर गीत— × ।

१०२६३. गुटका सं० ११ । पत्रसं० २०० । आ० ६×५ इन्च । भाषा–संस्कृत–प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७७ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. कजिकाव्रतोद्यापन—ललितकीर्ति । संस्कृत ।
२. सप्त भक्ति— × । प्राकृत । मालपुरा नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।
३. स्वयम् स्तोत्र— × । संस्कृत ।
४. तत्वार्थ सूत्र—उमास्वामि । ,,
५. लघुसहस्रनाम — × । ,,
६. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । ,

१०२६४. गुटका सं० १२ । पत्रसं० ४० । आ० ५×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १७८१ । पूर्ण । वेष्टनस० ४७६ ।

विशेष—मत्र शास्त्र, विषापहार स्तोत्र (संस्कृत) तथा यत्र आदि हैं ।

१०२६५. गुटका सं० १३ । पत्रस० १८० । आ० ७×५ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७५ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१- भद्रबाहु गुरु की नामावली— × ।

विशेष—सवत् १५६७ से १६०७ पौष सुदी १५ तक । गोपाचल में प्रतिलिपि हुई थी । भट्टारक पद्मनंदि तक पट्टावली दी है ।

२. गच्छभेद	मूलसघे	सघ ४	गच्छ	१६ भेद नामानि
नदि सघे	नदि १	चन्द्र २	कीर्ति ३	भूषण ४
देवसंघे	देव १	दत्त २	नाग ३	तुग ४
सेनघ सघे	सिंह १	कुंभ २	आसव ३	सागर ४
श्रेणी संघे	सेन १	भद्र	वीर ३	राज ४
श्री नदि सघे	सरस्वतीगच्छे		बलात्कारगणे	
श्री देवसघे	पुस्तकगच्छे		देसीगणे	
श्री सेनसघे	पुष्करगच्छे		सूरस्थगणे	
श्री सिंहसंघे	चन्द्रकपाटगच्छे		कानुरगणे	

३. सामायिक पाठ   ४ भक्तिपाठ   ५ तत्वार्थ सूत्र
६. भक्तामर स्तोत्र   ७ स्तोत्रसग्रह   ८ अदेतान की जयमाल ।
६. सबोध पंचासिका   रइधु ।   अपभ्रंश ।

ले०काल सं० १५६७

प्रशस्ति—संवत् १५६७ वर्षे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे मंगल त्रयोदश्यां सुसनेर नगरे श्री पद्मप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक भुवनकीर्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवास्तद् वृहद् गुरुभ्रातृश्री रत्नकीर्तिस्थविराचार्यदेशातत्शिष्याचार्य श्री देवकीर्तिदेश तत्शिष्याचार्य श्री शीलभूषण तच्छिष्य ब्र० खेमचन्द पठनार्थं स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं परोपकारायग्राचन्द षडावश्यक ग्रंथ स्वहस्तेनालेखि ग्राचार्य श्री गुणचंद्रेयं । शुभ भवतु ब्र० खेमचन्द पण्डित ग्रात्मर्थी कूं षडावश्यक की पोथी दी थी । कल्याणमस्त

संवत् १६६१ वर्षे शाके सागवाडा नगरे ग्रादिनाथ चैत्यालये मंडलाचार्य श्री सकलचन्द्रेण इदं पुस्तकं पण्डित वीरदासेण गृहीतं ॥

१०. जिन सहस्रनाम	×	संस्कृत
११. पद संग्रह	×	हिन्दी
१२. पंच परमेष्ठी गीत	यश.कीर्ति	हिन्दी
१३. नेमिजिन जयमाल	विद्यानन्दि	,,
१४. मिथ्या दुक्कड	ब्र० जिनदास	,,
१५. विनती	×	,,

१०२९६. गुटका सं० १४ । पत्रसं० १०१ । ग्रा० ४×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७४ ।

विशेष—नीति के श्लोक हैं ।

१०२९७. गुटका सं० १५ । पत्र सं० २६ । ग्रा० ४×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७३ × ।

विशेष—विनती एवं पद ग्रादि है ।

१०२९८ गुटका सं० १६ । पत्र सं० १०२ । ग्रा० ५×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० ४७२ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

१. नवमंगल	लालविनोदी	
२. लेश्यावली	हर्षकीर्ति	र०काल सं० १६८३
३. पद संग्रह	बखतराम, भूधर ग्रादि के है ।	

१०२९९. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ५२ । ग्रा० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७१ ।

विशेष—पट्टी पहाडे तथा स्तोत्र एवं मंत्र ग्रादि है ।

१०३००. गुटका सं० १८ । पत्रसं० २३३ । ग्रा० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७० ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

१. क्षेत्रपालाष्टक विद्यासागर

२. गुरु जयमाल जिनदास

३. पट्टावली × ले०काल सं० १७५७

विशेष—ब्रह्म रूपसागर ने बारडोली में प्रतिलिपि की थी।

१०३०१. गुटका सं० १९ । पत्रसं० २४० । ग्रा० ५×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-प्राकृत । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ४६६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ सग्रह है। प्रति प्राचीन है।

१०३०२. गुटका सं० २० । पत्रसं० २२५ । ग्रा० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी। । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६८ ।

विशेष—ग्रायुर्वेद के नुसखों का सग्रह है।

१०३०३. गुटका सं० २१ । पत्रस० ७७ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६७ ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठ हैं—

१. गौतमस्वामी रास विनयप्रभ हिन्दी
र०काल स० १४१२

२. चौबीस दण्डक गजसागर ,,
ले०काल सं० १७६६

३. मुनिमालिका चारित्रसिंह ,,
ले०काल सं० १६३२

ग्रन्तिम—

सवत् सोल बत्तीस ए श्री विमलनाथ सुए साल ।
दीक्षा कल्याणक दिने गूथी श्री मुनिमाल ।।३२।।
श्री रिणीपुरे रलिया मणी श्री शीतल जिणचन्द ।
सूर विजय गर्जे तदा सघ ग्रधिक ग्राणंद ।।३३।।
श्री मतिभद्र सुगुर तणे सु पसाये सुखकार ।
मनुहर श्री मुनिमालिका गण गण परिपल पूर ।।३४।।
महामुनीसर गावता सुर तरु सफल विहाण ।
ग्रष्ट महानिधि घरें फलें सदा सदा कल्याण ।।

इति श्री मुनिमालिका संपूर्ण ।

पद सग्रह विमलगिरि, दुर्गादास ग्रादि के —

१०३०४. गुटका सं० २२ । पत्रसं० १३१ । ग्रा० ५½× ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० सं० ४६६ ।

विशेष—*निम्न पाठों का संग्रह है।*

आरती संग्रह, विजया सेठनी वीनती, सुभद्रा वीनती, रत्नगुरु वीनती, निर्वाण काण्ड भाषा, चन्द्र-गुप्त के सोलह स्वप्न, चौबीस तीर्थंकर वीनती, गर्भबेलि-देवमुरार

नवरेमास गरभ में रह्यो
ते दिन प्राणी विसरि गयो।
देवमुरार जी वीनती कही
आपेन् पाई प्रभु आये लहि ।।७।।

बलभद्र वीनती, जिनराज वीनती, विनती संग्रह आदि हैं।

१०३०५. गुटका सं० २३ । पत्रसं० ११२। आ० × । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६५ ।

विशेष—निम्न लिखित पाठ हैं—

१. पच कल्याणक	रूपचन्द	हिन्दी
२. आदित्यावार कथा	भानुकीर्ति	"
३. अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	"

मत्र तथा यत्र भी दिये हैं।

१०३०६. गुटका सं० २४ । पत्र स० २१ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६४ ।

विशेष—केवल पूजाएं हैं।

१०३०७. गुटका स० २५ । पत्रसं० ८० । आ० ६×५½ इञ्च : भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६३ ।

विशेष —निम्न पाठ है—

१. मडली विचार	×	हिन्दी	ज्योतिष

विशेष—पाचोता मे लिखा गया था।

२. सम्मेद विलास	देवकरण	हिन्दी

अन्तिम—

लोहाचार्य मुनिंद सुधर्म विनीत है।
तिन कृत गाथा बध सुग्रंथ पुनीत है ।।
साह तने अंबुसार सम्मेद विलास जु।
देवकरण विनवैं प्रभु कौ दासजु ।।
श्री जिनवर कूं सीस नमावै सोय ।
धर्म बुद्धि तहा सचरे सिद्ध पदारथ सोय ।

३ जीवदया छद	भूधर	हिन्दी
४. अंतरीक्ष पार्श्वनाथ छद	भाव विजय	"
५. रेखता	माडका	"

६. झूलना	—	हिन्दी
७. छदसार	नारायणदास	"
८. छद	केशवदास	हिन्दी
९. राग रत्नाकर	राधाकृष्ण	हिन्दी
१० ज्ञानार्णव	शुभचन्द	संस्कृत

१०३०८. गुटका सं० २६ । पत्रस० ८५ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६२ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

वृषभनाथ लावणी मयाराम

विशेष—इसमे धूलेव नगर के वृषभनाथ (रिखवदेव) का वर्णन है। धूलेव पर चढाई आदि का वर्णन है।

१०३०९. गुटका सं० २७ । पत्र स० ५० । आ० ५½ × ६ इन्च । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठ है—

१. वृषभदेवनी छद	×	हिन्दी
२. सुभाषित सग्रह	×	संस्कृत
३. शान्तिनाथ की लावणी	×	हिन्दी

१०३१०. गुटका सं० २८ । । भाषा-हिन्दी । ले०कान × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५९ ।

विशेष—पद पूजा पाठ आदि हैं ।

१०३११. गुटका सं० २९ । पत्रसं० ६५ । आ० ६½ × ४½ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५७ ।

विशेष— पद स्तुतियों का सग्रह है ।

१०३१२. गुटका सं० ३० । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५६ ।

विशेष—अभिषेक स्नपन पूजा पाठ एवं मत्र विधि आदि है ।

१०३१३. गुटका सं० ३१ । पत्र स० ५५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५५ ।

विशेष - विभिन्न कवियों के पद, स्तुति गिरधर की कुडलियां, पिंगल विचार तथा स्तुतियां हैं।

१०३१४. गुटका स० ३२ । पत्रसं० ८० । आ० ७ × ६½ इन्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५४ ।

विशेष—आयुर्वेद एवं ज्योतिष सम्बन्धी विवरण है ।

१०३१५. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ६६ । ग्रा० × । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५३ ।

विशेष —निम्न पाठ हैं—

१. त्रिलोकसार चौपई	सुमतिसागर	हिन्दी
२. गीत सलूना	कुमुदचन्द	,,

१०३१६. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० १०० । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २५२ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. पद सग्रह—

२. विनती रिखबदेव जी घुलेव   ब्र० देवचन्द

विशेष—बागड देश मे घुलेव के वृषभदेव (केशरिया जी) की दिगम्बर विनती हैं । मंदिर ५२ शिखर होने का विवरण है । कुल २६ पद्य है ।

ब्र० रामपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३ पच परमेष्ठी स्तुति   ब्र० चन्द्रसागर

अन्तिम—

दिगम्बरी गछ महा सिरणगार ।
सकलकीर्ति गछपति गुणधार
तास शिष्य कहे मधुरी वाणि ।
ब्रह्म चन्द्र सागर वखाण ।।३२।।
नयर सज्यत्रा परसिद्ध जाण ।
सासन देवी देवल मनुहार ।।
भणे गुणे तिहु काल उदार ।
तह घर होसे जय-जयकार ।।३३।।

४. नेमिनाथ लावणी   रामपाल

विशेष—रामपाल ने स्वय अपने हाथ से लिखा था ।

५. चौबीस ठाणाचर्चा	×	हिन्दी
६. औषधियो के नुसखे	×	,,
७. भ्रमर सिज्झाय	×	,,

विशेष—परनारी की प्रीत का वर्णन है ।

१०३१७. गुटका सं० ३५ । पत्रसं० १०० । भाषा-संस्कृत । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४५० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ है—

१. मेघमाला   —   संस्कृत   ले०काल सं० १७२१

प्रशस्ति—संवत् १७२१ वर्षे आसोज सुदी १० सोमे बागीदोरा (बांसवाडा जिला) स्थाने श्री शांतिनाथ चैत्यालये ब्र० श्री गणदास तत् शिष्य ब्र० श्री आख्येन स्वहस्तेन लिखितेयं मेघमाला संपूर्ण ।।

सवत् १११५ से ११६२ तक के फल दिये हैं ।

२. ग्रह नक्षत्र विचार, ताजिक शास्त्र एवं वर्षफल (सरस्वती महादेवी वाक्य) ।

ज्योतिष संबधी गुटका है ।

१०३१८. गुटका सं० ३६ । पत्र स० १५० । आ० ५×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १७१४ व १७२२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६ ।

निम्न उल्लेखनीय पाठ है—

१. पूजा अभिषेक पाठ	×	सस्कृत
२. ऋषिमडल जाप्य विधि	×	सस्कृत

ले० काल सं० १७२२ माघ सुदी १५

प्रशस्ति—१७२२ वर्षे माघ सुदी १५ शुक्रे श्री मूलसंघे आचार्य श्री कल्याणकीर्ति शिष्य ब्र०चारि संघ जिष्णुना लिखित पंडित हरिदास पठनार्थं ।

३. नरेन्द्रकीर्ति गुरु अष्टक	×	सस्कृत
४. जिन सहस्रनाम	×	मस्कृत
५ गणधर वलय	भ० सकलकीर्ति	सस्कृत

ले०काल स० १७३४

प्रशस्ति—सं० १७१४ वर्षे माघ बुदी २ भौमे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री पद्मनंदि तत्पट्टे भ० देवेन्द्रकीर्ति तत् गुरु भ्राता मुनि श्री देवकीर्ति तत् शिष्याचार्य स्त्री कल्याणकीर्ति तत् शिष्य क० चदिसंघि निष्पुणा लिखितं प० अमरसी पठनार्थ ।

६ चार यंत्र हैं— जलमडल, अग्निमंडल, नाभिमडल वायुमडल ।

७. पट्टावलि	हिन्दी	भट्टारक पट्टावलि दी हुई है ।
८. सरस्वती स्तुति	आशाधर	सस्कृत

१०३१९. गुटका सं० ३७ । पत्रस० ५४ । आ० ७×७ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४८ ।

विशेष—औषधियो के नुसखे, यंत्र मंत्र तंत्र आदि, सूर्य पताका यंत्र, चौसठ योगिनी यंत्र लावणी-जसकति ।

अन्तिम-- कोट अपराध में कीना तारा क्षमा करो जिनवर स्वामी ।
तीन लोक नाइक साहिब सर्व जीव अन्तर जामी ।।
जसकीर्ति की अरज सुनीले राखो सेवक तुम पाइ ।
दीनदयाल कृपा निधि सागर आदिनाथ प्रभु सुखदायी ।।

१०३२०. गुटका सं० ३८ । पत्रसं० ३२२ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ४४७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. सूक्ति मुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	सुभाषित
२. सुभाषितावली	×	,,
३. सारोद्धार	—	,,
४. भर्तृहरि शतक	भर्तृहरि	,,
५. विष्णुकुमार कथा	×	,,
६. सुकुमाल कथा	×	
७. सागरचक्रवर्ति की कथा	×	,,
८. सोह स्तोत्र	×	,,

१०३२१. गुटका सं० ३६ । पत्रसं० १८१ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४५ ।

विशेष—गुटका महत्वपूर्ण है । वाजीकरण औषधियां, यत्र मंत्र तंत्र, रासायनिक विधि, अनेक रोगो की औषधिया दी हुई है । प० श्यामलाल को पुस्तक है ।

१०३२२. गुटका सं० ४० । पत्र सं० १४८ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४१ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न है—

१. महावीर वीनती—प्रभाचन्द्र । हिन्दी ।

अन्तिम—डाकिनी साकिनि भूत बैताल

बाघ सिंघ ते नडे विकराल
तुझ नाम ध्याता दयाल ॥२८॥
जग मगलकारी जिनेन्द्र ।
प्रभाचन्द्र वादिचन्द्र जोगिन्द्र ॥
स्तव विक्रम देवेन्द्र ॥२६॥

२. पार्श्वनाथ वीनती—वादिचन्द्र । हिन्दी । र०काल सं० १६४८ ।
३. सामायिक टीका—× । सस्कृत ।
४. लघु सामायिक—× । संस्कृत ।
५. शांतिनाथ स्तोत्र—मेरुचन्द्र । सस्कृत ।

अन्तिम -

व्यापारे नगरे रम्ये शांतिनाथजिनालये ।
रचितं मेरुचन्द्रेण पठंतु सुधियो जनाः ॥

६. वासुपूज्य स्तोत्र—मेरुचन्द्र । संस्कृत ।
७. तत्वार्थसूत्र—उमास्वामी । ,,
८. ऋषि मंडल पूजा—× । ,,
९. चैत्यालय वदना—महीचन्द । हिन्दी ।

अन्तिम – मूलसघे गछपति वीरचन्द्र पट्टे ज्ञानभूषण मुनींद ।
प्रभाचन्द्र तस पटे हुसे, उदयो धन्य ते हुँवड वशे ।
तेह पट्टे जेणे प्रकट ज करो
श्री वादिचन्द्र जगमोर अवतरयो ।
तेह पट्टे सूरि श्री महीचन्द्र,
जेह दीठे होय आनन्द ।
चैत्याला भणसि नर नार,
तेह घट होसि जयजयकार । संपूर्णं ।
लिखितं ब्र० मेघसागर सं० १७२४ आसोज सुदी १ ।

१०३२३. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० १६७ । आ० ६ × ६ इंच भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२२ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—
१. पंचाख्यान कथा—× । हिन्दी ।

विशेष—हितोपदेश की कथा है । मंढा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।
२. चदनमलयागिरि कथा—भद्रसेन । हिन्दी ।

विशेष—मारोठ मे आचार्य सकलकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।
३. चतुर मुकुट और चन्द्र किरण की कथा—× । हिन्दी ।

विशेष—३२७ पद्य हैं । रचनाकार का नाम नहीं दिया हुआ है ।

१०३२४. गुटका स० ४२ । पत्र सं० २१० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन मं० ४४३ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है । मुख्य पाठ निम्न हैं—
भक्तामर भाषा—हेमराज ।

छप्पय—

सोरठ देश मझार गाम नदीवर जाणो ।
मूलसंघ महंत तिजग मांहि बखाणो ।।
सीत रोग सरीर तहां आचारिय निपनो ।
लेह गया समसान काष्ट मो मलो निपनो ।।
संवत् १८ सौ तले त्रेपन गुरु वसना लोपी करि ।
सोम श्री ब्रह्म वाणी वंदे चमरी पीछी कर धरी ।।

२. यशोधर चरित्र—खुशालचंद ।

१०३२५. गुटका सं० ४३। पत्रसं० ७६। आ० ८×५½ इन्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४४४।

विशेष—नित्य तथा नैमित्तिक पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि हैं।

१०३२६. गुटका सं० ४४। पत्रसं० ४५। आ० ५½×६½ इंच। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४३३-१६३।

विशेष—पूजा एवं अन्य पाठों का सग्रह है।

१०३२७. गुटका सं० ४५। पत्र सं० ६६। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४३२-१६३।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. पद्मावती गायत्री	संस्कृत	पत्र २१
२. पद्मावती सहस्रनाम	,,	पत्र २३
३. पद्मावती कवच	,,	पत्र २८
४. घण्टा कर्ण मंत्र	,,	पत्र ३२
५. हनुमत्त कवच	,,	पत्र ३२
६ मोहनी मंत्र	,,	पत्र ३८

१०३२८. गुटका सं० ४६। पत्र सं०२२१। आ० ५×५½ इन्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल स० १८६५। पूर्ण। वेष्टन स० ४३१-१६३।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ है—

१ आदित्य व्रत कथा—पाडे जिनदास।	हिन्दी	पत्र १३७
२ ,, ब्र० महतिसागर	,,	पत्र १४४
३. अनन्तकथा—जिनसागर।	,,	पत्र १७५

सामायिक पाठ, भक्तामर स्तोत्र एव पूजा पाठों का सग्रह है।

१०३२९. गुटका सं० ४७। पत्र सं० १७८। आ० ७×७ इन्च। भाषा-संस्कृत-प्राकृत। ले०काल स० १८११। पूर्ण। वेष्टनस० ४२६-१६२।

विशेष—लघु एव वृहद् प्रतिक्रमण पाठ, काष्ठासघ पट्टावलि आदि पाठ है।

१०३३०. गुटका सं० ४८। पत्र स० १८५। भाषा-सस्कृत। ले० काल सं० १८८२। पूर्ण। वेष्टन स० ४२६-१६०।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. क्षेत्रपाल स्तोत्र—मुनि शोभाचन्द	हिन्दी	पत्र ३
२. स्नपन	,,	पत्र ६
३. पूजा सग्रह एवं जिन सहस्रनाम	संस्कृत।	पत्र ५२
४. पुष्पांजलि व्रत कथा—ब्र० जिनदास।	हिन्दी	पत्र ५८
५. सोलहकारण व्रत कथा	,,	पत्र ६३

६. दशलक्षण व्रत कथा—	—	हिन्दी	पत्र ६८
७. अनन्तव्रत रास	—	"	पत्र ७४
८. रात्रि भोजन वर्णन	ब्र० वीर	"	पत्र ७६

विशेष—श्री मूल संघे मंडणो जयो सरसीत गच्छराय।
रतनचन्द पाटे हवो ब्रह्मवीर जी गुणगाय ।।

९. बाहुबलि नो छन्द—वादीचन्द्र।	हिन्दी।	पत्र ८४

विशेष—तम पाय लागे प्रभासचन्द।
वाणि बोल्ये वादिचन्द्र ।।५८।।

१०. पारसनाथ नो छन्द—×।	हिन्दी।	पत्र ८७
११. नेमि राजुल संवाद—कल्याणकीर्ति। हिन्दी		पत्र ९३

१०३३१. गुटका सं० ४९। पत्र सं० ३४। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४२५-१६०।

विशेष—तीन लोक एवं गुणस्थान वर्णन हैं।

१०३३२. गुटका सं ५०। पत्र सं० १२। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४२३-१५६।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. भट्टारक परम्परा २ बघेरवाल छंद

१०३३३. गुटका सं० ५१। पत्रसं० ५४। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ४१४-१५४।

विशेष—पहिले पद संग्रह है तथा पश्चात् भट्टारक पट्टावलि है।

१०३३४. गुटका सं० ५२। पत्र सं० ४०३। भाषा-सम्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०७ १५३।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

१०३३५. गुटका सं० ५३। पत्र सं० १८६। आ० ३½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३८४-१४३।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. आदित्यवार कथा	वादिचन्द्र सूरि के शिष्य महीचन्द	पत्र १४७ तक
२. आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	पत्र १५० ,,
३. आदित्यवारनी वेल कथा	—	१८४ ,,

१११ पद्य हैं।

१०३३६. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ४० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ३६७-१४० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा, स्तोत्र एवं आराधना प्रतिबोधसार है ।

१०३३७. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० ४६४। आ० ८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५६-१३८ ।

विशेष—विभिन्न प्रकार की १०५ पूजा एव स्तोत्रों का संग्रह है । गुटके में सूची दी हुई है ।

१०३३८. गुटका सं० ५६ । पत्र स० १०० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५५-१३७ ।

मुख्य निम्न पाठ है—

१. गुणस्थान चर्चा	×	हिन्दी	पत्र १-६६ पर
२ त्रैलोक्यसार	×	,,	६७-९६ ,,
३. महापुराण विनती	गगादास	,,	

१०३३९. गुटका सं० ५७ । पत्रसं० ५९४ । आ० ९×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५२-१३८ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१ भक्तिपाठ	×	प्राकृत-संस्कृत	
२. स्वयभू स्तोत्र	समतभद्र	,,	
३. भक्तामर स्तोत्र (समस्या पूर्ति)	भुवनकीर्ति	,,	४९ पद्य हैं ।
४. ,, (द्वितीय स्तोत्र)	×	,,	
५. पच स्तोत्र	×	,,	
६. महिम्न स्तोत्र	पुष्पदत	,,	
७. सकलीकरण मत्र	×	,,	
८. सरस्वती स्तोत्र	×	,,	१६० पत्र पर
९. अन्नपूर्णा स्तोत्र	×	,,	१६१ पत्र
१०. चक्रेश्वरी स्तोत्र	×	,,	१६२ ,,
११. इन्द्राक्षी स्तोत्र	×	,,	१६६ ,,
१२. ज्वालामालिनी स्तोत्र	×	,,	१६८ ,,
१३. पचमुखी हनुमान कवच	×	,,	१७१ ,,
१४. शनिश्चर स्तोत्र	×	संस्कृत	१८७ पत्र पर
१५. पार्श्वनाथ पूजा	×	,,	१९२ ,,
१६. पद्मावती कवच एवं सहस्रनाम	×	,,	२१४ ,,
१७. पार्श्वनाथ आरति	×	हिन्दी	
१८. भैरव सहस्रनाम पूजा	×	संस्कृत	२३३ ,,

१६. भैरव मानभद्र पूजा एवं स्तोत्र	शान्तिदास	,,	२४६ ,,
२०. नवग्रह पूजा	×	,,	२५४ ,,
२१. क्षेत्रपाल पूजा	×	संस्कृत	२६१ ,,
२२. गुरावलि	×	संस्कृत गद्य	२६७
२३. जिनाभिषेक विधान	सुमतिसागर	,,	२७४
२४. सप्तर्षि पूजा	सोमदेव	संस्कृत	२८० ,,
२५. पुण्याहवाचन	×	,,	२८२ ,,
२६. देवसिद्ध पूजा	आशाधर	,,	२८६ ,,
२७. विद्यादेवतार्चन	×	,,	३०७ ,,
२८. चतुर्विंशति पद्मावती स्थापित पूजा		,,	३३४ ,,
२९. जिनसहस्रनाम	जिनसेन	,,	३४३ ,,
३०. विभिन्न पूजा स्तोत्र	×	,,	३७४ ,,
३१. छप्पय	जिनसागर	हिन्दी	३७६ ,,
३२. चौबीसी	रत्नचन्द र० काल सं० १६७६	,	३८२ ,,
३३. लवांकुशषटपद	भ० महीचन्द	,,	३६४ ,,
३४. रविव्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	४१० ,,
३५. पञ्चकल्याण	×	,,	४२०
३६. अनन्त व्रत कथा	×	हिन्दी	४३१ पत्र पर
३७. अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ स्तवन	×	,,	४६१ ,,
३८. माझ्या झूलना	×	,,	४७०
३९. कवित्त	सुन्दरदास	,,	४८०
४०. भवबोध	×		
४१. भगवद् गीता	×		४६६-५६५

१०३४०. गुटका सं० ५८। पत्रसं० ३७७। आ० ४×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३५१-१३३।

विशेष— पूजा स्तोत्र पद एवं अन्य पाठों का संग्रह है। गुटके में पूरी सूची दी हुई है।

१०३४१. गुटका सं० ५९। वेष्टनसं० ३५०-१३२।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. रत्नत्रय विधान—	काष्ठासंघी भ० नरेन्द्रसेन।	संस्कृत।
२. वृहद्स्नपन विधि—	×	,,
३. गुरु अष्टक —	श्रीभूषण	,,
४. कर्मदहनपूजा —	शुभचन्द्र	,,
५. जलयात्रा विधि —	×	,

६. पल्य विधान — × सस्कृत

७. जिनदत्तरास — × „

शंक संवत् १६२५ सर्वगति नाम संवत्सरे आषाढ सुदी ८ गुरुवारे लिखितं कारंजामाहिनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री छत्रसेन गुरूपदेशात् लिखित बाया बाइन लेहविल ।

८. लघुस्नपन विधि— ब्र० ज्ञानसागर । सस्कृत ।

१०३४२. गुटका सं० ६० । पत्र सं० × । वेष्टन स० ३३४-१२८ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. दानशीलतप भावना	—	श्री भूषण	हिन्दी पद्य	ले० काल १७६५
२. आषाढ भूतनी चौपई	—	×	„	—
३. वैद्यक ग्र थ	—	नयनमुख	„	ले० काल १८१४
४. सुकौशल रास	—	×	„	—
५. प्रद्युम्नरास	—	×	„	—

प्रशस्ति—संवत् १८१४ वर्षे शाके १६७९ प्रवर्तमाने मासोत्तम मासे शुभकारीमासे आश्विनमासे शुक्लपक्षे तिथि ५ चद्रवारे श्रीमत् काष्ठासघे नन्दितटगच्छे विद्यागणे भ० श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्री सुमतिकीर्ति जी तत्पट्टे आ० श्री रूपसेन जी तत्पट्टे आ० विनयकीर्ति जी तत् शिष्य श्री विजयसागर जी प० केशव जी पडित नाथ जी लिखित ।

१०३४३. गुटका स० ६१ । पत्र सं० १६६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६०-११४ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. श्रेणिक चरित्र	—	डूगा वैद	र० काल स० १६६६ भादवा बदी १३
२. जैसोधर चौपई	—	लक्ष्मीदास	
३. सम्यक्त्व कौमुदी	—	जोधराज	
४. जम्बूस्वामी चोपई	—	पाडे जिनदास	र० काल स० १६४२
५. प्रद्युम्न कथा	—	ब्र० वेणीदास	,
६. नागश्री कथा	—	किशनसिंह	ले० काल स० १८१६

विशेष—अहिपुर में प्रतिलिपि हुई ।

१०३४४. गुटका सं० ६२ । पत्रसं० ३२१ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० २७६–१०८ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१-विनती एवं भावनाएं—× । हिन्दी

२-पच मगल—रूपचन्द—× । „

३-सिंदूर प्रकरण—बनारसीदास । हिन्दी

५-भक्तिबोध—दासदंत । गुजराती

६-लघु आदित्यवार कथा—भानुकीर्ति । हिन्दी

७-आदित्यवार कथा—भाऊ हिन्दी ।

८-जखडी—रामकृष्ण । हिन्दी ।

९-जखडी—भूधरदास । हिन्दी ।

१०-ऋषभदेवगीत—रामकृष्ण । हिन्दी ।

११-बनारसी विलास—बनारसीदास । हिन्दी ।

१२-बलिभद्र विनती—× । हिन्दी ।

१३-छन्द—नारायनदास । हिन्दी ।

१०३४५. गुटका सं० ६३ । पत्र स० ३५ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । **वेष्टन सं०** २७५-१०७ ।

विशेष—देव, बिहारी, केशव आदि की रचनाओं का संग्रह है । गुटका बडा है बारहमासा सुन्दर कवि का भी है ।

१०३४६. गुटका सं० ६४ । पत्र स० ४६ । आ० ९×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २२०-८७ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१-अनुरुद्ध हरण	—	जयसागर ।
२-श्रीपाल दर्शन	—	× ।
३-पद्मावती छद	—	× ।
४-सरस्वती पूजा	—	× ।

१३४७. गुटका सं० ६५ । पत्र स० फुटकर । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० २१३-८६ ।

विशेष—सप्तव्यसन चौपई,आदित्यवार कथा आदि हैं ।

१०३४८. गुटका सं० ६६ । पत्रस० ९२ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५ इन्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८०-७५ ।

विशेष—लघु चाणक्य एवं आदिनाथ स्तवन और धर्मसार हिन्दी में है ।

१०३४९. गुटका सं० ६७ । पत्र स० १०४ । आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६-७२ ।

विशेष – निम्न ग्रंथ हैं—

१-भाषा भूषण—जसवंत सिंह । २०८ पद्य है ।

२-सुन्दर शृंगार-महाकविराज ।

३-विहारी सतसई —विहारीलाल । ले० काल सं० १८२८ ।

४-मधुमालती कथा—चतुर्भुजदास । ८७७ छन्द हैं ।

१०३५०. गुटका सं० ६८ । पत्रसं० २१५ । आ० ८×५३/४ इन्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं० १८८६ । वैशाख बदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४२-६४ ।

विशेष—इसी वेष्टनसं० पर एक गुटका और है ।

१०३५१. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० १४२ । आ० ६१/२×६ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं० १८७० । पूर्ण । वेष्टनसं० १४१-६४ ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

१-नैमित्तिक पूजायें ।

२-मानतुंग मानवती—मोहन विजय । हिन्दी ।

३-साड समछरी—× । सं० १८०१ से १८६८ तक का वर्णन है ।

४-अनत व्रत रास—जिनसेन ।

१०३५२. गुटका सं० ७० । पत्र स० फुटकर पत्र । आ० ७१/२×५१/२ इन्च । भाषा-संस्कृत । हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ११२-५४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

१०३५३. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० १०० । आ० ६×४१/२ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२-४२ ।

विशेष—भक्तिपाठ के अतिरिक्त मुख्य निम्न पाठ हैं—

१. आदित्यवार कथा—महीचन्द । हिन्दी । पत्र ७८

महिमा आदित्य व्रत तणोए हवै जगत विख्यात ।
जे कर सी नर नारी एह ते पाये सुख भन्डार ।
मूल सघ महिमा उत्तंग सूरि वादी चंद्र ।
गछ नायक तम पटेघर कहे श्री महीचन्द्र ।

२ महापुराण विनती—गंगदास । हिन्दी पत्र ६२ ।

१०३५४. गुटका सं० ७२ । पत्रसं० १६६ । आ० ६×५१/२ इन्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७-४१ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओ का संग्रह है ।

१०३५५. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० १३८ । आ० ६१/२×५ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८-६ ।

विशेष—पूजा पाठ एव स्तोत्र संग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर

१०३५६. गुटका सं० १ । पत्रसं० २२३ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८३ ।

विशेष—अश्वचिकित्सा सम्बन्धी पूर्ण विवरण है ।

१०३५७. गुटका सं० २ । पत्र स० ७२ । ग्रा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० ४४१ ।**

विशेष—पूजा पाठ तथा विरुदावली है ।

१०३५८. गुटका सं० ३ । पत्रसं० ६० । ग्रा० ६×६ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ४४० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

१०३५९. गुटका स० ४ । पत्र स० ७-१२२ । ग्रा० ५×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७३ ।

विशेष—कबीरदास के पदो का संग्रह है ।

१०३६०. गुटका स० ५ । पत्रस० ३० । ग्रा० ६×४ इन्च । भाषा—प्राकृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३२६ ।

विशेष—सुभाषित तथा गोम्मटसार चर्चा सग्रह है ।

१०३६१. गुटका सं० ६ । पत्रस० २-२३ । ग्रा० ६×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल× । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५१-६४० ।

विशेष—वैद्य रसायन ग्रंथ है ।

१०३६२. गुटका सं० ७ । पत्र स० ४६ । ग्रा० ५×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

अनत पूजा	ब्र० शातिदास	हिन्दी	—
अनतव्रतरास	ब्र० जिरणदास	,,	—

प्रति प्राचीन है ।

१०३६३. गुटका सं० ८ । पत्रस० ११३ । ग्रा० ८½×५ इच । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

चरचा बासठ	बुधलाल	हिन्दी	स्तवन

विशेष—चौबीस तीर्थकरो के पचकल्याणक तिथि, महिमा वर्णन, शरीर की ऊचाई वर्णन, शरीर का रग तथा तीर्थकरो के शासन व उपदेश निरूपण का वर्णन है ।

अन्तिम भाग—

अन्त एकादश पूरव चौदह और प्रज्ञापति पंच बखाणें ।
चूर्नीका पच है प्रथमानुयोग सुभ सिद्धान्त सु एकही जानौ ।।
प्रकीर्णक चौदह कहे जगदीस सर्वं मिलि सूत्र एकावत मानो ।
ए जिन भाषित सूत्र प्रमाण कहे बुधलाल सदाचित आनो ।।६२।।

दोहा

देव शास्त्र गुरु नमी करी ए जिनगुण पुण्य महान ।
मुझ बुधि सूत्रे करी माल गूंथि सुखदान ॥१॥
भविजन पावे पहरज्यों एक अपूरव हार ।
यशःकीर्ति गुरुनाम करि कहे लाल सुखकार ॥२॥
सवत् ओगसि दश साल में सुद फागुणना सुभमास ।
दशमिदिन पूरण भया चरचा बासठ भास ॥३॥
पढे सुणे जे भावथी भविजन को सुख करणं ।
लाल कहे मुझ भव भव द्यो प्रभु हो जो तुम चरण ॥४॥

इति चरचा बासठि सपूर्णं ।

२. सार सग्रह		सस्कृत		पूर्णं
३ शान्तिहोम विधान	—	उपाध्याय व्योमरस	संस्कृत	—
अन्तिम पुष्पिका	—	इति श्री उपाध्याय वोमरस विरचिते शांति होम विधान समाप्तं		
४. मगलाष्टक	—	भ० यश कीर्ति	सस्कृत	—
५. वृषभदेव लावणी	—	लाल	हिन्दी	—

(भट्टारक यश कीर्ति के शिष्य लाल)

गुजरात देश मे चोरीवाड नामक स्थान के आदिनाथ की लावणी है ।
उनकी प्रतिष्ठा का संवत् निम्न प्रकार है—

सवत् उणो सा साता वरषे वैशाख माम शुक्लपक्षे ।
षष्ठदिन सिगासण जिनकी प्रतिष्ठा कीधी मनहरषे ॥

इसके अतिरिक्त नित्यनैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

चित्र व यंत्र

यंत्र कागज व कपड़े पर

१०३६४. १-हाथी के चित्र में यंत्र—

विशेष—यह चित्र कागज पर है किन्तु कपडे पर चिपका हुआ है। यह १५ वी शताब्दी की कला का द्योतक है। हाथी काफी बडा है। उस पर देव (इंद्र) बैठा है। सामने बच्चे को गोद में लिये हुए एक देवी है संभव है इन्द्राणी हो। ऐसा लगता है कि भगवान के जन्मोत्सव का हो। चित्र में लोगों की पगडियां उदयपुरी हैं।

१०३६५. २-पंच हनुमान वीर—

विशेष—कपडे पर (२०×२० इंच) हाथी, घोड़े तथा हनुमानजी का चित्र है।

१०३६६. ३-श्रुत ज्ञान यंत्र—

विशेष—भट्टारक हेमचन्द्र का बनाया हुआ यह यंत्र कपड़े पर है। इसका आकार ३६×४४ इञ्च है।

१०३६७. ४-काल यंत्र—

विशेष—यह उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल चक्र का यत्र कपडे पर है। इसका आकार २२×२२ है। इस पर स० १७४७ का निम्न लेख है—

सवत् १७४७ भादवा सुदी १५ लिखतं तेजपाल संघई अगरवाला गर्गगोति बांचै ज्यानै म्हा को श्री जिनाय नमः।

१०३६८. ५—तीन लोक चित्र—

विशेष—यह यत्र ४०×२२ इंच के आकार वाले कपडे पर है। यह काफी प्राचीन प्रतीत होता है। इसमे स्वर्ग, नरक तथा मध्यलोक का सचित्र वर्णन है। सभी चित्र १५ वीं या १६ वी शताब्दी के हैं।

१०३६९. ६-शांतिनाथ यंत्र—

विशेष—१२×१२ इच के आकार वाले कपड़े पर यह यत्र है।

१०३७०. ७-अढाई द्वीप मंडल रचना—

विशेष—यह ३६×३६ इंच आकार वाले कपडे पर है। इसमें तीर्थंकरों तथा देवदेवियों आदि के सैकड़ों चित्र है। चित्र १६ वी शताब्दी की कला के द्योतक हैं तथा श्वेताम्बर परंपरा के पोषक है।

१०३७१. ८-नेमीश्वर बारात तथा सम्मेदशिखर चित्र—

विशेष—यह ७२×३६ इंच के आकार के कपडे पर है। इसमे गिरनार तथा सम्मेदाचल तीर्थ वहां के मदिरों तथा यात्रियो आदि के चित्र हैं। चित्र-कला प्राचीन है।

प्राप्ति स्थान—(संभवनाथ मंदिर उदयपुर)

अवशिष्ट रचनायें

१०३७२. अठारह नाता का गीत—शुभचन्द्र। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इन्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३१८। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

१०३७३. अथर्वणवेद प्रकरण—×। पत्र सं० ५६। आ० १०½×४½ इन्च। भाषा–संस्कृत। विषय–वैदिक साहित्य। र०काल ×। ले०काल स० १८४४ भादवा बुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—आचार्य विजयकीर्ति ने नन्दग्राम में प्रतिलिपि की थी।

१०३७४. अनाश्रव कर्मनुपादान—×। पत्रस० २। आ० ११×४ इन्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५७। **प्राप्ति स्थान**—खंडेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर।

१०३७५. आदीश्वर फाग—भट्टारक ज्ञानभूषण। पत्र सं० ३६। आ० १०½×४½ इन्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। विषय–फागु काव्य। र०काल ×। ले० काल सं० १५८७ आषाढ़ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—भ० शुभचन्द्र के शिष्य विद्यासागर के पठनार्थ लिखा गया था।

१०३७६. आत्मावलोकन स्तोत्र—दीपचन्द्र। पत्र सं० ६६। आ० ११×६½ इन्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय-अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल सं० १८६०। पूर्ण। वेष्टन सं० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा।

विशेष—इसका दूसरा नाम दर्पण दर्शन भी दिया है। श्री हनूलाल तेरहपंथी ने माधोपुर निवासी ब्राह्मण भोपत से प्रतिलिपि करवाकर दौसा के मन्दिर में रखी थी।

१०३७७. आदिनाथ देशनाद्वार—×। पत्र स० ५। आ० १०×४ इन्च। भाषा–प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४१४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—भगवान आदिनाथ के उपदेशों का सार है।

१०३७८. इष्टोपदेश—पूज्यपाद। पत्र सं० ४। आ० १०×५ इन्च। भाषा–संस्कृत। विषय अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल स० १६४७। पूर्ण। वेष्टन सं० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

१०३७९. उज्झर भाष्य—जयन्त भट्ट। पत्र सं० ३६। आ० ×। भाषा संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—इति श्री मज्जयन्त भट्ट विरचिते वादि घटमुभर वृदन्त समाप्तमिति।

१०३८०. उपदेश रत्नमाला—सकलभूषण । पत्रसं० ११७ । ग्रा० ११½×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल-स० १६२७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

१०३८१. उपदेश रत्नमाला—धर्मदास गरिण । पत्र स० १३ । ग्रा० १०×४½ इन्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३३ । **प्राप्ति—स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०३८२. प्रतिसं० २ । पत्रस० २ से २३ । ग्रा० १०×४½ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रथम पत्र नही है ।

१०३८३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २३ । ग्रा० ११¾×४¾इन्च । ले०काल सं० १५६७ ग्राषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रादिनाथ मन्दिर बूंदी ।

विशेष—योगिनीपुर (दिल्ली) मे लिखा गया था ।

१०३८४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १० । ग्रा० ६½×४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रादिनाथ मन्दिर बूंदी ।

१०३८५. उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला भाषा—भागचन्द । पत्रसं० ४० । ग्रा० ११×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सुभाषित । र०काल स० १६१४ माघ बुदी १३ । ले०काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—म्होरीलाल भौंसा ने चोरू मे प्रतिलिपि की थी ।

र० काल निम्न प्रकार ग्रोर मिलता है ।

दि० जैन तेरहपथी मन्दिर जयपुर स० १६१२ ।

दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा सं० १६२२ ग्राषाढ बुदी ६ ।

१०३८६. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २६ । ग्रा० १२×७½ इन्च । ले० काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

१०३८७. उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला—× । पत्रस० ४० । ग्रा० १२×५½ इन्च । भाषा हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

१०३८८. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६१/१८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर ग्रलवर ।

१०३८९. ऋषिपंचमी उद्यापन-× । पत्र स० १० । ग्रा० १०½×४½ इन्च । भाषा संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०३६०. कृष्ण युधिष्ठिर संवाद— × । पत्र स० १६ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–वार्ता (कथा) । र०काल × । ले०काल स० १७८४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—चि० सदासुख ने प्रतिलिपि की थी । पत्र दीमकों ने खा रखा है ।

१०३६१. कृष्ण रुक्मणि वेलि—पृथ्वीराज (कल्याणमल के पुत्र) । पत्रसं० २-१६ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—पद्य सं० ३०८ हैं ।

१०३६२. प्रतिसं० २ । पत्र सं० २३ । ग्रा० १०×४ इञ्च । ले०काल म० १७३४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—श्री रग विमल शिशुदान मिल लिखतं सं० १७३४ ई टडिया मध्ये ।

१०३६३. कर्णामृत पुराण-भट्टारक विजयकीर्ति । पत्र स० ४१ । ग्रा० १२×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र०काल म० १८२६ काती बुदी १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन म० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—भगवान ग्रादिनाथ के पूर्व भवो की कई कथाएं दी हैं ।

१०३६४. कलजुगरास—ठक्कुरसी कवि । पत्र सं० २१ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय–विविध । र०काल स० १८०८ । ले० काल स० १८३६ द्वि ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन म० १७/११ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष—ग्रन्थ का ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

वीतराग जति नमुं बंदु गुर के पाय ।
मनिष जन्म वहु दोहिला गुरू भाख्यो चितलाय ।
साध ऋषि स्वर ग्रागं भाषिया कलजुग एसा ग्रावं ।
साध ऋषिस्वर साच तो बोलिया ठाकुरसी ऋषि गावं ।
प्राणी कुडाररे कलजुग ग्राया ।।
नग्र देखियो गाव सरीखा उजर बास बसाया ।
राज हुग्रा वाजम सारिखा भजा तो दुख पाया रे ।।३।।

ग्रन्तिम—

सवत् ग्रठारसं ग्राठ बरसं जुजु वारसंहर भन्का रे ।
तिथ बारस मगलवार सावण सुद जग सार रे ।
प्राणी कुडार के कलजुग ग्राया ।।
पाखडि की बहुत जो पूजा साध देख दुख पावं ।
ठाकुरमी ऋषि साची भाखे चतुर नार चित ग्रावं ।।३।।

१०३९५. कलियुग की विनती—देवा ब्रह्म। पत्र सं० ६। आ० ५×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-विविध। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर)।

१०३९६. कल्पद्रुम कलिका-×। पत्रसं० १८०। भाषा-संस्कृत। विषय-विविध। र० काल ले० काल सं० १८८२। पूर्ण। वेष्टनसं० ७४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१०३९७. कल्पसूत्र बखाण.......................। पत्र सं० १५७। भाषा-हिन्दी। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ६१८, ६१९, ६२०, ७४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर।

विशेष—कल्पसूत्र चतुर्थ, पंचम एवं सप्तम   २ वेष्टनों में है।

१०३९८. कल्याणमाला—पं० आशाधर। पत्रस० ४। आ० ११½×५ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—विविध। र० काल—×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४२-१५८। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टोंक।

विशेष—तीर्थंकरों के कल्याणक की तिथियां दी हुई हैं।

१०३९९. कंवरपाल बत्तीसी—कंवरपाल। पत्र सं० ५। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० २६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

१०४००. कविकाव्य नाम—×। पत्र सं० ३-१४। आ० १२×४ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय—स्तुति। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २१५/६५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर।

१०४०१. कविकाव्य नाम गर्भचक्रवृत्त—×। पत्र स० १६। आ० १२×५ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय—स्तुति। र० काल ×। ले० काल स० १६६८। पूर्ण। वेष्टन सं० १५५/२४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर।

विशेष—कुल ११६ श्लोक हैं। प्रति सस्कृत टीका सहित है। ११६ श्लोको के आगे लिखा है—कवि काव्य नाम गर्भ चक्र वृत्तं। ७ चक्र नीचे दिये हुए हैं। टीका के अंत मे निम्न प्रशस्ति है—

सवत् १६६८ वर्षे ज्येष्ट सुदी २ शनौ जिनशतका स्यालकृते स्वज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं पडित सहस्र वीराख्येण स्वहस्ताभ्यालिखिता।

टीका का नाम जिनशतका स्यालवृति है।

१०४०२. कवि रहस्य-हलायुध। पत्रसं० ४। आ० ११½×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

१०४०३. कार्तिक महात्म्य—×। पत्रसं० ३७। आ० १०×५½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-वैदिक साहित्य। र० काल—×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० २२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—३७ से आगे पत्र नही हैं।

१०४०४. काली तत्व—× । पत्रसं० ८१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं यंत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०४०५. क्षेत्र गणित टीका—× । पत्रसं० १८ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—गणित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अंत में निम्न प्रकार लिखा है—

"इति उत्तर क्षेत्री टीका संपूर्ण"

१०४०६. क्षेत्र गणित टीका—× । पत्र सं० २१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—गणित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम उत्तर छत्तीसी टीका भी है । भट्टारक श्री विजयकीर्ति जित् ब्रह्म नारायण दत्तमुत्तरछत्तीसी टीका ।

१०४०७. क्षेत्र गणित व्यवहार फल सहित—× । पत्र सं० १४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—गणित शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति रेखा चित्रों सहित है ।

१०४०८. क्षीरार्णव—विश्वकर्मा । पत्रसं० ४१ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—शिल्प शास्त्र । र०काल—× । ले०काल सं० १६५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४-२ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष—इति श्री विश्वकर्माकृते क्षीरार्णवे नारद पृच्छते शतगुण एकोनविंशोऽध्याय ।। १६।। संपूर्ण । सवत् १६५३ वर्षे कार्तिक सुदी ११ रवौ लिखितं दशोश ब्राह्मण ज्ञाति व्यास पुरुषोत्तमेन हस्ताक्षरं नग्र डूंगरपुर मध्ये शुभ भवतु ।

१०४०९. खण्ड प्रशस्ति—× । पत्रसं० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०४१०. खंड प्रशस्ति श्लोक—× । पत्रसं० २-४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० २५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

१०४११. गंगाड प्रायश्चित—× । पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

१०४१२. **गणितनाममाला—हरिदत्त। (श्रीपति के पुत्र)**— पत्र सं० ५। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—गणित। र० काल ×। ले० काल सं० १७३४। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

प्रारम्भ—

गणितस्य नाममाला वक्ष्ये गुरु प्रसादतः

बालानां सुखबोधाय हरिदत्तो द्विजाग्रणी।

अन्तिम—

श्री श्रीपतिसुतेनैते बालाना बुद्धिवृद्धये।

गणितस्य नाममाला प्रोक्तं गुरुप्रसादतः।

१०४१३. **गणितनाममाला**—×। पत्र सं० १०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—गणित शास्त्र। र० काल ×। ले०काल स० १६०८ मंगसिर सुदी १। पूर्ण। वेष्टन सं० १४०६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

१०४१४. **गणितनाममाला**—×। पत्र सं० ३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—गणित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०१७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१०४१५. **गणित शास्त्र**—×। पत्र सं० २६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। र०काल ×। ले०काल सं० १५५०। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर।

विशेष—संवत् १५५० वर्षे श्रावण बुदी ३ गुरौ अद्येह कोट नगरे वास्तव्य मन्त्रा देवा सुत कान्हादे भ्रातृणां पठनार्थं लिखितमया।

निमित्त शास्त्र भी है। अंत में है—

इति गणित शास्त्रे शोर छाया नलहण समाप्त।

१०४१६. **गणित शास्त्र**—×। पत्र सं० फुटकर। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—गणित। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

१०४१७. **गणितसार—हेमराज**। पत्र सं० ५। आ० ११⅞×४¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—गणित। र० काल ×। ले०काल स० १७८४ जेठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन सं० १६२। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

१०४१८. **गणितसार संग्रह—महावीराचार्य**। पत्र स० ५३। आ० ११×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। र०काल ×। ले०काल सं० १७०५ श्रावण सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ×। **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

१०४१९. **प्रति सं० २**। पत्र स० ३६। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का डूंगरपुर।

१०४२०. गाथा लक्षण × । पत्रसं० १-८ । आ० १२×४½ । भाषा-प्राकृत । विषय-लक्षण ग्रंथ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत टीका सहित है ।

१०४२१. गोत्रिरात्रव्रतोद्यापन— × । पत्र सं० ७ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४२२. ग्रहणराहुप्रकरण— × । पत्र सं० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४२३. चन्द्रोमीलन—मधुसूदन । पत्र स० ३२ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम शिष्य निर्णय प्रकरण तथा शिष्य परीक्षा प्रकरण भी है । चन्द्रोन्मीलन जैन ग्रंथ से उद्धृत है । प्रारम्भ मे चन्द्रप्रभ भगवान एव सरस्वती को नमस्कार किया है ।

अन्तिम—

लग्यपादमहाज्ञान स्वयं जैनेन्द्रभाषितं ।
चन्द्रोन्मीलनक शास्त्र तस्म मध्यान्मयो घृतं ।।
रुद्रेण भाषित पूर्व ब्राह्मणा मधु सूदने ।
न च दृष्ट मया ज्ञान भाषित च अतोकसा १० ।
एतत् ज्ञान महाज्ञान सर्व ज्ञानेषु चोत्तम ।
गोपितव्य प्रजन्तेन त्रिदशौ रपि दुर्लभ ।।

इति चन्द्रोन्मीलने शास्त्रार्णव विनर्गतिप शिष्य निर्णय प्रकरण ।
प्रस्तुत ग्रंथ मे शिष्य किसे, कब और कैसे बनाया जाय इसका पूर्ण विवरण है ।
प्रति प्रचीन है ।

१०४२४. चरणव्यूह—वेदव्यास । पत्रस० ४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४२५. चेतन कर्म संवाद—भैया भगवतीदास । पत्रसं० २१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रूपक काव्य । र०काल स० १७३२ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

१०४२६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५९ । ले०काल स० १९३९ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

१०४२७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ५६ । ले०काल सं० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा ।

१०४२८. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १६ । आ० १३½×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१०४२९. चेतनगारी—विनोदीलाल । पत्रसं० १५ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल स० १७४३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

१०४३०. चेतन गीत—× । पत्रसं० १ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २११-८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१०४३१. चेतन पुद्गल धमाल—बूचराज । पत्र सं० १८ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—रूपककाल । र०काल × । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८८६ । प्राप्ति-प्राप्ति—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—आ० भानुकीर्ति के शिष्य मु० विजयकीर्ति ने लिखा था ।

गुटके में संग्रहित है ।

१०४३२. चेतन मोहराज संवाद—खेमसागर । पत्र सं० ४६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—रूपक कथा र०काल × । ले०काल सं० १७३७ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—भीलोडा नगर मे शातिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई ।

१०४३३. चौढाल्यो—मृगु प्रोहित । पत्र सं० ३ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—स्फुट । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दबलाना बूंदी ।

१०४३४. चौदह विद्यानाम × । पत्र स० १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षण ग्रन्थ । ले०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—चौदह विद्याओं का नाम कवित्त दोहा तथा गोरोचन छन्द (कल्प) दिया हुआ है ।

१०४३५. चौबीस तीर्थंकर पूजा—वृन्दावन । पत्र सं० ८५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । ले०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५३-६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटड़ियो का डूंगरपुर ।

१०४३६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६५ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२४-६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१०४३७. छेदपिंड—पत्रस० ४ । आ० १३×३ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । ले०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० ७० । प्राप्ति स्थान—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर

१०४३८. जम्बूद्वीप पट— X । पत्रसं० १ । आ० X । **वेष्टनसं० २७४-१०६ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर डूंगरपुर ।

विशेष—जंबूद्वीप का नक्शा है ।

१०४३९. जिनगुण विलास—नथमल । पत्र सं० ६१ । आ० ७½×१०½ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तवन । र०काल स० १८२२ आषाढ बुदी १० । ले० काल सं० १८२२ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० २९/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मंदिर करौली ।

विशेष—५२ पत्र से भक्तामर स्तोत्र हिन्दी में है ।

साह श्री खुशालचन्द के पुत्र रतनचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४४०. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५६ । आ० १२½×६ इन्च । **ले०काल** सं० १८२३ काती सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—सवाई राम पाटनी ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१०४४१. **प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ६५ । आ० १३×५¾ इन्च । **ले०काल** सं० १८२३ भादवा बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—नौनिधिराम ने आसाराम के पास प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०४४२. **प्रतिसं० ४** । पत्र सं० ८६ । आ० ८¾×६ इन्च । ले०काल सं० १८२२ भादवा सुदी १२ । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर करौली ।

विशेष—दोदराज ने करौली नगर मे लिखवाया था ।

१०४४३. **जिनप्रतिमास्वरूप वर्णन—छीतर काला** । पत्रसं० ३८ । आ० १२½×७ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लक्षण । र०काल सं० १९२४ बैशाख सुदी ३ । ले०काल सं० १९४५ बैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—छीतर काला अजमेर के रहने वाले थे । आजीविका वश इन्दौर आये वही १९२५ मे ग्रंथ को पूर्ण किया ।

> सहर वास अजमेर मे तहां एक सरावग जान ।
> नाम तास छीतर कहे गोत्र ज कालो मान ।
> कोई दिन वहां सुख सो रह्यो फेर कोई कारण पाय ।
> नमत काम आजीविका सहर इन्दौर में आय ।
>
> X X X

अन्तिम—

> नगर सहर इन्दौर में सुद्धि सहसि होय ।
> तहा जिन मन्दिर के विर्षं पूरों कीनो सोय ।

सं० १९२३ मावन सुदी १५ को इन्दौर आये । और सं० १९२४ में ग्रंथ रचना प्रारम्भ कर सं० १९२५ बैशाख सुदी ३ को समाप्त किया ।

छोगालाल लुहाडिया आकोदा बालों ने इन्दौर में प्रतिलिपि की थी ।

१०४४४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ४६ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल सं० १९६० । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

१०४४५. जिनबिम्बनिर्माण विधि—× । पत्र सं० ५७ । आ० ६½×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—बिंब निर्माण शिल्प शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—गुटका साइज है ।

१०४४६. जिनबिम्ब निर्माण विधि—× । पत्रसं० ११ । आ० १३×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—शिल्प शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १९४५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

१०४४७. जिनबिम्ब निर्माण विधि—× । पत्रसं० १० । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—शिल्प शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २०-१६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर भादवा ।

१०४४८. जिनशतिका—× । पत्रसं० १६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षण ग्रंथ । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—अंत मे इति श्री जिनशतिकाया हस्त वर्णन द्वितीय परिछेद चूर्ण ।।२।।

१०४४९. जीभदांत-नासिका-नयनकर्णसंवाद—नारायण मुनि । पत्रसं० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—संवाद । र०काल × । ले० काल सं० १७८१ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१०४५०. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

१०४५१. ज्ञानभास्कर—× । पत्र सं० २९ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-वैदिक शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १६८५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—इति श्री ज्ञानभास्करे कर्मविपाके सूर्यारुणसंवादे कालनिर्णयो नाम प्रथम प्रकरण । सं० १६८५ वर्षे चैत सुदी ७ सोमे महेश्वेण लेखि ।

१०४५२. ज्ञानस्वरोदय—चरनदास । पत्रसं० ४३ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-उपदेश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूंदी) ।

१०४५३. ढाढ़सी गाथा-× । पत्रसं० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल १८२१, भादवा बुदी ११ । वेष्टनसं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

विशेष—पं० सुखराम के लिये लिखा था ।

१०४५४. णमोकार महात्म्य—× । पत्र स० ५ । आ० ८३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनसं० ४२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०४५५. तत्वज्ञान तरंगिणी—ज्ञानभूषण । पत्रस० ८३ । आ० १२३/४×६३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल स० १५६० । ले० काल स० १८४६ आसोज बुदी १ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अन्त मे निम्न प्रकार लिखा है—

भागचन्द सोनी की बीदणी के असाध्य समय चढाया । १६८५ चैत बुदी १२ ।

१०४५६. तत्वसार—देवसेन । पत्र सं० १२ । आ० १०१/२×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । **विषय**-सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

१०४५७. तत्वार्थ सूत्र-उमास्वामि । पत्र सं० १३ । आ० ६१/२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल सं० १६६५ । वेष्टनसं० ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०४५८. तत्वार्थ सूत्र भाषा-पं० सदासुख कासलीवाल । पत्रसं० १७७ । आ० १०१/२×५१/२ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी-गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र०काल स० १९१० फागुण बुदी १० । ले०काल स० १९५२ । अपूर्ण । वेष्टनसं० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

१०४५९. तम्बाखू सज्झाय-आणंद ऋषि । पत्रसं० १ । आ० ६१/२×४३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प०) । । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

१०४६०. तोस चौबीसी पूजा—सूर्यमल । पत्रस० १६ । आ० १११/२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य ।विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २७१-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

१०४६१. दण्डिवर्णिया—× । पत्रसं० ६ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६२. दस अंगों की नामावली—× । पत्रसं० ६ । आ० ६१/२×४१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आगम । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४६३. दशचिन्तामणि प्रकरण—× । पत्र सं० ११ । भाषा-प्राकृत । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२३ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६४. दश प्रकार ब्राह्मण विचार × । पत्रसं० १ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ८२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४६५. दातासूम संवाद × । पत्रसं० २१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संवाद । र०काल × । ले०काल स० १६४८ आषाढ़ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—जीर्ण एवं फटा हुआ है ।

१०४६६. दिसानुवाई— × । पत्रसं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१४ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—ठाणांग सूत्र के आधार पर है ।

१०४६७. दिसानुवाई— × । पत्रस० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-फुटकर । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

१०४६८. दुरियरय समीर स्तोत्र वृत्ति—समय सुन्दर उपाध्याय । पत्र सं० १४ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल १८७६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६९. देवागम स्तोत्र—समंतभद्राचार्य । पत्र सं० ५ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र एव दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२८-४३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१०४७०. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम आप्तमीमासा भी है । प्रति प्राचीन है ।

१०४७१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५-२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा) ।

१०४७२. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ (कोटा) ।

१०४७३. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ५ । आ० १०¾×५½ इञ्च । ले०काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

१०४७४. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ८ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१०४७५. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ५ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१०४७६. देवागम स्तोत्र वृत्ति—आचार्य वसुनंदि । पत्रसं० ४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०४७७. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २५ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल सं० १८५३ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—जयपुर मे सवाई राम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४७८. द्वादशनाम—शंकराचार्य । पत्रसं० ५ । आ० ८×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र० काल × । ले०कालसं० १८३४ सावरण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा ।

१०४७९. द्वासप्तति कला काव्य —× । पत्रसं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षण ग्रंथ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण वेष्टन सं० ६३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पुरुष की ७२ कला एवं स्त्री की चौसठ कलाओं का नाम है ।

१०४८० धर्मपाप संवाद—विजयकीर्ति । पत्रसं० ५६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल स० १८२७ मगसिर सुदी १४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४८१ धर्म प्रवृत्ति (पाशुपत सूत्राणि) नारायण—× । पत्रसं० १२३ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४८२. धर्मयुधिष्ठिर संवाद—× । पत्रसं० १४ । आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–महाभारत (इतिहास) । र० काल × । ले०काल सं० १७६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—महाभारते शत सहस्रगीतायां । अश्वमेध यज्ञ धर्मयुधिष्ठर संवादे ।।

१०४८३. धातु परीक्षा—× । पत्रसं० १३ । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण ग्रंथ । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४८४. ध्रुव चरित्र—× । पत्रसं० ४६ । आ० ५$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसमें २०० पद्य हैं ।

१०४८५. नलोदय काव्य—× । पत्रसं० २० । आ० १०½ × ४½ । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल सं० १७१६ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—नलदमयती कथा है ।

१०४८६. नवपद फेरी—× । पत्रसं० ६ । भाषा-संस्कृत । विषय विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४८७. नवरत्न कवित्त—× । पत्रसं० १ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४८८. नवरत्न काव्य:—× । पत्रसं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४८९. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९०. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०४९१. नारचन्द्र ज्योतिष ग्रंथ—नारचन्द्र । पत्रसं० २४ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं १७८६ माह बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर (बसवा)

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है । केलवा नगर मे मुनि सोभाग्यमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४९२. नारदीय पुराण—× । पत्रसं० ३० । आ० ६½×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक-साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१०४९३. नित्य पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रसं० १६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

१०४९४. निर्वाण काण्ड भाषा—भैया भगवतीदास । पत्रसं० ४ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन, इतिहास । र०काल सं० १७४१ । ले०काल सं० १९५० पोष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई है । मुंशी रसिकलालजी ने लिखवाकर प्रति विराजमान की थी ।

१०४९५. निर्वाण काण्ड गाथा—× । पत्रसं० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल सं० १९६२ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २-३ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९९. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० २५ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०५००. नेमिराजमती शतक—लावण्य समय । पत्रस० ४ । भाषा-हिन्दी । विषय-फुटकर । र०काल सं० १५६४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५/६४१ ।

विशेष – अन्तिम भाग निम्न प्रकार है –

> हम वीर हम वीर इम चलइउ रासी
> मुनि लावण्य समय इमावलि हमवि हर्ष इवासी रे ।।
> संवत् पनरचउसठि इरे गायउ नामिकुमार ।
> मुनि लावण्य समइ इमा बालिइ वरतिउ जय जयकार ।

इति श्री नेमिनाथ राजमती शतक समाप्त ।

१०५०१. नेमिराजुल बारहमासा—विनोदीलाल । पत्रस० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-वियोग शृंगार । र०काल × । **ले०काल ×** । पूर्ण । वेष्टन स० ६४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष – नेमिनाथ द्वारा तोरण द्वार से मुंह मोड़कर चले जाने एवं दीक्षा धारण कर लेने पर राजुलमती एव नेमिनाथ का बारहमासा का रोचक सवाद रूप वर्णन है ।

१०५०२. प्रतिसं० २ । पत्रस० २ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

१०५०३. पंच कल्याणक फाग—ज्ञानभूषण । पत्रसं० २-२६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५०४. पञ्च कल्याणक गीत—× । पत्रसं० ८ । आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-गीत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

१०५०५. पचदल अंक पत्र विधान—× । पत्रसं० १ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-वैदिक । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—शिव ताडव से उध्दृत ।

१०५०६. पंचमी शतक पद— × । पत्रसं० १ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । र० काल × । ले०काल सं० १४६१ सावण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १८०-१५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष-॰ अग्रवालान्वये पं० फरेण लिखापितं गोपाश्चलदुर्गे गोलाराडान्वये पं० खेमराज । तस्यपुत्र पं० हरिगण लिखितं ।

१०५०७ पंचम कर्मग्रंथ—× । पत्रसं० १६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०५०८. पंच लब्धि—× । पत्रसं० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल× । ले०काल× । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१०५०९. पंचेन्द्रिय संवाद—भैय्या भगवतीदास । पत्रस० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-वाद-विवाद । र०काल स० १७५१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—१५२ पद्य हैं ।

१०५१०. पंचेन्द्रिय संवाद—यशःकीर्ति सूरि । पत्रसं० १४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पाचो इन्द्रियो का वाद विवाद है । र०काल सं० १८६० चैत सुदी २ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६७-२५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०५११. पज्जुण्ण कहा (प्रद्युम्न कथा)—महाकवि सिंह । पत्रस० ३६ । आ० १०४×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल सं० १५४८ कार्तिक बुदी १ । वेष्टनसं० १६६ । प्रशस्ति अच्छी है । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

१०५१२. प्रति सं० २ । पत्रस० ६४ । आ० ११½×४ इञ्च । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

१०५१३. पद स्थापना विधि—जिनदत्त सूरि । पत्र स० २ । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १८५७ । पूर्ण । वेष्टनस० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०५१४. पद्मनंदि पंचविंशति भाषा—मन्नालाल खिन्दूका । पत्रस० २०६ । आ० १३×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-आचार शास्त्र । र०काल सं० १६·५ । ले० काल सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

१०५१५ परदेशीमतिबोध—ज्ञानचन्द । पत्र स० २१ । भाषा-हिन्दी । विषय-उपदेशात्मक । र०काल × । ले० काल स० १७८६ कार्तिक वदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—बैराठ शहर मे लिखवाई थी ।

१०५१६. परमहंस कथा चौपई—ब्र० रायमल्ल । पत्रसं० ३० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रुपक काव्य । र०काल सं० १६३६ ज्येष्ठ बुदी १३ । **ले०काल सं०** १७६४ ज्येष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—गुटका आकार मे है ।

१०५१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल सं० १८४४ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—प्रशस्ति में तक्षकगढ का वर्णन है । राजा जगन्नाथ के शासन काल में सं० १५३५ में पार्श्वनाथ मदिर था । ऐसा उल्लेख है ।

पडित दयाचद ने सारोला में ब्रह्मजी शिवसागर जी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१०५१८. पल्य विचार × । पत्रसं० ६ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १४६-२७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—बाईस परीषह पार्श्वपुराण 'भूधर कृत' मे से और है ।

१०५१९. पाकशास्त्र— × । पत्रसं० ५८ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पाकशास्त्र । र०काल × । **ले०काल** स० १९१६ चैत्र सुदी १ सोमवार । पूर्ण **वेष्टनस०** ६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१०५२०. पाकावली × । पत्रसं० २८ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पाक शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १७५१ फाल्गुण शुक्ला ६ । **वेष्टनसं०** ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०५२१. पाण्डव चन्द्रिका—स्वरूपदास । पत्र स० ६२ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले० काल स० १६०९ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । **वेष्टनस०** ४२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१०५२२. पाण्डवपुराण —× । पत्रस० ३४६ । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५२३. पुण्यपुरुष नामावलि—× । पत्रसं० ३ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्फुट । र०काल × । ले०काल सं० १८८१ माघ वदि ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पं० देव कृष्ण ने अजयदुर्ग में प्रतिलिपि की थी ।

१०५२४. पुण्याह मंत्र—× । पत्रसं० १ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५२५. पोसहरास—ज्ञानभूषण । पत्रसं० ८ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा काव्य । र०काल × । **ले०काल सं०** १८०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४-७२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१०५२६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५ । आ० ११½ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २८७-१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

१०५२७. प्रवूर्ण गाथाना अर्थ—× । पत्रसं० ६० । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल सं० १७६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

१०५२८. प्रज्ञावल्लरीय—× । पत्रसं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन सं० ७३२ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५२९. प्रतिमा बहत्तरी—द्यानतराय । पत्रसं० ३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-स्तवन । र०काल सं० १७८१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१-१५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—अन्तिम—

> दिल्ली तखत बखत परकास, सत्रैसै इक्यासी वास ।
> जेठ सुकल जगचन्द उदोत, द्यानत प्रगट्यो प्रतिमा जोत ।।७१।।

१०५३०. प्रत्यान पूर्वलिपूठ—× । पत्रसं० ५४ । भाषा-प्राकृत । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

१०५३१. प्रबोध चन्द्रिका—बैजल भूपति । पत्रसं० २३ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५३२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३१ । आ० ९×६ इञ्च । ले० काल सं० १६४३ फागुण बुदी ९ सोमवार । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

१०५३३ प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३१ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

१०५३४. प्रबोध चिंतामणि—जयशेखर सूरि । पत्रसं० ४-४० । आ० १०½×४½ इञ्च । विषय-विविध । र०काल × । ले० काल सं० १७२० चैत सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५३५. प्रशस्ति काशिका—त्रिपाठी बालकृष्ण । पत्रसं० १८ । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्फुट लेखन विधि । र०काल × । ले० काल सं० १८४१ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

१०५३६. प्रस्तुतालंकार—× । पत्रसं० ३ । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रशस्ति में प्रयोग होने वाले अलंकारों का वर्णन है ।

१०५३७. प्रस्ताविक श्लोक—× । पत्रसं० १–७ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५३८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १–८ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५३९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १–३३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

विशेष—कवित्त संग्रह भी है ।

१०५४० प्रासाद वल्लभ—मंडन । पत्रस० ४० । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्प शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

अन्तिम—इति श्री सूत्रधारमडनविरचिते वास्तुशास्त्रे प्रासादमंडन साधारण अष्टमोध्याय ।। इति श्री प्रासाद वल्लभ ग्र थ सपूर्ण । डूंगरपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०५४१. प्रिया प्रकरन—× । पत्रस० १७–७६ । भाषा-प्राकृत । विषय-विविध । र०काल × । ले० काल स० १८७८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५४२. प्रेमपत्रिका दूहा—× । पत्रसं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

१०५४३. प्रीतिंकर चरित्र— × । पत्रसं० ४८ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल स० १७२१ । ले० काल सं० १६४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

१०५४४. फुटकर ग्रन्थ—× । पत्रसं० १ । भाषा-कर्णाटी । वेष्टन सं० २१०/६५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—कर्णाटी भाषा मे कुछ लिखा है । लिपि नागरी है ।

१०५४५. बखाण—× । पत्रसं० १८–३१ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

१०५४६. बणजारा गीत—कुमुदचन्द्र सूरि । पत्रस० २ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—रूपक काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मंदिर खण्डेलवाल उदयपुर ।

१०५४७. **बारहमासा**—× । पत्रसं० १ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—विरह वर्णन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

१०५४८. **बिहारीदास प्रश्नोत्तर**—× । पत्रसं० ६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—विविध । र०काल × । ले०काल सं० १७६० मंगसिर सुदी ४ । पूर्ण । ले०काल १२४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा ।

विशेष—साह दीपचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

१०५४९. **ब्रह्म वैवर्त्त पुराण**—× । पत्रसं० ५५ । आ० ९¾×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

इति श्री ब्रह्मवैवर्त पुराणे श्रावण कृष्णपक्षे कामिका नाम महात्म्य ।

१०५५०. **ब्रह्मसूत्र**— × । पत्रसं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १००१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५५१. **भक्तामर पूजा विधान श्रीभूषण** । पत्रसं० १४ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १८९५ फागुण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ़ कोटा ।

विशेष—भीलवाडा में चि० सेवाराम बघेरवाल दूधारा वाले ने पुस्तक उतारी पं० ऋषभदास जी बघेरवाल गोत ठोल्यामाले गांव मु ं कोस २० तु ंगीगिरि में प्रतिलिपि हुई थी ।

१०५५२. **भक्तामर भाषा—हेमराज** । पत्रसं० ३६ । आ० ११×६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य विषय स्तोत्र । र० काल स० १७०९ माघ सुदी ५ । ले०काल सं० १८८३ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—अमीचन्द पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

१०५५३. **भर्तृहरि—भर्तृहरि** । पत्रसं० ५७ । आ० १०½ × ४¾इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति टिप्पणी सहित है ।

१०५५४ प्रतिसं० २ । पत्रसं० १३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन सं० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०५५५. **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ७० । आ० १०¾×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८६७ कातिक बुदी ५ । वेष्टन सं० ४५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—लिपिकार चिरंजीव जैकृष्ण । प्रति सटीक है ।

१०५५६. सलेबावनी—विनयमेरु । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८६५ माह सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी ।

१०५५७. भागवत—× । पत्र स० ८ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

१०५५८. भगवद् गीता—× । पत्रसं० ६० । आ० ६½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल स० १७३१ । भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बून्दी)

विशेष—मोहनदास नागजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१०५५९. भगवद् गीता—× । पत्रसं० ८० । आ० ५½×३½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१०५६०. भावनासार संग्रह (चारित्रसार)—चामुंडराय । पत्रसं० ६६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चारित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—सस्कृत में कठिन शब्दो के अर्थ दिये हुए हैं । प्रति जीर्ण एवं प्राचीन है । कुछ पत्र चूहे काट गये है ।

१०५६१. भावशतक—नागराज । पत्रसं० ३० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-शृगार । र०काल × । ले० काल स० १८५३ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

१०५६२. भाषाभूषण—भ० जसवन्तसिंह । पत्रस० ११ । आ० ११×५ । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षण ग्रंथ । र०काल × । ले०काल सं० १८५३ । वेष्टनसं० ६०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०५६३. भुवनद्वार—× । पत्रसं० ६४-११६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

१०५६४. भूधर शतक—भूधरदास । पत्रस० ६ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—६७ पद्य है । इसका दूसरा नाम जैन शतक भी है ।

१०५६५. मृत्यु महोत्सव—सदासुख कासलीवाल । पत्रसं० २६ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल सं० १९१८ । ले० काल सं० १९४५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

१०५६६. प्रति सं० २ । पत्रसं० ११ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

१०५६७. प्रति सं० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

१०५६८. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १४ । आ० ८×६½ इञ्च । ले०काल स० १६४८ माघ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१०५६९. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० १२ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५७०. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ५३ । आ० ११×६¾ इञ्च । ले०काल स० १६६५ माघ बुदी ६ । वेष्टन सं० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार में से है ।

१०५७१. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० २१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५७२. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ६ । आ० १४×७½ इञ्च । ले० काल स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

१०५७३. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ६ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

१०५७४. पत्रस० १० । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टन सं० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

१०५७५. मृत्यु महोत्सव—× । पत्रस० २ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६३/४७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

१०५७६. मृत्यु महोत्सव पाठ—× । पत्रस० ३ । आ० १०¾×५ इंच । भाषा सस्कृत । विषय-चिन्तन र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

१०५७७. मणकरहा जयमाल— × । पत्रस० ३ । आ० ११¾×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रूपक काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष--मनरूपी करघा (चर्खा) की जयमाल गुण वर्णन किया है ।

१०५७८ मदान्ध प्रबोध—× । पत्रसं० २११ । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल सं० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५७६. मनमोरड़ा गीत – हर्षकीर्ति । पत्रसं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-गीत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष – म्हारा रे मन मोरडा तू तो उडि उडि गिरनार जाइ", यह गीत के प्रथम पक्ति है।

१०५८० महादेव पार्वती संवाद—× । पत्रस० १-२६ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय-वैदिक-साहित्य (संवाद) । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण ।वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष —कई रोगों की औषधियो का भी वर्णन है ।

१०५८१. महासती सज्भाय— × । पत्रसं० १ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष—सतियो के नाम दियेहैं ।

१०५८२ मानतुंग मानवती चौपई—रूपविजय । पत्रसं० ३१ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५८३. मिच्छा दुक्कड़— × । पत्रस० १ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेट्टन स० १८४/४२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०५८४. मौन एकादशी व्याख्यान—पत्र स० २ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

१०५८५. यत्याचार— × । पत्र स० २ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मुनि आचार धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २६६/१५५ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

१०५८६ रत्नपरीक्षा — × । पत्र स० १-३५ । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण ग्रंथ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५८७. रयणसारव चनिका—जयचन्द छाबडा । पत्र स० ७ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–राजस्थानी (गद्य) । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१०५८८. रविवार कथा एवं पूजा—पत्रसं० ८ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टौंक ।

१०५८६. राजुल छत्तीसी—बालमुकन्द। पत्रसं० ८। भाषा-हिन्दी। विषय-वियोग शृंगार। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ४६८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भरतपुर।

१०५६०. राजुल पच्चीसी—×। पत्रसं० ३। आ० ६×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-वियोग शृंगार। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १४१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

१०५६१. राजुल पच्चीसी—×। पत्रस० ६। आ० ६×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-वियोग शृंगार। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ७०-४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष— निम्न पाठ और है :—

मुनीश्वर जयमाल भूधरदास कृत तथा चौवीस नीर्थंकर स्तुति।

१०५६२. राजुल पत्रिका—सोयकवि। पत्रस० १। भाषा-हिन्दी। विषय-पत्र-लेखन (फुटकर)। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं ५६, ६३६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—

प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री यदुपति पाय नमि गढ गिरनार सुठायरे सामलिया।
लखिनुं राजुल रंगि वीनती सदेसइ परिणामरे पीयारा ॥१॥
एक बार अवोरे मन्दिर मा हरइ जिम नलिय मन हेजरे सामलिया।
तुम विन सूना मन्दिर मालिया सूनी राजुल सेजरे पीयारा ॥२॥
अत्र कुशल ते मुजीना ध्यान की तुम कुशल नित मेव रे समलिया।
चरणनी चाकरी चाहुं ताहरी दरसन दिखवहु देव पीयारा ॥३॥

× × ×

अन्तिम—

वेगीमालण करी जेवा लही ढील भणे रहि कामरे।
पाणि नखइ मइ पीउडा पातली दोहिलो विरह विरायरे पीयारारे ॥२०॥
माह बदि मातिम दिन इति मगल लेख लिख्यौ लख बोलरे सामलिया।
जस सोम कवि सीस साहि प्रीति राजुल मनरंग रोलरे पीयारा ॥२१॥
पूज्याराध्य तुमे प्राणिसइ श्री यदुमति चरणनुरे सामलिया।
राजुल पतिया पाठवी प्रेम की गढ गिरनार सुठामरे पीयारा ॥२२॥
एक बार आवोरे मन्दिर माहरे ॥

१०५६३. रामजस—केसराज। पत्र स० २५२। आ० १०×४½ इन्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-विविध। र०काल सं० १६८० आसोज बुदी ११। ले०काल स० १८७४ असाढ सुदी ८। पूर्ण। वेष्टनसं० ८१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दबलाना बूंदी।

विशेष—इसका नाम रामरस भी दिया है। अंतिम—श्री राम रसौधिकारे संपूर्ण।

१०५९४. रावण परस्त्री सेवन व्यसन कथा—× । पत्रसं० २४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३२०/६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - ६५७ श्लोकों से आगे नही है ।

१०५९५ रूपकमाला बालाबोध—रत्नरंगोपाध्याय । पत्रसं० १० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल सं० १६५१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—

स० १६५१ वर्षे श्रावण बुदी ११ दिने गुरुवारे श्री मुलताणमध्ये पं० श्री रंगवर्द्धन गणिवराणां शिष्य पं० थिरउजरस शिष्येण लिखितो बालावबोध ।

१०५९६. लघियस्त्रय टीका—अभयचन्द्र सूरि । पत्रसं० २६ । आ० १४×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५९७. लघुक्षेत्र समास वृत्ति—रत्नशेखर । पत्रसं० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०५९८. लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल । पत्रसं० १५ । आ० १५—७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धांत । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५९९. लीलावती—भास्कराचार्य । पत्रसं० २१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०६००. प्रति सं० २ । पत्रसं० १० । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—१० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

१०६०१ लीलावती— × । पत्रसं० ३३ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६०२. लीलावती—× । पत्रसं० २० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०६०३. लीलावती—× । पत्रसं० ६७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

१०६०४. लीलावती भाषा—लालचन्द सूरि । पत्रस० २८ । प्रा० ११ × ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल सं० १७३६ प्रषाढ बुदी ५ । ले०काल स० १९०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर (बयाना)

विशेष—ग्र थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

शोभित सिन्दूर पूर गज सीस नीकइ ।
नूर एक सुन्दर विराजै भाल चन्द जु
सूर कोरि कर जोरि अभिमान दूरि छोरि
प्रणमत जाके पद पकज अनन्दजू ।
गौरीपूत सेवै जोउ मन चित्यो,
पावै रिद्धि वृद्धि सिद्धि होत है अखंडजू ।
विघन निवारै सत लोक कूं सुधारै
ऐसे गणपति देव जय जय सुखकंदजू ।।१।।

दोहा

गणपति देव मनाय के सुमरि बात सुरसति
भाषा लीलावती करू चतुर सुणो इक चित्त ।।२।।
श्री भास्कराचार्य कृत सस्कृत भाषा सप्तसती ।।
लीलावती नाम इम ऊपरि सिद्ध ।।३।

अन्तिम पाठ—

सपूरण लीलावती भाषा मे भल रीति ।
ज्यु कीधि जिणदिन हुई तिको कहुँ धरि प्रीति ।।
सतरासै छत्तीस समै वदि प्रषाढ बखान ।
पाचम तिथि बुधवार दिन ग्र थ सपूरण जान ।।
गुरु सौ चउरासी गच्छे गच्छ खरतर सुवदीत ।
महिमडल मोटा मनुष्य पूरी करै प्रतीत ।।११।।
गछनायक गुणवत अति प्रकट पुन्य अकूर ।
सोभागी सुन्दर वरण श्री जिनचद सूरिंद ।।१२।।
सेवग तासु सोभागनिधि क्षेम साख सुखकार ।
शाति हर्ष वाचक सन्यो जस सोभाग्य अपार ।।१३।।
शिष्य तास सुविनीत मति लालचन्द इण नाम ।
गुरु प्रसाद कीधौ भलो ग्रंथ मण्या अभिराम ।।१४।।
मला शास्त्र यद्यपि भला तो पणि चित्त उल्लास ।
गणित शास्त्र धुरि अन्ति लगि कीयो विशेष अभ्यास ।।१५।।
बीकानेर बडो सहर चिहुं दिस में प्रसिद्ध ।
घरघर कचन धन प्रबल घरघर ऋद्धि समृद्धि ।।१६।

घरघर सुन्दर नारि सुभ भिगमिग कंचन देह ।
फोकल भका कामनी मिल नित वंछती नेह ।।१७।।

गढमढ मिंदर देहुरा देखत हरषत नैन ।
कवि औपम ऐसी कहै स्वर्ग लोग मनु ऐन ।।१८।।

राजै तिहां राजा बडो श्री अनोपसिंह भूप ।
राष्ट्रवंश नृप करण सुत सुन्दर रूप अनूप ।।१९।।

जैतसाह जामें वसै सात वधा श्रीकार ।
लघुवय मे विद्याभणी कियो शास्त्र अभ्यास ।।२०।।

सप्तसती लीलावती भणी बहुकीध अभ्यास ।
लालचन्द मु विनय करि कीध असी अरदास ।।२१।।

भाषा लीलावती करौ ग्रंथ सुगम ज्युं होइ ।
देस देस मैं विस्तरं भणौ चतुर सहु कोइ ।।
ग्रंथ मातसं सानहु ठहरायो करि ठीक ।
मूलशास्त्र जिनरो कियो कह्यो न ग्रंथ अलीक ।।२२।।

इति लीलावती भाषा लालचन्द सूरि कृत सपूर्ण ।

सवत् १९०१ मिती असाढ बुदी ११ मगलवारे लिखत श्रावग पाटणी उंकार नलपुर मध्ये लिखी छै । श्रावग उदासी सोगाणी वासी जैपुर भाई के नन्दराम वाचनार्थ । श्रावक गोत्र बाकलीवाल मूलाजी कनीराम वीरचन्द लिखाय दीदी ।।

१०६०५. लीलावती टीका—दैवज्ञराम कृष्ण । पत्रस० १४८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष, गणित । र० काल × । ले०काल सं० १८३७ असाढ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०६०६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १०९ । आ० ९×४ इञ्च । **ले०काल** सं० १६०९ (शक स०) । पूर्ण । वेष्टन सं० १९८ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इति श्री नृसिंह दैवज्ञात्मज लक्ष्मण दैवज्ञ सुत सिद्धात वि० दैवज्ञ रामकृष्णेन विरचित लीलावती वृत्ति ।

१०६०७. लेख पद्धति—× । पत्रस० ७ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पत्र लेखन विधि दी हुई है ।

१०६०८ वृन्द विनोद सतसई—वृन्दकवि । पत्रस० ४८ । आ०११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, (पद्य) । विषय-शृंगार रस । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १७३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर राजमल (टोंक)

१०६०६- वृषभदेव गीत— ब्रह्ममोहन । पत्रसं० २ । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल×। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६/४७८ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अंतिम पाठ निम्न प्रकार है—

वारि भारि विधान हारे संसार सागर तारीणी
पुनि धर्मभूषण पद पकज प्रणमी करिमोहन ब्रह्मचारिणी

१०६१०. वज्र उत्पत्ति वर्णन—× । पत्रसं० ३ । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । र०काल ×। ले०काल×। वेष्टनसं० ६१५ । पूर्ण वेष्टन ६१५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०६११. वज्रसूची (उपनिषत्)—श्रीधराचार्य । पत्र स० ४ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाष-संस्कृत । विषय-वैदिक (शास्त्र) । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४१६/५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

१०६१२. वरुण प्रतिष्ठा—× । पत्र स० १६ । ग्रा०१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । ले०काल स० १८२४ कार्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०५ ।**प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६१३. वाकद्वार पिंड कथा— × । पत्रस० २१ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६१४. वाजनेय संहिता—× । पत्र सं० १ से १७ । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७५१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०६१५. वाजनेय संहिता—× । पत्रस० ३०६ । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार-शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६४६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७०-७०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—बीच २ के बहुत से पत्र नहीं है ।

१०६१६. वाञ्छा कल्प—× । पत्रस० २५ । ग्रा० ६½×३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६१७. वास्तुराज—राजसिंह । पत्रस० ४७ । ग्रा० ८×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-वास्तु शास्त्र । र०काल × । ले०काल सं० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

अन्तिम—इति श्री वास्तुशास्त्रे वास्तुराज सूत्रधार राजसिंह विरचिते शिखर प्रमाण कथन नाम दशमेध्याय ।।

संवत् १६५३ वर्षे भृगमास सुदी १५ रवौ लिखितं दशोरा ब्राह्मण ज्ञाति व्यास पुरुषोत्तमे हस्ताक्षर नग्र डूंगरपुर मध्ये ।

१०६१८. वास्तु स्थापन—× । पत्रसं० १८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वास्तु शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन २२८/३८६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०६१६. वास्तु शास्त्र—×। । पत्र सं० १-१७ । आ० ६३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-वास्तु शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०६२०. विजयभद्र क्षेत्रपाल गीत—ब्र० नेमिदास । पत्रसं० १ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनसं० ३६७/४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम—

> नित नित आवि वधावणा चन्द्रनाथ ना भुवन मझार रे ।
> धवल मगल गाइया गोरडी तहां वरत्यो जय जयकार रे ।।
> इणि परि भगति भली करो जिम विघन तण दुख नासि रे ।
> इति नरेन्द्र कीरति चरणे नमी इम बोलि ब्र० नेमिदास रे ।

१०६२१. विदग्ध मुखमंडन—धर्मदास । पत्रसं० २२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

१०६२२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५ । आ० ६×४१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६२३. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १३ । ले०काल सं० १७४० जेष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६२४. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ४२ । आ० ६१/२×४१/२ इञ्च । ले०काल सं० १८०० पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६२५। विदग्ध मुखमंडन टीका—विनय सागर । पत्रसं० १०८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—टीका काल—

> अंकत्रं रसराकेश वर्षः तेजपुरे वरे ।
> मार्गे शुक्ल तृतीयायां व्यावेषा विनिर्मिता ।।

इति खरतरगच्छालकार श्री जिनहर्ष सूरि तत् शिष्य श्री विनयसागरमुनि विरचितायां विदग्ध मुखमंडनालंकारटीकायां शब्दार्थमंदाकिन्यां प्रहेलादि प्रदर्शको नाम चतुर्थोध्याय ।

१०६२६. विद्वज्जन बोधक—संघी पन्नालाल । पत्र सं० १८२ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय-सुभाषित । र०काल सं० १९३९ माघ सुदी ५ । ले०काल स० १९६७ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१०६२७. वीतराग देव चैत्यालय शोभा वर्णन—× । पत्रस० ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—चैत्य वदना । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ब्र० सवराज की पोथी ।

१०६२८. वेलि काम विडम्बना—समयसुन्दर । पत्रस० १ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । र०काल × । **ले०काल** । अपूर्ण । विषय—वेलि । **वेष्टनस०** ७१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—बनारसीदास कृत चितामणि पार्श्वनाथ भजन भी है । "चितामणि साचा साखि मेरा"

१०६२९. वैराग्य शांति पर्व (महाभारत)—× । पत्रसं० २-१४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—वैदिक शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १९०५ । अपूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—लिखी नतु वाडिशी कृष्णपुर नंदगाव मध्ये ।

१०६३०. श्रृंगार वैराग्य तरंगिणी—सोमप्रभाचार्य । पत्रस० ६ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । **वेष्टनसं०** १०२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—४७ श्लोक है । अकबरा बाद मे ऋषि बालचद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१०६३१. शकर पार्वती सवाद—× । पत्रस० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सवाद । र०काल × । **ले०काल** स० १९३० । पूर्ण । वेष्टन सं० २०१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

१०६३२. शतरज खेलने की विधि × -पत्र स० ७ । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । विषय-विविध । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । **वेष्टनस०** ७०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—४ पत्र नही हैं । ७१ दाव दिये हुए हैं । हाथी, घोड़ा, ऊंट, प्यादा आदि का प्रमाण दिया हुआ है ।

१०६३३. शत्रुंजय तीर्थ महात्म्य—धनेश्वर सूरि । पत्रसं० २-२३८ । भाषा—सस्कृत । विषय—इतिहास-शत्रुंजय तीर्थ का वर्णन है । र०काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । **वेष्टनस०** ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

१०६३४. शब्दभेदप्रकाश—× । पत्र सं० १७ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कोष । र० काल × । ले०काल स० १६२६ जेष्ठ सुदी १ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २८८ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मडलाचार्य धर्मचन्द्र के शिष्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१०६३५. शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १०१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६३६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५६ । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १५१४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर । प्रति सटीक है ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५१४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ३ गुरिदिने पुनर्वसुनक्षत्रे वृद्धियोगी श्री हिमारपेरोजापत्तने तत्र लब्धविजयपुर सुरत्राण श्री बहलोल साह राज्य प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्पगणे भट्टारक श्रीहेमकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री कमलकीर्तिदेवा· तस्य गुरु भ्राता मुनि श्री धर्मचन्द्रदेवास्तच्छिष्य श्री प्रभाचन्द्रदेव· तस्य शिष्यो मुनि श्री शुभचन्द्र देव. श्री धर्मचन्द्रः शिष्यिणी क्षातिकापुण्यश्री तस्या शिष्यणी क्षातिकाज्ञानश्री अग्रोतवशजातसाधु उद्धरण पुत्र. प० मीहाल्ह· । एतेषामध्ये अग्रोतवशे बंशल गोत्रे परम श्रावक साधु भूगड नामा तस्य भार्या विनयसरस्वती साधु मीधाजी नामी तयो पुत्राश्चत्वार प्रथम पुत्र चतुर्विधदानवितरण कल्पवृक्ष. साधु छाजूमंज्ञस्तत् भार्या साधुणी पोल्हणती तयो पुत्रचिरंजीवी लूणासिध द्वितीय पुत्र साधु राजुनामा । तद्भार्या साधुणी लूणी नाम्नी । तृतीय पुत्र साधुदेवाख्यः तस्य भार्या साधुजी जील्हाही । चतुर्थ पुत्र साधु सेवराज·तस्य भार्या मोहणही । एतेषामध्ये परम श्रावकेन साधु छाजुनाम्ना इम प्राकृत वृत्ति पुस्तक निज द्रव्येण लिखाप्य पडित श्री मेघावि सज्ञाय प्रदत्तं निजज्ञानावरणकर्मक्षयाय शुभम् मुलेखक पाठकयो· ।

१०६३७. शारङ्गधर संहिता—दामोदर । पत्र स० ३१५ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १६०७ बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

विशेष—लाल कृष्ण मिश्र ने काशी मे प्रतिलिपि की थी ।

१०६३८. शील विषये वीर सेन कथा—× । पत्र स० ११ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी) ।

१०६३९. श्रमण सूत्र भाषा—× । पत्र सं० ७ । आ० १०×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०६४०. षट् कर्म वर्णन—× । पत्र स० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

१०६४१. श्रुतपंचमी कथा—धनपाल । पत्र स० ४४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल सं० १५०१ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथीम न्दिर दौसा ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । संवत् १५०१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ । शुक्र दिने तिजारा

नगर वारतव्ये श्री मूलसंघे माथुरान्वये पुष्करगणे श्री सहस्रकीर्ति देवाः तत्पट्टे श्री गुणकीर्ति देवाः तत्पट्टे श्री यशः कीर्ति देवाः तत्पट्टे प्रतिष्ठाचार्य श्री मलयकीर्ति देवाः तेषामाम्नाये।

१०६४२. संख्या शब्द साधिका—× । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—गणित । र० काल × । **ले०काल** × । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१०६४३. सकल्प शास्त्र—× । पत्र सं० १२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

१०६४४. संध्या वंदना—× । पत्र स० ४ । आ० ८×२½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र० काल × । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१०६४५. सज्जनचित्त बल्लभ—मल्लिषेण । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया है। किन्तु गुजराती मिश्रित हिन्दी है।

१०६४६. सत्तरी कर्म ग्रन्थ—× । पत्र स० ३६ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१०६४७. सत्तरिरूपठाण—पत्र स० २ से १२ । भाषा—प्राकृत । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१०६४८ समाचारी—पत्र सं० ३६-८३ । भाषा-सस्कृत । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल स० १८२७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१०६४९. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ११३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२५ । **प्राप्ति-स्थान**-दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१०६५०. सर्वरसी--× । पत्र सं० ३६ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

१०६५१. सर्वार्थसिद्धि भाषा-जयचन्द छाबड़ा । पत्रस० २८२ । आ० १४½ ×७½ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूंढारी गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र०काल सं० १८६५ चैत सुदी ५ । ले० काल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

१०६५२. साठि—× । पत्रसं० १२ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८११ चैत बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर इन्द्रगढ़।

विशेष—रूपचन्द ने लिखा था।

१०६५३. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रसं० ११ । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

१०६५४. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रसं० १७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-लक्षणग्रंथ । र०काल × । ले० काल सं० १५८६ । पूर्ण । वेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—जैनाचार्य कृत है ।

१०६५५. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रसं० १० । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

१०६५६. सामुद्रिक शास्त्र — × । पत्र स० २० । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्षण ग्रन्थ । र०काल × । ले० काल स० १८६६ वैशाख वदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दीवानजी, भरतपुर ।

१०६५७. सामुद्रिक शास्त्र (स्त्री पुरुष लक्षण)— × । पत्र स० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय सामुद्रिक शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बाग ।

१०६५८. सामुद्रिक शास्त्र (स्त्री पुरुष लक्षण)— × । पत्र स० ३६ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सामुद्रिक (लक्षण ग्रन्थ) । र०काल × । ले० काल स० १८५० काती सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोंक ।

विशेष—तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०६५९. सामुद्रिक सुरूप लक्षण— × । पत्रसं० १६ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-सामुद्रिक । र०काल × । ले० काल स० १७९२ भादवा सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस प्रति की जोबनेर मे पंडित प्रवर टोडरमल जी के पठनार्थ लिपि की गई थी ।

१०६६०. सार संग्रह महावीराचार्य । पत्रसं० ५१ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-गणित । र०काल × । ले० काल स० १९०६ । वेष्टन सं० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के राज्य में लिखा गया था । इसका दूसरा नाम गणितसार संग्रह है ।

१०६६१. सारस्वत प्रक्रिया—परिव्राजकाचार्य । पत्रसं० ६२ । भाषा-संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६८/५८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०६६२. सिद्धचक्र पूजा—शुभचन्द्र । पत्र सं० १०८ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६/३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम सिद्ध यत्र स्तवन भी दिया है ।

१०६६३. सुदृष्टितरगिनी भाषा—टेकचन्द । पत्र स० ४२६ । आ० १४½×७ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सुभाषित । र०काल स० १८३८ सावण सुदी ११ । ले०काल स० १६०७ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—सवाई जयपुर मे ब्राह्मण जमनालाल ने चि० सदासुखजी तथा पं० चिमनलालजी बूंदी वालो के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । ग्र थाग्र थ १६२२२ पंडितजी की प्रशस्तिः—

आचार्य हर्षकीर्ति—स० १६०७ आचार्य श्री हरिकीर्तिजी संवत् १६६६ के साल टोडा मे हुआ, ज्याकी वान छत्री हाल मोजूद । त्याके शिष्य रामकीर्त्ति, तत्शिष्य भवनकीर्त्ति, टेकचद, पेमराज, सुखराम, पद्मकीर्त्ति दोदराज पडित हुए । ततशिष्य छाजूराम, तत्शिष्य प० दयाचंद, तत्शिष्य ऋषभदास त० शि० सेवाराम, द्वितीय डूगरसीदास, तृतीय साहिबराम एतेषा मध्ये पं० डूंगरसीदास के शिष्य सदासुख शिवलाल तत्शिष्य रतनलाल, देवालाल मध्ये वृहत् शिष्येन लिपीकृता । प० चिमनलाल पठनार्थ ।

ऐसा हुआ बूदी के खेडे पडित शिवलाल ।
बाग बगाया तसि जिनने तलाब ऊपर न्यारा ।
सब दुनिया मे शोभा जिनकी रुपया देब उधारा ।
जिनका शिष्य रतनलाल पौत्र नेमीचद प्यारा ।।
सवत् १६०७ के मई ग्र थ लिखाया सारा ।
जाग दुकाना कटला का दरवाजा बणाया नागदी मांई ।।

१०६६४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५२६ । आ० ११×८ इंच । ले० काल स० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—ईश्वरलाल चादवाड ने प्रतिलिपि की थी।

१०६६५. सूक्तावली— × । पत्र सं० १-५८ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन सं० ७२१ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०६६६. सूर्य सहस्रनाम— × । पत्र स० ११ । आ० ७¾×३½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—भविष्य पुराण मे से है ।

१०६६७. **स्तोत्र पूजा संग्रह**— × । पत्र सं० २ से ४१ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८४७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ का केवल एक पत्र नहीं है ।

१०६६८ **स्थरावली चरित्र—हेमचन्द्राचार्य** । पत्र सं० १२७ । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १८७९ जेठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

१०६६९ **प्रति सं० २** । पत्र सं० २ से १५० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

१०६७०. **हिण्डोर का दोहा**— × । पत्र स० १ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुटकर । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

॥ **समाप्त** ॥

ग्रंथानुक्रमणिका

अकारादि स्वर

ग्रंथ नाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या
आप्त मीमांसा : आ० समन्तभद्र	सं०	२४८ २४६ ६५५
आप्त-मीमांसा भाषा : जयचन्द छाबड़ा	राज०	२४६, २५०
आप्तस्वरूप विचार	स०	२५०
आयुर्वेद ग्रन्थ—	सं०	५७४
	हि०	५७४ ५७५
आयुर्वेद निदान	सं०	५७५
आयुर्वेद के नुस्खे—	हि०	५७५ ६५३ ६५६, ६५७, ६६०, १०१३, १११५, १११६, १११६
आयुर्वेद महोदधि : सुखदेव	स०	५७५
आयुर्वेदिक शास्त्र	हि०	५७५
आराधना	हि०	६२
आराधना	सं०	७१२
आराधना कथाकोश—	स०	४२६
आराधना ,, बख्तावरसिंह रतनलाल	हि०	४३०
आराधना ,, ब्र० नेमिदत्त	स०	४३०
आराधना ,, श्रुत सागर	सं०	४३०
आराधना ,, हरिषेण	स०	४३०
आराधना सार कथा प्रबंध : प्रभाचन्द	स०	४३०
आराधना चतुष्पदी : धर्मसागर	हि०	४३०
आराधना पंजिका : देवकीर्ति	स०	६३
आराधना प्रतिबोधसार :	हि०	१११०
आराधना प्रतिबोधसार : विमलकीर्ति	हि०	१०२४
आराधना प्रतिबोधसार : सकलकीर्ति	हि०	११, ६५१ ११६४, ११३८
आराधनासार—	हि०	६५०
आराधनासार—	स०	६६५ ११४२
आराधनासार : अमितिगति	स०	६२
आराधनासार : देवसेन	प्रा०	६१, ६७७ ६८३, १०८८
आराधनासार : विमलकीर्ति	हि०	६६१
आराधनासार : सकलकीर्ति	हि०	१०२६
आराधनासार टीका : पं जिनदास गगवाल	हि०	६२
आराधनासार टीका नदिगणि	स०	६२
आराधनासार भाषा : दुलीचन्द	हि०	६२
आराधनासार भाषा टीका—	—प्रा० हि०	६२
आराधनासार वचनिका : पन्नालाल चौधरी	हि०	६२
आराधना सूत्र : सोमसूरि	प्रा०	६३
आलाप पद्धति : देवसेन	स०	२५०, २५१ ६६६, ६८३, १००६
आलोचना :	हि० स०	१८६
आलोचना गीत : शुभचन्द्र	हि०	६५२
आलोचना जयमाल : ब्र० जिनदास	हि०	१८६ १०८८
आलोचना पाठ	स०	१८६
आलोचना विधि	स०	११३६
आवश्यक सूत्र :	प्रा०	३
आवश्यक सूत्र निर्युक्ति : ज्ञान विमलसूरि	स०	३
आश्रव त्रिभगी—	प्रा०	११४२
आश्रव त्रिभगी : नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	३
आशाधर ज्योतिर्ग्रन्थ : आशाधर	सं०	५४१
आषाढी पूर्णिमा फल : श्री अनूपाचार्य	सं०	१११६
आषाढ़ भूतनी चौपई—	हि०	११६७
आषाढ़ भूति धमालि	हि०	६८५
आषाढभूत धमाल—	हि०	१०३६
आषाढभूति मुनिका चोढाल्या कनकसोम	हि०	१०१३
आषाढ़-भूतरास ज्ञानसागर :	हि०	६३१
आसपाल छंद .	हि०	१०२५
आहार वर्णन	अफ	१०८०
आहार पचखाण	प्रा०	७१२

ख

ग्रंथ नाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या
गुणधर्मा चरित्र — माणिक्य सुन्दर सूरि	सं०	३१६
गुणविलास—नथमल विलाला	हि०	१९४
गुणवेलि भ० धर्मदास	हि०	६५२
गुणस्थान क्रमारोह	सं०	१३
गुणस्थान गाथा	प्रा०	१३
गुणस्थान चर्चा	स०	१२, १३, ६६०, ६६७, ६८८, ६८६, ६६०, १०५८, १०१६
गुणस्थान चर्चा	प्रा०	११४१
गुणस्थान चौपई - ब्र० जिनदास	हि०	१४
गुणस्थान पीठिका	हि०	१०८५
गुणस्थान मार्गणा चर्चा	सं०	१४
गुणस्थान मार्गणा वर्णन—नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	१४
गुणस्थान रचना	हि०	१५
गुणस्थाने वर्णन	प्रा०	१४
गुणस्थान वृत्ति—रत्नशेखर	स०	१५
गुणावली	स०	६५१
गुणावली पूजा	हि०	६५६
गुणावली पूजा : शुभचन्द्र	स०	७६५
गुणावली समुच्चय पूजा—	सं०	७६५
गुणावली स्तोत्र	सं०	७२१
गुरु अष्टक—श्री भूषण	स०	११६६
गुरु जयमाल — ब्र० जिनदास	हि०	७६५, ११४३, ११५५
गुरुपदेश श्रावकाचार—डालूराम	हि०	१०४,१०५
गुरु पूजा — ब्र० जिनदास	हि०	१०७७
गुरु पूजा—हेमराज	हि०	१११६
गुरु राशि गत विचार	स०	११३४
गुरु विनती	सं०	६७७
गुरु विरुदावली—विद्याभूषण	सं०	११३५
गुरु शिष्य प्रश्नोत्तर	सं०	१०८८
गुरु स्तवन—नरेन्द्र कीर्ति	हि०	११०८

ग्रंथ नाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या
गुरु स्तोत्र—विजयदेव सूरि	हि०	७२१
गुलाल मथुराबाद पच्चीसी—	हि०	६८५
गुर्वावलि	हि०	६५२, ६६०, ११४७
गुर्वावली (चौसठ ऋद्धि) पूजा—स्वरूपचन्द विलाला	हि०	७६५
गुर्वावली सज्झाय	प्रा०	६५१
गोत्रिरात्र व्रतोद्यापन	स०	११७६
गोपाल सहस्र नाम	सं०	७२१
गोम्मट सार—नेमिचन्द्राचार्य	प्रा०	१५, १६
गोम्मटसार भाषा—पं० टोडरमल	राज०	१८, १६
गोम्मटसार कर्म काण्ड टीका—नेमिचन्द्र	प्रा० सं०	१७
गोम्मटसार चर्चा	हि० ग०	१७
गोम्मटसार चूलिका	सं०	१७
गोम्मटसार टीका—सुमतिकीर्ति	सं०	१६
गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा : हेमराज	हि०	१६
गोम्मटसार पूर्वार्द्ध (जीवकाण्ड)—	सं०	१७
गोम्मटसार पूर्वार्द्ध भाषा—पं० टोडरमल	राज०	१८,१६
गोम्मटसार जीवकाण्ड वृत्ति (तत्व प्रदीपिका)—	सं०	२१
गोम्मटसार (पंच संग्रह) वृत्ति—अभयचन्द्र	सं०	२१
गोम्मटसार वृत्ति—केशववर्णी	सं०	२१
गोम्मटसार संदृष्टि—आ० नेमिचन्द्र	प्रा०	२१
गोम्मट स्वामी स्तोत्र	सं०	७२१
गोरख कवित्त—गोरखदास	हि०	११४५
गोरख चक्कर	हि०	१०६५
गोरखनाथ का जोग	हि०	१११५
गोरस विधि	सं०	७६५
गोराबादल कथा—जटमल	हि०	११३१
गोरोचन कल्प	हि०	६२०

न

प

ग्रंथ नाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या
ब		
बखाण	प्रा०	११६१
बगलामुखी स्तोत्र	स०	७३७
बघेरवालों के ५२ गोत्र—	हि०	८७७
बघेरवाल छंद	हि०	११५४
बटोई गीत	हि०	११०५
बड़ा पिंगल	स०	५६५
बणजारा गीत	हि०	६८५
		११४४
बणजारा गीत—कुमुदचन्द्र सूरि	हि०	११६१
बणजारो रासो—नागराज	हि०	११५१
बत्तीस दोष सामयिक	हि०	१०६६
बत्तीस लक्षण छप्पय—गगादास	हि०	५५५
बनारसी विलास—जगजीवन	हि०	६६८
		६६९, ९३३
		९९५, १०१२,
		१०१८, १०३१,
		१०४५, १०५२, ११६८
बमणा गीत	हि०	९६२
बलिभद्र कृष्ण माया गीत	हि०	१०२४
बलभद्रगीत—अभयचन्द्र सूरि	हि०	९६६
बलिभद्र गीत—सुमति कीर्ति	हि०	९८४
बलिभद्र चौपई	हि०	१०२५
बलिभद्र भावना	हि०	१०२४
बलभद्ररास—ब० यशोधर	हि०	११३५
बलिभद्र विनती	हि०	११६८
बलिभद्र वीनती—मुनिचन्द्र	हि०	१०७१
बलि महानरेन्द्र चरित्र	सं०	३८७
बसन्तराज टीका—भानुचन्द्र गणि	स०	५५५
बसंत वर्णन—कालिदास	सं०	३५७
बहत्तर सीख	हि०	१०५६

ग्रंथ नाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या
ब्याहलो	हि०	१०१८
ब्रह्मज्योति स्वरूप—श्री वराचार्य	स०	२१४
ब्रह्मतुल्यकरण—भास्कराचार्य	स०	५५५
ब्रह्म के ६ लक्षण	स०	११२७
ब्रह्म पूजा	सं०	८६०
ब्रह्म बावनी—निहालचन्द	हि०	१४३
ब्रह्म महिमा	हि०	१०४३
ब्रह्म विलास—भैया भगवतीदास	हि०	६७०
		६७१, ६७२ ९६८, १०५१, १०७२, ११३३
ब्रह्म विलास के अन्य पाठ—भैया भगवतीदास	हि०	१००५
ब्रह्म वैवर्त पुराण	स०	११९२
ब्रह्म सूत्र	सं०	११९२
बाईस अभक्ष्य वर्णन	हि०	१४२
बाईस परीषह	हि०	१०३६
		१०४४, ११२९
बाईस परीषह—भूधरदास	हि०	१४२
बाईस परीषह कथन—भगवतीदास	हि०	११३३
बाईस परीषह वर्णन	हि०	१००५
		११४०
बारह अनुप्रेक्षा	हि०	१०२३
		१०२३
बारह अनुप्रेक्षा—डालूराम	हि०	१०११
बारहखडी	हि०	१०९५
		११५३
बारहखडी—कमल कीर्ति	हि०	१०५३
बारहखडी—कनक कीर्ति	हि०	१०५६
बारहखडी—दत्तलाल	हि०	१११८
बारहखडी—बेगराज	हि०	१०३७
बारहखडी—सुदामा	हि०	१०६८
बारहखडी—सूरत	हि०	१०३०
		१०४२, १०४३, १०५६, १०७५, १०७७, १०७८
		१०७८, १०७९, १०८०, १०९५
बारह भावना	हि०	२१४
		१०४३, १०९५, १०९७

म

य

क्ष

ग्रंथ नाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या
त्रिषष्ठि स्मृति	सं०	२७६
त्रिशच्चतुर्विंशति पूजा—शुभचन्द्र	सं०	८२३, १०८५
त्रेपन क्रिया—हेमचन्द्र	स०	६७५, १०९३
त्रेपन क्रिया कोश	हि०	६८१
त्रेपन क्रिया कोश—किशनसिंह	हि०	१०९६
त्रेपन क्रिया कोश—ब्र० गुलाल	हि०	१०७७
त्रेपन क्रिया गीत—शुभचन्द्र	अप०	६५२
त्रेपन क्रिया गीत—सोमकीर्ति	हि०	१०२५
त्रेपन क्रिया पूजा	सं०	६४८
त्रेपन क्रिया पूजा—देवेन्द्र कीर्ति	स०	८२३
त्रेपन क्रिया रास—हर्षकीर्ति	हि०	१०३२
त्रेपन क्रिया व्रतोद्यापन	स०	८२३
त्रेपन क्रिया व्रतोद्यापन—विक्रमदेव	स०	११२३
त्रेपन क्रिया विधि—दौलतराम	हि०	११४२
त्रेपन क्रिया विनती—ब्र० गुलाल	हि०	१०५२
त्रेपन भाव	हि०	१०८७
त्रेपन भाव चर्चा	हि०	६२
त्रेसठ शलाका वर्णन	स०	१००५
त्रेसठ शलाका पुरुष वर्णन	हि०	२७६
त्रेसठ शलाका पुरुष भवावलि	हि०	११३५
त्रैलोक्य मोहन कवच	स०	६२१
त्रैलोक्य मोहनी मंत्र	स०	६२१
त्रैलोक्य वर्णन	हि०	६५६
त्रैलोक्यसार	हि०	११६५
त्रैलोक्य सार संदृष्टि	प्रा०	६१३
त्रैलोक्य स्वरूप – सुमति कीर्ति	हि०	६४४
त्रैलोक्य स्थिति वर्णन	हि०	६१६
त्रैलोक्यश्वर जयमाल	हि०	६९३

ज्ञ

ग्रंथ नाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या
ज्ञानरास – भारामल्ल	हि०	६५१
ज्ञातृ धर्म कथा टीका	प्रा०	४४१
ज्ञातृ धर्म सूत्र	प्रा०	४०
ज्ञान कल्याण स्तवन	हि०	१०६१
ज्ञान गीता स्तोत्र	हि०	६८१
ज्ञानचर्चा	स०	४०, १९६
ज्ञान चालीसा	हि०	६८३
ज्ञान चिन्तामणि	स०	६८१, १०३०
ज्ञान चिन्तामणि—मनोहरदास	हि०	१०९, ६५०, १०११, १०५६
ज्ञान चूनड़ी—भगवतीदास	हि०	११२४
ज्ञान चूनडी—वेगराज	हि०	१०३७
ज्ञान जकड़ी—जिनदास	हि०	१११०
ज्ञान दर्पण—दीपचन्द कासलीवाल	हि०	१०९, ११६
ज्ञान शतक—द्यानतराय	हि०	१०४३
ज्ञान दीपिका भाषा	हि०	१०६
ज्ञान पच्चीसी	हि०	६८०, ६८६, १०४७, १०६७, ११०२
ज्ञान पच्चीसी—बनारसीदास	हि०	११०, ६४१, ६६०, ११४५
ज्ञान पंचमी व्याख्यान—कनककुशल	सं०	११०
ज्ञान भास्कर	स०	११८२
ज्ञान मंजरी	स०	६२१
ज्ञान लावणी	स०	५४६
ज्ञान समुन्द्र—जोधराज गोदीका	हि०	१६७, ६८३
ज्ञानसार—पद्मनन्दि	प्रा०	६६४
ज्ञानसार—मुनि पोमसिंह	प्रा०	४१

ग्रंथ एवं ग्रंथकार

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
क्षेमकरण—	बारहमासा वर्णन हि०	१०१८
क्षेमचन्द्र—	योगसार हि०	११४६
खड्गसेन—	त्रिलोक दर्पण कथा हि०	४४२, ६१६
	धर्मचक्र पूजा हि०	८३४
	हरिवंशपुराण भाषा हि०	३०३
	सहस्रगुणीपूजा हि०	६३०
खानमुहम्मद—	पद हि०	१०७५
खीमराज—	पद रमणीगीत हि०	१०२५
खुशालचन्द—	अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा हि०	४२१
	उत्तरपुराण भाषा हि०	२७२, २७३, २७८, १०५८
	चन्दनषष्ठीव्रतकथा हि०	४३८
	चन्द्रप्रभ अखडी हि०	१०८४
	ज्येष्ठ जिनवर व्रतकथा हि०	११२३
	धन्यकुमार चरित्र हि०	३०६
	पद संग्रह हि०	६६३
	पद्मपुराण भाषा हि०	२०४, १०५२
	पल्य विधान कथा हि०	४५६
	पुष्पांजलिव्रत कथा हि०	४६१
	प्रद्युम्नचरित्र भाषा हि०	३५५
	यशोधर चरित्र भाषा हि०	३७७, ११६३
	व्रतकथाकोश हि०	४६१, ४८०, १०७५
	सुगन्धदशमी कथा हि०	५०५
	सुभाषितावली भाषा हि०	७००
	हरिवंशपुराण भाषा हि०	३१०, ३११, ३१२, ३१३, १०५८
खेतसी—	नेमिनाथ विवाहलो हि०	६३६
	बारहमासा हि०	११०५
ब्र० खेता—	सम्यक्त्व कौमुदी सं०	४९५
कवि खेतान—	चित्तौड़ की गजल हि०	११११
खेमकरण—	सम्मेदशिखर पच्चीसी हि०	११०७
खेमराज—	सिद्धिप्रियस्तोत्र भाषा हि०	७६८
खेमविजय—	सिद्धगिरि स्तवन सं०	७६६
खेमसागर—	चेतनमोहनराज संवाद, हि०	११८०
खेमा—	श्रीपालराज सिज्झाय हि०	७९२
गंग—	हरियाली छप्पय हि०	७०८
गंग कवि—	राजुल बारह मासा हि०	१००३
पं० गंगादास—	आदित्यवार कथा हि०	४२७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	महायक्ष विद्याधर कथा हि०	४६६
	मिथ्या दुक्कड हि०	६५१, ११३८, ११५५
	यशोधर रास हि०	६३६, १०२३, ११०७, ११४६
	रविव्रत कथा हि०	११६६
	रविवार प्रबंध हि०	४६६
	रात्रि भोजन रास हि०	११४४
	रामचंद्र रास हि०	६४०
	राम रास हि०	६४०
	रामसीता रास हि०	१०२५
	रोहिणी रास हि०	६४१
	विनती हि०	११३५
	शास्त्र पूजा हि०	१०७७
	श्रावकाचार रास हि.	६४२, ६४१
	श्रीपाल रास हि०	६४२, ११३७
	श्रुत केवलि रास हि०	
	श्रेणिक रास हि०	६४३
	सम्यक्त्व रास हि०	११४१
	सरस्वती पूजा जयमाल हि.	११२६
	दर्शन रास हि०	६४८, ११३७, ११४४, ११४०
	सोलहकारण रास हि०	६४८, ११४३
	हनुमच्चरित्र सं०	४१६
	हनुमंत रास हि०	६४८, ११४१, ११४७
	हरिवंश पुराण सं०	३०६, ३०७, ३०८, ३०९
	होली रास हि०	११४१, ११४४
जिनरंग—	सिज्झाय हि०	१०६१
जिनरंग सूरि—	प्रबोध बावनी हि०	७३७
जिनराज सूरि—	चउबीसा हि०	१०३७
	शालिभद्र चौपई हि०	६४३, ६५४, ६७४, ३६१, १०६२, ४८७
ब्र० जिनवल्लभ सूरि—	संघ पट्टक टीका सं०	६५७
जिनसूरि—	गज सुकुमाल चरित्र हि०	३१८
जिनदेव सूरि—	मदन पराजय सं०	६०६
जिनपाल—	चोढालिया हि०	७२६
जिनप्रभसूरि—	दीपावली महिमा सं०	८३३
जिनप्रभसूरि—	चतुर्विंशति जिन स्तोत्र टीका सं०	७२२
	पार्श्वजिनस्तोत्र सं०	७३३
	महावीर स्तोत्र वृत्ति सं०	७५४
जिनवल्लभसूरि—	प्रश्न शतक सं०	७६
	महावीर स्तवन प्रा०	७५३
जिनवर्द्धन सूरि—	वाग्भट्टालंकार टीका सं०	५६७
जिनलाभसूरि—	पार्श्वदेवस्तवन हि०	७११
जिनसागर—	कवलचन्द्रायण पूजा सं०	९०७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	समवशरण चौबीसी पाठ	हि० ६२२		ज्ञानदर्पण	हि० १९६
	सुबुद्धि प्रकाश	हि० ६६७		परमात्म पुराण	हि० २०४
दसलाल—	बारहखड़ी	हि० १११८		विनती	हि० ११०५
मुनि दयाचन्द—	सम्यक्त्व कौमुदी भाषा	हि० ४९८		स्वरूपानद	हि० २४७
दयाराम—	वृषभनाथ लावणी	हि० ११५८	दीप विजय—	रिषभदेव की लावणी	हि. १११४
दयासागर—	धर्मदत्त चरित्र	हि० ३३८	दुर्गदेव—	षष्ठि सवत्सरी	स० ५६८
	बावनी	हि० ६८९	दुलीचन्द—	आराधनासार भाषा	हि० ६२
दयासिंह गरिण—	सग्रहणी सूत्र भाषा	प्रा० हि० ८८		क्रियाकोश भाषा	हि० १०४
दरिगह—	अकड़ी	हि० ६४१		धर्मपरीक्षा भाषा	हि० १२१
दशरथ निगोत्या—	धर्मपरीक्षा भाषा	हि० १२१		सुभाषितावली	हि० ७००
दादूदयाल—	सुमिरण	हि० ६६०	देवकरण—	सम्मेदविलास	हि० ११५७
दामोदर—	णेमिनाहचरिउ	अपभ्रंश ३३२	देवकीर्ति—	आराधना पंजिका	स० ६३
दामोदर	शारङ्गधर सहिता	सं० १२०३	देवचन्द्र—	धर्मपरीक्षा कथा	स० ३४६
दासहंस—	भक्तिबोध	गुज० ११६७	ब्र० देवचन्द—	विनती रिखवदेव धूलेव	हि० ११५६
दिगम्बर शिष्य—	चैत्यालय वीनती	हि० ७२४	देवतिलक—	कल्याणमन्दिरस्तोत्र वृत्ति	स० ७२०
दिनकर—	चन्द्राकी	हि० ६८१	दैवदत्त दीक्षित—	ग्रहलाघव	स० ५४३
दिलाराम पाटनी— (दौलतराम)	व्रत विधान रासो	हि० ६४१, ६८६		सगर चरित्र	स० ४०६
दीपचन्द कासलीवाल—	अनुभव प्रकाश	हि० १८१		सम्मेद शिखर महात्म्य	सं० ६२८
	आत्मावलोकन	हि० १८६, ११७३		सुदर्शन चरित्र	स० ४१५
	आरती	हि० १०६७		सुमतिनाथ पुराण	हि० ३०१
	चिद्विलास	हि० ४६४, ४६५	देवनन्दि—	गर्भषडारचक्र	सं० ७२०, १०६८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	जैनेन्द्र व्याकरण स०	५१३
	सिद्धिप्रिय स्तोत्र स०	७६७, ७६८, ६८२, ६६४, ११२७
	स्वप्नावली स०	११२७
	लघु स्वयंभू स्तोत्र स०	७५१, ११२७
देवभट्टाचार्य—	दर्शन विशुद्धि प्रकरण स०	११४
देवप्रभ सूरि—	पाण्डवपुराण सं०	२८७, ३४५
देवभद्र सूरि—	संग्रहणी सूत्र प्रा०	८८
देवराज—	मृगी संवाद हि०	६४५, ६८३
देवसुन्दर—	पद हि०	११११
देवसूरि—	प्रद्युम्न चरित्र वृत्ति स०	३५४
देवसेन—	आराधनासार प्रा०	६१, ६७७, ६८३, १०८८
	आलाप पद्धति स०	२५०, ६६८, ६८३, १००६
	तत्वसार प्रा०	४२, ११८३
	दर्शनसार प्रा०	२५३,
	नयचक्र स०	२५६, ६६४
	भाव संग्रह प्रा०	१४८
देवाब्रह्म—	कलियुग की विनती हि०	११७६
	कायाजीव संवाद गीत हि०	११४५
	चौबीस तीर्थंकर विनती हि०	७२४, १००५
	पद संग्रह हि०	६६३, १०१२, १०६५
	पद्मनदिगच्छ की पट्टावली हि०	६५२
	विनती संग्रह हि०	६५५, ६७६
	विनती व पद संग्रह हि०	६७६, ७५८
	सास बहू का झगड़ा हि०	१०१२, १०६५
देवालाल—	अठारह नाते की कथा हि०	४२१
देवीचन्द—	आगम सारोद्धार हि०	२
देवीदास—	चौबीस तीर्थंकर पूजा हि०	८०१, ११२०
देवीदास—	राजनीति सवैया हि०	८६३
देवीनन्द—	प्रश्नावली स०	५५६
देवीसिंह छाबड़ा—	षट्पाहुड भाषा हि०	२१६
देवेन्द्र भूषण—	सकट चौथ कथा हि०	४३३
आचार्य देवेन्द्र—	प्रश्नोत्तर रत्नमाला वृत्ति स०	१३७
देवेन्द्र (विक्रम सुत)	यशोधर चरित्र हि०	३७६
देवेन्द्र सूरि—	कर्म विपाक सूत्र प्रा०	१०
	बंध तत्व प्रा०	७७
उपा० देवेश्वर—	रत्नकोश सं०	५८३
भ० देवेन्द्रकीर्ति— (भ० जगत्कीर्ति के शिष्य)	समयसार टीका सं०	२२५
भ० देवेन्द्र कीर्ति—	प्रद्युम्न प्रबन्ध हि०	३५५, ४६१
देवेन्द्रकीर्ति—	आकार शुद्धि विधान स०	७८६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	आदित्य जिन पूजा स०	७८६
	कल्याण मन्दिर पूजा स०	७९३
	त्रेपनक्रियाव्रत पूजा स०	८२३
	द्वादशव्रत पूजा स०	८३२
	पचपरमेष्ठी पूजा स०	८५१
	पार्श्वनाथ पूजा सं०	८८४
	रत्नत्रय व्रत कथा स०	४६८
	रविव्रत पूजा स०	८९९
	व्रत कथा कोश सं०	४७७
	सिद्ध चक्र पूजा स०	१११८
	सोलहकारण जयमाल स०	९३६
दीर्घसिंह—	कातंत्र रूपमाला स०	५११
दौलत ओसेरी—	ऋषि मंडल पूजा भाषा हि०	७८८
	श्रेणिक चरित्र हि०	४०५
दौलतराम कासलीवाल —	अक्षर बावनी हि०	१०५९
	अध्यात्म बारहखडी हि०	१८०
	आदिपुराण भाषा हि०	२६७, २६८, २६९, २७०
	क्रियाकोश हि०	९९, १००
	चतुरचितारणी हि०	१०५
	चौबीस दण्डक हि०	१०७, १११४, ११२९
	जम्बूस्वामी कथा हि०	३३०
	जीवन्धर चरित्र हि०	४४०
	त्रेपनक्रियाविधि हि०	११४२
	पद्मपुराण भाषा हि०	२८०
	परमात्म प्रकाश भाषा हि०	२०७
	पुण्याश्रव कथाकोश हि०	१५७, ४५८, ४५९, ४६०
	वसुनंदि श्रावकाचार भाषा हि०	१६१
	श्रेणिक चरित्र भाषा हि०	४०५
	सकल प्रतिबोध हि०	७६३
	हरिवंश पुराण हि०	३०४, ३०५
दौलतराम पल्लीवाल	छहढाला हि०	१९९, ११३२
	दौलत विलास हि०	६६०
	पद हि०	११३२
	बारहमासा हि०	११२९
	सिद्धक्षेत्र पूजा हि०	६३२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
नथमल दोसी —	महिपाल चरित्र भाषा हि०	३६८
नथमल बिलाला —	गुण विलास हि०	१६४, ११८१
	जीवन्धर चरित्र हि०	३३०
	जैनबद्री की चिट्ठी हि०	१०४५
	नागकुमार चरित्र हि०	३४१
	नेमिनाथजी का काहला हि०	१०४५
	पद संग्रह हि०	१०४५
	फुटकर दोहा हि०	१०४५
	भक्तामरस्तोत्र कथा (भाषा सहित) हि०	४६५, ७०४
	रत्नत्रय जयमाला भाषा हि०	६६
	वीर विलास हि०	६६७
	समवशरण मंगल हि०	७२६, १०४५
	सिद्धचक्रव्रत कथा हि०	५०२
	सिद्धांतसार दीपक हि०	८५, १०४२
नन्द —	सुदर्शन सेठ कथा हि०	६६१
नन्द कवि —	नन्द बत्तीसी स०	६८७
नन्दनदास —	चेतन गीत हि०	१०२७
	नाममाला हि०	५३८
नन्दराम —	कलि व्यवहार बत्तीसी हि०	१००३
	भक्तामरस्तोत्र पूजा हि०	८६१
नन्दराम लोगासी —	श्रावक प्रतिज्ञा हि०	१०८०
नन्दि गणि —	भगवती आराधना टीका प्रा० स०	९२, १४६
नन्दि गुरु —	प्रायश्चित्त समुच्चय वृत्ति स०	१४२, २१४
नन्दिताढ्य —	नन्दीयछद प्रा०	५६४
नन्दिषेण —	अजितशांति स्तवन प्रा०	७१०, ९५६
नन्नूमल —	रत्नसंग्रह हि०	६७३
नयचन्द्र सूरि —	सबोध रसायण हि०	६५७
नयनन्दि —	सुदंसण चरिउ अपभ्रंश	४१५
नयनसुख —	आदिनाथ मंगल हि०	७११
नयनसुख —	राम विनोद हि०	५८६
	वैद्यमनोत्सव हि०	५०८, ६६२, १००६, ११६७
नयनसुन्दर —	शत्रुंजय उद्धार हि०	४०६
नयविमल —	जम्बूस्वामीरास हि०	६३३
नरपति —	नरपति जयचर्या स०	५५०
नरसिंहपाण्डे —	नैषधीय प्रकाश सं०	३४४
पं० नरसेन —	श्रीपाल चरित्र अपभ्रंश	३६२
नरेन्द्र —	दशलाक्षणिक कथा स०	११४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	विशेषसत्ता त्रिभंगी प्रा०	८०
	षष्ठीशतक प्रा	७६३
ब्र० नेमिदत्त—	आदित्यवार कथा हि०	४२८
	आराधना कथा कोश सं०	४३०
	कथाकोश सं०	४३२
	धन्यकुमार चरित्र सं०	३३५
	धर्मोपदेश श्रावकाचार सं०	१२५
	नेमिजिन चरित्र सं०	३४२
	प्रीतिंकर चरित्र सं०	३५७
	रात्रिभोजन कथा सं०	४७१
	व्रतकथा कोश सं०	४७७
	सुदर्शन चरित्र सं०	४१२
ब्र० नेमिदास—	विजयभद्र क्षेत्रपाल गीत हि०	१२०१
न्यामतखां—	अजीर्ण मंजरी हि०	५७३
पतंजलि—	पतंजलि महाभाष्य सं०	५१६
पदमराज—	अभयकुमार प्रबंध हि०	४२५
पद्मकीर्ति—	पार्श्वपुराण अपभ्रंश	२६०
पद्मतिलक गणि—	जम्बूस्वामी अध्ययन प्रा०	४८०
पद्मनंदि—	उपासक संस्कार सं०	६७
	पद्मनंदि पंचविंशति सं०	१२८, १२९, १३०, १३१, ६७६
	पद्मनंदि श्रावकाचार सं०	१३३
	ज्ञानसार प्रा०	६६४
	धर्मोपदेशामृत सं०	६७६
	वर्द्धमान चरित्र सं०	३८६, ४७७
पद्मनंदि—	धर्मरसायन प्रा०	१२३
भ० पद्मनंदि—	अनन्तव्रतकथा सं०	४२१, ४३४
	करुणाष्टक सं०	७१६
	जिनवर दर्शन स्तवन सं०	७२६
	जिनरात्रिव्रत महात्म्य सं०	४४१
	पार्श्वनाथ स्तोत्र सं०	७३५, ११२७
	भावना चौबीसी सं०	६६४
	रत्नत्रय पूजा सं०	८६६
	रत्नत्रय विधान कथा सं०	४६८
	लघुशांतिक पूजा सं०	६०२
	वीतराग स्तवन सं०	६६४, ११२५
	वृषभ स्तोत्र सं०	७६०
	शांतिनाथ स्तवन सं०	७६२
	सिद्धचक्रपूजा सं०	६६६
वैद्य पद्मनाभ—	अजीर्ण मंजरी हि०	१०७७
पद्मनाभ कायस्थ—	यशोधर चरित्र सं०	३७३
पद्मप्रभदेव—	लक्ष्मी स्तोत्र सं०	७५५, ७७४, ८७६, १०६५, १०७४, १०७८, ११२४
	पार्श्वनाथ स्तोत्र सं०	७६५, ६५८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
पद्मप्रभमल धारिदेव—	नियमसार टीका सं०	७०
पद्मप्रभ सूरि—	भुवन दीपक सं०	५५७, ६६१
पं० पद्मरंग—	राम विनोद हि०	१०१६
पद्मराज —	यशोधर चरित्र सं०	३७३
पद्मविजय —	शीलप्रकास रास हि०	६४१
पद्मसुन्दर —	चारकषाय सज्झाय हि०	१६४
पद्मा —	श्रावकाचार रास हि०	१६७
पाड्या पन्नालाल चौधरी—	आचारसार वचनिका हि०	६१
	आराधनासार वचनिका हि०	६२
	उत्तरपुराण भाषा हि०	२७४
	तेरहपंथखंडन हि०	१११
	तत्वकौस्तुभ हि०	४१
	धर्मपरीक्षा भाषा हि०	१२५
	नवतत्व गाथा भाषा हि०	६८
	न्यायदीपिका भाषा हि०	२५६
	पाण्डवपुराण भाषा हि०	२६०
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार वचनिका हि०	१५६
	वसुनंदि श्रावकाचार भाषा हि०	१६२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सद्भाषितावलि हि०	६६५
	समाधिशतक हि०	२४०
संघी पन्नालाल— (दूनी वाला)	विद्वज्जनबोधक हि०	१६३, १२०२
	समवशरण पूजा हि०	६१८
	सरस्वती पूजा हि०	६२६
परम विद्याराज—	वृन्द संहिता सं०	५६४
परमानन्द—	ध्रुव चरित हि०	१००१
परमानन्द जौहरी—	चेतन विलास हि०	६५६
परशुराम—	प्रतिष्ठापाठ टीका सं०	८८८
परिमल्ल—	श्रीपाल चरित्र हि०	३६५, ३६६, ३६७, ३६८, १०७३
परमहंस	मुहूर्त मुक्तावली सं०	५५८
परिव्राजकाचार्य	सारस्वत प्रक्रिया सं०	१२०१
पर्वत धर्मार्थी—	द्रव्य संग्रह भाषा	६६, १०४१
	समाधितन्त्र भाषा गु०	२३४, २३५, २३६, २३७
पल्हणु—	जय जय स्वामी पाथडी हि०	१०८६
पाणिनि—	धातुपाठ सं०	५१४
	पाणिनि व्याकरण सं०	५१५
	प्राचीन व्याकरण सं०	५१७
पाण्डवराय—	परमात्म प्रकाश टीका सं०	२०४
पात्रकेशरी—	पात्रकेशरीस्तोत्र सं०	७३३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
प्रभंजन गुरु—	यशोधर चरित्र पीठबंध सं०	३७२
प्रभाकर सेन—	प्रतिष्ठा पाठ सं०	८८८
प्रभाचन्द्र —	आत्मानुशासन स०	१८४, १८५
	आराधनासार कथा प्रबंध स०	४३०
	उपासकाध्ययन स०	११३७
	क्रियाकलाप टीका स०	६८
	द्रव्यसंग्रह टीका स०	६४
	पंचकल्याणक पूजा स०	८४७
	धर्मकथा टिप्पण अपभ्रंश	४५५
	प्रतिक्रमण टीका सं०	२०६
	प्रवचनसार टीका स०	२१०
	यशोधरचरित्र टिप्पण स०	३७१
	रत्नत्रय कथा स०	४६८
	विषापहारस्तोत्र टीका स०	७५६
	श्रावकाचार स०	६६४
	समयसार वृत्ति स०	२२५
	समाधिशतक टीका सं०	२४०
	स्वयम्भूस्तोत्र टीका स०	७७६
भ० प्रभाचन्द्र— (हेमकीर्ति के शिष्य)	तत्वार्थरत्नप्रभाकर सं०	४२
प्रभाचन्द—	रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका सं०	१५६
प्रभाचन्द्र—	चिंतामणि पार्श्वनाथ विनती हि०	६५२
	महावीर विनती हि०	११६१, २१३
प्रहलाद—	पद्मनन्दि महाकाव्य टीका स०	३४४
प्रहलाद—	स्वरोदय हि०	५७२
प्रेमचंद—	सोलहसती की सिज्झाय हि०	१०६८
पं० फतेहलाल—	जैनविवाहविधि हि०	१११६
बखतराम साह—	धर्मबुद्धि मन्त्री कथा हि०	४५०
	पद संग्रह हि०	११५५
	बुद्धि विलास हि०	१४३, ६६६
	मिथ्यात्व खंडन हि०	१६६, ६०७, ६५४
बख्तावर लाल—	चौबीस तीर्थंकर पूजा हि०	८००, ११३१
बख्तावर सिंह	आराधना कथा कोश हि०	४३०
रतन लाल—		
बनारसीदास —	अध्यात्मपंडी हि०	१०११
	अध्यात्म बत्तीसी हि०	६६६
	अनित्य पचासिका हि०	१०४१
	कर्म छत्तीसी हि०	६४१
	कर्म प्रकृति हि०	६८३
	कर्म विपाक हि०	८, १०१५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
लालजीलाल—	समवशरण पूजा हि०	११२०
लालजीत—	अकृत्रिम चैत्यालय जिन पूजा हि०	७७७
	अढाईद्वीप पूजा हि०	७७६
	तेरहद्वीप पूजा हि०	८१६
लालदास—	इतिहाससार समुच्चय हि०	१०१४
लावण्यसमय—	अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन हि०	७१५
	दृढ प्रहार हि०	४४८
	नेमिकुमार गीत हि०	११३८
	नेमिनाथ प्रबन्ध हि०	११४१
	नेमिराजमती शतक हि०	११८७
	पार्श्वनाथस्तवन गीत हि०	११२५, ११३७
	राजुलनेमि अबोला हि०	१०२७
	स्थूलभद्र गीत हि०	१०२६
लिखमीदास—	जसोधर चौपई हि०	११६७
	श्रेणिक चरित्र हि०	४०७, ४०८
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन सं०	५६६
	वैद्यवल्लभ सं०	१०७७
साह लोहट—	अठारह नाते का चौढालिया हि०	४२१, ६८१, १०६२
	पूजाष्टक हि०	८७६
	यशोधर चरित्र भाषा हि०	३७८
वट्टकेराचार्य—	मूलाचार प्रा०	१५०
वंगसेन—	वंगसेन सूत्र सं०	५६०
वरदराज—	लघु सिद्धान्त कौमुदी सं०	५१६
	संस्कृत मंजरी सं०	५२०
	सार संग्रह सं०	२६३
वर शर्म्म—	श्रुत बोध टीका स.	६०१
ब्र० वर्द्धन—	गुणठाणा गीत हि०	६५२, १०३२
	राम सीता गीत हि०	११६०
भ० वर्द्धमान देव—	वराग चरित्र सं०	३८३, ८३४
वर्द्धमान कवि—	वर्द्धमान रास हि०	६४१
वर्द्धमान देव—	श्रुतस्कन्ध पूजा सं०	६१३
वर्द्धमान सूरि—	ग्रह शांति विधि सं०	७६६
	धर्मस्तम्भ सं०	८३४
	वाग्भट्टालंकार टीका सं०	५६७
वराह मिहिर—	बृहज्जातक सं०	५६४
वल्ह—	चेतन पुद्गल धमाल हि०	६८३
पं० वल्लह—	वज्जवन्नी प्रा०	६६४
पं० वल्लाल —	भोज प्रबन्ध सं०	३६४
वलु—	पार्श्वनाथ स्तुति हि०	४५
आ० वसुनन्दि —	देवागम स्तोत्र वृत्ति सं०	११८५
	प्रतिष्ठासार संग्रह सं०	८८६
	मूलाचार वृत्ति सं०	१५१
	वसुनंदि श्रावकाचार सं०	१६०
ब्र० वस्तुपाल—	रोहिणी व्रत प्रबंध हि०	४५७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
वाग्भट्ट—	ऋतुचर्या	स० ५७५
	नेमि निर्वाण	स० ३४३
	वाग्भट्टालकार	स०
वाजिद—	हितोपदेश	हि० ७०८
वादिचन्द्र—	गौतम स्वामी स्तोत्र	हि० ११३३
	ज्ञानसूर्योदय नाटक	सं० ६०४
	द्वादश भावना	हि० ११३३
	नेमिनाथ समवशरण	हि० ११३३
	पार्श्वनाथ पुराण	सं० २६०
	पार्श्वनाथ वीनती	हि० ११६१
	बाहुबलिनो छंद	हि० ११६४
	श्रीपाल सौभागी आख्यान	हि० ४६१
वादिदेव सूरि—	प्रमाणनयतत्वालोकालकार	सं० २५७
वादिभूषण—	पचकल्याणक	स० ८४७
वादिराज—	एकीभाव स्तोत्र	स० ७१३, ७७१, ७७२ ७७२, ६५३, १०२२, १०८२, १०८३
	यशोधर चरित्र	सं० ३७२
	वाग्भट्टालकार टीका	स० ५६७
	सुलोचना चरित्र	स० ४१८
वादीभसिंह सूरि—	क्षत्र चूडामणि	सं० ३१८१
वामदेव—	त्रिलोक दीपक	सं० ६११ ६१६
	भावसंग्रह	सं० १४८
ब्रह्मवामन—	दानतपशील भावना	हि० ११३४
वामनाचार्य—	काशिका वृत्ति	सं० ५१२
	वर्षफल	सं० ५६३
वासवसेन—	यशोधर चरित्र	सं० ३७२
कवि विक्रम—	नेमिदूत काव्य	सं० ३४२
ब्र० विक्रम—	पाच परवी कथा	हि० ११३१
विक्रमदेव—	त्रेपन क्रियाव्रतोद्यापन	सं० ११२३
विक्रमसेन—	विक्रमसेन चउपई	हि० ६४५
भ० विजयकीर्ति—	अकलक निकलक चोपई	हि० ६४३
	कथा संग्रह	हि० ६३५
	कर्णामृत पुराण	हि. २७४, ६७५, ११७५
	चन्दनषष्ठीव्रत पूजा	स० ७६७
	धर्मपापसंवाद	हि० ११८५
	पद	हि० ११०७
	महादण्डक	हि० १४६, २६३
	यशोधर कथा	सं० ४६७
	शालिभद्र चौपई	हि. ४८८
	श्रेणिक पुराण	हि० ४००, ४०३, ४०४, ४०५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सुकुमाल चरित्र सं० ४११, ४१२, ४१३
	सुदर्शन चरित्र सं० ४१५
	सुभाषित सं० ६८५, ६९६, ७००
	(सुभाषितार्णव) ६६०, ६९५
	सोलहकारण रास सं० ९५५, ११९६
सकलचन्द्र—	महावीरनी स्तवन हि० ७५३
सकलभूषण –	उपदेश रत्नमाला सं० ११७४,
	मल्लिनाथ चरित्र सं० ३६६
	विमानपंक्ति व्रतोद्यापनसं० ६०८
	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला सं० १६८
	शीलमहिमा हि० ६८३
ब्र० सघजी—	प्रेंगिक प्रबन्ध रास हि० ९४२
संतदास –	सम्मेदशिखर पूजा हि० ६२३
सदानन्द—	सिद्धान्तचन्द्रिका टीका सं० ५३०
सदासुखजी कासलीवाल—	अकलंकाष्टक भाषा हि० ७०९
	अर्थ प्रकाशिका हि० १
	तत्वार्थसूत्र भाषा हि.५३, ५४, ११, ८३
	दशलक्षण भावना हि० ११४
	नित्यपूजा भाषा हि० ८३१
	भगवती आराधना भाषा हि० १४६, १४७
	मृत्युमहोत्सव हि० ११९३
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा हि० १५७,६७३
	षोडशकरण भावना १७१
	समाधिमरण भाषा हि० २३८
	सामयिक पाठ टीका हि० १०६६
सधारु—	प्रद्युम्न चरित हि० ३५४
समताराम—	जैन श्रावक आम्नायहि०१०९
आ० समन्तभद्र—	आप्त मीमांसा सं० २४८
	चतुर्विंशति स्तोत्र सं० ६७५
	देवागम स्तोत्र सं०,११८४
	रत्नकरण्डश्रावकाचार सं० १५५, ९५७
	समन्तभद्र स्तुति सं०७६३
	स्वयंभू स्तोत्र सं० ७७५, ७७६, ९९३, ९९४, १०८२, ११२७, ११३६, ११६५,
समय भूषण—	नीतिसार सं० ९५९
समयसुंदर—	कालकाचार्य कथा हि० ४३५
	क्षमा छत्तीसी हि० ६६०, १०६१, १११८
	क्षमा बत्तीसी हि० ६४२
	चेतन गीत हि० ६६६, १०२६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सप्तर्षि पूजा हि०	६१८
	सिद्धक्षेत्रमडल पूजा हि०	६३३
स्वरूपदास –	पाण्डव चन्द्रिका हि०	११८६
सुन्दर दास—	सुन्दरदास हि०	६२६
हजारीमल्ल—	श्रुतस्कन्धमण्डल विधान हि०	९१४
हरखूलाल—	सज्जनचित्त वल्लभ भाषा हि०	६६४
हरजीमल –	चर्चाशतक हि०	२६
हरखसूरि—	जीवउत्पत्ति सज्झाय हि०	१६
हरसुख –	बावनी हि०	१०७८
हर्ष कल्याण—	पचमी व्रतोद्यापन सं०	८५७
हर्षकीर्ति I	अनेकार्थ नाममाला सं०	५३१
	कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका सं०	७१८
	पञ्चमीव्रतोद्यापन पूजा सं०	८५८
	धातुपाठ सं०	५१४
	धातु तरंगिणी सं०	५१४
	योगचिन्तामणि सं०	५८१, १०१५
	लघु नाममाला सं०	५१८
	वैद्यकसार सं०	५८६
	शारदी नाममाला सं०	५४०
	श्रुतबोध टीका सं०	६०१
	सिद्धान्त चन्द्रिका टीका सं०	५३०
	सूक्ति मुक्तावली टीका सं०	७०६
	हर्षकीर्ति विधान पूजा सं०	६०३
हर्षकीर्ति II	कर्म हिंडोलना हि०	१०२३, १०५०
	चतुर्गतिवेलि हि०	६८४
	जिनगीत हि०	१०१६
	त्रेपन क्रियारास हि०	१०३२
	धन्ना ऋषि सज्झाय हि०	११०२
	नेमिनाथ का बारहमासा हि०	६८६
	पंचमगति वेलि हि०	८०४, १०१३, १०१८, ११०२, ११०६, ११११२, ११५१
	पद बधावा हि०	११०४
	पदसंग्रह हि०	१०१४, १०५२, ११०४,
	पार्श्वनाथ छंद हि०	७३३
	बीसतीर्थंकर जकड़ी हि०	१०७७, १०७६
	बीसतीर्थंकर जयमाल हि०	८६१
	भक्तामर स्तोत्र हि०	११०४
	मनमोरड़ा गीत हि०	११६५
	लेश्यावली हि०	११५५
	श्रीमंधरजी की जकड़ी	१०४८

शासकों की नामावलि

— —

ग्राम एवं नगर नामावलि

शुद्धाशुद्धि विवरण

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२	२४	देवेन्द्र चन्द्र मणि	देवेन्द्र चन्द्र गणि
३३	४	जयार्थ	जथार्थ
३६	१६	सभाज्य	सज्झाय
४२	७	अपभ्रंश	प्राकृत
७०	१६	निपलावति	नियलावलि
७७	६	बियान्नीस ढाणी	बियालीस ठाणी
७८	२	सिद्धान्त	धर्म
८०	१३	तदाम्नाये	तदाम्नाये
१०५	१६	चतुंदशी	चतुर्दशी
११५	१	दानशील तप भावना	दानशील तप भावना
१२२	१६	दीबन जी	दीनानजी
१२५	३	प्रतिउ गियारा	प्रति उगियारा
१३८	६,११,१३,१५,१७,१६	प्रति स० २,३,४,५, ६,७	प्रति स० २(क) ३(क) ४(क) ५(क) ६(क) ७(क)
१४१	२८	वीरसेनामिधं :	वीरसेनाभिधं.
१४२	५	चन्द्रप्रभा चैत्यालये	चन्द्रप्रभ चैत्यालये
१४३	८	बुद्धि बि……	बुद्धि बिलास
१४६	१	तलपि	मे प्रतिलिपि
१४८	२५	भाषा संस्कृत	भाषा-प्राकृत
१५१	२०	१-४७	१५४७
१५३	१	महा—प०	—महा प०
१६०	२०	लोकामत	लोकामत
१७३	४	सागर धर्मामृत	सागारधर्मामृत
१७६	४	मगसिर सुदी १४	मंगसिर सुदी ५
२१४	२१	ब्रह्म ज्योवि स्वरूप	ब्रह्म ज्योति स्वरूप
२०३	१२	द्वदशानुमोक्षा	द्वादशानुप्रेक्षा
२१६	२४	रचनिका	वचनिका
२२२	३०	सम्प्रक	सम्यक्
२२२	३५	जपतु	जयतु

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२२६	१७	प्रकरण-प्रतिरोध	प्रकरण प्रतिबोध
२२६	२०	समसार	समयसार
३८	५	नाथूलाल	नाथूराम
२३८	८	समाधि दत्र	समाधि तंत्र
२४६	१५	संवरायनुप्रेक्षा	संवरानुप्रेक्षा
२४८	२	प्रबसहस्री	अष्टसहस्री
२६१	२२	समुच	समुच्चय
२६१	२५	हरिचन्द्र	हरिभद्र
२६७	३	मवि	कवि
२६८	२, ८, १०	६, ७, ८	७, ८, ९
३१३	१४	बडा	बडा
३१५	१३	श्वेताम्बरनाय	श्वेताम्बराम्नाय
३१९	२	पुरनकं	पुस्तक
३३०	५	माबा	माश्वा
३३०	६	आनन्धर	जीवंधर
३३८	२५	धन्कुमार	धन्यकुमार
३४०	८	सकृत	संस्कृत
३४८	५	तेरहपथी	तेरहपंथी
३५८	३५	सकृत	संस्कृत
३६०	१८	दि० जैन मन्दिर	दि० जैन मन्दिर
		बघेर वालों का	बघेर वालों का धाता
३६४	२८	कवियण	कवियरण
३७१	१०	सवाई मानसिंह	सवाई रामसिंह
३७६	१३	यशोधर	यशोधर चरित्र-परिहानन्द
३७३	२८	अनसेन	जयगन
३८७	१३	र० काल ×	र० काल सं० १५८८ से काल ×
४०१	१२	र० काल ×	र० काल सं० १८६७
४०७	३४	प्रति सं० ७	प्रति सं० १
४१६	११	यश:कीर्ति	भ० यश:कीर्ति
४१७	३१	सुबाहु चरित्र	सुबाहु चरित्र
४२५	१	तजी	तणी
४२९	२०	आदितवार कथा	आदित्यवार कथा
४३५	२२	कालाका चार्य कथा	कालकाचार्य कथा

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
४३७	[illegible]	भ० नरेन्द्र कीर्ति	आ० नरेन्द्र कीर्ति
४४८	१३	भाषा-कथा	भाषा–हिन्दी/विषय कथा
४४८	३	उदयमुर	उदयपुर
४[illegible]४	[illegible]	मैडक	मैढक
४५४	६	नवमल	— × ।
४६८	[illegible]	रत्नावली कथा	रत्नावली कथा
४७२	[illegible]	श्रतसागर	श्रुतसागर
४७४	[illegible]	चुन्नीराम बद	चुन्नीलाल बैनाडा
४८६	[illegible]	अनदेव	अभ्रदेव
४८०	४	कजिका व्रत कथा	काजिका व्रत कथा
४८[illegible]	१४	भीवसी	धनराज
४०१	[illegible]	श्रणिक	श्रेणिक
४१२	[illegible]	वादीभ कुभस्थ	वादीभ कु भस्थ
४१[illegible]	[illegible]	प्रति प्रोदय	प्रतिह्रोदय
४०४	[illegible]	स्वल्प	स्वल्प
५०८	[illegible]	ग्र थ उत द्धृत	ग्र थ ते उद्धृत
५११	[illegible]	कातन्त्रत रूप माला	कातन्त्र रूप माला
५२८	७	कृतन्द	कृदन्त
५५८	७	षष्ठि सवतत्सरी	षष्ठि सवत्सरी
५८७	१८	कवि चन्द्रका	कविचन्द्रिका
[illegible]	५	जिन पुजा पुरदर	जिन पूजा पुरदर
५२३	७	५१५४	६१५१
६४०	१४	रामराम	रामरास
६४०	१४	रामसीताराम	रामसीतारास
६४५	१८	अरोपम	अनोपम
६४५	१७	१६०४	१६७४
६४६	३६	मुखथाम	सुखथाय
६५१	४	विहाटी	दिहाडी
६५५	२५-२६	तयागच्छ	तपागच्छ
६५६	२१	ब्र० सामान	ब्र० सावल
६७१	६	ज्ञान	ज्ञात
६७५	१०	वशेप	विशेष
६७६	२६	सग्रह ग्रन्थ	सग्रह ग्रन्थ
६८२	२०	किशनदास	वाचककिशन

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
७११	१	साधमिका	साधनिका
७१६	१	४८५०	६८५०
७२४	६	सफलकीरती	सकलकीरती
७२९	२१	प्राकृत	संस्कृत
७३०	२२	धमरण पार्श्वनाथ	श्रमण पार्श्वनाथ
७३४	२४	संस्कृत	हिन्दी
७७१	१४	स्तोषय	स्तोत्रत्रय
७६७	३	चतुर्विशाति जिन पूजा	चतुर्विंशति जिन पूजा
८११	११	मुद्ध मग्राम	मुद्राम्नाय
८१२	२५	प०	
८१४	२०	नग्न	रत्न
८१७	२३	चतुनि शतिका	चतुर्विंशतिका
८२४	४	दशलक्षण द्यापन	दशलक्षणोद्यापन
८२७	४	बतुधा में चन्द्रपम	वसधा मे चन्द्रप्रभ
८३६	३१	शातिक	शांतिक
८४१	२०	निवाणं काड	निर्वाण काड
८५७	१०	पचमी व्रतो पूजा	पचमी व्रत पूजा
८५६	२६	प्रति स० ७	प्रति स० ?
८७६	१०	उमार स्वार्मा	उमा स्वार्मा
८७६	१२	संस्कृत	हिन्दी
८८०	८	विद्या विद्यानु वादा	विद्यानुवादो
८८३	३०	गमो पैंतीसी	गमो कार पैंतीसी
९०३	२८	भाषा-विधान	भाषा-संस्कृत
९४६	३४	प्रशाम्	प्रणाम्
९४८	१६	मुधरि	वसुधरि
९५२	१७	—	प्राकृत
९५६	६	..	हिन्दी
९५६	१८	—	संस्कृत
९५८	१६	भ० सकलकीर्ति	मुनि सकलकीर्ति
९७०	१८	निर्वाणि	निवारिण
९९१	१३	पद्मनदि सूरि	पद्म प्रभसूरि
९९२	५	मन्तिम	अन्तिम
१००२	३०	बिहारीदास	बिहारीलाल

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१००३	३४-३५	महाराष्ट्र भाषा	द्वादश मासा
१००५	३२	द्वादश मासा	महाराष्ट्र भाषा
१०११	१२	चेतक कर्म चरित्र	चेतन कर्म चरित्र
१०१३	६	उपदेशतक	उपदेश शतक
१०२६	४	धनपतराय	द्यानतराय
१०४१	१६	षट्लेशा	षट्लेश्या
१०४३	३	पाण्डे जिनराम	पाण्डे जिनदास
१०४५	२८	गगाराम	गगादास
१०४८	२६	काहला	व्याहला
१०६१	२४	मबाश्रृ गार	मभाश्रृ गार
१०७४	१७	देह	देश
१०८४	३१	मूधरदास	भूधरदास
१०८९	१	ब० जयसागर	उपा० जय सागर
१०९६	१८	चेतन पुद्गल धमाल	चेतन पुद्गल धमाल
१०९८	६	रमण सार भाषा	रयण सार भाषा
१०९८	१५	स्वना वली	स्वप्नावली
११०१	१	मनरामा	मनराम
११०३	१६	पचापध्यायी	पंचाध्यायी
१११०	२४	बनासरीदास	बनारसीदास
११२२	१	प्रक्षिस	प्रक्षिप्त
११२३	१४	बुधटोटर	बुधटोडर
११२८	१८	मघरदास	भूधरदास
११३१	२	पांडेजी पत	पाण्डे जीवन
११३७	२७	बख्तावर सिंह	बख्तावर लाल
११३८	६	लबध्य समय	लब्ध्य समय
११३९	३०	गुणतीसी सीवना	गुणतीसी भावना
११४४	५	सोलह कारण पा ड़ी	सोलह कारण पांखडी
११४४	३०	होली भास	होलीरास
११४७	२६	मिथ्या ट्रकड	मिथ्या दुकड
११५७	११	संबोध सनाणु	संबोध सत्ताणु
११५८	९	मांडका	मोडन
११६२	२७	मयाराम	दयाराम
११७३	५	छप्प	छप्पय
		अथर्वण वेद	दवर्थ वेद

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
११७३	६	वैद्धिक	वैद्यक
११७५	—	गुटका संग्रह	अवशिष्ट साहित्य
११७६	४१	गर्मचक्रकुल	गर्भचक्रकुल
११७६	२४	जिनमतका रव्याल कम	जिनमतकारव्यलक्षति
११७६	२५	हलायुध	हलायुध
११७६	११	चन्द्रोमीलन	चन्द्रोन्मीलन
११८८	१६	पज्जुण्ण कहा	पज्जुण्णकहा
११८८	२६	परदेशी मतिबोध	परदेशी प्रतिबोध
११६२	२४	रयणसारव चनिका	रयणसार वचनिका
११६५	२६	भर्तृ हरि	भर्तृहरि शतक
११६६	११	सोमकवि	सोमकवि